بسم الله الرحمن الرحيم
इरफ़ानुल क़ुरआन
तरजुमा
शैख़ुल इस्लाम डॉ. प्रॉ. मुहम्मद ताहिरुल क़ादरी
MINHAJ-UL-QURAN INT.
INDIA
मिन्हाजुल क़ुरआन इन्टरनेशनल इन्डिया

ब-ख़त्ते हिन्दी इशाअ़ते अव्वल
19 फरवरी 2011
ता'दादे इशाअ़त : 3000

मिन्हाजुल क़ुरआन इन्टरनेशनल इन्डिया

उमज रोड़, मुक़ाम पोस्ट : करजन
ज़िला' वडोदरा -391240
गुजरात, इन्डिया

+91-2666-232533 Mob. : 09898963623, 09725621001
website : www.minhaj.in
Email : minhaj.gujarat@gmail.com

القرآن الكريم

في كتاب مكنون

आयातुहा 7	1 सू-रतुल फ़ातिह़ति मक्किय्यतुन 5	रुकूउ़हा 1

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ
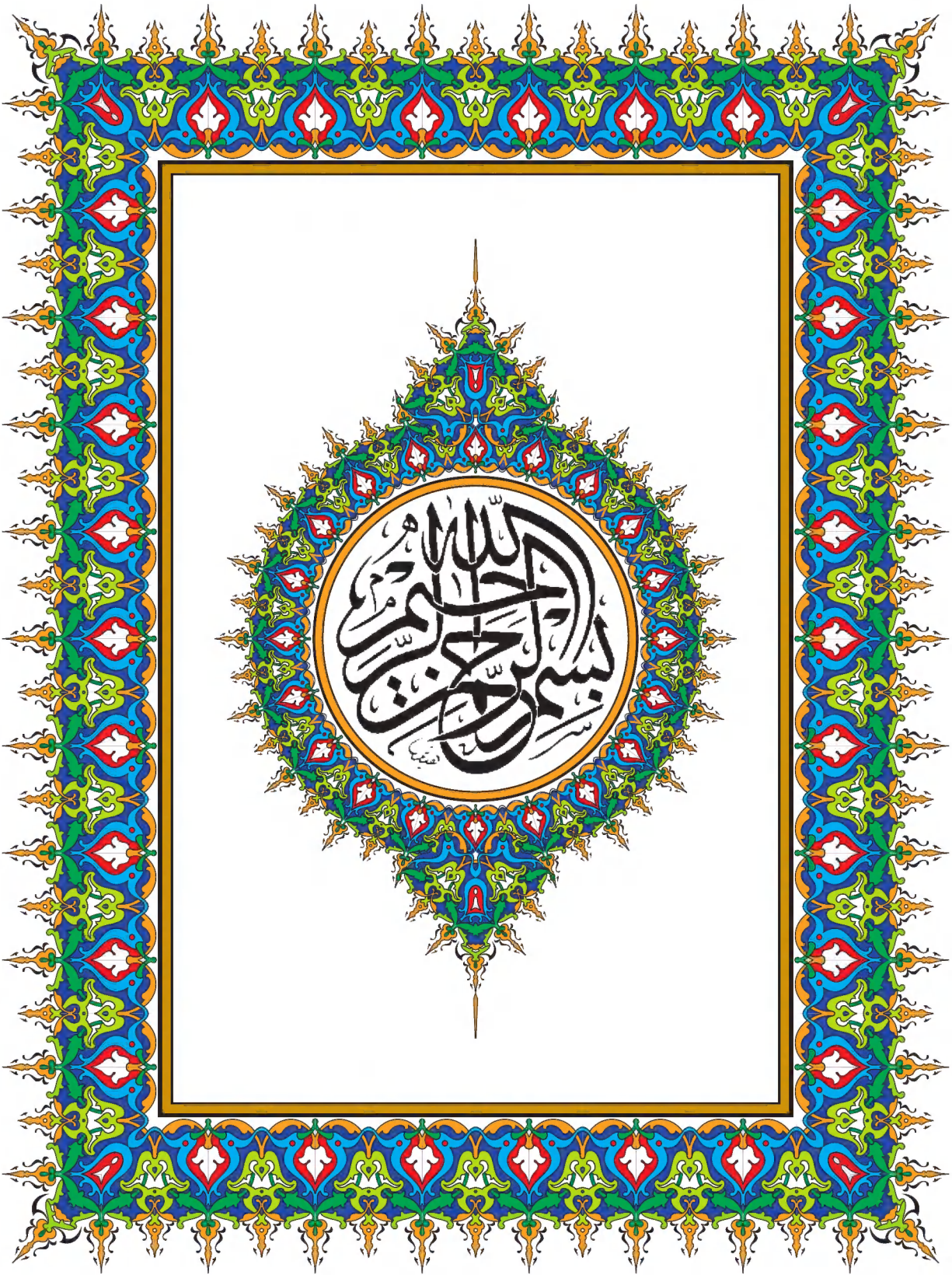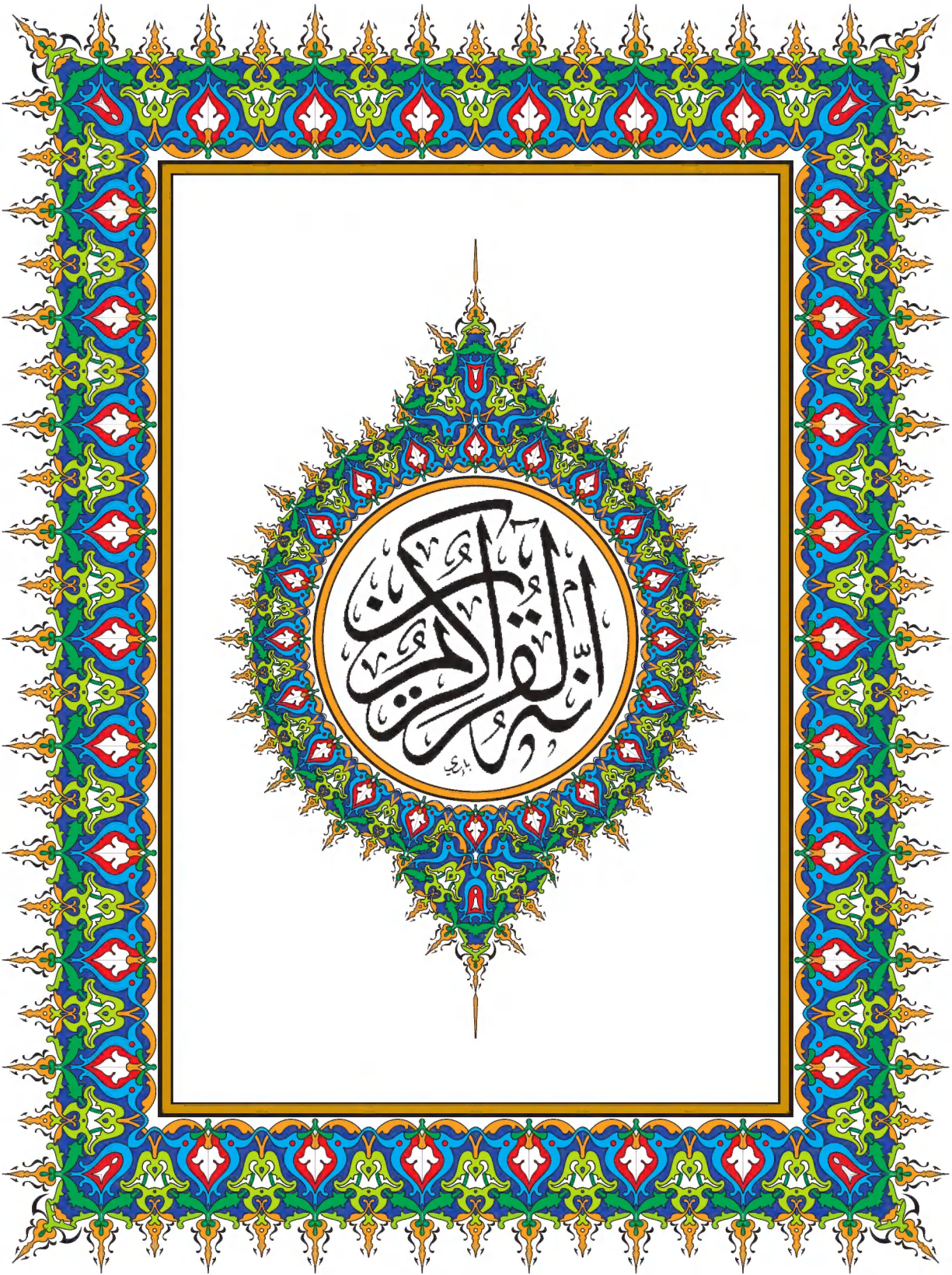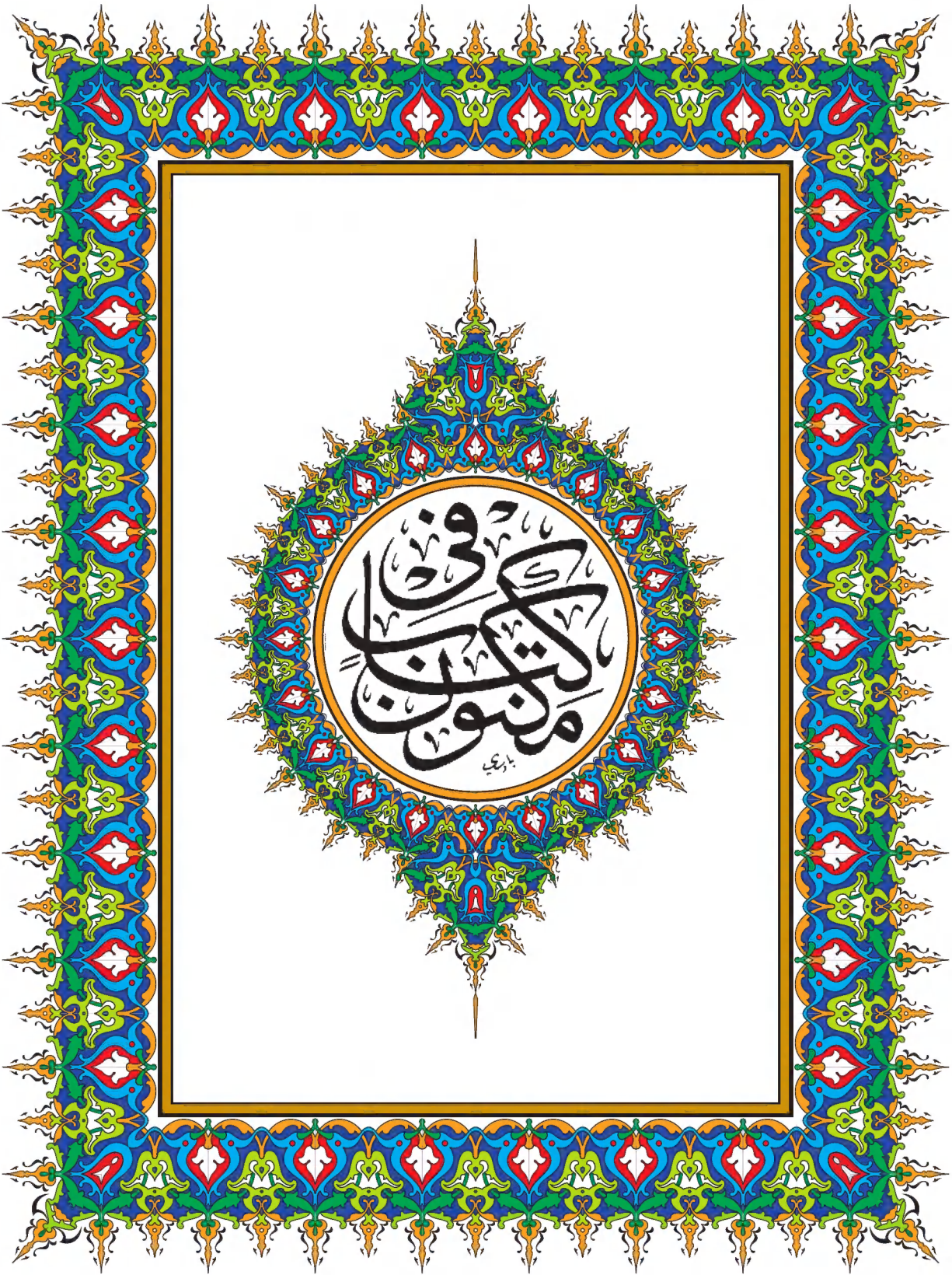
अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ ۙ﴿۱﴾	1. सब ता'रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जो तमाम जहानों की परवरिश फ़रमानेवाला है।
الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۙ﴿۲﴾	2. निहायत महरबान बहुत रह़म फ़रमानेवाला है।
مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ؕ﴿۳﴾	3. रोज़े जज़ा का मालिक है।
اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ؕ﴿۴﴾	4. (अय अल्लाह !) हम तेरी ही इ़बादत करते हैं और तुझ ही से मदद चाहते हैं।
اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۙ﴿۵﴾	5. हमें सीधा रास्ता दिखा।
صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ ۬ۙ	6. उन लोगों का रास्ता जिन पर तू ने इन्आ़म फ़रमाया।
غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَ لَا الضَّآلِّیۡنَ ٪﴿۷﴾	7. उन लोगों का नहीं जिन पर ग़ज़ब किया गया है और न (ही) गुमराहों का।

आयातुहा 286 | 2 सू-रतुल ब-क़रह 87 | रुकूआतुहा 40

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ् जो निहायत महरबान हमेशा रह्म फ़रमानेवाला है।

الٓمّٓ ۚ ﴿۱﴾

1. अलिफ़ लाम मीम (हक़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं।)

ذٰلِكَ الۡكِتٰبُ لَا رَيۡبَ ۛۚ فِيۡهِ ۛۚ هُدًى لِّلۡمُتَّقِيۡنَ ۙ﴿۲﴾

2. (येह) वोह अ़ज़ीम किताब है जिस में किसी शक की गुन्जाइश नहीं, (येह) परहेज़गारों के लिए हिदायत है।

الَّذِيۡنَ يُؤۡمِنُوۡنَ بِالۡغَيۡبِ وَ يُقِيۡمُوۡنَ الصَّلٰوةَ وَ مِمَّا رَزَقۡنٰهُمۡ يُنۡفِقُوۡنَ ۙ﴿۳﴾

3. जो ग़ैब पर ईमान लाते और नमाज़ को (तमाम हुक़ूक़ के साथ) क़ाइम करते हैं और जो कुछ हम ने उन्हें अ़ता किया है उस में से (हमारी राह में) ख़र्च करते हैं।

وَالَّذِيۡنَ يُؤۡمِنُوۡنَ بِمَاۤ اُنۡزِلَ اِلَيۡكَ وَمَاۤ اُنۡزِلَ مِنۡ قَبۡلِكَ ۚ وَبِالۡاٰخِرَةِ هُمۡ يُوۡقِنُوۡنَ ؕ﴿۴﴾

4. और वोह लोग जो आप की तरफ़ नाज़िल किया गया और जो आप से पहले नाज़िल किया गया (सब) पर ईमान लाते हैं' और वोह आख़िरत पर भी (कामिल) यक़ीन रखते हैं।

أُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنۡ رَّبِّهِمۡ ۙ وَ أُولٰٓئِكَ هُمُ الۡمُفۡلِحُوۡنَ ﴿٥﴾

5. वोही अपने रब की तरफ़ से हिदायत पर हैं और वोही हक़ीक़ी कामयाबी पानेवाले हैं।

اِنَّ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا سَوَآءٌ عَلَيۡهِمۡ ءَاَنۡذَرۡتَهُمۡ اَمۡ لَمۡ تُنۡذِرۡهُمۡ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ ﴿٦﴾

6. बेशक जिन्हों ने कुफ़्र अपना लिया है उनके लिए बराबर है ख़्वाह आप उन्हें डराएं या न डराएं, वोह ईमान नहीं लाएंगे।

خَتَمَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوۡبِهِمۡ وَعَلٰى سَمۡعِهِمۡ ؕ وَعَلٰٓى اَبۡصَارِهِمۡ غِشَاوَةٌ ۡ وَّلَهُمۡ عَذَابٌ عَظِيۡمٌ ﴿٧﴾

7. अल्लाह ने उन के दिलों और कानों पर मोहर लगा दी है और उन की आंखों पर पर्दह (पड़ गया) है और उन के लिए सख़्त अज़ाब है।

ع

وَمِنَ النَّاسِ مَنۡ يَّقُوۡلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالۡيَوۡمِ الۡاٰخِرِ وَمَا هُمۡ بِمُؤۡمِنِيۡنَ ۘ ﴿٨﴾

8. और लोगों में से बा'ज़ वोह (भी) हैं जो केहते हैं हम अल्लाह पर और यौमे क़ियामत पर ईमान लाए हालां कि वोह (हरगिज़) मो'मिन नहीं हैं।

وقف لازم

يُخٰدِعُوۡنَ اللّٰهَ وَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا ۚ وَمَا يَخۡدَعُوۡنَ اِلَّآ اَنۡفُسَهُمۡ وَمَا يَشۡعُرُوۡنَ ؕ ﴿٩﴾

9. वोह अल्लाह को (या'नी रसूल ﷺ को) ★और ईमान वालों को धोका देना चाहते हैं मगर (फ़िल हक़ीक़त) वोह अपने आप को ही धोका दे रहे हैं और उन्हें इस का शऊर नहीं है।

فِىۡ قُلُوۡبِهِمۡ مَّرَضٌ ۙ فَزَادَهُمُ اللّٰهُ مَرَضًا ۚ وَلَهُمۡ عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ۙ بِمَا كَانُوۡا يَكۡذِبُوۡنَ ﴿١٠﴾

10. उन के दिलों में बीमारी है, पस अल्लाह ने उन की बीमारी को और बढ़ा दिया और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है, इस वजह से कि वोह झूट बोलते थे।

★ इस मुक़ाम पर मुज़ाफ़ मह्ज़ूफ़ है जो कि "रसूल" है या'नी "युख़ादिऊनल्ला-ह" केह कर मुराद "युख़ादिऊ-न रसूलल्ला-ह" लिया गया है। अक्सर अइम्मए मुफ़स्सिरीन ने येह मा'ना बयान किया है। बतौरे हवाला मुलाहज़ा फ़रमाएं : तफ़्सीरे अल क़ुर्तुबी, अल बैज़ावी, अल बग़वी, अन्नस्फ़ी, अल कश्शाफ़, अल मज़्हरी, ज़ादुल मसीर और अल ख़ाज़िन वग़ैरह।

وَ اِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوْا فِي
الْاَرْضِ ۙ قَالُوْٓا اِنَّمَا نَحْنُ
مُصْلِحُوْنَ ﴿١١﴾

11. और जब उन से कहा जाता है कि ज़मीन में फ़साद बपा न करो, तो केहते हैं : हम ही तो इस्लाह़ करनेवाले हैं।

اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُوْنَ وَلٰكِنْ
لَّا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٢﴾

12. आगाह हो जाओ, येही लोग (ह़क़ीक़त में) फ़साद करने वाले हैं मगर उन्हें (इस का) एह़सास तक नहीं।

وَ اِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا كَمَآ اٰمَنَ
النَّاسُ قَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ كَمَآ اٰمَنَ
السُّفَهَآءُ ؕ اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَآءُ
وَلٰكِنْ لَّا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٣﴾

13. और जब उन से कहा जाता है कि (तुम भी) ईमान लाओ जैसे (दूसरे) लोग ईमान ले आए हैं, तो केहते हैं क्या हम भी (उसी तरह) ईमान ले आएं जिस तरह (वोह) बेवक़ूफ़ ईमान ले आए, जान लो, बे वक़ूफ़ (दर ह़क़ीक़त) वोह ख़ुद हैं लेकिन उन्हें (अपनी बेवक़ूफ़ी और हल्केपन का) इल्म नहीं।

وَ اِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْٓا
اٰمَنَّا ۚۖ وَ اِذَا خَلَوْا اِلٰى شَيٰطِيْنِهِمْ ۙ
قَالُوْٓا اِنَّا مَعَكُمْ ۙ اِنَّمَا نَحْنُ
مُسْتَهْزِءُوْنَ ﴿١٤﴾

14. और जब वोह (मुनाफ़िक़) अह्ले ईमान से मिलते हैं तो केहते हैं हम (भी) ईमान ले आए हैं और जब अपने शयतानों से तन्हाई में मिलते हैं तो केहते हैं हम यक़ीनन तुम्हारे साथ हैं, हम (मुसल्मानों का तो) मह़ज़ मज़ाक़ उड़ाते हैं।

اَللّٰهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَ يَمُدُّهُمْ فِيْ
طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١٥﴾

15. अल्लाह उन्हें उन के मज़ाक़ की सज़ा देता है और उन्हें ढील देता है (ताकि वोह ख़ुद अपने अंजाम तक जा पहुंचें) सो वोह ख़ुद अपनी सरकशी में भटक रहे हैं।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ
بِالْهُدٰى ۪ فَمَا رَبِحَتْ تِّجَارَتُهُمْ
وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿١٦﴾

16. येही वोह लोग हैं जिन्हों ने हिदायत के बदले गुमराही ख़रीदी लेकिन उन की तिजारत फ़ाइदे मन्द न हुई और वोह (फ़ाइदे मन्द और नफ़ा' बख़्श सौदे की) राह जानते ही न थे।

مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِى اسْتَوْقَدَ
نَارًا ۚ فَلَمَّآ اَضَآءَتْ مَا حَوْلَهٗ

17. उन की मिसाल ऐसे शख़्स की मानिन्द है जिस ने (तारीक माहौल में) आग जलाई और जब उस ने गिर्दो

ذَهَبَ اللّٰهُ بِنُوْرِهِمْ وَ تَرَكَهُمْ فِيْ ظُلُمٰتٍ لَّا يُبْصِرُوْنَ ﴿١٧﴾

नवाह़ को रौशन कर दिया तो अल्लाह ने उन का नूर सल्ब कर कर लिया और उन्हे तारीकियों में छोड़ दिया अब वोह कुछ नहीं देखते।

صُمٌّۢ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿١٨﴾

18. येह बेहरे, गूंगे और अंधे हैं पस वोह (राहे रास्त की तरफ़) नहीं लौटेंगे।

اَوْ كَصَيِّبٍ مِّنَ السَّمَآءِ فِيْهِ ظُلُمٰتٌ وَّ رَعْدٌ وَّ بَرْقٌ ۚ يَجْعَلُوْنَ اَصَابِعَهُمْ فِيْۤ اٰذَانِهِمْ مِّنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِ ؕ وَاللّٰهُ مُحِيْطٌۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿١٩﴾

19. या उन की मिसाल उस बारिश की सी है जो आस्मान से बरस रही है जिस में अंधेरियां हैं और गरज और चमक (भी) है तो वोह कड़क के बाइस़ मौत के डर से अपने कानों में उंगलियां ठोंस लेते हैं, और अल्लाह काफ़िरों को घेरे हुए है।

يَكَادُ الْبَرْقُ يَخْطَفُ اَبْصَارَهُمْ ؕ كُلَّمَاۤ اَضَآءَ لَهُمْ مَّشَوْا فِيْهِ ۙ وَ اِذَاۤ اَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوْا ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَذَهَبَ بِسَمْعِهِمْ وَ اَبْصَارِهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٠﴾

20. यूं लगता है कि बिजली उन की बीनाई उचक ले जाएगी, जब भी उन के लिए(माहौल में) कुछ चमक होती है तो उस में चलने लगते हैं और जब उन पर अंधेरा छा जाता है तो खड़े हो जाते हैं, और अगर अल्लाह चाहता तो उन की समाअ़त और बस़ारत बिल्कुल सल्ब कर लेता, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوْا رَبَّكُمُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿٢١﴾

21. ऐ लोगो ! अपने रब की इ़बादत करो जिस ने तुम्हें पैदा किया और उन लोगों को (भी) जो तुम से पेश्तर थे ता कि तुम परहेज़गार बन जाओ।

الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ فِرَاشًا وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً ۖ وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ فَلَا تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا وَّاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٢﴾

22. जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श और आस्मान को इ़मारत बनाया और आस्मानों की तरफ़ से पानी बरसाया फिर उस के ज़रीए तुम्हारे खाने के लिए (अन्वाओ़ अक़्साम के) फल पैदा किए, पस तुम अल्लाह लिए शरीक न ठेहराओ हालांकि तुम (ह़क़ीक़ते ह़ाल) जानते हो।

وَ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّنْ مِّثْلِهٖ ۪ وَادْعُوْا شُهَدَآءَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٣﴾

23. और अगर तुम इस (कलाम) के बारे में शक में मुब्तिला हो जो हम ने अपने (बरगुज़ीदह) बन्दे पर नाज़िल किया है तो इस जैसी कोई एक सूरत ही बना लाओ, और (इस काम के लिए बेशक) अल्लाह के सिवा अपने (सब)हिमायतियों को बुला लो अगर तुम (अपने शक और इन्कार में) सच्चे हो।

فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا وَلَنْ تَفْعَلُوْا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيْ وَقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ ۚۖ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٤﴾

24. फिर अगर तुम ऐसा न कर सको और हरगिज़ न कर सकोगे तो उस आग से बचो जिस का ईंधन आदमी (या'नी काफ़िर) और पथ्थर (या'नी उन के बुत) हैं, जो काफ़िरों के लिए तैयार की गई।

وَ بَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ كُلَّمَا رُزِقُوْا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِّزْقًا ۙ قَالُوْا هٰذَا الَّذِيْ رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ ۙ وَاُتُوْا بِهٖ مُتَشَابِهًا ؕ وَلَهُمْ فِيْهَآ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۙۗ وَّهُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٥﴾

25. और (ऐ हबीब !) आप उन लोगों को खुश ख़बरी सुना दें जो ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे कि उन के लिए (बहिश्त के) बाग़ात हैं जिन के नीचे नेहरें बेहती हैं, जब उन्हें उन बाग़ात में से कोई फल खाने को दिया जाएगा तो (उस की ज़ाहिरी सूरत देख कर) कहेंगे येह तो वोही फल है जो हमें (दुन्या में) पहले दिया गया था, हालांकि उन्हें (सूरत में) मिलते जुलते फल दिए गए होंगे, उन के लिए जन्नत में पाकीज़ा बीवियां (भी) होंगी और वोह उन में हमेशा रहेंगे।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَسْتَحْيٖۤ اَنْ يَّضْرِبَ مَثَلًا مَّا بَعُوْضَةً فَمَا فَوْقَهَا ؕ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَيَقُوْلُوْنَ مَاذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ۘ يُضِلُّ بِهٖ كَثِيْرًا ۙ وَّ يَهْدِيْ

26. बेशक अल्लाह इस बात से नहीं शरमाता कि (समझाने के लिए) कोई भी मिसाल बयान फ़रमाए (ख़्वाह) मच्छर की हो या (ऐसी चीज़ की जो हिक़ारत में) उस से भी बढ़ कर हो, तो जो लोग ईमान लाए वोह खूब जानते हैं कि येह मिसाल उनके रब की तरफ़ से हक़ (की निशान दही) है, और जिन्हों ने कुफ़्र इख़्तियार किया वोह (उसे सुन कर येह) केहते हैं कि ऐसी तम्सील से अल्लाह को क्या सरोकार ? (इस तरह) अल्लाह एक ही बात के ज़रीए बहोत से लोगों को गुमराह ठेहराता है और

وقف لازم

بِهٖ كَثِيْرًا ط وَ مَا يُضِلُّ بِهٖٓ اِلَّا الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٦﴾

बहुत से लोगों को हिदायत देता है, और इस से सिर्फ़ उन्ही को गुमराही में डालता है जो (पेहले ही) ना फ़रमान हैं।

الَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ ص وَ يَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ ط اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٢٧﴾

27. (येह ना फ़रमान वोह लोग हैं) जो अल्लाह के अ़हद को उस से पुख़्ता करने के बाद तोड़ते हैं। और उस (त-अ़ल्लुक़) को काटते हैं जिस को अल्लाह ने जोड़ने का हुक्म दिया है और ज़मीन में फ़साद बपा करते हैं। येही लोग नुक़्सान उठाने वाले हैं।

كَيْفَ تَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَ كُنْتُمْ اَمْوَاتًا فَاَحْيَاكُمْ ج ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٢٨﴾

28. तुम किस तरह़ अल्लाह का इन्कार करते हो हालां कि तुम बेजान थे। उस ने तुम्हें ज़िन्दगी बख़्शी, फिर तुम्हें मौत से हम किनार करेगा। और फिर तुम्हें ज़िन्दह करेगा। फिर तुम उसी की तरफ लौटाए जाओगे।

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ لَكُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ق ثُمَّ اسْتَوٰٓى اِلَى السَّمَآءِ فَسَوّٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ ط وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٢٩﴾

29. वोही है जिस ने सब कुछ जो ज़मीन में है तुम्हारे लिए पैदा किया फिर वोह (काइनात के) बालाई हिस्सों की तरफ़ मु-तवज्जेह हुवा तो उस ने उन्हें दुरुस्त कर के उन के सात आस्मानी तब्क़ात बना दिए, और वोह हर चीज़ का जाननेवाला है।

وَ اِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ جَاعِلٌ فِي الْاَرْضِ خَلِيْفَةً ط قَالُوْٓا اَتَجْعَلُ فِيْهَا مَنْ يُّفْسِدُ فِيْهَا وَ يَسْفِكُ الدِّمَآءَ ج وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ ط قَالَ اِنِّيْٓ اَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٠﴾

30. और (वोह वक़्त याद करें) जब आप के रब ने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि मैं ज़मीन में अपना नाइब बनाने वाला हूं। उन्हों ने अर्ज़ किया क्या तू ज़मीन में किसी ऐसे शख़्स को (नाइब) बनाएगा जो उस में फ़साद अंगेज़ी करेगा और ख़ूंरेज़ी करेगा ? हालां कि हम तेरी ह़म्द के साथ तस्बीह़ करते रेहते हैं। और (हमा वक़्त) पाकीज़गी बयान करते हैं। अल्लाह ने फ़रमाया : मैं वोह कुछ जानता हूं जो तुम नहीं जानते।

وَعَلَّمَ اٰدَمَ الْاَسْمَآءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ

31. और अल्लाह ने आदम (عليه السلام) को तमाम (अश्याअ

عَلَى الْمَلٰٓئِكَةِ ۙ فَقَالَ اَنْۢبِـُٔوْنِیْ بِاَسْمَآءِ
هٰٓؤُلَآءِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۳۱﴾

के) नाम सिखा दिए फिर उन्हें फ़रिश्तों के सामने पेश किया, और फ़रमाया मुझे इन अश्याअ के नाम बता दो अगर तुम (अपने ख़याल में) सच्चे हो।

قَالُوْا سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَآ اِلَّا مَا
عَلَّمْتَنَا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَلِیْمُ
الْحَكِیْمُ ﴿۳۲﴾

32. फ़रिश्तों ने अर्ज़ किया, तेरी ज़ात (हर नुक़्स से) पाक है हमें कुछ इल्म नहीं मगर उसी क़द्र जो तू ने हमें सिखाया है, बे शक तू ही (सब कुछ) जाननेवाला हिक्मत वाला है।

قَالَ یٰٓاٰدَمُ اَنْۢبِئْهُمْ بِاَسْمَآئِهِمْ ۚ
فَلَمَّآ اَنْۢبَاَهُمْ بِاَسْمَآئِهِمْ ۙ قَالَ
اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ اِنِّیْۤ اَعْلَمُ غَیْبَ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۙ وَاَعْلَمُ مَا
تُبْدُوْنَ وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ﴿۳۳﴾

33. अल्लाह ने फ़रमाया, ऐ आदम ! (अब तुम) इन्हें इन अश्याअ के नामों से आगाह करो, पस जब आदम (عليه السلام) ने उन्हें उन अश्याअ के नामों से आगाह किया तो (अल्लाह ने) फ़रमाया, क्या मैं ने तुम से नहीं कहा था कि मैं आस्मानों और ज़मीन की (सब) मुख़्फ़ी हक़ीक़तों को जानता हूं और वोह भी जानता हूं जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो।

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا
لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِیْسَ ؕ اَبٰى
وَاسْتَكْبَرَ ۫ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِیْنَ ﴿۳۴﴾

34. (और वोह वक़्त भी याद करें) जब हम ने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि आदम (عليه السلام) को सज्दह करो तो सब ने सज्दह किया सिवाय इब्लीस के, उस ने इन्कार और त-कब्बुर किया और नती-ज-तन काफ़िरों में से हो गया।

وَقُلْنَا یٰٓاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ
الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَیْثُ
شِئْتُمَا ۪ وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ
فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۳۵﴾

35. और हम ने हुक्म दिया, ऐ आदम ! तुम और तुम्हारी बीवी इस जन्नत में रिहाइश रखो और तुम दोनों इस में से जो चाहो, जहां से चाहो खाओ, मगर इस दरख़्त के क़रीब न जाना वरना हद से बढ़ने वालों में (शामिल) हो जाओगे।

فَاَزَلَّهُمَا الشَّیْطٰنُ عَنْهَا فَاَخْرَجَهُمَا
مِمَّا كَانَا فِیْهِ ۪ وَقُلْنَا اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ
لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِی الْاَرْضِ

36. फिर शैतान ने उन्हें उस जगह से हिला दिया और उन्हें उस (राहत के) मुक़ाम से जहां वोह थे अलग कर दिया, और (बिल आख़िर) हम ने हुक्म दिया कि तुम नीचे उतर जाओ, तुम एक दूसरे के दुश्मन रहोगे। अब तुम्हारे लिए

مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿٣٦﴾

ज़मीन में ही मुअय्यना मुद्दत तक जाए क़रार है और नफ़ा' उठाना मुक़द्दर कर दिया गया है।

فَتَلَقّٰۤى اٰدَمُ مِنْ رَّبِّهٖ كَلِمٰتٍ فَتَابَ عَلَيْهِؕ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿٣٧﴾

37. फिर आदम (عليه السلام) ने अपने रब से (आ़जिज़ी और मुआ़फ़ी के) चन्द कलिमात सीख लिए पस अल्लाह ने उन की तौबा क़ुबूल फ़रमा ली, बेशक वोही बहुत तौबा क़ुबूल करनेवाला महरबान है।

قُلْنَا اهْبِطُوْا مِنْهَا جَمِيْعًاۚ فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّىْ هُدًى فَمَنْ تَبِعَ هُدَاىَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٣٨﴾

38. हम ने फ़रमाया, तुम सब जन्नत से उतर जाओ, फिर अगर तुम्हारे पास मेरी तरफ़ से कोई हिदायत पहुंचे तो जो भी मेरी हिदायत की पैरवी करेगा, न उन पर कोई ख़ौफ़ (तारी) होगा और न वोह ग़मगीन होंगे।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَاۤ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٣٩﴾ ع

39. और जो लोग कुफ़्र करेंगे और हमारी आयतों को झुटलाएंगे तो वोही दोज़ख़ी होंगे , वोह उस में हमेशा रहेंगे।

يٰبَنِىْۤ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِىَ الَّتِىْۤ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَوْفُوْا بِعَهْدِىْۤ اُوْفِ بِعَهْدِكُمْۚ وَاِيَّاىَ فَارْهَبُوْنِ ﴿٤٠﴾

40. ऐ औलादे या'क़ूब ! मेरे वोह इन्आ़म याद करो जो मैं ने तुम पर किए और तुम मेरे साथ किया हुवा वा'दा पूरा करो मैं तुम्हारे साथ किया हुवा वा'दा पूरा करूंगा, और मुझ ही से डरा करो।

وَاٰمِنُوْا بِمَاۤ اَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكُوْنُوْۤا اَوَّلَ كَافِرٍۭ بِهٖ ۖ وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِىْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۗ وَّاِيَّاىَ فَاتَّقُوْنِ ﴿٤١﴾

41. और इस किताब पर ईमान लाओ जो मैं ने (अपने रसूल मुहम्मद ﷺ पर) उतारी (है, हालांकि) येह उसकी (अस्लन) तस्दीक़ करती है जो तुम्हारे पास है और तुम ही सब से पहले उस के मुन्किर न बनो और मेरी आयतों को (दुनिया की) थोड़ी सी क़ीमत पर फ़रोख़्त न करो और मुझ ही से डरते रहो।

وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوا الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٤٢﴾

42. और हक़ की आमेज़िश बातिल के साथ न करो और न ही हक़ को जान बूझ कर छुपाओ।

وَ اَقِيۡمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَارۡكَعُوۡا مَعَ الرّٰكِعِيۡنَ ﴿۴۳﴾

43. और नमाज़ क़ाइम रखखो और ज़कात दिया करो और रुकूअ़ करने वालों के साथ (मिल कर) रुकूअ़ किया करो।

اَتَاۡمُرُوۡنَ النَّاسَ بِالۡبِرِّ وَ تَنۡسَوۡنَ اَنۡفُسَكُمۡ وَ اَنۡتُمۡ تَتۡلُوۡنَ الۡكِتٰبَ ؕ اَفَلَا تَعۡقِلُوۡنَ ﴿۴۴﴾

44. क्या तुम दूसरे लोगों को नेकी का हुक्म देते हो और अपने आप को भूल जाते हो हालां कि तुम (अल्लाह की) किताब भी पढ़ते हो, तो क्या तुम नहीं सोचते?

وَاسۡتَعِيۡنُوۡا بِالصَّبۡرِ وَالصَّلٰوةِ ؕ وَ اِنَّهَا لَكَبِيۡرَةٌ اِلَّا عَلَى الۡخٰشِعِيۡنَ ۙ﴿۴۵﴾

45. और सब्र और नमाज़ के ज़रीए (अल्लाह से) मदद चाहो, और बेशक येह गिरां है मगर (उन) आ़जिज़ों पर (हरगिज़) नहीं (जिन के दिल महब्बते इलाही से ख़स्ता और ख़शिय्यते इलाही से शिकस्ता हैं।)

الَّذِيۡنَ يَظُنُّوۡنَ اَنَّهُمۡ مُّلٰقُوۡا رَبِّهِمۡ وَاَنَّهُمۡ اِلَيۡهِ رٰجِعُوۡنَ ﴿۴۶﴾ ع

46. (येह वोह लोग हैं) जो यक़ीन रखते हैं कि वोह अपने रब से मुलाक़ात करने वाले हैं और वोह उसी की तरफ़ लौट कर जानेवाले हैं।

يٰبَنِىۡٓ اِسۡرَآءِيۡلَ اذۡكُرُوۡا نِعۡمَتِىَ الَّتِىۡٓ اَنۡعَمۡتُ عَلَيۡكُمۡ وَاَنِّىۡ فَضَّلۡتُكُمۡ عَلَى الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿۴۷﴾

47. ऐ औलादे या'कूब! मेरे वोह इन्आ़म याद करो जो मैं ने तुम पर किए और येह कि मैं ने तुम्हें (इस ज़माने में) सब लोगों पर फ़ज़ीलत दी।

وَ اتَّقُوۡا يَوۡمًا لَّا تَجۡزِىۡ نَفۡسٌ عَنۡ نَّفۡسٍ شَيۡـًٔا وَّ لَا يُقۡبَلُ مِنۡهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا يُؤۡخَذُ مِنۡهَا عَدۡلٌ وَّ لَا هُمۡ يُنۡصَرُوۡنَ ﴿۴۸﴾

48. और उस दिन से डरो जिस दिन कोई जान किसी दूसरे की तरफ़ से कुछ बदला न दे सकेगी और न उस की तरफ़ से (किसी ऐसे शख़्स की) कोई सिफ़ारिश कुबूल की जाएगी(जिसे इज़्ने इलाही हासिल न होगा) और न उस की तरफ़ से जान (छुड़ाने के लिए) कोई मुआ़वज़ा कुबूल किया जाएगा और न (अम्रे इलाही) के ख़िलाफ़ उन की इम्दाद की जा सकेगी।

وَ اِذۡ نَجَّيۡنٰكُمۡ مِّنۡ اٰلِ فِرۡعَوۡنَ يَسُوۡمُوۡنَكُمۡ سُوۡٓءَ الۡعَذَابِ يُذَبِّحُوۡنَ اَبۡنَآءَكُمۡ وَيَسۡتَحۡيُوۡنَ نِسَآءَكُمۡ ؕ وَ

49. और वोह वक़्त भी याद करो जब हम ने तुम्हें क़ौमे फ़िरऔ़न से नजात बख़्शी जो तुम्हें इन्तिहाई सख़्त अ़ज़ाब देते थे तुम्हारे बेटों को ज़ब्ह करते और तुम्हारी बेटियों को ज़िन्दह रखते थे, और

فِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ﴿٤٩﴾

उस में तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से बड़ी (कड़ी) आज़माइश थी।

وَاِذْ فَرَقْنَا بِكُمُ الْبَحْرَ فَاَنْجَيْنٰكُمْ وَاَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿٥٠﴾

50. और जब हम ने तुम्हें (बचाने कि लिए) दरिया को फाड़ दिया सो हम ने तुम्हें (इस तरह) नजात अ़ता की और (दूसरी तरफ़) हम ने तुम्हारी आंखों के सामने क़ौमे फ़िरऔ़न को ग़र्क़ कर दिया।

وَاِذْ وٰعَدْنَا مُوْسٰٓى اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿٥١﴾

51. और (वोह वक़्त भी याद करो) जब हम ने मूसा (عليه السلام) से चालीस रातों का वा'दा फ़रमाया था फिर तुम ने मूसा (عليه السلام) के चिल्लए ए'तिकाफ़ में जाने के बा'द बछड़े को अपना मा'बूद बना लिया और तुम वाक़ेई बड़े ज़ालिम थे।

ثُمَّ عَفَوْنَا عَنْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٥٢﴾

52. फिर हम ने उस के बा'द भी तुम्हें मुआ़फ़ कर दिया ता कि तुम शुक्रगुज़ार हो जाओ।

وَاِذْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَالْفُرْقَانَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿٥٣﴾

53. और जब हम ने मूसा (عليه السلام) को किताब और हक़्क़ो बातिल में फ़र्क़ करनेवाला मो'जिज़ह अ़ता किया ता कि तुम राहे हिदायत पाओ।

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ اَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ الْعِجْلَ فَتُوْبُوْٓا اِلٰى بَارِئِكُمْ فَاقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۭ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ عِنْدَ بَارِئِكُمْ ۭ فَتَابَ عَلَيْكُمْ ۭ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿٥٤﴾

54. और जब मूसा (عليه السلام) ने अपनी क़ौम से कहा, ऐ मेरी क़ौम बे शक तुम ने बछड़े को अपना मा'बूद बना कर अपनी जानों पर बड़ा ज़ुल्म किया है तो अब अपने पैदा फ़रमानेवाले (ह़क़ीक़ी रब) के हुज़ूर तौबा करो पस (आपस में) एक दूसरे को क़त्ल कर डालो (इस तरह कि जिन्हों ने बछड़े की परस्तिश नहीं की और अपने दीन पर क़ाइम रहे हैं वोह बछड़े की परस्तिश कर के दीन से फिर जाने वालों को सज़ा के तौर पर क़त्ल कर दें।) येही (अ़मल) तुम्हारे लिए तुम्हारे ख़ालिक़ के नज़दीक बेहतरीन (तौबा) है, फिर उस ने तुम्हारी तौबा क़ुबूल फ़रमा ली, यक़ीनन वोह बड़ा ही तौबा क़ुबूल करनेवाला मेहरबान है।

وَاِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى نَرَى اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْكُمُ الصّٰعِقَةُ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿۵۵﴾

55. और जब तुम ने कहा, ऐ मूसा हम आप पर हरगिज़ ईमान न लाएंगे यहां तक कि हम अल्लाह को (आंखों के सामने) बिल्कुल आश्कारा देख लें पस (इस पर) तुम्हें कड़क ने आ लिया (जो तुम्हारी मौत का बाइस बन गई) और तुम (खुद येह मन्ज़र) देखते रहे।

ثُمَّ بَعَثْنٰكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَوْتِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۵۶﴾

56. फिर हम ने तुम्हारे मरने के बाद तुम्हें (दोबारा) ज़िन्दह किया ता कि तुम (हमारा) शुक्र अदा करो।

وَ ظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ؕ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ؕ وَ مَا ظَلَمُوْنَا وَ لٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿۵۷﴾

57. और (याद करो) जब हम ने तुम पर (वादिए तीह में) बादल का साया किए रखा और हम ने तुम पर मन्नो सल्वा उतारा कि तुम हमारी अ़ता की हुई पाकीज़ह चीज़ों में से खाओ, सो उन्हों ने(ना फ़रमानी और ना शुक्री कर के) हमारा कुछ नहीं बिगाड़ा मगर अपनी ही जानों पर ज़ुल्म करते रहे।

وَ اِذْ قُلْنَا ادْخُلُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّ قُوْلُوْا حِطَّةٌ نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطٰيٰكُمْ ؕ وَ سَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۵۸﴾

58. और (याद करो) जब हम ने फ़रमाया : इस शहर में दाख़िल हो जाओ और इस में जहां से चाहो ख़ूब जी भर के खाओ और येह कि शहर के दरवाज़े में सजदह करते हुए दाख़िल होना और येह केहते जाना (ऐ हमारे रब हम सब ख़ताओं की बख़्शिश चाहते हैं (तो) हम तुम्हारी गुज़िश्ता ख़ताएं मुआफ़ फ़रमा देंगे, और अ़लावह इस के नेकूकारों को मज़ीद लुत्फ़ो करम से नवाज़ेंगे।

فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا قَوْلًا غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ فَاَنْزَلْنَا عَلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿۵۹﴾ ع

59. फिर उन ज़ालिमों ने उस क़ौल को जो उन से कहा गया था एक और कलिमे से बदल डाला सो हम ने (उन) ज़ालिमों पर आस्मान से (बसूरते ताऊ़न) सख़्त आफ़त उतार दी इस वजह से कि वोह (मुसलसल) हुक्म अ़दूली कर रहे थे।

وَاِذِ اسْتَسْقٰى مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ فَقُلْنَا
اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ؕ فَانْفَجَرَتْ
مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ؕ قَدْ عَلِمَ
كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ؕ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا
مِنْ رِّزْقِ اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ
مُفْسِدِيْنَ ﴿٦٠﴾

60. और (वोह वक़्त भी याद करो) जब मूसा (عليه السلام) ने अपनी क़ौम के लिए पानी मांगा तो हम ने फ़रमाया : अपना अ़सा उस पथ्थर पर मारो, फिर उस (पथ्थर) से बारह चश्मे फूट पडे, वाक़िअ़तन हर गिरोहने अपना अपना घाट पेहचान लिया, (हम ने फ़रमाया) अल्लाह के (अ़ता कर्दह) रिज़्क़ में से खाओ और पियो लेकिन ज़मीन में फ़साद अंगेज़ी न करते फिरो।

وَ اِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نَّصْبِرَ عَلٰى
طَعَامٍ وَّاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ
لَنَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ مِنْۢ بَقْلِهَا وَ
قِثَّآئِهَا وَفُوْمِهَا وَعَدَسِهَا وَبَصَلِهَا ؕ
قَالَ اَتَسْتَبْدِلُوْنَ الَّذِىْ هُوَ اَدْنٰى
بِالَّذِىْ هُوَ خَيْرٌ ؕ اِهْبِطُوْا مِصْرًا
فَاِنَّ لَكُمْ مَّا سَاَلْتُمْ ؕ وَ ضُرِبَتْ
عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ ق وَ بَآءُوْ
بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا
يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَ يَقْتُلُوْنَ
النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ بِمَا
عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿٦١﴾

61. और जब तुम ने कहा ऐ मूसा ! हम फ़क़त एक खाने (या'नी मन्नो सल्वा) पर हरगिज़ सब्र नहीं कर सक्ते तो आप अपने रब से (हमारे हक़ में) दुआ़ कीजिए कि वोह हमारे लिए ज़मीन से उगने वाली चीज़ों में से साग और ककड़ी और गेहूं और मसूर और प्याज़ पैदा कर दे, (मूसा عليه السلام ने अपनी क़ौम से) फ़रमाया : क्या तुम उस चीज़ को जो अदना है बेहतर चीज़ के बदले मांगते हो?(अगर तुम्हारी येही ख़्वाहिश है तो) किसी भी शहर में जा उतरो यक़ीनन (वहां) तुम्हारे लिए वोह कुछ (मुयस्सर) होगा जो तुम मांगते हो, और उन पर ज़िल्लत और मोह्ताजी मुसल्लत़ कर दी गई, और वोह अल्लाह के ग़ज़ब में लौट गए, येह इस वजह से (हुवा) कि वोह अल्लाह की आयतों का इन्कार किया करते और अंबियाअ को ना हक़ क़त्ल करते थे, और येह इस वजह से भी हुवा कि वोह ना फ़रमानी किया करते और (हमेशा) हद से बढ़ जाते थे।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ الَّذِيْنَ هَادُوْا
وَالنَّصٰرٰى وَ الصّٰبِـِٕيْنَ مَنْ اٰمَنَ

62. बेशक जो लोग ईमान लाए और जो यहूदी हुए और (जो) नसारा और साबी (थे उन में से) जो (भी) अल्लाह

بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٢﴾

पर और आख़िरत के दिन पर ईमान लाया और उसने अच्छे अ़मल किए, तो उन के लिए उन के रब के हां उन का अज्र है, उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न वोह रंजीदह होंगे।

وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّوْرَ ؕ خُذُوْا مَاۤ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿٦٣﴾

63. और (याद करो) जब हम ने तुम से पुख़्ता अ़हद लिया और तुम्हारे ऊपर तूर को उठा खड़ा किया, कि जो कुछ हम ने तुम्हें दिया है उसे मज़बूती से पकड़े रहो और जो कुछ उस किताब तौरात) में (लिखा) है उसे याद रखो ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ।

ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ۚ فَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ لَكُنْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٦٤﴾

64. फिर इस (अ़हद और तंबीह) के बाद भी तुम ने रू गर्दानी की, पस अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उस की रह्मत न होती तो तुम यक़ीनन तबाह हो जाते।

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِيْنَ اعْتَدَوْا مِنْكُمْ فِى السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا قِرَدَةً خٰسِـِٕيْنَ ۚ ﴿٦٥﴾

65. और (ऐ यहूद !) तुम यक़ीनन उन लोगों से ख़ूब वाक़िफ़ हो जिन्हों ने तुम में से हफ़्ते के दिन (के अह्काम के बारे में) सर कशी की थी तो हम ने उन से फ़रमाया कि तुम धुत्कारे हुए बन्दर बन जाओ।

فَجَعَلْنٰهَا نَكَالًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهَا وَمَا خَلْفَهَا وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٦٦﴾

66. पस हम ने इस (वाक़िए) को उस ज़माने और उस के बा'द वाले लोगों के लिए (बाइसे) इब्रत और परहेज़गारों के लिए (मूजिबे) नसीहत बना दिया।

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖۤ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُكُمْ اَنْ تَذْبَحُوْا بَقَرَةً ؕ قَالُوْۤا اَتَتَّخِذُنَا هُزُوًا ؕ قَالَ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿٦٧﴾

67. और (वोह वाक़िआ़ भी याद करो) जब मूसा (عليه السلام) ने अपनी क़ौम से फ़रमाया कि बेशक अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि एक गाय ज़बह़ करो, (तो) वोह बोले क्या आप हमें मस्ख़रा बनाते हैं ? मूसा (عليه السلام) ने फ़रमाया : अल्लाह की पनाह मांगता हूं (इस से कि मैं जाहिलों में से हो जाऊं)

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا

68. (तब) उन्हों ने कहा : आप हमारे लिए अपने रब से दुआ़ करें कि वोह हम पर वाज़ेह़ कर दे कि (वोह) गाय

هِيَ ۚ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا فَارِضٌ وَّلَا بِكْرٌ ۚ عَوَانٌ بَيْنَ ذَٰلِكَ ۚ فَافْعَلُوا مَا تُؤْمَرُونَ ﴿٦٨﴾

कैसी हो ? (मूसा عليه السلام ने) कहा : बे शक वोह फ़रमाता है कि वोह गाय न तो बूढ़ी हो और न बिल्कुल कम उ़म्र (अवसर), बल्कि दरमियानी उ़म्र की (रास) हो, पस अब ता'मील करो जिस का तुम्हें हुक्म दिया गया है।

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّن لَّنَا مَا لَوْنُهَا ۚ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ صَفْرَاءُ فَاقِعٌ لَّوْنُهَا تَسُرُّ النَّاظِرِينَ ﴿٦٩﴾

69. वोह (फिर) बोले : अपने रब से हमारे ह़क़ में दुआ़ करें वोह हमारे लिए वाज़ेह़ कर दे कि उस का रंग कैसा हो? (मूसा عليه السلام ने) कहा : वोह फ़रमाता है कि वोह गाय ज़र्द रंग की हो, उस की रंगत ख़ूब गेहरी हो (ऐसी जाज़िब नज़र हो कि) देखने वालों को बहुत भली लगे।

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّن لَّنَا مَا هِيَ ۙ إِنَّ الْبَقَرَ تَشَابَهَ عَلَيْنَا ۚ وَإِنَّا إِن شَاءَ اللَّهُ لَمُهْتَدُونَ ﴿٧٠﴾

70. अब उन्हों ने कहा : आप हमारे लिए अपने रब से दरख़ास्त कीजिए कि वोह हम पर वाज़ेह़ फ़रमा दे कि वोह कौन सी गाय है ? (क्यूं कि) हम पर गाय मुश्तबह हो गई है, और यक़ीनन अगर अल्लाह ने चाहा तो हम ज़रूर हिदायत याफ़्ता हो जाएंगे।

قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا ذَلُولٌ تُثِيرُ الْأَرْضَ وَلَا تَسْقِي الْحَرْثَ ۚ مُسَلَّمَةٌ لَّا شِيَةَ فِيهَا ۚ قَالُوا الْآنَ جِئْتَ بِالْحَقِّ ۚ فَذَبَحُوهَا وَمَا كَادُوا يَفْعَلُونَ ﴿٧١﴾

71. मूसा (عليه السلام ने कहा) अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है (वोह कोई घटिया गाय नहीं बल्कि) यक़ीनी तौर पर ऐसी आ'ला गाय हो जिस से न ज़मीन में हल चलाने की मेहनत ली जाती हो और न खेती को पानी देती हो, बिल्कुल तन्दुरुस्त हो उस में कोई दाग़ धब्बा भी न हो, उन्हों ने कहा : अब आप ठीक बात लाए (हैं), फिर उन्हों ने उस को ज़बह़ किया हालां कि वोह ज़बह़ करते मा'लूम न होते थे।

وَإِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادَّارَأْتُمْ فِيهَا ۖ وَاللَّهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنتُمْ تَكْتُمُونَ ﴿٧٢﴾

72. और जब तुम ने एक शख़्स को क़त्ल कर दिया फिर तुम आपस में उस (के इल्ज़ाम) में झगड़ने लगे और अल्लाह (वोह बात) ज़ाहिर फ़रमाने वाला था जिसे तुम छुपा रहे थे।

فَقُلْنَا اضْرِبُوهُ بِبَعْضِهَا ۚ كَذَٰلِكَ يُحْيِي اللَّهُ الْمَوْتَىٰ ۙ وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ

73. फिर हम ने हुक्म दिया कि उस (मुर्दह) पर इस (गाय) का एक टुकड़ा मारो, इसी तरह अल्लाह मुर्दों को ज़िन्दह फ़रमाता है । (या क़ियामत के दिन मुर्दों को

لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٧٣﴾

ثُمَّ قَسَتْ قُلُوْبُكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ اَوْ اَشَدُّ قَسْوَةً ۭ وَاِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْاَنْهٰرُ ۭ وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْمَاۗءُ ۭ وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ۭ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٧٤﴾

اَفَتَطْمَعُوْنَ اَنْ يُّؤْمِنُوْا لَكُمْ وَقَدْ كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَسْمَعُوْنَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ يُحَرِّفُوْنَهٗ مِنْۢ بَعْدِ مَا عَقَلُوْهُ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٥﴾

وَاِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْٓا اٰمَنَّا ۚ وَاِذَا خَلَا بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ قَالُوْٓا اَتُحَدِّثُوْنَهُمْ بِمَا فَتَحَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ لِيُحَاۗجُّوْكُمْ بِهٖ عِنْدَ رَبِّكُمْ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٧٦﴾

ज़िन्दह करेगा) और तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है ता कि तुम अक़्लो शऊर से काम लो।

74. फिर उस के बा'द भी) तुम्हारे दिल सख़्त हो गए चुनांचे वोह (सख़्ती में) पथ्थरों जैसे (हो गए) हैं या उन से भी ज़ियादह सख़्त(हो चुके हैं, इस लिए कि) बे शक पथ्थरों में (तो) बा'ज़ ऐसे भी हैं जिन से नेहरें फूट निकल्ती हैं, और यक़ीनन उन में से बा'ज़ वोह (पथ्थर) भी हैं जो फट जाते हैं तो उन में से पानी उबल पड़ता है, और बेशक उन में से बा'ज़ ऐसे भी हैं जो अल्लाह के ख़ौफ़ से गिर पड़ते हैं, (अफ़्सोस तुम्हारे दिलों में इस क़दर नरमी, ख़स्तगी और शिकस्तगी भी नहीं रही) और अल्लाह तुम्हारे कामों से बे ख़बर नहीं।

75. (ऐ मुसल्मानो) क्या तुम येह त-वक़्क़ो' रखते हो कि वोह (यहूदी) तुम पर यक़ीन कर लेंगे जब कि उनमें से एक गिरोह के लोग ऐसे (भी) थे कि अल्लाह का कलाम (तौरात) सुनते फिर उसे समझने के बा'द (खुद) बदल देते हालांकि वोह खूब जानते थे (कि हक़ीक़त क्या है और वोह क्या कर रहे हैं)

76. और(उन का हाल तो येह हो चुका है कि) जब अेह्ले ईमान से मिलते हैं (तो) केहते हैं हम (भी तुम्हारी तरह हज़रत मुहम्मद ﷺ पर) ईमान ले आए हैं और जब आपस में एक दूसरे के साथ तन्हाई में होते हैं (तो) केहते हैं क्या तुम उन (मुसल्मानों) से (नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां ﷺ की रिसालत और शान के बारे में) वोह बातें बयान कर देते हो जो अल्लाह ने तुम पर (तौरात के ज़रीए) ज़ाहिर की हैं ता कि उस से वोह तुम्हारे रब के हुज़ूर तुम्हीं पर हुज्जत क़ाइम करें, क्या तुम (इत्नी) अक़्ल (भी) नहीं रखते ?

اَوَلَا يَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا
يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٧٧﴾

77. क्या वोह नहीं जानते कि अल्लाह को वोह सब कुछ मा'लूम है जो वोह छुपाते हैं और जो ज़ाहिर करते हैं।

وَمِنْهُمْ اُمِّيُّوْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ
الْكِتٰبَ اِلَّآ اَمَانِيَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا
يَظُنُّوْنَ ﴿٧٨﴾

النصف

78. और उन (यहूद) में से बा'ज़) अनपढ़ (भी) हैं जिन्हें (सिवाए सुनी सुनाई झूटी उम्मीदों के) किताब (के मा'नी व मफ़्हूम) का कोई इल्म ही नहीं वोह (किताब को) सिर्फ़ ज़बानी पढ़ना जानते हैं येह लोग महज़ वह्मो गुमान में पड़े रेहते हैं।

فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ يَكْتُبُوْنَ الْكِتٰبَ
بِاَيْدِيْهِمْ ثُمَّ يَقُوْلُوْنَ هٰذَا مِنْ
عِنْدِ اللّٰهِ لِيَشْتَرُوْا بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا
فَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا كَتَبَتْ اَيْدِيْهِمْ وَ
وَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا يَكْسِبُوْنَ ﴿٧٩﴾

79. पस ऐसे लोगों के लिए बड़ी ख़राबी है जो अपने ही हाथों से किताब लिखते हैं, फिर केहते हैं कि येह अल्लाह की तरफ़ से है ता कि उस के इवज़ थोड़े से दाम कमा लें, सो उन के लिए उस (किताब की वजह से) हलाकत है जो उन के हाथों ने तेहरीर की और उस मुआवज़े की वजह) से तबाही है जो वोह कमा रहे हैं।

وَقَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّآ اَيَّامًا
مَّعْدُوْدَةً قُلْ اَتَّخَذْتُمْ عِنْدَ اللّٰهِ
عَهْدًا فَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ عَهْدَهٗٓ اَمْ
تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٠﴾

80. और वोह यहूद येह भी केहते हैं कि हमें दोज़ख़ की आग हरगिज़ नहीं छुएगी सिवाए गिन्ती के चन्द दिनों के, (ज़रा) आप (उन से) पूछें क्या तुम अल्लाह से कोई (ऐसा) वा'दा ले चुके हो? फिर तो वोह अपने वा'दे के ख़िलाफ़ हरगिज़ न करेगा या तुम अल्लाह पर यूं ही (वोह) बोहतान बांधते हो जो तुम खुद भी नहीं जानते।

بَلٰى مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً وَّاَحَاطَتْ
بِهٖ خَطِيْٓئَتُهٗ فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ
النَّارِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٨١﴾

81. हां वाक़ई जिस ने बुराई इख़्तियार की और उस के गुनाहों ने उस को हर तरफ़ से घेर लिया तो वोही लोग दोज़ख़ी हैं, वोह उस में हमेशा रेहनेवाले हैं।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

82. और जो लोग ईमान लाए और (उन्हों ने) नेक अमल

الصّٰلِحٰتِ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۸۲﴾

किए तो वोही लोग जन्नती हैं, वोह उस में हमेशा रेहने वाले हैं।

وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ لَا تَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ ۟ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّ ذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَقُوْلُوْا لِلنَّاسِ حُسْنًا وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ؕ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْكُمْ وَاَنْتُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿۸۳﴾

83. और (याद करो) जब हम ने अवलादे या'क़ूब से पुख़्ता वा'दा लिया कि अल्लाह के सिवा (किसी और की) इबादत न करना, और मां बाप के साथ अच्छा सुलूक करना और क़राबतदारों और यतीमों और मोहताजों के साथ भी (भलाई करना) और आ़म लोगों से (भी नरमी और खुश खुल्क़ी के साथ) नेकी की बात केहना और नमाज़ क़ाइम रखना और ज़कात देते रेहना, फिर तुम में से चन्द लोगों के सिवा सारे(इस अ़हद से) रू गर्दां हो गए और तुम (हक़ से) गुरेज़ ही करनेवाले हो।

وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ لَا تَسْفِكُوْنَ دِمَآءَكُمْ وَلَا تُخْرِجُوْنَ اَنْفُسَكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ ثُمَّ اَقْرَرْتُمْ وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ ﴿۸۴﴾

84. और जब हमने तुम से (येह) पुख़्ता अ़हद(भी) लिया कि तुम (आपस में) एक दूसरे का खून नहीं बहाओगे और न अपने लोगों को (अपने घरों और बस्तियों से निकाल कर) जिला वतन करोगे फिर तुम ने (इस अम्र का) इक़रार कर लिया और तुम (उस की) गवाही (भी) देते हो।

ثُمَّ اَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ تَقْتُلُوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَتُخْرِجُوْنَ فَرِيْقًا مِّنْكُمْ مِّنْ دِيَارِهِمْ ۫ تَظٰهَرُوْنَ عَلَيْهِمْ بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ؕ وَاِنْ يَّاْتُوْكُمْ اُسٰرٰى تُفٰدُوْهُمْ وَهُوَ مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ اِخْرَاجُهُمْ ؕ اَفَتُؤْمِنُوْنَ بِبَعْضِ الْكِتٰبِ وَتَكْفُرُوْنَ بِبَعْضٍ ۚ فَمَا

85. फिर तुम ही वोह लोग हो कि अपनों को क़त्ल कर रहे हो और अपने ही एक गिरोह को उन के वतन से बाहर निकाल रहे हो और (मुस्तज़ाद येह कि) उन के ख़िलाफ़ गुनाह और ज़ियादती के साथ (उन के दुश्मनों की) मदद भी करते हो और अगर वोह क़ैदी हो कर तुम्हारे पास आ जाएं तो उन का फ़िद्या दे कर छुड़ा लेते हो (ता कि वोह तुम्हारे एहसान मन्द रहें) हालांकि उन का वतन से निकाला जाना भी तुम पर हराम कर दिया गया था, क्या तुम किताब के बा'ज़ हिस्सों पर ईमान रखते हो और बा'ज़ का इन्कार करते हो? पस तुम में से जो शख़्स ऐसा

جَزَآءُ مَنْ يَّفْعَلُ ذٰلِكَ مِنْكُمْ اِلَّا خِزْيٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُرَدُّوْنَ اِلٰٓى اَشَدِّ الْعَذَابِ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٨٥﴾

करे उस की क्या सज़ा हो सक्ती है? सिवाए इस के कि दुन्या की ज़िन्दगी में ज़िल्लत (और रुस्वाई) हो, और क़ियामत के दिन (भी ऐसे लोग) सख़्त तरीन अ़ज़ाब की तरफ़ लौटाए जाएंगे, और अल्लाह तुम्हारे कामों से बे ख़बर नहीं।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ۫ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٨٦﴾

86. येही वोह लोग हैं जिन्हों ने आखिरत के बदले में दुन्या की ज़िन्दगी ख़रीद ली है, पस न उन पर से अ़ज़ाब हल्का किया जाएगा और न ही उन को मदद दी जाएगी।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَقَفَّيْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ بِالرُّسُلِ ۫ وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ؕ اَفَكُلَّمَا جَآءَكُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰٓى اَنْفُسُكُمُ اسْتَكْبَرْتُمْ ۚ فَفَرِيْقًا كَذَّبْتُمْ ۫ وَفَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ ﴿٨٧﴾

87. और बेशक हम ने मूसा (عليه السلام) को किताब(तौरात) अ़ता की और उन के बा'द हम ने पय दर पय (बहुत से) पयग़म्बर भेजे, और हम ने मरयम (عليها السلام) के फ़रज़न्द ईसा (عليه السلام) को (भी) रौशन निशानियां अ़ता कीं और हम ने पाक रूह के ज़रीए उन की ताईद (और मदद) की, तो क्या (हुवा) जब भी कोई पयग़म्बर तुम्हारे पास वोह (अह़काम) लाया जिन्हें तुम्हारे नफ़्स पसन्द नहीं करते थे तो तुम (वहीं) अकड़ गए और बा'ज़ों को तुम ने झुटलाया और बा'ज़ों को तुम क़त्ल करने लगे।

وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ؕ بَلْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيْلًا مَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٨٨﴾

88. और यहूदियों ने कहा : हमारे दिलों पर ग़िलाफ़ हैं, (ऐसा नहीं) बल्कि उन के कुफ़्र के बाइस अल्लाह ने उन पर ला'नत कर दी है सो वोह बहुत ही कम ईमान रखते हैं।

وَلَمَّا جَآءَهُمْ كِتٰبٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ ۙ وَكَانُوْا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُوْنَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ فَلَمَّا جَآءَهُمْ مَّا عَرَفُوْا

89. और जब उनके पास अल्लाह की तरफ़ से वोह किताब (क़ुर्आन) आई जो उस किताब (तौरात) की (अस्लन) तस्दीक़ करनेवाली है जो उन के पास मौजूद थी, हालांकि इस से पहले वोह खुद (नबिय्ये आखिरुज़्ज़मां ह़ज़रत मुह़म्मद ﷺ और उन पर उतरने वाली किताब क़ुर्आन'' के वसीले से) काफ़िरों पर

كَفَرُوْا بِهٖ ۫ فَلَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٨٩﴾

फ़तेहयाबी (की दुआ़) मांगते थे, सो जब उनके पास वोही नबी (हज़रत मुहम्मद ﷺ अपने ऊपर नाज़िल होने वाली किताब क़ुरआन के साथ) तशरीफ़ ले आया जिसे वोह (पहले ही से) पेहचानते थे तो उसी के मुन्किर हो गए, पस (ऐसे दानिस्ता) इन्कार करने वालों पर अल्लाह की ला'नत है।

بِئْسَمَا اشْتَرَوْا بِهٖٓ اَنْفُسَهُمْ اَنْ يَّكْفُرُوْا بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بَغْيًا اَنْ يُّنَزِّلَ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۚ فَبَآءُوْ بِغَضَبٍ عَلٰى غَضَبٍ ۭ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿٩٠﴾

90. उन्हों ने अपनी जानों का क्या बुरा सौदा किया कि अल्लाह की नाज़िल कर्दह किताब का इन्कार कर रहे हैं, महज़ इस हसद में कि अल्लाह अपने फ़ज़्ल से अपने बन्दों में जिस पर चाहता है (वही) नाज़िल फ़रमाता है, पस वोह ग़ज़ब दर ग़ज़ब के सज़ावार हुए, और काफ़िरों के लिए ज़िल्लत अंगेज़ अ़ज़ाब है।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا نُؤْمِنُ بِمَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَيَكْفُرُوْنَ بِمَا وَرَآءَهٗ ۗ وَهُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمْ ۭ قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُوْنَ اَنْۢبِيَآءَ اللّٰهِ مِنْ قَبْلُ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٩١﴾

91. और जब उन से कहा जाता है इस (किताब) पर ईमान लाओ जिसे अल्लाह ने (अब) नाज़िल फ़रमाया है (तो) केहते हैं : हम सिर्फ़ उस किताब पर ईमान रखते हैं जो हम पर नाज़िल की गई, और वोह इस के अ़लावा का इन्कार करते हैं, हालांकि वोह (क़ुर्आन भी) ह़क़ है (और) उस (किताब)की (भी) तस्दीक़ करता है जो उन के पास है, आप (उन से) दर्याफ़्त फ़रमाएं कि फिर तुम इस से पहले अंबिया को क्यों क़त्ल करते रहे हो अगर तुम वाक़ेई अपनी ही किताब पर) ईमान रखते थे।

وَلَقَدْ جَآءَكُمْ مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿٩٢﴾

92. और (सूरते ह़ाल येह है कि) तुम्हारे पास (खुद) मूसा (عليه السلام) खुली निशानियां लाए फिर तुम ने उन के पीछे बछड़े को मा'बूद बना लिया और तुम (ह़क़ीक़त में) हो ही जफ़ाकार।

وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا

93. और जब हम ने तुम से पुख़्ता अ़हद लिया और हम

فَوْقَكُمُ الطُّوْرَ ؕ خُذُوْا مَاۤ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاسْمَعُوْا ؕ قَالُوْا سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا ۗ وَاُشْرِبُوْا فِىْ قُلُوْبِهِمُ الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ ؕ قُلْ بِئْسَمَا يَاْمُرُكُمْ بِهٖۤ اِيْمَانُكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٩٣﴾

ने तुम्हारे ऊपर तूर को उठा खड़ा किया (येह फ़रमा कर कि) इस किताब को मज़्बूती से थामे रखो जो हम ने तुम्हें अ़ता की है और (हमारा हुक्म) सुनो, तो (तुम्हारे बड़ों ने) कहा : हम ने सुन लिया मगर माना नहीं, और उन के दिलों में उन के कुफ़्र के बाइस बछड़े की महब्बत रचा दी गई थी, (ऐ महबूब ! उन्हें) बता दें येह बातें बहुत (ही) बुरी हैं जिन का हुक्म तुम्हें तुम्हारा (नाम निहाद) ईमान दे रहा है अगर (तुम वाक़िअ़तन उन पर) ईमान रखते हो।

قُلْ اِنْ كَانَتْ لَكُمُ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ عِنْدَ اللّٰهِ خَالِصَةً مِّنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٩٤﴾

94. आप फ़रमा दें: अगर आख़िरत का घर अल्लाह के नज़्दीक सिर्फ़ तुम्हारे लिए ही मख़्सूस है और लोगों के लिए नहीं तो तुम (बे धड़क) मौत की आरज़ू करो अगर तुम (अपने ख़याल में) सच्चे हो।

وَلَنْ يَّتَمَنَّوْهُ اَبَدًاۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٩٥﴾

95. वोह हरगिज़ कभी भी इस की आरज़ू नहीं करेंगे उन गुनाहों और मज़ालिम के बाइस जो उन के हाथ आगे भेज चुके हैं (या पहले कर चुके है) और अल्लाह ज़ालिमों को खूब जानता है।

وَلَتَجِدَنَّهُمْ اَحْرَصَ النَّاسِ عَلٰى حَيٰوةٍ ۚ وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚ يَوَدُّ اَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ اَلْفَ سَنَةٍ ۚ وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهٖ مِنَ الْعَذَابِ اَنْ يُّعَمَّرَ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٦﴾

96. आप उन्हें यक़ीनन सब लोगों से ज़ियादह जीने की हवस में मुब्तिला पाएंगे और (यहां तक कि) मुश्रिकों से भी ज़ियादह, उनमें से हर एक चाहता है कि काश उसे हज़ार बरस की उम्र मिल जाए, अगर उस इतनी उम्र मिल भी जाए, तो भी येह उसे अ़ज़ाब से बचानेवाली नहीं हो सक्ती, और अल्लाह उन के आ'माल को खूब देख रहा है।

معانقة ۲ عند المتاخرين ۱۲

ع

قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّجِبْرِيْلَ فَاِنَّهٗ نَزَّلَهٗ عَلٰى قَلْبِكَ بِاِذْنِ اللّٰهِ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى

97. आप फ़रमा दें जो शख़्स जिब्रील का दुश्मन है (वोह ज़ुल्म कर रहा है) क्यों कि उस ने (तो) उस (कुरआन) को आप के दिल पर अल्लाह के हुक्म से उतारा है। (जो) अपने से पहले (की किताबों) की तस्दीक़ करनेवाला है और

وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۹۷﴾

मोमिनों के लिए (सरासर) हिदायत और ख़ुशख़बरी है।

مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّلّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَرُسُلِهٖ وَجِبْرِيْلَ وَمِيْكٰلَ فَاِنَّ اللّٰهَ عَدُوٌّ لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿۹۸﴾

98. जो शख़्स अल्लाह का और उस के फ़रिश्तों और उस के रसूलों का और जिब्रील और मीकाईल का दुश्मन हुवा तो यक़ीनन अल्लाह (भी उन) काफ़िरों का दुश्मन है।

وَلَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ ۚ وَمَا يَكْفُرُ بِهَآ اِلَّا الْفٰسِقُوْنَ ﴿۹۹﴾

99. और बेशक हम ने आप की तरफ़ रौशन आयतें उतारी हैं और (उन) निशानियों का सिवाए ना फरमानों के कोई इन्कार नहीं कर सक्ता।

اَوَكُلَّمَا عٰهَدُوْا عَهْدًا نَّبَذَهٗ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۰۰﴾

100. और क्या (ऐसा नहीं कि) जब भी उन्हों ने कोई अ़हद किया तो उन में से एक गिरोह ने उसे तोड़ कर फेंक दिया, बल्कि उन में से अक्सर ईमान ही नहीं रखते।

وَلَمَّا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِيْقٌ مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ ۙ كِتٰبَ اللّٰهِ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ كَاَنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۰۱﴾

101. और (इसी तरह) जब उन के पास अल्लाह की जानिब से रसूल (हज़रत मुहम्मद ﷺ) आए जो उस किताब की (अस्लन) तस्दीक करने वाले हैं जो उन के पास (पहले से मौजूद थी तो (इन्ही) एहले किताब में से एक गिरोह ने अल्लाह की (इसी)किताब (तौरात) को पसे पुश्त फेंक दिया, गोया वोह (उस को) जानते ही नहीं (हालांकि इसी तौरात ने उन्हें नबिय्ये आखिरुज़्ज़मां हज़रत मुहम्मद ﷺ की तशरीफ आवरी की ख़बर दी थी।)

وَاتَّبَعُوْا مَا تَتْلُوا الشَّيٰطِيْنُ عَلٰى مُلْكِ سُلَيْمٰنَ ۚ وَمَا كَفَرَ سُلَيْمٰنُ وَلٰكِنَّ الشَّيٰطِيْنَ كَفَرُوْا يُعَلِّمُوْنَ النَّاسَ السِّحْرَ ۗ وَمَآ اُنْزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ هَارُوْتَ وَمَارُوْتَ ؕ وَمَا

102. और वोह (यहूद तो) उस चीज़ या'नी जादू के पीछे भी लग गए थे जो सुलैमान (عليه السلام) के अ़हदे हुकूमत में शयातीन पढ़ा करते थे हालां कि सुलैमान (عليه السلام) ने (कोई) कुफ़्र नहीं किया बल्कि कुफ़्र तो शैतानों ने किया जो लोगों को जादू सिखाते थे और उस (जादू के इल्म) के पीछे (भी) लग गए जो शहर बाबुल में हारूत और मारूत (नामी) दो फ़रिश्तों पर उतारा गया था। वोह दोनों किसी

يُعَلِّمٰنِ مِنْ اَحَدٍ حَتّٰى يَقُوْلَآ اِنَّمَا
نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ ؕ فَيَتَعَلَّمُوْنَ
مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُوْنَ بِهٖ بَيْنَ الْمَرْءِ
وَزَوْجِهٖ ؕ وَمَا هُمْ بِضَآرِّيْنَ بِهٖ مِنْ
اَحَدٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَيَتَعَلَّمُوْنَ مَا
يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ ؕ وَلَقَدْ عَلِمُوْا
لَمَنِ اشْتَرٰىهُ مَا لَهٗ فِى الْاٰخِرَةِ مِنْ
خَلَاقٍ ۗ وَلَبِئْسَ مَا شَرَوْا بِهٖۤ
اَنْفُسَهُمْ ؕ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٠٢﴾

को कुछ न सिखाते थो यहां तक कि केह देते कि हम तो महज़ आज़माइश (के लिए) हैं सो तुम(इस पर ए'तिकाद रख कर) काफ़िर न बनो, इस के बा वजूद वोह (यहूदी) उन दोनों से ऐसा (मंतर) सीखते थे जिस के ज़रीए शौहर और उस की बीवी के दरमियान जुदाई डाल देते, हालां कि वोह उस के ज़रीए किसी को भी नुक़्सान नहीं पहुंचा सक्ते मगर अल्लाह ही के हुक्म से और येह लोग वोही चीज़ें सीखते हैं जो उन के लिए ज़रर रसां हैं और उन्हें नफ़ा' नहीं पहुंचातीं और उन्हें (येह भी) यक़ीनन मा'लूम था कि जो कोई इस (कुफ़्र या जादू टोने) का ख़रीदार बना उस के लिए आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं होगा, और वोह बहुत ही बुरी चीज़ है जिस के बदले में उन्हों ने अपनी जानों (की हक़ीक़ी बेहतरी या'नी उख़रवी फ़लाह) को बेच डाला, काश वोह इस (सौदे की हक़ीक़त) को जानते।

وَلَوْ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَمَثُوْبَةٌ
مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ خَيْرٌ ؕ لَوْ كَانُوْا
يَعْلَمُوْنَ ﴿١٠٣﴾ ع

103. और आगर वोह ईमान ले आते और परहेज़गारी इख़्तियार करते तो अल्लाह की बारगाह से (थोड़ा सा) सवाब (भी इन सब चीज़ों से) कहीं बेहतर होता, काश वोह (इस राज़ से) आगाह होते।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقُوْلُوْا
رَاعِنَا وَقُوْلُوا انْظُرْنَا وَاسْمَعُوْا ؕ
وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٠٤﴾

104. ऐ ईमानवालो ! (नबिय्ये अकरम ﷺ को अपनी तरफ़ मु-त-वज्जेह करने के लिए) राइना मत कहा करो बल्कि (अदब से) उन्ज़ुरना (हमारी तरफ़ नज़रे करम फ़रमाइये) कहा करो और (उन का इर्शाद) बग़ौर सुनते रहा करो, और काफ़िरों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।

مَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ
الْكِتٰبِ وَلَا الْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يُّنَزَّلَ
عَلَيْكُمْ مِّنْ خَيْرٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ

105. न वोह लोग जो अहले किताब में से काफ़िर हो गए और न ही मुश्रिकीन इसे पसन्द करते हैं कि तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम पर कोई भलाई उतरे, और अल्लाह जिसे

يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ
وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿۱۰۵﴾

चाहता है अपनी रह्मत के साथ ख़ास कर लेता है, और अल्लाह बड़े फ़ज़्लवाला है।

مَا نَنْسَخْ مِنْ اٰيَةٍ اَوْ نُنْسِهَا نَاْتِ
بِخَيْرٍ مِّنْهَآ اَوْ مِثْلِهَا ؕ اَلَمْ تَعْلَمْ
اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۰۶﴾

106. हम जब कोई आयत मन्सूख़ कर देते हैं या उसे फ़रामोश करा देते हैं (तो बहर सूरत) उस से बेहतर या वैसी ही (कोई और आयत) ले आते हैं, क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह हर चीज़ पर (कामिल) क़ुदरत रखता है।

اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَا لَكُمْ مِّنْ
دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِیٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿۱۰۷﴾

107. क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि आस्मानों और ज़मीन की बादशाहत अल्लाह ही के लिए है, और अल्लाह के सिवा न तुम्हारा कोई दोस्त है और न ही मददगार।

اَمْ تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَسْـَٔلُوْا رَسُوْلَكُمْ
كَمَا سُئِلَ مُوْسٰی مِنْ قَبْلُ ؕ وَمَنْ
يَّتَبَدَّلِ الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ
ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿۱۰۸﴾

108. (ऐ मुसल्मानो !) क्या तुम चाहते हो कि तुम भी अपने रसूल (ﷺ) से उसी तरह सवालात करो जैसा कि इस से पहले मूसा (عليه السلام) से सवाल किए गए थे तो जो कोई ईमान के बदले कुफ़्र हासिल करे पस वोह वाक़ि-अ्-तन सीधे रास्ते से भटक गया।

وَدَّ كَثِيْرٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ
يَرُدُّوْنَكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ اِيْمَانِكُمْ كُفَّارًا ۚۖ
حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ اَنْفُسِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ
مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ ۚ فَاعْفُوْا
وَاصْفَحُوْا حَتّٰی يَاْتِیَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۰۹﴾

109. बहुत से अह्ले किताब की येह ख़्वाहिश है तुम्हारे ईमान ले आने के बा'द फिर तुम्हे कुफ़्र की तरफ़ लौटा दें, इस ह़सद के बाइस जो उन के दिलों में है इस के बा वजूद कि उन पर ह़क़ खूब ज़ाहिर हो चुका है सो तुम दरगुज़र करते रहो और नज़र अंदाज़ करते रहो यहां तक कि अल्लाह अपना हुक्म भेज दे, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर (कामिल) क़ुदरत रखता है।

وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ؕ
وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ

110. और नमाज़ क़ाइम (किया) करो और ज़कात देते रहा करो, और तुम अपने लिए जो नेकी भी आगे भेजोगे

تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۱۱۰﴾

उसे अल्लाह के हुज़ूर पा लोगे, जो कुछ तुम कर रहे हो यक़ीनन अल्लाह उसे देख रहा है।

وَقَالُوْا لَنْ يَّدْخُلَ الْجَنَّةَ اِلَّا مَنْ كَانَ هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى ؕ تِلْكَ اَمَانِيُّهُمْ ؕ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۱۱۱﴾

111. और अह्ले किताब केहते हैं कि जन्नत में हरगिज़ कोई भी दाख़िल नहीं होगा सिवाए इस के कि वोह यहूदी हो या नसरानी, येह उन की बातिल उम्मीदें हैं, आप फ़रमा दें कि अगर तुम (अपने दा'वे में सच्चे हो तो अपनी (इस ख़्वाहिश पर) सनद लाओ।

بَلٰى ۚ مَنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَلَهٗۤ اَجْرُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۪ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۱۱۲﴾

ع ۹ ۱۳ ۱۴

112. हां, जिस ने अपना चेहरा अल्लाह के लिए झुका दिया (या'नी खुद को अल्लाह के सुपुर्द कर दिया) और वोह साहिबे एह्सान हो गया तो उस के लिए उस का अज्र उस के रब के हां है और ऐसे लोगों पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न वोह रंजीदह होंगे।

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ لَيْسَتِ النَّصٰرٰى عَلٰى شَيْءٍ ۪ وَّقَالَتِ النَّصٰرٰى لَيْسَتِ الْيَهُوْدُ عَلٰى شَيْءٍ ۙ وَّهُمْ يَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ؕ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿۱۱۳﴾

113. और यहूद केहते हैं कि नसरानियों कि बुनियाद किसी शय (या'नी सहीह़ अ़क़ीदे) पर नहीं और नसरानी केहते हैं कि यहूदियों की बुनियाद किसी शय पर नहीं, हालां कि वोह (सब अल्लाह की नाज़िल कर्दह) किताब पढ़ते हैं, इसी तरह़ वोह (मुश्रिक) लोग जिन के पास (सिरे से कोई आस्मानी) इल्म ही नहीं वोह भी इन्ही जैसी बात करते हैं, पस अल्लाह उन के दरमियान क़ियामत के दिन इस मुआमले में (खुद ही) फ़ैसला फ़रमा देगा जिस में वोह इख़्तिलाफ़ करते रेहते हैं।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ مَّنَعَ مَسٰجِدَ اللّٰهِ اَنْ يُّذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ وَسَعٰى فِيْ خَرَابِهَا ؕ اُولٰٓئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ اَنْ يَّدْخُلُوْهَاۤ اِلَّا خَآئِفِيْنَ ؕ۬ لَهُمْ فِيْ

114. और उस शख़्स से बढ़ कर कौन ज़ालिम होगा जो अल्लाह की मस्जिदों में उसके नामका ज़िक्र किए जाने से रोक दे और उन्हें वीरान करने की कोशिश करे, उन्हें ऐसा करना मुनासिब न था कि मस्जिदों में दाख़िल होते मगर डरते हुए, उन के लिए

الدُّنْيَا خِزْيٌ وَّلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١١٤﴾

दुनिया में (भी) ज़िल्लत है और उनके लिए आख़िरत में (भी) बड़ा अ़ज़ाब है।

وَلِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ فَاَيْنَمَا تُوَلُّوْا فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿١١٥﴾

115. और मशरिक़ो मग़्रिब (सब) अल्लाह ही का है, पस तुम जिधर भी रुख़ करो उधर ही अल्लाह की त-वज्जोह है (या'नी हर सम्त ही अल्लाह की ज़ात जल्वहगर है), बेशक अल्लाह बड़ी वुस्अ़तवाला सब कुछ जाननेवाला है।

وَقَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ بَلْ لَّهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ﴿١١٦﴾

116. और वोह केहते हैं अल्लाह ने अपने लिए औलाद बनाई है, हालां कि वोह (इस से)पाक है, बल्कि जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है (सब) उसी की (ख़ल्क़ और मिल्क) है, (और) सब के सब उस के फ़रमां बर्दार हैं।

بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿١١٧﴾

117. वोही आस्मानों और ज़मीन को वजूद में लाने वाला है, और जब किसी चीज़ (के ईजाद) का फैसला फ़रमा लेता है तो फिर उस को सिर्फ़ येही फ़रमाता है कि "तू हो जा" पस वोह हो जाती है।

وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا اللّٰهُ اَوْ تَاْتِيْنَآ اٰيَةٌ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّثْلَ قَوْلِهِمْ تَشَابَهَتْ قُلُوْبُهُمْ قَدْ بَيَّنَّا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿١١٨﴾

118. और जो लोग इल्म नहीं रखते केहते हैं कि अल्लाह हम से कलाम क्यों नहीं फ़रमाता या हमारे पास (बराहे रास्त) कोई निशानी क्यों नहीं आती? इसी तरह़ उन से पेहले लोगों ने भी उन्ही जैसी बात कही थी, उन (सब) लोगों के दिल आपस में एक जैसे हैं, बेशक हम ने यक़ीनवालों के लिए निशानियां खूब वाज़ेह़ कर दी हैं।

اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا وَّلَا تُسْئَلُ عَنْ اَصْحٰبِ الْجَحِيْمِ ﴿١١٩﴾

119. (ऐ मह़्बूबे मुकर्रम !) बे शक हम ने आप को ह़क़ के साथ खुश ख़बरी सुनानेवाला और डर सुनानेवाला बना कर भेजा है और अह्ले दोज़ख़ के बारे में आप से पुर्सिश नहीं की जाएगी।

وَلَنْ تَرْضٰى عَنْكَ الْيَهُوْدُ وَلَا

120. और यहूदो नसारा आप से (उस वक़्त तक)

النَّصٰرٰى حَتّٰى تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ ؕ قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ؕ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ الَّذِىْ جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِىٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿۱۲۰﴾

हरगिज़ खुश नहीं होंगे जब तक आप उन के मज़हब की पैरवी इख़्तियार न कर लें, आप फ़रमा दें कि बे शक अल्लाह की (अ़ता कर्दह) हिदायत ही (ह़क़ीक़ी) हिदायत है, (उम्मत की ता'लीम के लिए फ़रमाया) और अगर (ब फ़र्ज़े मुहाल) आप ने इस इल्म के बा'द जो आप के पास (अल्लाह की तरफ़ से) आ चुका है, उन की ख़्वाहिशात की पैरवी की तो आप के लिए अल्लाह से बचानेवाला न कोई दोस्त होगा और न कोई मददगार।

وقف منزل

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَتْلُوْنَهٗ حَقَّ تِلَاوَتِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۱۲۱﴾

121. (ऐसे लोग भी हैं) जिन्हें हमने किताब दी वोह उसे इस तरह पढ़ते हैं जैसे पढ़ने का हक़ है, वोही लोग इस (किताब) पर ईमान रखते हैं, और जो इस का इन्कार कर रहे हैं सो वोही लोग नुक़्सान उठानेवाले हैं।

ع ۱۴

يٰبَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِىَ الَّتِىْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَنِّىْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۲۲﴾

122. ऐ औलादे या'कूब ! मेरी उस ने'मत को याद करो जो मैं ने तुम पर अरज़ानी फ़रमाई और (ख़ुसूसन) येह कि मैं ने तुम्हें उस ज़माने के तमाम लोगों पर फ़ज़ीलत अ़ता की।

وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِىْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَيْـًٔا وَّلَا يُقْبَلُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿۱۲۳﴾

123. और उस दिन से डरो जब कोई जान किसी दूसरी जान की जगह कोई बदला न दे सकेगी और न उस की तरफ़ से (अपने आप को छुड़ाने के लिए) कोई मुआ़वज़ा क़ुबूल किया जाएगा और न उसको (इज़्ने इलाही के बिग़ैर) कोई सिफ़ारिश ही फ़ाइदह पहुंचा सकेगी और न (अम्रे इलाही के ख़िलाफ़) उन्हें कोई मदद दी जा सकेगी।

وَاِذِ ابْتَلٰٓى اِبْرٰهٖمَ رَبُّهٗ بِكَلِمٰتٍ فَاَتَمَّهُنَّ ؕ قَالَ اِنِّىْ جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ اِمَامًا ؕ قَالَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِىْ ؕ قَالَ

124. और (वोह वक़्त याद करो) जब इब्राहीम (عليه السلام) को उन के रब ने कई बातों में आज़माया तो उन्हों ने वोह पूरी कर दीं, (इस पर) अल्लाह ने फ़रमाया : मैं तुम्हें लोगों का पेश्वा बनाऊंगा, उन्हों ने अ़र्ज़ किया : (क्या) मेरी

لَا يَنَالُ عَهْدِي الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۲۴﴾ وَ اِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَ اَمْنًا ؕ وَ اتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ مُصَلًّى ؕ وَعَهِدْنَآ اِلٰٓى اِبْرٰهٖمَ وَ اِسْمٰعِيْلَ اَنْ طَهِّرَا بَيْتِيَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَ الْعٰكِفِيْنَ وَ الرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ﴿۱۲۵﴾

औलाद में से भी? इर्शाद हुवा (हां मगर) मेरा वा'दह ज़ालिमों को नहीं पहुंचता।

125. और (याद करो) जब हम ने इस घर (ख़ानए का'बा) को लोगों के लिए रुजूअ़ (और इज्तिमाअ़) का मर्कज़ और जाए अमान बना दिया, और (हुक्म दिया कि) इब्राहीम (عليه السلام) के खड़े होने की जगह को मक़ामे नमाज़ बना लो, और हम ने इब्राहीम और इस्माईल (عليهما السلام) को ताकीद फ़रमाई कि मेरे घर को तवाफ़ करने वालों और ऐ'तिकाफ़ करने वालों और रुकूअ़ो सुजूद करने वालों के लिए पाक (साफ़) कर दो।

وَ اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا وَّ ارْزُقْ اَهْلَهٗ مِنَ الثَّمَرٰتِ مَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ قَالَ وَمَنْ كَفَرَ فَاُمَتِّعُهٗ قَلِيْلًا ثُمَّ اَضْطَرُّهٗٓ اِلٰى عَذَابِ النَّارِ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۱۲۶﴾

126. और जब इब्राहीम (عليه السلام) ने अ़र्ज़ किया : ऐ मेरे रब ! इसे अम्नवाला शहर बना दे और इस के बाशिन्दों को तरह़ तरह़ के फलों से नवाज़ (या'नी) उन लोगों को जो उन में से अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान लाए, (अल्लाह ने) फ़रमाया और जो कोई कुफ़्र करेगा उस को भी ज़िन्दगी की थोड़ी मुद्दत के लिए फाइदह पहुंचाऊंगा फिर उसे (उस के कुफ़्र के बाइस) दोज़ख़ के अ़ज़ाब की तरफ़ (जाने पर) मजबूर कर दूंगा और वोह बहुत बुरी जगह है।

وَ اِذْ يَرْفَعُ اِبْرٰهٖمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَ اِسْمٰعِيْلُ ؕ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۱۲۷﴾

127. और (याद करो) जब इब्राहीम और इस्माईल (عليهما السلام) ख़ानए का'बा की बुन्यादें उठा रहे थे (तो दोनों दुआ़ कर रहे थे) कि ऐ हमारे रब ! तू हम से (येह ख़िदमत) कु़बूल फ़रमा ले, बे शक तू खूब सुनने वाला खूब जाननेवाला है।

رَبَّنَا وَ اجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَآ اُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ ۪ وَ اَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَ تُبْ عَلَيْنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۲۸﴾

128. ऐ हमारे रब ! हम दोनों को अपने हुक्म के सामने झुकने वाला बना और हमारी औलाद से भी एक उम्मत को ख़ास अपना ताबेए फ़रमान बना और हमें हमारी इबादत (और ह़ज के) क़वाइद बता दे और हम पर (रह़्मतो मग़्फ़िरत) की नज़र फ़रमा, बेशक तू ही बहुत तौबा कु़बूल फ़रमानेवाला महरबान है।

رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِكَ وَ يُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَ الْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيْهِمْ ؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١٢٩﴾

129. ऐ हमारे रब ! उन में उन्ही में से (वोह आख़िरी और बरगुज़ीदह) रसूल (ﷺ) मब्ऊस फ़रमा जो उन पर तेरी आयतें तिलावत फ़रमाए और उन्हें किताब और हिक्मत की ता'लीम दे (कर दानाए राज़ बना दे) और उन (के नुफ़ूसो कुलूब) को खूब पाक साफ़ कर दे, बे शक तू ही ग़ालिब हिक्मतवाला है।

وَ مَنْ يَّرْغَبُ عَنْ مِّلَّةِ اِبْرٰهٖمَ اِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَهٗ ؕ وَلَقَدِ اصْطَفَيْنٰهُ فِي الدُّنْيَا ۚ وَ اِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٣٠﴾

130. और कौन है? जो इब्राहीम (عليه السلام) के दीन से रू गर्दां हो सिवाए इस के जिस ने खुद को मुब्तिलाए हिमाक़त कर रख्खा हो, और बे शक हम ने उन्हें ज़ूरूर दुन्या में (भी) मुन्तख़ब फ़रमा लिया था और यक़ीनन वोह आख़िरत में (भी) बुलन्द रुत्बा मुक़र्रिबीन में होंगे।

اِذْ قَالَ لَهٗ رَبُّهٗۤ اَسْلِمْ ۙ قَالَ اَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٣١﴾

131. और जब उनके रब ने उनसे फ़रमाया (मेरे सामने) गरदन झुका दो, तो अ़र्ज़ करने लगे : मैं ने सारे जहानों के रब के सामने सरे तस्लीम ख़म कर दिया।

وَوَصّٰى بِهَاۤ اِبْرٰهٖمُ بَنِيْهِ وَ يَعْقُوْبُ ؕ يٰبَنِيَّ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰى لَكُمُ الدِّيْنَ فَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٣٢﴾

132. और इब्राहीम (عليه السلام) ने अपने बेटों को इसी बात की वसिय्यत की और या'क़ूब (عليه السلام) ने भी (येही कहा) ऐ मेरे लड़को ! बे शक अल्लाह ने तुम्हारे लिए (येही) दीन (इस्लाम) पसन्द फ़रमाया है सो तुम (बहर सूरत) मुसलमान रेहते हुए ही मरना।

اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ حَضَرَ يَعْقُوْبَ الْمَوْتُ ۙ اِذْ قَالَ لِبَنِيْهِ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ بَعْدِيْ ؕ قَالُوْا نَعْبُدُ اِلٰهَكَ وَ اِلٰهَ اٰبَآئِكَ اِبْرٰهٖمَ وَ اِسْمٰعِيْلَ وَ اِسْحٰقَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ وَّ

133. क्या तुम (उस वक़्त) हाज़िर थे जब या'क़ूब (عليه السلام) को मौत आई, जब उन्हों ने अपने बेटों से पूछा तुम मेरे (इन्तिक़ाल के) बा'द किस की इबादत करोगे ? तो उन्हों ने कहा : हम आप के मा'बूद और आप के बापदादा इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ (عليهم السلام) केमा'बूद की इबादत करेंगे जो मा'बूदे यक्ता है, और

نَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿۱۳۳﴾

हम सब उसी के फ़रमांबरदार रहेंगे।

تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۳۴﴾

134. वोह एक उम्मत थी जो गुज़र चुकी, उन के लिए वोही कुछ होगा जो उन्हों ने कमाया और तुम्हारे लिए वोह होगा जो तुम कमाओगे और तुम से उन के आ'माल की बाज़ पुर्स न की जाएगी।

وَ قَالُوْا كُوْنُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى تَهْتَدُوْا ؕ قُلْ بَلْ مِلَّةَ اِبْرٰهٖمَ حَنِيْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۱۳۵﴾

135. और अह्ले किताब केहते हैं यहूदी या नसरानी हो जाओ हिदायत पा जाओगे, आप फ़रमा दें कि (नहीं) बल्कि हम तो (उस) इब्राहीम (عليه السلام) का दीन इख़्तियार किए हुए हैं जो हर बातिल से जुदा सिर्फ़ अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जेह थे, और वोह मुशरिकों में से न थे।

قُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ اِلٰٓى اِبْرٰهٖمَ وَ اِسْمٰعِيْلَ وَ اِسْحٰقَ وَ يَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى وَ مَآ اُوْتِيَ النَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ ۖ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿۱۳۶﴾

136. (ऐ मुसलमानो !) तुम केह दो हम अल्लाह पर ईमान लाए और उस (किताब) पर जो हमारी तरफ़ उतारी गई और उस पर (भी) जो इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और या'कूब (عليهم السلام) और उन की औलाद की तरफ़ उतारी गई और उन किताबों पर भी जो मूसा और ईसा (عليهما السلام) को अ़ता की गईं और (इसी तरह्) जो दूसरे अंबियाअ (عليهم السلام) को उन के रब की तरफ़ से अ़ता की गईं, हम उन में से किसी एक (पर भी ईमान) में फ़र्क़ नहीं करते, और हम उसी मा'बूदे वाहिद) के फ़रमां बरदार हैं।

فَاِنْ اٰمَنُوْا بِمِثْلِ مَآ اٰمَنْتُمْ بِهٖ فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا هُمْ فِيْ شِقَاقٍ ۚ فَسَيَكْفِيْكَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۱۳۷﴾

137. फिर अगर वोह (भी) इसी तरह् ईमान लाएं जैसे तुम इस पर ईमान लाए हो तो वोह वाक़ई हिदायत पा जाएंगे, और अगर वोह मुंह फ़ेर लें तो (समझ लें कि) वोह महज़ मुख़ालिफ़त में हैं, पस अब अल्लाह आप को उन के शर्र से बचाने के लिए काफ़ी होगा, और वोह खूब सुननेवाला जाननेवाला है।

صِبْغَةَ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ صِبْغَةً ۫ وَّنَحْنُ لَهٗ عٰبِدُوْنَ ﴿۱۳۸﴾

138. (केह दो हम) अल्लाह के रंग में रंगे गए हैं) और किस का रंग अल्लाह के रंग से बेहतर है और हम तो उसी के इ़बादत गुज़ार हैं।

قُلْ اَتُحَآجُّوْنَنَا فِی اللّٰهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۚ وَلَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ۚ وَنَحْنُ لَهٗ مُخْلِصُوْنَ ﴿۱۳۹﴾

139. फ़रमा दें : क्या तुम अल्लाह के बारे में हम से झगड़ा करते हो हालां कि वोह हमारा (भी) रब है और तुम्हारा (भी) रब है, और हमारे लिए हमारे आ'माल और तुम्हारे लिए तुम्हारे आ'माल हैं, और हम तो ख़ालि-स-तन उसी के हो चुके हैं।

اَمْ تَقُوْلُوْنَ اِنَّ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِیْلَ وَاِسْحٰقَ وَیَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطَ كَانُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰی ؕ قُلْ ءَاَنْتُمْ اَعْلَمُ اَمِ اللّٰهُ ؕ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَتَمَ شَهَادَةً عِنْدَهٗ مِنَ اللّٰهِ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴۰﴾

140. (ऐ अह्ले किताब !) क्या तुम येह केहते हो कि इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और या'कूब (عليهم السلام) और उन के बेटे यहूदी या नसरानी थे, फरमा दें : क्या तुम ज़ियादह जानते हो या अल्लाह? और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जो उस गवाही को छुपाए जो उस के पास अल्लाह की तरफ़ से (किताब में मौजूद) है, और अल्लाह तुम्हारे कामों से बे ख़बर नहीं।

تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴۱﴾

141. वोह एक जमाअ़त थी जो गुज़र चुकी, जो उसने कमाया वोह उसके लिए था और जो तुम कमाओगे वोह तुम्हारे लिए होगा, और तुम से उनके आ'माल की निस्बत नहीं पूछा जाएगा।

سَيَقُولُ السُّفَهَآءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلّٰىهُمْ عَنْ قِبْلَتِهِمُ الَّتِيْ كَانُوْا عَلَيْهَا ؕ قُلْ لِّلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَ الْمَغْرِبُ ؕ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ إِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۱۴۲﴾

142. अब बेवक़ूफ़ लोग येह कहेंगे कि उन (मुसलमानों) को अपने इस क़िब्ले (बैतुल मुक़द्दस) से किस ने फेर दिया जिस पर वोह (पहले से) थे, आप फ़रमा दें : मशरिक़ो मग़्रिब (सब) अल्लाह ही के लिए है। वोह जिसे चाहता है सीधी राह पर डाल देता है।

وَ كَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ أُمَّةً وَّسَطًا لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ وَ يَكُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْدًا ؕ وَ مَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِيْ كُنْتَ عَلَيْهَآ إِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَّتَّبِعُ الرَّسُوْلَ مِمَّنْ يَّنْقَلِبُ عَلٰى عَقِبَيْهِ ؕ وَ إِنْ كَانَتْ لَكَبِيْرَةً إِلَّا عَلَى الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُضِيْعَ إِيْمَانَكُمْ ؕ إِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۴۳﴾

143. और (ऐ मुसलमानो !) इसी तरह हम ने तुम्हें (ए'तिदाल वाली) बेहतर उम्मत बनाया ताकि तुम लोगों पर गवाह बनो और (हमारा येह बर गुज़ीदह) रसूल ﷺ तुम पर गवाह हो, और आप पहले जिस क़िब्ले पर थे हम ने सिर्फ़ इस लिए मुक़र्रर किया था कि हम (परख कर) ज़ाहिर कर दें कि कौन (हमारे) रसूल ﷺ की पैरवी करता है (और) कौन अपने उलटे पांव फिर जाता है, और बेशक येह (क़िब्ले का बदलना) बड़ी भारी बात थी मगर उन पर नहीं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत (व मा'रेफ़त) से नवाज़ा, और अल्लाह की येह शान नहीं कि तुम्हारा ईमान (यूंही) ज़ाए' कर दे, बेशक अल्लाह लोगों पर बड़ी शफ़्क़त फ़रमानेवाला महरबान है।

قَدْ نَرٰى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَآءِ ۚ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضٰىهَا ۖ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَ حَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ؕ وَ إِنَّ الَّذِيْنَ أُوْتُوا الْكِتٰبَ لَيَعْلَمُوْنَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ؕ وَمَا

144. (ऐ हबीब!) हम बार बार आप के रुख़े अनवर का आस्मान की तरफ़ पलटना देख रहे हैं, सो हम ज़रूर बिज़्-ज़रूर आप को उसी क़िब्ले की तरफ़ फेर देंगे जिस पर आप राज़ी हैं, पस आप अपना रुख़ अभी मस्जिदे हराम की तरफ़ फेर लीजिए, और (ऐ मुसलमानो!) तुम जहां कहीं भी हो पस अपने चेहरे उसी की तरफ़ फेर लो, और वोह लोग जिन्हें किताब दी गई है ज़रूर जानते हैं कि येह (तह़वीले क़िब्ला का हुक्म) उन के रब

اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴۴﴾

की तरफ़ से हक़ है, और अल्लाह उन कामों से बे ख़बर नहीं जो वोह अंजाम दे रहे हैं।

وَلَئِنْ اَتَيْتَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ بِكُلِّ اٰيَةٍ مَّا تَبِعُوْا قِبْلَتَكَ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ۚ وَمَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ ۭ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ اِنَّكَ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۴۵﴾

145. और अगर आप अह्ले किताब के पास हर एक निशानी (भी) ले आएं तब भी वोह आप के क़िब्ले की पैरवी नहीं करेंगे और न आप ही उनके क़िब्ले की पैरवी करनेवाले हैं और वोह आपस में भी एक दूसरे के क़िब्ले की पैरवी नहीं करते (उम्मत की ता'लीम के लिए फ़रमाया) और अगर (ब फर्ज़े मुहाल) आपने (भी) अपने पास इल्म आ जाने के बाद उन की ख़्वाहिशात की पैरवी की तो बेशक आप (अपनी जान पर) ज़ियादती करने वालों से हो जाएंगे।

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ ۭ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنْهُمْ لَيَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۴۶﴾

146. और जिन लोगों को हम ने किताब अ़ता फ़रमाई है वोह इस रसू (आख़िरुज़्ज़मां हज़रत मुहम्मद ﷺ और उन की शानो अ़ज़मत) इसी तरह पेहचानते हैं जैसा कि बिला शुब्हा अपने बेटों को पेहचानते हैं, और यक़ीनन इन्ही में एक तब्क़ा हक़ को जान बूझ कर छुपा रहा है।

اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿۱۴۷﴾

147. (ऐ सुनने वाले !) हक़ तेरे रब की तरफ़ से है सो तू हरगिज़ शक करने वालों में से न हो।

وَلِكُلٍّ وِّجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيْهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ۣ اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يَاْتِ بِكُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۴۸﴾

148. और हर एक के लिए तवज्जोह की एक सम्त (मुक़र्रर) है वोह उसी की तरफ़ रुख़ करता है पस तुम नेकियों की तरफ़ पेश क़दमी किया करो, तुम जहां कहीं भी होगे अल्लाह तुम सब को जमा' कर लेगा। बे शक अल्लाह हर चीज़ पर ख़ूब क़ादिर है।

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۭ وَاِنَّهٗ

149. और तुम जिधर से भी (सफ़र पर) निक्लो अपना चेहरा (नमाज़ के वक़्त) मस्जिदे हराम कि तरफ़ फेर लो,

لَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ ۗ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٩﴾

और येही तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ है, और अल्लाह तुम्हारे आ'माल से बे ख़बर नहीं।

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۗ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ۙ لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ ۙ اِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ ۚ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِيْ ۚ وَلِاُتِمَّ نِعْمَتِيْ عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٥٠﴾

150. और तुम जिधर से भी (सफ़र पर) निक्लो अपना चेहरा (नमाज़ के वक़्त) मस्जिदे हराम कि तरफ़ फेर लो, और (ऐ मुसलमानो !) तुम जहां कहीं भी हो सो अपने चेहरे उसी की सम्त फेर लिया करो ताकि लोगों के पास तुम पर ए'तिराज़ करने की गुंजाइश न रहे सिवाए उन लोगों के जो उन में हद से बढ़नेवाले हैं, पस तुम उन से मत डरो मुझ से डरा करो, इस लिए कि मैं तुम पर अपनी ने'मत पूरी कर दूं और ताकि तुम कामिल हिदायत पा जाओ।

كَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْكُمْ رَسُوْلًا مِّنْكُمْ يَتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِنَا وَيُزَكِّيْكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٥١﴾

151. इसी तरह हमने तुम्हारे अन्दर तुम्हीं में से (अपना) रसूल भेजा जो तुम पर हमारी आयतें तिलावत फ़रमाता है और तुम्हें (नफ़्सन-व-क़ल्बन) पाक साफ करता है और तुम्हें किताब की ता'लीम देता है और हिक्मतो दानाई सिखाता है और तुम्हें वोह (असरारे मा'रेफ़तो हक़ीक़त) सिखाता है जो तुम न जानते थे।

فَاذْكُرُوْنِيْٓ اَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوْا لِيْ وَلَا تَكْفُرُوْنِ ﴿١٥٢﴾

152. सो तुम मुझे याद किया करो मैं तुम्हें याद रखूंगा और मेरा शुक्र अदा किया करो और मेरी नाशुक्री न किया करो।

معانقة ٣

ع ١٨ ٥

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٥٣﴾

153. ऐ ईमानवालो ! सब्र और नमाज़ के ज़रीए (मुझ से) मदद चाहा करो, यक़ीनन अल्लाह सब्र करने वालों के साथ (होता) है।

وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتٌ ۗ بَلْ اَحْيَآءٌ وَّ

154. और जो लोग अल्लाह की राह में मारे जाएं उन्हें मत कहा करो कि येह मुर्दह हैं, (वोह मुर्दह नहीं) बल्कि

لٰكِنْ لَّا تَشْعُرُوْنَ ﴿١٥٤﴾

ज़िन्दह हैं लेकिन तुम्हें (उन की ज़िन्दगी का) शऊ़र नहीं।

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ
وَالْجُوْعِ وَ نَقْصٍ مِّنَ الْاَمْوَالِ
وَالْاَنْفُسِ وَالثَّمَرٰتِ ؕ وَ بَشِّرِ
الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٥٥﴾

155. और हम ज़रूर बिज़ ज़रूर तुम्हें आज़माएंगे कुछ ख़ौफ़ और भूक से और कुछ मालों और जानों और फलों के नुक़्सान से, और (ऐ ह़बीब !) आप उन सब्र करनेवालों को खुश ख़बरी सुना दें।

الَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ ۙ
قَالُوْٓا اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ﴿١٥٦﴾

156. जिन पर कोई मुसीबत पड़ती है तो केहते हैं : बे शक हम भी अल्लाह ही का (माल) हैं और हम भी उसी की तरफ़ पलट कर जाने वाले हैं।

اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوٰتٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ
وَرَحْمَةٌ ۫ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُوْنَ ﴿١٥٧﴾

157. येही वोह लोग हैं जिन पर उन के रब की तरफ़ से पै दर पै नवाज़िशें हैं और रह़्मत है, और येही लोग हिदायत याफ़्ता हैं।

اِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَآئِرِ
اللّٰهِ ۚ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ اَوِ اعْتَمَرَ
فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ اَنْ يَّطَّوَّفَ بِهِمَا ؕ
وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ شَاكِرٌ
عَلِيْمٌ ﴿١٥٨﴾

158. बे शक सफ़ा और मर्वह अल्लाह की निशानियों में से हैं, चुनांचे जो शख़्स बैतुल्लाह का ह़ज्ज या उ़म्रह करे तो उस पर कोई गुनाह नहीं कि इन दोनों के दरमियान चक्कर लगाए, और जो शख़्स अपनी खुशी से कोई नेकी करे तो यक़ीनन अल्लाह बड़ा क़द्र शनास (बड़ा) ख़बरदार है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ مَآ اَنْزَلْنَا مِنَ
الْبَيِّنٰتِ وَالْهُدٰى مِنْۢ بَعْدِ مَا بَيَّنّٰهُ
لِلنَّاسِ فِي الْكِتٰبِ ۙ اُولٰٓئِكَ يَلْعَنُهُمُ
اللّٰهُ وَيَلْعَنُهُمُ اللّٰعِنُوْنَ ﴿١٥٩﴾

159. बे शक जो लोग हमारी नाज़िल कर्दह खुली निशानियों और हिदायत को छुपाते हैं इस के बा'द कि हम ने उसे लोगों के लिए (अपनी) किताब में वाज़ेह़ कर दिया है तो उन ही लोगों पर अल्लाह ला'नत भेजता है (या'नी उन्हें अपनी रह़्मत से दूर करता है) और ला'नत भेजने वाले भी उन पर ला'नत भेजते हैं।

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا وَ

160. मगर जो लोग तौबा कर लें और (अपनी)

بَيَّنُوْا فَاُولٰٓئِكَ اَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ۚ وَ اَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١٦٠﴾

इस्लाह़ कर लें और (ह़क़ को) ज़ाहिर कर दें तो मैं (भी) उन्हें मुआफ़ फ़रमा दूंगा, और मैं बड़ा ही तौबा क़ुबूल करनेवाला महरबान हूं।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَ هُمْ كُفَّارٌ اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٦١﴾

161. बे शक जिन्हों ने (ह़क़ को छुपा कर) कुफ़्र किया और इस ह़ाल में मरे कि वोह काफ़िर ही थे उन पर अल्लाह की और फ़रिश्तों की और सब लोगों की ला'नत है।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿١٦٢﴾

162. वोह हमेशा इसी (ला'नत) में (गिरफ़्तार) रहेंगे, उन पर से अ़ज़ाब हल्का नहीं किया जाएगा और न ही उन्हें मोहलत दी जाएगी।

وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿١٦٣﴾

163. और तुम्हारा मा'बूद ख़ुदाए वाह़िद है उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं (वोह) निहायत महरबान बहुत रह़म फ़रमानेवाला है।

اِنَّ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِيْ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ مَّآءٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ ۪ وَّ تَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿١٦٤﴾

164. बे शक आस्मानों और ज़मीन की तख़्लीक़ में और रात दिन की गर्दिश में और उन जहाज़ों (और कश्तियों) में जो समन्दर में लोगों को नफ़ा' पहुंचाने वाली चीज़ें उठा कर चलती हैं और उस बारिश के पानी में जिसे अल्लाह आस्मान की तरफ़ से उतारता है फिर उस के ज़रीए ज़मीन को मुर्दह हो जाने के बा'द ज़िन्दह करता है (वोह ज़मीन) जिस में उसने हर क़िस्म के जानवर फैला दिए हैं और हवाओं के रुख़ बदलने में और उस बादल में जो आस्मान और ज़मीन के दरमियान (हुक्मे इलाही का) पाबन्द (हो कर चलता) है (उन में) अ़क़्ल मन्दों के लिए (क़ुदरते इलाही की बहुत सी) निशानियां हैं।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّتَّخِذُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَنْدَادًا يُّحِبُّوْنَهُمْ كَحُبِّ اللّٰهِ ؕ

165. और लोगों में बा'ज़ ऐसे भी हैं जो अल्लाह के ग़ैरों को अल्लाह का शरीक ठेहराते हैं और उन से "अल्लाह से

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ ۭ وَلَوْ يَرَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اِذْ يَرَوْنَ الْعَذَابَ ۙ اَنَّ الْقُوَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ۙ وَّ اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعَذَابِ ﴿۱۶۵﴾

मुहब्बत'' जैसी मुहब्बत करते हैं, और जो लोग ईमान वाले हैं वोह (हर एक से बढ़ कर) अल्लाह से बहुत ही ज़ियादह मुहब्बत करते हैं, और अगर येह ज़ालिम लोग उस वक़्त को देख लें जब (उख़रवी) अज़ाब उन की आंखों के सामने होगा (तो जान लें) कि सारी क़ुव्वतों का मालिक अल्लाह है और बेशक अल्लाह सख़्त अज़ाब देनेवाला है ।

اِذْ تَبَرَّاَ الَّذِيْنَ اتُّبِعُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا وَرَاَوُا الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْاَسْبَابُ ﴿۱۶۶﴾

166. (और) जब वोह (पेशवायाने कुफ़्र) जिन की पैरवी की गई अपने पैरवकारों से बेज़ार होंगे और (वोह सब अल्लाह का) अज़ाब देख लेंगे और सारे अस्बाब उन से मुन्कता' हो जाएंगे।

وَقَالَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا لَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّاَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوْا مِنَّا ۭ كَذٰلِكَ يُرِيْهِمُ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ حَسَرٰتٍ عَلَيْهِمْ ۭ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنَ النَّارِ ﴿۱۶۷﴾

167. और (येह बेज़ारी देख कर मुशरिक) पैरव कार कहेंगे काश हमें (दुनिया में जाने का) एक मौक़ा' मिल जाए तो हम (भी) उन से बेज़ारी ज़ाहिर कर दें जैसे उन्हों ने (आज) हम से बेज़ारी ज़ाहिर की है, यूं अल्लाह उन्हें उनके अपने आ'माल उन्ही पर हसरत बना कर दिखाएगा, और वोह (किसी सूरत भी) दोज़ख़ से निकलने न पाएंगे।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ كُلُوْا مِمَّا فِي الْاَرْضِ حَلٰلًا طَيِّبًا ڮ وَّلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ۭ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۱۶۸﴾

168. ऐ लोगो ! ज़मीन की चीज़ों में से जो हलाल और पाकीज़ह है खाओ, और शैतान के रास्तों पर न चलो, बेशक वोह तुम्हारा खुला दुश्मन है।

اِنَّمَا يَاْمُرُكُمْ بِالسُّوْٓءِ وَالْفَحْشَاۗءِ وَاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۶۹﴾

169. वोह तुम्हें बदी और बेहयाई का ही हुक्म देता है और येह (भी) कि तुम अल्लाह की निस्बत वोह कुछ कहो जिस का तुम्हें (खुद) इल्म न हो।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَآ اَلْفَيْنَا عَلَيْهِ

170. और जब उन काफ़िरों से कहा जाता है कि जो अल्लाह ने नाज़िल फ़रमाया है उसकी पैरवी करो तो केहते हैं (नहीं) बल्कि हम तो उसी (रविश) पर चलेंगे जिस पर

اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ ﴿١٧٠﴾

हम ने अपने बापदादा को पाया है, अगरचे उन के बाप दादा न कुछ अक़्ल रखते हों और न ही हिदायत पर हों।

وَ مَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا كَمَثَلِ الَّذِيْ يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ اِلَّا دُعَآءً وَّنِدَآءً ؕ صُمٌّۢ بُكْمٌ عُمْیٌ فَهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٧١﴾

171. और उन काफ़िरों (को हिदायत की तरफ़ बुलाने) की मिसाल ऐसे शख़्स की सी है जो किसी ऐसे (जानवर) को पुकारे जो सिवाए पुकार और आवाज़ के कुछ नहीं सुनता, येह लोग बेहरे, गूंगे, अंधे हैं सो उन्हें कोई समझ नहीं।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَ اشْكُرُوْا لِلّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿١٧٢﴾

172. ऐ ईमान वालो ! उन पाकीज़ह चीज़ों में से खाओ जो हम ने तुम्हें अ़ता की हैं और अल्लाह का शुक्र अदा करो अगर तुम सिर्फ़ उसी की बन्दगी बजा लाते हो।

اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَ لَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَ مَاۤ اُهِلَّ بِهٖ لِغَيْرِ اللّٰهِ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّ لَا عَادٍ فَلَاۤ اِثْمَ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٧٣﴾

173. उस ने तुम पर सिर्फ़ मुर्दार और ख़ून और सुव्वर का गोश्त और वोह जानवर जिस पर ज़ब्ह के वक़्त ग़ैरुल्लाह का नाम पुकारा गया हो ह़राम किया है, फिर जो शख़्स सख़्त मजबूर हो जाए न तो ना फ़रमानी करने वाला हो और न ह़द से बढ़नेवाला तो उस पर (ज़िन्दगी बचाने की ह़द तक खा लेने में) कोई गुनाह नहीं, बे शक अल्लाह निहायत बख़्शनेवाला महरबान है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ الْكِتٰبِ وَ يَشْتَرُوْنَ بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۙ اُولٰٓئِكَ مَا يَاْكُلُوْنَ فِیْ بُطُوْنِهِمْ اِلَّا النَّارَ وَ لَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَ لَا يُزَكِّيْهِمْ ۖۚ وَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٧٤﴾

174. बेशक जो लोग किताब (तौरात की उन आयतों) को जो अल्लाह ने नाज़िल फ़रमाई हैं छुपाते हैं और उस के बदले ह़क़ीर क़ीमत ह़ासिल करते हैं, वोह लोग सिवाए अपने पेटोंमें आग भरने के कुछ नहीं खाते और अल्लाह क़ियामत के रोज़ उन से कलाम तक नहीं फ़रमाएगा और न ही उन को पाक करेगा, और उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।

أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ بِالْهُدٰى وَالْعَذَابَ بِالْمَغْفِرَةِ ۚ فَمَآ اَصْبَرَهُمْ عَلَى النَّارِ ﴿١٧٥﴾

175. येही वोह लोग हैं जिन्हों ने हिदायत के बदले गुमराही ख़रीदी और मग़्फ़िरत के बदले अज़ाब, किस चीज़ नें उन्हें (दोज़ख़ की) आग पर सब्र करने वाला बना दिया है।

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ نَزَّلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ ۗ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِى الْكِتٰبِ لَفِىْ شِقَاقٍۢ بَعِيْدٍ ﴿١٧٦﴾ ع

176. येह इस वजह से है कि अल्लाह ने किताब हक़ के साथ नाज़िल फ़रमाई, और बेशक जिन्हों ने किताब में इख़्तिलाफ़ डाला वोह मुख़ालिफ़त में (हक़ से) बहुत दूर जा पड़े हैं।

لَيْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالْكِتٰبِ وَالنَّبِيّٖنَ ۚ وَاٰتَى الْمَالَ عَلٰى حُبِّهٖ ذَوِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ ۙ وَالسَّآئِلِيْنَ وَفِى الرِّقَابِ ۚ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ ۚ وَالْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ اِذَا عٰهَدُوْا ۚ وَالصّٰبِرِيْنَ فِى الْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ وَحِيْنَ الْبَاْسِ ۗ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا ۗ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ﴿١٧٧﴾

177. नेकी सिर्फ़ येही नहीं कि तुम अपने मुंह मशरिक़ और मग़रिब की तरफ़ फेर लो बल्कि अस्ल नेकी तो येह है कि कोई शख़्स अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर और फ़रिश्तों पर और (अल्लाह की) किताब पर और पयगंबरों पर ईमान लाए, और अल्लाह की महब्बत में (अपना) माल क़राबतदारों पर और यतीमों पर और मोहताजों पर और मुसाफ़िरों पर और मांगनेवालों पर और (गुलामों की) गरदनों (को आज़ाद कराने) में ख़र्च करे, और नमाज़ क़ाइम करे और ज़कात दे और जब कोई वा'दा करें तो अपना वा'दा पूरा करने वाले हों, और सख़्ती (तंगदस्ती) में और मुसीबत (बीमारी) में और जंग की शिद्दत (जिहाद) के वक़्त सब्र करनेवाले हों, येही लोग सच्चे हैं और येही परहेज़गार हैं।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِى الْقَتْلٰى ۗ اَلْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَالْاُنْثٰى

178. ऐ ईमानवालो ! तुम पर उनके खून का बदला (क़िसास) फ़र्ज़ किया गया है जो ना हक़ क़त्ल किए जाएं, आज़ाद के बदले आज़ाद और गुलाम के बदले गुलाम और औरत के बदले औरत, फिर अगर उस को

بِالْاُنْثٰى ؕ فَمَنْ عُفِیَ لَهٗ مِنْ اَخِیْهِ
شَیْءٌ فَاتِّبَاعٌۢ بِالْمَعْرُوْفِ وَاَدَآءٌ
اِلَیْهِ بِاِحْسَانٍ ؕ ذٰلِكَ تَخْفِیْفٌ
مِّنْ رَّبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ ؕ فَمَنِ اعْتَدٰی
بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ﴿۱۷۸﴾

(या'नी क़ातिल को) उस के भाई (या'नी मक़्तूल के वारिस) की तरफ़ से कुछ (या'नी क़िसास) मुआफ़ कर दिया जाए तो चाहिये कि भले दस्तूर के मुवाफ़िक़ पैरवी की जाए और (ख़ून बहा को) अच्छे तरीक़े से उस (मक़्तूल के वारिस) तक पहुंचा दिया जाए, येह तुम्हारे रब की तरफ़ से रिआयत और महरबानी है, पस जो कोई इस के बा'द ज़ियादती करे तो उस के लिए दर्दनाक अज़ाब है।

وَلَكُمْ فِی الْقِصَاصِ حَیٰوةٌ یّٰۤاُولِی
الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿۱۷۹﴾

179. और तुम्हारे लिए क़िसास (या'नी खून का बदला लेने) में ही ज़िन्दगी (की ज़मानत) है। ऐ अक़्लमन्द लोगो ! ताकि तुम (खूंरेज़ी और बरबादी से) बचो।

كُتِبَ عَلَیْكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ
الْمَوْتُ اِنْ تَرَكَ خَیْرَا ۖۚ الْوَصِیَّةُ
لِلْوَالِدَیْنِ وَالْاَقْرَبِیْنَ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ
حَقًّا عَلَی الْمُتَّقِیْنَ ؕ﴿۱۸۰﴾

180. तुम पर फ़र्ज़ किया जाता है कि जब तुममें से किसी की मौत क़रीब आ पहुंचे अगर उस ने कुछ माल छोड़ा हो, तो अपने वालिदैन और क़रीबी रिश्तेदारों के हक़ में भले तरीक़े से वसिय्यत करे, येह परहेज़गारों पर लाज़िम है

فَمَنْۢ بَدَّلَهٗ بَعْدَ مَا سَمِعَهٗ فَاِنَّمَاۤ
اِثْمُهٗ عَلَی الَّذِیْنَ یُبَدِّلُوْنَهٗ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ سَمِیْعٌ عَلِیْمٌ ؕ﴿۱۸۱﴾

181. फिर जिस शख़्स ने इस वसिय्यत को सुनने के बा'द उसे बदल दिया तो उस का गुनाह उन्ही बदलने वालों पर है । बेशक अल्लाह बड़ा सुननेवाला खूब जाननेवाला है।

فَمَنْ خَافَ مِنْ مُّوْصٍ جَنَفًا اَوْ
اِثْمًا فَاَصْلَحَ بَیْنَهُمْ فَلَاۤ اِثْمَ
عَلَیْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۱۸۲﴾

182. पस अगर किसी शख़्स को वसिय्यत करनेवाले से (किसी की) तरफ़दारी या (किसी के हक़में) ज़ियादती का अन्देशा हो फिर वोह उन के दरमियान सुलह़ करा दे तो उस पर कोई गुनाह नहीं, बेशक अल्लाह निहायत बख़्शनेवाला महरबान है।

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَیْكُمُ
الصِّیَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَی الَّذِیْنَ
مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۙ﴿۱۸۳﴾

183. ऐ ईमानवालो ! तुम पर इसी तरह़ रोज़े फ़र्ज़ किये गए हैं जैसे तुम से पहले लोगों पर फ़र्ज़ किये गए थे ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ।

أَيَّامًا مَّعْدُودَاتٍ ۚ فَمَن كَانَ مِنكُم مَّرِيضًا أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ۚ وَعَلَى الَّذِينَ يُطِيقُونَهُ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِينٍ ۖ فَمَن تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَّهُ ۚ وَأَن تَصُومُوا خَيْرٌ لَّكُمْ ۖ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١٨٤﴾

184. (येह) गिन्ती के चन्द दिन (हैं) पस अगर तुम में कोई बीमार हो या सफ़र पर हो तो दूसरे दिनों (के रोज़ों) से गिन्ती पूरी कर ले, और जिन्हें इस की ताक़त न हो उन के ज़िम्मे एक मिस्कीन के खाने का बदला है, फिर जो कोई अपनी ख़ुशी से (ज़ियादा) नेकी करे तो वोह उस के लिए बेहतर है, और तुम्हारा रोज़ा रख लेना तुम्हारे लिए बेहतर है, अगर तुम्हें समझ हो।

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنَاتٍ مِّنَ الْهُدَىٰ وَالْفُرْقَانِ ۚ فَمَن شَهِدَ مِنكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ۖ وَمَن كَانَ مَرِيضًا أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ۗ يُرِيدُ اللَّهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ الْعُسْرَ وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَاكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٨٥﴾

185. रमज़ान का महीना (वोह है) जिस में क़ुर्आन उतारा गया है जो लोगों के लिए हिदायत है और (जिसमें) रहनुमाई करनेवाली और (हक़्क़ो बातिल में) इम्तियाज़ करनेवाली वाज़ेह निशानियां हैं, पस तुममें से जो कोई इस महीने को पा ले तो वोह इस के रोज़े ज़रूर रखे और जो कोई बीमार हो या सफ़र पर हो तो दूसरे दिनों के रोज़ों से गिन्ती पूरी करे, अल्लाह तुम्हारे हक़ में आसानी चाहता है और तुम्हारे लिए दुश्वारी नहीं चाहता, और इस लिए कि तुम गिन्ती पूरी कर सको और इस लिए कि उस ने तुम्हें जो हिदायत फ़रमाई है उस पर उस की बड़ाई बयान करो और इस लिए कि तुम शुक्र गुज़ार बन जाओ।

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ ۖ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ ۖ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ ﴿١٨٦﴾

186. (और ऐ हबीब !) जब मेरे बन्दे आप से मेरी निस्बत सवाल करें तो (बता दिया करें कि) मैं नज़दीक हूं, मैं पुकारनेवाले की पुकार का जवाब देता हूं, जब भी वोह मुझे पुकारता है, पस उन्हें चाहिए कि मेरी फ़रमांबरदारी इख़्तियार करें और मुझ पर पुख़्ता यक़ीन रखें ताकि वोह राहे (मुराद) पा जाएं।

أُحِلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ إِلَىٰ نِسَآئِكُمْ ۚ هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ وَأَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ ۗ عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَخْتَانُونَ أَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنْكُمْ ۖ فَالْـٰٔنَ بَاشِرُوهُنَّ وَابْتَغُوا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ ۚ وَكُلُوا وَاشْرَبُوا حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْأَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الْأَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ۖ ثُمَّ أَتِمُّوا الصِّيَامَ إِلَى الَّيْلِ ۚ وَلَا تُبَاشِرُوهُنَّ وَأَنْتُمْ عَاكِفُونَ فِي الْمَسَاجِدِ ۗ تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ فَلَا تَقْرَبُوهَا ۗ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ آيَاتِهِ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿١٨٧﴾

187. तुम्हारे लिए रोज़ों की रातों में अपनी बीवियों के पास जाना ह़लाल कर दिया गया है वोह तुम्हारी पोशाक हैं और तुम उन की पोशाक हो, अल्लाह को मा'लूम है कि तुम अपने ह़क़ में ख़ियानत करते थे सो उस ने तुम्हारे ह़ाल पर रह़म किया और तुम्हें मुआ़फ़ फ़रमा दिया, पस अब (रोज़ों की रातों में बेशक) उनसे मुबाशिरत किया करो और जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दिया है चाहा करो और खाते पीते रहा करो यहां तक कि तुम पर सुब्ह़ का सफ़ेद डोरा (रात के) सियाह डोरे से (अलग हो कर) नुमायां हो जाए, फिर रोज़ह रात (की आमद) तक पूरा करो, और औ़रतों से इस दौरान शब बाशी न किया करो जब तुम मस्जिदों में ए'तिकाफ़ बैठे हो, येह अल्लाह की (क़ाइम कर्दह) हदें हैं पस उन (के तोड़ने) के नज़दीक न जाओ, इसी तरह़ अल्लाह लोगों के लिए अपनी आयतें (खोल कर) बयान फ़रमाता है ताकि वोह परहेज़गारी इख़्तियार करें।

وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوا بِهَا إِلَى الْحُكَّامِ لِتَأْكُلُوا فَرِيقًا مِنْ أَمْوَالِ النَّاسِ بِالْإِثْمِ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١٨٨﴾ ع ٢٣

188. और तुम एक दूसरे के माल आपस में नाह़क़ न खाया करो और न माल को (बतौरे रिश्वत) ह़ाकिमों तक पहुंचाया करो कि यूं लोगों के माल का कुछ ह़िस्सा तुम (भी) ना जाइज़ तरीक़े से खा सको हालांकि तुम्हारे इ़ल्म में हो (कि येह गुनाह है)।

يَسْـَٔلُونَكَ عَنِ الْأَهِلَّةِ ۖ قُلْ هِيَ مَوَاقِيتُ لِلنَّاسِ وَالْحَجِّ ۗ وَلَيْسَ الْبِرُّ بِأَنْ تَأْتُوا الْبُيُوتَ مِنْ

189. (ऐ ह़बीब !) लोग आप से नए चांदों के बारे में दर्याफ़्त करते हैं, फ़रमा दें येह लोगों के लिए और माहे ह़ज्ज (तअ़य्युन) के लिए वक़्त की अ़लामतें हैं, और येह कोई नेकी नहीं कि तुम (ह़ालते एह़राम में) घरों में उन

ظُهُوْرِهَا وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اتَّقٰى ۚ وَاْتُوا الْبُيُوْتَ مِنْ اَبْوَابِهَا ۠ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿١٨٩﴾

की पुश्त की तरफ़ से आओ बल्कि नेकी तो (ऐसी उल्टी रस्मों की बजाए) परहेज़गारी इख़्तियार करना है, और तुम घरों में उन के दरवाज़ों से आया करो, और अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम फ़लाह् पाओ।

وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿١٩٠﴾

190. और अल्लाह की राह में उन से जंग करो जो तुम से जंग करते हैं (हां) मगर ह्द से न बढ़ो, बेशक अल्लाह ह्द से बढ़नेवालों को पसन्द नहीं फ़रमाता।

وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ وَاَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ حَيْثُ اَخْرَجُوْكُمْ وَالْفِتْنَةُ اَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ ۚ وَلَا تُقٰتِلُوْهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتّٰى يُقٰتِلُوْكُمْ فِيْهِ ۚ فَاِنْ قٰتَلُوْكُمْ فَاقْتُلُوْهُمْ ؕ كَذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٩١﴾

191. और (दौराने जंग) उन (काफ़िरों) को जहां भी पाओ मार डालो और उन्हें वहां से बाहर निकाल दो जहां से उन्हों ने तुम्हें निकाला था और फ़ित्ना अंगेज़ी तो क़त्ल से भी ज़ियादह सख़्त (जुर्म) है और उन से मस्जिदे ह़राम (ख़ानए का'बा) के पास जंग न करो जब तक वोह खुद तुम से वहां जंग न करें, फिर अगर वोह तुम से क़िताल करें तो उन्हें क़त्ल कर डालो, (ऐसे) काफ़िरों की येही सज़ा है।

فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٩٢﴾

192. फिर अगर वोह बाज़ आ जाएं तो बेशक अल्लाह निहायत बख़्शनेवाला महरबान है।

وَقٰتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ لِلّٰهِ ؕ فَاِنِ انْتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ اِلَّا عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩٣﴾

193. और उन से जंग करते रहो हत्ता कि कोई फित्ना बाक़ी न रहे और दीन (या'नी ज़िन्दगी और बन्दगी का निज़ाम अ-मलन) अल्लाह ही के ताबे' हो जाए, फिर अगर वोह बाज़ आ जाएं तो सिवाए ज़ालिमों के किसी पर ज़ियादती रवा नहीं।

اَلشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمٰتُ قِصَاصٌ ؕ فَمَنِ اعْتَدٰى

194. हुर्मतवाले महीने के बदले हुर्मतवाला महीना है और (दीगर) हुर्मतवाली चीज़ें एक दूसरे का बदल हैं।

عَلَيْكُمْ فَاعْتَدُوْا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ ۠ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ اعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۹۴﴾

पस अगर तुम पर कोई ज़ियादती करे तुम भी उस पर ज़ियादती करो मगर उसी क़दर जित्नी उस ने तुम पर की और अल्लाह से डरते रहो और जान लो कि अल्लाह डरनेवालों के साथ है।

وَاَنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ ۛ وَاَحْسِنُوْا ۛ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۹۵﴾

مع

195. और अल्लाह की राह में ख़र्च करो और अपने ही हाथों खुद को हलाकत में न डालो, और नेकी इख़्तियार करो, बेशक अल्लाह नेकूकारों से मुहब्बत फ़रमाता है।

وَاَتِمُّوا الْحَجَّ وَ الْعُمْرَةَ لِلّٰهِ ؕ فَاِنْ اُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ وَ لَا تَحْلِقُوْا رُءُوْسَكُمْ حَتّٰى يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحِلَّهٗ ؕ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا اَوْ بِهٖٓ اَذًى مِّنْ رَّاْسِهٖ فَفِدْيَةٌ مِّنْ صِيَامٍ اَوْ صَدَقَةٍ اَوْ نُسُكٍ ۚ فَاِذَآ اَمِنْتُمْ ۥ فَمَنْ تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ اِلَى الْحَجِّ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ فِي الْحَجِّ وَسَبْعَةٍ اِذَا رَجَعْتُمْ ؕ تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ لَّمْ يَكُنْ اَهْلُهٗ حَاضِرِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ وَ اعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿۱۹۶﴾

ع ۲۴ ۸

196. और हज्ज और उमरह (के मनासिक) अल्लाह के लिए मुकम्मल करो, फिर अगर तुम (रास्ते में) रोक लिए जाओ तो जो कुरबानी भी मुयस्सर आए (करने के लिए भेज दो) और अपने सरों को उस वक़्त तक न मुंडवाओ जब तक कुरबानी (का जानवर) अपने मुक़ाम पर न पहुंच जाए, फिर तुम में से जो कोई बीमार हो या उस के सर में कुछ तक्लीफ़ हो (इस वजह से क़ब्ल अज़ वक़्त सर मुंडवा ले) तो (उस के बदले) में रोज़े (रखे) या सदक़ह (दे) या कुरबानी (करे) फिर जब तुम इत्मीनान की हालत में हो तो जो कोई उमरह को हज के साथ मिलाने का फ़ाइदह उठाए तो जो भी कुरबानी मुयस्सर आए (कर दे), फिर जिसे येह भी मुयस्सर न हो वोह तीन दिन के रोज़े (ज़मानए) हज में रखे और सात जब तुम हज से वापस लौटो, येह पूरे दस (रोज़े) हुए, येह (रिआयत) उस के लिए है जिस के अहलो अयाल मस्जिदे हराम के पास न रेहते हों। (या'नी जो मक्का का रेहने वाला न हो), और अल्लाह से डरते रहो और जान लो कि अल्लाह सख़्त अज़ाब देने वाला है।

اَلْحَجُّ اَشْهُرٌ مَّعْلُوْمٰتٌ ۚ فَمَنْ فَرَضَ فِيْهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوْقَ ۙ وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ يَّعْلَمْهُ اللّٰهُ ؔؕ وَتَزَوَّدُوْا فَاِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوٰى ۫ وَاتَّقُوْنِ يٰۤاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿۱۹۷﴾

وقف النبي صلى الله عليه وسلم

197. हज के चन्द महीने मुअय्यन हैं (या'नी शव्वाल, जुल का'दह और अशरए ज़िल हिज्जा) तो जो शख़्स इन (महीनों) में निय्यत कर के (अपने ऊपर) हज लाज़िम कर ले तो हज के दिनों में न औरतों से इख़्तिलात करे और न कोई (और) गुनाह और न ही किसी से झगड़ा करे, और तुम जो भलाई भी करो अल्लाह उसे खूब जानता है, और (आख़िरत के) सफ़र का सामान कर लो बेशक सब से बेहतर ज़ादे राह तक़्वा है और ऐ अक़्लवालो ! मेरा तक़्वा इख़्तियार करो।

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ فَاِذَاۤ اَفَضْتُمْ مِّنْ عَرَفٰتٍ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ ۠ وَاذْكُرُوْهُ كَمَا هَدٰىكُمْ ۚ وَاِنْ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿۱۹۸﴾

198. और तुम पर इस बात में कोई गुनाह नहीं अगर तुम (ज़मानए हज में तिजारत के ज़रीए) अपने रब का फ़ज़्ल (भी) तलाश करो फिर जब तुम अ-रफ़ात से वापस आओ तो मश्अरे हराम (मुज़दलिफ़ा) के पास अल्लाह का ज़िक्र किया करो और उस का ज़िक्र इस तरह करो जैसे उस ने तुम्हें हिदायत फ़रमाई, और बेशक इस से पहले तुम भटके हुए थे।

ثُمَّ اَفِيْضُوْا مِنْ حَيْثُ اَفَاضَ النَّاسُ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۹۹﴾

199. फिर तुम वहीं से जा कर वापस आया करो जहां से (और) लोग वापस आते हैं और अल्लाह से (खूब) बख़्शिश तलब करो, बेशक अल्लाह निहायत बख़्शनेवाला महरबान है।

فَاِذَا قَضَيْتُمْ مَّنَاسِكَكُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ اٰبَآءَكُمْ اَوْ اَشَدَّ ذِكْرًا ؕ فَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَاۤ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا وَمَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ﴿۲۰۰﴾

200. फिर जब तुम अपने हज के अर्कान पूरे कर चुको तो (मिना में) अल्लाह का खूब ज़िक्र किया करो जैसे तुम अपने बापदादा का (बड़े शौक़ से) ज़िक्र करते हो या उस से भी ज़ियादह शिद्दते शौक़ से (अल्लाह का) ज़िक्र किया करो, फिर लोगों में से कुछ ऐसे भी हैं जो केहते हैं : ऐ हमारे रब हमें दुन्या में (ही) अ़ता कर दे और ऐसे शख़्स के लिए आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं है।

وَمِنْهُم مَّن يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿٢٠١﴾

201. और उन्ही में से ऐसे भी हैं जो अ़र्ज़ करते हैं : "ऐ हमारे परवरदिगार ! हमें दुन्या में (भी) भलाई अ़ता फ़रमा और आख़िरत में (भी) भलाई (से नवाज़) और हमें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रख।

النصف

أُولَٰئِكَ لَهُمْ نَصِيبٌ مِّمَّا كَسَبُوا ۚ وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٢٠٢﴾

202. येही वोह लोग हैं जिन के लिए उन की (नेक) कमाई में से हिस्सा है, और अल्लाह जल्द हिसाब करने वाला है।

وَاذْكُرُوا اللَّهَ فِي أَيَّامٍ مَّعْدُودَاتٍ ۚ فَمَن تَعَجَّلَ فِي يَوْمَيْنِ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ ۚ وَمَن تَأَخَّرَ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ ۙ لِمَنِ اتَّقَىٰ ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٢٠٣﴾

203. और अल्लाह को (उन) गिन्ती के चन्द दिनों में (ख़ूब) याद किया करो, फिर जिस किसी ने (मिनासे वापसी में) दो ही दिनों में जल्दी की तो उस पर कोई गुनाह नहीं और जिस ने (इस में) ताख़ीर की तो उस पर भी कोई गुनाह नहीं, येह उस के लिए है जो परहेज़गारी इख़्तियार करे, और अल्लाह से डरते रहो और जान लो कि तुम सब को उसी के पास जमा' किया जाएगा।

وَمِنَ النَّاسِ مَن يُعْجِبُكَ قَوْلُهُ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيُشْهِدُ اللَّهَ عَلَىٰ مَا فِي قَلْبِهِ ۙ وَهُوَ أَلَدُّ الْخِصَامِ ﴿٢٠٤﴾

204. और लोगों में कोई शख़्स ऐसा भी (होता) है कि जिस की गुफ़्तुगू दुन्यावी ज़िन्दगी में तुझे अच्छी लगती है और वोह अल्लाह को अपने दिल की बात पर गवाह भी बनाता है, हालांकि वोह सब से ज़ियादह झगड़ालू है।

وَإِذَا تَوَلَّىٰ سَعَىٰ فِي الْأَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ۗ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ ﴿٢٠٥﴾

205. और जब वोह (आप से) फिर जाता है तो ज़मीन में (हर मुम्किन) भाग दौड़ करता है ता कि उस में फ़साद अंगेज़ी करे और खेतियां और जानें तबाह कर दे, और अल्लाह फ़साद को पसन्द नहीं फ़रमाता।

وَإِذَا قِيلَ لَهُ اتَّقِ اللَّهَ أَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْإِثْمِ فَحَسْبُهُ جَهَنَّمُ ۚ وَلَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿٢٠٦﴾

206. और जब उसे इस (ज़ुल्मो फ़साद पर) कहा जाए कि अल्लाह से डरो तो उस का ग़ुरूर उसे मज़ीद गुनाह पर उक्साता है, पस उस के लिए जहन्नम काफ़ी है और वोह यक़ीनन बुरा ठिकाना है।

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَشْرِي نَفْسَهُ

207. और (इस के बर अ़क्स) लोगों में कोई शख़्स ऐसा

ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ ؕ وَ اللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿۲۰۷﴾

भी होता है जो अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिए अपनी जान भी बेच डालता है, और अल्लाह बन्दों पर बड़ी महरबानी फ़रमानेवाला है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ادْخُلُوْا فِى السِّلْمِ كَآفَّةً ۪ وَّلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۲۰۸﴾

208. ऐ ईमानवालो ! इस्लाम में पूरे पूरे दाख़िल हो जाओ, और शैतान के रास्तों पर न चलो, बेशक वोह तुम्हारा खुला दुश्मन है।

فَاِنْ زَلَلْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْكُمُ الْبَيِّنٰتُ فَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۲۰۹﴾

209. पस अगर तुम इस के बा'द भी लग्ज़िश करो जब कि तुम्हारे पास वाज़ेह़ निशानियां आ चुकीं तो जान लो कि अल्लाह बहुत ग़ालिब बड़ी ह़िक्मतवाला है।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّاۤ اَنْ يَّاْتِيَهُمُ اللّٰهُ فِىْ ظُلَلٍ مِّنَ الْغَمَامِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَقُضِىَ الْاَمْرُ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿۲۱۰﴾

210. क्या वोह इसी बात के मुन्तज़िर हैं कि बादल के साइबानों में अल्लाह (का अ़ज़ाब) आ जाए और फ़रिश्ते भी (नीचे उतर आएं) और (सारा) क़िस्सा तमाम हो जाए, तो सारे काम अल्लाह ही की तरफ़ लौटाए जाएंगे।

ع ۲۵ ۱۴ ۹

سَلْ بَنِىْۤ اِسْرَآءِيْلَ كَمْ اٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ اٰيَةٍۢ بَيِّنَةٍ ؕ وَمَنْ يُّبَدِّلْ نِعْمَةَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿۲۱۱﴾

211. आप बनी इसराईल से पूछ लें कि हम ने उन्हें कितनी वाज़ेह़ निशानियां अ़ता की थीं, और जो शख़्स अल्लाह की ने'मत को अपने पास आजाने के बा'द बदल डाले तो बेशक अल्लाह सख़्त अ़ज़ाब देने वाला है।

زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَيَسْخَرُوْنَ مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۘ وَالَّذِيْنَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿۲۱۲﴾

وقف لازم

212. काफ़िरों के लिए दुनिया की ज़िन्दगी खूब आरास्तह कर दी गई है और वोह ईमानवालों से तमस्ख़ुर करते हैं, और जिन्हों ने तक़्वा इख़्तियार किया वोह क़ियामत के दिन उन पर सर बुलन्द होंगे, और अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब नवाज़ता है।

كَانَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً فَبَعَثَ
اللّٰهُ النَّبِيّٖنَ مُبَشِّرِيْنَ وَ
مُنْذِرِيْنَ وَاَنْزَلَ مَعَهُمُ الْكِتٰبَ
بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِيْمَا
اخْتَلَفُوْا فِيْهِ وَمَا اخْتَلَفَ فِيْهِ اِلَّا
الَّذِيْنَ اُوْتُوْهُ مِنْ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ
الْبَيِّنٰتُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ فَهَدَى اللّٰهُ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ مِنَ
الْحَقِّ بِاِذْنِهٖ وَ اللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ
يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢١٣﴾

213. (इब्तिदा में) सब लोग एक ही दीन पर जमा' थे, (फिर जब उन में इख़्तिलाफ़ात रूनुमा हो गए) तो अल्लाहने बशारत देने वाले और डर सुनानेनवाले पयग़ंबरों को भेजा, और उन के साथ हक़ पर मब्नी किताब उतारी ताकि वोह लोगों में उन उमूर का फ़ैसला कर दे जिन में वोह इख़्तिलाफ़ करने लगे थे और उस में इख़्तिलाफ़ भी फ़क़त उन्ही लोगों ने किया जिन्हें वोह किताब दी गई थी, बावजूद इस के कि उन के पास वाज़ेह़ निशानियां आ चुकी थीं। (और उन्हों ने येह इख़्तिलाफ़ भी) महज़ बाहमी बुग़्ज़ो ह़सद के बाइस (किया) फिर अल्लाहने ईमानवालों को अपने हुक्म से वोह ह़क़ की बात समझा दी जिस में वोह इख़्तिलाफ़ करते थे, और अल्लाह जिसे चाहता है सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत फ़रमा देता है।

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَ
لَمَّا يَاْتِكُمْ مَّثَلُ الَّذِيْنَ خَلَوْا
مِنْ قَبْلِكُمْ مَسَّتْهُمُ الْبَاْسَآءُ
وَالضَّرَّآءُ وَزُلْزِلُوْا حَتّٰى يَقُوْلَ
الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ مَتٰى
نَصْرُ اللّٰهِ اَلَآ اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ
قَرِيْبٌ ﴿٢١٤﴾

214. क्या तुम येह गुमान करते हो कि तुम (यूंही बिला आज़माइश) जन्नत में दाख़िल हो जाओगे हालांकि तुम पर तो अभी उन लोगों जैसी हालत (ही) नहीं बीती जो तुम से पहले गुज़र चुके, उन्हें तो तरह तरह की सख़्तियां और तक्लीफें पहुंचीं और उन्हें (इस तरह) हिला डाला गया कि (खुद) पयग़म्बर और उन के ईमान वाले साथी (भी) पुकार उठे कि अल्लाह की मदद कब आएगी ? आगाह हो जाओ कि बेशक अल्लाह की मदद क़रीब है।

يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ قُلْ مَآ
اَنْفَقْتُمْ مِّنْ خَيْرٍ فَلِلْوَالِدَيْنِ
وَالْاَقْرَبِيْنَ وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ

215. आप से पूछते हैं कि (अल्लाह की राह में) क्या ख़र्च करें? फ़रमा दें : जिस क़दर भी माल ख़र्च करो (दुरुस्त है), मगर उस के ह़क़दार तुम्हारे मांबाप हैं और क़रीबी रिश्तेदार हैं और यतीम हैं और मोह़ताज हैं और मुसाफ़िर

وَابْنِ السَّبِيْلِ ۗ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ
خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿۲۱۵﴾

हैं, और जो नेकी भी तुम करते हो बेशक अल्लाह उसे खूब जाननेवाला है।

كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهٌ
لَّكُمْ ۚ وَعَسٰۤى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا وَّ
هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰۤى اَنْ تُحِبُّوْا
شَيْـًٔا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ۗ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَ
اَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۱۶﴾

ع ۲۶ / ۱۰

216. (अल्लाह की राह में) क़िताल तुम पर फ़र्ज़ कर दिया गया है हालांकि वोह तुम्हें तब्अ़न ना गवार है, और मुम्किन है तुम किसी चीज़ को नापसंद करो और वोह (हक़ीक़तन) तुम्हारे लिए बेहतर हो और (येह भी) मुम्किन है कि तुम किसी चीज़ को पसंद करो और वोह (हक़ीक़तन) तुम्हारे लिए बुरी हो, और अल्लाह खूब जानता है और तुम नहीं जानते।

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ
فِيْهِ ۗ قُلْ قِتَالٌ فِيْهِ كَبِيْرٌ ۗ وَصَدٌّ
عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَكُفْرٌۢ بِهٖ وَالْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ ۗ وَاِخْرَاجُ اَهْلِهٖ مِنْهُ اَكْبَرُ
عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَالْفِتْنَةُ اَكْبَرُ مِنَ
الْقَتْلِ ۗ وَلَا يَزَالُوْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ
حَتّٰى يَرُدُّوْكُمْ عَنْ دِيْنِكُمْ اِنِ
اسْتَطَاعُوْا ۗ وَمَنْ يَّرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ
دِيْنِهٖ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَاُولٰٓئِكَ
حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ
وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا
خٰلِدُوْنَ ﴿۲۱۷﴾

217. लोग आप से हुर्मत वाले महीने में जंग का हुक्म दर्याफ़्त करते हैं, फ़रमा दें, इस में जंग बड़ा गुनाह है और अल्लाह की राह से रोकना और उस से कुफ़्र करना और मस्जिदे ह़राम (ख़ानए का'बा) से रोकना और वहां के रेहनेवालों को वहां से निकालना अल्लाह के नज़दीक (इस से भी) बड़ा गुनाह है, और येह फ़ित्ना अंगेज़ी क़त्लो खून से भी बढ़ कर है और (येह काफ़िर) तुम से हमेशा जंग जारी रखेंगे। यहां तक कि तुम्हें तुम्हारे दीन से फेर दें अगर (वोह इतनी) ताक़त पा सकें और तुम में से जो शख़्स अपने दीन से फिर जाए और फिर वोह काफ़िर ही मरे तो ऐसे लोगों के दुनिया व आख़िरत में (सब) आ'माल बरबाद हो जाएंगे, और येही लोग जहन्नमी हैं वोह उसमें हमेशा रहेंगे।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ

218. बेशक जो लोग ईमान लाए और जिन्हों ने अल्लाह

هَاجَرُوْا وَ جٰهَدُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ ۙ اُولٰٓئِكَ یَرْجُوْنَ رَحْمَتَ اللّٰهِ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۲۱۸﴾

के लिए वतन छोड़ा और अल्लाह की राह में जिहाद किया, येही लोग अल्लाह की रह्मत के उम्मीदवार हैं। और अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला महरबान है।

یَسْــٴَـلُوْنَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَ الْمَیْسِرِ ؕ قُلْ فِیْهِمَاۤ اِثْمٌ كَبِیْرٌ وَّ مَنَافِعُ لِلنَّاسِ ۫ وَ اِثْمُهُمَاۤ اَكْبَرُ مِنْ نَّفْعِهِمَا ؕ وَ یَسْــٴَـلُوْنَكَ مَاذَا یُنْفِقُوْنَ ؕ۬ قُلِ الْعَفْوَ ؕ كَذٰلِكَ یُبَیِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰیٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ۙ﴿۲۱۹﴾

219. आप से शराब और जूए की निस्बत सवाल करते हैं फ़रमा दें : इन दोनों में बड़ा गुनाह है और लोगों के लिए कुछ दुन्यवी फ़ाइदे भी हैं मगर इन दोनों का गुनाह इन के नफ़े' से बढ़ कर है। और आप से येह भी पूछते हैं कि क्या कुछ ख़र्च करें ? फ़रमा दें : जो ज़रूरत से ज़ाइद है (ख़र्च कर दो), इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए (अपने) अह्काम खोल कर बयान फ़रमाता है ताकि तुम ग़ौरो फ़िक्र करो।

فِی الدُّنْیَا وَ الْاٰخِرَةِ ؕ وَ یَسْــٴَـلُوْنَكَ عَنِ الْیَتٰمٰى ؕ قُلْ اِصْلَاحٌ لَّهُمْ خَیْرٌ ؕ وَ اِنْ تُخَالِطُوْهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ یَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ ؕ وَ لَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَاَعْنَتَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِیْزٌ حَكِیْمٌ ﴿۲۲۰﴾

220. (तुम्हारा ग़ौरो फ़िक्र) दुनिया और आख़िरत (दोनों के मुआमलात) में (रहे), और आप से यतीमों के बारे में दर्याफ़्त करते हैं, फ़रमा दें : उन (के मुआमलात) का संवारना बेहतर है, और अगर उन्हें (नफ़्क़ा -व-कारोबार में) अपने साथ मिला लो तो वोह भी तुम्हारे भाई हैं, और अल्लाह ख़राबी करनेवाले को भलाई करनेवाले से जुदा पहचानता है, और अगर अल्लाह चाहता तो तुम्हें म-शक़्क़त में डाल देता, बेशक अल्लाह बड़ा ग़ालिब बड़ी हिक्मतवाला है।

وَ لَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكٰتِ حَتّٰى یُؤْمِنَّ ؕ وَ لَاَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ خَیْرٌ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ وَّ لَوْ اَعْجَبَتْكُمْ ۚ وَ لَا تُنْكِحُوا الْمُشْرِكِیْنَ حَتّٰى یُؤْمِنُوْا ؕ وَ لَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَیْرٌ مِّنْ

221. और तुम मुश्रिक औ़रतों के साथ निकाह़ मत करो जब तक वोह मुसल्मान न हो जाएं, और बेशक मुसल्मान लौंडी (आज़ाद) मुश्रिक औ़रत से बेहतर है ख़्वाह वोह तुम्हें भली ही लगे और (मुसल्मान औ़रतों का) मुश्रिक मर्दों से भी निकाह़ न करो जब तक वोह मुसल्मान न हो जाएं, और यक़ीनन मुश्रिक मर्द से मोमिन गुलाम बेहतर है ख़्वाह वोह तुम्हें भला ही लगे,

مُّشْرِكٍ وَّ لَوْ اَعْجَبَكُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ
يَدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ۚۖ وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا
اِلَى الْجَنَّةِ وَالْمَغْفِرَةِ بِاِذْنِهٖ ۚ
وَيُبَيِّنُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ
يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٢١﴾

वोह (काफ़िर और मुश्रिक) दोज़ख़ की तरफ़ बुलाते हैं, और अल्लाह अपने हुक्म से जन्नत और मग़फ़िरत की तरफ़ बुलाता है और अपनी आयतें लोगों के लिए खोल कर बयान फ़रमाता है ताकि वोह नसीहत हासिल करें।

ع ٢٨ ٥

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْمَحِيْضِ ؕ قُلْ هُوَ
اَذًى ۙ فَاعْتَزِلُوا النِّسَآءَ فِي
الْمَحِيْضِ ۙ وَلَا تَقْرَبُوْهُنَّ حَتّٰى
يَطْهُرْنَ ۚ فَاِذَا تَطَهَّرْنَ فَاْتُوْهُنَّ مِنْ
حَيْثُ اَمَرَكُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ
التَّوَّابِيْنَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ ﴿٢٢٢﴾

222. और आप से हैज़ (अय्यामे माहवारी) की निस्बत सवाल करते हैं, फ़रमा दें, वोह नजासत है, सो तुम हैज़ के दिनों में औरतों से कनारह कश रहा करो, और जब तक वोह पाक न हो जाएं उनके क़रीब न जाया करो, और जब वोह खूब पाक हो जाएं तो जिस रास्ते से अल्लाह ने तुम्हें इजाज़त दी है उन के पास जाया करो, बेशक अल्लाह बहुत तौबा करनेवालों से मुहब्बत फ़रमाता है और खूब पाकीज़गी इख़्तियार करनेवालों से मुहब्बत फ़रमाता है।

نِسَآؤُكُمْ حَرْثٌ لَّكُمْ ۪ فَاْتُوْا حَرْثَكُمْ
اَنّٰى شِئْتُمْ ۫ وَقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ ؕ وَ
اتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ مُّلٰقُوْهُ ؕ
وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٢٣﴾

223. तुम्हारी औरतें तुम्हारी खेतियां हैं पस तुम अपनी खेतियों जैसे चाहो आओ, और अपने लिए आइन्दह का कुछ सामान कर लो और तक़्वा इख़्तियार करो और जान लो कि तुम उस के हुज़ूर पेश होने वाले हो, और (ऐ हबीब!) आप अहले ईमान को खुश ख़बरी सुना दें (कि अल्लाह के हुज़ूर उन की पेशी बेहतर रहेगी)।

وَلَا تَجْعَلُوا اللّٰهَ عُرْضَةً لِّاَيْمَانِكُمْ
اَنْ تَبَرُّوْا وَتَتَّقُوْا وَتُصْلِحُوْا بَيْنَ
النَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٢٤﴾

224. और अपनी क़स्मो के बाइस अल्लाह(के नाम) को (लोगों के साथ) नेकी करने और परहेज़गारी इख़्तियार करने और लोगों में सुलह कराने में आड़ मत बनाओ, और अल्लाह खूब सुनने वाला बड़ा जाननेवाल है।

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ

225. अल्लाह तुम्हारी बेहूदा क़स्मों पर तुम से मुवाख़िज़ह

وَ لٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا كَسَبَتْ قُلُوْبُكُمْ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿٢٢٥﴾

नहीं फ़रमाएगा मगर उन का ज़रूर मुवाख़िज़ह फ़रमाएगा जिन का तुम्हारे दिलों ने इरादह किया हो, और अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला बहुत हिल्म वाला है।

لِلَّذِيْنَ يُؤْلُوْنَ مِنْ نِّسَآئِهِمْ تَرَبُّصُ اَرْبَعَةِ اَشْهُرٍ ۚ فَاِنْ فَآءُوْ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٢٦﴾

226. और उन लोगों के लिए जो अपनी बीवियों के करीब न जाने की क़सम खा लें चार माह की मोहलत है पस अगर वोह (इस मुद्दत में) रुजूअ़ कर लें तो बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला महरबान है।

وَاِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَاِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٢٧﴾

227. और अगर उन्हों ने तलाक़ का पुख़्ता इरादह कर लिया हो तो बेशक अल्लाह खूब सुननेवाला जाननेवाला है।

وَالْمُطَلَّقٰتُ يَتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ ثَلٰثَةَ قُرُوْٓءٍ ۭ وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ اَنْ يَّكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ فِيْٓ اَرْحَامِهِنَّ اِنْ كُنَّ يُؤْمِنَّ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۭ وَبُعُوْلَتُهُنَّ اَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ فِيْ ذٰلِكَ اِنْ اَرَادُوْٓا اِصْلَاحًا ۭ وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِيْ عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۠ وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ ۭ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٢٨﴾ ع

228. और तलाक़ याफ़्ता औ़रतें अपने आप को तीन हैज़ तक रोके रख्खें, और उन के लिए जाइज़ नहीं कि वोह उसे छुपाएं जो अल्लाहने उन के रह़्मों में पैदा फ़रमा दिया हो, अगर वोह अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर ईमान रखती हैं, और इस मुद्दत के अंदर उन के शौहरों को उन्हें (फिर) अपनी ज़ौजिय्यत में लौटा लेने का ह़क़ ज़ियादह है अगर वोह इस्लाह़ का इरादह कर लें, और दस्तूर के मुताबिक़ औ़रतों के भी मर्दों पर इसी तरह़ के हुक़ूक़ हैं जैसे मर्दों के औ़रतों पर, अलबत्ता मर्दों को उन पर फ़ज़ीलत है, और अल्लाह बड़ा ग़ालिब बड़ी हिक्मतवाला है।

اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ ۠ فَاِمْسَاكٌۢ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ تَسْرِيْحٌۢ بِاِحْسَانٍ ۭ وَلَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ تَاْخُذُوْا مِمَّآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ شَيْـًٔا اِلَّآ اَنْ يَّخَافَآ اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ

229. तलाक़ (सिर्फ़) दो बार (तक) है फिर या तो (बीवी को) अच्छे तरीक़े से (ज़ौजिय्यत में) रोक लेना है या भलाई के साथ छोड़ देना है, और तुम्हारे लिए जाइज़ नहीं कि जो चीज़ें तुम उन्हें दे चुके हो उस में से कुछ वापस लो सिवाए इस के कि दोनों को अंदेशा हो कि (अब

اللّٰهِ ؕ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ
اللّٰهِ ۙ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا فِيْمَا افْتَدَتْ
بِهٖ ؕ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا
تَعْتَدُوْهَا ۚ وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ
فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۲۲۹﴾

रिश्तए ज़ौजिय्यत बरक़रार रखते हुए) दोनों अल्लाह की हुदूद को क़ाइम न रख सकेंगे, फिर अगर तुम्हें अंदेशा हो कि दोनों अल्लाह की हुदूद को क़ाइम न रख सकेंगे, सो (अंदरीं सूरत) उन पर कोई गुनाह नहीं कि बीवी (खुद) कुछ बदला दे कर (इस तक्लीफ़ देह बंधन से) आज़ादी ले ले येह अल्लाह की (मुक़र्रर की हुई) हदें हैं, पस तुम इन से आगे मत बढ़ो और जो लोग अल्लाह की हुदूद से तजावुज़ करते हैं सो वोही लोग ज़ालिम हैं।

فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهٗ مِنْۢ بَعْدُ
حَتّٰى تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَهٗ ؕ فَاِنْ
طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ اَنْ
يَّتَرَاجَعَآ اِنْ ظَنَّآ اَنْ يُّقِيْمَا
حُدُوْدَ اللّٰهِ ؕ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ
يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿۲۳۰﴾

230. फिर अगर उस ने (तीसरी मर्तबा) तलाक़ दे दी तो इसके बाद वोह उसके लिए हलाल न होगी यहां तक कि वोह किसी और शौहर के साथ निकाह कर ले, फिर अगर वोह दूसरा शौहर भी तलाक़ दे दे तो अब इन दोनों (या'नी पहले शौहर और इस औरत) पर कोई गुनाह न होगा अगर वोह (दोबारह रिश्तए ज़ौजिय्यत में) पलट जाएं ब शर्ते कि दोनों येह ख़याल करें कि (अब) वोह हुदूदे इलाही क़ाइम रख सकेंगे, येह अल्लाह की (मुक़र्रर कर्दह) हुदूद हैं जिन्हें वोह इल्मवालों के लिए बयान फ़रमाता है।

وَ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ
اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ
اَوْ سَرِّحُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ ۠ وَ لَا
تُمْسِكُوْهُنَّ ضِرَارًا لِّتَعْتَدُوْا ۚ وَ
مَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ
نَفْسَهٗ ؕ وَ لَا تَتَّخِذُوْٓا اٰيٰتِ اللّٰهِ
هُزُوًا ۠ وَ اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ

231. और जब तुम औरतों को तलाक़ दो और वोह अपनी इद्दत (पूरी होने को)आ पहुंचें तो उन्हें अच्छे तरीके से अपनी ज़ौजिय्यत में रोक लो या उन्हें अच्छे तरीक़े से छोड़ दो, और उन्हें महज़ तकलीफ़ देने के लिए न रोके रखखो कि (उन पर) ज़ियादती करते रहो और जो कोई ऐसा करे पस उस ने अपनी ही जान पर जुल्म किया, और अल्लाह के अह्काम को मज़ाक़ न बना लो, और याद करो अल्लाह की उस ने'मत को जो तुम पर(की गई) है और उस किताब को जो उस ने तुम पर नाज़िल फ़रमाई है और

عَلَيْكُمْ وَ مَآ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ وَالْحِكْمَةِ يَعِظُكُمْ بِهٖ ؕ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ وَ اعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۲۳۱﴾

दानाई (की बातों)को (जिन की उस ने तुम्हें ता'लीम दी है) वोह तुम्हें (इस अम्र की) नसीहत फ़रमाता है, और अल्लाह से डरो और जान लो कि बेशक अल्लाह सब कुछ जाननेवाला है।

وَ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ اَنْ يَّنْكِحْنَ اَزْوَاجَهُنَّ اِذَا تَرَاضَوْا بَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ ذٰلِكَ يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ ذٰلِكُمْ اَزْكٰى لَكُمْ وَ اَطْهَرُ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۳۲﴾

232. और जब तुम औ़रतों को तलाक़ दो और वोह अपनी इद्दत (पूरी होने को) आ पहुंचें तो जब वोह शरई दस्तूर के मुताबिक़ बाहम रज़ा मन्द हो जाएं तो उन्हें अपने (पुराने या नए) शौहरों से निकाह़ करने से मत रोको, उस शख़्स को इस अम्र की नसीहत की जाती है जो तुम में से अल्लाह पर और यौमे क़ियामत पर ईमान रखता हो, येह तुम्हारे लिए बहुत सुथरी और निहायत पाकीज़ा बात है, और अल्लाह जानता है और तुम (बहुत सी बातों को) नहीं जानते।

وَ الْوَالِدٰتُ يُرْضِعْنَ اَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ اَرَادَ اَنْ يُّتِمَّ الرَّضَاعَةَ ؕ وَعَلَى الْمَوْلُوْدِ لَهٗ رِزْقُهُنَّ وَ كِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ اِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَا تُضَآرَّ وَالِدَةٌۢ بِوَلَدِهَا وَلَا مَوْلُوْدٌ لَّهٗ بِوَلَدِهٖ ۗ وَعَلَى الْوَارِثِ مِثْلُ ذٰلِكَ ۚ فَاِنْ اَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ مِّنْهُمَا وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ

233. और माएं अपने बच्चों को पूरे दो बरस तक दूध पिलाएं येह (हुक्म) उस के लिए है जो दूध पिलाने की मुद्दत पूरी करना चाहे, और दूध पिलानेवाली माओं का खाना और पहनना दस्तूर के मुताबिक बच्चे के बाप पर लाज़िम है, किसी जान को उस की ताक़त से बढ़ कर तक्लीफ़ न दी जाए,(और) न मां को उस के बच्चे के बाइस नुक़्सान बहुंचाया जाए और न बाप को उस की औलाद के सबब से, और वारिसों पर भी येही हुक्म आइद होगा, फिर अगर माँ–बाप दोनों बाहमी रज़ामन्दी और मश्वरे से (दो बरस से पहले ही) दूध छुड़ाना चाहें तो उन पर कोई गुनाह नहीं और फिर अगर तुम अपनी औलाद को (दाया) से दूध पिलवाने का इरादा रखते हो तब भी

عَلَيْهِمَا ۗ وَ اِنْ اَرَدْتُّمْ اَنْ تَسْتَرْضِعُوْٓا اَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِذَا سَلَّمْتُمْ مَّآ اٰتَيْتُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ۗ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢٣٣﴾

तुम पर कोई गुनाह नहीं जब कि जो तुम दस्तूर के मुताबिक़ देते हो उन्हें अदा कर दो, और अल्लाह से डरते रहो और येह जान लो कि बेशक जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे ख़ूब देखनेवाला है।

وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا يَّتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّعَشْرًا ۚ فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا فَعَلْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٢٣٤﴾

234. और तुम में से जो फ़ौत हो जाएं और (अपनी) बीवियां छोड़ जाएं तो वोह अपने आप को चार माह दस दिन इन्तिज़ार में रोके रखें, फिर जब वोह अपनी इद्दत (पूरी होने) को आ पहुंचें तो फिर जो कुछ वोह शरई दस्तूर के मुताबिक़ अपने हक में करें तुम पर इस मुआमले में कोई मुवाख़ज़ा नहीं, और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उस से अच्छी तरह ख़बरदार है।

وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا عَرَّضْتُمْ بِهٖ مِنْ خِطْبَةِ النِّسَآءِ اَوْ اَكْنَنْتُمْ فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ ۗ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ سَتَذْكُرُوْنَهُنَّ وَ لٰكِنْ لَّا تُوَاعِدُوْهُنَّ سِرًّا اِلَّآ اَنْ تَقُوْلُوْا قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۬ۗ وَلَا تَعْزِمُوْا عُقْدَةَ النِّكَاحِ حَتّٰى يَبْلُغَ الْكِتٰبُ اَجَلَهٗ ۗ وَ اعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوْهُ ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿٢٣٥﴾ ع

235. और तुम पर इस बात में कोई गुनाह नहीं कि(दौराने इद्दत भी) उन औरतों को इशारतन निकाह़ का पैग़ाम दे दो या (येह ख़याल) अपने दिलों में छुपा रखखो, अल्लाह जानता है कि तुम अ़नक़रीब उन से ज़िक्र करोगे मगर उन से ख़ुफ़्या तौर पर भी (ऐसा) वा'दा न लो सिवाए इस के कि तुम फ़क़त शरीअ़त की (रू से किनायतन) मा'रूफ़ बात केह दो, और (इस दौरान) अ़क़्दे निकाह़ का पुख़्ता अ़ज़्म न करो यहां तक कि मुक़र्ररा इद्दत अपनी इन्तिहा को पहुंच जाए, और जान लो कि अल्लाह तुम्हारे दिलों की बात को भी जानता है तो उस से डरते रहा करो, और(येह भी) जान लो कि अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला बड़ा ह़िल्मवाला है।

ع ٣٠ ١٤

لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ مَا لَمْ تَمَسُّوْهُنَّ اَوْ تَفْرِضُوْا لَهُنَّ فَرِيْضَةً ۖۚ وَّ مَتِّعُوْهُنَّ ۚ عَلَى الْمُوْسِعِ قَدَرُهٗ وَعَلَى الْمُقْتِرِ قَدَرُهٗ ۚ مَتَاعًا بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٢٣٦﴾

236. तुम पर इस बात में (भी) कोई गुनाह नहीं कि अगर तुमने (अपनी मन्कूहा) औरतों को उन के छूने या उनके महर मुक़र्रर करने से भी पहले तलाक़ दे दी है तो उन्हें (ऐसी सूरत में) मुनासिब ख़र्चा दे दो, वुस्अ़तवाले पर उस की हैसियत के मुताबिक़ (लाज़िम) है और तंगदस्त पर उस की हैसियत के मुताबिक, (बहर तौर) येह ख़र्चा मुनासिब तरीक़ पर दिया जाए, येह भलाई करनेवालों पर वाजिब है।

وَاِنْ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ وَ قَدْ فَرَضْتُمْ لَهُنَّ فَرِيْضَةً فَنِصْفُ مَا فَرَضْتُمْ اِلَّآ اَنْ يَّعْفُوْنَ اَوْ يَعْفُوَا الَّذِيْ بِيَدِهٖ عُقْدَةُ النِّكَاحِ ؕ وَاَنْ تَعْفُوْٓا اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ؕ وَلَا تَنْسَوُا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢٣٧﴾

237. और अगर तुमने उन्हें छूने से पहले तलाक़ दे दी दर आं हाली कि तुम उन का महर मुक़र्रर कर चुके थे तो उस महर का जो तुमने मुक़र्रर किया था निस्फ़ देना ज़रूरी है सिवाए इस के कि वोह (अपना हक़) खुद मुआफ़ कर दें या वोह (शौहर) जिस के हाथ में निकाह की गिरह है मुआफ़ कर दे (या'नी बजाए निस्फ़ के ज़ियादह या पूरा अदा कर दे), और (ऐ मर्दो !) अगर तुम मुआफ़ कर दो तो येह तक़्वा के क़रीबतर है, और (कशीदगी के इन लम्हात में भी) आपस में एहसान करना न भूला करो, बेशक अल्लाह तुम्हारे आ'माल को खूब देखनेवाला है।

حٰفِظُوْا عَلَى الصَّلَوٰتِ وَ الصَّلٰوةِ الْوُسْطٰى ۗ وَقُوْمُوْا لِلّٰهِ قٰنِتِيْنَ ﴿٢٣٨﴾

238. सब नमाज़ों की मुहाफ़िज़त किया करो और बिल खुसूस दरमियानी नमाज़ की, और अल्लाह के हुज़ूर सरापा अदबो नियाज़ बन कर क़ियाम किया करो।

فَاِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا اَوْ رُكْبَانًا ۚ فَاِذَآ اَمِنْتُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَمَا عَلَّمَكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٣٩﴾

239. फिर अगर तुम हालते ख़ौफ़ में हो तो पियादह या सवार (जैसे भी हो नमाज़ पढ़ लिया करो), फिर जब तुम हालते अम्न में आ जाओ तो उन्ही तरीक़ों पर अल्लाह को याद करो जो उसने तुम्हें सिखाए हैं जिन्हें तुम (पहले) नहीं जानते थे।

وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا ۖۚ وَّصِيَّةً لِّاَزْوَاجِهِمْ مَّتَاعًا

240. और तुम में से जो लोग फ़ौत हों और (अपनी) बीवियां छोड़ जाएं उन पर लाज़िम है कि (मरने से पहले)

إِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ إِخْرَاجٍ ۚ فَإِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِي مَا فَعَلْنَ فِي أَنفُسِهِنَّ مِن مَّعْرُوفٍ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٤٠﴾

अपनी बीवियों के लिए उन्हें एक साल तक का ख़र्चा देने (और) अपने घरों से न निकाले जाने की वसिय्यत कर जाएं, फिर अगर वोह ख़ुद (अपनी मरज़ी से) निकल जाएं तो दस्तूर के मुताबिक़ जो कुछ भी वोह अपने हक़ में करें तुम पर इस मुआमले में कोई गुनाह नहीं, और अल्लाह बड़ा ग़ालिब बड़ी हिक्मतवाला है।

وَلِلْمُطَلَّقَاتِ مَتَاعٌ بِالْمَعْرُوفِ ۖ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِينَ ﴿٢٤١﴾

241. और तलाक़ याफ़्ता औ़रतों को भी मुनासिब तरीक़े से ख़र्चा दिया जाए, येह परहेज़ारों पर वाजिब है।

كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٢٤٢﴾ ع ٣١ ١٥

२४२. इसी तरह़ अल्लाह तुम्हारे लिए अपने अह़काम वाज़ेह फ़रमाता है ता कि तुम समझ सको।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ خَرَجُوا مِن دِيَارِهِمْ وَهُمْ أُلُوفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ فَقَالَ لَهُمُ اللَّهُ مُوتُوا ثُمَّ أَحْيَاهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٢٤٣﴾

243. (ऐ ह़बीब!) क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा जो मौत के डर से अपने घरों से निकल गए हालांकि वोह हज़ारों (की ता'दाद में) थे, तो अल्लाहने उन्हें हुक्म दिया मर जाओ (सो वोह मर गए), फिर उन्हें ज़िन्दह फ़रमा दिया, बेशक अल्लाह लोगों पर फ़ज़्ल फ़रमानेवाला है मगर अक्सर लोग(उस का) शुक्र अदा नहीं करते।

وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٤٤﴾

244. (ऐ मुसल्मानों !) अल्लाह की राह में जंग करो और जान लो कि अल्लाह ख़ूब सुननेवाला जाननेवाला है।

مَّن ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضَاعِفَهُ لَهُ أَضْعَافًا كَثِيرَةً ۚ وَاللَّهُ يَقْبِضُ وَيَبْسُطُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٢٤٥﴾

245. कौन है जो अल्लाह को क़र्ज़े ह़-सना दे फिर वोह उस के लिए उसे कई गुना बढ़ा देगा, और अल्लाह ही (तुम्हारे रिज़्क़में) तंगी और कुशादगी करता है, और तुम उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे।

اَلَمۡ تَرَ اِلَى الۡمَلَاِ مِنۡۢ بَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ مِنۡۢ بَعۡدِ مُوۡسٰى ۘ اِذۡ قَالُوۡا لِنَبِىٍّ لَّهُمُ ابۡعَثۡ لَنَا مَلِكًا نُّقَاتِلۡ فِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ ‌ؕ قَالَ هَلۡ عَسَيۡتُمۡ اِنۡ كُتِبَ عَلَيۡکُمُ الۡقِتَالُ اَلَّا تُقَاتِلُوۡا ‌ؕ قَالُوۡا وَمَا لَنَآ اَلَّا نُقَاتِلَ فِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ وَقَدۡ اُخۡرِجۡنَا مِنۡ دِيَارِنَا وَاَبۡنَآٮِٕنَا ‌ؕ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيۡهِمُ الۡقِتَالُ تَوَلَّوۡا اِلَّا قَلِيۡلًا مِّنۡهُمۡ‌ؕ وَاللّٰهُ عَلِيۡمٌۢ بِالظّٰلِمِيۡنَ ﴿۲۴۶﴾

246. (ऐ हबीब!) क्या आपने बनी इसराईल के उस गिरोह को नहीं देखा जो मूसा (عليه السلام) के बा'द हुवा, जब उन्होंने अपने पयग़म्बर से कहा कि हमारे लिए एक बादशाह मुक़र्रर कर दें ताकि हम (उस की क़ियादत में) अल्लाह की राह में जंग करें, नबीने (उनसे) फ़रमाया : कहीं ऐसा न हो कि तुम पर क़िताल फ़र्ज़ कर दिया जाए तो तुम क़िताल ही न करो, वोह केहने लगे : हमें क्या हुवा है कि हम अल्लाह की राह में जंग न करें हालांकि हमें अपने घरों से और औलाद से जुदा कर दिया गया है, सो जब उन पर क़िताल फ़र्ज़ कर दिया गया तो उन में से चन्द एक के सिवा सब फिर गए, और अल्लाह ज़ालिमों को खूब जानने वाला है।

وَقَالَ لَهُمۡ نَبِيُّهُمۡ اِنَّ اللّٰهَ قَدۡ بَعَثَ لَـكُمۡ طَالُوۡتَ مَلِكًا ‌ؕ قَالُوۡٓا اَنّٰى يَكُوۡنُ لَهُ الۡمُلۡكُ عَلَيۡنَا وَنَحۡنُ اَحَقُّ بِالۡمُلۡكِ مِنۡهُ وَلَمۡ يُؤۡتَ سَعَةً مِّنَ الۡمَالِ‌ؕ قَالَ اِنَّ اللّٰهَ اصۡطَفٰىهُ عَلَيۡكُمۡ وَزَادَهٗ بَسۡطَةً فِى الۡعِلۡمِ وَالۡجِسۡمِ‌ؕ وَاللّٰهُ يُؤۡتِىۡ مُلۡکَهٗ مَنۡ يَّشَآءُ ‌ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيۡمٌ ﴿۲۴۷﴾

247. और उनसे उनके नबी ने फ़रमाया : बेशक अल्लाहने तुम्हारे लिए तालूत को बादशाह मुकर्रर फ़रमाया है, तो केहने लगे कि उसे हम पर हुक्मरानी कैसे मिल गई? हालां कि हम उस से हुकूमत (करने) के ज़ियादह हक़दार हैं उसे तो दौलत की फ़रावानी भी नहीं दी गई, (नबीने) फ़रमाया : बेशक अल्लाहने उसे तुम पर मुन्तख़ब कर लिया है और उसे इल्म और जिस्म में ज़ियादह कुशादगी अ़ता फ़रमा दी है, और अल्लाह अपनी सल्तनत (की अमानत) जिसे चाहता है अ़ता फ़रमा देता है, और अल्लाह बड़ी वुस्अ़तवाला खूब जाननेवाला है।

وَقَالَ لَهُمۡ نَبِيُّهُمۡ اِنَّ اٰيَةَ مُلۡكِهٖۤ اَنۡ

248. और उन के नबी ने उनसे फ़रमाया : इसकी

يَّاْتِيَكُمُ التَّابُوْتُ فِيْهِ سَكِيْنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ بَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ اٰلُ مُوْسٰى وَاٰلُ هٰرُوْنَ تَحْمِلُهُ الْمَلٰٓئِكَةُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۲۴۸﴾ ع

सल्तनत (के मिन जानिब अल्लाह होने) की निशानी येह है कि तुम्हारे पास सन्दूक़ आएगा उस में तुम्हारे रब की तरफ़ से सुकूने क़ल्ब का सामान होगा और कुछ आले मूसा और आले हारून के छोड़े हुए तबर्रुकात होंगे उसे फ़रिश्तोंने उठाया हुआ होगा, अगर तुम ईमानवाले हो तो बेशक उसमें तुम्हारे लिए बड़ी निशानी है।

فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوْتُ بِالْجُنُوْدِ ۙ قَالَ اِنَّ اللّٰهَ مُبْتَلِيْكُمْ بِنَهَرٍ ۚ فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّيْ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَطْعَمْهُ فَاِنَّهٗ مِنِّيْٓ اِلَّا مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةً ۢ بِيَدِهٖ ۚ فَشَرِبُوْا مِنْهُ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ؕ فَلَمَّا جَاوَزَهٗ هُوَ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۙ قَالُوْا لَا طَاقَةَ لَنَا الْيَوْمَ بِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ اَنَّهُمْ مُّلٰقُوا اللّٰهِ ۙ كَمْ مِّنْ فِئَةٍ قَلِيْلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيْرَةً ۢ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۲۴۹﴾

249. फिर जब तालूत अपने लश्करों को ले कर शहर से निक्ला, तो उसने कहा : बेशक अल्लाह तुम्हें एक नहर के ज़रीए आज़मानेवाला है, पस जिस ने उस में से पानी पिया सो वोह मेरे (साथियों में) से नहीं होगा, और जो उस को नहीं पिएगा पस वोही मेरी (जमाअ़त) से होगा, मगर जो शख़्स अपने हाथ से सिर्फ़ एक चुल्लू (की हद तक) पी ले (उस पर कोई हर्ज नहीं) सो उन में से चन्द लोगों कि सिवा बाक़ी सबने उस से पानी पी लिया, पस जब तालूत और उन के ईमानवाले साथी नहर के पार चले गए, तो केहने लगे : आज हम में जालूत और उस की फ़ौजों से मुक़ाबले की ताक़त नहीं, जो लोग येह यक़ीन रखते थे कि वोह (शहीद हो कर या मरने के बा'द) अल्लाह से मुलाक़ात का शर्फ़ पानेवाले हैं, केहने लगे : कई मर्तबा अल्लाह के हुक्म से थोड़ी सी जमाअ़त (ख़ासी) बड़ी जमाअ़त पर ग़ालिब आ जाती है, और अल्लाह सब्र करनेवालों को अपनी मइय्यत से नवाज़ता है।

وَلَمَّا بَرَزُوْا لِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ قَالُوْا رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ؕ ﴿۲۵۰﴾

250. और जब वोह जालूत और उस की फ़ौजों के मुक़ाबिल हुए तो अ़र्ज़ करने लगे : ऐ हमारे परवरदिगार ! हम पर सब्र में वुस्अ़ते अरज़ानी फ़रमा और हमें साबित क़दम रख और हमें काफ़िरों पर ग़ल्बा अ़ता फ़रमा।

فَهَزَمُوْهُمْ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۙ۫ وَقَتَلَ دَاوٗدُ جَالُوْتَ وَاٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَهٗ مِمَّا يَشَآءُ ؕ وَلَوْ لَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ ۙ لَّفَسَدَتِ الْاَرْضُ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿۲۵۱﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ؕ وَاِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۲۵۲﴾

251. फिर उन्होंने उन (जालूती फ़ौजों) को अल्लाह के अम्र से शिकस्त दी, और दाऊद (عليه السلام) ने जालूत को क़त्ल कर दिया और अल्लाहने उन को (या'नी दाऊद عليه السلام को) हुकूमत और हिक्मत अ़ता फ़रमाई और उन्हें जो चाहा सिखाया, और अगर अल्लाह लोगों के एक गिरोह को दूसरे गिरोह के ज़रीए न हटाता रेहता तो ज़मीन (में इन्सानी ज़िन्दगी बा'ज़ जाबिरों के मुसल्सल तसल्लुत और ज़ुल्म के बाइस) बरबाद हो जाती मगर अल्लाह तमाम जहानों पर बड़ा फ़ज़्ल फ़रमानेवाला है।

252. येह अल्लाह की आयतें हैं हम इन्हें (ऐ ह़बीब !) आप पर सच्चाई के साथ पढ़ते हैं, और बेशक आप रसूलों में से हैं।

الجزء ٣

وقف لازم

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ
عَلٰى بَعْضٍ مِنْهُمْ مَّنْ كَلَّمَ اللّٰهُ
وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجٰتٍ ؕ وَاٰتَيْنَا
عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ
بِرُوْحِ الْقُدُسِ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا
اقْتَتَلَ الَّذِيْنَ مِنْ بَعْدِهِمْ مِّنْ
بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ وَلٰكِنِ
اخْتَلَفُوْا فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ وَمِنْهُمْ مَّنْ
كَفَرَ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلُوْا ۫
وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ﴿٢٥٣﴾

٣٣ ع ٥

253. येह सब रसूल (जो हम ने मबऊ़स फ़रमाए) हमने इनमें से बा'ज़ को बा'ज़ पर फ़ज़ीलत दी है, इनमें से किसी से अल्लाहने (बराहे रास्त) कलाम फ़रमाया और किसी को दरजातमें (सब पर) फौक़िय्यत दी (या'नी हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ को जुमला दरजातमें सब पर बुलन्दी अ़ता फ़रमाई), और हमने मरयम के फ़रज़न्द ईसा (عليه السلام) को वाज़ेह़ निशानियां अ़ता कीं और हमने पाकीज़ा रूह़ के ज़रीए उस की मदद फ़रमाई, और अगर अल्लाह चाहता तो उन रसूलों के पीछे आनेवाले लोग अपने पास खुली निशानियां आ जाने के बाद आपस में कभी भी न लड़ते झगड़ते मगर उन्होंने (इस आज़ादाना तौफ़ीक़ के बाइस़ जो उन्हें अपने किए पर अल्लाह के हुज़ूर जवाब देह होने केलिए दी गई थी) इख़्तिलाफ़ किया पस उनमें से कुछ ईमान लाए और उन में से कुछने कुफ़्र इख़्तियार किया, (और येह बात याद रखो कि) अगर अल्लाह चाहता (या'नी उन्हें एक ही बात पर मजबूर रखता) तो वोह कभी भी बाहम न लड़ते, लेकिन अल्लाह जो चाहता है करता है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْفِقُوْا مِمَّا
رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا
بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خُلَّةٌ وَّلَا شَفَاعَةٌ ؕ
وَالْكٰفِرُوْنَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٥٤﴾
اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۚ
لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ؕ لَهٗ مَا فِي
السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَا
الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ
يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ

254. ऐ ईमानवालो ! जो कुछ हमने तुम्हें अ़ता किया है उसमें से (अल्लाह की राहमें) ख़र्च करो क़ब्ल इस के कि वोह दिन आ जाए जिस में न कोई ख़रीदो फ़रोख़्त होगी और (काफ़िरों के लिए) न कोई दोस्ती (कार आमद) होगी और न (कोई) सिफ़ारिश, और येह कुफ़्फ़ार ही ज़ालिम हैं।

255. अल्लाह, उसके सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, हमेशा ज़िन्दा रहनेवाला है (सारे आ़लम को अपनी तदबीर से) क़ाइम रखनेवाला है, न उस को ऊंघ आती है और न नींद, जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब उसीका है, कौन ऐसा शख़्स़ है जो उस के हुज़ूर उस के इज़्न के बिग़ैर सिफ़ारिश कर सके, जो कुछ

وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖٓ إِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ ۚ وَلَا يَـُٔودُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ﴿٢٥٥﴾

मख़्लूक़ात के सामने (हो रहा है या हो चुका) है और जो कुछ उनके बाद (होनेवाला) है (वोह) सब जानता है, और वोह उसकी मा'लूमात में से किसी चीज़ का भी अहाता नहीं कर सक्ते मगर जिस क़दर वोह चाहे, उसकी कुरसी (सल्तनतो क़ुदरत) तमाम आस्मानों और ज़मीन को मुहीत है, और उस पर उन दोनों (या'नी ज़मीनो आस्मान) की हिफ़ाज़त हरगिज़ दुश्वार नहीं, वोही सब से बुलंद रुत्बा बड़ी अ़ज़मतवाला है।

لَآ إِكْرَاهَ فِي الدِّينِ ۖ قَد تَّبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ ۚ فَمَن يَكْفُرْ بِالطّٰغُوتِ وَيُؤْمِن بِاللّٰهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ۗ لَا انفِصَامَ لَهَا ۗ وَاللّٰهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٥٦﴾

256. दीन में कोई ज़बरदस्ती नहीं, बेशक हिदायत गुमराही से वाज़ेह़ त़ौर पर मुमताज़ हो चुकी है, सो जो कोई मा'बूदाने बातिला का इन्कार कर दे और अल्लाह पर ईमान ले आए तो उसने एक ऐसा मज़बूत ह़लक़ा थाम लिया जिस के लिए टूटना (मुम्किन) नहीं, और अल्लाह खूब सुननेवाला जाननेवाला है।

اللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِينَ اٰمَنُوا يُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمٰتِ إِلَى النُّورِ ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوٓا أَوْلِيَآؤُهُمُ الطّٰغُوتُ يُخْرِجُونَهُم مِّنَ النُّورِ إِلَى الظُّلُمٰتِ ۗ أُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خٰلِدُونَ ﴿٢٥٧﴾

257. अल्लाह ईमानवालों का कारसाज़ है वोह उन्हें तारीकियों से निकाल कर नूर की तरफ़ ले जाता है, और जो लोग काफ़िर हैं उन के हिमायती शैतान हैं वोह उन्हें (हक़ की) रौशनी से निकाल कर (बातिल की) तारीकियों की तरफ़ ले जाते हैं, येही लोग जहन्नमी हैं वोह उसमें हमेशा रहेंगे।

ع ٣٤ ٢

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِي حَآجَّ إِبْرٰهٖمَ فِي رَبِّهٖٓ أَنْ اٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ إِذْ قَالَ إِبْرٰهٖمُ رَبِّيَ الَّذِي يُحْيٖ وَيُمِيتُ قَالَ أَنَا أُحْيٖ وَأُمِيتُ ۖ قَالَ إِبْرٰهٖمُ

وقف لازم

258. (ऐ हबीब !) क्या आपने उस शख़्स को नहीं देखा जो इस वजह से कि अल्लाह ने उसे सल्तनत दी थी इब्राहीम (عليه السلام) से (ख़ुद) अपने रब (ही) के बारेमें झगड़ा करने लगा, जब इब्राहीम (عليه السلام) ने कहा : मेरा रब वोह है जो ज़िन्दा (भी) करता है और मारता (भी) है तो (जवाबन)

فَاِنَّ اللّٰهَ يَاْتِيْ بِالشَّمْسِ مِنَ الْمَشْرِقِ فَاْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِيْ كَفَرَ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۚ ﴿۲۵۸﴾

केहने लगा : मैं (भी) ज़िन्दा करता हूं और मारता हूं, इब्राहीम (عليه السلام) ने कहा : बेशक अल्लाह सूरज को मशरिक़ की तरफ़ से निकालता है तू उसे मग़रिब की तरफ़ से निकाल ला। सो वोह काफ़िर देहशत ज़दह हो गया, और अल्लाह ज़ालिम क़ौम को हक़ की राह नहीं दिखाता।

اَوْ كَالَّذِيْ مَرَّ عَلٰى قَرْيَةٍ وَّهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا ۚ قَالَ اَنّٰى يُحْيٖ هٰذِهِ اللّٰهُ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ فَاَمَاتَهُ اللّٰهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهٗ ؕ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ ؕ قَالَ لَبِثْتُ يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ؕ قَالَ بَلْ لَّبِثْتَ مِائَةَ عَامٍ فَانْظُرْ اِلٰى طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ ۚ وَانْظُرْ اِلٰى حِمَارِكَ وَلِنَجْعَلَكَ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَانْظُرْ اِلَى الْعِظَامِ كَيْفَ نُنْشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوْهَا لَحْمًا ؕ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗ ۙ قَالَ اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۲۵۹﴾

259. या इसी तरह उस शख़्स को (नहीं देखा) जो एक बस्ती पर से गुज़रा जो अपनी छतों पर गिरी पड़ी थी तो उसने कहा कि अल्लाह उस की मौत के बाद उसे कैसे ज़िन्दा फ़रमाएगा सो (अपनी क़ुदरत का मुशाहिदह कराने के लिए) अल्लाहने उसे सौ बरस तक मुर्दा रखा फिर उसे ज़िन्दा किया, (बा'द अज़ां) पूछा तू यहां (मरने के बा'द) कितनी देर ठेहरा रहा (है) ? उसने कहा : मैं एक दिन या एक दिन का (भी) कुछ हिस्सा ठेहरा हूं, फ़रमाया : (नहीं) बल्कि तू सौ बरस पड़ा रहा है) पस (अब) तू अपने खाने और पीने (की चीज़ों) को देख (वोह) मुतग़य्यिर (बासी) भी नहीं हुई और (अब) अपने गधे की तरफ़ नज़र कर (जिसकी हड्डियां भी सलामत नहीं रहीं) और येह इस लिए कि हम तुझे लोगों के लिए (अपनी क़ुदरत की) निशानी बना दें और (अब उन) हड्डियों की तरफ़ देख हम उन्हें कैसे जुंबिश देते (और उठाते) हैं फिर उन्हें गोश्त (का लिबास) पेहनाते हैं, जब येह (मुआमला) उस पर खूब आश्कार हो गया तो बोल उठा : मैं (मुशाहिदाती यक़ीन से) जान गया हूं कि बेशक अल्लाह हर चीज़ पर खूब क़ादिर है।

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اَرِنِيْ كَيْفَ تُحْيِ الْمَوْتٰى ؕ قَالَ اَوَلَمْ تُؤْمِنْ ؕ قَالَ بَلٰى وَلٰكِنْ لِّيَطْمَئِنَّ قَلْبِيْ ؕ

260. और (वोह वाक़िआ भी याद करें) जब इब्राहीम (عليه السلام) ने अर्ज़ किया : मेरे रब ! मुझे दिखा दे कि तू मुर्दों को किस तरह ज़िन्दा फ़रमाता है ? इर्शाद हुवा : क्या तुम यक़ीन नहीं रखते? उसने अर्ज़ किया : क्यूं नहीं (यक़ीन

قَالَ فَخُذْ اَرْبَعَةً مِّنَ الطَّيْرِ فَصُرْهُنَّ اِلَيْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلٰى كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ يَاْتِيْنَكَ سَعْيًا ؕ وَاعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۲۶۰﴾

रखता हूं) लेकिन (चाहता हूं कि) मेरे दिल को भी खूब सुकून नसीब हो जाए, इर्शाद फ़रमाया : सो तुम चार परिन्दे पकड़ लो फिर उन्हें अपनी तरफ़ मानूस कर लो फिर (उन्हें ज़ब्ह कर के) उन का एक एक टुकड़ा एक एक पहाड़ पर रख दो फिर उन्हें बुलाओ वोह तुम्हारे पास दौड़ते हुए आ जाएंगे, और जान लो कि यक़ीनन अल्लाह बड़ा ग़ालिब बड़ी हिक्मतवाला है।

مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِىْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ؕ وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۶۱﴾

261. जो लोग अल्लाह की राहमें अपने माल ख़र्च करते हैं, उनकी मिसाल (उस) दाने की सी है जिससे सात बालियां उगें (और फिर) हर बाली में सौ दाने हों (या'नी सात सौ गुना अज्र पाते हैं) और अल्लाह जिस के लिए चाहता है (उस से भी) इज़ाफ़ा फ़रमा देता है, और अल्लाह बड़ी वुस्अ़तवाला ख़ूब जाननेवाला है।

اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُوْنَ مَآ اَنْفَقُوْا مَنًّا وَّلَآ اَذًى ۙ لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۲۶۲﴾

262. जो लोग अल्लाह की राहमें अपने माल ख़र्च करते हैं फिर अपने ख़र्च किए हुए के पीछे न एहसान जतलाते हैं और न अज़िय्यत देते हैं उनके लिए उनके रब के पास उन का अज्र है और (रोज़े क़ियामत) उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न वोह ग़मगीन होंगे।

قَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ وَّ مَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ يَّتْبَعُهَآ اَذًى ؕ وَاللّٰهُ غَنِىٌّ حَلِيْمٌ ﴿۲۶۳﴾

263. (साइल से) नरमी के साथ गुफ़्तगू करना और दर गुज़र करना उस सदक़े से कहीं बेहतर है जिस के बा'द (उसकी) दिल आज़ारी हो, और अल्लाह बेनियाज़ बड़ा हिल्मवाला है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰى ۙ كَالَّذِىْ

264. ऐ ईमानवालो ! अपने सदक़ात (बा'द अज़ां) एहसान जता कर और दुःख दे कर उस शख़्स की तरह

يُنْفِقُ مَالَهُ رِئَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ
بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۭ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ
صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَاَصَابَهٗ وَابِلٌ
فَتَرَكَهٗ صَلْدًا ۭ لَا يَقْدِرُوْنَ عَلٰى
شَيْءٍ مِّمَّا كَسَبُوْا ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي
الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٦٤﴾

बरबाद न कर लिया करो जो माल लोगों को दिखाने के लिए ख़र्च करता है और न अल्लाह पर ईमान रखता है और न रोज़े क़ियामत पर, उसकी मिसाल एक ऐसे चिकने पथ्थर की सी है जिस पर थोड़ी सी मिट्टी पड़ी हो फिर उस पर ज़ोरदार बारिश हो तो वोह उसे (फिर वोही) सख़्त और साफ़ (पथ्थर) कर के ही छोड़ दे, सो अपनी कमाई में से उन (रियाकारों) के हाथ कु छ भी नहीं आएगा, और अल्लाह काफ़िर क़ौम को हिदायत नहीं फ़रमाता।

وَمَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمُ
ابْتِغَاۗءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ وَتَثْبِيْتًا مِّنْ
اَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍۢ بِرَبْوَةٍ اَصَابَهَا
وَابِلٌ فَاٰتَتْ اُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ ۚ فَاِنْ لَّمْ
يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢٦٥﴾

265. और जो लोग अपने माल अल्लाह की रज़ा हासिल करने और अपने आपको (ईमानो इताअ़त पर) मज़बूत करने के लिए ख़र्च करते हैं उन की मिसाल एक ऐसे बाग़ की सी है जो ऊंची सतह़ पर हो उस पर ज़ोरदार बारिश हो तो वोह दोगुना फल लाए और अगर उसे ज़ोरदार बारिश न मिले तो (उसे) शबनम (या हलकी सी फुहार) भी काफ़ी हो, और अल्लाह तुम्हारे आ'माल को खूब देखनेवाला है।

اَيَوَدُّ اَحَدُكُمْ اَنْ تَكُوْنَ لَهٗ جَنَّةٌ مِّنْ
نَّخِيْلٍ وَّ اَعْنَابٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ ۙ لَهٗ فِيْهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۙ
وَاَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهٗ ذُرِّيَّةٌ ضُعَفَاۗءُ ۚ
فَاَصَابَهَآ اِعْصَارٌ فِيْهِ نَارٌ
فَاحْتَرَقَتْ ۭ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ
لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢٦٦﴾

266. क्या तुम में से कोई शख़्स येह पसंद करेगा कि उस के पास खजूरों और अंगूरों का एक बाग़ हो जिस के नीचे नहरें बेहती हों उसके लिए उसमें (खजूरों और अंगूरों के अ़लावा भी) हर क़िस्म के फल हों और (ऐसे वक़्त में) उसे बुढ़ापा आ पहुंचे और (अभी) उसकी औलाद भी ना तवां हो और (ऐसे वक़्त में) उस बाग़ पर एक बगोला आ जाए जिस में (निरी) आग हो और वोह बाग़ जल जाए(तो उसकी मह़रूमी और परेशानी का आ़लम क्या होगा), इसी तरह़ अल्लाह तुम्हारे लिए निशानियां वाज़ेह़ तौर पर बयान फ़रमाता है ताकि तुम ग़ौर करो (सो क्या तुम चाहते हो कि आख़िरत में तुम्हारे आ'माल का बाग़ भी रियाकारी की आग में जल कर भस्म हो जाए और तुम्हें संभाला देने वाला भी कोई न हो)।

267. ऐ ईमानवालो ! उन पाकीज़ा कमाइयों में से और उस में से जो हमने तुम्हारे लिए ज़मीन से निकाला है (अल्लाह की राहमें) ख़र्च किया करो और उस में से गन्दे माल को (अल्लाह की राह में) ख़र्च करने का इरादा मत करो कि (अगर वोही तुम्हें दिया जाए तो) तुम ख़ुद उसे हरगिज़ न लो सिवाए इसके कि तुम उसमें चश्म पोशी कर लो, और जान लो कि बेशक अल्लाह बेनियाज़ लाइक़े हर हम्द है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْفِقُوْا مِنْ
طَيِّبٰتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّاۤ اَخْرَجْنَا
لَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ ۪ وَلَا تَيَمَّمُوا
الْخَبِيْثَ مِنْهُ تُنْفِقُوْنَ وَلَسْتُمْ
بِاٰخِذِيْهِ اِلَّاۤ اَنْ تُغْمِضُوْا فِيْهِ ؕ
وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ﴿۲۶۷﴾

268. शैतान तुम्हें (अल्लाह की राहमें ख़र्च करने से रोकने के लिए) तंग दस्ती का ख़ौफ़ दिलाता है और बेहयाई का हुक्म देता है, और अल्लाह तुम से अपनी बख़्शिश और फ़ज़्ल का वा'दा फ़रमाता है, और अल्लाह बहुत वुस्अत वाला ख़ूब जाननेवाला है।

اَلشَّيْطٰنُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَاْمُرُكُمْ
بِالْفَحْشَآءِ ۚ وَاللّٰهُ يَعِدُكُمْ مَّغْفِرَةً
مِّنْهُ وَفَضْلًا ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۶۸﴾

269. जिसे चाहता है दानाई अ़ता फ़रमा देता है और जिसे (हिक्मतो) दानाई अ़ता की गई उसे बहुत बड़ी भलाई नसीब हो गई, और सिर्फ़ वोही लोग नसीहत हासिल करते हैं जो साहिबे अक़्लो दानिश हैं।

يُّؤْتِي الْحِكْمَةَ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّؤْتَ
الْحِكْمَةَ فَقَدْ اُوْتِيَ خَيْرًا كَثِيْرًا ؕ وَمَا
يَذَّكَّرُ اِلَّاۤ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿۲۶۹﴾

270. और तुम जो कुछ भी ख़र्च करो या तुम जो मन्नत भी मानो तो अल्लाह उसे यक़ीनन जानता है, और ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं।

وَمَاۤ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ نَّفَقَةٍ اَوْ نَذَرْتُمْ
مِّنْ نَّذْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُهٗ ؕ وَمَا
لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿۲۷۰﴾

271. अगर तुम ख़ैरात ज़ाहिर कर के दो तो येह भी अच्छा है (उस से दूसरों को तरग़ीब होगी) और अगर तुम उन्हें मुख़्फ़ी रखो और वोह मोहताजों को पहुंचा दो तो येह तुम्हारे लिए (और) बेहतर है, और अल्लाह (उस ख़ैरात की वजह से) तुम्हारे कुछ गुनाहों को तुम से दूर फ़रमा देगा, और अल्लाह तुम्हारे आ'माल से बा ख़बर है।

اِنْ تُبْدُوا الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِيَ ۚ وَاِنْ
تُخْفُوْهَا وَتُؤْتُوْهَا الْفُقَرَآءَ فَهُوَ خَيْرٌ
لَّكُمْ ؕ وَيُكَفِّرُ عَنْكُمْ مِّنْ سَيِّاٰتِكُمْ ؕ
وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿۲۷۱﴾

272. उन को हिदायत देना आप का ज़िम्मे नहीं बल्कि

لَيْسَ عَلَيْكَ هُدٰىهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ

يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ۗ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ فَلِأَنْفُسِكُمْ ۚ وَمَا تُنْفِقُونَ إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ اللَّهِ ۚ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ يُوَفَّ إِلَيْكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تُظْلَمُونَ ﴿٢٧٢﴾

अल्लाह ही जिसे चाहता है हिदायत से नवाज़ता है, और तुम जो माल भी ख़र्च करो सो वोह तुम्हारे अपने फ़ाइदे में है और अल्लाह की रज़ा जूई के सिवा तुम्हारा ख़र्च करना मुनासिब ही नहीं है, और तुम जो माल भी ख़र्च करोगे (उस का अज्र) तुम्हें पूरा पूरा दिया जाएगा और तुम पर कोई ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।

لِلْفُقَرَاءِ الَّذِينَ أُحْصِرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا يَسْتَطِيعُونَ ضَرْبًا فِي الْأَرْضِ يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ أَغْنِيَاءَ مِنَ التَّعَفُّفِ ۚ تَعْرِفُهُمْ بِسِيمَاهُمْ ۚ لَا يَسْأَلُونَ النَّاسَ إِلْحَافًا ۗ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ ﴿٢٧٣﴾

273. (ख़ैरात) उन फ़ुक़रा का हक़ है जो अल्लाह की राह में (कसबे मआश से) रोक दिए गए हैं वोह (उमूरे दीन में हमा वक़्त मशग़ूल रहने के बाइस) ज़मीन में चल फिर भी नहीं सक्ते उनके (ज़ुहदन) तमा' से बाज़ रहने के बाइस नादान (जो उनके हाल से बेख़बर हैं) उन्हें मालदार समझे हुए हैं, तुम उन्हें उन की सूरत से पहचान लोगे, वोह लोगों से बिल्कुल सवाल ही नहीं करते कि कहीं (मख़्लूक़ के सामने) गिड़गिड़ाना न पड़े, और तुम जो माल भी ख़र्च करो तो बेशक अल्लाह उसे ख़ूब जानता है।

الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَعَلَانِيَةً فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٢٧٤﴾

274. जो लोग (अल्लाह की राहमें) शबो रोज़ अपने माल पोशीदह और ज़ाहिर ख़र्च करते हैं तो उनके लिए उनके रब के पास उनका अज्र है और (रोज़े क़ियामत) उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न वोह रंजीदह होंगे।

الَّذِينَ يَأْكُلُونَ الرِّبَا لَا يَقُومُونَ إِلَّا كَمَا يَقُومُ الَّذِي يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطَانُ مِنَ الْمَسِّ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا إِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبَا ۗ وَأَحَلَّ اللَّهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبَا ۚ

275. जो लोग सूद खाते हैं वोह (रोज़े क़ियामत) खड़े नहीं हो सकेंगे मगर जैसे वोह शख़्स खड़ा होता है जिसे शैतान (आसेब) ने छू कर बद हवास कर दिया हो, येह इस लिए कि वोह केहते थे कि तिजारत (ख़रीदो फ़रोख़्त) भी तो सूद की मानिन्द है, हालांकि अल्लाहने तिजारत (सौदागरी) को हलाल फ़रमाया है और सूद को हराम

فَمَنْ جَآءَهٗ مَوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ فَانْتَهٰى فَلَهٗ مَا سَلَفَ ؕ وَاَمْرُهٗۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ وَمَنْ عَادَ فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۲۷۵﴾

किया है, पस जिस के पास उस के रब की जानिब से नसीहत पहुंची सो वोह (सूद से) बाज़ आ गया तो जो पहले गुज़र चुका वोह उसी का है, और उस का मुआमला अल्लाह के सुपुर्द है, और जिसने फिर भी लिया सो लोग जहन्नमी हैं, वोह उस में हमेशा रहेंगे।

يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا وَيُرْبِي الصَّدَقٰتِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ اَثِيْمٍ ﴿۲۷۶﴾

276. और अल्लाह सूद को मिटाता है (या'नी सूदी माल से बरकत को ख़त्म करता है) और सदक़ात को बढ़ाता है (या'नी सदक़े के ज़रीए माल की बरकत को ज़ियादा करता है), और अल्लाह किसी भी ना सिपास ना फ़रमान को पसंद नहीं करता।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۲۷۷﴾

277. बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक आ'माल किए और नमाज़ काइम रखी और ज़कात देते रहे उन के लिए उन के रब के पास उन का अज्र है, और उन पर (आख़िरत में) न कोई ख़ौफ़ होगा और न वोह रंजीदह होंगे।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَذَرُوْا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبٰوۤا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۲۷۸﴾

278. ऐ ईमान वालो ! अल्लाह से डरो और जो कुछ भी सूद में से बाक़ी रह गया है छोड़ दो अगर तुम (सिद्क़े दिल से) ईमान रखते हो।

فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا فَاْذَنُوْا بِحَرْبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ وَاِنْ تُبْتُمْ فَلَكُمْ رُءُوْسُ اَمْوَالِكُمْ ۚ لَا تَظْلِمُوْنَ وَلَا تُظْلَمُوْنَ ﴿۲۷۹﴾

279. फिर अगर तुम ने ऐसा न किया तो अल्लाह और उस के रसूल (ﷺ) की तरफ़ से ए'लाने जंग पर ख़बरदार हो जाओ और अगर तुम तौबा कर लो तो तुम्हारे लिए तुम्हारे अस्ल माल (जाइज़) हैं, न तुम खुद ज़ुल्म करो और न तुम पर ज़ुल्म किया जाए।

وَاِنْ كَانَ ذُوْ عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ اِلٰى مَيْسَرَةٍ ؕ وَاَنْ تَصَدَّقُوْا خَيْرٌ

280. और अगर क़र्ज़दार तंगदस्त हो तो खुशहाली तक मोहलत दी जानी चाहिए, और तुम्हारा (क़र्ज़ को) मुआफ़

لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٨٠﴾

وَاتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِيْهِ اِلَى اللّٰهِ ۗ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٢٨١﴾

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا تَدَايَنْتُمْ بِدَيْنٍ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى فَاكْتُبُوْهُ ۗ وَلْيَكْتُبْ بَّيْنَكُمْ كَاتِبٌۢ بِالْعَدْلِ ۖ وَلَا يَاْبَ كَاتِبٌ اَنْ يَّكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللّٰهُ فَلْيَكْتُبْ ۚ وَلْيُمْلِلِ الَّذِيْ عَلَيْهِ الْحَقُّ وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ وَلَا يَبْخَسْ مِنْهُ شَيْـًٔا ۗ فَاِنْ كَانَ الَّذِيْ عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيْهًا اَوْ ضَعِيْفًا اَوْ لَا يَسْتَطِيْعُ اَنْ يُّمِلَّ هُوَ فَلْيُمْلِلْ وَلِيُّهٗ بِالْعَدْلِ ۗ وَاسْتَشْهِدُوْا شَهِيْدَيْنِ مِنْ رِّجَالِكُمْ ۚ فَاِنْ لَّمْ يَكُوْنَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَّامْرَاَتٰنِ مِمَّنْ تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهَدَآءِ اَنْ تَضِلَّ اِحْدٰىهُمَا فَتُذَكِّرَ اِحْدٰىهُمَا الْاُخْرٰى ۗ وَلَا يَاْبَ الشُّهَدَآءُ اِذَا

कर देना तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम्हें मा'लूम हो (कि ग़रीब की दिलजूई अल्लाह की निगाह में क्या मुक़ाम रखती है)।

281. और उस दिन से डरो जिस में तुम अल्लाह की तरफ़ लौटाए जाओगे फिर हर शख़्स को जो कुछ अ़मल उसने किया है उस की पूरी पूरी जज़ा दी जाएगी और उन पर ज़ुल्म नहीं होगा।

282. ऐ ईमानवालो ! जब तुम किसी मुकर्ररह मुद्दत तक के लिए आपस में क़र्ज का मुआ़मला करो तो उसे लिख लिया करो, और तुम्हारे दरमियान जो लिखनेवाला हो उसे चाहिए कि इन्साफ़ के साथ लिखे और लिखनेवाला लिखने से इन्कार न करे जैसा कि उसे अल्लाह ने लिखना सिखाया है पस वोह लिख दे, (या'नी शरा' और मुलकी दस्तूर के मुताबिक़ वसीक़ा नवीसी का हक़ पूरी दयानत से अदा करे) और मज़मून वोह शख़्स लिखवाए जिस के ज़िम्मे हक़ (या'नी क़र्ज़) हो और उसे चाहिए कि अल्लाह से डरे जो उस का परवरदिगार है और उस (ज़रे क़र्ज़) में से (लिखवाते वक़्त) कुछ भी कमी न करे, फिर अगर वोह शख़्स जिस के ज़िम्मे हक़ वाजिब हुआ है ना समझ या ना तवां हो या ख़ुद मज़मून लिखवाने की सलाहिय्यत न रखता हो तो उस के कारिन्दे को चाहिए कि वोह इन्साफ़ के साथ लिखवा दे, और अपने लोगों में से दो मर्दों को गवाह बना लो, फिर अगर दोनों मर्द मुयस्सर न हों तो एक मर्द और दो औरतें हों (येह) उन लोगों में से हों जिन्हें तुम गवाही के लिए पसंद करते हो (या'नी क़ाबिले ए'तिमाद समझते हो) ताकि उन दो में से एक औ़रत भूल जाए तो उस एक को दूसरी याद दिला दे, और गवाहों को जब भी (गवाही के लिए) बुलाया जाए वोह इन्कार न करें, और मुआ़मला छोटा हो या बड़ा उसे अपनी मीआ़द तक लिख

مَا دُعُوْا ؕ وَلَا تَسْـَٔمُوْۤا اَنْ تَكْتُبُوْهُ
صَغِيْرًا اَوْ كَبِيْرًا اِلٰۤى اَجَلِهٖ ؕ ذٰلِكُمْ
اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ وَاَقْوَمُ لِلشَّهَادَةِ
وَاَدْنٰۤى اَلَّا تَرْتَابُوْۤا اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَ
تِجَارَةً حَاضِرَةً تُدِيْرُوْنَهَا
بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَلَّا
تَكْتُبُوْهَا ؕ وَاَشْهِدُوْۤا اِذَا تَبَايَعْتُمْ ۪
وَلَا يُضَآرَّ كَاتِبٌ وَّلَا شَهِيْدٌ ؕ۬
وَاِنْ تَفْعَلُوْا فَاِنَّهٗ فُسُوْقٌۢ بِكُمْ ؕ
وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ وَيُعَلِّمُكُمُ اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ
بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۲۸۲﴾

रखने में उक्ताया न करो, येह तुम्हारा दस्तावेज़ तैयार कर लेना अल्लाह के नज़दीक ज़ियादा क़रीने इन्साफ़ है और गवाही के लिए मज़बूत तर और येह उस के भी क़रीब तर है कि तुम शक में मुब्तिला न हो सिवाए इस के कि दस्त-ब-दस्त ऐसी तिजारत हो, जिस का लेन देन तुम आपस में करते रहते हो तो तुम पर उस के न लिखने का कोई गुनाह नहीं, और जब भी आपस में ख़रीदो फ़रोख़्त करो तो गवाह बना लिया करो, और न लिखनेवाले को नुक़्सान पहुंचाया जाए और न गवाह को, और अगर तुमने ऐसा किया तो येह तुम्हारी हुक्म शिक्नी होगी, और अल्लाह से डरते रहो, और अल्लाह तुम्हें (मुआमलात की) ता'लीम देता है और अल्लाह हर चीज़ का खूब जाननेवाला है।

وَاِنْ كُنْتُمْ عَلٰى سَفَرٍ وَّلَمْ تَجِدُوْا
كَاتِبًا فَرِهٰنٌ مَّقْبُوْضَةٌ ؕ فَاِنْ اَمِنَ
بَعْضُكُمْ بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِى
اؤْتُمِنَ اَمَانَتَهٗ وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ ؕ
وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ ؕ وَمَنْ يَّكْتُمْهَا
فَاِنَّهٗۤ اٰثِمٌ قَلْبُهٗ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
عَلِيْمٌ ﴿۲۸۳﴾ ع ٣٩

283. और अगर तुम सफ़र पर हो और कोई लिखने वाला न पाओ तो बा कब्ज़ा रहन रख लिया करो, फिर अगर तुम में से एक को दूसरे पर ए'तिमाद हो तो जिस की दयानत पर ए'तिमाद किया गया उसे चाहिए कि अपनी अमानत अदा कर दे और वोह अल्लाह से डरता रहे जो उस का पालनेवाला है, और तुम गवाही को छुपाया न करो, और जो शख़्स गवाही छुपाता है तो यक़ीनन उसका दिल गुनाहगार है, और अल्लाह तुम्हारे आ'माल को खूब जानने वाला है।

لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ
وَاِنْ تُبْدُوْا مَا فِىْۤ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ

284. जो कुछ आस्मानों में और जमीन में है सब अल्लाह के लिए है, वोह बातें जो तुम्हारे दिलों में हैं ख़्वाह उन्हें ज़ाहिर करो या उन्हें छुपाओ अल्लाह तुम से उस का हिसाब

يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ ؕ فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۲۸۴﴾

लेगा, फिर जिसे वोह चाहेगा बख़्श देगा और जिसे चाहेगा अज़ाब देगा, और अल्लाह हर चीज़ पर कामिल क़ुदरत रखता है।

اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۟ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ ۟ وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۫ غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ﴿۲۸۵﴾

285. (वोह) रसूल (ﷺ) उस पर ईमान लाए (या'नी उस की तस्दीक़ की) जो कुछ उन पर उन के रब की तरफ़ से नाज़िल किया गया और अह्ले ईमान ने भी, सब ही (दिल से) अल्लाह पर और उस के फ़रिश्तों पर और उस की किताबों पर और उस के रसूलों पर ईमान लाए, (नीज़ केहते हैं :) हम उस के पयगम्बरों में से किसी के दरम्यान भी (ईमान लाने में) फ़र्क़ नहीं करते, और (अल्लाह के हुज़ूर) अर्ज़ करते हैं : हमने (तेरा हुक्म) सुना और इताअ़त (क़ुबूल) की, ऐ हमारे रब ! हम तेरी बख़्शिश के तलबगार हैं और (हम सब को) तेरी ही तरफ़ लौटना है।

لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ؕ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ؕ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ٙ وَاغْفِرْ لَنَا ٙ وَارْحَمْنَا ٙ اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۲۸۶﴾ ع

286. अल्लाह किसी जान को उस की ताक़त से बढ़ कर तकलीफ़ नहीं देता, उसने जो नेकी कमाई उस के लिए उसका अज्र है और उसने जो गुनाह कमाया उस पर उस का अज़ाब है, ऐ हमारे रब! अगर हम भूल जाएं या ख़ता कर बैठें तो हमारी गिरफ़्त न फ़रमा, ऐ हमारे परवरदिगार ! और हम पर इतना (भी) बोझ ना डाल जैसा तू ने हम से पहले लोगों पर डाला था, ऐ हमारे परवरदिगार ! और हम पर इतना बोझ (भी) ना डाल जिसे उठाने की हम में ताक़त नहीं, और हमारे (गुनाहों) से दर गुज़र फ़रमा, और हमें बख़्श दे, और हम पर रह़म फ़रमा, तू ही हमारा कारसाज़ है पस हमें काफ़िरों की क़ौम पर ग़लबा अ़ता फ़रमा।

आयातुहा 200 | 3 सूरतु आले इमरान म-दनिय्यतुन 89 | रुकूआतुहा 20

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

الٓمّٓ ۚ ﴿١﴾

1. अलिफ़ लाम मीम (हक़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं)।

اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ؕ ﴿٢﴾

2. अल्लाह, उसके सिवा कोई लाइक़े इबादत नहीं (वोह) हमेशा ज़िन्दा रहने वाला है (सारे आलम को अपनी तदबीर से) क़ाइम रखनेवाला है।

نَزَّلَ عَلَیْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَیْنَ یَدَیْهِ وَاَنْزَلَ التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِیْلَ ۙ ﴿٣﴾

3. (ऐ हबीब!) उसीने (येह) किताब आप पर हक़ के साथ नाज़िल फ़रमाई है (येह) उन (सब किताबों) की तस्दीक़ करनेवाली है जो इससे पहले उतरी हैं और उसीने तौरात और इन्जील नाज़िल फ़रमाई है।

مِنْ قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَاَنْزَلَ الْفُرْقَانَ ؕ اِنَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِاٰیٰتِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِیْدٌ ؕ وَاللّٰهُ عَزِیْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿٤﴾

4. (जैसे) इससे क़ब्ल लोगों की रहनुमाई के लिए (किताबें उतारी गईं) और (अब उसी तरह) उसने हक़ और बातिल में इम्तियाज़ करनेवाला (कुर्आन) नाज़िल फ़रमाया है, बेशक जो लोग अल्लाह की आयतोंका इन्कार करते हैं उनके लिए संगीन अज़ाब है, और अल्लाह बड़ा ग़ालिब इन्तिक़ाम लेनेवाला है।

اِنَّ اللّٰهَ لَا یَخْفٰى عَلَیْهِ شَیْءٌ فِی الْاَرْضِ وَلَا فِی السَّمَآءِ ؕ ﴿٥﴾

5. यक़ीनन अल्लाह पर ज़मीन और आस्मान की कोई भी चीज़ मुख़्फ़ी नहीं।

هُوَ الَّذِیْ یُصَوِّرُكُمْ فِی الْاَرْحَامِ كَیْفَ یَشَآءُ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ﴿٦﴾

6.वोही है जो (मांओं के) रहमों में तुम्हारी सूरतें जिस तरह चाहता है बनाता है, उसके सिवा कोई लाइक़े परस्तिश नहीं (वोह) बड़ा ग़ालिब बड़ी हिक्मतवाला है।

هُوَ الَّذِیْٓ اَنْزَلَ عَلَیْكَ الْكِتٰبَ مِنْهُ اٰیٰتٌ مُّحْكَمٰتٌ هُنَّ اُمُّ

7. वोही है जिसने आप पर किताब नाज़िल फ़रमाई जिसमें से कुछ आयतें मोहकम (या'नी ज़ाहिरन भी साफ़

الْكِتٰبِ وَاُخَرُ مُتَشٰبِهٰتٌ ؕ فَاَمَّا الَّذِيْنَ فِىْ قُلُوْبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُوْنَ مَا تَشٰبَهَ مِنْهُ ابْتِغَآءَ الْفِتْنَةِ وَابْتِغَآءَ تَاْوِيْلِهٖ ۚ وَمَا يَعْلَمُ تَاْوِيْلَهٗۤ اِلَّا اللّٰهُ ؔ وَالرّٰسِخُوْنَ فِى الْعِلْمِ يَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِهٖ ۙ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ رَبِّنَا ۚ وَمَا يَذَّكَّرُ اِلَّاۤ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿۷﴾

और वाज़ेह़ मा'ना रखनेवाली) हैं वोही (अह़काम) किताब की बुन्याद हैं और दूसरी आयतें मु-तशाबह (या'नी मा'ना में कई एह़तिमाल और इश्तिबाह रखने वाली) हैं सो वोह लोग जिनके दिलोंमें कजी है उसमें से सिर्फ़ मु-तशाबेहात की पैरवी करते हैं (फ़क़त) फ़ित्ना परवरी की ख़्वाहिश के ज़ेरे असर और अस्ल मुराद की बजाए मन पसंद मा'ना मुराद लेने की ग़रज़ से, और उसकी अस्ल मुरादको अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता, और इल्ममें कामिल पुख़्तगी रखनेवाले केहते हैं कि हम उस पर ईमान लाए, सारी (किताब) हमारे रब की तरफ़ से उतरी है, और नसीह़त सिर्फ़अह्ले दानिश को ही नसीब होती है।

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ﴿۸﴾

8. (और अ़र्ज़ करते हैं) ऐ हमारे रब! हमारे दिलों में कजी पैदा न कर इसके बाद कि तूने हमें हिदायत से सरफ़राज़ फ़रमाया है और हमें ख़ास अपनी तरफ़से रह़मत अ़ता फ़रमा, बेशक तू ही बहुत अ़ता फ़रमाने वाला है।

رَبَّنَاۤ اِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ﴿۹﴾

9. ऐ हमारे रब! बेशक तू उस दिन कि जिसमें कोई शक नहीं सब लोगों को जमा' फ़रमाने वाला है, यक़ीनन अल्लाह (अपने) वा'दे के ख़िलाफ़ नहीं करता।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِىَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمْ وَقُوْدُ النَّارِ ﴿۱۰﴾

10. बेशक जिन्होंने कुफ़्र किया न उनके माल उन्हें अल्लाह (के अ़ज़ाब) से कुछ भी बचा सकेंगे और न उनकी औलाद, और वोही लोग दोज़ख़ का ईंधन हैं।

كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿۱۱﴾

11. (उनका भी) कौमे फ़िरऔन और उनसे पहली क़ौमों जैसा तरीक़ा है, जिन्होंने हमारी आयतों को झुटलाया तो अल्लाह ने उनके गुनाहों के बाइस उन्हें पकड़ लिया, और अल्लाह सख़्त अ़ज़ाब देनेवाला है।

قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَتُغْلَبُوْنَ
وَتُحْشَرُوْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ ؕ وَبِئْسَ
الْمِهَادُ ﴿۱۲﴾

12. काफ़िरों से फ़रमा दें : तुम अनक़रीब मग़लूब हो जाओगे और जहन्नम की तरफ़ हांके जाओगे, और वोह बहुत ही बुरा ठिकाना है!

قَدْ كَانَ لَكُمْ اٰيَةٌ فِيْ فِئَتَيْنِ
الْتَقَتَا ؕ فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ وَاُخْرٰى كَافِرَةٌ يَّرَوْنَهُمْ
مِّثْلَيْهِمْ رَاْيَ الْعَيْنِ ؕ وَاللّٰهُ يُؤَيِّدُ
بِنَصْرِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَعِبْرَةً لِّاُولِي الْاَبْصَارِ ﴿۱۳﴾

13. बेशक तुम्हारे लिए उन दो जमाअ़तों में एक निशानी है (जो मैदाने बद्र में) आपसमें मुक़ाबिल हुई, एक जमाअ़तने अल्लाह की राहमें जंग की और दूसरी काफ़िर थी वोह उन्हें (अपनी) आँखों से अपने से दोगुना देख रहे थे, और अल्लाह अपनी मदद के ज़रीए जिसे चाहता है तक़्वियत देता है, यक़ीनन इस वाक़िए में आँखवालों के लिए (बड़ी) इब्रत है।

زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ مِنَ
النِّسَآءِ وَالْبَنِيْنَ وَالْقَنَاطِيْرِ الْمُقَنْطَرَةِ
مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ
الْمُسَوَّمَةِ وَالْاَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ؕ ذٰلِكَ
مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ
حُسْنُ الْمَاٰبِ ﴿۱۴﴾

14. लोगों के लिए उन ख़्वाहिशात की मुहब्बत (खूब) आरास्ता कर दी गई है (जिन में) औरतें और औलाद और सोने और चांदी के जमा' किए हुए ख़ज़ाने और निशान किए हुए खूबसूरत घोड़े और मवेशी और खेती (शामिल हैं), येह (सब) दुन्यवी ज़िन्दगी का सामान है, और अल्लाह के पास बेहतर ठिकाना है।

قُلْ اَؤُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرٍ مِّنْ ذٰلِكُمْ ؕ
لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتٌ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَا وَاَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَّرِضْوَانٌ
مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿۱۵﴾

15. (ऐ हबीब!) आप फ़रमा दें : क्या मैं तुम्हें उन सबसे बेहतरीन चीज़ की ख़बर दूं? (हाँ) परहेज़गारों के लिए उनके रब के पास (ऐसी) जन्नतें हैं जिनके नीचे नेहरें बेहती हैं वोह उनमें हमेशा रहेंगे (उनके लिए) पाकीज़ा बीवियाँ होंगी और (सबसे बड़ी बात येह कि) अल्लाह की तरफ़ से खुशनूदी नसीब होगी, और अल्लाह बंदों को खूब देखनेवाला है।

الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا إِنَّنَا آمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿١٦﴾

16. (येह वोह लोग हैं) जो केहते हैं : ऐ हमारे रब ! हम यक़ीनन ईमान ले आए हैं सो हमारे गुनाह मुआफ़ फ़रमा दे और हमें दोजख़ के अ़ज़ाब से बचा ले।

الصَّابِرِينَ وَالصَّادِقِينَ وَالْقَانِتِينَ وَالْمُنْفِقِينَ وَالْمُسْتَغْفِرِينَ بِالْأَسْحَارِ ﴿١٧﴾

17. (येह लोग) सब्र करने वाले हैं और कौलो अ़मल में सच्चाई वाले हैं और अदबो इताअ़त में झुकने वाले हैं और अल्लाह की राह में ख़र्च करने वाले हैं और रात के पिछले पहर (उठ कर) अल्लाह से मुआफ़ी मांगने वाले हैं।

شَهِدَ اللَّهُ أَنَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ وَالْمَلَائِكَةُ وَأُولُو الْعِلْمِ قَائِمًا بِالْقِسْطِ ۚ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١٨﴾

النصف

18. अल्लाहने इस बात पर गवाही दी कि उसके सिवा कोई लाइक़े इबादत नहीं और फ़रिश्तों ने और इल्मवालों ने भी (और साथ येह भी) कि वोह हर तदबीरे अद्ल के साथ फ़रमानेवाला है, उस के सिवा कोई लाइक़े परस्तिश नहीं वोही ग़ालिब हिक्मतवाला है।

إِنَّ الدِّينَ عِنْدَ اللَّهِ الْإِسْلَامُ ۗ وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ ۗ وَمَنْ يَكْفُرْ بِآيَاتِ اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿١٩﴾

19. बेशक दीन अल्लाह के नज़दीक इस्लाम ही है और अहले किताबने जो अपने पास इल्म आ जाने के बाद इख़्तिलाफ़ किया वोह सिर्फ़ बाहमी ह़सदो इनाद के बाइस था, और जो कोई अल्लाह की आयतों का इन्कार करे तो बेशक अल्लाह हिसाब में जल्दी फ़रमाने वाला है।

فَإِنْ حَاجُّوكَ فَقُلْ أَسْلَمْتُ وَجْهِيَ لِلَّهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ ۗ وَقُلْ لِلَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَالْأُمِّيِّينَ أَأَسْلَمْتُمْ ۚ فَإِنْ أَسْلَمُوا فَقَدِ اهْتَدَوْا ۖ وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا

20. (ऐ ह़बीब!) अगर फिर भी आपसे झगड़ा करें तो फ़रमा दें कि मैंने और जिसने (भी) मेरी पैरवी की अपना रूए नियाज़ अल्लाह के हुज़ूर झुका दिया है, और आप अहले किताब और अनपढ़ लोगों से फ़रमा दें : क्या तुम भी अल्लाह के हुज़ूर झुकते हो (या'नी इस्लाम क़ुबूल करते हो) ? फिर अगर वोह फ़रमां बरदारी इख़्तियार कर लें तो वोह ह़क़ीक़तन हिदायत पा गए, और अगर मुँह फेर लें तो

عَلَيْكَ الْبَلٰغُ ۗ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿٢٠﴾

आपके ज़िम्मे फ़क़त हुक्म पहुंचा देना ही है, और अल्लाह बन्दों को ख़ूब देखनेवाला है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ وَّ يَقْتُلُوْنَ الَّذِيْنَ يَاْمُرُوْنَ بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢١﴾

21. यक़ीनन जो लोग अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हैं और अंबिया को नाहक़ क़त्ल करते हैं और लोगो में से भी उन्हें क़त्ल करते हैं जो अद्लो इन्साफ़ का हुक्म देते हैं सो आप उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़बर सुना दें।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۡ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٢٢﴾

22. येह वोह लोग हैं जिनके आ'माल दुनिया और आख़िरत (दोनों) में ग़ारत हो गए और उनका कोई मददगार नहीं होगा।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يُدْعَوْنَ اِلٰى كِتٰبِ اللّٰهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ وَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٢٣﴾

23. क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें (इल्म) किताब में से एक हिस्सा दिया गया वोह किताबे इलाही की तरफ़ बुलाए जाते हैं ताकि वोह (किताब) उन के दरमियान (निज़ाआ़त का) फ़ैसला कर दे तो फिर उन में से एक तब्क़ा मुँह फेर लेता है और वोह रू गर्दानी करने वाले ही हैं।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّآ اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ ۖ وَغَرَّهُمْ فِىْ دِيْنِهِمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٢٤﴾

24. येह (रू गर्दानी की जुर्अत) इस लिए कि वोह केहते हैं कि हमें गिन्ती के चंद दिनों के सिवा दोज़ख़ की आग मस नहीं करेगी, और वोह (अल्लाह पर) जो बोहतान बांधते रेहते हैं उसने उनको अपने दीन के बारे में फ़रेब में मुब्तिला कर दिया है।

فَكَيْفَ اِذَا جَمَعْنٰهُمْ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ ۣ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ

25. सो क्या ह़ाल होगा जब हम उनको उस दिन जिस (के बपा होने) में कोई शक नहीं जमा' करेंगे, और जिस जानने जो कुछ भी (आ'माल में से) कमाया होगा उसे

مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۲۵﴾

उसका पूरा पूरा बदला दिया जाएगा और उन पर कोई जुल्म नहीं किया जाएगा।

قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي
الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ
مِمَّنْ تَشَآءُ ۫ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ
وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ؕ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ؕ
اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۲۶﴾

26. (ऐ हबीब ! यूं) अर्ज़ कीजिए : ऐ अल्लाह ! सल्तनत के मालिक! तू जिसे चाहे सल्तनत अता फ़रमा दे और जिस से चाहे सल्तनत छीन ले और तू जिसे चाहे इज़्ज़त अता फ़रमा दे और जिसे चाहे ज़िल्लत दे, सारी भलाई तेरे ही दस्ते कुदरत में है, बेशक तू ही हर चीज़ पर बड़ी कुदरत वाला है।

تُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُوْلِجُ
النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ۫ وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ
الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ ۫
وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿۲۷﴾

27. तू ही रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है और तू ही ज़िन्दह को मुर्दह से निकालता है और मुर्दह को ज़िन्दह से निकालता और जिसे चाहता है बिग़ैर हिसाब के (अपनी नवाज़िशात से) बेहरह अन्दोज़ करता है।

لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ
اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ
وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَلَيْسَ مِنَ اللّٰهِ
فِيْ شَيْءٍ اِلَّآ اَنْ تَتَّقُوْا مِنْهُمْ
تُقٰىةً ؕ وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ؕ
وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿۲۸﴾

28. मुसलमानों को चाहिए कि अहले ईमान को छोड़ कर काफ़िरों को दोस्त ना बनाएं और जो कोई ऐसा करेगा उसके लिए अल्लाह (की दोस्ती में) से कुछ नहीं होगा सिवाए इसके कि तुम उन (के शर्र) से बचना चाहो, और अल्लाह तुम्हें अपनी ज़ात (के ग़ज़ब) से डराता है, और अल्लाह ही की तरफ़ लौट कर जाना है।

قُلْ اِنْ تُخْفُوْا مَا فِيْ صُدُوْرِكُمْ اَوْ
تُبْدُوْهُ يَعْلَمْهُ اللّٰهُ ؕ وَيَعْلَمُ مَا فِي
السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ
عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۲۹﴾

29. आप फ़रमा दें कि जो तुम्हारे सीनों में है ख़्वाह तुम उसे छुपाओ या उसे ज़ाहिर कर दो अल्लाह उसे जानता है, और जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है वोह खूब जानता है, और अल्लाह हर चीज़ पर बड़ा क़ादिर है।

يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُّحْضَرًا ۚ وَّ مَا عَمِلَتْ مِنْ سُوْٓءٍ ۚ تَوَدُّ لَوْ اَنَّ بَيْنَهَا وَ بَيْنَهٗٓ اَمَدًۢا بَعِيْدًا ؕ وَ يُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ؕ وَ اللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿٣٠﴾

30. जिस दिन हर जान हर उस नेकी को भी (अपने सामने) हाज़िर पा लेगी जो उसने की थी और हर बुराई को भी जो उसने की थी तो वोह आरज़ू करेगी काश! मेरे और उस बुराई (या उस दिन) के दरमियान बहुत ज़ियादा फ़ासला होता, और अल्लाह तुम्हें अपनी ज़ात (के ग़ज़ब) से डराता है, और अल्लाह बन्दों पर बहुत महरबान है।

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣١﴾

31. (ऐ हबीब!) आप फ़रमा दें : अगर तुम अल्लाह से महब्बत करते हो तो मेरी पैरवी करो तब अल्लाह तुम्हें (अपना) महबूब बना लेगा और तुम्हारे लिए तुम्हारे गुनाह मुआफ़ फ़रमा देगा, और अल्लाह निहायत बख़्शने वाला महरबान है।

قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٣٢﴾

32. आप फ़रमा दें कि अल्लाह और रसूल (ﷺ) की इताअ़त करो फिर अगर वोह रू गर्दानी करें तो अल्लाह काफ़िरों को पसंद नहीं करता।

اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰٓى اٰدَمَ وَ نُوْحًا وَّ اٰلَ اِبْرٰهِيْمَ وَ اٰلَ عِمْرٰنَ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٣﴾

33. बेशक अल्लाह ने आदम (عليه السلام) को और नूह (عليه السلام) को और आले इब्राहीम को और आले इमरान को सब जहान वालों पर (बुज़ुर्गी में) मुन्तख़ब फ़रमा लिया।

ذُرِّيَّةًۢ بَعْضُهَا مِنْۢ بَعْضٍ ؕ وَ اللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٣٤﴾

34. येह एक ही नस्ल है उनमें से बा'ज़ बा'ज़ की औलाद हैं, और अल्लाह ख़ूब सुननेवाला ख़ूब जानने वाला है।

اِذْ قَالَتِ امْرَاَتُ عِمْرٰنَ رَبِّ اِنِّيْ نَذَرْتُ لَكَ مَا فِيْ بَطْنِيْ مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّيْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٥﴾

35. और (याद करें) जब इमरान की बीवी ने अ़र्ज़ किया : ऐ मेरे रब! जो मेरे पेटमें है मैं उसे (दीगर ज़िम्मेदारियों से) आज़ाद कर के ख़ालिस तेरी नज़र करती हूं सो तू मेरी तरफ़ से (येह नज़राना) क़ुबूल फ़रमा ले, बेशक तू ख़ूब सुनने ख़ूब जाननेवाला है।

فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ إِنِّي
وَضَعْتُهَآ أُنثَىٰ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا
وَضَعَتْ وَلَيْسَ الذَّكَرُ
كَالْأُنثَىٰ وَإِنِّي سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ
وَإِنِّي أُعِيذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ
الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ﴿٣٦﴾

36. फिर जब उसने लड़की जनी तो अ़र्ज़ करने लगी : मौला! मेंने तो येह लड़की जनी है, हालांकि जो कुछ उसने जना था अल्लाह उसे ख़ूब जानता था, (वोह बोली) और लड़का (जो मैंने मांगा था) हरगिज़ इस लड़की जैसा नहीं (हो सक्ता) था (जो अल्लाह ने अ़ता की है), और मैंने इसका नाम ही मरयम (इ़बादत गुज़ार) रख दिया है और बेशक मैं इसको और इसकी औलाद को शैतान मरदूद (के शर्र) से तेरी पनाह में देती हूं।

فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُولٍ حَسَنٍ
وَأَنبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا وَكَفَّلَهَا
زَكَرِيَّا كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا
الْمِحْرَابَ وَجَدَ عِندَهَا رِزْقًا
قَالَ يَا مَرْيَمُ أَنَّىٰ لَكِ هَٰذَا قَالَتْ
هُوَ مِنْ عِندِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يَرْزُقُ
مَن يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٧﴾

37. सो उसके रबने उस (मरयम) को अच्छी क़ुबूलियत के साथ क़ुबूल फ़रमा लिया और उसे अच्छी परवरिश के साथ परवान चढ़ाया और उसकी निगेहबानी ज़करिय्या (عليه السلام) के सुपुर्द कर दी जब भी ज़करिय्या (عليه السلام) उसके पास इ़बादतगाह में दाख़िल होते तो वोह उसके पास (नई से नई) खानेकी चीज़ें मौजूद पाते उन्हों ने पूछा : ऐ मरयम! येह चीज़ें तुम्हारे लिए कहां से आती हैं? उसने कहा : येह रिज़्क़ अल्लाह के पास से आता है, बेशक अल्लाह जिसे चाहता है बे ह़िसाब रिज़्क़ अ़ता करता है।

هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهُ قَالَ
رَبِّ هَبْ لِي مِن لَّدُنكَ ذُرِّيَّةً
طَيِّبَةً إِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءِ ﴿٣٨﴾

38. उसी जगह ज़करिय्या (عليه السلام) ने अपने रब से दुआ की, अ़र्ज़ किया : मेरे मौला! मुझे अपनी जनाब से पाकीज़ा औलाद अ़ता फ़रमा, बेशक तू ही दुआ का सुनने वाला है।

فَنَادَتْهُ الْمَلَائِكَةُ وَهُوَ قَائِمٌ يُصَلِّي
فِي الْمِحْرَابِ أَنَّ اللَّهَ يُبَشِّرُكَ
بِيَحْيَىٰ مُصَدِّقًا بِكَلِمَةٍ مِّنَ اللَّهِ
وَسَيِّدًا وَحَصُورًا وَنَبِيًّا مِّنَ

39. अभी वोह हुजरे में खड़े नमाज़ ही पढ़ रहे थे (या दुआ ही कर रहे थे) कि उन्हें फ़रिश्तों ने आवाज़ दी : बेशक अल्लाह आपको (फ़रज़ंद) यह्या (عليه السلام) की बशारत देता है जो कलि-मतुल्लाह(या'नी ईसा (عليه السلام) की तस्दीक़ करने वाला होगा और सरदार होगा और औ़रतों (की रग़बत) से बहुत मह़फ़ूज़ होगा और (हमारे) ख़ास

الصّٰلِحِيْنَ ﴿٣٩﴾

नेकूकार बंदों में से नबी होगा।

قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّقَدْ بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ وَامْرَاَتِيْ عَاقِرٌ ؕ قَالَ كَذٰلِكَ اللّٰهُ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ ﴿٤٠﴾

40. (ज़करिय्या ﷺ ने) अर्ज़ किया : ऐ मेरे रब! मेरे हां लड़का कैसे होगा? दर आं हाली कि मुझे बुढ़ापा पहुंच चुका है और मेरी बीवी (भी) बांझ है, फ़रमाया : इसी तरह अल्लाह जो चाहता है करता है।

قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْۤ اٰيَةً ؕ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ اِلَّا رَمْزًا ؕ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ كَثِيْرًا وَّسَبِّحْ بِالْعَشِيِّ وَالْاِبْكَارِ ﴿٤١﴾

41. अर्ज़ किया : ऐ मेरे रब! मेरे लिए कोई निशानी मुक़र्रर फ़रमा, फ़रमाया : तुम्हारे लिए निशानी येह है कि तुम तीन दिन तक लोगों से सिवाए इशारे के बात नहीं कर सकोगे, और अपने रब को कसरत से याद करो और शाम और सुबह उसकी तस्बीह् करते रहो।

وَاِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰكِ وَطَهَّرَكِ وَاصْطَفٰكِ عَلٰى نِسَآءِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٢﴾

42. और जब फ़रिश्तों ने कहा : ऐ मरयम! बेशक अल्लाह ने तुम्हें मुन्तख़ब कर लिया है और तुम्हें पाकीज़गी अ़ता की है और तुम्हें आज सारे जहान की औ़रतों पर बरगुज़ीदह कर दिया है।

يٰمَرْيَمُ اقْنُتِيْ لِرَبِّكِ وَاسْجُدِيْ وَارْكَعِيْ مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ﴿٤٣﴾

43. ऐ मरयम! तुम अपने रब की बड़ी आ़जिज़ीसे बंदगी बजा लाती रहो और सज्दा करो और रुकूअ़ करनेवालों के साथ रुकूअ़ किया करो।

ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ؕ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يُلْقُوْنَ اَقْلَامَهُمْ اَيُّهُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ ۪ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٤٤﴾

44. (ऐ महबूब!) येह ग़ैब की ख़बरें हैं जो हम आपकी तरफ़ वह़ी फ़रमाते हैं, हालांकि आप (उस वक़्त) उनके पास न थे जब वोह (क़ुर्अ़ह अंदाज़ी के तौर पर) अपने क़लम फेंक रहे थे कि उन में से कौन मरयम की कफ़ालत करे और न आप उस वक़्त उनके पास थे जब वोह आपसमें झगड़ रहे थे।

اِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ ۖ اسْمُهُ

45. जब फ़रिश्तों ने कहा : ऐ मरयम! बेशक अल्लाह तुम्हें अपने पास से एक कलि-मए (ख़ास) की बशारत देता है,

الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَجِيهًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ﴿٤٥﴾

जिस का नाम मसीह ईसा बिन मरयम (عليها السلام) होगा वोह दुनिया और आख़िरत (दोनों) में क़द्रो मन्ज़िलत वाला होगा और अल्लाह के ख़ास क़ुर्बत याफ़्ता बन्दों में से होगा।

وَيُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَمِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٤٦﴾

46. और वोह लोगों से गेहवारे में और पुख़्ता उम्र में (यक्सां) गुफ़्तुगू करेगा और वोह (अल्लाह के) नेकूकार बन्दों में से होगा।

قَالَتْ رَبِّ أَنَّىٰ يَكُونُ لِي وَلَدٌ وَلَمْ يَمْسَسْنِي بَشَرٌ ۖ قَالَ كَذَٰلِكِ اللَّهُ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ إِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُن فَيَكُونُ ﴿٤٧﴾

47. (मरयम عليها السلام ने) अर्ज़ किया : ऐ मेरे रब! मेरे हां कैसे लड़का होगा दर आं हाली कि मुझे तो किसी शख़्सने हाथ तक नहीं लगाया, इर्शाद हुआ इसी तरह अल्लाह जो चाहता है पैदा फ़रमाता है, जब किसी काम (के करने) का फ़ैसला फ़रमा लेता है तो उससे फ़क़त इतना फ़रमाता है 'हो जा' वोह हो जाता है।

وَيُعَلِّمُهُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرَاةَ وَالْإِنجِيلَ ﴿٤٨﴾

48. और अल्लाह उसे किताब और हिक्मत और तौरात और इन्जील (सब कुछ) सिखाएगा।

وَرَسُولًا إِلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ أَنِّي قَدْ جِئْتُكُم بِآيَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ ۖ أَنِّي أَخْلُقُ لَكُم مِّنَ الطِّينِ كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ فَأَنفُخُ فِيهِ فَيَكُونُ طَيْرًا بِإِذْنِ اللَّهِ ۖ وَأُبْرِئُ الْأَكْمَهَ وَالْأَبْرَصَ وَأُحْيِي الْمَوْتَىٰ بِإِذْنِ اللَّهِ ۖ وَأُنَبِّئُكُم بِمَا تَأْكُلُونَ وَمَا تَدَّخِرُونَ فِي بُيُوتِكُمْ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٤٩﴾

49. और वोह बनी इसराईल की तरफ़ रसूल होगा (उनसे कहेगा) कि बेशक मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की जानिब से एक निशानी ले कर आया हूं मैं तुम्हारे लिए मिट्टीसे परिन्दे की शक्ल जैसा (एक पुतला) बनाता हूं फिर मैं उसमें फूंक मारता हूं सो वोह अल्लाह के हुक्म से फ़ौरन उड़ने वाला परिन्दह हो जाता है और मैं मादरज़ाद अंधे और सफ़ेद दाग़वाले को शिफ़ायाब करता हूं और मैं अल्लाह के हुक्म से मुर्दे को ज़िन्दह कर देता हूं, और जो कुछ तुम खा कर आए हो जो कुछ तुम अपने घरों मे जमा' करते हो मैं तुम्हें (वोह सब कुछ) बता देता हूं, बेशक इसमें तुम्हारे लिए निशानी है अगर तुम ईमान रखते हो।

وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ

50. और मैं अपने से पहले उतरी हुई (किताब) तौरात

التَّوْرٰىةِ وَلِاُحِلَّ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِيْ حُرِّمَ عَلَيْكُمْ وَجِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿٥٠﴾

की तस्दीक़ करने वाला हूं और येह इस लिए कि तुम्हारी ख़ातिर बा'ज़ ऐसी चीज़ें ह़लाल कर दूं जो तुम पर ह़राम कर दी गई थीं और तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़से निशानी ले कर आया हूं सो अल्लाह से डरो और मेरी इताअ़त इख़्तियार कर लो।

اِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٥١﴾

51. बेशक अल्लाह मेरा रब है और तुम्हारा भी (वोही) रब है पस उसकी इ़बादत करो, येही सीधा रास्ता है।

فَلَمَّآ اَحَسَّ عِيْسٰى مِنْهُمُ الْكُفْرَ قَالَ مَنْ اَنْصَارِيْٓ اِلَى اللّٰهِ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَاشْهَدْ بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ﴿٥٢﴾

52. फिर जब ईसा (अ़लैहिस्सलाम)ने उनका कुफ़्र मह़सूस किया तो उसने कहा : अल्लाह की तरफ़ कौन लोग मेरे मददगार हैं? तो उसके मुख़लिस साथियोंने अ़र्ज़ किया : हम अल्लाह (के दीन) के मददगार हैं, हम अल्लाह पर ईमान लाए हैं और आप गवाह रहें कि हम यक़ीनन मुसलमान हैं।

رَبَّنَآ اٰمَنَّا بِمَآ اَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُوْلَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٥٣﴾

53. ऐ हमारे रब! हम उस किताब पर ईमान लाए जो तूने नाज़िल फ़रमाई और हमने इस रसूल की इत्तिबाअ़ की सो हमें (ह़क़ की) गवाही देने वालों के साथ लिख ले।

وَمَكَرُوْا وَمَكَرَ اللّٰهُ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ﴿٥٤﴾

54. फिर (यहूदी) काफ़िरों ने (ईसा (अ़लैहिस्सलाम) के क़त्ल के लिए) ख़ुफ़्या साज़िश की और अल्लाह ने (ईसा (अ़लैहिस्सलाम) को बचाने के लिए) मुख़्फ़ी तदबीर फ़रमाई, और अल्लाह सबसे बेहतर मुख़्फ़ी तदबीर फ़रमानेवाला है।

اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسٰٓى اِنِّيْ مُتَوَفِّيْكَ وَرَافِعُكَ اِلَيَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَجَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ثُمَّ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ

55. जब अल्लाहने फरमाया : ऐ ईसा ! बेशक मैं तुम्हें पूरी उ़म्र तक पहुंचानेवाला हूं और तुम्हें अपनी तरफ़ (आस्मान पर) उठानेवाला हूं और तुम्हें काफ़िरों से नजात दिलाने वाला हूं और तुम्हारे पैरोकारों को (उन) काफ़िरों पर क़ियामत तक बरतरी देनेवाला हूं, फिर तुम्हें मेरी ही तरफ़ लौट कर आना है सो जिन बातों में तुम झगड़ते थे मैं

فَاَحۡكُمُ بَيۡنَكُمۡ فِيۡمَا كُنۡتُمۡ فِيۡهِ تَخۡتَلِفُوۡنَ ﴿۵۵﴾

तुम्हारे दरमियान उनका फ़ैसला कर दूंगा।

فَاَمَّا الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا فَاُعَذِّبُهُمۡ عَذَابًا شَدِيۡدًا فِى الدُّنۡيَا وَالۡاٰخِرَةِ وَمَا لَهُمۡ مِّنۡ نّٰصِرِيۡنَ ﴿۵۶﴾

56. फिर जो लोग काफ़िर हुए उन्हें दुनिया और आख़िरत (दोनों में) सख़्त अ़ज़ाब दूंगा और उनका कोई मददगार न होगा।

وَاَمَّا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيۡهِمۡ اُجُوۡرَهُمۡ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيۡنَ ﴿۵۷﴾

57. और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए तो (अल्लाह) उन्हें उनका भरपूर अज्र देगा, और ज़ालिमों को पसंद नहीं करता।

ذٰلِكَ نَتۡلُوۡهُ عَلَيۡكَ مِنَ الۡاٰيٰتِ وَالذِّكۡرِ الۡحَكِيۡمِ ﴿۵۸﴾

58. येह जो हम आपको पढ़ कर सुनाते हैं (येह) निशानियां हैं और हिक्मतवाली नसीहत है।

اِنَّ مَثَلَ عِيۡسٰى عِنۡدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ اٰدَمَ ؕ خَلَقَهٗ مِنۡ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهٗ كُنۡ فَيَكُوۡنُ ﴿۵۹﴾

59. बेशक ईसा (عليه السلام) की मिसाल अल्लाह के नज़दीक आदम (عليه السلام) की सी है, जिसे उसने मिट्टी से बनाया फिर फ़रमाया 'हो जा' वोह हो गया।

اَلۡحَقُّ مِنۡ رَّبِّكَ فَلَا تَكُنۡ مِّنَ الۡمُمۡتَرِيۡنَ ﴿۶۰﴾

60. (उम्मत की तंबीह के लिए फ़रमाया) येह तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ है पस शक करने वालों में से न हो जाना।

فَمَنۡ حَآجَّكَ فِيۡهِ مِنۡۢ بَعۡدِ مَا جَآءَكَ مِنَ الۡعِلۡمِ فَقُلۡ تَعَالَوۡا نَدۡعُ اَبۡنَآءَنَا وَاَبۡنَآءَكُمۡ وَنِسَآءَنَا وَنِسَآءَكُمۡ وَاَنۡفُسَنَا وَاَنۡفُسَكُمۡ ۟ ثُمَّ نَبۡتَهِلۡ فَنَجۡعَلۡ لَّعۡنَتَ اللّٰهِ عَلَى

61. पस आपके पास इल्म आ जाने के बाद जो शख़्स ईसा (عليه السلام) के मुआमले में आपसे झगड़ा करे तो आप फ़रमा दें कि आ जाओ हम (मिल कर) अपने बेटों को और तुम्हारे बेटों को और अपनी औरतों को और तुम्हारी औरतों को और अपने आपको भी और तुम्हें भी (एक जगह पर) बुला लेते हैं, फिर हम मुबाहिला (या'नी गिड़गिड़ा कर दुआ़) करते हैं। और झूटों पर अल्लाह की

الْكٰذِبِيْنَ ﴿٦١﴾

ला'नत भेजते हैं।

اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ ۚ وَمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٦٢﴾

62. बेशक येही सच्चा बयान है, और कोई भी अल्लाह के सिवा लाइक़े इ़बादत नहीं, और बेशक अल्लाह ही तो बड़ा ग़ालिब हिक्मतवाला है।

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِالْمُفْسِدِيْنَ ﴿٦٣﴾ ع

63. फिर अगर वोह लोग रू गर्दानी करें तो यक़ीनन अल्लाह फ़साद करनेवालों को खूब जानता है।

ع ٦ ١٤

قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ تَعَالَوْا اِلٰى كَلِمَةٍ سَوَآءٍۢ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اَلَّا نَعْبُدَ اِلَّا اللّٰهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهٖ شَيْـًٔا وَّلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُوْلُوا اشْهَدُوْا بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ﴿٦٤﴾

64. आप फ़रमा दें : ऐ अहले किताब ! तुम इस बात की तरफ़ आ जाओ जो हमारे और तुम्हारे दरमियान यक्सां है, (वोह येह) कि हम अल्लाह के सिवा किसी की इ़बादत नहीं करेंगे और हम उसके साथ किसीको शरीक नहीं ठेहराएंगे और हममें से कोई एक-दूसरे को अल्लाह के सिवा रब नहीं बनाएगा, फिर अगर वोह रू गर्दानी करें तो केह दो कि गवाह हो जाओ कि हम तो अल्लाह के ताबेए़ फ़रमान (मुसलमान) हैं।

يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تُحَآجُّوْنَ فِيْۤ اِبْرٰهِيْمَ وَمَاۤ اُنْزِلَتِ التَّوْرٰىةُ وَالْاِنْجِيْلُ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِهٖ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٥﴾

65. ऐ अहले किताब! तुम इब्राहीम (عليه السلام) के बारे में क्यों झगड़ते हो (या'नी उन्हें यहूदी या नसरानी क्यों ठेहराते हो) हालांकि तौरात और इन्जील (जिन पर तुम्हारे दोनों मज़हबोंकी बुनियाद है) तो नाज़िल ही उनके बाद की गई थीं, क्या तुम (इतनी भी) अ़क़्ल नहीं रखते।

هٰۤاَنْتُمْ هٰۤؤُلَآءِ حَاجَجْتُمْ فِيْمَا لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ فَلِمَ تُحَآجُّوْنَ فِيْمَا لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٦﴾

66. सुन लो ! तुम वोही लोग हो जो उन बातों में भी झगड़ते रहे हो जिनका तुम्हें (कुछ न कुछ) इ़ल्म था मगर उन बातों में क्यों तकरार करते हो जिनका तुम्हें (सिरे से) कोई इ़ल्म ही नहीं, और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते।

مَا كَانَ اِبْرٰهِيْمُ يَهُوْدِيًّا وَّ لَا نَصْرَانِيًّا وَّلٰكِنْ كَانَ حَنِيْفًا مُّسْلِمًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٦٧﴾

67. इब्राहीम (عليه السلام) ना यहूदी थे और न नसरानी वोह हर बातिल से जुदा रेहने वाले (सच्चे) मुसलमान थे, और वोह मुशरिकों में से भी न थे।

اِنَّ اَوْلَى النَّاسِ بِاِبْرٰهِيْمَ لَلَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ وَهٰذَا النَّبِيُّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٨﴾

68. बेशक सब लोगों से बढ़ कर इब्राहीम (عليه السلام) के क़रीब (और हक़दार) तो वोही लोग हैं जिन्हों ने उन (के दीन) की पैरवी की है और (वोह) येही नबी (صلى الله عليه وسلم) और (उन पर) ईमान लाने वाले हैं, और अल्लाह ईमान वालों का मददगार है।

وَدَّتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يُضِلُّوْنَكُمْ ؕ وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٦٩﴾

69. (ऐ मुसलमानो !) अह्ले किताब में से एक गिरोह तो (शदीद) ख़्वाहिश रखता है कि काश वोह तुम्हें गुमराह कर सकें, मगर वोह अपने आप ही को गुमराही में मुब्तिला किए हुए हैं और उन्हें (इस बात का) शऊर नहीं।

يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ ﴿٧٠﴾

70. ऐ अेहले किताब! तुम अल्लाह की आयतों का इन्कार क्यों कर रहे हो हालांकि तुम खुद गवाह हो (या'नी तुम अपनी किताबों में सब कुछ पढ़ चुके हो)।

يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَلْبِسُوْنَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٧١﴾

71. ऐ अह्ले किताब! तुम हक़ को बातिल के साथ क्यों ख़लत मलत करते हो और हक़ को क्यों छुपाते हो हालां कि तुम जानते हो।

وَقَالَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اٰمِنُوْا بِالَّذِيْۤ اُنْزِلَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَجْهَ النَّهَارِ وَاكْفُرُوْۤا اٰخِرَهٗ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٧٢﴾

72. और अह्ले किताब का एक गिरोह (लोगों से) केहता है कि तुम इस किताब (क़ुर्आन) पर जो मुसलमानों पर नाज़िल की गई है दिन चढ़े (या'नी सुब्ह़) ईमान लाया करो और शाम को इन्कार कर दिया करो ताकि (तुम्हें देख कर) वोह भी बर गश्ता हो जाएं।

وَلَا تُؤْمِنُوْۤا اِلَّا لِمَنْ تَبِعَ دِيْنَكُمْ ؕ

73. और किसी की बात न मानो सिवाय उस शख़्स के जो

قُلْ اِنَّ الْهُدٰى هُدَى اللّٰهِ ۙ اَنْ يُّؤْتٰۤى اَحَدٌ مِّثْلَ مَاۤ اُوْتِيْتُمْ اَوْ يُحَآجُّوْكُمْ عِنْدَ رَبِّكُمْ ؕ قُلْ اِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ ۚ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿۷۳﴾

तुम्हारे (ही) दिन का पैरव हो, फ़रमा दें कि बेशक हिदायत तो (फ़क़त) हिदायते इलाही है (और अपने लोगों से मज़ीद केहते हैं कि येह भी हरगिज़ न मानना) कि जैसी किताब (या दीन) तुम्हें दिया गया उस जैसा किसी और को भी दिया जाएगा या येह कि कोई तुम्हारे रब के पास तुम्हारे ख़िलाफ़ हुज्जत ला सकेगा, फ़रमा दें : बेशक फ़ज़्ल तो अल्लाह के हाथ में है, जिसे चाहता है अ़ता फ़रमाता है, और अल्लाह वुस्अ़तवाला बड़े इल्म वाला है।

يَّخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿۷۴﴾

74. वोह जिसे चाहता है अपनी रह्‌मत के साथ ख़ास फ़रमा लेता है, और अल्लाह बड़े फ़ज़्लवाला है।

وَمِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مَنْ اِنْ تَاْمَنْهُ بِقِنْطَارٍ يُّؤَدِّهٖۤ اِلَيْكَ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ اِنْ تَاْمَنْهُ بِدِيْنَارٍ لَّا يُؤَدِّهٖۤ اِلَيْكَ اِلَّا مَا دُمْتَ عَلَيْهِ قَآئِمًا ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَيْسَ عَلَيْنَا فِى الْاُمِّيّٖنَ سَبِيْلٌ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿۷۵﴾

75. और अह्‌ले किताब में ऐसे भी हैं अगर आप उसके पास माल का ढेर अमानत रख दें तो वोह आपको लौटा देगा और उन्हीं में ऐसे भी हैं कि अगर उसके पास एक दीनार अमानत रख दें तो आपको वोह भी नहीं लौटाएगा सिवाए इसके कि आप उसके सर पर खड़े रहें,येह इस लिए कि वोह केहते हैं कि अनपढ़ों के मुआ़मले में हम पर कोई मुआखे़ज़ा नहीं, और अल्लाह पर झूट बांधते हैं और उन्हें खुद भी मा'लूम है।

بَلٰى مَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ وَاتَّقٰى فَاِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۷۶﴾

76. हां जो अपना वा'दा पूरा करे और तक़्वा इख़्तियार करे (उस पर वाक़ई कोई मुआखे़ज़ा नहीं) सो बेशक अल्लाह परहेज़गारों से मुह़ब्बत फ़रमाता है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَشْتَرُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَاَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيْلًا اُولٰٓئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ وَلَا يَنْظُرُ اِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

77. बेशक जो लोग अल्लाह के अ़हद और अपनी क़स्मों का थोड़ी सी क़ीमत के इवज़ सौदा कर देते हैं येही वोह लोग हैं जिन के लिए आख़िरत में कोई ह़िस्सा नहीं और न क़ियामत के दिन अल्लाह उनसे कलाम फ़रमाएगा और न ही उनकी तरफ़ निगाह फ़रमाएगा और न उन्हें पाकीज़गी

وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ۪ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٧﴾

देगा और उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब होगा।

وَاِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيْقًا يَّلْوٗنَ اَلْسِنَتَهُمْ بِالْكِتٰبِ لِتَحْسَبُوْهُ مِنَ الْكِتٰبِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتٰبِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَمَا هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٨﴾

78. और बेशक उन में एक गिरोह ऐसा भी है जो किताब पढ़ते हुए अपनी ज़बानों को मरोड़ लेते हैं ताकि तुम उनकी उलट फेर को भी किताब (का हिस्सा) समझो हालां कि वोह किताब में से नहीं है, और केहते हैं : येह (सब) अल्लाह की तरफ़ से है और वोह (हरगिज़) अल्लाह की तरफ़ से नहीं है, और वोह अल्लाह पर झूट गढ़ते हैं और (येह) उन्हें खुद भी मा'लूम है।

مَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّؤْتِيَهُ اللّٰهُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُوْلَ لِلنَّاسِ كُوْنُوْا عِبَادًا لِّيْ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ كُوْنُوْا رَبّٰنِيّٖنَ بِمَا كُنْتُمْ تُعَلِّمُوْنَ الْكِتٰبَ وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُوْنَ ۙ﴿٧٩﴾

79. किसी बशर को येह ह़क़ नहीं कि अल्लाह उसे किताब और ह़िक्मत और नुबुव्वत अ़ता फ़रमाए फिर वोह लोगों से येह केहने लगे कि तुम अल्लाह को छोड़ कर मेरे बंदे बन जाओ बल्कि (वोह तो येह कहेगा) तुम अल्लाहवाले बन जाओ इस सबब से कि तुम किताब सिखाते हो और इस वजह से कि तुम खुद उसे पढ़ते भी हो।

وَلَا يَاْمُرَكُمْ اَنْ تَتَّخِذُوا الْمَلٰٓئِكَةَ وَالنَّبِيّٖنَ اَرْبَابًا ؕ اَيَاْمُرُكُمْ بِالْكُفْرِ بَعْدَ اِذْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿٨٠﴾ ع

80. और वोह पयग़म्बर तुम्हें येह हुक्म कभी नहीं देता कि तुम फ़रिश्तों और पयगम्बरों को रब बना लो, क्या वोह तुम्हारे मुसलमान हो जाने के बाद (अब) तुम्हें कुफ्र का हुक्म देगा ?

وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ النَّبِيّٖنَ لَمَآ اٰتَيْتُكُمْ مِّنْ كِتٰبٍ وَّحِكْمَةٍ ثُمَّ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهٖ وَلَتَنْصُرُنَّهٗ ؕ

81. और (ऐ मह़बूब! वोह वक़्त याद करें) जब अल्लाहने अंबिया से पुख़्ता अ़हद लिया कि जब मैं तुम्हें किताब और ह़िक्मत अ़ता कर दूं फिर तुम्हारे पास वोह (सब पर अ़ज़मतवाला) रसूल ﷺ तशरीफ़ लाए जो उन किताबों की तस्दीक़ फ़रमाने वाला हो जो तुम्हारे साथ होंगी तो ज़रूर बिज़-ज़रूर उन पर ईमान लाओगे और ज़रूर

قَالَ ءَاَقْرَرْتُمْ وَاَخَذْتُمْ عَلٰى ذٰلِكُمْ اِصْرِيْ ؕ قَالُوْٓا اَقْرَرْنَا ؕ قَالَ فَاشْهَدُوْا وَاَنَا مَعَكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٨١﴾

बिज़्-ज़रूर उनकी मदद करोगे, फ़रमाया : क्या तुम ने इक़रार किया और इस (शर्त) पर मेरा भारी अ़हद मज़बूती से थाम लिया ? सब ने अ़र्ज़ किया : हमने इक़रार कर लिया, फ़रमाया कि तुम गवाह हो जाओ और मैं भी तुम्हारे साथ गवाहों में से हूं।

فَمَنْ تَوَلّٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٨٢﴾

82. (अब पूरी नस्ले आदम के लिए तंबीहन फ़रमाया) फिर जिसने उस (इक़रार) के बाद रू गर्दानी की पस वोही लोग ना फ़रमान होंगे।

اَفَغَيْرَ دِيْنِ اللّٰهِ يَبْغُوْنَ وَلَهٗٓ اَسْلَمَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّاِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ ﴿٨٣﴾

83. क्या येह अल्लाह के दीन के सिवा कोई और दीन चाहते हैं और जो कोई भी आस्मानों और ज़मीन में है उसने खुशी से या लाचारी से (बहर हाल) उसी की फ़रमां बरदारी इख़्तियार की है और सब उसी की तरफ़ लौटाए जाएंगे।

قُلْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى وَالنَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ۠ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ ۡ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿٨٤﴾

84. आप फ़रमाएं : हम अल्लाह पर ईमान लाए हैं और जो कुछ हम पर उतारा गया है और जो कुछ इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और या'कूब (عليهم السلام) और उनकी औलाद पर उतारा गया है और जो कुछ मूसा और ईसा और जुमला अंबिया (عليهم السلام) को उन के रब की तरफ से अ़ता किया गया है (सब पर ईमान लाए हैं), हम उनमें से किसी पर भी ईमान में फ़र्क़ नहीं करते और हम उसी के ताबेए फ़रमान हैं।

وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ ۚ وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٨٥﴾

85. और जो कोई इस्लाम के सिवा किसी और दीन को चाहेगा तो वोह उस से हरगिज़ क़बूल नहीं किया जाएगा, और वोह आख़िरत में नुक़्सान उठानेवालों में से होगा।

كَيْفَ يَهْدِي اللّٰهُ قَوْمًا كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ وَشَهِدُوْٓا اَنَّ

86. अल्लाह उन लोगों को क्यों कर हिदायत फ़रमाए जो ईमान लाने के बाद काफ़िर हो गए हालां कि वोह इस अम्र

الرَّسُوْلَ حَقٌّ وَّ جَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ؕ
وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۸۶﴾

की गवाही दे चुके थे कि येह रसूल सच्चा है और उनके पास वाज़ेह निशानियां भी आ चुकी थीं, और अल्लाह ज़ालिम कौम को हिदायत नहीं फ़रमाता।

اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ اَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ
اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿۸۷﴾

87. ऐसे लोगों की सजा येह है कि उन पर अल्लाह की और फ़रिश्तों की और तमाम इन्सानों की ला'नत पड़ती रहे।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ
الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿۸۸﴾

88. वोह इस फिटकार में हमेशा (गिरफ़्तार) रहेंगे और उनसे इस अ़ज़ाब में कमी नहीं की जाएगी और न उन्हें मोह्लत दी जाएगी।

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ
وَاَصْلَحُوْا ۫ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ﴿۸۹﴾

89. सिवाए उन लोगों के जिन्हों ने उस के बाद तौबा कर ली और (अपनी) इस्लाह़ कर ली, तो बेशक अल्लाह बख़्शनेवाला महरबान है।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ
ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّنْ تُقْبَلَ
تَوْبَتُهُمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الضَّآلُّوْنَ ﴿۹۰﴾

90. बेशक जिन लोगों ने अपने ईमान के बाद कुफ़्र किया फिर वोह कुफ़्र में बढ़ते गए उनकी तौबा हरगिज़ क़ुबूल नहीं की जाएगी, और वोही लोग गुमराह हैं।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَهُمْ
كُفَّارٌ فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْ اَحَدِهِمْ
مِّلْءُ الْاَرْضِ ذَهَبًا وَّلَوِ افْتَدٰى
بِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ وَّمَا
لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿۹۱﴾ ع

91. बेशक जो लोग काफ़िर हुए और ह़ालते कुफ़्र में ही मर गए सो उन में से कोई शख़्स अगर ज़मीन भर सोना भी (अपनी नजात के लिए) मुआ़वज़े में देना चाहे तो उस से हरगिज़ क़ुबूल नहीं किया जाएगा, उन्हीं लोगों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है और उन का कोई मददगार नहीं हो सकेगा।

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ؕ۬ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿۹۲﴾

92. तुम हरगिज़ नेकी को नहीं पहुंच सकोगे जब तक तुम (अल्लाह की राह में) अपनी महबूब चीज़ों में से ख़र्च न करो, और तुम जो कुछ भी ख़र्च करते हो बेशक अल्लाह उसे खूब जाननेवाला है।

كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِلَّا مَا حَرَّمَ اِسْرَآءِيْلُ عَلٰى نَفْسِهٖ مِنْ قَبْلِ اَنْ تُنَزَّلَ التَّوْرٰىةُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِالتَّوْرٰىةِ فَاتْلُوْهَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۹۳﴾

93. तौरात के उतरने से पहले बनी इसराईल के लिए हर खाने की चीज़ हलाल थी सिवाए उन (चीज़ों) के जो या'क़ूब (عليه السلام) ने ख़ुद अपने ऊपर हराम कर ली थीं, फ़रमा दें : तौरात लाओ और उसे पढ़ो अगर तुम सच्चे हो।

فَمَنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۹۴﴾

94. फिर उसके बाद भी जो शख़्स अल्लाह पर झूट घड़े तो वोही लोग ज़ालिम हैं।

قُلْ صَدَقَ اللّٰهُ ۫ فَاتَّبِعُوْا مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۹۵﴾

95. फ़रमा दें कि अल्लाह ने सच फ़रमाया है, सो तुम इब्राहीम (عليه السلام) के दीन की पैरवी करो जो हर बातिल से मुंह मोड़ कर सिर्फ़ अल्लाह के हो गए थे, और वोह मुशरिकों में से नहीं थे।

اِنَّ اَوَّلَ بَيْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِيْ بِبَكَّةَ مُبٰرَكًا وَّ هُدًى لِّلْعٰلَمِيْنَ ۚ ﴿۹۶﴾

96. बेशक सबसे पहला घर जो लोगों (की इबादत) के लिए बनाया गया वोही है जो मक्का में है बरकतवाला है और सारे जहानवालों के लिए (मर्कज़े) हिदायत है।

فِيْهِ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ مَّقَامُ اِبْرٰهِيْمَ ۚ۬ وَمَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا ؕ وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا ؕ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۹۷﴾

97. उसमें खुली निशानियां हैं (उनमें से एक) इब्राहीम (عليه السلام) की जाए क़ियाम है, और जो इसमें दाख़िल हो गया अमान पा गया, और अल्लाह के लिए लोगों पर उस घर का हज फ़र्ज़ है जो भी उस तक पहुंचने की इस्तिताअ़त रखता हो, और जो (उसका) मुन्किर हो तो बेशक अल्लाह सब जहानों से बेनियाज़ है।

قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۖ وَاللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰى مَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٨﴾

98. फ़रमा दें : ऐ अह्ले किताब! तुम अल्लाह की आयतों का इन्कार क्यों करते हो, और अल्लाह तुम्हारे कामों का मुशाहिदा फ़रमा रहा है।

قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ تَبْغُوْنَهَا عِوَجًا وَّاَنْتُمْ شُهَدَآءُ ۭ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٩﴾

99. फ़रमा दें : ऐ अहले किताब! जो शख़्स ईमान ले आया है तुम उसे अल्लाह की राह से क्यों रोकते हो, तुम उनकी राह में भी कजी चाहते हो हालां कि तुम (उसके हक़ होने पर) ख़ुद गवाह हो, और अल्लाह तुम्हारे आ'माल से बे ख़बर नहीं।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تُطِيْعُوْا فَرِيْقًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ يَرُدُّوْكُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ كٰفِرِيْنَ ﴿١٠٠﴾

100. ऐ ईमान वालो! अगर तुम अह्ले किताब में से किसी गिरोह का भी केहना मानोगे तो वोह तुम्हारे ईमान (लाने) के बाद फिर तुम्हें कुफ़्र की तरफ़ लौटा देंगे।

وَكَيْفَ تَكْفُرُوْنَ وَاَنْتُمْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ اٰيٰتُ اللّٰهِ وَفِيْكُمْ رَسُوْلُهٗ ۭ وَمَنْ يَّعْتَصِمْ بِاللّٰهِ فَقَدْ هُدِيَ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٠١﴾ ع ١٠

101. और तुम (अब) किस तरह कुफ़्र करोगे हालां कि तुम वोह (खुश नसीब) हो कि तुम पर अल्लाह की आयतें तिलावत की जाती हैं और तुम में (ख़ुद) अल्लाह के रसूल (ﷺ) मौजूद हैं, और जो शख़्स अल्लाह (के दामन) को मज़बूत पकड़ लेता है तो उसे ज़रूर सीधी राह की तरफ़ हिदायत की जाती है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٠٢﴾

102. ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरा करो जैसे उस से डरने का हक़ है और तुम्हारी मौत सिर्फ़ उसी हाल पर आए कि तुम मुसलमान हो।

وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا ۠ وَاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ كُنْتُمْ اَعْدَآءً فَاَلَّفَ

103. और तुम सब मिल कर अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से थाम लो और तफ़्रिक़ा मत डालो, और अपने ऊपर अल्लाह की उस ने'मत को याद करो जब तुम (एक दूसरे के) दुश्मन थे तो उसने तुम्हारे दिलों में उल्फ़त पैदा

بَيْنَ قُلُوبِكُمْ فَأَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهِ إِخْوَانًا ۚ وَكُنْتُمْ عَلَىٰ شَفَا حُفْرَةٍ مِنَ النَّارِ فَأَنْقَذَكُمْ مِنْهَا ۗ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٠٣﴾

कर दी और तुम उसकी ने'मत के बाइस आपसमें भाई भाई हो गए, और तुम (दोज़ख़की) आग के गढ़े के किनारे पर (पहुंच चुके) थे फिर उस ने तुम्हें उस गढ़े से बचा लिया, यूं ही अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी निशानियां खोल कर बयान फ़रमाता है ताकि तुम हिदायत पा जाओ।

وَلْتَكُنْ مِنْكُمْ أُمَّةٌ يَدْعُونَ إِلَى الْخَيْرِ وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿١٠٤﴾

104. और तुम में से ऐसे लोगों की एक जमाअ़त ज़रूर होनी चाहिए जो लोगों को नेकी की तरफ़ बुलाएं और भलाई का हुक्म दें और बुराई से रोकें, और वोही लोग बामुराद हैं।

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ تَفَرَّقُوا وَاخْتَلَفُوا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ ۚ وَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٠٥﴾

105. और उन लोगों की तरह न हो जाना जो फ़िर्क़ों में बट गए थे और जब उनके पास वाज़ेह निशानियां आ चुकीं उसके बाद भी इख़्तिलाफ़ करने लगे, और उन ही लोगों के लिए सख़्त अ़ज़ाब है।

يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوهٌ وَتَسْوَدُّ وُجُوهٌ ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ اسْوَدَّتْ وُجُوهُهُمْ أَكَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿١٠٦﴾

106. जिस दिन कई चेहरे सफ़ेद होंगे और कई चेहरे सियाह होंगे, तो जिन के चेहरे सियाह हो जाएंगे (उनसे कहा जाएगा) क्या तुमने ईमान लाने के बाद कुफ़्र किया? तो जो कुफ़्र तुम करते रहे थे सो उसके अ़ज़ाब (का मज़ा) चख लो।

وَأَمَّا الَّذِينَ ابْيَضَّتْ وُجُوهُهُمْ فَفِي رَحْمَةِ اللَّهِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿١٠٧﴾

107. और जिन लोगों के चेहरे सफ़ेद (रौशन) होंगे तो वोह अल्लाह की रह्मतमें होंगे, और वोह उस में हमेशा रहेंगे।

تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ؕ وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٨﴾

108. येह अल्लाह की आयतें हैं जिन्हें हम आप पर ह़क़ के साथ पढ़ते हैं, और अल्लाह जहानवालों पर ज़ुल्म नहीं चाहता।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿١٠٩﴾

109. और अल्लाह ही के लिए है जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है, और सब काम अल्लाह ही की तरफ़ लौटाए जाएंगे।

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ؕ وَلَوْ اٰمَنَ اَهْلُ الْكِتٰبِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ مِنْهُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ وَاَكْثَرُهُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿١١٠﴾

110. तुम बेहतरीन उम्मत हो जो सब लोगों (की रहनुमाई) के लिए ज़ाहिर की गई है, तुम भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से मना' करते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो, और अगर अह्ले किताब भी ईमान ले आते तो यक़ीनन उन के लिए बेहतर होता, उन में से कुछ ईमानवाले भी हैं और उनमें से अक्सर ना फ़रमान हैं।

لَنْ يَّضُرُّوْكُمْ اِلَّاۤ اَذًى ؕ وَاِنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ يُوَلُّوْكُمُ الْاَدْبَارَ ۟ ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿١١١﴾

111. येह लोग सताने के सिवा तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे और अगर येह तुम से जंग करें तो तुम्हारे सामने पीठ फेर जाएंगे, फिर उनकी मदद (भी) नहीं की जाएगी।

ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ اَيْنَ مَا ثُقِفُوْۤا اِلَّا بِحَبْلٍ مِّنَ اللّٰهِ وَحَبْلٍ مِّنَ النَّاسِ وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿١١٢﴾

112. वोह जहां कहीं भी पाए जाएं उन पर ज़िल्लत मुसल्लत कर दी गई है सिवाए इसके कि उन्हें कहीं अल्लाह के अ़हद से या लोगों के अ़हद से (पनाह दे दी जाए) और वोह अल्लाह के ग़ज़ब के सज़ावार हुए हैं और उन पर मोहताजी मुसल्लत की गई है, येह इस लिए कि वोह अल्लाह की आयतों का इन्कार करते थे और अंबिया को नाह़क़ क़त्ल करते थे, क्यों कि वोह नाफ़रमान हो गए थे और (सरकशी में) ह़दसे बढ़ गए थे।

لَيْسُوْا سَوَآءً ۭ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اُمَّةٌ قَآئِمَةٌ يَّتْلُوْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ اٰنَآءَ الَّيْلِ وَهُمْ يَسْجُدُوْنَ ﴿١١٣﴾

113. येह सब बराबर नहीं हैं, अहले किताब में से कुछ लोग हक़ पर (भी) क़ाइम हैं वोह रात की साअ़तों में अल्लाह की आयात की तिलावत करते हैं और सर ब सुजूद रेहते हैं।

يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُسَارِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ ۭ وَاُولٰۗىِٕكَ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١١٤﴾

114. वोह अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान लाते हैं और भलाई का हुक्म देते हैं और बुराई से मना' करते हैं और नेक कामों में तेज़ी से बढ़ते हैं, और येही लोग नेकूकारों में से हैं।

وَمَا يَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُّكْفَرُوْهُ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿١١٥﴾

115. और येह लोग जो नेक काम भी करें उसकी नाक़द्री नहीं की जाएगी, और अल्लाह परहेज़गारों को खूब जाननेवाला है।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔـا ۭ وَاُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿١١٦﴾

116. यक़ीनन जिन लोगों ने कुफ़्र किया है न उनके माल उन्हें अल्लाह (के अ़ज़ाब) से कुछ भी बचा सकेंगे और न उनकी औलाद, और वोही लोग जहन्नमी हैं, जो उस में हमेशा रहेंगे।

مَثَلُ مَا يُنْفِقُوْنَ فِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيْحٍ فِيْهَا صِرٌّ اَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَاَهْلَكَتْهُ ۭ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَلٰكِنْ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿١١٧﴾

117. (येह लोग) जो माल (भी) इस दुनिया की ज़िन्दगी में ख़र्च करते हैं उसकी मिसाल उस हवा जैसी है जिस में सख़्त पाला हो (और) वोह ऐसी क़ौम की खेती पर जा पड़े जो अपनी जानों पर ज़ुल्म करती हो और वोह उसे तबाह कर दे, और अल्लाहने उन पर कोई ज़ुल्म नहीं किया बल्कि वोह ख़ुद अपनी जानों पर ज़ुल्म करते हैं।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا بِطَانَةً مِّنْ دُوْنِكُمْ لَا يَاْلُوْنَكُمْ

118. ऐ ईमानवालो! तुम ग़ैरों को (अपना) राज़दार न बनाओ वोह तुम्हारी निस्बत फ़ितना अंगेज़ी में (कभी)

خَبَالًا ۭ وَدُّوْا مَا عَنِتُّمْ ۚ قَدْ بَدَتِ
الْبَغْضَاۗءُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ښ وَمَا
تُخْفِيْ صُدُوْرُھُمْ اَكْبَرُ ۭ قَدْ بَيَّنَّا
لَكُمُ الْاٰيٰتِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿١١٨﴾
ھٰٓاَنْتُمْ اُولَاۗءِ تُحِبُّوْنَھُمْ وَلَا يُحِبُّوْنَكُمْ
وَتُؤْمِنُوْنَ بِالْكِتٰبِ كُلِّهٖ ۚ وَاِذَا
لَقُوْكُمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا ښ وَاِذَا خَلَوْا
عَضُّوْا عَلَيْكُمُ الْاَنَامِلَ مِنَ
الْغَيْظِ ۭ قُلْ مُوْتُوْا بِغَيْظِكُمْ ۭ اِنَّ
اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿١١٩﴾
اِنْ تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ تَسُؤْھُمْ ۡ
وَاِنْ تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَّفْرَحُوْا بِھَا ۭ
وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا لَا يَضُرُّكُمْ
كَيْدُھُمْ شَـيْـــًٔا ۭ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا
يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿١٢٠﴾
وَاِذْ غَدَوْتَ مِنْ اَھْلِكَ تُبَوِّئُ
الْمُؤْمِنِيْنَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ۭ وَاللّٰهُ
سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٢١﴾
اِذْ ھَمَّتْ طَّاۗىِٕفَتٰنِ مِنْكُمْ اَنْ
تَفْشَلَا ۙ وَاللّٰهُ وَلِيُّهُمَا ۭ وَعَلَي اللّٰهِ

कमी नहीं करेंगे, वोह तुम्हें सख़्त तक्लीफ़ पहुंचने की ख़्वाहिश रखते हैं, बा'ज़ तो उनकी जबानों से खुद ज़ाहिर हो चुका है, और जो (अ़दावत) उनके सीनों में छुपा रख्खी है वोह उससे (भी) बढ़ कर है । हमने तुम्हारे लिए निशानियां वाज़ेह् कर दी हैं अगर तुम्हें अ़क्ल हो।

119. आगाह हो जाओ! तुम वोह लोग हो कि उन से मुह़ब्बत रखते हो और वोह तुम्हें पसंद (तक) नहीं करते हालांकि तुम सब किताबों पर ईमान रखते हो, और जब वोह तुम से मिलते हैं (तो) केहते हैं हम ईमान ले आए हैं, और जब अकेले होते हैं तो तुम पर गुस्से से उंगलियां चबाते हैं, फ़रमा दें : मर जाओ अपनी घुटन में, बेशक अल्लाह दिलों की (पोशीदह) बातों को खूब जानने वाला है।

120. अगर तुम्हें कोई भलाई पहुंचे तो उन्हें बुरी लगती है, और तुम्हें कोई रंज पहुंचे तो वोह उस से खुश होते हैं, और अगर तुम सब्र करते रहो और तक्वा इख़्तियार किए रखो तो उनका फ़रेब तुम्हें कोई नुक्सान नहीं पहुंचा सकेगा, जो कुछ वोह कर रहे हैं बेशक अल्लाह उस पर अह़ाता फ़रमाए हुए है।

121. और (वोह वक़्त याद कीजिए) जब आप सुब्ह़ सवेरे अपने दरे दौलत से रवाना हो कर मुसलमानों को (गजूवअे ओहद के मौक़े' पर) जंग के लिए मोरचों पर ठेहरा रहे थे, और अल्लाह खूब सुननेवाला जाननेवाला है।

122. जब तुम में से (बनू सलमा खज़रज और बनू हारिसा औस) दो गिरोहों का इरादा हुवा कि बुज़दिली कर

فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۲۲﴾

जाएं, हालांकि अल्लाह उन दोनों का मददगार था, और ईमानवालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए।

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّ اَنْتُمْ اَذِلَّةٌ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۲۳﴾

123. और अल्लाहने बद्र में तुम्हारी मदद फ़रमाई हालांकि तुम (उस वक़्त) बिल्कुल बे सरोसामान थे, पस अल्लाह से डरा करो ताकि तुम शुक्र गुज़ार बन जाओ।

اِذْ تَقُوْلُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ اَلَنْ يَّكْفِيَكُمْ اَنْ يُّمِدَّكُمْ رَبُّكُمْ بِثَلٰثَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُنْزَلِيْنَ ﴿۱۲۴﴾ ؕ

124. जब आप मुसलमानों से फ़रमा रहे थे कि क्या तुम्हारे लिए येह काफ़ी नहीं कि तुम्हारा रब तीन हज़ार उतारे हुऐ फ़रिश्तों के ज़रीऐ तुम्हारी मदद फ़रमाए।

بَلٰٓى ۙ اِنْ تَصْبِرُوْا وَ تَتَّقُوْا وَيَاْتُوْكُمْ مِّنْ فَوْرِهِمْ هٰذَا يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُسَوِّمِيْنَ ﴿۱۲۵﴾

125. हां अगर तुम सब्र करते रहो और परहेज़गारी क़ाइम रखो और वोह (कुफ़्फ़ार) तुम पर उसी वक़्त (पूरे) जोश से हमला आवर हो जाएं तो तुम्हारा रब पाँच हज़ार निशानवाले फ़रिश्तों के ज़रीए तुम्हारी मदद फ़रमाएगा।

وَ مَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى لَكُمْ وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوْبُكُمْ بِهٖ ؕ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿۱۲۶﴾ ۙ

126. और अल्लाह ने उस (मदद) को महज़ तुम्हारे लिए खुशख़बरी बनाया और इस लिए कि उससे तुम्हारे दिल मुत्मइन हो जाएं, और मदद तो सिर्फ़ अल्लाह ही की तरफ़ से होती है जो बड़ा ग़ालिब हिक्मतवाला है।

لِيَقْطَعَ طَرَفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَوْ يَكْبِتَهُمْ فَيَنْقَلِبُوْا خَآئِبِيْنَ ﴿۱۲۷﴾

127. (मज़ीद) इस लिए कि (अल्लाह) काफ़िरों के एक गिरोह को हलाक कर दे या उन्हें ज़लील कर दे सो वोह नाकाम हो कर वापस पलट जाएं।

لَيْسَ لَكَ مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ اَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ اَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَاِنَّهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿۱۲۸﴾

128. (ऐ हबीब! अब) आपका उस मुआमले से कोई तअल्लुक़ नहीं चाहे तो अल्लाह उन्हें तौबा की तौफ़ीक़ दे या उन्हें अज़ाब दे क्योंकि वोह ज़ालिम हैं।

وَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي الْاَرْضِ ؕ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢٩﴾

129. और अल्लाह ही के लिए जो कुछ आस्मानों में और ज़मीन में है। वोह जिसे चाहे बख़्श दे जिसे चाहे अज़ाब दे, और अल्लाह निहायत बख़्शनेवाला महरबान है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوا الرِّبٰوٓا اَضْعَافًا مُّضٰعَفَةً ۪ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿١٣٠﴾ ۚ

130. ऐ ईमानवालो! दोगुना और चौगुना कर के सूद मत खाया करो, और अल्लाह से डरा करो ताकि तुम फ़लाह पाओ।

وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيْۤ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ ﴿١٣١﴾ ۚ

131. और उस आग से डरो जो काफ़िरों के लिए तैयार की गई है।

وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿١٣٢﴾ ۚ

132. और अल्लाह की और रसूल (ﷺ) की फ़रमां बरदारी करते रहो ताकि तुम पर रह़म किया जाए।

وَسَارِعُوْۤا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ جَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ ۙ اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٣٣﴾ ۙ

133. और अपने रब की बख़्शिश और उस जन्नत की तरफ़ तेज़ी से बढ़ो जिस की वुस्अत में सब आस्मान और ज़मीन आ जाते हैं, जो परहेज़गारों के लिए तैयार की गई है।

الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ فِي السَّرَّآءِ وَ الضَّرَّآءِ وَ الْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٣٤﴾ ۚ

134. येह वोह लोग हैं जो फ़राख़ी और तंगी (दोनों हालतों) में ख़र्च करते हैं और ग़ुस्सा ज़ब्त करनेवाले हैं और लोगों से (उनकी ग़लतियों पर) दरगुज़र करनेवाले हैं, और अल्लाह एह़सान करनेवालों से मुहब्बत फ़रमाता है।

وَالَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ

135. और (येह) ऐसे लोग हैं कि जब कोई बुराई कर बैठते हैं या अपनी जानों पर ज़ुल्म कर बैठते हैं तो अल्लाह

فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ ۪ وَمَنْ يَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۪ۚ وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلٰى مَا فَعَلُوْا وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۳۵﴾

का ज़िक्र करते हैं फिर अपने गुनाहों की मुआफ़ी माँगते हैं, और अल्लाह के सिवा गुनाहों की बख़्शिश कौन करता है, और फिर भी जो गुनाह वोह कर बैठे थे उन पर जानबूझ कर इसरार भी नहीं करते।

اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ مَّغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَجَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿۱۳۶﴾

136. येह वोह लोग हैं जिनकी जज़ा उनके रब की तरफ़ से मग्फ़िरत है और जन्नतें हैं जिनके नीचे नेहरें रवां हैं वोह उनमें हमेशा रेहनेवाले हैं, और (नेक) अ़मल करने वालों का क्या ही अच्छा सिला है।

قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ سُنَنٌ ۙ فَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿۱۳۷﴾

137. तुम से पेहले (गुज़िश्ता उम्मतों के लिए कानूने कुदरत के) बहुत से ज़ाबते गुज़र चुके हैं सो तुम ज़मीन में चला फिरा करो और देखा करो कि झुटलानेवालों का क्या अंजाम हुआ।

هٰذَا بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى وَّمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۳۸﴾

138. येह कु़र्आन लोगों के लिए वाज़ेह बयान है और हिदायत है और परहेज़गारों के लिए नसीहत है।

وَلَا تَهِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۳۹﴾

139. और तुम हिम्मत न हारो और न ग़म करो और तुम ही ग़ालिब आओगे अगर तुम (कामिल) ईमान रखते हो।

اِنْ يَّمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مِّثْلُهٗ ؕ وَتِلْكَ الْاَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ ۚ وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَآءَ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۴۰﴾

140. अगर तुम्हें (अब) कोई ज़ख़्म लगा है तो (याद रखो कि) उन लोगों को भी इसी तरह का ज़ख़्म लग चुका है, और येह दिन हैं जिन्हें हम लोगों के दरम्यान फेरते रेहते हैं, और येह (गरदिशे अय्याम) इस लिए है कि अल्लाह अहले ईमान की पेहचान करा दे और तुम में से बा'ज़ को शहादत का रुत्बा अ़ता करे, और अल्लाह ज़ालिमों को पसंद नहीं करता।

وَلِيُمَحِّصَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

141. और येह इस लिए (भी) है कि अल्लाह ईमान वालों

وَيَمْحَقَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٤١﴾

को (मज़ीद) निखार दे (या'नी पाको साफ़ कर दे) और काफ़िरों को मिटा दे।

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٤٢﴾

142. क्या तुम येह गुमान किए हुए हो कि तुम (यूंही) जन्नतमें चले जाओगे हालांकि अभी अल्लाह ने तुम में से जिहाद करनेवालों को परखा ही नहीं है और न ही सब्र करनेवालों को जांचा है।

وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَلْقَوْهُ ۖ فَقَدْ رَاَيْتُمُوْهُ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿١٤٣﴾ ع

143. और तुम तो उसका सामना करने से पेहले (शहादत की) मौत की तमन्ना किया करते थे, सो अब तुमने उसे अपनी आँखों के सामने देख लिया है।

ع ١٤ ١٤ ٥

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۭ اَفَا۟ىِٕنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ ۭ وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰى عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْـًٔا ۭ وَسَيَجْزِي اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٤٤﴾

144. और मुहम्मद (ﷺ भी तो) रसूल ही हैं (न कि ख़ुदा), आप से पेहले भी कई पयग़म्बर (मसाइब और तक्लीफ़ें झेलते हुऐ इस दुनिया से) गुज़र चुके हैं, फिर अगर वोह वफ़ात फ़रमा जाएं या शहीद कर दिए जाएं तो क्या तुम अपने (पिछले मज़हब की तरफ़) उलटे पाँव फिर जाओगे (या'नी क्या उनकी वफ़ात या शहादत को मआज़ल्लाह दीने इस्लाम के हक़ न होने पर या उनके सच्चे रसूल न होने पर मह्मूल करोगे), और जो कोई अपने उलटे पाँव फिरेगा तो वोह अल्लाह का हरगिज़ कुछ नहीं बिगाड़ेगा, और अल्लाह अ़नक़रीब (मसाइब पर साबित क़दम रह कर) शुक्र करनेवालों को जज़ा अ़ता फ़रमाएगा।

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ كِتٰبًا مُّؤَجَّلًا ۭ وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۚ وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الْاٰخِرَةِ نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۭ وَسَنَجْزِي الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٤٥﴾

145. और कोई शख़्स अल्लाह के हुक्म के बिग़ैर नहीं मर सक्ता (उसका) वक़्त लिखा हुआ है, और जो शख़्स दुनिया का इन्आ़म चाहता है हम उसे उस में से दे देते हैं, और जो आख़िरत का इन्आ़म चाहता है हम उसे उसमें से दे देते हैं, और हम अ़नक़रीब शुक्र गुज़ारों को (ख़ूब) सिला देंगे।

وَكَاَيِّنْ مِّنْ نَّبِيٍّ قٰتَلَ مَعَهٗ رِبِّيُّوْنَ كَثِيْرٌ فَمَا وَهَنُوْا لِمَآ اَصَابَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَمَا ضَعُفُوْا وَمَا اسْتَكَانُوْا وَاللّٰهُ يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٤٦﴾

146. और कितने ही अंबिया ऐसे हुए जिन्हों ने जिहाद किया उनके साथ बहुत से अल्लाहवाले (अवलिया) भी शरीक हुए, तो न उन्होंने उन मुसीबतों के बाइस जो उन्हें अल्लाह की राह में पहुंचीं हिम्मत हारी और न वोह कमज़ोर पड़े और न वोह झुके, और अल्लाह सब्र करनेवालों से मुहब्बत करता है।

وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوْا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِيْٓ اَمْرِنَا وَثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٤٧﴾

147. और उनका केहना कुछ न था सिवाए इस इल्तिजा के कि ऐ हमारे रब! हमारे गुनाह बख़्श दे और हमारे काम में हमसे होने वाली ज़ियादतियों से दरगुज़र फ़रमा और हमें (अपनी राहमें) साबित क़दम रख और हमें काफ़िरों पर ग़ल्बा अ़ता फ़रमा।

فَاٰتٰىهُمُ اللّٰهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَحُسْنَ ثَوَابِ الْاٰخِرَةِ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٤٨﴾

148. पस अल्लाहने उन्हें दुनियाका भी इनाम अ़ता फ़रमाया और आख़िरतके भी उ़मदा अज्रसे नवाज़ा, और अल्लाह (उन) नेकू कारों से प्यार करता है (जो सिर्फ़ उसीको चाहते हैं)।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تُطِيْعُوا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَرُدُّوْكُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿١٤٩﴾

149. ऐ ईमानवालो! अगर तुमने काफ़िरों का कहा माना तो वोह तुम्हें उलटे पाँव (कुफ़्रकी जानिब) फेर देंगे फिर तुम नुक़्सान उठाते हुए पलटोगे।

بَلِ اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ وَهُوَ خَيْرُ النّٰصِرِيْنَ ﴿١٥٠﴾

150. बल्कि अल्लाह तुम्हारा मौला है, और वोह सबसे बेहतर मदद फ़रमानेवाला है।

سَنُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَآ اَشْرَكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ

151. हम अ़नक़रीब काफ़िरों के दिलों में (तुम्हारा) रो'ब डाल देंगे इस वजह से कि उन्होंने उस चीज़को अल्लाह का शरीक ठेहराया है, जिसके लिए अल्लाहने कोई सनद नहीं उतारी, और उनका ठिकाना दोज़ख़ है, और

وَبِئْسَ مَثْوَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٥١﴾

ज़ालिमों का (वोह) ठिकाना बहुत ही बुरा है।

وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ وَعْدَهٗٓ اِذْ تَحُسُّوْنَهُمْ بِاِذْنِهٖ ۚ حَتّٰٓى اِذَا فَشِلْتُمْ وَتَنَازَعْتُمْ فِى الْاَمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَآ اَرٰىكُمْ مَّا تُحِبُّوْنَ ۭ مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ۚ ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ ۚ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ۭ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٥٢﴾

152. और बेशक अल्लाह ने तुम्हें अपना वा'दा सच कर दिखाया जब तुम उसके हुक्म से उन्हें क़त्ल कर रहे थे यहां तक कि तुमने बुज़दिली की और (रसूल ﷺ के) हुक्म के बारे में झगड़ने लगे और तुम ने उसके बाद (उनकी) ना फ़रमानी की जब कि अल्लाह ने तुम्हें वोह (फ़तह) दिखा दी थी जो तुम चाहते थे, तुम में से कोई दुनिया का ख़्वाहिशमंद था और तुम में से कोई आख़िरतका तलबगार था फिर उसने तुम्हें उनसे (मग़लूब करके) फेर दिया ताकि वोह तुम्हें आज़माए (बाद अज़ां) उसने तुम्हें मुआफ़ कर दिया, और अल्लाह अह्ले ईमान पर बड़े फ़ज़्लवाला है।

اِذْ تُصْعِدُوْنَ وَلَا تَلْوٗنَ عَلٰٓى اَحَدٍ وَّالرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ فِيْٓ اُخْرٰىكُمْ فَاَثَابَكُمْ غَمًّۢا بِغَمٍّ لِّكَيْلَا تَحْزَنُوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ وَلَا مَآ اَصَابَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٥٣﴾

153. जब तुम (अफ़रा तफ़री की हालत में) भागे जा रहे थे और किसी को मुड़कर नहीं देखते थे और रसूल (ﷺ) उस जमाअ़त में (खड़े) जो तुम्हारे पीछे (साबित क़दम) रही थी तुम्हें पुकार रहे थे फिर उसने तुम्हें ग़म पर ग़म दिया (येह नसीहतो तरबियत थी) ताकि तुम उस पर जो तुम्हारे हाथ से जाता रहा और उस मुसीबत पर जो तुम पर आन पड़ी, रंज न करो, और अल्लाह तुम्हारे कामों से ख़बरदार है।

ثُمَّ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ الْغَمِّ اَمَنَةً نُّعَاسًا يَّغْشٰى طَاۗىِٕفَةً مِّنْكُمْ ۙ وَطَاۗىِٕفَةٌ قَدْ اَهَمَّتْهُمْ اَنْفُسُهُمْ يَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ ۭ يَقُوْلُوْنَ هَلْ لَّنَا

154. फिर उसने ग़म के बाद तुम पर (तस्कीन के लिए) ग़ुनूदगी की सूरत में अमान उतारी जो तुम में से एक जमाअ़त पर छा गई और एक गिरोह को (जो मुनाफ़िक़ों का था) सिर्फ़ अपनी जानोंकी फ़िक्र पड़ी हुई थी, वोह अल्लाह के साथ नाहक़्क़ गुमान करते थे जो (महज़) जाहिलियत के गुमान थे, वोह केहते हैं : क्या इस काम में

مِنَ الْاَمْرِ مِنْ شَیْءٍ ؕ قُلْ اِنَّ الْاَمْرَ كُلَّهٗ لِلّٰهِ ؕ یُخْفُوْنَ فِیْۤ اَنْفُسِهِمْ مَّا لَا یُبْدُوْنَ لَكَ ؕ یَقُوْلُوْنَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الْاَمْرِ شَیْءٌ مَّا قُتِلْنَا هٰهُنَا ؕ قُلْ لَّوْ كُنْتُمْ فِیْ بُیُوْتِكُمْ لَبَرَزَ الَّذِیْنَ كُتِبَ عَلَیْهِمُ الْقَتْلُ اِلٰى مَضَاجِعِهِمْ ۚ وَ لِیَبْتَلِیَ اللّٰهُ مَا فِیْ صُدُوْرِكُمْ وَ لِیُمَحِّصَ مَا فِیْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ عَلِیْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۱۵۴﴾

हमारे लिए भी कुछ (इख़्तियार) है? फ़रमा दें कि सब काम अल्लाह ही के हाथ में है, वोह अपने दिलों में वोह बातें छुपाए हुए हैं जो आप पर ज़ाहिर नहीं होने देते। केहते हैं कि अगर इस काम में कुछ हमारा इख़्तियार होता तो हम उस जगह क़त्ल न किए जाते। फ़रमा दें : अगर तुम अपने घरों में (भी) होते, तब भी जिनका मारा जाना लिखा जा चुका था वोह ज़रूर अपनी क़त्लगाहों की तरफ़ निकल कर आ जाते और येह इस लिए (किया गया)है कि जो कुछ तुम्हारे सीनों में है अल्लाह उसे आज़माए और जो (वस्वसे) तुम्हारे दिलों में हैं, उन्हें खूब साफ़ कर दे और अल्लाह सीनों की बात खूब जानता है।

اِنَّ الَّذِیْنَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ یَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ ۙ اِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّیْطٰنُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوْا ۚ وَ لَقَدْ عَفَا اللّٰهُ عَنْهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِیْمٌ ﴿۱۵۵﴾

155. बेशक जो लोग तुममें से उस दिन भाग खड़े हुए थे जब दोनों फ़ौजें आपस में गुथ्थम गुथ्था हो गई थीं तो उन्हें महज़ शैताानने फुसला दिया था, उनके किसी अ़मल के बाइस जिसके वोह मुर्तकिब हुए, बेशक अल्लाह ने उन्हें मुआफ़ फ़रमा दिया, यक़ीनन अल्लाह बहुत बख़्शने वाला बड़े हि़ल्मवाला है।

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِیْنَ كَفَرُوْا وَ قَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ اِذَا ضَرَبُوْا فِی الْاَرْضِ اَوْ كَانُوْا غُزًّى لَّوْ كَانُوْا عِنْدَنَا مَا مَاتُوْا وَ مَا قُتِلُوْا ۚ لِیَجْعَلَ اللّٰهُ ذٰلِكَ حَسْرَةً فِیْ قُلُوْبِهِمْ ؕ وَ اللّٰهُ یُحْیٖ وَ یُمِیْتُ ؕ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِیْرٌ ﴿۱۵۶﴾

156. ऐ ईमानवालो! तुम उन काफ़िरों की तरह़ न हो जाओ जो अपने उन भाईयोंके बारे में येह केहते हैं जो (कहीं) सफ़र पर गए हों या जिहाद कर रहे हों (और वहां मर जाएं)कि अगर वोह हमारे पास होते तो न मरते और न क़त्ल किए जाते, ताकि अल्लाह उस (गुमान) को उनके दिलों में ह़सरत बनाए रखवे, और अल्लाह ही ज़िन्दा रखता और मारता है, और अल्लाह तुम्हारे आ'माल खूब देख रहा है।

وَلَئِنْ قُتِلْتُمْ فِي سَبِيلِ اللّٰهِ أَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ﴿١٥٧﴾

157. और अगर तुम अल्लाह की राह में क़त्ल कर दिए जाओ या तुम्हें मौत आ जाए तो अल्लाहकी मग़फ़िरत और रहमत उस (मालो मताअ़) से बहुत बेहतर है जो तुम जमा' करते हो।

وَلَئِنْ مُّتُّمْ أَوْ قُتِلْتُمْ لَإِلَى اللّٰهِ تُحْشَرُونَ ﴿١٥٨﴾

158. और अगर तुम मर जाओ या मारे जाओ तो तुम (सब) अल्लाह ही के हुज़ूर जमा' किए जाओगे।

فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ ۚ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيظَ الْقَلْبِ لَانْفَضُّوا مِنْ حَوْلِكَ ۖ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِي الْأَمْرِ ۚ فَإِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۗ إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِينَ ﴿١٥٩﴾

159. (ऐ हबीबे वाला सिफ़ात!) पस अल्लाह की कैसी रहमत है कि आप उनके लिए नर्म तबा' हैं और अगर आप तुन्द ख़ू (और) सख़्त दिल होते तो लोग आपके गिर्द से छट कर भाग जाते, सो आप उनसे दरगुज़र फ़रमाया करें और उनके लिए बख़्शिश मांगा करें और (अहम) कामों में उनसे मश्वरा किया करें, फिर जब आप पुख़्ता इरादा कर लें तो अल्लाह पर भरोसा किया करें, बेशक अल्लाह तवक्कल वालों से मुहब्बत करता है।

إِنْ يَّنْصُرْكُمُ اللّٰهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ ۚ وَإِنْ يَّخْذُلْكُمْ فَمَنْ ذَا الَّذِي يَنْصُرُكُمْ مِّنْ بَعْدِهِ ۗ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١٦٠﴾

160. अगर अल्लाह तुम्हारी मदद फ़रमाए तो तुम पर कोई ग़ालिब नहीं आ सक्ता और अगर वोह तुम्हें बे सहारा छोड़ दे तो फ़िर कौन ऐसा है जो उसके बाद तुम्हारी मदद कर सके, और मोमिनों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए।

وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَّغُلَّ ۗ وَمَنْ يَّغْلُلْ يَأْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١٦١﴾

161. और किसी नबी की निस्बत येह गुमान ही मुमकिन नहीं कि वोह कुछ छुपाएगा, और जो कोई (किसी का हक़्क़) छुपाता है तो क़ियामत के दिन उसे वोह लाना पड़ेगा जो उसने छुपाया था फिर हर शख़्स को उसके अ़मल का पूरा बदला दिया जाएगा और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।

أَفَمَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَ اللّٰهِ كَمَنْ

162. भला वोह शख़्स जो अल्लाह की मरज़ी के ताबे' हो

بَآءَ بِسَخَطٍ مِّنَ اللّٰهِ وَ مَاْوٰىهُ
جَهَنَّمُ ؕ وَ بِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۱۶۲﴾

गया उस शख़्स की तरह कैसे हो सक्ता है जो अल्लाह के ग़ज़ब का सज़ावार हुआ और उसका ठिकाना जहन्नम है, और वोह बहुत ही बुरी जगह है।

هُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ
بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۶۳﴾

163. अल्लाह के हुज़ूर उनके मुख़्तलिफ़ दरजात हैं, और अल्लाह उनके आ'माल को ख़ूब देखता है।

لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ
بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ
يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَ
يُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَ الْحِكْمَةَ ۚ وَ اِنْ
كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۱۶۴﴾

164. बेशक अल्लाहने मुसलमानों पर बड़ा एहसान फ़रमाया कि उनमें उन्हीं में से (अज़्मतवाला) रसूल (ﷺ) भेजा जो उन पर उसकी आयतें पढ़ता और उन्हें पाक करता है और उन्हें किताबो हिक्मत की ता'लीम देता है अगरचे वोह लोग उससे पहले खुली गुमराही में थे

النصف

اَوَلَمَّآ اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَدْ
اَصَبْتُمْ مِّثْلَيْهَا ۙ قُلْتُمْ اَنّٰى هٰذَا ؕ
قُلْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اَنْفُسِكُمْ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۶۵﴾

165. क्या जब तुम्हें एक मुसीबत आ पहुंची हालांकि तुम उस से दो चंद (दुश्मन को) पहुंचा चुके थे, तो तुम केहने लगे कि येह कहाँ से आ पड़ी? फ़रमा दें : येह तुम्हारी अपनी ही तरफ़से है, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर खूब कुदरत रखता है।

وَ مَآ اَصَابَكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ
فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۶۶﴾

166. और उस दिन जो तक्लीफ़ तुम्हें पहुंची जब दोनों लश्कर बाहम मुक़ाबिल हो गए थे, सो वोह अल्लाह के हुक्म (ही) से थी और येह इस लिए कि अल्लाह ईमानवालों की पहचान करा दे।

وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ نَافَقُوْا ۚۖ وَقِيْلَ
لَهُمْ تَعَالَوْا قَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
اَوِ ادْفَعُوْا ؕ قَالُوْا لَوْ نَعْلَمُ قِتَالًا لَّا
اتَّبَعْنٰكُمْ ؕ هُمْ لِلْكُفْرِ يَوْمَئِذٍ
اَقْرَبُ مِنْهُمْ لِلْاِيْمَانِ ۚ يَقُوْلُوْنَ

167. और ऐसे लोगोंकी भी पहचान करा दे जो मुनाफ़िक़ हैं और जब उनसे कहा गया कि आओ अल्लाह की राहमें जंग करो या (दुश्मनके हमले का) दिफ़ाअ़ करो तो केहने लगे अगर हम जानते कि (वाक़िअ़तन किसी ढब की) लड़ाई होगी (या हम उसे अल्लाह की राह में जंग जानते) तो ज़रूर तुम्हारी पैरवी करते, उस दिन वोह

بِاَفْوَاهِهِمْ مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۗ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُوْنَ ﴿١٦٧﴾

(ज़ाहिरी) ईमान की निस्बत खुले कुफ़्र से ज़ियादा क़रीब थे, वोह अपने मुँह से वोह बातें केहते हैं जो उनके दिलों में नहीं हैं, और अल्लाह (उन बातों) को ख़ूब जानता है जो वोह छुपा रहे हैं।

اَلَّذِيْنَ قَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ وَقَعَدُوْا لَوْ اَطَاعُوْنَا مَا قُتِلُوْا ۗ قُلْ فَادْرَءُوْا عَنْ اَنْفُسِكُمُ الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٦٨﴾

168. (येह) वोही लोग हैं जिन्होंने बावजूद इसके कि ख़ुद (घरों में) बैठे रहे अपने भाइयों की निस्बत कहा कि अगर वोह हमारा कहा मानते तो न मारे जाते, फ़रमा दें : तुम अपने आपको मौतसे बचा लेना, अगर तुम सच्चे हो।

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا ۗ بَلْ اَحْيَآءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ ﴿١٦٩﴾

169. और जो लोग अल्लाह की राहमें क़त्ल किए जाएं उन्हें हरगिज़ मुर्दह ख़याल (भी) न करना, बल्कि वोह अपने रब के हुज़ूर ज़िन्दा हैं उन्हें (जन्नत की ने'मतों का) रिज़्क़ दिया जाता है।

فَرِحِيْنَ بِمَآ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۙ وَيَسْتَبْشِرُوْنَ بِالَّذِيْنَ لَمْ يَلْحَقُوْا بِهِمْ مِّنْ خَلْفِهِمْ ۙ اَلَّا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿١٧٠﴾

170. वोह (ह़याते जाविदानी की) उन (ने'मतों) पर फ़रहां व शादां रेहते हैं जो अल्लाहने उन्हें अपने फ़ज़्ल से अ़ता फ़रमा रखी हैं और अपने उन पिछलों से भी जो (ता ह़ाल) उनसे नहीं मिल सके (उन्हें ईमान और त़ाअत की राह पर देख कर) ख़ुश होते हैं कि उन पर भी न कोई ख़ौफ़ होगा और न वोह रंजीदा होंगे।

يَسْتَبْشِرُوْنَ بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٧١﴾

171. वोह अल्लाह की (तजल्लियाते क़ुर्ब की) ने'मत और (लज़्ज़ाते विसालके) फ़ज़्लसे मसरूर रेहते हैं और इस पर (भी) कि अल्लाह ईमानवालों का अज्र ज़ाए' नहीं फ़रमाता।

اَلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ مِنْۢ بَعْدِ مَآ اَصَابَهُمُ الْقَرْحُ ۛ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا مِنْهُمْ وَاتَّقَوْا اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿١٧٢﴾

172. जिन लोगोंने ज़ख़्म खा चुकने के बाद भी अल्लाह और रसूल (ﷺ) के हुक्म पर लब्बैक कहा, उनमें जो साहिबाने एह्सान हैं और परहेज़गार हैं, उनके लिए बड़ा अज्र है।

الَّذِينَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ إِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ إِيمَانًا ۖ وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ ﴿١٧٣﴾

173. (येह) वोह लोग (हैं) जिनसे लोगोंने कहा कि मुख़ालिफ़ लोग तुम्हारे मुक़ाबले के लिए (बड़ी कसरत से) जमा' हो चुके हैं सो उनसे डरो तो (इस बातने) उनके ईमान को और बढ़ा दिया और वोह केहने लगे : हमें अल्लाह काफ़ी है और वोह क्या अच्छा कारसाज़ है।

فَانْقَلَبُوا بِنِعْمَةٍ مِنَ اللَّهِ وَفَضْلٍ لَمْ يَمْسَسْهُمْ سُوءٌ وَاتَّبَعُوا رِضْوَانَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَظِيمٍ ﴿١٧٤﴾

174. फिर वोह (मुसलमान) अल्लाह के इन्आ़म और फ़ज़्ल के साथ वापस पल्टे उन्हें कोई गज़न्द न पहुंची और उन्होंने रज़ाऐ इलाही की पैरवी की, और अल्लाह बड़े फ़ज़्लवाला है।

إِنَّمَا ذَٰلِكُمُ الشَّيْطَانُ يُخَوِّفُ أَوْلِيَاءَهُ فَلَا تَخَافُوهُمْ وَخَافُونِ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١٧٥﴾

175. बेशक येह (मुख़्बिर) शैतान ही है जो (तुम्हें) अपने दोस्तों से धमकाता है, पस उनसे मत डरा करो और मुझ ही से डरा करो अगर तुम मोमिन हो।

وَلَا يَحْزُنْكَ الَّذِينَ يُسَارِعُونَ فِي الْكُفْرِ ۚ إِنَّهُمْ لَنْ يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا ۗ يُرِيدُ اللَّهُ أَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حَظًّا فِي الْآخِرَةِ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٧٦﴾

176. (ऐ ग़मगुसारे आ़लम!) जो लोग कुफ़्र (की मदद करने) में बहुत तेज़ी करते हैं वोह आपको ग़मज़दा न करें, वोह अल्लाह (के दीन) का कुछ नहीं बिगाड़ सक्ते, और अल्लाह चाहता है कि उनके लिए आख़िरत में कोई हिस्सा न रखे, और उनके लिए ज़बरदस्त अ़ज़ाब है।

إِنَّ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الْكُفْرَ بِالْإِيمَانِ لَنْ يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٧٧﴾

177. बेशक जिन्होंने ईमान के बदले कुफ़्र ख़रीद लिया है वोह अल्लाह का कुछ नुक़्सान नहीं कर सक्ते, और उनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّمَا نُمْلِي لَهُمْ خَيْرٌ لِأَنْفُسِهِمْ ۚ إِنَّمَا نُمْلِي لَهُمْ لِيَزْدَادُوا إِثْمًا ۚ وَلَهُمْ

178. और काफ़िर येह गुमान हरगिज़ न करें कि हम जो उन्हें मोहलत दे रहे हैं (येह) उनकी जानों के लिए बेहतर है, हम तो (येह) मोहलत उन्हें सिर्फ़ इस लिए दे रहे हैं कि वोह गुनाह में और बढ़ जाएं और उनके लिए

عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿۱۷۸﴾

(बिल.आख़िर) ज़िल्लत अंगेज़ अज़ाब है।

مَا كَانَ اللّٰهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلٰى مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتّٰى يَمِيْزَ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِيْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۪ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۚ وَاِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَلَكُمْ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۷۹﴾

179. और अल्लाह मुसलमानों को हरगिज़ इस हाल पर नहीं छोड़ेगा जिस पर तुम (इस वक़्त) हो जब तक वोह नापाक को पाकसे जुदा न कर दे, और अल्लाह की येह शान नहीं कि (ऐ आम्मतुन नास!) तुम्हें ग़ैब पर मुत्तला' फ़रमा दे लेकिन अल्लाह अपने रसूलों से जिसे चाहे (ग़ैबके इल्म के लिए) चुन लेता है, सो तुम अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाओ, और अगर तुम ईमान ले आओ और तक़्वा इख़्तियार करो तो तुम्हारे लिए बड़ा सवाब है।

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ؕ سَيُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿۱۸۰﴾

ع ۱۸ ۹

180. और जो लोग उस (मालो दौलत) में से देने में बुख़्ल करते हैं जो अल्लाहने उन्हें अपने फ़ज़्ल से अ़ता किया है वोह हरगिज़ उस बुख़्ल को अपने हक़ में बेहतर ख़याल न करें, बल्कि येह उनके हक़में बुरा है, अ़नक़रीब रोज़े क़ियामत उन्हें (गले में) इस माल का तौक़ पहनाया जाएगा जिस में वोह बुख़्ल करते रहे होंगे, और अल्लाह ही आस्मानों और ज़मीन का वारिस है (या'नी जैसे अब मालिक है ऐसे ही तुम्हारे सबके मर जाने के बाद भी वोही मालिक रहेगा), और अल्लाह तुम्हारे सब कामों से आगाह है।

لَقَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ فَقِيْرٌ وَّنَحْنُ اَغْنِيَآءُ ۘ سَنَكْتُبُ مَا قَالُوْا وَقَتْلَهُمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ وَّنَقُوْلُ ذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿۱۸۱﴾

وقف لازم

181. बेशक अल्लाहने उन लोगोंकी बात सुन ली जो केहते हैं कि अल्लाह मोहताज है और हम ग़नी हैं, अब हम उनकी सारी बातें और उनका अंबिया को नाहक़ क़त्ल करना (भी) लिख रखेंगे और (रोज़े क़ियामत) फ़रमाएंगे कि (अब तुम) जला डालने वाले अज़ाब का मज़ा चखो।

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ وَ اَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿١٨٢﴾

182. येह उन आ'माल का बदला है जो तुम्हारे हाथ खुद आगे भेज चुके हैं और बेशक अल्लाह बंदों पर जुल्म करनेवाला नहीं है।

اَلَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ عَهِدَ اِلَيْنَآ اَلَّا نُؤْمِنَ لِرَسُوْلٍ حَتّٰى يَاْتِيَنَا بِقُرْبَانٍ تَاْكُلُهُ النَّارُ ؕ قُلْ قَدْ جَآءَكُمْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِيْ بِالْبَيِّنٰتِ وَ بِالَّذِيْ قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوْهُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٨٣﴾

183. जो लोग (या'नी यहूद हीला जूई के तौर पर) येह केहते हैं कि अल्लाह ने हमें येह हुक्म भेजा था कि हम किसी पयग़म्बर पर ईमान न लाएं जब तक वोह (अपनी रिसालतके सबूत में) ऐसी कुरबानी न लाए जिसे आग (आ कर) खा जाए, आप (उनसे) फ़रमा दें : बेशक मुझ से पहले बहुत से रसूल वाज़ेह निशानियां ले कर आए और उस निशानी के साथ भी (आए) जो तुम केह रहे हो तो (उसके बा वजूद) तुमने उन्हें शहीद क्यों किया अगर तुम (इत्ने ही) सच्चे हो।

فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ جَآءُوْ بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ﴿١٨٤﴾

184. फिर भी अगर आपको झुटलाएं तो (महूबूब आप रंजीदह ख़ातिर न हों) आपसे पहले भी बहुत से रसूलों को झुटलाया गया जो वाज़ेह निशानियां (या'नी मो'जिज़ात) और सहीफ़े और रौशन किताब ले कर आए थे।

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ؕ وَ اِنَّمَا تُوَفَّوْنَ اُجُوْرَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ؕ وَ مَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿١٨٥﴾

185. हर जान मौत का मज़ा चखने वाली है, और तुम्हारे अज्र पूरे के पूरे तो क़ियामत के दिन ही दिए जाएंगे, पस जो कोई दोज़ख़ से बचा लिया गया और जन्नत में दाख़िल किया गया वोह वाक़िअ़तन कामयाब हो गया, और दुनिया की ज़िन्दगी धोके के माल के सिवा कुछ भी नहीं।

لَتُبْلَوُنَّ فِيْٓ اَمْوَالِكُمْ وَ اَنْفُسِكُمْ ۗ وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَ مِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا اَذًى كَثِيْرًا ؕ وَ اِنْ تَصْبِرُوْا وَ

186. (ऐ मुसलमानो!) तुम्हें ज़रूर बिज़.ज़रूर तुम्हारे अमवाल और तुम्हारी जानोमें आज़माया जाएगा और तुम्हें बहर सूरत उन लोगों से जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई थी और उन लोगों से जो मुशरिक हैं बहुत से अज़िय्यत नाक (ता'ने) सुनने होंगे, और अगर तुम सब्र

تَتَّقُوْا فَاِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ
الْاُمُوْرِ ﴿١٨٦﴾

करते रहो और तक़्वा इख़्तियार किए रखो तो येह बड़ी हिम्मत के कामों से है।

وَ اِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ الَّذِيْنَ
اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَتُبَيِّنُنَّهٗ لِلنَّاسِ
وَلَا تَكْتُمُوْنَهٗ ۫ فَنَبَذُوْهُ وَرَآءَ
ظُهُوْرِهِمْ وَ اشْتَرَوْا بِهٖ ثَمَنًا
قَلِيْلًا ؕ فَبِئْسَ مَا يَشْتَرُوْنَ ﴿١٨٧﴾

187. और जब अल्लाहने उन लोगों से पुख़्ता वा'दा लिया जिन्हें किताब अ़ता की गई थी कि तुम ज़रूर उसे लोगों से साफ़ साफ़ बयान करोगे और (जो कुछ उसमें बयान हुआ है) उसे नहीं छुपाओगे तो उन्हों ने इस अ़हद को पसे पुश्त डाल दिया और उसके बदले थोड़ी सी क़ीमत वसूल कर ली, सो येह उनकी बहुत ही बुरी ख़रीदारी है।

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ
اَتَوْا وَّيُحِبُّوْنَ اَنْ يُّحْمَدُوْا بِمَا لَمْ
يَفْعَلُوْا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِّنَ
الْعَذَابِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٨٨﴾

188. आप ऐसे लोगों को हरगिज़ (नजात पानेवाला) ख़याल न करें जो अपनी कारस्तानियों पर खुश हो रहे हैं और नाकर्दह आ'माल पर भी अपनी ता'रीफ़ के ख़्वाहिश मन्द हैं (दोबारा ताकीद के लिए फ़रमाया) पस आप उन्हें हरगिज़ अ़ज़ाब से नजात पानेवाला न समझें, और उनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।

وَ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ
وَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٨٩﴾

189. और सब आस्मानों और ज़मीन की बादशाही अल्लाह ही के लिए है, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है (सो तुम अपना ध्यान और तवक्कल उसी पर रखो)।

اِنَّ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ
وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَ النَّهَارِ لَاٰيٰتٍ
لِّاُولِی الْاَلْبَابِ ﴿١٩٠﴾

190. बेशक आस्मानों और ज़मीन की तख़्लीक़ में और शबो रोज़ की गर्दिशमें अक़्ले सलीमवालों के लिए (अल्लाहकी कुदरतकी) निशानियां हैं।

الَّذِيْنَ يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا
وَّ عَلٰى جُنُوْبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُوْنَ فِیْ
خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ رَبَّنَا
مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ

191. येह वोह लोग हैं जो (सरापा नियाज़ बन कर) खड़े और (सरापा अदब बन कर) बैठे और (हिज्रमें तड़पते हुए) अपनी करवटों पर (भी) अल्लाह को याद करते रहते हैं और आस्मानों और ज़मीन की तख़्लीक़ (में कारफ़रमा उसकी अ़ज़्मत और हुस्न के जल्वों) में फ़िक्र करते रहते हैं (फिर उसकी मा'रेफ़त से लज़्ज़त आशना हो कर

فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿١٩١﴾

पुकार उठते हैं) ऐ हमारे रब ! तूने येह (सब कुछ) बे हिक्मत और बे तद्बीर नहीं बनाया, तू (सब कोताहियों और मजबूरियों से) पाक है पस हमें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा ले।

رَبَّنَآ اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَيْتَهٗ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿١٩٢﴾

192. ऐ हमारे रब! बेशक तू जिसे दोज़ख़ में डाल दे तो तूने उसे वाक़िअ़तन रुस्वा कर दिया, और ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं है।

رَبَّنَآ اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِيْ لِلْاِيْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا ۖ رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ ۚ ﴿١٩٣﴾

193. ऐ हमारे रब! (हम तुझे भूले हुए थे) सो हमने एक निदा देनेवाले को सुना जो ईमान की निदा दे रहा था कि (लोगो !) अपने रब पर ईमान लाओ तो हम ईमान ले आए। ऐ हमारे रब ! अब हमारे गुनाह बख़्श दे और हमारी ख़ताओं को हमारे (नविश्तए आ'माल) से मह्व फ़रमा दे और हमें नेक लोगों की संगतमें मौत दे।

رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ﴿١٩٤﴾

194. ऐ हमारे रब ! और हमें वोह सब कुछ अ़ता फ़रमा जिसका तूने हम से अपने रसूलों के ज़रीए वा'दा फ़रमाया है, और हमें क़ियामतके दिन रुस्वा न कर, बेशक तू वा'दे के ख़िलाफ़ नहीं करता।

فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ اَنِّيْ لَآ اُضِيْعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى ۚ بَعْضُكُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۚ فَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَاُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاُوْذُوْا فِيْ سَبِيْلِيْ وَقٰتَلُوْا وَقُتِلُوْا لَاُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَ

195. फिर उनके रबने उनकी दुआ़ क़ुबूल फ़रमा ली (और फ़रमाया) यक़ीनन मैं तुममें से किसी मेहनतवाले की मज़दूरी ज़ाए' नहीं करता ख़्वाह मर्द हो या औ़रत, तुम सब एक दूसरेमें से (ही) हो, पस जिन लोगोंने (अल्लाहके लिए) वतन छोड़ दिए और (उसीके बाइ़स) अपने घरों से निकाल दिए गए और मेरी राह में सताए गए और (मेरी ख़ातिर) लड़े और मारे गऐ तो मैं ज़रूर उनके गुनाह उन (के नामए आ'माल) से मिटा दूंगा और

لَاُدْخِلَنَّهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۭ وَ اللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الثَّوَابِ ﴿١٩٥﴾

उन्हें यक़ीनन उन जन्नतों में दाख़िल करूंगा जिनके नीचे नेहरें बेहती होंगी, येह अल्लाह के हुज़ूर से अज्र है, और अल्लाह ही के पास (इससे भी) बेहतर अज्र है।

لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِي الْبِلَادِ ۭ ﴿١٩٦﴾

196. (ऐ अल्लाह के बंदे!) काफ़िरों का शहरों में (ऐशो इशरत के साथ) घूमना फिरना तुझे किसी धोके में न डाल दे।

مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۣ ثُمَّ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۭ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٩٧﴾

197. येह थोड़ी सी (चंद दिनों की) मताअ़ है, फिर उनका ठिकाना दोज़ख़ होगा, और वोह बहुत ही बुरा ठिकाना है।

لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۭ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّلْاَبْرَارِ ﴿١٩٨﴾

198. लेकिन जो लोग अपने रब से डरते रहे उनके लिए बहिश्तें हैं जिनके नीचे नेहरें बेह रही हैं । वोह उनमें हमेशा रेहने वाले हैं, अल्लाह के हां से (उनकी) मेहमानी है और (फिर उसका हरीमे कुर्ब, जल्वए हुस्न और ने'मते विसाल, अल गरज़) जो कुछ भी अल्लाह के पास है वोह नेक लोगों के लिए बहुत ही अच्छा है।

وَاِنَّ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَمَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ خٰشِعِيْنَ لِلّٰهِ ۙ لَا يَشْتَرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۭ اُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿١٩٩﴾

199. और बेशक कुछ एहले किताब ऐसे भी हैं जो अल्लाह पर ईमान रखते हैं और उस किताब पर भी (ईमान लाते हैं) जो तुम्हारी तरफ़ नाज़िल की गई है और जो उनकी तरफ़ नाज़िल की गई और उनके दिल अल्लाह के हुज़ूर झुके रेहते हैं और अल्लाह की आयतों के इवज़ क़लील दाम वसूल नहीं करते, येह वोह लोग हैं जिनका अज्र उनके रब के पास है, बेशक अल्लाह हिसाबमें जल्दी फ़रमानेवाला है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اصْبِرُوْا وَصَابِرُوْا وَرَابِطُوْا ۣ وَاتَّقُوا اللّٰهَ

200. ऐ ईमान वालो! सब्र करो और साबित क़दमीमें (दुश्मन से भी) ज़ियादा मेहनत करो और (जिहादके

لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٢٠٠﴾ ع

लिए) खूब मुस्तइद रहो, और (हमेशा) अल्लाह का तक़्वा क़ाइम रखो ताकि तुम कामयाब हो सको।

आयातुहा 176 | 4 सूरतुन-निसाइ म-दनिय्यतुन 92 | रुकूआतुहा 24

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरू जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِيْ
خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّخَلَقَ
مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا
كَثِيْرًا وَّنِسَآءً ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْ
تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَالْاَرْحَامَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا ﴿١﴾

1. ऐ लोगो! अपने रब से डरो जिसने तुम्हारी पैदाइश (की इब्तिदाअ) एक जान से की फिर उसी से उसका जोड़ पैदा फ़रमाया फिर उन दोनोंमें से बकसरत मर्दों और औरतों (की तख़्लीक़) को फैला दिया, और डरो उस अल्लाह से जिसके वास्ते से तुम एक दूसरे से सवाल करते हो और क़राबतों (में भी तक़्वा इख़्तियार करो), बेशक अल्लाह तुम पर निगहबान है।

وَاٰتُوا الْيَتٰمٰۤى اَمْوَالَهُمْ وَلَا
تَتَبَدَّلُوا الْخَبِيْثَ بِالطَّيِّبِ ۪ وَلَا
تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَهُمْ اِلٰۤى اَمْوَالِكُمْ ؕ
اِنَّهٗ كَانَ حُوْبًا كَبِيْرًا ﴿٢﴾

2. और यतीमों को उनके माल दे दो और बुरी चीज़को उ़मदा चीज़ से न बदला करो और न उनके माल अपने मालों में मिला कर खाया करो, यक़ीनन येह बहुत बड़ा गुनाह है।

وَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تُقْسِطُوْا فِي الْيَتٰمٰى
فَانْكِحُوْا مَا طَابَ لَكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ
مَثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ۚ فَاِنْ خِفْتُمْ
اَلَّا تَعْدِلُوْا فَوَاحِدَةً اَوْ مَا مَلَكَتْ
اَيْمَانُكُمْ ؕ ذٰلِكَ اَدْنٰۤى اَلَّا تَعُوْلُوْا ﴿٣﴾

3. और अगर तुम्हें अंदेशा हो कि तुम यतीम लड़कियों के बारे में इन्साफ़ न कर सकोगे तो उन औ़रतों से निकाह़ करो जो तुम्हारे लिए पसन्दीदह और ह़लाल हों, दो दो और तीन तीन और चार चार (मगर येह इजाज़त बशर्ते अ़द्ल है) फिर अगर तुम्हें अंदेशा हो कि तुम (ज़ाइद बीवियोंमें) अ़द्ल नहीं कर सकोगे तो सिर्फ़ एक ही औ़रत से (निकाह करो) या वोह कनीज़ें जो (शरअ़न) तुम्हारी मिल्किय्यत में आई हों, येह बात उससे क़रीबतर है कि तुमसे ज़ुल्म न हो।

وَاٰتُوا النِّسَآءَ صَدُقٰتِهِنَّ نِحۡلَةً ؕ فَاِنۡ طِبۡنَ لَـكُمۡ عَنۡ شَىۡءٍ مِّنۡهُ نَفۡسًا فَكُلُوۡهُ هَنِيۡٓـــًٔا مَّرِیۡٓـــًٔا ﴿۴﴾

4. और औरतों को उनकी महर खुश दिलीसे अदा किया करो, फिर अगर वोह उस (महर) में से कुछ तुम्हारे लिए अपनी खुशी से छोड़ दें तो तब उसे (अपने लिए) साज़गार और खुशगवार समझ कर खाओ।

وَلَا تُؤۡتُوا السُّفَهَآءَ اَمۡوَالَـكُمُ الَّتِىۡ جَعَلَ اللّٰهُ لَـكُمۡ قِيٰمًا وَّارۡزُقُوۡهُمۡ فِيۡهَا وَاكۡسُوۡهُمۡ وَقُوۡلُوۡا لَهُمۡ قَوۡلًا مَّعۡرُوۡفًا ﴿۵﴾

5. और तुम बे समझों को अपने (या उनके) माल सुपुर्द न करो जिन्हें अल्लाहने तुम्हारी मईशत की उस्तुवारी का सबब बनाया है । हां उन्हें उसमें से खिलाते रहो और पहनाते रहो और उनसे भलाई की बात किया करो।

وَابۡتَلُوا الۡيَتٰمٰى حَتّٰۤى اِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ ۚ فَاِنۡ اٰنَسۡتُمۡ مِّنۡهُمۡ رُشۡدًا فَادۡفَعُوۡۤا اِلَيۡهِمۡ اَمۡوَالَهُمۡ ۚ وَلَا تَاۡكُلُوۡهَاۤ اِسۡرَافًا وَّبِدَارًا اَنۡ يَّكۡبَرُوۡا ؕ وَمَنۡ كَانَ غَنِيًّا فَلۡيَسۡتَعۡفِفۡ ۚ وَمَنۡ كَانَ فَقِيۡرًا فَلۡيَاۡكُلۡ بِالۡمَعۡرُوۡفِ ؕ فَاِذَا دَفَعۡتُمۡ اِلَيۡهِمۡ اَمۡوَالَهُمۡ فَاَشۡهِدُوۡا عَلَيۡهِمۡ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيۡبًا ﴿۶﴾

6. और यतीमों की (तरबियतन) जांच और आज़माइश करते रहो यहां तक कि निकाह् (की उ़म्र) को पहुंच जाएं फिर अगर तुम उनमें होशियारी (और हुस्ने तदबीर) देख लो तो उनके माल उनके ह़वाले कर दो, और उनके माल फ़ुजूल ख़र्ची और जल्दबाज़ी में (इस अंदेशे से) न खा डालो कि वोह बड़े हो कर (वापस ले) जाएंगे, और जो कोई ख़ुशहा़ल हो वोह (माले यतीम से) बिल्कुल बचा रहे और जो खुद नादार हो उसे (सिर्फ़) मुनासिब ह़द तक खाना चाहिए, और जब तुम उनके माल उनके सुपुर्द करने लगो तो उन पर गवाह बना लिया करो, और ह़िसाब लेनेवाला अल्लाह ही काफ़ी है।

لِلرِّجَالِ نَصِيۡبٌ مِّمَّا تَرَكَ الۡوَالِدٰنِ وَالۡاَقۡرَبُوۡنَ ۖ وَلِلنِّسَآءِ نَصِيۡبٌ مِّمَّا تَرَكَ الۡوَالِدٰنِ وَالۡاَقۡرَبُوۡنَ مِمَّا قَلَّ مِنۡهُ اَوۡ كَثُرَ ؕ نَصِيۡبًا مَّفۡرُوۡضًا ﴿۷﴾

7. मर्दों के लिए उस (माल) में से ह़िस्सा है जो मां बाप और क़रीबी रिश्तेदारोंने छोड़ा हो और औरतों के लिए (भी) मां बाप और क़रीबी रिश्तेदारों के तर्केमें से ह़िस्सा है। वोह तर्का थोड़ा हो या ज़ियादा (अल्लाहका) मुक़र्रर कर्दह ह़िस्सा है।

وَاِذَا حَضَرَ الۡقِسۡمَةَ اُولُوا الۡقُرۡبٰى

8. और अगर तक़्सीमे (विरासत) के मौक़े' पर (ग़ैर

وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنُ فَارْزُقُوْهُمْ مِّنْهُ وَقُوْلُوْا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ﴿٨﴾ وَلْيَخْشَ الَّذِيْنَ لَوْ تَرَكُوْا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً ضِعٰفًا خَافُوْا عَلَيْهِمْ ۖ فَلْيَتَّقُوا اللّٰهَ وَلْيَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ﴿٩﴾

वारिस) रिश्तेदार और यतीम और मोहूताज मौजूद हों तो उसमें से कुछ उन्हें भी दे दो और उनसे नेक बात कहो।

9. और (यतीमों से मुआमला करने वाले) लोगों को डरना चाहिए कि अगर वोह अपने पीछे ना तवां बच्चे छोड़ जाते तो (मरते वक़्त) उन बच्चोंके ह़ाल पर (कितने) ख़ौफ़ज़दा (और फ़िक्रमंद) होते, सो उन्हें (यतीमों के बारे में) अल्लाह से डरते रेहना चाहिए और (उनसे) सीधी बात केहनी चाहिए।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْيَتٰمٰى ظُلْمًا اِنَّمَا يَاْكُلُوْنَ فِيْ بُطُوْنِهِمْ نَارًا ؕ وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيْرًا ﴿١٠﴾

10. बेशक जो लोग यतीमोंके माल नाह़क़ तरीक़े से खाते हैं वोह अपने पेटोंमें निरी आग भरते हैं, और वोह जल्द ही दहकती हुई आग में जा गिरेंगे।

يُوْصِيْكُمُ اللّٰهُ فِيْٓ اَوْلَادِكُمْ ۗ لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْاُنْثَيَيْنِ ۚ فَاِنْ كُنَّ نِسَآءً فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ ثُلُثَا مَا تَرَكَ ۚ وَاِنْ كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا النِّصْفُ ؕ وَلِاَبَوَيْهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ اِنْ كَانَ لَهٗ وَلَدٌ ۚ فَاِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلَدٌ وَّوَرِثَهٗٓ اَبَوٰهُ فَلِاُمِّهِ الثُّلُثُ ۚ فَاِنْ كَانَ لَهٗٓ اِخْوَةٌ فَلِاُمِّهِ السُّدُسُ مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصِيْ بِهَآ اَوْ دَيْنٍ ؕ اٰبَآؤُكُمْ وَاَبْنَآؤُكُمْ لَا

11. अल्लाह तुम्हें तुम्हारी औलाद (की विरासत) के बारे में हुक्म देता है कि लड़के के लिए दो लड़कियों के बराबर हिस्सा है, फिर अगर सिर्फ़ लड़कियां ही हों (दो या) दो से ज़ाइद तो उनके लिए उस तर्के का दो तिहाई ह़िस्सा है, और अगर वोह अकेली हो तो उसके लिए आधा है, और मूरिस के मां बाप के लिए उन दोनों में से हर एक को तर्के का छठ्ठा ह़िस्सा (मिलेगा) बशर्ते कि मूरिस की कोई औलाद हो, फिर अगर उस मैयत (मूरिस) की कोई औलाद न हो और उसके वारिस सिर्फ़ उसके मां बाप हों तो उसकी मां के लिए तिहाई है (और बाक़ी सब बापका ह़िस्सा है), फिर अगर मूरिसके भाई बहन हों तो उसकी मां के लिए छठ्ठा हिस्सा है (येह तक़्सीम) उस वसिय्यत (के पूरा करने) के बाद जो उसने की हो या क़र्ज़ (की अदाएगी) के बाद (होगी), तुम्हारे बाप और तुम्हारे

تَدْرُوْنَ اَيُّهُمْ اَقْرَبُ لَكُمْ نَفْعًا ۭ
فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ
عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١١﴾

बेटे तुम्हें मा'लूम नहीं कि फ़ायदा पहुंचाने में उनमें से कौन तुम्हारे क़रीबतर है, येह(तक़्सीम) अल्लाह की तरफ़ से फ़रीज़ा (या'नी मुक़र्रर) है, बेशक अल्लाह खूब जाननेवाला बड़ी हिक्मतवाला है।

وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ اَزْوَاجُكُمْ
اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهُنَّ وَلَدٌ ۚ فَاِنْ كَانَ
لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمُ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْنَ
مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصِيْنَ بِهَآ
اَوْ دَيْنٍ ۭ وَلَهُنَّ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْتُمْ
اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّكُمْ وَلَدٌ ۚ فَاِنْ كَانَ
لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ الثُّمُنُ مِمَّا تَرَكْتُمْ
مِّنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ تُوْصُوْنَ بِهَآ
اَوْ دَيْنٍ ۭ وَاِنْ كَانَ رَجُلٌ يُّوْرَثُ
كَلٰلَةً اَوِ امْرَاَةٌ وَّلَهٗٓ اَخٌ اَوْ اُخْتٌ
فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ ۚ
فَاِنْ كَانُوْٓا اَكْثَرَ مِنْ ذٰلِكَ فَهُمْ
شُرَكَاۗءُ فِي الثُّلُثِ مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ
يُّوْصٰى بِهَآ اَوْ دَيْنٍ ۙ غَيْرَ مُضَاۗرٍّ ۚ
وَصِيَّةً مِّنَ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ
حَلِيْمٌ ﴿١٢﴾ ط

12. और तुम्हारे लिए उस (माल) का आधा हिस्सा है जो तुम्हारी बीवियां छोड़ जाएं बशर्ते कि उनकी कोई औलाद न हो, फिर अगर उनकी कोई औलाद हो तो तुम्हारे लिए उनके तर्केसे चौथाई है (येह भी) उस वसिय्यत (के पूरा करने) के बाद जो उन्होंने की हो या क़र्ज़ (की अदाएगी) के बाद, और तुम्हारी बीवियों का तुम्हारे छोड़े हुऐ (माल) में से चौथा हिस्सा है बशर्तेकि तुम्हारी कोई औलाद न हो, फिर अगर तुम्हारी कोई औलाद हो तो उनके लिए तुम्हारे तर्केमें से आठवाँ हिस्सा है तुम्हारी उस (माल) की निस्बत की हुई वसिय्यत (पूरी करने) या (तुम्हारे) क़र्ज़ की अदाएगी के बाद, और अगर किसी ऐसे मर्द या औ़रत की विरासत तक़्सीम की जा रही हो जिसके न मां बाप हों न कोई औलाद और उसका (मां की तरफ़से) एक भाई या एक बहन हो (या'नी अख़्याफ़ी भाई या बहन) तो उन दोनों में से हर एक के लिए छठ्ठा हिस्सा है, फिर अगर वोह भाई बहन एक से ज़ियादा हों तो सब एक तिहाई में शरीक होंगे (येह तक़्सीम भी) उस वसिय्यत के बाद (होगी) जो (वारिसों को) नुक़्सान पहुंचाए बिग़ैर की गई हो या क़र्ज़ (की अदाएगी) के बाद, येह अल्लाह की तरफ़ से हुक्म है, और अल्लाह खूब इल्मो हिल्मवाला है।

تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ۭ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ

13. येह अल्लाह की (मुक़र्रर कर्दह) हदें हैं, और जो

وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿۱۳﴾

कोई अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की फ़रमां बरदारी करे उसे वोह बहिश्तों में दाख़िल फ़रमाएगा जिनके नीचे नेहरें रवां हैं उनमें हमेशा रहेंगे और येह बड़ी कामयाबी है।

وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَتَعَدَّ حُدُوْدَهٗ يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيْهَا ۪ وَلَهٗ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿۱۴﴾

14. और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की नाफ़रमानी करे और उसकी हुदूद से तजावुज़ करे उसे वोह दोज़ख़में दाख़िल करेगा जिसमें वोह हमेशा रहेगा और उसके लिए ज़िल्लत अंगेज़ अज़ाब है।

وَالّٰتِيْ يَاْتِيْنَ الْفَاحِشَةَ مِنْ نِّسَآئِكُمْ فَاسْتَشْهِدُوْا عَلَيْهِنَّ اَرْبَعَةً مِّنْكُمْ ۚ فَاِنْ شَهِدُوْا فَاَمْسِكُوْهُنَّ فِي الْبُيُوْتِ حَتّٰى يَتَوَفّٰىهُنَّ الْمَوْتُ اَوْ يَجْعَلَ اللّٰهُ لَهُنَّ سَبِيْلًا ﴿۱۵﴾

15. और तुम्हारी औरतों में से जो भी कोई बदकारी का इर्तिकाब कर बैठें तो उन पर अपने लोगों में से चार मर्दों की गवाही तलब करो, फिर अगर वोह गवाही दे दें तो उन औरतों को घरों में बंद कर दो यहां तक कि मौत उन के अ़र्सए हयात को पूरा कर दे या अल्लाह उनके लिए कोई राह (या'नी नया हुक्म) मुक़र्रर फ़रमा दे।

وَالَّذٰنِ يَاْتِيٰنِهَا مِنْكُمْ فَاٰذُوْهُمَا ۚ فَاِنْ تَابَا وَاَصْلَحَا فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿۱۶﴾

16. और तुम में से जो भी कोई बदकारी का इर्तिकाब करें तो उन दोनों को ईज़ा पहुंचाओ, फिर अगर वोह तौबा कर लें और (अपनी) इस्लाह़ कर लें तो उन्हें सज़ा देने से गुरेज़ करो, बेशक अल्लाह बड़ा तौबा क़ुबूल फ़रमानेवाला महरबान है।

اِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللّٰهِ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوْبُوْنَ مِنْ قَرِيْبٍ فَاُولٰٓئِكَ يَتُوْبُ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۱۷﴾

17. अल्लाह ने सिर्फ़ उन्हीं लोगों की तौबा क़ुबूल करने का वा'दा फ़रमाया है जो नादानी के बाइस बुराई कर बैठें फिर जल्द ही तौबा कर लें पस अल्लाह ऐसे लोगों पर अपनी रह़मत के साथ रुजूअ़ फ़रमाएगा, और अल्लाह बड़े इ़ल्म बड़ी हिक्मतवाला है।

وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ

18. और ऐसे लोगों के लिए तौबा (की क़ुबूलियत) नहीं

السَّيِّاٰتِ ۚ حَتّٰۤى اِذَا حَضَرَ اَحَدَهُمُ
الْمَوْتُ قَالَ اِنِّىْ تُبْتُ الْـٰٔنَ وَ لَا
الَّذِيْنَ يَمُوْتُوْنَ وَهُمْ كُفَّارٌ ؕ اُولٰٓئِكَ
اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۱۸﴾

है जो गुनाह करते चले जाएं यहां तक कि उनमें से किसी के सामने मौत आ पहुंचे तो (उस वक़्त) कहे कि मैं अब तौबा करता हूं और न ही ऐसे लोगों के लिए है जो कुफ़्र की हालत पर मरें, उनके लिए हमने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ
تَرِثُوا النِّسَآءَ كَرْهًا ؕ وَ لَا تَعْضُلُوْهُنَّ
لِتَذْهَبُوْا بِبَعْضِ مَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اِلَّاۤ
اَنْ يَّاْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۚ
وَعَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ فَاِنْ
كَرِهْتُمُوْهُنَّ فَعَسٰۤى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا
وَّيَجْعَلَ اللّٰهُ فِيْهِ خَيْرًا كَثِيْرًا ﴿۱۹﴾

19. ऐ ईमानवालो! तुम्हारे लिए येह हलाल नहीं कि तुम ज़बरदस्ती औरतों के वारिस बन जाओ, और उन्हें इस ग़रज़ से न रोक रखो कि जो माल तुमने उन्हें दिया था उस में से कुछ (वापस) ले जाओ सिवाए इसके कि वोह खुली बदकारी की मुर्तकिब हों, और उनके साथ अच्छे तरीक़े से बरताव करो, फिर अगर तुम उन्हें नापसंद करते हो तो मुम्किन है कि तुम किसी चीज़ को नापसंद करो और अल्लाह उस में बहुत सी भलाई रख दे।

وَ اِنْ اَرَدْتُّمُ اسْتِبْدَالَ زَوْجٍ
مَّكَانَ زَوْجٍ ۙ وَّاٰتَيْتُمْ اِحْدٰىهُنَّ
قِنْطَارًا فَلَا تَاْخُذُوْا مِنْهُ شَيْـًٔا ؕ
اَتَاْخُذُوْنَهٗ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿۲۰﴾

20. और अगर तुम एक बीवी के बदले दूसरी बीवी बदलना चाहो और तुम उसे ढेरों माल दे चुके हो तब भी उसमें से कुछ वापस मत लो, क्या तुम नाहक़ इल्ज़ाम और सरीह़ गुनाह के ज़रीए वोह माल (वापस) लेना चाहते हो ?

وَ كَيْفَ تَاْخُذُوْنَهٗ وَقَدْ اَفْضٰى
بَعْضُكُمْ اِلٰى بَعْضٍ وَّاَخَذْنَ مِنْكُمْ
مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ﴿۲۱﴾

21. और तुम उसे कैसे वापस ले सक्ते हो हालांकि तुम एक दूसरे से पेहलू ब पेहलू मिल चुके हो और वोह तुमसे पुख़्ता अ़हद (भी) ले चुकी हैं।

وَ لَا تَنْكِحُوْا مَا نَكَحَ اٰبَآؤُكُمْ مِّنَ
النِّسَآءِ اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ؕ اِنَّهٗ كَانَ

22. और उन औरतों से निकाह न करो जिनसे तुम्हारे बापदादा निकाह कर चुके हों मगर जो (इस हुक्म से

فَاحِشَةً وَّمَقْتًا ؕ وَسَآءَ سَبِيْلًا ﴿٢٢﴾ ع

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ اُمَّهٰتُكُمْ وَبَنٰتُكُمْ وَ
اَخَوٰتُكُمْ وَعَمّٰتُكُمْ وَ خٰلٰتُكُمْ وَبَنٰتُ
الْاَخِ وَبَنٰتُ الْاُخْتِ وَاُمَّهٰتُكُمُ
الّٰتِيْٓ اَرْضَعْنَكُمْ وَاَخَوٰتُكُمْ مِّنَ
الرَّضَاعَةِ وَاُمَّهٰتُ نِسَآئِكُمْ وَ
رَبَآئِبُكُمُ الّٰتِيْ فِيْ حُجُوْرِكُمْ مِّنْ
نِّسَآئِكُمُ الّٰتِيْ دَخَلْتُمْ بِهِنَّ ۫
فَاِنْ لَّمْ تَكُوْنُوْا دَخَلْتُمْ بِهِنَّ
فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ ۫ وَحَلَآئِلُ
اَبْنَآئِكُمُ الَّذِيْنَ مِنْ اَصْلَابِكُمْ ۙ وَ
اَنْ تَجْمَعُوْا بَيْنَ الْاُخْتَيْنِ اِلَّا مَا
قَدْ سَلَفَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا
رَّحِيْمًا ﴿٢٣﴾

पहले) गुज़र चुका (वोह मुआफ़ है), बेशक येह बड़ी बे हयाई और ग़ज़ब (का बाइस), है और बहुत बुरी रविश है।

23. तुम पर तुम्हारी माएं और तुम्हारी बेटियां और तुम्हारी बहनें और तुम्हारी फूफियां और तुम्हारी ख़ालाएं और भतीजियां और भांजियां और तुम्हारी (वोह) माएं जिन्होंने तुम्हें दूध पिलाया हो और तुम्हारी रज़ाअ़त में शरीक बहनें और तुम्हारी बीवियों की माएं (सब) हराम कर दी गई हैं और (इसी तरह) तुम्हारी गोद में परवरिश पानेवाली वोह लड़कियां जो तुम्हारी उन औ़रतों (के बतन) से हैं जिनसे तुम सोहबत कर चुके हो (भी हराम हैं) फिर अगर तुमने उनसे सोहबत न की हो तो तुम पर (उनकी लड़कियों से निकाह़ करने में) कोई हर्ज नहीं और तुम्हारे उन बेटों की बीवियां (भी तुम पर ह़राम हैं) जो तुम्हारी पुश्त से हैं और येह (भी हराम है) कि तुम दो बहनों को एक साथ (निकाह़ में) जमा' करो सिवाए इसके कि जो दौरे जहालत में गुज़र चुका। बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला महरबान है।

وَّالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا
مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۚ كِتٰبَ اللّٰهِ
عَلَيْكُمْ ۚ وَاُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ
اَنْ تَبْتَغُوْا بِاَمْوَالِكُمْ مُّحْصِنِيْنَ
غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ ؕ فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ
بِهٖ مِنْهُنَّ فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ
فَرِيْضَةً ؕ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا
تَرٰضَيْتُمْ بِهٖ مِنْۢ بَعْدِ الْفَرِيْضَةِ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۲۴﴾

24. और शौहरवाली औ़रतें (भी तुम पर ह़राम हैं) सिवाए उन (जंगी क़ैदी औ़रतों) के जो तुम्हारी मिल्कमें आ जाएं, (इन अह्‌कामे हु़र्मत को) अल्लाह तआ़लाने तुम पर फ़र्ज़ कर दिया है, और उनके सिवा (सब औ़रतें) तुम्हारे लिए ह़लाल कर दी गई हैं ताकि तुम अपने अमवाल के ज़रीए़ तलबे निकाह़ करो पाक दामन रेहते हुए न कि शहवत रानी करते हुए, फिर उन में से जिनसे तुमने उस (माल) के इवज़ फ़ायदा उठाया है उन्हें उनका मुक़र्रर शुदह महर अदा कर दो, और तुम पर उस मालके बारे में कोई गुनाह नहीं जिस पर तुम महर मुक़र्रर करने के बाद बाहम रज़ामन्द हो जाओ, बेशक अल्लाह खू़ब जाननेवाला बड़ी ह़िक्मतवाला है।

وَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا اَنْ
يَّنْكِحَ الْمُحْصَنٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ فَمِنْ
مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ فَتَيٰتِكُمُ
الْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِكُمْ ؕ
بَعْضُكُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۚ فَانْكِحُوْهُنَّ
بِاِذْنِ اَهْلِهِنَّ وَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ
بِالْمَعْرُوْفِ مُحْصَنٰتٍ غَيْرَ
مُسٰفِحٰتٍ وَّلَا مُتَّخِذٰتِ اَخْدَانٍ ۚ
فَاِذَاۤ اُحْصِنَّ فَاِنْ اَتَيْنَ بِفَاحِشَةٍ
فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنٰتِ
مِنَ الْعَذَابِ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ

25. और तुममें से जो कोई (इत्नी) इस्तिताअ़त न रखता हो कि आज़ाद मुसलमान औ़रतों से निकाह़ कर सके तो उन मुसलमान कनीज़ों से निकाह कर ले जो (शरअ़न) तुम्हारी मिल्किय्यत में हैं, और अल्लाह तुम्हारे ईमान (की कैफ़िय्यत) को खू़ब जानता है, तुम (सब) एक दूसरे की जिन्स में से ही हो, पस उन (कनीज़ों) से उनके मालिकों की इजाज़त के साथ निकाह़ करो और उन्हें उनके महर ह़स्बे दस्तूर अदा करो दर आं ह़ाली कि वोह (इफ़्फ़त क़ाइम रखते हुए) क़ैदे निकाह़में आनेवाली हों न बदकारी करनेवाली हों और न दर पर्दह आश्नाई करनेवाली हों, पस जब वोह निकाह़ के ह़िसार में आ जाएं फिर अगर बदकारी की मुर्तकिब हों तो उन पर उस सज़ा की आधी सज़ा लाज़िम है जो आज़ाद (कुंवारी) औ़रतों के लिए (मुक़र्रर) है, येह इजाज़त उस शख़्स के लिए है जिसे तुम में से गुनाह (के इर्तिकाब) का अंदेशा हो, और अगर तुम सब्र करो तो (येह) तुम्हारे ह़क़ में

الْعَنَتَ مِنْكُمْ ۚ وَاَنْ تَصْبِرُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٥﴾

बेहतर है, और अल्लाह बख़्शनेवाला महरबान है।

يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَيَهْدِيَكُمْ سُنَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَيَتُوْبَ عَلَيْكُمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٦﴾

26. अल्लाह चाहता है कि तुम्हारे लिए (अपने अह्काम की) वज़ाहत फ़रमा दे और तुम्हें उन (नेक) लोगों की राहों पर चलाए जो तुमसे पहले हो गुज़रे हैं और तुम्हारे ऊपर रह्मत के साथ रुजूअ़ फ़रमाए, और अल्लाह ख़ूब जाननेवाला बड़ी हिक्मतवाला है।

وَاللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْكُمْ ۟ وَيُرِيْدُ الَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الشَّهَوٰتِ اَنْ تَمِيْلُوْا مَيْلًا عَظِيْمًا ﴿٢٧﴾

27. और अल्लाह तुम पर महरबानी फ़रमाना चाहता है, और जो लोग ख़्वाहिशाते (नफ़्सानी) की पैरवी कर रहे हैं वोह चाहते हैं कि तुम राहे रास्तसे भटक कर बहुत दूर जा पड़ो।

يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّخَفِّفَ عَنْكُمْ ۚ وَخُلِقَ الْاِنْسَانُ ضَعِيْفًا ﴿٢٨﴾

28. अल्लाह चाहता है कि तुमसे बोझ हल्का कर दे, और इन्सान कमज़ोर पैदा किया गया है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ ۟ وَلَا تَقْتُلُوْۤا اَنْفُسَكُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا ﴿٢٩﴾

29. ऐ ईमान वालो! तुम एक दूसरे का माल आपस में नाह़क़ तरीक़े से न खाओ सिवाए इसके कि तुम्हारी बाहमी रज़ामंदी से कोई तिजारत हो, और अपनी जानों को मत हलाक करो, बेशक अल्लाह तुम पर महरबान है।

وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ عُدْوَانًا وَّظُلْمًا فَسَوْفَ نُصْلِيْهِ نَارًا ۗ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿٣٠﴾

30. और जो कोई तअ़द्दी और ज़ुल्म से ऐसा करेगा तो हम अ़नक़रीब उसे (दोज़ख़ की) आग में डाल देंगे, और येह अल्लाह पर बिल्कुल आसान है।

اِنْ تَجْتَنِبُوْا كَبٰٓئِرَ مَا تُنْهَوْنَ

31. अगर तुम कबीरह गुनाहों से जिन से तुम्हें रोका गया

عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ
وَنُدْخِلْكُمْ مُّدْخَلًا كَرِيْمًا ﴿۳۱﴾

है बचते रहो तो हम तुम से तुम्हारी छोटी बुराइयां मिटा देंगे और तुम्हें इज़्ज़तवाली जगह में दाख़िल फ़रमा देंगे।

وَلَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللّٰهُ بِهٖ
بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ لِلرِّجَالِ
نَصِيْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبُوْا ؕ وَلِلنِّسَآءِ
نَصِيْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبْنَ ؕ وَسْـَٔلُوا اللّٰهَ
مِنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ
شَیْءٍ عَلِيْمًا ﴿۳۲﴾

32. और तुम उस चीज़ की तमन्ना न किया करो जिसमें अल्लाहने तुममें से बा'ज़ को बा'ज़ पर फ़ज़ीलत दी है, मर्दों के लिए उसमें से हिस्सा है जो उन्होंने कमाया, और औरतों के लिए उसमें से हिस्सा है जो उन्होंने कमाया, और अल्लाहसे उसका फ़ज़्ल माँगा करो, बेशक अल्लाह हर चीज़ को ख़ूब जाननेवाला है।

وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِیَ مِمَّا تَرَكَ
الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ ؕ وَالَّذِيْنَ
عَقَدَتْ اَيْمَانُكُمْ فَاٰتُوْهُمْ
نَصِيْبَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ
شَیْءٍ شَهِيْدًا ﴿۳۳﴾ ع

33. और हमने सबके लिए मां बाप और क़रीबी रिश्तेदारों के छोड़े हुए मालमें हक़्दार (या'नी वारिस) मुक़र्रर कर दिए हैं, और जिनसे तुम्हारा मुआहिदा हो चुका है सो उन्हें उनका हिस्सा दे दो, बेशक अल्लाह हर चीज़ का मुशाहिदा फ़रमानेवाला है।

اَلرِّجَالُ قَوّٰمُوْنَ عَلَى النِّسَآءِ بِمَا
فَضَّلَ اللّٰهُ بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ وَّبِمَآ
اَنْفَقُوْا مِنْ اَمْوَالِهِمْ ؕ فَالصّٰلِحٰتُ
قٰنِتٰتٌ حٰفِظٰتٌ لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ
اللّٰهُ ؕ وَالّٰتِیْ تَخَافُوْنَ نُشُوْزَهُنَّ
فَعِظُوْهُنَّ وَاهْجُرُوْهُنَّ فِی
الْمَضَاجِعِ وَاضْرِبُوْهُنَّ ۚ فَاِنْ

34. मर्द-औरतों पर मुहाफ़िज़ो मुन्तज़िम हैं इस लिए किअल्लाहने उनमें से बा'ज़ को बा'ज़ पर फ़ज़ीलत दी है और इस वजह से (भी) कि मर्द (उन पर) अपने माल ख़र्च करते हैं, पस नेक बीवियां इताअ़त शिआ़र होती हैं शौहरों की अ़दम मौजूदगी में अल्लाह की हिफ़ाज़त के साथ (अपनी इज़्ज़त की) हिफ़ाज़त करनेवाली होती हैं और तुम्हें जिन औरतों की नाफ़रमानी व सरकशी का अंदेशा हो तो उन्हें नसीहत करो और (अगर न समझें तो) उन्हें ख़्वाबगाहों में (खुद से) अ़लाहिदा कर दो और (अगर फिर भी इस्लाह पज़ीर न हों तो) उन्हें (तादीबन

أَطَعْنَكُمْ فَلَا تَبْغُوا عَلَيْهِنَّ سَبِيلًا ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيًّا كَبِيرًا ﴿٣٤﴾

हल्का सा) मारो फिर अगर वोह तुम्हारी फ़रमां बर्दार हो जाएं तो उन के ख़िलाफ़ कोई रास्ता तलाश न करो, बेशक अल्लाह सबसे बुलन्द सबसे बड़ा है।

وَإِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوا حَكَمًا مِّنْ أَهْلِهِ وَحَكَمًا مِّنْ أَهْلِهَا ۚ إِنْ يُرِيدَا إِصْلَاحًا يُوَفِّقِ اللَّهُ بَيْنَهُمَا ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا خَبِيرًا ﴿٣٥﴾

35.और अगर तुम्हें उन दोनों के दरमियान मुख़ालिफ़त का अंदेशा हो तो तुम एक मुन्सिफ़ मर्द के ख़ानदान से और एक मुन्सिफ़ औरत के ख़ानदान से मुक़र्रर कर लो, अगर वोह दोनों (मुन्सिफ़) सुलह कराने का इरादा रखें तो अल्लाह उन दोनों के दरमियान मुवाफ़िक़त पैदा फ़रमा देगा, बेशक अल्लाह ख़ूब जाननेवाला ख़बरदार है।

وَاعْبُدُوا اللَّهَ وَلَا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا ۖ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَبِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينِ وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْبِ وَابْنِ السَّبِيلِ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُورًا ﴿٣٦﴾

36. और तुम अल्लाह की इबादत करो और उसके साथ किसी को शरीक न ठेहराओ और मां बाप के साथ भलाई करो और रिश्तेदारों और यतीमों और मोह्ताजों (से) और नज़दीकी हमसाए और अजनबी पड़ौसी और हम मजलिस और मुसाफ़िर (से), और जिनके तुम मालिक हो चुके हो, (उनसे नेकी किया करो), बेशक अल्लाह उस शख़्स को पसंद नहीं करता जो तकब्बुर करनेवाला (मग़रूर) फ़ख़् करने वाला (ख़ुदबीन) हो।

الَّذِينَ يَبْخَلُونَ وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ وَيَكْتُمُونَ مَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ۗ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُّهِينًا ﴿٣٧﴾

37.जो लोग (ख़ुद भी) बुख़्ल करते हैं और लोगों को (भी) बुख़्ल का हुक्म देते हैं और उस (ने'मत) को छुपाते हैं जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से अ़ता की है, और हमने काफ़िरों के लिए ज़िल्लत अंगेज़ अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।

وَالَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ رِئَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا

38. और जो लोग अपने माल लोगों के दिखावे के लिए ख़र्च करते हैं और न अल्लाह पर ईमान रखते हैं और

न यौमे आख़िरत पर, और शैतान जिसका भी साथी हो गया तो वोह बुरा साथी है।

بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۗ وَمَنْ يَّكُنِ الشَّيْطٰنُ لَهٗ قَرِيْنًا فَسَآءَ قَرِيْنًا ﴿٣٨﴾

39. और उनका क्या नुक़्सान था अगर वोह अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान ले आते और जो कुछ अल्लाहने उन्हें दिया था उसमें से (उसकी राहमें) ख़र्च करते, और अल्लाह उन (के हाल) से ख़ूब वाक़िफ़ है।

وَمَاذَا عَلَيْهِمْ لَوْ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ بِهِمْ عَلِيْمًا ﴿٣٩﴾

40. बेशक अल्लाह ज़र्रा बराबर भी ज़ुल्म नहीं करता, और अगर कोई नेकी हो तो उसे दो गुना कर देता है और अपने पास से बड़ा अज्र अ़ता फ़रमाता है।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۚ وَاِنْ تَكُ حَسَنَةً يُّضٰعِفْهَا وَيُؤْتِ مِنْ لَّدُنْهُ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٤٠﴾

41. फिर उस दिन क्या ह़ाल होगा जब हम हर उम्मतसे एक गवाह लाएंगे और (ऐ ह़बीब!) हम आपको उन सब पर गवाह लाएंगे।

فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ بِشَهِيْدٍ وَّجِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ شَهِيْدًا ﴿٤١﴾

وقف النبی صلی اللہ علیہ وسلم

42. उस दिन वोह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया और रसूल (ﷺ) की नाफ़रमानी की आरज़ू करेंगे कि काश (उन्हें मिट्टीमें दबाकर) उन पर ज़मीन बराबर कर दी जाती, और वोह अल्लाह से कोई बात न छुपा सकेंगे।

يَوْمَئِذٍ يَّوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَعَصَوُا الرَّسُوْلَ لَوْ تُسَوّٰى بِهِمُ الْاَرْضُ ۗ وَلَا يَكْتُمُوْنَ اللّٰهَ حَدِيْثًا ﴿٤٢﴾

ع ٦

43. ऐ ईमानवालो! तुम नशे की ह़ालत में नमाज़ के क़रीब मत जाओ यहां तक कि तुम वोह बात समझने लगो जो केहते हो और न ह़ालते जनाबत में (नमाज़ के क़रीब जाओ) ता आंकि तुम ग़ुस्ल कर लो सिवाए इसके कि तुम सफ़र में हो या रास्ता तय कर रहे हो, और अगर तुम बीमार हो या सफ़र में तुम में से कोई क़ज़ाए ह़ाजत से लौटे या तुम ने (अपनी) औ़रतों से मुबाशिरत की हो फिर तुम पानी न पा सको तो तुम पाक मिट्टी से तयम्मुम कर लो

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْتُمْ سُكٰرٰى حَتّٰى تَعْلَمُوْا مَا تَقُوْلُوْنَ وَلَا جُنُبًا اِلَّا عَابِرِيْ سَبِيْلٍ حَتّٰى تَغْتَسِلُوْا ۗ وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰٓى اَوْ عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَآئِطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوْا

بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيْكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا غَفُوْرًا ﴿۴۳﴾

पस अपने चेहरों और अपने हाथों पर मसह् कर लिया करो, बेशक अल्लाह मुआफ़ फ़रमाने बहुत बख़्शनेवाला है।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يَشْتَرُوْنَ الضَّلٰلَةَ وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ تَضِلُّوا السَّبِيْلَ ﴿۴۴﴾

44. क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें (आस्मानी) किताब का एक हिस्सा अ़ता किया गया वोह गुमराही ख़रीदते हैं और चाहते हैं कि तुम (भी) सीधे रास्ते से बहक जाओ।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاَعْدَآئِكُمْ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَلِيًّا ۙ وَّكَفٰى بِاللّٰهِ نَصِيْرًا ﴿۴۵﴾

45.और अल्लाह तुम्हारे दुश्मनों को ख़ूब जानता है, और अल्लाह (बतौर) कारसाज़ काफ़ी है और अल्लाह (बतौर) मददगार काफ़ी है।

مِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ وَيَقُوْلُوْنَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَاسْمَعْ غَيْرَ مُسْمَعٍ وَّرَاعِنَا لَيًّا بِاَلْسِنَتِهِمْ وَطَعْنًا فِى الدِّيْنِ ؕ وَلَوْ اَنَّهُمْ قَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا وَاسْمَعْ وَانْظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَاَقْوَمَ ۙ وَلٰكِنْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۴۶﴾

46. और कुछ यहूदी (तौरात के) कलिमात को अपने (अस्ल) मुक़ामात से फेर देते हैं और केहते हैं हमने सुन लिया और नहीं माना और (येह भी केहते हैं) सुनिए! (मआ़ज़ल्लाह) आप सुनवाए न जाएं और अपनी ज़बानें मरोड़ कर दीन में ता'ना ज़नी करते हुए "राइना" केहते हैं, और अगर वोह लोग (इसकी जगह) येह केहते कि हमने सुना और हमने इताअ़त की और (हुज़ूर! हमारी गुज़ारिश) सुनिये और हमारी तरफ़ नज़रे (करम) फ़रमाइये तो येह उनके लिए बेहतर होता और (येह क़ौल भी) दुरुस्त और मुनासिब होता, लेकिन अल्लाहने उनके कुफ़्रके बाइस उन पर ला'नत की सो थोड़े लोगों के सिवा वोह ईमान नहीं लाते।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اٰمِنُوْا بِمَا نَزَّلْنَا مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّطْمِسَ وُجُوْهًا فَنَرُدَّهَا عَلٰۤى اَدْبَارِهَاۤ اَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا لَعَنَّاۤ

47. ऐ अहले किताब! इस (किताब) पर ईमान लाओ जो हमने (अब अपने हबीब मुहम्मद ﷺ पर) उतारी है जो उस किताब की (अस्लन) तस्दीक़ करती है जो तुम्हारे पास है, इससे क़ब्ल कि हम (बा'ज़) चेहरों (के नुक़ूश) को मिटा दें और उन्हें उनकी पुश्त की हालत पर फेर दें या उन पर उसी तरह ला'नत करें जैसे हमने हफ़्ते के दिन

اَصْحٰبَ السَّبْتِ ۭ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ﴿٤٧﴾

(नाफ़रमानी करने) वालों पर ला'नत की थी और अल्लाह का हुक्म पूरा हो कर ही रेहता है।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَاۗءُ ۚ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدِ افْتَرٰٓى اِثْمًا عَظِيْمًا ﴿٤٨﴾

48. बेशक अल्लाह इस बातको नहीं बख़्शता कि उसके साथ शिर्क किया जाए और उससे कम तर (जो गुनाह भी हो) जिस के लिए चाहता है बख़्श देता है, और जिसने अल्लाह के साथ शिर्क किया उसने वाक़िअ़तन ज़बरदस्त गुनाह का बोहतान बांधा।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُزَكُّوْنَ اَنْفُسَھُمْ ۭ بَلِ اللّٰهُ يُزَكِّيْ مَنْ يَّشَاۗءُ وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿٤٩﴾

49. क्या आपने ऐसे लोगों को नहीं देखा जो ख़ुदको पाक ज़ाहिर करते हैं, बल्कि अल्लाह ही जिसे चाहता है पाक फ़रमाता है और उन पर एक धागे के बराबर भी ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।

اُنْظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُوْنَ عَلَي اللّٰهِ الْكَذِبَ ۭ وَكَفٰى بِهٖٓ اِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿٥٠﴾

50.- आप देखिये वोह अल्लाह पर कैसे झूटा बोहतान बांधते हैं, और (उनके अ़ज़ाब के लिए येही खुला गुनाह काफ़ी है।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يُؤْمِنُوْنَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوْتِ وَيَقُوْلُوْنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا هٰٓؤُلَاۗءِ اَهْدٰى مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا سَبِيْلًا ﴿٥١﴾

51. क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें (आस्मानी) किताब का हिस्सा दिया गया है (फिर भी) वोह बुतों और शैतान पर ईमान रखते हैं और काफ़िरों के बारे में केहते हैं कि मुसलमानों की निस्बत येह (काफ़िर)ज़ियादा सीधी राह पर हैं।

اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ لَعَنَھُمُ اللّٰهُ ۭ وَمَنْ يَّلْعَنِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ نَصِيْرًا ﴿٥٢﴾ۭ

52. येह वोह लोग हैं जिन पर अल्लाह ने ला'नत की, और जिस पर अल्लाह ला'नत करे तो उसके लिए हरगिज़ कोई मददगार न पाएगा।

اَمْ لَھُمْ نَصِيْبٌ مِّنَ الْمُلْكِ فَاِذًا لَّا يُؤْتُوْنَ النَّاسَ نَقِيْرًا ﴿٥٣﴾ۙ

53. क्या उनका सल्तनत में कुछ हिस्सा है? अगर ऐसा हो तो येह (अपने बुख़्लके बाइस) लोगों को तिल बराबर भी (कोई चीज़) नहीं देंगे।

اَمْ يَحْسُدُوْنَ النَّاسَ عَلٰي مَآ

54. क्या येह (यहूद) लोगों (से उन ने'मतों) पर हसद

اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَقَدْ اٰتَيْنَآ اٰلَ اِبْرٰهِيْمَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَاٰتَيْنٰهُمْ مُّلْكًا عَظِيْمًا ﴿٥٤﴾

करते हैं जो अल्लाहने उन्हें अपने फ़ज़्ल से अ़ता फ़रमाई हैं, सो वाक़ई हमने इब्राहीम (عليه السلام) के ख़ानदान को किताब और हिक्मत अ़ता की और हम ने उन्हें बड़ी सल्तनत बख़्शी।

فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ صَدَّ عَنْهُ ؕ وَكَفٰى بِجَهَنَّمَ سَعِيْرًا ﴿٥٥﴾

55.- पस उनमें से कोई तो उस पर ईमान ले आया और उनमें से किसीने उससे रूगर्दानी की, और (रूगर्दानी करनेवाले के लिए) दोज़ख़ की भड़कती आग काफ़ी है।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا سَوْفَ نُصْلِيْهِمْ نَارًا ؕ كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُوْدُهُمْ بَدَّلْنٰهُمْ جُلُوْدًا غَيْرَهَا لِيَذُوْقُوا الْعَذَابَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿٥٦﴾

56. बेशक जिन लोगोंने हमारी आयतों से कुफ्र किया हम अ़नक़रीब उन्हें (दोज़ख़ की) आगमें झोंक देंगे जब उनकी खालें जल जाएंगी तो हम उन्हें दूसरी खालें बदल देंगे ताकि वोह (मुसल्सल) अ़ज़ाब (का मज़ा) चखते रहें, बेशक अल्लाह ग़ालिब हिक्मतवाला है।

ع

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ لَهُمْ فِيْهَآ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۫ وَّنُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيْلًا ﴿٥٧﴾

57. और जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे तो हम उन्हें बहिश्तों में दाख़िल करेंगे जिन के नीचे नेहरें रवां हैं वोह उन में हमेशा रहेंगे उनके लिए वहां पाकीज़ा बीवियां होंगी और हम उनको बहुत घने साए में दाख़िल करेंगे।

اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُكُمْ اَنْ تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ اِلٰٓى اَهْلِهَا ۙ وَاِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ اَنْ تَحْكُمُوْا بِالْعَدْلِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ بِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ سَمِيْعًا بَصِيْرًا ﴿٥٨﴾

58. बेशक अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतें उन्ही लोगों के सुपुर्द करो जो उनके अहल हैं, और जब तुम लोगों के दरमियान फ़ैसला करो तो अदल के साथ फ़ैसला किया करो, बेशक अल्लाह तुम्हें क्या ही अच्छी नसीहत फ़रमाता है, बेशक अल्लाह ख़ूब सुननेवाला ख़ूब देखनेवाला है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ

59. ऐ ईमान वालो! अल्लाह की इताअ़त करो और रसूल

أَطِيعُوا الرَّسُولَ وَأُولِي الْأَمْرِ مِنكُمْ ۖ فَإِن تَنَازَعْتُمْ فِي شَيْءٍ فَرُدُّوهُ إِلَى اللَّهِ وَالرَّسُولِ إِن كُنتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۚ ذَٰلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا ﴿٥٩﴾

(ﷺ) की इताअ़त करो और अपने में से (अहले हक़्) साहिबाने अम्र की, फिर अगर किसी मस्अलेमें तुम बाहम इख़्तिलाफ़ करो तो उसे (हत्मी फ़ैसले के लिए) अल्लाह और रसूल (ﷺ) की तरफ़ लौटा दो अगर तुम अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान रखते हो, (तो) येही (तुम्हारे हक़् में) बेहतर और अंजाम के लिहाज़ से बहुत अच्छा है।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يَزْعُمُونَ أَنَّهُمْ آمَنُوا بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنزِلَ مِن قَبْلِكَ يُرِيدُونَ أَن يَتَحَاكَمُوا إِلَى الطَّاغُوتِ وَقَدْ أُمِرُوا أَن يَكْفُرُوا بِهِ ۖ وَيُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَن يُضِلَّهُمْ ضَلَالًا بَعِيدًا ﴿٦٠﴾

60. क्या आपने इन (मुनाफ़िक़ों) को नहीं देखा जो (ज़बान से) दा'वा करते हैं कि वोह इस (किताब या'नी कुरआन) पर ईमान लाए जो आपकी तरफ़ उतारा गया और उन (आस्मानी किताबों) पर भी जो आपसे पहले उतारी गईं (मगर) चाहते येह हैं कि अपने मुक़द्दमात (फ़ैसले के लिए) शैतान (या'नी अहकामे इलाही से सरकशी पर मब्नी कानून) की तरफ़ ले जाएं हालांकि उन्हें हुक्म दिया जा चुका है कि इसका (खुला) इन्कार कर दें, और शैतान तो येही चाहता है कि उन्हें दूर दराज़ गुमराही में भटकाता रहे।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَىٰ مَا أَنزَلَ اللَّهُ وَإِلَى الرَّسُولِ رَأَيْتَ الْمُنَافِقِينَ يَصُدُّونَ عَنكَ صُدُودًا ﴿٦١﴾

61. और जब उन से कहा जाता है कि अल्लाह के नाज़िल कर्दह (कुरआन) की तरफ़ और रसूल (ﷺ) की तरफ़ आ जाओ तो आप मुनाफ़िक़ों को देखेंगे कि वोह आप (की तरफ़ रुजूअ करने) से गूरेज़ां रेहते हैं।

فَكَيْفَ إِذَا أَصَابَتْهُم مُّصِيبَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ ثُمَّ جَاءُوكَ يَحْلِفُونَ بِاللَّهِ إِنْ أَرَدْنَا إِلَّا إِحْسَانًا وَتَوْفِيقًا ﴿٦٢﴾

62. फिर (उस वक़्त) उनकी हालत क्या होगी जब अपनी कारस्तानियों के बाइस उन पर कोई मुसीबत आन पड़े तो अल्लाह की क़स्में खाते हुए आपकी ख़िदमतमें हाज़िर हों (और येह कहें) कि हमने तो सिर्फ़ भलाई और बाहमी मुवाफ़िक़त का ही इरादह किया था।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يَعْلَمُ اللَّهُ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَعِظْهُمْ

63. येह वोह (मुनाफ़िक़ और मुफ़्सिद) लोग हैं कि अल्लाह उनके दिलों की हर बात को खूब जानता है, पस

وَقُلْ لَّهُمْ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ قَوْلًا بَلِيْغًا ﴿٦٣﴾

आप उनसे ऐ'राज़ बरतें और उन्हें नसीहत करते रहें और उनसे उनके बारे में मुअस्सर गुफ़्तगू फ़रमाते रहें।

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا لِيُطَاعَ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿٦٤﴾

64. और हमने कोई पयगम्बर नहीं भेजा मगर इस लिए कि अल्लाह के हुक्म से उसकी इताअ़त कि जाए और (ऐ हबीब!) अगर वोह लोग जब अपनी जानों पर ज़ुल्म कर बैठे थे आपकी ख़िदमत में हाज़िर हो जाते और अल्लाह से मुआफ़ी मांगते और रसूल (ﷺ) भी उनके लिए मग़फ़िरत तलब करते तो वोह (इस वसीले और शफ़ाअ़त की बिना पर) ज़रूर अल्लाह को तौबा क़ुबूल फ़रमानेवाला निहायत महरबान पाते।

فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ حَتّٰى يُحَكِّمُوْكَ فِيْمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿٦٥﴾

65. पस (ऐ हबीब!) आपके रबकी क़सम येह लोग मुसलमान नहीं हो सक्ते यहां तक कि वोह अपने दरमियान वाक़े' होने वाले हर इख़्तिलाफ़ में आपको हाकिम बना लें फिर उस फ़ैसले से जो आप सादिर फ़रमा दें अपने दिलों में कोई तंगी न पाएं और (आपके हुक्म को) बखुशी पूरी फ़रमांबरदारी के साथ क़ुबूल कर लें।

وَلَوْ اَنَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ اَنِ اقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ اَوِ اخْرُجُوْا مِنْ دِيَارِكُمْ مَّا فَعَلُوْهُ اِلَّا قَلِيْلٌ مِّنْهُمْ ۚ وَلَوْ اَنَّهُمْ فَعَلُوْا مَا يُوْعَظُوْنَ بِهٖ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَاَشَدَّ تَثْبِيْتًا ﴿٦٦﴾

66. और अगर हम उन पर फ़र्ज़ कर देते कि तुम अपने आपको क़त्ल कर डालो या अपने घरों को छोड़ कर निकल जाओ तो उनमें से बहुत थोड़े लोग उस पर अ़मल करते, और उन्हें जो नसीहत की जाती है अगर वोह उस पर अ़मल पैरा हो जाते तो येह उनके हक़ में बेहतर होता और (ईमान पर) बहुत ज़ियादा साबित क़दम रखनेवाला होता।

وَّاِذًا لَّاٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ لَّدُنَّآ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٦٧﴾

67. और उस वक़्त हम भी उन्हें अपने हुज़ूर से अ़ज़ीम अज्र अ़ता फ़रमाते।

وَّلَهَدَيْنٰهُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿٦٨﴾

68. और हम उन्हें वाक़िअ़तन सीधी राह पर लगा देते।

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ فَاُولٰٓئِكَ

69. और जो कोई अल्लाह और रसूल (ﷺ) की

مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ ۚ وَحَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا ﴿٦٩﴾

इताअ़त करे तो येही लोग (रोज़े क़ियामत) उन (हस्तियों) के साथ होंगे जिन पर अल्लाह ने (ख़ास) इन्आ़म फ़रमाया है जो कि अंबिया, सिद्दीक़ीन, शु-हदा और सालिहीन हैं, और येह बहुत अच्छे साथी हैं।

ذٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللّٰهِ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ عَلِيْمًا ﴿٧٠﴾

70. येह फ़ज़्ल (ख़ास) अल्लाह की तरफ़ से है, और अल्लाह जाननेवाला काफ़ी है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا خُذُوْا حِذْرَكُمْ فَانْفِرُوْا ثُبَاتٍ اَوِ انْفِرُوْا جَمِيْعًا ﴿٧١﴾

71. ऐ ईमानवालो! अपनी हिफ़ाज़त का सामान ले लिया करो फिर (जिहाद के लिए) मुतफ़र्रिक़ जमाअ़तें हो कर निकलो या सब इकठ्ठे हो कर कूच करो।

وَاِنَّ مِنْكُمْ لَمَنْ لَّيُبَطِّئَنَّ ۚ فَاِنْ اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَالَ قَدْ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيَّ اِذْ لَمْ اَكُنْ مَّعَهُمْ شَهِيْدًا ﴿٧٢﴾

72. और यक़ीनन तुम में से बा'ज़ ऐसे भी हैं जो (अ़मदन सुस्ती करते हुऐ) देर लगाते हैं, फिर अगर (जंग में) तुम्हें कोई मुसीबत पहुंचे तो (शरीक न होनेवाला शख़्स) केहता है कि बेशक अल्लाहने मुझ पर एहसान फ़रमाया कि मैं उनके साथ (मैदाने जंग में) हाज़िर न था।

وَلَئِنْ اَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِّنَ اللّٰهِ لَيَقُوْلَنَّ كَاَنْ لَّمْ تَكُنْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهٗ مَوَدَّةٌ يّٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ مَعَهُمْ فَاَفُوْزَ فَوْزًا عَظِيْمًا ﴿٧٣﴾

73. और अगर तुम्हें अल्लाहकी जानिबसे कोई ने'मत नसीब हो जाए तो (फिर) येही (मुनाफ़िक़ अफ़्सोस करते हुए) ज़रूर (यूं) कहेगा गोया तुम्हारे और उसके दरमियान कुछ दोस्ती ही न थी कि ऐ काश! मैं उनके साथ होता तो मैं भी बड़ी कामयाबी हासिल करता।

فَلْيُقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ يَشْرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ۭ وَمَنْ يُّقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيُقْتَلْ اَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٧٤﴾

74. पस उन (मोमिनों)को अल्लाहकी राहमें (दीन की सरबुलंदी के लिए) लड़ना चाहिए जो आख़िरत के इवज़ दुन्यवी ज़िन्दगी को बेच देते हैं, और जो कोई अल्लाहकी राह में जंग करे, ख़्वाह वोह (ख़ुद) क़त्ल हो जाए या ग़ालिब आ जाए तो हम (दोनों सूरतों में) अनक़रीब उसे अ़ज़ीम अज्र अ़ता फ़रमाएंगे।

وَمَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ وَالْوِلْدَانِ الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْ هَٰذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ أَهْلُهَا ۚ وَاجْعَل لَّنَا مِن لَّدُنكَ وَلِيًّا ۚ وَاجْعَل لَّنَا مِن لَّدُنكَ نَصِيرًا ﴿٧٥﴾

75. और (मुसलमानो !) तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह की राह में (मज़्लूमों की आज़ादी के लिए) जंग नहीं करते हालां कि कमजोर, मज़्लूम और मक़्हूर मर्द, औरतें ओर बच्चे (ज़ुल्मो सितम से तंग आ कर अपनी आज़ादी के लिए) पुकारते हैं : ऐ हमारे रब ! हमें उस बस्ती से निकाल ले जहां के (वडेरे) लोग ज़ालिम हैं और किसी को अपनी बारगाह से हमारा कारसाज़ मुक़र्रर फ़रमा दे और किसी को अपनी बारगाह से हमारा मददगार बना दे !

الَّذِينَ آمَنُوا يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ الطَّاغُوتِ فَقَاتِلُوا أَوْلِيَاءَ الشَّيْطَانِ ۖ إِنَّ كَيْدَ الشَّيْطَانِ كَانَ ضَعِيفًا ﴿٧٦﴾

76. जो लोग ईमान लाए वोह अल्लाहकी राह में (नेक मक़ासिद के लिए) जंग करते हैं और जिन्होंने कुफ़्र किया वोह शैतानकी राह में (तागूती मक़ासिद के लिए) जंग करते हैं। पस (ऐ मोमिनो!) तुम शैतान के दोस्तों (या'नी शैतानी मिशनके मददगारों) से लड़ो, बेशक शैतान का दाव कमज़ोर है।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ قِيلَ لَهُمْ كُفُّوا أَيْدِيَكُمْ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ ۚ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ إِذَا فَرِيقٌ مِّنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللَّهِ أَوْ أَشَدَّ خَشْيَةً ۚ وَقَالُوا رَبَّنَا لِمَ كَتَبْتَ عَلَيْنَا الْقِتَالَ ۚ لَوْلَا أَخَّرْتَنَا إِلَىٰ أَجَلٍ قَرِيبٍ ۗ قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيلٌ ۚ وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقَىٰ

77. क्या आपने उन लोगों का हाल नहीं देखा जिन्हें (इब्तिदाअन कुछ अ़र्से के लिए) येह कहा गया कि अपने हाथ (क़िताल से) रोके रखो और नमाज़ क़ाइम किए रहो और ज़कात देते रहो (तो वोह उस पर खुश थे), फिर जब उन पर जिहाद (या'नी कुफ़्र और ज़ुल्म से टकराना) फ़र्ज़ कर दिया गया तो उनमें से एक गिरोह (मुख़ालिफ़) लोगों से (यूं) डरने लगा जैसे अल्लाह ले डरा जाता है या उससे भी बढ़ कर। और केहने लगे : ऐ हमारे रब ! तूने हम पर (इस क़दर जल्दी) जिहाद क्यों फ़र्ज़ कर दिया? तूने हमें मज़ीद थोड़ी मुद्दत तक मोहलत क्यों न दी? आप (उन्हें) फ़रमा दीजिए कि दुनिया का मफ़ाद बहुत थोड़ा (या'नी मा'मूली शै)है और आख़िरत बहुत अच्छी (ने'मत) है उस के लिए जो परहेज़गार बन जाए, वहां एक

وَلَا تُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿٧٧﴾

धागेके बराबर भी तुम्हारी ह़क़ तल्फ़ी नहीं की जाएगी।

اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يُدْرِكْكُّمُ الْمَوْتُ وَ لَوْ كُنْتُمْ فِيْ بُرُوْجٍ مُّشَيَّدَةٍ ۭ وَاِنْ تُصِبْهُمْ حَسَنَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَ اِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِكَ ۭ قُلْ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۭ فَمَالِ هٰٓؤُلَاۗءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ حَدِيْثًا ﴿٧٨﴾

78. (ऐ मौत के डरसे जिहादसे गुरेज़ करने वालो!) तुम जहां कहीं (भी) होगे मौत तुम्हें (वहीं) आ पकडे़गी ख़्वाह तुम मज़बूत क़िल्ओं में (ही) हो, और (उनकी ज़ेहनियत येह है कि) अगर उन्हें कोई भलाई (फ़ायदा) पहुंचे तो केहते हैं कि येह (तो) अल्लाहकी तरफ़ से है (उसमें रसूल ﷺ की बरकत और वास्ते का कोई दख़ल नहीं) और अगर उन्हें कोई बुराई (नुक़्सान) पहुंचे तो केहते हैं : (ऐ रसूल!) येह आपकी तरफ़से (या'नी आपकी वजह से) है । आप फ़रमा दें (ह़क़ीक़तन) सब कुछ अल्लाहकी तरफ़ से (होता) है। पस इस क़ौमको क्या हो गया है कि येह कोई बात समझने के क़रीब ही नहीं आते।

مَآ اَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ۡ وَ مَآ اَصَابَكَ مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنْ نَّفْسِكَ ۭ وَ اَرْسَلْنٰكَ لِلنَّاسِ رَسُوْلًا ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿٧٩﴾

79. (ऐ इन्सान अपनी तरबियत यूं कर के)जब तुझे कोई भलाई पहुंचे तो(समझ के) वोह अल्लाह की तरफ़ से है (उसे अपने हुस्ने तदबीर की तरफ़ मन्सूब न कर) और जब तुझे कोई बुराई पहुंचे तो (समझ के) वोह तेरी अपनी तरफ़ से है (या'नी उसे अपनी ख़राबिए नफ़्स की तरफ़ मन्सूब कर), और (ऐ महबूब!) हमने आपको तमाम इन्सानों के लिए रसूल बना कर भेजा है, और (आपकी रिसालत पर) अल्लाह गवाहीमें काफ़ी है।

مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ۚ وَ مَنْ تَوَلّٰى فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۭ ﴿٨٠﴾

80. जिसने रसूल (ﷺ)का हुक्म माना, बेशक उसने अल्लाह (ही) का हुक्म माना और जिसने रूगर्दानी की तो हम ने आपको उन पर निगहबान बना कर नहीं भेजा।

وَيَقُوْلُوْنَ طَاعَةٌ ۡ فَاِذَا بَرَزُوْا مِنْ عِنْدِكَ بَيَّتَ طَاۗىِٕفَةٌ مِّنْهُمْ غَيْرَ الَّذِيْ تَقُوْلُ ۭ وَاللّٰهُ يَكْتُبُ مَا

81. और (उन मुनाफ़िक़ों का येह ह़ाल है कि आपके सामने) केहते हैं कि(हम ने आपका हुक्म) मान लिया, फिर वोह आपके पाससे (उठ कर) बाहर जाते हैं तो उनमें से एक गिरोह आपकी कही हुई बात के बर अक्स रात को

يُبَيِّتُوْنَ ۚ فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿٨١﴾

राए ज़नी (और साज़िशी मश्वरे) करता है, और अल्लाह (वोह सब कुछ) लिख रहा है जो वोह रात भर मन्सूबे बनाते हैं। पस (ऐ महबूब!) आप उनसे रुख़े अनवर फेर लीजिए, और अल्लाह पर भरोसा रखिए और अल्लाह काफ़ी कारसाज़ है।

اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ ؕ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللّٰهِ لَوَجَدُوْا فِيْهِ اخْتِلَافًا كَثِيْرًا ﴿٨٢﴾

82. तो क्या वोह क़ुर्आन में ग़ौरो फ़िक्र नहीं करते, और अगर येह (क़ुर्आन) ग़ैरे ख़ुदा की तरफ़से (आया) होता तो येह लोग उस में बहुत सा इख़्तिलाफ़ पाते।

وَاِذَا جَآءَهُمْ اَمْرٌ مِّنَ الْاَمْنِ اَوِ الْخَوْفِ اَذَاعُوْا بِهٖ ؕ وَلَوْ رَدُّوْهُ اِلَى الرَّسُوْلِ وَاِلٰٓى اُولِى الْاَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِيْنَ يَسْتَنْۢبِطُوْنَهٗ مِنْهُمْ ؕ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ لَاتَّبَعْتُمُ الشَّيْطٰنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٨٣﴾

83. और जब उनके पास कोई ख़बर अम्न या ख़ौफ़की आती है तो वोह उसे फैला देते हैं और अगर वोह (बजाए शोहरत देने के) उसे रसूल (ﷺ)और अपने में से साहिबाने अम्र की तरफ़ लौटा देते तो ज़रूर उनमें से वोह लोग जो (किसी) बात का नतीजा अख़्ज़ कर सक्ते हैं उस (ख़बर की हक़ीक़त) को जान लेते, अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रह्मत न होती तो यक़ीनन चंद एक के सिवा तुम (सब) शैतान की पैरवी करने लगते।

فَقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ لَا تُكَلَّفُ اِلَّا نَفْسَكَ وَحَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّكُفَّ بَاْسَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ وَاللّٰهُ اَشَدُّ بَاْسًا وَّاَشَدُّ تَنْكِيْلًا ﴿٨٤﴾

84. पस (ऐ महबूब!) आप अल्लाहकी राह में जिहाद कीजिए आपको अपनी जान के सिवा (किसी और के लिए) ज़िम्मेदार नहीं ठेहराया जाएगा और आप मुसलमानों को (जिहादके लिए) उभारें, अ़जब नहीं कि अल्लाह काफ़िरों का जंगी ज़ोर तोड़ दे, और अल्लाह गिरफ़्त में (भी) बहुत सख़्त है और सज़ा देने में (भी) बहुत सख़्त।

مَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَّكُنْ لَّهٗ نَصِيْبٌ مِّنْهَا ۚ وَمَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَّكُنْ لَّهٗ كِفْلٌ مِّنْهَا ؕ وَكَانَ

85. जो शख़्स कोई नेक सिफ़ारिश करे तो उसके लिए उस (के सवाब)से हिस्सा (मुक़र्रर) है, और जो कोई बुरी सिफ़ारिश करे तो उसके लिए उस (के गुनाह) से हिस्सा (मुक़र्रर) है, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।

اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ مُّقِيْتًا ﴿۸۵﴾
وَ اِذَا حُيِّيْتُمْ بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوْا
بِاَحْسَنَ مِنْهَاۤ اَوْ رُدُّوْهَا ؕ اِنَّ
اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ حَسِيْبًا ﴿۸۶﴾
اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ لَيَجْمَعَنَّكُمْ
اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ
وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ حَدِيْثًا ﴿۸۷﴾
فَمَا لَكُمْ فِى الْمُنٰفِقِيْنَ فِئَتَيْنِ وَاللّٰهُ
اَرْكَسَهُمْ بِمَا كَسَبُوْا ؕ اَتُرِيْدُوْنَ
اَنْ تَهْدُوْا مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ؕ وَمَنْ
يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا ﴿۸۸﴾
وَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ كَمَا كَفَرُوْا
فَتَكُوْنُوْنَ سَوَآءً فَلَا تَتَّخِذُوْا
مِنْهُمْ اَوْلِيَآءَ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا فِىْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَخُذُوْهُمْ وَ
اقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ ۠ وَلَا
تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿۸۹﴾
اِلَّا الَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ اِلٰى قَوْمٍۢ بَيْنَكُمْ
وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ اَوْ جَآءُوْكُمْ
حَصِرَتْ صُدُوْرُهُمْ اَنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ

النصف

ع ١١ ٨

86. और जब (किसी लफ़्ज़) सलाम के ज़रीए तुम्हारी तकरीम की जाए तो तुम (जवाब में) उससे बेहतर (लफ़्ज़ के साथ) सलाम पेश किया करो या (कम अज़ कम) वोही (अल्फ़ाज़ जवाब में) लौटा दिया करो । बेशक अल्लाह हर चीज़ पर हिसाब लेने वाला है।

87. अल्लाह है (कि) उसके सिवा कोई लाइक़े इबादत नहीं । वोह तुम्हें ज़रूर क़ियामत के दिन जमा' करेगा जिसमें कोई शक नहीं, और अल्लाह से बात में ज़ियादह सच्चा कौन है।

88. पस तुम्हें क्या हो गया है कि मुनाफ़िक़ों के बारे में तुम दो गिरोह हो गए हो हालांकि अल्लाह ने उनके अपने करतूतों के बाइस उन (की अक़्ल और सोच) को औंधा कर दिया है । क्या तुम उस शख़्स को राहे रास्त पर लाना चाहते हो जिसे अल्लाह ने गुमराह ठेहरा दिया है, और (ऐ मुख़ातिब!) जिसे अल्लाह गुमराह ठेहरा दे तो उसके लिए हरगिज़ कोई राहे (हिदायत) नहीं पा सक्ता।

89. वोह (मुनाफ़िक़ तो) येह तमन्ना करते हैं कि तुम भी कुफ़्र करो जैसे उन्होंने कुफ़्र किया ताकि तुम सब बराबर हो जाओ। सो तुम उनमें से (किसी को दोस्त न बनाओ यहां तक कि वोह अल्लाह की राह में हिजरत (करके अपना ईमान और इख़्लास साबित), करें फ़िर अगर वोह रूगर्दानी करें तो उन्हें पकड़ लो और जहां भी पाओ उन्हें क़त्ल कर डालो और उनमें से (किसी को) दोस्त न बनाओ और न मददगार।

90. मगर उन लोगों को (क़त्ल न करो) जो ऐसी कौम से जा मिले हों कि तुम्हारे और उनके दरमियान मुआहिदए (अमान हो चुका) हो या वोह (हौसला हार कर) तुम्हारे पास इस हाल में आ जाएं कि उनके सीने (इस बात से) तंग आ चुके हों कि वोह तुमसे लड़ें या अपनी क़ौम से

أَوْ يُقَاتِلُوْا قَوْمَهُمْ ۭ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَسَلَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقٰتَلُوْكُمْ ۚ فَاِنِ اعْتَزَلُوْكُمْ فَلَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ وَاَلْقَوْا اِلَيْكُمُ السَّلَمَ ۙ فَمَا جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيْلًا ﴿٩٠﴾

سَتَجِدُوْنَ اٰخَرِيْنَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّاْمَنُوْكُمْ وَيَاْمَنُوْا قَوْمَهُمْ ۭ كُلَّمَا رُدُّوْٓا اِلَى الْفِتْنَةِ اُرْكِسُوْا فِيْهَا ۚ فَاِنْ لَّمْ يَعْتَزِلُوْكُمْ وَيُلْقُوْٓا اِلَيْكُمُ السَّلَمَ وَيَكُفُّوْٓا اَيْدِيَهُمْ فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ ۭ وَاُولٰۗىِٕكُمْ جَعَلْنَا لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿٩١﴾ ع

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ اَنْ يَّقْتُلَ مُؤْمِنًا اِلَّا خَطَــــًٔا ۚ وَمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَــــًٔا فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ وَّدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ اِلٰٓى اَھْلِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يَّصَّدَّقُوْا ۭ فَاِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ عَدُوٍّ لَّكُمْ وَھُوَ مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيْرُ

लड़ें, और अगर अल्लाह चाहता तो (उनके दिलों को हिम्मत देते हुए) यक़ीनन उन्हें तुम पर ग़ालिब कर देता तो वोह तुमसे ज़रूर लड़ते, पस अगर वोह तुमसे कनारा कशी कर लें और तुम्हारे साथ जंग न करें और तुम्हारी तरफ़ सुलह् (का पयग़ाम) भेजें तो अल्लाहने तुम्हारे लिए (भी सुलह जूई की सूरत में) उन पर (दस्त दराज़ी की) कोई राह नहीं बनाई।

91. अब तुम कुछ दूसरे लोगों को भी पाओगे जो चाहते हैं कि(मुनाफ़िक़ाना तरीक़े से ईमान ज़ाहिर करके) तुमसे (भी) अम्न में रहें और (पोशीदह तरीक़ेसे कुफ़्रकी मुवाफ़िक़त कर के) अपनी क़ौम से (भी) अम्न में रहें, (मगर उनकी ह़ालत येह है कि) जब भी (मुसलमानों के ख़िलाफ़) फ़ित्ना अंगेज़ी की तरफ़ फेरे जाते हैं तो वोह उस में (औंधे) कूद पड़ते हैं, सो अगर येह (लोग) तुम से (लड़ने से) कनाराकश न हों और (न ही) तुम्हारी तरह सुलह् (का पयग़ाम) भेजें और (न ही) अपने हाथ (फ़ित्ना अंगेज़ी से) रोकें तो तुम उन्हें पकड़ (कर क़ैद कर) लो और उन्हें क़त्ल कर डालो जहां कहीं भी उन्हें पाओ, और येह वोह लोग हैं जिन पर हमने तुम्हें खुला इख़्तियार दिया है।

92. और किसी मुसलमान के लिए (जाइज़) नहीं कि वोह किसी मुसलमान को क़त्ल कर दे मगर (बिग़ैर क़स्द) ग़लती से, और जिसने किसी मुसलमान को ना दानिस्ता क़त्ल कर दिया तो (उस पर) एक मुसलमान ग़ुलाम / बांदी का आज़ाद करना और ख़ून बहा (का अदा करना) जो मक़्तूल के घरवालों के सुपुर्द किया जाए (लाज़िम है) मगर येह कि वोह मुआफ़ कर दें, फिर अगर वोह (मक़्तूल) तुम्हारी दुश्मन क़ौम से हो और वोह मो'मिन (भी) हो तो (सिर्फ़) एक ग़ुलाम/बांदी का आज़ाद करना (ही लाज़िम) है, और अगर वोह (मक़्तूल)

رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۚ وَ اِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍۢ
بَيْنَكُمْ وَ بَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ فَدِيَةٌ
مُّسَلَّمَةٌ اِلٰٓى اَهْلِهٖ وَ تَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ
مُّؤْمِنَةٍ ۚ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ
شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ ۫ تَوْبَةً مِّنَ
اللّٰهِ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٩٢﴾
وَ مَنْ يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا
فَجَزَآؤُهٗ جَهَنَّمُ خٰلِدًا فِيْهَا وَ
غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ لَعَنَهٗ وَ اَعَدَّ لَهٗ
عَذَابًا عَظِيْمًا ﴿٩٣﴾
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا ضَرَبْتُمْ
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَتَبَيَّنُوْا وَ لَا
تَقُوْلُوْا لِمَنْ اَلْقٰٓى اِلَيْكُمُ السَّلٰمَ
لَسْتَ مُؤْمِنًا ۚ تَبْتَغُوْنَ عَرَضَ
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۫ فَعِنْدَ اللّٰهِ مَغَانِمُ
كَثِيْرَةٌ ؕ كَذٰلِكَ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلُ
فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوْا ؕ اِنَّ
اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿٩٤﴾
لَا يَسْتَوِي الْقٰعِدُوْنَ مِنَ
الْمُؤْمِنِيْنَ غَيْرُ اُولِي الضَّرَرِ وَ
الْمُجٰهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ

उस कौम में से हो कि तुम्हारे और उनके दरमियान (सुलह का) मुआहिदा है तो खून बहा (भी) जो उसके घरवालों के सुपुर्द किया जाए और एक मुसलमान गुलाम /बांदी का आज़ाद करना (भी लाज़िम) हैं। फिर जिस शख़्स को (गुलाम/बांदी)मुयस्सर न हो तो (उस पर) पै दर पै दो महीने के रोज़े (लाज़िम) हैं। अल्लाह की तरफ़से (येह उसकी) तौबा है, और अल्लाह खूब जाननेवाला बड़ी हिक्मतवाला है।

93. और जो शख़्स किसी मुसलमान को क़स्दन क़त्ल करे तो उसकी सज़ा दोज़ख़ है कि मुद्दतों उसमें रहेगा और उस पर अल्लाह ग़ज़बनाक होगा और उस पर ला'नत करेगा और उसने उसके लिए ज़बरदस्त अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।

94 ऐ ईमानवालो! जब तुम अल्लाह की राह में (जिहाद के लिए) सफ़र पर निकलो तो तहक़ीक कर लिया करो और उसको जो तुम्हें सलाम करे येह न कहो कि तू मुसलमान नहीं है, तुम (एक मुसलमान को काफ़िर केह कर मारने के बाद माले ग़नीमत की सूरत में) दुन्यवी ज़िन्दगी का सामान तलाश करते हो तो (यक़ीन करो) अल्लाह के पास बहुत अमवाले गनीमत हैं। इस से पेशतर तुम (भी) तो ऐसे ही थे फिर अल्लाहने तुम पर एहसान किया (और तुम मुसलमान हो गए) पस (दूसरों के बारे में भी) तहक़ीक कर लिया करो। बेशक अल्लाह तुम्हारे कामों से ख़बरदार है।

95. मुसलमानों में से वोह लोग जो (जिहाद से जी चुरा कर) बिग़ैर किसी (उ़ज़्र) तक्लीफ़ के (घरों में) बैठ रहनेवाले हैं और वोह लोग जो अल्लाह की राह में अपने मालों और अपनी जानों से जिहाद करने वाले हैं (येह दोनों दरजा व सवाब में) बराबर नहीं हो सक्ते। अल्लाहने

وَاَنْفُسِهِمْ ؕ فَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ دَرَجَةً ؕ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ؕ وَفَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا ۙ﴿۹۵﴾

अपने मालों और अपनी जानों से जिहाद करनेवालों को बैठ रहनेवालों पर मरतबे में फ़ज़ीलत बख़्शी है और अल्लाहने सब (ईमानवालों) से वा'दा (तो) भलाई का (ही) फ़रमाया है, और अल्लाहने जिहाद करनेवालों को (बहर तौर) बैठ रहनेवालों पर ज़बरदस्त अज्र (व सवाब) की फ़ज़ीलत दी है।

دَرَجٰتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَّرَحْمَةً ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۹۶﴾

96. उसकी तरफ़ से (उनके लिए बहुत) दरजात हैं और बख़्शाइश और रहमत है, और अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला महरबान है।

ع ١٣ ٥ ١٠

اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَفّٰهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ قَالُوْا فِيْمَ كُنْتُمْ ؕ قَالُوْا كُنَّا مُسْتَضْعَفِيْنَ فِي الْاَرْضِ ؕ قَالُوْٓا اَلَمْ تَكُنْ اَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةً فَتُهَاجِرُوْا فِيْهَا ؕ فَاُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ۙ﴿۹۷﴾

97. बेशक जिन लोगों की रूह फ़रिश्ते इस हा़ल में क़ब्ज़ करते हैं कि वोह (इस्लाम दुश्मन माहौल में रेह कर) अपनी जानों पर ज़ुल्म करनेवाले हैं (तो) वोह उनसे दरयाफ़्त करते हैं कि तुम किस हा़ल में थे (तुमने इक़ामते दीन की जद्दो जहद की न सर ज़मीने कुफ्रको छोड़ा)? वोह (मा'ज़ेरतन) केहते हैं कि हम ज़मीन में कमज़ोरो बेबस थे, फ़रिश्ते (जवाबन) केहते हैं क्या अल्लाह की ज़मीन फ़राख न थी कि तुम उसमें (कहीं) हिजरत कर जाते, सो येही वोह लोग हैं जिनका ठिकाना जहन्नम है, और वोह बहुत ही बुरा ठिकाना है।

اِلَّا الْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَآءِ وَالْوِلْدَانِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ حِيْلَةً وَّلَا يَهْتَدُوْنَ سَبِيْلًا ۙ﴿۹۸﴾

98. सिवाए उन वाक़ई मजबूरो बेबस मर्दों और औरतों और बच्चों के, जो न किसी तदबीर पर कु़दरत रखते हैं और न (वहां से निकलने का) कोई रास्ता जानते हैं।

فَاُولٰٓئِكَ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّعْفُوَ عَنْهُمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَفُوًّا غَفُوْرًا ﴿۹۹﴾

99. सो येह वोह लोग हैं कि यक़ीनन अल्लाह उन से दरगुज़र फ़रमाएगा, और अल्लाह बड़ा मुआ़फ़ फ़रमानेवाला बख़्शनेवाला है।

وَمَنْ يُّهَاجِرْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ يَجِدْ فِي الْاَرْضِ مُرٰغَمًا كَثِيْرًا وَّسَعَةً ؕ

100. और जो कोई अल्लाह की राह में घरबार छोड़ कर निकले वोह ज़मीन में (हिजरत के लिए) बहुत सी जगहें

وَمَنْ يَّخْرُجْ مِنْۢ بَيْتِهٖ مُهَاجِرًا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ اَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۱۰۰﴾

और (मआ़श के लिए) कशाइश पाएगा, और जो शख़्स भी अपने घर से अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की तरफ़ हिजरत करते हुए निकले फिर उसे (रास्ते में ही) मौत आ पकड़े तो उसका अज्र अल्लाह के ज़िम्मे साबित हो गया, और अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला महरबान है।

وَاِذَا ضَرَبْتُمْ فِى الْاَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَقْصُرُوْا مِنَ الصَّلٰوةِ ۖ اِنْ خِفْتُمْ اَنْ يَّفْتِنَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ اِنَّ الْكٰفِرِيْنَ كَانُوْا لَكُمْ عَدُوًّا مُّبِيْنًا ﴿۱۰۱﴾

101. और जब तुम ज़मीन में सफ़र करो तो तुम पर कोई गुनाह नहीं कि तुम नमाज़ में कसर करो (या'नी चार रकअ़त फ़र्ज़ की जगह दो पढ़ो) अगर तुम्हें अंदेशा है कि काफ़िर तुम्हें तक्लीफ़ में मुब्तिला कर देंगे । बेशक कुफ़्फ़ार तुम्हारे खुले दुश्मन हैं।

وَاِذَا كُنْتَ فِيْهِمْ فَاَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلٰوةَ فَلْتَقُمْ طَآئِفَةٌ مِّنْهُمْ مَّعَكَ وَلْيَاْخُذُوْٓا اَسْلِحَتَهُمْ ۚ فَاِذَا سَجَدُوْا فَلْيَكُوْنُوْا مِنْ وَّرَآئِكُمْ ۪ وَلْتَاْتِ طَآئِفَةٌ اُخْرٰى لَمْ يُصَلُّوْا فَلْيُصَلُّوْا مَعَكَ وَلْيَاْخُذُوْا حِذْرَهُمْ وَاَسْلِحَتَهُمْ ۚ وَدَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ تَغْفُلُوْنَ عَنْ اَسْلِحَتِكُمْ وَاَمْتِعَتِكُمْ فَيَمِيْلُوْنَ عَلَيْكُمْ مَّيْلَةً وَّاحِدَةً ؕ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ كَانَ بِكُمْ اَذًى مِّنْ مَّطَرٍ اَوْ كُنْتُمْ مَّرْضٰٓى

102. और (ऐ महबूब!) जब आप उन (मुजाहिदों) में (तशरीफ़ फ़रमा) हों तो उनके लिए नमाज़ (की जमाअ़त) क़ाइम करें पस उनमें से एक जमाअ़त को (पहले) आपके साथ इक़्तिदाअन) खड़ा होना चाहिए और उन्हें अपने हथियार भी लिए रहना चाहिएं, फिर जब वोह सजदह कर चुकें तो (हट कर) तुम लोगों के पीछे हो जाएं और (अब) दूसरी जमाअ़त को जिन्हों ने (अभी) नमाज़ नहीं पढ़ी आ जाना चाहिए फिर वोह आपके साथ (मुक़्तदी बन कर) नमाज़ पढ़ें और चाहिए कि वोह (भी बदस्तूर) अपने अस्बाबे हिफ़ाज़त और अपने हथियार लिए रहें, काफ़िर चाहते हैं कि कहीं तुम अपने हथियारों और अपने अस्बाब से ग़ाफ़िल हो जाओ तो वोह तुम पर दफ़्अ़तन ह़मला कर दें, और तुम पर कुछ मुज़ाइक़ा नहीं कि अगर तुम्हें बारिश की वजह से कोई तक्लीफ़ हो या बीमार हो तो अपने हथियार (उतार कर) रख दो, और अपना सामाने हिफ़ाज़त लिए रहो । बेशक अल्लाहने

اَنْ تَضَعُوْٓا اَسْلِحَتَكُمْ ۚ وَخُذُوْا حِذْرَكُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿١٠٢﴾

काफ़िरों के लिए ज़िल्लत अंगेज़ अज़ाब तैयार कर रखा है।

فَاِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلٰوةَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِكُمْ ۚ فَاِذَا اطْمَاْنَنْتُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ۚ اِنَّ الصَّلٰوةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ كِتٰبًا مَّوْقُوْتًا ﴿١٠٣﴾

103. फिर (ऐ मुसलमानो !) जब तुम नमाज़ अदा कर चुको तो अल्लाह को खड़े और बैठे और अपने पहलुओं पर (लेटे हर हालमें) याद करते रहो, फिर जब तुम (हालते ख़ौफ़से निकल कर) इत्मीनान पा लो तो नमाज़ को (हस्बे दस्तूर) क़ाइम करो। बेशक नमाज़ मो'मिनों पर मुक़र्ररह वक़्त के हिसाबसे फ़र्ज़ है।

وَلَا تَهِنُوْا فِى ابْتِغَآءِ الْقَوْمِ ۗ اِنْ تَكُوْنُوْا تَاْلَمُوْنَ فَاِنَّهُمْ يَاْلَمُوْنَ كَمَا تَاْلَمُوْنَ ۚ وَتَرْجُوْنَ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا يَرْجُوْنَ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١٠٤﴾

104. और तुम (दुश्मन) क़ौम की तलाश में सुस्ती न करो। अगर तुम्हें (पीछा करने में) तक्लीफ़ पहुंचती है तो उन्हें भी (तो ऐसी ही) तक्लीफ़ पहुंचती है जैसी तक्लीफ़ तुम्हें पहुंच रही है हालां कि तुम अल्लाह से (अज्रो सवाब की) वोह उम्मीदें रखते हो जो उम्मीदें वोह नहीं रखते। और अल्लाह खूब जानने वाला बड़ी हिक्मतवाला है।

اِنَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ بِمَآ اَرٰىكَ اللّٰهُ ۗ وَلَا تَكُنْ لِّلْخَآئِنِيْنَ خَصِيْمًا ﴿١٠٥﴾

105. (ऐ रसूले गिरामी!) बेशक हमने आप की तरफ़ हक़ पर मब्नी किताब नाज़िल की है ताकि आप लोगों में उस (हक़) के मुताबिक़ फ़ैसला फ़रमाएं जो अल्लाहने आप को दिखाया है, और आप (कभी) बद दयानत लोगों की तरफ़दारी में बहस करनेवाले न बनें।

وَّاسْتَغْفِرِ اللّٰهَ ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٠٦﴾

106. और आप अल्लाहसे बख़्शिश तलब करें, बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला महरबान है।

وَلَا تُجَادِلْ عَنِ الَّذِيْنَ

107. और आप ऐसे लोगों की तरफ़से (दिफ़ाअ़न) न

يَخْتَانُونَ أَنْفُسَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ خَوَّانًا أَثِيمًا ﴿١٠٧﴾

झगड़ें जो अपनी ही जानों से धोका कर रहे हैं। बेशक अल्लाह किसी (ऐसे शख़्स) को पसंद नहीं फ़रमाता जो बड़ा बद दयानत और बदकार है।

يَسْتَخْفُونَ مِنَ النَّاسِ وَلَا يَسْتَخْفُونَ مِنَ اللَّهِ وَهُوَ مَعَهُمْ إِذْ يُبَيِّتُونَ مَا لَا يَرْضَىٰ مِنَ الْقَوْلِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطًا ﴿١٠٨﴾

108. वोह लोगों से (शरमाते हुए अपनी दग़ाबाज़ी को) छुपाते हैं और अल्लाह से नहीं शरमाते दर आं हालीकि वोह उनके साथ होता है जब वोह रात को (किसी) ऐसी बात से मुतअल्लिक़ (छुप कर) मश्वरह करते हैं जिसे अल्लाह ना पसंद फ़रमाता है, और अल्लाह जो कुछ वोह करते हैं (उसे) अहाता किए हुए है।

هَا أَنْتُمْ هَٰؤُلَاءِ جَادَلْتُمْ عَنْهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فَمَنْ يُجَادِلُ اللَّهَ عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَمْ مَنْ يَكُونُ عَلَيْهِمْ وَكِيلًا ﴿١٠٩﴾

109. ख़बरदार! तुम वोह लोग हो जो दुनिया की ज़िन्दगी में उनकी तरफ़से झगड़े। फिर कौन ऐसा शख़्स है जो क़ियामत के दिन (भी) उनकी तरफ़ से अल्लाह के साथ झगड़ेगा या कौन है जो (उस दिन भी) उन पर वकील होगा?

وَمَنْ يَعْمَلْ سُوءًا أَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهُ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللَّهَ يَجِدِ اللَّهَ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿١١٠﴾

110. और जो कोई बुरा काम करे या अपनी जान पर ज़ुल्म करे फिर अल्लाह से बख़्शिश तलब करे वोह अल्लाह को बड़ा बख़्शने वाला निहायत महरबान पाएगा।

وَمَنْ يَكْسِبْ إِثْمًا فَإِنَّمَا يَكْسِبُهُ عَلَىٰ نَفْسِهِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١١١﴾

111. और जो शख़्स कोई गुनाह करे तो बस वोह अपनी ही जान पर (उसका वबाल आइद) कर रहा है, और अल्लाह ख़ूब जाननेवाला बड़ी हिक्मतवाला है।

وَمَنْ يَكْسِبْ خَطِيئَةً أَوْ إِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهِ بَرِيئًا فَقَدِ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُبِينًا ﴿١١٢﴾

112. और जो शख़्स किसी ख़ता या गुनाह का इर्तिकाब करे फिर उसकी तोहमत किसी बे गुनाह पर लगा दे तो उसने यक़ीनन एक बोहतान और खुले गुनाह (के बोझ) को उठा लिया।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهُ

113. और (ऐ हबीब!) अगर आप पर अल्लाह का फ़ज़्ल

لَهَمَّتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ اَنْ يُّضِلُّوْكَ ؕ وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّاۤ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَضُرُّوْنَكَ مِنْ شَيْءٍ ؕ وَاَنْزَلَ اللّٰهُ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ؕ وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا ﴿۱۱۳﴾

और उसकी रह्‌मत न होती तो उन (दग़ाबाजों) में से एक गिरोह येह इरादा कर चुका था कि आप को बेहका दें, जब कि वोह मह्‌ज़ अपने आप को ही गुमराह कर रहे हैं और आप का तो कुछ बिगाड़ ही नहीं सक्ते, और अल्लाह ने आप पर किताब और हिक्मत नाज़िल फ़रमाई है और उसने आप को वोह सब इल्म अ़ता कर दिया है जो आप नहीं जानते थे, और आप पर अल्लाह का बहुत बड़ा फ़ज़्ल है।

لَا خَيْرَ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنْ نَّجْوٰىهُمْ اِلَّا مَنْ اَمَرَ بِصَدَقَةٍ اَوْ مَعْرُوْفٍ اَوْ اِصْلَاحٍۭ بَيْنَ النَّاسِ ؕ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۱۱۴﴾

114. उनके अक्सर खुफ़्या मश्वरों में कोई भलाई नहीं सिवाए उस शख़्स (के मश्वरे) के जो किसी ख़ैरात का या नेक काम का या लोगों में सुल्ह कराने का हुक्म देता है, और जो कोई येह काम अल्लाह की रज़ा जूई के लिए करे तो हम उसको अ़नक़रीब अ़ज़ीम अज्र अ़ता करेंगे।

وَمَنْ يُّشَاقِقِ الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدٰى وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيْلِ الْمُؤْمِنِيْنَ نُوَلِّهٖ مَا تَوَلّٰى وَنُصْلِهٖ جَهَنَّمَ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿۱۱۵﴾ ع

115. और जो शख़्स रसूल (ﷺ) की मुख़ालिफ़त करे इसके बाद कि उस पर हिदायत की राह वाज़ेह हो चुकी और मुसलमानों की राह से जुदा राह की पैरवी करे तो हम उसे उसी (गुमराही) की तरफ़ फेरे रखेंगे जिधर वोह (खुद) फिर गया है और (बिल आख़िर) उसे दोज़ख़ में डालेंगे, और वोह बहुत ही बुरा ठिकाना है।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًاۢ بَعِيْدًا ﴿۱۱۶﴾

116. बेशक अल्लाह इस (बात) को मुआ़फ नहीं करता कि उसके साथ किसी को शरीक ठेहराया जाए और जो (गुनाह) इससे नीचे है जिसके लिए चाहे मुआ़फ़ फ़रमा देता है, और जो कोई अल्लाह के साथ शिर्क करे वोह वाक़ई दूर की गुमराही में भटक गया।

اِنْ يَّدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِلَّاۤ اِنٰثًا ۚ وَ

117. येह (मुशरिकीन) अल्लाह के सिवा मह्‌ज़ ज़नानी

اِنْ يَّدْعُوْنَ اِلَّا شَيْطٰنًا مَّرِيْدًا ۱۱۷

चीज़ों ही की परस्तिश करते हैं और येह फ़क़त सरकश शैतान ही की पूजा करते हैं।

لَّعَنَهُ اللّٰهُ ۘ وَقَالَ لَاَتَّخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا ۱۱۸

وقف لازم

118. जिस पर अल्लाहने ला'नत की है, और जिसने कहा था कि मैं तेरे बंदों में से एक मुअय्यन हिस्सा (अपने लिए) ज़रूर ले लूंगा।

وَّلَاُضِلَّنَّهُمْ وَلَاُمَنِّيَنَّهُمْ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُبَتِّكُنَّ اٰذَانَ الْاَنْعَامِ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلْقَ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يَّتَّخِذِ الشَّيْطٰنَ وَلِيًّا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَقَدْ خَسِرَ خُسْرَانًا مُّبِيْنًا ؕ ۱۱۹

119. मैं उन्हें ज़रूर गुमराह कर दूंगा और ज़रूर उन्हें ग़लत उम्मीदें दिलाऊंगा और उन्हें ज़रूर हुक्म देता रहूंगा सो वोह यक़ीनन जानवरों के कान चीरा करेंगे और मैं उन्हें ज़रूर हुक्म देता रहूंगा सो वोह यक़ीनन अल्लाह की बनाई हुई चीज़ों को बदला करेंगे, और जो कोई अल्लाह को छोड़ कर शैतान को दोस्त बना ले तो वाक़ई वोह सरीह़ नुक़्सान में रहा।

يَعِدُهُمْ وَيُمَنِّيْهِمْ ؕ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ۱۲۰

120. शैतान उन्हें (ग़लत) वा'दे देता है और उन्हें (झूटी) उम्मीदें दिलाता है और शैतान फ़रेब के सिवा उनसे कोई वा'दा नहीं करता।

اُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۫ وَلَا يَجِدُوْنَ عَنْهَا مَحِيْصًا ۱۲۱

121. येह वोह लोग हैं जिनका ठिकाना दोज़ख़ है और वोह वहां से भागने की कोई जगह न पाएंगे।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ؕ وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ قِيْلًا ۱۲۲

122. और जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे हम उन्हें अ़नक़रीब बहिश्तों में दाख़िल करेंगे जिनके नीचे नेहरें बेह रही होंगी वोह उनमें हमेशा हमेशा रहेंगे। (येह) अल्लाह का सच्चा वा'दा है, और अल्लाह से ज़ियादह बात का सच्चा कौन हो सक्ता है?

لَيْسَ بِاَمَانِيِّكُمْ وَلَاۤ اَمَانِيِّ اَهْلِ الْكِتٰبِ ؕ مَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا يُّجْزَ

123. (अल्लाह का वा'दए मग़फ़िरत) न तुम्हारी ख़्वाहिशात पर, मौक़ूफ़ है और न अह्ले किताब की

بِهٖ ۙ وَلَا يَجِدْ لَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿١٢٣﴾

ख़्वाहिशात पर, जो कोई बुरा अ़मल करेगा उसे उसकी सज़ा दी जाएगी और न वोह अल्लाह के सिवा अपना कोई ह़िमायती पाएगा और न मददगार।

وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ مِنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ نَقِيْرًا ﴿١٢٤﴾

124. और जो कोई नेक आ'माल करेगा (ख़्वाह) मर्द हो या औ़रत दर आं ह़ाली कि वोह मो'मिन है पस वोही लोग जन्नत में दाख़िल होंगे और उनकी तिल बराबर (भी) ह़क़ तल्फ़ी नहीं की जाएगी।

وَمَنْ اَحْسَنُ دِيْنًا مِّمَّنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ وَّاتَّبَعَ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ۗ وَاتَّخَذَ اللّٰهُ اِبْرٰهِيْمَ خَلِيْلًا ﴿١٢٥﴾

125. और दीन इख़्तियार करने के ए'तिबार से उस शख़्स से बेहतर कौन हो सकता है जिसने अपना रूए नियाज़ अल्लाह के लिए झुका दिया और वोह साह़िबे एह़सान भी हुवा, और वोह दीने इब्राहीम (عليه السلام) की पैरवी करता रहा जो (अल्लाह के लिए) यकसू (और) रास्त रव थे, और अल्लाह ने इब्राहीम (عليه السلام)को अपना मुख़्लस दोस्त बना लिया था (सो वोह शख़्स भी ह़ज़रत इब्राहीम عليه السلام की निस्बत से अल्लाह का दोस्त हो गया)।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطًا ﴿١٢٦﴾

126. और (सब) अल्लाह ही का है जो कुछ आस्मानों में और जो कुछ ज़मीन में है, और अल्लाह हर चीज़ का अह़ाता फ़रमाए हुए है।

وَيَسْتَفْتُوْنَكَ فِي النِّسَآءِ ۗ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِيْهِنَّ ۙ وَمَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ فِيْ يَتٰمَى النِّسَآءِ الّٰتِيْ لَا تُؤْتُوْنَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَتَرْغَبُوْنَ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الْوِلْدَانِ ۙ وَ

127. और (ऐ पयग़म्बर!) लोग आपसे (यतीम) औ़रतों के बारे में फ़त्वा पूछते हैं। आप फ़रमा दें कि अल्लाह तुम्हें उनके बारे में हुक्म देता है और जो हुक्म तुमको (पहले से) किताबे मजीद में सुनाया जा रहा है (वोह भी) उन यतीम औ़रतों ही के बारे में है जिन्हें तुम वोह (हुक़ूक़) नहीं देते जो उनके लिए मुक़र्रर किए गए हैं और चाहते हो कि (उनका माल क़ब्ज़े में लेने की ख़ातिर) उनके साथ खुद निकाह कर लो और नीज़ बेबस बच्चों के बारे में (भी

أَنْ تَقُومُوا لِلْيَتٰمٰى بِالْقِسْطِ ۚ وَمَا تَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِهٖ عَلِيمًا ﴿١٢٧﴾

हुक्म) है कि यतीमों के मुआ़मले में इन्साफ़ पर क़ाइम रहा करो, और तुम जो भलाई भी करोगे तो बेशक अल्लाह उसे खूब जाननेवाला है।

وَإِنِ امْرَأَةٌ خَافَتْ مِنْ بَعْلِهَا نُشُوزًا أَوْ إِعْرَاضًا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا أَنْ يُصْلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا ۚ وَالصُّلْحُ خَيْرٌ ۚ وَأُحْضِرَتِ الْأَنْفُسُ الشُّحَّ ۚ وَإِنْ تُحْسِنُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ﴿١٢٨﴾

128. और अगर कोई औ़रत अपने शौहर की जानिब से ज़ियादती या बे रग़बती का ख़ौफ़ रखती हो तो दोनों (मियां-बीवी) पर कोई ह़र्ज नहीं कि वोह आपस में किसी मुनासिब बात पर सुलह कर लें, और सुलह (ह़क़ीक़त में) अच्छी चीज़ है और तबीअ़तों में (थोड़ा बहुत) बुख़्ल (ज़रूर) रख दिया गया है, और अगर तुम एह्‌सान करो और परहेज़गारी इख़्तियार करो तो बेशक अल्लाह उन कामों से जो तुम कर रहे हो (अच्छी तरह) ख़बरदार है।

وَلَنْ تَسْتَطِيعُوا أَنْ تَعْدِلُوا بَيْنَ النِّسَاءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيلُوا كُلَّ الْمَيْلِ فَتَذَرُوهَا كَالْمُعَلَّقَةِ ۚ وَإِنْ تُصْلِحُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿١٢٩﴾

129. और तुम हरगिज़ उस बातकी ताक़त नहीं रखते कि (एक से ज़ाइद) बीवियों के दरमियान (पूरा पूरा) अ़द्ल कर सको अगरचे तुम कितना भी चाहो। पस (एक की तरफ़) पूरे मैलाने तबा' के साथ (यूं) न झुक जाओ कि दूसरी को (दरमियान में) लटकती हुई चीज़ की तरह छोड़ दो। और अगर तुम इस्लाह़ कर लो और (ह़क़ तल्फ़ी व ज़ियादती से) बचते रहो तो अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

وَإِنْ يَتَفَرَّقَا يُغْنِ اللّٰهُ كُلًّا مِنْ سَعَتِهٖ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ وَاسِعًا حَكِيمًا ﴿١٣٠﴾

130. और अगर दोनों (मियां बीवी) जुदा हो जाएं तो अल्लाह हर एक को अपनी कशाइश से (एक दूसरे से) बेनियाज़ कर देगा और अल्लाह बड़ी वुस्अ़तवाला बड़ी हिक्मतवाला है।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَإِيَّاكُمْ أَنِ

131. और अल्लाह ही का है जो कुछ आस्मानों में और जो कुछ ज़मीन में है। और बेशक हमने उन लोगों को (भी) जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई हुक्म दिया है और तुम्हें (भी) कि अल्लाह से डरते रहा करो। और अगर तुम ना

اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ وَاِنۡ تَكۡفُرُوۡا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الۡاَرۡضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَنِيًّا حَمِيۡدًا ﴿۱۳۱﴾

फ़रमानी करोगे तो बेशक (सब कुछ) अल्लाह ही का है जो आस्मानों में और जो ज़मीन में है, और अल्लाह बेनियाज़, सुतूदह सिफ़ात है।

وَلِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الۡاَرۡضِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيۡلًا ﴿۱۳۲﴾

132. और अल्लाह ही का है जो आस्मानों में है और जो ज़मीन में है, और अल्लाह का कारसाज़ होना काफ़ी है।

اِنۡ يَّشَاۡ يُذۡهِبۡكُمۡ اَيُّهَا النَّاسُ وَيَاۡتِ بِاٰخَرِيۡنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى ذٰلِكَ قَدِيۡرًا ﴿۱۳۳﴾

133. ऐ लोगो! अगर वोह चाहे तो तुम्हें नाबूद कर दे और (तुम्हारी जगह) दूसरों को ले आए, और अल्लाह इस पर बड़ी कुदरतवाला है।

مَنۡ كَانَ يُرِيۡدُ ثَوَابَ الدُّنۡيَا فَعِنۡدَ اللّٰهِ ثَوَابُ الدُّنۡيَا وَالۡاٰخِرَةِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيۡعًاۢ بَصِيۡرًا ﴿۱۳۴﴾ ع

134. जो कोई दुनिया का इन्आम चाहता है तो अल्लाह के पास दुनिया व आख़िरत (दोनों) का इन्आम है, और अल्लाह ख़ूब सुननेवाला ख़ूब देखनेवाला है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا كُوۡنُوۡا قَوّٰمِيۡنَ بِالۡقِسۡطِ شُهَدَآءَ لِلّٰهِ وَلَوۡ عَلٰٓى اَنۡفُسِكُمۡ اَوِ الۡوَالِدَيۡنِ وَالۡاَقۡرَبِيۡنَ ۚ اِنۡ يَّكُنۡ غَنِيًّا اَوۡ فَقِيۡرًا فَاللّٰهُ اَوۡلٰى بِهِمَا ۖ فَلَا تَتَّبِعُوا الۡهَوٰٓى اَنۡ تَعۡدِلُوۡا ۚ وَاِنۡ تَلۡوٗۤا اَوۡ تُعۡرِضُوۡا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ خَبِيۡرًا ﴿۱۳۵﴾

135. ऐ ईमानवालो! तुम इन्साफ़ पर मज़बूती के साथ क़ाइम रहनेवाले (महज़) अल्लाह के लिए गवाही देनेवाले हो जाओ ख़्वाह (गवाही) खुद तुम्हारे अपने या (तुम्हारे) वालिदैन या (तुम्हारे) रिश्तेदारों के ही ख़िलाफ़ हो, अगरचे (जिसके ख़िलाफ़ गवाही हो) मालदार है या मोहताज, अल्लाह उन दोनों का (तुम से)ज़ियादा ख़ैरख़्वाह है । सो तुम ख़्वाहिशे नफ़्स की पैरवी न किया करो कि अद्ल से हट जाओ (गे) और अगर तुम (गवाही में) पेचदार बात करोगे या (हक़ से) पहलू तही करोगे तो बेशक अल्लाह उन सब कामों से जो तुम कर रहे हो ख़बरदार है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا اٰمِنُوۡا بِاللّٰهِ

136. ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह पर और उसके

وَرَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْ نَزَّلَ عَلٰى
رَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنْ
قَبْلُ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ
وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ
فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًاۢ بَعِيْدًا ﴿١٣٦﴾

रसूल (ﷺ) पर और उस किताब पर जो उसने अपने रसूल (ﷺ)पर नाज़िल फ़रमाई है और उस किताब पर जो उसने (इससे) पहले उतारी थी ईमान लाओ, और जो कोई अल्लाह का और उसके फ़रिश्तों का और उसकी किताबों का और उसके रसूलों का और आख़िरत के दिन का इन्कार करे तो बेशक वोह दूरदराज़ की गुमराही में भटक गया।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ
اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا
لَّمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا
لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيْلًا ؕ ﴿١٣٧﴾

137. बेशक जो लोग ईमान लाए फिर काफ़िर हो गए, फिर ईमान लाए फिर काफ़िर हो गहे फिर कुफ़्र में और बढ़ गए तो अल्लाह हरगिज़ (येह इरादा फ़रमानेवाला) नहीं कि उन्हें बख़्श दे और न (येह कि) उन्हें सीधा रास्ता दिखाए।

بَشِّرِ الْمُنٰفِقِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ عَذَابًا
اَلِيْمًا ۙ ﴿١٣٨﴾

138. (ऐ नबी !) आप मुनाफ़िक़ों को येह ख़बर सुना दें कि उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है।

الَّذِيْنَ يَتَّخِذُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ
اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ
اَيَبْتَغُوْنَ عِنْدَهُمُ الْعِزَّةَ فَاِنَّ
الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ؕ ﴿١٣٩﴾

139. (येह) ऐसे लोग (हैं) जो मुसलमानों की बजाए काफ़िरों को दोस्त बनाते हैं । क्या येह उनके पास इ़ज़्ज़त तलाश करते हैं ? पस इ़ज़्ज़त तो सारी अल्लाह (तआ़ला) के लिए है।

وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ اَنْ
اِذَا سَمِعْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ يُكْفَرُ بِهَا وَ
يُسْتَهْزَاُ بِهَا فَلَا تَقْعُدُوْا مَعَهُمْ
حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖٓ ۖ
اِنَّكُمْ اِذًا مِّثْلُهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ جَامِعُ

140. और बेशक (अल्लाहने) तुम पर किताब में येह (हुक्म) नाज़िल फ़रमाया है कि जब तुम सुनो कि अल्लाह की आयतों का इन्कार किया जा रहा है और उनका मज़ाक़ उड़ाया जा रहा है तो तुम उन लोगों के साथ मत बैठो यहां तक कि वोह (इन्कार और तमस्ख़ुर को छोड़ कर) किसी दूसरी बात में मशग़ूल हो जाएं । वरना तुम भी उन्हीं जैसे हो जाओगे । बेशक अल्लाह मुनाफ़िक़ों और

الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْكٰفِرِيْنَ فِيْ جَهَنَّمَ جَمِيْعًا ۙ﴿١٤٠﴾

काफ़िरों सब को दोज़ख़ में जमा' करनेवाला है।

الَّذِيْنَ يَتَرَبَّصُوْنَ بِكُمْ ۚ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ فَتْحٌ مِّنَ اللّٰهِ قَالُوْٓا اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ۖ وَاِنْ كَانَ لِلْكٰفِرِيْنَ نَصِيْبٌ ۙ قَالُوْٓا اَلَمْ نَسْتَحْوِذْ عَلَيْكُمْ وَنَمْنَعْكُمْ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۭ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ وَلَنْ يَّجْعَلَ اللّٰهُ لِلْكٰفِرِيْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ سَبِيْلًا ﴿١٤١﴾

141. वोह (मुनाफ़िक़) जो तुम्हारी (फ़त्हो शिक्सत की) ताक में रेहते हैं, फिर अगर तुम्हें अल्लाह की तरफ़से फ़त्ह नसीब हो जाए तो केहते हैं : क्या हम तुम्हारे साथ न थे? और अगर काफ़िरों को (ज़ाहिरी फ़त्ह में से) कुछ हिस्सा मिल गया तो (उनसे) केहते हैं : क्या हम तुम पर ग़ालिब नहीं हो गए थे और (इसके बावजूद) क्या हमने तुम्हें मुसलमानों (के हाथों नुक़्सान) से नहीं बचाया? पस अल्लाह तुम्हारे दरमियान क़ियामत के दिन फ़ैसला फ़रमाएगा, और अल्लाह काफ़िरों को मुसलमानों पर (ग़ल्बा पानेकी) हरगिज़ कोई राह न देगा।

اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ ۚ وَاِذَا قَامُوْٓا اِلَى الصَّلٰوةِ قَامُوْا كُسَالٰى ۙ يُرَاۗءُوْنَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٤٢﴾

142. बेशक मुनाफ़िक़ (ब-ज़ो'मे ख़ीश) अल्लाह को धोका देना चाहते हैं हालां कि वोह उन्हें (अपने ही) धोके की सज़ा देनेवाला है, और जब वोह नमाज़के लिए खड़े होते हैं तो सुस्ती के साथ (महज़) लोगों को दिखाने के लिए खड़े होते हैं और अल्लाह को याद (भी) नहीं करते मगर थोड़ा।

مُّذَبْذَبِيْنَ بَيْنَ ذٰلِكَ ڰ لَآ اِلٰى هٰٓؤُلَاۗءِ وَلَآ اِلٰى هٰٓؤُلَاۗءِ ۭ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا ﴿١٤٣﴾

143. इस (कुफ़्र और ईमान) के दरम्यान तज़ब्ज़ुब में हैं न उन (काफ़िरों) की तरफ़ हैं और न उन (मोमिनों) की तरफ़ हैं, और जिसे अल्लाह गुमराह ठेहरा दे तो आप हरगिज़ उसके लिए कोई (हिदायत की) राह न पाएंगे।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَاۗءَ مِنْ دُوْنِ

144. ऐ ईमानवालो ! मुसलमानों के सिवा काफ़िरों को दोस्त न बनाओ, क्या तुम चाहते हो कि (ना फ़रमानों

الْمُؤْمِنِينَ ۚ أَتُرِيدُونَ أَن تَجْعَلُوا لِلَّهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا مُّبِينًا ﴿١٤٤﴾

की दोस्ती के ज़रीए) अपने ख़िलाफ़ अल्लाह की सरीह़ हुज्जत क़ाइम कर लो।

إِنَّ الْمُنَافِقِينَ فِي الدَّرْكِ الْأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ ۚ وَلَن تَجِدَ لَهُمْ نَصِيرًا ﴿١٤٥﴾

145. बेशक मुनाफ़िक लोग दोज़ख़ के सबसे निचले दर्जे में होंगे, और आप उनके लिए हरगिज़ कोई मददगार न पाएंगे।

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَاعْتَصَمُوا بِاللَّهِ وَأَخْلَصُوا دِينَهُمْ لِلَّهِ فَأُولَٰئِكَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ ۖ وَسَوْفَ يُؤْتِ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿١٤٦﴾

146. मगर वोह लोग जिन्होंने तौबा कर ली वोह संवर गए और उन्होंने अल्लाह से मज़्बूत तअ़ल्लुक़ जोड़ लिया और उन्होंने अपना दीन अल्लाह के लिए ख़ालिस कर लिया तो येह मोमिनों की संगत में होंगे, और अ़न क़रीब अल्लाह मो'मिनों को अ़ज़ीम अज्र अ़ता फ़रमाएगा।

مَا يَفْعَلُ اللَّهُ بِعَذَابِكُمْ إِن شَكَرْتُمْ وَآمَنتُمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ شَاكِرًا عَلِيمًا ﴿١٤٧﴾

147. अल्लाह तुम्हें अ़ज़ाब दे कर क्या करेगा अगर तुम शुक्र गुज़ार बन जाओ और ईमान ले आओ, और अल्लाह (हर ह़क़ का) क़द्र शनास है (हर अ़मल का) ख़ूब जाननेवाला है।

الجزء ٦

لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْٓءِ مِنَ الْقَوْلِ اِلَّا مَنْ ظُلِمَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا عَلِيْمًا ﴿۱۴۸﴾

148. अल्लाह किसी (की) बुरी बात का बआवाज़े बुलंद (ज़ाहिरन व ए'लानियतन) केहना पसंद नहीं फ़रमाता सिवाए उसके जिस पर ज़ुल्म हुवा हो (उसे ज़ालिम का ज़ुल्म आशकार करने की इजाज़त है), और अल्लाह ख़ूब सुननेवाला जाननेवाला है।

اِنْ تُبْدُوْا خَيْرًا اَوْ تُخْفُوْهُ اَوْ تَعْفُوْا عَنْ سُوْٓءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا قَدِيْرًا ﴿۱۴۹﴾

149. अगर तुम किसी कारे ख़ैर को ज़ाहिर करो या उसे मुख़्फ़ी रखो या किसी (की) बुराई से दरगुज़र करो तो बेशक अल्लाह बड़ा मुआफ़ फ़रमानेवाला बड़ी क़ुदरतवाला है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّفَرِّقُوْا بَيْنَ اللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَيَقُوْلُوْنَ نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَّنَكْفُرُ بِبَعْضٍ ۙ وَّيُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّتَّخِذُوْا بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ﴿۱۵۰﴾ ۙ

150. बिला शुब्हा जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों के साथ कुफ़्र करते हैं और चाहते हैं कि अल्लाह और उस के रसूलों के दरमियान तफ़रीक़ करें और केहते हैं कि हम बा'ज़ को मानते हैं और बा'ज़ को नहीं मानते और चाहते हैं कि उस (ईमानो कुफ़्र) के दरमियान कोई राह निकाल लें।

اُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ حَقًّا ۚ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿۱۵۱﴾

151. ऐसे ही लोग दर हक़ीक़त काफ़िर हैं, और हमने काफ़िरों के लिए रुस्वा कुन अज़ाब तैयार कर रखा है।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَلَمْ يُفَرِّقُوْا بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ اُولٰٓئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۱۵۲﴾ ع

152. और जो लोग अल्लाह और उसके (सब) रसूलों पर ईमान लाए और उन (पयग़म्बरों) में से किसी के दरमियान (ईमान लाने में) फ़र्क़ न किया तो अनक़रीब वोह उन्हें उनके अज्र अता फ़रमाएगा, और अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

ع ٢١ / ١

يَسْـَٔلُكَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَنْ تُنَزِّلَ عَلَيْهِمْ كِتٰبًا مِّنَ السَّمَآءِ فَقَدْ سَاَلُوْا مُوْسٰٓى اَكْبَرَ مِنْ ذٰلِكَ فَقَالُوْٓا اَرِنَا اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ

153. (ऐ हबीब!) आपसे अहले किताब सवाल करते हैं कि आप उन पर आस्मान से (एक ही दफ़ा पूरी लिखी हुई) कोई किताब उतार लाएं तो वोह मूसा (عليه السلام) से उससे भी बड़ा सवाल कर चुके हैं, उन्होंने कहा था कि हमें अल्लाह (की ज़ात) खुल्लम खुल्ला दिखा दो पस उनके (इस)

بِظُلْمِهِمْ ۚ ثُمَّ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ فَعَفَوْنَا عَنْ ذٰلِكَ ۚ وَاٰتَيْنَا مُوْسٰى سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿۱۵۳﴾

जुल्म (या'नी गुस्ताख़ाना सवाल) की वजह से उन्हें आस्मानी बिजली ने आ पकड़ा (जिसके बाइस वोह मर गए, फिर मूसा (عليه السلام) की दुआ से ज़िन्दा हुए), फिर उन्होंने बछड़े को (अपना मा'बूद) बना लिया, इसके बाद कि उनके पास (हक़ की निशान दही करने वाली) वाज़ेह निशानियां आ चुकी थीं, फिर हमने उस (जुर्म) से भी दरगुज़र किया, और हमने मूसा (عليه السلام)को (उन पर) वाज़ेह ग़ल्बा अ़ता फ़रमाया।

وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّوْرَ بِمِيْثَاقِهِمْ وَقُلْنَا لَهُمُ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُلْنَا لَهُمْ لَا تَعْدُوْا فِي السَّبْتِ وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ﴿۱۵۴﴾

154. और (जब यहूद तौरात के अहकाम से फिर इन्कारी हो गए तो) हमने उनसे (पुख़्ता) अ़हद लेने के लिए (कोहे) तूर को उनके ऊपर उठा (कर मुअ़ल्लक़ कर) दिया, और हमने उनसे फ़रमाया कि तुम (इस शहर के) दरवाज़े (या'नी बाबे ईलियाअ) में सज्दऐ (शुक्र) करते हुऐ दाख़िल होना, और हमने उनसे (मज़ीद) फ़रमाया कि हफ़्ते के दिन (मछली के शिकार की मुमानिअ़त के हुक्म) में भी तजावुज़ न करना, और हमने उनसे बड़ा ताकीदी अ़हद लिया था।

فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ وَكُفْرِهِمْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَقَتْلِهِمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَّقَوْلِهِمْ قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ؕ بَلْ طَبَعَ اللّٰهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۱۵۵﴾

155. पस (उन्हें जो सज़ाऐं मिलीं वोह) उनकी अपनी अ़हद शिकनी पर और आयाते इलाही से इन्कार (के सबब) और अंबिया को उनके ना हक़ क़त्ल कर डालने (के बाइस) नीज़ उनकी उस बात (के सबब) से कि हमारे दिलों पर ग़िलाफ़ (चढ़े हुए) हैं, हक़ीक़त में ऐसा न था) बल्कि अल्लाह ने उनके कुफ़्र के बाइस उनके दिलों पर मुहर लगा दी है, सो वोह चंद एक के सिवा ईमान नहीं लाएंगे।

وَّبِكُفْرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلٰى مَرْيَمَ بُهْتَانًا عَظِيْمًا ۙ ﴿۱۵۶﴾

156. और (मज़ीद येह कि) उनके (उस) कुफ़्र और क़ौल के बाइस जो उन्हों ने मरयम (عليها السلام) पर ज़बरदस्त बोहतान लगाया।

وَّقَوْلِهِمْ اِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيْحَ عِيْسَى

157. और उनके इस केहने (या'नी फ़खूरिया दा'वे) की

ابْنَ مَرْيَمَ رَسُوْلَ اللّٰهِ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ
وَمَا صَلَبُوْهُ وَلٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ ۭ وَ
اِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِيْهِ لَفِيْ شَكٍّ
مِّنْهُ ۭ مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ اِلَّا اتِّبَاعَ
الظَّنِّ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ يَقِيْنًا ۙ﴿۱۵۷﴾

वजह से (भी)कि हमने अल्लाह के रसूल, मरयम के बेटे ईसा मसीह़ को क़त्ल कर डाला है, हालांकि उन्हों ने न उनको क़त्ल किया और न उन्हें सूली चढ़ाया मगर (हुआ येह कि) उनके लिए (किसी को ईसा عليه السلام का) हम शक्ल बना दिया गया, और बेशक जो लोग उनके बारे में इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं वोह यक़ीनन उस (क़त्ल के ह़वाले) से शक में पड़े हुए हैं, उन्हें (ह़क़ीक़ते हाल का) कुछ भी इल्म नहीं मगर येह कि गुमान की पैरवी (कर रहे हैं), और उन्होंने ईसा (عليه السلام) को यक़ीनन क़त्ल नहीं किया।

بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ
عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿۱۵۸﴾

158. बल्कि अल्लाहने उन्हें अपनी तरफ़ (आस्मान पर) उठा लिया, और अल्लाह ग़ालिब ह़िक्मतवाला है।

وَ اِنْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اِلَّا
لَيُؤْمِنَنَّ بِهٖ قَبْلَ مَوْتِهٖ ۚ وَ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ يَكُوْنُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا ۚ﴿۱۵۹﴾

159. और (क़ुर्बे क़ियामत नुज़ूले मसीह़ عليه السلام के वक़्त) अहले किताब में से कोई (फ़र्द या फ़िरक़ा) न रहेगा मगर वोह ईसा (عليه السلام) पर उनकी मौत से पहले ज़रूर(सह़ीह़ तरीक़ेसे) ईमान ले आएगा, और क़ियामत के दिन ईसा (عليه السلام) उन पर गवाह होंगे।

فَبِظُلْمٍ مِّنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا
عَلَيْهِمْ طَيِّبٰتٍ اُحِلَّتْ لَهُمْ وَ
بِصَدِّهِمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَثِيْرًا ۙ﴿۱۶۰﴾

160. फिर यहूदियों के ज़ुल्म ही की वजह से हमने उन पर (कई) पाकीज़ा चीज़ें ह़राम कर दीं जो (पहले) उनके लिए ह़लाल की जा चुकी थीं, और इस वजह से (भी) कि वोह (लोगों को) अल्लाह की राह से बकसरत रोकते थे।

وَّ اَخْذِهِمُ الرِّبٰوا وَقَدْ نُهُوْا عَنْهُ
وَ اَكْلِهِمْ اَمْوَالَ النَّاسِ
بِالْبَاطِلِ ۭ وَ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ
مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۱۶۱﴾

161. और उनके सूद लेने के सबब से, हालांकि वोह उससे रोके गए थे, और उनके लोगों का ना ह़क़ माल खाने की वजहसे (भी उन्हें सज़ा मिली), और हमने उनमें से काफ़िरों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।

لٰكِنِ الرّٰسِخُوْنَ فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُوْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَالْمُقِيْمِيْنَ الصَّلٰوةَ وَالْمُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ اُولٰٓئِكَ سَنُؤْتِيْهِمْ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿١٦٢﴾

162. लेकिन उनमें से पुख़्ता इल्मवाले और मो'मिन लोग इस (वही) पर जो आपकी तरफ़ नाज़िल की गई है और उस (वही) पर जो आपसे पहले नाज़िल की गई (बराबर) ईमान लाते हैं और वोह (कितने अच्छे हैं कि) नमाज़ क़ाइम करने वाले (हैं) और ज़कात देनेवाले (हैं) और अल्लाह और क़ियामत के दिन पर ईमान रखने वाले (हैं)। ऐसे ही लोगों को हम अ़नक़रीब बड़ा अज्र अ़ता फ़रमाएंगे।

اِنَّآ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ كَمَآ اَوْحَيْنَآ اِلٰى نُوْحٍ وَّالنَّبِيّٖنَ مِنْۢ بَعْدِهٖ ۚ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَعِيْسٰى وَاَيُّوْبَ وَيُوْنُسَ وَهٰرُوْنَ وَسُلَيْمٰنَ ۚ وَاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ﴿١٦٣﴾

163. (ऐ ह़बीब!) बेशक हमने आपकी तरफ़ (उसी तरह) वही भेजी है जैसे हमने नूह़ (عليه السلام) की तरफ़ और उनके बाद (दूसरे) पयग़म्बरों की तरफ़ भेजी थी। और हमने इब्राहीम व इस्माईल और इस्हा़क व या'क़ूब और (उनकी) अवलाद और ईसा और अय्यूब और यूनुस और हारून और सुलैमान (عليهم السلام) की तरफ़ (भी) वही फ़रमाई, और हमने दाऊद (عليه السلام) को (भी) ज़बूर अ़ता की थी।

وَرُسُلًا قَدْ قَصَصْنٰهُمْ عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَرُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ ؕ وَكَلَّمَ اللّٰهُ مُوْسٰى تَكْلِيْمًا ﴿١٦٤﴾

164. और (हमने कई) ऐसे रसूल (भेजे) हैं जिनके ह़ालात हम (इससे) पहले आपको सुना चुके हैं और (कई) ऐसे रसूल भी (भेजे) हैं जिनके ह़ालात हमने (अभी तक) आपको नहीं सुनाए, और अल्लाहने मूसा (عليه السلام) से (बिलावास्ता) गुफ़्तुगू (भी) फ़रमाई।

رُسُلًا مُّبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَى اللّٰهِ حُجَّةٌۢ بَعْدَ الرُّسُلِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿١٦٥﴾

165. रसूल जो ख़ुशख़बरी देने वाले और डर सुनाने वाले थे (इस लिए भेजे गए) ताकि (उन) पयग़म्बरों (के आ जाने) के बाद लोगों के लिए अल्लाह पर कोई उ़ज़्र बाक़ी न रहे, और अल्लाह बड़ा ग़ालिब हिक्मतवाला है।

لٰكِنِ اللّٰهُ يَشْهَدُ بِمَآ اَنْزَلَ اِلَيْكَ اَنْزَلَهٗ بِعِلْمِهٖ ۚ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَشْهَدُوْنَ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ؕ ﴿۱۶۶﴾

166. (ऐ हबीब! कोई आपकी नुबुव्वत पर ईमान लाए या न लाए) मगर अल्लाह (खुद इस बात की) गवाही देता है कि जो कुछ उसने आपकी तरफ़ नाज़िल फ़रमाया है उसे अपने इल्म से नाज़िल फ़रमाया है, और फ़रिश्ते (भी आपकी ख़ातिर) गवाही देते हैं और अल्लाह का गवाह होना (ही) काफ़ी है।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ قَدْ ضَلُّوْا ضَلٰلًاۢ بَعِيْدًا ﴿۱۶۷﴾

167. बेशक जिन्होंने कुफ़्र किया (या'नी नुबुव्वते मुहम्मदी ﷺ की तकज़ीब की) और (लोगों को) अल्लाह की राहसे रोका, यक़ीनन वोह (हक़ से) बहुत दूर की गुमराही में जा भटके।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَظَلَمُوْا لَمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ طَرِيْقًا ۙ ﴿۱۶۸﴾

168. बेशक जिन्हों ने (अल्लाह की गवाही को न मान कर) कुफ़्र किया और (रसूल ﷺ की शान को न मान कर) ज़ुल्म किया, अल्लाह हरगिज़ (ऐसा) नहीं कि उन्हें बख़्श दे और न (ऐसा है कि आख़िरत में) उन्हें कोई रास्ता दिखाए।

اِلَّا طَرِيْقَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿۱۶۹﴾

169. सिवाए जहन्नम के रास्ते के जिसमें वोह हमेशा हमेशा रहेंगे, और येह काम अल्लाह पर आसान है।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الرَّسُوْلُ بِالْحَقِّ مِنْ رَّبِّكُمْ فَاٰمِنُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ؕ وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۱۷۰﴾

170. ऐ लोगो ! बेशक तुम्हारे पास येह रसूल (ﷺ) तुम्हारे रब की तरफ़से हक़ के साथ तशरीफ़ लाया है, सो तुम (उन पर) अपनी बेहतरी के लिए ईमान ले आओ और अगर तुम कुफ़्र (या'नी उनकी रिसालत से इन्कार) करोगे तो (जान लो वोह तुम से बेनियाज़ है क्योंकि) जो कुछ आस्मानों और ज़मीनमें है यक़ीनन (वोह सब)अल्लाह ही का है, और अल्लाह ख़ूब जाननेवाला बड़ी हिक्मतवालाहै।

يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ وَلَا تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ؕ

171. ऐ अह्ले किताब! तुम अपने दीन में हदसे ज़ाइद न बढ़ो और अल्लाह की शान में सच के सिवा कुछ न कहो।

إِنَّمَا الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُولُ اللّٰهِ وَكَلِمَتُهُ ۚ أَلْقَاهَا إِلَىٰ مَرْيَمَ وَرُوحٌ مِّنْهُ ۖ فَآمِنُوا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهِ ۖ وَلَا تَقُولُوا ثَلَاثَةٌ ۚ انْتَهُوا خَيْرًا لَّكُمْ ۚ إِنَّمَا اللّٰهُ إِلَٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ سُبْحَانَهُ أَنْ يَّكُونَ لَهُ وَلَدٌ ۘ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ وَكَفَىٰ بِاللّٰهِ وَكِيلًا ﴿١٧١﴾

हक़ीक़त सिर्फ़ येह है कि मसीह़ ईसा इब्ने मरयम (عليه السلام) अल्लाह का रसूल और उसका कलिमा है जिसे उसने मरयम की तरफ़ पहुंचा दिया और उस (की तरफ़) से एक रूह है। पस तुम अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाओ और मत कहो कि (मा'बूद) तीन हैं, (इस अक़ीदे से) बाज़ आ जाओ, (येह) तुम्हारे लिए बेहतर है, बेशक अल्लाह ही यक्ता मा'बूद है, वोह इस से पाक है कि उसके लिए कोई अवलाद हो, (सब कुछ) उसीका है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीनमें है, और अल्लाह का कारसाज़ होना काफ़ी है।

لَنْ يَّسْتَنْكِفَ الْمَسِيحُ أَنْ يَّكُونَ عَبْدًا لِّلّٰهِ وَلَا الْمَلَائِكَةُ الْمُقَرَّبُونَ ۚ وَمَنْ يَّسْتَنْكِفْ عَنْ عِبَادَتِهِ وَيَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرُهُمْ إِلَيْهِ جَمِيعًا ﴿١٧٢﴾

172. मसीह़ (عليه السلام) इस (बात) से हरगिज़ आ़र नहीं रखता कि वोह अल्लाह का बंदा हो और न ही मुक़र्रब फ़रिश्तों को (उससे कोई आ़र है), और जो कोई उसकी बंदगी से आ़र मह़सूस करे और तकब्बुर करे तो वोह ऐसे तमाम लोगों को अ़नक़रीब अपने पास जमा' फ़रमाएगा।

فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُوَفِّيهِمْ أُجُورَهُمْ وَيَزِيدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهِ ۖ وَأَمَّا الَّذِينَ اسْتَنْكَفُوا وَاسْتَكْبَرُوا فَيُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۙ وَّلَا يَجِدُونَ لَهُمْ مِّنْ دُونِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيرًا ﴿١٧٣﴾

173. पस जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे वोह उन्हें पूरे पूरे अज्र अ़ता फ़रमाएगा और (फिर) अपने फ़ज़्ल से उन्हें और ज़ियादा देगा, और वोह लोग जिन्हों ने (अल्लाह की इ़बादत से) आ़र मह़सूस की और तकब्बुर किया तो वोह उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब देगा, और वोह अपने लिए अल्लाह के सिवा न कोई दोस्त पाएंगे और न कोई मददगार।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ بُرْهَانٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ نُورًا

174. ऐ लोगो! बेशक तुम्हारे पास तुम्हारे रबकी जानिब से (ज़ाते मुह़म्मदी ﷺ की सूरतमें ज़ाते ह़क़ जल

مُّبِيۡنًا ﴿١٧٤﴾

मजदहू की सबसे ज़ियादा मज़बूत, कामिल और वाज़ेह) दलीले कातेअ़ आ गई है और हमने तुम्हारी तरफ़ (उसीके साथ कुर्आन की सूरत में) वाज़ेह और रौशन नूर (भी) उतार दिया है।

فَاَمَّا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا بِاللّٰهِ وَ اعۡتَصَمُوۡا بِهٖ فَسَيُدۡخِلُهُمۡ فِىۡ رَحۡمَةٍ مِّنۡهُ وَفَضۡلٍ ۙ وَّيَهۡدِيۡهِمۡ اِلَيۡهِ صِرَاطًا مُّسۡتَقِيۡمًا ﴿١٧٥﴾

175. पस जो लोग अल्लाह पर ईमान लाए और उस (के दामन) को मज़बूती से पकड़े रखा तो अ़नक़रीब (अल्लाह) उन्हें अपनी (ख़ास) रहमत और फ़ज़्ल में दाख़िल फ़रमाएगा, और उन्हें अपनी तरफ़ (पहुंचने का) सीधा रास्ता दिखाएगा।

يَسۡتَفۡتُوۡنَكَ ؕ قُلِ اللّٰهُ يُفۡتِيۡكُمۡ فِى الۡكَلٰلَةِ ؕ اِنِ امۡرُؤٌا هَلَكَ لَيۡسَ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَهٗۤ اُخۡتٌ فَلَهَا نِصۡفُ مَا تَرَكَ ۚ وَهُوَ يَرِثُهَاۤ اِنۡ لَّمۡ يَكُنۡ لَّهَا وَلَدٌ ؕ فَاِنۡ كَانَـتَا اثۡنَتَيۡنِ فَلَهُمَا الثُّلُثٰنِ مِمَّا تَرَكَ ؕ وَاِنۡ كَانُوۡۤا اِخۡوَةً رِّجَالًا وَّنِسَآءً فَلِلذَّكَرِ مِثۡلُ حَظِّ الۡاُنۡثَيَيۡنِ ؕ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَـكُمۡ اَنۡ تَضِلُّوۡا ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَىۡءٍ عَلِيۡمٌ ﴿١٧٦﴾

176. लोग आपसे फ़तवा (या'नी शरई हुक्म) दरयाफ़्त करते हैं। फ़रमा दीजिए कि अल्लाह तुम्हें (बिग़ैर अवलाद और बिग़ैर वालिदैन के फ़ौत होने वाले) कलालह (की विरासत) के बारे में हुक्म देता है कि अगर कोई ऐसा शख़्स फ़ौत हो जाए जो बे अवलाद हो मगर उसकी एक बहन हो तो उसके लिए उस (माल) का आधा (हिस्सा) है जो उसने छोड़ा है, और (अगर उसके बर अ़क्स बहन कलालह हो तो उसके मरने की सूरत में उसका) भाई उस (बहन) का वारिस (कामिल) होगा अगर उस (बहन) की कोई अवलाद न हो, फिर अगर (कलालह भाई की मौत पर) दो (बहनें वारिस) हों तो उनके लिए उस (माल) का दो तिहाई (हिस्सा) है जो उसने छोड़ा है, और अगर (बसूरते कलालह मर्हूम के) चंद भाई बहन मर्द (भी) और औ़रतें (भी वारिस) हों तो फिर (हर) एक मर्द का (हिस्सा) दो औ़रतों के हिस्से के बराबर होगा, (येह अह़काम) अल्लाह तुम्हारे लिए खोल कर बयान फ़रमा रहा है ताकि तुम भटकते न फिरो, और अल्लाह हर चीज़ को खूब जाननेवाला है।

आयातुहा 120 | 5 सूरतुल माइदह म-दनिय्यतुन 112 | रुकूआ़तुहा 16

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाहके नाम से शुरू जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا اَوۡفُوۡا بِالۡعُقُوۡدِ ؕ اُحِلَّتۡ لَـكُمۡ بَهِيۡمَةُ الۡاَنۡعَامِ اِلَّا مَا يُتۡلٰى عَلَيۡكُمۡ غَيۡرَ مُحِلِّى الصَّيۡدِ وَاَنۡتُمۡ حُرُمٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَحۡكُمُ مَا يُرِيۡدُ ﴿۱﴾

1. ऐ ईमान वालो! (अपने) अ़हद पूरे करो। तुम्हारे लिए चौपाए जानवर (या'नी मवेशी) ह़लाल कर दिए गए (हैं) सिवाए उन (जानवरों) के जिनका बयान तुम पर आइन्दह किया जाएगा (लेकिन) जब तुम एह़राम की ह़ालत में हो, शिकार को ह़लाल न समझना। बेशक अल्लाह जो चाहता है हुक्म फ़रमाता है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تُحِلُّوۡا شَعَآئِرَ اللّٰهِ وَلَا الشَّهۡرَ الۡحَـرَامَ وَلَا الۡهَدۡىَ وَلَا الۡقَلَۤائِدَ وَلَاۤ آٰمِّيۡنَ الۡبَيۡتَ الۡحَـرَامَ يَبۡتَغُوۡنَ فَضۡلًا مِّنۡ رَّبِّهِمۡ وَرِضۡوَانًا ؕ وَاِذَا حَلَلۡتُمۡ فَاصۡطَادُوۡا ؕ وَلَا يَجۡرِمَنَّكُمۡ شَنَاٰنُ قَوۡمٍ اَنۡ صَدُّوۡكُمۡ عَنِ الۡمَسۡجِدِ الۡحَـرَامِ اَنۡ تَعۡتَدُوۡا ۘ وَتَعَاوَنُوۡا عَلَى الۡبِرِّ وَالتَّقۡوٰى ۖ وَلَا تَعَاوَنُوۡا عَلَى الۡاِثۡمِ وَالۡعُدۡوَانِ ۖ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيۡدُ الۡعِقَابِ ﴿۲﴾

2. ऐ ईमान वालो! अल्लाह की निशानियों की बेहु़रमती न करो और न हु़रमत (व अदब) वाले महीने की (या'नी ज़िल क़ा'दह, ज़िल ह़िज्जा, मुहर्रम और रज्जब में से किसी माह की) और न ह़रमे का'बा को भेजे हुऐ क़ुर्बानी के जानवरों की और न मक्का लाए जानेवाले उन जानवरों की जिन के गले में अ़लामती पट्टे हों और न हु़रमत वाले घर (या'नी ख़ानए का'बा) का क़स्द कर के आने वालों (के जानो माल और इ़ज़्ज़तो आबरू) की (बेहु़रमती करो क्योंकि येह वोह लोग हैं) जो अपने रब का फ़ज़्ल और रज़ा तलाश कर रहे हैं, और जब तुम ह़ालते एह़राम से बाहर निकल आओ तो तुम शिकार कर सक्ते हो, और तुम्हें किसी क़ौम की (येह) दुश्मनी कि उन्हों ने तुमको मस्जिदे ह़राम (या'नी ख़ानए का'बा की ह़ाज़िरी) से रोका था इस बात पर हरगिज़ न उभारे कि तुम (उनके साथ) ज़ियादती करो और नेकी और परहेज़गारी (के कामों) पर एक दूसरे की मदद किया करो और गुनाह और ज़ुल्म (के कामों) पर एक दूसरे की मदद न करो और अल्लाह से डरते रहो। बेशक अल्लाह (ना फ़रमानी करनेवालों को) सख़्त सज़ा देने वाला है।

المنزل ٢ | وقف لازم | الربع

حُرِّمَتۡ عَلَيۡكُمُ الۡمَيۡتَةُ وَالدَّمُ وَلَحۡمُ الۡخِنۡزِيۡرِ وَمَاۤ اُهِلَّ لِغَيۡرِ اللّٰهِ بِهٖ وَالۡمُنۡخَنِقَةُ وَالۡمَوۡقُوۡذَةُ وَالۡمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيۡحَةُ وَمَاۤ اَكَلَ السَّبُعُ اِلَّا مَا ذَكَّيۡتُمۡ وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ وَاَنۡ تَسۡتَقۡسِمُوۡا بِالۡاَزۡلَامِ ذٰلِكُمۡ فِسۡقٌ اَلۡيَوۡمَ يَـئِسَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا مِنۡ دِيۡنِكُمۡ فَلَا تَخۡشَوۡهُمۡ وَاخۡشَوۡنِ اَلۡيَوۡمَ اَكۡمَلۡتُ لَـكُمۡ دِيۡنَكُمۡ وَاَتۡمَمۡتُ عَلَيۡكُمۡ نِعۡمَتِىۡ وَرَضِيۡتُ لَـكُمُ الۡاِسۡلَامَ دِيۡنًا فَمَنِ اضۡطُرَّ فِىۡ مَخۡمَصَةٍ غَيۡرَ مُتَجَانِفٍ لِّاِثۡمٍ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿۳﴾

3. तुम पर मुर्दार (या'नी बिग़ैर शरई ज़ब्ह के मरने वाला जानवर)हराम कर दिया गया है और (बहाया हुआ)खून और सुव्वर का गोश्त और वोह (जानवर) जिस पर ज़ब्ह के वक्त ग़ैरुल्लाह का नाम पुकारा गया हो और गला घुट कर मरा हुआ (जानवर) और (धारदार आले के बिगैर किसी चीज़ की) ज़र्ब से मरा हुआ और ऊपर से गिर कर मरा हुआ और (किसी जानवर के)सींग मारने से मरा हुआ और वोह (जानवर) जिसे दरिन्दे ने फाड़ खाया हो सिवाए उसके जिसे (मरने से पहले) तुमने ज़ब्ह कर लिया, और (वोह जानवर भी हराम है) जो बातिल मा'बूदों के थानों (या'नी बुतों के लिए मख़्सूस की गई कुरबानगाहों) पर ज़ब्ह किया गया हो और येह (भी हराम है)कि तुम पांसों (या'नी फ़ाल के तीरों) के ज़रीए क़िस्मत का हाल मा'लूम करो (या हिस्से तक़्सीम करो), येह सब काम गुनाह हैं। आज काफ़िर लोग तुम्हारे दीन (के ग़ालिब आ जाने के बाइस अपने नापाक इरादों) से मायूस हो गए, सो (ऐ मुसलमानो!) तुम उनसे मत डरो और मुझ ही से डरा करो। आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी ने'मत पूरी कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम को (बतौरे) दीन (या'नी मुकम्मल निज़ामे हयात की हैसिय्यत से) पसंद कर लिया। फिर अगर कोई शख़्स भूक (और प्यास) की शिद्दत में इज़्तिरारी (या'नी इन्तिहाई मजबूरी की) हालत को पहुंच जाए (इस शर्त के साथ) के गुनाह की तरफ़ माइल होनेवाला न हो (या'नी हराम चीज़ गुनाह की रग़बत के बाइस न खाए) तो बेशक अल्लाह बहुत बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

يَسۡـئَلُوۡنَكَ مَاذَاۤ اُحِلَّ لَهُمۡ قُلۡ اُحِلَّ لَـكُمُ الطَّيِّبٰتُ وَمَا عَلَّمۡتُمۡ مِّنَ

4. लोग आपसे सवाल करते हैं कि उनके लिए क्या चीज़ें हलाल की गई हैं, आप (उनसे) फ़रमा दें कि तुम्हारे लिए

الْجَوَارِحِ مُكَلِّبِيْنَ تُعَلِّمُوْنَهُنَّ
مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللّٰهُ ۫ فَكُلُوْا مِمَّآ
اَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ وَ اذْكُرُوا اسْمَ
اللّٰهِ عَلَيْهِ ۪ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿۴﴾

पाक चीज़ें हलाल कर दी गई हैं और वोह शिकारी जानवर जिन्हें तुमने शिकार पर दौड़ाते हुए यूं सिधार लिया है कि तुम उन्हें (शिकार के वोह तरीक़े) सिखाते हो जो तुम्हें अल्लाह ने सिखाए हैं सो तुम उस (शिकार) में से (भी) खाओ जो वोह (शिकारी जानवर) तुम्हारे लिए मार कर रोक रखें और (शिकार पर छोड़ते वक़्त) उस (शिकारी जानवर) पर अल्लाह का नाम लिया करो और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह हिसाब में जल्दी फ़रमानेवाला है।

اَلْيَوْمَ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ ؕ وَطَعَامُ
الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حِلٌّ لَّكُمْ ۪
وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ لَّهُمْ ۫ وَالْمُحْصَنٰتُ
مِنَ الْمُؤْمِنٰتِ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ
الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ اِذَآ
اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ مُحْصِنِيْنَ
غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ وَ لَا مُتَّخِذِيْٓ
اَخْدَانٍ ؕ وَ مَنْ يَّكْفُرْ بِالْاِيْمَانِ
فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهٗ ۫ وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ
مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿۵﴾ ع

5. आज तुम्हारे लिए पाकीज़ा चीज़ें हलाल कर दी गईं, और उन लोगों का ज़बीहा (भी) जिन्हें (इल्हामी) किताब दी गई तुम्हारे लिए हलाल है और तुम्हारा ज़बीहा उनके लिए हलाल है, और (इसी तरह) पाक दामन मुसलमान औरतें और उन लोगों में से पाकदामन औरतें जिन्हें तुमसे पहले किताब दी गई थी (तुम्हारे लिए हलाल हैं) जब कि तुम उन्हें उनका महर अदा कर दो, (मगर शर्त) येह कि तुम (उन्हें) क़ैदे निकाह में लाने वाले (इफ़्फ़त शिआर) बनो न कि (महज़ हवस रानी की ख़ातिर) ए'लानिया बदकारी करने वाले और न खुफ़्या आशनाई करने वाले, और जो शख़्स (अहकामे इलाही पर) ईमान (लाने) से इन्कार करे तो उसका सारा अ़मल बरबाद हो गया और वोह आख़िरत में (भी) नुक़्सान उठानेवालों में से होगा।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا قُمْتُمْ اِلَى
الصَّلٰوةِ فَاغْسِلُوْا وُجُوْهَكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ
اِلَى الْمَرَافِقِ وَ امْسَحُوْا بِرُءُوْسِكُمْ وَ
اَرْجُلَكُمْ اِلَى الْكَعْبَيْنِ ؕ وَ اِنْ كُنْتُمْ

6. ऐ ईमानवालो! जब (तुम्हारा) नमाज़ के लिए खड़े (होने का इरादा) हो तो (वुज़ू के लिए) अपने चेहरों को और अपने हाथों को कोहनियों समेत धो लो और अपने सरों का मसह करो और अपने पाँव (भी) टख़्नों समेत (धो लो), और अगर तुम हालते जनाबत में हो तो (नहा कर) खूब पाक हो जाओ और अगर तुम बीमार हो या

جُنُبًا فَاطَّهَّرُوا ۚ وَإِنْ كُنْتُمْ مَّرْضَىٰ
أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِّنْكُمْ
مِّنَ الْغَائِطِ أَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَاءَ فَلَمْ
تَجِدُوا مَاءً فَتَيَمَّمُوا صَعِيدًا طَيِّبًا
فَامْسَحُوا بِوُجُوهِكُمْ وَأَيْدِيكُمْ مِّنْهُ ۚ
مَا يُرِيدُ اللّٰهُ لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ
حَرَجٍ وَّلٰكِنْ يُّرِيدُ لِيُطَهِّرَكُمْ وَلِيُتِمَّ
نِعْمَتَهُ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٦﴾

सफ़र में हो या तुमसे कोई रफ़ूए हाजत से (फ़ारिग हो कर) आया हो या तुमने औरतों से क़ुर्बत (मुजामेअ़त) की हो फिर तुम पानी न पाओ तो (अंदरीं सूरत) पाक मिट्टी से तयम्मुम कर लिया करो । पस (तयम्मुम येह है कि) उस (पाक मिट्टी) से अपने चेहरों और अपने (पूरे) हाथों का मसह कर लो । अल्लाह नहीं चाहता कि वोह तुम्हारे ऊपर किसी क़िस्म की सख़्ती करे लेकिन वोह (येह) चाहता है कि तुम्हें पाक कर दे और तुम पर अपनी ने'मत पूरी कर दे ताकि तुम शुक्र गुज़ार बन जाओ।

وَاذْكُرُوا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَ
مِيثَاقَهُ الَّذِي وَاثَقَكُمْ بِهِ ۙ إِذْ
قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۡ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۚ
إِنَّ اللّٰهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٧﴾

7. और अल्लाह की (उस) ने'मत को याद करो जो तुम पर (की गई) है और उस के अ़हद को (भी याद करो) जो उसने तुमसे (पुख़्ता तरीक़े से) लिया था जब के तुमने (इक़रारन) कहा था कि हमने (अल्लाह के हुक्म को) सुना और हमने (उस की) इताअ़त की और अल्लाह से डरते रहो ! बेशक अल्लाह सीनों की (पोशीदह) बातों को खूब जानता है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا
قَوَّامِينَ لِلّٰهِ شُهَدَاءَ بِالْقِسْطِ ۡ وَ
لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلَىٰ أَلَّا
تَعْدِلُوا ۚ اِعْدِلُوا ۚ هُوَ أَقْرَبُ
لِلتَّقْوٰى ۡ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۚ إِنَّ اللّٰهَ
خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿٨﴾

8. ऐ ईमानवालो ! अल्लाह के लिए मज़बूती से क़ाइम रेहते हुऐ इन्साफ़ पर मब्नी गवाही देनेवाले हो जाओ और किसी क़ौम की सख़्त दुश्मनी (भी) तुम्हें इस बात पर बर अंगेख़्ता न करे कि तुम (उससे) अ़द्ल न करो। अ़द्ल किया करो (कि) वोह परहेज़गारी से नज़दीक तर है, और अल्लाह से डरा करो। बेशक अल्लाह तुम्हारे कामों से खूब आगाह है।

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ ۙ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّأَجْرٌ

9. अल्लाह ने ऐसे लोगों से जो ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे वा'दा फ़रमाया है (कि) उनके लिए बख़्शिश

عَظِيْمٌ ﴿٩﴾

और बड़ा अज्र है।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ
اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿١٠﴾

10. और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुटलाया वोही लोग दोज़ख़ (में जलने) वाले हैं।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا
نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ هَمَّ قَوْمٌ اَنْ
يَّبْسُطُوْٓا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ
اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۗ وَعَلَى
اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١١﴾

11. ऐ ईमानवालो! तुम अल्लाह के (उस) इनआम को याद करो (जो) तुम पर हुआ जब क़ौमे (कुफ़्फ़ार)ने येह इरादा किया कि अपने हाथ (क़त्लो हलाकत के लिए) तुम्हारी तरफ़ दराज़ करें तो अल्लाहने उनके हाथ तुमसे रोक दिए और अल्लाह से डरते रहो, और ईमानवालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए।

وَلَقَدْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ بَنِيْٓ
اِسْرَآءِيْلَ ۚ وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَيْ
عَشَرَ نَقِيْبًا ۗ وَقَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ
مَعَكُمْ ۗ لَئِنْ اَقَمْتُمُ الصَّلٰوةَ وَ
اٰتَيْتُمُ الزَّكٰوةَ وَاٰمَنْتُمْ بِرُسُلِيْ
وَعَزَّرْتُمُوْهُمْ وَاَقْرَضْتُمُ اللّٰهَ
قَرْضًا حَسَنًا لَّاُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ
سَيِّاٰتِكُمْ وَلَاُدْخِلَنَّكُمْ جَنّٰتٍ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ فَمَنْ
كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ
سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿١٢﴾

12. और बेशक अल्लाहने बनी इसराईल से पुख़्ता अ़हद लिया और (उसकी ता'मील, तन्फ़ीज़ और निगेहबानी के लिए) हमने उनमें बारह सरदार मुक़र्रर किए, और अल्लाहने (बनी इसराईल से) फ़रमाया कि मैं तुम्हारे साथ हूं (या'नी मेरी खुसूसी मददो नुसरत तुम्हारे साथ रहेगी), अगर तुमने नमाज़ क़ाइम रखी और तुम ज़कात देते रहे और मेरे रसूलों पर (हमेशा) ईमान लाते रहे और उनके (पयग़म्बराना मिशन)की मदद करते रहे और अल्लाह को (उसके दीनकी हि़मायतो नुसरत में माल ख़र्च कर के) क़र्ज़े ह़सन देते रहे तो मैं तुम से तुम्हारे गुनाहों को ज़रूर मिटा दूंगा और तुम्हें यक़ीनन ऐसी जन्नतों में दाख़िल कर दूंगा जिन के नीचे नेहरें जारी हैं। फिर उसके बाद तुम में से जिसने (भी) कुफ़्र (या'नी अ़हद से इन्ह़िराफ़) किया तो बेशक वोह सीधी राह से भटक गया।

فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ لَعَنّٰهُمْ وَ

13. फिर उन की अपनी अ़हद शिक्नी की वजह से हमने

جَعَلْنَا قُلُوْبَهُمْ قٰسِيَةً ۚ يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ ۙ وَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۚ وَلَا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلٰى خَآئِنَةٍ مِّنْهُمْ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٣﴾

उन पर ला'नत की (या'नी वोह हमारी रह्‌मत से महरूम हो गए), और हमने उनके दिलों को सख़्त कर दिया (या'नी वोह हिदायत और असर पज़ीरी से महरूम हो गए, चुनान्चे) वोह लोग (किताबे इलाही के) कलिमात को उनके (सहीह) मुक़ामात से बदल देते हैं और उस (रहनुमाई) का एक (बड़ा) हिस्सा भूल गए हैं जिस की उन्हें नसीहत की गई थी, और आप हमेशा उनकी किसी न किसी ख़यानत पर मुत्तला' होते रहेंगे सिवाए उनमें से चन्द एक के (जो ईमान ला चुके हैं) सो आप उन्हें मुआफ़ फ़रमा दीजिए और दर गुज़र फ़रमाइये, बेशक अल्लाह एहसान करनेवालों को पसन्द फ़रमाता है।

وَمِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰٓى اَخَذْنَا مِيْثَاقَهُمْ فَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۠ فَاَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۗ وَسَوْفَ يُنَبِّئُهُمُ اللّٰهُ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿١٤﴾

14. और हमने उन लोगों से (भी इसी क़िस्म का) अहद लिया था जो केहते हैं हम नसारा हैं, फिर वोह (भी) उस (रहनुमाई) का एक (बड़ा) हिस्सा फ़रामोश कर बैठे जिस की उन्हें नसीहत की गई थी। सो (इस बद अहदी के बाइस) हमने उनके दरमियान दुश्मनी और कीना रोज़े क़ियामत तक डाल दिया, और अन क़रीब अल्लाह उन्हें उन (आ'माल की हक़ीक़त) से आगाह फ़रमा देगा जो वोह करते रेहते थे।

يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيْرًا مِّمَّا كُنْتُمْ تُخْفُوْنَ مِنَ الْكِتٰبِ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ۬ قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّكِتٰبٌ مُّبِيْنٌ ۙ ﴿١٥﴾

15. ऐ अहले किताब! बेशक तुम्हारे पास हमारे (येह) रसूल (ﷺ) तशरीफ़ लाए हैं जो तुम्हारे लिए बहुत सी ऐसी बातें (वाज़ेह तौर पर) ज़ाहिर फ़रमाते हैं जो तुम किताबमें से छुपाए रखते थे और (तुम्हारी) बहुत सी बातों से दरगुज़र (भी) फ़रमाते हैं। बेशक तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ़ से एक नूर (या'नी हज़रत मुहम्मद ﷺ) आ गया है और एक रौशन किताब (या'नी कुर्आने मजीद)।

يَّهْدِيْ بِهِ اللّٰهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهٗ

16. अल्लाह इसके ज़रीए उन लोगों को जो उसकी रज़ा के

سُبُلَ السَّلٰمِ وَيُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ بِاِذْنِهٖ وَيَهْدِيْهِمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۱۶﴾

पैरव हैं, सलामती की राहों की हिदायत फ़रमाता है और उन्हें अपने हुक्म से (कुफ़्रो जहालत की) तारीकियों से निकाल कर (ईमानो हिदायत की) रौशनी की तरफ़ ले जाता है और उन्हें सीधी राह की सम्त हिदायत फ़रमाता है।

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ؕ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ اَنْ يُّهْلِكَ الْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّهٗ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا ؕ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۷﴾

17. बेशक उन लोगों ने कुफ़्र किया जो केहते हैं कि यक़ीनन अल्लाह मसीह़ इब्ने मरयम ही (तो) है, आप फ़रमा दें : फिर कौन (ऐसा शख़्स) है जो अल्लाह (की मशिय्यतमें) से किसी शय का मालिक हो? अगर वोह इस बात का इरादा फ़रमा ले कि मसीह़ इब्ने मरयम और उसकी मां और सब ज़मीनवालों को हलाक फ़रमा देगा (तो उसके फ़ैसले के ख़िलाफ़ उन्हें कौन बचा सक्ता है?) और आस्मानों और ज़मीन और जो (काइनात) इन दोनों के दरम्यान है (सब) की बादशाही अल्लाह ही के लिए है। वोह जो चाहता है पैदा फ़रमाता है और अल्लाह हर चीज़ पर बड़ा क़ादिर है।

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ وَالنَّصٰرٰى نَحْنُ اَبْنٰٓؤُا اللّٰهِ وَاَحِبَّآؤُهٗ ؕ قُلْ فَلِمَ يُعَذِّبُكُمْ بِذُنُوْبِكُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ بَشَرٌ مِّمَّنْ خَلَقَ ؕ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۫ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿۱۸﴾

18. और यहूद और नसाराने कहा : हम अल्लाह के बेटे और उसके मह़बूब हैं। आप फ़रमा दीजिए (अगर तुम्हारी बात दुरुस्त है) तो वोह तुम्हारे गुनाहों पर तुम्हें अ़ज़ाब क्यों देता है? बल्कि (ह़क़ीक़त येह है कि) जिन (मख़्लूक़ात) को अल्लाहने पैदा किया है तुम (भी) उन (ही) में से बशर हो (या'नी दीगर तब्क़ाते इन्सानी ही की मानिन्द हो), वोह जिसे चाहे बख़्शिश से नवाज़ता है और जिसे चाहे अ़ज़ाब से दो चार करता है, और आस्मानों और ज़मीन और वोह (काइनात) जो दोनों के दरम्यान है (सब) की बादशाही अल्लाह ही के लिए है और (हर एक को) उसी की तरफ़ पलट कर जाना है।

يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلٰى فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ

19. ऐ अहले किताब! बेशक तुम्हारे पास हमारे (येह आख़िरुज़्ज़मां) रसूल (ﷺ) पयग़म्बरों की आमद (के

أَنْ تَقُولُوا مَا جَآءَنَا مِنْ بَشِيرٍ وَّ لَا نَذِيرٍ فَقَدْ جَآءَكُمْ بَشِيرٌ وَّ نَذِيرٌ وَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٩﴾

सिलसिले) के मुन्क़ता' होने (के मौक़े) पर तशरीफ़ लाए हैं, जो तुम्हारे लिए (हमारे अह्काम) खूब वाज़ेह करते हैं, (इस लिए) कि तुम (उज़्र करते हुए येह) केह दोगे कि हमारे पास न (तो) कोई खुशख़बरी सुनानेवाला आया है और न डर सुनाने वाला। (अब तुम्हारा येह उज़्र भी ख़त्म हो चुका है क्योंकि) बिला शुब्हा तुम्हारे पास (आख़िरी) खुशख़बरी सुनाने और डर सुनानेवाला (भी) आ गया है, और अल्लाह हर चीज़ पर बड़ा क़ादिर है।

وَ إِذْ قَالَ مُوسٰى لِقَوْمِهِ يٰقَوْمِ اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَعَلَ فِيكُمْ أَنْبِيَآءَ وَجَعَلَكُمْ مُّلُوكًا وَّ اٰتٰىكُمْ مَّا لَمْ يُؤْتِ أَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِينَ ﴿٢٠﴾

20. और (वोह वक़्त भी याद करें) जब मूसा (عليه السلام)ने अपनी क़ौम से कहा : ऐ मेरी क़ौम! तुम अपने ऊपर (किया गया) अल्लाह का वोह इनआम याद करो जब उसने तुममें अंबिया पैदा फ़रमाए और तुम्हें बादशाह बनाया और तुम्हें वोह (कुछ) अ़ता फ़रमाया जो (तुम्हारे ज़माने में) तमाम जहानों में से किसी को नहीं दिया था।

يٰقَوْمِ ادْخُلُوا الْأَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِي كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتَدُّوا عَلٰٓى أَدْبَارِكُمْ فَتَنْقَلِبُوا خٰسِرِينَ ﴿٢١﴾

21. ऐ मेरी क़ौम! (मुल्के शाम या बयतुल मुक़द्दस की) उस मुक़द्दस सर ज़मीनमें दाख़िल हो जाओ जो अल्लाहने तुम्हारे लिए लिख दी है और अपनी पुश्त पर (पीछे) न पलटना वरना तुम नुक़्सान उठाने वाले बन कर पलटोगे।

قَالُوا يٰمُوسٰٓى إِنَّ فِيهَا قَوْمًا جَبَّارِينَ وَإِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَا حَتّٰى يَخْرُجُوا مِنْهَا فَإِنْ يَّخْرُجُوا مِنْهَا فَإِنَّا دٰخِلُونَ ﴿٢٢﴾

22. उन्हों ने (जवाबन) कहा : ऐ मूसा! इसमें तो ज़बरदस्त (ज़ालिम) लोग (रेहते) हैं और हम इसमें हरगिज़ दाख़िल नहीं होंगे यहां तक कि वोह उस (ज़मीन) से निकल जाएं, पस अगर वोह यहां से निकल जाएं तो हम ज़रूर दाख़िल हो जाएंगे।

قَالَ رَجُلٰنِ مِنَ الَّذِينَ يَخَافُونَ أَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمَا ادْخُلُوا عَلَيْهِمُ

23. उन (चंद) लोगोंमें से जो (अल्लाह से) डरते थे दो (ऐसे) शख़्स बोल उठे जिन पर अल्लाहने इनआ़म फ़रमाया

الْبَابَ ۚ فَإِذَا دَخَلْتُمُوهُ فَإِنَّكُمْ غَٰلِبُونَ ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَتَوَكَّلُوا إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٢٣﴾

था (अपनी क़ौमसे केहने लगे:) तुम उन लोगों पर (बिला ख़ौफ़ ह़मला करते हुऐ शहर के) दरवाज़े से दाख़िल हो जाओ, सो जब तुम उस (दरवाज़े) में दाख़िल हो जाओगे तो यक़ीनन तुम ग़ालिब हो जाओगे, और अल्लाह ही पर तवक्कल करो बशर्ते कि तुम ईमानवाले हो।

قَالُوا يَٰمُوسَىٰ إِنَّا لَنْ نَدْخُلَهَا أَبَدًا مَا دَامُوا فِيهَا ۖ فَاذْهَبْ أَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَٰتِلَا إِنَّا هَٰهُنَا قَٰعِدُونَ ﴿٢٤﴾

24. उन्होंने कहा : ऐ मूसा! जब तक वोह लोग उस (सर ज़मीन)में हैं हम हरगिज़ कभी भी वहां दाख़िल नहीं होंगे, पस तुम जाओ और तुम्हारा रब (साथ जाए) सो तुम दोनों (ही उनसे) जंग करो, हम तो यहीं बैठे हैं।

قَالَ رَبِّ إِنِّي لَا أَمْلِكُ إِلَّا نَفْسِي وَأَخِي ۖ فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ الْفَٰسِقِينَ ﴿٢٥﴾

25. (मूसा عليه السلام ने) अर्ज़ किया : ऐ मेरे रब! मैं अपनी ज़ात और अपने भाई (हारून عليه السلام)के सिवा (किसी पर) इख़्तियार नहीं रखता पस तू हमारे और (उस) ना फ़रमान क़ौम के दरमियान (अपने हुक्म से) जुदाई फ़रमा दे।

قَالَ فَإِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ ۛ أَرْبَعِينَ سَنَةً ۛ يَتِيهُونَ فِي الْأَرْضِ ۚ فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْفَٰسِقِينَ ﴿٢٦﴾

26. (रबने) फ़रमाया : पस येह (सर ज़मीन) उन (नाफ़रमान) लोगों पर चालीस साल तक ह़राम कर दी गई है, येह लोग ज़मीनमें (परेशान ह़ाल) सर गर्दां फिरते रहेंगे, सो (ऐ मूसा! अब) उस ना फ़रमान क़ौम (के इब्रतनाक ह़ाल) पर अफ़्सोस न करना।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ ابْنَيْ آدَمَ بِالْحَقِّ إِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ مِنْ أَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْآخَرِ قَالَ لَأَقْتُلَنَّكَ ۖ قَالَ إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللَّهُ مِنَ الْمُتَّقِينَ ﴿٢٧﴾

27. (ऐ नबिय्ये मुकर्रम !) आप उन लोगों को आदम (عليه السلام) के दो बेटों (हाबील और क़ाबील) की ख़बर सुनाएं जो बिल्कुल सच्ची है। जब दोनोंने (अल्लाहके हुज़ूर एक एक कुरबानी पेश की सो उनमें से एक (हाबील) की कुबूल कर ली गई और दूसरे (क़ाबील) से कुबूल न की गई, तो उस (क़ाबील) ने (हाबील से ह़सदन व इन्तिक़ामन) कहा : मैं तुझे ज़रूर क़त्ल कर दूंगा। उस (हाबील) ने (जवाबन) कहा : बेशक अल्लाह परहेज़गारों से ही (नियाज़) कुबूल फ़रमाता है।

لَئِنْۢ بَسَطْتَّ اِلَیَّ یَدَکَ لِتَقْتُلَنِیْ مَاۤ اَنَا بِبَاسِطٍ یَّدِیَ اِلَیْکَ لِاَقْتُلَکَ ۚ اِنِّیْۤ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۲۸﴾

28. अगर तू अपना हाथ मुझे क़त्ल करने के लिए मेरी तरफ़ बढ़ाएगा (तो फिर भी) मैं अपना हाथ तुझे क़त्ल करने के लिए तेरी तरफ़ नहीं बढ़ाऊंगा क्योंकि मैं अल्लाह से डरता हूं जो तमाम जहानों का परवरदिगार है।

اِنِّیْۤ اُرِیْدُ اَنْ تَبُوْٓاَ بِاِثْمِیْ وَ اِثْمِکَ فَتَکُوْنَ مِنْ اَصْحٰبِ النَّارِ ۚ وَ ذٰلِکَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِیْنَ ۚ ﴿۲۹﴾

29. मैं चाहता हूं (कि मुझसे कोई ज़ियादती न हो और) मेरा गुनाहे (क़त्ल) और तेरा अपना (साबिक़ा) गुनाह (जिसके बाइस तेरी क़ुरबानी ना मंज़ूर हुई सब) तूही हासिल कर ले फिर तू अहले जहन्नम में से हो जाएगा और येही ज़ालिमों की सज़ा है।

فَطَوَّعَتْ لَهٗ نَفْسُهٗ قَتْلَ اَخِیْهِ فَقَتَلَهٗ فَاَصْبَحَ مِنَ الْخٰسِرِیْنَ ﴿۳۰﴾

30. फिर उस (क़ाबील)के नफ़्सने उसके लिए अपने भाई (हाबील) का क़त्ल आसान (और मरग़ूब) कर दिखाया । सो उसने उसको क़त्ल कर दिया। पस वोह नुक़्सान उठानेवालों में से हो गया।

فَبَعَثَ اللّٰهُ غُرَابًا یَّبْحَثُ فِی الْاَرْضِ لِیُرِیَهٗ کَیْفَ یُوَارِیْ سَوْءَةَ اَخِیْهِ ؕ قَالَ یٰوَیْلَتٰۤی اَعَجَزْتُ اَنْ اَکُوْنَ مِثْلَ هٰذَا الْغُرَابِ فَاُوَارِیَ سَوْءَةَ اَخِیْ ۚ فَاَصْبَحَ مِنَ النّٰدِمِیْنَ ۚۛ ﴿۳۱﴾

31. फिर अल्लाहने एक कव्वा भेजा जो ज़मीन कुरेदने लगा ताकि उसे दिखाए कि वोह अपने भाई की लाश किस तरह छुपाए,(येह देख कर) उसने कहा : हाय अफ़्सोस! क्या मैं इस कव्वे की मानिन्द भी न हो सका कि अपने भाई की लाश छुपा देता, सो वोह पशेमान होनेवालों में से हो गया।

مِنْ اَجْلِ ذٰلِکَ ۚۛ کَتَبْنَا عَلٰی بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ اَنَّهٗ مَنْ قَتَلَ نَفْسًۢا بِغَیْرِ نَفْسٍ اَوْ فَسَادٍ فِی الْاَرْضِ فَکَاَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِیْعًا ؕ وَ مَنْ

32. इसी वजहसे हमने बनी इसराईल पर (नाज़िल की गई तौरातमें येह हुक्म) लिख दिया (था)कि जिसने किसी शख़्स को बिग़ैर क़िसास के या ज़मीनमें फ़साद (फ़ैलाने या'नी ख़ूनरेज़ी और डाकाज़नी वग़ैरा की सज़ा) के (बिग़ैर ना हक़) क़त्ल कर दिया तो गोया उसने (मुआशरे के) तमाम लोगों को क़त्ल कर डाला और जिसने उसे

معانقة ۵ وقف النبی ﷺ

أَحْيَاهَا فَكَأَنَّمَا أَحْيَا النَّاسَ جَمِيعًا ۚ وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ إِنَّ كَثِيرًا مِّنْهُم بَعْدَ ذَٰلِكَ فِي الْأَرْضِ لَمُسْرِفُونَ ﴿٣٢﴾

(ना हक़्क़ मरने से बचा कर) ज़िन्दा रखा तो गोया उसने (मुआशरे के) तमाम लोगों को ज़िन्दा रखा (या'नी उसने हयाते इन्सानी का इज्तिमाई निज़ाम बचा लिया), और बेशक उनके पास हमारे रसूल वाज़ेह् निशानियां ले कर आए फिर (भी) इसके बाद उन में से अक्सर लोग यक़ीनन ज़मीनमें हद से तजावुज़ करनेवाले हैं।

إِنَّمَا جَزَاءُ الَّذِينَ يُحَارِبُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا أَن يُقَتَّلُوا أَوْ يُصَلَّبُوا أَوْ تُقَطَّعَ أَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُم مِّنْ خِلَافٍ أَوْ يُنفَوْا مِنَ الْأَرْضِ ۚ ذَٰلِكَ لَهُمْ خِزْيٌ فِي الدُّنْيَا ۖ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٣٣﴾

33. बेशक जो लोग अल्लाह और उसके रसूल से जंग करते हैं और ज़मीनमें फ़साद अंगेज़ी करते फिरते हैं (या'नी मुसलमानों में खूनरेज़ी, रहज़नी और डाकाज़नी वग़ैरा के मुर्तकिब होते हैं) उनकी सज़ा येही है कि वोह क़त्ल किए जाएं या फांसी दिए जाएं या उनके हाथ और उनके पाँव मुख़ालिफ़ सम्तों से काटे जाएं या (वतन की) ज़मीन (में चलने फिरने) से दूर (या'नी मुल्क बदर या क़ैद) कर दिए जाएं। येह (तो) उनके लिए दुनिया में रुस्वाई है और उनके लिए आख़िरत में (भी) बड़ा अज़ाब है।

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِن قَبْلِ أَن تَقْدِرُوا عَلَيْهِمْ ۖ فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٣٤﴾

34. मगर जिन लोगोंने, क़ब्ल इसके कि तुम उन पर क़ाबू पा जाओ, तौबा कर ली सो जान लो कि अल्लाह बहुत बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَابْتَغُوا إِلَيْهِ الْوَسِيلَةَ وَجَاهِدُوا فِي سَبِيلِهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٣٥﴾

35. ऐ ईमानवालो ! अल्लाहसे डरते रहो और उस (के हुज़ूर) तक (तक़र्रुब और रसाई का) वसीला तलाश करो और उसकी राहमें जिहाद करो ताकि तुम फ़लाह पा जाओ।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ أَنَّ لَهُم مَّا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لِيَفْتَدُوا بِهِ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ

36. बेशक जो लोग कुफ़्रके मुर्तकिब हो रहे हैं अगर उनके पास वोह सब कुछ (मालो मताअ़ और ख़ज़ाना मौजूद) हो जो रूए ज़मीन में है बल्कि उसके साथ इतना और (भी) ताकि वोह रोज़े क़ियामत के अज़ाब से (नजात

الْقِيٰمَةِ مَا تُقُبِّلَ مِنْهُمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٣٦﴾

के लिए) उसे फ़िदया (या'नी अपनी जानके बदले) में दे दें तो (वोह सब कुछ भी) उनसे क़ुबूल नहीं किया जाएगा और उनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।

يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنَ النَّارِ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنْهَا ۫ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٣٧﴾

37. वोह चाहेंगे कि (किसी तरह) दोज़ख़ से निकल जाएं जबकि वोह उससे नहीं निकल सकेंगे और उनके लिए दाइमी अ़ज़ाब है।

وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوْٓا اَيْدِيَهُمَا جَزَآءًۢ بِمَا كَسَبَا نَكَالًا مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٣٨﴾

38. और चोरी करनेवाला (मर्द) और चोरी करनेवाली (औ़रत) सो दोनों के हाथ काट दो उस (जुर्म) की पादाश में जो उन्होंने कमाया है। (येह) अल्लाह की तरफ़ से इब्रतनाक सज़ा (है), और अल्लाह बड़ा ग़ालिब है बड़ी हिक्मतवाला है।

فَمَنْ تَابَ مِنْۢ بَعْدِ ظُلْمِهٖ وَاَصْلَحَ فَاِنَّ اللّٰهَ يَتُوْبُ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣٩﴾

39. फिर जो शख़्स अपने (उस)ज़ुल्म के बाद तौबा और इस्लाह़ कर ले तो बेशक अल्लाह उस पर रह़मत के साथ रुजूअ़ फ़रमानेवाला है। यक़ीनन अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला बहुत रह़म फ़रमानेवाला है।

اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٤٠﴾

40. (ऐ इन्सान!) क्या तू नहीं जानता कि आस्मानों और ज़मीन की (सारी) बादशाहत अल्लाह ही के लिए है, वोह जिसे चाहता है अ़ज़ाब देता है और जिसे चाहता है बख़्श देता है, और अल्लाह हर चीज़ पर ख़ूब क़ुदरत रखता है।

يٰٓاَيُّهَا الرَّسُوْلُ لَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِى الْكُفْرِ مِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِاَفْوَاهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِنْ قُلُوْبُهُمْ ۛ وَمِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا ۛ سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ سَمّٰعُوْنَ لِقَوْمٍ

41. ऐ रसूल ! वोह लोग आपको रंजीदह ख़ातिर न करें जो कुफ़्रमें तेज़ी (से पेश क़दमी) करते हैं उनमें (एक) वोह (मुनाफ़िक़) हैं जो अपने मुंह से केहते हैं कि हम ईमान लाऐ हालांकि उनके दिल ईमान नहीं लाए, और उनमें (दूसरे) यहूदी हैं (येह) झूटी बातें बनाने के लिए (आपको) ख़ूब सुनते हैं (येह ह़क़ीक़त में) दूसरे लोगों के लिए जासूसी की ख़ातिर) सुननेवाले हैं जो

مع الوقف على الاول اجوز١٢

اٰخَرِيْنَ ۙ لَمْ يَاْتُوْكَ ؕ يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ مِنْۢ بَعْدِ مَوَاضِعِهٖ ۚ يَقُوْلُوْنَ اِنْ اُوْتِيْتُمْ هٰذَا فَخُذُوْهُ وَاِنْ لَّمْ تُؤْتَوْهُ فَاحْذَرُوْا ؕ وَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ فِتْنَتَهٗ فَلَنْ تَمْلِكَ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَمْ يُرِدِ اللّٰهُ اَنْ يُّطَهِّرَ قُلُوْبَهُمْ ؕ لَهُمْ فِى الدُّنْيَا خِزْىٌ ۖۚ وَّ لَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿۴۱﴾

(अभी तक) आपके पास नहीं आए, (येह वोह लोग हैं) जो (अल्लाह के) कलिमात को उनके मवाक़े' (मुक़र्रर होने) के बाद (भी) बदल देते हैं (और) केहते हैं अगर तुम्हें येह (हुक्म जो उनकी पसंद का हो) दिया जाए तो उसे इख़्तियार कर लो और अगर तुम्हें येह (हुक्म) न दिया जाए तो (उससे) ऐहतिराज़ करो, और अल्लाह जिस शख़्स की गुमराही का इरादा फ़रमा ले तो तुम उस के लिए अल्लाह (के हुक्म को रोकने) का हरगिज़ कोई इख़्तियार नहीं रखते। येही वोह लोग हैं जिनके दिलों को पाक करने का अल्लाहने इरादा (ही) नहीं फ़रमाया। उनके लिए दुनियामें (कुफ़्रकी) ज़िल्लत है और उनके लिए आख़िरत में बड़ा अ़ज़ाब है।

سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ اَكّٰلُوْنَ لِلسُّحْتِ ؕ فَاِنْ جَآءُوْكَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ اَوْ اَعْرِضْ عَنْهُمْ ۚ وَاِنْ تُعْرِضْ عَنْهُمْ فَلَنْ يَّضُرُّوْكَ شَيْـًٔا ؕ وَاِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ﴿۴۲﴾

42. (येह लोग) झूटी बातें बनाने के लिए जासूसी करनेवाले हैं (मज़ीद येह कि) हराम माल ख़ूब खानेवाले हैं । सो अगर(येह लोग)आपके पास (कोई निज़ाई मुआ़मला ले कर) आएं तो आप (को इख़्तियार है कि) उनके दरमियान फ़ैसला फ़रमा दें या उनसे गुरेज़ फ़रमा लें, और अगर आप उनसे गुरेज़ (भी) फ़रमा लें तो (तब भी) येह आपको हरगिज़ कोई ज़रर नहीं पहुंचा सक्ते, और अगर आप फ़ैसला फ़रमाएं तो उनके दरमियान (भी) अ़द्ल (ही) से फ़ैसला फ़रमाएं (या'नी उनकी दुश्मनी आ़दिलाना फ़ैसले में रुकावट न बने), बेशक अल्लाह अ़द्ल करने वालों को पसंद फ़रमाता है।

وَكَيْفَ يُحَكِّمُوْنَكَ وَعِنْدَهُمُ التَّوْرٰىةُ فِيْهَا حُكْمُ اللّٰهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ؕ وَمَآ

43. और येह लोग आपको क्यों कर हाकिम मान सक्ते हैं दर आं हाली कि उनके पास तौरात (मौजूद) है जिस में अल्लाह का हुक्म (मज़कूर) है। फिर येह उसके बाद (भी हक़ से) रूगर्दानी करते हैं, और वोह लोग (बिल्कुल)

أُولَٰئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٣﴾

ईमान लानेवाले नहीं हैं।

إِنَّا أَنزَلْنَا التَّوْرَاةَ فِيهَا هُدًى وَنُورٌ ۚ يَحْكُمُ بِهَا النَّبِيُّونَ الَّذِينَ أَسْلَمُوا لِلَّذِينَ هَادُوا وَالرَّبَّانِيُّونَ وَالْأَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوا مِن كِتَابِ اللَّهِ وَكَانُوا عَلَيْهِ شُهَدَاءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَاخْشَوْنِ وَلَا تَشْتَرُوا بِآيَاتِي ثَمَنًا قَلِيلًا ۚ وَمَن لَّمْ يَحْكُم بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ ﴿٤٤﴾

44. बेशक हमने तौरात नाज़िल फ़रमाई जिसमें हिदायत और नूर था। उसके मुताबिक़ अंबिया जो (अल्लाह के) फ़रमां बर्दार (बंदे) थे यहूदियों को हुक्म देते रहे और अल्लाहवाले (या'नी उनके अवलिया) और उ़लमा (भी उसी के मुताबिक़ फ़ैसले करते रहे), इस वजह से कि वोह अल्लाहकी किताब के मुहाफ़िज़ बनाए गए थे और वोह उस पर निगहबान (व गवाह) थे। पस तुम (इक़ामते दीन और अह्‌कामे इलाही के निफ़ाज़ के मुआ़मले में) लोगों से मत डरो और (सिर्फ़) मुझ से डरा करो और मेरी आयात (या'नी अह्‌काम) के बदले (दुनिया की) ह़क़ीर क़ीमत न लिया करो, और जो शख़्स अल्लाहके नाज़िल कर्दह हुक्म के मुताबिक़ फ़ैसला (व हुकूमत) न करे, सो वोही लोग काफ़िर हैं।

وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ فِيهَا أَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْأَنفَ بِالْأَنفِ وَالْأُذُنَ بِالْأُذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ وَالْجُرُوحَ قِصَاصٌ ۚ فَمَن تَصَدَّقَ بِهِ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهُ ۚ وَمَن لَّمْ يَحْكُم بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٤٥﴾

45. और हमने उस (तौरात) में उन पर फ़र्ज़ कर दिया था कि जान के बदले जान और आँखके इवज़ आँख और नाक के बदले नाक और कान के इवज़ कान और दाँत के बदले दाँत और ज़ख़्मों में (भी) बदला है, तो जो शख़्स इस (क़िसास) को सदक़ा (या'नी मुआ़फ़) कर दे तो येह उस (के गुनाहों) के लिए कफ़्फ़ारा होगा, और जो शख़्स अल्लाह के नाज़िल कर्दह हुक्म के मुताबिक़ फ़ैसला (व हुकूमत) न करे सो वही लोग ज़ालिम हैं।

وَقَفَّيْنَا عَلَىٰ آثَارِهِم بِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرَاةِ ۖ وَآتَيْنَاهُ الْإِنجِيلَ فِيهِ

46. और हमने उन (पयग़म्बरों) के पीछे उन (ही) के नुक़ूशे क़दम पर ईसा इब्ने मरयम (عليه السلام) को भेजा जो अपने से पहले की (किताब) तौरात की तस्दीक़ करनेवाले थे और हम ने उनको इन्जील अ़ता की जिस में

هُدًى وَّنُوْرٌ ۙ وَّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَهُدًى وَّمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿۴۶﴾

हिदायत और नूर था और (येह इन्जील भी) अपने से पहले की (किताब) तौरात की तस्दीक़ करनेवाली (थी) और (सरासर) हिदायत थी और परहेज़गारों के लिए नसीहत थी।

وَلْيَحْكُمْ اَهْلُ الْاِنْجِيْلِ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فِيْهِ ؕ وَ مَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۴۷﴾

47. और अहले इन्जील को (भी) उस (हुक्म) के मुताबिक़ फ़ैसला करना चाहिए जो अल्लाहने उसमें नाज़िल फ़रमाया है, और जो शख़्स अल्लाह के नाज़िल कर्दह हुक्म के मुताबिक़ फ़ैसला (व हुकूमत) न करे सो वोही लोग फ़ासिक़ हैं।

وَ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتٰبِ وَ مُهَيْمِنًا عَلَيْهِ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَ لَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ عَمَّا جَآءَكَ مِنَ الْحَقِّ ؕ لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً وَّمِنْهَاجًا ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَآ اٰتٰىكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ؕ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ۙ ﴿۴۸﴾

48. और (ऐ नबिय्ये मुकर्रम!) हमने आपकी तरफ़ (भी) सच्चाई के साथ किताब नाज़िल फ़रमाई है जो अपने से पहले की किताब की तस्दीक़ करनेवाली है और उस (के अस्ल अह्काम व मज़ामीन) पर निगहबान है, पस आप उनके दरमियान उन (अह्काम) के मुताबिक़ फ़ैसला फ़रमाएं जो अल्लाहने नाज़िल फ़रमाए हैं और आप उनकी ख़्वाहिशात की पैरवी न करें उस हक़ से दूर हो कर जो आपके पास आ चुका है। हमने तुम में से हर एक के लिए अलग शरीअ़त और कुशादह राहे अ़मल बनाई है, और अगर अल्लाह चाहता तो सबको (एक शरीअ़त पर मुत्तफ़िक़) एक ही उम्मत बना देता लेकिन वोह तुम्हें उन (अलग अलग अह्काम) में आज़्माना चाहता है जो उसने तुम्हें (तुम्हारे हस्बे हाल) दिए हैं, सो तुम नेकियों में जलदी करो। अल्लाह ही की तरफ़ तुम सबको पलटना है, फिर वोह तुम्हें उन (सब बातों में हक़्क़ो बातिल) से आगाह फ़रमा देगा जिन में तुम इख़्तिलाफ़ करते रहते थे।

وَ اَنِ احْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَ لَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ

49. और (ऐ हबीब! हमने येह हुक्म किया है कि) आप उनके दरमियान उस (फ़रमान) के मुताबिक़ फ़ैसला

وَاحْذَرْهُمْ اَنْ يَّفْتِنُوْكَ عَنْۢ بَعْضِ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكَ ۗ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمْ اَنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّصِيْبَهُمْ بِبَعْضِ ذُنُوْبِهِمْ ۗ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ لَفٰسِقُوْنَ ﴿۴۹﴾

फ़रमाएं जो अल्लाहने नाज़िल फ़रमाया है और उनकी ख़्वाहिशात की पैरवी न करें और आप उनसे बचते रहें कहीं वोह आप को उन बा'ज़ (अह्काम) से जो अल्लाहने आपकी तरफ़ नाज़िल फ़रमाए हैं फेर (न) दें, फिर अगर वोह (आपके फ़ैसले से) रूगर्दानी करें तो आप जान लें कि बस अल्लाह उनके बा'ज़ गुनाहों के बाइस उन्हें सज़ा देना चाहता है, और लोगों में से अक्सर ना फ़रमान (होते) हैं।

اَفَحُكْمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُوْنَ ۗ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿۵۰﴾

50. क्या येह लोग (ज़मानए) जाहिलिय्यत का क़ानून चाहते हैं ? और यक़ीन रखनेवाली क़ौम के लिए हुक्म (देने) में अल्लाह से बेहतर कौन हो सक्ता है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ وَالنَّصٰرٰٓى اَوْلِيَآءَ ۘ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۗ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاِنَّهٗ مِنْهُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۵۱﴾

51. ऐ ईमानवालो! यहूद और नसारा को दोस्त मत बनाओ। येह (सब तुम्हारे ख़िलाफ़) आपसमें एक दूसरे के दोस्त हैं, और तुम में से जो शख़्स उन को दोस्त बनाएगा बेशक वोह (भी) उनमें से हो (जाए)गा, यक़ीनन अल्लाह ज़ालिम क़ौम को हिदायत नहीं फ़रमाता।

فَتَرَى الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ يُّسَارِعُوْنَ فِيْهِمْ يَقُوْلُوْنَ نَخْشٰٓى اَنْ تُصِيْبَنَا دَآئِرَةٌ ۗ فَعَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِيَ بِالْفَتْحِ اَوْ اَمْرٍ مِّنْ عِنْدِهٖ فَيُصْبِحُوْا عَلٰى مَآ اَسَرُّوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ نٰدِمِيْنَ ﴿۵۲﴾

52. सो आप ऐसे लोगों को देखेंगे जिनके दिलों में (निफ़ाक़ और ज़ेहनोंमें ग़ुलामी की) बीमारी है कि वोह उन (यहूदो नसारा) में (शामिल होने के लिए) दौड़ते हैं, केहते हैं हमें ख़ौफ़ है कि हम पर कोई गरदिश (न) आ जाए (या'नी उनके साथ मिलने से शायद हमें तहफ़्फ़ुज़ मिल जाए), तो बईद नहीं कि अल्लाह (वाक़िअतन मुसलमानों की) फ़त्ह ले आए या अपनी तरफ़ से कोई अम्र (फ़त्हो कामरानी का निशान बना कर भेज दे) तो येह लोग उस (मुनाफ़िक़ाना सोच) पर जिसे येह अपने दिलों में छुपाए हुऐ हैं शरमिन्दा हो कर रह जाएंगे।

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَهٰٓؤُلَآءِ
الَّذِيْنَ اَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ
اَيْمَانِهِمْ ۙ اِنَّهُمْ لَمَعَكُمْ ؕ حَبِطَتْ
اَعْمَالُهُمْ فَاَصْبَحُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿٥٣﴾

53. और (उस वक़्त) ईमानवाले येह कहेंगे क्या येही वोह लोग हैं जिन्होंने बड़े ताकीदी हलफ़ (की सूरत) में अल्लाह की क़स्में खाई थीं कि बेशक वोह ज़रूर तुम्हारे (ही) साथ हैं, (मगर) उनके सारे आ'माल अकारत गए सो वोह नुक़्सान उठानेवाले हो गए।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَنْ يَّرْتَدَّ
مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَسَوْفَ يَاْتِي اللّٰهُ
بِقَوْمٍ يُّحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهٗٓ ۙ اَذِلَّةٍ
عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَى
الْكٰفِرِيْنَ ۫ يُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ وَ لَا يَخَافُوْنَ لَوْمَةَ لَآئِمٍ ؕ
ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ
وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٥٤﴾

54. ऐ ईमानवालो! तुम में से जो शख़्स अपने दीन से फिर जाएगा तो अनक़रीब अल्लाह (उनकी जगह) ऐसी क़ौम को लाएगा जिनसे वोह (ख़ुद) महब्बत फ़रमाता होगा और वोह उससे महब्बत करते होंगे वोह मोमिनों पर नर्म (और) काफ़िरों पर सख़्त होंगे अल्लाह की राह में (ख़ूब) जिहाद करेंगे और किसी मलामत करनेवाले की मलामत से ख़ौफ़ज़दा नहीं होंगे। येह (इन्क़िलाबी किरदार) अल्लाह का फ़ज़्ल है वोह जिसे चाहता है अ़ता फ़रमाता है और अल्लाह वुस्अ़तवाला (है) ख़ूब जाननेवाला है।

اِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَالَّذِيْنَ
اٰمَنُوا الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ
وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ رٰكِعُوْنَ ﴿٥٥﴾

55. बेशक तुम्हारा (मददगार) दोस्त तो अल्लाह और उसका रसूल (ﷺ) ही है और (साथ) वोह ईमान वाले हैं जो नमाज़ काइम रखते हैं और ज़कात अदा करते हैं और वोह (अल्लाह के हुज़ूर आ़जिज़ीसे) झुकने वाले हैं।

وَ مَنْ يَّتَوَلَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَاِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ
الْغٰلِبُوْنَ ﴿٥٦﴾

56. और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) और ईमानवालों को दोस्त बनाएगा तो (वोही अल्लाह की जमाअ़त है और) अल्लाह की जमाअ़त (के लोग) ही ग़ालिब होनेवाले हैं।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا
الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ هُزُوًا وَّ

57. ऐ ईमानवालो! ऐसे लोगों में से जिन्हें तुमसे पहले किताब दी गई थी, उनको जो तुम्हारे दीन को हँसी और खेल बनाए हुए हैं और काफ़िरों को दोस्त मत बनाओ,

لَعِبًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَ الْكُفَّارَ اَوْلِيَآءَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۵۷﴾

और अल्लाह से डरते रहो बशर्ते कि तुम(वाक़ई) साहिबे ईमान हो।

وَ اِذَا نَادَيْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ اتَّخَذُوْهَا هُزُوًا وَّ لَعِبًا ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ﴿۵۸﴾

58. और जब तुम नमाज़ के लिए (लोगों को बसूरते अज़ान) पुकारते हो तो येह (लोग) उसे हँसी और खेल बना लेते हैं। येह इस लिए कि वोह ऐसे लोग हैं जो (बिल्कुल) अक़्ल ही नहीं रखते।

قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ هَلْ تَنْقِمُوْنَ مِنَّاۤ اِلَّاۤ اَنْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَمَاۤ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلُ ۙ وَاَنَّ اَكْثَرَكُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿۵۹﴾

59. (ऐ नबिय्ये मुकर्रम!) आप फ़रमा दीजिए, ऐ अह्ले किताब! तुम्हें हमारी कौन सी बात बुरी लगी है बजुज़ इस के कि हम अल्लाह पर और उस (किताब) पर जो हमारी तरफ़ नाज़िल की गई है और उन (किताबों) पर जो पहले नाज़िल की जा चुकी हैं ईमान लाए हैं और बेशक तुम्हारे अक्सर लोग ना फ़रमान हैं।

قُلْ هَلْ اُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكَ مَثُوْبَةً عِنْدَ اللّٰهِ ؕ مَنْ لَّعَنَهُ اللّٰهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمُ الْقِرَدَةَ وَ الْخَنَازِيْرَ وَ عَبَدَ الطَّاغُوْتَ ؕ اُولٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّ اَضَلُّ عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ﴿۶۰﴾

60. फ़रमा दीजिए : क्या मैं तुम्हें उस शख़्स से आगाह करूं जो सज़ा के ऐ'तिबार से अल्लाह के नज़दीक उससे (भी) बुरा है (जिसे तुम बुरा समझते हो, और येह वोह शख़्स है) जिस पर अल्लाह ने ला'नत की है और उस पर ग़ज़बनाक हुआ है और उसने उन (बुरे लोगों)में से (बा'ज़ को) बन्दर और (बा'ज़ को) सुव्वर बना दिया है, और (येह ऐसा शख़्स है) जिसने शैतान की (इताअ़तो) परस्तिश की है। येही लोग ठिकाने के ऐ'तिबार से बद तरीन और सीधी राह से बहुत ही भटके हए हैं।

وَ اِذَا جَآءُوْكُمْ قَالُوْۤا اٰمَنَّا وَ قَدْ دَّخَلُوْا بِالْكُفْرِ وَهُمْ قَدْ خَرَجُوْا بِهٖ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا كَانُوْا يَكْتُمُوْنَ ﴿۶۱﴾

61. और जब वोह (मुनाफ़िक़) तुम्हारे पास आते हैं (तो) केहते हैं हम ईमान ले आए हैं हालां कि वोह (तुम्हारी मजलिस में) कुफ़्र के साथ ही दाख़िल हुए और उसी (कुफ़्र) के साथ ही निकल गए, और अल्लाह उन (बातों) को खूब जानता है जिन्हें वोह छुपाए फिरते हैं।

وَتَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يُسَارِعُوْنَ فِي الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَاَكْلِهِمُ السُّحْتَ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٢﴾

62. और आप उनमें ब कसरत ऐसे लोग देखेंगे जो गुनाह और जुल्म और अपनी हराम ख़ोरी में बड़ी तेज़ी से कोशां होते हैं। बेशक वोह जो कुछ कर रहे हैं बहुत बुरा है।

لَوْلَا يَنْهٰىهُمُ الرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ عَنْ قَوْلِهِمُ الْاِثْمَ وَاَكْلِهِمُ السُّحْتَ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿٦٣﴾

63. उन्हें (रूहानी) दुरवेश और (दीनी) उ़लमा उनके क़ौले गुनाह और अक्ले ह़राम से मना' क्यों नहीं करते? बेशक वोह (भी बुराई के ख़िलाफ़ आवाज़ बुलंद न कर के) जो कुछ तैयार कर रहे हैं बहुत बुरा है।

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ يَدُ اللّٰهِ مَغْلُوْلَةٌ ؕ غُلَّتْ اَيْدِيْهِمْ وَلُعِنُوْا بِمَا قَالُوْا ۘ بَلْ يَدٰهُ مَبْسُوْطَتٰنِ ۙ يُنْفِقُ كَيْفَ يَشَآءُ ؕ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ؕ وَاَلْقَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ؕ كُلَّمَآ اَوْقَدُوْا نَارًا لِّلْحَرْبِ اَطْفَاَهَا اللّٰهُ ۙ وَيَسْعَوْنَ فِي الْاَرْضِ فَسَادًا ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٦٤﴾

وقف لازم

64. और यहूद केहते हैं कि अल्लाह का हाथ बंधा हुआ है (या'नी मआ़ज़ल्लाह वोह बख़ील है), उनके (अपने) हाथ बांधे जाएं और जो कुछ उन्होंने कहा उसके बाइस उन पर ला'नत की गई, बल्कि (ह़क़ येह है कि) उसके दोनों हाथ (जूदो सख़ा के लिए) कुशादह हैं, वोह जिस तरह चाहता है ख़र्च (या'नी बंदों पर अ़ताएं) फ़रमाता है, और (ऐ ह़बीब!) जो (किताब) आपकी तरफ़ आपके रबकी जानिबसे नाज़िल की गई है यक़ीनन उसमें से अक्सर लोगों को (ह़सदन) सरकशी और कुफ़्रमें और बढ़ा देगी, और हमने उनके दरमियान रोज़े क़ियामत तक अ़दावत और बुग़्ज़ डाल दिया है, जब भी येह लोग जंगकी आग भड़काते हैं अल्लाह उसे बुझा देता है और येह (रूए) ज़मीनमें फ़साद अंगेज़ी करते रहते हैं, और अल्लाह फ़साद करनेवालों को पसंद नहीं करता।

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْكِتٰبِ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَكَفَّرْنَا عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاَدْخَلْنٰهُمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٦٥﴾

65. और अगर अहले किताब (ह़ज़रत मुह़म्मद मुस्तफ़ा ﷺ पर) ईमान ले आते और तक़्वा इख़्तियार कर लेते तो हम उन (के दामन)से उनके सारे गुनाह मिटा देते और उन्हें यक़ीनन ने'मत वाली जन्नतों में दाख़िल कर देते।

وَلَوْ اَنَّهُمْ اَقَامُوا التَّوْرٰىةَ

66. और अगर वोह लोग तौरात और इन्जील और जो

وَالْاِنْجِيْلَ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ مِّنْ رَّبِّهِمْ لَاَكَلُوْا مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ ؕ مِنْهُمْ اُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ ؕ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ سَآءَ مَا يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٦﴾

कुछ (मज़ीद) उनकी तरफ़ उनके रबकी जानिबसे नाज़िल किया गया था (नाफ़िज़ और) क़ाइम कर देते तो (उन्हें माली वसाइल की इस क़दर वुस्अ़त अ़ता हो जाती कि) वोह अपने ऊपरसे (भी) और अपने पाँव के नीचे से (भी) खाते (मगर रिज़्क़ ख़त्म न होता)। उनमें से एक गिरोह मियाना रव (या'नी ए'तिदाल पसंद है), और उनमें से अक्सर लोग जो कुछ कर रहे हैं निहायत ही बुरा है।

يٰٓاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ؕ وَاِنْ لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهٗ ؕ وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٧﴾

67. ऐ (बर गुज़ीदह) रसूल! जो कुछ आपकी तरफ़ आपके रबकी जानिब से नाज़िल किया गया है (वोह सारा लोगों को) पहुंचा दीजिए, और अगर आपने (ऐसा) न किया तो आपने उस (रब) का पयग़ाम पहुंचाया ही नहीं, और अल्लाह (मुख़ालिफ़) लोगों से आप (की जान) की (ख़ुद) हिफ़ाज़त फ़रमाएगा। बेशक अल्लाह काफ़िरों को राहे हिदायत नहीं दिखाता।

قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لَسْتُمْ عَلٰى شَيْءٍ حَتّٰى تُقِيْمُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۚ فَلَا تَاْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٨﴾

68. फ़रमा दीजिए : ऐ अहले किताब! तुम (दीन में से) किसी शय पर भी नहीं हो, यहां तक कि तुम तौरात और इन्जील और जो कुछ तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे रबकी जानिबसे नाज़िल किया गया है (नाफ़िज़ और) क़ाइम कर दो, और (ऐ हबीब!) जो (किताब) आपकी तरफ़ आपके रब की जानिब से नाज़िल की गई है यक़ीनन उनमें से अक्सर लोगों को (हसदन) सरकशी और कुफ़्रमें बढ़ा देगी, सो आप गिरोहे कुफ़्फ़ार (की हालत) पर अफ़्सोस न किया करें।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالصّٰبِـُٔوْنَ وَالنَّصٰرٰى مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٩﴾

69. बेशक (ख़ुद को) मुसलमान (केहने वाले)और यहूदी और साबी (या'नी सितारा परस्त) और नसरानी जो भी (सच्चे दिल से ता'लीमाते मुहम्मदी के मुताबिक़) अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे तो उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न वोह ग़मगीन होंगे।

لَقَدْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَاءِيلَ وَأَرْسَلْنَا إِلَيْهِمْ رُسُلًا ۖ كُلَّمَا جَاءَهُمْ رَسُولٌ بِمَا لَا تَهْوَىٰ أَنْفُسُهُمْ فَرِيقًا كَذَّبُوا وَفَرِيقًا يَقْتُلُونَ ﴿٧٠﴾

70. बेशक हमने बनी इसराईल से अ़हद (भी) लिया और हमने उनकी तरफ़ (बहुत से) पयग़म्बर (भी) भेजे, (मगर) जब भी उन के पास कोई पयग़म्बर ऐसा हुक्म लाया जिसे उन के नफ़्स नहीं चाहते थे तो उन्होंने (अंबिया की) एक जमाअ़त को झुटलाया और एक को (मुसल्सल) क़त्ल करते रहे।

وَحَسِبُوا أَلَّا تَكُونَ فِتْنَةٌ فَعَمُوا وَصَمُّوا ثُمَّ تَابَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوا وَصَمُّوا كَثِيرٌ مِنْهُمْ ۚ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿٧١﴾

71. और वोह (साथ) येह ख़्याल करते रहे कि (अंबिया के क़त्लो तक्ज़ीब से) कोई अ़ज़ाब नहीं आएगा, सो वोह अंधे और बेहरे हो गए थे। फिर अल्लाहने उनकी तौबा कुबूल फ़रमा ली, फिर उनमें से अक्सर लोग (दोबारा) अंधे और बेहरे (या'नी हक़ देखने और सुनने से क़ासिर) हो गए, और अल्लाह उन कामों को ख़ूब देख रहा है जो वोह कर रहे हैं।

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ ۖ وَقَالَ الْمَسِيحُ يَا بَنِي إِسْرَاءِيلَ اعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ ۖ إِنَّهُ مَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوَاهُ النَّارُ ۖ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ﴿٧٢﴾

72. दर हक़ीक़त ऐसे लोग काफ़िर हो गए हैं जिन्होंने कहा कि अल्लाह ही मसीह़ इब्ने मरयम है हालां कि मसीह़ (عليه السلام)ने (तो येह) कहा था : ऐ बनी इसराईल! तुम अल्लाह की इ़बादत करो जो मेरा (भी) रब है और तुम्हारा (भी) रब है। बेशक जो अल्लाह के साथ शिर्क करेगा तो यक़ीनन अल्लाहने उस पर जन्नत ह़राम फ़रमा दी है और उसका ठिकाना दोज़ख़ है और ज़ालिमों के लिए कोई भी मददगार न होगा।

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ ثَالِثُ ثَلَاثَةٍ ۘ وَمَا مِنْ إِلَٰهٍ إِلَّا إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۚ وَإِنْ لَمْ يَنْتَهُوا عَمَّا يَقُولُونَ لَيَمَسَّنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٧٣﴾

وقف لازم

73. बेशक ऐसे लोग (भी) काफ़िर हो गए हैं जिन्हों ने कहा कि अल्लाह तीन (मा'बूदों) में से तीसरा है, हालां कि मा'बूदे यक्ता के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं, और अगर वोह उन (बेहूदा बातों) से जो वोह केह रहे हैं बाज़ न आए तो उनमें से काफ़िरों को दर्दनाक अ़ज़ाब ज़रूर पहोंचेगा।

أَفَلَا يَتُوبُونَ إِلَى اللَّهِ وَيَسْتَغْفِرُونَهُ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٧٤﴾

74. क्या येह लोग अल्लाह की बारगाह में रुजूअ़ नहीं करते और उस से मग़्फ़िरत तलब (नहीं) करते, हालां कि अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला बहुत रह़म फ़रमानेवाला है।

مَا الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۖ وَأُمُّهُ صِدِّيقَةٌ ۖ كَانَا يَأْكُلَانِ الطَّعَامَ ۗ انظُرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْآيَاتِ ثُمَّ انظُرْ أَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ﴿٧٥﴾

75. मसीह़ इब्ने मरयम (عليه السلام) रसूल के सिवा (कुछ) नहीं हैं, (या'नी ख़ुदा या ख़ुदा का बेटा और शरीक नहीं हैं), यक़ीनन उनसे पहले (भी) बहुत से रसूल गुज़र चुके हैं, और उनकी वालिदह बड़ी साह़िबे सिद्क़ (वलिय्या) थीं, वोह दोनों (मख़्लूक़ थे क्यों कि) खाना भी खाया करते थे। (ऐ ह़बीब!) देखिए हम उन (की रहनुमाई) के लिए किस तरह आयतों को वज़ाह़त से बयान करते हैं फिर मूलाह़िज़ा फ़रमाइये कि (इसके बावजूद) वोह किस तरह (ह़क़ से) फिरे जा रहे हैं।

قُلْ أَتَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا ۚ وَاللَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٧٦﴾

76. फ़रमा दीजिऐ : क्या तुम अल्लाह के सिवा उसकी इबादत करते हो जो न तुम्हारे लिए किसी नुक़्सान का मालिक है न नफ़' का, और अल्लाह ही तो ख़ूब सुननेवाला और ख़ूब जाननेवाला है।

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَغْلُوا فِي دِينِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعُوا أَهْوَاءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوا مِن قَبْلُ وَأَضَلُّوا كَثِيرًا وَضَلُّوا عَن سَوَاءِ السَّبِيلِ ﴿٧٧﴾

77. फ़रमा दीजिए : ऐ अह्ले किताब तुम अपने दीनमें नाह़क़ ह़दसे तजावुज़ न किया करो और न उन लोगों की ख़्वाहिशात की पैरवी किया करो जो (बे'सते मुह़म्मदी ﷺ से) पहले ही गुमराह हो चुके थे और बहुत से (और) लोगों को (भी) गुमराह कर गए और (बे'सते मुह़म्मदी ﷺ के बाद भी) सीधी राह से भटके रहे।

لُعِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن بَنِي إِسْرَائِيلَ عَلَىٰ لِسَانِ دَاوُودَ

78. बनी इसराईल में से जिन लोगों ने कुफ़्र किया था उन्हें दाऊद और ईसा इब्ने मरयम (عليهما السلام) की ज़बान पर

وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۚ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿٧٨﴾

(से) ला'नत की जा चुकी(है)। येह इस लिए कि उन्होंने ना फ़रमानी की और हद से तजावुज़ करते थे।

كَانُوْا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُ ۚ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٩﴾

79. (और उस ला'नत का एक सबब येह भी था कि) वोह जो बुरा काम करते थे एक दूसरे को उससे मना' नहीं करते थे। बेशक वोह काम बुरे थे जिन्हें वोह अंजाम देते थे।

تَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ اَنْفُسُهُمْ اَنْ سَخِطَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَفِي الْعَذَابِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿٨٠﴾

80. आप उन में से अक्सर लोगों को देखेंगे कि वोह काफ़िरों से दोस्ती रखते हैं। क्या ही बुरी चीज़ है जो उन्हों ने अपने (हिसाबे आख़िरत) के लिए आगे भेज रखी है (और वोह) येह कि अल्लाह उन पर (सख़्त) नाराज़ हो गया और वोह लोग हमेशा अ़ज़ाब ही में (गिरफ़्तार) रेहनेवाले हैं।

وَلَوْ كَانُوْا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالنَّبِيِّ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوْهُمْ اَوْلِيَآءَ وَلٰكِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٨١﴾

81. और अगर वोह अल्लाह पर और नबी (आख़िरुज़्ज़मां ﷺ) पर और उस (किताब) पर जो उनकी तरफ़ नाज़िल की गई है ईमान ले आते तो उन (दुश्मनाने इस्लाम) को दोस्त न बनाते, लेकिन उनमें से अक्सर लोग ना फ़रमान हैं।

لَتَجِدَنَّ اَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الْيَهُوْدَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚ وَلَتَجِدَنَّ اَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰى ۚ ذٰلِكَ بِاَنَّ مِنْهُمْ قِسِّيْسِيْنَ وَرُهْبَانًا وَّاَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٨٢﴾

82. आप यक़ीनन ईमानवालों के हक़्क़में बलिहाज़े अ़दावत सब लोगों से ज़ियादा सख़्त यहूदियों और मुशरिकों को पाएंगे, और आप यक़ीनन ईमानवालों के हक़्क़ में बलिहाज़े महब्बत सबसे क़रीबतर उन लोगों को पाएंगे जो केहते हैं बेशक हम नसारा हैं। येह इस लिए कि उनमें उ़लमाए (शरीअ़त भी) हैं और (इ़बादत गुज़ार) गोशा नशीन भी हैं और (नीज़) वोह तकब्बुर नहीं करते।

وَ اِذَا سَمِعُوْا مَاۤ اُنْزِلَ اِلَى الرَّسُوْلِ تَرٰۤى اَعْيُنَهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوْا مِنَ الْحَقِّ ۚ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَاۤ اٰمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿۸۳﴾

83. और (येही वजह है कि उनमें से बा'ज़ सच्चे ईसाई) जब इस (कुर्आन) को सुनते हैं जो रसूल (ﷺ) की तरफ़ उतारा गया है तो आप उनकी आँखों को अश्करेज़ देखते हैं। (येह आँसुओं का छलकना) उस हक़ के बाइस (है) जिसकी उन्हें मा'रेफ़त (नसीब) हो गई है। (साथ येह) अ़र्ज़ करते हैं : ऐ हमारे रब! हम (तेरे भेजे हुऐ हक़ पर) ईमान ले आए हैं सो तू हमें (भी हक़ की) गवाही देनेवालों के साथ लिख ले।

وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَا جَآءَنَا مِنَ الْحَقِّ ۙ وَ نَطْمَعُ اَنْ يُّدْخِلَنَا رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۸۴﴾

84- और हमें क्या है कि हम अल्लाह पर और उस हक़ (या'नी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ और कुर्आने मजीद) पर जो हमारे पास आया है, ईमान न लाएं, हालांकि हम (भी येह) तमा' रखते हैं कि हमारा रब हमें नेक लोगों के साथ (अपनी रहमतो जन्नत में) दाख़िल फ़रमा दे।

فَاَثَابَهُمُ اللّٰهُ بِمَا قَالُوْا جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَذٰلِكَ جَزَآءُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۸۵﴾

85- सो अल्लाहने उन की इस (मो'मिनानह) बात के इवज उन्हें सवाब में जन्नतें अ़ता फ़रमा दीं जिनके नीचे नेहरें बेह रही हैं (वोह) उन में हमेशा रहनेवाले हैं, और येही नेकूकारों की जज़ा है।

وَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَاۤ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿۸۶﴾

86- और जिन लोगोंने कुफ्र किया और हमारी आयतों को झुटलाया वोही लोग दोज़ख़ (में रेहने) वाले हैं।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحَرِّمُوْا طَيِّبٰتِ مَاۤ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكُمْ وَ لَا تَعْتَدُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿۸۷﴾

87- ऐ ईमानवालो! जो पाकीज़ा चीज़ें अल्लाहने तुम्हारे लिए ह़लाल की हैं उन्हें (अपने ऊपर) ह़राम मत ठेहराओ और न (ही) ह़दसे बढ़ो, बेशक अल्लाह ह़दसे तजावुज़ करनेवालों को पसंद नहीं फ़रमाता।

وَ كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا

88- और जो ह़लाल पाकीज़ा रिज़्क़ अल्लाहने तुम्हें अ़ता

طَيِّبًا ۖ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِیْۤ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿۸۸﴾

फ़रमाया है उसमें से खाया करो और अल्लाह से डरते रहो जिस पर तुम ईमान रखते हो।

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِیْۤ اَيْمَانِكُمْ وَ لٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَّدْتُّمُ الْاَيْمَانَ ۚ فَكَفَّارَتُهٗۤ اِطْعَامُ عَشَرَةِ مَسٰكِيْنَ مِنْ اَوْسَطِ مَا تُطْعِمُوْنَ اَهْلِيْكُمْ اَوْ كِسْوَتُهُمْ اَوْ تَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ ؕ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ ؕ ذٰلِكَ كَفَّارَةُ اَيْمَانِكُمْ اِذَا حَلَفْتُمْ ؕ وَاحْفَظُوْۤا اَيْمَانَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۸۹﴾

89- अल्लाह तुम्हारी बे मक़्सद (और ग़ैर सन्जीदह) क़स्मों में तुम्हारी गिरफ़्त नहीं फ़रमाता लेकिन तुम्हारी उन (सन्जीदह) क़स्मों पर गिरफ़्त फ़रमाता है जिन्हें तुम (इरादी तौर पर) मज़बूत कर लो, (अगर तुम ऐसी क़सम को तोड़ डालो) तो उसका कफ़्फ़ारह दस मिस्कीनों को औसत (दर्जे का) खाना खिलाना है जो तुम अपने घरवालों को खिलाते हो या (इसी तरह) उन (मिस्किनों) को कपड़े देना है या एक गर्दन (या'नी गुलाम या बांदी को) आज़ाद करना है, फिर जिसे (येह सब कुछ) मुयस्सर न हो तो तीन दिन रोज़ा रखना है। येह तुम्हारी क़स्मों का कफ़्फ़ारा है जब तुम खा लो (और फिर तोड़ बैठो) और अपनी क़स्मों की हिफ़ाज़त किया करो, इसी तरह़ अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतें खू़ब वाज़ेह़ फ़रमाता है ताकि तुम (उसके अह़काम की इताअ़त कर के) शुक्र गुज़ार बन जाओ।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَ الْاَنْصَابُ وَ الْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۹۰﴾

90- ऐ ईमानवालो! बेशक शराब और जुआ और (इ़बादत के लिए) नसब किए गए बुत और (क़िस्मत मा'लूम करने के लिए) फ़ाल के तीर (सब) नापाक शैतानी काम हैं। सो तुम उनसे (कुल्लिय्यतन) परहेज़ करो ताकि तुम फ़लाह पा जाओ।

اِنَّمَا يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ فِی الْخَمْرِ وَ الْمَيْسِرِ وَ يَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَ عَنِ الصَّلٰوةِ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ﴿۹۱﴾

91- शैतान येही चाहता है कि शराब और जूए के ज़रीए तुम्हारे दरमियान अ़दावत और कीना डलवा दे और तुम्हें अल्लाह के ज़िक्र से और नमाज़से रोक दे। क्या तुम (इन शर्र अंगेज़ बातों से) बाज़ आओगे?

وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَاحْذَرُوا ۚ فَإِن تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوا أَنَّمَا عَلَىٰ رَسُولِنَا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿٩٢﴾

92- और तुम अल्लाह की इताअ़त करो और रसूल (ﷺ)की इताअ़त करो और (ख़ुदा और रसूल ﷺ की मुख़ालिफ़त से) बचते रहो, फिर अगर तुमने रूगर्दानी की तो जान लो कि हमारे रसूल (ﷺ)पर सिर्फ़ (अह्‌काम का) वाज़ेह़ तौर पर पहुंचा देना ही है (और वोह येह फ़रीज़ा अदा फ़रमा चुके हैं)।

لَيْسَ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جُنَاحٌ فِيمَا طَعِمُوا إِذَا مَا اتَّقَوا وَّآمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ثُمَّ اتَّقَوا وَّآمَنُوا ثُمَّ اتَّقَوا وَّأَحْسَنُوا ۗ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ﴿٩٣﴾

ع ١٢ ٧ ٢

93- उन लोगों पर जो ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे उस (ह़राम) में कोई गुनाह नहीं जो वोह (हुक्मो हुरमत उतरने से पहले) खा पी चुके हैं जबकि वोह (बक़िया मुआ़मलात में) बचते रहे और (दीगर अह्‌कामे इलाही पर) ईमान लाए और आ'माले सालिहा पर अ़मल पैरा रहे, फिर (अह्‌कामे हुरमत के आ जाने के बाद भी इन सब हराम अश्या से) परहेज़ करते रहे और (उनकी हुरमत पर सिद्‌क़ दिलसे) ईमान लाए, फिर साहिबाने तक़्वा हुऐ और (बिल आख़िर) साहिबाने एह्‌सान (या'नी अल्लाह के ख़ास मह्‌बूबो मुक़र्रिबो नेकूकार बंदे) बन गए, और अल्लाह एह्‌सानवालों से मह्‌ब्बत फ़रमाता है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَيَبْلُوَنَّكُمُ اللَّهُ بِشَيْءٍ مِّنَ الصَّيْدِ تَنَالُهُ أَيْدِيكُمْ وَرِمَاحُكُمْ لِيَعْلَمَ اللَّهُ مَن يَخَافُهُ بِالْغَيْبِ ۚ فَمَنِ اعْتَدَىٰ بَعْدَ ذَٰلِكَ فَلَهُ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٩٤﴾

94- ऐ ईमानवालो! अल्लाह किसी क़दर (ऐसे) शिकार से तुम्हें ज़रूर आज़माएगा जिस तक तुम्हारे हाथ और तुम्हारे नेज़े पहुंच सक्ते हैं ताकि अल्लाह उस शख़्स की पहचान करवा दे जो उससे ग़ाइबाना डरता है फिर जो शख़्स उसके बाद (भी) ह़द से तजावुज़ कर जाए तो उसके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَأَنتُمْ حُرُمٌ ۚ وَمَن قَتَلَهُ مِنكُم مُّتَعَمِّدًا فَجَزَاءٌ مِّثْلُ مَا

95- ऐ ईमानवालो ! तुम एह्‌राम की हा़लतमें शिकार को मत मारा करो, और तुम में से जिसने (बहा़लते एह्‌राम) क़स्दन उसे मार डाला तो (उसका) बदला मवेशियों में से उसी के बराबर (कोई जानवर) है जिसे

قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ يَحْكُمُ بِهٖ ذَوَا
عَدْلٍ مِّنْكُمْ هَدْيًا بٰلِغَ الْكَعْبَةِ اَوْ
كَفَّارَةٌ طَعَامُ مَسٰكِيْنَ اَوْ عَدْلُ
ذٰلِكَ صِيَامًا لِّيَذُوْقَ وَبَالَ
اَمْرِهٖ ؕ عَفَا اللّٰهُ عَمَّا سَلَفَ ؕ وَ
مَنْ عَادَ فَيَنْتَقِمُ اللّٰهُ مِنْهُ ؕ وَ اللّٰهُ
عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿۹۵﴾

اُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ وَطَعَامُهٗ
مَتَاعًا لَّكُمْ وَ لِلسَّيَّارَةِ ۚ وَحُرِّمَ
عَلَيْكُمْ صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا ؕ
وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۹۶﴾
جَعَلَ اللّٰهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ
قِيٰمًا لِّلنَّاسِ وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَ
الْهَدْيَ وَالْقَلَآئِدَ ؕ ذٰلِكَ لِتَعْلَمُوْٓا
اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا
فِي الْاَرْضِ وَ اَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيْمٌ ﴿۹۷﴾
اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ وَ
اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۹۸﴾ ؕ
مَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ ؕ

उसने क़त्ल किया है जिसकी निस्बत तुम में से दो आ़दिल शख़्स फ़ैसला करें (कि वाक़ई येह जानवर उस शिकार के बराबर है बशर्ते कि) वोह क़ुरबानी का'बा पहुंचनेवाली हो या (उसका) कफ़्फ़ारा चंद मोहूताजों का खाना है (या'नी जानवरकी क़ीमत के बराबर मा'मूल का खाना जितने ही मोहूताजों को पूरा आ जाए) या उसके बराबर (या'नी जितने मोहताजों का खाना बने इस क़दर) रोज़े हैं ताकि वोह अपने किए (के बोझ) का मज़ा चख्खे। जो कुछ (इससे) पहले हो गुज़रा अल्लाहने उसे मुआ़फ़ फ़रमा दिया, और जो कोई (ऐसा काम) दोबारा करेगा तो अल्लाह उससे (ना फ़रमानी) का बदला ले लेगा, और अल्लाह बड़ा ग़ालिब बदला लेनेवाला है।

96- तुम्हारे लिए दरिया का शिकार और उसका खाना तुम्हारे और मुसाफ़िरों के फ़ाइदे की ख़ातिर ह़लाल कर दिया गया है और ख़ुश्की का शिकार तुम पर ह़राम किया गया है जब तककि तुम ह़ालते एह़राम में हो, और अल्लाह से डरते रहो जिसकी (बारगाह की) तरफ़ तुम (सब) जमा' किए जाओगे।

97- अल्लाहने इ़ज़्ज़त (व अदब) वाले घर का'बा को लोगों के (दीनी व दुन्यवी उमूर में) क़ियामे (अम्न) का बाइस बना दिया है और हुरमतवाले महीनेको और का'बा की क़ुरबानी को और गले में अ़लामती पट्टेवाले जानवरों को भी (जो ह़रमे मक्का में लाए गएं हों सबको उसी निस्बत से इ़ज़्ज़तो एह़तिराम अ़ता कर दिया गया है), येह इस लिए कि तुम्हें इ़ल्म हो जाए कि जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है अल्लाह ख़ूब जानता है और अल्लाह हर चीज से बहुत वाक़िफ़ है।

98 जान लो कि अल्लाह सख़्त गिरफ़्तवाला है और येह कि अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला बहुत रह़म फ़रमाने वाला (भी) है।

وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَ مَا تَكْتُمُوْنَ ﴿٩٩﴾

99- रसूल (ﷺ)पर (अह्‌काम कामिलन) पहुंचा देने के सिवा (कोई और ज़िम्मेदारी) नहीं, और अल्लाह वोह (सब) कुछ जानता है जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो।

قُلْ لَّا يَسْتَوِي الْخَبِيْثُ وَ الطَّيِّبُ وَ لَوْ اَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيْثِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰۤاُولِي الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿١٠٠﴾

100- फ़रमा दीजिए : पाक और नापाक (दोनों) बराबर नहीं हो सक्ते (ऐ मुख़ातिब!) अगरचे तुम्हें नापाक (चीज़ों) की कसरत भली लगे। पस ऐ अक़्लमन्द लोगो! तुम (कसरतो क़िल्लत का फ़र्क़ देखने की बजाए) अल्लाह से डरा करो ताकि तुम फ़लाह पा जाओ।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَسْـَٔلُوْا عَنْ اَشْيَآءَ اِنْ تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ ۚ وَ اِنْ تَسْـَٔلُوْا عَنْهَا حِيْنَ يُنَزَّلُ الْقُرْاٰنُ تُبْدَ لَكُمْ ؕ عَفَا اللّٰهُ عَنْهَا ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿١٠١﴾

101- ऐ ईमानवालो! तुम ऐसी चीज़ों की निस्बत सवाल मत किया करो (जिन पर कुरआन ख़ामोश हो) कि अगर वोह तुम्हारे लिए ज़ाहिर कर दी जाएं तो तुम्हें मशक़्क़त में डाल दें (और तुम्हें बुरी लगें), और अगर तुम उनके बारे में उस वक़्त सवाल करोगे जबकि कुरआन नाज़िल किया जा रहा है तो वोह तुम पर (नुज़ूले हुक्म के ज़रीए) ज़ाहिर (या'नी मुतअ़य्यन) कर दी जाएंगी (जिस से तुम्हारी सवाब दीद ख़त्म हो जाएगी और तुम एक ही हुक्म के पाबंद हो जाओगे)। अल्लाहने इन (बातों और सवालों) से (अब तक) दरगुज़र फ़रमाया है, और अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला बुर्दबार है।

قَدْ سَاَلَهَا قَوْمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ثُمَّ اَصْبَحُوْا بِهَا كٰفِرِيْنَ ﴿١٠٢﴾

102- बेशक तुम से पहले एक क़ौमने ऐसी (ही) बातें पूछी थीं, (जब वोह बयान कर दी गईं) फिर वोह उनके मुन्किर हो गए।

مَا جَعَلَ اللّٰهُ مِنْۢ بَحِيْرَةٍ وَّ لَا سَآئِبَةٍ وَّ لَا وَصِيْلَةٍ وَّ لَا حَامٍ ۙ وَّ لٰكِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ وَ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٠٣﴾

103- अल्लाहने न तो बहीरह को (अम्रे शरई) मुक़र्रर किया है, और न साइबह को और न वसीलह को और न हाम को, लेकिन काफ़िर लोग अल्लाह पर झूटा बोहतान बांधते हैं, और उनमें से अक्सर अक़्ल नहीं रखते।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَىٰ مَآ أَنزَلَ اللَّهُ وَإِلَى الرَّسُولِ قَالُوا حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَآءَنَا ۚ أَوَلَوْ كَانَ آبَآؤُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ شَيْـًٔا وَلَا يَهْتَدُونَ ﴿١٠٤﴾

104– और जब उनसे कहा जाता है कि इस (क़ुरआन) की तरफ़ जिसे अल्लाहने नाज़िल फ़रमाया है और रसूल (मुकर्रम ﷺ) की तरफ़ रुजूअ़ करो तो केहते हैं, हमें वोही (तरीक़ा) काफ़ी है जिस पर हमने अपने बाप दादा को पाया, अगरचे उनके बाप दादा न कुछ (दीनका) इल्म रखते हों और न ही हिदायत याफ़्ता हों।

يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَيْكُمْ أَنفُسَكُمْ ۖ لَا يَضُرُّكُم مَّن ضَلَّ إِذَا اهْتَدَيْتُمْ ۚ إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٠٥﴾

105– ऐ ईमानवालो! तुम अपनी जानों की फ़िक्र करो, तुम्हें कोई गुमराह नुक़्सान नहीं पहुंचा सक्ता अगर तुम हिदायत याफ़्ता हो चुके हो, तुम सबको अल्लाह ही की तरफ़ पलटना है, फिर वोह तुम्हें उन कामों से ख़बरदार फ़रमा देगा जो तुम करते रहे थे।

يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِينَ الْوَصِيَّةِ اثْنَانِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنكُمْ أَوْ آخَرَانِ مِنْ غَيْرِكُمْ إِنْ أَنتُمْ ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَأَصَابَتْكُم مُّصِيبَةُ الْمَوْتِ ۚ تَحْبِسُونَهُمَا مِن بَعْدِ الصَّلَوٰةِ فَيُقْسِمَانِ بِاللَّهِ إِنِ ارْتَبْتُمْ لَا نَشْتَرِي بِهِ ثَمَنًا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۙ وَلَا نَكْتُمُ شَهَادَةَ ۙ اللَّهِ إِنَّآ إِذًا لَّمِنَ الْآثِمِينَ ﴿١٠٦﴾

106– ऐ ईमानवालो! जब तुम में से किसी की मौत आए तो वसिय्यत करते वक़्त तुम्हारे दरमियान गवाही (के लिए) तुम में से दो आ़दिल शख़्स हों, या तुम्हारे ग़ैरों में से (कोई) दूसरे दो शख़्स हों अगर तुम मुल्क में सफ़र कर रहे हो फिर (उसी ह़ाल में) तुम्हें मौत की मुसीबत आ पहुंचे तो तुम उन दोनों को नमाज़ के बाद रोक लो, अगर तुम्हें (उन पर) शक गुज़रे तो वोह दोनों अल्लाहकी क़स्में खाएं कि हम इसके इवज़ कोई क़ीमत ह़ासिल नहीं करेंगे ख़्वाह कोई (कितना ही) क़राबतदार हो और न हम अल्लाह की (मुक़र्रर कर्दह) गवाही को छुपाएंगे (अगर छुपाएं तो) हम उसी वक़्त गुनाहगारों में हो जाएंगे।

فَإِنْ عُثِرَ عَلَىٰٓ أَنَّهُمَا اسْتَحَقَّآ إِثْمًا فَآخَرَانِ يَقُومَانِ مَقَامَهُمَا مِنَ

107– फिर अगर इस (बात)की इत्तिलाअ़ हो जाए कि वोह दोनों (सह़ीह़ गवाही छुपाने के बाइस) गुनाह के

الَّذِيْنَ اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْاَوْلَيٰنِ فَيُقْسِمٰنِ بِاللّٰهِ لَشَهَادَتُنَآ اَحَقُّ مِنْ شَهَادَتِهِمَا وَمَا اعْتَدَيْنَآ ۖ اِنَّآ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٠٧﴾

सज़ावार हो गए हैं तो उनकी जगह दो और (गवाह) उन लोगों में से खड़े हो जाएं जिनका हक़ पहले दो (गवाहों)ने दबाया है (वोह मय्यित के ज़ियादा क़राबतदार हों) फिर वोह अल्लाह की क़सम खाएं कि बेशक हमारी गवाही उन दोनों की गवाही से ज़ियादा सच्ची है और हम (हक़ से) तजावुज़ नहीं कर रहे, (अगर ऐसा करें तो) हम इसी वक़्त ज़ालिमों में से हो जाएंगे।

ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَنْ يَّاْتُوْا بِالشَّهَادَةِ عَلٰى وَجْهِهَآ اَوْ يَخَافُوْٓا اَنْ تُرَدَّ اَيْمَانٌۢ بَعْدَ اَيْمَانِهِمْ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاسْمَعُوْا ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿١٠٨﴾ ع ۱۴/۸

108- येह (तरीक़ा) इस बात से क़रीबतर है कि लोग सहीह़ तौर पर गवाही अदा करें या इस बातसे ख़ौफ़ ज़दा हों कि(ग़लत गवाही की सूरत में) उनकी क़स्मों के बाद (वोही) क़स्में (ज़ियादा क़रीबी वुरसाअ की तरफ़) लौटाई जाएंगी, और अल्लाह से डरते रहो और (उस के अह़काम को ग़ौर से) सुना करो, और अल्लाह ना फ़रमान क़ौम को हिदायत नहीं देता।

يَوْمَ يَجْمَعُ اللّٰهُ الرُّسُلَ فَيَقُوْلُ مَاذَآ اُجِبْتُمْ ؕ قَالُوْا لَا عِلْمَ لَنَا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿١٠٩﴾

109- (उस दिन से डरो) जिस दिन अल्लाह तमाम रसूलों को जमा' फ़रमाएगा फिर (उनसे) फ़रमाएगा कि तुम्हें (तुम्हारी उम्मतों की तरफ़ से दा'वते दीन का) क्या जवाब दिया गया था? वोह (हुज़ूरे इलाही में) अ़र्ज़ करेंगे : हमें कुछ इल्म नहीं, बेशक तू ही ग़ैब की सब बातों का ख़ूब जाननेवाला है।

اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ اذْكُرْ نِعْمَتِىْ عَلَيْكَ وَعَلٰى وَالِدَتِكَ ۘ اِذْ اَيَّدْتُّكَ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ۗ تُكَلِّمُ النَّاسَ فِى الْمَهْدِ وَكَهْلًا ۚ وَاِذْ عَلَّمْتُكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ۚ وَاِذْ تَخْلُقُ

وقف لازم

110- जब अल्लाह फ़रमाएगा : ऐ ईसा इब्ने मरयम ! तुम अपने ऊपर और अपनी वालिदह पर मेरा एह़सान याद करो जब मैंने पाक रूह़ (जिब्राईल) के ज़रीए तुम्हें तक़्वियत बख़्शी, तुम गहवारे में (बएह़्दे तुफ़ूलियत) और पुख़्ता उम्री में (बएह़दे तब्लीग़ो रिसालत यक्सां अंदाज़ से) लोगों से गुफ़्तगू करते थे और जब मैं ने तुम्हें किताब और ह़िक्मत (व दानाई) और तौरात और इन्जील सिखाई और जब तुम मेरे हुक्म से मिट्टी के गारे से परिन्दे

مِنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ بِاِذْنِيْ فَتَنْفُخُ فِيْهَا فَتَكُوْنُ طَيْرًا بِاِذْنِيْ وَتُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ بِاِذْنِيْ ۚ وَ اِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتٰى بِاِذْنِيْ ۚ وَ اِذْ كَفَفْتُ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَنْكَ اِذْ جِئْتَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١١٠﴾

की शक्ल के मानिन्द (मूर्ति) बनाते थे फिर तुम उसमें फूंक मारते थे तो वोह (मूर्ति) मेरे हुक्म से परिन्दा बन जाती थी और जब तुम मादरज़ाद अँधों और कोढ़ियों (या'नी बर्सज़दा मरीज़ों) को मेरे हुक्म से अच्छा कर देते थे, और जब तुम मेरे हुक्म से मुर्दों को (ज़िन्दा कर के क़ब्र से) निकाल (खड़ा कर) देते थे और जब मैं ने बनी इसराईल को तुम्हारे (क़त्ल) से रोक दिया था जब कि तुम उनके पास वाज़ेह निशानियां ले कर आए तो उनमें से काफ़िरों ने (येह) केह दिया कि येह तो खुले जादू के सिवा कुछ नहीं।

وَ اِذْ اَوْحَيْتُ اِلَى الْحَوَارِيّٖنَ اَنْ اٰمِنُوْا بِيْ وَ بِرَسُوْلِيْ ۚ قَالُوْٓا اٰمَنَّا وَاشْهَدْ بِاَنَّنَا مُسْلِمُوْنَ ﴿١١١﴾

111- और जब मैं ने हवारियों के दिलमें (येह) डाल दिया कि तुम मुझ पर और मेरे पयग़म्बर (ईसा عليه السلام)पर ईमान लाओ, (तो) उन्हों ने कहा : हम ईमान ले आए और तू गवाह हो जा कि हम यक़ीनन मुसलमान हैं।

اِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيْعُ رَبُّكَ اَنْ يُّنَزِّلَ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ ۭ قَالَ اتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١١٢﴾

112- और (येह भी याद करो) जब हवारियों ने कहा : ऐ ईसा इब्ने मरयम! क्या तुम्हारा रब ऐसा कर सक्ता है कि हम पर आस्मान से (खानेका) ख़्वान उतार दे? (तो) ईसा (عليه السلام) ने (जवाबन) कहा : (लोगो!) अल्लाह से डरो अगर तुम साहिबे ईमान हो।

قَالُوْا نُرِيْدُ اَنْ نَّاْكُلَ مِنْهَا وَ تَطْمَىِٕنَّ قُلُوْبُنَا وَ نَعْلَمَ اَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا وَنَكُوْنَ عَلَيْهَا مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿١١٣﴾

113- वोह केहने लगे : हम (तो सिर्फ़) येह चाहते हैं कि उसमें से खाएं और हमारे दिल मुत्मइन हो जाएं और हम (मज़ीद यक़ीन से) जान लें कि आपने हम से सच कहा है और हम उस (ख़्वाने ने'मत के उतरने) पर गवाह हो जाएं।

قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَآ اَنْزِلْ عَلَيْنَا مَآىِٕدَةً مِّنَ السَّمَآءِ تَكُوْنُ لَنَا عِيْدًا لِّاَوَّلِنَا وَاٰخِرِنَا وَاٰيَةً مِّنْكَ ۚ وَارْزُقْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿۱۱۴﴾

114– ईसा इब्ने मरयम (عليه السلام) ने अर्ज किया : ऐ अल्लाह! ऐ हमारे रब! हम पर आस्मान से ख़्वाने (ने'मत)नाज़िल फ़रमा दे कि(उसके उतरने का दिन) हमारे लिए ईद हो जाए, हमारे अगलों के लिए (भी) और हमारे पिछलों के लिए (भी), और (वोह ख़्वान) तेरी तरफ़ से निशानी हो, और हमें रिज़्क़ अ़ता कर और तू सबसे बेहतर रिज़्क़ देनेवाला है।

قَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ بَعْدُ مِنْكُمْ فَاِنِّيْٓ اُعَذِّبُهٗ عَذَابًا لَّآ اُعَذِّبُهٗٓ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۱۵﴾

115– अल्लाह ने फ़रमाया : बेशक मैं उसे तुम पर नाज़िल फ़रमाता हूं, फिर तुम में से जो शख़्स (उस के) बाद कुफ़्र करेगा तो यक़ीनन मैं उसे ऐसा अ़ज़ाब दूंगा कि तमाम जहानवालों में से किसी को भी ऐसा अ़ज़ाब न दूंगा।

وَاِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ ءَاَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُوْنِيْ وَاُمِّيَ اِلٰهَيْنِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ قَالَ سُبْحٰنَكَ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ اَنْ اَقُوْلَ مَا لَيْسَ لِيْ ۤ بِحَقٍّ ۭ اِنْ كُنْتُ قُلْتُهٗ فَقَدْ عَلِمْتَهٗ ۭ تَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِيْ وَلَآ اَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِكَ ۭ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿۱۱۶﴾

116– और जब अल्लाह फ़रमाएगा : ऐ ईसा इब्ने मरयम! क्या तुमने लोगों से कहा था कि तुम मुझको और मेरी मां को अल्लाह के सिवा दो मा'बूद बना लो? वोह अ़र्ज़ करेंगे : तू पाक है, मेरे लिए येह (रवा) नहीं कि मैं ऐसी बात कहूं जिसका मुझे कोई हक़ नहीं। अगर मैं ने येह बात कही होती तो यक़ीनन तू उसे जानता, तू हर उस (बात) को जानता है जो मेरे दिलमें है और मैं उन (बातों) को नहीं जानता जो तेरे इल्म में हैं। बेशक तू ही ग़ैब की सब बातों को खूब जाननेवाला है।

مَا قُلْتُ لَهُمْ اِلَّا مَآ اَمَرْتَنِيْ بِهٖٓ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ ۚ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا مَّا دُمْتُ

117– मैंने उन्हें सिवाए इस (बात) केकुछ नहीं कहा था जिसका तूने मुझे हुक्म दिया था कि तुम (सिर्फ़) अल्लाह की इ़बादत किया करो जो मेरा (भी) रब है और तुम्हारा (भी) रब है और मैं उन (के अ़क़ाइदो आ'माल) पर (उस

فِيهِمْ ۚ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنتَ أَنتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ ۚ وَأَنتَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿١١٧﴾

वक़्त तक) ख़बरदार रहा जब तक मैं उन लोगों में मौजूद रहा । फिर जब तूने मुझे उठा लिया तो तूही उन (के हा़लात)पर निगेहबान था, और तू हर चीज़ पर गवाह है।

إِن تُعَذِّبْهُمْ فَإِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۖ وَإِن تَغْفِرْ لَهُمْ فَإِنَّكَ أَنتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١١٨﴾

118- अगर तू उन्हें अ़ज़ाब दे तो वोह तेरे (ही) बन्दे हैं और अगर तू उन्हें बख़्श दे तो बेशक तू ही बड़ा ग़ालिब ह़िक्मतवालाहै।

قَالَ اللَّهُ هَٰذَا يَوْمُ يَنفَعُ الصَّادِقِينَ صِدْقُهُمْ ۚ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ رَّضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١١٩﴾

119- अल्लाह फ़रमाएगा : येह ऐसा दिन है (जिस में) सच्चे लोगों को उनका सच फ़ाइदा देगा । उनके लिए जन्नतें हैं जिनके नीचे नेहरें जारी हैं। वोह उनमें हमेशा हमेशा रहनेवाले हैं। अल्लाह उनसे राज़ी हो गया और वोह उस से राज़ी हो गए, येही (रज़ाऐ इलाही) सब से बड़ी कामयाबी है।

لِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا فِيهِنَّ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٢٠﴾

120- तमाम आस्मानों और ज़मीन की और जो कुछ उनमें है (सब की) बादशाही अल्लाह ही के लिए है, और वोह हर चीज़ पर बड़ा क़ादिर है।

आयातुहा 165 | 6 सूरतुल अन्आ़मि मक्कियतुन 55 | रुकूआ़तुहा 20

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمَاتِ وَالنُّورَ ۖ ثُمَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ ﴿١﴾

1- तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जिसने आस्मानों और ज़मीनको पैदा फ़रमाया और तारीकियों और रौशनी को बनाया, फिर भी काफ़िर लोग (मा'बूदाने बातिला को) अपने रब के बराबर ठेहराते हैं।

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن طِينٍ ثُمَّ

2- (अल्लाह) वोही है जिसने तुम्हें मिट्टी के गारे से पैदा

قَضٰٓى اَجَلًا ؕ وَ اَجَلٌ مُّسَمًّى عِنْدَهٗ ثُمَّ اَنْتُمْ تَمْتَرُوْنَ ۝٢

फ़रमाया (या'नी कुर्रऐ अरज़ी पर हयाते इन्सानी की कीमियाई इब्तिदा इससे की)। फिर उसने (तुम्हारी मौत की) मीआ़द मुक़र्रर फ़रमा दी, और (इन्इक़ादे क़ियामत का) मुअ़य्यना वक़्त उसी के पास (मुक़र्रर) है फिर(भी) तुम शक करते हो।

وَهُوَ اللّٰهُ فِى السَّمٰوٰتِ وَ فِى الْاَرْضِ ؕ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُوْنَ ۝٣

3- और आस्मानोंमें और ज़मीनमें वोही अल्लाह ही (मा'बूदे बर हक़्क़) है, जो तुम्हारी पोशीदह और तुम्हारी ज़ाहिर (सब बातों) को जानता है और जो कुछ तुम कमा रहे हो वोह (उसे भी) जानता है।

وَ مَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ۝٤

4- और उनके रबकी निशानियों में से उनके पास कोई निशानी नहीं आती मगर (येह कि) वोह उससे रूगर्दानी करते हैं।

فَقَدْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ؕ فَسَوْفَ يَاْتِيْهِمْ اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٥

5- फिर बेशक उन्हों ने (इसी तरह) हक़्क़ (या'नी क़ुर्आन) को (भी) झुटला दिया जब वोह उनके पास (उलूही निशानी के तौर पर) आया, पस अ़नक़रीब उनके पास उसकी ख़बरें आया चाहती हैं जिसका वोह मज़ाक़ उड़ाते थे।

اَلَمْ يَرَوْا كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ مَّكَّنّٰهُمْ فِى الْاَرْضِ مَا لَمْ نُمَكِّنْ لَّكُمْ وَ اَرْسَلْنَا السَّمَآءَ عَلَيْهِمْ مِّدْرَارًا ۪ وَّ جَعَلْنَا الْاَنْهٰرَ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَاَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ۝٦

6- क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने उनसे पहले कितनी ही क़ौमों को हलाक कर दिया जिन्हें हमने ज़मीनमें (ऐसा मुस्तह्कम) इक़्तिदार दिया था कि ऐसा इक़्तिदार (और जमाव) तुम्हें भी नहीं दिया और हमने उन पर लगातार बरसने वाली बारिश भेजी और हमने उन (के मकानातो महल्लात) के नीचे से नेहरें बहाईं फिर (इतनी पुर इशरत ज़िन्दगी देने के बावजूद) हमने उनके गुनाहों के बाइस उन्हें हलाक कर दिया और उनके बाद हमने दूसरी उम्मतों को पैदा किया।

وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتٰبًا فِىْ قِرْطَاسٍ فَلَمَسُوْهُ بِاَيْدِيْهِمْ لَقَالَ الَّذِيْنَ

7- और हम अगर आप पर कागज़ पे लिखी हुई किताब नाज़िल फ़रमा देते फिर येह लोग उसे अपने हाथों से छू भी

كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧﴾

लेते तब (भी) काफ़िर लोग (येही) केहते कि येह सरीह़ जादू के सिवा (कुछ) नहीं।

وَقَالُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ مَلَكٌ ؕ وَلَوْ اَنْزَلْنَا مَلَكًا لَّقُضِيَ الْاَمْرُ ثُمَّ لَا يُنْظَرُوْنَ ﴿٨﴾

8- और वोह (कुफ़्फ़ार) केहते हैं कि इस (रसूले मुकर्रम) पर कोई फ़रिश्ता क्यों न उतारा गया (जिसे हम ज़ाहिरन देख सक्ते और वोह उनकी तस्दीक़ कर देता) और हम अगर फ़रिश्ता उतार देते तो (उनका) काम ही तमाम हो चुका होता फिर उन्हें (ज़रा भी) मोहलत न दी जाती।

وَلَوْ جَعَلْنٰهُ مَلَكًا لَّجَعَلْنٰهُ رَجُلًا وَّلَلَبَسْنَا عَلَيْهِمْ مَّا يَلْبِسُوْنَ ﴿٩﴾

9- और अगर हम रसूलको फ़रिश्ता बनाते तो उसे भी आदमी ही (की सूरत) बनाते और हम उन पर (तब भी) वही शुब्हा वारिद कर देते जो शुब्हा (व इल्तिबास) वोह (अब) कर रहे हैं (या'नी उसकी भी ज़ाहिरी सूरत देख कर केहते कि येह हमारी मिस्ल बशर है)।

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿١٠﴾ ع

10- और बेशक आपसे पहले (भी) रसूलों के साथ मज़ाक़ किया जाता रहा। फिर उनमें से मस्ख़रापन करनेवालों को (ह़क़ के) उसी (अ़ज़ाब)ने आ घेरा जिसका वोह मज़ाक़ उड़ाते थे।

قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ ثُمَّ انْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١١﴾

11- फ़रमा दीजिए कि तुम ज़मीन पर चलो फिरो, फिर (निगाहे इब्रत से) देखो कि (ह़क़ को) झुटलानेवालों का अंजाम कैसा हुवा।

قُلْ لِّمَنْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قُلْ لِّلّٰهِ ؕ كَتَبَ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ؕ لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٢﴾

12- आप (उनसे सवाल) फ़रमाएं कि आस्मानों और ज़मीनमें जो कुछ है किसका है? (फिर येह भी) फ़रमा दें कि अल्लाह ही का है, उसने अपनी ज़ात (के ज़िम्मए करम) पर रह़मत लाज़िम फ़रमा ली है, वोह तुम्हें रोज़े क़ियामत जिसमें कोई शक नहीं ज़रूर जमा' फ़रमाएगा। जिन्होंने अपनी जानों को (दाइमी) ख़सारे में डाल दिया है, सो वोह ईमान नहीं लाएंगे।

وَلَهٗ مَا سَكَنَ فِي الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ؕ

13- और वोह (सारी मख़्लूक़) जो रात में और दिन में

وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۱۳﴾

आराम करती है, उसी की है, और वोह खूब सुननेवाला जाननेवाला है।

قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرِ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ
وَلَا يُطْعَمُ ؕ قُلْ اِنِّیْۤ اُمِرْتُ اَنْ
اَكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَسْلَمَ وَلَا تَكُوْنَنَّ
مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۱۴﴾

14- फ़रमा दीजिए : क्या मैं किसी दूसरे को (इबादत के लिए अपना) दोस्त बना लूं (उस) अल्लाह के सिवा जो आस्मानों और ज़मीन का पैदा करनेवाला है और वोह (सब को) खिलाता है और (खुद उसे) खिलाया नहीं जाता। फ़रमा दें : मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं (उसके हुज़ूर) सबसे पहला (सर झुकानेवाला) मुसलमान हो जाऊं और (येह भी फ़रमा दिया गया है कि) तुम मुशरिकों में से हरगिज़ न हो जाना।

قُلْ اِنِّیْۤ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّیْ
عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿۱۵﴾

15- फ़रमा दीजिए कि बेशक मैं (तो) बडे अज़ाब के दिनसे डरता हूं, अगर मैं अपने रब की ना फ़रमानी करूं (सो येह कैसे मुम्किन है?)।

مَنْ يُّصْرَفْ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ
رَحِمَهٗ ؕ وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ ﴿۱۶﴾

16- उस दिन जिस शख़्स से वोह(अज़ाब) फेर दिया गया तो बेशक (अल्लाह ने) उस पर रहम फ़रमाया, और येही (उख़्वी बख़्शिश) खुली कामयाबी है।

وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا
كَاشِفَ لَهٗۤ اِلَّا هُوَ ؕ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ
بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۷﴾

17- और अगर अल्लाह तुझे कोई तक्लीफ़ पहुंचाए तो उसके सिवा उसे कोई दूर करनेवाला नहीं, और अगर वोह तुझे कोई भलाई पहुंचाए तो वोह हर चीज़ पर खूब क़ादिर है।

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ ؕ وَهُوَ
الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿۱۸﴾

18- और वोही अपने बंदों पर ग़ालिब है, और वोह बड़ी हिक्मतवाला ख़बरदार है।

قُلْ اَیُّ شَیْءٍ اَكْبَرُ شَهَادَةً ؕ قُلِ
اللّٰهُ ۙ شَهِيْدٌۢ بَيْنِیْ وَبَيْنَكُمْ ۫
وَاُوْحِیَ اِلَیَّ هٰذَا الْقُرْاٰنُ لِاُنْذِرَكُمْ
بِهٖ وَمَنْۢ بَلَغَ ؕ اَئِنَّكُمْ لَتَشْهَدُوْنَ

19- आप (उनसे दरयाफ़्त) फ़रमाइए कि गवाही देने में सब से बढ़ कर कौन है? आप (ही) फ़रमा दीजिए कि अल्लाह मेरे और तुम्हारे दरमियान गवाह है, और मेरी तरफ़ येह क़ुर्आन इस लिए वही किया गया है कि इसके ज़रीए तुम्हें और हर उस शख़्स को जिस तक (येह क़ुर्आन)

اَنَّ مَعَ اللّٰهِ اٰلِهَةً اُخْرٰى ؕ قُلْ لَّاۤ اَشْهَدُ ۚ قُلْ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّ اِنَّنِيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿۱۹﴾

पहुंचे डर सुनाऊं। क्या तुम वाक़ई इस बातकी गवाही देते हो कि अल्लाह के साथ दूसरे मा'बूद (भी) हैं? आप फ़रमा दें : मैं(तो इस ग़लत बात की) गवाही नहीं देता, फ़रमा दीजिए : बस मा'बूद तो वोही एक ही है और मैं उन (सब) चीज़ों से बेज़ार हूं जिन्हें तुम (अल्लाह का) शरीक ठेहराते हो।

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ ۘ اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۲۰﴾

20- वोह लोग जिन्हें हमने किताब दी थी इस (नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां ﷺ) को वैसे ही पहचानते हैं जैसे अपने बेटों को पहचानते हैं, जिन्हों ने अपनी जानों को (दाइमी) ख़सारे में डाल दिया है सो वोह ईमान नहीं लाएंगे।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۲۱﴾

21- और उससे बड़ा ज़ालिम कौन हो सक्ता है जिसने अल्लाह पर झूटा बोहतान बांधा या उसने उसकी आयतों को झुटलाया? बेशक ज़ालिम लोग फ़लाह नहीं पाएंगे।

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْۤا اَيْنَ شُرَكَآؤُكُمُ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿۲۲﴾

22- और जिस दिन हम सब को जमा' करेंगे फिर हम उन लोगों से कहेंगे जो शिर्क करते थे, तुम्हारे वोह शरीक कहां हैं जिन्हें तुम (मा'बूद) ख़याल करते थे?

ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْا وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ ﴿۲۳﴾

23- फिर उनकी (कोई) मा'ज़िरत न रहेगी बजुज़ इसके कि वोह कहें (गे:) हमें अपने रब अल्लाह की क़सम है हम मुशरिक न थे।

اُنْظُرْ كَيْفَ كَذَبُوْا عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۲۴﴾

24- देखिए उन्हों ने खुद अपने ऊपर कैसा झूट बोला और जो बोहतान वोह (दुनिया में) तराशा करते थे वोह उनसे ग़ाइब हो गया।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ ۚ وَجَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْۤ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ؕ وَاِنْ

25- और उनमें कुछ वोह (भी) हैं जो आपकी तरफ़ कान लगाए रहते हैं और हमने उनके दिलों पर (उनकी अपनी बद निय्यती के बाइस) परदे डाल दिए हैं (सो अब उनके लिए मुम्किन नहीं) कि वोह इस (क़ुर्आन) को

يَرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ؕ
حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْكَ يُجَادِلُوْنَكَ
يَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ
اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٥﴾

समझ सकें और (हमने) उनके कानों में डाट दे दी है, और अगर वोह तमाम निशानियों को (खुला भी) देख लें तो (भी) उस पर ईमान नहीं लाएंगे। हत्ता कि जब आपके पास आते हैं, आपसे झगड़ा करते हैं (उस वक़्त) काफ़िर लोग केहते हैं कि येह (क़ुर्आन) पहले लोगों की झूटी कहानियों के सिवा (कुछ) नहीं।

وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْـَٔوْنَ عَنْهُ ۚ
وَاِنْ يُّهْلِكُوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا
يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٦﴾

26- और वोह (दूसरों को) इस (नबी की इत्तिबाअ़ और क़ुर्आन) से रोकते हैं और (खुद भी) इससे दूर भागते हैं, और वोह महज़ अपनी ही जानों को हलाक कर रहे हैं और वोह (इस हलाकत का) शऊ़र (भी) नहीं रखते।

وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلَى النَّارِ فَقَالُوْا
يٰلَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ بِاٰيٰتِ رَبِّنَا
وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٧﴾

27- अगर आप (उन्हें उस वक़्त) देखें जब वोह आग (के किनारे) पर खड़े किए जाएंगे तो कहेंगे ऐ काश ! हम (दुनिया में) पलटा दिए जाएं तो (अब) हम अपने रब की आयतों को (कभी) नहीं झुटलाएंगे और ईमान वालों में से हो जाएंगे।

بَلْ بَدَا لَهُمْ مَّا كَانُوْا يُخْفُوْنَ مِنْ
قَبْلُ ؕ وَلَوْ رُدُّوْا لَعَادُوْا لِمَا نُهُوْا
عَنْهُ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٢٨﴾

28- (उस इक़रार में कोई सच्चाई नहीं) बल्कि उन पर वोह (सब कुछ) ज़ाहिर हो गया है जो वोह पहले छुपाया करते थे, और अगर वोह (दुनिया में) लौटा (भी) दिए जाएं तो (फिर) वोही दोहराएंगे जिससे वोह रोके गए थे और बेशक वोह (पक्के) झूटे हैं।

وَقَالُوْٓا اِنْ هِىَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا
وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ﴿٢٩﴾

29- और वोह (येही) केहते रहेंगे (जैसे उन्होंने पहले कहा था) कि हमारी इस दुन्यवी ज़िन्दगी के सिवा (और) कोई (ज़िन्दगी) नहीं और हम (मरने के बाद) नहीं उठाए जाएंगे।

وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ؕ
قَالَ اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ؕ قَالُوْا

30- और अगर आप (उन्हें उस वक़्त) देखें जब वोह अपने रब के हुज़ूर खड़े किए जाएंगे (और उन्हें) अल्लाह

بَلٰى وَرَبِّنَا ۚ قَالَ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٣٠﴾

फ़रमाएगा, क्या येह (ज़िन्दगी) हक़ नहीं है ? (तो) कहेंगे: क्यों नहीं हमारे रबकी क़सम (येह हक़ है, फिर) अल्लाह फ़रमाएगा : पस (अब) तुम अज़ाब का मज़ा चखो, इस वजह से कि तुम कुफ़्र किया करते थे।

قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِلِقَاءِ اللَّهِ ۖ حَتّٰى إِذَا جَاءَتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُوا يَا حَسْرَتَنَا عَلٰى مَا فَرَّطْنَا فِيهَا وَهُمْ يَحْمِلُونَ أَوْزَارَهُمْ عَلٰى ظُهُورِهِمْ ۚ أَلَا سَاءَ مَا يَزِرُونَ ﴿٣١﴾

31- पस ऐसे लोग नुक़्सान में रहे जिन्होंने अल्लाह की मुलाक़ात को झुटला दिया यहां तक कि जब उनके पास अचानक क़ियामत आ पहुंचेगी (तो) कहेंगे : हाए अफ़्सोस! हम पर जो हमने उस (क़ियामत पर ईमान लाए) के बारेमें (तफ़्सीर) की और वोह अपनी पीठों पर अपने (गुनाहों के) बोझ लादे हुए होंगे। सुन लो! वोह बहुत बुरा बोझ है जो येह उठा रहे हैं।

وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَعِبٌ وَلَهْوٌ ۖ وَلَلدَّارُ الْآخِرَةُ خَيْرٌ لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ ۗ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٣٢﴾

32- और दुन्यवी ज़िन्दगी (की ऐशो इशरत) खेल और तमाशे के सिवा कुछ नहीं और यक़ीनन आख़िरत का घर ही उन लोगों के लिए बेहतर है जो तक़्वा इख़्तियार करते हैं, क्या तुम (येह हक़ीक़त) नहीं समझते।

قَدْ نَعْلَمُ إِنَّهُ لَيَحْزُنُكَ الَّذِي يَقُولُونَ ۖ فَإِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُونَكَ وَلٰكِنَّ الظَّالِمِينَ بِآيَاتِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ ﴿٣٣﴾

33- (ऐ हबीब!) बेशक हम जानते हैं कि वोह (बात) यक़ीनन आपको रंजीदह कर रही है जो येह लोग केहते हैं। पस येह आपको नहीं झुटला रहे लेकिन (हक़ीक़त येह है कि) ज़ालिम लोग अल्लाहकी आयतों से ही इन्कार कर रहे हैं।

وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِنْ قَبْلِكَ فَصَبَرُوا عَلٰى مَا كُذِّبُوا وَأُوذُوا حَتّٰى أَتَاهُمْ نَصْرُنَا ۚ وَلَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ ۚ وَلَقَدْ جَاءَكَ مِنْ نَبَإِ الْمُرْسَلِينَ ﴿٣٤﴾

34- और बेशक आपसे क़ब्ल (भी बहुतसे) रसूल झुटलाए गए मगर उन्होंने झुटलाए जाने और अज़िय्यत पहुंचाए जाने पर सब्र किया, हत्ताकि उन्हें हमारी मदद आ पहुंची और अल्लाह की बातों (या'नी वा'दों को) कोई बदलने वाला नहीं और बेशक आपके पास (तस्कीने क़ल्ब के लिए) रसूलों की खबरें आ चुकी हैं।

وَ اِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكَ اِعْرَاضُهُمْ
فَاِنِ اسْتَطَعْتَ اَنْ تَبْتَغِيَ نَفَقًا فِي
الْاَرْضِ اَوْ سُلَّمًا فِي السَّمَآءِ
فَتَاْتِيَهُمْ بِاٰيَةٍ ؕ وَ لَوْ شَآءَ اللّٰهُ
لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدٰى فَلَا تَكُوْنَنَّ
مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿۳۵﴾

35- और अगर आप पर उनकी रूगर्दानी शाक़ गुज़र रही है (और आप बहर सूरत उनके ईमान लाने के ख़्वाहिश मन्द हैं) तो अगर आपसे (येह) हो सके कि ज़मीन में (उतरनेवाली) कोई सुरंग या आस्मान में (चढ़नेवाली) कोई सीढ़ी तलाश कर लें फिर (उन्हें दिखाने के लिए) उनके पास कोई (ख़ास) निशानी ले आएं (वोह तब भी ईमान नहीं लाएंगे), और अगर अल्लाह चाहता तो उनको हिदायत पर ज़रूर जमा' फ़रमा देता पस आप (अपनी रह्मतो शफ़्क़त के बे पायां जोश के बाइस उनकी बद बख़्ती से) बे ख़बर न हो जाएं।

النصف

اِنَّمَا يَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ يَسْمَعُوْنَ ؕ
وَ الْمَوْتٰى يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ ثُمَّ اِلَيْهِ
يُرْجَعُوْنَ ﴿۳۶﴾

36- बात येह है कि (दा'वते हक़) सिर्फ़ वोही लोग क़ुबूल करते हैं जो (उसे सच्चे दिलसे) सुनते हैं, और मुर्दों (या'नी हक़ के मुन्किरों) को अल्लाह (हालते कुफ़्र में ही क़ब्रों से) उठाएगा फिर वोह उसी (रब) की तरफ़ (जिसका इन्कार करते थे) लौटाए जाएंगे।

وقف غفران

وقف منزل

وَقَالُوْا لَوْ لَا نُزِّلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ
رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ قَادِرٌ عَلٰۤى اَنْ
يُّنَزِّلَ اٰيَةً وَّ لٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ
لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۷﴾

37- और उन्होंने कहा कि इस (रसूल) पर इसके रबकी तरफ़से (हर वक्त साथ रहने वाली) कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गई? फ़रमा दीजिए : बेशक अल्लाह इस बात पर (भी) क़ादिर है कि वोह (ऐसी) कोई निशानी उतार दे लेकिन उनमें से अक्सर लोग (उसकी हिक्मतों को) नहीं जानते।

وَ مَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا
طٰٓئِرٍ يَّطِيْرُ بِجَنَاحَيْهِ اِلَّاۤ اُمَمٌ
اَمْثَالُكُمْ ؕ مَا فَرَّطْنَا فِي الْكِتٰبِ
مِنْ شَيْءٍ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ

38- और (ऐ इन्सानो!) कोई भी चलने फिरनेवाला (जानवर) और परिन्दा जो अपने दो बाज़ुओं से उड़ता हो (ऐसा) नहीं है मगर येह कि (बहुत सी सिफ़ात में) वोह सब तुम्हारे ही मुमासिल तब्क़ात हैं, हम ने किताब में कोई चीज़ नहीं छोड़ी (जिसे सराहतन या इशारतन बयान न कर दिया हो) फिर सब (लोग) अपने रबके पास जमा'

يُحْشَرُوْنَ ﴿٣٨﴾

किए जाएंगे।

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا صُمٌّ وَّ بُكْمٌ فِي الظُّلُمٰتِ ؕ مَنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يُضْلِلْهُ ؕ وَ مَنْ يَّشَاْ يَجْعَلْهُ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٣٩﴾

39- और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुटलाया वोह बेहरे और गूंगे हैं, तारीकियों में (भटक रहे) हैं। अल्लाह जिसे चाहता है उसे (इन्कारे हक़ और ज़िदके बाइस) गुमराह कर देता है, और जिसे चाहता है उसे (कुबूले हक़ के बाइस) सीधी राह पर लगा देता है।

قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ اَوْ اَتَتْكُمُ السَّاعَةُ اَغَيْرَ اللّٰهِ تَدْعُوْنَ ۚ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤٠﴾

40- आप (उन काफ़िरों से) फ़रमाइए : ज़रा येह तो बताओ अगर तुम पर अल्लाह का अ़ज़ाब आ जाए या तुम पर क़ियामत आ पहुंचे तो क्या (उस वक़्त अ़ज़ाब से बचने के लिए) अल्लाहके सिवा किसी और को पुकारोगे? (बताओ) अगर तुम सच्चे हो।

بَلْ اِيَّاهُ تَدْعُوْنَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُوْنَ اِلَيْهِ اِنْ شَآءَ وَ تَنْسَوْنَ مَا تُشْرِكُوْنَ ﴿٤١﴾ ع

41- (ऐसा हरगिज़ मुम्किन नहीं) बल्कि तुम (अब भी) उसी (अल्लाह) को ही पुकारते हो फिर अगर वोह चाहे तो उन (मुसीबतों) को दूर फ़रमा देता है जिनके लिए तुम (उसे) पुकारते हो और (उस वक़्त) तुम उन (बुतों) को भूल जाते हो जिन्हें (अल्लाह का) शरीक ठेहराते हो।

وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَاَخَذْنٰهُمْ بِالْبَاْسَآءِ وَ الضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَتَضَرَّعُوْنَ ﴿٤٢﴾

42- और बेशक हमने आपसे पहले बहुत सी उम्मतों की तरफ़ रसूल भेजे, फिर हमने उनको (ना फ़रमानी के बाइस) तंगदस्ती और तक्लीफ़ के ज़रीए पकड़ लिया ताकि वोह (इज्ज़ो नियाज़ के साथ) गिड़गिड़ाएं।

فَلَوْلَآ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَا تَضَرَّعُوْا وَ لٰكِنْ قَسَتْ قُلُوْبُهُمْ وَ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٤٣﴾

43- फिर जब उन तक हमारा अ़ज़ाब आ पहुंचा तो उन्होंने आजिज़ी व ज़ारी क्यों न की? लेकिन (हक़ीक़त येह है कि) उनके दिल सख़्त हो गए थे और शैतानने उनके लिए वोह (गुनाह) आरास्ता कर दिखाए थे जो वोह किया करते थे।

فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ اَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ ؕ حَتّٰٓى

44- फिर जब उन्होंने उस नसीहतको फ़रामोश कर दिया जो उनसे की गई थी तो हमने (उन्हें अपने अंजाम तक

إِذَا فَرِحُوا بِمَا أُوتُوا أَخَذْنَاهُم بَغْتَةً فَإِذَا هُم مُّبْلِسُونَ ٤٤

पहुंचाने के लिए) उन पर हर चीज़ (की फ़रावानी) के दरवाज़े खोल दिए। यहां तककि जब वोह इन चीज़ों (की लिज़्ज़तों और राहतों) से खूब खुश हो (कर मदहोश हो) गए जो उन्हें दी गई थीं तो हमने अचानक उन्हें (अज़ाब में) पकड़ लिया तो उस वक़्त वोह मायूस हो कर रेह गए।

فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِينَ ظَلَمُوا ۚ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ٤٥

45- पस जुल्म करनेवाली क़ौमकी जड़ काट दी गई, और तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जो सारे जहानों का परवरदिगार है।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَخَذَ اللَّهُ سَمْعَكُمْ وَأَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ عَلَىٰ قُلُوبِكُم مَّنْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُم بِهِ ۗ انظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُونَ ٤٦

46- (उनसे) फ़रमा दीजिए कि तुम येह तो बताओ अगर अल्लाह तुम्हारी समाअ़त और तुम्हारी आँखें ले ले और तुम्हारे दिलों पर मुहर लगा दे (तो) अल्लाह के सिवा कौन मा'बूद ऐसा है जो येह (ने'मतें दोबारा) तुम्हारे पास ले आए ? देखिए हम किस तरह गूनागूं आयतें बयान करते हैं, फिर (भी) वोह रूगर्दानी किए जाते हैं।

قُلْ أَرَأَيْتَكُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُ اللَّهِ بَغْتَةً أَوْ جَهْرَةً هَلْ يُهْلَكُ إِلَّا الْقَوْمُ الظَّالِمُونَ ٤٧

47 - आप (उनसे येह भी) फ़रमा दीजिए कि तुम मुझे बताओ अगर तुम पर अल्लाहका अज़ाब अचानक या खुल्लम खुल्ला आन पड़े तो क्या ज़ालिम क़ौम के सिवा (कोई और) हलाक किया जाएगा ?

وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ ۖ فَمَنْ آمَنَ وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ٤٨

48- और हम पयग़म्बरों को नहीं भेजते मगर खुशख़बरी सुनानेवाले और डर सुनानेवाले बना कर, सो जो शख़्स ईमान ले आया और (अ़मलन) दुरस्त हो गया तो उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न ही वोह ग़मगीन होंगे।

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ٤٩

49- और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुटलाया उन्हें अज़ाब छू कर रहेगा, इस वजह से कि वोह ना फ़रमानी किया करते थे।

قُلْ لَّآ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِىْ خَزَآئِنُ اللّٰهِ وَلَآ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَ لَآ اَقُوْلُ لَكُمْ اِنِّىْ مَلَكٌ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰۤى اِلَىَّ ؕ قُلْ هَلْ يَسْتَوِى الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ؕ اَفَلَا تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿۵۰﴾

50- आप (उन काफ़िरों से) फ़रमा दीजिए कि मैं तुम से (येह) नहीं केहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न मैं अज़ ख़ुद ग़ैब जानता हूं और न मैं तुमसे (येह) केहता हूं कि मैं फ़रिश्ता हूं। मैं तो सिर्फ़ उसी (हुक्म) की पैरवी करता हूं जो मेरी तरफ़ वही किया जाता है। फ़रमा दीजिए : क्या अँधा और बीना बराबर हो सक्ते हैं ? सो क्या तुम ग़ौर नहीं करते ?

وَ اَنْذِرْ بِهِ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْ يُّحْشَرُوْۤا اِلٰى رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ وَلِىٌّ وَّ لَا شَفِيْعٌ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿۵۱﴾

51- और आप इस (कुरआन) के ज़रीए उन लोगों को डर सुनाइये जो अपने रबके पास इस हालमें जमा' किए जानेसे ख़ौफ़ज़दा हैं कि उनके लिए इसके सिवा न कोई मददगार हो और न (कोई) सिफ़ारिशी ताकि वोह परहेज़गार बन जाएं।

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَ الْعَشِىِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ ؕ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَىْءٍ وَّ مَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِّنْ شَىْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُوْنَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۵۲﴾

52- और आप उन (शिकस्ता दिल और ख़स्ता हाल) लोगों को (अपनी सोहूबतो कुर्बत से) दूर न कीजिए जो सुब्हो शाम अपने रबको सिर्फ़ उसकी रज़ा चाहते हुए पुकारते रेहते हैं। उनके (अ़मलो जज़ाके) हिसाब में से आप पर कोई चीज़ (वाजिब) नहीं और न आप के हिसाब में से कोई चीज़ उन पर (वाजिब) है (अगर) फिर भी आप उन्हें (अपने लुत्फ़ो करम से) दूर कर दें तो आप हक़ तल्फ़ी करनेवालों में से हो जाएंगे (जो आपके शायाने शान नहीं)।

وَ كَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لِّيَقُوْلُوْۤا اَهٰۤؤُلَآءِ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنْۢ بَيْنِنَا ؕ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِالشّٰكِرِيْنَ ﴿۵۳﴾

53- और इसी तरह हम उनमें से बा'ज़ को बा'ज़ के ज़रीए आज़माते हैं ताकि वोह (दौलतमंद काफ़िर ग़रीब मुसलमानों को देख कर इस्तेहज़ाअन येह) कहें : क्या हममें से येही वोह लोग हैं जिन पर अल्लाह ने एह्सान किया है। क्या अल्लाह शुक्रगुज़ारों को ख़ूब जाननेवाला नहीं है ?

وَ اِذَا جَآءَكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ

54- और जब आपके पास वोह लोग आएं जो हमारी

بِاٰيٰتِنَا فَقُلْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ
رَبُّكُمْ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۙ اَنَّهٗ
مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوْٓءًۢا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ
تَابَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَصْلَحَ فَاَنَّهٗ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۵۴﴾

आयतों पर ईमान रखते हैं तो आप (उनसे शफ़्क़तन) फ़रमाएं कि तुम पर सलाम हो तुम्हारे रबने अपनी ज़ात (के ज़िम्मए करम) पर रह्मत लाज़िम कर ली है। सो तुम में से जो शख़्स नादानी से कोई बुराई कर बैठे फिर उसके बाद तौबा कर ले और (अपनी) इस्लाह् कर ले तो बेशक वोह बड़ा बख़्शनेवाला बहुत रह्म फ़रमानेवाला है।

وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلِتَسْتَبِيْنَ
سَبِيْلُ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۵۵﴾ ع

55- और इसी तरह् हम आयतों को तफ़्सीलन बयान करते हैं और (येह) इस लिए कि मुजरिमों का रास्ता (सब पर) ज़ाहिर हो जाए।

قُلْ اِنِّيْ نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِيْنَ
تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قُلْ لَّآ
اَتَّبِعُ اَهْوَآءَكُمْ ۙ قَدْ ضَلَلْتُ
اِذًا وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ﴿۵۶﴾

56- फ़रमा दीजिए कि मुझे इस बात से रोक दिया गया है कि मैं उन (झूटे मा'बूदों) की इबादत करूं जिन की तुम अल्लाह के सिवा परस्तिश करते हो, फ़रमा दीजिए कि मैं तुम्हारी ख़्वाहिशात की पैरवी नहीं कर सक्ता अगर ऐसे हो तो मैं यक़ीनन बहक जाऊं और मैं हिदायत याफ़्ता लोगों से (भी) न रहूं (जो कि ना मुम्किन है)।

قُلْ اِنِّيْ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَكَذَّبْتُمْ
بِهٖ ؕ مَا عِنْدِيْ مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ ؕ
اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ يَقُصُّ الْحَقَّ
وَهُوَ خَيْرُ الْفٰصِلِيْنَ ﴿۵۷﴾

57- फ़रमा दीजिए : (काफ़िरो!) बेशक मैं अपने रबकी तरफ़से रौशन दलील पर (क़ाइम) हूं और तुम उसे झुटलाते हो। मेरे पास वोह (अज़ाब) नहीं है जिसकी तुम जल्दी मचा रहे हो। हुक्म सिर्फ़ अल्लाह ही का है। वोह ह़क़ बयान फ़रमाता है और वोही बेहतर फ़ैसला फ़रमानेवाला है।

قُلْ لَّوْ اَنَّ عِنْدِيْ مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ
بِهٖ لَقُضِيَ الْاَمْرُ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ؕ
وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿۵۸﴾

58- (उनसे) फ़रमा दें अगर वोह (अज़ाब) मेरे पास होता जिसे तुम जल्दी चाहते हो तो यक़ीनन मेरे और तुम्हारे दरमियान काम तमाम हो चुका होता। और अल्लाह ज़ालिमों को खूब जाननेवाला है।

وَعِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَآ

59- और ग़ैब की कुंजियां (या'नी वोह रास्ते जिस से

إِلَّا هُوَ ۚ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۚ وَمَا تَسْقُطُ مِن وَرَقَةٍ إِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِي ظُلُمَاتِ الْأَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَلَا يَابِسٍ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ﴿٥٩﴾

गै़ब किसी पर आशकार किया जाता है) उसी के पास (उस की कुदरतो मिल्कियत में) हैं उन्हें उसके सिवा (अज़ खुद) कोई नहीं जानता, और वोह हर उस चीज़को (बिला वास्ता) जानता है जो खुश्की में और दरियाओं में है, और कोई पत्ता नहीं गिरता मगर (येह कि) वोह उसे जानता है और न ज़मीनकी तारीकियोंमें कोई (ऐसा) दाना है और न कोई तर चीज़ है और न कोई खुश्क चीज़ मगर रौशन किताबमें (सब कुछ लिख दिया गया है)।

وَهُوَ الَّذِي يَتَوَفَّاكُم بِاللَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُم بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيهِ لِيُقْضَىٰ أَجَلٌ مُّسَمًّى ۖ ثُمَّ إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ يُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٦٠﴾ ع

60- और वोही है जो रात के वक्त तुम्हारी रूहें क़ब्ज़ फ़रमा लेता है और जो कुछ तुम दिनके वक्त कमाते हो वोह जानता है फिर वोह तुम्हें दिन में उठा देता है ताकि (तुम्हारी ज़िन्दगी की) मुअय्यना मीआद पूरी कर दी जाए फिर तुम्हारा पलटना उसी की तरफ़ है फिर वोह (रोज़े महूशर) तुम्हें उन (तमाम आ'माल) से आगाह फ़रमा देगा जो तुम (उस ज़िन्दगानी में) करते रहे थे।

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ ۖ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُونَ ﴿٦١﴾

61- और वोही अपने बंदों पर ग़ालिब है और वोह तुम पर (फ़रिश्तों को बतौर) निगेहबान भेजता है, यहां तक कि जब तुममें से किसी को मौत आती है (तो) हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) उसकी रूह क़ब्ज़ कर लेते हैं और वोह ख़ता (या कोताही) नहीं करते।

ثُمَّ رُدُّوا إِلَى اللَّهِ مَوْلَاهُمُ الْحَقِّ ۚ أَلَا لَهُ الْحُكْمُ وَهُوَ أَسْرَعُ الْحَاسِبِينَ ﴿٦٢﴾

62- फिर वोह (सब) अल्लाह के हुजूर लौटाए जाएंगे जो उनका मालिके हक़ीक़ी है, जान लो! हुक्म (फ़रमाना) उसी का (काम) है, और वोह सब से जल्द हिसाब करने वाला है।

قُلْ مَن يُنَجِّيكُم مِّن ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُونَهُ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً

63- आप (उन से दरयाफ़्त) फ़रमाएं कि बयाबान और दरियाकी तारीकियों से तुम्हें कौन नजात देता है ?

لَئِنْ اَنْجٰنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ
الشّٰكِرِيْنَ ﴿٦٣﴾

(उस वक़्त तो) तुम गिड़गिड़ा कर (भी) और चुपके चुपके (भी) उसीको पुकारते हो कि अगर वोह हमें इस (मुसीबत) से नजात दे दे तो हम ज़रूर शुक्र गुज़ारों में से हो जाएंगे।

قُلِ اللّٰهُ يُنَجِّيْكُمْ مِّنْهَا وَ مِنْ كُلِّ
كَرْبٍ ثُمَّ اَنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ﴿٦٤﴾

64- फ़रमा दीजिए : कि अल्लाह ही तुम्हें इस (मुसीबत) से और हर तक्लीफ़ से नजात देता है तुम फिर (भी) शिर्क करते हो।

قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلٰٓى اَنْ يَّبْعَثَ
عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ اَوْ مِنْ
تَحْتِ اَرْجُلِكُمْ اَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا
وَّيُذِيْقَ بَعْضَكُمْ بَاْسَ بَعْضٍ ؕ
اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ
يَفْقَهُوْنَ ﴿٦٥﴾

65- फ़रमा दीजिए : वोह इस पर क़ादिर है कि तुम पर अज़ाब भेजे (ख़्वाह) तुम्हारे ऊपरकी तरफ़से या तुम्हारे पाँव के नीचे से या तुम्हें फ़िरक़ा फ़िरक़ा करके आपस में भिड़ाए और तुम में से बा'ज़ को बा'ज़ की लड़ाई का मज़ा चखा दे। देखिए! हम किस किस तरह आयतें बयान करते हैं ताकि येह (लोग) समझ सकें।

وَ كَذَّبَ بِهٖ قَوْمُكَ وَ هُوَ الْحَقُّ ؕ
قُلْ لَّسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ؕ ﴿٦٦﴾

66- और आपकी क़ौमने इस (क़ुरआन) को झुटला डाला हालां कि वोह सरासर हक़ है फ़रमा दीजिए : मैं तुम पर निगेहबान नहीं हूं।

لِكُلِّ نَبَاٍ مُّسْتَقَرٌّ ز وَّسَوْفَ
تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٧﴾

67- हर ख़बर (के वाक़ेअ होने) का वक़्त मुक़र्रर है और तुम अ़नक़रीब जान लोगे।

وَ اِذَا رَاَيْتَ الَّذِيْنَ يَخُوْضُوْنَ
فِيْٓ اٰيٰتِنَا فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتّٰى
يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖ ؕ وَ اِمَّا
يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ
الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٦٨﴾

68- और जब तुम ऐसे लोगों को देखो जो हमारी आयतों में (कज बहसी और इस्तेहज़ा में) मशग़ूल हों तो तुम उनसे कनाराकश हो जाया करो यहां तक कि वोह किसी दूसरी बात में मशग़ूल हो जाएं, और अगर शैतान तुम्हें (येह बात) भुला दे तो याद आने के बाद तुम (कभी भी) ज़ालिम क़ौम के साथ न बैठा करो।

وَ مَا عَلَى الَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ مِنْ

69- और लोगों पर जो परहेज़गारी इख़्तियार किए हुए हैं

حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّلٰكِنْ ذِكْرٰى
لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٦٩﴾

उन (काफ़िरों) के ह़िसाब से कुछ भी (लाज़िम) नहीं है मगर (उन्हें) नसीह़त (करना चाहिए) ताकि वोह (कुफ़्र से और क़ुर्आन की मज़म्मत से) बच जाएं।

وَذَرِ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَعِبًا وَّ
لَهْوًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا
وَذَكِّرْ بِهٖٓ اَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌ بِمَا
كَسَبَتْ ۖ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ ۚ وَاِنْ تَعْدِلْ كُلَّ
عَدْلٍ لَّا يُؤْخَذْ مِنْهَا ؕ اُولٰٓئِكَ
الَّذِيْنَ اُبْسِلُوْا بِمَا كَسَبُوْا ۚ لَهُمْ
شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌۢ بِمَا
كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ﴿٧٠﴾

70– और आप उन लोगों को छोड़े रखिए जिन्हों ने अपने दीन को खेल और तमाशा बना लिया है और जिन्हें दुनिया की ज़िन्दगी ने फ़रेब दे रखा है और इस (क़ुर्आन)के ज़रीए (उनकी आगाही की ख़ातिर) नसीह़त फ़रमाते रहिए ताकि कोई जान अपने किए के बदले सुपुर्दे हलाकत न कर दी जाए (फिर) उसके लिए अल्लाह के सिवा न कोई मददगार होगा और न कोई सिफ़ारिशी और अगर वोह (जान अपने गुनाहों का) पूरा पूरा बदला (या'नी मुआ़वज़ा)भी दे तो (भी) उससे क़ुबूल नहीं किया जाएगा। येही वोह लोग हैं जो अपने किए के बदले हलाकत में डाल दिए गए उनके लिए खौलते हुऐ पानी का पीना है और दर्दनाक अ़ज़ाब है इस वजह से कि वोह कुफ़्र किया करते थे।

قُلْ اَنَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا
لَا يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلٰٓى
اَعْقَابِنَا بَعْدَ اِذْ هَدٰىنَا اللّٰهُ
كَالَّذِى اسْتَهْوَتْهُ الشَّيٰطِيْنُ فِى
الْاَرْضِ حَيْرَانَ ۖ لَهٗٓ اَصْحٰبٌ
يَّدْعُوْنَهٗٓ اِلَى الْهُدَى ائْتِنَا ؕ قُلْ
اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ؕ
وَاُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧١﴾

71- फ़रमा दीजिए, क्या हम अल्लाह के सिवा ऐसी चीज़की इबादत करें जो हमें न (तो) नफ़ा' पहुंचा सके और न (ही) हमें नुक़्सान दे सके और इसके बाद कि अल्लाह ने हमें हिदायत दे दी हम उस शख़्स की तरह अपने उलटे पाँव फिर जाएं जिसे ज़मीनमें शैतानों ने राह भुला कर दरमान्दह व हैरतज़दा कर दिया हो जिसके साथी उसे सीधी राह की तरफ़ बुला रहे हों कि हमारे पास आ जा (मगर उसे कुछ सूझता न हो)। फ़रमा दें कि अल्लाह की हिदायत ही (ह़क़ीक़ी) हिदायत है, और (इसी लिए) हमें (येह) हुक्म दिया गया है कि हम तमाम जहानों के रब की फ़रमांबरदारी करें।

وَاَنْ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّقُوْهُ ؕ وَهُوَ الَّذِيْۤ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۷۲﴾

72- और येह (भी हुक्म हुआ है) कि तुम नमाज़ क़ाइम रखो और उससे डरते रहो और वोही अल्लाह है जिसकी तरफ़ तुम (सब) जमा' किए जाओगे।

وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ وَيَوْمَ يَقُوْلُ كُنْ فَيَكُوْنُ ۬ؕ قَوْلُهُ الْحَقُّ ؕ وَلَهُ الْمُلْكُ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ ؕ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ؕ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿۷۳﴾

73- और वोही (अल्लाह) है जिसने आस्मानों और ज़मीनको हक़्क़ (पर मब्नी तदबीर) के साथ पैदा फ़रमाया है और जिस दिन वोह फ़रमाएगा हो जो तो वोह (रोजे़ मह्शर बपा) हो जाएगा। उसका फ़रमान हक़्क़ है, और उस दिन उसी की बादशाही होगी जब (इसराफ़ील के जरीए) सूरमें फूंक मारी जाएगी, (वोही) हर पोशीदह और ज़ाहिर का जाननेवाला है, और वोही बड़ा हिक्मतवाला ख़बरदार है।

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ اٰزَرَ اَتَتَّخِذُ اَصْنَامًا اٰلِهَةً ۚ اِنِّيْۤ اَرٰىكَ وَقَوْمَكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۷۴﴾

74- और (याद कीजिए)जब इब्राहीम (عليه السلام)ने अपने बाप आज़र (जो हक़ीक़ीत में चचा था महावरए अ़रब में उसे बाप कहा गया है) से कहा : क्या तुम बुतों को मा'बूद बनाते हो? बेशक मैं तुम्हें और तुम्हारी क़ौम को सरीह गुमराही में (मुब्तिला) देखता हूं।

وَكَذٰلِكَ نُرِيْۤ اِبْرٰهِيْمَ مَلَكُوْتَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلِيَكُوْنَ مِنَ الْمُوْقِنِيْنَ ﴿۷۵﴾

75- और इसी तरह हमने इब्राहीम (عليه السلام)को आस्मानों और ज़मीनकी तमाम बादशाहतें (या'नी अ़जाइबाते ख़ल्क) दिखाईं और (येह) इस लिए कि वोह ऐनुल यक़ीनवालों में हो जाए।

فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ الَّيْلُ رَاٰ كَوْكَبًا ۚ قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ۚ فَلَمَّاۤ اَفَلَ قَالَ لَاۤ اُحِبُّ الْاٰفِلِيْنَ ﴿۷۶﴾

76- फिर जब उन पर रातने अंधेरा कर दिया तो उन्हों ने (एक) सितारा देखा (तो) कहा :(क्या तुम्हारे ख़याल में) येह मेरा रब है? फिर जब वोह डूब गया तो (अपनी क़ौम को सुना कर) केहने लगे : मैं डूब जानेवालों को पसंद नहीं करता।

فَلَمَّا رَاَ الْقَمَرَ بَازِغًا قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ۚ فَلَمَّاۤ اَفَلَ قَالَ لَئِنْ لَّمْ

77- फिर जब चांद को चमकते देखा (तो) कहा : (क्या तुम्हारे ख़याल में) येह मेरा रब है? फिर जब वोह (भी)

يَهْدِنِيْ رَبِّيْ لَاَكُوْنَنَّ مِنَ الْقَوْمِ الضَّآلِّيْنَ ﴿٧٧﴾

ग़ाइब हो गया तो (अपनी कौम को सुना कर) केहने लगे : अगर मेरा रब मुझे हिदायत न फ़रमाता तो मैं भी ज़रूर(तुम्हारी तरह) गुमराहों की क़ौम में से हो जाता।

فَلَمَّا رَاَ الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هٰذَا رَبِّيْ هٰذَآ اَكْبَرُ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَتْ قَالَ يٰقَوْمِ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿٧٨﴾

78- फिर जब सूरजको चमकते देखा (तो) कहा : (क्या अब तुम्हारे ख़याल में) येह मेरा रब है (क्यों कि) येह सबसे बड़ा है? फिर जब वोह (भी) छुप गया तो बोल उठे : ऐ लोगो! मैं इन (सब चीजों) से बेज़ार हूं जिन्हें तुम (अल्लाह का) शरीक गरदानते हो।

اِنِّيْ وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِيْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ حَنِيْفًا وَّ مَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٧٩﴾ ج

79- बेशक मैंने अपना रुख़ (हर सम्त से हटा कर) यकसूई से उस (ज़ात) की तरफ़ फेर लिया है जिसने आस्मानों और ज़मीन को बेमिसाल पैदा फ़रमाया है और (जान लो कि) मैं मुशरिकों में से नहीं हूं।

وَحَآجَّهٗ قَوْمُهٗ ۭ قَالَ اَتُحَآجُّوْٓنِّيْ فِي اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنِ ۭ وَلَآ اَخَافُ مَا تُشْرِكُوْنَ بِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ رَبِّيْ شَيْـًٔا ۭ وَسِعَ رَبِّيْ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۭ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٨٠﴾

80- और उनकी कौम उनसे बहूसो जिदाल करने लगी (तो) उन्हों ने कहा : भला तुम मुझसे अल्लाह के बारे में झगडते हो हालांकि उसने मुझे हिदायत फ़रमा दी है, और मैं उन (बातिल मा'बूदों) से नहीं डरता जिन्हें तुम उसका शरीक ठेहरा रहे हो मगर (येह कि) मेरा रब जो कुछ (ज़रर) चाहे (पहुंचा सक्ता है)। मेरे रबने हर चीज़ को (अपने) इ़ल्म से अहाते में ले रखा है, सो क्या तुम नसीह़त कुबूल नहीं करते?

وَكَيْفَ اَخَافُ مَآ اَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُوْنَ اَنَّكُمْ اَشْرَكْتُمْ بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا ۭ فَاَيُّ الْفَرِيْقَيْنِ اَحَقُّ بِالْاَمْنِ ۚ

81- और मैं उन (मा'बूदाने बातिला) से क्यों कर ख़ौफ़ज़दा हो सक्ता हूं जिन्हें तुम (अल्लाह का) शरीक ठेहराते हो दर आं हाली कि तुम उस बात से नहीं डरते कि तुमने अल्लाह के साथ (बुतों को) शरीक बना रखा है (जबकि) उसने तुम पर उस (शिर्क) की कोई दलील नहीं उतारी (अब तुम ही जवाब दो) सो हर दो फ़रीक़ में से

إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨١﴾

(अ़ज़ाब से) बेख़ौफ़ रेहनेका ज़ियादा ह़क़दार कौन है? अगर तुम जानते हो।

الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ أُولَٰئِكَ لَهُمُ الْأَمْنُ وَهُمْ مُهْتَدُونَ ﴿٨٢﴾

82- जो लोग ईमान लाए और अपने ईमान को (शिर्क के) जुल्म के साथ नहीं मिलाया उन्हीं लोगों के लिए अम्न (या'नी उख़रवी बेख़ौफ़ी) है और वोही हिदायत याफ़्ता हैं।

ع ٩ ١٢ ١٥

وَتِلْكَ حُجَّتُنَا آتَيْنَاهَا إِبْرَاهِيمَ عَلَىٰ قَوْمِهِ ۚ نَرْفَعُ دَرَجَاتٍ مَنْ نَشَاءُ ۗ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿٨٣﴾

83- और येही हमारी (तवह़ीद की)दलील थी जो हमने इब्राहीम (عليه السلام) को उनकी (मुख़ालिफ़)क़ौम के मुक़ाबले में दी थी। हम जिसके चाहते हैं दरजात बुलंद कर देते हैं। बेशक आपका रब बड़ी हिक्मतवाला ख़ूब जानने वाला है।

وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ ۚ كُلًّا هَدَيْنَا ۚ وَنُوحًا هَدَيْنَا مِنْ قَبْلُ ۖ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِ دَاوُودَ وَسُلَيْمَانَ وَأَيُّوبَ وَيُوسُفَ وَمُوسَىٰ وَهَارُونَ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٨٤﴾

84- और हमने उन (इब्राहीम عليه السلام) को इस्हाक़ और या'कूब (बेटा और पोता (عليهما السلام) अ़ता किए हमने (उन) सब को हिदायत से नवाज़ा और हमने (उनसे) पहले नूह (عليه السلام) को (भी) हिदायत से नवाज़ा था और उनकी अवलाद में से दावूद और सुलैमान और अैयूब और यूसुफ़ और मूसा और हारून (عليهم السلام) को भी हिदायत अ़ता फ़रमाई थी), और हम इसी तरह नेकूकारों को जज़ा दिया करते हैं।

وَزَكَرِيَّا وَيَحْيَىٰ وَعِيسَىٰ وَإِلْيَاسَ ۖ كُلٌّ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٨٥﴾

85- और ज़करिय्या और यह़्या और ईसा और इल्यास (عليهم السلام) को भी हिदायत बख़्शी)। येह सब नेकूकार (क़ुर्बत और हुज़ूरीवाले) लोग थे।

وَإِسْمَاعِيلَ وَالْيَسَعَ وَيُونُسَ وَلُوطًا ۚ وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٨٦﴾

86- और इस्माईल और अल यसा' और यूनुस और लूत (عليهم السلام) को भी हिदायत से शर्फ़याब फ़रमाया), और हमने उन सबको (अपने ज़माने के) तमाम जहानवालों पर फ़ज़ीलत बख़्शी।

وَمِنْ آبَائِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ وَإِخْوَانِهِمْ ۖ وَاجْتَبَيْنَاهُمْ وَهَدَيْنَاهُمْ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٨٧﴾

87- और उनके आबाओ (अज्दाद) और उनकी अवलाद और उनके भाइयों में से भी (बा'ज़ को ऐसी फ़ज़ीलत अ़ता फ़रमाई) और हमने उन्हें (अपने लुत्फ़े ख़ास और बुज़ुर्गी के लिए) चुन लिया था और उन्हें सीधी

ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَلَوْ اَشْرَكُوْا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۸۸﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ وَ الْحُكْمَ وَ النُّبُوَّةَ ۚ فَاِنْ يَّكْفُرْ بِهَا هٰٓؤُلَآءِ فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا لَّيْسُوْا بِهَا بِكٰفِرِيْنَ ﴿۸۹﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ فَبِهُدٰىهُمُ اقْتَدِهْ ؕ قُلْ لَّآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٰى لِلْعٰلَمِيْنَ ﴿۹۰﴾ ع

राह की तरफ़ हिदायत फ़रमा दी थी।

88- येह अल्लाह की हिदायत है वोह अपने बन्दों में से जिसे चाहता है उसके ज़रीए रहनुमाई फ़रमाता है, और अगर (बिल फ़र्ज़) येह लोग शिर्क करते तो उनसे वोह सारे आ'माले (ख़ैर) ज़ब्त (या'नी नीस्तो नाबूद) हो जाते जो वोह अंजाम देते थे।

89- (येही) वोह लोग हैं जिन्हें हमने किताब और हुक्मे (शरीअ़त) और नुबुव्वत अ़ता फ़रमाई थी। फिर अगर येह लोग (या'नी कुफ़्फ़ार) उन बातों से इन्कार कर दें तो बेशक हमने उन (बातों) पर (ईमान लाने के लिए) ऐसी क़ौम को मुक़र्रर कर दिया है जो उनसे इन्कार करने वाले नहीं (होंगे)।

90- (येही) वोह लोग (या'नी पयग़म्बराने खुदा) हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत फ़रमाई है पस (ऐ रसूले आख़िरुज़्ज़मां!) आप उनकी (फ़ज़ीलतवाले सब) तरीक़ों (को अपनी सीरतमें जमा' करके उन) की पैरवी करें (ता कि आपकी ज़ात में उन तमाम अंबिया-व-रुसुल के फ़ज़ाइलो कमालात यकजा हो जाएं), आप फ़रमा दीजिए : (ऐ लोगो!) मैं तुम से उस (हिदायत की फ़राहमी) पर कोई उजरत नहीं मांगता, येह तो सिर्फ़ जहानवालों के लिए नसीहत है।

وَ مَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖٓ اِذْ قَالُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى بَشَرٍ مِّنْ شَيْءٍ ؕ قُلْ مَنْ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ الَّذِيْ جَآءَ بِهٖ مُوْسٰى نُوْرًا وَّهُدًى لِّلنَّاسِ تَجْعَلُوْنَهٗ قَرَاطِيْسَ تُبْدُوْنَهَا وَتُخْفُوْنَ كَثِيْرًا ۚ وَعُلِّمْتُمْ مَّا لَمْ تَعْلَمُوْٓا اَنْتُمْ وَلَآ اٰبَآؤُكُمْ ؕ

91- और उन्होंने (या'नी यहूदने) अल्लाह की वोह क़दर न जानी जैसी क़दर जानना चाहिए थी जब उन्हों ने येह केह (कर रिसालते मुहम्मदी ﷺ का इन्कार कर) दिया कि अल्लाहने किसी आदमी पर कोई चीज़ नहीं उतारी। आप फ़रमा दीजिए : वोह किताब किसने उतारी थी जो मूसा (عليه السلام) ले कर आए थे जो लोगों के लिए रौशनी और हिदायत थी? तुमने जिसके अलग अलग काग़ज़ बना लिए हैं तुम उसे (लोगों पर) ज़ाहिर (भी) करते हो और (उस में से) बहुत कुछ छुपाते (भी) हो और तुम्हें वोह (कुछ) सिखाया गया है जो न तुम जानते थे और न तुम्हारे

قُلِ اللّٰهُ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِيْ خَوْضِهِمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿٩١﴾

बापदादा, आप फ़रमा दीजिए : (येह सब) अल्लाह (ही का करम है) फिर आप उन्हें (उनके हा़ल पर) छोड़ दें कि वोह अपनी ख़ुराफ़ात में खेलते रहें।

وَ هٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَ لِتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَ مَنْ حَوْلَهَا وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ﴿٩٢﴾

92- और येह (वोह) किताब है जिसे हमने नाज़िल फ़रमाया है, बा बरकत है, जो किताबें इससे पहले थीं उनकी (अस्लन) तस्दीक़ करने वाली है। और (येह) इस लिए (नाज़िल की गई है) कि आप (अव्वलन) सब (इन्सानी) बस्तियों के मरकज़ (मक्का) वालों को और (सानियन सारी दुनिया में) उसके इर्द गिर्दवालों को डर सुनाएं, और जो लोग आख़िरत पर ईमान रखते हैं उस पर वोही ईमान लाते हैं और वोही लोग अपनी नमाज़ की पूरी हि़फ़ाज़त करते हैं।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ قَالَ اُوْحِيَ اِلَيَّ وَلَمْ يُوْحَ اِلَيْهِ شَيْءٌ وَّ مَنْ قَالَ سَاُنْزِلُ مِثْلَ مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَ لَوْ تَرٰۤى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ فِيْ غَمَرٰتِ الْمَوْتِ وَ الْمَلٰٓئِكَةُ بَاسِطُوْۤا اَيْدِيْهِمْ اَخْرِجُوْۤا اَنْفُسَكُمْ اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَ كُنْتُمْ عَنْ اٰيٰتِهٖ تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٩٣﴾

93- और उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूटा बोहतान बांधे या (नुबुव्वत का झूटा दा'वा करते हुए येह) कहे कि मेरी तरफ़ वह़ी की गई है हालांकि उसकी तरफ़ कुछ भी वह़ी न की गई हो और (उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा) जो (ख़ुदाई का झूटा दा'वा करते हुए येह) कहे कि मैं (भी) अ़नक़रीब ऐसी ही (किताब) नाज़िल करता हूं जैसी अल्लाह ने नाज़िल की है, और अगर आप (उस वक़्त का मन्ज़र) देखें जब ज़ालिम लोग मौत की सख़्तियों में (मुब्तिला) होंगे और फ़रिश्ते (उनकी तरफ़) अपने हाथ फैलाए हुए होंगे और (उनसे केहते होंगे) तुम अपनी जानें जिस्मों से निकालो। आज तुम्हें सज़ा में ज़िल्लत का अ़ज़ाब दिया जाएगा। इस वजह से कि तुम अल्लाह पर ना ह़क़ बातें किया करते थे और तुम उसकी आयतों से सरकशी किया करते थे।

وَ لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا فُرَادٰى كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّ تَرَكْتُمْ مَّا

94- और बेशक तुम (रोज़े क़ियामत) हमारे पास उसी तरह तन्हा आओगे जैसे हमने तुम्हें पहली मरतबा (तन्हा)

पैदा किया था और (अमवालो अवलाद में से) जो कुछ हमने तुम्हें दे रखा था वोह सब अपनी पीठ पीछे छोड़ आओगे, और हम तुम्हारे साथ तुम्हारे उन सिफ़ारिशियों को नहीं देखेंगे जिनकी निस्बत तुम (येह) गुमान करते थे कि वोह तुम्हारे (मुआ़मलात) में हमारे शरीक हैं। बेशक (आज) तुम्हारा बाहमी तअ़ल्लुक़ (व ए'तिमाद) मुन्क़ते' हो गया और वोह (सब) दा'वे जो तुम किया करते थे तुम से जाते रहे।

95- बेशक अल्लाह दाने और गुठली को फाड़ निकालनेवाला है वोह मुर्दह से ज़िन्दा को पैदा फ़रमाता है और ज़िन्दा से मुर्दह को निकालनेवाला है, येही (शानवाला) तो अल्लाह है फिर तुम कहां बेहके फिरते हो।

96- (वोही) सुब्ह़ (की रौशनी) को रात का अंधेरा चाक कर के निकालनेवाला है, और उसीने रातको आराम के लिए बनाया है और सूरज और चांदको हिसाबो शुमार के लिए, येह बहुत ग़ालिब बड़े इ़ल्म वाले (रब) का मुकर्ररह अंदाज़ा है।

97- और वोही है जिसने तुम्हारे लिए सितारों को बनाया ताकि तुम उनके ज़रीए़ बियाबानों और दरियाओं की तारीकियों में रास्ते पा सको । बेशक हमने इ़ल्म रखनेवाली क़ौम के लिए (अपनी) निशानियां खोल कर बयान कर दी हैं।

98- और वोही (अल्लाह) है जिसने तुम्हें एक जान (या'नी एक खुल्ये) से पैदा फ़रमाया है फिर (तुम्हारे लिए) एक जाए इक़ामत (है) और एक जाए अमानत (मुराद रहूमे मादर और दुनिया है या दुनिया और क़ब्र है)। बेशक हम ने समझनेवाले लोगों के लिए (अपनी क़ुदरत की) निशानियां खोल कर बयान कर दी हैं।

خَوَّلْنٰكُمْ وَرَآءَ ظُهُوْرِكُمْ ۚ وَمَا نَرٰى مَعَكُمْ شُفَعَآءَكُمُ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ اَنَّهُمْ فِيْكُمْ شُرَكٰٓؤُا ؕ لَقَدْ تَّقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَ ضَلَّ عَنْكُمْ مَّا كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿۹۴﴾

اِنَّ اللّٰهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَ النَّوٰى ؕ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَ مُخْرِجُ الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿۹۵﴾

فَالِقُ الْاِصْبَاحِ ۚ وَ جَعَلَ الَّيْلَ سَكَنًا وَّ الشَّمْسَ وَ الْقَمَرَ حُسْبَانًا ؕ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿۹۶﴾

وَ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ النُّجُوْمَ لِتَهْتَدُوْا بِهَا فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَ الْبَحْرِ ؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿۹۷﴾

وَ هُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَّ مُسْتَوْدَعٌ ؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّفْقَهُوْنَ ﴿۹۸﴾

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ
فَاَخْرَجْنَا بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ
فَاَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ مِنْهُ
حَبًّا مُّتَرَاكِبًا ۚ وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ
طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ وَّجَنّٰتٍ مِّنْ
اَعْنَابٍ وَّالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ
مُشْتَبِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ؕ اُنْظُرُوْٓا
اِلٰى ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَيَنْعِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ
ذٰلِكُمْ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿۹۹﴾

99- और वोही है जिसने आस्मान की तरफ़से पानी उतारा फिर हमने उस (बारिश) से हर क़िस्म की रूईदगी निकाली फिर हमने उससे सर सब्ज़(खेती) निकाली जिससे हम ऊपर तले पेवस्ता दाने निकालते हैं और खजूर के गाभे से लटकते हुए गुच्छे और अंगूरों के बाग़ात और ज़ैतून और अनार (भी पैदा किए जो कई ऐ'तिबारात से) आपसमें एक जैसे (लगते) हैं और (फल, ज़ाइक़े और तासीरात) जुदागाना हैं। तुम दरख़्त के फल की तरफ़ देखो जब वोह फल लाए और उसके पकने को (भी देखो), बेशक उनमें ईमान रखनेवालों के लिए निशानियां हैं।

وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ
وَخَرَقُوْا لَهٗ بَنِيْنَ وَبَنٰتٍۭ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ
سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿۱۰۰﴾

ع ١٢ ٦ ١٨

100- और उन काफ़िरों ने जिन्नात को अल्लाह का शरीक बनाया हालांकि उसीने उनको पैदा किया था और उन्हों ने अल्लाह के लिए बिगैर इल्म (व दानिश) के लड़के और लड़कियां (भी) घड़ लीं। वोह इन (तमाम) बातों से पाक और बुलंदो बाला है जो येह (उससे मुतअ़ल्लिक़) करते फिरते हैं।

بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَنّٰى
يَكُوْنُ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَمْ تَكُنْ لَّهٗ
صَاحِبَةٌ ؕ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ وَهُوَ
بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۱۰۱﴾

101- वोही आस्मानों और ज़मीन का मूजिद है, भला उसकी अवलाद क्यों कर हो सक्ती है हालां कि उसकी बीवी (ही) नहीं है, और उसीने हर चीज़को पैदा फ़रमाया है और वोह हर चीज़को ख़ूब जाननेवाला है।

ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا
هُوَ ۚ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوْهُ ۚ
وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿۱۰۲﴾

102- येही (अल्लाह) तुम्हारा परवरदिगार है उसके सिवा कोई लाइक़े इ़बादत नहीं (वोही) हर चीज़ का ख़ालिक़ है पस तुम उसी की इ़बादत किया करो और वोह हर चीज़ पर निगेहबान है।

لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ ۫ وَهُوَ يُدْرِكُ

103- निगाहें उसका इहाता नहीं कर सक्तीं और वोह

الْاَبْصَارَ ۚ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ﴿١٠٣﴾

सब निगाहों का इहाता किए हुए है, और वोह बड़ा बारीक बीन बड़ा बा ख़बर है।

قَدْ جَآءَكُمْ بَصَآئِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنْ اَبْصَرَ فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا ۗ وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ﴿١٠٤﴾

104- बेशक तुम्हारे पास तुम्हारे रब की जानिबसे (हिदायत की) निशानियां आ चुकी हैं पस जिसने (उन्हें निगाहे बसीरत से) देख लिया तो (येह) उसकी अपनी ज़ातके लिए (फ़ाइदामंद) है, और जो अँधा रहा तो उसका वबाल (भी) उसी पर है, और मैं तुम पर निगेहबान नहीं हूं।

وَكَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ وَلِيَقُوْلُوْا دَرَسْتَ وَلِنُبَيِّنَهٗ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿١٠٥﴾

105- और हम इसी तरह (अपनी) आयतों को बार बार (अंदाज़ बदल कर) बयान करते हैं और येह इस लिए कि वोह (काफ़िर) बोल उठें कि आपने (तो कहीं से) पढ़ लिया है ताकि हम उसको जानने वाले लोगों के लिए खूब वाज़ेह् कर दें।

اِتَّبِعْ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٦﴾

106- आप इस (कु़रआन) की पैरवी कीजिए जो आप की तरफ़ आपके रबकी जानिबसे वह्‌ी किया गया है अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं और आप मुशरिकों से कनाराकशी कर लीजिए।

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَآ اَشْرَكُوْا ۗ وَمَا جَعَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۚ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ﴿١٠٧﴾

107- और अगर अल्लाह (उनको जब्रन रोकना) चाहता तो येह लोग (कभी) शिर्क न करते, और हमने आपको (भी) उन पर निगेहबान नहीं बनाया और न आप उन पर पासबान हैं।

وَلَا تَسُبُّوا الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَسُبُّوا اللّٰهَ عَدْوًاۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ كَذٰلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ اُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ۠ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ مَّرْجِعُهُمْ

108- और (ऐ मुसलमानो!) तुम उन (झूटे मा'बूदों) को गाली मत दो जिन्हें येह (मुशरिक लोग) अल्लाह के सिवा पूजते हैं फिर वोह लोग (भी जवाबन) जहालत के बाइ़स जुल्म करते हुए अल्लाह की शान में दुश्नाम तराज़ी करने लगेंगे। इसी तरह हमने हर फ़िरक़ा (व जमाअ़त) के लिए उनका अ़मल (उनकी आँखों में) मरग़ूब कर रखा है (और

فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٠٨﴾

वोह उसी को हक़ समझते रेहते हैं) फिर सबको अपने रब ही की तरफ़ लौटना है और वोह उन्हें उन आ'माल के नताइज से आगाह फ़रमा देगा जो वोह अंजाम देते थे।

وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا ؕ قُلْ اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ وَمَا يُشْعِرُكُمْ ۙ اَنَّهَاۤ اِذَا جَآءَتْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠٩﴾

109- वोह बड़े ताकीदी हलफ़ के साथ अल्लाह की क़सम खाते हैं कि अगर उनके पास कोई (खुली) निशानी आ जाए तो वोह उस पर ज़रूर ईमान ले आएंगे। (उनसे) केह दो कि निशानियां तो सिर्फ़ अल्लाह ही के पास हैं और (ऐ मुसलमानो!) तुन्हें क्या ख़बर कि जब वोह निशानी आ जाएगी (तो) वोह (फिर भी) ईमान नहीं लाएंगे।

وَنُقَلِّبُ اَفْـِٕدَتَهُمْ وَاَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوْا بِهٖۤ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّنَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١١٠﴾ ع

١٣ ع ١٩

110- और हम उनके दिलों को और उनकी आँखों को (उनकी अपनी बद निय्यती के बाइस कुबूले हक़) से (उसी तरह) फेर देंगे जिस तरह वोह उस (नबी) पर पहली बार ईमान नहीं लाए (सो वोह निशानी देख कर भी ईमान नहीं लाएंगे) और हम उन्हें उनकी सरकशी (ही) में छोड़ देंगे कि वोह भटकते फिरें।

الجزء ٨

وَلَوْ اَنَّنَا نَزَّلْنَآ اِلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتٰى وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْٓا اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ يَجْهَلُوْنَ ﴿١١١﴾

111. और अगर हम उनकी तरफ़ फ़रिश्ते उतार देते और उनसे मुर्दे बातें करने लगते और हम उन पर हर चीज़ (आँखों के सामने) गिरोह दर गिरोह जमा' कर देते वोह तब भी ईमान न लाते सिवाए उसके जो अल्लाह चाहता और उन में से अक्सर लोग जहालत से काम लेते हैं।

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيٰطِيْنَ الْاِنْسِ وَالْجِنِّ يُوْحِيْ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُوْرًا ؕ وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ﴿١١٢﴾

112. और इसी तरह हमने हर नबी के लिए इन्सानों और जिन्नों में से शैतानों को दुश्मन बना दिया जो एक दूसरे के दिलमें मुलम्मा' की हुई (चिक्नी चुपड़ी) बातें (वस्वसे के तौर पर) धोका देने के लिए डालते रेहते हैं, और अगर आपका रब (उन्हें जब्रन रोकना) चाहता (तो) वोह ऐसा न कर पाते, सो आप उन्हें (भी) छोड़ दें और जो कुछ वोह बोहतान बांध रहे हैं (उसे भी)।

وَلِتَصْغٰٓى اِلَيْهِ اَفْـِٕدَةُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوْا مَا هُمْ مُّقْتَرِفُوْنَ ﴿١١٣﴾

113. और (येह) इसलिए कि उन लोगों के दिल उस (फ़रेब) की तरफ़ माइल हो जाएं जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते और (येह) कि वोह उसे पसंद करने लगें और (येह भी) कि वोह (उन्हीं आ'माले बद का) इर्तिकाब करने लगें जिनके वोह खुद (मुर्तकिब) हो रहे हैं।

اَفَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْتَغِيْ حَكَمًا وَّهُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ اِلَيْكُمُ الْكِتٰبَ مُفَصَّلًا ؕ وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْلَمُوْنَ اَنَّهٗ مُنَزَّلٌ مِّنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿١١٤﴾

114. (फ़रमा दीजिए) क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी और को हाकिम (व फ़ैसल) तलाश करूं हालांकि वोह (अल्लाह) ही है जिसने तुम्हारी तरफ़ मुफ़स्सल (या'नी वाज़ेह लाइहए अमल पर मुश्तमिल) किताब नाज़िल फ़रमाई है, और वोह लोग जिनको हमने (पहले) किताब दी थी (दिल से) जानते हैं कि येह (कुरआन) आपके रबकी तरफ़ से (मब्नी) बर हक़्क़ उतारा हुआ है पस आप (उन अह्ले किताब की निस्बत) शक करनेवालों में न हों। (कि येह लोग कुर्आन का वह़ी होना जानते हैं या नहीं)।

وَ تَمَّتۡ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدۡقًا وَّ عَدۡلًا ؕ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَ هُوَ السَّمِيۡعُ الۡعَلِيۡمُ ﴿۱۱۵﴾

115. और आपके रब की बात सच्चाई और अ़द्लकी रू से पूरी हो चुकी, उसकी बातों को कोई बदलनेवाला नहीं और वोह ख़ूब सुननेवाला ख़ूब जाननेवाला है।

وَ اِنۡ تُطِعۡ اَكۡثَرَ مَنۡ فِی الۡاَرۡضِ يُضِلُّوۡكَ عَنۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ ؕ اِنۡ يَّتَّبِعُوۡنَ اِلَّا الظَّنَّ وَ اِنۡ هُمۡ اِلَّا يَخۡرُصُوۡنَ ﴿۱۱۶﴾

116. और अगर तू ज़मीनमें (मौजूद) लोगों की अक्सरिय्यत का केहना मान ले तो वोह तुझे अल्लाह की राह से भटका देंगे। वोह (ह़क़्को यक़ीन की बजाए) सिर्फ़ वह्मो गुमान की पैरवी करते हैं और महज़ ग़लत क़ियास आराई (और दरोग़ गोई) करते रेहते हैं।

اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعۡلَمُ مَنۡ يَّضِلُّ عَنۡ سَبِيۡلِهٖ ۚ وَهُوَ اَعۡلَمُ بِالۡمُهۡتَدِيۡنَ ﴿۱۱۷﴾

117. बेशक आपका रब ही उसे ख़ूब जानता है जो उसकी राह से बेहका है और वोही हिदायत याफ़्ता लोगों से (भी)ख़ूब वाक़िफ़ है।

فَكُلُوۡا مِمَّا ذُكِرَ اسۡمُ اللّٰهِ عَلَيۡهِ اِنۡ كُنۡتُمۡ بِاٰيٰتِهٖ مُؤۡمِنِيۡنَ ﴿۱۱۸﴾

118. सो तुम उस (ज़बीहे) से खाया करो जिस पर (ज़ब्ह़के वक़्त) अल्लाहका नाम लिया गया हो अगर तुम उसकी आयतों पर ईमान रखनेवाले हो।

وَ مَا لَكُمۡ اَلَّا تَاۡكُلُوۡا مِمَّا ذُكِرَ اسۡمُ اللّٰهِ عَلَيۡهِ وَ قَدۡ فَصَّلَ لَكُمۡ مَّا حَرَّمَ عَلَيۡكُمۡ اِلَّا مَا اضۡطُرِرۡتُمۡ اِلَيۡهِ ؕ وَ اِنَّ كَثِيۡرًا لَّيُضِلُّوۡنَ بِاَهۡوَآئِهِمۡ بِغَيۡرِ عِلۡمٍ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعۡلَمُ بِالۡمُعۡتَدِيۡنَ ﴿۱۱۹﴾

119. और तुम्हें क्या है कि तुम उस (ज़बीहे) से नहीं खाते जिस पर (ज़ब्ह़ के वक़्त) अल्लाहका नाम लिया गया है (तुम उन ह़लाल जानवरों को बिला वजह ह़राम ठेहराते हो) हालांकि उसने तुम्हारे लिए उन (तमाम) चीज़ों को तफ़्सीलन बयान कर दिया है जो उसने तुम पर ह़राम की हैं, सिवाए उस (सूरत) के कि तुम (महज़ जान बचाने के लिए) उन (के ब क़द्रे ह़ाजत खाने) की तरफ़ इन्तिहाई मजबूर हो जाओ (सो अब तुम अपनी तरफ़से और चीज़ों को मज़ीद ह़राम न ठेहराया करो)। बेशक बहुतसे लोग बिग़ैर (पुख़्ता) इल्म के अपनी ख़्वाहिशात (और मन घड़त तसव्वुरात) के ज़रीए (लोगों को) बेहकाते रेहते हैं, और यक़ीनन आपका रब ह़दसे तजावुज़ करनेवालों को ख़ूब जानता है।

وَذَرُوا ظَاهِرَ الْإِثْمِ وَبَاطِنَهُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَكْسِبُونَ الْإِثْمَ سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوا يَقْتَرِفُونَ ﴿١٢٠﴾

120 .और तुम ज़ाहिरी और बातिनी (या'नी आशकारो पिन्हां दोनों क़िस्म के) गुनाह छोड़ दो। बेशक जो लोग गुनाह कमा रहे हैं उन्हें अनक़रीब सज़ा दी जाएगी उन (आ'माले बद) के बाइस जिनका वोह इर्तिकाब करते थे।

وَلَا تَأْكُلُوا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَإِنَّهُ لَفِسْقٌ ۗ وَإِنَّ الشَّيَاطِينَ لَيُوحُونَ إِلَىٰ أَوْلِيَائِهِمْ لِيُجَادِلُوكُمْ ۖ وَإِنْ أَطَعْتُمُوهُمْ إِنَّكُمْ لَمُشْرِكُونَ ﴿١٢١﴾

121. और तुम उस (जानवर के गोश्त) से न खाया करो जिस पर (ज़ब्ह के वक़्त) अल्लाह का नाम न लिया गया हो और बेशक वोह (गोश्त खाना) गुनाह है, और बेशक शयातीन अपने दोस्तों के दिलों में (वस्वसे) डालते रेहते हैं ताकि वोह तुम से झगड़ा करें और अगर तुम उनके केहने पर चल पड़े (तो) तुम भी मुशरिक हो जाओगे।

أَوَمَنْ كَانَ مَيْتًا فَأَحْيَيْنَاهُ وَجَعَلْنَا لَهُ نُورًا يَمْشِي بِهِ فِي النَّاسِ كَمَنْ مَثَلُهُ فِي الظُّلُمَاتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِنْهَا ۚ كَذَٰلِكَ زُيِّنَ لِلْكَافِرِينَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢٢﴾

122. भला वोह शख़्स जो मुर्दह (या'नी ईमानसे महरूम) था फिर हमने उसे (हिदायत की बदौलत) ज़िन्दा किया और हमने उसके लिए (ईमानो मा'रेफ़त का) नूर पैदा फ़रमा दिया (अब) वोह उसके ज़रीए (बक़िय्या) लोगों में (भी रौशनी फैलाने के लिए) चलता है उस शख़्सकी मानिन्द हो सक्ता है जिसका हाल येह हो कि (वोह जहालत और गुमराही के) अँधेरों में (इस तरह घिरा) पड़ा है कि उससे निकल ही नहीं सक्ता। इसी तरह काफ़िरों के लिए उनके वोह आ'माल (उनकी नज़रों में) खुशनुमा दिखाए जाते हैं जो वोह अंजाम देते रहते हैं।

وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ أَكَابِرَ مُجْرِمِيهَا لِيَمْكُرُوا فِيهَا ۖ وَمَا يَمْكُرُونَ إِلَّا بِأَنْفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿١٢٣﴾

123. और इसी तरह हमने हर बस्तीमें वडेरों (और रईसों) को वहां के जराइम का सरग़ना बनाया ताकि वोह उस (बस्ती) में मक्कारियां करें, और वोह (हक़ीक़त में) अपनी जानों के सिवा किसी (और) से फ़रेब नहीं कर रहे और वोह (उसके अंजामे बद का) शऊर नहीं रखते।

وَإِذَا جَآءَتْهُمْ ءَايَةٌ قَالُوا لَن نُّؤْمِنَ حَتَّىٰ نُؤْتَىٰ مِثْلَ مَآ أُوتِىَ رُسُلُ ٱللَّهِ ۘ ٱللَّهُ أَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهُۥ ۗ سَيُصِيبُ ٱلَّذِينَ أَجْرَمُوا صَغَارٌ عِندَ ٱللَّهِ وَعَذَابٌ شَدِيدٌۢ بِمَا كَانُوا يَمْكُرُونَ ﴿١٢٤﴾

وقف لازم
وقف منزل

124. और जब उनके पास कोई निशानी आती है (तो) केहते हैं : हम हरगिज़ ईमान नहीं लाएंगे यहां तक कि हमें भी वैसी ही (निशानी) दी जाए जैसी अल्लाह के रसूलों को दी गई है। अल्लाह ख़ूब जानता है कि उसे अपनी रिसालत का मह़ल किसे बनाना है। अ़नक़रीब मुजरिमों को अल्लाह के हुज़ूर ज़िल्लत रसीद होगी और सख़्त अ़ज़ाब भी (मिलेगा) इस वजह से वोह मक्र (और धोका दही) करते थे।

فَمَن يُرِدِ ٱللَّهُ أَن يَهْدِيَهُۥ يَشْرَحْ صَدْرَهُۥ لِلْإِسْلَٰمِ ۖ وَمَن يُرِدْ أَن يُضِلَّهُۥ يَجْعَلْ صَدْرَهُۥ ضَيِّقًا حَرَجًا كَأَنَّمَا يَصَّعَّدُ فِى ٱلسَّمَآءِ ۚ كَذَٰلِكَ يَجْعَلُ ٱللَّهُ ٱلرِّجْسَ عَلَى ٱلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٢٥﴾

125. पस अल्लाह जिस किसीको (फ़ज़्लन) हिदायत देनेका इरादा फ़रमाता है उसका सीना इस्लाम के लिए कुशादा फ़रमा देता है और जिस किसी को (अ़द्लन उसकी अपनी ख़रीद कर्दह) गुमराही पर ही रखनेका इरादा फ़रमाता है उसका सीना (ऐसी) शदीद घुटन के साथ तंग कर देता है गोया वोह ब मुश्किल आस्मान (या'नी बुलंदी) पर चढ़ रहा हो। इसी तरह़ अल्लाह उन लोगों पर अ़ज़ाबे (ज़िल्लत) वाक़े' फ़रमाता है जो ईमान नहीं लाते।

وَهَٰذَا صِرَٰطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيمًا ۗ قَدْ فَصَّلْنَا ٱلْءَايَٰتِ لِقَوْمٍ يَذَّكَّرُونَ ﴿١٢٦﴾

126. और येह (इस्लाम ही) आपके रबका सीधा रास्ता है बेशक हमने नसीह़त क़ुबूल करनेवाले लोगों के लिए आयतें तफ़्सील से बयान कर दी हैं।

لَهُمْ دَارُ ٱلسَّلَٰمِ عِندَ رَبِّهِمْ ۖ وَهُوَ وَلِيُّهُم بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢٧﴾

127. उन्हीं के लिए उनके रबके हुज़ूर सलामती का घर है और वोही उनका मौला है उन आ'माले (सालेहा) के बाइस जो वोह अंजाम दिया करते थे।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ۖ يَٰمَعْشَرَ ٱلْجِنِّ قَدِ ٱسْتَكْثَرْتُم مِّنَ ٱلْإِنسِ ۖ وَقَالَ أَوْلِيَآؤُهُم مِّنَ

128. और जिस दिन वोह उन सबको जमा' फ़रमाएगा (तो इर्शाद होगा) ऐ गिरोहे जिन्नात (या'नी शयातीन!) बेशक तुमने बहुतसे इन्सानों को (गुमराह) कर लिया और इन्सानों में से उनके दोस्त कहेंगे, ऐ हमारे रब! हमने एक दूसरे से (ख़ूब) फ़ाइदे ह़ासिल किए और (इसी ग़फ़्लत

الْإِنسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَبَلَغْنَا أَجَلَنَا الَّذِي أَجَّلْتَ لَنَا ۚ قَالَ النَّارُ مَثْوَاكُمْ خَالِدِينَ فِيهَا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۗ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿١٢٨﴾

और मफ़ाद परस्ती के आ़लम में) हम अपनी उस मीआ़द को पहुंच गए जो तूने हमारे लिए मुक़र्रर फ़रमाई थी (मगर हम उसके लिए कुछ तैयारी न कर सके)। अल्लाह फ़रमाएगा कि (अब) दोज़ख़ ही तुम्हारा ठिकाना है हमेशा उसीमें रहोगे मगर जो अल्लाह चाहे। बेशक आपका रब बड़ी हिक्मतवाला ख़ूब जाननेवाला है।

وَكَذَٰلِكَ نُوَلِّي بَعْضَ الظَّالِمِينَ بَعْضًا بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿١٢٩﴾

129. इसी तरह़ हम ज़ालिमों में से बा'ज़ को बा'ज़ पर मुसल्लत करते रेहते हैं उन आ'माले (बद) के बाइ़स जो वोह कमाया करते हैं।

يَا مَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنكُمْ يَقُصُّونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِي وَيُنذِرُونَكُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا ۚ قَالُوا شَهِدْنَا عَلَىٰ أَنفُسِنَا ۖ وَغَرَّتْهُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَشَهِدُوا عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا كَافِرِينَ ﴿١٣٠﴾

130. ऐ गिरोहे जिन्नो इन्स! क्या तुम्हारे पास तुम ही में से रसूल नहीं आए थे जो तुम पर मेरी आयतें बयान करते थे और तुम्हारी उस दिनकी पेशी से तुम्हें डराते थे (तो) वोह कहेंगे हम अपनी जानों के ख़िलाफ़ गवाही देते हैं और उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी ने धोके में डाल रखा था और वोह अपनी जानों के ख़िलाफ़ इस (बात) की गवाही देंगे कि वोह (दुनिया में) काफ़िर (या'नी ह़क़ के इन्कारी) थे।

ذَٰلِكَ أَن لَّمْ يَكُن رَّبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ بِظُلْمٍ وَأَهْلُهَا غَافِلُونَ ﴿١٣١﴾

131. येह (रसूलों का भेजना) इस लिए था कि आपका रब बस्तियों को ज़ुल्म के बाइ़स ऐसी ह़ालत में तबाह करनेवाला नहीं है कि वहां के रेहनेवाले (ह़क़ की ता'लीमात से बिल्कुल) बेख़बर हों (या'नी उन्हें किसी ने ह़क़ से आगाह ही न किया हो)।

وَلِكُلٍّ دَرَجَاتٌ مِّمَّا عَمِلُوا ۚ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُونَ ﴿١٣٢﴾

132. और हर एक के लिए उनके आ'माल के लिहाज़से दरजात (मुक़र्रर) हैं, और आपका रब उन कामों से बे ख़बर नहीं जो वोह अंजाम देते हैं।

وَرَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ ۚ إِن يَشَأْ

133. और आपका रब बेनियाज़ है, (बड़ी) रह़मतवाला

يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ مِنْ بَعْدِكُمْ مَّا يَشَآءُ كَمَآ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ ذُرِّيَّةِ قَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ﴿١٣٣﴾

है, अगर चाहे तो तुम्हें नाबूद कर दे और तुम्हारे बाद जिसे चाहे (तुम्हारा) जा नशीन बना दे जैसा कि उसने दूसरे लोगों की अवलाद से तुमको पैदा फ़रमाया है।

اِنَّ مَا تُوْعَدُوْنَ لَاٰتٍ ۙ وَّمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿١٣٤﴾

134. बेशक जिस (अ़ज़ाब) का तुमसे वा'दा किया जा रहा है वोह ज़रूर आनेवाला है और तुम (अल्लाह को) आ़जिज़ नहीं कर सक्ते।

قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿١٣٥﴾

135. फ़रमा दीजिए : ऐ (मेरी)क़ौम! तुम अपनी जगह पर अ़मल करते रहो बेशक मैं (अपनी जगह) अ़मल किए जा रहा हूं। फिर तुम अ़नक़रीब जान लोगे कि आख़िरत का अंजाम किस के लिए (बेहतर है)। बेशक ज़ालिम लोग नजात नहीं पाएंगे।

وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ مِمَّا ذَرَاَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْاَنْعَامِ نَصِيْبًا فَقَالُوْا هٰذَا لِلّٰهِ بِزَعْمِهِمْ وَهٰذَا لِشُرَكَآئِنَا ۚ فَمَا كَانَ لِشُرَكَآئِهِمْ فَلَا يَصِلُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَمَا كَانَ لِلّٰهِ فَهُوَ يَصِلُ اِلٰى شُرَكَآئِهِمْ ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿١٣٦﴾

136. उन्होंने अल्लाह के लिए उन्हीं (चीज़ों)में से एक हिस्सा मुक़र्रर कर लिया है जिन्हें उसने खेती और मवेशियों में से पैदा फ़रमाया है फिर अपने गुमाने (बातिल) से केहते हैं कि येह (हिस्सा) अल्लाह के लिए है और येह हमारे (खुद साख़्ता) शरीकों के लिए है फिर जो (हिस्सा) उनके शरीकों के लिए है सो वोह तो अल्लाह तक नहीं पहुंचता और जो (हिस्सा) अल्लाह के लिए है तो वोह उनके शरीकों तक पहुंच जाता है, (वोह) क्या ही बुरा फ़ैसला कर रहे हैं।

وَكَذٰلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيْرٍ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ قَتْلَ اَوْلَادِهِمْ شُرَكَآؤُهُمْ لِيُرْدُوْهُمْ وَلِيَلْبِسُوْا عَلَيْهِمْ دِيْنَهُمْ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ﴿١٣٧﴾

137. और इसी तरह बहुतसे मुशरिकों के लिए उनके शरीकों ने अपनी अवलाद को मार डालना (उनकी निगाह में) खुशनुमा कर दिखाया है ताकि वोह उन्हें बरबाद कर डालें और उनके (बचे खुचे) दीन को (भी) उन पर मुश्तबह कर दें, और अगर अल्लाह (उन्हें जब्रन रोकना) चाहता तो वोह ऐसा न कर पाते पस आप उन्हें और जो इफ़्तिरा पर्दाज़ी वोह कर रहे हैं (उसे नज़रअंदाज़ करते हुए) छोड़ दीजिए।

وَقَالُوا هٰذِهٖٓ اَنْعَامٌ وَّحَرْثٌ حِجْرٌ لَّا يَطْعَمُهَآ اِلَّا مَنْ نَّشَآءُ بِزَعْمِهِمْ وَاَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُوْرُهَا وَاَنْعَامٌ لَّا يَذْكُرُوْنَ اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا افْتِرَآءً عَلَيْهِ ؕ سَيَجْزِيْهِمْ بِمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿١٣٨﴾

138. और अपने ख़याले (बातिल) से (येह भी) केहते हैं कि येह (मख़्सूस) मवेशी और खेती मम्नूअ़ है, इसे कोई नहीं खा सक्ता सिवाए उसके जिसे हम चाहें और (येह कि बा'ज़) चौपाए ऐसे हैं जिनकी पीठ (पर सवारी) को ह़राम किया गया है और (बा'ज़) मवेशी ऐसे हैं कि जिन पर (ज़ब्ह़ के वक़्त) येह लोग अल्लाह का नाम नहीं लेते (येह सब) अल्लाह पर बोहतान बांधना है, अ़नक़रीब वोह उन्हें (इस बात की) सज़ा देगा जो वोह बोहतान बांधते थे।

وَقَالُوْا مَا فِيْ بُطُوْنِ هٰذِهِ الْاَنْعَامِ خَالِصَةٌ لِّذُكُوْرِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلٰٓى اَزْوَاجِنَا ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مَّيْتَةً فَهُمْ فِيْهِ شُرَكَآءُ ؕ سَيَجْزِيْهِمْ وَصْفَهُمْ ؕ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿١٣٩﴾

139. और (येह भी) केहते हैं कि जो (बच्चा) इन चौपायों के पेट में है वोह हमारे मर्दों के लिए मख़्सूस है और हमारी औरतों पर ह़राम कर दिया गया है और अगर वोह (बच्चा) मरा हुआ (पैदा) हो तो वोह (मर्द और औरतें) सब उसमें शरीक होते हैं, अ़नक़रीब वोह उन्हें उनकी (मन घड़त) बातों की सज़ा देगा बेशक वोह बड़ी ह़िक्मतवाला खूब जाननेवाला है।

قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ قَتَلُوْٓا اَوْلَادَهُمْ سَفَهًۢا بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّحَرَّمُوْا مَا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ افْتِرَآءً عَلَى اللّٰهِ ؕ قَدْ ضَلُّوْا وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿١٤٠﴾

140. वाक़ई ऐसे लोग बरबाद हो गए जिन्होंने अपनी अवलाद को बिग़ैर इल्मे (सह़ीह़) के (मह़ज़) बे वक़ूफ़ी से क़त्ल कर डाला और उन (चीज़ों) को जो अल्लाहने उन्हें (रोज़ी के तौर पर) बख़्शी थीं अल्लाह पर बोह़तान बांधते हुए ह़राम कर डाला, बेशक वोह गुमराह हो गए और हिदायत याफ़्ता न हो सके।

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَ جَنّٰتٍ مَّعْرُوْشٰتٍ وَّغَيْرَ مَعْرُوْشٰتٍ وَّالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا اُكُلُهٗ وَالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ؕ كُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَاٰتُوْا حَقَّهٗ

141. और वोही है जिसने बर्दाश्तह और ग़ैर बर्दाश्तह (या'नी बेलों के ज़रीए ऊपर चढ़ाए गए और बिग़ैर ऊपर चढ़ाए गए) बाग़ात पैदा फ़रमाए और खजूर (के दरख़्त) और ज़राअ़त जिसके फल गूनागूं हैं और ज़ैतून और अनार (जो शक्लमें) एक दूसरे से मिलते जुलते हैं और (ज़ाइक़े में) जुदागाना हैं (भी पैदा किए)। जब (येह दरख़्त) फल लाएं तो तुम उनके फल खाया (भी) करो और उस (खेती

يَوْمَ حَصَادِهٖ ۖ وَلَا تُسْرِفُوْا ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ۙ﴿۱۴۱﴾

और फल) के कटने के दिन उसका (अल्लाह की तरफ़से मुक़र्रर कर्दह) हक़ (भी) अदा कर दिया करो और फुज़ूल ख़र्ची न किया करो बेशक वोह बेजा ख़र्च करने वालों को पसंद नहीं करता।

وَمِنَ الْاَنْعَامِ حَمُوْلَةً وَّ فَرْشًا ؕ كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۙ﴿۱۴۲﴾

142. और (उसने) बार बर्दारी करनेवाले (बुलंद क़ामत) चौपाए और ज़मीन पर (ज़ब्ह के लिए या छोटे क़द के बाइस) बिछने वाले (मवेशी पैदा फ़रमाए) तुम उस रिज़्क़ में से (भी ब तरीक़े ज़ब्ह) खाया करो जो अल्लाह ने तुम्हें बख़्शा है और शैतान के रास्तों पर न चला करो, बेशक वोह तुम्हारा खुला दुश्मन है।

ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ۚ مِنَ الضَّاْنِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ اثْنَيْنِ ؕ قُلْ ءٰٓالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ؕ نَبِّـُٔوْنِيْ بِعِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۙ﴿۱۴۳﴾

143. (अल्लाहने) आठ जोड़े पैदा किए दो (नर व मादह) भेड़से और दो (नर व मादह) बकरीसे। (आप उनसे) फ़रमा दीजिए : क्या उसने दोनों नर ह़राम किए हैं या दोनों मादह या वोह (बच्चा) जो दोनों मादाओं के रह़मों में मौजूद है? मुझे इल्मो दानिश के साथ बताओ अगर तुम सच्चे हो।

وَمِنَ الْاِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ ؕ قُلْ ءٰٓالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ؕ اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ وَصّٰىكُمُ اللّٰهُ بِهٰذَا ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا لِّيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۴۴﴾ ع

144. और दो (नर व मादह) ऊंट से और दो (नर व मादह) गाय से। (आप उनसे) फ़रमा दीजिए : क्या उसने दोनों नर हराम किए हैं या दोनों मादह या वोह (बच्चा) जो दोनों मादाओं के रह़मों में मौजूद है? क्या तुम उस वक़्त मौजूद थे जब अल्लाहने तुम्हें इस (हुर्मत) का हुक्म दिया था? फिर उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन हो सक्ता है जो अल्लाह पर झूटा बोहतान बांधता है ताकि लोगों को बिग़ैर जाने गुमराह करता फिरे। बेशक अल्लाह ज़ालिम क़ौम को हिदायत नहीं फ़रमाता।

قُلْ لَّآ اَجِدُ فِيْ مَآ اُوْحِيَ اِلَيَّ مُحَرَّمًا عَلٰى طَاعِمٍ يَّطْعَمُهٗٓ اِلَّآ اَنْ يَّكُوْنَ مَيْتَةً اَوْ دَمًا مَّسْفُوْحًا اَوْ لَحْمَ خِنْزِيْرٍ فَاِنَّهٗ رِجْسٌ اَوْ فِسْقًا اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ رَبَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۴۵﴾

145. आप फ़रमा दें कि मेरी तरफ़ जो वही भेजी गई है उसमें तो मैं किसी (भी) खानेवाले पर (ऐसी चीज़ को) जिसे वोह खाता हो ह़राम नहीं पाता सिवाए इस के कि वोह मुर्दार हो या बेहता हुवा खून हो या सुव्वर का गोश्त हो क्योंकि येह ना पाक है या ना फ़रमानी का जानवर जिस पर ज़ब्ह़ के वक्त ग़ैरुल्लाह का नाम बुलंद किया गया हो। फिर जो शख़्स (भूक के बाइस) सख़्त लाचार हो जाए न तो ना फ़रमानी कर रहा हो और न ह़दसे तजावुज़ कर रहा हो तो बेशक आपका रब बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِيْ ظُفُرٍ ۚ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شُحُوْمَهُمَآ اِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُوْرُهُمَآ اَوِ الْحَوَايَآ اَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ؕ ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِبَغْيِهِمْ ۖ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿۱۴۶﴾

146. और यहूदियों पर हमने हर नाखुनवाला (जानवर) ह़राम कर दिया था और गाय और बकरीमें से हमने उन पर दोनों की चरबी ह़राम कर दी थी सिवाए उस (चरबी) के जो दोनों की पीठ में हो या ओझड़ी में लगी हो या जो हड्डी के साथ मिली हो । येह हमने उनकी सरकशी के बाइस उन्हें सज़ा दी थी और यक़ीनन हम सच्चे हैं।

فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ رَّبُّكُمْ ذُوْ رَحْمَةٍ وَّاسِعَةٍ ۚ وَلَا يُرَدُّ بَاْسُهٗ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۱۴۷﴾

147. फिर अगर वोह आप को झुटलाएं तो फ़रमा दीजिए कि तुम्हारा रब वसीअ़ रह़मतवाला है और उसका अ़ज़ाब मुजरिम क़ौम से नहीं टाला जाएगा।

سَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَآ اَشْرَكْنَا وَلَآ اٰبَآؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ شَيْءٍ ؕ كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ حَتّٰى ذَاقُوْا

148.जल्द ही मुशरिक लोग कहेंगे कि अगर अल्लाह चाहता तो न (ही) हम शिर्क करते और न हमारे आबाओ अज्दाद और न किसी चीज़ को (बिला सनद) ह़राम क़रार देते । इसी तरह़ उन लोगोंने भी झुटलाया था जो उनसे पेहले थे ह़त्ता कि उन्हों ने हमारा अ़ज़ाब चख लिया। फ़रमा दीजिए : क्या तुम्हारे पास कोई (क़ाबिले हुज्जत)

بَأۡسَنَا ؕ قُلۡ هَلۡ عِنۡدَكُمۡ مِّنۡ عِلۡمٍ فَتُخۡرِجُوۡهُ لَنَا ؕ اِنۡ تَتَّبِعُوۡنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنۡ اَنۡتُمۡ اِلَّا تَخۡرُصُوۡنَ ﴿۱۴۸﴾ قُلۡ فَلِلّٰهِ الۡحُجَّةُ الۡبَالِغَةُ ۚ فَلَوۡ شَآءَ لَهَدٰٮكُمۡ اَجۡمَعِيۡنَ ﴿۱۴۹﴾

इल्म है कि तुम उसे हमारे लिए निकाल लाओ (तो उसे पेश करो), तुम (इल्मे यक़ीनी को छोड़ कर) सिर्फ़ गुमान ही की पैरवी करते हो और तुम महज़ (तख़्मीने की बुनियाद पर) दरोग़ गोई करते हो।

149.फ़रमा दीजिए कि दलीले मोहूकम तो अल्लाह ही की है, पस अगर वोह (तुम्हें मजबूर करना) चाहता तो यक़ीनन तुम सबको (पाबंदे)हिदायत फ़रमा देता। ★

قُلۡ هَلُمَّ شُهَدَآءَكُمُ الَّذِيۡنَ يَشۡهَدُوۡنَ اَنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ هٰذَا ۚ فَاِنۡ شَهِدُوۡا فَلَا تَشۡهَدۡ مَعَهُمۡ ۚ وَلَا تَتَّبِعۡ اَهۡوَآءَ الَّذِيۡنَ كَذَّبُوۡا بِاٰيٰتِنَا وَالَّذِيۡنَ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ بِالۡاٰخِرَةِ وَهُمۡ بِرَبِّهِمۡ يَعۡدِلُوۡنَ ﴿۱۵۰﴾

150. (उन मुशरिकों से) फ़रमा दीजिए कि तुम अपने उन गवाहों को पेश करो जो (आ कर) इस बात की गवाही दें कि अल्लाहने उसे हराम किया है फिर अगर वोह (झूटी) गवाही दे ही दें तो उनकी गवाही को तस्लीम न करना (बल्किउनका झूटा होना उन पर आश्कार कर देना) और न ऐसे लोगों की ख़्वाहिशात की पैरवी करना जो हमारी आयतों को झुटलाते हैं और जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते और वोह (मा'बूदाने बातिला को) अपने रबके बराबर ठेहराते हैं।

قُلۡ تَعَالَوۡا اَتۡلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمۡ عَلَيۡكُمۡ اَلَّا تُشۡرِكُوۡا بِهٖ شَيۡـًٔـا وَّبِالۡوَالِدَيۡنِ اِحۡسَانًا ۚ وَلَا تَقۡتُلُوۡۤا اَوۡلَادَكُمۡ مِّنۡ اِمۡلَاقٍ ؕ نَحۡنُ نَرۡزُقُكُمۡ وَاِيَّاهُمۡ ۚ وَلَا تَقۡرَبُوا الۡفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنۡهَا وَمَا بَطَنَ ۚ وَلَا تَقۡتُلُوا النَّفۡسَ الَّتِىۡ

151. फ़रमा दीजिए : आओ मैं वोह चीज़ें पढ़ कर सुना दूं जो तुम्हारे रबने तुम पर ह़राम की हैं (वोह) येह कि तुम उसके साथ किसी चीज को शरीक न ठेहराओ और मां बाप के साथ अच्छा सुलूक करो और मुफ़लिसी के बाइस अपनी अवलाद को क़त्ल मत करो। हम ही तुम्हें रिज़्क़ देते हैं और उन्हें भी (देंगे) और बे ह़याई के कामों के क़रीब न जाओ (ख़्वाह) वोह ज़ाहिर हों और (ख़्वाह) वोह पोशीदह हों और उस जान को क़त्ल न करो जिसे (क़त्ल करना) अल्लाहने हराम किया है बजुज़ ह़क़्क़े(शरई) के येही वोह (उमूर) हैं जिनका उसने तुम्हें ताकीदी हुक्म

★वोह ह़क़्क़ो बातिल का फ़र्क़ और दोनों का अंजाम समझाने के बाद हर एक को आज़ादी से अपना रास्ता इख़्तियार करने का मौक़ा' देता है, ताकि हर शख़्स अपने किए का खुद ज़िम्मेदार ठेहरे और उस पर जज़ा और सज़ा का ह़क़दार क़रार पाए।

حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ۚ ذٰلِكُمْ وَصّٰكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿١٥١﴾

दिया है ताकि तुम अ़क्ल से काम लो।

وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۚ وَ اَوْفُوا الْكَيْلَ وَ الْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ ۚ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ۚ وَ اِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوْا وَ لَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۚ وَبِعَهْدِ اللّٰهِ اَوْفُوْا ۚ ذٰلِكُمْ وَصّٰكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿١٥٢﴾

152. और यतीम के माल के क़रीब मत जाना मगर ऐसे तरीक़ से जो बहुत ही पसन्दीदह हो यहां तक कि वोह अपनी जवानी को पहुंच जाए, और पैमाने और तराज़ू (या'नी नाप और तोल) को इन्साफ़ के साथ पूरा किया करो। हम किसी शख़्स को उसकी ताक़त से ज़ियादा तक्लीफ़ नहीं देते और जब तुम (किसी की निस्बत कुछ) कहो तो अ़द्ल करो अगरचे वोह (तुम्हारा) क़राबतदार ही हो और अल्लाह के अ़हद को पूरा किया करो, येही (बातें) हैं जिनका उसने तुम्हें ताकीदी हुक्म दिया है ताकि तुम नसीहत कुबूल करो।

وَ اَنَّ هٰذَا صِرَاطِيْ مُسْتَقِيْمًا فَاتَّبِعُوْهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۚ ذٰلِكُمْ وَصّٰكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿١٥٣﴾

153. और येह कि येही (शरीअ़त) मेरा सीधा रास्ता है सो तुम उसकी पैरवी करो और (दूसरे) रास्तों पर न चलो फिर वोह (रास्ते) तुम्हें अल्लाह की राह से जुदा कर देंगे, येही वोह बात है जिसका उसने तुम्हें ताकीदी हुक्म दिया है ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ।

ثُمَّ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ تَمَامًا عَلَى الَّذِيْٓ اَحْسَنَ وَ تَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَّ هُدًى وَّ رَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ بِلِقَآءِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٥٤﴾

154. फिर हमने मूसा (عليه السلام) को किताब अ़ता की उस शख़्स पर (ने'मत) पूरी करने के लिए जो नेकूकार बने और (उसे) हर चीज़की तफ़्सील और हिदायत और रह़मत बना कर (उतारा) ताकि वोह (लोग क़ियामत के दिन) अपने रब से मुलाक़ात पर ईमान लाएं।

وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ فَاتَّبِعُوْهُ وَاتَّقُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿١٥٥﴾

155. और येह (कुरआन) बरकतवाली किताब है जिसे हमने नाज़िल फ़रमाया है सो (अब) तुम इसकी पैरवी किया करो और (अल्लाह से) डरते रहो ताकि तुम पर रह़म किया जाए।

اَنْ تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ اُنْزِلَ الْكِتٰبُ

156. (कुरआन इस लिए नाज़िल किया है) कि तुम

عَلٰى طَآئِفَتَيْنِ مِنْ قَبْلِنَا ۖ وَ اِنْ كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ لَغٰفِلِيْنَ ۝١٥٦

कहीं येह (न) कहो कि बस (आस्मानी) किताब तो हमने पहले सिर्फ़ दो गिरोहों (यहूदो नसारा) पर उतारी गई थी और बेशक हम उनके पढ़ने पढ़ाने से बे ख़बर थे।

اَوْ تَقُوْلُوْا لَوْ اَنَّآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا الْكِتٰبُ لَكُنَّآ اَهْدٰى مِنْهُمْ ۚ فَقَدْ جَآءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَصَدَفَ عَنْهَا ۗ سَنَجْزِي الَّذِيْنَ يَصْدِفُوْنَ عَنْ اٰيٰتِنَا سُوْٓءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يَصْدِفُوْنَ ۝١٥٧

157. या येह (न) कहो कि अगर हम पर किताब उतारी जाती तो हम यक़ीनन उनसे ज़ियादा हिदायत याफ़्ता होते सो अब तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हारे पास वाज़ेह़ दलील और हिदायत और रह़मत आ चुकी है, फिर उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन हो सक्ता है जो अल्लाह की आयतों को झुटलाए और उनसे कतराए। हम अनक़रीब उन लोगों को जो हमारी आयतों से गुरेज़ करते हैं बुरे अ़ज़ाब की सज़ा देंगे इस वजह से कि वोह (आयाते रब्बानी से) ए'राज़ करते थे।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَاْتِيَ رَبُّكَ اَوْ يَاْتِيَ بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ ۗ يَوْمَ يَاْتِيْ بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا اِيْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ اٰمَنَتْ مِنْ قَبْلُ اَوْ كَسَبَتْ فِيْٓ اِيْمَانِهَا خَيْرًا ۗ قُلِ انْتَظِرُوْٓا اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ۝١٥٨

158. वोह फ़क़त इसी इन्तिज़ार में हैं कि उनके पास (अ़ज़ाब के) फ़रिश्ते आ पहुंचें या आपका रब (ख़ुद) आ जाए या आपके रब की कुछ (मख़्सूस) निशानियां (अ़यानन) आ जाएं। (उन्हें बता दीजिए कि) जिस दिन आपके रब की बा'ज़ निशानियां (यूं ज़ाहिरन) आ पहुंचेंगी (तो उस वक़्त) किसी (ऐसे) शख़्स का ईमान उसे फ़ाइदा नहीं पहुंचाएगा जो पहले से ईमान नहीं लाया था या उसने अपने ईमान (की ह़ालत) में कोई नेकी नहीं कमाई थी, फ़रमा दीजिए : तुम इन्तिज़ार करो हम (भी) मुन्तज़िर हैं।

اِنَّ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا شِيَعًا لَّسْتَ مِنْهُمْ فِيْ شَيْءٍ ۗ اِنَّمَآ اَمْرُهُمْ اِلَى اللّٰهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ۝١٥٩

159. बेशक जिन लोगों ने (जुदा जुदा राहें निकाल कर) अपने दीन को पारह पारह कर दिया और वोह (मुख़्तलिफ़) फ़िरक़ों में बट गए, आप किसी चीज़में उनके (तअ़ल्लुक़दार और ज़िम्मेदार) नहीं हैं, बस उनका मुआ़मला अल्लाह ही के ह़वाले है फिर वोह उन्हें उन कामों से आगाह फ़रमा देगा जो वोह किया करते थे।

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشْرُ
أَمْثَالِهَا ۚ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ
فَلَا يُجْزٰٓى إِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ
لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١٦٠﴾

160. जो कोई एक नेकी लाएगा तो उसके लिए (बतौरे अज्र) उस जैसी दस नेकियां हैं और जो कोई एक गुनाह लाएगा तो उसको उस जैसे एक (गुनाह) के सिवा सज़ा नहीं दी जाएगी और वोह ज़ुल्म नहीं किए जाएंगे।

قُلْ إِنَّنِيْ هَدٰىنِيْ رَبِّيْٓ إِلٰى صِرَاطٍ
مُّسْتَقِيْمٍ ۚ دِيْنًا قِيَمًا مِّلَّةَ إِبْرٰهِيْمَ
حَنِيْفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٦١﴾

161. फ़रमा दीजिए : बेशक मुझे मेरे रबने सीधे रास्ते की हिदायत फ़रमा दी है (येह) मज़बूत दीन (की राह है और येही) अल्लाह की तरफ़ यक्सू और हर बातिल से जुदा इब्राहीम (عليه السلام) की मिल्लत है और वोह मुशरिकों में से न थे।

قُلْ إِنَّ صَلَاتِيْ وَنُسُكِيْ وَمَحْيَايَ
وَمَمَاتِيْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦٢﴾

162. फ़रमा दीजिए कि बेशक मेरी नमाज़ और मेरा हज और क़ुर्बानी (समेत सब बंदगी) और मेरी ज़िन्दगी और मेरी मौत अल्लाह के लिए है जो तमाम जहानों का रब है।

لَا شَرِيْكَ لَهٗ ۚ وَبِذٰلِكَ أُمِرْتُ
وَأَنَا أَوَّلُ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿١٦٣﴾

163. उसका कोई शरीक नहीं और उसीका मुझे हुक्म दिया गया है और में (जमीअ् मख़्लूक़ात में) सबसे पहला मुसलमान हूं।

قُلْ أَغَيْرَ اللّٰهِ أَبْغِيْ رَبًّا وَّهُوَ رَبُّ
كُلِّ شَيْءٍ ۚ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ إِلَّا
عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ أُخْرٰى ۚ
ثُمَّ إِلٰى رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا
كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٦٤﴾

164. फ़रमा दीजिए : क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई दूसरा रब तलाश करूं हालांकि वोही हर शय का परवरदिगार है, और हर शख़्स जो भी (गुनाह) करता है (उस का वबाल) उसी पर होता है और कोई बोझ उठानेवाला दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा। फिर तुम्हें अपने रब ही की तरफ़ लौटना है फिर वोह तुम्हें उन (बातों की हक़ीक़त) से आगाह फ़रमा देगा जिनमें तुम इख़्तिलाफ़ किया करते थे।

وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ
الْأَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ
بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَآ

165. और वोही है जिसने तुमको ज़मीनमें नाइब बनाया और तुम में से बा'ज़ को बा'ज़ पर दरजात में बुलंद किया ताकि वोह उन (चीज़ों) में तुम्हें आज़माए जो उसने तुम्हें (अमानतन) अ़ता कर रखी हैं । बेशक आपका रब (अ़ज़ाब के हक़दारों को) जल्द सज़ा देनेवाला है और

اٰتٰىكُمْ ۭ اِنَّ رَبَّكَ سَرِيْعُ الْعِقَابِ ڮ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٦٥﴾

बेशक वोह (मग़्फ़िरत के उम्मीदवारों को) बड़ा बख़्शनेवाला और बे हद रह़म फ़रमानेवाला है।

ع ۲۰ النصف

आयातुहा 206 — 7 सूरतुल आ'राफ़ि मक्किय्यतुन 39 — रुकूआतुहा 24

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरू जो निहायत महेरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

الٓمّٓصٓ ﴿١﴾

1. अलिफ़ लाम मीम साद (ह़क़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल (ﷺ) ही बेहतर जानते हैं)।

كِتٰبٌ اُنْزِلَ اِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِيْ صَدْرِكَ حَرَجٌ مِّنْهُ لِتُنْذِرَ بِهٖ وَذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢﴾

2. (ऐ ह़बीबे मुकर्रम!) येह किताब है(जो) आपकी तरफ़ उतारी गई है सो आपके सीनए (अनवर) में इस (की तब्लीग़ पर कुफ़्फ़ार के इन्कारो तक्ज़ीब के ख़्याल)से कोई तंगी न हो (येह तो उतारी ही इस लिए गई है)कि आप इसके ज़रीए (मुन्किरीन को) डर सुना सकें और येह मो'मिनीन के लिए नसीह़त (है)।

اِتَّبِعُوْا مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٣﴾

3. (ऐ लोगो!) तुम इस (कुरआन)की पैरवी करो जो तुम्हारे रबकी तरफ़से तुम्हारी तरफ़ उतारा गया है और उसके गैरों में से (बातिल ह़ाकिमों और) दोस्तों के पीछे मत चलो, तुम बहुत ही कम नसीह़त क़ुबूल करते हो।

وَكَمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا فَجَآءَهَا بَاْسُنَا بَيَاتًا اَوْ هُمْ قَآئِلُوْنَ ﴿٤﴾

4. और कितनी ही बस्तियां (ऐसी) हैं जिन्हें हमने हलाक कर डाला सो उन पर हमारा अ़ज़ाब रात के वक़्त आया या (जबकि) वोह दोपहर को सो रहे थे।

فَمَا كَانَ دَعْوٰىهُمْ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَآ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٥﴾

5. फिर जब उन पर हमारा अ़ज़ाब आ गया तो उनकी पुकार सिवाए इसके (कुछ) न थी कि वोह केहने लगे कि बेशक हम ज़ालिम थे।

فَلَنَسْـَٔلَنَّ الَّذِيْنَ اُرْسِلَ اِلَيْهِمْ وَلَنَسْـَٔلَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٦﴾

6. फिर हम लोगों से ज़रूर पुर्सिश करेंगे जिनकी तरफ़ रसूल भेजे गए और हम यक़ीनन रसूलों से भी (उनकी दा'वतो तब्लीग़ के रद्दे अ़मल की निस्बत) दरयाफ़्त करेंगे।

فَلَنَقُصَّنَّ عَلَيْهِمْ بِعِلْمٍ وَّ مَا كُنَّا غَآئِبِيْنَ ۝٧

7. फ़िर हम उन पर (अपने) इल्म से (उनके सब) हालात बयान करेंगे और हम (कहीं) गाइब न थे (कि उन्हें देखते न हों)।

وَ الْوَزْنُ يَوْمَئِذِ ِالْحَقُّ ۚ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝٨

8. और उस दिन (आ'माल का) तोला जाना हक़ है सो जिनके (नेकियों के) पलड़े भारी होंगे तो वोही लोग कामयाब होंगे।

وَ مَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَظْلِمُوْنَ ۝٩

9. और जिनके (नेकियों के) पलड़े हलके होंगे तो येही वोह लोग हैं जिन्होंने अपनी जानों को नुक़्सान पहुंचाया, इस वजह से कि वोह हमारी आयतों के साथ ज़ुल्म करते थे।

وَ لَقَدْ مَكَّنّٰكُمْ فِي الْاَرْضِ وَ جَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ۝١٠

10. और बेशक हमने तुमको ज़मीनमें तमक्कुनो तसर्रुफ़ अ़ता किया और हमने उसमें तुम्हारे लिए अस्बाबे मईशत पैदा किए, तुम बहुत ही कम शुक्र बजा लाते हो।

ع ١ ٨

وَلَقَدْ خَلَقْنٰكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنٰكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ ۖ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ لَمْ يَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ۝١١

11. और बेशक हमने तुम्हें (या'नी तुम्हारी अस्ल को) पैदा किया फिर तुम्हारी सूरतगरी की (या'नी तुम्हारी ज़िन्दगी की कीमियाई और ह़यातियाती इब्तिदाओ इर्तिक़ा के मराहि़ल को आदम (عليه السلام) के वजूद की तश्कील तक मुकम्मल किया) फिर हमने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि आदम (عليه السلام) को सजदह करो तो सबने सजदह किया सिवाए इब्लीस के। वोह सजदह करनेवालों में से न हुवा।

قَالَ مَا مَنَعَكَ اَلَّا تَسْجُدَ اِذْ اَمَرْتُكَ ؕ قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۚ خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَّ خَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ ۝١٢

12. इर्शाद हुवा : (ऐ इब्लीस!) तुझे किस(बात)ने रोका था कि तूने सजदह न किया जबकि मैं ने तुझे हुक्म दिया था, उसने कहा : मैं उससे बेहतर हूं, तूने मुझे आगसे पैदा किया है और उसको तूने मिट्टी से बनाया है।

قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُوْنُ لَكَ

13. इर्शाद हुवा : पस तू यहां से उतर जा! तुझे कोई हक़ नहीं

اَنْ تَتَكَبَّرَ فِيْهَا فَاخْرُجْ اِنَّكَ مِنَ الصّٰغِرِيْنَ ﴿١٣﴾

पहुंचता कि तू यहां तकब्बुर करे पस (मेरी बारगाह से) निकल जा बेशक तू ज़लीलो ख़्वार लोगों में से है।

قَالَ اَنْظِرْنِيْۤ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿١٤﴾

14. उसने कहा : मुझे उस दिन तक(ज़िन्दगी की) मोहलत दे जिस दिन लोग (क़ब्रों से) उठाए जाएंगे।

قَالَ اِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ﴿١٥﴾

15. इर्शाद हुवा : बेशक तू मोहलत दिए जानेवालों में से है।

قَالَ فَبِمَاۤ اَغْوَيْتَنِيْ لَاَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿١٦﴾

16. उस(इब्लीस)ने कहा : पस इस वजह से कि तूने मुझे गुमराह किया है (मुझे क़सम है कि) मैं (भी) उन (अफ़रादे बनी आदम को गुमराह करने) के लिए तेरी सीधी राह पर ज़रूर बैठूंगा (ताआंकि उन्हें राहे हक़ से हटा दूं)।

ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ مِّنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ اَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَآئِلِهِمْ ؕ وَلَا تَجِدُ اَكْثَرَهُمْ شٰكِرِيْنَ ﴿١٧﴾

17. फिर मैं यक़ीनन उनके आगे से और उनके पीछे से और उनके दाएं से और उनके बाएं से उनके पास आऊंगा, और (नतीजतन) तू उनमें से अक्सर लोगों को शुक्रगुज़ार न पाएगा।

قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُوْمًا مَّدْحُوْرًا ؕ لَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٨﴾

18. इर्शादे बारी हुवा (ऐ इब्लीस!) तू यहां से ज़लीलो मरदूद हो कर निकल जा, उनमें से जो कोई तेरी पैरवी करेगा तो में ज़रूर तुम सबसे दोज़ख़ भर दूंगा।

وَيٰۤاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩﴾

19. और ऐ आदम! तुम और तुम्हारी ज़ौजा (दोनों) जन्नत में सुकूनत इख़्तियार करो सो जहां से तुम दोनों चाहो खाया करो और (बस) उस दरख़्त के क़रीब मत जाना वरना तुम दोनों हद से तजावुज़ करने वालों में से हो जाओगे।

فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطٰنُ لِيُبْدِيَ

20. फिर शैतानने दोनों के दिल में वस्वसा डाला ताकि

لَهُمَا مَا وٗرِیَ عَنْهُمَا مِنْ سَوْاٰتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهٰىكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هٰذِهِ الشَّجَرَةِ اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَا مَلَكَیْنِ اَوْ تَكُوْنَا مِنَ الْخٰلِدِیْنَ ﴿۲۰﴾

उनकी शर्मगाहें जो उन(की नज़रों) से पोशीदह थीं उन पर ज़ाहिर कर दे और केहने लगा : (ऐ आदमो ह़व्वा!) तुम्हारे रबने तुम्हें उस दरख़्त (का फल खाने) से नहीं रोका मगर (सिर्फ़ इस लिए कि उसे खाने से) तुम दोनों फ़रिश्ते बन जाओगे (या'नी अ़लाइके बशरी से पाक हो जाओगे) या तुम दोनों (उसमें) हमेशा रेहनेवाले बन जाओगे (या'नी इस मुक़ामे क़ुर्ब से कभी मह़रूम नहीं किए जाओगे)।

وَقَاسَمَهُمَاۤ اِنِّیْ لَكُمَا لَمِنَ النّٰصِحِیْنَ ﴿۲۱﴾

21. और उन दोनों से क़सम खा कर कहा कि बेशक मैं तुम्हारे ख़ैर ख़्वाहों में से हूं।

فَدَلّٰىهُمَا بِغُرُوْرٍ ۚ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ بَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا یَخْصِفٰنِ عَلَیْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ؕ وَنَادٰىهُمَا رَبُّهُمَاۤ اَلَمْ اَنْهَكُمَا عَنْ تِلْكُمَا الشَّجَرَةِ وَاَقُلْ لَّكُمَاۤ اِنَّ الشَّیْطٰنَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُّبِیْنٌ ﴿۲۲﴾

22. पस वोह फ़रेब के ज़रीए दोनों को(दरख़्त का फल खाने तक)उतार लाया, सो जब दोनों ने दरख़्त (के फल) को चख लिया तो दोनों की शर्मगाहें उनके लिए ज़ाहिर हो गईं और दोनों अपने (बदन के) ऊपर जन्नत के पत्ते चिपकाने लगे तो उनके रबने उन्हें निदा फ़रमाई कि क्या मैने तुम दोनों को उस दरख़्त(के क़रीब जाने)से रोका न था और तुमसे येह (न) फ़रमाया था कि बेशक शैतान तुम दोनों का खुला दुश्मन है।

قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَاۤ اَنْفُسَنَا ٚ سكتة وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِیْنَ ﴿۲۳﴾

23. दोनों ने अ़र्ज़ किया : ऐ हमारे रब! हमने अपनी जानों पर ज़ियादती की। और अगर तूने हमको न बख़्शा और हम पर रह़म (न)फ़रमाया तो हम यक़ीनन नुक़्सान उठाने वालों में से हो जाएंगे।

قَالَ اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِی الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰی حِیْنٍ ﴿۲۴﴾

24. इर्शादे बारी हुवा तुम (सब) नीचे उतर जाओ तुम में से बा'ज़ बा'ज़ के दुश्मन हैं और तुम्हारे लिए ज़मीनमें मुअ़य्यन मुद्दत तक जाए सुकूनत और मताए़ ह़यात (मुक़र्रर कर दिए गए हैं गोया तुम्हें ज़मीनमें क़ियामो मआ़श के दो बुनियादी ह़क़ दे कर उतारा जा रहा है, उस पर अपना निज़ामे ज़िन्दगी उस्तुवार करना)।

قَالَ فِيْهَا تَحْيَوْنَ وَفِيْهَا تَمُوْتُوْنَ وَمِنْهَا تُخْرَجُوْنَ ﴿٢٥﴾

25. इर्शाद फ़रमाया : तुम उसी (ज़मीन) में ज़िन्दगी गुज़ारोगे और उसी में मरोगे और (क़ियामत के रोज़) उसी में से निकाले जाओगे।

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُّوَارِيْ سَوْاٰتِكُمْ وَرِيْشًا ؕ وَلِبَاسُ التَّقْوٰى ۙ ذٰلِكَ خَيْرٌ ؕ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿٢٦﴾

26. ऐ अवलादे आदम! बेशक हमने तुम्हारे लिए (ऐसा) लिबास उतारा है जो तुम्हारी शर्मगाहों को छुपाए और (तुम्हें) ज़ीनत बख़्शे और (उस ज़ाहिरी लिबास के साथ एक बातिनी लिबास भी उतारा है और वोही) तक़्वा का लिबास ही बेहतर है। येह (ज़ाहिरो बातिन के लिबास सब) अल्लाह की निशानियां हैं ताकि वोह नसीहत क़ुबूल करें।

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ كَمَآ اَخْرَجَ اَبَوَيْكُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوْاٰتِهِمَا ؕ اِنَّهٗ يَرٰىكُمْ هُوَ وَقَبِيْلُهٗ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ؕ اِنَّا جَعَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٢٧﴾

27. ऐ अवलादे आदम! (कहीं) तुम्हें शैतान फ़ित्ने में न डाल दे जिस तरह उसने तुम्हारे मां बापको जन्नत से निकाल दिया, उनसे उनका लिबास उतरवा दिया ताकि उन्हें उनकी शर्मगाहें दिखा दे। बेशक वोह (ख़ुद) और उसका क़बीला तुम्हें (ऐसी ऐसी जगहों से) देखता (रेहता) है जहां से तुम उन्हें नहीं देख सकते। बेशक हमने शैतानों को ऐसे लोगों का दोस्त बना दिया है जो ईमान नहीं रखते।

وَاِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً قَالُوْا وَجَدْنَا عَلَيْهَآ اٰبَآءَنَا وَاللّٰهُ اَمَرَنَا بِهَا ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ ؕ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٨﴾

28. और जब वोह कोई बे हयाई का काम करते हैं (तो) केहते हैं, हमने अपने बापदादा को इसी (तरीक़े) पर पाया और अल्लाहने हमें इसीका हुक्म दिया है। फ़रमा दीजिए कि अल्लाह बे हयाई के कामों का हुक्म नहीं देता। क्या तुम अल्लाह (की ज़ात) पर ऐसी बातें करते हो जो तुम ख़ुद (भी) नहीं जानते।

قُلْ اَمَرَ رَبِّيْ بِالْقِسْطِ ۗ وَاَقِيْمُوْا وُجُوْهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۬

29. फ़रमा दीजिए : मेरे रबने इन्साफ़ का हुक्म दिया है, और तुम हर सजदे के वक़्तो मुकाम पर अपने रुख़ (का'बे की तरफ़) सीधे कर लिया करो और तमाम तर फ़रमांबरदारी उसके लिए ख़ालिस करते हुए उसकी

كَمَا بَدَاَكُمْ تَعُوْدُوْنَ ﴿٢٩﴾

इबादत किया करो। जिस तरह उसने तुम्हारी (ख़िल्क़ो हयातकी) इब्तिदा की तुम उसी तरह (उसकी तरफ़) पलटोगे।

فَرِيْقًا هَدٰى وَ فَرِيْقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلٰلَةُ ؕ اِنَّهُمُ اتَّخَذُوا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٣٠﴾

30. एक गिरोह को उसने हिदायत फ़रमाई और एक गिरोह पर (उसके अपने कस्बो अमल के नतीजे में) गुमराही साबित हो गई। बेशक उन्हों ने अल्लाह को छोड़ कर शैतानों को दोस्त बना लिया था और वोह येह गुमान करते हैं कि वोह हिदायत याफ़्ता हैं।

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّ كُلُوْا وَ اشْرَبُوْا وَ لَا تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٣١﴾

31. ऐ अवलादे आदम! तुम हर नमाज़के वक़्त अपना लिबासे ज़ीनत (पहन) लिया करो और खाओ और पियो और हदसे ज़ियादा खर्च न करो कि बेशक वोह बेजा खर्च करने वालों को पसंद नहीं फ़रमाता।

قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ الَّتِيْٓ اَخْرَجَ لِعِبَادِهٖ وَ الطَّيِّبٰتِ مِنَ الرِّزْقِ ؕ قُلْ هِيَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٣٢﴾

32. फ़रमा दीजिए : अल्लाह की उस ज़ीनत (व आराईश)को किसने हराम किया है जो उसने अपने बंदों के लिए पैदा फ़रमाई है और खाने की पाक सुथरी चीज़ों को (भी किसने हराम किया है?) फ़रमा दीजिए : येह (सब ने'मतें जो) अह्ले ईमान की दुनिया की ज़िन्दगी में (बिल उ़मूम रवा) हैं क़ियामत के दिन बिल खुसूस (उन ही के लिए) होंगी। इस तरह हम जाननेवालों के लिए आयतें तफ़्सील से बयान करते हैं।

قُلْ اِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَ مَا بَطَنَ وَ الْاِثْمَ وَ الْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَ اَنْ تُشْرِكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّ اَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٣﴾

33. फ़रमा दीजिए : कि मेरे रबने (तो) सिर्फ़ बे हयाई की बातों को हराम किया है जो उनमें से ज़ाहिर हों और जो पोशीदह हों (सबको) और गुनाह को और नाहक़ ज़ियादती को और उस बात को कि तुम अल्लाहका शरीक ठेहराओ जिसकी उसने कोई सनद नहीं उतारी और (मज़ीद) येह कि तुम अल्लाह (की ज़ात) पर ऐसी बातें कहो जो तुम खुद भी नहीं जानते।

وَ لِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ

34. और हर गिरोह के लिए एक मीआद (मुक़र्रर) है

اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّ لَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٣٤﴾

फिर जब उनका (मुक़र्ररह) वक़्त आ जाता है तो वोह एक घड़ी (भी) पीछे नहीं हट सक्ते और न आगे बढ़ सक्ते हैं।

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ اِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ فَمَنِ اتَّقٰى وَ اَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٣٥﴾

35. ऐ अवलादे आदम! अगर तुम्हारे पास तुम में से रसूल आएं जो तुम पर मेरी आयतें बयान करें पस जो परहेज़गार बन गया और उसने (अपनी) इस्लाह कर ली तो उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न (ही) वोह रंजीदह होंगे।

وَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٣٦﴾

36. और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुटलाया और उन (पर ईमान लाने) से सरकशी की, वोही अहले जहन्नम हैं वोह उसमें हमेशा रेहने वाले हैं।

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ اُولٰٓئِكَ يَنَالُهُمْ نَصِيْبُهُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا يَتَوَفَّوْنَهُمْ قَالُوْٓا اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا وَشَهِدُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ ﴿٣٧﴾

37. फिर उस शख़्स से ज़ियादा ज़ालिम कौन हो सक्ता है जो अल्लाह पर झूटा बोहतान बांधे या उसकी आयतों को झुटलाए? उन लोगों को उनका (वोह) हिस्सा पहुंच जाएगा (जो) नविश्तए किताब है यहां तक कि जब उनके पास हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) आएंगे कि उनकी रूहें क़ब्ज़ कर लें (तो उनसे) कहेंगे : अब वोह (झूटे मा'बूद) कहां हैं जिनकी तुम अल्लाह के सिवा इबादत करते थे? वोह (जवाबन) कहेंगे कि वोह हमसे गुम हो गए (या'नी अब कहां नज़र आते हैं) और वोह अपनी जानों के ख़िलाफ़ (ख़ुद येह) गवाही देंगे कि बेशक वोह काफ़िर थे।

قَالَ ادْخُلُوْا فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ مِّنَ الْجِنِّ وَ الْاِنْسِ فِي النَّارِ كُلَّمَا دَخَلَتْ اُمَّةٌ لَّعَنَتْ

38. अल्लाह फ़रमाएगा : तुम जिन्नों और इन्सानों की उन (जहन्नमी) जमाअ़तों में शामिल हो कर जो तुम से पहले गुज़र चुकी हैं दोज़ख़ में दाख़िल हो जाओ! जब भी कोई जमाअ़त (दोज़ख़ में) दाख़िल होगी वोह अपने जैसी

أُخْتَهَا ۖ حَتّٰى إِذَا ادَّارَكُوا فِيهَا جَمِيعًا ۙ قَالَتْ أُخْرٰىهُمْ لِأُولٰىهُمْ رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ أَضَلُّونَا فَاٰتِهِمْ عَذَابًا ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ ۖ قَالَ لِكُلٍّ ضِعْفٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَعْلَمُونَ ﴿٣٨﴾

दूसरी जमाअ़त पर ला'नत भेजेगी, यहां तक कि जब उसमें सारे (गिरोह) जमा' हो जाएंगे तो उनकेपिछले अपने अगलों के ह़क़ में कहेंगे कि ऐ हमारे रब! उन्हीं लोगोंने हमें गुमराह किया था सो उनको दोज़ख़ का दो गुना अ़ज़ाब दे। इर्शाद होगा : हर एक के लिए दो गुना है मगर तुम जानते नहीं हो।

وَقَالَتْ أُولٰىهُمْ لِأُخْرٰىهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿٣٩﴾

39. और उनके अगले अपने पिछलों से कहेंगे : सो तुम्हें हम पर कुछ फ़ज़ीलत न हुई पस (अब) तुम (भी) अ़ज़ाब (का मज़ा) चखो उसके सबब जो कुछ तुम कमाते थे।

إِنَّ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِاٰيٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ أَبْوَابُ السَّمَآءِ وَلَا يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ حَتّٰى يَلِجَ الْجَمَلُ فِي سَمِّ الْخِيَاطِ ۚ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُجْرِمِينَ ﴿٤٠﴾

40. बेशक जिन लोगोंने हमारी आयतों को झुटलाया और उनसे सरकशी की उनके लिए आस्माने (रह़्मतो क़ुबूलिय्यत) के दरवाज़े नहीं खोले जाएंगे और न ही वोह जन्नत में दाख़िल हो सकेंगे यहां तक कि सूई के सूराख़ में ऊंट दाख़िल हो जाए (या'नी जैसे येह नामुमकिन है उसी तरह़ उनका जन्नतमें दाख़िल होना भी नामुमकिन है), और हम मुजरिमों को इसी तरह़ सज़ा देते हैं।

لَهُمْ مِّنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَّمِنْ فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ ۚ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِينَ ﴿٤١﴾

41. और उनके लिए (आतिशे) दोज़ख़का बिछोना और उनके ऊपर (उसी का) ओढ़ना होगा, और हम ज़ालिमों को इसी तरह़ सज़ा देते हैं।

وَالَّذِينَ اٰمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَآ ۫ أُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيهَا خٰلِدُونَ ﴿٤٢﴾

42. और जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे, हम किसी शख़्स को उसकी ताक़त से ज़ियादा मुकल्लफ़ नहीं करते, येही लोग अहले जन्नत हैं वोह उसमें हमेशा रहेंगे।

وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِّنْ

43. और हम वोह (रंजिशो) कीना जो उनके सीनों में

غِلٍّ تَجْرِي مِن تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدَانَا لِهَٰذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَا أَنْ هَدَانَا اللَّهُ لَقَدْ جَاءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ وَنُودُوا أَن تِلْكُمُ الْجَنَّةُ أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٤٣﴾

(दुनिया के अंदर एक दूसरे के लिए) था निकाल (के दूर कर) देंगे उनके (महलों के) नीचे नेहरें जारी होंगी और वोह कहेंगे सब ता'रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं, जिसने हमें यहां तक पहुंचा दिया, और हम (इस मुक़ाम तक कभी राह न पा सक्ते थे अगर अल्लाह हमें हिदायत न फ़रमाता बेशक हमारे रबके रसूल हक़्क़ (का पैग़ाम) लाए थे, और (उस दिन) निदा दी जाएगी कि तुम लोग इस जन्नत के वारिस बना दिए गए हो उन (नेक) आ'माल के बाइस जो तुम अंजाम देते थे।

النصف

وَنَادَىٰ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ أَصْحَابَ النَّارِ أَن قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدتُّم مَّا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا قَالُوا نَعَمْ فَأَذَّنَ مُؤَذِّنٌ بَيْنَهُمْ أَن لَّعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ ﴿٤٤﴾

44. और अहले जन्नत दोज़ख़वालों को पुकार कर कहेंगे : हमने तो वाक़िअतन उसे सच्चा पा लिया जो वा'दा हमारे रबने हमसे फ़रमाया था, सो क्या तुमने (भी) उसे सच्चा पाया जो वा'दा तुम्हारे रबने (तुमसे) किया था? वोह कहेंगे हां । फिर उनके दरमियान एक आवाज़ देनेवाला आवाज़ देगा कि ज़ालिमों पर अल्लाह की ला'नत है।

الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا وَهُم بِالْآخِرَةِ كَافِرُونَ ﴿٤٥﴾

45. (येह वोही हैं) जो (लोगों को) अल्लाहकी राह से रोकते थे और उसमें कजी तलाश करते थे और वोह आख़िरत का इन्कार करनेवाले थे।

وقف لازم

وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ وَعَلَى الْأَعْرَافِ رِجَالٌ يَعْرِفُونَ كُلًّا بِسِيمَاهُمْ وَنَادَوْا أَصْحَابَ الْجَنَّةِ أَن سَلَامٌ عَلَيْكُمْ لَمْ يَدْخُلُوهَا وَهُمْ يَطْمَعُونَ ﴿٤٦﴾

46. और (उन) दोनों (या'नी जन्नतियों और दोज़ख़ियों) के दरमियान एक हिजाब (या'नी फ़सील) है और आ'राफ़ (या'नी उसी फ़सील) पर कुछ मर्द होंगे जो सब को उनकी निशानियों से पेहचान लेंगे। और वोह अहले जन्नत को पुकार कर कहेंगे कि तुम पर सलामती हो, वोह (अहले आ'राफ़ खुद अभी) जन्नत में दाख़िल नहीं हुए होंगे हालांकि वोह (उसके) उम्मीदवार होंगे।

وَ اِذَا صُرِفَتْ اَبْصَارُهُمْ تِلْقَآءَ اَصْحٰبِ النَّارِ ۙ قَالُوْا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۴۷﴾

47. और जब उनकी निगाहें दोज़ख़वालों की तरफ़ फेरी जाएंगी तो वोह कहेंगे : ऐ हमारे रब! हमें ज़ालिम गिरोह के साथ (जमा') न कर।

وَنَادٰۤى اَصْحٰبُ الْاَعْرَافِ رِجَالًا يَّعْرِفُوْنَهُمْ بِسِيْمٰهُمْ قَالُوْا مَاۤ اَغْنٰى عَنْكُمْ جَمْعُكُمْ وَ مَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۴۸﴾

48. और अहले आ'राफ़ (उन दोज़ख़ी) मर्दों को पुकारेंगे जिन्हें वोह उनकी निशानियों से पेहचान रहे होंगे (उनसे) कहेंगे : तुम्हारी जमाअ़तें तुम्हारे काम न आ सकीं और न (वोह) तकब्बुर (तुम्हें बचा सका)जो तुम किया करते थे।

اَهٰۤؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللّٰهُ بِرَحْمَةٍ ؕ اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَاۤ اَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ ﴿۴۹﴾

49. क्या येही वोह लोग हैं (जिनकी ख़स्ता हा़लत देख कर) तुम कस्मे खाया करते थे कि अल्लाह उन्हें अपनी रह़्मत से (कभी) नहीं नवाज़ेगा? (सुन लो! अब उन्हीं को कहा जा रहा है) तुम जन्नत में दाख़िल हो जाओ न तुम पर कोई ख़ौफ़ होगा और न तुम ग़मगीन होगे।

وَ نَادٰۤى اَصْحٰبُ النَّارِ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ اَفِيْضُوْا عَلَيْنَا مِنَ الْمَآءِ اَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ؕ قَالُوْۤا اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَهُمَا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۙ ﴿۵۰﴾

50. और दोज़ख़वाले अहले जन्नत को पुकार कर कहेंगे कि हमें (जन्नती) पानी से कुछ फ़ैज़याब कर दो या उस (रिज़्क़) में से जो अल्लाहने तुम्हें बख़्शा है। वोह कहेंगे : बेशक अल्लाहने येह दोनों (ने'मतें) काफ़िरों पर ह़राम कर दी हैं।

الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَهْوًا وَّ لَعِبًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ نَنْسٰهُمْ كَمَا نَسُوْا لِقَآءَ يَوْمِهِمْ هٰذَا ۙ وَمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ﴿۵۱﴾

51. जिन्होंने अपने दीनको तमाशा और खेल बना लिया और जिन्हें दुन्यवी ज़िन्दगीने फ़रेब दे रखा था, आज हम उन्हें उसी तरह भुला देंगे जैसे वोह (हमसे) अपने इस दिनकी मुलाक़ात को भूले हुए थे और जैसे वोह हमारी आयतों का इन्कार करते थे।

وَلَقَدْ جِئْنٰهُمْ بِكِتٰبٍ فَصَّلْنٰهُ عَلٰى

52. और बेशक हम उनके पास ऐसी किताब (क़ुर्आन)

عِلْمٍ هُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿۵۲﴾

लाए जिसे हमने (अपने) इल्म (की बिना) पर मुफ़स्सल (या'नी वाज़ेह) किया, वोह ईमानवालों के लिए हिदायत और रहमत है।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا تَاْوِيْلَهٗ ؕ يَوْمَ يَاْتِيْ تَاْوِيْلُهٗ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ نَسُوْهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَآءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۚ فَهَلْ لَّنَا مِنْ شُفَعَآءَ فَيَشْفَعُوْا لَنَآ اَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ ؕ قَدْ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۵۳﴾

53. वोह सिर्फ़ उस (कही हुई बात) के अंजाम के मुन्तज़िर हैं, जिस दिन उस (बात) का अंजाम सामने आ जाएगा वोह लोग जो उससे क़ब्ल उसे भुला चुके थे कहेंगे : बेशक हमारे रब के रसूल हक़ (बात) ले कर आए थे, सो क्या (आज) हमारे कोई सिफ़ारिशी हैं जो हमारे लिए सिफ़ारिश कर दें या हम (फिर दुनियामें) लौटा दिए जाएं ताकि हम (इस मर्तबा) उन (आ'माल) से मुख़्तलिफ़ अ़मल करें जो (पहले) करते रहे थे। बेशक उन्होंने अपने आपको नुक़्सान पहुंचाया और वोह (बोहतानो इफ़्तिराअ) उनसे जाता रहा जो वोह गढ़ा करते थे।

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۫ يُغْشِي الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا ۙ وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍۭ بِاَمْرِهٖ ؕ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ ؕ تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۵۴﴾

54. बेशक तुम्हारा रब अल्लाह है जिसने आस्मानों और ज़मीन (की काइनात) को छे मुद्दतों (या'नी छे अद्वार) में पैदा फ़रमाया फिर (अपनी शान के मुताबिक़) अ़र्श पर इस्तिवा (या'नी उस काइनात में अपने हुक्मो इक़्तिदार के निज़ाम का इज्रा) फ़रमाया । वोही रातसे दिन को ढांक देता है (दर आं हालीकि दिन रात में से) हर एक दूसरे के तआक़ुब में तेज़ीसे लगा रेहता है और सूरज और चांद और सितारे (सब) उसीके हुक्म (से एक निज़ाम)के पाबंद बना दिये गए हैं। ख़बरदार!(हर चीज़की) तख़्लीक़ और हुक्मो तदबीर का निज़ाम चलाना उसीका काम है। अल्लाह बड़ी बरकतवाला है जो तमाम जहानों की (तदरीजन) परवरिश फ़रमानेवाला है।

اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿۵۵﴾

55. तुम अपने रबसे गिड़गिड़ा कर और आहिस्ता (दोनों तरीक़ों से) दुआ़ किया करो, बेशक वोह ह़दसे बढ़नेवालों को पसंद नहीं करता।

وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ
إِصْلَاحِهَا وَادْعُوهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا
إِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيبٌ مِّنَ
الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٦﴾

56. और ज़मीनमें उसके संवर जाने (या'नी मुल्क का माहौले हयात दुरस्त हो जाने) के बाद फ़साद अंगेज़ी न करो और (उसके अ़ज़ाबसे) डरते हुए और (उसकी रह़्मत की) उम्मीद रखते हुए उससे दुआ़ करते रहा करो, बेशक अल्लाह की रह़्मत एह़्सान शिआ़र लोगों (या'नी नेकूकारों) के क़रीब होती है।

وَهُوَ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًا
بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ حَتّٰى إِذَا
أَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنٰهُ لِبَلَدٍ
مَّيِّتٍ فَأَنْزَلْنَا بِهِ الْمَآءَ فَأَخْرَجْنَا
بِهٖ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ كَذٰلِكَ
نُخْرِجُ الْمَوْتٰى لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٥٧﴾

57. और वोही है जो अपनी रह़्मत (या'नी बारिश) से पहले हवाओं को ख़ुशख़बरी बना कर भेजता है, यहां तक कि जब वोह (हवाएं) भारी भारी बादलों को उठा लाती हैं तो हम उन (बादलों) को किसी मुर्दा (या'नी बे आबो गियाह) शहर की तरफ़ हांक देते हैं फिर हम उस (बादल) से पानी बरसाते हैं फिर हम उस (पानी) के ज़रीए (ज़मीनसे) हर क़िस्म के फल निकालते हैं। इसी तरह़ हम (रोज़े क़ियामत) मुर्दों को (क़ब्रों से) निकालेंगे ताकि तुम नसीह़त क़ुबूल करो।

وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهٗ بِإِذْنِ
رَبِّهٖ وَالَّذِي خَبُثَ لَا يَخْرُجُ
إِلَّا نَكِدًا كَذٰلِكَ نُصَرِّفُ
الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّشْكُرُونَ ﴿٥٨﴾

58. और जो अच्छी (या'नी ज़रख़ेज़) ज़मीन है उसका सब्ज़ा अल्लाह के हुक्म से (ख़ूब) निकलता है और जो (ज़मीन) ख़राब है (उससे) थोड़ीसी बे फ़ाइदा चीज़ के सिवा कुछ नहीं निकलता। इसी तरह़ हम (अपनी) आयतें (या'नी दलाइल और निशानियां) उन लोगों के लिए बार बार बयान करते हैं जो शुक्र गुजार हैं।

لَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلٰى قَوْمِهٖ
فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ
مِّنْ إِلٰهٍ غَيْرُهٗ إِنِّيٓ أَخَافُ
عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٥٩﴾
قَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِهٖٓ إِنَّا لَنَرٰكَ

59. बेशक हमने नूह (عليه السلام) को उनकी क़ौम की तरफ़ भेजा सो उन्होंने कहा : ऐ मेरी क़ौम(के लोगो!) तुम अल्लाह की इ़बादत किया करो उसके सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं, यक़ीनन मुझे तुम्हारे ऊपर एक बड़े दिन के अ़ज़ाब का ख़ौफ़ आता है।

60. उनकी क़ौमके सरदारों और रईसोंने कहा : (ऐ नूह!)

فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٦٠﴾

बेशक हम तुम्हें खुली गुमराही में (मुब्तिला) देखते हैं।

قَالَ يٰقَوْمِ لَيْسَ بِيْ ضَلٰلَةٌ وَّلٰكِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦١﴾

61. उन्होंने कहा : ऐ मेरी क़ौम! मुझमें कोई गुमराही नहीं लेकिन (येह हक़ीक़त है कि) मैं तमाम जहानों के रबकी तरफ़से रसूल (मबऊस हुवा) हूं।

اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَاَنْصَحُ لَكُمْ وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٢﴾

62. मैं तुम्हें अपने रबके पैग़ामात पहुंचा रहा हूं और तुम्हें नसीहत कर रहा हूं और अल्लाहकी तरफ़ से वोह कुछ जानता हूं जो तुम नहीं जानते।

اَوَعَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوْا وَلَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٦٣﴾

63. क्या तुम्हें इस बात पर तअ़ज्जुब है कि तुम्हारे पास तुम्हारे रबकी तरफ़से तुम्हीं में से एक मर्द (की ज़बान) पर नसीहत आई ताकि वोह तुम्हें (अ़ज़ाबे इलाही से) डराए और तुम परहेज़गार बन जाओ और येह इसलिए है कि तुम पर रह़म किया जाए।

فَكَذَّبُوْهُ فَاَنْجَيْنٰهُ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ فِي الْفُلْكِ وَاَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا عَمِيْنَ ﴿٦٤﴾ ع ٨ ١٥

64. फिर उन लोगोंने उन्हें झुटलाया सो हमने उन्हें और उन लोगों को जो कश्तीमें उनकी मइय्यत में थे नजात दी और हमने उन लोगों को ग़र्क़ कर दिया जिन्होंने हमारी आयतों को झुटलाया था, बेशक वोह अंधे (या'नी बे बसीरत) लोग थे।

وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ؕ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٦٥﴾

65. और हमने (क़ौमे) आ़द की तरफ़ उनके (क़ौमी) भाई हूद (عليه السلام) को (भेजा) उन्होंने कहा : ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाह की इ़बादत किया करो उसके सिवा कोई तुम्हारा मा'बूद नहीं, क्या तुम परहेज़गार नहीं बनते?।

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖۤ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْ سَفَاهَةٍ وَّاِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٦٦﴾

66. उनकी क़ौम के सरदारों और रईसोंने जो कुफ़्र (या'नी दा'वते ह़क़्क़की मुख़ालिफ़तो मुज़ाहिमत) कर रहे थे कहा : (ऐ हूद!) बेशक हम तुम्हें ह़िमाक़त (में मुब्तिला) देखते हैं और बेशक हम तुम्हें झूटे लोगों में गुमान करते हैं।

قَالَ يٰقَوْمِ لَيْسَ بِيْ سَفَاهَةٌ وَّ لٰكِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٧﴾

67. उन्हों ने कहा : ऐ मेरी कौम! मुझमें कोई हिमाक़त नहीं लेकिन (येह हक़ीक़त है कि)मैं तमाम जहानों के रब की तरफ़से रसूल (मबऊस हुवा) हूं।

اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَ اَنَا لَكُمْ نَاصِحٌ اَمِيْنٌ ﴿٦٨﴾

68. मैं तुम्हें अपने रबके पैग़ामात पहुंचा रहा हूं और मैं तुम्हारा अमानतदार ख़ैरख़्वाह हूं।

اَوَ عَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ ؕ وَ اذْكُرُوْٓا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّزَادَكُمْ فِي الْخَلْقِ بَصْۜطَةً ۚ فَاذْكُرُوْٓا اٰلَآءَ اللّٰهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٦٩﴾

69. क्या तुम्हें इस बात पर तअज्जुब है कि तुम्हारे पास तुम्हारे रबकी तरफ़से तुम्ही में से एक मर्द (की ज़बान) पर नसीहत आई ताकि वोह तुम्हें (अज़ाबे इलाही से) डराए, और याद करो जब उसने तुम्हें क़ौमे नूह के बाद (ज़मीन पर) जा नशीन बनाया और तुम्हारी ख़िलक़त में (क़द्दो क़ामत और) क़ुव्वत को मज़ीद बढ़ा दिया, सो तुम अल्लाहकी ने'मतों को याद करो ताकि तुम फ़लाह पा जाओ।

قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللّٰهَ وَحْدَهٗ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٧٠﴾

70. वोह केहने लगे : क्या तुम हमारे पास (इस लिए) आए हो कि हम सिर्फ़ एक अल्लाहकी इबादत करें और उन (सब ख़ुदाओं) को छोड़ दें जिनकी परस्तिश हमारे बापदादा किया करते थे? सो तुम हमारे पास वोह (अज़ाब) ले आओ जिसकी तुम हमें वईद सुनाते हो अगर तुम सच्चे लोगों में से हो।

قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ رِجْسٌ وَّ غَضَبٌ ؕ اَتُجَادِلُوْنَنِيْ فِيْٓ اَسْمَآءٍ سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَ اٰبَآؤُكُمْ مَّا نَزَّلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿٧١﴾

71. उन्होंने कहा : यक़ीनन तुम पर तुम्हारे रबकी तरफ़से अज़ाब और ग़ज़ब वाजिब हो गया। क्या तुम मुझसे उन (बुतों के) नामों के बारे में झगड़ रहे हो जो तुमने और तुम्हारे बापदादाने (ख़ुद ही फ़रज़ी तौर पर) रख लिए हैं जिनकी अल्लाहने कोई सनद नहीं उतारी? सो तुम (अज़ाब का) इन्तिज़ार करो मैं (भी) तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करनेवालों में से हूं।

فَأَنْجَيْنٰهُ وَ الَّذِيْنَ مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَ قَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَمَا كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿۷۲﴾

72. फिर हमने उनको और जो लोग उनके साथ थे अपनी रह्मत के बाइस नजात बख़्शी और उन लोगों की जड़ काट दी जिन्होंने हमारी आयतों को झुटलाया था और वोह ईमान लानेवाले न थे।

ع ٩ ٨ ١٦ وقف لازم

وَ اِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا ۘ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ قَدْ جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْۤ اَرْضِ اللّٰهِ وَ لَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۷۳﴾

73. और (क़ौमे) समूद की तरफ़ उनके (क़ौमी) भाई सालेह् (عليه السلام) को (भेजा) उन्होंने कहा : ऐ मेरी क़ौम! अल्लाहकी इबादत किया करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं बेशक तुम्हारे पास तुम्हारे रबकी तरफ़से एक रौशन दलील आ गई है। येह अल्लाहकी ऊंटनी तुम्हारे लिए निशानी है, सो तुम उसे (आज़ाद) छोड़े रखना कि अल्लाह की ज़मीनमें चरती रहे और उसे बुराई (के इरादे)से हाथ न लगाना वरना तुम्हें दर्दनाक अज़ाब आ पकड़ेगा।

وَ اذْكُرُوْۤا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ عَادٍ وَّ بَوَّاَكُمْ فِي الْاَرْضِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْ سُهُوْلِهَا قُصُوْرًا وَّ تَنْحِتُوْنَ الْجِبَالَ بُيُوْتًا ۚ فَاذْكُرُوْۤا اٰلَآءَ اللّٰهِ وَ لَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿۷۴﴾

74. और याद करो! जब उसने तुम्हें (क़ौमे)आद के बाद (ज़मीनमें) जा नशीन बनाया और तुम्हें ज़मीनमें सुकूनत बख़्शी कि तुम उसके नर्म (मेदानी) इलाक़ों में महल्लात बनाते हो और पहाड़ों को तराश कर(उनमें) घर बनाते हो, सो तुम अल्लाहकी (उन) ने'मतों को याद करो और ज़मीनमें फ़साद अंगेजी न करते फिरो।

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِمَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ اَتَعْلَمُوْنَ اَنَّ صٰلِحًا مُّرْسَلٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قَالُوْۤا اِنَّا بِمَاۤ

75. उनकी क़ौम के उन सरदारों और रईसोंने जो मुतकब्बिरो सरकश थे उन ग़रीब पिसे हुए लोगों से कहा जो उनमें से ईमान ले आए थे : क्या तुम्हें यक़ीन है कि वाक़ई सालेह् (عليه السلام) अपने रब की तरफ़से (रसूल बना कर) भेजे गए हैं? उन्होंने कहा : जो कुछ उन्हें दे कर भेजा

أُرْسِلَ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿٧٥﴾

गया है बेशक हम उस पर ईमान रखने वाले हैं।

قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا بِالَّذِيْٓ اٰمَنْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٧٦﴾

76. मुतकब्बिर लोग केहने लगे : बेशक जिस (चीज़) पर तुम ईमान लाए हो हम उसके सख़्त मुन्किर हैं।

فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَ عَتَوْا عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ وَقَالُوْا يٰصٰلِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٧٧﴾

77. पस उन्होंने ऊंटनी को (काट कर) मार डाला और अपने रबके हुक्म से सरकशी की और केहने लगे : ऐ सालेह! तुम वोह (अज़ाब) हमारे पास ले आओ जिसकी तुम हमें वईद सुनाते थे अगर तुम(वाक़ई)रसूलों में से हो।

فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٧٨﴾

78. सो उन्हें सख़्त ज़ल्ज़ले (के अज़ाब) ने आ पकड़ा पस वोह (हलाक हो कर) सुब्ह़ अपने घरों में औंधे पड़े रेह गए।

فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَ قَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّيْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُحِبُّوْنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿٧٩﴾

79. फिर (सालेह عليه السلام ने)उनसे मुंह फेर लिया और कहा : ऐ मेरी क़ौम! बेशक मैं ने तुम्हें अपने रबका पैग़ाम पहुंचा दिया था और नसीहत (भी) कर दी थी लेकिन तुम नसीहत करनेवालों को पसंद (ही) नहीं करते।

وَ لُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٠﴾

80. और लूत (عليه السلام) को (भी हमने इसी तरह भेजा) जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा : क्या तुम (ऐसी) बे ह़याई का इर्तिकाब करते हो जिसे तुमसे पहले अह्ले जहां में से किसीने नहीं किया था ?

اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ﴿٨١﴾

81. बेशक तुम नफ़्सानी ख़्वाहिश के लिए औ़रतों को छोड़ कर मर्दों के पास आते हो बल्कि तुम ह़दसे गुज़र जानेवाले हो।

وَ مَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ﴿٨٢﴾

82. और उनकी क़ौमका सिवाए उसके कोई जवाब न था कि वोह केहने लगे : उनको बस्तीसे निकाल दो बेशक येह लोग बड़े पाकीज़गी के तलबगार हैं।

فَأَنجَيْنَٰهُ وَأَهْلَهُۥٓ إِلَّا ٱمْرَأَتَهُۥ كَانَتْ مِنَ ٱلْغَٰبِرِينَ ﴿٨٣﴾

83. पस हमने उनको (या'नी लूत ﷺ को) और उनके अह्ले ख़ाना को नजात दे दी सिवाए उनकी बीवी के, वोह अज़ाब में पड़े रेहनेवालों में से थी।

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِم مَّطَرًا ۖ فَٱنظُرْ كَيْفَ كَانَ عَٰقِبَةُ ٱلْمُجْرِمِينَ ﴿٨٤﴾

84. और हमने उन पर(पथ्थरों की) बारिश कर दी सो आप देखिए कि मुजरिमों का अंजाम कैसा हुवा।

وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۗ قَالَ يَٰقَوْمِ ٱعْبُدُوا۟ ٱللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُۥ ۖ قَدْ جَآءَتْكُم بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ ۖ فَأَوْفُوا۟ ٱلْكَيْلَ وَٱلْمِيزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا۟ ٱلنَّاسَ أَشْيَآءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوا۟ فِى ٱلْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَٰحِهَا ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٨٥﴾

85. और मदयन की तरफ़ (हमने) उनके(क़ौमी) भाई शुऐब (ﷺ) को (भेजा) उन्होंने कहा : ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाहकी इबादत किया करो, इसके सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं, बेशक तुम्हारे पास तुम्हारे रबकी तरफ़से रौशन दलील आ चुकी है सो तुम माप और तोल पूरे किया करो और लोगों को उनकी चीज़ें घटा कर न दिया करो और ज़मीनमें उस (के माहौले हयात) की इस्लाह के बाद फ़साद बपा न किया करो, येह तुम्हारे हक़में बेहतर है अगर तुम (उस उलूही पैग़ाम को) माननेवाले हो।

وَلَا تَقْعُدُوا۟ بِكُلِّ صِرَٰطٍ تُوعِدُونَ وَتَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ ٱللَّهِ مَنْ ءَامَنَ بِهِۦ وَتَبْغُونَهَا عِوَجًا ۚ وَٱذْكُرُوٓا۟ إِذْ كُنتُمْ قَلِيلًا فَكَثَّرَكُمْ ۖ وَٱنظُرُوا۟ كَيْفَ كَانَ عَٰقِبَةُ ٱلْمُفْسِدِينَ ﴿٨٦﴾

86. और तुम हर रास्ते पर इस लिए न बैठा करो कि तुम हर उस शख़्सको जो उस (दा'वत) पर ईमान ले आया है ख़ौफ़ ज़दह करो और (उसे) अल्लाहकी राहसे रोको और उस (दा'वत) में कजी तलाश करो (ताकि उसे दीने हक़ से बरगश्ता और मुतनफ़्फ़िर कर सको) और (अल्लाह का एहसान) याद करो जब तुम थोड़े थे तो उसने तुम्हें कसरत बख़्शी और देखो फ़साद फैलानेवालों का अंजाम कैसा हुवा।

وَإِن كَانَ طَآئِفَةٌ مِّنكُمْ ءَامَنُوا۟ بِٱلَّذِىٓ أُرْسِلْتُ بِهِۦ وَطَآئِفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوا۟ فَٱصْبِرُوا۟ حَتَّىٰ يَحْكُمَ ٱللَّهُ بَيْنَنَا ۚ وَهُوَ خَيْرُ ٱلْحَٰكِمِينَ ﴿٨٧﴾

87. और अगर तुम में से कोई एक गिरोह उस (दीन) पर जिसके साथ मैं भेजा गया हूं ईमान ले आया है और दूसरा गिरोह ईमान नहीं लाया तो (ऐ ईमान वालो!) सब्र करो यहां तक कि अल्लाह हमारे दरमियान फ़ैसला फ़रमा दे और वोह सबसे बेहतर फ़ैसला फ़रमानेवाला है।

الجزء ٩

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ
قَوْمِهٖ لَنُخْرِجَنَّكَ يٰشُعَيْبُ وَالَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا مَعَكَ مِنْ قَرْيَتِنَآ اَوْ
لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ؕ قَالَ اَوَلَوْ كُنَّا
كٰرِهِيْنَ ﴿٨٨﴾

88. उनकी क़ौम के सरदारों और रईसोंने जो सरकशो मुतकब्बिर थे कहा : ऐ शुऐब ! हम तुम्हें और उन लोगों को जो तुम्हारी मइय्यत में ईमान लाए हैं अपनी बस्ती से बहर सूरत निकाल देंगे या तुम्हें ज़रूर हमारे मज़हब में पलट आना होगा। शुऐब (عليه السلام) ने कहा : अगरचे हम (तुम्हारे मज़हब में पलटने से) बेज़ार ही हों?

قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اِنْ عُدْنَا
فِيْ مِلَّتِكُمْ بَعْدَ اِذْ نَجّٰىنَا اللّٰهُ مِنْهَا ؕ
وَمَا يَكُوْنُ لَنَآ اَنْ نَّعُوْدَ فِيْهَآ اِلَّآ اَنْ
يَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّنَا ؕ وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ
شَيْءٍ عِلْمًا ؕ عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ؕ رَبَّنَا
افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ
وَاَنْتَ خَيْرُ الْفٰتِحِيْنَ ﴿٨٩﴾

89. बेशक हम अल्लाह पर झूटा बोहतान बांधेंगे अगर हम तुम्हारे मज़हब में इस अम्र के बाद पलट जाएं कि अल्लाहने हमें इस से बचा लिया है, और हमारे लिए हरगिज़ (मुनासिब) नहीं कि हम उस (मज़हब) में पलट जाएं मगर येह कि अल्लाह चाहे जो हमारा रब है। हमारा रब अज़ रूए इल्म हर चीज़ पर मुहीत है। हमने अल्लाह ही पर भरोसा कर लिया है, ऐ हमारे रब! हमारे और हमारी (मुख़ालिफ़) क़ौम के दरमियान हक़ के साथ फ़ैसला फ़रमा दे और तू सब से बेहतर फ़ैसला फ़रमानेवाला है।

وَقَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ
قَوْمِهٖ لَئِنِ اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا اِنَّكُمْ
اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿٩٠﴾

90. और उनकी क़ौम के सरदारों और रईसोंने जो कुफ़्र (व इन्कार) के मुर्तकिब हो रहे थे कहा : (ऐ लोगो!) अगर तुमने शुऐब की पैरवी की तो उस वक़्त तुम यक़ीनन नुक़्सान उठानेवाले हो जाओगे।

فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ
دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٩١﴾

91. पस उन्हें शदीद ज़ल्ज़ले (के अज़ाब) ने आ पकड़ा, सो वोह (हलाक हो कर) सुब्ह अपने घरों में औंधे पड़े रेह गए।

الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا شُعَيْبًا كَاَنْ لَّمْ
يَغْنَوْا فِيْهَا ۛ اَلَّذِيْنَ كَذَّبُوْا
شُعَيْبًا كَانُوْا هُمُ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٩٢﴾

مع

92. जिन लोगों ने शुऐब (عليه السلام) को झुटलाया (वोह ऐसे नीस्तो नाबूद हुए) गोया वोह उस (बस्ती) में (कभी) बसे ही न थे। जिन लोगों ने शुऐब (عليه السلام) को झुटलाया (हक़ीक़त में) वोही नुक़्सान उठानेवाले हो गए।

فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَ قَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَ نَصَحْتُ لَكُمْ ۚ فَكَيْفَ اٰسٰى عَلٰى قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ﴿۹۳﴾

93. तब (शुऐब عليه السلام) उनसे कनाराकश हो गए और केहने लगे : ऐ मेरी क़ौम! बेशक मैं ने तुम्हें अपने रबके पैग़ामात पहुंचा दिए थे और मैं ने तुम्हें नसीहत (भी) कर दी थी फिर मैं काफ़िर क़ौम (के तबाह होने) पर अफ़्सोस क्यों कर करूं?

وَ مَاۤ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّبِيٍّ اِلَّاۤ اَخَذْنَاۤ اَهْلَهَا بِالْبَاْسَآءِ وَ الضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَضَّرَّعُوْنَ ﴿۹۴﴾

94. और हमने किसी बस्ती में कोई नबी नहीं भेजा मगर हमने उसके बाशिन्दों को (नबी की तक्ज़ीबो मुज़ाहिमत के बाइस) सख़्ती व तंगी और तक्लीफ़ो मुसीबत में गिरफ़्तार कर लिया ताकि वोह आहो ज़ारी करें।

ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتّٰى عَفَوْا وَّ قَالُوْا قَدْ مَسَّ اٰبَآءَنَا الضَّرَّآءُ وَ السَّرَّآءُ فَاَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً وَّ هُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۹۵﴾

95. फिर हमने (उनकी) बदहाली की जगह ख़ुशहाली बदल दी, यहां तक कि वोह (हर लिहाज़ से) बहुत बढ़ गए। और (नाशुक्री से) केहने लगे कि हमारे बापदादा को भी (उसी तरह) रंज और राहत पहुंचती रही है सो हमने उन्हें इस कुफ़राने ने'मत पर अचानक पकड़ लिया और उन्हें (उस की) ख़बर भी न थी।

وَ لَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقُرٰۤى اٰمَنُوْا وَ اتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَ الْاَرْضِ وَ لٰكِنْ كَذَّبُوْا فَاَخَذْنٰهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۹۶﴾

96. और अगर (उन) बस्तियों के बाशिन्दे ईमान ले आते और तक़्वा इख़्तियार करते तो हम उन पर आस्मान और ज़मीनसे बरकतें खोल देते लेकिन उन्हों ने (हक़्क़ को) झुटलाया, सो हमने उन्हें उन आ'माले (बद) के बाइस जो वोह अंजाम देते थे (अज़ाब की) गिरफ़्त में ले लिया।

اَفَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰۤى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا بَيَاتًا وَّ هُمْ نَآىِٕمُوْنَ ﴿۹۷﴾

97. क्या अब बस्तियों के बाशिन्दे इस बातसे बे ख़ौफ़ हो गए हैं कि उन पर हमारा अज़ाब (फिर) रातको आ पहुंचे इस हाल में कि वोह (ग़फ़्लत की नींद) सोए हुए हैं?

اَوَ اَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰۤى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا ضُحًى وَّ هُمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿۹۸﴾

98. या बस्तियों के बाशिन्दे इस बात से बेख़ौफ़ हैं कि उन पर हमारा अज़ाब (फिर) दिन चढ़े आ जाए इस हाल में कि (वोह दुनिया में मदहोश हो कर) खेल रहे हों।

أَفَأَمِنُوا مَكْرَ اللَّهِ ۚ فَلَا يَأْمَنُ مَكْرَ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمُ الْخَاسِرُونَ ﴿٩٩﴾

99. क्या वोह लोग अल्लाह की मुख़्फ़ी तदबीर से बेख़ौफ़ हैं पस अल्लाह की मुख़्फ़ी तदबीर से कोई बेख़ौफ़ नहीं हुवा करता सिवाए नुक़्सान उठाने वाली क़ौम के।

أَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِينَ يَرِثُونَ الْأَرْضَ مِن بَعْدِ أَهْلِهَا أَن لَّوْ نَشَاءُ أَصَبْنَاهُم بِذُنُوبِهِمْ ۚ وَنَطْبَعُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ﴿١٠٠﴾

100. क्या (येह बात भी) उन लोगों को (शऊ़रो) हिदायत नहीं देती जो (एक ज़माने में) ज़मीन पर रेहनेवालों (की हलाकत) के बाद (खुद) ज़मीन के वारिस बन रहे हैं कि अगर हम चाहें तो उनके गुनाहों के बाइ़स उन्हें (भी) सज़ा दें और हम उन के दिलों पर (उनकी बद आ'मालियों की वजह से) मुहर लगा देंगे सो वोह (ह़क़ को) सुन (समझ) भी नहीं सकेंगे।

تِلْكَ الْقُرَىٰ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنبَائِهَا ۚ وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ ۚ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا بِمَا كَذَّبُوا مِن قَبْلُ ۚ كَذَٰلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِ الْكَافِرِينَ ﴿١٠١﴾

101. येह वोह बस्तियां हैं जिनकी ख़बरें हम आपको सुना रहे हैं और बेशक उनके पास उनके रसूल रौशन निशानियां ले कर आए तो वोह (फिर भी) इस क़ाबिल न हुए कि उस पर ईमान ले आते जिसे वोह पहले झुटला चुके थे इस तरह़ अल्लाह काफ़िरों के दिलों पर मुहर लगा देता है।

وَمَا وَجَدْنَا لِأَكْثَرِهِم مِّنْ عَهْدٍ ۚ وَإِن وَجَدْنَا أَكْثَرَهُمْ لَفَاسِقِينَ ﴿١٠٢﴾

102. और हमने उनमें से अक्सर लोगों में अ़हद (का निबाह) न पाया और उनमें से अक्सर लोगों को हमने ना फ़रमान ही पाया।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِن بَعْدِهِم مُّوسَىٰ بِآيَاتِنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَظَلَمُوا بِهَا ۚ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ﴿١٠٣﴾

103. फिर हमने उनके बाद मूसा (عليه السلام) को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔ़न और उसके (दरबारी) सरदारों के पास भेजा तो उन्होंने उन (दलाइल और मो'जिज़ात) के साथ ज़ुल्म किया फिर आप देखिए कि फ़साद फैलानेवालों का अंजाम कैसा हुआ।

وَقَالَ مُوسَىٰ يَا فِرْعَوْنُ إِنِّي رَسُولٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٠٤﴾

104. और मूसा (عليه السلام) ने कहा : ऐ फ़िरऔ़न! बेशक मैं तमाम जहानों के रब की तरफ़से रसूल (आया)हूं।

حَقِيقٌ عَلَىٰٓ أَن لَّآ أَقُولَ عَلَى ٱللَّهِ إِلَّا ٱلْحَقَّ ۚ قَدْ جِئْتُكُم بِبَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ فَأَرْسِلْ مَعِىَ بَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ ﴿١٠٥﴾

105- मुझे येही ज़ेब देता है कि अल्लाहके बारे में हक़ बात के सिवा (कुछ) न कहूं। बेशक मैं तुम्हारे रब (की जानिब) से तुम्हारे पास वाज़ेह निशानी लाया हूं, सो तू बनी इसराईल को (अपनी गुलामी से आज़ाद कर के) मेरे साथ भेज दे।

قَالَ إِن كُنتَ جِئْتَ بِـَٔايَةٍ فَأْتِ بِهَآ إِن كُنتَ مِنَ ٱلصَّٰدِقِينَ ﴿١٠٦﴾

106. उस(फिरऔ़न)ने कहा : अगर तुम कोई निशानी लाए हो तो उसे (सामने) लाओ अगर तुम सच्चे हो।

فَأَلْقَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِىَ ثُعْبَانٌ مُّبِينٌ ﴿١٠٧﴾

107. पस मूसा(عليه السلام)ने अपना अ़सा (नीचे) डाल दिया तो उसी वक़्त सरीहन अज़्दहा बन गया।

وَنَزَعَ يَدَهُۥ فَإِذَا هِىَ بَيْضَآءُ لِلنَّٰظِرِينَ ﴿١٠٨﴾

108. और अपना हाथ(गिरेबान में डाल कर) निकाला तो वोह (भी) उसी वक़्त देखनेवालों के लिए (चमकदार) सफ़ेद हो गया।

قَالَ ٱلْمَلَأُ مِن قَوْمِ فِرْعَوْنَ إِنَّ هَٰذَا لَسَٰحِرٌ عَلِيمٌ ﴿١٠٩﴾

109. क़ौमे फ़िरऔ़न के सरदार बोले : बेशक येह (तो कोई) बड़ा माहिर जादूगर है।

يُرِيدُ أَن يُخْرِجَكُم مِّنْ أَرْضِكُمْ ۖ فَمَاذَا تَأْمُرُونَ ﴿١١٠﴾

110. (लोगो!) येह तुम्हें तुम्हारे मुल्क से निकालना चाहता है, सो तुम क्या मश्वरा देते हो?

قَالُوٓا۟ أَرْجِهْ وَأَخَاهُ وَأَرْسِلْ فِى ٱلْمَدَآئِنِ حَٰشِرِينَ ﴿١١١﴾

111. उन्होंने कहा (अभी) इसके और इसके भाई (के मुआ़मले) को मुअख़्ख़र कर दो और (मुख़्तलिफ़) शहरों में (जादूगरों को) जमा' करने वाले अफ़राद भेज दो।

يَأْتُوكَ بِكُلِّ سَٰحِرٍ عَلِيمٍ ﴿١١٢﴾

112. वोह तुम्हारे पास हर माहिर जादूगर को ले आएं।

وَجَآءَ ٱلسَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوٓا۟ إِنَّ لَنَا لَأَجْرًا إِن كُنَّا نَحْنُ ٱلْغَٰلِبِينَ ﴿١١٣﴾

113. और जादूगर फ़िरऔ़न के पास आए तो उन्होंने कहा : यक़ीनन हमारे लिए कुछ उजरत होनी चाहिए बशर्ते कि हम ग़ालिब आ जाएं।

قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ لَمِنَ

114. फ़िरऔ़नने कहा : हां! और बेशक (आ़म उजरत

الْمُقَرَّبِينَ ﴿١١٤﴾

तो क्या इस सूरत में) तुम (मेरे दरबार की) कुरबतवालों में से हो जाओगे।

قَالُوا يٰمُوسٰى إِمَّآ أَنْ تُلْقِيَ وَإِمَّآ أَنْ نَّكُونَ نَحْنُ الْمُلْقِينَ ﴿١١٥﴾

115. उन जादूगरोंने कहा : ऐ मूसा! या तो (अपनी चीज़) आप डाल दें या हम ही (पहले)डालनेवाले हो जाएं।

قَالَ أَلْقُوْا ۚ فَلَمَّآ أَلْقَوْا سَحَرُوٓا أَعْيُنَ النَّاسِ وَاسْتَرْهَبُوهُمْ وَجَآءُو بِسِحْرٍ عَظِيمٍ ﴿١١٦﴾

116- मूसा (عليه السلام)ने कहा : तुम ही (पहले) डाल दो फिर जब उन्होंने (अपनी रस्सियों और लाठियों को ज़मीन पर) डाला (तो उन्हों ने) लोगों की आँखों पर जादू कर दिया और उन्हें डरा दिया और वोह ज़बरदस्त जादू (सामने) ले आए।

وَأَوْحَيْنَآ إِلٰى مُوسٰٓى أَنْ أَلْقِ عَصَاكَ ۚ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ﴿١١٧﴾

117. और हमने मूसा (عليه السلام)की तरफ़ वही फ़रमाई कि (अब) आप अपना अ़सा (ज़मीन पर) डाल दें तो वोह फ़ौरन उन चीज़ों को निगलने लगा जो उन्होंने फ़रेब कारी से वज़ा' कर रखी थीं।

فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١١٨﴾

118. पस हक़ साबित हो गया और जो कुछ वोह कर रहे थे(सब) बातिल हो गया।

فَغُلِبُوا هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوا صٰغِرِينَ ﴿١١٩﴾

119. सो वोह (फ़िरऔ़नी नुमाइन्दे) उस जगह मग़लूब हो गए और ज़लील हो कर पलट गए।

وَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سٰجِدِينَ ﴿١٢٠﴾

120. और (तमाम) जादूगर सजदे में गिर पड़े।

قَالُوٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِينَ ﴿١٢١﴾

121. वोह बोल उठे : हम सारे जहानों के(हक़ीक़ी) रब पर ईमान ले आए।

رَبِّ مُوسٰى وَهٰرُونَ ﴿١٢٢﴾

122. (जो) मूसा और हारून (अ़लैहि) का रब है।

قَالَ فِرْعَوْنُ اٰمَنْتُمْ بِهٖ قَبْلَ أَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ إِنَّ هٰذَا لَمَكْرٌ مَّكَرْتُمُوهُ فِي الْمَدِينَةِ لِتُخْرِجُوا مِنْهَآ أَهْلَهَا ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿١٢٣﴾

123. फ़िरऔ़न केहने लगा : (क्या) तुम उस पर ईमान ले आऐ हो क़ब्ल इसकेकि मैं तुम्हें इजाज़त देता। बेशक येह एक फ़रेब है जो तुम (सब) ने मिल कर (मुझसे) इस शहर में किया है ताकि तुम इस (मुल्क) से इस के (क़िब्ती) बाशिन्दों को निकाल कर ले जाओ, सो तुम अ़नक़रीब (इसका अंजाम) जान लोगे।

لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٢٤﴾

124- मैं यक़ीनन तुम्हारे हाथोंको और तुम्हारे पाँवों को एक दूसरे की उलटी सम्त से काट डालूंगा फिर ज़रूर बिज़.ज़रूर तुम सबको फांसी दे दूंगा।

قَالُوْٓا اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ﴿١٢٥﴾

125. उन्होंने कहा : बेशक हम अपने रब की तरफ़ पलटनेवाले हैं।

وَمَا تَنْقِمُ مِنَّآ اِلَّآ اَنْ اٰمَنَّا بِاٰيٰتِ رَبِّنَا لَمَّا جَآءَتْنَا ؕ رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ ﴿١٢٦﴾

126. और तुम्हें हमारा कौन सा अमल बुरा लगा है? सिर्फ़ येही कि हम अपने रबकी (सच्ची) निशानियों पर ईमान ले आए हैं, जब वोह हमारे पास पहुंच गईं। ऐ हमारे रब! तू हम पर सब्र के सरचश्मे खोल दे और हम को (साबित क़दमी से) मुसलमान रहते हुऐ (दुनियासे) उठा ले।

وَقَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اَتَذَرُ مُوْسٰى وَقَوْمَهٗ لِيُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ وَيَذَرَكَ وَاٰلِهَتَكَ ؕ قَالَ سَنُقَتِّلُ اَبْنَآءَهُمْ وَنَسْتَحْىٖ نِسَآءَهُمْ ۚ وَاِنَّا فَوْقَهُمْ قٰهِرُوْنَ ﴿١٢٧﴾

127. और क़ौमे फ़िरऔन के सरदारों ने (फ़िरऔन से) कहा : क्या तू मूसा और उसकी (इन्क़िलाब पसंद) क़ौम को छोड़ देगा कि वोह मुल्क में फ़साद फैलाएं?और (फिर क्या) वोह तुझ को और तेरे मा'बूदों को छोड़ देंगे? उसने कहा : (नहीं) अब हम उनके लड़कों को क़त्ल कर देंगे (ताकि उनकी मर्दाना अफ़रादी कुव्वत ख़त्म हो जाए) और उनकी औरतों को ज़िन्दा रखेंगे (ताकि उनसे ज़ियादती की जा सके) औरबेशक हम उन पर ग़ालिब हैं।

قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اسْتَعِيْنُوْا بِاللّٰهِ وَاصْبِرُوْا ۚ اِنَّ الْاَرْضَ لِلّٰهِ ۙ يُوْرِثُهَا مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٢٨﴾

128. मूसा (عليه السلام) ने अपनी क़ौम से फ़रमाया: तुम अल्लाहसे मदद मांगो और सब्र करो, बेशक ज़मीन अल्लाह की है वोह अपने बंदों में से जिसे चाहता है उस का वारिस बना देता है, और अंजामे ख़ैर परहेज़गारों के लिए ही है।

قَالُوْٓا اُوْذِيْنَا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَاْتِيَنَا وَمِنْ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا ؕ قَالَ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَ

129. लोग केहने लगे : (ऐ मूसा!) हमें तो आपके हमारे पास आने से पहले भी अज़िय्यतें पहुंचाई गईं और आपके हमारे पास आने के बाद भी (गोया हम दोनों तरह मारे गए, हमारी मुसीबत कब दूर होगी?) मूसा (عليه السلام) ने (अपनी

يَسْتَخْلِفَكُمْ فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ ﴿١٢٩﴾

क़ौम को तसल्ली देते हुऐ) फ़रमायाः क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हारे दुश्मन को हलाक कर दे और (उसके बाद) ज़मीन(की सल्तनत)में तुम्हें जा नशीन बना दे फिर वोह देखे कि तुम (इक़्तिदार में आ कर) कैसे अ़मल करते हो।

وَلَقَدْ أَخَذْنَا آلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّنِينَ وَنَقْصٍ مِنَ الثَّمَرَاتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ ﴿١٣٠﴾

130. फिर हमने अहले फ़िरऔ़न को (क़ेहत के) चंद सालों और मेवों के नुक़्सान से (अ़ज़ाब की) गिरफ़्त में ले लिया ताकि वोह नसीहत हासिल करें।

فَإِذَا جَاءَتْهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوا لَنَا هَٰذِهِ ۖ وَإِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَطَّيَّرُوا بِمُوسَىٰ وَمَنْ مَعَهُ ۗ أَلَا إِنَّمَا طَائِرُهُمْ عِنْدَ اللَّهِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٣١﴾

131- फिर जब उन्हें आसाइश पहुंचती तो केहते : येह हमारी अपनी वजह से है, और अगर उन्हें सख़्ती पहुंचती वोह मूसा (عليه السلام) और उनके (ईमान वाले) साथियों की निस्बत बद शगूनी करते, ख़बरदार उनका शगून (या'नी शामते आ'माल)तो अल्लाह ही के पास है मगर उनमें से अक्सर लोग इ़ल्म नहीं रखते।

وَقَالُوا مَهْمَا تَأْتِنَا بِهِ مِنْ آيَةٍ لِتَسْحَرَنَا بِهَا فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ﴿١٣٢﴾

132. और वोह (अह्ले फ़िरऔ़न मुतकब्बिराना तौर पर) केहने लगे : (ऐ मूसा!) तुम हमारे पास जो भी निशानी लाओ कि तुम उसके ज़रीए हम पर जादू कर सको, तब भी हम तुम पर ईमान लानेवाले नहीं हैं।

فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ وَالدَّمَ آيَاتٍ مُفَصَّلَاتٍ فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا مُجْرِمِينَ ﴿١٣٣﴾

133. फिर हमने उन पर तूफ़ान, टिड्डियां, घुन, मेंडक और ख़ून (कितनी ही) जुदागाना निशानियां (बतौरे अ़ज़ाब) भेजीं, फिर (भी) उन्होंने तकब्बुरो सरकशी इख़्तियार किए रखी और वोह (निहायत) मुजरिम क़ौम थी।

وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوا يَا مُوسَى ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ

134. और जब उन पर(कोई)अ़ज़ाब वाक़े' होता तो केहते : ऐ मूसा! आप हमारे लिए अपने रबसे दुआ़ करें उस अ़हदके वसीले से जो (उसका) आपकेपास है, अगर

عِنْدَكَ ۚ لَئِنْ كَشَفْتَ عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِيٓ إِسْرَآءِيلَ ۚ ﴿١٣٤﴾

आप हमसे इस अ़ज़ाब को टाल दें तो हम ज़रूर आप पर ईमान ले आएंगे और बनी इसराईल को (भी आज़ाद कर के) आप के साथ भेज देंगे।

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ إِلَىٰٓ أَجَلٍ هُمْ بٰلِغُوهُ إِذَا هُمْ يَنْكُثُونَ ﴿١٣٥﴾

135- फिर जब हम उनसे उस मुद्दत तक के लिए जिस को वोह पहुंचने वाले होते वोह अ़ज़ाब टाल देते तो वोह फ़ौरन ही अ़हद तोड़ देते।

فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ بِأَنَّهُمْ كَذَّبُوا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوا عَنْهَا غٰفِلِينَ ﴿١٣٦﴾

136. फिर हमने उनसे (बिल-आख़िर तमाम ना फ़रमानियों और बद अ़हदियों का) बदला ले लिया और हमने उन्हें दरिया में ग़र्क़ कर दिया, इस लिए कि उन्होंने हमारी आयतों की (पै दर पै) तक्ज़ीब की थी और वोह उनसे (बिल्कुल) ग़ाफ़िल थे।

وَأَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِينَ كَانُوا يُسْتَضْعَفُونَ مَشَارِقَ الْأَرْضِ وَمَغَارِبَهَا الَّتِي بٰرَكْنَا فِيهَا ۖ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنٰى عَلٰى بَنِيٓ إِسْرَآءِيلَ ۙ بِمَا صَبَرُوا ۖ وَدَمَّرْنَا مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَقَوْمُهُ وَمَا كَانُوا يَعْرِشُونَ ﴿١٣٧﴾

137. और हमने उस क़ौम (बनी इसराईल) को जो कमज़ोर और इस्तेहूसाल ज़दह थी उस सर ज़मीन के मशरिक़ो मग़्रिब (मिस्र और शाम) का वारिस बना दिया जिसमें हमने बरकत रखी थी और (यूं) बनी इसराईल के हक़्में आपके रबका नेक वा'दा पूरा हो गया, इस वजह से कि उन्होंने (फ़िरऔ़नी मज़ालिम पर) सब्र किया था, और हमने उन (आ़लीशान महल्लात) को तबाहो बरबाद कर दिया जो फ़िरऔ़न और उसकी क़ौमने बना रखे थे और उन चुनाइयों (और बाग़ात) को भी जिन्हें वोह बुलंदियों पर चढ़ाते थे।

وَجٰوَزْنَا بِبَنِيٓ إِسْرَآءِيلَ الْبَحْرَ فَأَتَوْا عَلٰى قَوْمٍ يَعْكُفُونَ عَلٰٓى أَصْنَامٍ لَهُمْ ۚ قَالُوا يٰمُوسَى اجْعَلْ لَنَآ إِلٰهًا كَمَا لَهُمْ اٰلِهَةٌ ۚ قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُونَ ﴿١٣٨﴾

138. और हमने बनी इसराईल को समंदर (या'नी बहरे कुलज़ुम) के पार उतारा तो वोह एक ऐसी क़ौम के पास जा पहुंचे जो अपने बुतों के गिर्द(परस्तिश केलिए) आसन मारे बैठे थे, (बनी इसराईल के लोग)केहने लगे : ऐ मूसा! हमारे लिए भी ऐसा (ही) मा'बूद बना दें जैसे उनके मा'बूद हैं, मूसा (عليه السلام) ने कहा : तुम यक़ीनन बड़े जाहिल लोग हो।

إِنَّ هَٰؤُلَاءِ مُتَبَّرٌ مَّا هُمْ فِيهِ وَ بَاطِلٌ مَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٣٩﴾

139. बिला शुब्हा येह लोग जिस चीज़ (की पूजा) में (फंसे हुए) हैं वोह हलाक हो जानेवाली है और जो कुछ वोह कर रहे हैं वोह(बिल्कुल) बातिल है।

قَالَ أَغَيْرَ اللَّهِ أَبْغِيكُمْ إِلَٰهًا وَّهُوَ فَضَّلَكُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿١٤٠﴾

140- (मूसा عليه السلام ने) कहा : क्या मैं तुम्हारे लिए अल्लाहके सिवा कोई और मा'बूद तलाश करूं, हालांकि उसी (अल्लाह) ने तुम्हें सारे जहानों पर फ़ज़ीलत बख़्शी है।

وَ إِذْ أَنجَيْنَاكُم مِّنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ ۚ يُقَتِّلُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَ يَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ ۗ وَفِي ذَٰلِكُم بَلَاءٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ ﴿١٤١﴾

141. और (वोह वक़्त) याद करो जब हमने तुमको अहले फ़िरऔन से नजात बख़्शी जो तुम्हें बहुत ही सख़्त अज़ाब देते थे, वोह तुम्हारे लड़कों को क़त्ल कर देते और तुम्हारी लड़कियों को ज़िन्दा छोड़ देते थे, और उसमें तुम्हारे रबकी तरफ़से ज़बरदस्त आज़माइश थी।

وَ وٰعَدْنَا مُوسَىٰ ثَلَاثِينَ لَيْلَةً وَّأَتْمَمْنَاهَا بِعَشْرٍ فَتَمَّ مِيقَاتُ رَبِّهِ أَرْبَعِينَ لَيْلَةً ۚ وَقَالَ مُوسَىٰ لِأَخِيهِ هَارُونَ اخْلُفْنِي فِي قَوْمِي وَأَصْلِحْ وَ لَا تَتَّبِعْ سَبِيلَ الْمُفْسِدِينَ ﴿١٤٢﴾

142. और हमने मूसा (عليه السلام) से तीस रातों का वा'दा फ़रमाया और हमने उसे (मज़ीद) दस (रातें) मिला कर पूरा किया, सो उनके रबकी (मुक़र्रर कर्दह) मीआद चालीस रातों में पूरी हो गई। और मूसा (عليه السلام) ने अपने भाई हारून (عليه السلام से फ़रमाया : तुम (इस दौरान) मेरी क़ौम में मेरे जानशीन रेहना और (उनकी) इस्लाह करते रेहना और फ़साद करनेवालों की राह पर न चलना (या'नी उन्हें उस राह पर न चलने देना)।

وَلَمَّا جَاءَ مُوسَىٰ لِمِيقَاتِنَا وَكَلَّمَهُ رَبُّهُ ۙ قَالَ رَبِّ أَرِنِي أَنظُرْ إِلَيْكَ ۚ قَالَ لَن تَرَانِي وَ لَٰكِنِ انظُرْ إِلَى الْجَبَلِ فَإِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهُ فَسَوْفَ تَرَانِي ۚ فَلَمَّا تَجَلَّىٰ رَبُّهُ لِلْجَبَلِ جَعَلَهُ دَكًّا وَّ

143. और जब मूसा (عليه السلام) हमारे (मुक़र्रर कर्दह) वक़्त पर हाज़िर हुवा और उसकेरबने उससे कलाम फ़रमाया तो (कलामे रब्बानी की लिज़्ज़त पा कर दीदार का आरज़ू मंद हुवा और) अर्ज़ करने लगा : ऐ रब! मुझे (अपना जल्वह) दिखा कि मैं तेरा दीदार कर लूं, इर्शाद हुवा : तुम मुझे (बराहे रास्त) हरगिज़ देख न सकोगे मगर पहाड़ की तरफ़ निगाह करो पस अगर वोह अपनी जगह ठेहरा रहा तो अनक़रीब तुम मेरा जल्वह कर लोगे। फिर जब उसके

خَرَّ مُوْسٰى صَعِقًا ۚ فَلَمَّآ اَفَاقَ قَالَ سُبْحٰنَكَ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۴۳﴾

रबने पहाड़ पर (अपने हुस्न का) जल्वह फ़रमाया तो (शिद्दते अनवार से) उसे रेज़ह रेज़ह कर दिया और मूसा (عليه السلام) बेहोश हो कर गिर पड़ा। फिर जब उसे इफ़ाक़ह हुवा तो अ़र्ज़ किया : तेरी ज़ात पाक है में तेरी बारगाह में तौबा करता हूं और मैं सबसे पहला ईमान लाने वाला हूं।

قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنِّى اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسٰلٰتِىْ وَبِكَلَامِىْ ۖ فَخُذْ مَآ اٰتَيْتُكَ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿۱۴۴﴾

144- इर्शाद हुवा : ऐ मूसा! बेशक मैं ने तुम्हें लोगों पर अपने पैग़ामात और अपने कलाम के ज़रीए बरगुज़ीदह व मुन्तख़ब फ़रमा लिया। सो मैंने तुम्हें जो कुछ अ़ता फ़रमाया है उसे थाम लो और शुक्र गुज़ारों में से हो जाओ।

وَكَتَبْنَا لَهٗ فِى الْاَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَىْءٍ مَّوْعِظَةً وَّتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَىْءٍ ۚ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَّاْمُرْ قَوْمَكَ يَاْخُذُوْا بِاَحْسَنِهَا ۗ سَاُورِيْكُمْ دَارَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿۱۴۵﴾

145. और हमने उनके लिए (तौरात की) तख़्तियों में हर एक चीज़ की नसीहत और हर एक चीज़ की तफ़्सील लिख दी (है), तुम उसे मज़बूती से थामे रखो और अपनी क़ौम को (भी) हुक्म दो कि वोह उसकी बेहतरीन बातों को इख़्तियार कर लें। मैं अ़नक़रीब तुम्हें ना फ़रमानों का मुक़ाम दिखाऊंगा।

سَاَصْرِفُ عَنْ اٰيٰتِىَ الَّذِيْنَ يَتَكَبَّرُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۗ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الْغَىِّ يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۗ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ﴿۱۴۶﴾

146. मैं अपनी आयतों (के समझने और क़ुबूल करने) से उन लोगों को बाज़ रखूंगा जो ज़मीनमें ना ह़क़ तकब्बुर करते हैं और अगर वोह तमाम निशानियां देख लें (तब भी) उस पर ईमान नहीं लाएंगे और अगर वोह हिदायत की राह देख लें (फिर भी) उसे (अपना) रास्ता नहीं बनाएंगे और अगर वोह गुमराही का रास्ता देख लें (तो) उसे अपनी राह के तौर पर अपना लेंगे, येह इस वजहसे कि उन्होंने हमारी आयतों को झुटलाया और उनसे ग़ाफ़िल बने रहे।

147. और जिन लोगोंने हमारी आयतों को और आख़िरत की मुलाक़ात को झुटलाया उनके आ'माल बरबाद हो गए। उन्हें क्या बदला मिलेगा मगर वोही जो कुछ वोह किया करते थे।

148- और मूसा (عليه السلام) की क़ौमने उनके(कोहे तूर पर जाने के) बाद अपने ज़ेवरों से एक बछड़ा बना लिया (जो) एक जिस्म था, उसकी आवाज़ गाय की थी, क्या उन्हों ने येह नहीं देखा कि वोह न उनसे बात कर सक्ता है और न ही उन्हें रास्ता दिखा सक्ता है। उन्होंने उसीको (मा'बूद) बना लिया और वोह ज़ालिम थे।

149. और जब वोह अपने किए पर शदीद नादिम हुए और उन्होंने देख लिया कि वोह वाक़ई गुमराह हो गए हैं (तो) केहने लगे : अगर हमारे रबने हम पर रहम न फ़रमाया और हमें न बख़्शा तो हम यक़ीनन नुक़्सान उठानेवालों में से हो जाएंगे।

150. और जब मूसा (عليه السلام) अपनी क़ौम की तरफ़ निहायत ग़मो ग़ुस्से से भरे हुए पलटे तो केहने लगे कि तुमने मेरे (जाने के) बाद मेरे पीछे बहुत ही बुरा काम किया है क्या तुमने अपने रबके हुक्म पर जल्दबाज़ी की और (मूसा عليه السلام ने तौरात की) तख़्तियां नीचे रख दीं और अपने भाई के सर को पकड़ कर अपनी तरफ़ खींचा (तो) हारून (عليه السلام) ने कहा : ऐ मेरी मां के बेटे! बेशक इस क़ौमने मुझे कमज़ोर समझा और क़रीब था कि(मेरे मना' करने पर) मुझे क़त्ल कर डालें, सो आप दुश्मनों को मुझ पर हंसने का मौक़ा' न दें और मुझे उन ज़ालिम लोगों (के ज़ुमरे) में शामिल न करें।

وَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَ لِقَآءِ الْاٰخِرَةِ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ؕ هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٧﴾

وَ اتَّخَذَ قَوْمُ مُوْسٰى مِنْۢ بَعْدِهٖ مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ ؕ اَلَمْ يَرَوْا اَنَّهٗ لَا يُكَلِّمُهُمْ وَلَا يَهْدِيْهِمْ سَبِيْلًا ۘ اِتَّخَذُوْهُ وَكَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿١٤٨﴾

وقف لازم

وَ لَمَّا سُقِطَ فِيْۤ اَيْدِيْهِمْ وَرَاَوْا اَنَّهُمْ قَدْ ضَلُّوْا ۙ قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ يَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿١٤٩﴾

وَ لَمَّا رَجَعَ مُوْسٰۤى اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۙ قَالَ بِئْسَمَا خَلَفْتُمُوْنِيْ مِنْۢ بَعْدِيْ ۚ اَعَجِلْتُمْ اَمْرَ رَبِّكُمْ ۚ وَاَلْقَى الْاَلْوَاحَ وَاَخَذَ بِرَاْسِ اَخِيْهِ يَجُرُّهٗۤ اِلَيْهِ ؕ قَالَ ابْنَ اُمَّ اِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضْعَفُوْنِيْ وَكَادُوْا يَقْتُلُوْنَنِيْ ۖ فَلَا تُشْمِتْ بِيَ الْاَعْدَآءَ وَلَا تَجْعَلْنِيْ مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٥٠﴾

قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِأَخِي وَأَدْخِلْنَا فِي رَحْمَتِكَ ۖ وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ﴿١٥١﴾

151. (मूसा ने) अ़र्ज़ किया : ऐ मेरे रब! मुझे और मेरे भाई को मुआ़फ़ फ़रमा दे और हमें अपनी रह़मत (के दामन) में दाखि़ल फ़रमा ले और तू सबसे बढ़ कर रहम फ़रमानेवाला है।

إِنَّ الَّذِينَ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ مِنْ رَبِّهِمْ وَذِلَّةٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُفْتَرِينَ ﴿١٥٢﴾

152- बेशक जिन लोगोंने बछड़े को (मा'बूद) बना लिया है उन्हें उनके रबकी तरफ़ से ग़ज़ब भी पहुंचेगा और दुन्यवी ज़िन्दगी में ज़िल्लत भी, और हम इसी तरह इफ़्तिरा पर्दाज़ों को सज़ा देते हैं।

وَالَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ ثُمَّ تَابُوا مِنْ بَعْدِهَا وَآمَنُوا إِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٥٣﴾

153. और जिन लोगोंने बुरे काम किए फिर उसके बाद तौबा कर ली और ईमान ले आए (तो) बेशक आपका रब उसके बाद बड़ा ही बख़्शनेवाला महरबान है।

وَلَمَّا سَكَتَ عَنْ مُوسَى الْغَضَبُ أَخَذَ الْأَلْوَاحَ ۖ وَفِي نُسْخَتِهَا هُدًى وَرَحْمَةٌ لِلَّذِينَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُونَ ﴿١٥٤﴾

154. और जब मूसा () का गुस्सा थम गया तो उन्होंने तख़्तियां उठा लीं और उन (तख़्तियों) की तह़रीर में हिदायत और ऐसे लोगों के लिए रह़मत (मज़कूर) थी जो अपने रबसे बहुत डरते हैं।

وَاخْتَارَ مُوسَىٰ قَوْمَهُ سَبْعِينَ رَجُلًا لِمِيقَاتِنَا ۖ فَلَمَّا أَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ أَهْلَكْتَهُمْ مِنْ قَبْلُ وَإِيَّايَ ۖ أَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ السُّفَهَاءُ مِنَّا ۖ إِنْ هِيَ إِلَّا فِتْنَتُكَ تُضِلُّ بِهَا مَنْ تَشَاءُ وَتَهْدِي مَنْ تَشَاءُ ۖ أَنْتَ

155. और मूसा () ने अपनी क़ौम के सत्तर मर्दों को हमारे मुक़र्रर कर्दह वक़्त (पर हमारे हुज़ूर मा'ज़ेरत की पेशी) के लिए चुन लिया, फिर जब उन्हें (क़ौम की बुराई से मना' न करने पर तादीबन) शदीद जल्ज़लेने आ पकड़ा तो (मूसा ने) अ़र्ज़ किया : ऐ रब! अगर तू चाहता तो इससे पहले ही इन लोगों को और मुझे हलाक फ़रमा देता, क्या तू हमें इस (ख़ता) के सबब हलाक फ़रमाएगा जो हममें से बेवकूफ़ लोगों ने अंजाम दी है, येह तो मह़ज़ तेरी आज़माइश है, इसके ज़रीए तू जिसे चाहता है गुमराह

وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الْغٰفِرِيْنَ ﴿۱۵۵﴾

ठेहराता है और जिसे चाहता है हिदायत फ़रमाता है। तू ही हमारा कारसाज़ है, सो तू हमें बख़्श दे और हम पर रह़म फ़रमा और तू सबसे बेहतर बख़्शनेवाला है।

وَاكْتُبْ لَنَا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ اِنَّا هُدْنَآ اِلَيْكَ ؕ قَالَ عَذَابِيْٓ اُصِيْبُ بِهٖ مَنْ اَشَآءُ ۚ وَرَحْمَتِيْ وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ؕ فَسَاَكْتُبُهَا لِلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِنَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۵۶﴾ ج

156- और तू हमारे लिए इस दुनिया (की ज़िन्दगी) में (भी) भलाई लिख दे और आख़िरत में (भी) बेशक हम तेरी तरफ़ ताइबो राग़िब हो चुके, इर्शाद हुवा : मैं अपना अ़ज़ाब जिसे चाहता हूं उसे पहुंचाता हूं और मेरी रह़मत हर चीज़ पर वुस्अ़त रखती है, सो मैं अ़नक़रीब उस (रह़मत) को उन लोगों के लिए लिख दूंगा जो परहेज़गारी इख़्तियार करते हैं और ज़कात देते रेहते हैं और वोही लोग ही हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं।

اَلَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الرَّسُوْلَ النَّبِيَّ الْاُمِّيَّ الَّذِيْ يَجِدُوْنَهٗ مَكْتُوْبًا عِنْدَهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِيْلِ ؗ يَاْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهٰىهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبٰتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبٰٓئِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ اِصْرَهُمْ وَالْاَغْلٰلَ الَّتِيْ كَانَتْ عَلَيْهِمْ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ وَعَزَّرُوْهُ وَنَصَرُوْهُ وَاتَّبَعُوا النُّوْرَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ مَعَهٗٓ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۱۵۷﴾ ع

157. (येह वोह लोग हैं) जो इस रसूल (ﷺ)की पैरवी करते हैं जो उम्मी (लक़ब) नबी हैं (या'नी दुनिया में किसी शख़्स से पढ़े बिग़ैर मिन्जानिब अल्लाह लोगों को अख़्बारे ग़ैब और मआ़शो मआ़द के उ़लूमो मआ़रिफ बताते हैं) जिन (के अवसाफ़ो कमालात) को वोह लोग अपने पास तौरात और इन्जील में लिखा हुआ पाते हैं, जो उन्हें अच्छी बातों का हुक्म देते हैं और बुरी बातों से मना' फ़रमाते हैं और उनके लिए पाकीज़ा चीज़ों को ह़लाल करते हैं और उन पर पलीद चीज़ों को ह़राम करते हैं और उनसे उनके बारे गरां और तौ़क़ (क़ुयूद) जो उन पर (नाफ़रमानियों के बाइस मुसल्लत) थे, साक़ित फ़रमाते (और उन्हें ने'मते आज़ादी से बेहरा याब करते) हैं। पस जो लोग इस (बरगुज़ीदा रसूल ﷺ) पर ईमान लाएंगे और उनकी ता'ज़ीमो तौक़ीर करेंगे और उन (के दीन) की मददो नुसरत करेंगे और इस नूर (क़ुर्आन) की पैरवी करेंगे जो उनके साथ उतारा गया है, वोही लोग ही फ़लाह़ पानेवाले हैं।

قُلْ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّىْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعَاۨ الَّذِىْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْىٖ وَيُمِيْتُ۪ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهِ النَّبِىِّ الْاُمِّىِّ الَّذِىْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَ كَلِمٰتِهٖ وَ اتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٥٨﴾

158. आप फ़रमा दें : ऐ लोगो! मैं तुम सबकी तरफ़ उस अल्लाह का रसूल (बन कर आया) हूं जिसके लिए तमाम आस्मानों और ज़मीनकी बादशाहत है, उसके सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोही जिलाता है और मारता है, सो तुम अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) पर ईमान लाओ जो (शाने उम्मियत का हामिल) नबी है (या'नी उसने अल्लाह के सिवा किसी से कुछ नहीं पढ़ा मगर जमीए ख़ल्क़ से ज़ियादा जानता है और कुफ़्रो शिर्क के मुआशरे में जवान हुवा मगर बतने मादर से निक्ले हुऐ बच्चे की तरह मा'सूम और पाकीज़ा है) जो अल्लाह पर और उसके (सारे नाज़िल कर्दह) कलामों पर ईमान रखता है और तुम इन्हीं की पैरवी करो ताकि तुम हिदायत पा सको।

وَمِنْ قَوْمِ مُوْسٰۤى اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ﴿١٥٩﴾

159- और मूसा (عليه السلام)की क़ौम में से एक जमाअ़त (ऐसे लोगों की भी) है जो ह़क़ की राह बताते हैं और उसी के मुताबिक़ अ़द्ल (पर मब्नी फ़ैसले) करते हैं।

وَ قَطَّعْنٰهُمُ اثْنَتَىْ عَشْرَةَ اَسْبَاطًا اُمَمًاؕ وَ اَوْحَيْنَاۤ اِلٰى مُوْسٰۤى اِذِ اسْتَسْقٰهُ قَوْمُهٗۤ اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَۚ فَانْۢبَجَسَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًاؕ قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْؕ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ الْغَمَامَ وَ اَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰىؕ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْؕ وَمَا ظَلَمُوْنَا وَ لٰكِنْ كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿١٦٠﴾

160. और हमने उन्हें गिरोह दर गिरोह बारह क़बीलों में तक़्सीम कर दिया। और हमने मूसा (عليه السلام)के पास (येह) वह़ी भेजी जब उससे उसकी क़ौमने पानी मांगा कि अपना अ़सा पथ्थर पर मारो, सो उसमें से बारह चश्मे फूट निक्ले, पस हर क़बीले ने अपना घाट मा'लूम कर लिया, और हमने उन पर अब्र का साइबान तान दिया, और हमने उन पर मन्नो सल्वा उतारा, (और उनसे फ़रमाया) जिन पाकीज़ा चीज़ों का रिज़्क़ हमने तुम्हें अ़ता किया है उसमें से खाओ, (मगर ना फ़रमानी और कुफ़राने ने'मत कर के) उन्हों ने हम पर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि वोह अपनी ही जानों पर ज़ुल्म कर रहे थे।

وَإِذْ قِيلَ لَهُمُ اسْكُنُوا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ وَكُلُوا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُولُوا حِطَّةٌ وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا تُغْفَرْ لَكُمْ خَطِيٓـٰٔتُكُمْ ۚ سَنَزِيدُ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٦١﴾

161. और (याद करो) जब उनसे फ़रमाया गया कि तुम इस शहर (बैतुल मुक़द्दस या अरीहा) में सुकूनत इख़्तियार करो और तुम वहां से जिस तरह चाहो खाना और (ज़बान से) केहते जाना कि (हमारे गुनाह) बख़्श दे और (शहर के) दरवाज़े में सजदह करते हुए दाख़िल होना (तो) हम तुम्हारी तमाम ख़ताएं बख़्श देंगे, अ़नक़रीब हम नेकूकारों को और ज़ियादा अ़ता फ़रमाएंगे।

فَبَدَّلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِّنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَظْلِمُونَ ﴿١٦٢﴾

162- फिर उनमें से ज़ालिमों ने इस बातको जो उनसे कही गई थी, दूसरी बात से बदल डाला, सो हमने उन पर आस्मान से अ़ज़ाब भेजा इस वजहसे कि वोह ज़ुल्म करते थे।

ع ٥/١٠

وَسْـَٔلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِي كَانَتْ حَاضِرَةَ الْبَحْرِ ۘ إِذْ يَعْدُونَ فِي السَّبْتِ إِذْ تَأْتِيهِمْ حِيتَانُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَّيَوْمَ لَا يَسْبِتُونَ ۙ لَا تَأْتِيهِمْ ۚ كَذٰلِكَ ۚ نَبْلُوهُم بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿١٦٣﴾

وقف لازم

معانقة ٢ النصف

163. और आप उनसे उस बस्ती का ह़ाल दरयाफ़्त फ़रमाएं जो समंदर के किनारे वाक़े' थी, जब वोह लोग हफ़्ते (के दिन के अह़्काम) में ह़द से तजावुज़ करते थे (येह उस वक़्त हुवा) जब (उनके सामने) उनकी मछलियां उनके (ता'ज़ीम कर्दह) हफ़्ते के दिन को पानी (की सतह़) पर हर तरफ़से ख़ूब ज़ाहिर होने लगीं और (बाक़ी) हर दिन जिसकी वोह यौमे शंबह की तरह़ ता'ज़ीम नहीं करते थे (मछलियां) उनके पास न आतीं, इस तरह हम उनकी आज़माइश कर रहे थे ब-ई़ वजह कि वोह ना फ़रमान थे।

وَإِذْ قَالَتْ أُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ تَعِظُونَ قَوْمًا ۙ اللَّهُ مُهْلِكُهُمْ أَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۖ قَالُوا مَعْذِرَةً إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿١٦٤﴾

164. और जब उन में से एक गिरोह ने (फ़रीज़ए दा'वत अंजाम देने वालों से) कहा कि तुम ऐसे लोगों को नसीह़त क्यों कर रहे हो जिन्हें अल्लाह हलाक करनेवाला है या जिन्हें निहायत सख़्त अ़ज़ाब देनेवाला है? तो उन्हों ने जवाब दिया कि तुम्हारे रबके हु़ज़ूर (अपनी) मा'ज़ेरत पेश करने के लिए और इस लिए (भी) कि शायद वोह परहेज़गार बन जाएं।

فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهٖٓ اَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوْٓءِ وَ اَخَذْنَا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا بِعَذَابٍۭ بَئِيْسٍۭ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿١٦٥﴾

165. फिर जब वोह उन (सब) बातों को फ़रामोश कर बैठे जिनकी उन्हें नसीहत की गई थी (तो) हमने उन लोगों को नजात दे दी जो बुराई से मना' करते थे (या'नी नह्य अनिल मुन्कर का फ़रीज़ा अदा करते थे) और हमने (बक़िय्या सब) लोगों को जो (अ़मलन या सुकूतन) ज़ुल्म करते थे निहायत बुरे अ़ज़ाब में पकड़ लिया। इस वजह से कि वोह ना फ़रमानी कर रहे थे।

فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَّا نُهُوْا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا قِرَدَةً خٰسِئِيْنَ ﴿١٦٦﴾

166- फिर जब उन्हों ने उस चीज़ (के तर्क करने के हुक्म) से सरकशी की जिससे वोह रोके गए थे (तो) हमने उन्हें हुक्म दिया कि तुम ज़लीलो ख़्वार बंदर हो जाओ।

وَ اِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ يَّسُوْمُهُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ؕ اِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيْعُ الْعِقَابِ ۖۚ وَ اِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٦٧﴾

167. और (वोह वक़्त भी याद करें) जब आपके रबने (यहूद को येह) हुक्म सुनाया कि (अल्लाह) उन पर रोज़े क़ियामत तक (किसी न किसी) ऐसे शख़्स को ज़रूर मुसल्लत करता रहेगा जो उन्हें बुरी तक्लीफ़ें पहुंचाता रहे। बेशक आपका रब जल्द सज़ा देनेवाला है और बेशक वोह बड़ा बख़्शनेवाला महरबान (भी) है।

وَقَطَّعْنٰهُمْ فِي الْاَرْضِ اُمَمًا ۚ مِنْهُمُ الصّٰلِحُوْنَ وَمِنْهُمْ دُوْنَ ذٰلِكَ ۫ وَ بَلَوْنٰهُمْ بِالْحَسَنٰتِ وَ السَّيِّاٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿١٦٨﴾

168. और हमने उन्हें ज़मीनमें गिरोह दर गिरोह तक़्सीम (और मुन्तशिर) कर दिया, उनमें से बा'ज़ नेकूकार भी हैं और उन (ही) में से बा'ज़ इसके सिवा (बदकार) भी और हमने उनकी आज़माइश इन्आ़मात और मुश्किलात (दोनों तरीक़ों) से की ताकि वोह (अल्लाह की तरफ़) रुजूअ़ करें।

فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَّرِثُوا الْكِتٰبَ يَاْخُذُوْنَ عَرَضَ هٰذَا الْاَدْنٰى وَيَقُوْلُوْنَ سَيُغْفَرُ لَنَا ۚ وَاِنْ يَّاْتِهِمْ عَرَضٌ مِّثْلُهٗ يَاْخُذُوْهُ ؕ اَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِّيْثَاقُ الْكِتٰبِ اَنْ

169. फिर उनके बाद ना ख़ल्फ़ (उनके) जा नशीन बने। जो किताब के वारिस हुए येह (जा नशीन) इस कम तर (दुनिया) का मालो दौलत (रिश्वत के तौर पर) ले लेते हैं और केहते हैं अ़नक़रीब हमें बख़्श दिया जाएगा, हालांकि उसी तरह का मालो मताअ़ और भी उनके पास आ जाए (तो) उसे भी ले लें, क्या उनसे किताबे (इलाही) का येह अ़हद नहीं लिया गया था कि वोह अल्लाह के बारे में हक़

لَّا يَقُولُوا عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقَّ وَدَرَسُوا مَا فِيهِ ۗ وَالدَّارُ الْآخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ يَتَّقُونَ ۗ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٦٩﴾

(बात) के सिवा कुछ और न कहेंगे और वोह (सब कुछ) पढ़ चुके थे जो उस में (लिखा) था, और आख़िरत का घर उन लोगों के लिए बेहतर है जो परहेज़गारी इख़्तियार करते हैं, क्या तुम समझते नहीं हो?

وَالَّذِينَ يُمَسِّكُونَ بِالْكِتَابِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ ۗ إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ الْمُصْلِحِينَ ﴿١٧٠﴾

170- और जो लोग किताबे (इलाही) को मज़बूत पकड़े रेहते हैं और नमाज़ (पाबंदी से) क़ाइम रखते हैं (तो) बेशक हम इस्लाह़ करनेवालों का अज्र ज़ाए' नहीं करते।

وَإِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَأَنَّهُ ظُلَّةٌ وَظَنُّوا أَنَّهُ وَاقِعٌ بِهِمْ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُم بِقُوَّةٍ وَاذْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٧١﴾

171. और (वोह वक़्त याद कीजिए) जब हमने उनके ऊपर पहाड़ को (यूं) बुलंद कर दिया जैसा कि वोह (एक) साइबान हो और वोह (येह) गुमान करने लगे कि उन पर गिरनेवाला है। (सो हमने उनसे फ़रमाया, डरो नहीं बल्कि) तुम वोह (किताब) मज़बूती से (अ़मलन) थामे रखो जो हमने तुम्हें अ़ता की है और उन (अह़काम) को (ख़ूब) याद रखो जो उसमें (मज़कूर) हैं ताकि तुम (अ़ज़ाब से) बच जाओ।

وَإِذْ أَخَذَ رَبُّكَ مِن بَنِي آدَمَ مِن ظُهُورِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَأَشْهَدَهُمْ عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ أَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ۖ قَالُوا بَلَىٰ ۛ شَهِدْنَا ۛ أَن تَقُولُوا يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّا كُنَّا عَنْ هَٰذَا غَافِلِينَ ﴿١٧٢﴾

172. और (याद कीजिए) जब आपके रबने अवलादे आदम की पुश्तों से उनकी नस्ल निकाली और उनको उन्हीं की जानों पर गवाह बनाया (और फ़रमाया) क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूं? वोह (सब) बोल उठे क्यों नहीं? (तू ही हमारा रब है) हम गवाही देते हैं ताकि क़ियामत के दिन येह (न) कहो कि हम इस अ़हद से बे ख़बर थे।

أَوْ تَقُولُوا إِنَّمَا أَشْرَكَ آبَاؤُنَا مِن قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِّن بَعْدِهِمْ ۖ أَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ الْمُبْطِلُونَ ﴿١٧٣﴾

173. या (ऐसा न हो कि) तुम केहने लगो कि शिर्क तो महज़ हमारे आबाओ अज्दाद ने पहले किया था और हम तो उनके बाद (उनकी) अवलाद थे (गोया हम मुजरिम नहीं अस्ल मुजरिम वोह हैं) तो क्या तू हमें उस (गुनाह) की पादाश में हलाक फ़रमाएगा जो अह्ले बातिलने अंजाम दिया था।

وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿۱۷۴﴾

174. और इसी तरह् हम आयतों को तफ़्सील से बयान करते हैं ताकि वोह (ह़क़ की तरफ़) रुजूअ़ करें।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ الَّذِيْٓ اٰتَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا فَانْسَلَخَ مِنْهَا فَاَتْبَعَهُ الشَّيْطٰنُ فَكَانَ مِنَ الْغٰوِيْنَ ﴿۱۷۵﴾

175- और आप उन्हें उस शख़्स का क़िस्सा (भी) सुना दें जिसे हमने अपनी निशानियां दीं फिर वोह उन (के इल्मो नसीह़त) से निकल गया और शैतान उसके पीछे लग गया तो वोह गुमराहों में से हो गया।

وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنٰهُ بِهَا وَلٰكِنَّهٗٓ اَخْلَدَ اِلَى الْاَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ ۚ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ الْكَلْبِ ۚ اِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ اَوْ تَتْرُكْهُ يَلْهَثْ ؕ ذٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَاقْصُصِ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿۱۷۶﴾

176. और अगर हम चाहते तो उसे उन (आयतों के इल्मो अ़मल) के ज़रीए बुलंद फ़रमा देते लेकिन वोह (ख़ुद) ज़मीनी दुनिया की (पस्ती की) तरफ़ रागिब हो गया और अपनी ख़्वाहिश का पैरव बन गया, तो (अब) उसकी मिसाल उस कुत्ते की मिसाल जैसी है कि अगर तू उस पर सख़्ती करे तो वोह ज़बान निकाल दे या तू उसे छोड़ दे (तब भी) ज़बान निकाले रहे। येह ऐसे लोगों की मिसाल है जिन्होंने हमारी आयतों को झुटलाया, सो आप येह वाक़िआत (लोगों से) बयान करें ताकि वोह ग़ौरो फ़िक्र करें।

سَآءَ مَثَلَا ۨ الْقَوْمُ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاَنْفُسَهُمْ كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ﴿۱۷۷﴾

.177. मिसाल के लिहाज़ से वोह क़ौम बहुत ही बुरी है जिन्हों ने हमारी आयतों को झुटलाया और (दर ह़क़ीक़त) वोह अपनी ही जानों पर ज़ुल्म करते रहे।

مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِيْ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۱۷۸﴾

178. जिसे अल्लाह हिदायत फ़रमाता है पस वोही हिदायत पानेवाला है और जिसे वोह गुमराह ठेहराता है पस वोही लोग नुक़्सान उठाने वाले हैं।

وَلَقَدْ ذَرَاْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيْرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ۖ لَهُمْ قُلُوْبٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ بِهَا ۫ وَلَهُمْ اَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُوْنَ بِهَا ۫ وَ

179. और बेशक हमने जहन्नम के लिए जिन्नों और इन्सानों में से बहुत से (अफ़राद) को पैदा फ़रमाया वोह दिल (व दिमाग़) रखते हैं (मगर) वोह उनसे (ह़क़ को) समझ नहीं सक्ते और वोह आँखें रखते हैं (मगर) वोह

لَهُمْ اٰذَانٌ لَّا يَسْمَعُوْنَ بِهَا ؕ اُولٰٓئِكَ كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ﴿۱۷۹﴾

उनसे (हक़ को) देख नहीं सक्ते और वोह कान (भी) रखते हैं (मगर) वोह उनसे (हक़ को) सुन नहीं सक्ते, वोह लोग चौपायों की तरह हैं बल्कि (उनसे भी) ज़ियादा गुमराह, वोही लोग ही ग़ाफ़िल हैं।

وَلِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا ۪ وَذَرُوا الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اَسْمَآئِهٖ ؕ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۸۰﴾

180- और अल्लाह ही के लिए अच्छे अच्छे नाम हैं, सो उसे उन नामों से पुकारा करो और ऐसे लोगों को छोड़ दो जो उसके नामों में हक़ से इन्हिराफ़ करते हैं अ़नक़रीब उन्हें उन (आ'माले बद) की सज़ा दी जाएगी जिनका वोह इर्तिकाब करते हैं।

وَمِمَّنْ خَلَقْنَآ اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ﴿۱۸۱﴾

181. और जिन्हें हमने पैदा फ़रमाया है उनमें से एक जमाअ़त (ऐसे लोगों की भी) है जो हक़ बात की हिदायत करते हैं और उसीके साथ अ़द्ल पर मब्नी फ़ैसले करते हैं।

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۸۲﴾

182. और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुटलाया है हम अ़नक़रीब उन्हें आहिस्ता आहिस्ता हलाकत की तरफ़ ले जाएंगे ऐसे तरीक़े से कि उन्हें ख़बर भी नहीं होगी।

وَاُمْلِيْ لَهُمْ ؕ اِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ ﴿۱۸۳﴾

183. और मैं उन्हें मोहलत दे रहा हूं, बेशक मेरी गिरफ़्त बड़ी मज़्बूत है।

اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا ۫ مَا بِصَاحِبِهِمْ مِّنْ جِنَّةٍ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۱۸۴﴾

184. क्या उन्हों ने ग़ौर नहीं किया कि उन्हें (अपनी) सोहबत के शर्फ़ से नवाज़नेवाले (रसूल ﷺ) को जुनून से कोई इलाक़ा नहीं? वोह तो (ना फ़रमानों को) सिर्फ़ वाज़ेह डर सुनानेवाले हैं।

اَوَلَمْ يَنْظُرُوْا فِيْ مَلَكُوْتِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ ۙ وَّاَنْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ قَدِ

185. क्या उन्होंने आस्मानों और ज़मीनकी बादशाहत में और (अ़लावह उनके) जो कोई चीज़ भी अल्लाहने पैदा फ़रमाई है (उसमें) निगाह नहीं डाली और उसमें कि क्या

اقْتَرَبَ اَجَلُهُمْ ۚ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍۢ بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٨٥﴾

अ़जब है उनकी मुद्दत (मौत) क़रीब आ चुकी हो, फिर उसकेबाद वोह किस बात पर ईमान लाएंगे।

مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ ۭ وَ يَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١٨٦﴾

186. जिसे अल्लाह गुमराह ठेहरा दे तो उसकेलिए (कोई) राह दिखानेवाला नहीं, और वोह उन्हें उनकी सरकशी में छोड़े रखता है ताकि (मज़ीद) भटकते रहें।

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰهَا ۭ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ ۚ لَا يُجَلِّيْهَا لِوَقْتِهَآ اِلَّا هُوَ ۘ ثَقُلَتْ فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۭ لَا تَاْتِيْكُمْ اِلَّا بَغْتَةً ۭ يَسْـَٔلُوْنَكَ كَاَنَّكَ حَفِيٌّ عَنْهَا ۭ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٨٧﴾

187. येह (कुफ़्फ़ार) आपसे क़ियामत की निस्बत दरयाफ़्त करते हैं कि उसके क़ाइम होने का वक़्त कब है? फ़रमा दें कि उसका इ़ल्म तो सिर्फ़ मेरे रबके पास है, उसे अपने (मुक़र्ररह) वक़्त पर उस (अल्लाह) के सिवा कोई ज़ाहिर नहीं करेगा। वोह आस्मानों और ज़मीन (के रेहनेवालों) पर (शदाइदो मसाइब के ख़ौफ़ के बाइ़स) बोझल (लग रही) है। वोह तुम पर अचानक (ह़ादिसाती तौर पर) आ जाएगी, येह लोग आपसे (इस तरह़) सवाल करते हैं गोया आप उसकी खोजमें लगे हुए हैं, फ़रमा दें कि उसका इ़ल्म तो महज़ अल्लाह के पास है लेकिन अक्सर लोग (इस ह़क़ीक़त को) नहीं जानते।

قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِيْ نَفْعًا وَّ لَا ضَرًّا اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ۭ وَلَوْ كُنْتُ اَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ ۚۖ وَ مَا مَسَّنِيَ السُّوْٓءُ ۚ اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ وَّ بَشِيْرٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿١٨٨﴾

188. आप (उनसे येह भी) फ़रमा दीजिए कि मैं अपनी ज़ात के लिए किसी नफ़े' और नुक़्सान का खुद मालिक नहीं हूं मगर (येह कि) जिस क़दर अल्लाहने चाहा, और (उसी तरह़ बिग़ैर अ़ताए इलाही के) अगर मैं खु़द ग़ैबका इ़ल्म रखता तो मैं अज़ खु़द बहुत सी भलाई (और फ़ुतूह़ात) ह़ासिल कर लेता और मुझे (किसी मौक़े' पर) कोई सख़्ती (और तक्लीफ़ भी) न पहुंचती, मैं तो (अपने मन्सबे रिसालत के बाइ़स) फ़क़त डर सुनानेवाला और खु़शख़बरी देनेवाला हूं उन लोगों को जो ईमान रखते हैं।★

وقف منزل وقف لازم

معانقة

ع ٢٣ ١٣

[★डर और खु़शी की ख़बरें भी उमूरे ग़ैब में से हैं जिन पर अल्लाह तआ़ला अपने नबी को मुत्तला' फ़रमाता है क्यों कि मिनजानिब अल्लाह ऐसी इत्तिलाअ़ अ़लल ग़ैब के बिग़ैर न तो नुबुव्वतो रिसालत मु-त-हक़्क़िक़ होती है और न ही येह फ़रीज़ा अदा हो सक्ता है, इस लिए आप (ﷺ की शान में फ़रमाया गया है वमा हु-व अ़-लल ग़ैबि

هُوَ الَّذِیۡ خَلَقَكُمۡ مِّنۡ نَّفۡسٍ
وَّاحِدَةٍ وَّجَعَلَ مِنۡهَا زَوۡجَهَا
لِيَسۡكُنَ اِلَيۡهَا ۚ فَلَمَّا تَغَشّٰٮهَا
حَمَلَتۡ حَمۡلًا خَفِيۡفًا فَمَرَّتۡ بِهٖ ۚ
فَلَمَّاۤ اَثۡقَلَتۡ دَّعَوَا اللّٰهَ رَبَّهُمَا
لَئِنۡ اٰتَيۡتَنَا صَالِحًا لَّنَكُوۡنَنَّ مِنَ
الشّٰكِرِيۡنَ ﴿۱۸۹﴾

189. और वोही (अल्लाह) है जिसने तुमको एक जानसे पैदा फ़रमाया और उसी में से उसका जोड़ बनाया ताकि वोह उससे सुकून हासिल करे फिर जब मर्दने उस (औ़रत) को ढांप लिया तो वोह ख़फ़ीफ़ बोझके साथ हामिला हो गई फिर वोह उसके साथ चलती फिरती रही फिर जब वोह गरां बार हुई तो दोनों ने अपने रब, अल्लाह से दुआ़ की कि अगर तू हमें अच्छा तंदुरस्त बच्चा अ़ता फ़रमा दे तो हम ज़रूर शुक्र गुज़ारों में से होंगे।

فَلَمَّاۤ اٰتٰٮهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهٗ
شُرَكَآءَ فِيۡمَاۤ اٰتٰٮهُمَا ۚ فَتَعٰلَى اللّٰهُ
عَمَّا يُشۡرِكُوۡنَ ﴿۱۹۰﴾

190- फिर जब उसने उन्हें तंदुरस्त बच्चा अ़ता फ़रमा दिया तो दोनों उस (बच्चे) में जो उन्हें अ़ता फ़रमाया था उसके लिए शरीक ठेहराने लगे तो अल्लाह उनके शरीक बनाने से बुलंदो बरतर है।

اَيُشۡرِكُوۡنَ مَا لَا يَخۡلُقُ شَيۡـًٔا وَّهُمۡ
يُخۡلَقُوۡنَ ﴿۱۹۱﴾

191. क्या वोह ऐसों को शरीक बनाते हैं जो किसी चीज़ को पैदा नहीं कर सक्ते और वोह (खुद) पैदा किए गए हैं।

وَلَا يَسۡتَطِيۡعُوۡنَ لَهُمۡ نَصۡرًا وَّلَاۤ
اَنۡفُسَهُمۡ يَنۡصُرُوۡنَ ﴿۱۹۲﴾

192. और न वोह उन (मुशरिकों) की मदद करने पर कुदरत रखते हैं और न अपने आप ही की मदद कर सक्ते हैं।

وَاِنۡ تَدۡعُوۡهُمۡ اِلَى الۡهُدٰى لَا
يَتَّبِعُوۡكُمۡ ؕ سَوَآءٌ عَلَيۡكُمۡ اَدَعَوۡتُمُوۡهُمۡ

193. और अगर तुम उनको (राहे) हिदायत की तरफ़ बुलाओ तो तुम्हारी पैरवी न करेंगे। तुम्हारे हक़ में बराबर है ख़्वाह तुम उन्हें (हक़्क़ो हिदायत की तरफ़) बुलाओ या

बि-दनीन (अत्तक्वीर : 81:24) (और येह नबी ग़ैब बताने में हरगिज़ बख़ील नहीं) इस कुरआनी इर्शाद के मुताबिक़ ग़ैब बताने में बख़ील न होना तब ही मुमकिन हो सक्ता है अगर बारी तआ़ला ने कमाले फ़रावानी के साथ हुज़ूर नबिय्ये अकरम (ﷺ) को उ़लूमो अख़बारे ग़ैब पर मुत्तला फ़रमाया हो अगर सिरे से इल्मे ग़ैब अ़ता ही न किया गया हो तो हुज़ूर (ﷺ) का ग़ैब बताना कैसा और फिर उस पर बख़ील न होने का क्या मतलब? सो मालूम हुवा कि हुज़ूर ﷺ के मुत्तला अ़लल ग़ैब होने की क़त्अ़न नफ़ी नहीं बल्कि नफ़ा-व-नुक़्सान पर खुद क़ादिरो मालिक और बिज्ज़ात आ़लिमुल ग़ैब होने की नफ़ी है क्योंकि येह शान सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की है।]

أَمْ أَنْتُمْ صَامِتُونَ ﴿١٩٣﴾

तुम ख़ामोश रहो।

إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ عِبَادٌ أَمْثَالُكُمْ فَادْعُوهُمْ فَلْيَسْتَجِيبُوا لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٩٤﴾

194- बेशक जिन (बुतों) की तुम अल्लाह के सिवा इ़बादत करते हो वोह भी तुम्हारी ही तरह़ (अल्लाह के) मम्लूक हैं, फिर जब तुम उन्हें पुकारो तो उन्हें चाहिए कि तुम्हें जवाब दें अगर तुम (उन्हें मा'बूद बनाने में) सच्चे हो।

أَلَهُمْ أَرْجُلٌ يَمْشُونَ بِهَا أَمْ لَهُمْ أَيْدٍ يَبْطِشُونَ بِهَا أَمْ لَهُمْ أَعْيُنٌ يُبْصِرُونَ بِهَا أَمْ لَهُمْ آذَانٌ يَسْمَعُونَ بِهَا قُلِ ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ كِيدُونِ فَلَا تُنْظِرُونِ ﴿١٩٥﴾

195. क्या उनके पाँव हैं जिनसे वोह चल सकें, या उनके हाथ हैं जिनसे वोह पकड़ सकें, या उनकी आँखें हैं जिनसे वोह देख सकें या उनके कान हैं जिनसे वोह सुन सकें? आप फ़रमा दें (ऐ काफ़िरो!) तुम अपने (बातिल) शरीकों को (मेरी हलाकत के लिए) बुला लो फिर मुझ पर (अपना) दाव चलाओ और मुझे कोई मोहलत न दो।

إِنَّ وَلِيِّيَ اللَّهُ الَّذِي نَزَّلَ الْكِتَابَ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصَّالِحِينَ ﴿١٩٦﴾

196. बेशक मेरा मददगार अल्लाह है जिसने किताब नाज़िल फ़रमाई है और वोही सुलहा़अ की भी नुसरतो विलायत फ़रमाता है।

وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَكُمْ وَلَا أَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُونَ ﴿١٩٧﴾

197. और जिन (बुतों) को तुम उसके सिवा पूजते हो वोह तुम्हारी मदद करने पर कोई कुदरत नहीं रखते और न ही अपने आपकी मदद कर सक्ते हैं।

وَإِنْ تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ لَا يَسْمَعُوا وَتَرَاهُمْ يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ﴿١٩٨﴾

198. और अगर तुम उन्हें हिदायत की तरफ़ बुलाओ तो वोह सुन (भी) नहीं सकेंगे, और आप उन (बुतों) को देखते हैं (वोह इस तरह तराशे गए हैं) कि तुम्हारी तरफ़ देख रहे हैं हा़लांकि वोह (कुछ) नहीं देखते।

خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْجَاهِلِينَ ﴿١٩٩﴾

199. (ऐ ह़बीबे मुकर्रम!) आप दरगुजर फ़रमाना इख़्तियार करें, और भलाई का हुक्म देते रहें और जाहिलों से कनारा कशी इख़्तियार कर लें।

وَ اِمَّا يَنۡزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيۡطٰنِ نَزۡغٌ
فَاسۡتَعِذۡ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ سَمِيۡعٌ عَلِيۡمٌ ﴿۲۰۰﴾

200. और (ऐ इन्सान!) अगर शैतान की तरफ़ से कोई वस्वसा (उन उमूर के ख़िलाफ़) तुझे उभारे तो अल्लाह से पनाह तलब किया कर, बेशक वोह सुननेवाला, जाननेवाला है।

اِنَّ الَّذِيۡنَ اتَّقَوۡا اِذَا مَسَّهُمۡ
طٰٓئِفٌ مِّنَ الشَّيۡطٰنِ تَذَكَّرُوۡا فَاِذَا
هُمۡ مُّبۡصِرُوۡنَ ۚ ﴿۲۰۱﴾

201- बेशक जिन लोगोंने परहेज़गारी इख़्तियार की है, जब उन्हें शैतान की तरफ़से कोई ख़याल भी छू लेता है (तो वोह अल्लाह के अम्रो नह्य और शैतान के दुश्मनो अ़दावत को) याद करने लगते हैं सो उसी वक़्त उनकी (बसीरत की) आँखें खुल जाती हैं।

وَ اِخۡوَانُهُمۡ يَمُدُّوۡنَهُمۡ فِى الۡغَىِّ ثُمَّ
لَا يُقۡصِرُوۡنَ ﴿۲۰۲﴾

202. और (जो) उन शैतानों के भाई (हैं) वोह उन्हें (अपनी वस्वसा अंदाज़ी के ज़रीए) गुमराही में ही खींचे रखते हैं फिर उस (फितना परवरी और हलाकत अंगेज़ी) में कोई कोताही नहीं करते।

وَ اِذَا لَمۡ تَاۡتِهِمۡ بِاٰيَةٍ قَالُوۡا لَوۡ لَا
اجۡتَبَيۡتَهَا ؕ قُلۡ اِنَّمَاۤ اَتَّبِعُ مَا
يُوۡحٰۤى اِلَىَّ مِنۡ رَّبِّىۡ ۚ هٰذَا بَصَآئِرُ
مِنۡ رَّبِّكُمۡ وَهُدًى وَّرَحۡمَةٌ لِّقَوۡمٍ
يُّؤۡمِنُوۡنَ ﴿۲۰۳﴾

203. और जब आप उनकेपास कोई निशानी नहीं लाते (तो) वोह केहते हैं कि आप उसे अपनी तरफ़से वज़ा' करके क्यों नहीं लाए? फ़रमा दें : मैं तो महज़ उस (हुक्म) की पैरवी करता हूं जो मेरे रबकी जानिबसे मेरी तरफ़ वही किया जाता है येह (क़ुरआन) तुम्हारे रब की तरफ़ से दलाइले क़त्इय्या (का मज्मूआ) है और हिदायतो रह्मत है उन लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं।

وَ اِذَا قُرِئَ الۡقُرۡاٰنُ فَاسۡتَمِعُوۡا لَهٗ
وَاَنۡصِتُوۡا لَعَلَّكُمۡ تُرۡحَمُوۡنَ ﴿۲۰۴﴾

204.और जब क़ुरआन पढ़ा जाए तो उसे तवज्जोह से सुना करो और ख़ामोश रहा करो ताकि तुम पर रह्म किया जाए।

وَاذۡكُرۡ رَّبَّكَ فِىۡ نَفۡسِكَ تَضَرُّعًا وَّ
خِيۡفَةً وَّ دُوۡنَ الۡجَهۡرِ مِنَ الۡقَوۡلِ
بِالۡغُدُوِّ وَالۡاٰصَالِ وَ لَا تَكُنۡ مِّنَ
الۡغٰفِلِيۡنَ ﴿۲۰۵﴾

205. और अपने रबका अपने दिल में ज़िक्र किया करो आ़जिज़ी व ज़ारी और ख़ौफ़ो ख़स्तगी से और मियाना आवाज़ से पुकार कर भी, सुब्हो शाम (यादे हक़ जारी रखो) और ग़ाफ़िलों में से न हो जाओ।

إِنَّ الَّذِينَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِهِ وَيُسَبِّحُونَهُ وَلَهُ يَسْجُدُونَ ۩ ٢٠٦

206. बेशक जो (मलाइका मुक़र्रिबीन) तुम्हारे रबके हुज़ूर में हैं वोह (कभी भी) उसकी इबादत से सरकशी नहीं करते और (हमा वक़्त) उसकी तस्बीह़ करते रेहते हैं और उसकी बारगाह में सजदह रेज़ रेहते हैं।

आयातुहा 75 | 8 सूरतुल अन्फ़ालि म-दनिय्यतुन 88 | रुकूआतुहा 10

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाहके नाम से शुरू जो निहायत महेरबान हमेंशा रहम फ़रमाने वाला है

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْأَنْفَالِ ۖ قُلِ الْأَنْفَالُ لِلَّهِ وَالرَّسُولِ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَصْلِحُوا ذَاتَ بَيْنِكُمْ ۖ وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ١

1- (ऐ नबिय्ये मुकर्रम!) आपसे अम्वाले ग़नीमत की निस्बत सवाल करते हैं फ़रमा दीजिए : अम्वाले ग़नीमत के मालिक अल्लाह और रसूल (ﷺ)हैं। सो तुम अल्लाहसे डरो और अपने बाहमी मुआ़मलात को दुरुस्त रखा करो और अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की इताअ़त किया करो अगर तुम ईमानवाले हो।

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ وَإِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ آيَاتُهُ زَادَتْهُمْ إِيمَانًا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ٢

2. ईमानवाले (तो) सिर्फ़ वोही लोग हैं कि जब (उनके सामने) अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है (तो) उनके दिल (उसकी अ़ज़्मतो जलाल के तसव्वुर से) ख़ौफ़ज़दा हो जाते हैं और जब उन पर उसकी आयात तिलावत की जाती हैं तो वोह (कलामे मह़बूब की लिज़्ज़त अंगेज़ और ह़लावत आफ़रीं बातें) उनके ईमान में ज़ियादती कर देती हैं और वोह (हर ह़ाल में) अपने रब पर तवक्कुल (क़ाइम) रखते हैं (और किसी ग़ैर की तरफ़ नहीं तकते)।

الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ ٣

3. (येह) वोह लोग हैं जो नमाज़ क़ाइम रखते हैं और जो कुछ हमने उन्हें अ़ता किया है उसमें से (उसकी राह में) ख़र्च करते रेहते हैं।

أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا ۚ لَهُمْ

4. (हक़ीक़त में) येही लोग सच्चे मोमिन हैं, उनके लिए

دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ۚ﴿۴﴾

उनके रबकी बारगाह में (बड़े) दरजात हैं और मग़्फ़िरत और बुलंद दरजा रिज़्क़ है।

كَمَآ اَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْۢ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ ۠ وَ اِنَّ فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ لَكٰرِهُوْنَ ۙ﴿۵﴾

5- (ऐ हबीब!) जिस तरह आपका रब आपको आपके घरसे हक़ के (अज़ीम मक़्सद) के साथ (जिहाद के लिए) बाहर निकाल लाया हालांकि मुसलमानों का एक गिरोह (उस पर) नाखुश था।

يُجَادِلُوْنَكَ فِي الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَاَنَّمَا يُسَاقُوْنَ اِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ؕ﴿۶﴾

6. वोह आपसे अम्रे हक़ में (इस बिशारत के) ज़ाहिर हो जाने के बाद भी झगड़ने लगे (कि अल्लाह की नुसरत आएगी और लश्करे मुहम्मदी ﷺ को फ़त्ह नसीब होगी) गोया वोह मौतकी तरफ़ हांके जा रहे हैं और वोह (मौत को आँखों से) देख रहे हैं।

وَ اِذْ يَعِدُكُمُ اللّٰهُ اِحْدَى الطَّآئِفَتَيْنِ اَنَّهَا لَكُمْ وَ تَوَدُّوْنَ اَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ تَكُوْنُ لَكُمْ وَ يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَ يَقْطَعَ دَابِرَ الْكٰفِرِيْنَ ۙ﴿۷﴾

7.और (वोह वक़्त याद करो) जब अल्लाहने तुमसे (कुफ़्फ़ारे मक्का के) दो गिरोहों में से एक पर ग़ल्बा व फ़त्ह का वा'दा फ़रमाया था कि वोह यक़ीनन तुम्हारे लिए है और तुम येह चाहते थे कि गैर मुसल्लह़ (कमज़ोर गिरोह) तुम्हारे हाथ आ जाए और अल्लाह येह चाहता था कि अपने कलाम से हक़ को हक़ साबित फ़रमा दे और (दुश्मनों के बड़े मुसल्लह़ लश्कर पर मुसलमानों की फ़त्ह़याबी की सूरत में) काफ़िरों की (कुव्वत और शानो शौकत की) जड़ काट दे।

لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَ يُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ۚ﴿۸﴾

8. ताकि (मा'रेकए बद्र इस अज़ीम कामयाबी के ज़रीए) हक़ को हक़ साबित कर दे और बातिल को बातिल कर दे अगरचे मुजरिम लोग (मा'रेकए हक़्को बातिल की इस नतीजा खेज़ी को) नापसंद ही करते रहें।

اِذْ تَسْتَغِيْثُوْنَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ اَنِّيْ مُمِدُّكُمْ بِاَلْفٍ مِّنَ

9. (वोह वक़्त याद करो) जब तुम अपने रबसे (मदद के लिए) फ़रियाद कर रहे थे तो उसने तुम्हारी फ़रियाद कुबूल फ़रमा ली (और फ़रमाया) कि मैं एक हज़ार पै दर पै

الْمَلٰٓئِكَةِ مُرْدِفِيْنَ ﴿٩﴾

आनेवाले फरिश्तों के ज़रीए तुम्हारी मदद करने वाला हूं।

وَ مَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى وَ لِتَطْمَئِنَّ بِهٖ قُلُوْبُكُمْ ۚ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿١٠﴾

10- और उस (मदद की सूरत) को अल्लाहने महज़ बिशारत बनाया (था) और (येह) इस लिए कि उससे तुम्हारे दिल मुत्मइन हो जाएं और (हक़ीक़त में तो) अल्लाह की बारगाह से मदद के सिवा कोई (और) मदद नहीं, बेशक अल्लाह (ही) ग़ालिब हिक्मतवाला है।

اِذْ يُغَشِّيْكُمُ النُّعَاسَ اَمَنَةً مِّنْهُ وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً لِّيُطَهِّرَكُمْ بِهٖ وَيُذْهِبَ عَنْكُمْ رِجْزَ الشَّيْطٰنِ وَلِيَرْبِطَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْاَقْدَامَ ؕ ﴿١١﴾

11. जब उसने अपनी तरफ़ से (तुम्हें) राहतो सुकून (फ़राहम करने) के लिए तुम पर ग़ुनूदगी तारी फ़रमा दी और तुम पर आस्मान से पानी उतारा ताकि उसके ज़रीए तुम्हें (ज़ाहिरी व बातिनी) तहारत अ़ता फ़रमा दे और तुमसे शैतान (के बातिल वस्वसों) की नजासत को दूर कर दे और तुम्हारे दिलों को (क़ुव्वते यक़ीन) से मज़बूत कर दे और उससे तुम्हारे क़दम (ख़ूब) जमा दे।

اِذْ يُوْحِيْ رَبُّكَ اِلَى الْمَلٰٓئِكَةِ اَنِّيْ مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ سَاُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ فَاضْرِبُوْا فَوْقَ الْاَعْنَاقِ وَاضْرِبُوْا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ؕ ﴿١٢﴾

12. (ऐ ह़बीबे मुकर्रम! अपने ए'जाज़ का वोह मन्ज़र भी याद कीजिए) जब आपके रबने फ़रिश्तों को पैग़ाम भेजा कि (अस्ह़ाबे रसूल की मदद के लिए) मैं (भी) तुम्हारे साथ हूं, सो तुम (बिशारतो नुसरत के ज़रीए) ईमानवालों को साबित क़दम रखो मैं अभी काफ़िरों के दिलों में (लश्करे मुहम्मदी ﷺ का) रो'बो हैबत डाले देता हूं, सो तुम (काफ़िरों की) गरदनों के ऊपर से ज़र्ब लगाना और उनके एक एक जोड़ कर तोड़ देना।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ يُّشَاقِقِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿١٣﴾

13. येह इस लिए कि उन्हों ने अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की मुख़ालिफ़त की और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की मुख़ालिफ़त करे तो बेशक अल्लाह (उसे) सख़्त अ़ज़ाब देनेवाला है।

ذٰلِكُمْ فَذُوْقُوْهُ وَ اَنَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابَ النَّارِ ﴿١٤﴾

14. येह (अज़ाबे दुनिया) है सो तुम उसे (तो) चख लो और बेशक काफ़िरों के लिए (आख़िरत में) दोज़ख़ का (दूसरा) अज़ाब (भी) है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا زَحْفًا فَلَا تُوَلُّوْهُمُ الْاَدْبَارَ ۚ﴿١٥﴾

15- ऐ ईमान वालो! जब तुम (मैदाने जंग में) काफ़िरों से मुक़ाबला करो (ख़्वाह वोह) लश्करे गरां हो फिर भी उन्हें पीठ मत दिखाना।

وَ مَنْ يُّوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبُرَهٗۤ اِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ اَوْ مُتَحَيِّزًا اِلٰى فِئَةٍ فَقَدْ بَآءَ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٦﴾

16. और जो शख़्स उस दिन उनसे पीठ फेरेगा, सिवाए उसके जो जंग (ही) के लिए कोई दाव चल रहा हो या अपने (ही) किसी लश्कर से (तआवुन के लिए) मिलना चाहता हो, तो वाक़िअतन वोह अल्लाह के ग़ज़ब के साथ पलटा और उसका ठिकाना दोज़ख़ है, और वोह (बहुत ही) बुरा ठिकाना है।

فَلَمْ تَقْتُلُوْهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ قَتَلَهُمْ ۪ وَمَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى ۚ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِيْنَ مِنْهُ بَلَآءً حَسَنًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٧﴾

17. (ऐ सिपाहियाने लश्करे इस्लाम!) उन काफ़िरों को तुमने क़त्ल नहीं किया बल्कि अल्लाहने उन्हें क़त्ल कर दिया और (ऐ हबीबे मोहतशिम!) जब आपने (उन पर संगरेज़े) मारे थे (वोह) आपने नहीं मारे थे बल्कि (वोह तो) अल्लाहने मारे थे और येह (इस लिए) के वोह अहले ईमान को अपनी तरफ़ से अच्छे इन्आमात से नवाज़े, बेशक अल्लाह ख़ूब सुननेवाला जाननेवाला है।

ذٰلِكُمْ وَ اَنَّ اللّٰهَ مُوْهِنُ كَيْدِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٨﴾

18. येह (तो एक लुत्फ़ो एहसान) है और (दूसरा) येह कि अल्लाह काफ़िरों के मक्रो फ़रेब को कमज़ोर करनेवाला है।

اِنْ تَسْتَفْتِحُوْا فَقَدْ جَآءَكُمُ الْفَتْحُ ۚ وَاِنْ تَنْتَهُوْا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَ اِنْ تَعُوْدُوْا نَعُدْ ۚ وَ لَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْـًٔا وَّلَوْ كَثُرَتْ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ

19. (ऐ काफ़िरो!) अगर तुम ने फ़ैसला कुन फ़त्ह मांगी थी तो यक़ीनन तुम्हारे पास (हक़ की) फ़त्ह आ चुकी और अगर तुम (अब भी) बाज़ आ जाओ तो येह तुम्हारे हक़ में बेहतर है, और अगर तुम फिर येही (शरारत) करोगे (तो) हम (भी) फिर येही (सज़ा) देंगे और तुम्हारा लश्कर तुम्हें हरगिज़ किफ़ायत न कर सकेगा अगरचे कितना ही

مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٩﴾

ज़ियादा हो और बेशक अल्लाह मोमिनों के साथ है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَاَنْتُمْ تَسْمَعُوْنَ ﴿٢٠﴾

20- ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह की और उसके रसूल (ﷺ) की इताअ़त करो और उससे रूगर्दानी मत करो हा़लांकि तुम सुन रहे हो।

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ قَالُوْا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿٢١﴾

21. और उन लोगों की तरह़ मत हो जाना जिन्होंने (धोका दही के तौर पर) कहा : हमने सुन लिया, हा़लांकि वोह नहीं सुनते।

اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٢٢﴾

22. बेशक अल्लाह के नज़दीक जानदारों में सबसे बदतर वोही बेहरे, गूंगे हैं जो (न ह़क़ सुनते हैं न ह़क़ केहते हैं और ह़क़ को) समझते भी नहीं हैं।

وَلَوْ عَلِمَ اللّٰهُ فِيْهِمْ خَيْرًا لَّاَسْمَعَهُمْ ؕ وَلَوْ اَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٢٣﴾

23. और अगर अल्लाह उनमें कुछ भी ख़ैर (की तरफ़ रग़बत) जानता तो उन्हें (ज़रूर) सुना देता, और (उनकी हा़लत येह है कि) अगर वोह उन्हें (ह़क़) सुना दे तो वोह (फिर भी) रूगर्दानी कर लें और वोह (ह़क़ से) गुरेज़ ही करने वाले हैं।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ ۚ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ يَحُوْلُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهٖ وَاَنَّهٗۤ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٢٤﴾

24. ऐ ईमान वालो! जब (भी) रसूल (ﷺ) तुम्हें किसी काम के लिए बुलाएं जो तुम्हें (जाविदानी) ज़िन्दगी अ़ता करता है तो अल्लाह और रसूल (ﷺ) को फ़रमां बर्दारी के साथ जवाब देते हुए (फ़ौरन) हा़ज़िर हो जाया करो और जान लो कि अल्लाह आदमी और उसके क़ल्ब के दरमियान (शाने क़ुर्बते ख़ास्सा के साथ) हा़इल होता है और येह कि तुम सब (बिल आख़िर) उसी की तरफ़ जमा' किए जाओगे।

وَاتَّقُوْا فِتْنَةً لَّا تُصِيْبَنَّ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْكُمْ خَآصَّةً ۚ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢٥﴾

25. और उस फ़ितने से डरो जो ख़ास तौर पर सिर्फ़ उन लोगों ही को नहीं पहुंचेगा जो तुम में से ज़ालिम हैं (बल्कि इस ज़ुल्म का साथ देनेवाले और उस पर ख़ामोश रेहनेवाले भी उन्ही में शरीक कर लिए जाएंगे) और जान लो कि अल्लाह अ़ज़ाब में सख़्ती फ़रमानेवाला है।

وَاذْكُرُوٓا اِذْ اَنْتُمْ قَلِيْلٌ مُّسْتَضْعَفُوْنَ فِي الْاَرْضِ تَخَافُوْنَ اَنْ يَّتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ فَاٰوٰىكُمْ وَاَيَّدَكُمْ بِنَصْرِهٖ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٢٦﴾

26. और (वोह वक्त याद करो) जब तुम (मक्की ज़िन्दगी में अ़ददन) थोड़े (या'नी अक़ल्लियत में) थे मुल्क में दबे हुए थे (या'नी मआ़शी तौर पर कमज़ोर और इस्तेहूसाल ज़दह थे) तुम इस बात से (भी) ख़ौफ़ ज़दह रेहते थे कि (ताक़तवर) लोग तुम्हें उचक लेंगे (या'नी समाजी तौर पर भी तुम्हें आज़ादी और तहफ़्फ़ुज़ ह़ासिल न था) पस (हिजरते मदीना के बा'द) उस (अल्लाह)ने तुम्हें (आज़ाद और महफ़ूज़) ठिकाना अ़ता फ़रमा दिया और (इस्लामी हुकूमतो इक्तिदार की सूरत में) तुम्हें अपनी मददसे क़ुव्वत बख़्श दी और (मुवाख़ात, अम्वाले ग़नीमत और आज़ाद मईशत के ज़रीए) तुम्हें पाकीज़ा चीज़ों से रोज़ी अ़ता फ़रमा दी ताकि तुम अल्लाह की भरपूर बंदगी के ज़रीए उसका) शुक्र बजा ला सको।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَخُوْنُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ وَتَخُوْنُوٓا اَمٰنٰتِكُمْ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٧﴾

27- ऐ ईमानवालो! तुम अल्लाह और रसूल (ﷺ) से (उनके हुक़ूक़ की अदाएगी में) ख़यानत न किया करो और न आपस की अमानतों में ख़यानत किया करो हालांकि तुम (सब हक़ीक़त) जानते हो।

وَاعْلَمُوٓا اَنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٨﴾

28. और जान लो कि तुम्हारे अम्वाल और तुम्हारी अवलाद तो बस फ़ितना ही हैं और येह कि अल्लाह ही के पास अजरे अ़ज़ीम है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوٓا اِنْ تَتَّقُوا اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا وَّيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٩﴾

29. ऐ ईमान वालो! अगर तुम अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करोगे (तो) वोह तुम्हारे लिए हक़्क़ो बातिल में फ़र्क़ करनेवाली हुज्जत (व हिदायत) मुक़र्रर फ़रमा देगा और तुम्हारे (दामन) से तुम्हारे गुनाहों को मिटा देगा और तुम्हारी मगफ़िरत फ़रमा देगा, और अल्लाह बड़े फ़ज़्लवाला है।

وَاِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِيُثْبِتُوْكَ اَوْ يَقْتُلُوْكَ اَوْ يُخْرِجُوْكَ ۗ وَيَمْكُرُوْنَ وَيَمْكُرُ اللّٰهُ ۗ وَاللّٰهُ خَيْرُ

30. और जब काफ़िर लोग आपके ख़िलाफ़ खुफ़्या साज़िशें कर रहे थे कि वोह आप को क़ैद कर दें या आपको क़त्ल कर डालें या आपको (वतन से) निकाल दें, और (इधर) वोह साज़िशी मन्सूबे बना रहे थे और

الْمَاكِرِينَ ﴿٣٠﴾

(उधर) अल्लाह (उनके मक्र के रद के लिए अपनी) तदबीर फ़रमा रहा था, और अल्लाह सबसे बेहतर मुख़्फ़ी तदबीर फ़रमानेवाला है।

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا قَالُوا قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَاءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هَٰذَا ۙ إِنْ هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٣١﴾

31- और जब उन पर हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं (तो) वोह केहते है बेशक हमने सुन लिया अगर हम चाहें तो हम भी उस (कलाम) के मिस्ल केह सक्ते हैं येह तो अगलों की (ख़्याली) दास्तानों के सिवा (कुछ भी) नहीं है।

وَإِذْ قَالُوا اللَّهُمَّ إِنْ كَانَ هَٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَأَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِنَ السَّمَاءِ أَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٣٢﴾

32. और जब उन्होंने (ता'नन) कहा : ऐ अल्लाह! अगर येही (क़ुर्आन) तेरी तरफ़ से ह़क़ है तो (इसकी ना फ़रमानी के बाइस) हम पर आस्मान से पथ्थर बरसा दे या हम पर कोई दर्दनाक अ़ज़ाब भेज दे।

وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَأَنْتَ فِيهِمْ ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُونَ ﴿٣٣﴾

33. और (दर ह़क़ीक़त बात येह है कि) अल्लाह को येह ज़ेब नहीं देता कि उन पर अ़ज़ाब फ़रमाए दर आं ह़ाली कि (ऐ ह़बीबे मुकर्रम!) आप भी उनमें (मौजूद) हों, और न ही अल्लाह ऐसी ह़ालत में उन पर अ़ज़ाब फ़रमानेवाला है कि वोह (उससे) मग़फ़िरत तलब कर रहे हों।

وَمَا لَهُمْ أَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللَّهُ وَهُمْ يَصُدُّونَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوا أَوْلِيَاءَهُ ۚ إِنْ أَوْلِيَاؤُهُ إِلَّا الْمُتَّقُونَ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٤﴾

34. (आपकी हिजरते मदीना के बाद मक्का के) उन (काफ़िरों) के लिए और क्या वजह हो सक्ती है कि अल्लाह उन्हें (अब) अ़ज़ाब न दे ह़ालांकि वोह (लोगों को) मस्जिदे ह़राम(या'नी का'बतुल्लाह) से रोकते हैं और वोह उसके वली (या मू-त-वल्ली) होने के अहल भी नहीं, उसके अवलिया (या'नी दोस्त) तो सिर्फ़ परहेज़गार लोग होते हैं मगर उनमें से अक्सर (इस ह़क़ीक़त को) जानते ही नहीं।

وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ إِلَّا مُكَاءً وَتَصْدِيَةً ۚ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٣٥﴾

35. और बैतुल्लाह (या'नी ख़ानए का'बा) के पास उनकी (नाम निहाद) नमाज़ सीटियां और तालियां बजाने के सिवा कुछ भी नहीं है, सो तुम अ़ज़ाब (का मज़ा) चखो इस वजह से कि तुम कुफ़्र किया करते थे।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ ۚ فَسَيُنفِقُونَهَا ثُمَّ تَكُونُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُونَ ۗ وَالَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ جَهَنَّمَ يُحْشَرُونَ ﴿٣٦﴾

36. बेशक काफ़िर लोग अपना मालो दौलत (इस लिए) ख़र्च करते हैं कि (उसके असर से) वोह (लोगों को) अल्लाह (के दीन) की राहसे रोकें, सो अभी वोह उसे ख़र्च करते रहेंगे फिर (येह ख़र्च करना) उनके ह़क़में पछतावा (या'नी ह़सरतो नदामत) बन जाएगा फिर वोह (गिरफ़्ते इलाही के ज़रीए) मग़लूब कर दिए जाएंगे, और जिन लोगोंने कुफ़्र अपना लिया है वोह दोज़ख़ की तरफ़ हांके जाएंगे।

لِيَمِيزَ اللَّهُ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيثَ بَعْضَهُ عَلَىٰ بَعْضٍ فَيَرْكُمَهُ جَمِيعًا فَيَجْعَلَهُ فِي جَهَنَّمَ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿٣٧﴾

37- ताकि अल्लाह (तआ़ला) नापाक को पाकीज़ा से जुदा फ़रमा दे और नापाक (या'नी नजासत भरे किरदारों) को एक दूसरे के ऊपर तले रख दे फिर सबको इकठ्ठा ढेर बना देगा फिर उस (ढेर) को दोज़ख़ में डाल देगा, येही लोग ख़सारह उठानेवाले हैं।

قُل لِّلَّذِينَ كَفَرُوا إِن يَنتَهُوا يُغْفَرْ لَهُم مَّا قَدْ سَلَفَ وَإِن يَعُودُوا فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْأَوَّلِينَ ﴿٣٨﴾

38. आप कुफ़्र करनेवालों से फ़रमा दें : अगर वोह (अपने काफ़िराना अफ़आ़ल से) बाज़ आ जाएं तो उनके वोह (गुनाह) बख़्श दिए जाएंगे जो पहले गुज़र चुके हैं, और अगर वोह फिर वोही कुछ करेंगे तो यक़ीनन अगलों (के अ़ज़ाब दर अ़ज़ाब) का तरीक़ा गुज़र चुका है (उनके साथ भी वोही कुछ होगा)।

وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّىٰ لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ الدِّينُ كُلُّهُ لِلَّهِ ۚ فَإِنِ انتَهَوْا فَإِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٣٩﴾

39. और (अह्ले ह़क़!) तुम उन (कुफ़्रो तागूत के सरग़नों) के साथ (इन्क़िलाबी) जंग करते रहो, यहां तक कि (दीन दुश्मनी का) कोई फ़ितना (बाक़ी) न रेह जाए और सब दीन (या'नी निज़ामे बंदगी व ज़िन्दगी) अल्लाह ही का हो जाए, फिर अगर वोह बाज़ आ जाएं तो बेशक अल्लाह इस (अ़मल) को जो वोह अंजाम दे रहे हैं, ख़ूब देख रहा है।

وَإِن تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَوْلَاكُمْ ۚ نِعْمَ الْمَوْلَىٰ وَنِعْمَ النَّصِيرُ ﴿٤٠﴾

40. और अगर उन्होंने (इताअ़ते ह़क़ से) रूगर्दानी की तो जान लो कि बेशक अल्लाह ही तुम्हारा मौला (या'नी ह़िमायती) है, (वोही) बेहतर ह़िमायती और बेहतर मददगार है।

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ
فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِي
الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ
السَّبِيْلِ ۙ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ وَ
مَآ اَنْزَلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا يَوْمَ الْفُرْقَانِ
يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۴۱﴾

41. और जान लो कि जो कुछ माले ग़नीमत तुमने पाया हो तो उसका पाँचवां हिस्सा अल्लाहके लिए और रसूल (ﷺ) के लिए और (रसूल ﷺ के) क़राबत दारों के लिए (है) और यतीमों और मोह्ताजों और मुसाफ़िरों के लिए है। अगर तुम अल्लाह पर और उस (वह़ी) पर ईमान लाए हो जो हमने अपने (बर गुज़ीदह) बंदे पर (ह़क़ो बातिल के दरमियान) फ़ैसले के दिन नाज़िल फ़रमाई वोह दिन (जब मैदाने बद्र में मोमिनों और काफ़िरों के) दोनों लश्कर बाहम मुक़ाबिल हुए थे, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।

اِذْ اَنْتُمْ بِالْعُدْوَةِ الدُّنْيَا وَ هُمْ
بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوٰى وَالرَّكْبُ اَسْفَلَ
مِنْكُمْ ؕ وَلَوْ تَوَاعَدْتُّمْ لَاخْتَلَفْتُمْ
فِي الْمِيْعٰدِ ۙ وَلٰكِنْ لِّيَقْضِيَ اللّٰهُ
اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ۬ۙ لِّيَهْلِكَ مَنْ
هَلَكَ عَنْۢ بَيِّنَةٍ وَّيَحْيٰى مَنْ حَيَّ
عَنْۢ بَيِّنَةٍ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَسَمِيْعٌ
عَلِيْمٌ ۙ﴿۴۲﴾

42. जब तुम (मदीना की जानिब) वादी के क़रीबी किनारे पर थे और वोह (कुफ़्फ़ार दूसरी जानिब) दूरवाले किनारे पर थे और (तिजारती) क़ाफ़ला तुमसे नीचे था, और अगर तुम आपसमें (जंग के लिए) कोई वा'दा कर लेते तो ज़रूर (अपने) वा'दे से मुख़्तलिफ़ (वक़्तों में) पहुंचते लेकिन (अल्लाहने तुम्हें बिग़ैर वा'दा एक ही वक़्त पर जमा' फ़रमा दिया) येह इस लिए (हुआ) कि अल्लाह उस काम को पूरा फ़रमा दे जो हो कर रेहनेवाला था ताकि जिस शख़्स को मरना है वोह हुज्जत (तमाम होने) से मरे और जिसे जीना है वोह हुज्जत (तमाम होने) से जिए। (या'नी हर किसी के सामने इस्लाम और रसूले बर ह़क़ (ﷺ) की सदाक़त पर हुज्जत क़ाइम हो जाए), और बेशक अल्लाह ख़ूब सुननेवाला जाननेवाला है।

اِذْ يُرِيْكَهُمُ اللّٰهُ فِيْ مَنَامِكَ قَلِيْلًا ؕ
وَلَوْ اَرٰىكَهُمْ كَثِيْرًا لَّفَشِلْتُمْ
وَلَتَنَازَعْتُمْ فِي الْاَمْرِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ
سَلَّمَ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ

43. (वोह वाक़िआ़ याद दिलाइए) जब आपको अल्लाहने आपके ख़्वाब में उन काफ़िरों (के लश्कर) को थोड़ा) कर के दिखाया था और अगर (अल्लाह) आपको वोह ज़ियादा कर के दिखाता तो (ऐ मुसलमानो!) तुम हिम्मत हार जाते और तुम यक़ीनन उस (जंग के) मुआ़मले में बाहम झगड़ने लगते लेकिन अल्लाहने (मुसलमानों को

الصُّدُورِ ﴿٤٣﴾

बुज़दिली और बाहमी निज़ाअ़ से) बचा लिया। बेशक वोह सीनों की (छुपी) बातों को खूब जाननेवाला है।

وَإِذْ يُرِيكُمُوهُمْ إِذِ الْتَقَيْتُمْ فِي أَعْيُنِكُمْ قَلِيلًا وَيُقَلِّلُكُمْ فِي أَعْيُنِهِمْ لِيَقْضِيَ اللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا ۗ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿٤٤﴾

44. और (वोह मंज़र भी उन्हें याद दिलाइये) जब उसने उन काफ़िरों (की फ़ौज) को बाहम मुक़ाबले के वक़्त (भी महज़) तुम्हारी आँखों में तुम्हें थोड़ा कर के दिखाया और तुम्हें उनकी आँखों में थोड़ा दिखलाया (ताकि दोनों लश्कर लड़ाई में मुस्तइद रहें) येह इस लिए कि अल्लाह उस (भरपूर जंगके नतीजे में कुफ़्फ़ार की शिकस्ते फ़ाश के) अम्र को पूरा कर दे जो (इन्दल्लाह) मुक़र्रर हो चुका था, और (बिल आख़िर) अल्लाह ही की तरफ़ तमाम काम लौटाए जाते हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا لَقِيتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوا وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٤٥﴾

45. ऐ ईमानवालो! जब (दुश्मन की) किसी फ़ौज से तुम्हारा मुक़ाबला हो तो साबित क़दम रहा करो और अल्लाह को कसरत से याद किया करो ताकि तुम फ़लाह पा जाओ।

وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَنَازَعُوا فَتَفْشَلُوا وَتَذْهَبَ رِيحُكُمْ ۖ وَاصْبِرُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ﴿٤٦﴾

46. और अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की इताअ़त करो और आपस में झगड़ा मत करो वरना (मुतफ़र्रिक़ और कमज़ोर हो कर) बुज़दिल हो जाओगे और (दुश्मनों के सामने) तुम्हारी हवा (या'नी क़ुव्वत) उखड़ जाएगी और सब्र करो, बेशक अल्लाह सब्र करनेवालों के साथ है।

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ خَرَجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ بَطَرًا وَرِئَاءَ النَّاسِ وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ﴿٤٧﴾

47. और ऐसे लोगों की तरह न हो जाओ जो अपने घरों से इतराते हुए और लोगों को दिखलाते हुए निकले थे और (जो लोगों को) अल्लाह की राह से रोकते थे, और अल्लाह उन कामों को जो वोह कर रहे हैं (अपने इल्मो क़ुदरत के साथ) इहाता किए हुए है।

وَإِذْ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمُ الْيَوْمَ مِنَ

48. और जब शैतानने उन (काफ़िरों) के लिए उनके आ'माल खुशनुमा कर दिखाए और उसने (उनसे) कहा : आज लोगों में से कोई तुम पर ग़ालिब नहीं (हो सकता)

النَّاسِ وَإِنِّي جَارٌ لَّكُمْ ۖ فَلَمَّا
تَرَاءَتِ الْفِئَتَانِ نَكَصَ عَلَىٰ
عَقِبَيْهِ وَقَالَ إِنِّي بَرِيءٌ مِّنكُمْ
إِنِّي أَرَىٰ مَا لَا تَرَوْنَ إِنِّي أَخَافُ
اللَّهَ ۚ وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٤٨﴾
إِذْ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي
قُلُوبِهِم مَّرَضٌ غَرَّ هَٰؤُلَاءِ دِينُهُمْ ۗ
وَمَن يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ
عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٤٩﴾

وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ يَتَوَفَّى الَّذِينَ كَفَرُوا ۙ
الْمَلَائِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَ
أَدْبَارَهُمْ ۖ وَذُوقُوا عَذَابَ
الْحَرِيقِ ﴿٥٠﴾
ذَٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيكُمْ وَأَنَّ
اللَّهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ﴿٥١﴾

كَدَأْبِ آلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِينَ
مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ
فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ ۗ إِنَّ
اللَّهَ قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٥٢﴾
ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا

और बेशक मैं तुम्हें पनाह देनेवाला (मददगार) हूं। फिर जब दोनों फ़ौजोंने एक दूसरे को (मुक़ाबिल) देख लिया तो वोह उलटे पाँव भाग गया और केहने लगा : बेशक मैं तुमसे बेज़ार हूं। यक़ीनन मैं वोह (कुछ) देख रहा हूं जो तुम नहीं देखते बेशक मैं अल्लाह से डरता हूं, और अल्लाह सख़्त अज़ाब देनेवाला है।

49. और (वोह वक़्त भी याद करो) जब मुनाफ़िक़ीन और वोह लोग जिनके दिल में (कुफ़्र की) बीमारी है केह रहे थे कि उन (मुसलमानों) को उनके दीनने बड़ा मग़रूर कर रखा है, (जबकि हक़ीक़ते हाल येह है कि) जो कोई अल्लाह पर तवक्कुल करता है तो (अल्लाह उसके जुमला उमूर का कफ़ील हो जाता है) बेशक अल्लाह बहुत ग़ालिब बड़ी हिक्मतवाला है।

50. और अगर आप (वोह मंज़र) देखें (तो बड़ा तअज्जुब करें) जब फ़रिश्ते काफ़िरों की जान क़ब्ज़ करते हैं वोह उनके चेहरों और उनकी पुश्तों पर (हथोड़े) मारते जाते हैं और (केहते हैं कि दोज़ख़ की) आग का अज़ाब चख लो।

51. येह (अज़ाब) उन (आ'माले बद) के बदले में है जो तुम्हारे हाथोंने आगे भेजे और अल्लाह हरगिज़ बंदों पर ज़ुल्म फ़रमानेवाला नहीं।

52. (उन काफ़िरों का हाल भी) क़ौमे फ़िरऔन और उनसे पेहले के लोगों के हाल के मानिन्द है। उन्होंने (भी) अल्लाहकी आयात का इन्कार किया था, सो अल्लाहने उन्हें उनके गुनाहों के बाइस (अज़ाब में) पकड़ लिया। बेशक अल्लाह क़ुव्वतवाला सख़्त अज़ाब देनेवाला है।

53. येह (अज़ाब) इस वजह से है कि अल्लाह किसी ने'मत को हरगिज़ बदलनेवाला नहीं जो उसने किसी क़ौम

نِّعْمَةً اَنْعَمَهَا عَلٰى قَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ۙ وَ اَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۵۳﴾

पर अरज़ानी फ़रमाई हो यहां तक कि वोह लोग अज़ खुद अपनी ह़ालते ने'मत को बदल दें (या'नी कुफ़राने ने'मत और मा'सियतो नाफ़रमानी के मुर्तकिब हों और फिर उनमें एह्सासे ज़ियां भी बाक़ी न रहे तब वोह क़ौम हलाकतो बरबादी की ज़द्में आ जाती है) बेशक अल्लाह ख़ूब सुननेवाला जाननेवाला है।

كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَاَغْرَقْنَاۤ اٰلَ فِرْعَوْنَ ۚ وَكُلٌّ كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿۵۴﴾

54. येह (अज़ाब भी) क़ौमे फ़िरऔन और उनसे पहले के लोगों के दस्तूर के मानिन्द है, उन्होंने (भी) अपने रबकी निशानियों को झुटलाया था सो हमने उनके गुनाहों के बाइस उन्हें हलाक कर डाला और हमने फ़िरऔनवालों को (दरियामें) ग़र्क़ कर दिया और वोह सब के सब ज़ालिम थे।

اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۵۵﴾

55. बेशक अल्लाहके नज़्दीक सब जानवरों से (भी) बदतर वोह लोग हैं जिन्होंने कुफ़्र किया फिर वोह ईमान नहीं लाते।

اَلَّذِيْنَ عٰهَدْتَّ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَهُمْ فِيْ كُلِّ مَرَّةٍ وَّ هُمْ لَا يَتَّقُوْنَ ﴿۵۶﴾

56.येह (वोह) लोग हैं जिनसे आपने (बारहा) अ़हद लिया फिर वोह हर बार अपना अ़हद तोड़ डालते हैं और वोह (अल्लाहसे) नहीं डरते।

فَاِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ فِي الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِمْ مَّنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿۵۷﴾

57. सो अगर आप उन्हें (मेदाने) जंग में पा लें तो उनके इब्रतनाक क़त्ल के ज़रीए उनके पिछलों को (भी) भगा दें ताकि उन्हें नसीहत हासिल हो।

وَ اِمَّا تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ خِيَانَةً فَانْۢبِذْ اِلَيْهِمْ عَلٰى سَوَآءٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْخَآئِنِيْنَ ﴿۵۸﴾

58. और अगर आपको किसी क़ौम से ख़यानत का अंदेशा हो तो उनका अ़हद उनकी तरफ़ बराबरी की बुन्याद पर फेंक दें। बेशक अल्लाह दग़ाबाजों को पसंद नहीं करता।

وَ لَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

59. और काफ़िर लोग इस गुमान में हरगिज़ न रहें कि वोह (बच कर) निकल गए। बेशक वोह (हमें) आ़जिज़

سَبَقُوْا ۭ اِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُوْنَ ﴿٥٩﴾

नहीं कर सक्ते।

وَ اَعِدُّوْا لَهُمْ مَّا اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ قُوَّةٍ وَّ مِنْ رِّبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُوْنَ بِهٖ عَدُوَّ اللّٰهِ وَ عَدُوَّكُمْ وَ اٰخَرِيْنَ مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ لَا تَعْلَمُوْنَهُمْ ۚ اَللّٰهُ يَعْلَمُهُمْ ۭ وَ مَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ يُوَفَّ اِلَيْكُمْ وَ اَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ﴿٦٠﴾

60. और (ऐ मुसलमानो!) उनके (मुक़ाबले के) लिए तुमसे जिस क़दर हो सके (हथियारों और आलाते जंग की) कुव्वत मुहय्या कर रखो और बंधे हुए घोड़ों की (खेप भी) इस (दिफ़ाई तैयारी) से तुम अल्लाहके दुश्मन और अपने दुश्मन को डराते रहो और उनके सिवा दूसरों को भी जिन (की छुपी दुश्मनी) को तुम नहीं जानते, अल्लाह उन्हें जानता है, और तुम जो कुछ (भी) अल्लाह की राह में ख़र्च करोगे तुम्हें उसका पूरा पूरा बदला दिया जाएगा और तुमसे ना इन्साफ़ी न की जाएगी।

وَ اِنْ جَنَحُوْا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا وَ تَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦١﴾

61. और अगर वोह (कुफ़्फ़ार) सुलह्के लिए झुकें तो आप भी उसकी तरफ़ माइल हो जाएं और अल्लाह पर भरोसा रखें। बेशक वोही खूब सुननेवाला जाननेवाला है।

وَ اِنْ يُّرِيْدُوْٓا اَنْ يَّخْدَعُوْكَ فَاِنَّ حَسْبَكَ اللّٰهُ ۭ هُوَ الَّذِيْٓ اَيَّدَكَ بِنَصْرِهٖ وَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٢﴾

62.और अगर वोह चाहें कि आपको धोका दें तो बेशक आपके लिए अल्लाह काफ़ी है, वोही है जिसने आपको अपनी मदद केज़रीए और अहले ईमान के ज़रीए ताक़त बख़्शी।

وَ اَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ ۭ لَوْ اَنْفَقْتَ مَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا مَّآ اَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ وَ لٰكِنَّ اللّٰهَ اَلَّفَ بَيْنَهُمْ ۭ اِنَّهٗ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٦٣﴾

63. और (उसीने) उन (मुसलमानों) के दिलों में बाहमी उल्फ़त पैदा फ़रमा दी। अगर आप वोह सब कुछ जो ज़मीनमें है ख़र्च कर डालते तो (उन तमाम माद्दी वसाइल से) भी आप उनके दिलोंमें (येह) उल्फ़त पैदा न कर सक्ते लेकिन अल्लाहने उनके दरमियान (एक रूहानी रिश्ते से) महब्बत पैदा फ़रमा दी। बेशक वोह बड़े ग़ल्बेवाला हिक्मतवाला है।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللّٰهُ وَ مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٤﴾ ع

64. ऐ नबी (ए मुअ़ज़्ज़म!) आपकेलिए अल्लाह काफ़ी है और वोह मुसलमान जिन्हों ने आपकी पैरवी इख़्तियार कर ली।

يَاَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلَى الْقِتَالِ ۭ اِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ عِشْرُوْنَ صٰبِرُوْنَ يَغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ يَّغْلِبُوْٓا اَلْفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿٦٥﴾

65. ऐ नबी(ए मुकर्रम!) आप ईमानवालों को जिहाद की तरग़ीब दें (या'नी ह़क़ की ख़ातिर लड़ने पर आमादह करें), अगर तुम में से (जंग में) बीस (20) साबित क़दम रेहनेवाले हों तो वोह दो सौ (200) (कुफ़्फ़ार) पर ग़ालिब आएंगे और अगर तुम में से (एक) सौ (साबित क़दम) होंगे तो काफ़िरों में से (एक) हज़ार पर ग़ालिब आएंगे इस वजह से कि वोह (आख़िरत और उसकेअज्रे अज़ीम की) समझ नहीं रखते (सो वोह इस क़दर जज़्बा व शौक़ से नहीं लड़ सक्ते जिस क़दर वोह मोमिन जो अपनी जानों का जन्नत और अल्लाह की रज़ा के इवज़ सौदा कर चुकेहैं)।

اَلْئٰنَ خَفَّفَ اللّٰهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ اَنَّ فِيْكُمْ ضَعْفًا ۭ فَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ صَابِرَةٌ يَّغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ اَلْفٌ يَّغْلِبُوْٓا اَلْفَيْنِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿٦٦﴾

66. अब अल्लाहने तुमसे (अपने हुक्म का बोझ) हल्का कर दिया उसे मा'लूम है कि तुम में (किसी क़दर) कमज़ोरी है सो (अब तख़्फ़ीफ़ के बाद हुक्म येह है कि) अगर तुम में से (एक) सौ (आदमी) साबित क़दम रेहने वाले हों (तो) वोह दो सौ (कुफ़्फ़ार) पर ग़ालिब आएंगे और अगर तुम में से (एक) हज़ार हों तो वोह अल्लाह के हुक्म से दो हज़ार (काफ़िरों) पर ग़ालिब आएंगे, और अल्लाह सब्र करनेवालों के साथ है। (येह मोमिनों के लिए हदफ़ है कि मैदाने जिहाद में उनके जज़्बए ईमानी का असर कम से कम येह होना चाहिए)।

مَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗٓ اَسْرٰى حَتّٰى يُثْخِنَ فِي الْاَرْضِ ۭ تُرِيْدُوْنَ عَرَضَ الدُّنْيَا ڰ وَاللّٰهُ يُرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ۭ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٦٧﴾

67. किसी नबी को येह सज़ावार नहीं कि उसके लिए (काफ़िर) क़ैदी हों जब तक कि वोह ज़मीनमें उन (ह़रबी काफ़िरों) का अच्छी तरह ख़ून न बहा ले। तुम लोग दुनिया का मालो अस्बाब चाहते हो और अल्लाह आख़िरत की (भलाई) चाहता है, और अल्लाह खूब ग़ालिब ह़िक्मतवाला है।

لَوْلَا كِتٰبٌ مِّنَ اللّٰهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيْمَآ اَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٦٨﴾

68. अगर अल्लाहकी तरफ़से पहले ही (मुआ़फ़ी का हुक्म) लिखा हुआ न होता तो यक़ीनन तुम उस (माले फ़िदया के बारे) में जो तुम ने (बद्र के क़ैदियों से) ह़ासिल किया था बड़ा अ़ज़ाब पहुंचता।

فَكُلُوْا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٦٩﴾

69. सो तुम उसमें से खाओ जो ह़लाल, पाकीज़ा माले ग़नीमत तुमने पाया है और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला महरबान है।

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّمَنْ فِيْۤ اَيْدِيْكُمْ مِّنَ الْاَسْرٰۤى ۙ اِنْ يَّعْلَمِ اللّٰهُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ خَيْرًا يُّؤْتِكُمْ خَيْرًا مِّمَّاۤ اُخِذَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٧٠﴾

70. ऐ नबी! आप उनसे जो आपके हाथों में क़ैदी हैं फ़रमा दीजिए : अगर अल्लाहने तुम्हारे दिलों में भलाई जान ली तो तुम्हें इस (माल) से बेहतर अ़ता फ़रमाएगा जो (फ़िदये में) तुमसे लिया जा चुका है और तुम्हें बख़्श देगा, और अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

وَ اِنْ يُّرِيْدُوْا خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ فَاَمْكَنَ مِنْهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٧١﴾

71.और (ऐ मह़बूब!) अगर वोह आपसे ख़यानत करना चाहें तो यक़ीनन वोह इससे क़ब्ल (भी) अल्लाह से ख़यानत कर चुके हैं सो (इसी वजह से) उसने उनमें से बा'ज़ को (आपकी) क़ुदरत में दे दिया, और अल्लाह ख़ूब जाननेवाला ह़िक्मतवाला है।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَ جٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّنَصَرُوْۤا اُولٰٓئِكَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يُهَاجِرُوْا مَا لَكُمْ مِّنْ وَّلَايَتِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا ۚ وَاِنِ اسْتَنْصَرُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ اِلَّا عَلٰى قَوْمٍۭ بَيْنَكُمْ وَ بَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٧٢﴾

72. बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने (अल्लाहके लिए) वतन छोड़ दिए और अपने मालों और अपनी जानों से अल्लाह की राहमें जिहाद किया और जिन लोगोंने (मुहाजिरीन को) जगह दी और (उनकी) मदद की वोही लोग एक दूसरे के वारिस हैं, और जो लोग ईमान लाए (मगर) उन्होंने (अल्लाहके लिए) घरबार न छोड़े तो तुम्हें उनकी दोस्ती से कोई सरोकार नहीं यहां तककि वोह हिजरत करें और अगर वोह दीन (के मुआ़मलात) में तुमसे मदद चाहें तो तुम पर (उनकी) मदद करना वाजिब है मगर उस क़ौम के मुक़ाबले में (मदद न करना) कि तुम्हारे और उनके दरमियान (सुल्ह़ो अम्न का) मुआ़हिदा हो, और अल्लाह उन कामों को जो तुम कर रहे हो ख़ूब देखनेवाला है।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ
بَعْضٍ ۚ إِلَّا تَفْعَلُوهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِي
الْأَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيرٌ ﴿٧٣﴾
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا
فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوَوْا
وَنَصَرُوا أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ
حَقًّا ۚ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿٧٤﴾
وَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْ بَعْدُ وَهَاجَرُوا
وَجَاهَدُوا مَعَكُمْ فَأُولَٰئِكَ مِنْكُمْ ۚ
وَأُولُو الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ
بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ
بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٧٥﴾ ع

73. और जो लोग काफ़िर हैं वोह एक दूसरे के मददगार हैं, (ऐ मुसमानो!) अगर तुम (एक दूसरे के साथ) ऐसा (तआ़वुन और मददो नुसरत) नहीं करोगे तो ज़मीनमें (ग़ल्बए कुफ़्रो बातिल का) फ़ितना और बड़ा फसाद बपा हो जाएगा।

74. और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और अल्लाहकी राह में जिहाद किया और जिन लोगोंने (राहे ख़ुदा में घरबार और वतन कुरबान कर देनेवालों को) जगह दी और (उनकी) मदद की, वोही लोग ह़क़ीक़त में सच्चे मुसलमान हैं, उनही के लिए बख़्शिश और इ़ज़्ज़त की रोज़ी है।

75. और जो लोग उसके बाद ईमान लाए और उन्होंने राहे ह़क़में (क़ुरबानी देते हुए) घरबार छोड़ दिए और तुम्हारे साथ मिल कर जिहाद किया तो वोह लोग (भी) तुम ही में से हैं, और रिश्तेदार अल्लाह की किताबमें (सिला रह़्मी और विरासत के लिहाज़ से) एक दूसरे के ज़ियादा ह़क़दार हैं, बेशक अल्लाह हर चीज़को खूब जाननेवाला है।

आयातुहा 129 — 9 सूरतुत तौबति मदनिय्यतुन 113 — रुकूआ़तुहा 16

بَرَاءَةٌ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى
الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١﴾

1. अल्लाह और उसके रसूल(ﷺ)की तरफ़ से बेज़ारी (व दस्त बर्दारी) का ए'लान है उन मुशरिक लोगों की तरफ़ जिनसे तुमने (सुल्हो अम्न का) मुआ़हिदा किया था (और वोह अपने अ़हद पर क़ाइम न रहे थे)।

فَسِيحُوا فِي الْأَرْضِ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ
وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللَّهِ ۙ
وَأَنَّ اللَّهَ مُخْزِي الْكَافِرِينَ ﴿٢﴾
وَأَذَانٌ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى

2. पस (ऐ मुशरिको!) तुम ज़मीनमें चार माह (तक) घूम फिर लो (उस मोहलत के इख़्तिताम पर तुम्हे जंग का सामना करना होगा) और जान लो कि तुम अल्लाह को हरगिज़ आ़जिज़ नहीं कर सक्ते और बेशक अल्लाह काफ़िरों को रुस्वा करनेवाला है।

3. (येह आयात) अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ)की

النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْاَكْبَرِ اَنَّ
اللّٰهَ بَرِیْٓءٌ مِّنَ الْمُشْرِكِیْنَ ۙ۬
وَرَسُوْلُهٗ ؕ فَاِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَیْرٌ
لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَوَلَّیْتُمْ فَاعْلَمُوْۤا
اَنَّكُمْ غَیْرُ مُعْجِزِی اللّٰهِ ؕ وَبَشِّرِ
الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِعَذَابٍ اَلِیْمٍ ۙ﴿۳﴾

जानिबसे तमाम लोगों की तरफ़ हज्जे अक्बर के दिन ए'लाने (आ़म) है कि अल्लाह मुशरिकों से बेज़ार है और उसका रसूल(ﷺ)भी (उनसे बरी-उज़्-ज़िम्मा है), पस (ऐ मुशरिको!) अगर तुम तौबा कर लो तो वोह तुम्हारे हक़्क़ में बेहतर है और अगर तुमने रूगर्दानी की तो जान लो कि तुम हरगिज़ अल्लाह को आ़जिज़ न कर सकोगे, और (ऐ हबीब!) आप काफ़िरों को दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़बर सुना दें।

اِلَّا الَّذِیْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ
الْمُشْرِكِیْنَ ثُمَّ لَمْ یَنْقُصُوْكُمْ شَیْـًٔا
وَّلَمْ یُظَاهِرُوْا عَلَیْكُمْ اَحَدًا فَاَتِمُّوْۤا
اِلَیْهِمْ عَهْدَهُمْ اِلٰی مُدَّتِهِمْ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ یُحِبُّ الْمُتَّقِیْنَ ﴿۴﴾

4. सिवाए उन मुशरिकों के जिनसे तुमने मुआ़हिदा किया था फिर उन्होंने तुम्हारे साथ(अपने अ़हद को पूरा करने में) कोई कमी नहीं की और न तुम्हारे मुक़ाबले पर किसी की मदद(या पुश्त पनाही) की सो तुम उनके अ़हद को उनकी मुक़र्ररह मुद्दत तक उनके साथ पूरा करो, बेशक अल्लाह परहेज़गारों को पसंद फ़रमाता है।

فَاِذَا انْسَلَخَ الْاَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا
الْمُشْرِكِیْنَ حَیْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ وَ
خُذُوْهُمْ وَ احْصُرُوْهُمْ وَاقْعُدُوْا
لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ ۚ فَاِنْ تَابُوْا وَ
اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَخَلُّوْا
سَبِیْلَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ
رَّحِیْمٌ ﴿۵﴾

5.फिर जब हुर्मतवाले महीने गुज़र जाएं तो तुम (हस्बे ए'लान) मुशरिकों को क़त्ल कर दो जहां कहीं भी तुम उनको पाओ और उन्हें गिरफ्तार कर लो और उन्हें क़ैद कर दो और उन्हें (पकड़ने और घेरने के लिए) हर घात की जगह उनकी ताक में बैठो, पस अगर वोह तौबा कर लें और नमाज़ क़ाइम करें और ज़कात अदा करने लगें तो उनका रास्ता छोड़ दो । बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

وَ اِنْ اَحَدٌ مِّنَ الْمُشْرِكِیْنَ
اسْتَجَارَكَ فَاَجِرْهُ حَتّٰی یَسْمَعَ كَلٰمَ

6. और अगर मुशरिकों में से कोई भी आपसे पनाह का ख़्वास्तगार हो तो उसे पनाह दे दें ता आं कि वोह अल्लाहका

اللّٰهِ ثُمَّ اَبۡلِغۡهُ مَاۡمَنَهٗ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمۡ قَوۡمٌ لَّا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿٦﴾ ع

कलाम सुने फिर आप उसे उसकी जाए अम्न तक पहुंचा दें, येह इस लिए कि वोह लोग (ह़क़ का) इ़ल्म नहीं रखते।

كَيۡفَ يَكُوۡنُ لِلۡمُشۡرِكِيۡنَ عَهۡدٌ عِنۡدَ اللّٰهِ وَعِنۡدَ رَسُوۡلِهٖۤ اِلَّا الَّذِيۡنَ عٰهَدۡتُّمۡ عِنۡدَ الۡمَسۡجِدِ الۡحَرَامِ ۚ فَمَا اسۡتَقَامُوۡا لَكُمۡ فَاسۡتَقِيۡمُوۡا لَهُمۡ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الۡمُتَّقِيۡنَ ﴿٧﴾

7. (भला) मुशरिकों के लिए अल्लाह के हां और उसके रसूल (ﷺ) के हां कोई अ़हद क्यों कर हो सक्ता है सिवाए उन लोगों के जिनसे तुमने मस्जिदे ह़रामके पास (हुदैबिया में) मुआ़हिदा किया है सो जब तक वोह तुम्हारे साथ (अ़हद पर) क़ाइम रहें तुम उनके साथ क़ाइम रहो। बेशक अल्लाह परहेज़गारों को पसंद फ़रमाता है।

كَيۡفَ وَاِنۡ يَّظۡهَرُوۡا عَلَيۡكُمۡ لَا يَرۡقُبُوۡا فِيۡكُمۡ اِلًّا وَّلَا ذِمَّةً ؕ يُرۡضُوۡنَكُمۡ بِاَفۡوَاهِهِمۡ وَتَاۡبٰى قُلُوۡبُهُمۡ ۚ وَاَكۡثَرُهُمۡ فٰسِقُوۡنَ ۚ ﴿٨﴾

8. (भला उनसे अ़हद की पासदारी की तवक़्क़ो') क्यों कर हो, उनका ह़ाल तो येह है कि अगर तुम पर ग़ल्बा पा जाएं तो न तुम्हारे ह़क़में किसी क़राबत का लिहाज़ करें और न किसी अ़हद का, वोह तुम्हें अपने मुंहसे तो राज़ी रखते हैं और उनके दिल (उन बातों से) इन्कार करते हैं और उन में से अक्सर अ़हद शिकन हैं।

اِشۡتَرَوۡا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيۡلًا فَصَدُّوۡا عَنۡ سَبِيۡلِهٖ ؕ اِنَّهُمۡ سَآءَ مَا كَانُوۡا يَعۡمَلُوۡنَ ﴿٩﴾

9. उन्होंने आयाते इलाही के बदले (दुन्यवी मफ़ाद की) थोड़ी सी क़ीमत ह़ासिल कर ली फिर उस (के दीन) की राह से (लोगों को) रोकने लगे, बेशक बहुत ही बुरा काम है जो वोह करते रेहते हैं।

لَا يَرۡقُبُوۡنَ فِىۡ مُؤۡمِنٍ اِلًّا وَّلَا ذِمَّةً ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الۡمُعۡتَدُوۡنَ ﴿١٠﴾

10. न वोह किसी मुसलमान के ह़क़ में क़राबत का लिहाज़ करते हैं और न अ़हद का, और वोही लोग (सरकशी में) ह़दसे बढ़नेवाले हैं।

فَاِنۡ تَابُوۡا وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَاِخۡوَانُكُمۡ فِى الدِّيۡنِ ؕ وَنُفَصِّلُ الۡاٰيٰتِ لِقَوۡمٍ يَّعۡلَمُوۡنَ ﴿١١﴾

11. फिर (भी) अगर वोह तौबा कर लें और नमाज़ क़ाइम करें और ज़कात अदा करने लगें तो (वोह) दीनमें तुम्हारे भाई हैं, और हम (अपनी) आयतें उन लोगों के लिए तफ़्सील से बयान करते हैं जो इल्मो दानिश रखते हैं।

وَ اِنْ نَّكَثُوْۤا اَیْمَانَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ عَهْدِهِمْ وَ طَعَنُوْا فِیْ دِیْنِكُمْ فَقَاتِلُوْۤا اَىِٕمَّةَ الْكُفْرِ ۙ اِنَّهُمْ لَاۤ اَیْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ یَنْتَهُوْنَ ﴿۱۲﴾

12. और अगर वोह अपने अ़हद के बाद अपनी क़स्में तोड़ दें और तुम्हारे दीन में ता'ना ज़नी करें तो तुम (उन) कुफ़्र के सरग़नों से जंग करो बेशक उनकी क़स्मों का कोई ए'तिबार नहीं ताकि वोह (अपनी फ़ित्ना परवरी से) बाज़ आ जाएं।

اَلَا تُقَاتِلُوْنَ قَوْمًا نَّكَثُوْۤا اَیْمَانَهُمْ وَ هَمُّوْا بِاِخْرَاجِ الرَّسُوْلِ وَ هُمْ بَدَءُوْكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ؕ اَتَخْشَوْنَهُمْ ۚ فَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشَوْهُ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ﴿۱۳﴾

13. क्या तुम ऐसी क़ौम से जंग नहीं करोगे जिन्होंने अपनी क़स्में तोड़ डालीं और रसूल (ﷺ) को जिला वतन करने का इरादा किया हा़लांकि पहली मर्तबा उन्होंने तुमसे (अ़हद शिक्नी और जंग की) इब्तिदा की, क्या तुम उनसे डरते हो जबकि अल्लाह ज़ियादा ह़क़दार है कि तुम उससे डरो बशर्ते कि तुम मोमिन हो।

قَاتِلُوْهُمْ یُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ بِاَیْدِیْكُمْ وَ یُخْزِهِمْ وَ یَنْصُرْكُمْ عَلَیْهِمْ وَ یَشْفِ صُدُوْرَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِیْنَ ﴿۱۴﴾

14. तुम उनसे जंग करो, अल्लाह तुम्हारे हाथों उन्हें अ़ज़ाब देगा और उन्हें रुस्वा करेगा और उन (के मुक़ाबले) पर तुम्हारी मदद फ़रमाएगा और ईमानवालों के सीनों को शिफ़ा बख़्शेगा।

وَ یُذْهِبْ غَیْظَ قُلُوْبِهِمْ ؕ وَ یَتُوْبُ اللّٰهُ عَلٰى مَنْ یَّشَآءُ ؕ وَ اللّٰهُ عَلِیْمٌ حَكِیْمٌ ﴿۱۵﴾

15. और उनके दिलों का ग़मो ग़ुस्सा दूर फ़रमाएगा और जिसकी चाहेगा तौबा क़ुबूल फ़रमाएगा, और अल्लाह बड़े इ़ल्मवाला बड़ी हि़क्मतवाला है।

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تُتْرَكُوْا وَ لَمَّا یَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِیْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَ لَمْ یَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَ لَا رَسُوْلِهٖ وَ لَا الْمُؤْمِنِیْنَ وَلِیْجَةً ؕ وَ اللّٰهُ خَبِیْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۶﴾

16. क्या तुम येह समझते हो कि तुम (मसाइबो मुश्किलात से गुज़रे बिग़ैर यूं ही) छोड़ दिए जाओगे हा़लांकि (अभी) अल्लाहने ऐसे लोगों को मु-त-मय्यिज़ नहीं फ़रमाया जिन्होंने तुम में से जिहाद किया है और (जिन्हों ने) अल्लाह के सिवा और उसके रसूल(ﷺ)के सिवा और अह्ले ईमान के सिवा (किसी को) मेहरमे राज़ नहीं बनाया, और अल्लाह उन कामों से ख़ूब आगाह है जो तुम करते हो।

مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يَّعْمُرُوْا مَسٰجِدَ اللّٰهِ شٰهِدِيْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ ؕ اُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ۚۖ وَفِي النَّارِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿١٧﴾

17. मुशरिकों के लिए येह रवा नहीं कि वोह अल्लाह की मस्जिदें आबाद करें दर आं हाली कि वोह ख़ुद अपने ऊपर कुफ़्र के गवाह हैं, उन लोगों के तमाम आ'माल बातिल हो चुके हैं और वोह हमेशा दोज़ख़ ही में रेहने वाले हैं।

اِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ وَلَمْ يَخْشَ اِلَّا اللّٰهَ فَعَسٰٓى اُولٰٓئِكَ اَنْ يَّكُوْنُوْا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ﴿١٨﴾

18. अल्लाहकी मस्जिदें सिर्फ़ वोही आबाद कर सक्ता है जो अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान लाया और उसने नमाज़ क़ाइम की और ज़कात अदा की और अल्लाह के सिवा (किसी से) न डरा। सो उम्मीद है कि येही लोग हिदायत पानेवालों में हो जाएंगे।

اَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَآجِّ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَجٰهَدَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ لَا يَسْتَوٗنَ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩﴾ۘ

वक़्फ़ लाज़िम (وقف لازم)

19. क्या तुमने (महज़) हाजियों को पानी पिलाने और मस्जिदे हरामकी आबादी व मरम्मत का बंदोबस्त करने (के अ़मल) को उस शख़्स के (आ'माल) के बराबर क़रार दे रखा है जो अल्लाह और यौमे आख़िरत पर ईमान ले आया और उसने अल्लाह की राह में जिहाद किया? येह लोग अल्लाहके हुज़ूर बराबर नहीं हो सक्ते, और अल्लाह ज़ालिम क़ौम को हिदायत नहीं फ़रमाता।

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۙ اَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿٢٠﴾

20. जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और अल्लाह की राहमें अपने अम्वाल और अपनी जानों से जिहाद करते रहे वोह अल्लाह की बारगाह में दर्जे के लिहाज़ से बहुत बड़े हैं, और वोही लोग ही मुराद को पहुंचे हुए हैं।

يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَّجَنّٰتٍ لَّهُمْ فِيْهَا نَعِيْمٌ مُّقِيْمٌ ۙ﴿٢١﴾

21. उनका रब उन्हें अपनी जानिब से रह़्मत की और (अपनी) रज़ा की और (उन) जन्नतोंकी ख़ुशख़बरी देता है जिनमें उनके लिए दाइमी ने'मतें हैं।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗۤ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿۲۲﴾

22. (वोह) उनमें हमेशा हमेशा रहेंगे बेशक अल्लाह ही के पास बड़ा अज्र है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْۤا اٰبَآءَكُمْ وَ اِخْوَانَكُمْ اَوْلِيَآءَ اِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ عَلَى الْاِيْمَانِ ؕ وَ مَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۲۳﴾

23. ऐ ईमानवालो! तुम अपने बाप(दादा) और भाइयों को भी दोस्त न बनाओ अगर वोह ईमान पर कुफ़्र को मह़बूब रखते हों, और तुम में से जो शख़्स भी उन्हें दोस्त रखेगा सो वोही ज़ालिम हैं।

قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَآؤُكُمْ وَ اَبْنَآؤُكُمْ وَ اِخْوَانُكُمْ وَ اَزْوَاجُكُمْ وَ عَشِيْرَتُكُمْ وَ اَمْوَالُ اِۨقْتَرَفْتُمُوْهَا وَ تِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَ مَسٰكِنُ تَرْضَوْنَهَاۤ اَحَبَّ اِلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ جِهَادٍ فِيْ سَبِيْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا حَتّٰى يَاْتِيَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ؕ وَ اللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿۲۴﴾ ع

24. (ऐ नबिय्ये मुकर्रम!) आप फ़रमा दें : अगर तुम्हारे बाप(दादा) और तुम्हारे बेटे(बेटियां) और तुम्हारे भाई (बहनें) और तुम्हारी बीवियां और तुम्हारे (दीगर) रिश्तेदार और तुम्हारे अम्वाल जो तुमने (मेहनत से) कमाए और तिजारतो कारोबार जिसके नुक़्सान से तुम डरते रेहते हो और वोह मकानात जिन्हें तुम पसंद करते हो, तुम्हारे नज़्दीक अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) और उसकी राहमें जिहाद से ज़ियादा महूबूब हैं तो फिर इन्तिज़ार करो यहां तक कि अल्लाह अपना हुक्मे (अ़ज़ाब) ले आए। और अल्लाह नाफ़रमान लोगों को हिदायत नहीं फ़रमाता।

لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ فِيْ مَوَاطِنَ كَثِيْرَةٍ ۙ وَّ يَوْمَ حُنَيْنٍ ۙ اِذْ اَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْـًٔا وَّ ضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُمْ مُّدْبِرِيْنَ ﴿۲۵﴾

25.बेशक अल्लाहने बहुतसे मुक़ामातमें तुम्हारी मदद फ़रमाई और (खुसूसन) हुनैन के दिन जब तुम्हारी (अफ़रादी कुव्वत की) कसरत ने तुम्हें नाज़ां बना दिया था फिर वोह (कसरत) तुम्हें कुछ भी नफ़ा' न दे सकी और ज़मीन बावजूद इसके कि वोह फ़राख़ी रखती थी, तुम पर तंग हो गई चुनान्चे तुम पीठ दिखाते हुए फिर गए।

ثُمَّ اَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَنْزَلَ جُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا وَعَذَّبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ وَذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٦﴾

26. फिर अल्लाहने अपने रसूल (ﷺ) पर और ईमानवालों पर अपनी तस्कीन (रह़्मत) नाज़िल फ़रमाई और उसने (मलाइका के ऐसे) लश्कर उतारे जिन्हें तुम न देख सके और उसने उन लोगों को अ़ज़ाब दिया जो कुफ़्र कर रहे थे, और येही काफ़िरों की सज़ा है।

ثُمَّ يَتُوْبُ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٧﴾

27. फिर अल्लाह उसके बाद भी जिसकी चाहता है तौबा क़ुबूल फ़रमाता है (या'नी उसे तौफ़ीक़े इस्लाम और तवज्जुहे रह़्मत से नवाज़ता है), और अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هٰذَا ۚ وَاِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيْكُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖۤ اِنْ شَآءَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٨﴾

28. ऐ ईमानवालो! मुशरिकीन तो सरापा नजासत हैं सो वोह अपने इस साल के बाद (या'नी फ़त्हे मक्का के बाद हिजरी 9 से) मस्जिदे ह़राम के क़रीब न आने पाएं और अगर तुम्हें (तिजारत में कमी के बाइस) मुफ़्लिसी का डर है तो (घबराओ नहीं) अ़नक़रीब अल्लाह अगर चाहेगा तो तुम्हें अपने फ़ज़्लसे मालदार कर देगा, बेशक अल्लाह खूब जाननेवाला बड़ी ह़िक्मतवाला है।

قَاتِلُوا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَلَا يُحَرِّمُوْنَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَلَا يَدِيْنُوْنَ دِيْنَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حَتّٰى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَّدٍ وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ ﴿٢٩﴾ ع ١٥ ٤

29. (ऐ मुसलमानो! तुम अहले किताब में से उन लोगों के साथ (भी जवाबी) जंग करो (जिन्हों ने तुम्हारे साथ किए हुए मुआ़हिदए अम्न को तोड़ कर, जिला वतनी के बावुजूद जंगे अह़्ज़ाब में मदीना पर ह़मला आवर कुफ़्फ़ारे मक्का की अफ़्वाज की भरपूर मदद की और अब भी तुम्हारे ख़िलाफ़ तमाम मुम्किना साज़िशें जारी रखे हुए हैं) जो न अल्लाह पर ईमान रखते हैं न यौमे आख़िरत पर और न उन चीज़ों को ह़राम जानते हैं जिन्हें अल्लाह और उस के रसूल (ﷺ) ने ह़राम क़रार दिया है और न ही दीने ह़क़ (या'नी इस्लाम) इख़्तियार करते हैं, यहां तक कि वोह)हुक्मे इस्लाम के सामने) ताबेओ़ मग़लूब हो कर अपने हाथ से ख़िराज अदा करें।

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ عُزَيْرُ ۨابْنُ اللّٰهِ وَقَالَتِ النَّصٰرَى الْمَسِيْحُ ابْنُ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ قَوْلُهُمْ بِاَفْوَاهِهِمْ ۚ يُضَاهِــُٔوْنَ

30. और यहूदने कहा : उ़ज़ैर (عليه السلام)अल्लाह के बैटे हैं और नसाराने कहा : मसीह़ (عليه السلام)अल्लाहके बेटे हैं। येह उनका (लग़्व) क़ौल है जो अपने मुँह से निकालते हैं।

☆ (جنہوں نے تمہارے ساتھ کیے ہوئے معاہدۂ امن کو توڑ کر، جلاوطنی کے باوجود جنگِ احزاب میں مدینہ پر حملہ آور کفارِ مکہ کی افواج کی بھرپور مدد کی اور اب بھی تمہارے خلاف تمام ممکنہ سازشیں جاری رکھے ہوئے ہیں)

قَوْلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ؕ قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۚ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٣٠﴾

येह उन लोगों के क़ौल से मुशाबिहत (इख़्तियार) करते हैं जो (उनसे) पेहले कुफ़्र कर चुके हैं, अल्लाह उन्हें हलाक करे येह कहां बेहके फिरते हैं।

اِتَّخَذُوْٓا اَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَالْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ ۚ وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوْٓا اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ سُبْحٰنَهٗ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٣١﴾

31. उन्होंने अल्लाहके सिवा अपने आ़लिमों और ज़ाहिदों को रब बना लिया था और मरयम के बेटे मसीह़ (عليه السلام) को (भी) ह़ालांकि उन्हें बजुज़ इसके (कोई) हुक्म नहीं दिया गया था कि वोह अकेले एक (ही) मा'बूद की इ़बादत करें जिसके सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह उनसे पाक है जिन्हें येह शरीक ठेहराते हैं।

يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَيَاْبَى اللّٰهُ اِلَّآ اَنْ يُّتِمَّ نُوْرَهٗ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٣٢﴾

32. वोह चाहते हैं कि अल्लाहका नूर अपनी फूंकों से बुझा दें और अल्लाह (येह बात)क़ुबूल नहीं फ़रमाता मगर येह (चाहता है) कि वोह अपने नूरको कमाल तक पहुंचा दे अगरचे कुफ़्फ़ार (उसे) नापसंद ही करें।

هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۙ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ﴿٣٣﴾

33. वोही (अल्लाह) है जिसने अपने रसूल (ﷺ)को हिदायत और दीने ह़क़ के साथ भेजा ताकि इस (रसूल ﷺ) को हर दीन (वाले) पर ग़ालिब कर दे अगरचे मुशरिकीन को बुरा लगे।

النصف

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْاَحْبَارِ وَالرُّهْبَانِ لَيَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۙ ﴿٣٤﴾

34. ऐ ईमानवालो! बेशक (अह्ले किताब के) अक्सर उ़लमा और दुर्वेश लोगों के माल नाह़क़ (तरीक़े से) खाते हैं और अल्लाहकी राहसे रोकते हैं (या'नी लोगों के माल से अपनी तिजोरियां भरते हैं और दीने ह़क़ की तक़्विय्यतो इशाअ़त पर ख़र्च किए जानेसे रोकते हैं) और जो लोग सोना और चाँदी का ज़ख़ीरा करते हैं और उसे अल्लाह की राह में खर्च नहीं करते तो उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़बर सुना दें।

يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِىْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَ جُنُوْبُهُمْ وَظُهُوْرُهُمْ ؕ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ ﴿۳۵﴾

35. जिस दिन उस (सोने,चाँदी और माल) पर दोज़ख़ की आग में ताप दी जाएगी फिर उस (तपे हुए माल) से उनकी पेशानियां और उनके पहलू और उनकी पीठें दाग़ी जाएंगी, (और उनसे कहा जाएगा) कि येह वोही (माल) है जो तुमने अपनी जानों (के मफ़ाद) के लिए जमा' किया था सो तुम (उस मालका) मज़ा चखो जिसे तुम जमा' करते रहे थे।

اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوْرِ عِنْدَ اللّٰهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِىْ كِتٰبِ اللّٰهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ مِنْهَاۤ اَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ۬ۙ فَلَا تَظْلِمُوْا فِيْهِنَّ اَنْفُسَكُمْ وَ قَاتِلُوا الْمُشْرِكِيْنَ كَآفَّةً كَمَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ كَآفَّةً ؕ وَ اعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۳۶﴾

36. बेशक अल्लाह के नज़दीक महीनों की गिन्ती अल्लाह की किताब (या'नी नविश्तए क़ुदरत) में बारह महीने (लिखी) है जिस दिनसे उसने आस्मानों और ज़मीन (के निज़ाम) को पैदा फ़रमाया था उनमें से चार महीने (रज्जब, जिल का'दह, जिल हिज्जा और मुहर्रम) हुर्मतवाले हैं। येही सीधा दीन है सो तुम उन महीनों में (अज़ ख़ुद जंगो क़िताल में मुलव्विस हो कर) अपनी जानों पर ज़ुल्म न करना और तुम (भी) तमाम मुशरिकीनसे उसी तरह (जवाबी) जंग किया करो जिस तरह वोह सब के सब (इकट्ठे हो कर) तुमसे जंग करते हैं, और जान लो कि बेशक अल्लाह परहेज़गारों के साथ है।

اِنَّمَا النَّسِیْٓءُ زِيَادَةٌ فِى الْكُفْرِ يُضَلُّ بِهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُحِلُّوْنَهٗ عَامًا وَّ يُحَرِّمُوْنَهٗ عَامًا لِّيُوَاطِـُٔوْا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ فَيُحِلُّوْا مَا حَرَّمَ اللّٰهُ ؕ زُيِّنَ لَهُمْ سُوْٓءُ اَعْمَالِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۳۷﴾ ع

۵ ع ۸ ۱۱

37. (हुर्मतवाले महीनों को) आगे पीछे हटा देना महज़ कुफ्ऱमें ज़ियादती है इससे वोह काफ़िर लोग बेहकाए जाते हैं जो उसे एक साल ह़लाल गर्दानते हैं और दूसरे साल उसे ह़राम ठेहरा लेते हैं ताकि उन (महीनों) का शुमार पूरा कर दें जिन्हें अल्लाहने हुर्मत बख़्शी है और उस (महीने) को ह़लाल (भी) कर दें जिसे अल्लाहने ह़राम फ़रमाया है। उनके लिए उनके बुरे आ'माल ख़ुशनुमा बना दिए गए हैं, और अल्लाह काफ़िरों के गिरोह को हिदायत नहीं फ़रमाता।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَا لَكُمْ اِذَا قِيْلَ لَكُمُ انْفِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اثَّاقَلْتُمْ اِلَى الْاَرْضِ ؕ اَرَضِيْتُمْ بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا مِنَ الْاٰخِرَةِ ۚ فَمَا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا قَلِيْلٌ ﴿۳۸﴾

38. ऐ ईमानवालो! तुम्हें क्या हो गया है कि जब तुमसे कहा जाता है कि तुम अल्लाहकी राह में (जिहाद के लिए) निक्लो तो तुम बोझल हो कर ज़मीन (की माद्दी-व-सिफ़्ली दुनिया) की तरफ़ झुक जाते हो, क्या तुम आख़िरत के बदले दुनिया की ज़िन्दगी से राज़ी हो गए हो? सो आख़िरत (के मुक़ाबले) में दुन्यवी ज़िन्दगीका साज़ो सामान कुछ भी नहीं मगर बहुत ही कम (हैसिय्यत रखता है)।

اِلَّا تَنْفِرُوْا يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ وَّيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوْهُ شَيْـًٔا ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۳۹﴾

39. अगर तुम (जिहाद के लिए) न निकलोगे तो वोह तुम्हें दर्दनाक अ़ज़ाब में मुब्तिला फ़रमाएगा और तुम्हारी जगह (किसी) और क़ौमको ले आएगा और तुम उसे कुछ भी नुक़्सान नहीं पहुंचा सकोगे, और अल्लाह हर चीज़ पर बड़ी क़ुदरत रखता है।

اِلَّا تَنْصُرُوْهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللّٰهُ اِذْ اَخْرَجَهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثَانِيَ اثْنَيْنِ اِذْ هُمَا فِي الْغَارِ اِذْ يَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا ۚ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلَيْهِ وَاَيَّدَهٗ بِجُنُوْدٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا السُّفْلٰى ؕ وَكَلِمَةُ اللّٰهِ هِيَ الْعُلْيَا ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۴۰﴾

40. अगर तुम उनकी (या'नी रसूलुल्लाह ﷺ की ग़ल्बए इस्लामकी जिद्दो जहदमें) मदद न करोगे (तो क्या हुवा) सो बेशक अल्लाहने उनको (उस वक़्त भी) मददसे नवाज़ा था जब काफ़िरोंने उन्हें (वतन मक्कासे) निकाल दिया था दर आं ह़ालीकि वोह दो (हिजरत करनेवालों) में से दूसरे थे जबकि दोनों (रसूलुल्लाह ﷺ और अबू बकर सिद्दीक़ ؓ)ग़ारे (सौर)में थे जब वोह अपने साथी (अबू बकर सिद्दीक़ ؓ)से फ़रमा रहे थे ग़म ज़दह न हो बेशक अल्लाह हमारे साथ है पस अल्लाहने उन पर अपनी तस्कीन नाज़िल फ़रमा दी और उन्हें (फ़रिश्तों के) ऐसे लश्करों के ज़रीए क़ुव्वत बख़्शी जिन्हें तुम न देख सके और उसने काफ़िरों की बातको पस्तो फ़रोतर कर दिया, और अल्लाहका फ़रमान तो (हमेशा) बुलन्दो बाला ही है, और अल्लाह ग़ालिब, हिक्मतवाला है।

انْفِرُوْا خِفَافًا وَّثِقَالًا وَّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٤١﴾

41. तुम हल्के और गरांबार (हर हाल में) निकल खड़े हो और अपने मालो जान से अल्लाहकी राह में जिहाद करो, येह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम (ह़क़ीक़त) आशना हो।

لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيْبًا وَّسَفَرًا قَاصِدًا لَّاتَّبَعُوْكَ وَلٰكِنْۢ بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ ؕ وَسَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ ۚ يُهْلِكُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٤٢﴾

42. अगर माले (ग़नीमत) क़रीबुल ह़ुसूल होता और (जिहाद का) सफ़र मुतवस्सितो आसान तो वोह (मुनाफ़िक़ीन) यक़ीनन आपके पीछे चल पड़ते लेकिन (वोह) पुर मशक़्क़त मुसाफ़त उन्हें बहुत दूर दिखाई दी, और (अब) वोह अ़नक़रीब अल्लाहकी क़स्में खाएंगे कि अगर हम में इस्तिताअ़त होती तो ज़रूर तुम्हारे साथ निकल खड़े होते वोह (इन झूटी बातों से) अपने आप को (मज़ीद) हलाकत में डाल रहे हैं और अल्लाह जानता है कि वोह वाक़ई झूटे हैं।

عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ ۚ لِمَ اَذِنْتَ لَهُمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَتَعْلَمَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٤٣﴾

43. अल्लाह आप को सलामत (और बा इ़ज़्ज़तो आ़फ़िय्यत) रखे आपने उन्हें रुख़्सत (ही) क्यों दी (कि वोह शरीके जंग न हों) यहां तक कि वोह लोग (भी) आपके लिए ज़ाहिर हो जाते जो सच बोल रहे थे और आप झूट बोलनेवालों को (भी) मा'लूम फ़रमा लेते।

لَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٤﴾

44. वोह लोग जो अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान रखते हैं आप से (इस बातकी) रुख़्सत तलब नहीं करेंगे कि वोह अपने मालो जानसे जिहाद (न) करें, और अल्लाह परहेज़गारों को खूब जानता है।

اِنَّمَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوْبُهُمْ فَهُمْ فِيْ رَيْبِهِمْ

45. आप से (जिहाद में शरीक न होने की) रुख़्सत सिर्फ़ वोही लोग चाहेंगे जो अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान नहीं रखते और उन के दिल शक में पड़े हुए हैं सो

يَتَرَدَّدُوْنَ ﴿٤٥﴾

वोह अपने शक में हैरानो सरगर्दां हैं।

وَلَوْ اَرَادُوا الْخُرُوْجَ لَاَعَدُّوْا لَهٗ عُدَّةً وَّلٰكِنْ كَرِهَ اللّٰهُ انْۢبِعَاثَهُمْ فَثَبَّطَهُمْ وَ قِيْلَ اقْعُدُوْا مَعَ الْقٰعِدِيْنَ ﴿٤٦﴾

46. अगर उन्होंने (वाक़ई जिहादके लिए) निकलने का इरादा किया होता तो वोह उसके लिए (कुछ न कुछ) सामान तो ज़रूर मुहय्या कर लेते लेकिन (हक़ीक़त येह है कि उनके किज़्बो मुनाफ़िक़त के बाइस) अल्लाह ने उनका (जिहाद के लिए) खड़े होना (ही) ना पसन्द फ़रमाया सो उसने उन्हें (वहीं) रोक दिया और उनसे केह दिया गया कि तुम (जिहाद से जी चुरा कर) बैठ रेहनेवालों के साथ बैठे रहो।

لَوْ خَرَجُوْا فِيْكُمْ مَّا زَادُوْكُمْ اِلَّا خَبَالًا وَّلَاَاوْضَعُوْا خِلٰلَكُمْ يَبْغُوْنَكُمُ الْفِتْنَةَ ۚ وَ فِيْكُمْ سَمّٰعُوْنَ لَهُمْ ؕ وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٧﴾

47. अगर वोह तुम में (शामिल हो कर) निकल खड़े होते तो तुम्हारे लिए महज़ शर्रो फ़साद ही बढ़ाते और तुम्हारे दरमियान (बिगाड़ पैदा करने के लिए) दौड़ घूप करते वोह तुम्हारे अंदर फ़िला बपा करना चाहते हैं और तुम में (अब भी) उन के (बा'ज़) जासूस मौजूद हैं, और अल्लाह ज़ालिमों से ख़ूब वाक़िफ़ है।

لَقَدِ ابْتَغَوُا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَّبُوْا لَكَ الْاُمُوْرَ حَتّٰى جَآءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ اَمْرُ اللّٰهِ وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ﴿٤٨﴾

48. दर हक़ीक़त वोह पहले भी फ़ितना पर्दाज़ी में कोशां रहे हैं और आप के काम उलट पुलट करने की तदबीरें करते रहे हैं यहां तक कि हक़ आ पहुंचा और अल्लाह का हुक्म ग़ालिब हो गया और वोह (उसे) नापसंद ही करते रहे।

وَ مِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ ائْذَنْ لِّيْ وَلَا تَفْتِنِّيْ ؕ اَلَا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوْا ؕ وَ اِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿٤٩﴾

49. और उन में से वोह शख़्स (भी) है जो केहता है कि आप मुझे इजाज़त दे दीजिए (कि मैं जिहाद पर जाने की बजाए घर ठेहरा रहूं) और मुझे फ़िले में न डालिए, सुन लो! कि वोह फ़िले में (तो ख़ुद ही) गिर पड़े हैं, और बेशक जहन्नम काफ़िरों को घेरे हुए है।

اِنْ تُصِبْكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۚ وَ اِنْ تُصِبْكَ مُصِيْبَةٌ يَّقُوْلُوْا قَدْ اَخَذْنَآ اَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ وَيَتَوَلَّوْا

50. अगर आपको कोई भलाई (या आसाइश) पहुंचती है (तो) वोह उन्हें बुरी लगती है और अगर आपको मुसीबत(या तक्लीफ़) पहुंचती है (तो) केहते हैं कि हमने तो पहले से ही अपने काम (में एहतियात) को इख़्तियार

وَّهُمْ فَرِحُوْنَ ﴿٥٠﴾

कर लिया था और खुशियां मनाते हुए पलटते हैं।

قُلْ لَّنْ يُّصِيْبَنَآ اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا ۚ هُوَ مَوْلٰىنَا ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿٥١﴾

51. (ऐ ह़बीब!) आप फ़रमा दीजिए कि हमें हरगिज़ (कुछ) नहीं पहुंचेगा मगर वोही कुछ जो अल्लाहने हमारे लिए लिख दिया है, वोही हमारा कारसाज़ है और अल्लाह ही पर ईमानवालों को भरोसा करना चाहिए।

قُلْ هَلْ تَرَبَّصُوْنَ بِنَآ اِلَّآ اِحْدَى الْحُسْنَيَيْنِ ؕ وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ اَنْ يُّصِيْبَكُمُ اللّٰهُ بِعَذَابٍ مِّنْ عِنْدِهٖٓ اَوْ بِاَيْدِيْنَا ۖ فَتَرَبَّصُوْٓا اِنَّا مَعَكُمْ مُّتَرَبِّصُوْنَ ﴿٥٢﴾

52. आप फ़रमा दें : क्या तुम हमारे लिए ह़क़ में दो भलाइयों (या'नी फ़त्ह़ और शहादत)में से एक ही का इन्तिज़ार कर रहे हो (कि हम शहीद होते हैं या ग़ाज़ी बन कर लौटते हैं) और हम तुम्हारे ह़क़ में (तुम्हारी मुनाफ़िक़त के बाइस) इस बातका इन्तिज़ार कर रहे हैं कि अल्लाह अपनी बारगाह से तुम्हें (खु़सूसी) अ़ज़ाब पहुंचाता है या हमारे हाथों से । सो तुम (भी) इन्तिज़ार करो हम (भी) तुम्हारे साथ मुन्तज़िर हैं (कि किस का इन्तिज़ार नतीजा खे़ज़ है)।

قُلْ اَنْفِقُوْا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا لَّنْ يُّتَقَبَّلَ مِنْكُمْ ؕ اِنَّكُمْ كُنْتُمْ قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿٥٣﴾

53. फ़रमा दीजिए : तुम खुशी से ख़र्च करो या नाखुशी से तुम से हरगिज़ वोह (माल) क़ुबूल नहीं किया जाएगा, बेशक तुम नाफ़रमान लोग हो।

وَمَا مَنَعَهُمْ اَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقٰتُهُمْ اِلَّآ اَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَبِرَسُوْلِهٖ وَلَا يَاْتُوْنَ الصَّلٰوةَ اِلَّا وَهُمْ كُسَالٰى وَلَا يُنْفِقُوْنَ اِلَّا وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ﴿٥٤﴾

54. और उनसे उनके नफ़क़ात (या'नी सदक़ात) के क़ुबूल किए जाने में कोई (और)चीज़ उन्हें माने' नहीं हुई सिवाए इसके कि वोह अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) के मुन्किर हैं और वोह नमाज़ की अदाएगी के लिए नहीं आते मगर काहिली व बे रग़्बती के साथ और वोह (अल्लाह की राहमें) ख़र्च (भी) नहीं करते मगर इस ह़ालमें कि वोह नाखुश होते हैं।

فَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ ؕ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ

55. सो आपको न (तो) उनके अम्वाल तअ़ज्जुब में डालें और न ही उनकी औलाद । बस अल्लाह तो येह चाहता है कि उन्हें उन्ही (चीज़ों) की वजह से दुन्यवी ज़िन्दगी में अ़ज़ाब दे और उनकी जानें इस ह़ालमें निक्लें

وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿۵۵﴾

कि वोह काफ़िर हों।

وَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ اِنَّهُمْ لَمِنْكُمْ ؕ وَمَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلٰكِنَّهُمْ قَوْمٌ يَّفْرَقُوْنَ ﴿۵۶﴾

56. और वोह (इस क़दर बुज़दिल हैं कि)अल्लाह की क़स्में खाते हैं कि वोह तुम ही में से हैं हालां कि वोह तुम में से नहीं लेकिन वोह ऐसे लोग हैं जो (अपने निफ़ाक़ के ज़ाहिर होने और उसके अंजाम से) डरते हैं (इस लिए वोह बसूरते तक़िय्या अपना मुसलमान होना ज़ाहिर करते हैं)।

لَوْ يَجِدُوْنَ مَلْجَاً اَوْ مَغٰرٰتٍ اَوْ مُدَّخَلًا لَّوَلَّوْا اِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُوْنَ ﴿۵۷﴾

57. (उनकी कैफ़िय्यत येह है कि) अगर वोह कोई पनाहगाह या ग़ार या सुरंग पा लें तो इन्तिहाई तेज़ी से भागते हुए उस की तरफ़ पलट जाएं (और आपके साथ एक लम्हा भी न रहें मगर इस वक़्त वोह मजबूर हैं इस लिए झूटी वफ़ादारी जतलाते हैं)।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّلْمِزُكَ فِى الصَّدَقٰتِ ۚ فَاِنْ اُعْطُوْا مِنْهَا رَضُوْا وَاِنْ لَّمْ يُعْطَوْا مِنْهَاۤ اِذَا هُمْ يَسْخَطُوْنَ ﴿۵۸﴾

58. और उन्हीं में से बा'ज़ ऐसे हैं जो सदक़ात (की तक़्सीम) में आप पर ता'ना ज़नी करते हैं, फिर अगर उन्हें इन(सदक़ात)में से कुछ दे दिया जाए तो वोह राज़ी हो जाएं और अगर उन्हें इस में से कुछ न दिया जाए तो वोह फ़ौरन ख़फ़ा हो जाते हैं।

وَلَوْ اَنَّهُمْ رَضُوْا مَاۤ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ ۙ وَقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ سَيُؤْتِيْنَا اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ وَرَسُوْلُهٗۤ ۙ اِنَّاۤ اِلَى اللّٰهِ رٰغِبُوْنَ ﴿۵۹﴾ ع

59. और क्या ही अच्छा होता अगर वोह लोग इस पर राज़ी हो जाते जो उनको अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) ने अ़ता फ़रमाया था और केहते कि हमें अल्लाह काफ़ी है। अ़नक़रीब हमें अल्लाह अपने फ़ज़्ल से और उस का रसूल (ﷺ मज़ीद) अ़ता फ़रमाएगा। बेशक हम अल्लाह ही की तरफ़ राग़िब हैं (और रसूल (ﷺ) उसी का वासता और वसीला हैं, उस का देना भी अल्लाह ही का देना है। अगर येह अ़क़ीदह रखते और ता'नाज़नी न करते तो येह बेहतर होता)।

اِنَّمَا الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَآءِ وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْعٰمِلِيْنَ عَلَيْهَا

60. बेशक सदक़ात (ज़कात) महज़ ग़रीबों और मोहताजों और उनकी वसूली पर मुक़र्रर किए गए कारकुनों और ऐसे लोगों के लिए हैं जिनके दिलों में इस्लाम की उल्फ़त पैदा करना मक़्सूद हो और (मज़ीद

وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوْبُهُمْ وَفِي الرِّقَابِ وَالْغٰرِمِيْنَ وَفِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۭ فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٦٠﴾

येह कि) इन्सानी गरदनों को (गुलामी की ज़िन्दगी से) आज़ाद कराने में और क़र्ज़दारों के बोझ उतारने में और अल्लाह की राहमें (जिहाद करनेवालों पर) और मुसाफ़िरों पर(ज़कात का ख़र्च किया जाना हक़ है)। येह (सब) अल्लाह की तरफ़ से फ़र्ज़ किया गया है और अल्लाह खूब जाननेवाला बड़ी हिक्मतवाला है।

وَمِنْهُمُ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ النَّبِيَّ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ اُذُنٌ ۭ قُلْ اُذُنُ خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۭ وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ رَسُوْلَ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٦١﴾ يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ لِيُرْضُوْكُمْ ۚ وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ اَحَقُّ اَنْ يُّرْضُوْهُ اِنْ كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٢﴾

61. और उन (मुनाफ़िक़ों)में से वोह लोग भी हैं जो नबी(ए मुकर्रम ﷺ) को ईज़ा पहुंचाते हैं और केहते हैं वोह तो कान (के कच्चे)हैं। फ़रमा दीजिए : तुम्हारे लिए भलाई के कान हैं वोह अल्लाह पर ईमान रखते हैं और अह्ले ईमान (की बातों) पर यक़ीन करते हैं और तुम में से जो ईमान ले आए हैं उनके लिए रहमत हैं, और जो लोग रसूलुल्लाह को (अपनी बद अ़क़ीदगी, बद गुमानी और बदज़बानी के ज़रीए) अज़िय्यत पहुंचाते हैं उनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।

62. मुसल्मानो! (येह मुनाफ़िक़ीन) तुम्हारे सामने अल्लाह की क़स्में खाते हैं ताकि तुम्हें राज़ी रखें हालांकि अल्लाह और उसका रसूल (ﷺ) ज़ियादह हक़दार है कि उसे राज़ी किया जाए अगर येह लोग ईमानवाले होते (तो येह हक़ीक़त जान लेते और रसूल ﷺ को राज़ी करते, रसूल ﷺ के राज़ी होने से ही अल्लाह राज़ी हो जाता है क्योंकि दोनों की रज़ा एक है)।

اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّهٗ مَنْ يُّحَادِدِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاَنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيْهَا ۭ ذٰلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيْمُ ﴿٦٣﴾ يَحْذَرُ الْمُنٰفِقُوْنَ اَنْ تُنَزَّلَ

63. क्या वोह नहीं जानते कि जो शख़्स अल्लाह और उस के रसूल (रसूल ﷺ) की मुख़ालिफ़त करता है तो उस के लिए दोज़ख की आग (मुक़र्रर) है जिसमें वोह हमेशा रेहनेवाला है, येह ज़बरदस्त रुस्वाई है।

64. मुनाफ़िक़ीन इस बात से डरते हैं कि मुसल्मानों पर कोई

عَلَيْهِمْ سُورَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِي قُلُوبِهِمْ ۚ قُلِ اسْتَهْزِءُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ مُخْرِجٌ مَا تَحْذَرُونَ ﴿٦٤﴾

ऐसी सूरत नाज़िल कर दी जाए जो उन्हें इन बातों से ख़बरदार कर दे जो इन (मुनाफ़िक़ों) के दिलों में (मुख़्फ़ी) हैं। फ़रमा दीजिए: तुम मज़ाक़ करते रहो, बेशक अल्लाह वोह (बात) ज़ाहिर फ़रमानेवाला है जिस से तुम डर रहे हो।

وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ لَيَقُولُنَّ إِنَّمَا كُنَّا نَخُوضُ وَنَلْعَبُ ۚ قُلْ أَبِاللَّهِ وَآيَاتِهِ وَرَسُولِهِ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِئُونَ ﴿٦٥﴾

65. और अगर आप उनसे दर्याफ़्त करें तो वोह ज़रूर येही कहेंगे कि हम तो सिर्फ़(सफ़र काटने के लिए) बातचीत और दिललगी करते थे। फ़रमा दीजिए : क्या तुम अल्लाह और उसकी आयतों और उसके रसूल के साथ मज़ाक़ कर रहे थे।

لَا تَعْتَذِرُوا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ ۚ إِنْ نَعْفُ عَنْ طَائِفَةٍ مِنْكُمْ نُعَذِّبْ طَائِفَةً بِأَنَّهُمْ كَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿٦٦﴾

66. (अब) तुम मा'ज़रेत मत करो, बेशक तुम अपने ईमान (के इज़्हार) के बाद काफ़िर हो गए हो, अगर हम तुम में से एक गिरोह को मुआफ़ भी कर दें (तब भी) दूसरे गिरोह को अज़ाब देंगे इस वजह से कि वोह मुजरिम थे।

ع ٨ ١٢

الْمُنَافِقُونَ وَالْمُنَافِقَاتُ بَعْضُهُمْ مِنْ بَعْضٍ ۚ يَأْمُرُونَ بِالْمُنْكَرِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوفِ وَيَقْبِضُونَ أَيْدِيَهُمْ ۚ نَسُوا اللَّهَ فَنَسِيَهُمْ ۗ إِنَّ الْمُنَافِقِينَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿٦٧﴾

وقف لازم

67. मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें एक दूसरे (की जिन्स) से हैं। येह लोग बुरी बातों का हुक्म देते हैं और अच्छी बातों से रोकते हैं और अपने हाथ (अल्लाह की राहमें ख़र्च करने से) बंद रखते हैं, उन्होंने अल्लाह को फ़रामोश कर दिया, तो अल्लाहने उन्हें फ़रामोश कर दिया, बेशक मुनाफ़िक़ीन ही ना फ़रमान हैं।

وَعَدَ اللَّهُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ هِيَ حَسْبُهُمْ ۚ وَلَعَنَهُمُ اللَّهُ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُقِيمٌ ﴿٦٨﴾

68. अल्लाहने मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और काफ़िरों से आतिशे दोज़ख़ का वा'दा फ़रमा रखा है (वोह) उसमें हमेशा रहेंगे, वोह (आग) उन्हें काफ़ी है, और अल्लाहने उन पर ला'नत की है और उनके लिए हमेशा बरक़रार रेहनेवाला अज़ाब है।

كَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ كَانُوا أَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً وَأَكْثَرَ أَمْوَالًا وَأَوْلَادًا ۚ

69. (ऐ मुनाफ़िक़ो! तुम) उन लोगों की मिस्ल हो जो तुम से पहले थे। वोह तुम से बहुत ज़ियादा ताक़तवर और

فَاسْتَمْتَعُوا بِخَلَاقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُمْ بِخَلَاقِكُمْ كَمَا اسْتَمْتَعَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلَاقِهِمْ وَخُضْتُمْ كَالَّذِي خَاضُوا ۚ أُولَٰئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿٦٩﴾

मालो अवलाद में कहीं ज़ियादा बढ़े हुए थे। पस वोह अपने (दुन्यवी) हिस्से से फ़ाइदा उठा चुके सो तुम (भी) अपने हिस्से से (उसी तरह) फ़ाइदा उठा रहे हो जैसे तुम से पहले लोगों ने (लिज़्ज़ते दुन्या के) अपने मुक़र्ररा हिस्से से फ़ाइदा उठाया था नीज़ तुम (भी उसी तरह) बातिलमें दाख़िल और ग़ल्तां हो जैसे वोह बातिल में दाख़िल और ग़ल्तां थे। उन लोगों के आ'माल दुनिया और आख़िरत में बरबाद हो गए और वोही लोग ख़सारे में हैं।

أَلَمْ يَأْتِهِمْ نَبَأُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ ۙ وَقَوْمِ إِبْرَاهِيمَ وَأَصْحَابِ مَدْيَنَ وَالْمُؤْتَفِكَاتِ ۚ أَتَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ ۖ فَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَٰكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٧٠﴾

70. क्या उनके पास उन लोगों की ख़बर नहीं पहुंची जो उनसे पहले थे, क़ौमे नूह़ और आ़द और समूद और क़ौमे इब्राहीम और बाशिन्दगाने मद्यन और उन बस्तियों के मकीन जो उलट दी गईं, उनके पास (भी) उनके रसूल वाज़ेह़ निशानियां ले कर आए थे (मगर उन्होंने ना फ़रमानी की) पस अल्लाह तो ऐसा न था कि उन पर ज़ुल्म करता लेकिन वोह (इन्कारे ह़क़ के बाइ़स) अपने ऊपर ख़ुद ही ज़ुल्म करते थे।

وَالْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ يَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَيُطِيعُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ أُولَٰئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللَّهُ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٧١﴾

وقف لازم

71. और अह्ले ईमान मर्द और अह्ले ईमान औ़रतें एक दूसरे के रफ़ीक़ो मददगार हैं। वोह अच्छी बातों का हुक्म देते हैं और बुरी बातों से रोकते हैं और नमाज़ क़ाइम रखते हैं और ज़कात अदा करते हैं और अल्लाह और उसके रसूल की इताअ़त बजा लाते हैं, उन ही लोगों पर अल्लाह अ़नक़रीब रह़म फ़रमाएगा, बेशक अल्लाह बड़ा ग़ालिब बड़ी ह़िक्मतवाला है।

وَعَدَ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ

72. अल्लाहने मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतों से जन्नतों का वा'दा फ़रमा लिया है जिन के नीचे से नेहरें बेह रही हैं,

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ اَكْبَرُ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿۷۲﴾

ع ۹ ۱۵

वोह उनमें हमेशा रेहनेवाले हैं और ऐसे पाकीज़ा मकानात का भी (वा'दा फरमाया है) जो जन्नत के ख़ास मुक़ाम पर सदा बहार बाग़ात में हैं, और (फिर) अल्लाह की रज़ा और ख़ुशनूदी (इन सब ने'मतों से) बढ़ कर है (जो बड़े अज्र के तौर पर नसीब होगी), येही ज़बरदस्त कामयाबी है।

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۷۳﴾

73. ऐ नबी(ए मुअ़ज़्ज़म!) आप काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से जिहाद करें और उन पर सख़्ती करें, और उनका ठिकाना दोज़ख़ है, और वोह बुरा ठिकाना है।

يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ مَا قَالُوْا ؕ وَلَقَدْ قَالُوْا كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوْا بَعْدَ اِسْلَامِهِمْ وَهَمُّوْا بِمَا لَمْ يَنَالُوْا ۚ وَمَا نَقَمُوْۤا اِلَّاۤ اَنْ اَغْنٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَاِنْ يَّتُوْبُوْا يَكُ خَيْرًا لَّهُمْ ۚ وَاِنْ يَّتَوَلَّوْا يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَمَا لَهُمْ فِي الْاَرْضِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿۷۴﴾

74. (येह मुनाफ़िक़ीन) अल्लाह की क़स्में खाते हैं कि उन्होंने (कुछ) नहीं कहा हालांकि उन्होनें यक़ीनन कलिमए कुफ़्र कहा और वोह अपने इस्लाम (को ज़ाहिर करने) के बाद काफ़िर हो गए और उन्होंने (कई अज़िय्यत रसां बातों का) इरादा (भी) किया था जिन्हें वोह न पा सके और वोह (इस्लाम और रसूल ﷺ के अमल में से) और किसी चीज़ को ना पसंद न कर सके सिवाए इसके कि उन्हें अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) ने अपने फज़्ल से ग़नी कर दिया था, सो अगर येह (अब भी) तौबा कर लें तो उनके लिए बेहतर है और अगर (इसी तरह) रूगर्दां रहें तो अल्लाह उन्हें दुनिया और आख़िरत (दोनों ज़िन्दगियों) में दर्दनाक अ़ज़ाबमें मुब्तिला फ़रमाएगा और उन के लिए ज़मीन में न कोई दोस्त होगा और न कोई मददगार।

وَمِنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَئِنْ اٰتٰىنَا مِنْ فَضْلِهٖ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُوْنَنَّ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۷۵﴾

75. और उन (मुनाफ़िक़ों) में (बा'ज़) वोह भी हैं जिन्होंने अल्लाह से अ़हद किया था कि अगर उसने हमें अपने फ़ज़्ल से दौलत अ़ता फ़रमाई तो हम ज़रूर (उसकी राह में) ख़ैरात करेंगे और हम ज़रूर नेकूकारों में से हो जाएंगे।

فَلَمَّآ اٰتٰىهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ بَخِلُوْا بِهٖ وَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿۷۶﴾

76. पस जब उसने उन्हें अपने फ़ज़्ल से (दौलत) बख़्शी (तो) वोह उसमें बुख़्ल करने लगे और वोह (अपने अ़हद से) रूगर्दानी करते हुए फिर गए।

فَاَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِيْ قُلُوْبِهِمْ اِلٰى يَوْمِ يَلْقَوْنَهٗ بِمَآ اَخْلَفُوا اللّٰهَ مَا وَعَدُوْهُ وَبِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ﴿۷۷﴾

77. पस उसने उनके दिलों में निफ़ाक़ को (उनके अपने बुख़्ल का) अंजाम बना दिया उस दिन तक कि जब वोह उससे मिलेंगे इस वजह से कि उन्होंने अल्लाह से अपने किए हुए अ़हद की ख़िलाफ़ वर्ज़ी की। और इस वजह से (भी) कि वोह किज़्ब बयानी किया करते थे।

اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوٰىهُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿۷۸﴾

78. क्या उन्हें मा'लूम नहीं कि अल्लाह उनके भेद और उनकी सरगोशियां जानता है और येह कि अल्लाह सब ग़ैब की बातों को बहुत खूब जाननेवाला है।

اَلَّذِيْنَ يَلْمِزُوْنَ الْمُطَّوِّعِيْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ فِي الصَّدَقٰتِ وَالَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ اِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُوْنَ مِنْهُمْ ؕ سَخِرَ اللّٰهُ مِنْهُمْ ۫ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۷۹﴾

79. जो लोग ब.रज़ा व रग़बत ख़ैरात देनेवाले मोमिनों पर (उनके) सदक़ातमें (रियाकारी व मजबूरी का) इल्ज़ाम लगाते हैं और उन (नादार मुसलमानों) पर भी (ऐब लगाते हैं) जो अपनी मेहनतो मशक़्क़त के सिवा (कुछ ज़ियादा मक़्दूर) नहीं पाते सो येह (उनके जज़्बए इन्फ़ाक़ का भी) मज़ाक़ उड़ाते हैं, अल्लाह उन्हें उनके तमस्ख़ुर की सज़ा देगा और उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।

اِسْتَغْفِرْ لَهُمْ اَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ؕ اِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِيْنَ مَرَّةً فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿۸۰﴾ ع

80. आप ख़्वाह उन (बद बख़्त, गुस्ताख़ और आपकी शानमें ता'ना ज़नी करनेवाले मुनाफ़िक़ों) के लिए बख़्शिश तलब करें या उनके लिए बख़्शिश तलब न करें, अगर आप (अपनी तबई शफ़्क़त और अ़फ़्वो दरगुज़र की आ़दते करीमाना के पेशे नज़र) उनके लिए सत्तर मर्तबा भी बख़्शिश तलब करें तो भी अल्लाह उन्हें हरगिज़ नहीं बख़्शेगा, येह इस वजह से कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) के साथ कुफ़्र किया है, और अल्लाह ना फ़रमान क़ौम को हिदायत नहीं फ़रमाता।

فَرِحَ الْمُخَلَّفُوْنَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلٰفَ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَكَرِهُوْٓا اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَالُوْا لَا تَنْفِرُوْا فِي الْحَرِّ ۭ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ اَشَدُّ حَرًّا ۭ لَوْ كَانُوْا يَفْقَهُوْنَ ﴿٨١﴾

81. रसूलुल्लाह (ﷺ) की मुख़ालिफ़त के बाइस (जिहाद से पीछे) रेह जानेवाले (येह मुनाफ़िक़) अपने बैठ रेहने पर ख़ुश हो रहे हैं वोह इस बातको ना पसंद करते थे कि अपने मालों और अपनी जानों से अल्लाह की राहमें जिहाद करें और केहते थे कि इस गरमीमें न निक्लो, फरमा दीजिए: दोज़ख की आग सब से ज़ियादा गर्म है, अगर वोह समझते होते (तो क्या ही अच्छा होता)।

فَلْيَضْحَكُوْا قَلِيْلًا وَّلْيَبْكُوْا كَثِيْرًا ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٨٢﴾

82. पस उन्हें चाहिए कि थोड़ा हंसें और ज़ियादा रोएं (क्योंकि आख़िरतमें उन्हें ज़ियादा रोना है) येह उस का बदला है जो वोह कमाते थे।

فَاِنْ رَّجَعَكَ اللّٰهُ اِلٰى طَآئِفَةٍ مِّنْهُمْ فَاسْتَاْذَنُوْكَ لِلْخُرُوْجِ فَقُلْ لَّنْ تَخْرُجُوْا مَعِيَ اَبَدًا وَّلَنْ تُقَاتِلُوْا مَعِيَ عَدُوًّا ۭ اِنَّكُمْ رَضِيْتُمْ بِالْقُعُوْدِ اَوَّلَ مَرَّةٍ فَاقْعُدُوْا مَعَ الْخٰلِفِيْنَ ﴿٨٣﴾

83. पस (ऐ ह़बीब!) अगर अल्लाह आपको (गज़्वए तबूक से फ़ारिग़ होने के बाद) उन (मुनाफ़िक़ीन) में से किसी गिरोह की तरफ़ दोबारा वापस ले जाए और वोह आप से (आइन्दा किसी और ग़ज़्वे के मौक़े' पर जिहाद के लिए) निकलने की इजाज़त चाहें तो उनसे फ़रमा दीजिएगा कि (अब) तुम मेरे साथ कभी भी हरगिज़ न निकलना और तुम मेरे साथ हो कर कभी भी हरगिज़ दुश्मन से जंग न करना (क्यों कि) तुम पहली मर्तबा (जिहाद छोड़ कर) पीछे बैठे रेहने से ख़ुश हुए थे सो (अब भी) पीछे बैठे रेह जानेवालों के साथ बैठे रहो।

وَلَا تُصَلِّ عَلٰٓى اَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ اَبَدًا وَّلَا تَقُمْ عَلٰى قَبْرِهٖ ۭ اِنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَمَاتُوْا وَهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٨٤﴾

84. और आप कभी भी उन (मुनाफ़िक़ों) में से जो कोई मर जाए उस (के जनाज़े) पर नमाज़ न पढ़ें और न ही आप उस की क़ब्र पर खड़े हों (क्यों कि आप का किसी जगह क़दम रखना भी रह़्मतो बरकत का बाइ़स होता है और येह आप की रह़्मतो बरकत के ह़क़दार नहीं हैं)। बेशक उन्होंने अल्लाह और उस के रसूल (ﷺ)के साथ कुफ़्र किया और वोह ना फ़रमान होने की ह़ालत में ही मर गए।

وَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَاَوْلَادُهُمْ ؕ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّعَذِّبَهُمْ بِهَا فِى الدُّنْيَا وَ تَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿۸۵﴾

85. और उनके माल और उनकी औलाद आपको तअ्ज्जुबमें न डालें। अल्लाह फ़क़त येह चाहता है कि इन चीज़ों के ज़रीए उन्हें दुनिया में(भी) अज़ाब दे और उन की जानें इस हाल में निक्लें कि वोह काफ़िर (ही) हों।

وَ اِذَاۤ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ اَنْ اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَجَاهِدُوْا مَعَ رَسُوْلِهِ اسْتَاْذَنَكَ اُولُوا الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوْا ذَرْنَا نَكُنْ مَّعَ الْقٰعِدِيْنَ ﴿۸۶﴾

86. और जब कोई (ऐसी) सूरत नाज़िल की जाती है कि तुम अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके रसूल(ﷺ)की मइय्यत में जिहाद करो तो उनमें से दौलत और ताक़तवाले लोग आप से रुख़्सत चाहते हैं और केहते हैं आप हमें छोड़ दें हम (पीछे) बैठे रेहनेवालों के साथ हो जाएं।

رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿۸۷﴾

87. उन्होंने येह पसंद किया कि वोह पीछे रेह जानेवाली औरतों, बच्चों और मा'ज़ूरों के साथ हो जाएं और उन के दिलों पर मुहर लगा दी गई है सो वोह कुछ नहीं समझते।

لٰكِنِ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ جٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ؕ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ الْخَيْرٰتُ ۫ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۸۸﴾

88. लेकिन रसूल (ﷺ) और जो लोग उनके साथ ईमान लाए अपने मालों और अपनी जानों के साथ जिहाद करते हैं और उनही लोगों के लिए सब भलाइयां हैं और वोही लोग मुराद पानेवाले हैं।

اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿۸۹﴾ ع

89. अल्लाहने उनके लिए जन्नतें तैयार फ़रमा रखी हैं जिनके नीचे से नहरें जारी हैं (वोह) उनमें हमेशा रेहनेवाले हैं, येही बहुत बड़ी कामयाबी है।

وَجَآءَ الْمُعَذِّرُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِيْنَ كَذَبُوا

90.और सहरा नशीनों में से कुछ बहानासाज़ (मा'ज़ेरत करने के लिए दरबारे रिसालत ﷺ में) आए ताकि उन्हें

اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۹۰﴾

(भी) रुख़्सत दे दी जाए, और वोह लोग जिन्होंने (अपने दा'वाए ईमानमें) अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) से झूट बोला था (जिहाद छोड़ कर पीछे) बैठ रहे, अनक़रीब उनमें से उन लोगों को जिन्होंने कुफ़्र किया दर्दनाक अ़ज़ाब पहुंचेगा।

لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَآءِ وَ لَا عَلَى الْمَرْضٰى وَلَا عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ مَا يُنْفِقُوْنَ حَرَجٌ اِذَا نَصَحُوْا لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ؕ مَا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ مِنْ سَبِيْلٍ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۙ﴿۹۱﴾ وَّلَا عَلَى الَّذِيْنَ اِذَا مَاۤ اَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَاۤ اَجِدُ مَاۤ اَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ ۠ تَوَلَّوْا وَّ اَعْيُنُهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا اَلَّا يَجِدُوْا مَا يُنْفِقُوْنَ ؕ﴿۹۲﴾

91. ज़ईफ़ों (कमज़ोरों) पर कोई गुनाह नहीं और न बीमारों पर और न (ही) ऐसे लोगों पर है जो इस क़दर (वुस्अ़त भी) नहीं पाते जिसे ख़र्च करें जबकि वोह अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) के लिए ख़ालिसो मुख़्लिस हो चुके हों, नेकूकारों (या'नी साहि़बाने एह़्सान) पर इल्ज़ाम की कोई राह नहीं और अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

92. और न ऐसे लोगों पर (ता'ना व इल्ज़ाम की राह है) जबकि वोह आपकी ख़िदमतमें (इसलिए) हाज़िर हुए कि आप उन्हें (जिहाद केलिए) सवार करें (क्यों कि उनके पास अपनी कोई सवारी न थी तो) आपने फ़रमाया मैं (भी) कोई (ज़ाइद सवारी) नहीं पाता हूं जिस पर तुम्हें सवार कर सकूं (तो) वोह (आपके इ़ज्ऩसे) इस ह़ालत में लौटे कि उनकी आंखें (जिहाद से मह़रूमी के) ग़म में अश्कबार थीं कि (अफ़्सोस) वोह (इस क़दर) ज़ादे राह नहीं पाते जिसे वोह ख़र्च कर सकें(और शरीके जिहाद हो सकें)।

اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَسْتَاْذِنُوْنَكَ وَهُمْ اَغْنِيَآءُ ۚ رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ ۙ وَطَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۹۳﴾

93. (इल्ज़ाम की) राह तो फ़क़त उन लोगों पर है जो आप से रुख़्सत तलब करते हैं हालांकि वोह मालदार हैं, वोह इस बात से खुश हैं कि वोह पीछे रेह जानेवाली औ़रतों और मा'ज़ूरों के साथ रहें और अल्लाहने उनके दिलों पर मुहर लगा दी है, सो वोह जानते ही नहीं(कि ह़क़ीक़ी सूदो ज़ियां क्या है)

الجزء ١١

يَعْتَذِرُوْنَ اِلَيْكُمْ اِذَا رَجَعْتُمْ اِلَيْهِمْ ؕ قُلْ لَّا تَعْتَذِرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّاَنَا اللّٰهُ مِنْ اَخْبَارِكُمْ ؕ وَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۹۴﴾

94. (ऐ मुसलमानो!) वोह तुमसे उज़्र ख़्वाही करेंगे जब तुम उनकी तरफ़ (इस सफ़रे तबूक से) पलट कर जाओगे, (ऐ हबीब !) आप फ़रमा दीजिए : बहाने मत बनाओ हम हरगिज़ तुम्हारी बात पर यक़ीन नहीं करेंगे, हमें अल्लाहने तुम्हारे हालातसे बा ख़बर कर दिया है, और अब (आइन्दह) तुम्हारा अ़मल (दुनिया में भी) अल्लाह देखेगा और उसका रसूल (ﷺ) भी (देखेगा) फिर तुम (आख़िरत में भी) हर पोशीदह और ज़ाहिर को जाननेवाले (रब) की तरफ़ लौटाए जाओगे तो वोह तुम्हें उन तमाम आ'माल से ख़बरदार फ़रमा देगा जो तुम किया करते थे।

سَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ اِذَا انْقَلَبْتُمْ اِلَيْهِمْ لِتُعْرِضُوْا عَنْهُمْ ؕ فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمْ ؕ اِنَّهُمْ رِجْسٌ ۫ وَّمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۹۵﴾

95. अब वोह तुम्हारे लिए अल्लाहकी क़स्में खाएंगे जब तुम उनकी तरफ़ पलट कर जाओगे ताकि तुम उनसे दरगुज़र करो, पस तुम उनकी तरफ़ इल्तिफ़ात ही न करो बेशक वोह पलीद हैं और उनका ठिकाना जहन्नम है येह उसका बदला है जो वोह कमाया करते थे।

يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ ۚ فَاِنْ تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَرْضٰى عَنِ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ﴿۹۶﴾

96. येह तुम्हारे लिए क़स्में खाते हैं ताकि तुम उनसे राज़ी हो जाओ, सो (ऐ मुसलमानो!) अगर तुम उन से राज़ी भी हो जाओ तो (भी) अल्लाह ना फ़रमान क़ौम से राज़ी नहीं होगा।

اَلْاَعْرَابُ اَشَدُّ كُفْرًا وَّنِفَاقًا وَّاَجْدَرُ اَلَّا يَعْلَمُوْا حُدُوْدَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۹۷﴾

97. (येह) देहाती लोग सख़्त काफ़िर और सख़्त मुनाफ़िक़ हैं और (अपने कुफ़्रो निफ़ाक़की शिद्दत के बाइस) इसी क़ाबिल हैं कि वोह इन हुदूदो अह्काम से जाहिल रहें जो अल्लाहने अपने रसूल (ﷺ) पर नाज़िल फ़रमाए हैं, और अल्लाह ख़ूब जाननेवाला, बड़ी हिक्मतवाला है।

وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يَّتَّخِذُ مَا

98. और उन देहाती गँवारों में से वोह शख़्स (भी) है जो

يُنْفِقُ مَغْرَمًا وَّ يَتَرَبَّصُ بِكُمُ الدَّوَآئِرَ ؕ عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۹۸﴾

उस (माल) को तावान क़रार देता है जिसे वोह (राहे ख़ुदा में) ख़र्च करता है और तुम पर ज़माने की गरदिशों (या'नी मसाइबो आलाम) का इन्तिज़ार करता रेहता है, (बला-व-मुसीबत की) बुरी गर्दिश उन्हीं पर है, और अल्लाह ख़ूब सुननेवाला ख़ूब जाननेवाला है।

وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرُبٰتٍ عِنْدَ اللّٰهِ وَصَلَوٰتِ الرَّسُوْلِ ؕ اَلَآ اِنَّهَا قُرْبَةٌ لَّهُمْ ؕ سَيُدْخِلُهُمُ اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۹۹﴾ ع

99. और बादिया नशीनों में (ही) वोह शख़्स (भी) है जो अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान रखता है और जो कुछ (राहे ख़ुदामें) ख़र्च करता है उसे अल्लाहके हूज़ुर तक़र्रुब और रसूल (ﷺ) की (रह्मत भरी) दुआएं लेने का ज़रीआ समझता है, सुन लो, बेशक वोह उनके लिए बाइसे क़ुर्बे इलाही है, जल्द ही अल्लाह उन्हें अपनी रह्मतमें दाख़िल फ़रमा देगा । बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ ۙ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿۱۰۰﴾

100. मुहाजिरीन और उनके मददगार (अन्सार) में से सब्क़त ले जानेवाले, सब से पहले ईमान लानेवाले और दर्जए एहूसान के साथ उनकी पैरवी करने वाले, अल्लाह उन (सब) से राज़ी हो गया और वोह (सब) उससे राज़ी हो गए और उसने उनके लिए जन्नतें तैयार फ़रमा रखी हैं जिन के नीचे नेहरें बेह रही हैं, वोह उन में हमेशा हमेशा रेहनेवाले हैं, येही ज़बरदस्त कामयाबी है।

وَمِمَّنْ حَوْلَكُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ مُنٰفِقُوْنَ ۛؕ وَمِنْ اَهْلِ الْمَدِيْنَةِ ۛ مَرَدُوْا عَلَى النِّفَاقِ ۫ لَا تَعْلَمُهُمْ ؕ نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ ؕ سَنُعَذِّبُهُمْ

101. और (मुसलमानो!) तुम्हारे गिर्दो नवाह़ के देहाती गँवारों में बा'ज़ मुनाफ़िक़ हैं और बा'ज़ बाशिन्दगाने मदीना भी, येह लोग निफ़ाक़ पर अड़े हुए हैं, आप उन्हें (अब तक) नहीं जानते हम उन्हें जानते हैं। (बाद में हुज़ूर ﷺ को भी जुमला मुनाफ़िक़ीन का इल्म और मा'रेफ़त अ़ता कर दी गई) अ़नक़रीब हम उन्हें दो मर्तबा (दुनिया

مَّرَّتَيۡنِ ثُمَّ يُرَدُّوۡنَ اِلٰى عَذَابٍ عَظِيۡمٍ ۝١٠١

ही में) अ़ज़ाब देंगे ★फिर वोह (क़ियामत में) बड़े अ़ज़ाब की तरफ़ पलटाए जाएंगे।

وَ اٰخَرُوۡنَ اعۡتَرَفُوۡا بِذُنُوۡبِهِمۡ خَلَطُوۡا عَمَلًا صَالِحًا وَّ اٰخَرَ سَيِّئًا ؕ عَسَى اللّٰهُ اَنۡ يَّتُوۡبَ عَلَيۡهِمۡ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ۝١٠٢

102. और दूसरे वोह लोग कि (जिन्होंने) अपने गुनाहों का ए'तिराफ़ कर लिया है उन्होंने कुछ नेक अ़मल और दूसरे बुरे कामों को (ग़लती से) मिला जुला दिया है, क़रीब है कि अल्लाह उनकी तौबा क़ुबूल फ़रमा ले, बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

خُذۡ مِنۡ اَمۡوَالِهِمۡ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمۡ وَ تُزَكِّيۡهِمۡ بِهَا وَصَلِّ عَلَيۡهِمۡ ؕ اِنَّ صَلٰوتَكَ سَكَنٌ لَّهُمۡ ؕ وَ اللّٰهُ سَمِيۡعٌ عَلِيۡمٌ ۝١٠٣

103. आप उनके अम्वाल में से सदक़ा (ज़कात) वसूल कीजिए कि आप इस (सदक़े) के बाइस उन्हें(गुनाहोंसे) पाक फ़रमा दें और उन्हें (ईमानो माल की पाकीज़गी से) बरकत बख़्श दें और उनके हक़्क़में दुआ़ फ़रमाएं, बेशक आपकी दुआ़ उनके लिए(बाइसे) तस्कीन है, और अल्लाह ख़ूब सुननेवाला ख़ूब जाननेवाला है।

اَلَمۡ يَعۡلَمُوۡۤا اَنَّ اللّٰهَ هُوَ يَقۡبَلُ التَّوۡبَةَ عَنۡ عِبَادِهٖ وَ يَاۡخُذُ الصَّدَقٰتِ وَ اَنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيۡمُ ۝١٠٤

104. क्या वोह नहीं जानते कि बेशक अल्लाह ही तो अपने बंदोंसे (उनकी) तौबा क़ुबूल फ़रमाता है और सदक़ात (या'नी ज़कातो ख़ैरात अपने दस्ते क़ुदरत से) वुसूल फ़रमाता है और येह कि अल्लाह ही बड़ा तौबा क़ुबूल फ़रमानेवाला निहायत महरबान है।

وَقُلِ اعۡمَلُوۡا فَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمۡ وَ رَسُوۡلُهٗ وَ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ ؕ وَسَتُرَدُّوۡنَ

105. और फ़रमा दीजिए : तुम अ़मल करो, सो अ़नक़रीब तुम्हारे अ़मल को अल्लाह (भी) देख लेगा और उसका रसूल (ﷺ भी) और अहले ईमान (भी) और

★ एक बार जब उनकी पेहचान करा दी गई और हुज़ूर ﷺ ने ख़ुत्बए जुमुआ़ के दौरान इन मुनाफ़िक़ीन को नाम ले ले कर मस्जिदसे निकाल दिया, येह पहला अ़ज़ाब बसूरते ज़िल्लतो रुस्वाई था और दूसरा अ़ज़ाब, बसूरते हलाकतो मुक़ातिला हुआ जिसका हुक्म बादमें आया।

اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٠٥﴾

तुम अ़नक़रीब हर पोशीदह और ज़ाहिर को जाननेवाले (रब) की तरफ़ लौटाए जाओगे, सो वोह तुम्हें उन आ'मालसे ख़बरदार फ़रमा देगा जो तुम करते रेहते थे।

وَاٰخَرُوْنَ مُرْجَوْنَ لِاَمْرِ اللّٰهِ اِمَّا يُعَذِّبُهُمْ وَ اِمَّا يَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١٠٦﴾

106. और कुछ दूसरे (भी) हैं जो अल्लाह के (आइन्दह) हुक्म के लिए मुअख़्ख़र रखे गए हैं वोह या तो उन्हें अज़ाब देगा या उनकी तौबा कुबूल फ़रमा लेगा, और अल्लाह खूब जाननेवाला बड़ी हिक्मतवाला है।

وَ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَّ كُفْرًا وَّ تَفْرِيْقًا بَيْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ اِرْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ مِنْ قَبْلُ ۗ وَلَيَحْلِفُنَّ اِنْ اَرَدْنَآ اِلَّا الْحُسْنٰى ۗ وَ اللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١٠٧﴾

107. और (मुनाफ़िक़ीन में से वोह भी हैं) जिन्होंने एक मस्जिद तैयार की है (मुसलमानों को) नुक़्सान पहुंचाने और कुफ़्र (को तक़्वियत देने) और अहले ईमान के दरमियान तफ़्रिक़ा पैदा करने और उस शख़्स की घातकी जगह बनाने की ग़रज़ से जो अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) से पहले ही से जंग कर रहा है, और वोह ज़रूर क़स्में खाएंगे कि हमने (इस मस्जिद के बनाने से) सिवाए भलाई के और कोई इरादा नहीं किया, और अल्लाह गवाही देता है कि वोह यक़ीनन झूटे हैं।

لَا تَقُمْ فِيْهِ اَبَدًا ۗ لَمَسْجِدٌ اُسِّسَ عَلَى التَّقْوٰى مِنْ اَوَّلِ يَوْمٍ اَحَقُّ اَنْ تَقُوْمَ فِيْهِ ۗ فِيْهِ رِجَالٌ يُّحِبُّوْنَ اَنْ يَّتَطَهَّرُوْا ۗ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ ﴿١٠٨﴾

108. (ऐ हबीब!) आप उस (मस्जिदके नाम पर बनाई गई इमारत) में कभी भी खड़े न हों। अल्बत्ता वोह मस्जिद, जिसकी बुनियाद पहले ही दिन से तक़्वा पर रखी गई है, हक़दार है कि आप उसमें क़ियाम फ़रमा हों। उसमें ऐसे लोग हैं जो (ज़ाहिरन-व-बातिनन) पाक रहने को पसंद करते हैं, और अल्लाह तहारत शिआ़र लोगोंसे मुहब्बत फ़रमाता है।

اَفَمَنْ اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ عَلٰى تَقْوٰى مِنَ اللّٰهِ وَ رِضْوَانٍ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ عَلٰى شَفَا جُرُفٍ

109. भला वोह शख़्स जिसने अपनी इमारत (या'नी मस्जिद) की बुनियाद अल्लाह से डरने और (उसकी) रज़ाओ ख़ुशनूदी पर रखी, बेहतर है या वोह शख़्स जिसने अपनी इमारत की बुनियाद ऐसे गढ़े के किनारे पर रखी जो गिरनेवाला है। सो वोह (इमारत) उस मे'मार के साथ

هَارٍ فَانْهَارَ بِهٖ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٠٩﴾

ही आतिशे दोज़ख़ में गिर पड़ी, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं फ़रमाता।

لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِيْ بَنَوْا رِيْبَةً فِيْ قُلُوْبِهِمْ اِلَّآ اَنْ تَقَطَّعَ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١١٠﴾

110. उनकी इमारत जिसे उन्होंने (मस्जिद के नाम पर) बना रखा है हमेशा उनके दिलोंमें (शक और निफ़ाक़ के बाइस) खटकती रहेगी सिवाए इसके कि उनके दिल (मुसल्सल ख़राश की वजह से) पारह पारह हो जाएं, और अल्लाह खूब जाननेवाला बड़ी हिक्मतवाला है।

اِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْفُسَهُمْ وَ اَمْوَالَهُمْ بِاَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ ؕ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيَقْتُلُوْنَ وَ يُقْتَلُوْنَ ۫ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِي التَّوْرٰىةِ وَ الْاِنْجِيْلِ وَ الْقُرْاٰنِ ؕ وَمَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ مِنَ اللّٰهِ فَاسْتَبْشِرُوْا بِبَيْعِكُمُ الَّذِيْ بَايَعْتُمْ بِهٖ ؕ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿١١١﴾

111. बेशक अल्लाहने अह्ले ईमानसे उनकी जानें और उनके माल, उनके लिए जन्नतके इवज़ ख़रीद लिए हैं, (अब) वोह अल्लाह की राह में क़िताल करते हैं, सो वोह (हक़ की ख़ातिर) क़त्ल करते हैं और (खुद भी) क़त्ल किए जाते हैं। (अल्लाहने) अपने ज़िम्मए करम पर पुख़्ता वा'दा (लिया) है, तौरात में (भी) इन्जीलमें (भी) और क़ुरआन में (भी), और कौन अपने वा'दे को अल्लाह से ज़ियादह पूरा करनेवाला है, सो (ईमानवालो!) तुम अपने सौदे पर खुशियां मनाओ जिसके इवज़ तुमने (जानोमाल को) बेचा है और येही तो ज़बरदस्त कामयाबी है।

اَلتَّآئِبُوْنَ الْعٰبِدُوْنَ الْحٰمِدُوْنَ السَّآئِحُوْنَ الرّٰكِعُوْنَ السّٰجِدُوْنَ الْاٰمِرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ النَّاهُوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ الْحٰفِظُوْنَ لِحُدُوْدِ اللّٰهِ ؕ وَ بَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١١٢﴾

112. (येह मोमिनीन जिन्होंने अल्लाह से उख़रवी सौदा कर लिया है) तौबा करनेवाले, इबादत गुज़ार,(अल्लाह की) हम्दो सना करनेवाले, दुन्यवी लिज़्ज़तों से कनारा कश रोज़हदार, (खुशूओ खुज़ूअ से) रुकूअ करनेवाले, (क़ुर्बे इलाही की ख़ातिर) सुजूद करनेवाले, नेकीका हुक्म करनेवाले और बुराई से रोकनेवाले और अल्लाहकी (मुक़र्रर कर्दह) हुदूद की हिफ़ाज़त करनेवाले हैं, और उन अह्ले ईमानको खुश ख़बरी सुना दीजिए।

مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ

113. नबी (ﷺ) और ईमानवालों की शानके लाइक़

يَّسْتَغْفِرُوْا لِلْمُشْرِكِيْنَ وَلَوْ كَانُوْٓا اُولِيْ قُرْبٰى مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿١١٣﴾

नहीं कि मुशरिकों के लिए दुआए मग़फ़िरत करें अगरचे वोह क़राबत दार ही हों इसके बाद कि उनके लिए वाज़ेह हो चुका कि वोह (मुशरिकीन) अहले जहन्नम हैं।

وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ اِلَّا عَنْ مَّوْعِدَةٍ وَّعَدَهَآ اِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗٓ اَنَّهٗ عَدُوٌّ لِّلّٰهِ تَبَرَّاَ مِنْهُ ۭ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَاَوَّاهٌ حَلِيْمٌ ﴿١١٤﴾

114. और इब्राहीम (عليه السلام) का अपने बाप (या'नी चचा आज़र, जिसने आपको पाला था) के लिए दुआए मग़फ़िरत करना सिर्फ़ उस वा'दे की ग़रज़ से था जो वोह उससे कर चुके थे, फिर जब उन पर येह ज़ाहिर हो गया कि वोह अल्लाह का दुश्मन है तो वोह उससे बेज़ार हो गए (उससे ला तअ़ल्लुक़ हो गए और फिर कभी उसके हक़्क़ में दुआ़ न की)। बेशक इब्राहीम (عليه السلام) बड़े दर्दमंद (गिर्यओ ज़ारी करनेवाले और) निहायत बुर्दबार थे।

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُضِلَّ قَوْمًۢا بَعْدَ اِذْ هَدٰىهُمْ حَتّٰى يُبَيِّنَ لَهُمْ مَّا يَتَّقُوْنَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١١٥﴾

115. और अल्लाह की शान नहीं कि वोह किसी क़ौम को गुमराह कर दे इसके बाद कि उसने उन्हें हिदायत से नवाज़ दिया हो, यहां तक कि वोह उनके लिए वोह चीज़ें वाज़ेह फ़रमा दे जिनसे उन्हें परहेज़ करना चाहिए, बेशक अल्लाह हर चीज़ को खूब जाननेवाला है।

اِنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۭ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿١١٦﴾

116. बेशक अल्लाह ही के लिए आस्मानों और ज़मीनकी सारी बादशाही है। (वोही) जिलाता और मारता है और तुम्हारे लिए अल्लाहके सिवा न कोई दोस्त है और न कोई मददगार (जो अम्रे इलाही के खिलाफ़ तुम्हारी हिमायत कर सके)।

لَقَدْ تَّابَ اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ فِيْ سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْۢ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيْغُ قُلُوْبُ فَرِيْقٍ مِّنْهُمْ

117. यक़ीनन अल्लाहने नबी (ए-मुअ़ज़्ज़म صلى الله عليه وسلم)पर रह्मतसे तवज्जोह फ़रमाई और उन मुहाजिरीन और अन्सार पर (भी) जिन्होंने (ग़ज़्वए तबूक की) मुश्किल घड़ी में (भी) आप (صلى الله عليه وسلم) की पैरवी की उस(सूरते हाल) के बाद कि क़रीब था कि उनमें से एक गिरोह के

ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّهُ بِهِمْ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿١١٧﴾

दिल फिर जाते, फिर वोह उन पर लुत्फ़ो रह्मत से मुतवज्जह हुआ, बेशक वोह उन पर निहायत शफ़ीक़, निहायत महरबान है।

وَعَلَى الثَّلَاثَةِ الَّذِينَ خُلِّفُوا ۚ حَتَّىٰ إِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ أَنفُسُهُمْ وَظَنُّوا أَن لَّا مَلْجَأَ مِنَ اللَّهِ إِلَّا إِلَيْهِ ۚ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوبُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿١١٨﴾

118. और उन तीन शख़्सों पर (भी नज़रे रह्मत फ़रमा दी) जिन (के फ़ैसले) को मुअख़्ख़र किया गया था यहां तक कि जब ज़मीन बावजूद कुशादगी के उन पर तंग हो गई और (खुद) उनकी जानें (भी) उन पर दूभर हो गईं और उन्हें यक़ीन हो गया कि अल्लाह (के अ़ज़ाब) से पनाहका कोई ठिकाना नहीं बजुज़ उसकी तरफ़ (रुजूअ़ के), तब अल्लाह उन पर लुत्फ़ो करम से माइल हुआ ताकि वोह (भी) तौबाओ रुजूअ़ पर क़ाइम रहें, बेशक अल्लाह ही बड़ा तौबा क़ुबूल फ़रमाने वाला निहायत महरबान है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَكُونُوا مَعَ الصَّادِقِينَ ﴿١١٩﴾

119. ऐ ईमान वालो ! अल्लाह से डरते रहो और अह्ले सिद्क़ (की मइय्यत) में शामिल रहो।

مَا كَانَ لِأَهْلِ الْمَدِينَةِ وَمَنْ حَوْلَهُم مِّنَ الْأَعْرَابِ أَن يَتَخَلَّفُوا عَن رَّسُولِ اللَّهِ وَلَا يَرْغَبُوا بِأَنفُسِهِمْ عَن نَّفْسِهِ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ لَا يُصِيبُهُمْ ظَمَأٌ وَلَا نَصَبٌ وَلَا مَخْمَصَةٌ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا يَطَئُونَ مَوْطِئًا يَغِيظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُونَ مِنْ عَدُوٍّ نَّيْلًا إِلَّا كُتِبَ لَهُم بِهِ عَمَلٌ صَالِحٌ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٢٠﴾

120. अह्ले मदीना और उनके गिर्दो नवाह् के (रेहने वाले) देहाती लोगों के लिए मुनासिब न था कि वोह रसूलुल्लाह (ﷺ) से (अलग हो कर) पीछे रेह जाएं और न येह कि उनकी जाने (मुबारक) से ज़ियादह अपनी जानों से रग़बत रखें, येह (हुक्म) इस लिए है कि उन्हें अल्लाह की राह में जो प्यास (भी) लगती है ओर जो मशक़्क़त (भी) पहुंचती है और जो भूक (भी) लगती है और जो किसी ऐसी जगह पर चलते हैं जहां का चलना काफ़िरों को ग़ज़बनाक करता है और दुश्मनसे जो कुछ भी पाते हैं (ख़्वाह क़त्ल और ज़ख़्म हो या माले ग़नीमत वग़ैरह) मगर येह कि हर एक बातके बदलेमें उनके लिए एक नेक अ़मल लिखा जाता है । बेशक अल्लाह नेकूकारों का अज्र ज़ाए' नहीं फ़रमाता।

وَلَا يُنْفِقُوْنَ نَفَقَةً صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً وَّلَا يَقْطَعُوْنَ وَادِيًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۲۱﴾

121. और न येह कि वोह (मुजाहिदीन) थोड़ा ख़र्चा करते हैं और न बड़ा और न (ही) किसी मैदान को (राहे खुदा में) तय करते हैं मगर उनके लिए (येह सब सफ़्रों सफ़र) लिख दिया जाता है ताकि अल्लाह उन्हें (हर उस अ़मल की) बेहतर जज़ा दे जो वोह किया करते थे।

وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُوْنَ لِيَنْفِرُوْا كَآفَّةً ؕ فَلَوْلَا نَفَرَ مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَآئِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوْا فِی الدِّيْنِ وَلِيُنْذِرُوْا قَوْمَهُمْ اِذَا رَجَعُوْۤا اِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُوْنَ ﴿۱۲۲﴾

122.. और येह तो हो नहीं सक्ता कि सारे के सारे मुसलमान (एक साथ) निकल खड़े हों तो उनमेंसे हर एक गिरोह (या क़बीले) की एक जमाअ़त क्यों न निक्ले कि वोह लोग दीनमें तफ़क्कुह (या'नी खूब फ़हमो बसीरत) हासिल करें और वोह अपनी क़ौमको डराएं जब वोह उनकी तरफ़ पलट कर आएं ताकि वोह (गुनाहों और नाफ़रमानी की ज़िन्दगी से) बचें।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَاتِلُوا الَّذِيْنَ يَلُوْنَكُمْ مِّنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوْا فِيْكُمْ غِلْظَةً ؕ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۲۳﴾

123. ऐ ईमानवालो ! तुम काफ़िरों में से ऐसे लोगों से जंग करो जो तुम्हारे क़रीब हैं (या'नी जो तुम्हें और तुम्हारे दीनको बराहे रास्त नुक़्सान पहुंचा रहे हैं) और (जिहाद ऐसा और उस वक़्त हो कि) वोह तुम्हारे अंदर (ताक़तो शुजाअ़त की) सख़्ती पाएं, और जान लो कि अल्लाह परहेज़गारों के साथ है।

وَاِذَا مَاۤ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ اَيُّكُمْ زَادَتْهُ هٰذِهٖۤ اِيْمَانًا ۚ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَزَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّهُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿۱۲۴﴾

124. और जब भी कोई सूरत नाज़िल की जाती है तो उन (मुनाफ़िक़ों) में से बा'ज़ (शरारतन) येह केहते हैं कि तुम में से कौन है जिसे इस (सूरत) ने ईमानमें ज़ियादती बख़्शी है, पस जो लोग ईमान ले आए हैं सो उस(सूरत)ने उनके ईमान को ज़ियादह कर दिया और वोह (उस कैफ़िय्यते ईमानी पर) खुशियां मनाते हैं।

وَاَمَّا الَّذِيْنَ فِیْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ

125. और जिन लोगों के दिलों में बीमारी है तो उस

فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا اِلٰى رِجْسِهِمْ وَ مَاتُوْا وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿١٢٥﴾

(सूरत) ने उनकी ख़बासत (कुफ़्रो निफ़ाक़) पर मज़ीद पलीदी (और ख़बासत) बढ़ा दी और वोह इस ह़ालत में मरे कि काफ़िर ही थे।

اَوَلَا يَرَوْنَ اَنَّهُمْ يُفْتَنُوْنَ فِيْ كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً اَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوْبُوْنَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿١٢٦﴾

126. क्या वोह नहीं देखते कि वोह हर साल में एक या दो बार मुसीबतमें मुब्तिला किए जाते हैं फिर (भी) वोह तौबा नहीं करते और न ही वोह नसीह़त पकड़ते हैं।

وَاِذَا مَاۤ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ نَّظَرَ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ ؕ هَلْ يَرٰىكُمْ مِّنْ اَحَدٍ ثُمَّ انْصَرَفُوْا ؕ صَرَفَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿١٢٧﴾

127. और जब भी कोई सूरत नाज़िल की जाती है तो वोह एक दूसरे की तरफ़ देखते हैं, (और इशारों से पूछते हैं) कि क्या तुम्हें कोई देख तो नहीं रहा फिर वोह पलट जाते हैं। अल्लाहने उनके दिलों को पलट दिया है क्यों कि येह वोह लोग हैं जो समझ नहीं रखते।

لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢٨﴾

128. बेशक तुम्हारे पास तुम में से (एक बा अज़मत) रसूल (ﷺ) तशरीफ़ लाए। तुम्हारा तक्लीफ़ो मशक़्क़त में पड़ना उन पर सख़्त गरां (गुज़रता) है। (ऐ लोगो !) वोह तुम्हारे लिए (भलाई और हिदायत के) बड़े तालिबो आरज़ूमंद रेहते हैं (और) मोमिनों के लिए निहायत (ही) शफ़ीक़ बेहद रह़म फ़रमानेवाले हैं।

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ ۖ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿١٢٩﴾

129. अगर(इन बे पनाह करम नवाज़ियों के बावजूद) फिर (भी) वोह रूगर्दानी करें तो फ़रमा दीजिए : मुझे अल्लाह काफ़ी है उसके सिवा कोई मा'बूद नहीं, मैं उसी पर भरोसा कि ए हुए हूं और वोह अर्शे अ़ज़ीम का मालिक है।

आयातुहा 109	10 सूरतु यूनुस मक्किय्यतुन 5	रुकूआतुहा 11

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरू जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

الٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ﴿١﴾

1. अलिफ़ लाम रा (ह़क़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं), येह ह़िक्मतवाली किताब की आयतें हैं।

أَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا أَنْ أَوْحَيْنَآ إِلَىٰ رَجُلٍ مِّنْهُمْ أَنْ أَنذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِينَ ءَامَنُوٓا أَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِندَ رَبِّهِمْ ط قَالَ الْكٰفِرُونَ إِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ مُّبِينٌ ﴿٢﴾

وقف النبي صلى الله عليه وسلم

2. क्या येह बात लोगों के लिए तअ्ज्जुब ख़ेज़ है कि हमने उनही में से एक मर्दे (कामिल) की तरफ़ वही भेजी कि आप (भूले भटके हुए) लोगों को (अ़ज़ाबे इलाही का) डर सुनाएं और ईमानवालों को खुशख़बरी सुनाएं कि उनके लिए उनके रबकी बारगाह में बुलंद पाया (या'नी ऊंचा मर्तबा) है, काफ़िर केहने लगे : बेशक येह शख़्स तो खुला जादूगर है।

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ ط مَا مِن شَفِيعٍ إِلَّا مِنۢ بَعْدِ إِذْنِهِ ط ذٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ط أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٣﴾

3. यक़ीनन तुम्हारा रब अल्लाह है जिसने आस्मानों और ज़मीन (की बालाई-व-ज़ेरीं काइनात) को छ दिनों (या'नी छ मुद्दतों या मरहलों) में (तद्रीजन) पैदा फ़रमाया फिर वोह अर्श पर (अपने इक़्तिदार के साथ) जल्वा अफ़रोज़ हुआ (या'नी तख़्लीक़े काइनात के बाद उसके तमाम अ़वालिम और अजराम में अपने क़ानून और निज़ाम के इजरा की सूरत में मु-त-मक्किन हुआ) वोही हर काम की तदबीर फ़रमाता है।(या'नी हर चीज़को एक निज़ामके तहत चलाता है उसके हुज़ूर) उसकी इजाज़त के बिग़ैर कोई सिफ़ारिश करनेवाला नहीं, येही (अ़ज़्मतो क़ुदरतवाला)अल्लाह तुम्हारा रब है, सो तुम इसी की इबादत करो, पस क्या तुम (क़ुबूले नसीहत के लिए) ग़ौर नहीं करते ?

إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا ط وَعْدَ اللَّهِ حَقًّا ط إِنَّهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ ءَامَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ بِالْقِسْطِ ط وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿٤﴾

4. (लोगो) तुम सब को उसी की तरफ़ लौट कर जाना है (येह) अल्लाह का सच्चा वा'दा है। बेशक वोही पैदाइश की इब्तिदा करता है फिर वोही उसे दोहराएगा ताकि उन लोगों को जो ईमान लाए और नेक अ़मल किए, इन्साफ़ के साथ जज़ा दे और जिन लोगोंने कुफ़्र किया उनके लिए पीने को खौलता हुआ पानी और दर्दनाक अ़ज़ाब है, उसका बदला जो वोह कुफ़्र किया करते थे।

هُوَ الَّذِیْ جَعَلَ الشَّمْسَ ضِیَآءً وَّ الْقَمَرَ نُوْرًا وَّ قَدَّرَهٗ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِیْنَ وَ الْحِسَابَ ؕ مَا خَلَقَ اللّٰهُ ذٰلِكَ اِلَّا بِالْحَقِّ ۚ یُفَصِّلُ الْاٰیٰتِ لِقَوْمٍ یَّعْلَمُوْنَ ۝٥

5. वोही है जिसने सूरजको रौशनी (का मंबा') बनाया और चांद को (उससे) रौशन (किया) और उसके लिए (कमो बेश दिखाई देने की) मंज़िलें मुक़र्रर कीं ताकि तुम बरसोंका शुमार और (अवक़ात का) हिसाब मा'लूम कर सको, और अल्लाहने येह (सब कुछ) नहीं पैदा फ़रमाया मगर दुरुस्त तदबीर के साथ, वोह (उन काइनाती हक़ीक़तों के ज़रीए अपनी ख़ालिक़िय्यत, वहदानिय्यत और क़ुदरत की) निशानियां उन लोगों के लिए तफ़्सील से वाज़ेह फ़रमाता है जो इल्म रखते हैं।

اِنَّ فِی اخْتِلَافِ الَّیْلِ وَ النَّهَارِ وَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّتَّقُوْنَ ۝٦

6.बेशक रात और दिन के बदलते रेहनेमें और उन (जुम्ला) चीज़ोंमें जो अल्लाहने आस्मानों और ज़मीनमें पैदा फ़रमाई हैं (इसी तरह) उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो तक़्वा रखते हैं।

اِنَّ الَّذِیْنَ لَا یَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا وَ رَضُوْا بِالْحَیٰوةِ الدُّنْیَا وَ اطْمَاَنُّوْا بِهَا وَ الَّذِیْنَ هُمْ عَنْ اٰیٰتِنَا غٰفِلُوْنَ ۝٧

7. बेशक जो लोग हमसे मिलने की उम्मीद नहीं रखते और दुन्यवी ज़िन्दगी से खुश हैं और उसीसे मुत्मइन हो गए हैं और जो हमारी निशानियोंसे ग़ाफ़िल हैं।

اُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوْا یَكْسِبُوْنَ ۝٨

8. उन्हीं लोगों का ठिकाना जहन्नम है उन आ'मालके बदले में जो वोह कमाते रहे।

اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ یَهْدِیْهِمْ رَبُّهُمْ بِاِیْمَانِهِمْ ۚ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ فِیْ جَنّٰتِ النَّعِیْمِ ۝٩

9. बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे उन्हें उनका रब उनके ईमान के बाइस (जन्नतों तक) पहुंचा देगा, जहां उन (की रहाइशगाहों) के नीचे से नेहरें बेह रही होंगी (येह ठिकाने) उख़रवी ने'मत के बागात में (होंगे)।

دَعْوٰىهُمْ فِیْهَا سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَ تَحِیَّتُهُمْ فِیْهَا سَلٰمٌ ۚ وَ اٰخِرُ دَعْوٰىهُمْ

10. (ने'मतों और बहारों को देख कर) उन (जन्नतों) में उनकी दुआ़ (येह) होगी "ऐ अल्लाह ! तू पाक है " और उसमें उनकी आपसमें दुआ़ए ख़ैर (का कलिमा) "सलाम" होगा (या अल्लाह तआ़ला और फ़रिश्तों की

اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠﴾

तरफ़से उनके लिए कलिमऐ इस्तिक़्बाल ''सलाम'' होगा।) और उनकी दुआ़ (उनके कलिमात पर) ख़त्म होगी कि ''तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो सब जहानों का परवरदिगार है''।

وَ لَوْ يُعَجِّلُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ لَقُضِيَ اِلَيْهِمْ اَجَلُهُمْ ؕ فَنَذَرُ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١١﴾

11.और अगर अल्लाह (उन काफ़िर) लोगों को बुराई (या'नी अ़ज़ाब) पहुंचाने में जल्दबाज़ी करता, जैसे वोह तलबे ने'मत में जल्दबाज़ी करते हैं तो यक़ीनन उनकी मीआ़दे (उ़म्र) उनके हक़ में (जल्द) पूरी कर दी गई होती (ताकि वोह मर के जल्द दोज़ख़ में पहुंचें), बल्कि हम ऐसे लोगों को जो हमसे मुलाक़ात की तवक़्क़ो' नहीं रखते उनकी सरकशीमें छोड़े रखते हैं कि वोह भटकते रहें।

وَ اِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنْۢبِهٖۤ اَوْ قَاعِدًا اَوْ قَآئِمًا ۚ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهٗ مَرَّ كَاَنْ لَّمْ يَدْعُنَاۤ اِلٰى ضُرٍّ مَّسَّهٗ ؕ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِيْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢﴾

12. और जब (ऐसे) इन्सानको कोई तक्लीफ़ पहुंचती है तो वोह हमें अपने पहलू पर लेटे या बैठे या खड़े पुकारता है फिर जब हम उससे उसकी तक्लीफ़ दूर कर देते हैं तो वोह (हमें भुला कर इस तरह) चल देता है गोया उसने किसी तक्लीफ़ में जो उसे पहुंची थी हमें (कभी) पुकारा ही नहीं था। इसी तरह ह़दसे बढ़नेवालों के लिए उनके (ग़लत) आ'माल आरास्ता करके दिखाए गए हैं जो वोह करते रहे थे।

وَ لَقَدْ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا ۙ وَ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَ مَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٣﴾

13. और बेशक हमने तुमसे पहले (भी बहुत सी) क़ौमों को हलाक कर दिया जब उन्होंने ज़ुल्म किया, और उनके रसूल उनके पास वाज़ेह़ निशानियां ले कर आए मगर वोह ईमान लाते ही न थे, इसी तरह़ हम मुजरिम क़ौम को (उनके अ़मल की) सज़ा देते हैं।

ثُمَّ جَعَلْنٰكُمْ خَلٰٓئِفَ فِي الْاَرْضِ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴﴾

14. फिर हमने उनके बाद तुम्हें ज़मीन में (उनका) जा नशीन बनाया ताकि हम देखें कि (अब) तुम कैसे अ़मल करते हो।

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيَاتُنَا بَيِّنٰتٍ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا ائْتِ بِقُرْاٰنٍ غَيْرِ هٰذَآ اَوْ بَدِّلْهُ ؕ قُلْ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ اَنْ اُبَدِّلَهٗ مِنْ تِلْقَآئِ نَفْسِيْ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ ۚ اِنِّيْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿۱۵﴾

15. और जब उन पर हमारी रौशन आयतें तिलावत की जाती हैं तो वोह लोग जो हमसे मुलाक़ात की तवक़्क़ो' नहीं रखते, केहते हैं कि इस (क़ुरआन) के सिवा कोई और क़ुरआन ले आइए या इसे बदल दीजिए, (ऐ नबिय्ये मुकर्रम !) फ़रमा दें : मुझे हक़ नहीं कि मैं उसे अपनी तरफ़से बदल दूं मैं तो फ़क़त जो मेरी तरफ़ वही की जाती है (उसकी) पैरवी करता हूं, अगर मैं अपने रबकी नाफ़रमानी करूं तो बेशक मैं बड़े दिनके अ़ज़ाब से डरता हूं।

قُلْ لَّوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا تَلَوْتُهٗ عَلَيْكُمْ وَلَآ اَدْرٰىكُمْ بِهٖ ۖ فَقَدْ لَبِثْتُ فِيْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۶﴾

16. फ़रमा दीजिए : अगर अल्लाह चाहता तो न ही मैं इस (क़ुरआन)को तुम्हारे ऊपर तिलावत करता और न वोह (ख़ुद) तुम्हें इससे बा ख़बर फ़रमाता, बेशक मैं इस (क़ुरआन के उतरने) से क़ब्ल (भी) तुम्हारे अंदर उ़म्र (का एक हिस्सा) बसर कर चुका हूं, सो क्या तुम अ़क्ल नहीं रखते।

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿۱۷﴾

17. पस उस शख़्स से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूटा बोहतान बांधे या उसकी आयतों को झुटला दे। बेशक मुजरिम लोग फ़लाह नहीं पाएंगे।

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ هٰٓؤُلَآءِ شُفَعَآؤُنَا عِنْدَ اللّٰهِ ؕ قُلْ

18. और (मुशरिकीन) अल्लाह के सिवा उन(बुतों)को पूजते हैं जो न उन्हें नुक़्सान पहुंचा सक्ते हैं और न उन्हें नफ़ा' पहुंचा सक्ते हैं और (अपनी बातिल पूजा के जवाज़में) केहते हैं कि येह (बुत) अल्लाहके हुज़ूर हमारे सिफ़ारिशी हैं, फ़रमा दीजिए : क्या तुम अल्लाहको उस

أَتُنَبِّـُٔونَ ٱللَّهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَلَا فِى ٱلْأَرْضِ ۚ سُبْحَٰنَهُۥ وَتَعَٰلَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿١٨﴾

(शफ़ाअ़ते अस्नाम के मन घड़त) मफ़रूज़े से आगाह कर रहे हो जिस (के वजूद) को वोह न आस्मानों में जानता है और न ज़मीन में (या'नी उसकी बारगाह में किसी बुतका सिफ़ारिश करना उसके इल्म में नहीं है)। उसकी ज़ात पाक है और वोह उन सब चीज़ों से बुलंदो बाला है जिन्हें येह (उसका) शरीक गरदान्ते हैं।

وَمَا كَانَ ٱلنَّاسُ إِلَّآ أُمَّةً وَٰحِدَةً فَٱخْتَلَفُوا۟ ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِن رَّبِّكَ لَقُضِىَ بَيْنَهُمْ فِيمَا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١٩﴾

19- और सारे लोग (इब्तिदा) में एक ही जमाअ़त थे फिर (बाहम इख़्तिलाफ़ कर के) जुदा, जुदा हो गए, और अगर आपके रबकी तरफ़से एक बात पहले से तय न हो चुकी होती (कि अ़ज़ाब में जल्दबाज़ी नहीं होगी) तो उनके दरमियान उन बातों के बारे में फ़ैसला किया जा चुका होता जिनमें वोह इख़्तिलाफ़ करते हैं।

وَيَقُولُونَ لَوْلَآ أُنزِلَ عَلَيْهِ ءَايَةٌ مِّن رَّبِّهِۦ ۖ فَقُلْ إِنَّمَا ٱلْغَيْبُ لِلَّهِ فَٱنتَظِرُوٓا۟ ۖ إِنِّى مَعَكُم مِّنَ ٱلْمُنتَظِرِينَ ﴿٢٠﴾

20. और वोह (अब उसी मोहलत की वजहसे) केहते हैं कि इस (रसूल ﷺ) पर उनके रबकी तरफ़से कोई (फ़ैसला कुन) निशानी क्यों नाज़िल नहीं की गई, आप फ़रमा दीजिए : ग़ैब तो महज़ अल्लाह ही के लिए है, सो तुम इन्तिज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करनेवालों में से हूं।

وَإِذَآ أَذَقْنَا ٱلنَّاسَ رَحْمَةً مِّنۢ بَعْدِ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُمْ إِذَا لَهُم مَّكْرٌ فِىٓ ءَايَاتِنَا ۚ قُلِ ٱللَّهُ أَسْرَعُ مَكْرًا ۚ إِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُونَ مَا تَمْكُرُونَ ﴿٢١﴾

21. और जब हम लोगोंको तक्लीफ़ पहुंचने के बाद (अपनी) रहमतसे लिज़्ज़त आशना करते हैं तो फ़ौरन (हमारे एहसान को भूल कर) हमारी निशानियोंमें उनका मक्रो फ़रेब (शुरूअ़) हो जाता है। फ़रमा दीजिए : अल्लाह मक्र की सज़ा जल्द देनेवाला है। बेशक हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते, जो भी फ़रेब तुम कर रहे हो (उसे) लिखते रेहते हैं।

هُوَ ٱلَّذِى يُسَيِّرُكُمْ فِى ٱلْبَرِّ وَٱلْبَحْرِ ۖ حَتَّىٰٓ إِذَا كُنتُمْ فِى ٱلْفُلْكِ ۚ

22. वोही है जो तुम्हें ख़ुश्क ज़मीन और समन्दर में चलने फिरने (की तौफ़ीक़) देता है, यहां तक कि जब तुम कश्तियों में (सवार) होते हो और वोह (कश्तियां) लोगों

وَجَرَيْنَ بِهِمْ بِرِيحٍ طَيِّبَةٍ وَّفَرِحُوا بِهَا جَآءَتْهَا رِيحٌ عَاصِفٌ وَّجَآءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّظَنُّوٓا أَنَّهُمْ أُحِيطَ بِهِمْ ۙ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۚ لَئِنْ أَنْجَيْتَنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُونَنَّ مِنَ الشّٰكِرِينَ ﴿٢٢﴾

को ले कर मुवाफ़िक़ हवाके झोंकों से चलती हैं और वोह उससे खुश होते हैं तो (नागहां) उन (कश्तियों) को तेज़ो तुंद हवा का झोंका आ लेता है और हर तरफ़से उन (सवारों) को (जोश मारती हुई) मौजें आ घेरती हैं और वोह समझने लगते हैं कि (अब) वोह उन (लेहरों) से घिर गए (तो उस वक़्त) वोह अल्लाह को पुकारते हैं (इस हालमें) कि अपने दीन को उसी के लिए ख़ालिस करनेवाले हैं (और केहते हैं : ऐ अल्लाह!) अगर तूने हमें इस (बला) से नजात बख़्श दी तो हम ज़रूर (तेरे) शुक्रगुज़ार बंदोंमें से हो जाएंगे।

فَلَمَّآ أَنْجٰهُمْ إِذَا هُمْ يَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۗ يٰٓأَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلٰٓى أَنْفُسِكُمْ ۙ مَّتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۖ ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٣﴾

23. फिर जब अल्लाहने उन्हें नजात दे दी तो वोह फ़ौरन ही मुल्कमें (ह्स्बे साबिक) नाहक़ सरकशी करने लगते हैं। ऐ (अल्लाह से बग़ावत करनेवाले) लोगो ! बस तुम्हारी सरकशी-व-बग़ावत (का नुक़्सान) तुम्हारी ही जानों पर है। दुनियाकी ज़िन्दगी का कुछ फ़ाइदह (उठा लो), बिल आख़िर तुम्हें हमारी ही तरफ़ पलटना है, उस वक़्त हम तुम्हें उन आ'माल से खूब आगाह कर देंगे जो तुम करते रहे थे।

إِنَّمَا مَثَلُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ أَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْأَرْضِ مِمَّا يَأْكُلُ النَّاسُ وَالْأَنْعَامُ ۗ حَتّٰٓى إِذَآ أَخَذَتِ الْأَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ أَهْلُهَآ أَنَّهُمْ قٰدِرُونَ عَلَيْهَآ ۙ أَتٰهَآ أَمْرُنَا لَيْلًا أَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنٰهَا

24. बस दुनियाकी ज़िन्दगी की मिसाल तो उस पानी जैसी है जिसे हमने आस्मानसे उतारा फिर उसकी वजहसे ज़मीनकी पैदावार खूब घनी हो कर उगी, जिसमें से इन्सान भी खाते हैं और चौपाए भी, यहां तककि जब ज़मीनने अपनी (पूरी पूरी) रौनक़ और हुस्न ले लिया और खूब आरास्ता हो गई और उसके बाशिन्दों ने समझ लिया कि (अब) हम उस पर पूरी कुदरत रखते हैं तो (दफ़्अ़तन) उसे रात या दिनमें हमारा हुक्मे (अ़ज़ाब) आ पहुंचा तो हमने उसे (यूं) जड़से कटा हुआ बना दिया गोया वोह

حَصِيْدًا كَاَنْ لَّمْ تَغْنَ بِالْاَمْسِ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢٤﴾

कल यहां थी ही नहीं, इसी तरह हम उन लोगों के लिए निशानियां खोल कर बयान करते हैं जो तफ़क्कुर से काम लेते हैं।

وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلٰى دَارِ السَّلٰمِ ؕ وَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢٥﴾

25. और अल्लाह सलामती के घर (जन्नत) की तरफ़ बुलाता है और जिसे चाहता है सीधी राह की तरफ़ हिदायत फ़रमाता है।

لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَ زِيَادَةٌ ؕ وَ لَا يَرْهَقُ وُجُوْهَهُمْ قَتَرٌ وَّ لَا ذِلَّةٌ ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٦﴾

26. ऐसे लोगों के लिए जो नेक काम करते हैं नेक जज़ा है बल्कि (उस पर) इज़ाफ़ा भी है, और न उनके चेहरों पर (गुबार और) सियाही छाएगी और न ज़िल्लतो रुस्वाई, येही अह्ले जन्नत हैं। वोह उसमें हमेशा रेहनेवाले हैं।

وَ الَّذِيْنَ كَسَبُوا السَّيِّاٰتِ جَزَآءُ سَيِّئَةٍ بِمِثْلِهَا ۙ وَ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ مَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ كَاَنَّمَآ اُغْشِيَتْ وُجُوْهُهُمْ قِطَعًا مِّنَ الَّيْلِ مُظْلِمًا ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٧﴾

27. और जिन्होंने बुराइयां कमा रखी हैं (उनके लिए) बुराई का बदला उसी की मिस्ल होगा, और उन पर ज़िल्लतो रुस्वाई छा जाएगी उनके लिए अल्लाह (के अज़ाब) से कोई भी बचानेवाला नहीं होगा (यूं लगेगा) गोया उनके चेहरे अंधेरी रात के टुकड़ोंसे ढांप दिए गए हैं। येही अह्ले जहन्नम हैं वोह उसमें हमेशा रेहनेवाले हैं।

وَ يَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا مَكَانَكُمْ اَنْتُمْ وَ شُرَكَآؤُكُمْ ۚ فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ وَ قَالَ شُرَكَآؤُهُمْ مَّا كُنْتُمْ اِيَّانَا

28. और जिस दिन हम उन सबको जमा' करेंगे फिर हम मुशरिकों से कहेंगे : तुम और तुम्हारे शरीक (बुताने बातिल) अपनी अपनी जगह ठेहरो । फिर हम उनके दरमियान फूट डाल देंगे । और उनके (अपने गढ़े हुए) शरीक (उनसे) कहेंगे कि तुम हमारी इबादत तो

تَعْبُدُوْنَ ۝٢٨

नहीं करते थे।

فَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغٰفِلِيْنَ ۝٢٩

29. पस हमारे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह ही गवाह काफ़ी है कि हम तुम्हारी परस्तिश से (यक़ीनन) बेख़बर थे।

هُنَالِكَ تَبْلُوْا كُلُّ نَفْسٍ مَّآ اَسْلَفَتْ وَرُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝٣٠

ع ٣ / ١٠ / ٨ النصف

30. उस (देहशतनाक) मुक़ाम पर हर शख़्स उन (आ'माल की हक़ीक़त) को जांच लेगा जो उसने आगे भेजे थे और वोह अल्लाह की जानिब लौटाए जाएंगे जो उनका मालिके हक़ीक़ी है और उनसे वोह बोहतान तराशी जाती रहेगी जो वोह किया करते थे।

قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اَمَّنْ يَّمْلِكُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَمَنْ يُّخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُّدَبِّرُ الْاَمْرَ ؕ فَسَيَقُوْلُوْنَ اللّٰهُ ۚ فَقُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ۝٣١

31. आप (उनसे) फ़रमा दीजिए : तुम्हें आस्मान और ज़मीन (या'नी ऊपर और नीचे) से रिज़्क़ कौन देता है, या (तुम्हारे) कान और आँखों (या'नी समाअ़तो बसारत)का मालिक कौन है, और ज़िन्दह को मुर्दह (या'नी जानदार को बेजान) से कौन निकालता है, और मुर्दह को ज़िन्दा (या'नी बेजान को जानदार) से कौन निकालता है और (निज़ामहाए काइनात की) तदबीर कौन फ़रमाता है? सो वोह केह उठेंगे कि अल्लाह, तो आप फ़रमाइए : फिर क्या तुम (उससे) डरते नहीं?

فَذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ ۚ فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ اِلَّا الضَّلٰلُ ۖۚ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ۝٣٢

32. पस येही (अ़ज़्मतो क़ुदरतवाला) अल्लाह ही तो तुम्हारा सच्चा रब है, पस (उस) हक़के बाद सिवाए गुमराही के और क्या हो सक्ता है, सो तुम कहां फिरे जा रहे हो ?

كَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ فَسَقُوْٓا اَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝٣٣

33. इसी तरह आपके रबका हुक्म ना फ़रमानों पर साबित हो कर रहा कि वोह ईमान नहीं लाएंगे।

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ؕ قُلِ اللّٰهُ

34. आप (उनसे दर्याफ़्त) फ़रमाइए कि क्या तुम्हारे (बनाए हुए) शरीकों में से कोई ऐसा है जो तख़्लीक़ की इब्तिदा करे फिर (ज़िन्दगी के मा'दूम हो जाने के बाद)

يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ فَاَنّٰى
تُؤْفَكُوْنَ ﴿٣٤﴾

उसे दोबारह लौटाए, आप फ़रमा दीजिए कि अल्लाह ही (हयात को अ़दम से वजूदमें लाते हुए) आफ़रीनश का आग़ाज़ फ़रमाता है फिर वोही उस का इआ़दा (भी) फ़रमाएगा , फिर तुम कहां भटकते फिरते हो ?

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّهْدِيْٓ
اِلَى الْحَقِّ ؕ قُلِ اللّٰهُ يَهْدِيْ
لِلْحَقِّ ؕ اَفَمَنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ
اَحَقُّ اَنْ يُّتَّبَعَ اَمَّنْ لَّا يَهِدِّيْٓ اِلَّآ
اَنْ يُّهْدٰى ۚ فَمَا لَكُمْ ۟ كَيْفَ
تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٥﴾

35. आप (उनसे दर्याफ़्त)फ़रमाइए : क्या तुम्हारे (बनाए हुए) शरीकों में से कोई ऐसा है जो हक़ की तरफ़ रहनुमाई कर सके, आप फ़रमा दीजिए कि अल्लाह ही (दीने) हक़ की हिदायत फ़रमाता है, तो क्या जो कोई हक़ की तरफ़ हिदायत करे वोह ज़ियादह हक़दार है कि उसकी फ़रमांबर्दारी की जाए या वोह जो खुद ही रास्ता नहीं पाता मगर येह कि उसे रास्ता दिखाया जाए (या'नी उसे उठा कर एक जगहसे दूसरी जगह पहुंचाया जाए जिसे कुफ़्फ़ार अपने बुतों को हस्बे ज़रूरत उठा कर ले जाते) सो तुम्हें क्या हो गया है, तुम कैसे फ़ैसले करते हो?

وَمَا يَتَّبِعُ اَكْثَرُهُمْ اِلَّا ظَنًّا ؕ اِنَّ
الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ مِنَ الْحَقِّ شَيْـًٔا ؕ
اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٦﴾

36. उनमें से अक्सर लोग सिर्फ़ गुमानकी पैरवी करते हैं, बेशक गुमान हक़ से मा'मूली सा भी बे नियाज़ नहीं कर सक्ता, यक़ीनन अल्लाह खूब जानता है, जो कुछ वोह करते हैं।

وَمَا كَانَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ اَنْ يُّفْتَرٰى
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ
الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيْلَ
الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ
الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٧﴾

37. येह क़ुरआन ऐसा नहीं है कि इसे अल्लाह (की वही) के बिग़ैर गढ़े लिया गया हो लेकिन (येह) उन (किताबों) की तस्दीक़ (करनेवाला) है जो इससे पहले (नाज़िल हो चुकी) हैं और जो कुछ (अल्लाहने लौह में या अहकामे शरीअ़त में) लिखा है उसकी तफ़्सील है, इस (की हक़्क़ानियत) में ज़रा भी शक नहीं (येह) तमाम जहानों के रबकी तरफ़ से है।

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا

38. क्या वोह केहते हैं कि उसे रसूलने खुद गढ़ लिया है,

بِسُوْرَةٍ مِّثْلِهٖ وَادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۳۸﴾

आप फ़रमा दीजिए : फिर तुम उसकी मिसाल कोई (एक) सूरत ले आओ, और (अपनी मदद के लिए) अल्लाहके सिवा जिन्हें तुम बुला सक्ते हो बुला लो, अगर तुम सच्चे हो।

بَلْ كَذَّبُوْا بِمَا لَمْ يُحِيْطُوْا بِعِلْمِهٖ وَلَمَّا يَاْتِهِمْ تَاْوِيْلُهٗ ؕ كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۳۹﴾

39. बल्कि येह उस (कलामे इलाही) को झुटला रहे हैं जिसके इल्म का वोह अहाता भी नहीं कर सके थे और अभी उसकी हक़ीक़त (भी) उनके सामने खुल कर न आई थी। इसी तरह उन लोगोंने भी(हक़ को) झुटलाया था जो उनसे पहले हो गुज़रे हैं सो आप देखें कि ज़ालिमों का अंजाम कैसा हुआ।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهٖ ؕ وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِيْنَ ﴿۴۰﴾

40. उनमें से कोई तो उस पर ईमान लाएगा और उन्हीं में से कोई उस पर ईमान न लाएगा, और आपका रब फ़साद अंगेज़ी करनेवालों को ख़ूब जानता है।

وَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ لِّيْ عَمَلِيْ وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ ۚ اَنْتُمْ بَرِيْٓـُٔوْنَ مِمَّآ اَعْمَلُ وَاَنَا بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۴۱﴾

41. और अगर वोह आपको झुटलाएं तो फ़रमा दीजिए कि मेरा अ़मल मेरे लिए है और तुम्हारा अ़मल तुम्हारे लिए, तुम उस (अ़मल) से बरीउज़-ज़िम्मा हो जो मैं करता हूं और मैं उन (आ'माल) से बरीउज़-ज़िम्मा हूं जो तुम करते हो।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ ؕ اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ كَانُوْا لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿۴۲﴾

42. और उनमें से बा'ज़ वोह हैं जो (ज़ाहिरन) आप की तरफ़ कान लगाते हैं तो क्या आप बेहरों को सुना देंगे ख़्वाह वोह कुछ अ़क़्ल भी न रखते हों।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْظُرُ اِلَيْكَ ؕ اَفَاَنْتَ تَهْدِي الْعُمْيَ وَلَوْ كَانُوْا لَا يُبْصِرُوْنَ ﴿۴۳﴾

43. उनमें से बा'ज़ वोह हैं जो (ज़ाहिरन) आपकी तरफ़ देखते है, क्या आप अंधों को राह दिखा देंगे ख़्वाह वोह कुछ बसारत भी न रखते हों।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْـًٔا وَّلٰكِنَّ

44. बेशक अल्लाह लोगों पर ज़र्रह बराबर ज़ुल्म नहीं

النَّاسَ أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٤٤﴾

करता लेकिन लोग (खुद ही) अपनी जानों पर ज़ुल्म करते हैं।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ كَأَنْ لَمْ يَلْبَثُوا إِلَّا سَاعَةً مِنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُونَ بَيْنَهُمْ ۚ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِلِقَاءِ اللَّهِ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿٤٥﴾

45. और जिस दिन उन्हें जमा' करेगा (वोह महूसूस करेंगे) गोया वोह दिनकी एक घड़ी के सिवा दुनिया में ठेहरे ही न थे, वोह एक दूसरेको पहचानेंगे। बेशक वोह लोग ख़सारे में रहे जिन्होंने अल्लाहसे मुलाक़ात को झुटलाया था और वोह हिदायत याफ़्ता न हुए।

وَإِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللَّهُ شَهِيدٌ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ ﴿٤٦﴾

46. और ख़्वाह हम आपको उस (अ़ज़ाब) का कुछ हिस्सा (दुनिया में ही) दिखा दें जिसका हम उनसे वा'दा कर रहे हैं (और हम आपकी ह़याते मुबारका में ऐसा करेंगे) या (उससे पहले) हम आपको वफ़ात बख़्श दें, तो उन्हें (बहर सूरत) हमारी ही तरफ़ लौटना है, फिर अल्लाह (खुद) उस पर गवाह है जो कुछ वोह कर रहे हैं।

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَسُولٌ ۖ فَإِذَا جَاءَ رَسُولُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٤٧﴾

47. और हर उम्मत के लिए एक रसूल आता रहा है। फिर जब उनका रसूल (वाज़ेह़ निशानियों के साथ)आ चुका (और वोह फिर भी न माने) तो उनमें इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया गया और (क़ियामत के दिन भी इसी तरह होगा) उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٨﴾

48. और वोह (ता'ना ज़नी के तौर पर) केहते हैं कि येह वा'दए (अ़ज़ाब) कब (पूरा) होगा (मुसलमानो ! बताओ) अगर तुम सच्चे हो।

قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي ضَرًّا وَلَا نَفْعًا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۗ لِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ ۚ إِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً ۖ وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ﴿٤٩﴾

49. फ़रमा दीजिए : मैं अपनी ज़ात के लिए न किसी नुक़्सान का मालिक हूं और न नफ़े' का, मगर जिस क़दर अल्लाह चाहे। हर उम्मत के लिए एक मीआ़द (मुक़र्रर) है, जब उनकी (मुक़र्ररह) मीआ़द आ पहुंचती है तो वोह न एक घड़ी पीछे हट सक्ते हैं और न आगे बढ़ सक्ते हैं।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُهٗ بَيَاتًا اَوْ نَهَارًا مَّاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿۵۰﴾

50. आप फ़रमा दीजिए : (ऐ काफ़िरो !) ज़रा ग़ौर तो करो अगर तुम पर उसका अ़ज़ाब (नागहां) रातों रात या दिन दहाड़े आ पहुंचे (तो तुम क्या कर लोगे) वोह क्या चीज़ है कि मुजरिम लोग उससे जल्दी चाहते हैं।

اَثُمَّ اِذَا مَا وَقَعَ اٰمَنْتُمْ بِهٖ ؕ آٰلْـٰٔنَ وَقَدْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿۵۱﴾

51. क्या जिस वक्त वोह (अ़ज़ाब) वाक़े' हो जाएगा तो तुम उस पर ईमान ले आओगे (उस वक्त तुम से कहा जाएगा) अब (ईमान ला रहे हो, इस वक्त कोई फ़ाइदा नहीं) हालांकि तुम (इस्तेह्ज़ाअन) इसी (अ़ज़ाब) में जल्दी चाहते थे।

ثُمَّ قِيْلَ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ ۚ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿۵۲﴾

52. फिर (उन) ज़ालिमों से कहा जाएगा : तुम दाइमी अ़ज़ाब का मज़ा चखो, तुम्हें (कुछ भी और) बदला नहीं दिया जाएगा मगर उन्ही आ'माल का जो तुम कमाते रहे थे।

وَيَسْتَنْۢبِـُٔوْنَكَ اَحَقٌّ هُوَ ؕ قُلْ اِيْ وَرَبِّيْۤ اِنَّهٗ لَحَقٌّ ۚؕ وَمَاۤ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿۵۳﴾ ع

53. और वोह आपसे दर्याफ़्त करते हैं कि क्या (दाइमी अ़ज़ाब की) वोह बात (वाक़ई) सच है ? फ़रमा दीजिए : हां मेरे रब की क़सम यक़ीनन वोह बिल्कुल हक़ है। और तुम (अपने इन्कार से अल्लाहको) आ़जिज़ नहीं कर सक्ते।

وَلَوْ اَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي الْاَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهٖ ؕ وَاَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ۚ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۵۴﴾

54. अगर हर ज़ालिम शख़्सकी मिल्किय्यत में वोह (सारी दौलत) हो जो ज़मीनमें है तो वोह यक़ीनन उसे (अपनी जान छुड़ाने के लिए) अ़ज़ाब के बदले में दे डाले (तो फिर भी अ़ज़ाब से न बच सकेगा), और (ऐसे लोग) जब अ़ज़ाब को देखेंगे तो अपनी नदामत छुपाए फिरेंगे और उनके दरमियान इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया जाएगा और उन पर ज़ुल्म नहीं होगा।

اَلَاۤ اِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۵۵﴾

55. जान लो ! जो कुछ भी आस्मानों और ज़मीन में है (सब) अल्लाह ही का है। ख़बरदार हो जाओ ! बेशक अल्लाहका वा'दा सच्चा है लेकिन उनमेंसे अक्सर लोग नहीं जानते।

هُوَ يُحْيٖ وَ يُمِيْتُ وَ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٥٦﴾

56. वोही जिलाता और मारता है और तुम उसीकी तरफ़ पलटाए जाओगे।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ شِفَآءٌ لِّمَا فِي الصُّدُوْرِ ۙ وَ هُدًى وَّ رَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥٧﴾

57. ऐ लोगो! बेशक तुम्हारे पास तुम्हारे रबकी तरफ़से नसीहत और उन (बीमारियों) की शिफ़ा आ गई है जो सीनोंमें (पोशीदह) हैं और हिदायत और अह्ले ईमान के लिए रह्मत (भी)।

قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَ بِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ؕ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿٥٨﴾

58. फ़रमा दीजिऐ : (येह सब कुछ) अल्लाह के फ़ज़्ल और उसकी रह्मत के बाइस है (जो बे'सते मुह्म्मदी ﷺ के ज़रीए तुम पर हुवा है) पस मुसलमानों को चाहिए कि उस पर खुशियां मनाएं, येह उस (सारे मालो दौलत) से कहीं बेहतर है जिसे वोह जमा' करते हैं।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ لَكُمْ مِّنْ رِّزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِّنْهُ حَرَامًا وَّ حَلٰلًا ؕ قُلْ آٰللّٰهُ اَذِنَ لَكُمْ اَمْ عَلَى اللّٰهِ تَفْتَرُوْنَ ﴿٥٩﴾

59. फ़रमा दीजिए : ज़रा बताओ तो सही अल्लाहने जो (पाकीज़ा) रिज़्क़ तुम्हारे लिए उतारा सो तुमने उसमें से बा'ज़ (चीज़ों) को ह्राम और (बा'ज़ को) ह्लाल क़रार दे दिया। फ़रमा दें : क्या अल्लाहने तुम्हें (इस की) इजाज़त दी थी या तुम अल्लाह पर बोह्तान बांध रहे हो?

وَ مَا ظَنُّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٦٠﴾ ع

60. और ऐसे लोगों का रोज़े क़ियामत के बारेमें क्या ख़याल है जो अल्लाह पर झूटा बोहतान बांधते हैं, बेशक अल्लाह लोगों पर फ़ज़्ल फ़रमानेवाला है लेकिन उन में से अक्सर (लोग) शुक्र गुज़ार नहीं हैं।

وَمَا تَكُوْنُ فِيْ شَاْنٍ وَّمَا تَتْلُوْا مِنْهُ مِنْ قُرْاٰنٍ وَّلَا تَعْمَلُوْنَ مِنْ عَمَلٍ اِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُوْدًا اِذْ تُفِيْضُوْنَ

61. और (ऐ ह्बीबे मुकर्रम !) आप जिस ह्रालमें भी हों और आप उसकी तरफ़से जिस क़दर भी क़ुरआन पढ़ कर सुनाते हैं और (ऐ उम्मते मुह्म्मदिया!) तुम जो अ़मल भी करते हो मगर हम (उस वक़्त) तुम सब पर गवाहो निगेहबान होते हैं जब तुम उसमें मशग़ूल होते हो और

فِيهِ ۚ وَمَا يَعْزُبُ عَن رَّبِّكَ مِن مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَلَا أَصْغَرَ مِن ذَٰلِكَ وَلَا أَكْبَرَ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ﴿٦١﴾

आपके रब (के इल्म) से एक ज़र्रह बराबर भी (कोई चीज़) न ज़मीनमें पोशीदा है और न आस्मानमें और न उस (ज़र्रे) से कोई छोटी चीज़ है और न बड़ी मगर वाज़ेह किताब (या'नी लौहे़ मह़फ़ूज़) में (दर्ज) है।

أَلَا إِنَّ أَوْلِيَاءَ اللَّهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٢﴾

62. ख़बरदार ! बेशक औलिया अल्लाह पर न कोई ख़ौफ़ है और न वोह रंजीदह-व-ग़मगीन होंगे।

الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٦٣﴾

63. (वोह) ऐसे लोग हैं जो ईमान लाए और (हमेशा) तक्वा शिआ़र रहे।

لَهُمُ الْبُشْرَىٰ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ ۚ لَا تَبْدِيلَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٦٤﴾

64. उनके लिए दुनियाकी ज़िन्दगीमें (भी इ़ज़्ज़तो मक़्बूलियत की) बिशारत है और आख़िरतमें (भी मग़फ़िरतो शफ़ाअ़त की/या दुनिया में भी नेक ख़्वाबों की सूरत में पाकीज़ा रूहानी मुशाहिदात हैं और आख़िरत में भी हुस्ने मुत्लक़ के जल्वे और दीदार), अल्लाह के फ़रमान बदला नहीं करते, येही वोह अ़ज़ीम कामयाबी है।

وَلَا يَحْزُنكَ قَوْلُهُمْ ۘ إِنَّ الْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا ۚ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٦٥﴾

وقف لازم

65. (ऐ ह़बीबे मुकर्रम !) उनकी (इ़नादो अ़दावत पर मब्नी) गुफ़्तुगू आपको ग़मगीन न करे । बेशक सारी इ़ज़्ज़तो ग़लबा अल्लाह ही के लिए है (जो जिसे चाहता है देता है), वोह ख़ूब सुननेवाला जाननेवाला है।

أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَمَن فِي الْأَرْضِ ۗ وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ شُرَكَاءَ ۚ إِن يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ

66. जान लो ! जो कोई आस्मानों में है और जो कोई ज़मीनमें है सब अल्लाह ही के (मम्लूक) हैं, और जो लोग अल्लाहके सिवा (बुतों) की परस्तिश करते हैं (दर ह़क़ीक़त अपने घड़े हुए) शरीकों की पैरवी (भी) नहीं करते बल्कि वोह सिर्फ़ (अपने) वहमो गुमान की पैरवी

إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿٦٦﴾

करते हैं और वोह महज़ ग़लत अंदाज़े लगाते रेहते हैं।

هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَسْمَعُونَ ﴿٦٧﴾

67. वोही है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई ताकि तुम उसमें आराम करो और दिन को रौशन बनाया (ताकि तुम उसमें कामकाज कर सको)। बेशक उसमें उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो (ग़ौरसे) सुनते हैं।

قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ۗ سُبْحَانَهُ ۖ هُوَ الْغَنِيُّ ۖ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ إِنْ عِنْدَكُمْ مِنْ سُلْطَانٍ بِهَٰذَا ۚ أَتَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٨﴾

68. वोह केहते हैं : अल्लाहने (अपने लिए) बेटा बना लिया है (हालांकि) वोह इससे पाक है, वोह बे नियाज़ है। जो कुछ आस्मानों में और जो कुछ ज़मीनमें है सब उसीकी मिल्क है, तुम्हारे पास इस (क़ौले बातिल) की कोई दलील नहीं, क्या तुम अल्लाह पर वोह (बात) केहते हो जिसे तुम (ख़ुद भी) नहीं जानते।

قُلْ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ ﴿٦٩﴾

69. फ़रमा दीजिए : बेशक जो लोग अल्लाह पर झूटा बोहतान बांधते हैं वोह फ़लाह नहीं पाएंगे।

مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ نُذِيقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيدَ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿٧٠﴾

70. दुनियामें (चंद रोज़ह) लुत्फ़ अंदोज़ी है फिर उन्हें हमारी ही तरफ़ पलटना है फिर हम उन्हें सख़्त अज़ाब का मज़ा चखाएंगे उसके बदले में जो वोह कुफ़्र किया करते थे।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ نُوحٍ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ يَا قَوْمِ إِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَقَامِي وَتَذْكِيرِي بِآيَاتِ اللَّهِ فَعَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْتُ فَأَجْمِعُوا أَمْرَكُمْ وَشُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ أَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوا إِلَيَّ

71. और उन पर नूह (عليه السلام) का क़िस्सा बयान फ़रमाइए। जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा : ऐ मेरी क़ौम (औलादे क़ाबील!) अगर तुम पर मेरा क़ियाम और मेरा अल्लाहकी आयतों के साथ नसीहत करना गिरां गुज़र रहा है तो (जान लो कि) मैं ने तो सिर्फ़अल्लाह ही पर तवक्कल कर लिया है (और तुम्हारा कोई डर नहीं) सो सुम इकट्ठे हो कर (मेरी मुख़ालिफ़त में) अपनी तदबीर को पुख़्ता कर लो और अपने (गढ़े हुए) शरीकों को भी (साथ मिला लो और इस क़दर सोच लो कि) फिर तुम्हारी तदबीर (का कोई पहलू)

وَلَا تُنظِرُونِ ﴿٧١﴾

तुम पर मुख़्फ़ी न रहे, फिर मेरे साथ (जो जी में आए) कर गुज़रो और (मुझे) कोई मोहलत न दो।

فَإِن تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَأَلْتُكُم مِّنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ ۙ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٧٢﴾

72. सो अगर तुमने (मेरी नसीहत से) मुंह फेर लिया है तो मैं ने तुम से कोई मुआवज़ा तो नहीं मांगा। मेरा अज्र तो सिर्फ़अल्लाह (के ज़िम्मए करम) पर है और मुझे येह हुक्म दिया गया है कि मैं (उसके हुक्मके सामने) सर तस्लीमे ख़म किए रखूं।

فَكَذَّبُوهُ فَنَجَّيْنَاهُ وَمَن مَّعَهُ فِي الْفُلْكِ وَجَعَلْنَاهُمْ خَلَائِفَ وَأَغْرَقْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا ۖ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنذَرِينَ ﴿٧٣﴾

73. फिर आपकी क़ौमने आपको झुटलाया पस हमने उन्हें और जो उनके साथ कश्ती में थे (अ़ज़ाबे तूफ़ानसे) नजात दी और हमने उन्हें (ज़मीनमें) जा नशीन बना दिया और उन लोगों को ग़र्क़ कर दिया जिन्होंने हमारी आयतोंको झुटलाया था, सो आप देखिए कि उन लोगोंका अंजाम कैसा हुवा जो डराए गए थे।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِن بَعْدِهِ رُسُلًا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ فَجَاءُوهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا بِمَا كَذَّبُوا بِهِ مِن قَبْلُ ۚ كَذَٰلِكَ نَطْبَعُ عَلَىٰ قُلُوبِ الْمُعْتَدِينَ ﴿٧٤﴾

74. फिर हमने उनके बाद (कितने ही) रसूलों को उनकी क़ौमों की तरफ़ भेजा सो वोह उनके पास वाज़ेह् निशानियां ले कर आए पस वोह लोग (भी) ऐसे न हुए कि इस (बात) पर ईमान ले आते जिसे वोह पहले झुटला चुके थे। उसी तरह हम सरकशी करनेवालों के दिलों पर मोहर लगा दिया करते हैं।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِن بَعْدِهِم مُّوسَىٰ وَهَارُونَ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ بِآيَاتِنَا فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا مُّجْرِمِينَ ﴿٧٥﴾

75. फिर हमने उनके बाद मूसा और हारून (عليهما السلام) को फ़िरऔ़न और उसके सरदाराने क़ौमकी तरफ़ निशानियों के साथ भेजा तो उन्होंने तकब्बुर किया और वोह मुजरिम लोग थे।

فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِندِنَا قَالُوا إِنَّ هَٰذَا لَسِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿٧٦﴾

76. फिर जब उनके पास हमारी तरफ़ से हक़ आया (तो) केहने लगे : बेशक येह तो खुला जादू है।

قَالَ مُوسَىٰ أَتَقُولُونَ لِلْحَقِّ لَمَّا

77. मूसा (عليه السلام) ने कहा : क्या तुम (ऐसी बात) हक़ से

جَآءَكُمْ ۭ اَسِحْرٌ هٰذَا ۭ وَلَا يُفْلِحُ السّٰحِرُوْنَ ﴿۷۷﴾

मुतअ़ल्लिक़ केहते हो जब वोह तुम्हारे पास आ चुका है, (अक़्लो शऊ़र की आँखें खोल कर देखो) क्या येह जादू है ? और जादूगर (कभी) फ़लाह़ नहीं पा सकेंगे।

قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا وَتَكُوْنَ لَكُمَا الْكِبْرِيَآءُ فِي الْاَرْضِ ۭ وَمَا نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿۷۸﴾

78. वोह केहने लगे : (ऐ मूसा !) क्या तुम हमारे पास इस लिए आए हो कि तुम हमें उस (तरीक़े) से फेर दो जिस पर हमने अपने बापदादा को (गामज़न) पाया और ज़मीन (या'नी सरज़मीने मिस्र) में तुम दोनों की बड़ाई (क़ाइम) रहे, और हम लोग तुम दोनों को माननेवाले नहीं है।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُوْنِيْ بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ﴿۷۹﴾

79. और फ़िरऔ़न केहने लगा : मेरे पास हर माहिर जादूगरको ले आओ।

فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰٓى اَلْقُوْا مَآ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ﴿۸۰﴾

80. फिर जब जादूगर आ गए तो मूसा (عليه السلام) ने उन से कहा : तुम (वोह चीज़ें मैदानमें) डाल दो जो तुम डालना चाहते हो।

فَلَمَّآ اَلْقَوْا قَالَ مُوْسٰى مَا جِئْتُمْ بِهِ ۙ السِّحْرُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَيُبْطِلُهٗ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿۸۱﴾

81. फिर जब उन्होंने (अपनी रस्सियां और लाठियां) डाल दीं तो मूसा (عليه السلام) ने कहा : जो कुछ तुम लाए हो (येह) जादू है। बेशक अल्लाह अभी इसे बातिल कर देगा। यक़ीनन अल्लाह मुफ़्सिदों के काम को दुरुस्त नहीं करता।

وَيُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿۸۲﴾

82. और अल्लाह अपने कलिमात से ह़क़ का ह़क़ होना साबित फ़रमा देता है अगरचे मुजरिम लोग उसे ना पसंद ही करते रहें।

فَمَآ اٰمَنَ لِمُوْسٰٓى اِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهٖ عَلٰي خَوْفٍ مِّنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ىِٕهِمْ اَنْ يَّفْتِنَهُمْ ۭ وَاِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِي الْاَرْضِ ۚ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿۸۳﴾

83. पस मूसा (عليه السلام) पर उनकी क़ौमके चंद जवानों के सिवा (कोई) ईमान न लाया, फिरऔ़न और अपने (क़ौमी) सरदारों (वडेरों) से डरते हुए कि कहीं वोह उन्हें (किसी) मुसीबत में मुब्तिला न कर दें, और बेशक फिरऔ़न सर ज़मीने (मिस्र) में बड़ा जाबिरो सरकश था और वोह यक़ीनन (ज़ुल्म में) ह़दसे बढ़ जानेवालों में से था।

وَقَالَ مُوْسٰى يٰقَوْمِ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّسْلِمِيْنَ ﴿٨٤﴾

84. और मूसा (عليه السلام) ने कहा : ऐ मेरी क़ौम ! अगर तुम अल्लाह पर ईमान लाए हो तो उसी पर तवक्कल करो, अगर तुम (वाक़ई) मुसलमान हो।

فَقَالُوْا عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ۚ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٥﴾

85. तो उन्होंने अर्ज़ किया : हमने अल्लाह ही पर तवक्कुल किया है, ऐ हमारे रब ! तू हमें ज़ालिम लोगों के लिए निशानए सितम न बना।

وَ نَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٨٦﴾

86. और तू हमें अपनी रह्मत से काफ़िरोंकी क़ौम (के तसल्लुत) से नजात बख़्श दे।

وَ اَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰى وَاَخِيْهِ اَنْ تَبَوَّاٰ لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوْتًا وَّ اجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ قِبْلَةً وَّ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٧﴾

87. और हमने मूसा (عليه السلام)और उनके भाई की तरफ़ वही भेजी कि तुम दोनों मिस्र (के शहर) में अपनी क़ौमके लिए चंद मकानात तैयार करो और अपने (उन) घरों को (नमाज़की अदाएगी के लिए) क़िब्ला रुख़ बनाओ और (फिर) नमाज़ क़ाइम करो, और ईमानवालों को (फ़त्हो नुसरत की) ख़ुश ख़बरी सुना दो।

وَ قَالَ مُوْسٰى رَبَّنَآ اِنَّكَ اٰتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَاَهٗ زِيْنَةً وَّ اَمْوَالًا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ رَبَّنَا لِيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِكَ ۚ رَبَّنَا اطْمِسْ عَلٰٓى اَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْا حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿٨٨﴾

88. और मूसा (عليه السلام)ने कहा : ऐ हमारे रब! बेशक तू ने फ़िरऔन और उसके सरदारों को दुन्यवी जिन्दगी में अस्बाबे ज़ीनत और मालो दौलत (की कसरत) दे रखी है, ऐ हमारे रब ! (क्या तू ने उन्हें येह सब कुछ इस लिए दिया है) ताकि वोह (लोगों को कभी लालच और कभी ख़ौफ़ दिला कर) तेरी राहसे बेहका दें। ऐ हमारे रब ! तू उनकी दौलतों को बरबाद कर दे और उनके दिलों को (इतना) सख़्त कर दे कि वोह फिर भी ईमान न लाएं हत्ता कि वोह दर्दनाक अज़ाब देख लें।

قَالَ قَدْ اُجِيْبَتْ دَّعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيْمَا وَ لَا تَتَّبِعٰٓنِّ سَبِيْلَ

89. इर्शाद हुआ : बेशक तुम दोनों की दुआ क़बूल कर ली गई, सो तुम दोनों साबित क़दम रेहना और ऐसे लोगों

الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٨٩﴾

के रास्तेकी पैरवी न करना जो इल्म नहीं रखते।

وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَجُنُوْدُهٗ بَغْيًا وَّعَدْوًا ؕ حَتّٰٓى اِذَآ اَدْرَكَهُ الْغَرَقُ ۙ قَالَ اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِيْٓ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْٓا اِسْرَآءِيْلَ وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٩٠﴾

90. और हम बनी इसराईल को दरया के पार ले गए पस फ़िरऔ़न और उसका लश्करने सरकशी और जुल्मो तअ़द्दीसे उनका तआ़कुब किया, यहां तक कि जब उसे (या'नी फ़िरऔ़न को) डूबने ने आ लिया वोह केहने लगा : मैं इस पर ईमान ले आया कि कोई मा'बूद नहीं सिवाए उस (मा'बूद) के जिस पर बनी इसराईल ईमान लाए हैं और मैं (अब) मुसलमानों में से हूं।

آٰلْـٰٔنَ وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٩١﴾

91. (जवाब दिया गया कि) अब (ईमान लाता है), हालां कि तू पहले (मुसल्सल) ना फ़रमानी करता रहा है और तू फ़साद बपा करनेवालों में से था।

فَالْيَوْمَ نُنَجِّيْكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُوْنَ لِمَنْ خَلْفَكَ اٰيَةً ؕ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ اٰيٰتِنَا لَغٰفِلُوْنَ ﴿٩٢﴾

92. (ऐ फ़िरऔ़न !) सो आज हम तेरे (बेजान) जिस्म को बचा लेंगे ताकि तू अपने बाद वालों के लिए (इब्रत का) निशान हो सके और बेशक अक्सर लोग हमारी निशानियों (को समझने) से ग़ाफ़िल हैं।

وَلَقَدْ بَوَّاْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مُبَوَّاَ صِدْقٍ وَّرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْا حَتّٰى جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٩٣﴾

93. और फ़िल-वाक़े' हमने बनी इसराईल को रेहने के लिए उ़मदह जगह बख़्शी और हमने उन्हें पाकीज़ा रिज़्क़ अ़ता किया तो उन्होंने कोई इख़्तिलाफ़ न किया यहां तक कि उनके पास इल्मो दानिश आ पहुंची। बेशक आपका रब उनके दरमियान क़ियामत के दिन उन उमूरका फ़ैसला फ़रमा देगा जिनमें वोह इख़्तिलाफ़ करते थे।

فَاِنْ كُنْتَ فِيْ شَكٍّ مِّمَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ فَسْـَٔلِ الَّذِيْنَ يَقْرَءُوْنَ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَقَدْ جَآءَكَ

94. (ऐ सुननेवाले !) अगर तू इस (किताब) के बारेमें ज़रा भी शक में मुब्तिला है जो हमने (अपने रसूल ﷺ की वसातत से) तेरी तरफ़ उतारी है तो (इसकी हक़्क़ानियत की निस्बत) उन लोगों से दर्याफ़्त कर ले जो

الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿٩٤﴾

तुझ से पहले (अल्लाहकी) किताब पढ़ रहे हैं। बेशक तेरी तरफ़ तेरे रबकी जानिबसे ह़क़ आ गया है, सो तू शक करनेवालों में से हरगिज़ न हो जाना।

وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَتَكُوْنَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٩٥﴾

95. और न हरगिज़ उन लोगों में से हो जाना जो अल्लाहक़ी आयतों को झुटलाते रहे वरना तू ख़सारा पानेवालों में से हो जाएग।

اِنَّ الَّذِيْنَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٩٦﴾

96. (ऐ ह़बीबे मुकर्रम !) बेशक जिन लोगों पर आपके रबका फ़रमान सादिक़ आ चुका है वोह ईमान नहीं लाएंगे।

وَلَوْ جَآءَتْهُمْ كُلُّ اٰيَةٍ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿٩٧﴾

97. अगरचे उनके पास सब निशानियां आ जाएं यहां तककि वोह दर्दनाक अज़ाब (भी) देख लें।

فَلَوْ لَا كَانَتْ قَرْيَةٌ اٰمَنَتْ فَنَفَعَهَاۤ اِيْمَانُهَاۤ اِلَّا قَوْمَ يُوْنُسَ ؕ لَمَّاۤ اٰمَنُوْا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ﴿٩٨﴾

98. फिर क़ौमे यूनुस (की बस्ती) के सिवा कोई और ऐसी बस्ती क्यों न हुई जो ईमान लाई हो और उसे उसके ईमान लानेने फ़ाइदा दिया हो। जब (क़ौमे यूनुसके लोग नुज़ूले अ़ज़ाब से क़ब्ल सिर्फ़ उसकी निशानी देख कर) ईमान ले आए तो हमने उनसे दुन्यावी ज़िन्दगी में (ही) रुस्वाई का अ़ज़ाब दूर कर दिया और हमने उन्हें एक मुद्दत तक मुनाफ़े' से बेहरा मंद रखा।

وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنْ فِي الْاَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيْعًا ؕ اَفَاَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتّٰى يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٩٩﴾

99. और अगर आपका रब चाहता तो ज़रूर सब के सब लोग जो ज़मीनमें आबाद हैं ईमान ले आते, (जब रबने उन्हें जब्रन मोमिन नहीं बनाया) तो क्या आप लोगों पर जब्र करेंगे यहां तक कि वोह मोमिन हो जाएं।

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تُؤْمِنَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَيَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٠٠﴾

100. और किसी शख़्सको (अज़ खुद येह) क़ुदरत नहीं कि वोह बिग़ैर इज़्ने इलाही के ईमान ले आए। वोह (या'नी अल्लाह तआ़ला) कुफ़्र की गंदगी उन्हीं लोगों पर डालता है जो (ह़क़को समझने के लिए) अ़क़्ल से काम नहीं लेते।

قُلِ انْظُرُوْا مَاذَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَمَا تُغْنِي الْاٰيٰتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠١﴾

101. फ़रमा दीजिए : तुम लोग देखो तो (सही) आस्मानों और ज़मीन (की इस वसीअ़् काइनात) में क़ुदरते इलाहिया की क्या क्या निशानियां हैं, और (येह) निशानियां और (अ़ज़ाबे इलाही से) डरानेवाले (पयग़म्बर) ऐसे लोगों को फ़ाइदा नहीं पहुंचा सकते जो ईमान लाना ही नहीं चाहते।

فَهَلْ يَنْتَظِرُوْنَ اِلَّا مِثْلَ اَيَّامِ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ قُلْ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّىْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿١٠٢﴾

102. सो क्या येह लोग उन्हीं लोगों (के बुरे दिनों) जैसे दिनोंका इन्तिज़ार कर रहे हैं जो उनसे पहले गुज़र चुके हैं ? फ़रमा दीजिए कि तुम (भी) इन्तिज़ार करो मैं (भी) तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करनेवालों में से हूं।

ثُمَّ نُنَجِّيْ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كَذٰلِكَ ۚ حَقًّا عَلَيْنَا نُنْجِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٣﴾

103. फिर हम अपने रसूलों को बचा लेते हैं और उन लोगों को भी जो इस तरह् ईमान ले आते हैं (येह बात) हमारे ज़िम्मए करम पर है कि हम ईमानवालों को बचा लें।

ع ١٠ ١١ ١٥

قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْ دِيْنِيْ فَلَآ اَعْبُدُ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ اَعْبُدُ اللّٰهَ الَّذِيْ يَتَوَفّٰىكُمْ ښ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٤﴾

104. फ़रमा दीजिए : ऐ लोगो ! अगर तुम मेरे दीन (की ह़क़्क़ानियत के बारे) में ज़रा भी शक में हो तो (सुन लो) कि मैं उन (बुतों) की परस्तिश नहीं कर सक्ता जिनकी तुम अल्लाहके सिवा परस्तिश करते हो लेकिन मैं तो उस अल्लाहकी इ़बादत करता हूं जो तुम्हें मौतसे हम कनार करता है, और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं (हमेशा) अह्ले ईमान में से रहूं।

وَاَنْ اَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ۚ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٥﴾

105. और येह कि आप हर बातिल से बच कर (यकसू हो कर) अपना रुख़् दीन पर क़ाइम रखें और हरगिज़ शिर्क करनेवालों में से न हों।

وَلَا تَدْعُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ ۚ فَاِنْ فَعَلْتَ فَاِنَّكَ

106. (येह हुक्म रसूलुल्लाह ﷺ की वसातत से उम्मत को दिया जा रहा है) और न अल्लाह के सिवा उन (बुतों) की इ़बादत करें जो न तुम्हें नफ़ा' पहुंचा सक्दे हैं और न

اِذًا مِّنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٠٦﴾

तुम्हें नुक़्सान पहुंचा सकते हैं, फिर अगर तुमने ऐसा किया तो बेशक तुम उस वक़्त ज़ालिमों में से हो जाओगे।

وَ اِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗٓ اِلَّا هُوَ ۚ وَ اِنْ يُّرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَآدَّ لِفَضْلِهٖ ؕ يُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿١٠٧﴾

107. और अगर अल्लाह तुम्हें कोई तक्लीफ़ पहुंचाए तो उसके सिवा कोई उसे दूर करनेवाला नहीं और अगर वोह तुम्हारे साथ भलाई का इरादा फ़रमाए तो कोई उसके फ़ज़्ल को रद करनेवाला नहीं। वोह अपने बंदों में से जिसे चाहता है अपना फ़ज़्ल पहुंचाता है, और वोह बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَ مَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَ مَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ﴿١٠٨﴾

108. फ़रमा दीजिए : ऐ लोगो ! बेशक तुम्हारे पास तुम्हारे रब की जानिब से हक़ आ गया है, सो जिसने राहे हिदायत इख़्तियार की बस वोह अपने ही फ़ाइदे के लिए हिदायत इख़्तियार करता है और जो गुमराह हो गया बस वोह अपनी ही हलाकत के लिए गुमराह होता है और मैं तुम्हारे ऊपर दारोग़ा नहीं हूं (कि तुम्हें सख़्तीसे राहे हिदायत पर ले आऊं)।

وَ اتَّبِعْ مَا يُوْحٰٓى اِلَيْكَ وَ اصْبِرْ حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ ۚۖ وَ هُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿١٠٩﴾ ع

109. (ऐ रसूल !) आप उसीकी इत्तिबाअ् करें जो आपकी तरफ़ वही की जाती है और सब्र करते रहें यहां तक कि अल्लाह फ़ैसला फ़रमा दे और वोह सबसे बेहतर फ़ैसला फ़रमानेवाला है।

आयातुहा 123 | 11 सूरतु हूदिन मक्किय्यतुन 52 | रुकूआतुहा 10

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नामसे शुरूअ् जो निहायत महरबान हमेशा रह्म फ़रमानेवाला है।

الٓرٰ ۚ كِتٰبٌ اُحْكِمَتْ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ

१. अलिफ़ लाम रा (हक़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं, येह वोह) किताब है जिसकी आयतें मुस्तहकम बना दी गई हैं, फिर हिक्मतवाले बा

خَبِيْرٍ ۙ﴿۱﴾

ख़बर (रब) की जानिबसे वोह मुफ़स्सल बयान कर दी गई हैं।

اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنَّنِيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ ۙ﴿۲﴾

2. येह कि अल्लाहके सिवा तुम किसी की इबादत मत करो, बेशक मैं तुम्हारे लिए उस (अल्लाह) की जानिब से डर सुनानेवाला और बिशारत देनेवाला हूं।

وَّاَنِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ مَّتَاعًا حَسَنًا اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّيُؤْتِ كُلَّ ذِيْ فَضْلٍ فَضْلَهٗ ؕ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ كَبِيْرٍ ﴿۳﴾

3. और येह कि तुम अपने रबसे मग़फ़िरत तलब करो फिर तुम उसके हुज़ूर (सिद्क़ दिल से) तौबा करो वोह तुम्हें वक़्ते मुअ़य्यन तक अच्छी मताअ़ से लुत्फ़ अंदोज़ रखेगा और हर फ़ज़ीलतवाले को उसकी फ़ज़ीलत की जज़ा देगा (या'नी उसके आ'मालो रियाज़त की कसरत के मुताबिक़ अज्रो दर्जात अ़ता फ़रमाएगा), और अगर तुमने रूगर्दानी की तो मैं तुम पर बड़े दिनके अ़ज़ाब का ख़ौफ़ रखता ह।

اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۴﴾

4. तुम्हें अल्लाह ही की तरफ़ लौटना है और वोह हर चीज़ पर बड़ा क़ादिर है।

اَلَآ اِنَّهُمْ يَثْنُوْنَ صُدُوْرَهُمْ لِيَسْتَخْفُوْا مِنْهُ ؕ اَلَا حِيْنَ يَسْتَغْشُوْنَ ثِيَابَهُمْ ۙ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۚ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۵﴾

5. जान लो ! बेशक वोह (कुफ़्फ़ार) अपने सीनों को दोहरा कर लेते हैं ताकि वोह उस (ख़ुदा) से (अपने दिलों का हाल) छुपा सकें, ख़बरदार ! जिस वक्त वोह अपने कपड़े (जिस्मों पर) ओढ़ लेते हैं (तो उस वक्त भी) वोह उन सब बातों को जानता है जो वोह छुपाते हैं और जो वोह आश्कार करते हैं, बेशक वोह सीनों की (पोशीदह) बातों को खूब जाननेवाला है।

الجزء ١٢

6. और ज़मीन में कोई चलने फिरनेवाला (जानदार) नहीं है मगर (येह कि) उसका रिज़्क़ अल्लाह (के ज़िम्मए करम) पर है और वोह उसके ठहरने की जगह को और उसके अमानत रखे जानेकी जगहको (भी) जानता है, हर बात किताबे रौशन (लौहे महफ़ूज़) में (दर्ज) है।

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا وَ يَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَ مُسْتَوْدَعَهَا ؕ كُلٌّ فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۞٦

7. और वोही (अल्लाह) है जिसने आस्मानों और ज़मीन (की बालाई-व-ज़ेरीं काइनातों) को छ रोज़ (या'नी तख़्लीक़ो इर्तिक़ा के छ अद्वारो मराहिल) में पैदा फ़रमाया और (तख़्लीक़े अर्ज़ी से क़ब्ल) उसका तख़्ते इक़्तिदार पानी पर था (और उसने उससे ज़िन्दगी के तमाम आसार को और तुम्हें पैदा किया) ताकि वोह तुम्हें आज़माए कि तुम में से कौन अ़मल के ए'तिबार से बेहतर है?, और अगर आप येह फ़रमाएं कि तुम लोग मरने के बाद (ज़िन्दा कर के) उठाए जाओगे तो काफ़िर यक़ीनन (येह) कहेंगे कि येह तो सरीह़ जादू के सिवा कुछ (और) नहीं है।

وَ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ وَّ كَانَ عَرْشُهٗ عَلَى الْمَآءِ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ؕ وَ لَئِنْ قُلْتَ اِنَّكُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ مِنْۢ بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۞٧

8. और अगर हम उनसे चंद मुक़र्ररह दिनों तक अ़ज़ाब को मुअख़्ख़र कर दें तो वोह यक़ीनन कहेंगे कि उसे किस चीज़ने रोक रखा है, ख़बरदार ! जिस दिन वोह (अ़ज़ाब) उन पर आएगा (तो) उनसे फेरा न जाएगा और वोह (अ़ज़ाब) उन्हें घेर लेगा जिसका वोह मज़ाक़ उड़ाया करते थे।

وَ لَئِنْ اَخَّرْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ اِلٰٓى اُمَّةٍ مَّعْدُوْدَةٍ لَّيَقُوْلُنَّ مَا يَحْبِسُهٗ ؕ اَلَا يَوْمَ يَاْتِيْهِمْ لَيْسَ مَصْرُوْفًا عَنْهُمْ وَ حَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۞٨

ع ١ / ٢

9. और अगर हम इन्सान को अपनी जानिबसे रह्मतका मज़ा चखाते हैं फिर हम उसे (किसी वजहसे) उससे वापस ले लेते हैं तो वोह निहायत मायूस (और) ना शुक्र गुज़ार हो जाता है।

وَلَئِنْ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ثُمَّ نَزَعْنٰهَا مِنْهُ ۚ اِنَّهٗ لَيَئُوْسٌ كَفُوْرٌ ۞٩

10. और अगर हम उसे (कोई) ने'मत चखाते हैं उस तकलीफ़ के बाद जो उसे पहुंच चुकी थी तो ज़रूर केह

وَلَئِنْ اَذَقْنٰهُ نَعْمَآءَ بَعْدَ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ ذَهَبَ السَّيِّاٰتُ

عَنِّيْ ؕ اِنَّهٗ لَفَرِحٌ فَخُوْرٌ ۙ﴿۱۰﴾

उठता है कि मुझसे सारी तक्लीफ़ें जाती रहीं, बेशक वोह बड़ा ख़ुश होनेवाला (और) फ़ख्र करनेवाला (बन जाता) है।

اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ اَجْرٌ كَبِيْرٌ ﴿۱۱﴾

11. सिवाए उन लोगोंके जिन्होंने सब्र किया और नेक अ़मल करते रहे, (तो) ऐसे लोगों के लिए मग़फ़िरत और बड़ा अज्र है।

فَلَعَلَّكَ تَارِكٌۢ بَعْضَ مَا يُوْحٰٓى اِلَيْكَ وَ ضَآئِقٌۢ بِهٖ صَدْرُكَ اَنْ يَّقُوْلُوْا لَوْ لَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ جَآءَ مَعَهٗ مَلَكٌ ؕ اِنَّمَآ اَنْتَ نَذِيْرٌ ؕ وَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ؕ﴿۱۲﴾

12. भला क्या येह मुमकिन है कि आप उसमें से कुछ छोड़ दें जो आप की तरफ़ वह़ी किया गया है और उससे आपका सीनए (अत्हर) तंग होने लगे (इस ख़याल से) कि कुफ़्फ़ार येह केहते हैं कि इस (रसूल) पर कोई ख़ज़ाना क्यों न उतारा गया या उसके साथ कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं आया, (ऐसा हरगिज़ मुमकिन नहीं ऐ रसूले मुअ़ज़्ज़म !) आप तो सिर्फ़ डर सुनानेवाले हैं (किसी को दुन्यवी लालच या सज़ा देनेवाले नहीं), और अल्लाह हर चीज़ पर निगेहबान है।

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِعَشْرِ سُوَرٍ مِّثْلِهٖ مُفْتَرَيٰتٍ وَّ ادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۱۳﴾

13. क्या कुफ़्फ़ार येह केहते हैं कि पयग़म्बरने इस (क़ुरआन) को ख़ुद घड़ लिया है फ़रमा दीजिए : तुम (भी) इस जैसी घड़ी हुई दस सूरतें ले आओ और अल्लाहके सिवा (अपनी मदद के लिए) जिसे भी बुला सक्ते हो बुला लो अगर तुम सच्चे हो।

فَاِلَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اُنْزِلَ بِعِلْمِ اللّٰهِ وَ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿۱۴﴾

14. (ऐ मुसलमानो !) सो अगर वोह तुम्हारी बात क़ुबूल न करें तो यक़ीन रखो कि क़ुरआन फ़क़त अल्लाहके इल्म से उतारा गया है और येह कि उसके सिवा कोई मा'बूद नहीं, पस क्या (अब) तुम इस्लाम पर (साबित क़दम) रहोगे।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَ زِيْنَتَهَا نُوَفِّ اِلَيْهِمْ اَعْمَالَهُمْ فِيْهَا

15. जो लोग (फ़क़त) दुन्यवी ज़िन्दगी और उसकी ज़ीनत (व आराइश) के तालिब हैं हम उनके आ'माल का पूरा पूरा बदला इसी दुनिया में दे देते हैं और उन्हें इस

وَهُمْ فِيهَا لَا يُبْخَسُونَ ﴿١٥﴾ أُولَٰٓئِكَ الَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ إِلَّا النَّارُ ۖ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوا فِيهَا وَبَاطِلٌ مَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٦﴾

(दुनिया के सिले) में कोई कमी नहीं दी जाती।

16. येह वोह लोग हैं जिनके लिए आख़िरत में कुछ (हिस्सा) नहीं सिवाए आतिशे (दोज़ख़) के, और वोह सब (आ'माल अपने उख़्रवी अज्र के हिसाबसे) अकारत हो गए जो उन्होंने दुनिया में अंजाम दिए थे और वोह (सब कुछ) बातिलो बेकार हो गया जो वोह करते रहे थे (क्योंकि उनका हिसाब पूरे अज्र के साथ दुनिया में ही चुका दिया गया है और आख़िरत के लिए कुछ नहीं बचा)।

أَفَمَن كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّهِ وَيَتْلُوهُ شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمِن قَبْلِهِ كِتَابُ مُوسَىٰ إِمَامًا وَرَحْمَةً ۚ أُولَٰٓئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۚ وَمَن يَكْفُرْ بِهِ مِنَ الْأَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهُ ۚ فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِّنْهُ ۚ إِنَّهُ الْحَقُّ مِن رَّبِّكَ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٧﴾

17. वोह शख़्स जो अपने रबकी तरफ़से रौशन दलील पर है और अल्लाह की जानिबसे एक गवाह (कु़रआन) भी उस शख़्सकी ताईदो तक़्वियत के लिए आ गया है और इससे क़ब्ल मूसा (عليه السلام) की किताब (तौरात) भी जो रहनुमा और रह़्मत थी (आ चुकी हो), येही लोग इस (कु़रआन) पर ईमान लाते हैं, क्या (येह) और (काफ़िर) फ़िरक़ोंमें से वोह शख़्स जो इस (कु़रआन) का मुन्किर है (बराबर हो सक्ते हैं) जबकि आतिशे दोज़ख़ उसका ठिकाना है, सो (ऐ सुननेवाले !) तुझे चाहिए कि तू इससे मु-त-अ़ल्लिक़ ज़रा भी शक में न रहे, बेशक येह (कु़रआन) तेरे रबकी तरफ़ से ह़क़ है लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं लाते।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۚ أُولَٰٓئِكَ يُعْرَضُونَ عَلَىٰ رَبِّهِمْ وَيَقُولُ الْأَشْهَادُ هَٰٓؤُلَآءِ الَّذِينَ كَذَبُوا عَلَىٰ رَبِّهِمْ ۚ أَلَا لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ ﴿١٨﴾

18. और उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन हो सक्ता है जो अल्लाह पर झूटा बोहतान बांधता है, ऐसे ही लोग अपने रबके हु़जू़र पेश किए जाएंगे और गवाह कहेंगे : येही वोह लोग हैं जिन्होंने अपने रब पर झूट बोला था, जान लो कि ज़ालिमों पर अल्लाह की ला'नत है।

الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللّٰهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا ؕ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿١٩﴾

19. जो लोग (दूसरों को) अल्लाहकी राह से रोकते हैं और उसमें कजी तलाश करते हैं, और वोही लोग आख़िरत के मुन्किर हैं।

اُولٰٓئِكَ لَمْ يَكُوْنُوْا مُعْجِزِيْنَ فِي الْاَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَآءَ ۘ يُضٰعَفُ لَهُمُ الْعَذَابُ ؕ مَا كَانُوْا يَسْتَطِيْعُوْنَ السَّمْعَ وَمَا كَانُوْا يُبْصِرُوْنَ ﴿٢٠﴾

وقف لازم

20. येह लोग (अल्लाहको) ज़मीन में आजिज़ कर सक्नेवाले नहीं और न ही उनके लिए अल्लाह के सिवा कोई मददगार हैं। उनके लिए अज़ाब दोगुना कर दिया जाएगा (क्यों कि) न वोह (हक़ बात) सुनने की ताक़त रखते थे और न (हक़ को) देख ही सक्ते थे।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٢١﴾

21. येही लोग हैं जिन्होंने अपनी जानों को नुक़्सान पहुंचाया और जो बोहतान वोह बांधते थे वोह (सब) उनसे जाते रहे।

لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ ﴿٢٢﴾

22. येह बिल्कुल हक़ है कि यक़ीनन वोही लोग आख़िरत में सब से ज़ियादह ख़सारह उठानेवाले हैं।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَخْبَتُوْٓا اِلٰى رَبِّهِمْ ۙ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٣﴾

23. बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे और अपने रब के हुज़ूर आ़जिज़ी करते रहे येही लोग अह्ले जन्नत हैं वोह उसमें हमेशा रेहनेवाले हैं।

مَثَلُ الْفَرِيْقَيْنِ كَالْاَعْمٰى وَالْاَصَمِّ وَالْبَصِيْرِ وَالسَّمِيْعِ ؕ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٤﴾

ع

24. (काफ़िरो मुस्लिम) दोनों फ़रीक़ों की मिसाल अंधे और बेहरे और (उसके बर अ़क्स) देखनेवाले और सुननेवाले की सी है क्या दोनों का हाल बराबर है क्या तुम फिर (भी) नसीहत कुबूल नहीं करते।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖٓ

25. और बेशक हमने नूह (عليه السلام) को उनकी क़ौमकी

إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٢٥﴾

तरफ़ भेजा (उन्हों ने उनसे कहा) मैं तुम्हारे लिए खुला डर सुनानेवाला (बन कर आया) हूं।

أَن لَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ ۖ إِنِّي أَخَافُ
عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ أَلِيمٍ ﴿٢٦﴾

26. कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो, मैं तुम पर दर्दनाक दिन के अज़ाब (की आमद) का ख़ौफ़ रखता हूं।

فَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن
قَوْمِهِ مَا نَرَاكَ إِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا
وَمَا نَرَاكَ اتَّبَعَكَ إِلَّا الَّذِينَ هُمْ
أَرَاذِلُنَا بَادِيَ الرَّأْيِ ۚ وَمَا نَرَىٰ
لَكُمْ عَلَيْنَا مِن فَضْلٍ بَلْ نَظُنُّكُمْ
كَاذِبِينَ ﴿٢٧﴾

27. सो उनकी क़ौमके कुफ़्र करनेवाले सरदारों और वडेरों ने कहा : हमें तो तुम हमारे अपने ही जैसा एक बशर दिखाई देते हो और हमने किसी (मोअज़्ज़ज़ शख़्स) को तुम्हारी पैरवी करते हुए नहीं देखा सिवाए हमारे (मुआशरे के) सतही राए रखनेवाले पस्तो हक़ीर लोगों के (जो बे सोचे समझे तुम्हारे पीछे लग गए हैं), और हम तुम्हारे अंदर अपने ऊपर कोई फ़ज़ीलतो बरतरी (या'नी ताक़तो इक़्तिदार, मालो दौलत या तुम्हारी जमाअत में बड़े लोगों की शुमूलियत अल ग़रज़ ऐसा कोई नुमायां पहलू) भी नहीं देखते बल्कि हम तो तुम्हें झूटा समझते हैं।

قَالَ يَا قَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِن كُنتُ عَلَىٰ
بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَآتَانِي رَحْمَةً مِّنْ
عِندِهِ فَعُمِّيَتْ عَلَيْكُمْ أَنُلْزِمُكُمُوهَا
وَأَنتُمْ لَهَا كَارِهُونَ ﴿٢٨﴾

28. (नूह عليه السلام ने) कहा : ऐ मेरी क़ौम! बताओ तो सही अगर मैं अपने रबकी तरफ़ से रौशन दलील पर भी हूं और उसने मुझे अपने हुज़ूर से (ख़ास) रह्मत भी बख़्शी हो मगर वोह तुम्हारे ऊपर (अंधों की तरह) पोशीदह कर दी गई हो, तो क्या हम उसे तुम पर जब्रन मुसल्लत कर सक्ते हैं दर आं हालीकि तुम उसे ना पसंद करते हो?

وَيَا قَوْمِ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مَالًا ۖ
إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ وَمَا أَنَا
بِطَارِدِ الَّذِينَ آمَنُوا ۚ إِنَّهُم
مُّلَاقُو رَبِّهِمْ وَلَٰكِنِّي أَرَاكُمْ

29. और ऐ मेरी क़ौम! मैं तुमसे इस (दा'वतो तब्लीग़) पर कोई मालो दौलत (भी) तलब नहीं करता, मेरा अज्र तो सिर्फ़ अल्लाह (के ज़िम्मए करम) पर है और मैं (तुम्हारी ख़ातिर) उन (ग़रीब और पस मान्दह) लोगों को जो ईमान ले आए हैं धुत्कारनेवाला भी नहीं हूं (तुम उन्हें हक़ीर मत समझो येही हक़ीकत में मोअज़्ज़ज़ हैं)। बेशक येह लोग अपने रबकी मुलाक़ात से बेहरायाब होनेवाले हैं और मैं तो

قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ ﴿٢٩﴾

दर ह़क़ीक़त तुम्हें जाहिल (व बे फ़हम) क़ौम देख रहा हूं।

وَيٰقَوْمِ مَنْ يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ طَرَدْتُّهُمْ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٣٠﴾

30. और ऐ मेरी क़ौम! अगर मैं उनको धुतकार दूं तो अल्लाह (के ग़ज़ब) से (बचाने में) मेरी मदद कौन कर सक्ता है, क्या तुम ग़ौर नहीं करते?

وَلَاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَآئِنُ اللّٰهِ وَلَاۤ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَاۤ اَقُوْلُ اِنِّيْ مَلَكٌ وَّلَاۤ اَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ تَزْدَرِيْۤ اَعْيُنُكُمْ لَنْ يُّؤْتِيَهُمُ اللّٰهُ خَيْرًا ؕ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا فِيْۤ اَنْفُسِهِمْ ۚۖ اِنِّيْۤ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٣١﴾

31. और मैं तुमसे (येह) नहीं केहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं (या'नी मैं बेहद दौलतमंद हूं) और न (येह कि) मैं (अल्लाह के बताए बिग़ैर) खुद ग़ैब जानता हूं और न मैं येह केहता हूं कि मैं (इन्सान नहीं) फ़रिश्ता हूं (मेरी दा'वत करिश्माती दा'वों पर मब्नी नहीं है) और न उन लोगों की निस्बत जिन्हें तुम्हारी निगाहें ह़क़ीर जान रही हैं येह केहता हूं कि अल्लाह उन्हें हरगिज़ कोई भलाई न देगा (येह अल्लाहका अम्र और हर शख़्स का नसीब है), अल्लाह बेहतर जानता है जो कुछ उनके दिलों में है, (अगर ऐसा कहूं तो) बेशक मैं उसी वक़्त ज़ालिमों में से हो जाऊंगा।

قَالُوْا يٰنُوْحُ قَدْ جٰدَلْتَنَا فَاَكْثَرْتَ جِدَالَنَا فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَاۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٣٢﴾

32. वोह केहने लगे : ऐ नूह़ ! बेशक तुम हमसे झगड़ चुके सो तुमने हमसे बहुत झगड़ा कर लिया बस अब हमारे पास वोह (अ़ज़ाब) ले आओ जिसका तुम हमसे वा'दा करते हो अगर तुम (वाक़ई) सच्चे हो।

قَالَ اِنَّمَا يَاْتِيْكُمْ بِهِ اللّٰهُ اِنْ شَآءَ وَمَاۤ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٣٣﴾

33. (नूह़ عليه السلام ने) कहा : वोह (अ़ज़ाब) तो बस अल्लाह ही तुम पर लाएगा अगर उसने चाहा और तुम (उसे) आ़जिज़ नहीं कर सक्ते।

وَلَا يَنْفَعُكُمْ نُصْحِيْۤ اِنْ اَرَدْتُّ اَنْ اَنْصَحَ لَكُمْ اِنْ كَانَ اللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يُّغْوِيَكُمْ ؕ هُوَ رَبُّكُمْ ۚ وَاِلَيْهِ

34. और मेरी नसीह़त (भी) तुम्हें नफ़ा' न देगी ख़्वाह मैं तुम्हें नसीह़त करने का इरादह करूं अगर अल्लाहने तुम्हें गुमराह करने का इराद फ़रमा लिया हो, वोह तुम्हारा रब है, और तुम उसी की तरफ़ लौटाए

تُرْجَعُوْنَ ﴿٣٤﴾

जाओगे।

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ فَعَلَيَّ اِجْرَامِيْ وَ اَنَا بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُجْرِمُوْنَ ﴿٣٥﴾

35. (ऐ हबीबे मुकर्रम !) क्या येह लोग केहते हैं कि पयग़म्बर ने इस कुरआन को खुद घड़ लिया है ? फ़रमा दीजिए अगर मैं ने इसे घड़ लिया है तो मेरे जुर्म (का वबाल) मुझ पर होगा और मैं इससे बरी हूं जो जुर्म तुम कर रहे हो।

وَ اُوْحِيَ اِلٰى نُوْحٍ اَنَّهٗ لَنْ يُّؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ اِلَّا مَنْ قَدْ اٰمَنَ فَلَا تَبْتَىِٕسْ بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٦﴾

36. और नूह (عليه السلام) की तरफ़ वही की गई कि (अब) हरगिज़ तुम्हारी क़ौममें से (मज़ीद) कोई ईमान नहीं लाएगा सिवाए उनके जो (इस वक़्त तक) ईमान ला चुके हैं, सो आप उनके (तक्ज़ीबो इस्तेहज़ा के) कामों से रंजीदह न हों।

وَ اصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا وَ وَحْيِنَا وَ لَا تُخَاطِبْنِيْ فِي الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۚ اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ ﴿٣٧﴾

37. और तुम हमारे हुक्मके मुताबिक़ हमारे सामने एक कश्ती बनाओ और ज़ालिमों के बारे में मुझसे (कोई) बात न करना, वोह ज़रूर ग़र्क़ किए जाएंगे।

وَ يَصْنَعُ الْفُلْكَ ۗ وَ كُلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ مَلَاٌ مِّنْ قَوْمِهٖ سَخِرُوْا مِنْهُ ؕ قَالَ اِنْ تَسْخَرُوْا مِنَّا فَاِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ كَمَا تَسْخَرُوْنَ ﴿٣٨﴾

38. और नूह (عليه السلام) कश्ती बनाते रहे और जब भी उनकी क़ौमके सरदार उनके पाससे गुज़रते उनका मज़ाक़ उड़ाते। नूह (عليه السلام उन्हें जवाबन) केहते : अगर (आज) तुम हमसे तमस्खुर करते हो तो (कल) हम भी तुमसे तमस्खुर करेंगे जैसे तुम तमस्खुर कर रहे हो।

فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَ يَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٣٩﴾

39. सो तुम अनक़रीब जान लोगे कि किस पर (दुनिया में ही) अज़ाब आता है जो उसे ज़लीलो रुस्वा कर देगा और (फिर आख़िरत में भी किस पर) हमेशा क़ाइम रेहनेवाला अज़ाब उतरता है।

حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَمْرُنَا وَ فَارَ التَّنُّوْرُ ۙ قُلْنَا احْمِلْ فِيْهَا مِنْ كُلٍّ

40. यहां तक कि जब हमारा हुक्मे (अज़ाब) आ पहुंचा और तन्नूर (पानी के चश्मोंकी तरह) जोशसे उबलने लगा (तो) हमने फ़रमाया (ऐ नूह !) उस कश्ती में हर जिन्स में

زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَمَنْ اٰمَنَ ؕ وَمَآ اٰمَنَ مَعَهٗۤ اِلَّا قَلِيْلٌ ﴿٤٠﴾

से (नर और मादह) दो अ़दद पर मुश्तमिल जोड़ा सवार कर लो और अपने घरवालों को भी (ले लो), सिवाए उनके कि जिन पर (हलाकत का) फ़रमान पहले सादिर हो चुका है और जो कोई ईमान ले आया है (उसेभी साथ ले लो), और चंद (लोगों) के सिवा उनके साथ कोई ईमान नहीं लाया था।

وَقَالَ ارْكَبُوْا فِيْهَا بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖىهَا وَمُرْسٰىهَا ؕ اِنَّ رَبِّيْ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٤١﴾

41. और नूह (عليه السلام) ने कहा : तुम लोग उसमें सवार हो जाओ अल्लाह ही के नामसे उसका चलना और उसका ठहरना है। बेशक मेरा रब बड़ा ही बख़्शनेवाला निहायत महेरबान है।

قرأ حفص بفتح الميم وامالة الراء ١٢

وَهِيَ تَجْرِيْ بِهِمْ فِيْ مَوْجٍ كَالْجِبَالِ ۫ وَنَادٰى نُوْحُ ِۨابْنَهٗ وَكَانَ فِيْ مَعْزِلٍ يّٰبُنَيَّ ارْكَبْ مَّعَنَا وَلَا تَكُنْ مَّعَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٤٢﴾

42. और वोह कश्ती पहाड़ों जैसी (तूफ़ानी) लेहरों में उन्हें लिए चलती जा रही थी कि नूह (عليه السلام) ने अपने बेटेको पुकारा और वोह उनसे अलग (काफ़िरों के साथ खड़ा) था ऐ मेरे बेटे ! हमारे साथ सवार हो जा और काफ़िरों के साथ न रह।

قَالَ سَاٰوِيْۤ اِلٰى جَبَلٍ يَّعْصِمُنِيْ مِنَ الْمَآءِ ؕ قَالَ لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ ۚ وَحَالَ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِيْنَ ﴿٤٣﴾

43. वोह बोला : मैं (कश्ती में सवार होने कि बजाए) अभी किसी पहाड़की पनाह ले लेता हूं वोह मुझे पानीसे बचा लेगा। नूह (عليه السلام) ने कहा : आज अल्लाहके अ़ज़ाब से कोई बचानेवाला नहीं है मगर उस शख़्स को जिस पर वोही (अल्लाह) रहम फ़रमा दे, इसी अस्ना में दोनों (या'नी बाप बेटे) के दरमियान (तूफ़ानी) मौज ह़ाइल हो गई सो वोह डूबनेवालों में हो गया।

وَقِيْلَ يٰۤاَرْضُ ابْلَعِيْ مَآءَكِ وَيٰسَمَآءُ اَقْلِعِيْ وَغِيْضَ الْمَآءُ وَقُضِيَ الْاَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُوْدِيِّ

44. और (जब सफ़ीनए नूह (عليه السلام) के सिवा सब डूब कर हलाक हो चुके तो) हुक्म दिया गया : ऐ ज़मीन! अपना पानी निगल जा और ऐ आस्मान! तू थम जा और पानी खुश्क कर दिया गया और काम तमाम कर दिया गया और

وقيل بعدا للقوم الظلمين ﴿٤٤﴾

कश्ती जूदी पहाड़ पर जा ठेहरी और फ़रमा दिया गया कि ज़ालिमों के लिए (रह्मतसे) दूरी है।

ونادى نوح ربه فقال رب ان ابني من اهلي و ان وعدك الحق وانت احكم الحكمين ﴿٤٥﴾

45. और नूह़ (عليه السلام)ने अपने रबको पुकारा और अ़र्ज़ किया : ऐ मेरे रब ! बेशक मेरा लड़का (भी) तो मेरे घरवालों में दाख़िल था और यक़ीनन तेरा वा'दा सच्चा है और तू सबसे बड़ा ह़ाकिम है।

قال ينوح انه ليس من اهلك ۚ انه عمل غير صالح ۖ فلا تسئلن ما ليس لك به علم ۖ اني اعظك ان تكون من الجهلين ﴿٤٦﴾

46. इर्शाद हुवा : ऐ नूह़ ! बेशक वोह तेरे घरवालों में शामिल नहीं क्योंकि उसके अ़मल अच्छे न थे पस मुझसे वोह सवाल न किया करो जिसका तुम्हें इ़ल्म न हो, मैं तुम्हें नसीहत किए देता हूं कि कहीं तुम नादानों में से (न) होजाना।

قال رب اني اعوذ بك ان اسئلك ما ليس لي به علم ۖ و الا تغفر لي وترحمني اكن من الخسرين ﴿٤٧﴾

47. (नूह़ عليه السلام ने) अ़र्ज़ किया : ऐ मेरे रब ! मैं इस बातसे तेरी पनाह चाहता हूं कि तुझसे वोह सवाल करूं जिसका मुझे कुछ इ़ल्म न हो, और अगर तू मुझे न बख़्शेगा और मुझ पर रह़्म (न) फ़रमाएगा (तो) मैं नुक़्सान उठानेवालों में से होजाऊंगा।

قيل ينوح اهبط بسلم منا و بركت عليك وعلى امم ممن معك ۖ وامم سنمتعهم ثم يمسهم منا عذاب اليم ﴿٤٨﴾

48. फ़रमाया गया : ऐ नूह़ ! हमारी तरफ़से सलामती और बरकतों के साथ (कश्तीसे) उतर जाओ जो तुम पर हैं और उन तब्क़ात पर हैं जो तुम्हारे साथ हैं, और (आइन्दह फिर) कुछ तबक़े ऐसे भी होंगे जिन्हें हम (दुन्यवी ने'मतों से) बेहरायाब फ़रमाएंगे फिर उन्हें हमारी तरफ़से दर्दनाक अ़ज़ाब आ पहुंचेगा।

تلك من انباء الغيب نوحيها اليك ۚ ما كنت تعلمها انت و لا قومك من قبل هذا ۛ فاصبر ۛ ان العاقبة للمتقين ﴿٤٩﴾

49. येह (बयान उन) ग़ैबकी ख़बरों में से है जो हम आपकी तरफ़ वह़ी करते हैं, इससे क़ब्ल न आप इन्हें जानते थे और न आपकी क़ौम, पस आप सब्र करें। बेशक बेहतर अंजाम परहेज़गारों ही के लिए है।

وَ اِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ؕ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُفْتَرُوْنَ ﴿۵۰﴾

50. और (हमने) क़ौमे आ़द की तरफ़ उनके भाई हूद (ﷺ) को (भेजा), उन्होंने कहा : ऐ मेरी क़ौम अल्लाहकी इ़बादत करो उसके सिवा तुम्हारे लिए कोई मा'बूद नहीं, तुम अल्लाह पर (शरीक रखनेका) महज़ बोहतान बांधनेवाले हो।

يٰقَوْمِ لَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ؕ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى الَّذِيْ فَطَرَنِيْ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۵۱﴾

51. ऐ मेरी क़ौम! मैं इस (दा'वतो तब्लीग़) पर तुमसे कोई अज्र नहीं मांगता, मेरा अज्र फ़क़त उस (के ज़िम्मए करम) पर है जिसने मुझे पैदा फ़रमाया है, क्या तुम अ़क़्ल से काम नहीं लेते।

وَ يٰقَوْمِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْۤا اِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا وَّ يَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلٰى قُوَّتِكُمْ وَ لَا تَتَوَلَّوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿۵۲﴾

52. और ऐ लोगो! तुम अपने रबसे (गुनाहोंकी) बख़्शिश मांगो फिर उनकी जनाब में (सिद्क़ दिलसे) रुजूअ़ करो, वोह तुम पर आस्मानसे मूसलाधार बारिश भेजेगा और तुम्हारी क़ुव्वत पर क़ुव्वत बढ़ाएगा और तुम मुजरिम बनते हुए उससे रू गर्दानी न करना।

قَالُوْا يٰهُوْدُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَّ مَا نَحْنُ بِتَارِكِيْۤ اٰلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَ مَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿۵۳﴾

53. वोह बोले : ऐ हूद ! तुम हमारे पास कोई वाज़ेह़ दलील ले कर नहीं आए हो और न हम तुम्हारे केहने से अपने मा'बूदों को छोड़नेवाले हैं और न ही हम तुम पर ईमान लानेवाले हैं।

اِنْ نَّقُوْلُ اِلَّا اعْتَرٰىكَ بَعْضُ اٰلِهَتِنَا بِسُوْٓءٍ ؕ قَالَ اِنِّيْۤ اُشْهِدُ اللّٰهَ وَ اشْهَدُوْۤا اَنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿۵۴﴾

54. हम इसके सिवा (कुछ) नहीं केह सक्ते कि हमारे मा'बूदों में से किसीने तुम्हें (दिमाग़ी ख़लल की) बीमारी में मुब्तिला कर दिया है। हूद (ﷺ) ने कहा : बेशक मैं अल्लाहको गवाह बनाता हूं और तुम भी गवाह रहो कि मैं उनसे ला तअ़ल्लुक़ हूं जिन्हें तुम शरीक गरदान्ते हो।

مِنْ دُوْنِهٖ فَكِيْدُوْنِيْ جَمِيْعًا ثُمَّ لَا تُنْظِرُوْنِ ﴿۵۵﴾

55. उस (अल्लाह) के सिवा तुम सब (बशुमूल तुम्हारे मा'बूदाने बातिला) मिल कर मेरे ख़िलाफ़ (कोई) तदबीर कर लो फिर मुझे मोहलत भी न दो।

اِنِّيْ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ رَبِّيْ وَ

56. बेशक मैंने अल्लाह पर तवक्कुल कर लिया है जो मेरा

رَبِّكُمْ ۗ مَا مِنْ دَآبَّةٍ اِلَّا هُوَ اٰخِذٌۢ بِنَاصِيَتِهَا ۗ اِنَّ رَبِّيْ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٥٦﴾

(भी) रब है और तुम्हारा (भी) रब है, कोई चलनेवाला (जानदार) ऐसा नहीं मगर वोह उसे उसकी चोटीसे पकडे़ हुए है (या'नी मुकम्मल तौर पर उसके क़ब्जए कुदरत में है)। बेशक मेरा रब (हक़्क़ो अ़दलमें) सीधी राह पर (चलने से मिलता) है।

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ مَّآ اُرْسِلْتُ بِهٖۤ اِلَيْكُمْ ۗ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّيْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۚ وَلَا تَضُرُّوْنَهٗ شَيْـًٔا ۗ اِنَّ رَبِّيْ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ﴿٥٧﴾

57. फिर भी अगर तुम रू गर्दानी करो तो मैंने वाक़िअ़तन वोह (तमाम अह्काम) तुम्हें पहुंचा दिए हैं जिन्हें ले कर मैं तुम्हारे पास भेजा गया हूं, और मेरा रब तुम्हारी जगह किसी और क़ौमको क़ाइम मुक़ाम बना देगा, और तुम उसका कुछ भी बिगाड़ न सकोगे। बेशक मेरा रब हर चीज़ पर निगहबान है।

وَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُوْدًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ۚ وَنَجَّيْنٰهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿٥٨﴾

58. और जब हमारा हुक्मे (अ़ज़ाब) आ पहुंचा (तो) हमने हूद (عليه السلام) को और उनके साथ ईमानवालों को अपनी रह्मत के बाइस बचा लिया, और हमने उन्हें सख़्त अ़ज़ाब से नजात बख़्शी।

وَتِلْكَ عَادٌ ۟ۙ جَحَدُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَعَصَوْا رُسُلَهٗ وَاتَّبَعُوْۤا اَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ﴿٥٩﴾

59. और येह (क़ौमे) आ़द है जिन्हों ने अपने रबकी आयतों का इन्कार किया और अपने रसूलों की ना फ़रमानी की और हर जाबिर (व मु-त-कब्बिर) दुश्मने हक़् के हुक्म की पैरवी की।

وَاُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ اَلَآ اِنَّ عَادًا كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ۗ اَلَا بُعْدًا لِّعَادٍ قَوْمِ هُوْدٍ ﴿٦٠﴾

60. और इस दुनियामें (भी) उनके पीछे ला'नत लगा दी गई और क़ियामतके दिन (भी लगेगी) । याद रखो कि (क़ौमे) आ़दने अपने रबके साथ कुफ़्र किया था । ख़बरदार ! हूद (عليه السلام) की कौमे आ़द के लिए (रह्मत से) दूरी है।

ع ٥ ٥

وَاِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا ۘ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ

وقف لازم

61. और (हमने क़ौमे) समूद की तरफ़ उनके भाई सालेह (عليه السلام) को भेजा । उन्होंने कहा : ऐ मेरी क़ौम!

غَيْرُهٗ ؕ هُوَ اَنْشَاَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ وَ اسْتَعْمَرَكُمْ فِيْهَا فَاسْتَغْفِرُوْهُ ثُمَّ تُوْبُوْۤا اِلَيْهِ ؕ اِنَّ رَبِّيْ قَرِيْبٌ مُّجِيْبٌ ﴿۶۱﴾

अल्लाहकी इबादत करो तुम्हारे लिए उसके सिवा कोई मा'बूद नहीं, उसीने तुम्हें ज़मीन से पैदा फ़रमाया और उसमें तुम्हें आबाद फ़रमाया सो तुम उससे मुआफ़ी मांगो फिर उसके हुज़ूर तौबा करो। बेशक मेरा रब क़रीब है दुआएं क़ुबूल फ़रमानेवाला है।

قَالُوْا يٰصٰلِحُ قَدْ كُنْتَ فِيْنَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هٰذَاۤ اَتَنْهٰىنَاۤ اَنْ نَّعْبُدَ مَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا وَ اِنَّنَا لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَاۤ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ﴿۶۲﴾

62. वोह बोले : ऐ सालेह ! इससे क़ब्ल हमारी क़ौममें तुम ही उम्मीदों का मर्कज़ थे, क्या तुम हमें उन (बुतों) की परस्तिश करने से रोक रहे हो जिनकी हमारे बापदादा परस्तिश करते रहे हैं और जिस (तौहीद) की तरफ़ तुम हमें बुला रहे हो यक़ीनन हम उसके बारे में बड़े इज़्तिराब अंगेज़ शक में मुब्तिला हैं।

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَ اٰتٰىنِيْ مِنْهُ رَحْمَةً فَمَنْ يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ عَصَيْتُهٗ ۫ فَمَا تَزِيْدُوْنَنِيْ غَيْرَ تَخْسِيْرٍ ﴿۶۳﴾

63. सालेह (عليه السلام) ने कहा : ऐ मेरी क़ौम! ज़रा सोचो तो सही अगर मैं अपने रबकी तरफ़से रौशन दलील पर (क़ाइम) हूं और मुझे उसकी जानिब से (ख़ास) रहमत नसीब हुई है, (इसके बाद उस के अह्काम तुम तक न पहुंचा कर) अगर मैं उसकी ना फ़रमानी कर बैठूं तो कौन शख़्स है जो अल्लाह (के अज़ाब) से बचाने में मेरी मदद कर सक्ता है? पस सिवाए नुक़्सान पहुंचाने के तुम मेरा (और) कुछ नहीं बढ़ा सकते।

وَ يٰقَوْمِ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْۤ اَرْضِ اللّٰهِ وَ لَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيْبٌ ﴿۶۴﴾

64. और ऐ मेरी क़ौम! येह अल्लाह की (ख़ास तरीक़े से पैदा कर्दह) ऊंटनी है (जो) तुम्हारे लिए निशानी है सो इसे छोड़े रखो (येह) अल्लाहकी ज़मीनमें खाती फिरे और इसे कोई तक्लीफ़ न पहुंचाना वरना तुम्हें क़रीब (वाक़े' होनेवाला) अज़ाब आ पकड़ेगा।

فَعَقَرُوْهَا فَقَالَ تَمَتَّعُوْا فِيْ دَارِكُمْ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ ؕ ذٰلِكَ وَعْدٌ غَيْرُ

65. फिर उन्होंने उसे (कोंचें काट कर) ज़ब्ह कर डाला, सालेह (عليه السلام) ने कहा : (अब) तुम अपने घरों में (सिर्फ़) तीन दिन (तक) ऐश कर लो, येह वा'दा है जो (कभी)

مَكۡذُوۡبٍ ﴿٦٥﴾

झूटा न होगा।

فَلَمَّا جَآءَ اَمۡرُنَا نَجَّیۡنَا صٰلِحًا وَّ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا مَعَهٗ بِرَحۡمَةٍ مِّنَّا وَ مِنۡ خِزۡیِ یَوۡمِئِذٍ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الۡقَوِیُّ الۡعَزِیۡزُ ﴿٦٦﴾

66. फिर जब हमारा हुक्मे (अज़ाब) आ पहुंचा (तो) हमने सालेह (عليه السلام)को और जो उनके साथ ईमानवाले थे अपनी रहमतके सबब से बचा लिया और उस दिनकी रुस्वाई से (भी नजात बख़्शी) । बेशक आपका रब ही ताक़तवर ग़ालिब है।

وَ اَخَذَ الَّذِیۡنَ ظَلَمُوا الصَّیۡحَةُ فَاَصۡبَحُوۡا فِیۡ دِیَارِهِمۡ جٰثِمِیۡنَ ﴿٦٧﴾

67.और ज़ालिम लोगों को हौलनाक आवाज़ने आ पकड़ा, सो उन्होंने सुब्ह इस तरह की कि अपने घरों में (मुर्दह हालत) में औंधे पड़े रेह गए।

كَاَنۡ لَّمۡ یَغۡنَوۡا فِیۡهَا ؕ اَلَاۤ اِنَّ ثَمُوۡدَاۡ كَفَرُوۡا رَبَّهُمۡ ؕ اَلَا بُعۡدًا لِّثَمُوۡدَ ﴿٦٨﴾

68. गोया वोह कभी उनमें बसे ही न थे, याद रखो ! (क़ौमे) समूदने अपने रबसे कुफ्र किया था। ख़बरदार! (क़ौमे) समूदके लिए (रहमत से) दूरी है।

وَ لَقَدۡ جَآءَتۡ رُسُلُنَاۤ اِبۡرٰهِیۡمَ بِالۡبُشۡرٰی قَالُوۡا سَلٰمًا ؕ قَالَ سَلٰمٌ فَمَا لَبِثَ اَنۡ جَآءَ بِعِجۡلٍ حَنِیۡذٍ ﴿٦٩﴾

69. और बेशक हमारे फिरस्तादह फ़रिश्ते इब्राहीम (عليه السلام)के पास खुश ख़बरी ले कर आए उन्होंने सलाम कहा, इब्राहीम (عليه السلام)ने भी (जवाबन) सलाम कहा, फिर (आप عليه السلام ने) देर न की यहां तक कि (उनकी मेज़बानी के लिए) एक भुना हुवा बछड़ा ले आए।

فَلَمَّا رَاٰۤ اَیۡدِیَهُمۡ لَا تَصِلُ اِلَیۡهِ نَكِرَهُمۡ وَ اَوۡجَسَ مِنۡهُمۡ خِیۡفَةً ؕ قَالُوۡا لَا تَخَفۡ اِنَّاۤ اُرۡسِلۡنَاۤ اِلٰی قَوۡمِ لُوۡطٍ ﴿٧٠﴾

70. फिर जब (इब्राहीम عليه السلام ने) देखा कि उनके हाथ उस (खाने) की तरफ़ नहीं बढ़ रहे तो उन्हें अजनबी समझा और (अपने) दिलमें उनसे कुछ ख़ौफ़ महसूस करने लगे, उन्होंने कहा : आप मत डरिए ! हम क़ौमे लूतकी तरफ़ भेजे गए हैं।

وَامۡرَاَتُهٗ قَآئِمَةٌ فَضَحِكَتۡ فَبَشَّرۡنٰهَا بِاِسۡحٰقَ ۙ وَ مِنۡ وَّرَآءِ اِسۡحٰقَ

71. और उनकी अहलिया (सारह पास ही) खड़ी थीं तो वोह हंस पड़ीं सो हमने उनकी (ज़ौजा) को इस्हाक़ (عليه السلام)की और इस्हाक़(عليه السلام)के बाद या'कूब (عليه السلام) की

يَعْقُوبَ ﴿٧١﴾

बिशारत दी।

قَالَتْ يَا وَيْلَتَىٰ أَأَلِدُ وَأَنَا عَجُوزٌ وَهَٰذَا بَعْلِي شَيْخًا ۖ إِنَّ هَٰذَا لَشَيْءٌ عَجِيبٌ ﴿٧٢﴾

72. वोह केहने लगीं : वाए हैरानी! क्या मैं बच्चा जनूंगी हालांकि मैं बूढ़ी(हो चुकी)हूं और मेरे येह शौहर(भी) बूढ़े हैं। बेशक येह तो बड़ी अ़जीब चीज़ है।

قَالُوا أَتَعْجَبِينَ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ ۖ رَحْمَتُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الْبَيْتِ ۚ إِنَّهُ حَمِيدٌ مَجِيدٌ ﴿٧٣﴾

73. फ़रिश्तोंने कहा : क्या तुम अल्लाहके हुक्म पर तअ़ज्जुब कर रही हो? ऐ घरवालो ! तुम पर अल्लाहकी रह़मत और उसकी बरकतें हैं, बेशक वोह क़ाबिले सताइश (है) बुज़ुर्गीवाला है।

فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ إِبْرَاهِيمَ الرَّوْعُ وَجَاءَتْهُ الْبُشْرَىٰ يُجَادِلُنَا فِي قَوْمِ لُوطٍ ﴿٧٤﴾

74. फिर जब इब्राहीम(عليه السلام)से ख़ौफ़ जाता रहा और उनके पास बिशारत आ चुकी तो हमारे (फ़रिश्तों के) साथ क़ौमे लूतके बारे में झगड़ने लगे।

إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَحَلِيمٌ أَوَّاهٌ مُنِيبٌ ﴿٧٥﴾

75. बेशक इब्राहीम(عليه السلام) बड़े मुतहम्मिल मिज़ाज आहो ज़ारी करनेवाले हर ह़ालमें हमारी तरफ़ रुजूअ़ करनेवाले थे।

يَا إِبْرَاهِيمُ أَعْرِضْ عَنْ هَٰذَا ۖ إِنَّهُ قَدْ جَاءَ أَمْرُ رَبِّكَ ۖ وَإِنَّهُمْ آتِيهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُودٍ ﴿٧٦﴾

76. (फ़रिश्तोंने कहा :) ऐ ईब्राहीम! इस (बात)से दरगुज़र कीजिए बेशक अब तो आपके रबका हुक्मे (अ़ज़ाब) आ चुका है, और उन्हें अ़ज़ाब पहुंचने ही वाला है जो पलटाया नहीं जा सक्ता।

وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِيءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَقَالَ هَٰذَا يَوْمٌ عَصِيبٌ ﴿٧٧﴾

77. और जब हमारे फ़िरस्तादह फ़रिश्ते लूत (عليه السلام)के पास आए (तो) वोह उनके आने से परेशान हुए और उनके बाइस (उनकी) ताक़त कमज़ोर पड़ गई और केहने लगे : येह बहुत सख़्त दिन है (फ़रिश्ते निहायत ख़ूबरू थे और ह़ज़रत लूत (عليه السلام)को अपनी क़ौमकी बुरी आ़दतका इल्म था सो मुम्किना फ़ित्ने के अंदेशे से परेशान हुए)।

وَجَاءَهُ قَوْمُهُ يُهْرَعُونَ إِلَيْهِ وَمِنْ قَبْلُ كَانُوا يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ ۚ

78. (सो वोही हुवा जिसका उन्हें अंदेशा था) और लूत (عليه السلام)की क़ौम (मेहमानों की ख़बर सुनते ही) उनके पास

قَالَ يٰقَوْمِ هٰٓؤُلَآءِ بَنَاتِىْ هُنَّ اَطْهَرُ لَكُمْ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ فِىْ ضَيْفِىْ ؕ اَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ رَّشِيْدٌ ﴿٧٨﴾

दौड़ती हुई आ गई, और वोह पहले ही बुरे काम किया करते थे। लूत (عليه السلام) ने कहा : ऐ मेरी (ना फ़रमान) क़ौम! येह मेरी (क़ौम की) बेटियां हैं येह तुम्हारे लिए (ब.तरीक़े निकाह) पाकीज़ा-ओ-हलाल हैं सो तुम अल्लाहसे डरो और मेरे मेहमानों में (अपनी बेहयाई के बाइस) मुझे रुस्वा न करो। क्या तुममें से कोई भी नेक सीरत आदमी नहीं है?

قَالُوْا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِىْ بَنٰتِكَ مِنْ حَقٍّ ۚ وَاِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِيْدُ ﴿٧٩﴾

79. वोह बोले : तुम खूब जानते हो कि हमें तुम्हारी (क़ौमकी) बेटियोंसे कोई ग़रज़ नहीं, और तुम यक़ीनन जानते हो जो कुछ हम चाहते हैं।

قَالَ لَوْ اَنَّ لِىْ بِكُمْ قُوَّةً اَوْ اٰوِىْۤ اِلٰى رُكْنٍ شَدِيْدٍ ﴿٨٠﴾

80. लूत (عليه السلام) ने कहा : काश ! मुझमें तुम्हारे मुक़ाबले की हिम्मत होती या मैं (आज) किसी मज़बूत क़िल्ए में पनाह ले सक्ता।

قَالُوْا يٰلُوْطُ اِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَنْ يَّصِلُوْۤا اِلَيْكَ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ اِلَّا امْرَاَتَكَ ؕ اِنَّهٗ مُصِيْبُهَا مَاۤ اَصَابَهُمْ ؕ اِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ ؕ اَلَيْسَ الصُّبْحُ بِقَرِيْبٍ ﴿٨١﴾

81. (तब फ़रिश्ते) केहने लगे : ऐ लूत ! हम आपके रबके भेजे हुए हैं। येह लोग तुम तक हरगिज़ न पहुंच सकेंगे, पस आप अपने घरवालों को रातके कुछ हिस्सेमें ले कर निकल जाएं और तुम में से कोई मुड़ कर (पीछे) न देखे मगर अपनी औरतको (साथ न लेना), यक़ीनन उसे (भी) वोही (अज़ाब) पहुंचने वाला है जो उन्हें पहुंचेगा। बेशक उन (के अज़ाब) का मुक़र्ररह वक़्त सुब्ह (का) है, क्या सुब्ह क़रीब नहीं है?।

فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ۙ مَّنْضُوْدٍ ﴿٨٢﴾

82. फिर जब हमारा हुक्मे (अज़ाब) आ पहुंचा तो हमने (उलट कर) उस बस्ती के ऊपर के हिस्से को निचला हिस्सा कर दिया और हमने उस पर पथ्थर और पकी हुई मिट्टी के कंकर बरसाए जो पै दर पै (और तेह ब तेह) गिरते रहे।

مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ ؕ وَمَا هِىَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ بِبَعِيْدٍ ﴿٨٣﴾

83. जो आपके रब की तरफ़से निशान किए हुए थे। और येह (संगरेज़ों का अज़ाब) ज़ालिमों से (अब भी) कुछ दूर नहीं है।

النصف ع ١٥

وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۚ قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ وَلَا تَنقُصُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيزَانَ ۚ إِنِّي أَرَاكُم بِخَيْرٍ وَإِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيطٍ ﴿٨٤﴾

84. और (हमने अह्ले) मद्यन की तरफ़ उनके भाई शुऐब (عليه السلام को भेजा) उन्होंने कहा : ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो तुम्हारे लिए उसके सिवा कोई मा'बूद नहीं है, और नाप और तौल में कमी मत किया करो बेशक मैं तुम्हें आसूदह हाल देखता हूं और मैं तुम पर ऐसे दिनके अज़ाब का ख़ौफ़ (मेहूसूस) करता हूं जो (तुम्हें) घेर लेनेवाला है।

وَيَا قَوْمِ أَوْفُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيزَانَ بِالْقِسْطِ ۖ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿٨٥﴾

85. और ऐ मेरी क़ौम! तुम नाप और तौल इन्साफ़ के साथ पूरे किया करो और लोगों को उनकी चीज़ें घटा कर न दिया करो और फ़साद करनेवाले बन कर मुल्कमें तबाही मत मचाते फिरो।

بَقِيَّتُ اللَّهِ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ۚ وَمَا أَنَا عَلَيْكُم بِحَفِيظٍ ﴿٨٦﴾

86.जो अल्लाह के दिए में बच रहे (वोही) तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम ईमानवाले हो, और मैं तुम पर निगेहबान नहीं हूं।

قَالُوا يَا شُعَيْبُ أَصَلَاتُكَ تَأْمُرُكَ أَن نَّتْرُكَ مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا أَوْ أَن نَّفْعَلَ فِي أَمْوَالِنَا مَا نَشَاءُ ۖ إِنَّكَ لَأَنتَ الْحَلِيمُ الرَّشِيدُ ﴿٨٧﴾

87. वोह बोले : ऐ शुऐब! क्या तुम्हारी नमाज़ तुम्हें येही हुक्म देती है कि हम उन (मा'बूदों) को छोड़ दें जिनकी परस्तिश हमारे बापदादा करते रहे हैं या येह कि हम जो कुछ अपने अमवाल के बारे में चाहें (न) करें? बेशक तुम ही (एक) बड़े तहम्मुलवाले हिदायत याफ़्ता (रेह गए) हो।

قَالَ يَا قَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِن كُنتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَرَزَقَنِي مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا ۚ وَمَا أُرِيدُ أَنْ أُخَالِفَكُمْ إِلَىٰ مَا أَنْهَاكُمْ عَنْهُ ۚ إِنْ أُرِيدُ إِلَّا الْإِصْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُ ۚ

88. शुऐब (عليه السلام) ने कहा : ऐ मेरी क़ौम! ज़रा बताओ कि अगर मैं अपने रबकी तरफ़से रौशन दलील पर हूं और उसने मुझे अपनी बारगाह से उ़मदा रिज़्क़ (भी) अ़ता फ़रमाया (तो फिर ह़क़ की तबलीग़ क्यों न करूं), और मैं येह (भी) नहीं चाहता कि तुम्हारे पीछे लग कर (ह़क़ के ख़िलाफ़) खुद वोही कुछ करने लगूं जिससे मैं तुम्हें मना'

وَمَا تَوْفِيقِيٓ إِلَّا بِٱللَّهِ ۚ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ﴿٨٨﴾

कर रहा हूं, मैं तो जहां तक मुझसे हो सक्ता है (तुम्हारी) इस्लाह ही चाहता हूं, और मेरी तौफ़ीक़ अल्लाह ही (की मदद) से है, मैंने उसी पर भरोसा किया है और उसी कि तरफ़ रुजूअ् करता हूं।

وَيَٰقَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِيٓ أَن يُصِيبَكُم مِّثْلُ مَآ أَصَابَ قَوْمَ نُوحٍ أَوْ قَوْمَ هُودٍ أَوْ قَوْمَ صَٰلِحٍ ۚ وَمَا قَوْمُ لُوطٍ مِّنكُم بِبَعِيدٍ ﴿٨٩﴾

89. और ऐ मेरी क़ौम! मुझसे दुश्मनी-व-मुख़ालिफ़त तुम्हें यहां तक न उभार दे (कि जिसके बाइस) तुम पर वोह (अज़ाब) आ पहुंचे जैसा (अज़ाब) क़ौमे नूह या क़ौमे हूद या क़ौमे सालेह़को पहुंचा था, और क़ौमे लूत (का ज़माना तो) तुमसे कुछ दूर नहीं (गुज़रा)।

وَٱسْتَغْفِرُوا۟ رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوٓا۟ إِلَيْهِ ۚ إِنَّ رَبِّى رَحِيمٌ وَدُودٌ ﴿٩٠﴾

90. और तुम अपने रबसे मग़फ़िरत मांगो फिर उसके हुज़ूर (सिद्क़ दिलसे) तौबा करो, बेशक मेरा रब निहायत महरबान मह़ब्बत फ़रमानेवाला है।

قَالُوا۟ يَٰشُعَيْبُ مَا نَفْقَهُ كَثِيرًا مِّمَّا تَقُولُ وَإِنَّا لَنَرَىٰكَ فِينَا ضَعِيفًا ۖ وَلَوْلَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنَٰكَ ۖ وَمَآ أَنتَ عَلَيْنَا بِعَزِيزٍ ﴿٩١﴾

91. वोह बोले : ऐ शुऐब ! तुम्हारी अक्सर बातें हमारी समझमें नहीं आतीं और हम तुम्हें अपने मुआशरे में एक कमज़ोर शख़्स जानते हैं, और अगर तुम्हारा कुंबा न होता तो हम तुम्हें संगसार कर देते और (हमें इसी का लिहाज़ है वरना) तुम हमारी निगाहमें कोई इज़्ज़तवाले नहीं हो।

قَالَ يَٰقَوْمِ أَرَهْطِىٓ أَعَزُّ عَلَيْكُم مِّنَ ٱللَّهِ وَٱتَّخَذْتُمُوهُ وَرَآءَكُمْ ظِهْرِيًّا ۖ إِنَّ رَبِّى بِمَا تَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ﴿٩٢﴾

92. शुऐब (عليه السلام)ने कहा : ऐ मेरी क़ौम! क्या मेरा कुंबा तुम्हारे नज़दीक अल्लाह से ज़ियादह मोअज़्ज़ज़ है ? और तुमने उसे (या'नी अल्लाह तआला को गोया) अपने पसे पुश्त डाल रखा है। बेशक मेरा रब तुम्हारे (सब) कामों को अहाते में लिए हुए है।

وَيَٰقَوْمِ ٱعْمَلُوا۟ عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنِّى عَٰمِلٌ ۖ سَوْفَ تَعْلَمُونَ مَن يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَمَنْ هُوَ كَٰذِبٌ ۖ

93. और ऐ मेरी क़ौम! तुम अपनी जगह काम करते रहो मैं अपना काम कर रहा हूं। तुम अ़नक़रीब जान लोगे कि किस पर वोह अ़ज़ाब आ पहुंचता है जो रुस्वा कर डालेगा और कौन है जो झूटा है ? और तुम भी इन्तिज़ार करते रहो

وَارْتَقِبُوٓا اِنِّیْ مَعَكُمْ رَقِیْبٌ ﴿٩٣﴾

और मैं (भी) तुम्हारे साथ मुन्तज़िर हूं।

وَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّیْنَا شُعَیْبًا وَّالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَاَخَذَتِ الَّذِیْنَ ظَلَمُوا الصَّیْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِیْ دِیَارِهِمْ جٰثِمِیْنَ ﴿٩٤﴾

94. और जब हमारा हुक्मे (अ़ज़ाब) आ पहुंचा तो हमने शुऐब (عليه السلام) को और उनके साथ ईमान वालों को अपनी रह़मत के बाइस बचा लिया और ज़ालिमों को ख़ौफ़नाक आवाज़ने आ पकड़ा, सो उन्होंने सुब्ह़ इस ह़ालमें की कि अपने घरों में (मुर्दह ह़ालतमें) औंधे पड़े रेह गए।

كَاَنْ لَّمْ یَغْنَوْا فِیْهَا ؕ اَلَا بُعْدًا لِّمَدْیَنَ كَمَا بَعِدَتْ ثَمُوْدُ ﴿٩٥﴾

95. गोया वोह उनमें कभी बसे ही न थे। सुनो! (अहले) मद्यन के लिए हलाकत है जैसे (क़ौमे) समूद हलाक हुई थी।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰی بِاٰیٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِیْنٍ ﴿٩٦﴾

96. और बेशक हमने मूसा (عليه السلام) को (भी) अपनी निशानियों और रौशन बुरहान के साथ भेजा।

اِلٰی فِرْعَوْنَ وَمَلَاۡئِهٖ فَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ فِرْعَوْنَ ۚ وَمَآ اَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِیْدٍ ﴿٩٧﴾

97. फ़िरऔ़न और उसके सरदारों के पास, तो (क़ौमके) सरदारों ने फ़िरऔन के हुक्म की पैरवी की हालां कि फ़िरऔ़नका हुक्म दुरुस्त न था।

یَقْدُمُ قَوْمَهٗ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ فَاَوْرَدَهُمُ النَّارَ ؕ وَبِئْسَ الْوِرْدُ الْمَوْرُوْدُ ﴿٩٨﴾

98. वोह क़ियामतके दिन अपनी क़ौमके आगे आगे चलेगा बिल आख़िर उन्हें आतिशे दोज़ख़ में ला गिराएगा, और वोह दाख़िल किए जानेकी कितनी बुरी जगह है।

وَاُتْبِعُوْا فِیْ هٰذِهٖ لَعْنَةً وَّیَوْمَ الْقِیٰمَةِ ؕ بِئْسَ الرِّفْدُ الْمَرْفُوْدُ ﴿٩٩﴾

99. और उस दुनियामें (भी) ला'नत उनके पीछे लगा दी गई और क़ियामत के दिन (भी उनके पीछे रहेगी), कितना बुरा अ़तिय्या है जो उन्हें दिया गया है।

ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْقُرٰی نَقُصُّهٗ عَلَیْكَ مِنْهَا قَآئِمٌ وَّحَصِیْدٌ ﴿١٠٠﴾

100. (ऐ रसूले मुअ़ज़्ज़म!) येह (उन) बस्तियों के कुछ ह़ालात हैं जो हम आपको सुना रहे हैं उनमें से कुछ बर क़रार हैं और (कुछ) नीस्तो नाबूद हो गईं।

وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَمَآ اَغْنَتْ عَنْهُمْ اٰلِهَتُهُمُ

101. और हमने उन पर ज़ुल्म नहीं किया था लेकिन उन्होंने (ख़ुदही) अपनी जानों पर ज़ुल्म किया, सो उनके

الَّتِىۡ يَدۡعُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ مِنۡ شَىۡءٍ لَّمَّا جَآءَ اَمۡرُ رَبِّكَ ؕ وَمَا زَادُوۡهُمۡ غَيۡرَ تَتۡبِيۡبٍ ﴿۱۰۱﴾

वोह झूटे मा'बूद जिन्हें वोह अल्लाह के सिवा पूजते थे उनके कुछ काम न आए जब आपके रबका हुक्मे (अज़ाब) आया,और वोह (देवता) तो सिर्फ़ उनकी हलाकतो बरबादी में इज़ाफ़ा कर सके।

وَكَذٰلِكَ اَخۡذُ رَبِّكَ اِذَاۤ اَخَذَ الۡقُرٰى وَهِىَ ظَالِمَةٌ ؕ اِنَّ اَخۡذَهٗۤ اَلِيۡمٌ شَدِيۡدٌ ﴿۱۰۲﴾

102. और इसी तरह आपके रब की पकड़ हुवा करती है जब वोह बस्तियों की इस हालमें गिरफ़्त फ़रमाता है कि वोह ज़ालिम बन चुकी होती हैं। बेशक उस की गिरफ़्त दर्दनाक (और) सख़्त होती है।

اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّمَنۡ خَافَ عَذَابَ الۡاٰخِرَةِ ؕ ذٰلِكَ يَوۡمٌ مَّجۡمُوۡعٌ ۙ لَّهُ النَّاسُ وَذٰلِكَ يَوۡمٌ مَّشۡهُوۡدٌ ﴿۱۰۳﴾

103. बेशक इन (वाक़िआत) में उस शख़्स के लिए इब्रत है जो आख़िरत के अज़ाब से डरता है। येह (रोज़े क़ियामत) वोह दिन है जिस के लिए सारे लोग जमा' किए जाएंगे और येही वोह दिन है जब सबको हाज़िर किया जाएगा।

وَمَا نُؤَخِّرُهٗۤ اِلَّا لِاَجَلٍ مَّعۡدُوۡدٍ ؕ ﴿۱۰۴﴾

104. और हम उसे मुअख़्ख़र नहीं कर रहे हैं मगर मुकर्ररह मुद्दत के लिए (जो पहले से तय है)।

يَوۡمَ يَاۡتِ لَا تَكَلَّمُ نَفۡسٌ اِلَّا بِاِذۡنِهٖ ۚ فَمِنۡهُمۡ شَقِىٌّ وَّسَعِيۡدٌ ﴿۱۰۵﴾

105. जब वोह दिन आएगा कोई शख़्स (भी) उसकी इजाज़त के बिग़ैर कलाम नहीं कर सकेगा फिर उनमें बा'ज़ बद बख़्त होंगे और बा'ज नेक बख़्त।

فَاَمَّا الَّذِيۡنَ شَقُوۡا فَفِى النَّارِ لَهُمۡ فِيۡهَا زَفِيۡرٌ وَّشَهِيۡقٌ ۙ ﴿۱۰۶﴾

106. सो जो लोग बद बख़्त होंगे (वोह) दोज़ख़ में (पड़े) होंगे उनके मुक़द्दर में वहां चीख़ना और चिल्लाना होगा।

خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالۡاَرۡضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيۡدُ ﴿۱۰۷﴾

107. वोह उसमें हमेशा रहेंगे जब तक आस्मान और ज़मीन (जो उस वक़्त होंगे) क़ाइम रहें मगर येह कि जो आपका रब चाहे। बेशक आपका रब जो इरादा फ़रमाता है कर गुज़रता है।

وَاَمَّا الَّذِيۡنَ سُعِدُوۡا فَفِى الۡجَنَّةِ خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ

108. और जो लोग नेक बख़्त होंगे (वोह) जन्नतमें होंगे वोह उसमें हमेशा रहेंगे जब तक आस्मान और ज़मीन (जो

وَ الۡاَرۡضُ اِلَّا مَاشَآءَ رَبُّكَ ؕ عَطَآءً غَيۡرَ مَجۡذُوۡذٍ ﴿۱۰۸﴾

उस वक़्त होंगे) क़ाइम रहें मगर येह कि जो आपका रब चाहे, येह वोह अ़ता होगी जो कभी मुन्क़ते' न होगी।

فَلَا تَكُ فِىۡ مِرۡيَةٍ مِّمَّا يَعۡبُدُ هٰٓؤُلَاۤءِ ؕ مَا يَعۡبُدُوۡنَ اِلَّا كَمَا يَعۡبُدُ اٰبَآؤُهُمۡ مِّنۡ قَبۡلُ ؕ وَ اِنَّا لَمُوَفُّوۡهُمۡ نَصِيۡبَهُمۡ غَيۡرَ مَنۡقُوۡصٍ ﴿۱۰۹﴾

109. पस (ऐ सुननेवाले !) तू उनके बारे में किसी (भी) शक में मुब्तिला न हो जिनकी येह लोग पूजा करते हैं। येह लोग (किसी दलीलो बसीरतकी बिना पर) परस्तिश नहीं करते मगर (सिर्फ़ उस तरह् करते हैं) जैसे उनसे क़ब्ल उनके बापदादा परस्तिश करते चले आ रहे हैं, और बेशक हम उन्हें यक़ीनन उनका पूरा हिस्सए (अ़ज़ाब) देंगे जिसमें कोई कमी नहीं की जाएगी।

وَ لَقَدۡ اٰتَيۡنَا مُوۡسَى الۡكِتٰبَ فَاخۡتُلِفَ فِيۡهِ ؕ وَ لَوۡ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتۡ مِنۡ رَّبِّكَ لَقُضِىَ بَيۡنَهُمۡ ؕ وَ اِنَّهُمۡ لَفِىۡ شَكٍّ مِّنۡهُ مُرِيۡبٍ ﴿۱۱۰﴾

110. और बेशक हमने मूसा (عليه السلام) को किताब दी फिर उसमें इख़्तिलाफ़ किया जाने लगा, और अगर आपके रबकी तरफ़से एक बात पेहले सादिर न हो चुकी होती तो उनके दरमियान ज़रूर फ़ैसला कर दिया गया होता, और वोह यक़ीनन उस (क़ुरआन) के बारे में इज़्तिराब अंगेज़ शक में मुब्तिला हैं।

وَ اِنَّ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمۡ رَبُّكَ اَعۡمَالَهُمۡ ؕ اِنَّهٗ بِمَا يَعۡمَلُوۡنَ خَبِيۡرٌ ﴿۱۱۱﴾

111. बेशक आपका रब उन सबको उनके आ'माल का पूरा पूरा बदला देगा। वोह जो कुछ कर रहे हैं यक़ीनन वोह उससे खूब आगाह है।

فَاسۡتَقِمۡ كَمَاۤ اُمِرۡتَ وَ مَنۡ تَابَ مَعَكَ وَ لَا تَطۡغَوۡا ؕ اِنَّهٗ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ بَصِيۡرٌ ﴿۱۱۲﴾

112. पस आप साबित क़दम रहिए जैसा कि आपको हुक्म दिया गया है और वोह भी (साबित क़दम रहे) जिसने आपकी मइय्यत में (अल्लाह की तरफ़) रुजूअ़ किया है, और (ऐ लोगो !) तुम सरकशी न करना, बेशक तुम जो कुछ करते हो वोह उसे खूब देख रहा है।

وَ لَا تَرۡكَنُوۡۤا اِلَى الَّذِيۡنَ ظَلَمُوۡا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ ۙ وَ مَا لَكُمۡ مِّنۡ دُوۡنِ

113. और तुम ऐसे लोगों की तरफ़ मत झुकना जो ज़ुल्म कर रहे हैं वरना तुम्हें आतिशे (दोज़ख़) आ छुएगी और तुम्हारे लिए अल्लाहके सिवा कोई मददगार न होगा फिर

اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَآءَ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿١١٣﴾

तुम्हारी मदद (भी) नहीं की जाएगी।

وَ اَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَ زُلَفًا مِّنَ الَّيْلِ ؕ اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ ؕ ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِيْنَ ﴿١١٤﴾

114. और आप दिन के दोनों किनारों में और रातके कुछ हिस्सोंमें नमाज़ क़ाइम कीजिए। बेशक नेकियां बुराइयों को मिटा देती हैं। येह नसीहत कुबूल करनेवालों के लिए नसीहत है।

وَ اصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١١٥﴾

115. और आप सब्र करें बेशक अल्लाह नेकूकारों का अज्र ज़ाए' नहीं फ़रमाता।

فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْ قَبْلِكُمْ اُولُوْا بَقِيَّةٍ يَّنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْاَرْضِ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّنْ اَنْجَيْنَا مِنْهُمْ ۚ وَ اتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَاۤ اُتْرِفُوْا فِيْهِ وَ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿١١٦﴾

116. सो तुमसे पेहले की उम्मतों में ऐसे साहिबाने फ़ज़्लो ख़िरद क्यों न हुए जो लोगों को ज़मीनमें फ़साद अंगेज़ी से रोकते बजुज़ उनमें से थोड़ेसे लोगों के जिन्हें हमने नजात दे दी, और ज़ालिमोंने ऐशो इशरत (के उसी रास्ते) की पैरवी की जिसमें वोह पड़े हुए थे और वोह (आदी) मुजरिम थे।

وَ مَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّ اَهْلُهَا مُصْلِحُوْنَ ﴿١١٧﴾

117. और आपका रब ऐसा नहीं कि वोह बस्तियों को ज़ुल्मन हलाक कर डाले दर आं हाली कि उसके बाशिन्दे नेकूकार हों।

وَ لَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّ لَا يَزَالُوْنَ مُخْتَلِفِيْنَ ﴿١١٨﴾

118. और अगर आपका रब चाहता तो तमाम लोगों को एक ही उम्मत बना देता (मगर उसने जब्रन ऐसा न किया बल्कि सबको मज़हब के इख़्तियार करने में आज़ादी दी) और (अब) येह लोग हमेशा इख़्तिलाफ़ करते रहेंगे।

اِلَّا مَنْ رَّحِمَ رَبُّكَ ؕ وَ لِذٰلِكَ خَلَقَهُمْ ؕ وَ تَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَاَمْلَـَٔنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَ النَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿١١٩﴾

119. सिवाए उस शख़्स के जिस पर आपका रब रह्म फरमाए, और इसी लिए उसने उन्हें पैदा फ़रमाया है, और आपके रब का फ़रमान पूरा हो चुका बेशक मैं दोज़ख़ को जिन्नों और इन्सानों में से सब (अहले बातिल) से ज़रूर भर दूंगा।

وَكُلًّا نَّقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهٖ فُؤَادَكَ ۚ وَجَآءَكَ فِيْ هٰذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَّذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٢٠﴾

120. और हम रसूलों की ख़बरों में से सब हालात आपको सुना रहे हैं जिससे हम आपके क़ल्बे (अत्हर) को तक़्वियत देते हैं, और आपके पास इस (सूरत) मे हक़ और नसीहत आई है और अह्ले ईमान के लिए इब्रत (व याद दहानी भी)।

وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ ؕ اِنَّا عٰمِلُوْنَ ﴿١٢١﴾

121. और आप उन लोगों से जो ईमान नहीं लाते फ़रमा दें तुम अपनी जगह अ़मल करते रहो (और) हम (अपने मुक़ाम पर) अ़मल पैरा हैं।

وَانْتَظِرُوْا ۚ اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ﴿١٢٢﴾

122.और तुम (भी)इन्तिज़ार करो हम (भी) मुन्तज़िर हैं।

وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاِلَيْهِ يُرْجَعُ الْاَمْرُ كُلُّهٗ فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ ؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٣﴾

123. और आस्मानों और ज़मीन का (सब) ग़ैब अल्लाह ही के लिए है और उसी की तरफ़ हर एक काम लौटाया जाता है सो उसकी इबादत करते रहें और उसी पर तवक्कल किए रखें और तुम्हारा रब तुम सब लोगों के आ'माल से ग़ाफ़िल नहीं है।

आयातुहा 111 | 12 सूरतु यूसुफ़ मक्कियतुन 53 | रुकूआतुहा 12

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नामसे शुरूअ् जो निहायत महरबान हमेशा रह्म फ़रमानेवाला है।

الٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿١﴾

1.अलिफ़ लाम रा (हक़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं), येह रौशन किताब की आयतें हैं।

اِنَّاۤ اَنْزَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٢﴾

2. बेशक हमने उस किताब को क़ुरआन की सूरत में ब-ज़बाने अ़-रबी उतारा ताकि तुम (उसे बराहे रास्त) समझ सको।

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ اَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَاۤ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْكَ هٰذَا الْقُرْاٰنَ ۖ وَ

3. (ऐ हबीब!) हम आपसे एक बेहतरीन क़िस्सा बयान करते हैं इस क़ुरआन के ज़रीए जिसे हमने आपकी तरफ़

إِن كُنتَ مِن قَبْلِهِ لَمِنَ الْغَافِلِينَ ۝٣

वही किया है, अगरचे आप इससे क़ब्ल (इस क़िस्से से) बेख़बर थे।

إِذْ قَالَ يُوسُفُ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ إِنِّي رَأَيْتُ أَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَأَيْتُهُمْ لِي سَاجِدِينَ ۝٤

4. (वोह क़िस्सा यूं है) जब यूसुफ़ (عليه السلام)ने अपने बाप से कहा : ऐ मेरे वालिदे गिरामी ! मैंने (ख़्वाब में) ग्यारह सितारों को और सूरज और चांद को देखा है, मैंने उन्हें अपने लिए सज्दह करते हुऐ देखा है।

قَالَ يَا بُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُؤْيَاكَ عَلَىٰ إِخْوَتِكَ فَيَكِيدُوا لَكَ كَيْدًا ۖ إِنَّ الشَّيْطَانَ لِلْإِنسَانِ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ۝٥

5. उन्होंने कहा : ऐ मेरे बेटे ! अपना येह ख़्वाब अपने भाइयों से बयान न करना वरना वोह तुम्हारे ख़िलाफ़ कोई पुर फ़रेब चाल चलेंगे । बेशक शैतान इन्सानका खुला दुश्मन है।

وَكَذَٰلِكَ يَجْتَبِيكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِن تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ وَعَلَىٰ آلِ يَعْقُوبَ كَمَا أَتَمَّهَا عَلَىٰ أَبَوَيْكَ مِن قَبْلُ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝٦

6. इसी तरह़ तुम्हारा रब तुम्हें (बुज़ुर्गी के लिए) मुन्तख़ब फ़रमा लेगा और तुम्हें बातों के अंजाम तक पहुंचना (या'नी ख़्वाबों की ता'बीर का इ़ल्म) सिखाएगा और तुम पर और औलादे या'कूब पर अपनी ने'मत तमाम फ़रमाएगा जैसा कि उसने इससे क़ब्ल तुम्हारे दोनों बाप (या'नी परदादा और दादा) इब्राहीम और इस्ह़ाक़ (عليهما السلام) पर तमाम फ़रमाई थी, बेशक तुम्हारा रब ख़ूब जाननेवाला बड़ी ह़िक्मतवाला है।

لَّقَدْ كَانَ فِي يُوسُفَ وَإِخْوَتِهِ آيَاتٌ لِّلسَّائِلِينَ ۝٧

7. बेशक यूसुफ़ (عليه السلام) और उनके भाइयों (के वाक़िए) में पूछनेवालों के लिए (बहुत सी) निशानियां हैं।

إِذْ قَالُوا لَيُوسُفُ وَأَخُوهُ أَحَبُّ إِلَىٰ أَبِينَا مِنَّا وَنَحْنُ عُصْبَةٌ إِنَّ أَبَانَا لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝٨

8. (वोह वक़्त याद कीजिए) जब यूसुफ़ (عليه السلام) के भाइयोंने कहा कि वाक़ई यूसुफ (عليه السلام)और उसका भाई हमारे बापको हमसे ज़ियादह मह़बूब हैं हालांकि हम (दस अफ़राद पर मुश्तमिल) ज़ियादह क़वी जमाअ़त हैं। बेशक हमारे वालिद (उनकी मह़ब्बत की) खुली वारफ़्तगी में गुम हैं।

اقْتُلُوا يُوسُفَ أَوِ اطْرَحُوهُ أَرْضًا

9. (अब येही ह़ल है कि) तुम यूसुफ़ (عليه السلام)को क़त्ल कर

يَخْلُ لَكُمْ وَجْهُ أَبِيكُمْ وَتَكُونُوا مِنْ بَعْدِهِ قَوْمًا صَالِحِينَ ٩

डालो या दूर किसी ग़ैर मा'लूम इलाक़े में फेंक आओ (इस तरह) तुम्हारे बाप की तवज्जोह ख़ालिसतन तुम्हारी तरफ़ हो जाएगी और उसके बाद तुम (तौबा करके) सालेहीन की जमाअ़त बन जाना।

قَالَ قَائِلٌ مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوا يُوسُفَ وَأَلْقُوهُ فِي غَيَابَتِ الْجُبِّ يَلْتَقِطْهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ إِن كُنتُمْ فَاعِلِينَ ١٠

10. उनमें से एक केहनेवाले ने कहा : तुम यूसुफ (عليه السلام) को क़त्ल मत करो और उसे किसी तारीक कुंवें की गेहराई में डाल दो उसे कोई राहगीर मुसाफ़िर उठा ले जाएगा अगर तुम (कुछ) करनेवाले हो (तो येह करो)।

قَالُوا يَا أَبَانَا مَا لَكَ لَا تَأْمَنَّا عَلَىٰ يُوسُفَ وَإِنَّا لَهُ لَنَاصِحُونَ ١١

11.उन्हों ने कहा : ऐ हमारे बाप ! आपको क्या हो गया है आप यूसुफ़ (عليه السلام)के बारे में हम पर ए'तिबार नहीं करते हालांकि हम यक़ीनी तौर पर उसके ख़ैर ख़्वाह हैं।

أَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَرْتَعْ وَيَلْعَبْ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ ١٢

12. आप उसे कल हमारे साथ भेज दीजिए वोह खूब खाए और खेले और बेशक हम उसके मुहाफ़िज़ हैं।

قَالَ إِنِّي لَيَحْزُنُنِي أَن تَذْهَبُوا بِهِ وَأَخَافُ أَن يَأْكُلَهُ الذِّئْبُ وَأَنتُمْ عَنْهُ غَافِلُونَ ١٣

13. उन्होंने कहा : बेशक मुझे येह ख़याल मग़मूम करता है कि तुम उसे ले जाओ और मैं (इस ख़याल से भी) ख़ौफ़ ज़दह हुं कि उसे भेड़िया खा जाए और तुम उस (की हिफ़ाज़त) से ग़ाफ़िल रहो।

قَالُوا لَئِنْ أَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ إِنَّا إِذًا لَّخَاسِرُونَ ١٤

14. वोह बोले : अगर उसे भेड़िया खा जाए हालांकि हम एक क़वी जमाअ़त भी (मौजूद) हों तो हम तो बिल्कुल नाकारह हुए।

فَلَمَّا ذَهَبُوا بِهِ وَأَجْمَعُوا أَن يَجْعَلُوهُ فِي غَيَابَتِ الْجُبِّ ۚ وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُم بِأَمْرِهِمْ هَٰذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ١٥

15. फिर जब वोह उसे ले गए और सब इस पर मुत्तफ़िक़ हो गए कि उसे तारीक कुंएं की गेहराई में डाल दें तब हमने उसकी तरफ़ वही भेजी (ऐ यूसुफ़ ! परेशान न होना एक वक़्त आएगा) कि तुम यक़ीनन उन्हें उनका येह काम जतलाओगे और उन्हें (तुम्हारे बुलंद रुत्बेका) शऊर नहीं होगा।

وَجَآءُوْٓ اَبَاهُمْ عِشَآءً يَّبْكُوْنَ ﴿١٦﴾

16. और वोह (यूसुफ़ عليه السلام को कुंएं में फेंक कर) अपने बापके पास रातके वक़्त (मक्कारी का रोना) रोते हुऐ आए।

قَالُوْا يٰٓاَبَانَآ اِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَ تَرَكْنَا يُوْسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَاَكَلَهُ الذِّئْبُ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَا وَلَوْ كُنَّا صٰدِقِيْنَ ﴿١٧﴾

17. केहने लगे : ऐ हमारे बाप ! हम लोग दौड़में मुक़ाबला करने चले गए और हमने यूसुफ़ (عليه السلام) को अपने सामान के पास छोड़ दिया तो उसे भेड़ियेने खा लिया, और आप (तो) हमारी बातका यक़ीन (भी) नहीं करेंगे अगरचे हम सच्चे ही हों।

وَجَآءُوْ عَلٰى قَمِيْصِهٖ بِدَمٍ كَذِبٍ ؕ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ؕ فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ؕ وَاللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ﴿١٨﴾

18. और वोह उसके क़मीज़ पर झूटा खून (भी) लगा कर ले आए (या'क़ूब عليه السلام ने) कहा : (हक़ीक़त येह नहीं है) बल्कि तुम्हारे (हासिद) नफ़्सोंने एक (बहुत बड़ा) काम तुम्हारे लिए आसान और खुश गवार बना दिया (जो तुमने कर डाला), पस (इस हादिसे पर) सब्र ही बेहतर है, और अल्लाह ही से मदद चाहता हूं इस पर जो कुछ तुम बयान कर रहे हो।

وَجَآءَتْ سَيَّارَةٌ فَاَرْسَلُوْا وَارِدَهُمْ فَاَدْلٰى دَلْوَهٗ ؕ قَالَ يٰبُشْرٰى هٰذَا غُلٰمٌ ؕ وَاَسَرُّوْهُ بِضَاعَةً ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٩﴾

19. और (उधर) राहगीरों का एक क़ाफ़ला आ पहुंचा तो उन्होंने अपना पानी भरनेवाला भेजा सो उसने अपना डोल (उस कुंएं में) लटकाया, वोह बोल उठा : खुशख़बरी हो येह एक लड़का है, और उन्होंने उसे क़ीमती सामाने तिजारत समझते हुऐ छुपा लिया, और अल्लाह उन कामों को जो वोह कर रहे थे खूब जाननेवाला है।

وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍۢ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُوْدَةٍ ۚ وَكَانُوْا فِيْهِ مِنَ الزّٰهِدِيْنَ ﴿٢٠﴾

20. और यूसुफ़ (عليه السلام) के भाइयोंने (जो मौक़े' पर आ गए थे उसे अपना भगोड़ा ग़ुलाम केह कर उन्ही के हाथों) बहुत कम क़ीमत गिनती के चंद दिरहमों के इवज बेच डाला क्यों कि वोह राहगीर उस (यूसुफ عليه السلام के खरीदने) के बारे में (पहले ही) बे रग़बत थे (फिर राहगीरों ने उसे मिस्र ले जा कर बेच दिया)।

وَقَالَ الَّذِي اشْتَرٰىهُ مِنْ مِّصْرَ لِامْرَاَتِهٖٓ اَكْرِمِيْ مَثْوٰىهُ عَسٰٓى اَنْ يَّنْفَعَنَآ اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا ۭ وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِي الْاَرْضِ ۡ وَلِنُعَلِّمَهٗ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ۭ وَاللّٰهُ غَالِبٌ عَلٰٓي اَمْرِهٖ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢١﴾

21. और मिस्र के जिस शख़्स ने उसे ख़रीदा था (उसका नाम क़त्फ़ीर था और वोह बादशाहे मिस्र रय्यान बिन वलीद का वज़ीरे ख़ज़ाना था उसे उर्फ़े आममें अ़ज़ीज़े मिस्र केहते थे) उसने अपनी बीवी (ज़ुलैख़ा) से कहा : इसे इ़ज़्ज़तो इकरामसे ठेहराओ ! शायद येह हमें नफ़ा' पहुंचाए या हम उसे बेटा बना लें, और इस तरह़ हमने यूसुफ़ (عليه السلام) को ज़मीने (मिस्र) में इस्तेह़काम बख़्शा और येह इस लिए कि हम उसे बातों के अंजाम तक पहुंचना (या'नी इ़ल्मे ता'बीरे रूया) सिखाएं, और अल्लाह अपने काम पर ग़ालिब है लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।

وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗٓ اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ۭ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٢٢﴾

22. और जब वोह अपने कमाले शबाब को पहुंच गया (तो) हमने उसे हुक्मे (नुबुव्वत) और इ़ल्मे (ता'बीर) अ़ता फ़रमाया और इसी तरह़ हम नेकू कारों को सिला बख़्शा करते हैं।

وَرَاوَدَتْهُ الَّتِيْ هُوَ فِيْ بَيْتِهَا عَنْ نَّفْسِهٖ وَغَلَّقَتِ الْاَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ ۭ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اِنَّهٗ رَبِّيْٓ اَحْسَنَ مَثْوَايَ ۭ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٣﴾

23. और उस औरत (ज़ुलेखा) ने जिसके घर वोह रेहते थे आपसे आपकी ज़ातकी शदीद ख़्वाहिश की और उसने दरवाज़े (भी) बंद कर दिए और केहने लगी : जल्दी आ जाओ (मैं तुमसे केहती हूं) । यूसुफ़ (عليه السلام)ने कहा : अल्लाहकी पनाह ! बेशक वोह (जो तुम्हारा शौहर है) मेरा मुरब्बी है उसने मुझे बड़ी इ़ज़्ज़तसे रखा है। बेशक ज़ालिम लोग फ़लाह़ नहीं पाएंगे।

وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهٖ ۚ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَآ اَنْ رَّاٰ بُرْهَانَ رَبِّهٖ ۭ كَذٰلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوْۗءَ وَالْفَحْشَاۗءَ ۭ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٢٤﴾

24. (यूसुफ عليه السلام ने इन्कार कर दिया) और बेशक उस (ज़ुलेख़ा) ने (तो) उनका इरादा कर (ही) लिया था, (शायद) वोह भी उस का क़स्द कर लेते अगर उन्होंने अपने रबकी रौशन दलील को न देखा होता। ★ इस तरह़ (इसलिए किया गया) कि हम उनसे तक्लीफ़ और बेहयाई (दोनों) को दूर रखें, बेशक वोह हमारे चुने हुए (बरगुज़ीदह) बंदों में से थे।

★(या उन्होंने भी उसको ताक़तसे दूर करने का क़स्द कर लिया था। अगर वोह अपने रबकी रौशन दलील को न देख लेते तो अपने दिफ़ाअ़ में सख़्ती कर गुज़रते और मुम्किन है उस दौरान उनका क़मीज़ आगेसे फट जाता जो बाद अज़ां उनके ख़िलाफ़ शहादत और वज्हे तक्लीफ़ बनता, सो अल्लाह की निशानीने उन्हें सख़्ती करने से रोक दिया)

وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيصَهُ مِنْ دُبُرٍ وَّأَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا الْبَابِ ۚ قَالَتْ مَا جَزَآءُ مَنْ أَرَادَ بِأَهْلِكَ سُوٓءًا إِلَّآ أَنْ يُّسْجَنَ أَوْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٥﴾

25. और दोनों दरवाज़े की तरफ़ (आगे पीछे) दौड़े और उस (ज़ुलेखा) ने उनका क़मीज़ पीछे से फाड़ डाला और दोनोंने उसके ख़ाविंद (अज़ीज़े मिस्र) को दरवाज़े के क़रीब पा लिया वोह (फ़ौरन) बोल उठी कि उस शख़्स की सज़ा जो तुम्हारी बीवी के साथ बुराईका इरादा करे और क्या हो सक्ती है सिवाए इसके कि वोह क़ैद कर दिया जाए या (उसे) दर्दनाक अज़ाब (दिया जाए)।

قَالَ هِيَ رَاوَدَتْنِي عَنْ نَّفْسِي وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ أَهْلِهَا ۚ إِنْ كَانَ قَمِيصُهُ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ وَهُوَ مِنَ الْكٰذِبِينَ ﴿٢٦﴾

26. यूसुफ (ﷺ) ने कहा : (नहीं बल्कि) उसने ख़ुद मुझसे मतलब बरारी के लिए मुझे फुसलाना चाहा और (इतने में ख़ुद) उस के घरवालों में से एक गवाहने (जो शीर ख़्वार बच्चा था) गवाही दी कि अगर उसका क़मीज़ आगेसे फटा हुवा है तो येह सच्ची है और वोह झूटों में से है।

وَإِنْ كَانَ قَمِيصُهُ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ﴿٢٧﴾

27. और अगर उसका क़मीज़ पीछे से फटा हुवा है तो येह झूठी है और वोह सच्चों में से है।

فَلَمَّا رَاٰ قَمِيصَهُ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ إِنَّهُ مِنْ كَيْدِكُنَّ ۖ إِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيمٌ ﴿٢٨﴾

28. फिर जब उस (अज़ीज़े मिस्र) ने उनका क़मीज़ देखा (कि) वोह पीछे से फटा हुवा था तो उसने कहा : बेशक येह तुम औ़रतों का फ़रेब है । यक़ीनन तुम औ़रतों का फ़रेब बड़ा (ख़तरनाक) होता है।

يُوسُفُ أَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ۜ وَاسْتَغْفِرِي لِذَنْبِكِ ۖ إِنَّكِ كُنْتِ مِنَ الْخٰطِـِٔينَ ﴿٢٩﴾

29. ऐ यूसुफ़ ! तुम इस बातसे दर गुज़र करो और (ऐ ज़ुलेखा !) तू अपने गुनाह की मुआ़फ़ी मांग, बेशक तू ही ख़ताकारों में से थी।

ع ٣ ٩ ١٣

وَقَالَ نِسْوَةٌ فِي الْمَدِينَةِ امْرَاَتُ الْعَزِيزِ تُرَاوِدُ فَتٰهَا عَنْ نَّفْسِهِ ۚ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ۖ إِنَّا لَنَرٰهَا فِي

30. और शहरमें (उमरा की) कुछ औरतोंने केहना (शुरूअ़) कर दिया कि अज़ीज़ की बीवी अपने गुलाम को उससे मतलब बरारी के लिए फुसलाती है, उस (गुलाम) की महब्बत उसके दिल में घर कर गई है, बेशक

ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٠﴾

हम उसे खुली गुमराही में देख रहे हैं।

فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ اَرْسَلَتْ اِلَيْهِنَّ وَ اَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكَاً وَّاٰتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّيْنًا وَّ قَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ ۚ فَلَمَّا رَاَيْنَهٗۤ اَكْبَرْنَهٗ وَقَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا هٰذَا بَشَرًا ؕ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا مَلَكٌ كَرِيْمٌ ﴿٣١﴾

31. पस जब उस (जुलेख़ा) ने उनकी मक्काराना बातें सुनीं (तो) उन्हें बुलवा भेजा और उनके लिए मजलिस आरास्ता की (फिर उनके सामने फल रख दिए) और उनमें से हर एकको एक एक छुरी दे दी और (यूसुफ़ عليه السلام से) दरख़ास्त की कि ज़रा इनके सामने से (हो कर) निकल जाओ (ताकि उन्हें भी मेरी कैफ़िय्यत का सबब मा'लूम हो जाए), सो जब उन्हों ने यूसुफ (عليه السلام के हुस्ने ज़ेबा) को देखा तो उस (के जलवए जमाल) की बड़ाई करने लगीं और वोह (मदहोशी केआ़लममें फल काटने की बजाए) अपने हाथ काट बैठीं और (देख लेने के बाद बेसाख़्ता) बोल उठीं : अल्लाह की पनाह ! येह तो बशर नहीं है येह तो बस कोई बरगुज़ीदह फ़रिश्ता (या'नी आ़लमे बाला से उतरा हुवा नूरका पैकर) है।

قَالَتْ فَذٰلِكُنَّ الَّذِيْ لُمْتُنَّنِيْ فِيْهِ ؕ وَلَقَدْ رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ فَاسْتَعْصَمَ ؕ وَلَئِنْ لَّمْ يَفْعَلْ مَاۤ اٰمُرُهٗ لَيُسْجَنَنَّ وَ لَيَكُوْنًا مِّنَ الصّٰغِرِيْنَ ﴿٣٢﴾

32. (जुलेख़ा की तदबीर कामयाब हो गई तब) वोह बोली : येही वोह (पैकरे नूर) है जिसके बारेमें तुम मुझे मलामत करती थीं और बेशक मैं ने ही (अपनी ख़्वाहिश की शिद्दत में) उसे फुसलाने की कोशिश की मगर वोह सरापा इस्मत ही रहा, और अगर (अब भी) उसने वोह न किया जो मैं उसे केहती हूं तो वोह ज़रूर क़ैद किया जाएगा और वोह यक़ीनन बे आबरू किया जाएगा।

قَالَ رَبِّ السِّجْنُ اَحَبُّ اِلَيَّ مِمَّا يَدْعُوْنَنِيْۤ اِلَيْهِ ۚ وَ اِلَّا تَصْرِفْ عَنِّيْ كَيْدَهُنَّ اَصْبُ اِلَيْهِنَّ وَ اَكُنْ مِّنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿٣٣﴾

33.(अब ज़नाने मिस्र भी जुलेख़ा की हम नवा बन गई थीं) यूसुफ़ (عليه السلام)ने (सबकी बातें सुन कर) अ़र्ज़ किया : ऐ मेरे रब! मुझे क़ैदखाना इस काम से कहीं ज़ियादह महूबूब है जिसकी तरफ़ येह मुझे बुलाती हैं और अगर तूने उनके मक्रको मुझसे न फेरा तो मैं उनकी (बातों की) तरफ़ माइल हो जाऊंगा और मैं नादानों में से हो जाऊंगा।

فَاسْتَجَابَ لَهٗ رَبُّهٗ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ

34. सो उनके रबने उनकी दुआ़ क़ुबूल फ़रमा ली और औरतों के मक्रहो फ़रेब को उनसे दूर कर दिया। बेशक

الْعَلِيْمُ ﴿٣٤﴾ ثُمَّ بَدَا لَهُمْ مِّنْ بَعْدِ مَا رَاَوُا الْاٰيٰتِ لَيَسْجُنُنَّهٗ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٣٥﴾

वोही खूब सुननेवाला खूब जाननेवाला है।

35. फिर उन्हें (यूसुफ़ عليه السلام की पाकबाज़ी की) निशानियां देख लेने के बाद भी येही मुनासिब मा'लूम हुवा कि उसे एक मुद्दत तक क़ैद कर दें (ताकि अ़वाममें इस वाक़िए का चर्चा ख़त्म हो जाए)।

وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيٰنِ ؕ قَالَ اَحَدُهُمَاۤ اِنِّيْۤ اَرٰىنِيْۤ اَعْصِرُ خَمْرًا ۚ وَقَالَ الْاٰخَرُ اِنِّيْۤ اَرٰىنِيْۤ اَحْمِلُ فَوْقَ رَاْسِيْ خُبْزًا تَاْكُلُ الطَّيْرُ مِنْهُ ؕ نَبِّئْنَا بِتَاْوِيْلِهٖ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٣٦﴾

36. और उनके साथ दो जवान भी क़ैद ख़ाने में दाख़िल हुए। उनमें से एकने कहा : मैंने अपने आपको (ख़्वाब में) देखा है कि मैं (अंगूर से) शराब निचोड़ रहा हूं और दूसरेने कहा : मैंने अपने आपको (ख़्वाब में) देखा है कि मैं अपने सर पर रोटियां उठाए हुए हूं, उसमें से परिन्दे खा रहे हैं। (ऐ यूसुफ़ !) हमें इसकी ता'बीर बताइए, बेशक हम आपको नेक लोगों में से देख रहे हैं।

قَالَ لَا يَاْتِيْكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقٰنِهٖۤ اِلَّا نَبَّاْتُكُمَا بِتَاْوِيْلِهٖ قَبْلَ اَنْ يَّاْتِيَكُمَا ؕ ذٰلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِيْ رَبِّيْ ؕ اِنِّيْ تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٧﴾

37. यूसुफ़ (عليه السلام)ने कहा : जो खाना (रोज़) तुम्हें खिलाया जाता है वोह तुम्हारे पास आने भी न पाएगा कि मैं तुम दोनों को उसकी ता'बीर तुम्हारे पास उसके आने से क़ब्ल बता दूंगा, येह (ता'बीर) उन उ़लूम में से है जो मेरे रबने मुझे सिखाए हैं। बेशक मैंने उस क़ौमका मज़हब (शुरू ही से) छोड़ रखा है जो अल्लाह पर ईमान नहीं लाते और वोह आख़िरत के भी मुन्किर हैं।

وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ اٰبَآءِيْۤ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ؕ مَا كَانَ لَنَاۤ اَنْ نُّشْرِكَ بِاللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ ذٰلِكَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ عَلَيْنَا وَعَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٣٨﴾

38. और मैंने तो अपने बापदादा, इब्राहीम और इस्हाक़ और या'क़ूब (عليهم السلام) के दीन की पैरवी कर रखी है, हमें कोई हक़ नहीं कि हम किसी चीज़ को भी अल्लाह के साथ शरीक ठेहराएं, येह (तौहीद) हम पर और लोगों पर अल्लाह का (ख़ास) फ़ज़्ल है लेकिन अक्सर लोग शुक्र अदा नहीं करते।

يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ ءَاَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُوْنَ خَيْرٌ اَمِ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ؕ ﴿۳۹﴾

39. ऐ मेरे क़ैदखाने के दोनों साथीयों ! (बताओ) क्या अलग अलग बहुतसे मा'बूद बेहतर हैं या एक अल्लाह जो सब पर ग़ालिब है?

مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِلَّاۤ اَسْمَآءً سَمَّيْتُمُوْهَاۤ اَنْتُمْ وَ اٰبَآؤُكُمْ مَّاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ اَمَرَ اَلَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّاۤ اِيَّاهُ ؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۴۰﴾

40. तुम (हक़ीक़त में) अल्लाह के सिवा किसी की इबादत नहीं करते हो मगर चंद नामों की जो खुद तुमने और तुम्हारे बापदादाने (अपने पाससे) रख लिए हैं अल्लाहने उनकी कोइ सनद नहीं उतारी। हुक्म का इख़्तियार सिर्फ़अल्लाह को है, उसीने हुक्म फ़रमाया है कि तुम उसके सिवा किसी की इबादत न करो, येही सीधा रास्ता (दुरस्त दीन) है लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।

يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ اَمَّاۤ اَحَدُكُمَا فَيَسْقِيْ رَبَّهٗ خَمْرًا ۚ وَ اَمَّا الْاٰخَرُ فَيُصْلَبُ فَتَاْكُلُ الطَّيْرُ مِنْ رَّاْسِهٖ ؕ قُضِيَ الْاَمْرُ الَّذِيْ فِيْهِ تَسْتَفْتِيٰنِ ؕ ﴿۴۱﴾

41. ऐ मेरे क़ैदखाने के दोनों साथियो ! तुम में से एक (के ख़्वाबकी ता'बीर येह है कि वोह) अपने मुरब्बी (या'नी बादशाह) को शराब पिलाया करेगा और रहा दूसरा (जिसने सर पर रोटियां देखी हैं) तो वोह फांसी दिया जाएगा फिर परिन्दे उसके सरसे (गोश्त नोच कर) खाएंगे, (क़त्ई) फ़ैसला कर दिया गया जिसके बारे में तुम दर्याफ़्त करते हो।

وَ قَالَ لِلَّذِيْ ظَنَّ اَنَّهٗ نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكُرْنِيْ عِنْدَ رَبِّكَ ۫ فَاَنْسٰىهُ الشَّيْطٰنُ ذِكْرَ رَبِّهٖ فَلَبِثَ فِي السِّجْنِ بِضْعَ سِنِيْنَ ؑ ﴿۴۲﴾

42. और यूसुफ (عليه السلام) ने उस शख़्स से कहा जिसे उन दोनों में से रिहाई पानेवाला समझा कि अपने बादशाह के पास मेरा ज़िक्र कर देना (शायद उसे याद आ जाए कि एक और बेगुनाह भी क़ैद में है) मगर शैतानने उसे अपने बादशाहके पास (वोह) ज़िक्र करना भुला दिया नतीजतन यूसुफ़ (عليه السلام) कई साल तक क़ैदख़ाने में ठेहरे रहे।

ع ٥ ١٥

وَ قَالَ الْمَلِكُ اِنِّيْۤ اَرٰى سَبْعَ بَقَرٰتٍ

43. और (एक रोज़) बादशाहने कहा : मैंने (ख़्वाब में)

سِمَانٍ يَّأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعَ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّ اُخَرَ يٰبِسٰتٍ ؕ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَاُ اَفْتُوْنِيْ فِيْ رُءْيَايَ اِنْ كُنْتُمْ لِلرُّءْيَا تَعْبُرُوْنَ ﴿۴۳﴾

सात मोटी ताज़ी गायें देखी हैं, उन्हें सात दुब्ली पतली गायें खा रही हैं और सात सब्ज़ खूशे (देखे) हैं और दूसरे (सात ही) खुश्क, ऐ दरबारियो ! मुझे मेरे ख़्वाब का जवाब बयान करो अगर तुम ख़्वाब की ता'बीर जानते हो।

قَالُوْۤا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍ ۚ وَمَا نَحْنُ بِتَاْوِيْلِ الْاَحْلَامِ بِعٰلِمِيْنَ ﴿۴۴﴾

44. उन्होंने कहा : (येह) परीशां ख़्वाबें हैं और हम परीशां ख़्वाबों की ता'बीर नहीं जानते।

وَقَالَ الَّذِيْ نَجَا مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ اُمَّةٍ اَنَا اُنَبِّئُكُمْ بِتَاْوِيْلِهٖ فَاَرْسِلُوْنِ ﴿۴۵﴾

45. और वोह शख़्स जो उन दोनों में से रिहाई पा चुका था बोला : और (अब) उसे एक मुद्दत के बाद (यूसुफ़ (عليه السلام) के साथ किया हुवा वा'दा) याद आ गया मैं तुम्हें इसकी ता'बीर बताऊंगा सो तुम मुझे (यूसुफ (عليه السلام) के पास) भेजो।

يُوْسُفُ اَيُّهَا الصِّدِّيْقُ اَفْتِنَا فِيْ سَبْعِ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّ سَبْعِ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ ۙ لَّعَلِّيْۤ اَرْجِعُ اِلَى النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿۴۶﴾

46. (वोह क़ैदखाने में पहुंच कर केहने लगा :) ऐ यूसुफ़, ऐ सिद्क़े मुजस्सम ! आप हमें (इस ख़्वाब की) ता'बीर बता दें कि सात फ़रबा गायें हैं जिन्हें सात दुबली गायें खा रही हैं और सात सब्ज़ खूशे हैं और दूसरे सात खुश्क ताकि मैं (येह ता'बीर ले कर) वापस लोगों के पास जाऊं शायद उन्हें (आपकी क़द्रो मन्ज़िलत) मा'लूम हो जाए।

قَالَ تَزْرَعُوْنَ سَبْعَ سِنِيْنَ دَاَبًا ۚ فَمَا حَصَدْتُّمْ فَذَرُوْهُ فِيْ سُنْۢبُلِهٖۤ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تَاْكُلُوْنَ ﴿۴۷﴾

47. यूसुफ़ (عليه السلام) ने कहा : तुम लोग दाइमी आ़दत के मुताबिक़ मुसल्सल सात बरस तक काश्त करोगे सो जो खेती तुम काटा करोगे उसे उसके खूशों (ही) में (ज़ख़ीरे के तौर पर) रखते रेहना मगर थोड़ा सा (निकाल लेना) जिसे तुम (हर साल) खा लो।

ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ يَّاْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ

48. फिर उसके बाद सात (साल) बहुत सख़्त (खुश्क साली के) आएंगे वोह उस (ज़ख़ीरे) को खा जाएंगे जो तुम उनके लिए पेहले जमा' करते रहे थे मगर थोड़ासा

إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّا تُحْصِنُونَ ﴿٤٨﴾

(बच जाएगा) जो तुम मह्फ़ूज़ कर लोगे।

ثُمَّ يَأْتِي مِن بَعْدِ ذَٰلِكَ عَامٌ فِيهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيهِ يَعْصِرُونَ ﴿٤٩﴾

49. फिर उसके बाद एक साल ऐसा आएगा जिसमें लोगों को (ख़ूब) बारिश दी जाएगी और (उस साल इस क़दर फल होंगे कि) लोग उसमें (फलों का) रस निचोडेंगे।

وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُونِي بِهِ ۖ فَلَمَّا جَاءَهُ الرَّسُولُ قَالَ ارْجِعْ إِلَىٰ رَبِّكَ فَاسْأَلْهُ مَا بَالُ النِّسْوَةِ اللَّاتِي قَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ ۚ إِنَّ رَبِّي بِكَيْدِهِنَّ عَلِيمٌ ﴿٥٠﴾

50. और (येह ता'बीर सुनते ही) बादशाहने कहा : यूसुफ़ (عليه السلام)को (फ़ौरन) मेरे पास ले आओ, पस जब यूसुफ़ (عليه السلام)के पास क़ासिद आया तो उन्होंने कहा : अपने बादशाह के पास लौट जा और उससे (येह) पूछ (कि) उन औ़रतों का (अब) क्या हाल है जिन्होंने अपने हाथ काट डाले थे? बेशक मेरा रब उनके मक्रो फ़रेब को खूब जाननेवाला है।

قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ إِذْ رَاوَدتُّنَّ يُوسُفَ عَن نَّفْسِهِ ۚ قُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِن سُوءٍ ۚ قَالَتِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ الْآنَ حَصْحَصَ الْحَقُّ أَنَا رَاوَدتُّهُ عَن نَّفْسِهِ وَإِنَّهُ لَمِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٥١﴾

51. बादशाहने (ज़ुलेख़ा समेत औरतों को बुला कर) पूछा तुम पर क्या बीता था जब तुम (सब) ने यूसुफ (عليه السلام)को उनकी रास्त रवी से बेहकाना चाहा था (बताओ वोह मुआ़मला क्या था?) वोह सब (बयक ज़बान) बोलीं अल्लाह की पनाह ! हमने (तो) यूसुफ (عليه السلام)में कोई बुराई नहीं पाई। अ़ज़ीज़े मिस्रकी बीवी (ज़ुलेख़ा भी) बोल उठी : अब तो ह़क़ आश्कार हो चुका है (ह़क़ीक़त येह है कि) मैं ने ही उन्हें अपनी मतलब बरारी के लिए फुसलाना चाहा था और बेशक वोही सच्चे हैं।

ذَٰلِكَ لِيَعْلَمَ أَنِّي لَمْ أَخُنْهُ بِالْغَيْبِ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي كَيْدَ الْخَائِنِينَ ﴿٥٢﴾

52. (यूसुफ़ عليه السلام ने कहा : मैं ने) येह इस लिए (किया है) कि वोह (अ़ज़ीज़े मिस्र जो मेरा मोहूसिनो मुरब्बी था) जान ले कि मैं ने उसकी ग़ियाबत में (पुश्त पीछे) उसकी कोई ख़यानत नहीं की और बेशक अल्लाह ख़यानत करनेवालों के मक्रो फ़रेब को कामयाब नहीं होने देता।

وَمَآ أُبَرِّئُ نَفْسِيٓ ۚ إِنَّ ٱلنَّفْسَ لَأَمَّارَةٌۢ بِٱلسُّوٓءِ إِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّيٓ ۚ إِنَّ رَبِّي غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٥٣﴾

53.और मैं अपने नफ़्सकी बराअत (का दा'वा) नहीं करता, बेशक नफ़्स तो बुराईका बहुत ही हुक्म देनेवाला है सिवाए उसके जिस पर मेरा रब रहम फ़रमा दे। बेशक मेरा रब बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

وَقَالَ ٱلْمَلِكُ ٱئْتُونِي بِهِۦٓ أَسْتَخْلِصْهُ لِنَفْسِي ۖ فَلَمَّا كَلَّمَهُۥ قَالَ إِنَّكَ ٱلْيَوْمَ لَدَيْنَا مَكِينٌ أَمِينٌ ﴿٥٤﴾

54. और बादशाहने कहा : उन्हें मेरे पास ले आओ कि मैं उन्हें अपने लिए (मुशीरे) ख़ास कर लूं, सो जब बादशाहने आपसे (बिल मुशाफ़ा) गफ़्तगू की (तो निहायत मु-त-अस्सिर हुवा और) केहने लगा : (ऐ यूसुफ़ !) बेशक आप आजसे हमारे हां मुक़्तदर (और) मो'तमद हैं (या'नी आपको इक़्तिदार में शरीक कर लिया गया है)।

قَالَ ٱجْعَلْنِي عَلَىٰ خَزَآئِنِ ٱلْأَرْضِ ۖ إِنِّي حَفِيظٌ عَلِيمٌ ﴿٥٥﴾

55. यूसुफ़ (عليه السلام) ने फ़रमाया : (अगर तुमने वाक़ई मुझसे कोई ख़ास काम लेना है तो) मुझे सरज़मीने (मिस्र) के ख़ज़ानों पर (वज़ीर और अमीन) मुक़र्रर कर दो, बेशक मैं (उनकी) ख़ूब हिफ़ाज़त करने वाला (और इक़्तिसादी उमूर का) ख़ूब जाननेवाला हूं।

وَكَذَٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي ٱلْأَرْضِ يَتَبَوَّأُ مِنْهَا حَيْثُ يَشَآءُ ۚ نُصِيبُ بِرَحْمَتِنَا مَن نَّشَآءُ ۖ وَلَا نُضِيعُ أَجْرَ ٱلْمُحْسِنِينَ ﴿٥٦﴾

56. और इस तरह हमने यूसुफ़ (عليه السلام) को मुल्के (मिस्र) में इक़्तिदार बख़्शा (ताकि) उसमें जहां चाहें रहें। हम जिसे चाहते हैं अपनी रह्‌मतसे सरफ़राज़ फ़रमाते हैं और नेकूकारों का अज्र ज़ाए' नहीं करते।

وَلَأَجْرُ ٱلْءَاخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَكَانُوا۟ يَتَّقُونَ ﴿٥٧﴾

57. और यक़ीनन आख़िरत का अज्र उन लोगों के लिए बेहतर है जो ईमान लाए और रविशे तक़्वा पर गामज़न रहे।

وَجَآءَ إِخْوَةُ يُوسُفَ فَدَخَلُوا۟ عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهُۥ مُنكِرُونَ ﴿٥٨﴾

58. और (केह्‌त के ज़माने में) यूसुफ़ (عليه السلام) के भाई (ग़ल्ला लेने के लिए मिस्र) आए तो उनके पास हाज़िर हुए पस यूसुफ़ (عليه السلام) ने उन्हें पेहचान लिया और वोह उन्हें न पेहचान सके।

وَ لَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ قَالَ ائْتُوْنِیْ بِاَخٍ لَّكُمْ مِّنْ اَبِیْكُمْ ۚ اَلَا تَرَوْنَ اَنِّیْۤ اُوْفِی الْكَیْلَ وَ اَنَا خَیْرُ الْمُنْزِلِیْنَ ۝٥٩

59. और जब यूसुफ़ (عليه السلام) ने उनका सामान (ज़ादो मताअ़) उन्हें मुहय्या कर दिया (तो) फ़रमाया : अपने पिदरी भाई (बिन यामीन) को मेरे पास ले आओ, क्या तुम नहीं देखते कि मैं (किस क़दर) पूरा नापता हूं और मैं बेहतरीन मेह्मान नवाज़ (भी) हूं।

فَاِنْ لَّمْ تَاْتُوْنِیْ بِهٖ فَلَا كَیْلَ لَكُمْ عِنْدِیْ وَ لَا تَقْرَبُوْنِ ۝٦٠

60. पस अगर तुम उसे मेरे पास न लाए तो (आइन्दह) तुम्हारे लिए मेरे पास (ग़ल्ले का) कोई पैमाना न होगा और न (ही) तुम मेरे क़रीब आ सकोगे।

قَالُوْا سَنُرَاوِدُ عَنْهُ اَبَاهُ وَ اِنَّا لَفٰعِلُوْنَ ۝٦١

61. वोह बोले : हम उसके भेजनेसे मु-त-अ़ल्लिक़ उसके बाप से ज़रूर तक़ाज़ा करेंगे और हम यक़ीनन (ऐसा) करेंगे।

وَ قَالَ لِفِتْیٰنِهِ اجْعَلُوْا بِضَاعَتَهُمْ فِیْ رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ یَعْرِفُوْنَهَاۤ اِذَا انْقَلَبُوْۤا اِلٰۤى اَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ یَرْجِعُوْنَ ۝٦٢

62.और यूसुफ़ (عليه السلام) ने अपने गुलामों से फ़रमाया : उनकी रक़म (जो उन्होंने ग़ल्ले के इवज़ अदा की थी वापस) उनकी बोरियों में रख दो ताकि जब वोह अपने घरवालों की तरफ़ लौटें तो उसे पेहचान लें (कि येह रक़म तो वापस आ गई है) शायद वोह (उसी सबब से) लौट कर आ जाएं।

فَلَمَّا رَجَعُوْۤا اِلٰۤى اَبِیْهِمْ قَالُوْا یٰۤاَبَانَا مُنِعَ مِنَّا الْكَیْلُ فَاَرْسِلْ مَعَنَاۤ اَخَانَا نَكْتَلْ وَ اِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ۝٦٣

63. सो जब वोह अपने वालिद की तरफ़ लौटे (तो) केहने लगे : ऐ हमारे बाप ! (आइन्दह के लिए) हम पर ग़ल्ला बंद कर दिया गया है (सिवाए इसके कि बिन यामीन हमारे साथ जाए) पस हमारे भाई (बिन यामीन) को हमारे साथ भेज दें (ताकि) हम (मज़ीद) ग़ल्ला ले आएं और हम यक़ीनन उसके मुहाफ़िज़ होंगे।

قَالَ هَلْ اٰمَنُكُمْ عَلَیْهِ اِلَّا كَمَاۤ اَمِنْتُكُمْ عَلٰۤى اَخِیْهِ مِنْ قَبْلُ ؕ فَاللّٰهُ خَیْرٌ حٰفِظًا ۪ وَّ هُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِیْنَ ۝٦٤

64. या'कूब (عليه السلام) ने फ़रमाया : क्या मैं इसके बारे में (भी) तुम पर उसी तरह ऐ'तिमाद कर लूं जैसे इससे क़ब्ल मैंने इसके भाई (यूसुफ़ عليه السلام) के बारे में तुम पर ए'तिमाद कर लिया था? तो अल्लाह ही बेहतर हिफ़ाज़त फ़रमानेवाला है और वोही सब महरबानों से ज़ियादह महरबान है।

وَلَمَّا فَتَحُوْا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوْا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ اِلَيْهِمْ ؕ قَالُوْا يٰۤاَبَانَا مَا نَبْغِيْ ؕ هٰذِهٖ بِضَاعَتُنَا رُدَّتْ اِلَيْنَا ۚ وَنَمِيْرُ اَهْلَنَا وَنَحْفَظُ اَخَانَا وَنَزْدَادُ كَيْلَ بَعِيْرٍ ؕ ذٰلِكَ كَيْلٌ يَّسِيْرٌ ﴿٦٥﴾

65.जब उन्होंने अपना सामान खोला (तो उसमें) अपनी रक़म पाई (जो) उन्हें लौटा दी गई थी, वोह केहने लगे : ऐ हमारे वालिदे गिरामी ! हमें और क्या चाहिए? येह हमारी रक़म (भी) हमारी तरफ़ लौटा दी गई है और (अब तो) हम अपने घरवालों के लिए (ज़रूर ही) ग़ल्ला लाएंगे और हम अपने भाई की हिफ़ाज़त करेंगे और एक ऊंट का बोझ और ज़ियादह लाएंगे, और येह (ग़ल्ला जो हम पहले लाए हैं) थोड़ी मिक़्दार (में) है।

قَالَ لَنْ اُرْسِلَهٗ مَعَكُمْ حَتّٰى تُؤْتُوْنِ مَوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ لَتَاْتُنَّنِيْ بِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ يُّحَاطَ بِكُمْ ۚ فَلَمَّاۤ اٰتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ﴿٦٦﴾

66. या'कूब (عليه السلام) ने फ़रमाया : मैं इसे हरगिज़ तुम्हारे साथ नहीं भेजूंगा यहां तक कि तुम अल्लाह की क़सम खा कर मुझे पुख़्ता वा'दा दो कि तुम इसे ज़रूर मेरे पास (वापस) ले आओगे सिवाए इसके कि तुम (सबको कहीं) घेर लिया जाए (या हलाक कर दिया जाए), फिर जब उन्हों ने या'कूब (عليه السلام) को अपना पुख़्ता अ़हद दे दिया तो या'कूब (عليه السلام) ने फ़रमाया जो कुछ हम केह रहे हैं उस पर अल्लाह निगेहबान है।

وَقَالَ يٰبَنِيَّ لَا تَدْخُلُوْا مِنْۢ بَابٍ وَّاحِدٍ وَّادْخُلُوْا مِنْ اَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ ؕ وَمَاۤ اُغْنِيْ عَنْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۚ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿٦٧﴾

67.और फ़रमाया : ऐ मेरे बेटो ! (शहर में) एक दरवाज़े से दाख़िल न होना बल्कि मुख़्तलिफ़ दरवाजों से (तक़्सीम हो कर) दाख़िल होना, और मैं तुम्हें अल्लाह (के अम्र) से कुछ नहीं बचा सक्ता के हुक्मे (तक़्दीर) सिर्फ़ अल्लाह ही के लिए है । मैंने उसी पर भरोसा किया है और भरोसा करनेवालों को उसी पर भरोसा करना चाहिए।

وَلَمَّا دَخَلُوْا مِنْ حَيْثُ اَمَرَهُمْ اَبُوْهُمْ ؕ مَا كَانَ يُغْنِيْ عَنْهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ اِلَّا حَاجَةً فِيْ نَفْسِ يَعْقُوْبَ قَضٰىهَا ؕ وَاِنَّهٗ لَذُوْ عِلْمٍ

68. और जब वोह (मिस्रमें) दाख़िल हुए जिस तरह उनके बापने उन्हें हुक्म दिया था, वोह (हुक्म) उन्हें अल्लाह (की तक़्दीर) से कुछ नहीं बचा सक्ता था मगर येह या'कूब (عليه السلام) के दिल की एक ख़्वाहिश थी जिसे उसने पूरा किया, और (उस ख़्वाहिशो तदबीर को लग्व भी न समझना तुम्हें क्या ख़बर) बेशक या'कूब (عليه السلام) साहिबे

لِّمَا عَلَّمْنٰهُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٨﴾

इल्म थे इस वजह से कि हमने उन्हें इल्मे (ख़ास) से नवाज़ा था मगर अक्सर लोग (इन हक़ीकतों को) नहीं जानते।

وَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰٓى اِلَيْهِ اَخَاهُ قَالَ اِنِّىْٓ اَنَا اَخُوْكَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٩﴾

69- और जब वोह यूसुफ़ (عليه السلام) के पास हाज़िर हुए तो यूसुफ़ (عليه السلام) ने अपने भाई (बिन यामीन) को अपने पास जगह दी (उसे आहिस्ता से) कहा : बेशक मैं ही तेरा भाई (यूसुफ़) हूं पस तू ग़म ज़दह न हो उन कामों पर जो येह करते रहे हैं।

فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ جَعَلَ السِّقَايَةَ فِىْ رَحْلِ اَخِيْهِ ثُمَّ اَذَّنَ مُؤَذِّنٌ اَيَّتُهَا الْعِيْرُ اِنَّكُمْ لَسٰرِقُوْنَ ﴿٧٠﴾

70. फिर जब (यूसुफ़ عليه السلام ने) उनका सामान उन्हें मुहय्या कर दिया तो (शाही) प्याला अपने भाई (बिन यामीन)की बोरी में रख दिया बाद अज़ां पुकारनेवाले ने आवाज़ दी : ऐ क़ाफ़लेवालो ! (ठेहरो) यक़ीनन तुम लोग ही चोर (मा'लूम होते)हो।

قَالُوْا وَ اَقْبَلُوْا عَلَيْهِمْ مَّاذَا تَفْقِدُوْنَ ﴿٧١﴾

71. वोह उनकी तरफ़ मु-त-वज्जेह हो कर केहने लगे : तुम्हारी क्या चीज़ गुम हो गई है?

قَالُوْا نَفْقِدُ صُوَاعَ الْمَلِكِ وَلِمَنْ جَآءَ بِهٖ حِمْلُ بَعِيْرٍ وَّاَنَا بِهٖ زَعِيْمٌ ﴿٧٢﴾

72. वोह (दरबारी मुलाज़िम)बोले : हमें बादशाह का प्याला नहीं मिल रहा और जो कोई उसे (ढूंढ कर) ले आए उसके लिए एक ऊंट का ग़ल्ला (इन्आम) है और मैं उसका ज़िम्मेदार हूं।

قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَّا جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِى الْاَرْضِ وَ مَا كُنَّا سٰرِقِيْنَ ﴿٧٣﴾

73. वोह केहने लगे ! अल्लाह की क़सम बेशक तुम जान गए हो(गे) हम इसलिए नहीं आए थे कि (जुर्म का इर्तिकाब कर के) ज़मीनमें फ़साद बपा करें और न ही हम चोर हैं।

قَالُوْا فَمَا جَزَآؤُهٗٓ اِنْ كُنْتُمْ كٰذِبِيْنَ ﴿٧٤﴾

74. वोह (मुलाज़िम) बोले : (तुम खुद ही बताओ) कि उस (चोर) की क्या सज़ा होगी अगर तुम झूटे निक्ले?

قَالُوْا جَزَآؤُهٗ مَنْ وُّجِدَ فِىْ رَحْلِهٖ

375. उन्होंने कहा : उसकी सज़ा येह है कि जिसके

فَهُوَ جَزَآؤُهٗ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِی الظّٰلِمِیْنَ ﴿۷۵﴾

सामान में से वोह (प्याला) बर आमद हो वोह खुद ही उसका बदला है (या'नी उसीको उसके बदले में रख लिया जाए), हम ज़ालिमों को इसी तरह सज़ा देते हैं।

فَبَدَاَ بِاَوْعِیَتِهِمْ قَبْلَ وِعَآءِ اَخِیْهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِّعَآءِ اَخِیْهِ ؕ كَذٰلِكَ كِدْنَا لِیُوْسُفَ ؕ مَا كَانَ لِیَاْخُذَ اَخَاهُ فِیْ دِیْنِ الْمَلِكِ اِلَّاۤ اَنْ یَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ؕ وَفَوْقَ كُلِّ ذِیْ عِلْمٍ عَلِیْمٌ ﴿۷۶﴾

76.पस यूसुफ (عليه السلام) ने अपने भाई की बोरीसे पहले उनकी बोरियोंकी तलाशी शुरू की फिर (बिल आख़िर) उस (प्याले) को अपने (सगे) भाई (बिन यामीन) की बोरीसे निकाल लिया। यूं हमने यूसुफ़ (عليه السلام) को तदबीर बताई। वोह अपने भाई को बादशाहे (मिस्र) के क़ानून की रू से (असीर बना कर) नहीं रख सक्ते थे मगर येह कि (जिसे) अल्लाह चाहे। हम जिसके चाहते हैं दरजात बुलंद कर देते हैं, और हर साहिबे इल्म से ऊपर (भी) एक इल्मवाला होता है।

قَالُوْۤا اِنْ یَّسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ اَخٌ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ ۚ فَاَسَرَّهَا یُوْسُفُ فِیْ نَفْسِهٖ وَلَمْ یُبْدِهَا لَهُمْ ۚ قَالَ اَنْتُمْ شَرٌّ مَّكَانًا ۚ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَصِفُوْنَ ﴿۷۷﴾

77. उन्होंने कहा : अगर इसने चोरी की है (तो कोई तअ़ज्जुब नहीं) बेशक इसका भाई (यूसुफ़) भी इससे पहले चोरी कर चुका है, सो यूसुफ (عليه السلام) ने येह बात अपने दिलमें (छुपाए) रखी और उसे उन पर ज़ाहिर न किया, (दिल में ही) कहा : तुम्हारा ह़ाल निहायत बुरा है, और अल्लाह खूब जानता है जो कुछ तुम बयान कर रहे हो।

قَالُوْا یٰۤاَیُّهَا الْعَزِیْزُ اِنَّ لَهٗۤ اَبًا شَیْخًا كَبِیْرًا فَخُذْ اَحَدَنَا مَكَانَهٗ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۷۸﴾

78. वोह बोले : ऐ अ़ज़ीज़े मिस्र! इसके वालिद बड़े मुअ़म्मर बुज़ुर्ग हैं, आप इसकी जगह हम में से किसी को पकड़ लें, बेशक हम आपको एह़सान करनेवालों में पाते हैं।

قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اَنْ نَّاْخُذَ اِلَّا مَنْ وَّجَدْنَا مَتَاعَنَا عِنْدَهٗۤ ۙ اِنَّاۤ اِذًا لَّظٰلِمُوْنَ ﴿۷۹﴾ ع

79. यूसुफ़ (عليه السلام) ने कहा : अल्लाह की पनाह कि हमने जिसके पास अपना सामान पाया उसके सिवा किसी (और) को पकड़ लें तब तो हम ज़ालिमों में से हो जाएंगे।

فَلَمَّا اسْتَیْـَٔسُوْا مِنْهُ خَلَصُوْا نَجِیًّا ؕ

80. फिर जब वोह यूसुफ़ (عليه السلام) से मायूस हो गए तो

قَالَ كَبِيْرُهُمْ اَلَمْ تَعْلَمُوْٓا اَنَّ اَبَاكُمْ قَدْ اَخَذَ عَلَيْكُمْ مَّوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ وَمِنْ قَبْلُ مَا فَرَّطْتُّمْ فِيْ يُوْسُفَ ۚ فَلَنْ اَبْرَحَ الْاَرْضَ حَتّٰى يَاْذَنَ لِيْٓ اَبِيْٓ اَوْ يَحْكُمَ اللّٰهُ لِيْ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿۸۰﴾

अलाहिदगी में (बाहम) सरगोशी करने लगे, उनके बड़े (भाई)ने कहा : क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे बापने तुमसे अल्लाहकी क़सम उठवा कर पुख़्ता वा'दा लिया था और इससे पहले तुम यूसुफ़ के हक़्में जो ज़ियादतियां कर चुके हो (तुम्हें वोह भी मा'लूम हैं) सो मैं इस सरज़मीन से हरगिज़ नहीं जाऊंगा जब तक मुझे मेरा बाप इजाज़त (न) दे या मेरे लिए अल्लाह कोई फ़ैसला फ़रमा दे, और वोह सब से बेहतर फ़ैसला फ़रमानेवाला है।

اِرْجِعُوْٓا اِلٰٓى اَبِيْكُمْ فَقُوْلُوْا يٰٓاَبَانَآ اِنَّ ابْنَكَ سَرَقَ ۚ وَمَا شَهِدْنَآ اِلَّا بِمَا عَلِمْنَا وَمَا كُنَّا لِلْغَيْبِ حٰفِظِيْنَ ﴿۸۱﴾

81. तुम अपने बापकी तरफ़ लौट जाओ फिर (जा कर) कहो : ऐ हमारे बाप ! बेशक आपके बेटेने चोरी की है (इस लिए वोह गिरफ़्तार कर लिया गया) और हमने फ़क़त उसी बातकी गवाही दी थी जिसका हमें इ़ल्म था और हम ग़ैब के निगहबान न थे।

وَسْـَٔلِ الْقَرْيَةَ الَّتِيْ كُنَّا فِيْهَا وَالْعِيْرَ الَّتِيْٓ اَقْبَلْنَا فِيْهَا ۭ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿۸۲﴾

82.और (अगर आपको ऐ'तिबार न आए तो) उस बस्ती (वालों) से पूछ लें जिसमें हम थे और उस क़ाफ़िले (वालों) से (मा'लूम कर लें) जिसमें हम आए हैं, और बेशक हम (अपने क़ौल में) यक़ीनन सच्चे हैं।

قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ۭ فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ۭ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِيَنِيْ بِهِمْ جَمِيْعًا ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿۸۳﴾

83. या'कूब (علیہ السلام) ने फ़रमाया : (ऐसा नहीं) बल्कि तुम्हारे नफ़्सोंने येह बात तुम्हारे लिए मरग़ूब बना दी है, अब सब्र (ही) अच्छा है, क़रीब है कि अल्लाह उन सबको मेरे पास ले आए, बेशक वोह बड़ा इ़ल्मवाला बड़ी हिक्मतवाला है।

وَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰٓاَسَفٰى عَلٰى يُوْسُفَ وَابْيَضَّتْ عَيْنٰهُ مِنَ الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيْمٌ ﴿۸۴﴾

84. और या'कूब (علیہ السلام) ने उनसे मुंह फेर लिया और कहा : हाए अफ़्सोस! यूसुफ़ (علیہ السلام की जुदाई) पर और उनकी आँखें ग़मसे सफ़ेद हो गईं सो वोह ग़मको ज़ब्त किए हुए थे।

قَالُوْا تَاللّٰهِ تَفْتَؤُا تَذْكُرُ يُوْسُفَ

85.वोह बोले : अल्लाहकी क़सम आप हमेशा

حَتّٰى تَكُوْنَ حَرَضًا اَوْ تَكُوْنَ مِنَ الْهٰلِكِيْنَ ﴿٨٥﴾

यूसुफ़ (ही) को याद करते रहेंगे यहां तक कि आप क़रीबे मर्ग हो जाएंगे या आप वफ़ात पा जाएंगे।

قَالَ اِنَّمَاۤ اَشْكُوْا بَثِّيْ وَحُزْنِيْۤ اِلَى اللّٰهِ وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٦﴾

86. उन्होंने फ़रमाया : मैं तो अपनी परेशानी और ग़म की फ़रियाद सिर्फ़अल्लाह के हुज़ूर करता हूं और मैं अल्लाह की तरफ़ से वोह कुछ जानता हूं जो तुम नहीं जानते।

يٰبَنِيَّ اذْهَبُوْا فَتَحَسَّسُوْا مِنْ يُّوْسُفَ وَاَخِيْهِ وَلَا تَايْـَٔسُوْا مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ لَا يَايْـَٔسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٧﴾

87. ऐ मेरे बेटो ! जाओ (कहीं से) यूसुफ़ (عليه السلام) और उसके भाई की ख़बर ले आओ और अल्लाह की रह्मत से मायूस न हो, बेशक अल्लाह की रह्मत से सिर्फ़ वोही लोग मायूस होते हैं जो काफ़िर हैं।

فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلَيْهِ قَالُوْا يٰۤاَيُّهَا الْعَزِيْزُ مَسَّنَا وَاَهْلَنَا الضُّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُّزْجٰىةٍ فَاَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَجْزِى الْمُتَصَدِّقِيْنَ ﴿٨٨﴾

88. सो जब वोह (दोबारह) यूसुफ़ عليه السلام के पास हाज़िर हुए तो केहने लगे : ऐ अ़ज़ीज़े मिस्र ! हम और हमारे घरवालों पर मुसीबत आन पड़ी है (हम शदीद क़ह्त में मुब्तिला हैं) और हम (येह) थोड़ी सी रक़म ले कर आए हैं सो (उसके बदले) हमें (ग़ल्लेका) पूरा पूरा नाप दे दें और (इसके अ़लावह) हम पर (कुछ) सदक़ा (भी) कर दें। बेशक अल्लाह ख़ैरात करनेवालों को जज़ा देता है।

قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَّا فَعَلْتُمْ بِيُوْسُفَ وَاَخِيْهِ اِذْ اَنْتُمْ جٰهِلُوْنَ ﴿٨٩﴾

89. यूसुफ़ (عليه السلام) ने फ़रमाया : क्या तुम्हें मा'लूम है कि तुमने यूसुफ़ और उसके भाई के साथ क्या (सुलूक) किया था क्या तुम (उस वक़्त) नादान थे।

قَالُوْۤا ءَاِنَّكَ لَاَنْتَ يُوْسُفُ ؕ قَالَ اَنَا يُوْسُفُ وَهٰذَاۤ اَخِيْ ۫ قَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا ؕ اِنَّهٗ مَنْ يَّتَّقِ وَيَصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٩٠﴾

90. वोह बोले : क्या वाक़ई तुम ही यूसुफ़ हो? उन्होंने फ़रमाया : (हां) मैं यूसुफ़ हूं और येह मेरा भाई है बेशक अल्लाहने हम पर एह्सान फ़रमाया, यक़ीनन जो शख़्स अल्लाहसे डरता और सब्र करता है तो बेशक अल्लाह नेकूकारों का अज्र ज़ाए नहीं करता।

قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ اٰثَرَكَ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَاِنْ كُنَّا لَخٰطِـِٕيْنَ ﴿۹۱﴾

91. वोह बोल उठे : अल्लाह की क़सम ! बेशक अल्लाहने आप को हम पर फ़ज़ीलत दी है और यक़ीनन हम ही ख़ताकार थे।

قَالَ لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ ؕ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ ۫ وَهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿۹۲﴾

92. यूसुफ़ (عليه السلام) ने फ़रमाया : आजके दिन तुम पर कोई मलामत (और गिरफ़्त) नहीं है, अल्लाह तुम्हें मुआफ़ फ़रमा दे और वोह सब महरबानों से ज़ियादह महरबान है।

اِذْهَبُوْا بِقَمِيْصِيْ هٰذَا فَاَلْقُوْهُ عَلٰى وَجْهِ اَبِيْ يَاْتِ بَصِيْرًا ۚ وَاْتُوْنِيْ بِاَهْلِكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۹۳﴾ ع

93. मेरा येह क़मीज़ ले जाओ, सो इसे मेरे बापके चेहरे पर डाल देना, वोह बीना हो जाएंगे, और (फिर) अपने सब घरवालों को मेरे पास ले आओ।

وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيْرُ قَالَ اَبُوْهُمْ اِنِّيْ لَاَجِدُ رِيْحَ يُوْسُفَ لَوْلَاۤ اَنْ تُفَنِّدُوْنِ ﴿۹۴﴾

94. और जब क़ाफ़ला (मिस्रसे) रवाना हुवा उनके वालिद (या'क़ूब عليه السلام) ने (किन्आन में बैठे ही) फ़रमा दिया : बेशक मैं यूसुफ़ की ख़ुश्बू पा रहा हूं अगर तुम मुझे बुढ़ापे के बाइस बेहका हुवा ख़याल न करो।

قَالُوْا تَاللّٰهِ اِنَّكَ لَفِيْ ضَلٰلِكَ الْقَدِيْمِ ﴿۹۵﴾ الربع

95. वोह बोले : अल्लाहकी क़सम यक़ीनन आप अपनी (उसी) पुरानी महब्बत की ख़ुद रफ़्तगी में हैं।

فَلَمَّاۤ اَنْ جَآءَ الْبَشِيْرُ اَلْقٰىهُ عَلٰى وَجْهِهٖ فَارْتَدَّ بَصِيْرًا ۚ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ ۚۙ اِنِّيْۤ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۹۶﴾

96. फिर जब ख़ुशख़बरी सुनानेवाला आ पहुंचा उसने वोह क़मीज़ या'क़ूब (عليه السلام) के चेहरे पर डाल दिया तो उसी वक़्त उनकी बीनाई लौट आई, या'क़ूब (عليه السلام) ने फ़रमाया : क्या मैं तुमसे नहीं केहता था कि बेशक मैं अल्लाह की तरफ़से वोह कुछ जानता हूं जो तुम नहीं जानते।

قَالُوْا يٰۤاَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَاۤ اِنَّا كُنَّا خٰطِـِٕيْنَ ﴿۹۷﴾

97. वोह बोले : ऐ हमारे बाप ! हमारे लिए (अल्लाह से) हमारे गुनाहों की मग़फ़िरत तलब कीजिए, बेशक हम ही ख़ताकार थे।

قَالَ سَوْفَ اَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّيْ ؕ

98. या'क़ूब (عليه السلام) ने फ़रमाया : मैं अनक़रीब तुम्हारे

اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٩٨﴾

लिए अपने रबसे बख़्शिश तलब करूंगा, बेशक वोही बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰۤى اِلَيْهِ اَبَوَيْهِ وَقَالَ ادْخُلُوْا مِصْرَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ﴿٩٩﴾

99. फिर जब वोह (सब अफ़रादे ख़ाना) यूसुफ़ (عليه السلام) के पास आए (तो) यूसुफ़ (عليه السلام) ने (शहर से बाहर आ कर हज़ारहा सवारियों, फ़ौजियों और लोगों के हमराह शाही जुलूस की सूरतमें उनका इस्तिक़्बाल किया और) अपने मां बापको ता'ज़ीमन अपने क़रीब जगह दी (या उन्हें अपने गले से लगा लिया) और (ख़ुश आमदीद केहते हुए) फ़रमाया : आप मिस्र में दाख़िल हो जाएं अगर अल्लाहने चाहा (तो) अम्नो आ़फ़ियत के साथ (यहीं क़ियाम करें)।

وَرَفَعَ اَبَوَيْهِ عَلَى الْعَرْشِ وَخَرُّوْا لَهٗ سُجَّدًا ۚ وَقَالَ يٰۤاَبَتِ هٰذَا تَاْوِيْلُ رُءْيَايَ مِنْ قَبْلُ ۫ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّيْ حَقًّا ؕ وَقَدْ اَحْسَنَ بِيْۤ اِذْ اَخْرَجَنِيْ مِنَ السِّجْنِ وَجَآءَ بِكُمْ مِّنَ الْبَدْوِ مِنْۢ بَعْدِ اَنْ نَّزَغَ الشَّيْطٰنُ بَيْنِيْ وَبَيْنَ اِخْوَتِيْ ؕ اِنَّ رَبِّيْ لَطِيْفٌ لِّمَا يَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿١٠٠﴾

100. और यूसुफ़ (عليه السلام) ने अपने वालिदैन को ऊपर तख़्त पर बिठा लिया और वोह (सब) यूसुफ़ (عليه السلام) के लिए सजदे में गिर पड़े, और यूसुफ़ (عليه السلام)ने कहा : ऐ अब्बाजान ! येह मेरे (उस) ख़्वाब की ता'बीर है जो (बहुत) पहले आया था (अक्सर मुफ़स्सिरीन के नज़दीक उसे चालीस सालका अ़र्सा गुज़र गया था) और बेशक मेरे रबने उसे सच कर दिखाया है, और बेशक उसने मुझ पर (बड़ा) एहसान फ़रमाया जब मुझे जेलसे निकाला और आप सबको सेहरा से (यहां) ले आया इसके बाद के शैताननें मेरे और मेरे भाइयों के दरमियान फ़साद पैदा कर दिया था, और बेशक मेरा रब जिस चीज़को चाहे (अपनी) तद्बीरसे आसान फ़रमा दे, बेशक वोही ख़ूब जाननेवाला बड़ी हिक्मतवाला है।

رَبِّ قَدْ اٰتَيْتَنِيْ مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِيْ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ۚ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۫ اَنْتَ

101.ऐ मेरे रब ! बेशक तूने मुझे सल्तनत अ़ता फ़रमाई और तुने मुझे ख़्वाबोंकी ता'बीर के इल्मसे नवाज़ा, ऐ आस्मानों और ज़मीनके पैदा फ़रमानेवाले ! तू दुनियामें (भी) मेरा कारसाज़ है और आख़िरत में (भी)।

وَلِيّٖ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ تَوَفَّنِيْ مُسْلِمًا وَّاَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠١﴾

मुझे हालते इस्लाम पर मौत देना और मुझे सालेह लोगों के साथ मिला दे।

ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ۚ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ اَجْمَعُوْٓا اَمْرَهُمْ وَهُمْ يَمْكُرُوْنَ ﴿١٠٢﴾

102. (ऐ हबीबे मुकर्रम!) येह (क़िस्सा) गैबकी ख़बरों में से है, जिसे हम आपकी तरफ़ वही फ़रमा रहे हैं, और आप (कोई) उनके पास मौजूद न थे जब वोह (बिरादराने यूसुफ़) अपनी साज़िशी तदबीर पर जमा' हो रहे थे और वोह मक्रो फ़रेब कर रहे थे।

وَمَآ اَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٣﴾

103. और अक्सर लोग ईमान लानेवाले नहीं हैं अगरचे आप (कितनी ही) ख़्वाहिश करें।

وَمَا تَسْـَٔلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٤﴾

104.और आप उनसे इस (दा'वतो तबलीग़) पर कोई सिला तो नहीं मांगते, येह क़ुरआन जुमला जहानवालों के लिए नसीहत ही तो है।

وَكَاَيِّنْ مِّنْ اٰيَةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَمُرُّوْنَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُوْنَ ﴿١٠٥﴾

105. और आस्मानों और ज़मीनमें कितनी ही निशानियां हैं जिन पर उन लोगों का गुज़र होता रेहता है और वोह उनसे सर्फ़े नज़र किए हुए हैं।

وَمَا يُؤْمِنُ اَكْثَرُهُمْ بِاللّٰهِ اِلَّا وَهُمْ مُّشْرِكُوْنَ ﴿١٠٦﴾

106. और उनमें से अक्सर लोग अल्लाह पर ईमान नहीं रखते मगर येह कि वोह मुशरिक हैं।

اَفَاَمِنُوْٓا اَنْ تَاْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِّنْ عَذَابِ اللّٰهِ اَوْ تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٠٧﴾

107. क्या वोह इस बातसे बे ख़ौफ़ हो गए हैं कि उन पर अल्लाह के अज़ाब की छा जानेवाली आफ़त आ जाए या उन पर अचानक क़ियामत आ जाए और उन्हें ख़बर भी न हो।

قُلْ هٰذِهٖ سَبِيْلِيْٓ اَدْعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ ۫ عَلٰى بَصِيْرَةٍ اَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِيْ ؕ

108. (ऐ हबीबे मुकर्रम!) फ़रमा दीजिऐ : येही मेरी राह है। मैं अल्लाहकी तरफ़ बुलाता हूं, पूरी बसीरत पर (क़ाइम)

وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ وَمَآ اَنَا مِنَ
الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۱۰۸﴾

हूं, मैं (भी) और वोह शख़्स भी जिसने मेरी इत्तिबाअ़ की, और अल्लाह पाक है और मैं मुशरिकों में से नहीं हूं।

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا
رِجَالًا نُّوْحِیْۤ اِلَيْهِمْ مِّنْ اَهْلِ
الْقُرٰى ؕ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ
فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ
لِّلَّذِيْنَ اتَّقَوْا ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۰۹﴾

109. और हमने आपसे पहले भी (मुख़्तलिफ़) बस्तियोंवालों में से मर्दों ही को भेजा था जिनकी तरफ़ हम वह़ी फ़रमाते थे, क्या उन लोगोंने ज़मीन में सैर नहीं की कि वोह (ख़ुद) देख लेते कि उनसे पहले लोगोंका अंजाम क्या हुआ, और बेशक आख़िरत का घर परहेज़गारी इख़्तियार करनेवालों के लिए बेहतर है, क्या तुम अ़क़्ल नहीं रखते ?

حَتّٰۤى اِذَا اسْتَيْـَٔسَ الرُّسُلُ وَ
ظَنُّوْۤا اَنَّهُمْ قَدْ كُذِبُوْا جَآءَهُمْ
نَصْرُنَا ۙ فَنُجِّىَ مَنْ نَّشَآءُ ؕ وَلَا يُرَدُّ
بَاْسُنَا عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۱۱۰﴾

110. यहां तक कि जब पयग़म्बर (अपनी ना फ़रमान क़ौमों से) मायूस हो गए और उन मुन्किर क़ौमों ने गुमान कर लिया कि उनसे झूट बोला गया है (या'नी उन पर कोई अ़ज़ाब नहीं आएगा) तो उन रसूलों को हमारी मदद आ पहुंची फिर हमने जिसे चाहा (उसे) नजात बख़्श दी, और हमारा अ़ज़ाब मुजरिम क़ौम से फेरा नहीं जाता।

لَقَدْ كَانَ فِىْ قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ
لِّاُولِى الْاَلْبَابِ ؕ مَا كَانَ حَدِيْثًا
يُّفْتَرٰى وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِىْ بَيْنَ
يَدَيْهِ وَتَفْصِيْلَ كُلِّ شَىْءٍ وَّهُدًى
وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿۱۱۱﴾

111. बेशक उनके किस्सों में समझदारों के लिए इब्रत है, येह (कुरआन) ऐसा कलाम नहीं जो घड़ लिया जाए बल्कि (येह तो) उन (आस्मानी किताबों) की तस्दीक़ है जो इससे पहले (नाज़िल हुई) हैं और हर चीज़ की तफ़्सील है और हिदायत है और रह़मत है, उस क़ौमके लिए जो ईमान ले आए।

आयातुहा 43 | 96 सूरतुर रअ़द 13 | रुकूआ़तुहा 6

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

الٓمّٓرٰ ۚ تِلۡكَ اٰيٰتُ الۡكِتٰبِ ؕ وَالَّذِيۡۤ اُنۡزِلَ اِلَيۡكَ مِنۡ رَّبِّكَ الۡحَـقُّ وَلٰـكِنَّ اَكۡثَرَ النَّاسِ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ ①

1. अलिफ़ लाम मीम रा (ह़क़ीक़ी मा'ना। अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं), येह किताबे इलाही की आयतें हैं, और जो कुछ आपके रबकी तरफ़से आपकी जानिब नाज़िल किया गया है (वोह) ह़क़ है लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं लाते।

اَللّٰهُ الَّذِىۡ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَيۡرِ عَمَدٍ تَرَوۡنَهَا ثُمَّ اسۡتَوٰى عَلَى الۡعَرۡشِ وَسَخَّرَ الشَّمۡسَ وَالۡقَمَرَ ؕ كُلٌّ يَّجۡرِىۡ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ يُدَبِّرُ الۡاَمۡرَ يُفَصِّلُ الۡاٰيٰتِ لَعَلَّكُمۡ بِلِقَآءِ رَبِّكُمۡ تُوۡقِنُوۡنَ ②

2. और अल्लाह वोह है जिसने आस्मानों को बिग़ैर सुतून के (ख़लाअ में) बुलंद फ़रमाया (जैसा कि) तुम देख रहे हो फिर (पूरी काइनात पर मुह़ीत अपने) तख़्ते इक्तिदार पर मु-त-मक्किन हुआ और उसने सूरज और चांद को निज़ाम का पाबंद बना दिया। हर एक अपनी मुक़र्ररह मीआ़द (में मुसाफ़त मुकम्मल करने) के लिए (अपने अपने मदारमें) चलता है, वोही (सारी काइनात के) पूरे निज़ाम की तद्बीर फ़रमाता है, (सब) निशानियों (या क़वानीने फ़ितरत) को तफ़सीलन वाज़ेह़ फ़रमाता है ताकि तुम अपने रबके रूबरू ह़ाज़िर होने का यक़ीन कर लो।

وَهُوَ الَّذِىۡ مَدَّ الۡاَرۡضَ وَجَعَلَ فِيۡهَا رَوَاسِىَ وَاَنۡهٰرًا ؕ وَمِنۡ كُلِّ الثَّمَرٰتِ جَعَلَ فِيۡهَا زَوۡجَيۡنِ اثۡنَيۡنِ يُغۡشِى الَّيۡلَ النَّهَارَ ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوۡمٍ يَّتَفَكَّرُوۡنَ ③

3. और वोही है जिसने (गोलाई के बावजूद) ज़मीन को फैलाया और उसमें पहाड़ और दरिया बनाए, और हर क़िस्म के फलों में (भी) उसने दो दो (जिन्सों के) जोड़े बनाए (वोही) रातसे दिन को ढांक लेता है, बेशक उसमें तफ़क्कुर करनेवालों के लिए (बहुत) निशानियां हैं।

وَفِى الۡاَرۡضِ قِطَعٌ مُّتَجٰوِرٰتٌ وَّجَنّٰتٌ مِّنۡ اَعۡنَابٍ وَّزَرۡعٌ وَّنَخِيۡلٌ

4. और ज़मीन में (मुख़्तलिफ़ क़िस्मके) क़त्आ़त हैं जो एक दूसरे के क़रीब हैं और अँगूरों के बागात हैं और खेतियां हैं और खजूरके दरख़्त हैं, झुंडदार और बिग़ैर

صِنْوَانٌ وَّغَيْرُ صِنْوَانٍ يُّسْقٰى بِمَآءٍ وَّاحِدٍ ۚ وَنُفَضِّلُ بَعْضَهَا عَلٰى بَعْضٍ فِى الْاُكُلِ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝٤

झुंडके, उन (सब) को एक ही पानी से सैराब किया जाता है और (उसके बावजूद) हम ज़ाइक़े में बा'ज़ को बा'ज़ पर फ़ज़ीलत बख़्शते हैं, बेशक उसमें अ़क्लमंदों के लिए (बड़ी) निशानियां हैं।

وَاِنْ تَعْجَبْ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا ءَاِنَّا لَفِىْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ۬ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ الْاَغْلٰلُ فِىْٓ اَعْنَاقِهِمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝٥

5. और अगर आप (कुफ़्फ़ार के इन्कार पर) तअ़ज्जुब करें तो उनका (येह) केहना अ़जीब(तर) है कि क्या जब हम (मर कर) ख़ाक हो जाएंगे तो क्या हम अज़ सरे नौ तख़्लीक़ किए जाएंगे ? येही वोह लोग हैं जिन्होंने अपने रबका इन्कार किया, और उनही लोगों की गरदनों में तौक़ (पड़े) होंगे, और येही लोग अह्ले जहन्नम हैं, वोह उसमें हमेशां रेहनेवाले हैं।

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَقَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثُلٰتُ ؕ وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلٰى ظُلْمِهِمْ ۚ وَاِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝٦

6. और येह लोग रह़्मतसे पहले आपसे अ़ज़ाब तलब करने में जल्दी करते हैं, ह़ालांकि उनसे पहले कई अ़ज़ाब गुज़र चुके हैं, और (ऐ ह़बीब!) बेशक आपका रब लोगों के लिए उनके ज़ुल्मके बा वजूद बख़्शिशवाला है और यक़ीनन आपका रब सख़्त अ़ज़ाब देनेवाला (भी)है।

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ اِنَّمَآ اَنْتَ مُنْذِرٌ وَّلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ۝٧ ع

7. और काफ़िर लोग केहते हैं कि इस (रसूल) पर उनके रबकी तरफ़से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गई? (ऐ रसूले मुकर्रम !) आप तो फ़क़त (ना फ़रमानों को अंजामे बदसे) डरानेवाले और (दुनिया की) हर क़ौम के लिए हिदायत बहम पहुंचानेवाले हैं।

اَللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى وَمَا تَغِيْضُ الْاَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ ؕ وَكُلُّ شَىْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ ۝٨

8. अल्लाह जानता है जो कुछ हर मादा अपने पेट में उठाती है और रह़्म जिस क़दर सुकड़ते और जिस क़दर बढ़ते हैं, और हर चीज़ उसके हां मुक़र्रर ह़द के साथ है।

9. वोह हर निहां और अ़यां को जाननेवाला है सबसे बरतर (और) आ'ला रुत्बेवाला है।

عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيْرُ الْمُتَعَالِ ﴿٩﴾

10. तुम में से जो शख़्स आहिस्ता बात करे और जो बुलंद आवाज़से करे और जो रात (की तारीकी) में छुपा हो और जो दिन (की रौशनी) में चलता फिरता हो (उसके लिए) सब बराबर हैं।

سَوَآءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ اَسَرَّ الْقَوْلَ وَ مَنْ جَهَرَ بِهٖ وَ مَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍۭ بِالَّيْلِ وَسَارِبٌۢ بِالنَّهَارِ ﴿١٠﴾

11. (हर) इन्सान के लिए यके बाद दीगरे आनेवाले (फ़रिश्ते) हैं जो उसके आगे और उसके पीछे अल्लाहके हुक्मसे उसकी निगेहबानी करते हैं। बेशक अल्लाह किसी क़ौमकी ह़ालत को नहीं बदलता यहां तक कि वोह लोग अपने आपमें खुद तब्दीली पैदा कर डालें, और जब अल्लाह किसी क़ौमके साथ (उसकी अपनी बद आ'मालियों की वजह से) अ़ज़ाबका इरादा फ़रमा लेता है तो उसे कोई टाल नहीं सक्ता, और न ही उनके लिए अल्लाहके मुक़ाबले में कोई मददगार होता है।

لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ مِّنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَ مِنْ خَلْفِهٖ يَحْفَظُوْنَهٗ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ؕ وَ اِذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِقَوْمٍ سُوْٓءًا فَلَا مَرَدَّ لَهٗ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّالٍ ﴿١١﴾

12. वोही है जो तुम्हें (कभी) डराने और (कभी) उम्मीद दिलाने के लिए बिजली दिखाता है और (कभी) भारी (घने) बादलों को उठाता है।

هُوَ الَّذِيْ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّ طَمَعًا وَّ يُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ۚ ﴿١٢﴾

13. (बिजलियों और बादलों की) गरज (या उस पर मु-त-अ़य्यन फ़रिश्ता) और तमाम फ़रिश्ते उसके ख़ौफ़से उसकी ह़म्द के साथ तस्बीह़ करते हैं, और वोह कड़कती बिजलियां भेजता है फिर जिस पर चाहता है उसे गिरा देता है, और वोह (कुफ़्फ़ार कुदरतकी इन निशानियों के बावजूद) अल्लाहके बारे में झगड़ा करते हैं, और वोह सख़्त तदबीरो गिरफ़्तवाला है।

وَ يُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهٖ وَ الْمَلٰٓئِكَةُ مِنْ خِيْفَتِهٖ ۚ وَ يُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيْبُ بِهَا مَنْ يَّشَآءُ وَهُمْ يُجَادِلُوْنَ فِي اللّٰهِ ۚ وَ هُوَ شَدِيْدُ الْمِحَالِ ؕ ﴿١٣﴾

14. उसीके लिए ह़क़ (या'नी तौहीद) की दा'वत है, और वोह (काफ़िर) लोग जो उसके सिवा (मा'बूदाने बातिला या'नी बुतों) की इबादत करते हैं, वोह उन्हें किसी चीज़

لَهٗ دَعْوَةُ الْحَقِّ ؕ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَجِيْبُوْنَ لَهُمْ بِشَيْءٍ

إِلَّا كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ إِلَى الْمَآءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهٖ ؕ وَمَا دُعَآءُ الْكٰفِرِيْنَ إِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ﴿١٤﴾

का जवाब भी नहीं दे सक्ते। उनकी मिसाल तो सिर्फ़ उस शख़्स जैसी है जो अपनी दोनों हथेलियां पानी की तरफ़ फैलाए (बैठा) हो कि पानी (ख़ुद) उसके मुंह तक पहुंच जाए और (यूं तो) वोह (पानी) उस तक पहुंचनेवाला नहीं, और (इसी तरह्) काफ़िरों का (बुतों की इबादत और उनसे) दुआ़ करना गुमराही में भटकने के सिवा कुछ नहीं।

وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّظِلٰلُهُمْ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ﴿١٥﴾ السجدة

15. और जो कोई (भी) आस्मानों और ज़मीन में है वोह तो अल्लाह ही के लिए सजदह करता है (बा'ज़) ख़ुशी से और (बा'ज़) मजबूरन और उनके साए (भी) सुब्हो शाम (उसी को सज्दह करते हैं तो फिर उन काफ़िरोंने अल्लाह को छोड़ कर बुतों की सज्दह रेज़ी क्यूं शुरूअ़ कर ली है)।

قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ؕ قُلِ اللّٰهُ ؕ قُلْ أَفَاتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖٓ أَوْلِيَآءَ لَا يَمْلِكُوْنَ لِأَنْفُسِهِمْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا ؕ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۙ۬ أَمْ هَلْ تَسْتَوِي الظُّلُمٰتُ وَالنُّوْرُ ۚ۬ أَمْ جَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ خَلَقُوْا كَخَلْقِهٖ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿١٦﴾

16. (उन काफ़िरों के सामने) फ़रमाइए कि आस्मानों और ज़मीन का रब कौन है ? आप (ख़ुद ही) फ़रमा दीजिए : अल्लाह है। (फिर) आप (उनसे दर्याफ़्त) फ़रमाइए : क्या तुमने उसके सिवा (उन बुतों) को कारसाज़ बना लिया है जो न अपनी ज़ातों के लिए किसी नफ़े' के मालिक हैं और न किसी नुक़्सान के। आप फ़रमा दीजिए क्या अँधा और बीना बराबर हो सक्ते हैं या क्या तारीकियां और रौशनी बराबर हो सक्ती हैं। क्या उन्होंने अल्लाह के लिए ऐसे शरीक बनाए है जिन्होंने अल्लाहकी मख़्लूक़ की तरह् (कुछ मख़्लूक़) ख़ुद (भी) पैदा की हो, सो (उन बुतों की पैदा कर्दह) उस मख़्लूक़ से उनको तशाबोह (या'नी मुग़ालता) हो गया हो, फ़रमा दीजिए : अल्लाह ही हर चीज़ का ख़ालिक़ है और वोह एक है, वोह सब पर ग़ालिब है।

أَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَالَتْ أَوْدِيَةٌۢ بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا رَّابِيًا ؕ وَمِمَّا يُوْقِدُوْنَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ

17. उसने आस्मानकी जानिबसे पानी उतारा तो वादियां अपनी (अपनी) गुंजाइश के मुताबिक़ बेह निक्लीं, फिर सैलाब की रव ने उभरा हुवा झाग उठा लिया, और जिन

ابْتِغَآءَ حِلْيَةٍ اَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ مِّثْلُهٗ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ۬ؕ فَاَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَآءً ۚ وَاَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِي الْاَرْضِ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ ؕ ﴿١٧﴾

चीज़ों को आगमें तपाते हैं, ज़ेवर या दूसरा सामान बनाने के लिए उस पर भी वैसा ही झाग उठता है, इस तरह अल्लाह हक़ और बातिल की मिसालें बयान फ़रमाता है, सो झाग तो (पानीवाला हो या आगवाला सब) बेकार हो कर रेह जाता है और अल्बत्ता जो कुछ लोगों के लिए नफ़ा' बख़्श होता है वोह ज़मीनमें बाक़ी रहता है अल्लाह इस तरह मिसालें बयान फ़रमाता है।

لِلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنٰى ؕ وَالَّذِيْنَ لَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهٗ لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْحِسَابِ ۬ۙ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٨﴾

وقف النبی صلی اللہ علیہ وسلم

18. ऐसे लोगों के लिए जिन्होंने अपने रबका हुक्म क़ुबूल किया भलाई है, और जिन्होंने उसका हुक्म क़ुबूल नहीं किया अगर उनके पास वोह सब कुछ हो जो ज़मीनमें है और उसके साथ उतना और भी हो सो वोह उसे (अ़ज़ाब से नजात के लिए) फ़िद्या दे डालें (तब भी) उन्ही लोगों का हिसाब बुरा होगा, और उनका ठिकाना दोज़ख़ है और वोह निहायत बुरा ठिकाना है।

النصف ع ٢ ١١ ٨

اَفَمَنْ يَّعْلَمُ اَنَّمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ اَعْمٰى ؕ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۙ ﴿١٩﴾

19. भला वोह शख़्स जो येह जानता है कि जो कुछ आपकी तरफ़ आपके रबकी जानिब से नाज़िल किया गया है हक़ है, उस शख़्स के मानिन्द हो सक्ता है जो अँधा है, बात येही है कि नसीहत अ़क़्लमंद ही क़ुबूल करते हैं।

الَّذِيْنَ يُوْفُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَلَا يَنْقُضُوْنَ الْمِيْثَاقَ ۙ ﴿٢٠﴾

20. जो लोग अल्लाहके अ़हद को पूरा करते हैं और क़ौलो क़रार को नहीं तोड़ते।

وَالَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُوْنَ سُوْٓءَ الْحِسَابِ ؕ ﴿٢١﴾

21. और जो लोग इन सब (हुक़ूक़ुल्लाह, हुक़ूक़ुर्रसूल, हुक़ूक़ुल इबाद और अपने हुक़ूक़े क़राबत) को जोड़े रखते हैं, जिनके जोड़े रखनेका अल्लाहने हुक्म फ़रमाया है और अपने रब की ख़शिय्यत में रेहते हैं और बुरे हिसाब से ख़ाइफ़ रेहते हैं।

وَالَّذِينَ صَبَرُوا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَأَنْفَقُوا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً وَّيَدْرَءُونَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ أُولٰٓئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٢٢﴾

22. और जो लोग अपने रबकी रज़ा जूई के लिए सब्र करते हैं और नमाज़ क़ाइम रखते हैं और जो रिज़्क़ हमने उन्हें दिया है उसमें से पोशीदह और ए'लानिया (दोनों तरह) ख़र्च करते हैं और नेकीके ज़रीए बुराई को दूर करते रेहते हैं येही वोह लोग हैं जिनके लिए आख़िरतका (हसीन) घर है।

جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُونَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَدْخُلُونَ عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ ﴿٢٣﴾

23. (जहां) सदा बहार बाग़ात हैं उनमें वोह लोग दाख़िल होंगे और उनके आबाओ अजदाद और उनकी बीवियों और उनकी औलाद में से जो भी नेकूकार होगा और फ़रिश्ते उनके पास (जन्नतके) हर दरवाज़े से आएंगे।

سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٢٤﴾

24. (उन्हें ख़ुश आमदीद केहते और मुबारक बाद देते हुए कहेंगे) तुम पर सलामती हो तुम्हारे सब्र करने के सिले में, पस (अब देखो) आख़िरत का घर क्या खूब है।

وَالَّذِينَ يَنْقُضُونَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْ بَعْدِ مِيثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَآ أَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ أَنْ يُّوصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ أُولٰٓئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوٓءُ الدَّارِ ﴿٢٥﴾

25. और जो लोग अल्लाहका अ़हद उसके मज़बूत करने के बाद तोड़ देते हैं और उन तमाम (रिश्तों और हुक़ूक़) को क़ता' कर देते हैं जिनके जोड़े रखने का अल्लाहने हुक्म फ़रमाया है और ज़मीनमें फ़साद अंगेज़ी करते हैं उन्ही लोगों के लिए ला'नत है और उनके लिए बुरा घर है।

اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ وَفَرِحُوا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا فِي الْاٰخِرَةِ إِلَّا مَتَاعٌ ﴿٢٦﴾

26. अल्लाह जिसके लिए चाहता है रिज़्क़ कुशादह फ़रमा देता है और (जिसके लिए चाहता है) तंग कर देता है, और वोह (काफ़िर) दुनियाकी ज़िन्दगी से बहुत मसरूर हैं, हालांकि दुन्यवी ज़िन्दगी आख़िरत के मुक़ाबले में एक हक़ीर मताअ़ के सिवा कुछ भी नहीं।

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَ يَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ اَنَابَ ﴿٢٧﴾

27. और काफ़िर लोग येह केहते हैं कि इस (रसूल) पर इसके रबकी जानिबसे कोई निशानी क्यों नहीं उतरी, फ़रमा दीजिए : बेशक अल्लाह जिसे चाहता है (निशानियों के बावजूद) गुमराह ठेहरा देता है और जो उसकी तरफ़ रुजूअ़ करता है उसे अपनी जानिब रहनुमाई फ़रमा देता है।

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ تَطْمَىِٕنُّ قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِ ؕ اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَىِٕنُّ الْقُلُوْبُ ﴿٢٨﴾

28. जो लोग ईमान लाए और उनके दिल अल्लाह के ज़िक्रसे मुत्मइन होते हैं, जान लो कि अल्लाह ही के ज़िक्रसे दिलों को इत्मीनान नसीब होता है।

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ طُوْبٰى لَهُمْ وَحُسْنُ مَاٰبٍ ﴿٢٩﴾

29. जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे उनके लिए (आख़िरत में) ऐशो मुसर्रत है और उमदह ठिकाना है।

كَذٰلِكَ اَرْسَلْنٰكَ فِيْٓ اُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَآ اُمَمٌ لِّتَتْلُوَاْ عَلَيْهِمُ الَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُوْنَ بِالرَّحْمٰنِ ؕ قُلْ هُوَ رَبِّيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ مَتَابِ ﴿٣٠﴾

30. (ऐ ह़बीब!) इसी तरह़ हमने आपको ऐसी उम्मत में (रसूल बना कर) भेजा है कि जिससे पहले ह़क़ीकत में (सारी) उम्मतें गुज़र चुकी हैं (अब येह सब से आख़िरी उम्मत है) ताकि आप उन पर वोह (किताब)पढ़ कर सुना दें जो हमने आपकी तरफ़ वह़ी की है और वोह रह़मान का इन्कार कर रहे हैं, आप फ़रमा दीजिए : वोह मेरा रब है उसके सिवा कोई मा'बूद नहीं, उस पर मैंने भरोसा किया है और उसी की तरफ़ मेरा रुजूअ़ है।

وَلَوْ اَنَّ قُرْاٰنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ اَوْ قُطِّعَتْ بِهِ الْاَرْضُ اَوْ كُلِّمَ بِهِ الْمَوْتٰى ؕ بَلْ لِّلّٰهِ الْاَمْرُ جَمِيْعًا ؕ اَفَلَمْ يَايْـَٔسِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ لَهَدَى النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا تُصِيْبُهُمْ

31. और अगर कोई ऐसा क़ुरआन होता जिसके ज़रीए पहाड़ चला दिए जाते या उससे ज़मीन फाड़ दी जाती या उसके जरीए मुर्दोंसे बात करा दी जाती (तब भी वोह ईमान न लाते), बल्कि सब काम अल्लाहही के इख़्तियारमें हैं, तो क्या ईमानवालों को (येह) मा'लूम नहीं कि अगर अल्लाह चाहता तो सब लोगों को हिदायत फ़रमा देता, और हमेशा काफ़िर लोगों को उनके करतूतों के बाइस कोई (न कोई) मुसीबत पहुंचती रहेगी या उनके घरों (या'नी

بِمَا صَنَعُوْا قَارِعَةٌ اَوْ تَحُلُّ قَرِیْبًا مِّنْ دَارِهِمْ حَتّٰی یَاْتِیَ وَعْدُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا یُخْلِفُ الْمِیْعَادَ ﴿۳۱﴾

बस्तियों) के आसपास उतरती रहेगी यहां तक कि अल्लाह का वा'दए (अ़ज़ाब) आ पहुंचे, बेशक अल्लाह वा'दा ख़िलाफ़ी नहीं करता।

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَاَمْلَیْتُ لِلَّذِیْنَ كَفَرُوْا ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۫ فَكَیْفَ كَانَ عِقَابِ ﴿۳۲﴾

32. और बेशक आपसे क़ब्ल (भी कुफ़्फ़ार की जानिबसे) रसूलों के साथ मज़ाक़ किया जाता रहा सो मैंने काफ़िरों को मोहलत दी फिर मैंने उन्हें (अ़ज़ाब की) गिरफ़्त में ले लिया, फिर (देखिए) मेरा अ़ज़ाब कैसा था।

اَفَمَنْ هُوَ قَآىِٕمٌ عَلٰی كُلِّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ ۚ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ ؕ قُلْ سَمُّوْهُمْ ؕ اَمْ تُنَبِّـُٔوْنَهٗ بِمَا لَا یَعْلَمُ فِی الْاَرْضِ اَمْ بِظَاهِرٍ مِّنَ الْقَوْلِ ؕ بَلْ زُیِّنَ لِلَّذِیْنَ كَفَرُوْا مَكْرُهُمْ وَصُدُّوْا عَنِ السَّبِیْلِ ؕ وَمَنْ یُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿۳۳﴾

33. क्या वोह (अल्लाह) जो हर जान पर उसके आ'माल की निगेहबानी फ़रमा रहा है और (वोह बुत जो काफ़िर) लोगोंने अल्लाहके शरीक बना लिए (एक जैसे हो सक्ते हैं? हरगिज़ नहीं)। आप फ़रमा दीजिए कि उनके नाम (तो) बताओ । (नादानो!) क्या तुम उस (अल्लाह) को उस चीज़की ख़बर देते हो जिस (के वजूद) को वोह सारी ज़मीन में नहीं जानता या (येह सिर्फ़) ज़ाहिरी बातें ही हैं (जिनका हक़ीक़त से कोई त-अ़ल्लुक़ नहीं) बल्कि (हक़ीक़त येह है कि) काफ़िरों के लिए उनका फ़रेब ख़ुशनुमा बना दिया गया है और वोह (सीधी) राहसे रोक दिए गए हैं, और जिसे अल्लाह गुमराह ठेहरा दे तो उसके लिए कोई हादी नहीं हो सक्ता।

لَهُمْ عَذَابٌ فِی الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَقُّ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ﴿۳۴﴾

34. उनके लिए दुन्यवी ज़िन्दगी में (भी) अ़ज़ाब है और यक़ीनन आख़िरत का अ़ज़ाब ज़ियादह सख़्त है और उन्हें अल्लाह (के अ़ज़ाब) से कोई बचानेवाला नहीं।

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِیْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ؕ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ اُكُلُهَا دَآىِٕمٌ وَّظِلُّهَا ؕ تِلْكَ عُقْبَى الَّذِیْنَ

35. उस जन्नतका हाल जिसका परहेज़गारों से वा'दा किया गया है (येह है) कि उसके नीचेसे नेहरें बेह रही हैं, उसका फल भी हमेशा रेहनेवाला है और उसका साया (भी), येह उन लोगों का (हुस्ने) अंजाम है जिन्होंने तक़्वा

اتَّقَوْا ۖ وَّعُقْبَى الْكٰفِرِيْنَ النَّارُ ﴿٣٥﴾
وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَفْرَحُوْنَ
بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمِنَ الْاَحْزَابِ
مَنْ يُّنْكِرُ بَعْضَهٗ ؕ قُلْ اِنَّمَآ
اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ وَلَآ اُشْرِكَ
بِهٖ ؕ اِلَيْهِ اَدْعُوْا وَاِلَيْهِ مَاٰبِ ﴿٣٦﴾

इख़्तियार किया, और काफ़िरों का अंजाम आतिशे दोज़ख़ है।

36. और जिन लोगों को हम किताब (तौरात) दे चुके हैं (अगर वोह सही़ह़ मोमिन हैं तो) वोह इस (क़ुर्आन) से ख़ुश होते हैं जो आपकी तरफ़ नाज़िल किया गया है और उन (ही के) फ़िरक़ों में से बा'ज़ ऐसे भी हैं जो इसके कुछ ह़िस्से का इन्कार करते हैं, फ़रमा दीजिए कि बस मुझे तो येही हुक्म दिया गया है कि मैं अल्लाह की इ़बादत करूं और उसके साथ (किसी को) शरीक न ठेहराऊं, उसी की तरफ़ मैं बुलाता हूं और उसी की तरफ़ मुझे लौट कर जाना है।

وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا ؕ
وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ مَا
جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ
مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا وَاقٍ ﴿٣٧﴾
وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ وَ
جَعَلْنَا لَهُمْ اَزْوَاجًا وَّذُرِّيَّةً ؕ وَمَا
كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا
بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ لِكُلِّ اَجَلٍ كِتَابٌ ﴿٣٨﴾
يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَآءُ وَيُثْبِتُ ۚۖ
وَعِنْدَهٗۤ اُمُّ الْكِتٰبِ ﴿٣٩﴾
وَاِنْ مَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ
نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِنَّمَا عَلَيْكَ

37. और इसी तरह हमने इस (क़ुर्आन) को हुक्म बना कर अ़रबी ज़बानमें उतारा है, और (ऐ सुननेवाले !) अगर तूने उन (काफ़िरों) की ख़्वाहिशात की पैरवी की इसके बाद कि तेरे पास (क़तई) इल्म आ चुका है तो तेरे लिए अल्लाह के मुक़ाबले में न कोई मददगार होगा और न कोई मुहाफ़िज़।

38. और (ऐ रसूल !) बेशक हमने आपसे पहले (बहुतसे) पयग़म्बरों को भेजा और हमने उनके लिए बीवियां (भी) बनाईं और औलाद (भी), और किसी रसूल का येह काम नहीं कि वोह निशानी ले आए मगर अल्लाहके हुक्मसे, हर एक मीआ़द के लिए एक नविश्ता है।

39. अल्लाह जिस (लिखे हुए) को चाहता है मिटा देता है और (जिसे चाहता है) सब्त फ़रमा देता है, और उसीके पास अस्ल किताब (लौहे़ मह़फ़ूज़) है।

40. और अगर हम (उस अ़ज़ाबका) कुछ ह़िस्सा जिसका हमने उन (काफ़िरों) से वा'दा किया है आपको (ह़याते ज़ाहिरी में ही) दिखा दें या हम आपको (इससे क़ब्ल) उठा

الْبَلٰغُ وَعَلَيْنَا الْحِسَابُ ﴿٤٠﴾

लें (येह दोनों चीज़ें हमारी मर्ज़ी पर मुन्हसिर हैं) आप पर तो सिर्फ़ (अह्काम के पहुंचा देने की ज़िम्मेदारी है और हिसाब लेना हमारा काम है।

اَوَ لَمْ يَرَوْا اَنَّا نَاْتِى الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ؕ وَاللّٰهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهٖ ؕ وَ هُوَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٤١﴾

41. क्या वोह नहीं देख रहे कि हम (उनके ज़ेरे तसल्लुत) ज़मीन को हर तरफ़ से घटाते चले जा रहे हैं (और उनके बेश्तर इलाक़े रफ़्ता रफ़्ता इस्लाम के ताबे' होते जा रहे हैं), और अल्लाह ही हुक्म फ़रमाता है कोई भी उसके हुक्म को रद्द करनेवाला नहीं, और वोह हिसाब जल्द लेनेवाला है।

وَقَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلِلّٰهِ الْمَكْرُ جَمِيْعًا ؕ يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ ؕ وَسَيَعْلَمُ الْكُفّٰرُ لِمَنْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٤٢﴾

42. और बेशक उन लोगों ने भी मक्रो फ़रेब किया था जो उनसे पहले हो गुज़रे हैं सो उन सब तद्बीरों को तोड़ना (भी) अल्लाह के इख़्तियार में है। वोह ख़ूब जानता है जो कुछ हर शख़्स कमा रहा है, और कुफ़्फ़ार जल्द ही जान लेंगे कि आख़िरतका घर किसके लिए है।

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَسْتَ مُرْسَلًا ؕ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا بَيْنِىْ وَبَيْنَكُمْ ۙ وَمَنْ عِنْدَهٗ عِلْمُ الْكِتٰبِ ﴿٤٣﴾

43. और काफ़िर लोग केहते हैं कि आप पयग़म्बर नहीं हैं, फ़रमा दीजिए : (मेरी रिसालत पर) मेरे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह बतौरे गवाह काफ़ी है और वोह शख़्स भी जिसके पास (सहीह तौर पर आस्मानी) किताब का इल्म है।

आयातुहा 52 | 14 सूरतु इब्राही–म मक्किय्यतुन 72 | रुकूआतुहा 7

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह्म फ़रमानेवाला है।

الٓرٰ ۚ كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ

1. अलिफ़ लाम रा (हक़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं), येह (अ़ज़ीम) किताब है

بِإِذْنِ رَبِّهِمْ إِلَىٰ صِرَاطِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ۝١

जिसे हमने आपकी तरफ़ उतारा है ताकि आप लोगों को (कुफ़्र की) तारीकियों से निकाल कर (ईमान के) नूर की जानिब ले आएं (मज़ीद येह कि) उनके रबके हुक्म से उसकी राह की तरफ़ (लाएं) जो ग़ल्बेवाला सब खूबियोंवाला है।

اللَّهِ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ وَوَيْلٌ لِّلْكَافِرِينَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيدٍ ۝٢

2. वोह अल्लाह कि जो कुछ आस्मानों में और जो कुछ ज़मीन में है (सब) उसीका है, और कुफ़्फ़ार के लिए सख़्त अज़ाब के बाइस बरबादी है।

الَّذِينَ يَسْتَحِبُّونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ وَيَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا ۚ أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ۝٣

3. (येह) वोह लोग हैं जो दुन्यवी ज़िन्दगी को आख़िरत के मुक़ाबले में ज़ियादह पसंद करते हैं और (लोगों को) अल्लाहकी राह से रोकते हैं और इस (दीने हक़्क़) में कजी तलाश करते हैं । येह लोग दूर की गुमराही में (पड़ चुके) हैं।

وَمَا أَرْسَلْنَا مِن رَّسُولٍ إِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهِ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ ۖ فَيُضِلُّ اللَّهُ مَن يَشَاءُ وَيَهْدِي مَن يَشَاءُ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝٤

4. और हमने किसी रसूलको नहीं भेजा मगर अपनी क़ौमकी ज़बान के साथ ताकि वोह उनके लिए (पैग़ामे हक़्क़) ख़ूब वाज़ेह कर सके, फिर अल्लाह जिसे चाहता है गुमराह ठेहरा देता है और जिसे चाहता है हिदायत बख़्शता है, और वोह ग़ालिब हिक्मतवाला है।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا أَنْ أَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ وَذَكِّرْهُم بِأَيَّامِ اللَّهِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ۝٥

5. और बेशक हमने मूसा (عليه السلام) को अपनी निशानियों के साथ भेजा कि (ऐ मूसा!) तुम अपनी क़ौमको अँधेरों से निकाल कर नूर की तरफ़ ले जाओ और उन्हें अल्लाह के दिनों की याद दिलाओ (जो उन पर और पहली उम्मतों पर आ चुके थे) । बेशक उसमें हर ज़ियादह सब्र करनेवाले (और) खूब शुक्र बजा लानेवाले के लिए निशानियां हैं।

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ اذْكُرُوا

6. और (वोह वक़्त याद कीजिए) जब मूसा (عليه السلام)ने

نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ اَنْجٰىكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ وَ يُذَبِّحُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَ يَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ وَ فِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ﴿۶﴾ وَ اِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِيْدَنَّكُمْ وَ لَئِنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِيْ لَشَدِيْدٌ ﴿۷﴾ وَ قَالَ مُوْسٰۤى اِنْ تَكْفُرُوْۤا اَنْتُمْ وَ مَنْ فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ حَمِيْدٌ ﴿۸﴾ اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ قَوْمِ نُوْحٍ وَّ عَادٍ وَّ ثَمُوْدَ ۬ۛ وَ الَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۛؕ لَا يَعْلَمُهُمْ اِلَّا اللّٰهُ ؕ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرَدُّوْۤا اَيْدِيَهُمْ فِيْۤ اَفْوَاهِهِمْ وَ قَالُوْۤا اِنَّا كَفَرْنَا بِمَاۤ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ وَ اِنَّا لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَنَاۤ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ﴿۹﴾

अपनी क़ौमसे कहा : तुम अपने ऊपर अल्लाहके (उस) इन्आम को याद करो जब उसने तुम्हें आले फ़िरऔनसे नजात दी जो तुम्हें सख़्त अ़ज़ाब पहुंचाते थे और तुम्हारे लड़कों को ज़ब्ह कर डालते थे और तुम्हारी औ़रतों को ज़िन्दा छोड़ देते थे, और उसमें तुम्हारे रबकी जानिब से बड़ी भारी आज़माइश थी।

7. और (याद करो) जब तुम्हारे रबने आगाह फ़रमाया कि अगर तुम शुक्र अदा करोगे तो मैं तुम पर (ने'मतों में) ज़रूर इज़ाफ़ा करूंगा और अगर तुम नाशुक्री करोगे तो मेरा अ़ज़ाब यक़ीनन सख़्त है।

8. और मूसा (عليه السلام) ने कहा : अगर तुम और वोह सब के सब लोग जो ज़मीन में हैं कुफ़्र करने लगें तो बेशक अल्लाह (उन सबसे) यक़ीनन बे नियाज़ लाइक़े हम्दो सना है।

9. क्या तुम्हें उन लोगों की ख़बर नहीं पहुंची जो तुमसे पहले हो गुज़रे हैं, (वोह) क़ौमे नूह और आ़द और समूद (की क़ौमों के लोग) थे और (कुछ) लोग जो उनके बाद हुए, उन्हें अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता (क्यों कि वोह सफ़्हए हस्ती से बिलकुल नीस्तो नाबूद हो चुके हैं), उनके पास उनके रसूल वाज़ेह निशानियों के साथ आए थे पस उन्होंने (अज़ राहे तमस्ख़ुरो इ़नाद) अपने हाथ अपने मूंहों में डाल लिए और (बड़ी जसारत के साथ) केहने लगे : हमने उस (दीन) का इन्कार कर दिया जिसके साथ तुम भेजे गए हो और यक़ीनन हम उस चीज़ की निस्बत इज़्तिराब अंगेज़ शक में मुब्तिला हैं जिसकी तरफ़ तुम हमें दा'वत देते हो।

قَالَتْ رُسُلُهُمْ اَفِي اللّٰهِ شَكٌّ فَاطِرِ
السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ يَدْعُوْكُمْ
لِيَغْفِرَ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُؤَخِّرَكُمْ
اِلٰى اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ قَالُوْٓا اِنْ اَنْتُمْ
اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ؕ تُرِيْدُوْنَ اَنْ
تَصُدُّوْنَا عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا
فَاْتُوْنَا بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿١٠﴾

10. उनके पयग़म्बरों ने कहा : क्या अल्लाहके बारे में शक है जो आस्मानों और ज़मीनका पैदा फ़रमानेवाला है, (जो) तुम्हें बुलाता है कि तुम्हारे गुनाहों को तुम्हारी ख़ातिर बख़्श दे और (तुम्हारी ना फ़रमानियों के बावजूद) तुम्हें एक मुक़र्रर मीआ़द तक मोहलत दिए रखता है । वोह (काफ़िर) बोले तुम तो सिर्फ़ हमारे जैसे बशर ही हो, तुम येह चाहते हो कि हमें उन (बुतों) से रोक दो जिनकी परस्तिश हमारे बापदादा किया करते थे, सो तुम हमारे पास कोई रौशन दलील लाओ।

قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ اِنْ نَّحْنُ اِلَّا
بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَمُنُّ عَلٰى مَنْ
يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَمَا كَانَ لَنَآ اَنْ
نَّاْتِيَكُمْ بِسُلْطٰنٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ
وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١١﴾

11. उनके रसूलोंने उनसे कहा : अगरचे हम (नफ़्से बशरिय्यत में) तुम्हारी तरह़ इन्सान ही हैं लेकिन (इस फ़र्क़ पर भी ग़ौर करो कि) अल्लाह अपने बंदों में से जिस पर चाहता है एह़सान फ़रमाता है (फिर बराबरी कैसी ?), और (रेह गई रौशन दलील की बात) येह हमारा काम नहीं कि हम अल्लाहके हुक्म के बिग़ैर तुम्हारे पास कोई दलील ले आएं, और अल्लाह ही पर मोमिनों को भरोसा करना चाहिए।

وَمَا لَنَآ اَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللّٰهِ وَقَدْ
هَدٰىنَا سُبُلَنَا ؕ وَلَنَصْبِرَنَّ عَلٰى مَآ
اٰذَيْتُمُوْنَا ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿١٢﴾ ع

12.और हमें क्या है कि हम अल्लाह पर भरोसा न करें दर आं ह़ाली कि उसीने हमें (हिदायतो कामयाबी की) राहें दिखाई हैं, और हम ज़रूर तुम्हारी अज़िय्यत रसानियों पर सब्र करेंगे, और अह्ले तवक्कल को अल्लाह ही पर तवक्कल करना चाहिए।

وَ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِرُسُلِهِمْ
لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ اَرْضِنَآ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ
فِيْ مِلَّتِنَا ؕ فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ
لَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٣﴾

13. और काफ़िर लोग अपने पयग़म्बरों से केहने लगे : हम बहर सूरत तुम्हें अपने मुल्क से निकाल देंगे या तुम्हें ज़रूर हमारे मज़हब में लौट आना होगा, तो उनके रबने उनकी तरफ़ वह़ी भेजी कि हम ज़ालिमों को ज़रूर हलाक कर देंगे।

وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِهِمْ ۚ ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِيْ وَخَافَ وَعِيْدِ ﴿١٤﴾

14.और उनके बाद हम तुम्हें ज़रूर (उसी) मुल्क में आबाद फ़रमाएंगे। येह (वा'दा) हर उस शख़्स के लिए है जो मेरे हुज़ूर खड़ा होने से डरा और मेरे वा'दए (अज़ाब) से ख़ाइफ़ हुआ।

وَاسْتَفْتَحُوْا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ﴿١٥﴾

15. और (बिल आख़िर) रसूलोंने (अल्लाहसे) फ़त्ह मांगी और हर सरकश ज़िद्दी ना मुराद हो गया।

مِّنْ وَّرَآئِهٖ جَهَنَّمُ وَيُسْقٰى مِنْ مَّآءٍ صَدِيْدٍ ﴿١٦﴾

16. उस (बरबादी) के पीछे (फिर) जहन्नम है और उसे पीपका पानी पिलाया जाएगा।

يَّتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ وَيَأْتِيْهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ۖ وَمِنْ وَّرَآئِهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ ﴿١٧﴾

17. जिसे वोह ब मुशकिल एक एक घूंट पीएगा और उसे हलक़ से नीचे उतार न सकेगा, और उसे हर तरफ़से मौत आ घेरेगी और वोह मर (भी) न सकेगा, और (फिर) उसके पीछे (एक और) बड़ा ही सख़्त अज़ाब होगा।

مَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ اَعْمَالُهُمْ كَرَمَادِ ۣاشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ يَوْمٍ عَاصِفٍ ۖ لَا يَقْدِرُوْنَ مِمَّا كَسَبُوْا عَلٰى شَيْءٍ ۚ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ﴿١٨﴾

18. जिन लोगों ने अपने रबसे कुफ़्र किया है, उनकी मिसाल येह है कि उनके आ'माल (उस) राख की मानिन्द हैं जिस पर तेज़ आंधी के दिन सख़्त हवाका झोंका आ गया, वोह उन (आ'माल) में से जो उन्होंने कमाए थे किसी चीज़ पर क़ाबू नहीं पा सकेंगे। येही बहुत दूर की गुमराही है।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿١٩﴾

19. (ऐ सुननेवाले !) क्या तूने नहीं देखा कि बेशक अल्लाहने आस्मानों और ज़मीन को हक़ (पर मब्नी हिक्मत) के साथ पैदा फ़रमाया। अगर वोह चाहे (तो) तुम्हें नीस्तो नाबूद फ़रमा दे और (तुम्हारी जगह) नई मख़्लूक़ ले आए।

وَّمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ﴿٢٠﴾

20. और येह (काम)अल्लाह पर (कुछ भी) दुश्वार नहीं है।

وَبَرَزُوا لِلّٰهِ جَمِيعًا فَقَالَ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوٓا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ أَنْتُمْ مُّغْنُونَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ۚ قَالُوا لَوْ هَدٰىنَا اللّٰهُ لَهَدَيْنٰكُمْ ۚ سَوَآءٌ عَلَيْنَآ أَجَزِعْنَآ أَمْ صَبَرْنَا مَا لَنَا مِنْ مَّحِيصٍ ﴿٢١﴾

ع ٣ ٩ ١٥

21. और (रोज़े महूशर) अल्लाहके सामने सब (छोटे बड़े) हाज़िर होंगे तो (पैरवी करनेवाले) कमज़ोर लोग (ताक़तवर) मु-त-कब्बिरों से कहेंगे : हम तो (उम्र भर) तुम्हारे ताबे' रहे तो क्या तुम अल्लाह के अ़ज़ाब से भी हमें किसी क़दर बचा सकते हो? वोह (उमरा अपने पीछे लगनेवाले ग़रीबोंसे) कहेंगे : अगर अल्लाह हमें हिदायत करता तो हम तुम्हें भी ज़रूर हिदायत की राह दिखाते (हम खुदभी गुमराह थे सो तुम्हें भी गुमराह करते रहे)। हम पर बराबर है ख़्वाह (आज) हम आहो ज़ारी करें या सब्र करें हमारे लिए कोई राहे फ़रार नहीं है।

وَقَالَ الشَّيْطٰنُ لَمَّا قُضِيَ الْأَمْرُ إِنَّ اللّٰهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَوَعَدْتُّكُمْ فَأَخْلَفْتُكُمْ ۚ وَمَا كَانَ لِيَ عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ إِلَّآ أَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِي ۚ فَلَا تَلُومُونِي وَلُومُوٓا أَنْفُسَكُمْ ۚ مَآ أَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَآ أَنْتُمْ بِمُصْرِخِيَّ ۚ إِنِّي كَفَرْتُ بِمَآ أَشْرَكْتُمُونِ مِنْ قَبْلُ ۚ إِنَّ الظّٰلِمِينَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٢﴾

22. और शैतान कहेगा जबकि फ़ैसला हो चुकेगा कि बेशक अल्लाहने तुमसे सच्चा वा'दा किया था और मैंने (भी) तुमसे वा'दा किया था, सो मैंने तुमसे वा'दा ख़िलाफ़ी की है, और मुझे (दुनिया में) तुम पर किसी क़िस्म का ज़ोर नहीं था सिवाए इसके कि मैंने तुम्हें (बातिल की तरफ़) बुलाया सो तुमने (अपने मफ़ादकी ख़ातिर) मेरी दा'वत क़ुबूल की, अब तुम मुझे मलामत न करो बल्कि (खुद) अपने आपको मलामत करो। न मैं (आज) तुम्हारी फ़रियाद रसी कर सक्ता हूं और न तुम मेरी फ़रियाद रसी कर सक्ते हो। इससे पहले जो तुम मुझे (अल्लाहका) शरीक ठेहराते रहे हो बेशक मैं (आज) उससे इन्कार करता हूं। यक़ीनन ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।

وَأُدْخِلَ الَّذِينَ اٰمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِينَ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ ۚ تَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلٰمٌ ﴿٢٣﴾

23. और जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे वोह जन्नतोंमें दाख़िल किए जाएंगे जिनके नीचे से नेहरें बेह रही हैं (वोह) उनमें अपने रबके हुक्म से हमेशा रहेंगे, (मुलाक़ात के वक़्त) उसमें उन का दुआ़इया कलिमा ''सलाम'' होगा।

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ أَصْلُهَا ثَابِتٌ وَفَرْعُهَا فِي السَّمَاءِ ﴿٢٤﴾

24. क्या आपने नहीं देखा, अल्लाहने कैसी मिसाल बयान फ़रमाई है कि पाकीज़ा बात उस पाकीज़ा दरख़्त के मानिन्द है जिसकी जड़ (ज़मीन में) मज़बूत है और उसकी शाखें आस्मान में हैं।

تُؤْتِي أُكُلَهَا كُلَّ حِينٍ بِإِذْنِ رَبِّهَا ۗ وَيَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٥﴾

25. वोह (दरख़्त) अपने रबके हुक्मसे हर वक़्त फल दे रहा है और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान फ़रमाता है ताकि वोह नसीहत हासिल करें।

وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيثَةٍ اجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ الْأَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ ﴿٢٦﴾

26. और नापाक बातकी मिसाल उस नापाक दरख़्त की सी है जिसे ज़मीन के ऊपर ही से उखाड़ लिया जाए, उसे ज़रा भी क़रार (व बक़ा) न हो।

يُثَبِّتُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ ۖ وَيُضِلُّ اللَّهُ الظَّالِمِينَ ۚ وَيَفْعَلُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ ﴿٢٧﴾

27. अल्लाह ईमानवालों को (इस) मज़बूत बात (की बरकत) से दुन्यवी ज़िन्दगी में भी साबित क़दम रखता है और आख़िरत में (भी)। और अल्लाह ज़ालिमों को गुमराह ठेहरा देता है। और अल्लाह जो चाहता है कर डालता है।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ بَدَّلُوا نِعْمَتَ اللَّهِ كُفْرًا وَأَحَلُّوا قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ ﴿٢٨﴾

28. क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा जिन्होंने अल्लाहकी ने'मते (ईमान) को कुफ़्रसे बदल डाला और उन्होंने अपनी क़ौमको तबाही के घरमें उतार दिया।

جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا ۖ وَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿٢٩﴾

29. (वोह) दोज़ख़ है जिसमें झोंके जाएंगे, और वोह बुरा ठिकाना है।

وَجَعَلُوا لِلَّهِ أَنْدَادًا لِيُضِلُّوا عَنْ سَبِيلِهِ ۗ قُلْ تَمَتَّعُوا فَإِنَّ مَصِيرَكُمْ إِلَى النَّارِ ﴿٣٠﴾

30.और उन्होंने अल्लाह के लिए शरीक बना डाले ताकि वोह (लोगों को) उसकी राह से बेहकाएं। फ़रमा दीजिए : तुम (चंद रोज़ह) फ़ाइदा उठा लो बेशक तुम्हारा अंजाम आग ही की तरफ़ (जाना) है।

قُلْ لِّعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَيُنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خِلٰلٌ ۝٣١

31. आप मेरे मोमिन बंदोंसे फ़रमा दें कि वोह नमाज़ क़ाइम रखें और जो रिज़्क़ हमने उन्हें दिया है उस में से पोशीदह और ए'लानिया (हमारी राह में) ख़र्च करते रहें उस दिन के आनेसे पहले जिस दिनमें न कोई ख़रीदो फ़रोख़्त होगी और न ही कोई (दुन्यावी) दोस्ती (काम आएगी)।

اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْاَنْهٰرَ ۝٣٢

32. अल्लाह वोह है जिसने आस्मानों और ज़मीन को पैदा फ़रमाया और आस्मान की जानिबसे पानी उतारा फिर उस पानी के ज़रीए से तुम्हारे रिज़्क़ के तौर पर फल पैदा किए, और उसने तुम्हारे लिए कश्तियों को मुसख़्ख़र कर दिया ताकि उसके हुक्मसे समन्दर में चलती रहें और उसने तुम्हारे लिए दरियाओं को (भी) मुसख़्ख़र कर दिया।

وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَآئِبَيْنِ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۝٣٣

33. और उसने तुम्हारे फ़ाइदे के लिए सूरज और चांदको (बा क़ाइदह एक निज़ामका) मुतीअ़ बना दिया जो हमेशा (अपने अपने मदार में) गर्दिश करते रेहते हैं, और तुम्हारे (निज़ामे हयातके) लिए रात और दिन को भी (एक निज़ामके) ताबे'कर दिया।

وَاٰتٰىكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا سَاَلْتُمُوْهُ ۗ وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ۗ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَظَلُوْمٌ كَفَّارٌ ۝٣٤

34.और उसने तुम्हें हर वोह चीज़ अ़ता फ़रमा दी जो तुमने उससे मांगी, और अगर तुम अल्लाह की ने'मतोंको शुमार करना चाहो (तो) पूरा शुमार न कर सकोगे। बेशक इन्सान बड़ा ही ज़ालिम बड़ा ही ना शुक्रगुज़ार है।

ع ٥ ١٧

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا الْبَلَدَ اٰمِنًا وَّاجْنُبْنِيْ وَبَنِيَّ اَنْ نَّعْبُدَ الْاَصْنَامَ ۝٣٥

35.और (याद कीजिऐ) जब इब्राहीम (عليه السلام) ने अ़र्ज़ किया : ऐ मेरे रब ! इस शहर (मक्का) को जाए अम्न बना दे और मुझे और मेरे बच्चों को इस (बात) से बचा ले कि हम बुतों की परस्तिश करें।

رَبِّ اِنَّهُنَّ اَضْلَلْنَ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ ۚ فَمَنْ تَبِعَنِيْ فَاِنَّهٗ مِنِّيْ ۚ

36. ऐ मेरे रब ! उन (बुतों) ने बहुतसे लोगों को गुमराह कर डाला है। पस जिसने मेरी पैरवी की वोह तो मेरा होगा

وَمَنْ عَصَانِيْ فَاِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣٦﴾

और जिसने मेरी ना फ़रमानी की तो बेशक तू बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

رَبَّنَآ اِنِّيْٓ اَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِيْ بِوَادٍ غَيْرِ ذِيْ زَرْعٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ ۙ رَبَّنَا لِيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ فَاجْعَلْ اَفْئِدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِيْٓ اِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُمْ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُوْنَ ﴿٣٧﴾

37. ऐ हमारे रब ! बेशक मैंने अपनी औलाद (इस्माईल عليه السلام) को (मक्काकी) बे आबो गियाह वादी में तेरे हुर्मतवाले घरके पास बसा दिया है, ऐ हमारे रब ! ताकि वोह नमाज़ क़ाइम रखें पस तू लोगों के दिलों को ऐसा कर दे कि वोह शौक़ो महब्बत के साथ उनकी तरफ़ माइल रहें और उन्हें (हर तरह्के) फलों का रिज़्क़ अ़ता फ़रमा, ताकि वोह शुक्र बजा लाते रहें।

رَبَّنَآ اِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِيْ وَمَا نُعْلِنُ ۭ وَمَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاۗءِ ﴿٣٨﴾

38. ऐ हमारे रब ! बेशक तू वोह (सब कुछ) जानता है जो हम छुपाते हैं और जो हम ज़ाहिर करते हैं, और अल्लाह पर कोई भी चीज़ न ज़मीन में पौशीदह है और न ही आस्मानमें (मुख़्फ़ी है)।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ وَهَبَ لِيْ عَلَى الْكِبَرِ اِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ ۭ اِنَّ رَبِّيْ لَسَمِيْعُ الدُّعَاۗءِ ﴿٣٩﴾

39. सब ता'रीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जिसने मुझे बुढ़ापे में इस्माईल और इस्हाक़ (عليهما السلام दो फ़रज़न्द) अ़ता फ़रमाए, बेशक मेरा रब दुआ़ खूब सुननेवाला है।

رَبِّ اجْعَلْنِيْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ ڰ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاۗءِ ﴿٤٠﴾

40. ऐ मेरे रब ! मुझे और मेरी औलाद को नमाज़ पर क़ाइम रखनेवाला बना दे, ऐ हमारे रब ! और तू मेरी दुआ़ क़ुबूल फ़रमा ले।

رَبَّنَا اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ﴿٤١﴾ ع

41. ऐ हमारे रब ! मुझे बख़्श दे और मेरे वालिदैन को (बख़्श दे) ★और दीगर सब मोमिनों को भी, जिस दिन हि़साब क़ाइम होगा।

ع ٦ ١٨

★(यहां ह़ज़रत इब्राहीम عليه السلام के ह़क़ीक़ी वालिद तारिख़ की तरफ़ इशारा है, येह काफ़िरो मुशरिक न थे बल्कि दीने ह़क़ पर थे, आज़र दर अस्ल आपका चचा था, उसने आप عليه السلام को आप عليه السلام के वालिद की वफ़ात के बाद पाला था, इस लिए उसे उ़रफ़न बाप कहा गया है, वोह मुशरिक था और आपको उसके लिए दुआ़ए मग़फ़िरतसे रोक दिया गया था जबकि यहां ह़क़ीक़ी वालिदैन के लिए दुआ़ए मग़फ़िरत की जा रही है। येह दुआ़ अल्लाह

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ ۬ اِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيْهِ الْاَبْصَارُ ۙ ﴿۴۲﴾

42. और अल्लाह को उन कामों से हरगिज़ बेख़बर न समझना जो ज़ालिम अंजाम दे रहे हैं, बस वोह तो उन (ज़ालिमों) को फ़क़त उस दिन के लिए मोहलत दे रहा है जिसमें (ख़ौफ़ के मारे) आँखें फटी रेह जाएंगी।

مُهْطِعِيْنَ مُقْنِعِيْ رُءُوْسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ اِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ ۚ وَاَفْـِٕدَتُهُمْ هَوَآءٌ ؕ ﴿۴۳﴾

43. वोह लोग (मैदाने हश्र की तरफ़) अपने सर ऊपर उठाए दौड़ते जा रहे होंगे इस हाल में कि उनकी पलकें भी न झपकती होंगी और उनके दिल सकत से खाली हो रहे होंगे।

وَاَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَاْتِيْهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رَبَّنَآ اَخِّرْنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ نُّجِبْ دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعِ الرُّسُلَ ؕ اَوَلَمْ تَكُوْنُوْٓا اَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلُ مَا لَكُمْ مِّنْ زَوَالٍ ۙ ﴿۴۴﴾

44. और आप लोगों को उस दिनसे डराएं जब उन पर अज़ाब आ पहुंचेगा तो वोह लोग जो ज़ुल्म करते रहे होंगे कहेंगे : ऐ हमारे रब ! हमें थोड़ी देर के लिए मोहलत दे दे कि हम तेरी दा'वतको क़ुबूल कर लें और रसूलों की पैरवी कर लें। (उनसे कहा जाएगा) कि क्या तुम ही लोग पहले क़स्में नहीं खाते रहे कि तुम्हें कभी ज़वाल नहीं आएगा।

وَّسَكَنْتُمْ فِيْ مَسٰكِنِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ وَضَرَبْنَا لَكُمُ الْاَمْثَالَ ﴿۴۵﴾

45. और तुम (अपनी बारी पर) उनही लोगोंके (छोड़े हुए) महल्लात में रेहते थे (जिन्होंने अपने अपने दौर में) अपनी जानों पर ज़ुल्म किया था हालांकि तुम पर अयां हो चुका था कि हमने उनके साथ क्या मुआमला किया था और हमने तुम्हारे (फ़हम के) लिए मिसालें भी बयान की थीं।

وَقَدْ مَكَرُوْا مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ اللّٰهِ مَكْرُهُمْ ؕ وَاِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُوْلَ مِنْهُ الْجِبَالُ ﴿۴۶﴾

46. और उन्होंने (दौलतो इक़्तिदार के नशे में बद मस्त हो कर) अपनी तरफ़से बड़ी फरेब कारियां कीं जब कि अल्लाह के पास उनके हर फ़रेब का तोड़ था, अगरचे उनकी मक्काराना तद्बीरें ऐसी थीं कि उनसे पहाड़ भी उखड़ जाएं।

तआ़ला को इस क़दर पसंद आई कि उसे उम्मते मुहम्मदी ﷺ की नमाज़ों में भी बरक़रार रख दिया गया।)

فَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ مُخْلِفَ وَعْدِهٖ رُسُلَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿۴۷﴾

47. सो अल्लाहको हरगिज़ अपने रसूलोंसे वा'दा ख़िलाफी करनेवाला न समझना! बेशक अल्लाह ग़ालिब, बदला लेनेवाला है।

يَوْمَ تُبَدَّلُ الْاَرْضُ غَيْرَ الْاَرْضِ وَالسَّمٰوٰتُ وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿۴۸﴾

48. जिस दिन (येह) ज़मीन दूसरी ज़मीन से बदल दी जाएगी और जुम्ला आस्मान भी बदल दिए जाएंगे और सब लोग अल्लाहके रू बरू हाज़िर होंगे जो एक है सब पर ग़ालिब है।

وَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ مُّقَرَّنِيْنَ فِي الْاَصْفَادِ ﴿۴۹﴾

49. और उस दिन आप मुजरिमों को ज़न्जीरों में जकड़े हुए देखेंगे।

سَرَابِيْلُهُمْ مِّنْ قَطِرَانٍ وَّتَغْشٰى وُجُوْهَهُمُ النَّارُ ﴿۵۰﴾

50. उनके लिबास गंधक (या ऐसे रोग़न) के होंगे (जो आगको खूब भड़काता है) और उनके चेहरोंको आग ढांप रही होगी।

لِيَجْزِيَ اللّٰهُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿۵۱﴾

51. ताकि अल्लाह हर शख़्स को उन (आ'माल) का बदला दे दे जो उसने कमा रखे हैं। बेशक अल्लाह हिसाब में जल्दी फ़रमानेवाला है।

هٰذَا بَلٰغٌ لِّلنَّاسِ وَلِيُنْذَرُوْا بِهٖ وَلِيَعْلَمُوْٓا اَنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّلِيَذَّكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿۵۲﴾

52. येह (कुर्आन) लोगों के लिए कामिलन पैग़ाम का पहुंचा देना है, ताकि उन्हें उसके ज़रीए डराया जाए और येह कि वोह खूब जान लें कि बस वोही (अल्लाह) मा'बूदे यक्ता है और येह कि दानिशमंद लोग नसीहत हासिल करें।

आयातुहा 99 | 15 सूरतुल हिजरि मक्कीय्यतुन 54 | रुकूआतुहा 6

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है

الٓرٰ ۫ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ وَقُرْاٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿۱﴾

1. अलिफ़ लाम रा (ह़क़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं), येह (बरगुज़ीदह) किताब और रौशन कुर्आन की आयतें हैं।

رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ كَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ﴿٢﴾

2.कुफ़्फ़ार (आख़िरत में मोमिनों पर अल्लाह की रह़मत के मनाज़िर देख कर) बार बार आरज़ू करेंगे कि काश ! वोह मुसलमान होते।

ذَرْهُمْ يَاْكُلُوْا وَ يَتَمَتَّعُوْا وَ يُلْهِهِمُ الْاَمَلُ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٣﴾

3. आप (ग़मगीन न हों) उन्हें छोड़ दीजिऐ वोह खाते (पीते) रहें और ऐश करते रहें और (उनकी) झूटी उम्मीदें उन्हें (आख़िरत से) ग़ाफ़िल रखें फिर वोह अनक़रीब (अपना अंजाम) जान लेंगे।

وَ مَاۤ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا وَ لَهَا كِتَابٌ مَّعْلُوْمٌ ﴿٤﴾

4. और हमने कोई भी बस्ती हलाक नहीं की मगर येह कि उसके लिए एक मा'लूम नविश्तए (क़ानून) था (जिसकी उन्होंने ख़िलाफ़ वर्ज़ी की और अपने अंजाम को जा पहुंचे)।

مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَ مَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ﴿٥﴾

5. कोई भी क़ौम (क़ानूने उरूजो ज़वालकी) अपनी मुक़र्ररह मुद्दत से न आगे बढ़ सक्ती है और न पीछे हट सक्ती है।

وَ قَالُوْا يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْ نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ اِنَّكَ لَمَجْنُوْنٌ ﴿٦﴾

6.और (कुफ़्फ़ार गुस्ताख़ी करते हुए) केहते हैं : ऐ वोह शख़्स जिस पर कुरआन उतारा गया है बेशक तुम दीवाने हो।

لَوْ مَا تَاْتِيْنَا بِالْمَلٰٓئِكَةِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٧﴾

7. तुम हमारे पास फ़रिश्तों को क्यों नहीं ले आते अगर तुम सच्चे हो?

مَا نُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ اِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوْۤا اِذًا مُّنْظَرِيْنَ ﴿٨﴾

8. हम फ़रिश्तों को नहीं उतारा करते मगर (फ़ैसलए) हक़ के साथ (या'नी जब अज़ाब की घड़ी आ पहुंचे तो उसके निफ़ाज़ के लिए उतारते हैं) और उस वक़्त उन्हें मोहलत नहीं दी जाती।

اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَ اِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ﴿٩﴾

9.बेशक येह ज़िक्रेअज़ीम (कुरआन) हमने ही उतारा है और यक़ीनन हम ही इसकी हिफ़ाज़त करेंगे।

وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِيْ شِيَعِ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٠﴾

10. और बेशक हमने आपसे क़ब्ल पहली उम्मतों में भी रसूल भेजे थे।

11. और उनके पास कोई रसूल नहीं आता था मगर येह कि वोह उसके साथ मज़ाक़ किया करते थे।

وَمَا يَأْتِيهِم مِّن رَّسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِۦ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿١١﴾

12. इसी तरह हम उस (तमस्ख़ुर और इस्तेह्ज़ाअ) को मुजरिमों के दिलों में दाख़िल कर देते हैं।

كَذَٰلِكَ نَسْلُكُهُۥ فِى قُلُوبِ ٱلْمُجْرِمِينَ ﴿١٢﴾

13. येह लोग इस (क़ुरआन) पर ईमान नहीं लाएंगे और बेशक पहलों की (येही) रविश गुज़र चुकी है।

لَا يُؤْمِنُونَ بِهِۦ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ ٱلْأَوَّلِينَ ﴿١٣﴾

14. और अगर हम उन पर आस्मान का कोई दरवाज़ा (भी) खोल दें (और उनके लिए येह भी मुमकिन बना दें कि) वोह सारा दिन उसमें (से) ऊपर चढ़ते रहें।

وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِم بَابًا مِّنَ ٱلسَّمَآءِ فَظَلُّوا فِيهِ يَعْرُجُونَ ﴿١٤﴾

15. (तब भी) येह लोग यक़ीनन (येह) कहेंगे कि हमारी आँखें (किसी ह़ीलाओ फ़रेब के ज़रीए) बांध दी गई हैं बल्कि हम लोगों पर जादू कर दिया गया है।

لَقَالُوٓا إِنَّمَا سُكِّرَتْ أَبْصَٰرُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُورُونَ ﴿١٥﴾

ع ١٥

16. और बेशक हमने आस्मानमें (कहकशाओं की सूरत में सितारों की हिफ़ाज़त के लिए) क़िल्ए बनाए और हमने उस (ख़लाई काइनात) को देखनेवालों के लिए आरास्ता कर दिया।

وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِى ٱلسَّمَآءِ بُرُوجًا وَزَيَّنَّٰهَا لِلنَّٰظِرِينَ ﴿١٦﴾

17. और हमने उस (आस्मानी काइनात के निज़ाम) को हर मर्दूद शैतान (या'नी हर सरकश क़ुव्वत के शर्र अंगेज़ अ़मल) से मह्फ़ूज कर दिया।

وَحَفِظْنَٰهَا مِن كُلِّ شَيْطَٰنٍ رَّجِيمٍ ﴿١٧﴾

18. मगर जो कोई भी चोरी छुपे सुनने के लिए आ घुसा तो उसके पीछे एक (जलता) चमकता शिहाब हो जाता है।

إِلَّا مَنِ ٱسْتَرَقَ ٱلسَّمْعَ فَأَتْبَعَهُۥ شِهَابٌ مُّبِينٌ ﴿١٨﴾

19. और ज़मीन को हमने (गोलाई के बावजूद) फैला दिया और हमने उसमें (मुख़्तलिफ़ माद्दों को बाहम मिला कर) मज़बूत पहाड़ बना दिए और हमने उसमें हर

وَٱلْأَرْضَ مَدَدْنَٰهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَٰسِىَ وَأَنۢبَتْنَا فِيهَا مِن كُلِّ

شَیۡءٍ مَّوۡزُوۡنٍ ﴿۱۹﴾

जिन्सको (मतलूबा) तवाज़ुन के मुताबिक नश्वोनुमा दी।

وَ جَعَلۡنَا لَکُمۡ فِیۡهَا مَعَایِشَ وَ مَنۡ لَّسۡتُمۡ لَهٗ بِرٰزِقِیۡنَ ﴿۲۰﴾

20. और हमने उसमें तुम्हारे लिए अस्बाबे मईशत पैदा किए और उन (इन्सानों, जानवरों और परिन्दों) के लिए भी जिन्हें तुम रिज़्क़ मुहय्या नहीं करते।

وَ اِنۡ مِّنۡ شَیۡءٍ اِلَّا عِنۡدَنَا خَزَآئِنُهٗ ۫ وَ مَا نُنَزِّلُهٗۤ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعۡلُوۡمٍ ﴿۲۱﴾

21. और (काइनात) की कोई भी चीज़ ऐसी नहीं है मगर येह कि हमारे पास उसके ख़ज़ाने हैं और हम उसे सिर्फ़ मुअय्यन मिक़्दार के मुताबिक़ ही उतारते रेहते हैं।

وَ اَرۡسَلۡنَا الرِّیٰحَ لَوَاقِحَ فَاَنۡزَلۡنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَسۡقَیۡنٰکُمُوۡهُ ۚ وَ مَاۤ اَنۡتُمۡ لَهٗ بِخٰزِنِیۡنَ ﴿۲۲﴾

22. और हम हवाओं को बादलों का बोझ उठाए हुए भेजते हैं फिर हम आस्मान की जानिबसे पानी उतारते हैं फिर हम उसे तुम ही को पिलाते हैं और तुम उसके ख़ज़ाने रखनेवाले नहीं हो।

وَ اِنَّا لَنَحۡنُ نُحۡیٖ وَ نُمِیۡتُ وَ نَحۡنُ الۡوٰرِثُوۡنَ ﴿۲۳﴾

23. और बेशक हम ही जिलाते हैं और मारते हैं और हम ही (सबके) वारिस (व मालिक) हैं।

وَ لَقَدۡ عَلِمۡنَا الۡمُسۡتَقۡدِمِیۡنَ مِنۡکُمۡ وَ لَقَدۡ عَلِمۡنَا الۡمُسۡتَاۡخِرِیۡنَ ﴿۲۴﴾

24. और बेशक हम उनको भी जानते हैं जो तुमसे पहले गुज़र चुके और बेशक हम बाद में आनेवालों को भी जानते हैं।

وَ اِنَّ رَبَّکَ هُوَ یَحۡشُرُهُمۡ ؕ اِنَّهٗ حَکِیۡمٌ عَلِیۡمٌ ﴿۲۵﴾

25. और बेशक आपका रब ही तो उन्हें (रोज़े क़ियामत) जमा' फ़रमाएगा। बेशक वोह बड़ी हिक्मतवाला खूब जाननेवाला है।

وَ لَقَدۡ خَلَقۡنَا الۡاِنۡسَانَ مِنۡ صَلۡصَالٍ مِّنۡ حَمَاٍ مَّسۡنُوۡنٍ ﴿۲۶﴾

26.और बेशक हमने इन्सानकी (कीमियाई) तख़्लीक़ ऐसे खुश्क बजनेवाले गारे से की जो (पहले) सिन रसीदह (और धूप और दीगर तबीइय्याती और कीमियाई असरात के बाइस तग़य्युर पज़ीर हो कर) सियाह बूदार हो चुका था।

وَ الۡجَآنَّ خَلَقۡنٰهُ مِنۡ قَبۡلُ مِنۡ نَّارِ

27. और उससे पेहले हमने जिन्नों को शदीद जला

السَّمُوْمِ ﴿٢٧﴾

देनेवाली आगसे पैदा किया जिसमें धुवां नहीं था।

وَ اِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ﴿٢٨﴾

28. और (वोह वाक़िआ याद कीजिए) जब आपके रब ने फ़रिश्तोंसे फ़रमाया कि मैं सिन रसीदह (और) सियाह बूदार, बजनेवाले गारे से एक बशरी पैकर पैदा करने वाला हूं।

فَاِذَا سَوَّيْتُهٗ وَنَفَخْتُ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِيْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ ﴿٢٩﴾

29. फिर जब मैं उसकी (ज़ाहिरी) तश्कीलको कामिल तौर पर दुरुस्त हालत में ला चुकूं और उस पैकरे (बशरी के बातिन) में अपनी (नूरानी) रूह फूंक दूं तो तुम उसके लिए सज्दे में गिर पड़ना।

فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ ﴿٣٠﴾

30. पस (उस पैकरे बशरी के अंदर नूरे रब्बानी का चिराग़ जलते ही) सारे के सारे फ़रिश्तोंने सज्दह किया।

اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ مَعَ السّٰجِدِيْنَ ﴿٣١﴾

31. सिवाए इब्लीसके, उसने सज्दह करने वालों के साथ होने से इन्कार कर दिया।

قَالَ يٰٓاِبْلِيْسُ مَا لَكَ اَلَّا تَكُوْنَ مَعَ السّٰجِدِيْنَ ﴿٣٢﴾

32. (अल्लाहने) इर्शाद फ़रमाया : ऐ इब्लीस ! तुझे क्या हो गया है कि तू सज्दह करनेवालों के साथ न हुआ।

قَالَ لَمْ اَكُنْ لِّاَسْجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهٗ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ﴿٣٣﴾

33. (इब्लीस ने) कहा : मैं हरगिज़ ऐसा नहीं (हो सक्ता) कि बशर को सज्दह करूं जिसे तूने सिन रसीदह (और) सियाह बूदार, बजनेवाले गारे से तख़्लीक़ किया है।

قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَاِنَّكَ رَجِيْمٌ ﴿٣٤﴾

34. (अल्लाहने) फ़रमाया : तू यहां से निकल जा पस बेशक तू मरदूद (रान्दए दरगाह) है।

وَّ اِنَّ عَلَيْكَ اللَّعْنَةَ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ ﴿٣٥﴾

35. और बेशक तुझ पर रोज़े जज़ा तक ला'नत (पड़ती) रहेगी।

قَالَ رَبِّ فَاَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ

36. उसने कहा : ऐ परवरदिगार ! पस तू मुझे उस दिन

يُبْعَثُوْنَ ﴿٣٦﴾

तक मोहलत दे दे (जिस दिन) लोग (दोबारह) उठाऐ जाएंगे।

قَالَ فَاِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ﴿٣٧﴾

37. अल्लाहने फ़रमाया : सो बेशक तू मोहलत याफ़्ता लोगों में से है।

اِلٰى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ ﴿٣٨﴾

38. वक़्ते मुक़र्ररह के दिन (क़ियामत) तक।

قَالَ رَبِّ بِمَآ اَغْوَيْتَنِيْ لَاُزَيِّنَنَّ لَهُمْ فِي الْاَرْضِ وَلَاُغْوِيَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٣٩﴾

39. इब्लीसने कहा : ऐ परवरदिगार ! इस सबब से जो तूने मुझे गुमराह किया मैं (भी) यक़ीनन उनके लिए ज़मीन में (गुनाहों और ना फ़रमानियों को) खूब आरास्ता-व-खुशनुमा बना दूंगा और उन सबको ज़रूर गुमराह कर के रहूंगा।

اِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٤٠﴾

40. सिवाए तेरे उन बरगुज़ीदह बंदों के जो (मेरे और नफ़्स के फ़रेबोंसे) खुलासी पा चुके हैं।

قَالَ هٰذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيْمٌ ﴿٤١﴾

41. अल्लाहने इर्शाद फ़रमाया : येह (इख़्लास ही) रास्ता है जो सीधा मेरे दर पर आता है।

اِنَّ عِبَادِيْ لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ اِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْغٰوِيْنَ ﴿٤٢﴾

42. बेशक मेरे (इख़्लास याफ़्ता) बंदों पर तेरा कोई ज़ोर नहीं चलेगा सिवाए उन भटके हुओं के जिन्होंने तेरी राह इख़्तियार की।

وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٤٣﴾

43. और बेशक उन सब के लिए वा'दे की जगह जहन्नम है ।

لَهَا سَبْعَةُ اَبْوَابٍ لِكُلِّ بَابٍ مِّنْهُمْ جُزْءٌ مَّقْسُوْمٌ ﴿٤٤﴾

44. जिसके सात दरवाज़े हैं, हर दरवाज़े के लिए उनमें से अलग हिस्सा मख़्सूस किया गया है।

اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿٤٥﴾

45. बेशक मुत्तक़ी लोग बाग़ों और चश्मों में रहेंगे।

اُدْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ اٰمِنِيْنَ ﴿٤٦﴾

46.(उनसे कहा जाएगा) इनमें सलामती के साथ बे ख़ौफ़ हो कर दाख़िल हो जाओ।

وَنَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ

47. और हम वोह सारी कुदूरत बाहर खींच लेंगे जो

إِخْوَانًا عَلَىٰ سُرُرٍ مُّتَقَٰبِلِينَ ﴿٤٧﴾

(दुनिया में) उनके सीनों में (मुग़ाल्ते के बाइस एक दूसरे से)थी, वोह (जन्नत में) भाई भाई बन कर आमने सामने बैठे होंगे।

لَا يَمَسُّهُمْ فِيهَا نَصَبٌ وَمَا هُم مِّنْهَا بِمُخْرَجِينَ ﴿٤٨﴾

48. उन्हें वहां कोई तक्लीफ़ न पहुंचेगी और न ही वोह वहां से निकाले जाएंगे।

نَبِّئْ عِبَادِيٓ أَنِّيٓ أَنَا ٱلْغَفُورُ ٱلرَّحِيمُ ﴿٤٩﴾

49. (ऐ हबीब!) आप मेरे बंदों को बता दीजिए कि मैं ही बेशक बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान हूं।

وَأَنَّ عَذَابِي هُوَ ٱلْعَذَابُ ٱلْأَلِيمُ ﴿٥٠﴾

50. और (इस बातसे भी आगाह कर दीजिए) के मेरा ही अज़ाब बड़ा दर्दनाक अज़ाब है।

وَنَبِّئْهُمْ عَن ضَيْفِ إِبْرَٰهِيمَ ﴿٥١﴾

وقف لازم

51. और उन्हें इब्राहीम (عليه السلام) के मेहमानों की ख़बर (भी) सुनाइए।

إِذْ دَخَلُوا۟ عَلَيْهِ فَقَالُوا۟ سَلَٰمًا قَالَ إِنَّا مِنكُمْ وَجِلُونَ ﴿٥٢﴾

52. जब वोह इब्राहीम (عليه السلام) के पास आए तो उन्होंने (आपको) सलाम कहा। इब्राहीम (عليه السلام) ने कहा कि हम आपसे कुछ डर मेहसूस कर रहे हैं।

قَالُوا۟ لَا تَوْجَلْ إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَٰمٍ عَلِيمٍ ﴿٥٣﴾

53. (मेहमान फ़रिश्तों ने) कहा : आप ख़ाइफ़ न हों हम आपको एक दानिश्मंद लड़के (की पैदाइश की) ख़ुशख़बरी सुनाते हैं।

قَالَ أَبَشَّرْتُمُونِي عَلَىٰٓ أَن مَّسَّنِيَ ٱلْكِبَرُ فَبِمَ تُبَشِّرُونَ ﴿٥٤﴾

54. इब्राहीम (عليه السلام) ने कहा : तुम मुझे इस हाल में ख़ुशख़बरी सुना रहे हो जबकि मुझे बुढ़ापा लाहक़ हो चुका है सो अब तुम किस चीज़ की ख़ुशख़बरी सुनाते हो।

قَالُوا۟ بَشَّرْنَٰكَ بِٱلْحَقِّ فَلَا تَكُن مِّنَ ٱلْقَٰنِطِينَ ﴿٥٥﴾

55. उन्होंने कहा : हम आपको सच्ची बशारत दे रहे हैं सो आप ना उम्मीद न हों।

قَالَ وَمَن يَقْنَطُ مِن رَّحْمَةِ رَبِّهِۦٓ إِلَّا ٱلضَّآلُّونَ ﴿٥٦﴾

56. इब्राहीम (عليه السلام) ने कहा : अपने रबकी रहमत से गुमराहों के सिवा और कौन मायूस हो सक्ता है।

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٥٧﴾

57. इब्राहीम (عليه السلام) ने दरयाफ़्त किया : ऐ (अल्लाहके) भेजे हुऐ फ़रिश्तो ! (इस बिशारतके अ़लावा) और तुम्हारा क्या काम है ? (जिसके लिए आए हो)।

قَالُوْٓا اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ﴿٥٨﴾

58. उन्होंने कहा : हम एक मुजरिम क़ौमकी तरफ़ भेजे गए हैं।

اِلَّآ اٰلَ لُوْطٍ ؕ اِنَّا لَمُنَجُّوْهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٥٩﴾

59. सिवाए लूत (عليه السلام) के घराने के, बेशक हम उन सबको ज़रूर बचा लेंगे।

اِلَّا امْرَاَتَهٗ قَدَّرْنَآ ۙ اِنَّهَا لَمِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٦٠﴾

60. बजुज़ उनकी बीवी के, हम (येह) तय कर चुके हैं कि वोह ज़रूर (अ़ज़ाब के लिए) पीछे रेह जानेवालों में से है।

فَلَمَّا جَآءَ اٰلَ لُوْطِ ِۨالْمُرْسَلُوْنَ ﴿٦١﴾

61. फिर जब लूत (عليه السلام) के ख़ानदान के पास वोह फ़िरस्तादह (फ़रिश्ते) आए।

قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ﴿٦٢﴾

62. लूत (عليه السلام)ने कहा : बेशक तुम अजनबी लोग (मा' लूम होते) हो।

قَالُوْا بَلْ جِئْنٰكَ بِمَا كَانُوْا فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ ﴿٦٣﴾

63. उन्होंने कहा : (ऐसा नहीं) बल्कि हम आपके पास वोह (अ़ज़ाब) ले कर आए हैं जिसमें येह लोग शक करते रहे हैं।

وَاَتَيْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿٦٤﴾

64. और हम आप के पास हक़ (का फ़ैसला) ले कर आए हैं और हम यक़ीनन सच्चे हैं।

فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَاتَّبِعْ اَدْبَارَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ وَّامْضُوْا حَيْثُ تُؤْمَرُوْنَ ﴿٦٥﴾

65. पस आप अपने अहले ख़ानाको रातके किसी हिस्से में ले कर निकल जाइए और आप ख़ुद उनके पीछे पीछे चलिए और आपमें से कोई मुड़ कर (भी) पीछे न देखे और आपको जहां जानेका हुक्म दिया गया है (वहां) चले जाइए।

وَقَضَيْنَآ اِلَيْهِ ذٰلِكَ الْاَمْرَ اَنَّ دَابِرَ هٰٓؤُلَآءِ مَقْطُوْعٌ مُّصْبِحِيْنَ ﴿٦٦﴾

66. और हमने लूत (عليه السلام) को उस फैसले से बज़रीए वही आगाह कर दिया कि बेशक उनके सुब्ह करते ही उन लोगों की जड़ कट जाएगी।

وَجَآءَ اَهْلُ الْمَدِيْنَةِ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿٦٧﴾

67. और अह्ले शहर (अपनी बद मस्ती में) खुशियां मनाते हुए (लूत عليه السلام के पास) आ पहुंचे।

قَالَ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ ضَيْفِيْ فَلَا تَفْضَحُوْنِ ﴿٦٨﴾

68. लूत (عليه السلام) ने कहा : बेशक येह लोग मेरे मेहमान हैं पस तुम मुझे (इनके बारे में) शर्मसार न करो।

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ ﴿٦٩﴾

69. और अल्लाह (के ग़ज़ब) से डरो और मुझे रुस्वा न करो।

قَالُوْٓا اَوَلَمْ نَنْهَكَ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٠﴾

70. वोह (बदमस्त लोग) बोले ! (ऐ लूत !) क्या हमने तुम्हें दुनिया भर के लोगों (की हिमायत) से मना' नहीं किया था।

قَالَ هٰٓؤُلَآءِ بَنٰتِيْٓ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ﴿٧١﴾

71. लूत (عليه السلام)ने कहा : येह मेरी क़ौमकी बेटियां हैं अगर तुम कुछ करना चाहते हो तो (बजाए बद किर्दारी के इनसे निकाह् कर लो)।

لَعَمْرُكَ اِنَّهُمْ لَفِيْ سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿٧٢﴾

72. (ऐ ह्बीबे मुकर्रम !) आप की उ़म्रे मुबारक की क़सम, बेशक येह लोग (भी क़ौमे लूतकी तरह्) अपनी मस्ती में सरगर्दां फिर रहे हैं।

فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِيْنَ ﴿٧٣﴾

73. पस उन्हें तुलूए आफ़्ताब के साथ ही सख़्त आतशीं कड़कने आ लिया।

فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ﴿٧٤﴾

74. सो हमने उनकी बस्तीको ज़ेरो ज़बर कर दिया और हमने उन पर पथ्थरकी तरह सख्त मिट्टी के कंकर बरसाए।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُتَوَسِّمِيْنَ ﴿٧٥﴾

75. बेशक इस (वाक़िए) में अह्ले फ़िरासत के लिए निशानियां हैं।

وَاِنَّهَا لَبِسَبِيْلٍ مُّقِيْمٍ ﴿٧٦﴾

76.और बेशक वोह बस्ती एक आबाद रास्ते पर वाक़े' है।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٧﴾

77. बेशक इस (वाक़िअ़ए क़ौमे लूत) में अह्ले ईमानके लिए निशानी (इ़ब्रत) है।

وَاِنْ كَانَ اَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ لَظٰلِمِيْنَ ﴿٧٨﴾

78. और बेशक बाशिन्दगाने ऐका (या'नी घनी झाड़ियों के रेहनेवाले) भी बड़े ज़ालिम थे।

فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ ۘ وَإِنَّهُمَا لَبِإِمَامٍ مُّبِيْنٍ ﴿٧٩﴾

79. पस हमने उनसे (भी) इन्तिक़ाम लिया, और येह दोनों (बस्तियां) खुले रास्ते पर (मौजूद) हैं।

وَلَقَدْ كَذَّبَ اَصْحٰبُ الْحِجْرِ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٨٠﴾

80. और बेशक वादिए हिज्रके बाशिन्दोंने भी रसूलों को झुटलाया।

وَاٰتَيْنٰهُمْ اٰيٰتِنَا فَكَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ﴿٨١﴾

81. और हमने उन्हें (भी) अपनी निशानियां दीं मगर वोह उनसे रू गर्दानी करते रहे।

وَكَانُوْا يَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا اٰمِنِيْنَ ﴿٨٢﴾

82. और वोह लोग बे ख़ौफ़ो ख़तर पहाड़ों में घर तराश्ते थे।

فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُصْبِحِيْنَ ﴿٨٣﴾

83. तो उन्हें (भी) सुब्ह करते ही ख़ौफ़नाक कड़कने आ पकड़ा।

فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٨٤﴾

84. सो जो (माल) वोह कमाया करते थे वोह उनसे (अल्लाहके अज़ाब) को दफ़ा' न कर सका।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ ۗ وَاِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ فَاصْفَحِ الصَّفْحَ الْجَمِيْلَ ﴿٨٥﴾

85. और हमने आस्मानों और ज़मीनको और जो कुछ उन दोनों के दरमियान है अबस पैदा नहीं किया, और यक़ीनन क़ियामत की घड़ी आनेवाली है सो (ऐ अख़्लाके मुजस्सम !) आप बड़े हुस्नो ख़ूबी के साथ दरगुज़र करते रहिए।

اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ﴿٨٦﴾

86. बेशक आपका रबही सबको पैदा फ़रमानेवाला खूब जाननेवाला है।

وَلَقَدْ اٰتَيْنٰكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِيْ وَالْقُرْاٰنَ الْعَظِيْمَ ﴿٨٧﴾

87. और बेशक हमने आपको बार बार दोहराई जानेवाली सात आयतें (या'नी सूरए फ़ातिहा) और बड़ी अज़्मतवाला क़ुरआन अता फ़रमाया है।

لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖ

88. आप उन चीज़ों की तरफ़ निगाह उठा कर भी न देखिए जिनसे हमने काफ़िरों के गिरोहों को (चंद रोज़ह)

أَزْوَاجًا مِّنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٨٨﴾

ऐश के लिए बेहरामंद किया है, और उन (की गुमराही) पर रंजीदह ख़ातिर भी न हों और अहले ईमान (की दिलजूई) के लिए अपने (शफ़्क़तो इल्तिफ़ात के) बाज़ू झुकाए रखिए।

وَقُلْ إِنِّي أَنَا النَّذِيرُ الْمُبِينُ ﴿٨٩﴾

89. और फ़रमा दीजिए कि बेशक (अब) मैं ही (अ़ज़ाबे इलाहीका) वाज़ेह़-व-सरीह़ डर सुनानेवाला हूं।

كَمَا أَنزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِمِينَ ﴿٩٠﴾

90. जैसा (अ़ज़ाब) कि हमने तक़्सीम करनेवालों (या'नी यहूदो नसारा) पर उतारा था।

الَّذِينَ جَعَلُوا الْقُرْآنَ عِضِينَ ﴿٩١﴾

91. जिन्होंने क़ुरआन को टुकड़े टुकड़े (कर के तक़्सीम) कर डाला (या'नी मुवाफ़िक़ आयतों को मान लिया और ग़ैर मुवाफ़िक़ को न माना)।

فَوَرَبِّكَ لَنَسْأَلَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٩٢﴾

92. सो आपके रबकी क़सम ! हम उन सबसे ज़रूर पुरसिश करेंगे।

عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩٣﴾

93. उन आ'माल से मु-त-अ़ल्लिक़ जो वोह करते रहे थे।

فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ ﴿٩٤﴾

94. पस आप वोह (बातें) ए'लानिया केह डालें जिनका आपको हुक्म दिया गया है और आप मुशरिकों से मुंह फेर लीजिए।

إِنَّا كَفَيْنَاكَ الْمُسْتَهْزِئِينَ ﴿٩٥﴾

95. बेशक मज़ाक़ करनेवालों (को अंजाम तक पहुंचाने) के लिए हम आपको काफ़ी हैं।

الَّذِينَ يَجْعَلُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٩٦﴾

96. जो अल्लाहके साथ दूसरा मा'बूद बनाते हैं सो वोह अ़नक़रीब (अपना अंजाम) जान लेंगे।

وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّكَ يَضِيقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُولُونَ ﴿٩٧﴾

97.और बेशक हम जानते हैं कि आपका सीनए (अक़्दस) उन बातों से तंग होता है जो वोह केहते हैं।

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُن مِّنَ السَّاجِدِينَ ﴿٩٨﴾

98. सो आप ह़म्द के साथ अपने रबकी तस्बीह़ किया करें और सुजूद करनेवालों में (शामिल) रहा करें।

وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَاْتِيَكَ الْيَقِيْنُ ﴿٩٩﴾

99. और अपने रबकी इ़बादत करते रहें यहां तक कि आपको (आपकी शान के लाइक़) मुक़ामे यक़ीन मिल जाए (या'नी इन्शिराहे़ कामिल नसीब हो जाए या लम्ह़ए विसाले ह़क़्)।

आयातुहा 128	16 सूरतुन नह़्लि मक्किय्यतुन 70	रुकूआतुहा 16

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

اَتٰۤى اَمْرُ اللّٰهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْهُ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿١﴾

1. अल्लाह का वा'दा (क़रीब) आ पहुंचा सो तुम उसके चाहनेमें उ़ज्लत न करो। वोह पाक है और वोह उन चीज़ों से बरतर है जिन्हें कुफ़्फ़ार (उसका) शरीक ठेहराते हैं।

يُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ بِالرُّوْحِ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖۤ اَنْ اَنْذِرُوْۤا اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنَا فَاتَّقُوْنِ ﴿٢﴾

2. वोही फ़रिश्तोंको वह़ी के साथ (जो जुम्ला ता'लीमाते दीन की रूह़ और जान है) अपने हुक्मसे अपने बंदों में से जिस पर चाहता है नाज़िल फ़रमाता है कि (लोगोंको) डर सुनाओ कि मेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं सो मेरी परहेज़गारी इख़्तियार करो।

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٣﴾

3. उसीने आस्मानों और ज़मीनको दुरुस्त तदबीर के साथ पैदा फ़रमाया, वोह उन चीज़ोंसे बरतर है जिन्हें कुफ़्फ़ार (उसका) शरीक गरदानते हैं।

خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ﴿٤﴾

4. उसीने इन्सान को एक तौलीदी क़तरे से पैदा फ़रमाया, फिर भी वोह (अल्लाहके हुज़ूर मुतीअ़ होने की बजाए) खुला झगड़ालू बन गया।

وَالْاَنْعَامَ خَلَقَهَا ۚ لَكُمْ فِيْهَا دِفْءٌ وَّمَنَافِعُ وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٥﴾

5. और उसीने तुम्हारे लिए चौपाए पैदा फ़रमाए, उनमें तुम्हारे लिए गर्म लिबास है और (दूसरे) फ़वाइद हैं और उनमें से बा'ज़ को तुम खाते (भी) हो।

وَلَكُمْ فِيْهَا جَمَالٌ حِيْنَ تُرِيْحُوْنَ

6. और उनमें तुम्हारे लिए रौनक़ (और दिलकशी भी) है

وَحِيْنَ تَسْرَحُوْنَ ۝٦

जब तुम शाम को चरागाह से (वापस) लाते हो और जब तुम सुब्हको (चराने के लिए) ले जाते हो।

وَتَحْمِلُ اَثْقَالَكُمْ اِلٰى بَلَدٍ لَّمْ تَكُوْنُوْا بٰلِغِيْهِ اِلَّا بِشِقِّ الْاَنْفُسِ ۭ اِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝٧

7. और येह (जानवर) तुमहारे बोझ (भी) उन शहरों तक उठा ले जाते हैं जहां तुम बिग़ैर जान्काह मशक़्क़त के नहीं पहुंच सक्ते थे, बेशक तुम्हारा रब निहायत शफ़्क़तवाला निहायत महरबान है।

وَّالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيْرَ لِتَرْكَبُوْهَا وَزِيْنَةً ۭ وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٨

8. और (उसीने) घोड़ों और ख़च्चरों और गधों को (पैदा किया) ताकि तुम उन पर सवारी कर सको और वोह (तुम्हारे लिए) बाइसे ज़ीनत भी हों, और वोह (मज़ीद ऐसी बा ज़ीनत सवारियों को भी) पैदा फ़रमाएगा जिन्हें तुम (आज) नहीं जानते।

وَعَلَى اللّٰهِ قَصْدُ السَّبِيْلِ وَمِنْهَا جَاۗىِٕرٌ ۭ وَلَوْ شَاۗءَ لَهَدٰىكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝٩

9. और दरमियानी राह अल्लाह (के दरवाज़े) पर जा पहुंचती है और उसमें से कई टेढ़ी राहें भी (निकलती) हैं, और अगर वोह चाहता तो तुम सब ही को हिदायत फ़रमा देता।

هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً لَّكُمْ مِّنْهُ شَرَابٌ وَّمِنْهُ شَجَرٌ فِيْهِ تُسِيْمُوْنَ ۝١٠

10. वोही है जिसने तुम्हारे लिए आस्मान की जानिब से पानी उतारा, उसमें से (कुछ) पीनेका है और उसी में से (कुछ) शजरकारी का है (जिससे नबातात, सब्ज़े और चरागाहें उगती हैं) जिनमें तुम (अपने मवेशी) चराते हो।

يُنْۢبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُوْنَ وَالنَّخِيْلَ وَالْاَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝١١

11. उसी पानी से तुम्हारे लिए खेत और ज़ैतून और खजूर और अँगूर और हर क़िस्मके फल (और मेवे) उगाता है, बेशक इसमें ग़ौरो फ़िक्र करनेवाले लोगों के लिए निशानी है।

وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۙ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۭ وَالنُّجُوْمُ

12. और उसीने तुम्हारे लिए रात और दिनको और सूरज और चांद को मुसख़्ख़र कर दिया, और तमाम सितारे भी

مُسَخَّرٰتٌۢ بِاَمْرِهٖ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّعْقِلُوْنَ ۙ﴿۱۲﴾

उसीकी तद्बीर (से निज़ाम) के पाबंद हैं, बेशक उसमें अ़क़्ल रखनेवाले लोगों के लिए निशानियां हैं।

وَ مَا ذَرَاَ لَكُمْ فِی الْاَرْضِ مُخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً لِّقَوْمٍ یَّذَّكَّرُوْنَ ﴿۱۳﴾

13. और (हैवानात,नबातात और मा'दनियात वग़ैरह में से बक़िय्या) जो कुछ भी उसने तुम्हारे लिए ज़मीन में पैदा फ़रमाया है जिनके रंग (या'नी जिन्सें, नौऐं, किस्में, ख़वास और मनाफ़े') अलग अलग हैं (सब तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र हैं), बेशक उसमें नसीहत क़ुबूल करनेवाले लोगों के लिए निशानी है।

وَ هُوَ الَّذِیْ سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَاْكُلُوْا مِنْهُ لَحْمًا طَرِیًّا وَّ تَسْتَخْرِجُوْا مِنْهُ حِلْیَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَ تَرَی الْفُلْكَ مَوَاخِرَ فِیْهِ وَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۴﴾

14. और वोही है जिसने (फ़िज़ाओ बर्र के अ़लावा) बह्र (या'नी दरियाओं और समन्दरों) को भी मुसख़्ख़र फ़रमा दिया ताकि तुम उसमें से ताज़ा (व पसन्दीदा) गोश्त खाओ और तुम उसमें से मोती (वग़ैरह) निकालो जिन्हें तुम ज़ेबाइश के लिए पहनते हो, और (ऐ इन्सान !) तू कश्तियों (और जहाज़ों) को देखता है जो (दरियाओं और समन्दरोंका) पानी चीरते हुऐ उसमें चले जाते हैं, और (येह सब कुछ इसलिए किया) ताकि तुम (दूर दूर तक) उसका फ़ज़्ल (या'नी रिज़्क़) तलाश करो और येह कि तुम शुक्रगुज़ार बन जाओ।

وَ اَلْقٰی فِی الْاَرْضِ رَوَاسِیَ اَنْ تَمِیْدَ بِكُمْ وَ اَنْهٰرًا وَّ سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۙ﴿۱۵﴾

15. और उसीने ज़मीन में (मुख़्तलिफ़ माद्दों को बाहम मिला कर) भारी पहाड़ बना दिए ताकि ऐसा न हो कि कहीं वोह (अपने मदारमें हरकत करते हुऐ) तुम्हें ले कर कांपने लगे और नेहरें और (क़ुदरती) रास्ते (भी) बनाए ताकि तुम (मंज़िलों तक पहुंचने के लिए) राह पा सको।

وَ عَلٰمٰتٍ ؕ وَ بِالنَّجْمِ هُمْ یَهْتَدُوْنَ ﴿۱۶﴾

16. और (दिनको राह तलाश करने के लिए) अ़लामतें बनाईं, और (रातको) लोग सितारों के ज़रीए (भी) राह पाते हैं।

اَفَمَنْ یَّخْلُقُ كَمَنْ لَّا یَخْلُقُ ؕ

17. क्या वोह ख़ालिक़ जो (इतना कुछ) पैदा फ़रमाए

اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۱۷﴾

उसके मिस्ल हो सकता है जो (कुछ भी) पैदा न कर सके, क्या तुम लोग नसीहत क़ुबूल नहीं करते ?

وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَغَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۱۸﴾

18. और अगर तुम अल्लाहकी ने'मतों को शुमार करना चाहो तो उन्हें पूरा शुमार न कर सकोगे, बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

وَاللّٰهُ یَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَ مَا تُعْلِنُوْنَ ﴿۱۹﴾

19. और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो और जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो।

وَ الَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا یَخْلُقُوْنَ شَیْـًٔا وَّ هُمْ یُخْلَقُوْنَ ﴿۲۰﴾ؕ

20. और येह (मुशरिक) लोग जिन (बुतों) को अल्लाह के सिवा पूजते हैं वोह कुछ भी पैदा नहीं कर सकते बल्कि वोह ख़ुद पैदा किए गए हैं।

اَمْوَاتٌ غَیْرُ اَحْیَآءٍ ۚ وَ مَا یَشْعُرُوْنَ ۙ اَیَّانَ یُبْعَثُوْنَ ﴿۲۱﴾ع

21. (वोह) मुर्दे हैं जिन्दा नहीं, और (उन्हें इतना भी) शऊर नहीं कि (लोग) कब उठाए जाएंगे।

اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَالَّذِیْنَ لَا یُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ قُلُوْبُهُمْ مُّنْكِرَةٌ وَّ هُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۲۲﴾

22. तुम्हारा मा'बूद , मा'बूदे यक्ता है, पस जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उनके दिल मुन्किर हैं और वोह सरकशो मु-त-कब्बिर हैं।

لَا جَرَمَ اَنَّ اللّٰهَ یَعْلَمُ مَا یُسِرُّوْنَ وَمَا یُعْلِنُوْنَ ؕ اِنَّهٗ لَا یُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِیْنَ ﴿۲۳﴾

23. येह बात हक़ो साबित है कि अल्लाह जानता है जो कुछ वोह छुपाते हैं और जो कुछ वोह ज़ाहिर करते हैं, बेशक वोह सरकशों मु-त-कब्बिरों को पसंद नहीं करता।

وَ اِذَا قِیْلَ لَهُمْ مَّاذَاۤ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ ۙ قَالُوْۤا اَسَاطِیْرُ الْاَوَّلِیْنَ ﴿۲۴﴾ۙ

24. और जब उनसे पूछा जाता है कि तुम्हारे रबने क्या नाज़िल फ़रमाया है? (तो) वोह केहते हैं अगली क़ौमों के झूटे क़िस्से (उतारे हैं)।

لِیَحْمِلُوْۤا اَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً یَّوْمَ الْقِیٰمَةِ ۙ وَ مِنْ اَوْزَارِ الَّذِیْنَ

25. (येह सब कुछ इस लिए केह रहे हैं) ताकि रोज़े क़ियामत वोह अपने (आ'माले बद के) पूरे पूरे बोझ

يُضِلُّوْنَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۭ اَلَا سَاۗءَ مَا يَزِرُوْنَ ﴿٢٥﴾

उठाएं और कुछ बोझ उन लोगों के भी (उठाएं) जिन्हें (अपनी) जहालत के ज़रीए गुमराह किए जा रहे हैं, जान लो ! बहुत बुरा बोझ है जो येह उठा रहे हैं।

قَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتَى اللّٰهُ بُنْيَانَهُمْ مِّنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَاَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٦﴾

26. बेशक उन लोगोंने (भी) फ़रेब किया जो इनसे पहले थे तो अल्लाहने उन (के मक्रो फ़रेब) की इमारतको बुनियादों से उखाड़ दिया तो उनके ऊपरसे उन पर छत गिर पड़ी और उन पर उस तरफ़से अज़ाब आ पहुंचा जिसका उन्हें कुछ ख़याल भी न था।

ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُخْزِيْهِمْ وَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَاۗءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تُشَاۗقُّوْنَ فِيْهِمْ ۭ قَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اِنَّ الْخِزْيَ الْيَوْمَ وَالسُّوْۗءَ عَلَي الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٧﴾

27. फिर वोह उन्हें क़ियामत के दिन रुस्वा करेगा और इर्शाद फ़रमाएगा मेरे वोह शरीक कहां हैं जिनके हक़ में तुम (मोमिनों से) झगड़ा करते थे, वोह लोग जिन्हें इल्म दिया गया है कहेंगे : बेशक आज काफ़िरों पर (हर क़िस्म की) रुस्वाई और बरबादी है।

الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰۗىِٕكَةُ ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۠ فَاَلْقَوُا السَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ سُوْۗءٍ ۭ بَلٰٓى اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٨﴾

28. जिन की रूहें फ़रिश्ते इस हालमें क़ब्ज़ करते हैं कि वोह अपनी जानों पर (बदस्तूर) ज़ुल्म किए जा रहे हों, सो वोह (रोज़े क़ियामत) इताअ़तो फ़रमांबर्दारी का इज़्हार करेंगे (और कहेंगे) हम (दुनिया में) कोई बुराई नहीं किया करते थे, क्यों नहीं बेशक अल्लाह खूब जानता है जो कुछ तुम किया करते थे।

فَادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ فَلَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٢٩﴾

29. पस तुम दोज़ख़के दरवाजों से दाख़िल हो जाओ, तुम उसमें हमेशा रेहनेवाले हो, सो तकब्बुर करनेवालों का क्या ही बुरा ठिकाना है।

وَقِيْلَ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا مَاذَآ

30. और परहेज़गार लोगों से कहा जाए कि तुम्हारे रबने

أَنْزَلَ رَبُّكُمْ ۚ قَالُوا خَيْرًا ۗ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ۚ وَلَدَارُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ ۚ وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِينَ ﴿٣٠﴾

क्या नाज़िल फ़रमाया है? वोह केहते हैं : (दुनिया-व-आख़िरत की) भलाई (उतारी है), उन लोगोंके लिए जो नेकी करते रहे इस दुनियामें (भी) भलाई है, और आख़िरत का घर तो ज़रूर ही बेहतर है, और परहेज़गारों का घर क्या ही ख़ूब है।

جَنَّاتُ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ ۚ كَذَٰلِكَ يَجْزِي اللَّهُ الْمُتَّقِينَ ﴿٣١﴾

31. सदा बहार बाग़ात हैं जिनमें वोह दाख़िल होंगे जिनके नीचे से नेहरें बेह रही होंगी, उनमें उनके लिए जो कुछ वोह चाहेंगे (मुयस्सर) होगा, इस त़रह़ अल्लाह परहेज़गारों को सिला अ़ता फ़रमाता है।

الَّذِينَ تَتَوَفَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ طَيِّبِينَ ۙ يَقُولُونَ سَلَامٌ عَلَيْكُمُ ۙ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٣٢﴾

32. जिनकी रूहें फ़रिश्ते इस ह़ाल में क़ब्ज़ करते हैं कि वोह (नेकी-व-ताअ़तके बाइस) पाकीज़ा और ख़ुशो ख़ुर्रम हों, (उनसे फ़रिश्ते क़ब्ज़े रूह़ के वक़्त ही केह देते हैं) तुम पर सलामती हो, तुम जन्नतमें दाख़िल हो जाओ उन (आ'माले सालेह़ा) के बाइ़स जो तुम किया करते थे।

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ أَمْرُ رَبِّكَ ۚ كَذَٰلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَلَٰكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٣٣﴾

33. येह और किस चीज़का इन्तिज़ार कर रहे हैं सिवाए इसके कि इनके पास फ़रिश्ते आ जाएं या आपके रबका हुक्मे (अ़ज़ाब) आ पहुंचे, येही कुछ उन लोगों ने (भी) किया था जो उनसे पेहले थे, और अल्लाहने उन पर जुल्म नहीं किया था लेकिन वोह ख़ुद ही अपनी जानों पर जुल्म किया करते थे।

فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا عَمِلُوا وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٣٤﴾

34. सो जो आ'माल उन्होंने किए थे उनही की सज़ाएं उनको पहुंचीं और उसी (अ़ज़ाब)ने उन्हें आ घेरा जिसका वोह मज़ाक उड़ाया करते थे।

وَقَالَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ

35. और मुशरिक लोग केहते हैं : अगर अल्लाह चाहता तो

اللّٰهُ مَا عَبَدْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَیْءٍ نَّحْنُ وَلَاۤ اٰبَآؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَیْءٍ ؕ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ فَهَلْ عَلَى الرُّسُلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِیْنُ ﴿۳۵﴾

हम उसके सिवा किसी भी चीज़की परस्तिश न करते, न ही हम और न हमारे बापदादा, और न हम उसके (हुक्म के) बिग़ैर किसी चीज़को ह़राम क़रार देते, येही कुछ उन लोगोंने (भी) किया था जो इनसे पहले थे, तो क्या रसूलों के ज़िम्मे (अल्लाहके पैग़ाम और अह़काम) वाज़ेह तौर पर पहुंचा देने के अ़लावा भी कुछ है?

وَ لَقَدْ بَعَثْنَا فِیْ كُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَ اجْتَنِبُوا الطَّاغُوْتَ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ هَدَى اللّٰهُ وَ مِنْهُمْ مَّنْ حَقَّتْ عَلَیْهِ الضَّلٰلَةُ ؕ فَسِیْرُوْا فِی الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَیْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِیْنَ ﴿۳۶﴾

36. और बेशक हमने हर उम्मत में एक रसूल भेजा कि (लोगो) तुम अल्लाह की इ़बादत करो और तागू़त (या'नी शैतान और बुतों की इताअ़तो परस्तिश) से इज्तिनाब करो, सो उनमें बा'ज़ वोह हुए जिन्हें अल्लाहने हिदायत फ़रमा दी और उनमें बा'ज वोह हुऐ जिन पर गुमराही (ठीक) साबित हुई, सो तुम लोग ज़मीन में सैरो सियाह़त करो और देखो कि झुटलानेवालों का क्या अंजाम हुवा।

اِنْ تَحْرِصْ عَلٰى هُدٰىهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا یَهْدِیْ مَنْ یُّضِلُّ وَ مَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِیْنَ ﴿۳۷﴾

37. अगर आप उनके हिदायत पर आ जाने की शदीद तलब रखते हैं तो (आप अपनी तबीअ़ते मुतह्हरा पर इस क़दर बोझ न लाएं) बेशक अल्लाह जिसे गुमराह ठेहरा देता है उसे हिदायत नहीं फ़रमाता और उन के लिए कोई मददगार नहीं होता।

وَ اَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَیْمَانِهِمْ ۙ لَا یَبْعَثُ اللّٰهُ مَنْ یَّمُوْتُ ؕ بَلٰى وَعْدًا عَلَیْهِ حَقًّا وَّ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا یَعْلَمُوْنَ ﴿۳۸﴾

38. और येह लोग बड़ी शद्दो मद से अल्लाहकी क़स्में खाते हैं कि जो मर जाए अल्लाह उसे (दोबारा) नहीं उठाएगा, क्यों नहीं उसके ज़िम्मए करम पर सच्चा वा'दा है लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।

لِیُبَیِّنَ لَهُمُ الَّذِیْ یَخْتَلِفُوْنَ فِیْهِ وَ لِیَعْلَمَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْۤا اَنَّهُمْ

39. (मुर्दों को उठाया जाना इस लिए है) ताकि उनके लिए वोह (ह़क़) बात वाज़ेह कर दे जिसमें वोह लोग इख़्तिलाफ़ करते हैं और येह कि काफ़िर लोग जान लें कि

كَانُوْا كٰذِبِيْنَ ﴿٣٩﴾

हक़ीक़त में वोही झूटे हैं।

اِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ اِذَآ اَرَدْنٰهُ اَنْ نَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٤٠﴾

40. हमारा फ़रमान तो किसी चीज़के लिए सिर्फ़ इसी क़दर होता है कि जब हम उस (को वुजूदमें लाने) का इरादा करते हैं तो हम उसे फ़रमा देते हैं "हो जा" पस वोह हो जाती है।

وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا فِي اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا ظُلِمُوْا لَنُبَوِّئَنَّهُمْ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۭ وَلَاَجْرُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤١﴾

41. और जिन्होंने अल्लाहकी राह में हिजरतकी इसके बाद कि उन पर (तरह़ तरह़ के) ज़ुल्म तोड़े गए तो हम ज़रूर उन्हें दुनिया (ही) में बेहतर ठिकाना देंगे, और आख़िरतका अज्र तो यक़ीनन बहुत बड़ा है, काश ! वोह (इस राज़को) जानते होते।

الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٤٢﴾

42. जिन लोगोंने सब्र किया और अपने रब पर तवक्कल किए रखते हैं।

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ فَسْــَٔلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٤٣﴾

43. और हमने आपसे पहले भी मर्दों ही को रसूल बना कर भेजा जिनकी तरफ़ हम वही़ भेजते थे सो तुम अहले ज़िक्रसे पूछ लिया करो अगर तुम्हें ख़ुद (कुछ) मा'लूम न हो।

بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ ۭ وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ اِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٤٤﴾

44. (उन्हें भी) वाज़ेह दलाइल और किताबों के साथ (भेजा था) और (ऐ नबीए मुकर्रम !) हमने आप की तरफ़ जिक्रे अ़ज़ीम (क़ुरआन) नाज़िल फ़रमाया है ताकि आप लोगों के लिए वोह (पैग़ाम और अह़काम) खूब वाज़ेह कर दें जो उनकी तरफ़ उतारे गए हैं और ताकि वोह ग़ौरो फ़िक्र करें।

اَفَاَمِنَ الَّذِيْنَ مَكَرُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ يَّخْسِفَ اللّٰهُ بِهِمُ الْاَرْضَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٤٥﴾

45. क्या वोह बुरे मक्रो फ़रेब करनेवाले लोग इस बातसे बेख़ौफ़ हो गए हैं कि अल्लाह उन्हें ज़मीनमें धंसा दे या (किसी) ऐसी जगहसे उन पर अ़ज़ाब भेज दे जिसका उन्हें कोई ख़याल भी न हो।

وقف لازم

النصف

أَوْ يَأْخُذَهُمْ فِي تَقَلُّبِهِمْ فَمَا هُم بِمُعْجِزِينَ ﴿٤٦﴾

46. या उनकी नक़्लो हरकत (सफ़र और शुग़ुले तिजारत) के दौरान ही उन्हें पकड़ ले सो वोह अल्लाहको आजिज़ नहीं कर सक्ते।

أَوْ يَأْخُذَهُمْ عَلَىٰ تَخَوُّفٍ فَإِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿٤٧﴾

47. या उन्हें उनके ख़ौफ़ ज़दा होने पर पकड़ ले, तो बेशक तुम्हारा रब बड़ा शफ़ीक़ निहायत महरबान है।

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا خَلَقَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ يَتَفَيَّأُ ظِلَالُهُ عَنِ الْيَمِينِ وَالشَّمَائِلِ سُجَّدًا لِّلَّهِ وَهُمْ دَاخِرُونَ ﴿٤٨﴾

48. क्या उन्होंने उन (सायादार) चीज़ोंकी तरफ़ नहीं देखा जो अल्लाहने पैदा फ़रमाई हैं (कि) उनके साऐ दाएं और बाएं अतराफ़से अल्लाहके लिए सज्दा करते हुऐ फिरते रेहते हैं और वोह (दर हक़ीक़त) ताअ़तो आजिज़ी का इज़्हार करते हैं।

وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مِن دَابَّةٍ وَالْمَلَائِكَةُ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٤٩﴾

49. और जो कुछ आस्मानों में और जो कुछ ज़मीन में है जुम्ला जानदार और फ़रिश्ते, अल्लाह (ही) को सज्दा करते हैं और वोह (ज़रा भी) ग़ुरूरो तकब्बुर नहीं करते।

يَخَافُونَ رَبَّهُم مِّن فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ﴿٥٠﴾

ع ٦ ١٢ السجدة ٣

50. वोह अपने रबसे जो उनके ऊपर है डरते रेहते हैं और जो हुक्म उन्हें दिया जाता है (उसे) बजा लाते हैं।

وَقَالَ اللَّهُ لَا تَتَّخِذُوا إِلَٰهَيْنِ اثْنَيْنِ ۖ إِنَّمَا هُوَ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۖ فَإِيَّايَ فَارْهَبُونِ ﴿٥١﴾

51. और अल्लाहने फ़रमाया है तुम दो मा'बूद मत बनाओ, बेशक वोही (अल्लाह) मा'बूदे यक्ता है, और तुम मुझ ही से डरते रहो।

وَلَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَهُ الدِّينُ وَاصِبًا ۚ أَفَغَيْرَ اللَّهِ تَتَّقُونَ ﴿٥٢﴾

52. और जो कुछ आस्मानों और ज़मीनमें है (सब) उसीका है और (सबके लिए) उसीकी फरमांबरदारी वाजिब है। तो क्या तुम ग़ैर अज़ ख़ुदा (किसी) से डरते हो।

وَمَا بِكُم مِّن نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللَّهِ ۖ ثُمَّ إِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَإِلَيْهِ تَجْأَرُونَ ﴿٥٣﴾

53. और तुम्हें जो ने'मत भी हासिल है सो वोह अल्लाह ही की जानिब से है, फिर जब तुम्हें तक्लीफ़ पहुंचती है तो तुम उसीके आगे गिर्या-व-ज़ारी करते हो।

ثُمَّ إِذَا كَشَفَ الضُّرَّ عَنْكُمْ إِذَا فَرِيقٌ مِّنْكُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ ﴿٥٤﴾

54. फिर जब अल्लाह उस तक्लीफ़ को तुमसे दूर फ़रमा देता है तो तुममें से एक गिरोह उस वक्त अपने रबसे शिर्क करने लगता है।

لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنٰهُمْ ۚ فَتَمَتَّعُوا ۗ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٥٥﴾

55. (येह कुफ़्रो शिर्क इस लिए) ताकि वोह उन (ने'मतों) की नाशुक्री करें जो हमने उन्हें अता कर रखी हैं, पस (ऐ मुशरिको ! चंद रोज़ा) फ़ाइदा उठा लो फिर तुम अ़नक़रीब (अपने अंजामको) जान लोगे।

وَيَجْعَلُونَ لِمَا لَا يَعْلَمُونَ نَصِيبًا مِّمَّا رَزَقْنٰهُمْ ۚ تَاللّٰهِ لَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَفْتَرُونَ ﴿٥٦﴾

56.और येह उन (बुतों)के लिए जिन (की हक़ीक़त) को वोह खुद भी नहीं जानते उस रिज़्क़में से हिस्सा मुक़र्रर करते हैं जो हमने उन्हें अ़ता कर रखा है । अल्लाह की क़सम ! तुमसे उस बोहतानकी निस्बत ज़रूर पूछगछ की जाएगी जो तुम बांधा करते हो।

وَيَجْعَلُونَ لِلّٰهِ الْبَنٰتِ سُبْحٰنَهٗ ۙ وَلَهُمْ مَّا يَشْتَهُونَ ﴿٥٧﴾

57. और येह (कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन) अल्लाह के लिए बेटियां मुक़र्रर करते हैं वोह (इससे) पाक है और अपने लिए वोह कुछ (या'नी बेटे) जिनकी वोह ख़्वाहिश करते हैं।

وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُمْ بِالْأُنْثٰى ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيمٌ ﴿٥٨﴾

58. और जब उनमें से किसी को लड़की (की पैदाइश)की ख़बर सुनाई जाती है तो उसका चेहरा सियाह हो जाता है और वोह गुस्से से भर जाता है।

يَتَوَارٰى مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوْٓءِ مَا بُشِّرَ بِهٖ ۚ أَيُمْسِكُهٗ عَلٰى هُوْنٍ أَمْ يَدُسُّهٗ فِي التُّرَابِ ۗ أَلَا سَآءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿٥٩﴾

59. वोह लोगोंसे छुपा फिरता है (बज़ो'मे ख़ीश) उस बुरी ख़बरकी वजहसे जो उसे सुनाई गई है, (अब येह सोचने लगता है कि) आया उसे ज़िल्लतो रुस्वाई के साथ (ज़िन्दा) रखे या उसे मिट्टीमें दबा दे (या'नी ज़िन्दा दर गोर कर दे), ख़बरदार ! कितना बुरा फ़ैसला है जो वोह करते हैं।

لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْاٰخِرَةِ مَثَلُ السَّوْءِ ۚ وَلِلّٰهِ الْمَثَلُ الْأَعْلٰى ۚ

60. उन लोगोंकी जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते (येह) निहायत बुरी सिफ़त है, और बुलंद तर सिफ़त

وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٦٠﴾

अल्लाह ही की है और वोह ग़ालिब हिक्मतवाला है।

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ مَّا تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٦١﴾

61. और अगर अल्लाह लोगोंको उनके जुल्मके इवज़ (फ़ौरन) पकड़ लिया करता तो इस (ज़मीन) पर किसी जानदार को न छोड़ता लेकिन वोह उन्हें मुक़र्ररा मीआ़द तक मोहलत देता है, फिर जब उनका मुक़र्रर वक़्त आ पहुंचता है तो वोह न एक घड़ी पीछे हो सक्ते हैं और न आगे बढ़ सक्ते हैं।

وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ مَا يَكْرَهُوْنَ وَتَصِفُ اَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ اَنَّ لَهُمُ الْحُسْنٰى ؕ لَا جَرَمَ اَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَاَنَّهُمْ مُّفْرَطُوْنَ ﴿٦٢﴾

62. और वोह अल्लाह के लिए वोह कुछ मुक़र्रर करते हैं जो (अपने लिए) नापसंद करते हैं और उनकी जबानें झूट बोलती हैं कि उनके लिए भलाई है, (हरगिज़ नहीं) हक़ीक़त येह है कि उनके लिए दोज़ख़ है और येह (दोज़ख़ में) सबसे पहले भेजे जाएंगे (और उसमें हमेशा के लिए छोड़ दिए जाएंगे)।

تَاللّٰهِ لَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَهُوَ وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٦٣﴾

63. अल्लाहकी क़सम ! यक़ीनन हमने आपसे पहले (भी बहुतसी) उम्मतों की तरफ़ रसूल भेजे तो शैताानने उन (उम्मतों)के लिए उनके (बुरे) आ'माल आरास्ता-व-ख़ुशनुमा कर दिखाए, सो वोही (शैतान) आज उनका दोस्त है और उनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।

وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِى اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٦٤﴾

64. और हमने आपकी तरफ़ किताब नहीं उतारी मगर इस लिए कि आप उन पर वोह (उमूर) वाज़ेह़ कर दें जिनमें वोह इख़्तिलाफ़ करते हैं और (इसलिए कि येह किताब) हिदायत और रह़मत है उस क़ौमके लिए जो ईमान ले आई है।

وَاللّٰهُ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ فِىْ

65. और अल्लाहने आस्मान की जानिबसे पानी उतारा और उसके ज़रीए ज़मीन को उसके मुर्दह (या'नी बंजर) होने के बाद ज़िन्दह (या'नी सर सब्ज़ो शादाब) कर दिया।

ع ٨ ٥ ١٤

ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٦٥﴾

बेशक इसमें (नसीहत) सुनने वालों के लिए निशानी है।

وَ اِنَّ لَكُمْ فِي الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۚ نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِيْ بُطُوْنِهٖ مِنْۢ بَيْنِ فَرْثٍ وَّدَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَآئِغًا لِّلشّٰرِبِيْنَ ﴿٦٦﴾

66. और बेशक तुम्हारे लिए मवेशियोंमें (भी) मुक़ामे ग़ौर है, हम उनके जिस्मों के अंदरकी उस चीज़से जो आंतों के(बा'ज़) मश्मूलात और खून के इख़्तेलातसे (वुजूदमें आती है) ख़ालिस दूध निकाल कर तुम्हें पिलाते हैं (जो) पीनेवालों के लिए फ़रहत बख़्श होता है।

وَمِنْ ثَمَرٰتِ النَّخِيْلِ وَالْاَعْنَابِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْهُ سَكَرًا وَّ رِزْقًا حَسَنًا ۚ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾

67. और खजूर और अँगूरके फलोंसे तुम शकर और (दीगर) उम्दा गिज़ाएं बनाते हो, बेशक उसमें अह्ले अक़्लके लिए निशानी है।

وَ اَوْحٰى رَبُّكَ اِلَى النَّحْلِ اَنِ اتَّخِذِيْ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا وَّ مِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعْرِشُوْنَ ﴿٦٨﴾

68. और आपके रबने शहदकी मख्खी के दिलमें (ख़याल) डाल दिया के तू बा'ज़ पहाड़ों में अपने घर बना और बा'ज़ दरख़्तोंमें और बा'ज़ छप्परों में (भी) जिन्हें लोग (छतकी तरह ऊंचा बनाते हैं)।

ثُمَّ كُلِيْ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ فَاسْلُكِيْ سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا ۚ يَخْرُجُ مِنْۢ بُطُوْنِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ فِيْهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ ۚ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٦٩﴾

69. पस तू हर क़िस्मके फलोंसे रस चूसा कर फिर अपने रबके (सुझाए हुए) रास्तों पर (जो उन फलों और फूलों तक जाते हैं जिनसे तूने रस चूसना है, दूसरी मखियों के लिए भी) आसानी फ़राहम करते हुऐ चला कर,उनके शिकमोंसे एक पीनेकी चीज़ निकलती है (वोह शहद है) जिसके रंग जुदागाना होते हैं, उसमें लोगों के लिए शिफ़ा है, बेशक उसमें ग़ौरो फ़िक्र करनेवालों के लिए निशानी है।

وَ اللّٰهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفّٰىكُمْ ۙ وَ مِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰۤى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْ لَا يَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْـًٔا ۚ

70. और अल्लाहने तुम्हें पैदा फ़रमाया है फिर वोह तुम्हें वफ़ात देता (या'नी तुम्हारी रूह क़ब्ज़ करता) है। और तुममें से किसीको नाक़िस तरीन उम्र (बुढ़ापा) की तरफ़ फेर दिया जाता है ताकि(ज़िन्दगीमें बहुत कुछ) जान लेने

إِنَّ اللّٰهَ عَلِيۡمٌ قَدِيۡرٌ ﴿۷۰﴾

के बाद अब कुछभी न जाने (या'नी इन्सान मरनेसे पहले अपनी बे बसी-व-कम माएगी का मन्ज़र भी देख ले), बेशक अल्लाह खूब जाननेवाला बड़ी कुदरतवाला है।

وَاللّٰهُ فَضَّلَ بَعۡضَكُمۡ عَلٰى بَعۡضٍ فِى الرِّزۡقِ‌ ۚ فَمَا الَّذِيۡنَ فُضِّلُوۡا بِرَآدِّىۡ رِزۡقِهِمۡ عَلٰى مَا مَلَـكَتۡ اَيۡمَانُهُمۡ فَهُمۡ فِيۡهِ سَوَآءٌ‌ ؕ اَفَبِنِعۡمَةِ اللّٰهِ يَجۡحَدُوۡنَ ﴿۷۱﴾

71. और अल्लाहने तुममें से बा'ज़ को बा'ज़ पर रिज़्क़ (के दरजात) में फ़ज़ीलत दी है (ताकि वोह तुम्हें हुक्मे इन्फ़ाक़ के ज़रीए आज़माए), मगर जिन लोगों को फ़ज़ीलत दी गई है वोह अपनी दौलत (के कुछ हिस्से को भी) अपने ज़ेरे दस्त लोगों पर नहीं लौटाते (या'नी ख़र्च नहीं करते) हालां कि वोह सब उसमें (बुन्यादी ज़रूरियात की हद तक) बराबर हैं, तो क्या वोह अल्लाहकी ने'मतोंका इन्कार करते हैं।

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَـكُمۡ مِّنۡ اَنۡفُسِكُمۡ اَزۡوَاجًا وَّجَعَلَ لَـكُمۡ مِّنۡ اَزۡوَاجِكُمۡ بَنِيۡنَ وَحَفَدَةً وَّرَزَقَكُمۡ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ‌ ؕ اَفَبِالۡبَاطِلِ يُؤۡمِنُوۡنَ وَبِنِعۡمَتِ اللّٰهِ هُمۡ يَكۡفُرُوۡنَ ۙ‏ ﴿۷۲﴾

72. और अल्लाहने तुम ही में से तुम्हारे लिए जोड़े पैदा फ़रमाए और तुम्हारे जोड़ों (या'नी बीवियों) से तुम्हारे लिए बेटे और पोते/नवासे पैदा फ़रमाए और तुम्हें पाकीज़ा रिज़्क़ अता फ़रमाया, तो क्या फिर भी वोह (हक़को छोड़ कर) बातिल पर ईमान रखते हैं और अल्लाहकी ने'मत से वोह नाशुक्री करते हैं।

وَيَعۡبُدُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمۡلِكُ لَهُمۡ رِزۡقًا مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ شَيۡـئًا وَّلَا يَسۡتَطِيۡعُوۡنَ‌ ۚ‏ ﴿۷۳﴾

73. और अल्लाह के सिवा उन (बुतों) की परस्तिश करते हैं जो आस्मानों और ज़मीनसे उनके लिए किसी क़दर रिज़्क़ देने के भी मालिक नहीं हैं और न ही कुछ कुदरत रखते हैं।

فَلَا تَضۡرِبُوۡا لِلّٰهِ الۡاَمۡثَالَ‌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَعۡلَمُ وَاَنۡتُمۡ لَا تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۷۴﴾

74. पस तुम अल्लाह के लिए मिस्ल न ठेहराया करो, बेशक अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते।

ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا عَبۡدًا مَّمۡلُوۡكًا لَّا يَقۡدِرُ عَلٰى شَىۡءٍ وَّمَنۡ رَّزَقۡنٰهُ مِنَّا

75. अल्लाहने एक मिसाल बयान फ़रमाई है (कि) एक गुलाम है (जो किसीकी) मिल्किय्यत में है खुद) किसी

رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا وَّجَهْرًا ؕ هَلْ يَسْتَوٗنَ ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۷۵﴾

चीज़ पर क़ुदरत नहीं रखता और (दूसरा) वोह शख़्स है जिसमें हमने अपनी तरफ़से उ़म्दा रोज़ी अ़ता फ़रमाई है सो वोह उसमें से पोशीदा और ज़ाहिर ख़र्च करता है, क्या वोह बराबर हो सक्ते हैं, सब ता'रीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, बल्कि उनमें से अक्सर (बुन्यादी ह़क़ीक़त को भी) नहीं जानते।

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلَيْنِ اَحَدُهُمَاۤ اَبْكَمُ لَا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّهُوَ كَلٌّ عَلٰى مَوْلٰىهُ ۙ اَيْنَمَا يُوَجِّهْهُّ لَا يَاْتِ بِخَيْرٍ ؕ هَلْ يَسْتَوِيْ هُوَ ۙ وَمَنْ يَّاْمُرُ بِالْعَدْلِ ۙ وَهُوَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۷۶﴾

ع ١٠ ١٦

76. और अल्लाहने दो (ऐसे) आदमियों की मिसाल बयान फ़रमाई है जिनमें एक गूंगा है वोह किसी चीज़ पर क़ुदरत नहीं रखता और वोह अपने मालिक पर बोझ है वोह (मालिक) उसे जिधर भी भेजता है कोई भलाई ले कर नहीं आता, क्या वोह (गूंगा) और (दूसरा) वोह शख़्स जो (इस मन्सबका ह़ामिल है कि) लोगों को अ़द्लो इन्साफ़ का हुक्म देता है और वोह ख़ुद भी सीधी राह पर गामज़न है (दोनों) बराबर हो सक्ते हैं।

وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَاۤ اَمْرُ السَّاعَةِ اِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ اَوْ هُوَ اَقْرَبُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۷۷﴾

77. और आस्मानों और ज़मीन का (सब) ग़ैब अल्लाह ही के लिए है और क़ियामत के बपा होनेका वाक़िआ़ इस क़दर तेज़ीसे होगा जैसे आँखका झपकना या उससे भी तेज़तर, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर बड़ा क़ादिर है।

وَاللّٰهُ اَخْرَجَكُمْ مِّنْۢ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا ۙ وَّجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۙ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۷۸﴾

78. और अल्लाहने तुम्हें तुम्हारी माओं के पेटसे (इस ह़ालतमें) बाहर निकाला कि तुम कुछ न जानते थे और उसने तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल बनाए ताकि तुम शुक्र बजा लाओ।

اَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرٰتٍ فِيْ جَوِّ السَّمَآءِ ؕ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا

79. क्या उन्होंने परिन्दों को नहीं देखा जो आस्मानकी हवामें (क़ानूने ह़रकतो परवाज़के) पाबंद (हो कर उड़ते

اللّٰهُ ؕ اِنَّ فِیۡ ذٰلِکَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوۡمٍ یُّؤۡمِنُوۡنَ ﴿۷۹﴾

रहते) हैं, उन्हें अल्लाहके (क़ानूनके) सिवा कोई चीज़ थामे हुए नहीं है। बेशक उस (परवाज़ के उसूल) में ईमानवालों के लिए निशानियां हैं।

وَ اللّٰہُ جَعَلَ لَکُمۡ مِّنۡۢ بُیُوۡتِکُمۡ سَکَنًا وَّ جَعَلَ لَکُمۡ مِّنۡ جُلُوۡدِ الۡاَنۡعَامِ بُیُوۡتًا تَسۡتَخِفُّوۡنَہَا یَوۡمَ ظَعۡنِکُمۡ وَ یَوۡمَ اِقَامَتِکُمۡ ۙ وَ مِنۡ اَصۡوَافِہَا وَ اَوۡبَارِہَا وَ اَشۡعَارِہَاۤ اَثَاثًا وَّ مَتَاعًا اِلٰی حِیۡنٍ ﴿۸۰﴾

80. और अल्लाहने तुम्हारे लिए तुम्हारे घरोंको (मुस्तक़िल) सुकूनत की जगह बनाया और तुम्हारे लिए चौपायों की खालोंसे (आ़रिज़ी) घर (या'नी ख़ैमे) बनाए जिन्हें तुम अपने सफ़र के वक़्त और (दौराने सफ़र मंजिलों पर) अपने ठहरने के वक्त हलका फुलका पाते हो और (उसी अल्लाहने तुम्हारे लिए) भेड़ों और दुंबों की ऊन और ऊंटोकी पशम और बकरियों के बालों से घरेलू इस्ते'माल और (मईशतो तिजारत में) फ़ाइदा उठाने के अस्बाब बनाए (जो) मुक़र्ररा मुद्दत तक (हैं)।

وَ اللّٰہُ جَعَلَ لَکُمۡ مِّمَّا خَلَقَ ظِلٰلًا وَّ جَعَلَ لَکُمۡ مِّنَ الۡجِبَالِ اَکۡنَانًا وَّ جَعَلَ لَکُمۡ سَرَابِیۡلَ تَقِیۡکُمُ الۡحَرَّ وَ سَرَابِیۡلَ تَقِیۡکُمۡ بَاۡسَکُمۡ ؕ کَذٰلِکَ یُتِمُّ نِعۡمَتَہٗ عَلَیۡکُمۡ لَعَلَّکُمۡ تُسۡلِمُوۡنَ ﴿۸۱﴾

81. और अल्लाह ही ने तुम्हारे लिए अपनी पैदा कर्दह कई चीज़ों के साए बनाए और उसने तुम्हारे लिए पहाड़ों में पनाहगाहें बनाईं और उसने तुम्हारे लिए (कुछ) ऐसे लिबास जो तुम्हें गरमीसे बचाते हैं और (कुछ) ऐसे लिबास जो तुम्हें शदीद जंगमें (दुश्मन के वार से) बचाते हैं, इस तरह अल्लाह तुम पर अपनी ने'मते (कफ़ालतो हिफ़ाज़त) पूरी फ़रमाता है ताकि तुम (उसके हुजूर) सरेनियाज़ ख़म कर दो।

فَاِنۡ تَوَلَّوۡا فَاِنَّمَا عَلَیۡکَ الۡبَلٰغُ الۡمُبِیۡنُ ﴿۸۲﴾

82. सो अगर (फिर भी) वोह रू गर्दानी करें तो (ऐ नबिय्ये मुअ़ज़्ज़म !) आपके ज़िम्मे तो सिर्फ़ (मेरे पैग़ाम और अह़काम को) साफ़ साफ़ पहुंचा देना है।

یَعۡرِفُوۡنَ نِعۡمَتَ اللّٰہِ ثُمَّ یُنۡکِرُوۡنَہَا وَ اَکۡثَرُہُمُ الۡکٰفِرُوۡنَ ﴿۸۳﴾ ع

83. येह लोग अल्लाहकी ने'मत को पहचानते हैं फिर उसका इन्कार करते हैं और उनमें से अक्सर काफ़िर हैं।

وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ﴿٨٤﴾

84. और जिस दिन हम हर उम्मतसे (उसके रसूलको उसके आ'माल पर) गवाह बना कर उठाएंगे फिर काफ़िर लोगोंको (कोई उ़ज़्र पेश करने की) इजाज़त नहीं दी जाएगी और न (उस वक़्त) उनसे तौबा-व-रुजूअ़ का मुतलिबा किया जाएगा।

وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ﴿٨٥﴾

85. और जब ज़ालिम लोग अ़ज़ाब देख लेंगे तो न ही उनसे (उस अ़ज़ाबकी) तख़्फ़ीफ़ की जाएगी और न ही उन्हें मोहलत दी जाएगी।

وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ أَشْرَكُوا شُرَكَاءَهُمْ قَالُوا رَبَّنَا هَٰؤُلَاءِ شُرَكَاؤُنَا الَّذِينَ كُنَّا نَدْعُو مِنْ دُونِكَ ۖ فَأَلْقَوْا إِلَيْهِمُ الْقَوْلَ إِنَّكُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿٨٦﴾

86. और जब मुशरिक लोग अपने (खुद साख़्ता) शरीकों को देखेंगे : तो कहेंगे ऐ हमारे रब! येही हमारे शरीक थे जिनकी हम तुझे छोड़ कर परस्तिश करते थे, पस वोह (शुरकाअ) उन्हें (जवाबन) पैग़ाम भेजेंगे कि बेशक तुम झूटे हो।

وَأَلْقَوْا إِلَى اللَّهِ يَوْمَئِذٍ السَّلَمَ ۖ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٨٧﴾

87. और येह (मुशरिकीन) उस दिन अल्लाहके हुज़ूर आ़जिज़ी-व-फ़रमां बरदारी ज़ाहिर करेंगे और उनसे वोह सारा बोहतान जाता रहेगा जो येह बांधा करते थे।

الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ زِدْنَاهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يُفْسِدُونَ ﴿٨٨﴾

88. जिन लोगोंने कुफ़्र किया और (दूसरोंको) अल्लाहकी राह से रोकते रहे हम उनकेअ़ज़ाब पर अ़ज़ाबका इज़ाफ़ा करेंगे इस वजह से कि वोह फ़साद अंगेज़ी करते थे।

وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِي كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا عَلَيْهِمْ مِنْ أَنْفُسِهِمْ ۖ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيدًا عَلَىٰ هَٰؤُلَاءِ ۚ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ تِبْيَانًا لِكُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً وَبُشْرَىٰ لِلْمُسْلِمِينَ ﴿٨٩﴾

89. और (येह) वोह दिन होगा (जब) हम हर उम्मतमें उनही में से खुद उन पर एक गवाह उठाएंगे और (ऐ हबीबे मुकर्रम !)हम आपको उन सब (उम्मतों और पयग़म्बरों) पर गवाह बना कर लाएंगे, और हमने आप पर वोह अ़ज़ीम किताब नाज़िल फ़रमाई है जो हर चीज़ का बड़ा वाज़ेह बयान है और मुसलमानों के लिए हिदायत और रह़मत और बिशारत है।

إِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ
وَإِيْتَآئِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ
الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ ج
يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٩٠﴾

90. बेशक अल्लाह (हर एक केसाथ) अ़द्ल और एह्सान का हुक्म फ़रमाता है और क़राबतदारों को देते रेहनेका और बेहयाई और बुरे कामों और सरकशी-व-ना फ़रमानी से मना' फ़रमाता है, वोह तुम्हें नसीह़त फ़रमाता है ताकि तुम खूब याद रखो।

وَأَوْفُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ إِذَا عٰهَدْتُّمْ وَلَا
تَنْقُضُوا الْأَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيْدِهَا وَ
قَدْ جَعَلْتُمُ اللّٰهَ عَلَيْكُمْ كَفِيْلًا ط
إِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٩١﴾

91. और तुम अल्लाहका अ़हद पूरा कर दिया करो जब तुम अ़हद करो और क़स्मों को पुख़्ता कर लेने के बाद उन्हें मत तोड़ा करो ह़ालांकि तुम अल्लाहको अपने आप पर ज़ामिन बना चुके हो, बेशक अल्लाह खूब जानता है जो कुछ तुम करते हो।

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّتِيْ نَقَضَتْ غَزْلَهَا
مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ أَنْكَاثًا ط تَتَّخِذُوْنَ
أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ أَنْ تَكُوْنَ
أُمَّةٌ هِيَ أَرْبٰى مِنْ أُمَّةٍ ط إِنَّمَا
يَبْلُوْكُمُ اللّٰهُ بِهٖ ط وَلَيُبَيِّنَنَّ لَكُمْ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ مَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٩٢﴾

92. और उस औ़रतकी तरह़ न हो जाओ जिसने अपना सूत मज़बूत कात लेनेके बाद तोड़ कर टुकड़े टुकड़े कर डाला, तुम अपनी क़स्मोंको अपने दरमियान फ़रेबकारी का ज़रीआ़ बनाते हो ताकि (इस तरह) एक गिरोह दूसरे गिरोहसे ज़ियादह फ़ाइदा उठानेवाला हो जाए, बात येह है कि अल्लाह (भी) तुम्हें उसीके ज़रीए़ आज़माता है, और वोह तुम्हारे लिए क़ियामत के दिन उन बातोंको ज़रूर वाज़ेह़ फ़रमा देगा जिनमें तुम इख़्तिलाफ़ किया करते थे।

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً
وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ
وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ط وَلَتُسْئَلُنَّ
عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾

93. और अगर अल्लाह चाहता तो तुम (सब) को एक ही उम्मत बना देता लेकिन वोह जिसे चाहता है गुमराह ठेहरा देता है और जिसे चाहता है हिदायत फ़रमा देता है, और तुमसे उन कामों की निस्बत ज़रूर पूछा जाएगा जो तुम अंजाम दिया करते थे।

وَلَا تَتَّخِذُوْا أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا
بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌ بَعْدَ ثُبُوْتِهَا

94. और तुम अपनी क़स्मों को आपसमें फ़रेबकारी का ज़रीआ़ न बनाया करो वरना क़दम (इस्लाम पर) जम जाने

وَتَذُوقُوا السُّوٓءَ بِمَا صَدَدتُّمْ عَن سَبِيلِ اللَّهِ ۚ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٩٤﴾

के बाद लड़खड़ा जाएगा और तुम इस वजहसे कि अल्लाहकी राह से रोकते थे बुरे अंजामका मज़ा चखोगे और तुम्हारे लिए ज़बरदस्त अज़ाब है।

وَلَا تَشْتَرُوا بِعَهْدِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۚ إِنَّمَا عِندَ اللَّهِ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٩٥﴾

95. और अल्लाहके अ़दह ह़क़ीर सी क़ीमत (या'नी दुन्यवी मालो दौलत) के इवज़ मत बेच डाला करो, बेशक जो (अज्र) अल्लाहके पास है वोह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम (इस राज़को) जानते हो।

مَا عِندَكُمْ يَنفَدُ ۖ وَمَا عِندَ اللَّهِ بَاقٍ ۗ وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِينَ صَبَرُوا أَجْرَهُم بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩٦﴾

96. जो (मालो ज़र) तुम्हारे पास है फ़ना हो जाएगा और जो अल्लाह के पास है बाक़ी रेहनेवाला है, और हम उन लोगोंको जिन्होंने सब्र किया ज़रूर उनका अज्र अ़ता फ़रमाएंगे उनके अच्छे आ'माल के इवज़ जो वोह अंजाम देते रहे थे।

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّن ذَكَرٍ أَوْ أُنثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهُ حَيَاةً طَيِّبَةً ۖ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُم بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩٧﴾

97. जो कोई नेक अ़मल करे (ख़्वाह) मर्द हो या औ़रत जबकि वोह मोमिन हो तो हम उसे ज़रूर पाकीज़ा ज़िन्दगी के साथ ज़िन्दा रखेंगे और उन्हें ज़रूर उनका अज्र (भी) अ़ता फ़रमाएंगे उन अच्छे आ'माल के इवज़ जो वोह अंजाम देते थे।

فَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ﴿٩٨﴾

98. सो जब आप क़ुरआन पढ़ने लगें तो शैतान मरदूद (की वस्वसा अंदाज़ियों) से अल्लाह की पनाह मांग लिया करें।

إِنَّهُ لَيْسَ لَهُ سُلْطَانٌ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٩٩﴾

99. बेशक उसे उन लोगों पर कुछ (भी) ग़ल्बा ह़ासिल नहीं है जो ईमान लाए और अपने रब पर तवक्कल करते हैं।

إِنَّمَا سُلْطَانُهُ عَلَى الَّذِينَ يَتَوَلَّوْنَهُ وَالَّذِينَ هُم بِهِ مُشْرِكُونَ ﴿١٠٠﴾

ع ١٣ ١١ ١٩

100. बस उसका ग़ल्बा सिर्फ़ उन्हीं लोगों पर है जो उसे दोस्त बनाते हैं और जो अल्लाह के साथ शरीक करनेवाले हैं।

وَإِذَا بَدَّلْنَا آيَةً مَّكَانَ آيَةٍ ۙ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُنَزِّلُ قَالُوا

101. और जब हम किसी आयत की जगह दूसरी आयत बदल देते हैं और अल्लाह (ही) बेहतर जानता है जो (कुछ) वोह नाज़िल फ़रमाता है (तो) कुफ़्फ़ार केहते हैं कि आप

إِنَّمَآ أَنتَ مُفْتَرٍ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٠١﴾

तो बस अपनी तरफ़से घड़नेवाले हैं बल्कि उनमें से अक्सर लोग (आयतोंके उतारने और बदलनेकी हिक्मत) नहीं जानते।

قُلْ نَزَّلَهُ رُوحُ الْقُدُسِ مِن رَّبِّكَ بِالْحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِينَ آمَنُوا وَهُدًى وَبُشْرَىٰ لِلْمُسْلِمِينَ ﴿١٠٢﴾

102. फ़रमा दीजिए : इस (क़ुरआन) को रूहुल क़ुद्स (जिब्राईल عليه السلام)ने आप के रब की तरफ़से सच्चाई के साथ उतारा है ताकि ईमान वालोंको साबित क़दम रखे और (येह) मुसलमानों के लिए हिदायत और बिशारत है।

وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّهُمْ يَقُولُونَ إِنَّمَا يُعَلِّمُهُ بَشَرٌ ۗ لِّسَانُ الَّذِي يُلْحِدُونَ إِلَيْهِ أَعْجَمِيٌّ وَهَٰذَا لِسَانٌ عَرَبِيٌّ مُّبِينٌ ﴿١٠٣﴾

103. और बेशक हम जानते हैं कि वोह (कुफ़्फ़ारो मुशरेकीन) केहते हैं के उन्हें येह (क़ुरआन) महज़ कोई आदमी ही सिखाता है, जिस शख़्स की तरफ़ वोह बात को हक़से हटाते हुए मन्सूब करते हैं उसकी ज़बान अ़ज्मी है और येह क़ुरआन वाज़ेह-व-रौशन अ़रबी ज़बान(में) है।

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ لَا يَهْدِيهِمُ اللَّهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٠٤﴾

104. बेशक जो लोग अल्लाहकी आयतों पर ईमान नहीं लाते अल्लाह उन्हें हिदायत (या'नी सहीह़ फ़ह्मो बसीरत की तौफ़ीक़ भी) नहीं देता और उनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।

إِنَّمَا يَفْتَرِي الْكَذِبَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْكَاذِبُونَ ﴿١٠٥﴾

105. बेशक झूटी इफ़्तिरा पर्दाज़ी (भी) वोही लोग करते हैं जो अल्लाहकी आयतों पर ईमान नहीं लाते और वोही लोग झूटे हैं।

مَن كَفَرَ بِاللَّهِ مِن بَعْدِ إِيمَانِهِ إِلَّا مَنْ أُكْرِهَ وَقَلْبُهُ مُطْمَئِنٌّ بِالْإِيمَانِ وَلَٰكِن مَّن شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِّنَ اللَّهِ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٠٦﴾

106. जो शख़्स अपने ईमान लाने के बाद कुफ़्र करे, सिवाए उसके जिसे इन्तिहाई मजबूर कर दिया गया मगर उसका दिल (बदस्तूर) ईमानसे मुत्मइन है, लेकिन (हां) वोह शख़्स जिसने (दोबारा) शर्हे सद्र के साथ कुफ़्र (इख़्तियार) किया सो उन पर अल्लाहकी तरफ़से ग़ज़ब है और उन के लिए ज़बरदस्त अ़ज़ाब है।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اسْتَحَبُّوا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْاٰخِرَةِ ۙ وَ اَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٠٧﴾

107. येह इस वजहसे कि उन्होंने दुन्यवी ज़िन्दगीको आख़िरत पर अज़ीज़ रख्खा और इस लिए कि अल्लाह काफ़िरों की क़ौम को हिदायत नहीं फ़रमाता।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَسَمْعِهِمْ وَاَبْصَارِهِمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ﴿١٠٨﴾

108. येह वोह लोग हैं कि अल्लाहने उनके दिलों पर और उनके कानों पर और उनकी आँखों पर मोहर लगा दी है और येही लोग ही (आख़िरत के अंजामसे) ग़ाफ़िल हैं।

لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٠٩﴾

109. येह हक़ीक़त है कि बेशक येही लोग आख़िरतमें ख़सारा उठानेवाले हैं।

ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ هَاجَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا فُتِنُوْا ثُمَّ جٰهَدُوْا وَصَبَرُوْٓا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٠﴾

110. फिर आपका रब उन लोगों के लिए जिन्होंने आज़माइशों (और तक्लीफ़ों) में मुब्तिला किए जाने के बाद हिजरत की (या'नी अल्लाह केलिए अपने वतन छोड़ दिए) फिर जिहाद किए और (परेशानियों पर) सब्र किए तो (ऐ हबीबे मुकर्रम!) आपका रब उसके बाद बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

يَوْمَ تَاْتِىْ كُلُّ نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ نَّفْسِهَا وَتُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١١١﴾

111. वोह दिन (याद करें) जब हर शख़्स महज़ अपनी जानकी तरफ़से (दिफ़ाअ़ के लिए) झगड़ता हुआ हाज़िर होगा और हर जानको जो कुछ उसने किया होगा, उसका पूरा पूरा बदला दिया जाएगा और उन पर कोई ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ اٰمِنَةً مُّطْمَئِنَّةً يَّاْتِيْهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِّنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِاَنْعُمِ اللّٰهِ فَاَذَاقَهَا اللّٰهُ لِبَاسَ الْجُوْعِ وَالْخَوْفِ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿١١٢﴾

112. और अल्लाहने एक ऐसी बस्तीकी मिसाल बयान फ़रमाई है जो (बड़े) अम्न और इत्मीनान से (आबाद) थी उसका रिज़्क़ उसके (मकीनों के) पास हर तरफ़से बड़ी वुस्अ़तो फ़राग़त के साथ आता था फिर उस बस्ती (वालों)ने अल्लाहकी ने'मतोंकी ना शुक्री की तो अल्लाहने उसे भूक और ख़ौफ़ के अज़ाबका लिबास पेहना दिया उन आ'मालके सबब से जो वोह करते थे।

وَ لَقَدْ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْهُمْ
فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ
ظٰلِمُوْنَ ﴿۱۱۳﴾

113. और बेशक उनके पास उनही में से एक रसूल आया तो उन्होंने उसे झुटलाया पस उन्हें अज़ाब ने आ पकड़ा और वोह ज़ालिम ही थे।

فَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا
طَيِّبًا ۪ وَّاشْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ اِنْ
كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿۱۱۴﴾

114. पस जो हलाल और पाकीज़ा रिज़्क तुम्हें अल्लाहने बख़्शा है, तुम उसमें से खाया करो और अल्लाहकी ने'मतोंका शुक्र बजा लाते रहो अगर तुम उसीकी इबादत करते हो।

اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ
وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَ مَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ
اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّ
لَا عَادٍ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۱۵﴾

115. उसने तुम पर सिर्फ़ मुर्दार और ख़ून और ख़िन्ज़ीरका गोश्त और वोह (जानवर) जिस पर ज़ब्ह करते वक्त ग़ैरुल्लाह का नाम पुकारा गया हो, हराम किया है, फिर जो शख़्स हालते इज़्तिरार (या'नी इन्तिहाई मजबूरी की हालत) में हो, न (तलबे लिज़्ज़तमें अहकामे इलाहीसे) सरकशी करनेवाला हो और न (मजबूरी की हदसे) तजावुज़ करनेवाला हो, तो बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

وَ لَا تَقُوْلُوْا لِمَا تَصِفُ اَلْسِنَتُكُمُ
الْكَذِبَ هٰذَا حَلٰلٌ وَّ هٰذَا حَرَامٌ
لِّتَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ اِنَّ
الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ
الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ﴿۱۱۶﴾ؕ

116. और वोह झूट मत कहा करो जो तुम्हारी ज़बानें बयान करती रेहती हैं कि येह हलाल है और येह हराम है इस तरह कि तुम अल्लाह पर झूटा बोहतान बांधो, बेशक जो लोग अल्लाह पर झूटा बोहतान बांधते हैं वोह (कभी) फ़लाह नहीं पाएंगे।

مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۪ وَّلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۱۷﴾

117. फ़ाइदा थोड़ा है मगर उनके लिए अज़ाब (बड़ा) दर्दनाक है।

وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا مَا
قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ ۚ وَ مَا

118. और यहूद पर हमने वोही चीज़ें हराम की थीं जो हम पहले आपसे बयान कर चुके हैं और हमने उन पर

ظَلَمْنٰهُمْ وَ لٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿۱۱۸﴾

जुल्म नहीं किया था लेकिन वोह ख़ुद अपनी जानों पर जुल्म किया करते थे।

ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ عَمِلُوا السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْٓا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۱۹﴾

119. फिर बेशक आपका रब उन लोगों के लिए जिन्होंने नादानीसे ग़लतियां कीं फिर उसके बाद ताइब हो गए और (अपनी) हालत दुरुस्त कर ली तो बेशक आपका रब उसके बाद बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

ع ۱۵ ۹ ۲۱

اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ كَانَ اُمَّةً قَانِتًا لِّلّٰهِ حَنِيْفًا ؕ وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۱۲۰﴾

120. बेशक इब्राहीम (عليه السلام तन्हा ज़ातमें) एक उम्मत थे, अल्लाह के बड़े फ़रमां बरदार थे, हर बातिलसे कनारा कश (सिर्फ़ उसीकी तरफ़ यक्सू) थे, और मुशरिकों में से न थे।

شَاكِرًا لِّاَنْعُمِهٖ ؕ اِجْتَبٰىهُ وَهَدٰىهُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۱۲۱﴾

121. उस (अल्लाह)की ने'मतों पर शाकिर थे, अल्लाहने उन्हें चुन (कर अपनी बारगाहमें ख़ास बरगुज़ीदा बना) लिया और उन्हें सीधी राहकी तरफ़ हिदायत फ़रमा दी।

وَاٰتَيْنٰهُ فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً ؕ وَ اِنَّهٗ فِى الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۱۲۲﴾

122. और हमने उसे दुनियामें (भी) भलाई अ़ता फ़रमाई, और बेशक वोह आख़िरतमें (भी) सालेहीन में से होंगे।

ثُمَّ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ اَنِ اتَّبِعْ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ؕ وَ مَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۱۲۳﴾

123. फिर (ऐ हबीबे मुकर्रम!) हमने आपकी तरफ़ वही भेजी कि आप इब्राहीम (عليه السلام) के दीन की पैरवी करें जो हर बातिल से जुदा थे, और वोह मुशरिकों में से न थे।

اِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ؕ وَ اِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿۱۲۴﴾

124. हफ़्ते का दिन सिर्फ़ उन ही लोगों पर मुक़र्रर किया गया था जिन्होंने उसमें इख़्तिलाफ किया, और बेशक आपका रब क़ियामतके दिन उनके दरमियान उन (बातों) का फ़ैसला फ़रमा देगा जिनमें वोह इख़्तिलाफ किया करते थे।

اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ۭ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ١٢٥

125. (ऐ रसूले मुअ़ज़्ज़म !) आप अपने रबकी राहकी तरफ़ हिक्मत और उ़म्दा नसीह़तके साथ बुलाइए और उनसे बह़स (भी) ऐसे अंदाजसे कीजिए जो निहायत ह़सीन हो, बेशक आपका रब उस शख़्सको (भी) ख़ूब जानता है जो उसकी राहसे भटक गया और हिदायत याफ़्ता लोगों को (भी) ख़ूब जानता है।

وَاِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ مَا عُوْقِبْتُمْ بِهٖ ۭ وَلَىِٕنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصّٰبِرِيْنَ ١٢٦

126. और अगर तुम सज़ा देना चाहो तो उतनी ही सज़ा दो जिस क़दर तक्लीफ़ तुम्हें दी गई थी, और अगर तुम सब्र करो तो यक़ीनन वोह सब्र करनेवालों के लिए बेहतर हैं।

وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ اِلَّا بِاللّٰهِ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِيْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ١٢٧

127. और (ऐ ह़बीबे मुकर्रम!) सब्र कीजिए और आपका सब्र करना अल्लाह ही के साथ है और आप उन (की सरकशी) पर रंजीदा ख़ातिर न हुआ करें और आप उनकी फ़रेबकारियों से (अपने कुशादा सीने में) तंगी (भी) मह़सूस न किया करें।

اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ ١٢٨

ع ١٦ ٩ ٢٢

128. बेशक अल्लाह उन लोगों को अपनी मइय्यते (ख़ास) से नवाज़ता है जो साह़िबाने तक़्वा हों और वोह लोग जो साह़िबाने एह़सान (भी) हों।

आयातुहा 111 | 17 सूरतु बनी इसराई-ल मक्कियतुन 50 | रुकूआतुहा 12

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

سُبۡحٰنَ الَّذِیۡۤ اَسۡرٰی بِعَبۡدِهٖ لَيۡلًا مِّنَ الۡمَسۡجِدِ الۡحَـرَامِ اِلَى الۡمَسۡجِدِ الۡاَقۡصَا الَّذِیۡ بٰرَكۡنَا حَوۡلَهٗ لِنُرِيَهٗ مِنۡ اٰيٰتِنَا ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيۡعُ الۡبَصِيۡرُ ۝١

1. वोह ज़ात (हर नक्स और कमज़ोरीसे) पाक है जो रात के थोड़ेसे हिस्से में अपने (महबूब और मुक़र्रब) बन्देको मस्जिदे हरामसे (उस) मस्जिदे अक़्सा तक ले गई जिसके गिर्दो नवाह़ को हमने बा बरकत बना दिया है ताकि हम उस (बंदए कामिल) को अपनी निशानियां दिखाएं, बेशक वोही खूब सुननेवाला खूब देखने वाला है।

وَاٰتَيۡنَا مُوۡسَى الۡكِتٰبَ وَجَعَلۡنٰهُ هُدًى لِّبَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ اَلَّا تَتَّخِذُوۡا مِنۡ دُوۡنِىۡ وَكِيۡلًا ؕ ۝٢

2. और हमने मूसा (عليه السلام) को किताब (तौरात) अ़ता की और हमने उसे बनी इसराईल के लिए हिदायत बनाया (और उन्हें हुक्म दिया) कि तुम मेरे सिवा किसी को कारसाज़ न ठेहराओ।

ذُرِّيَّةَ مَنۡ حَمَلۡنَا مَعَ نُوۡحٍ ؕ اِنَّهٗ كَانَ عَبۡدًا شَكُوۡرًا ۝٣

3. (ऐ) उन लोगों की औलाद जिन्हें हमने नूह़ (عليه السلام) के साथ (कश्ती में) उठा लिया था, बेशक नूह़ (عليه السلام) बड़े शुक्रगुज़ार बन्दे थे।

وَقَضَيۡنَاۤ اِلٰى بَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ فِى الۡكِتٰبِ لَتُفۡسِدُنَّ فِى الۡاَرۡضِ مَرَّتَيۡنِ وَلَتَعۡلُنَّ عُلُوًّا كَبِيۡرًا ۝٤

4. और हमने किताब में बनी इसराईल को क़त्ई तौर पर बता दिया था कि तुम ज़मीन में ज़रूर दो मर्तबा फ़साद करोगे और (इताअ़ते इलाही से) बड़ी सरकशी बर्तोगे।

فَاِذَا جَآءَ وَعۡدُ اُوۡلٰٮهُمَا بَعَثۡنَا عَلَيۡكُمۡ عِبَادًا لَّنَاۤ اُولِىۡ بَاۡسٍ شَدِيۡدٍ فَجَاسُوۡا خِلٰلَ الدِّيَارِ ؕ وَكَانَ وَعۡدًا مَّفۡعُوۡلًا ۝٥

5. फिर जब उन दोनों में से पहली मर्तबा का वा'दा आ पहुंचा तो हमने तुम पर अपने ऐसे बंदे मुसल्लत कर दिए जो सख़्त जंगजू थे फिर वोह (तुम्हारी) तलाश में (तुम्हारे) घरों तक जा घुसे, और (येह) वा'दा ज़रूर पूरा होना ही था।

6. फिर हमने उनके ऊपर ग़ल्बे को तुम्हारे हक़में पलटा दिया और हमने अमवालो औलाद (की कसरत) के ज़रीए तुम्हारी मदद फ़रमाई और हमने तुम्हें अफ़रादी क़ुव्वत में (भी) बढ़ा दिया।

ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ وَأَمْدَدْنٰكُمْ بِأَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَجَعَلْنٰكُمْ أَكْثَرَ نَفِيْرًا ﴿٦﴾

7. अगर तुम भलाई करोगे तो अपने (ही) लिए भलाई करोगे और अगर तुम बुराई करोगे तो अपनी (ही) जान के लिए, फिर जब दूसरे वा'देकी घड़ी आई (तो और ज़ालिमों को तुम पर मुसल्लत कर दिया) ताकि (मार मार कर) तुम्हारे चेहरे बिगाड़ दें और ताकि मस्जिदे अक़्सा में (उसी तरह) दाख़िल हों जैसे उसमें (हम्ला आवर लोग) पहली मर्तबा दाख़िल हुए थे और ताकि जिस (मुक़ाम) पर ग़ल्बा पाएं उसे तबाहो बरबाद कर डालें।

إِنْ أَحْسَنْتُمْ أَحْسَنْتُمْ لِأَنْفُسِكُمْ ۗ وَإِنْ أَسَأْتُمْ فَلَهَا ۭ فَإِذَا جَآءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ لِيَسُوْٓءٗا وُجُوْهَكُمْ وَلِيَدْخُلُوا الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوْهُ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَّلِيُتَبِّرُوْا مَا عَلَوْا تَتْبِيْرًا ﴿٧﴾

8. उम्मीद है (उसके बाद) तुम्हारा रब तुम पर रहम फ़रमाएगा और अगर तुमने फिर वोही (सरकशी का तर्ज़े अ़मल इख़्तियार) किया तो हम भी वोही (अ़ज़ाब दोबारा) करेंगे, और हमने दोज़ख़ को काफ़िरों के लिए क़ैदख़ाना बना दिया है।

عَسٰى رَبُّكُمْ أَنْ يَّرْحَمَكُمْ ۚ وَإِنْ عُدْتُّمْ عُدْنَا ۘ وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ حَصِيْرًا ﴿٨﴾

وقف لازم

9. बेशक येह क़ुरआन उस (मंज़िल) की रहनुमाई करता है जो सबसे दुरुस्त है और उन मोमिनोंको जो नेक अ़मल करते हैं इस बातकी ख़ुश ख़बरी सुनाता है कि उनके लिए बड़ा अज्र है।

إِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَهْدِيْ لِلَّتِيْ هِيَ أَقْوَمُ وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا كَبِيْرًا ﴿٩﴾ ۙ

10. और येह कि जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते हमने उनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।

وَّأَنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيْمًا ﴿١٠﴾ ع

11. और इन्सान (कभी तंग दिल और परेशान हो कर) बुराईकी दुआ़ मांगने लगता है जिस तरह (अपने लिए) भलाई की दुआ़ मांगता है, और इन्सान बड़ा ही जल्दबाज़ वाक़े' हुवा है।

وَيَدْعُ الْإِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَآءَهٗ بِالْخَيْرِ ۭ وَكَانَ الْإِنْسَانُ عَجُوْلًا ﴿١١﴾

وَجَعَلْنَا الَّيْلَ وَالنَّهَارَ اٰيَتَيْنِ فَمَحَوْنَآ اٰيَةَ الَّيْلِ وَجَعَلْنَآ اٰيَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً لِّتَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ وَالْحِسَابَ ؕ وَكُلَّ شَيْءٍ فَصَّلْنٰهُ تَفْصِيْلًا ﴿۱۲﴾

12. और हमने रात और दिनको (अपनी कुदरतकी) दो निशानियां बनाया फिर हमने रातकी निशानी को तारीक बनाया और हमने दिनकी निशानीको रौशन बनाया ताकि तुम अपने रबका फ़ज़्ल (रिज़्क़) तलाश कर सको और ताकि तुम बरसोंका शुमार और हिसाब मा'लूम कर सको, और हमने हर चीज़को पूरी तफ़्सील से वाज़ेह कर दिया है।

وَكُلَّ اِنْسَانٍ اَلْزَمْنٰهُ طٰٓئِرَهٗ فِيْ عُنُقِهٖ ؕ وَنُخْرِجُ لَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ كِتٰبًا يَّلْقٰىهُ مَنْشُوْرًا ﴿۱۳﴾

13. और हमने हर इन्सानके आ'मालका नविश्ता उसकी गरदनमें लटका दिया है, और हम उसके लिए क़ियामतके दिन (येह) नामए आ'माल निकालेंगे जिसे वोह (अपने सामने) खुला हुवा पाएगा।

اِقْرَاْ كِتٰبَكَ ؕ كَفٰى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيْبًا ﴿۱۴﴾ ؕ

14. (उससे कहा जाएगा) अपनी किताबे (आ'माल) पढ़ ले, आज तू अपना हिसाब जाँचने के लिए ख़ुदही काफ़ी है।

مَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ؕ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ؕ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا ﴿۱۵﴾

15. जो कोई राहे हिदायत इख़्तियार करता है तो वोह अपने फ़ाइदे के लिए हिदायत पर चलता है और जो शख़्स गुमराह होता है तो उसकी गुमराही का वबाल (भी) उसी पर है, और कोई बोझ उठानेवाला किसी दूसरे (के गुनाहों) का बोझ नहीं उठाएगा, और हम हरगिज़ अ़ज़ाब देनेवाले नहीं हैं यहां तक कि हम (उस क़ौममें) किसी रसूलको भेज लें।

وَاِذَآ اَرَدْنَآ اَنْ نُّهْلِكَ قَرْيَةً اَمَرْنَا مُتْرَفِيْهَا فَفَسَقُوْا فِيْهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا الْقَوْلُ فَدَمَّرْنٰهَا تَدْمِيْرًا ﴿۱۶﴾

16. और जब हम किसी बस्तीको हलाक करनेका इरादा करते हैं तो हम वहांके उमरा और ख़ुशहाल लोगोंको (कोई) हुक्म देते हैं (ताकि उनके ज़रीए अ़वाम और गुरबा भी दुरुस्त हो जाएं) तो वोह उस (बस्ती) में ना फ़रमानी करते हैं पस उस पर हमारा फ़रमाने (अ़ज़ाब) वाजिब हो जाता है फिर हम उस बस्तीको बिल्कुल ही मिस्मार कर देते हैं।

وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُونِ مِنْ بَعْدِ نُوحٍ ۗ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ بِذُنُوبِ عِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ﴿١٧﴾

17. और हमने नूह (عليه السلام) के बाद कितनी ही क़ौमोंको हलाक कर डाला, और आपका रब काफ़ी है (वोह) अपने बंदों के गुनाहोंसे खूब ख़बरदार खूब देखनेवाला है।

مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهُ فِيهَا مَا نَشَاءُ لِمَنْ نُرِيدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهُ جَهَنَّمَ يَصْلَاهَا مَذْمُومًا مَدْحُورًا ﴿١٨﴾

18. जो कोई सिर्फ़ दुनियाकी खुशहाली (की सूरतमें अपनी मेहनतका जल्दी बदला) चाहता है तो हम इसी दुनियामें जिसे चाहते हैं जितना चाहते हैं जल्दी दे देते हैं फिर हमने उसके लिए दोज़ख़ बना दी है जिसमें वोह मलामत सुनता हुआ (रबकी रहमतसे) धुत्कारा हुआ दाख़िल होगा।

وَمَنْ أَرَادَ الْآخِرَةَ وَسَعَىٰ لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَشْكُورًا ﴿١٩﴾

19. और जो शख़्स आख़िरतका ख़्वाहिशमंद हुआ और उसने उसके लिए उसके लाइक़ कोशिश की और वोह मोमिन (भी) है तो ऐसे ही लोगोंकी कोशिश मक़्बूलियत पाएगी।

كُلًّا نُمِدُّ هَٰؤُلَاءِ وَهَٰؤُلَاءِ مِنْ عَطَاءِ رَبِّكَ ۚ وَمَا كَانَ عَطَاءُ رَبِّكَ مَحْظُورًا ﴿٢٠﴾

20. हम हर एक की मदद करते हैं उन (तालिबाने दुनिया) की भी और उन (तालिबाने आख़िरत) की भी (ऐ हबीबे मुकर्रम ! येह सब कुछ) आपके रबकी अ़तासे है, और आपके रबकी अ़ता (किसी के लिए) मम्नूअ़ और बंद नहीं है।

انْظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ وَلَلْآخِرَةُ أَكْبَرُ دَرَجَاتٍ وَأَكْبَرُ تَفْضِيلًا ﴿٢١﴾

21. देखिए हमने उनमें से बा'ज़ को बा'ज़ पर किस तरह फ़ज़ीलत दे रखी है, और यक़ीनन आख़िरत (दुनियाके मुक़ाबलेमें) दरजातके लिहाज़से (भी) बहुत बड़ी है और फ़ज़ीलतके लिहाज़से (भी) बहुत बड़ी है।

لَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُومًا مَخْذُولًا ﴿٢٢﴾

22. (ऐ सुननेवाले!) अल्लाहके साथ दूसरा मा'बूद न बना (वर्ना) तू मलामत ज़दह (और) बे यारो मददगार हो कर बैठा रेह जाएगा।

وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا

23. और आपके रबने हुक्म फ़रमा दिया है कि तुम

إِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا ۚ إِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ أَحَدُهُمَا أَوْ كِلَاهُمَا فَلَا تَقُلْ لَهُمَا أُفٍّ وَلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَهُمَا قَوْلًا كَرِيمًا ﴿٢٣﴾

अल्लाहके सिवा किसीकी इबादत मत करो और वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक किया करो, अगर तुम्हारे सामने दोनोंमें से कोई एक या दोनों बुढ़ापे को पहुंच जाएं तो उन्हें ''उफ़'' भी न केहना और उन्हें झिड़कना भी नहीं और उन दोनोंके साथ बड़े अदब से बात किया करो।

وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيَانِي صَغِيرًا ﴿٢٤﴾

24. और उन दोनों के लिए नरम दिली से इज्ज़ो इन्किसारीके बाज़ू झुकाए रखो और (अल्लाहके हुजूर) अर्ज़ करते रहो ऐ मेरे रब ! उन दोनों पर रहम फ़रमा जैसा कि उन्होंने बचपन में मुझे (रह़मतो शफ़क़त से) पाला था।

رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا فِي نُفُوسِكُمْ ۚ إِنْ تَكُونُوا صَالِحِينَ فَإِنَّهُ كَانَ لِلْأَوَّابِينَ غَفُورًا ﴿٢٥﴾

25. तुम्हारा रब उन (बातों) से खूब आगाह है जो तुम्हारे दिलोंमें है, अगर तुम नेक सीरत हो जाओ तो बेशक वोह (अल्लाह अपनी तरफ़) रुजूअ़ करनेवालों को बहुत बख़्शनेवाला है।

وَآتِ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ وَالْمِسْكِينَ وَابْنَ السَّبِيلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيرًا ﴿٢٦﴾

26. और क़राबत दारों को उनका ह़क़ अदा करो और मोहूताजों और मुसाफ़िरों को भी (दो) और (अपना माल) फ़ुज़ूल ख़र्चीसे मत उड़ाओ।

إِنَّ الْمُبَذِّرِينَ كَانُوا إِخْوَانَ الشَّيَاطِينِ ۖ وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِرَبِّهِ كَفُورًا ﴿٢٧﴾

27. बेशक फ़ुज़ूल ख़र्ची करनेवाले शैतानके भाई हैं, और शैतान अपने रबका बड़ा ही ना शुक्रा है।

وَإِمَّا تُعْرِضَنَّ عَنْهُمُ ابْتِغَاءَ رَحْمَةٍ مِنْ رَبِّكَ تَرْجُوهَا فَقُلْ لَهُمْ قَوْلًا مَيْسُورًا ﴿٢٨﴾

28.और अगर तुम (अपनी तंगदस्ती के बाइस) उन (मुस्तह़िक़ीन) से गुरेज़ करना चाहते हो अपने रबकी जानिबसे रह़मत (खुशह़ाली) के इन्तिज़ारमें जिसकी तुम तवक़्क़ो' रखते हो तो उनसे नरमीकी बात केह दिया करो।

وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُولَةً إِلَىٰ

29. और न अपना हाथ अपनी गरदनसे बांधा हुवा रखो

عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ
فَتَقْعُدَ مَلُومًا مَّحْسُورًا ﴿٢٩﴾

(कि किसीको कुछ न दो) और न ही उसे सारा का सारा खोल दो (कि सब कुछ ही दे डालो) कि फिर तुम्हें खुद मलामत ज़दह (और) थका हारा बन कर बैठना पड़े।

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ
يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ
خَبِيرًا بَصِيرًا ﴿٣٠﴾

30. बेशक आपका रब जिसके लिए चाहता है रिज़्क़ कुशादह फ़रमा देता है और (जिसके लिए चाहता है) तंग कर देता है, बेशक वोह अपने बन्दों (के आ'मालो अहवाल) की खूब ख़बर रखनेवाला खूब देखनेवाला है।

وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ
إِمْلَاقٍ ۖ نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَإِيَّاكُمْ ۚ
إِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطْئًا كَبِيرًا ﴿٣١﴾

31. और तुम अपनी औलाद को मुफ़लिसीके ख़ौफ़से क़त्ल मत करो, हम ही उन्हें (भी) रोज़ी देते हैं और तुम्हें भी, बेशक उनको क़त्ल करना बहुत बड़ा गुनाह है।

وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنَىٰ ۖ إِنَّهُ كَانَ
فَاحِشَةً وَسَاءَ سَبِيلًا ﴿٣٢﴾

32. तुम ज़िना (बदकारी) के क़रीब भी मत जाना बेशक येह बे हयाई का काम है, और बहुत ही बुरी राह है।

وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ
إِلَّا بِالْحَقِّ ۗ وَمَن قُتِلَ مَظْلُومًا
فَقَدْ جَعَلْنَا لِوَلِيِّهِ سُلْطَانًا فَلَا
يُسْرِف فِّي الْقَتْلِ ۖ إِنَّهُ كَانَ
مَنصُورًا ﴿٣٣﴾

33. तुम किसी जानको क़त्ल मत करना जिसे (क़त्ल करना) अल्लाहने हराम क़रार दिया है सिवाए उसके कि (उसका क़त्ल करना शरीअत की रूसे) हक़ हो, और जो शख़्स ज़ुल्मन क़त्ल कर दिया गया तो बेशक हमने उसके वारिस के लिए (क़िसास का) हक़ मुक़र्रर कर दिया है सो वोह भी (क़िसास के तौर पर बदलेके) क़त्लमें हदसे तजावुज़ न करे, बेशक वोह (अल्लाहकी तरफ़से) मदद याफ़्ता है (सो उसकी मददो हिमायत की ज़िम्मेदारी हुकूमत पर होगी)।

وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي
هِيَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ يَبْلُغَ أَشُدَّهُ ۚ
وَأَوْفُوا بِالْعَهْدِ ۖ إِنَّ الْعَهْدَ كَانَ
مَسْئُولًا ﴿٣٤﴾

34. और तुम यतीमके मालके (भी) क़रीब तक न जाना मगर ऐसे तरीक़ेसे जो (यतीम के लिए) बेहतर हो यहां तक कि वोह अपनी जवानीको पहुंच जाए और वा'दा पूरा किया करो, बेशक वा'दे की ज़रूर पूछ गछ होगी।

وَ اَوۡفُوا الۡكَيۡلَ اِذَا كِلۡتُمۡ وَزِنُوۡا بِالۡقِسۡطَاسِ الۡمُسۡتَقِيۡمِ ؕ ذٰلِكَ خَيۡرٌ وَّ اَحۡسَنُ تَاۡوِيۡلًا ﴿۳۵﴾

35. और नाप पूरा रखा करो जब (भी) तुम (कोई चीज़) नापो और (जब तोलने लगो तो) सीधे तराजूसे तोला करो, येह (दयानतदारी) बेहतर है और अंजामके ए'तिबारसे (भी) ख़ूबतर है।

وَ لَا تَقۡفُ مَا لَيۡسَ لَكَ بِهٖ عِلۡمٌ ؕ اِنَّ السَّمۡعَ وَ الۡبَصَرَ وَ الۡفُؤَادَ كُلُّ اُولٰٓئِكَ كَانَ عَنۡهُ مَسۡـُٔوۡلًا ﴿۳۶﴾

36. और (ऐ इन्सान !) तू इस बातकी पैरवी न कर जिसका तुझे (सहीह) इल्म नहीं, बेशक कान और आँख और दिल इनमें से हर एकसे बाज़पुर्स होगी।

وَ لَا تَمۡشِ فِى الۡاَرۡضِ مَرَحًا ۚ اِنَّكَ لَنۡ تَخۡرِقَ الۡاَرۡضَ وَ لَنۡ تَبۡلُغَ الۡجِبَالَ طُوۡلًا ﴿۳۷﴾

37. और ज़मीन में अकड़ कर मत चल, बेशक तू ज़मीन को (अपनी रुऊनतके ज़ोर से) हरगिज़ चीर नहीं सक्ता और न ही हरगिज़ तू बुलंदी में पहाड़ों को पहुंच सक्ता है (तू जो कुछ है वोही रहेगा)।

كُلُّ ذٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهٗ عِنۡدَ رَبِّكَ مَكۡرُوۡهًا ﴿۳۸﴾

38. इन सब (मज़कूरह) बातोंकी बुराई तेरे रबको बड़ी नापसंद है।

ذٰلِكَ مِمَّاۤ اَوۡحٰۤى اِلَيۡكَ رَبُّكَ مِنَ الۡحِكۡمَةِ ؕ وَ لَا تَجۡعَلۡ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتُلۡقٰى فِىۡ جَهَنَّمَ مَلُوۡمًا مَّدۡحُوۡرًا ﴿۳۹﴾

39. येह हिक्मतो दानाईकी उन बातों में से है जो आपके रबने आपकी तरफ़ वह़ी फ़रमाई हैं, और (ऐ इन्सान!) अल्लाहके साथ कोई दूसरा मा'बूद न ठेहरा (वरना) तू मलामत ज़दह (और अल्लाह की रह़मतसे) धुत्कारा हुवा हो कर दोज़ख़में झोंक दिया जाएगा।

اَفَاَصۡفٰٮكُمۡ رَبُّكُمۡ بِالۡبَنِيۡنَ وَ اتَّخَذَ مِنَ الۡمَلٰٓئِكَةِ اِنَاثًا ؕ اِنَّكُمۡ لَتَقُوۡلُوۡنَ قَوۡلًا عَظِيۡمًا ﴿۴۰﴾ ع

40. (ऐ मुशरीको, ख़ुद सोचो !) भला तुम्हें तो तुम्हारे रबने बेटोंके लिए चुन लिया है और (अपने लिए) उसने फ़रिश्तोंको बेटियां बना लिया है, बेशक तुम (अपने ही घड़े हुए ख़यालातके पैमाने पर) बड़ी सख़्त बात केहते हो।

وَ لَقَدۡ صَرَّفۡنَا فِىۡ هٰذَا الۡقُرۡاٰنِ لِيَذَّكَّرُوۡا ؕ وَ مَا يَزِيۡدُهُمۡ اِلَّا

41. और बेशक हमने इस कुरआनमें (ह़क़ाईक़ और नसाएह़ को) अंदाज़ बदल कर बार बार बयान किया है ताकि लोग नसीह़त ह़ासिल करें, मगर (मुन्किरीन का

نُفُوْرًا ﴿٤١﴾

आ़लम येह है कि) उससे उनकी नफ़रत ही मज़ीद बढ़ती जाती है।

قُلْ لَّوْ كَانَ مَعَهٗۤ اٰلِهَةٌ كَمَا يَقُوْلُوْنَ اِذًا لَّابْتَغَوْا اِلٰى ذِى الْعَرْشِ سَبِيْلًا ﴿٤٢﴾

42. फ़रमा दीजिए : अगर उसके साथ कुछ और भी मा'बूद होते जैसा कि वोह (कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन) केहते हैं तो वोह (मिल कर) मालिके अ़र्श तक पहुंचने (या'नी उसके निज़ामे इक़्तिदार में दख़ल अंदाज़ी करने) का कोई रास्ता ज़रूर तलाश कर लेते।

سُبْحٰنَهٗ وَ تَعٰلٰى عَمَّا يَقُوْلُوْنَ عُلُوًّا كَبِيْرًا ﴿٤٣﴾

43. वोह पाक है और उन बातोंसे जो वोह केहते रेहते हैं बहुत ही बुलंदो बरतर है।

تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ وَ الْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ ؕ وَ اِنْ مِّنْ شَیْءٍ اِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ وَ لٰكِنْ لَّا تَفْقَهُوْنَ تَسْبِيْحَهُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ﴿٤٤﴾

44. सातों आस्मान और ज़मीन और वोह सारे मौजूदात जो उनमें हैं अल्लाहकी तस्बीह़ करते रेहते हैं, और (जुम्ला काइनातमें) कोई भी चीज़ ऐसी नहीं जो उसकी ह़म्दके साथ तस्बीह़ न करती हो लेकिन तुम उनकी तस्बीह़ (की कैफ़ियत) को समझ नहीं सक्ते, बेशक वोह बड़ा बुर्दबार बड़ा बख़्शनेवाला है।

وَ اِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَ بَيْنَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُوْرًا ﴿٤٥﴾

45. और जब आप क़ुरआन पढ़ते हैं (तो) हम आपके और उन लोगोंके दरमियान जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते एक पोशीदह पर्दा ह़ाइल कर देते हैं।

وَّ جَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَ فِیْۤ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ؕ وَ اِذَا ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِی الْقُرْاٰنِ وَحْدَهٗ وَلَّوْا عَلٰۤى اَدْبَارِهِمْ نُفُوْرًا ﴿٤٦﴾

46.और हम उनके दिलों पर (भी) पर्दे डाल देते हैं ताकि वोह उसे समझ (न) सकें और उनके कानों में बोझ पैदा कर देते हैं (ताकि उसे सुन न सकें), और जब आप क़ुरआन में अपने रबका तन्हा ज़िक्र करते हैं (उनके बुतोंका नाम नहीं आता) तो वोह नफ़रत करते हुऐ पीठ फेर कर भाग खड़े होते हैं।

نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُوْنَ بِهٖۤ اِذْ

47.हम ख़ूब जानते हैं येह जिस मक़्सद के लिए ध्यान से

يَسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ وَ اِذْ هُمْ نَجْوٰۤى اِذْ يَقُوْلُ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ﴿۴۷﴾

सुनते हैं जब येह आपकी तरफ़ कान लगाते हैं और जब येह सरगोशियां करते हैं जब येह ज़ालिम लोग (मुसलमानों से) केहते हैं कि तुम तो महज़ एक ऐसे शख़्सकी पैरवी कर रहे हो जो सहर ज़दा है (या'नी उस पर जादू कर दिया गया है तो हम येह सब कुछ देख और सुन रहे होते हैं)।

اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ﴿۴۸﴾

48. (ऐ हबीब!) देखिए (येह लोग) आपके लिए कैसी (कैसी) तश्बीहें देते हैं पस येह गुमराह हो चुके, अब राहे रास्त पर नहीं आ सक्ते।

وَقَالُوْۤا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا ﴿۴۹﴾

49. और केहते हैं जब हम (मर कर बोसीदह) हड्डियां और रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे तो क्या हमें अज़ सरे नव पैदा कर के उठाया जाएगा ?

قُلْ كُوْنُوْا حِجَارَةً اَوْ حَدِيْدًا ﴿۵۰﴾

50. फ़रमा दीजिए : तुम पत्थर हो जाओ या लोहा।

اَوْ خَلْقًا مِّمَّا يَكْبُرُ فِيْ صُدُوْرِكُمْ فَسَيَقُوْلُوْنَ مَنْ يُّعِيْدُنَا قُلِ الَّذِيْ فَطَرَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ فَسَيُنْغِضُوْنَ اِلَيْكَ رُءُوْسَهُمْ وَ يَقُوْلُوْنَ مَتٰى هُوَ قُلْ عَسٰۤى اَنْ يَّكُوْنَ قَرِيْبًا ﴿۵۱﴾

51. या कोई ऐसी मख़्लूक़ जो तुम्हारे ख़याल में (इन चीज़ोंसे भी) ज़ियादह सख़्त हो (कि उसमें ज़िन्दगी पानेकी बिल्कुल सलाहियत ही न हो) फिर वोह (उस हाल में) कहेंगे कि हमें कौन दोबारा ज़िन्दा करेगा? फ़रमा दीजिए : वोही जिसने तुम्हें पेहली बार पैदा फ़रमाया था, फिर वोह (तअज्जुब और तमस्ख़ुर के तौर पर) आपके सामने अपने सर हिला देंगे और कहेंगे : येह कब होगा? फ़रमा दीजिए : उम्मीद है जल्द ही हो जाएगा।

يَوْمَ يَدْعُوْكُمْ فَتَسْتَجِيْبُوْنَ بِحَمْدِهٖ وَتَظُنُّوْنَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۵۲﴾

52. जिस दिन वोह तुम्हें पुकारेगा तो तुम उसकी हम्दके साथ जवाब दोगे और ख़याल करते होगे कि तुम (दुनिया में) बहुत थोड़ा अर्सा ठेहरे हो।

وَ قُلْ لِّعِبَادِيْ يَقُوْلُوا الَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ اِنَّ الشَّيْطٰنَ يَنْزَغُ

53. और आप मेरे बंदों से फ़रमादें कि वोह ऐसी बातें किया करें जो बेहतर हों, बेशक शैतान लोगों के

بَيْنَهُمْ ۭ اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوًّا مُّبِيْنًا ﴿٥٣﴾

दरमियान फ़साद बपा करता है, यक़ीनन शैतान इन्सानका खुला दुश्मन है।

رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِكُمْ ۭ اِنْ يَّشَاْ يَرْحَمْكُمْ اَوْ اِنْ يَّشَاْ يُعَذِّبْكُمْ ۭ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ﴿٥٤﴾

54. तुम्हारा रब तुम्हारे ह़ाल से बेहतर वाक़िफ़ है, अगर चाहे तुम पर रह़म फ़रमा दे या अगर चाहे तुम पर अ़ज़ाब करे, और हमने आपको उन पर (उनके उमूरका) ज़िम्मेदार बना कर नहीं भेजा।

وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيّٖنَ عَلٰي بَعْضٍ وَّاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ﴿٥٥﴾

55.और आपका रब उनको खूब जानता है जो आस्मानों और ज़मीन में (आबाद) हैं, और बेशक हमने बा'ज़ अंबियाको बा'ज़ पर फ़ज़ीलत बख़्शी और हमने दाऊद (عليه السلام) को ज़बूर अ़ता की।

قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ فَلَا يَمْلِكُوْنَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنْكُمْ وَلَا تَحْوِيْلًا ﴿٥٦﴾

56. फ़रमा दीजिए : तुम उन सबको बुला लो जिन्हें तुम अल्लाहके सिवा (मा'बूद) गुमान करते हो वोह तुमसे तक्लीफ़ दूर करने पर क़ादिर नहीं हैं और न (उसे दूसरोंकी तरफ़) फेर देनेका (इख़्तियार रखते हैं)।

اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ يَبْتَغُوْنَ اِلٰى رَبِّهِمُ الْوَسِيْلَةَ اَيُّهُمْ اَقْرَبُ وَيَرْجُوْنَ رَحْمَتَهٗ وَيَخَافُوْنَ عَذَابَهٗ ۭ اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُوْرًا ﴿٥٧﴾

57. येह लोग जिनकी इ़बादत करते हैं (या'नी मलाइका, जिन्नात, ईसा और उ़ज़ैर (عليهم السلام) वग़ैरहुम के बुत और तस्वीरें बना कर उन्हें पूजते हैं) वोह (तो ख़ुदही) अपने रबकी तरफ़ वसीले तलाश करते हैं कि उनमें से (बारगाहे इलाहीमें) ज़ियादह मुक़र्रब कौन है और (वोह ख़ुदही) उसकी रह़मतके उम्मीदवार हैं और (वोह ख़ुदही) उसके अ़ज़ाबसे डरते रेहते हैं, (अब तुम ही बताओ कि वोह मा'बूद कैसे हो सक्ते हैं वोह तो ख़ुद मा'बूदे बरह़क़ के सामने झुक रहे हैं), बेशक आपके रबका अ़ज़ाब डरनेकी चीज़ है।

وَاِنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اِلَّا نَحْنُ

58.और (कुफ़्रो सरकशी करने वालोंकी) कोई बस्ती

مُهْلِكُوْهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ اَوْ مُعَذِّبُوْهَا عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ كَانَ ذٰلِكَ فِي الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ﴿۵۸﴾

ऐसी नहीं मगर हम उसे रोज़े क़ियामतसे क़ब्लही तबाह कर देंगे या उसे निहायत ही सख़्त अ़ज़ाब देंगे, येह (अम्र) किताब (लौहे महफ़ूज़) में लिखा हुआ है।

وَ مَا مَنَعَنَاۤ اَنْ نُّرْسِلَ بِالْاٰيٰتِ اِلَّاۤ اَنْ كَذَّبَ بِهَا الْاَوَّلُوْنَ ؕ وَ اٰتَيْنَا ثَمُوْدَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً فَظَلَمُوْا بِهَا ؕ وَ مَا نُرْسِلُ بِالْاٰيٰتِ اِلَّا تَخْوِيْفًا ﴿۵۹﴾

59. और हमको (अबभी उनके मुतालिबे पर) निशानियां भेजने से (किसी चीज़ने) मना' नहीं किया सिवाए इसके कि उन्हीं (निशानियों) को पहले लोगोंने झुटला दिया था (सो उसके बाद वोह फ़ौरन तबाहो बरबाद कर दिए गए और कोई मोहलत बाक़ी न रही, ऐ हबीब ! हम आपकी बे'सत के बाद आपकी क़ौमसे येह मुआमला नहीं करना चाहते), और हमने क़ौमे समूदको (सालेह عليه السلام की) ऊंटनी (की) खुली निशानी दी थी तो उन्होंने उस पर ज़ुल्म किया, और हम निशानियां नहीं भेजा करते मगर (अ़ज़ाब की आमदसे क़ब्ल आख़री बार) ख़ौफ़ज़दा करने के लिए (फिर जब उस निशानीका इन्कार हो जाता है तो उसी वक़्त तबाहकुन अ़ज़ाब भेज दिया जाता है)।

وَ اِذْ قُلْنَا لَكَ اِنَّ رَبَّكَ اَحَاطَ بِالنَّاسِ ؕ وَ مَا جَعَلْنَا الرُّءْيَا الَّتِيْۤ اَرَيْنٰكَ اِلَّا فِتْنَةً لِّلنَّاسِ وَ الشَّجَرَةَ الْمَلْعُوْنَةَ فِي الْقُرْاٰنِ ؕ وَ نُخَوِّفُهُمْ ۙ فَمَا يَزِيْدُهُمْ اِلَّا طُغْيَانًا كَبِيْرًا ﴿۶۰﴾

60.और (याद कीजिऐ) जब हमने आपसे फ़रमाया कि बेशक आपके रबने (सब) लोगोंको (अपने इल्मो क़ुदरत के) अहाते में ले रखा है, और हमने तो (शबे मे'राजके) उस नज़्ज़ारेको जो हमने आपको दिखाया लोगों के लिए सिर्फ़ एक आज़माइश बनाया है (ईमानवाले मान गए और ज़ाहिरबीन उलझ गए) और उस दरख़्त (शजरतुज़ ज़क़्क़ूम) को भी जिस पर क़ुरआनमें ला'नत की गई है, और हम उन्हें डराते हैं मगर येह (डराना भी) उनमें कोई इज़ाफ़ा नहीं करता सिवाए और बड़ी सरकशी के।

وَ اِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلِيْسَ ؕ قَالَ

61. और (वोह वक़्त याद कीजिए) जब हमने फ़रिश्तोंसे फ़रमाया कि तुम आदम (عليه السلام) को सजदा करो तो इबलीस के सिवा सबने सजदा किया, उसने कहा :

ءَاَسۡجُدُ لِمَنۡ خَلَقۡتَ طِيۡنًا ﴿٦١﴾

क्या उसे सजदा करूं जिसे तूने मिट्टीसे पैदा किया है?

قَالَ اَرَءَيۡتَكَ هٰذَا الَّذِىۡ كَرَّمۡتَ عَلَىَّ لَئِنۡ اَخَّرۡتَنِ اِلٰى يَوۡمِ الۡقِيٰمَةِ لَاَحۡتَنِكَنَّ ذُرِّيَّتَهٗۤ اِلَّا قَلِيۡلًا ﴿٦٢﴾

62. (और शैतान येह भी केहने लगा :) मुझे बता तो सही कि येह वोह शख़्स है जिसे तूने मुझ पर फ़ज़ीलत दी है? (आख़िर इसकी क्या वजह है?) अगर तू मुझे क़ियामतके दिन तक मोहलत दे दे तो मैं इसकी औलादको सिवाए चंद अफ़रादके (अपने क़ब्जेमें ले कर) जड़से उखाड़ दूंगा।

قَالَ اذۡهَبۡ فَمَنۡ تَبِعَكَ مِنۡهُمۡ فَاِنَّ جَهَنَّمَ جَزَآؤُكُمۡ جَزَآءً مَّوۡفُوۡرًا ﴿٦٣﴾

63. अल्लाहने फ़रमाया : जा (तुझे मोहलत है) पस उनमें से जो भी तेरी पैरवी करेगा तो बेशक दोज़ख़ (ही) तुम सबकी पूरी पूरी सज़ा है।

وَاسۡتَفۡزِزۡ مَنِ اسۡتَطَعۡتَ مِنۡهُمۡ بِصَوۡتِكَ وَاَجۡلِبۡ عَلَيۡهِمۡ بِخَيۡلِكَ وَرَجِلِكَ وَشَارِكۡهُمۡ فِى الۡاَمۡوَالِ وَالۡاَوۡلَادِ وَعِدۡهُمۡ ؕ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيۡطٰنُ اِلَّا غُرُوۡرًا ﴿٦٤﴾

64. और जिस पर भी तेरा बस चल सक्ता है तू (उसे) अपनी आवाज़से डगमगा ले और उन पर अपनी (फ़ौजके) सवार और पियादा दस्तों को चढ़ा दे और उनके मालो औलादमें उनका शरीक बन जा और उनसे (झूटे) वा'दे कर, और उनसे शैतान धोकाओ फ़रेबके सिवा (कोई) वा'दा नहीं करता।

اِنَّ عِبَادِىۡ لَيۡسَ لَكَ عَلَيۡهِمۡ سُلۡطٰنٌ ؕ وَكَفٰى بِرَبِّكَ وَكِيۡلًا ﴿٦٥﴾

65. बेशक जो मेरे बन्दे हैं उन पर तेरा तसल्लुत नहीं हो सकेगा, और तेरा रब उन (अल्लाहवालों) की कारसाज़ी के लिए काफ़ी है।

رَبُّكُمُ الَّذِىۡ يُزۡجِىۡ لَكُمُ الۡفُلۡكَ فِى الۡبَحۡرِ لِتَبۡتَغُوۡا مِنۡ فَضۡلِهٖ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِكُمۡ رَحِيۡمًا ﴿٦٦﴾

66. तुम्हारा रब वोह है जो समन्दर (और दरिया) में तुम्हारे लिए (जहाज़ और) कश्तियां रवां फ़रमाता है ताकि तुम (अंदरूनी-व-बैरूनी तिजारत के ज़रीए) उसका फ़ज़्ल (या'नी रिज़्क़) तलाश करो, बेशक वोह तुम पर बड़ा महरबान है।

وَاِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِى الۡبَحۡرِ ضَلَّ مَنۡ تَدۡعُوۡنَ اِلَّاۤ اِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا

67. और जब समन्दर में तुम्हें कोई मुसीबत लाहिक़ होती है तो वोह (सब बुत तुम्हारे ज़ेहनों से) गुम हो जाते हैं

نَجّٰكُمْ اِلَى الْبَرِّ اَعْرَضْتُمْ ؕ وَكَانَ الْاِنْسَانُ كَفُوْرًا ﴿٦٧﴾

जिनकी तुम परस्तिश करते रेहते हो सिवाए उसी (अल्लाह) के (जिसे तुम उस वक़्त याद करते हो), फिर जब वोह (अल्लाह) तुम्हें बचा कर ख़ुश्की की तरफ़ ले जाता है (तो फिर उससे) रू गर्दानी करने लगते हो, और इन्सान बड़ा नाशुक्रा वाक़े' हुआ है।

اَفَاَمِنْتُمْ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ اَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ وَكِيْلًا ﴿٦٨﴾

68.क्या तुम उस बातसे बेख़ौफ़ हो गए हो कि वोह तुम्हें ख़ुश्कीके किनारे पर ही (ज़मीनमें) धंसा दे या तुम पर पथ्थर बरसानेवाली आँधी भेज दे फिर तुम अपने लिए कोई कारसाज़ न पा सकोगे।

اَمْ اَمِنْتُمْ اَنْ يُّعِيْدَكُمْ فِيْهِ تَارَةً اُخْرٰى فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِّنَ الرِّيْحِ فَيُغْرِقَكُمْ بِمَا كَفَرْتُمْ ۙ ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ عَلَيْنَا بِهٖ تَبِيْعًا ﴿٦٩﴾

69.या तुम उस बातसे बेख़ौफ़ हो गए हो कि वोह तुम्हें दोबारा उस (समन्दर) में पलटा कर ले जाए और तुम पर कश्तियां तोड़ देनेवाली आँधी भेज दे फिर तुम्हें उस कुफ़्र के बाइस जो तुम करते थे (समन्दर में) ग़र्क़ कर दे फिर तुम अपने लिए उस (डूबने) पर हमसे मुआख़ज़ा करनेवाला कोई नहीं पाओगे।

وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِيْٓ اٰدَمَ وَحَمَلْنٰهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلٰى كَثِيْرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيْلًا ﴿٧٠﴾ ع

70.और बेशक हमने बनी आदमको इज़्ज़त बख़्शी और हमने उनको ख़ुश्की और तरी (या'नी शहरों और सेहराओं और समन्दरों और दरियाओं) में (मुख़्तलिफ़ सवारियों पर) सवार किया और हमने उन्हें पाकीज़ा चीज़ोंसे रिज़्क़ अ़ता किया और हमने उन्हें अक्सर मख़्लूक़ात पर जिन्हें हमने पैदा किया है फ़ज़ीलत दे कर बरतर बना दिया।

يَوْمَ نَدْعُوْا كُلَّ اُنَاسٍۢ بِاِمَامِهِمْ ۚ فَمَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ فَاُولٰٓئِكَ يَقْرَءُوْنَ كِتٰبَهُمْ وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿٧١﴾

71. वोह दिन (याद करें) जब हम लोगोंके हर तब्क़े को उनके पेशवा के साथ बुलाएंगे, सो जिसे उसका नविश्तए आ'माल उसके दाएं हाथमें दिया जाएगा पस येह लोग अपना नामाए आ'माल (मसर्रतो शादमानीसे) पढ़ेंगे और उन पर धागे बराबर भी ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।

وَمَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖۤ اَعْمٰى فَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى وَاَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿٧٢﴾

72.और जो शख़्स इस (दुनिया) में (ह़क़से) अँधा रहा सो वोह आख़िरत में भी अँधा और राहे (नजात) से भटका रहेगा।

وَاِنْ كَادُوْا لَيَفْتِنُوْنَكَ عَنِ الَّذِيْۤ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْكَ لِتَفْتَرِيَ عَلَيْنَا غَيْرَهٗ ۖۗ وَاِذًا لَّاتَّخَذُوْكَ خَلِيْلًا ﴿٧٣﴾

73.और कुफ़्फ़ार तो येही चाहते थे कि आपको उस (हुक्मे इलाही) से फेर दें जिसकी हमने आपकी तरफ़ वह़ी फ़रमाई है ताकि आप उस (वह़ी) के सिवा हम पर कुछ और (बातों) को मन्सूब कर दें और तब आपको अपना दोस्त बना लें।

وَلَوْلَاۤ اَنْ ثَبَّتْنٰكَ لَقَدْ كِدْتَّ تَرْكَنُ اِلَيْهِمْ شَيْـًٔا قَلِيْلًا ۗ ﴿٧٤﴾

74. और अगर हमने आपको (पहले ही से इ़स्मते नुबुव्वतके ज़रीए) साबित क़दम न बनाया होता तो तब भी आप उनकी तरफ़ (अपने पाकीज़ा नफ़्स और तब्ई इस्ते'दाद के बाइस) बहुत ही मा'मूली से झुकाव के क़रीब जाते। (उनकी तरफ़ फिर भी ज़ियादह माइल न होते और नाकाम रेहते मगर अल्लाहने आपको इ़स्मते नुबुव्वत के ज़रीए उस मा'मूलीसे मैलान के क़रीब जाने से भी मह़फ़ूज फ़रमा लिया है)।

اِذًا لَّاَذَقْنٰكَ ضِعْفَ الْحَيٰوةِ وَضِعْفَ الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ عَلَيْنَا نَصِيْرًا ﴿٧٥﴾

75. (अगर बिलफ़र्ज़ आप माइल हो जाते तो) उस वक़्त हम आपको दोगुना मज़ा ज़िन्दगीमें और दोगुना मौतमें चखाते फिर आप अपने लिए (भी) हम पर कोई मददगार न पाते।

وَاِنْ كَادُوْا لَيَسْتَفِزُّوْنَكَ مِنَ الْاَرْضِ لِيُخْرِجُوْكَ مِنْهَا وَاِذًا لَّا يَلْبَثُوْنَ خِلٰفَكَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٧٦﴾

76.और कुफ़्फ़ार येह भी चाहते थे कि आपके क़दम सर ज़मीने (मक्का) से उखाड़ दें ताकि वोह आपको यहां से निकाल सकें और (अगर बिलफ़र्ज़ ऐसा हो जाता तो) उस वक़्त वोह (खुद भी) आपके पीछे थोड़ी सी मुद्दतके सिवा ठहर न सक्ते।

سُنَّةَ مَنْ قَدْ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ رُّسُلِنَا وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا تَحْوِيْلًا ﴿٧٧﴾ ع

77. उन सब रसूलों (के लिए अल्लाह) का दस्तूर (येही रहा है) जिन्हें हमने आपसे पहले भेजा था और आप हमारे दस्तूर में कोई तब्दीली नहीं पाएंगे।

أَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوْكِ الشَّمْسِ إِلٰى غَسَقِ الَّيْلِ وَ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ ؕ إِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُوْدًا ﴿۷۸﴾

78. आप सूरज ढलनेसे ले कर रातकी तारीकी तक (ज़ोहर, अ़सर, मग़रिब और इशाकी) नमाज़ क़ाइम फ़रमाया करें और नमाज़े फ़ज्रका क़ुरआन पढ़ना भी (लाज़िम कर लें), बेशक नमाज़े फ़ज्रके क़ुरआन में (फ़रिश्तोंकी) हाज़िरी होती है (और हुज़ूरी भी नसीब होती है)।

وَ مِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ ۖق عَسٰى أَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا ﴿۷۹﴾

79.और रातके कुछ हिस्सेमें (भी) क़ुरआन के साथ (शब खे़ज़ी करते हुए) नमाज़े तहज्जुद पढ़ा करें येह ख़ास आपके लिए ज़ियादह (की गई) है यक़ीनन आपका रब आपको मक़ामे महमूद पर फ़ाइज़ फ़रमाएगा (या'नी वोह मक़ामे शफ़ाअ़ते उ़ज़मा जहां जुम्ला अव्वलीनो आख़िरीन आपकी तरफ़ रुजूअ़ और आपकी ह़म्द करेंगे)।

وَ قُلْ رَّبِّ أَدْخِلْنِيْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّ أَخْرِجْنِيْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّ اجْعَلْ لِّيْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِيْرًا ﴿۸۰﴾

80. और आप (अपने रबके हुज़ूर येह) अ़र्ज़ करते रहें : ऐ मेरे रब ! मुझे सच्चाई (ख़ुश्नूदी) के साथ दाख़िल फ़रमा (जहां भी दाख़िल फ़रमाना हो) और मुझे सच्चाई (व खूश्नूदी) के साथ बाहर ले आ (जहांसे भी लाना हो) और मुझे अपनी जानिबसे मददगार ग़ल्बा-व-क़ुव्वत अ़ता फ़रमा दे।

وَ قُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَ زَهَقَ الْبَاطِلُ ؕ إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا ﴿۸۱﴾

81. और फ़रमा दीजिए ह़क़ आ गया और बातिल भाग गया, बेशक बातिलने ज़ाइलो नाबूद ही हो जाना है।

وَ نُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّ رَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ وَ لَا يَزِيْدُ الظّٰلِمِيْنَ إِلَّا خَسَارًا ﴿۸۲﴾

82. और हम क़ुरआनमें वोह चीज़ नाज़िल फ़रमा रहे हैं जो ईमानवालों के लिए शिफ़ा और रह़मत है और ज़ालिमों के लिए तो सिर्फ़ नुक़्सान ही में इज़ाफ़ा कर रहा है।

وَ إِذَآ أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنْسَانِ أَعْرَضَ وَ نَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ وَ إِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَـُٔوْسًا ﴿۸۳﴾

83. और जब हम इन्सान पर (कोई) इन्आ़म फ़रमाते हैं तो वोह (शुक्रसे) गुरेज़ करता और पहलू तही कर जाता है और जब उसे कोई तक्लीफ़ पहुंच जाती है तो मायूस हो जाता है (गोया न शाकिर है न साबिर)।

قُلْ كُلٌّ يَّعْمَلُ عَلٰى شَاكِلَتِهٖ ؕ فَرَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ اَهْدٰى سَبِيْلًا ﴿۸۴﴾

84. फ़रमा दीजिए : हर कोई (अपने अपने तरीक़े-व-फ़ित्रत पर अ़मल पैरा है, और आपका रब ख़ूब जानता है कि सबसे ज़ियादह सीधी राह पर कौन है।

وَ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الرُّوْحِ ؕ قُلِ الرُّوْحُ مِنْ اَمْرِ رَبِّيْ وَ مَاۤ اُوْتِيْتُمْ مِّنَ الْعِلْمِ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۸۵﴾

85. और येह (कुफ़्फ़ार) आपसे रूहके मु-त-अ़ल्लिक़ सवाल करते है, फ़रमा दीजिए : रूह मेरे रबके अम्रसे है और तुम्हें बहुत ही थोड़ा सा इल्म दिया गया है।

وَ لَئِنْ شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِالَّذِيْۤ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْكَ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهٖ عَلَيْنَا وَكِيْلًا ﴿۸۶﴾

86. और अगर हम चाहें तो उस (किताब) को जो हमने आपकी तरफ़ वह़ी फ़रमाई है (लोगोंके दिलों और तेह़रीरी नुस्ख़ोंसे) मह्व फ़रमा दें फिर आप अपने लिए उस (वह़ी) के ले जाने पर हमारी बारगाह में कोई वकालत करनेवाला भी न पाएंगे।

اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ؕ اِنَّ فَضْلَهٗ كَانَ عَلَيْكَ كَبِيْرًا ﴿۸۷﴾

87. मगर येह आपके रबकी रह़मतसे (हमने उसे क़ाइम रखा है), बेशक (येह) आप पर (और आपके वसीलेसे आपकी उम्मत पर) उसका बहुत बड़ा फ़ज़्ल है।

قُلْ لَّئِنِ اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَ الْجِنُّ عَلٰۤى اَنْ يَّاْتُوْا بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لَا يَاْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ وَ لَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيْرًا ﴿۸۸﴾

88.फ़रमा दीजिए : अगर तमाम इन्सान और जिन्नात इस बात पर जमा' हो जाएं कि वोह इस कु़रआन के मिस्ल (कोई दूसरा कलाम बना) लाएंगे तो (भी) वोह इसकी मिस्ल नहीं ला सक्ते अगरचे वोह एक दूसरे के मददगार बन जाएं।

وَ لَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؗ فَاَبٰۤى اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ﴿۸۹﴾

89. और बेशक हमने इस कु़रआनमें लोगों के लिए हर तरह़ की मिसाल (मुख़्तलिफ़ तरीक़ोंसे) बारबार बयान की है मगर अक्सर लोगोंने (उसे) कु़बूल न किया (येह) सिवाए ना शुक्री के (और कुछ नहीं)।

وَ قَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى تَفْجُرَ لَنَا مِنَ الْاَرْضِ يَنْۢبُوْعًا ﴿۹۰﴾

90. और वोह (कुफ़्फ़ारे मक्का) केहते हैं कि हम आप पर हरगिज़ ईमान नहीं लाएंगे यहां तक कि आप हमारे लिए ज़मीन से कोई चश्मा जारी कर दें।

اَوْ تَكُوْنَ لَكَ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّ عِنَبٍ فَتُفَجِّرَ الْاَنْهٰرَ خِلٰلَهَا تَفْجِيْرًا ﴿٩١﴾

91. या आपके पास खजूरों और अंगूरों का कोई बाग़ हो तो आप उसके अंदर बेहती हुई नेहरें जारी कर दें।

اَوْ تُسْقِطَ السَّمَآءَ كَمَا زَعَمْتَ عَلَيْنَا كِسَفًا اَوْ تَاْتِيَ بِاللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ قَبِيْلًا ﴿٩٢﴾

92. या जैसा कि आपका ख़याल है हम पर (अभी) आस्मान के चंद टुकड़े गिरा दें या आप अल्लाह को और फ़रिश्तों को हमारे सामने ले आएं।

اَوْ يَكُوْنَ لَكَ بَيْتٌ مِّنْ زُخْرُفٍ اَوْ تَرْقٰى فِي السَّمَآءِ ؕ وَلَنْ نُّؤْمِنَ لِرُقِيِّكَ حَتّٰى تُنَزِّلَ عَلَيْنَا كِتٰبًا نَّقْرَؤُهٗ ؕ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيْ هَلْ كُنْتُ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا ﴿٩٣﴾

93. या आपका कोई सोनेका घर हो (जिसमें आप खूब ऐशसे रहें) या आप आस्मान पर चढ़ जाएं, फिर भी हम आपके (आस्मान में) चढ़ जाने पर हरगिज़ ईमान नहीं लाएंगे यहां तक कि आप (वहांसे) हमारे ऊपर कोई किताब उतार लाएं जिसे हम (खुद) पढ़ सकें, फ़रमा दीजिए : मेरा रब (इन खुराफ़ातमें उलझनेसे) पाक है मैं तो एक इन्सान (और) अल्लाहका भेजा हुवा (रसूल) हूं।

وَ مَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰٓى اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَبَعَثَ اللّٰهُ بَشَرًا رَّسُوْلًا ﴿٩٤﴾

94. और (उन) लोगोंको ईमान लानेसे और कोई चीज़ माने' न हुई जब कि उनके पास हिदायत (भी) आ चुकी थी सिवाए इसके कि वोह केहने लगे : क्या अल्लाहने (एक) बशरको रसूल बना कर भेजा है?

قُلْ لَّوْ كَانَ فِي الْاَرْضِ مَلٰٓئِكَةٌ يَّمْشُوْنَ مُطْمَئِنِّيْنَ لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَلَكًا رَّسُوْلًا ﴿٩٥﴾

95. फ़रमा दीजिए : अगर ज़मीन में (इन्सानों की बजाए) फ़रिश्ते चलते फिरते सुकूनत पज़ीर होते तो यक़ीनन हम (भी) उन पर आस्मानसे किसी फ़रिश्ते को रसूल बना कर उतारते।

قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا بَيْنِيْ وَ بَيْنَكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًا بَصِيْرًا ﴿٩٦﴾

96. फ़रमा दीजिए : मेरे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह ही गवाह के तौर पर काफ़ी है, बेशक वोह अपने बंदोंसे खूब आगाह खूब देखनेवाला है।

وَمَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِهٖ ؕ وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ عُمْيًا وَّ بُكْمًا وَّ صُمًّا ؕ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنٰهُمْ سَعِيْرًا ﴿۹۷﴾

97. और अल्लाह जिसे हिदायत फ़रमा दे तो वोही हिदायत याफ़्ता है, और जिसे वोह गुमराह ठेहरा दे तो आप उनके लिए उसके सिवा मददगार नहीं पाएंगे, और हम उन्हें क़ियामत के दिन औंधे मुंह उठाएंगे इस हालमें कि वोह अँधे, गूंगे और बेहरे होंगे, उनका ठिकाना दोज़ख़ है, जब भी वोह बुझने लगेगी हम उन्हें (अज़ाब देने के लिए)और ज़ियादह भड़का देंगे।

النصف

ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا وَقَالُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا ﴿۹۸﴾

98. येह उन लोगों की सज़ा है इस वजह से कि उन्होंने हमारी आयतों से कुफ़्र किया और येह केहते रहे कि क्या जब हम (मर कर बोसीदह) हड्डियां और और रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे ? तो क्या हम अज़ सरे नव पैदा कर के उठाए जाएंगे ?

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ قَادِرٌ عَلٰٓى اَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ اَجَلًا لَّا رَيْبَ فِيْهِ ؕ فَاَبَى الظّٰلِمُوْنَ اِلَّا كُفُوْرًا ﴿۹۹﴾

99. क्या उन्होंने नहीं देखा कि जिस अल्लाहने आस्मानों और ज़मीनको पैदा फ़रमाया है (वोह) इस बात पर (भी) क़ादिर है कि वोह उन लोगोंकी मिस्ल (दोबारा) पैदा फ़रमा दे और उसने उनके लिए एक वक़्त मुक़र्रर फ़रमा दिया है जिसमें कोई शक नहीं, फिर भी ज़ालिमोंने इन्कार कर दिया है मगर (येह) ना शुक्री है।

قُلْ لَّوْ اَنْتُمْ تَمْلِكُوْنَ خَزَآئِنَ رَحْمَةِ رَبِّيْٓ اِذًا لَّاَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْاِنْفَاقِ ؕ وَكَانَ الْاِنْسَانُ قَتُوْرًا ﴿۱۰۰﴾

ع ١١

100. फ़रमा दीजिए : अगर तुम मेरे रबकी रहमत के ख़ज़ानों के मालिक होते तो तबभी (सब) ख़र्च हो जाने के ख़ौफ़से तुम (अपने हाथ) रोके रखते, और इन्सान बहुतही तंगदिल और बख़ील वाके' हुआ है।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى تِسْعَ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ فَسْـَٔلْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِذْ جَآءَهُمْ فَقَالَ لَهٗ فِرْعَوْنُ اِنِّيْ

101. और बेशक हमने मूसा (عليه السلام) को नव रौशन निशानियां दीं तो आप बनी इसराईल से पूछिए जब (मूसा عليه السلام) उनके पास आए तो फ़िरऔन ने उन से कहा : मैं तो येही ख़याल करता हूं कि ऐ मूसा ! तुम सहर ज़दह हो

لَاَظُنُّكَ يٰمُوْسٰى مَسْحُوْرًا ﴿١٠١﴾

(तुम्हें जादू कर दिया गया है)।

قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ مَآ اَنْزَلَ هٰٓؤُلَآءِ اِلَّا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ بَصَآئِرَ ۚ وَ اِنِّیْ لَاَظُنُّكَ یٰفِرْعَوْنُ مَثْبُوْرًا ﴿١٠٢﴾

102. मूसा(عليه السلام) ने फ़रमाया : तू (दिलसे) जानता है कि इन निशानियोंको किसी और ने नहीं उतारा मगर आस्मानों और ज़मीनके रबने इब्रतो बसीरत बना कर, और मैं तो येही ख़याल करता हूं कि ऐ फ़िरऔन! तुम हलाक ज़दा हो (तू जल्दी हलाक हुवा चाहता है)।

فَاَرَادَ اَنْ یَّسْتَفِزَّهُمْ مِّنَ الْاَرْضِ فَاَغْرَقْنٰهُ وَ مَنْ مَّعَهٗ جَمِیْعًا ﴿١٠٣﴾

103. फिर (फ़िरऔनने) इरादा किया कि उनके (या'नी मूसा (عليه السلام)और उनकी क़ौमको) सर ज़मीने (मिस्र) से उखाड़ कर फेंक दे पस हमने उसे और जो उसके साथ थे सबको ग़र्क़ कर दिया।

وَّ قُلْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ لِبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ اسْكُنُوا الْاَرْضَ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ جِئْنَا بِكُمْ لَفِیْفًا ﴿١٠٤﴾

104. और हमने उसके बाद बनी इसराईल से फ़रमाया : तुम उस मुल्कमें आबाद हो जाओ फिर जब आख़िरतका वा'दा आ जाएगा (तो) हम तुम सब को इकट्ठा समेट कर ले जाएंगे।

وَ بِالْحَقِّ اَنْزَلْنٰهُ وَ بِالْحَقِّ نَزَلَ ؕ وَ مَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّ نَذِیْرًا ﴿١٠٥﴾

105. और हक़के साथ ही हमने इस (कुरआन) को उतारा है और हक़ ही के साथ वोह उतरा है, और (ऐ हबीबे मुकर्रम!) हमने आपको खुश ख़बरी सुनानेवाला और डर सुनानेवाला ही बना कर भेजा है।

وقف لازم

وَ قُرْاٰنًا فَرَقْنٰهُ لِتَقْرَاَهٗ عَلَى النَّاسِ عَلٰى مُكْثٍ وَّ نَزَّلْنٰهُ تَنْزِیْلًا ﴿١٠٦﴾

106.और कुरआनको हमने जुदा जुदा करके उतारा ताकि आप उसे लोगों पर ठहर ठहर कर पढ़ें और हमने उसे रफ़्ता रफ़्ता (हालात और मसालेहके मुताबिक़) तदरीजन उतारा है।

قُلْ اٰمِنُوْا بِهٖۤ اَوْ لَا تُؤْمِنُوْا ؕ اِنَّ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهٖۤ اِذَا یُتْلٰى عَلَیْهِمْ یَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ سُجَّدًا ﴿١٠٧﴾

107.फ़रमा दीजिए : तुम इस पर ईमान लाओ या ईमान न लाओ, बेशक जिन लोगोंको इससे क़ब्ल इल्मे (किताब) अता किया गया था जब येह (कुरआन) उन्हें पढ़ कर सुनाया जाता है वोह ठोड़ियों के बल सज्दे में गिर पड़ते हैं।

وَّيَقُوْلُوْنَ سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنْ كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُوْلًا ۝١٠٨

108. और केहते हैं : हमारा रब पाक है, बेशक हमारे रबका वा'दा पूरा हो कर ही रेहना था।

وَ يَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ يَبْكُوْنَ وَ يَزِيْدُهُمْ خُشُوْعًا ۝١٠٩ السجدة

109. और ठोडियों के बल गिर्या-व-ज़ारी करते हुऐ गिर जाते हैं, और येह (कुरआन) उनके खुशूओ खुजूअ् में मज़ीद इज़ाफ़ा करता चला जाता है।

قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ؕ اَيًّامَّا تَدْعُوْا فَلَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ۝١١٠

110. फ़रमा दीजिए किअल्लाहको पुकारो या रहमानको पुकारो, जिस नामसे भी पुकारते हो (सब) अच्छे नाम उसीके हैं, और न अपनी नमाज़ (में क़िराअत) बुलंद आवाज़ से करें और न बिल्कुल आहिस्ता पढ़ें और दोनों के दरमियान (मो'तदिल) रास्ता इख़्तियार फ़रमाएं।

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّ لَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِى الْمُلْكِ وَ لَمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلِىٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا ۝١١١

111. और फ़रमाइए कि सब ता'रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जिसने न तो (अपने लिए) कोई बेटा बनाया और न ही (उसकी) सल्तनतो फ़रमां रवाई में कोई शरीक है और न कमज़ोरी के बाइस उसका कोई मददगार है (ऐ हबीब!) आप उसीको बुजुर्गतर जान कर उसकी खूब बड़ाई (बयान) करते रहें।

आयातुहा 110 | 18 सूरतुल कह्फ़ि मक्किय्यतुन 29 | रुकूआतुहा 12

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ् जो निहायत महरबान हमेशा रहम फरमानेवाला है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْٓ اَنْزَلَ عَلٰى عَبْدِهِ الْكِتٰبَ وَلَمْ يَجْعَلْ لَّهٗ عِوَجًا ۝١

1. तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जिसने अपने (महबूबो मुक़र्रब) बंदे पर किताबे (अज़ीम) नाज़िल फ़रमाई और इसमें कोई कजी न रखी।

قَيِّمًا لِّيُنْذِرَ بَاْسًا شَدِيْدًا مِّنْ

2. (इसे) सीधा और मो'तदिल (बनाया) ताकि वोह

لَدُنْهُ وَيُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا حَسَنًا ﴿٢﴾

(मुन्किरीन को) अल्लाहकी तरफ़से (आनेवाले) शदीद अज़ाब से डराए और मोमिनीनको जो नेक आ'माल करते हैं खुश ख़बरी सुनाए कि उनके लिए बेहतर अज्र (जन्नत) है।

مَّاكِثِيْنَ فِيْهِ اَبَدًا ﴿٣﴾

3. जिसमें वोह हमेशा रहेंगे।

وَّ يُنْذِرَ الَّذِيْنَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ﴿٤﴾

4. और (नीज़) उन लोगों को डराएं जो केहते हैं कि अल्लाहने (अपने लिए) लड़का बना रखा है।

مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ وَّلَا لِاٰبَآئِهِمْ ؕ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ؕ اِنْ يَّقُوْلُوْنَ اِلَّا كَذِبًا ﴿٥﴾

5. न इसका कोई इल्म उन्हें है और न उनके बापदादा को था, (येह) कितना बड़ा बोल है जो उनके मुंहसे निकल रहा है, वोह (सरासर) झूट के सिवा कुछ केहते ही नहीं।

فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ اِنْ لَّمْ يُؤْمِنُوْا بِهٰذَا الْحَدِيْثِ اَسَفًا ﴿٦﴾

6. (ऐ हबीबे मुकर्रम !) तो क्या आप उनके पीछे शिद्दते ग़ममें अपनी जाने (अज़ीज़ भी) घुला देंगे अगर वोह इस कलामे (रब्बानी) पर ईमान न लाए।

اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِيْنَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ اَيُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ﴿٧﴾

7. और बेशक हमने उन तमाम चीजोंको जो ज़मीन पर हैं इसके लिए बाइसे ज़ीनत (व आराइश) बनाया ताकि हम उन लोगोंको (जो ज़मीन के बासी हैं) आज़माएं कि उनमें से ब-ए'तिबारे अ़मल कौन बेहतर है।

وَ اِنَّا لَجٰعِلُوْنَ مَا عَلَيْهَا صَعِيْدًا جُرُزًا ﴿٨﴾

8. और बेशक हम इन (तमाम) चीज़ोंको जो इस (रूए ज़मीन) पर हैं (नाबूद करके) बंजर मेदान बना देनेवाले हैं।

اَمْ حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحٰبَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيْمِ ۙ كَانُوْا مِنْ اٰيٰتِنَا عَجَبًا ﴿٩﴾

9. क्या आपने येह ख़याल क़िया है कि कहफ़ो रक़ीम (या'नी ग़ार और लौहे ग़ार या वादिए रक़ीम) वाले हमारी (क़ुदरतकी) निशानियों में से (कितनी) अ़जीब निशानी थे।

اِذْ اَوَى الْفِتْيَةُ اِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوْا

10.(वोह वक़्त याद कीजिए) जब चंद नौजवान ग़ारमें

رَبَّنَآ اٰتِنَا مِنۡ لَّدُنۡكَ رَحۡمَةً وَّ هَيِّئۡ لَنَا مِنۡ اَمۡرِنَا رَشَدًا ﴿۱۰﴾

पनाह गुर्जी हुए तो उन्होंने कहा : ऐ हमारे रब ! हमें अपनी बारगाहसे रहमत अ़ता फ़रमा और हमारे काममें राहयाबी (के अस्बाब) मुहय्या फ़रमा।

فَضَرَبۡنَا عَلٰۤى اٰذَانِهِمۡ فِى الۡكَهۡفِ سِنِيۡنَ عَدَدًا ﴿۱۱﴾

11. पस हमने उस ग़ारमें गिनती के चंद साल उनके कानों पर थपकी दे कर (उन्हें सुला दिया)।

ثُمَّ بَعَثۡنٰهُمۡ لِنَعۡلَمَ اَىُّ الۡحِزۡبَيۡنِ اَحۡصٰى لِمَا لَبِثُوۡۤا اَمَدًا ﴿۱۲﴾

120. फिर हमने उन्हें उठा दिया कि देखें दोनों गिरोहोंमें से कौन उस (मुद्दत) को सहीह़ शुमार करनेवाला है जो वोह (ग़ारमें) ठेहरे रहे।

نَحۡنُ نَقُصُّ عَلَيۡكَ نَبَاَهُمۡ بِالۡحَقِّ ‌ؕ اِنَّهُمۡ فِتۡيَةٌ اٰمَنُوۡا بِرَبِّهِمۡ وَزِدۡنٰهُمۡ هُدًى ﴿۱۳﴾

13. (अब) हम आपको उनका ह़ाल सह़ीह़ सह़ीह़ सुनाते हैं, बेशक वोह (चंद) नौजवान थे जो अपने रब पर ईमान लाए और हमने उनके लिए (नूरे) हिदायत में और इज़ाफ़ा फ़रमा दिया।

وَّرَبَطۡنَا عَلٰى قُلُوۡبِهِمۡ اِذۡ قَامُوۡا فَقَالُوۡا رَبُّنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ لَنۡ نَّدۡعُوَا۟ مِنۡ دُوۡنِهٖۤ اِلٰهًا لَّقَدۡ قُلۡنَاۤ اِذًا شَطَطًا ﴿۱۴﴾

14.और हमने उनके दिलोंको (अपने रब्तो निस्बतसे) मज़बूतो मुस्तह़कम फ़रमा दिया, जब वोह (अपने बादशाह के सामने) खड़े हुए तो केहने लगे : हमारा रब तो आस्मानों और ज़मीन का रब है हम उसके सिवा हरगिज़ किसी (झूटे) मा'बूद की परस्तिश नहीं करेंगे (अगर ऐसा करें तो) उस वक़्त हम ज़रूर ह़क़से हटी हुई बात करेंगे।

هٰٓؤُلَاۤءِ قَوۡمُنَا اتَّخَذُوۡا مِنۡ دُوۡنِهٖۤ اٰلِهَةً‌ ؕ لَوۡلَا يَاۡتُوۡنَ عَلَيۡهِمۡ بِسُلۡطٰنٍۭ بَيِّنٍ‌ ؕ فَمَنۡ اَظۡلَمُ مِمَّنِ افۡتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ﴿۱۵﴾

15. येह हमारी क़ौमके लोग हैं, जिन्होंने उसके सिवा कई मा'बूद बना लिए हैं तो येह उन (के मा'बूद होने) पर कोई वाज़ेह़ सनद क्यों नहीं लाते ? सो उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूटा बोहतान बांधता है।

وَاِذِ اعۡتَزَلۡتُمُوۡهُمۡ وَمَا يَعۡبُدُوۡنَ اِلَّا اللّٰهَ فَاۡوٗۤا اِلَى الۡكَهۡفِ يَنۡشُرۡ لَـكُمۡ

16. और (उन नौजवानों ने आपसमें कहा :) जब तुम उनसे और उन (झूटे मा'बूदों) से जिन्हें येह अल्लाहके सिवा

رَبُّكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَ يُهَيِّئْ لَكُمْ مِّنْ اَمْرِكُمْ مِّرْفَقًا ﴿۱۶﴾

पूजते हैं कनारा कश हो गए हो तो तुम (उस) ग़ारमें पनाह ले लो, तुम्हारा रब तुम्हारे लिए अपनी रह्मत कुशादह फ़रमा देगा और तुम्हारे लिए तुम्हारे काम में सहूलत मुहय्या फ़रमा देगा।

وَتَرَى الشَّمْسَ اِذَا طَلَعَتْ تَّزٰوَرُ عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَ اِذَا غَرَبَتْ تَّقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ وَ هُمْ فِيْ فَجْوَةٍ مِّنْهُ ؕ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ ؕ مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَ مَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِيًّا مُّرْشِدًا ﴿۱۷﴾

17. और आप देखते हैं जब सूरज तुलूअ़ होता है तो उनके ग़ारसे दाएं जानिब हट जाता है और जब ग़ुरूब होने लगता है तो उनसे बाएं जानिब कतरा जाता है और वोह उस ग़ारके कुशादह मैदान में (लेटे) हैं, येह (सूरज का अपने रास्ते को बदल लेना) अल्लाहकी (कुदरतकी बड़ी) निशानियों में से है, जिसे अल्लाह हिदायत फ़रमा दे सो वोही हिदायत याफ़्ता है, और जिसे वोह गुमराह ठेहरा दे तो आप उसके लिए कोई वली मुर्शिद (या'नी राह दिखाने वाला मददगार) नहीं पाएंगे।

وَتَحْسَبُهُمْ اَيْقَاظًا وَّ هُمْ رُقُوْدٌ ۖۗ وَّ نُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَ ذَاتَ الشِّمَالِ ۖۗ وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيْدِ ؕ لَوِ اطَّلَعْتَ عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَّ لَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ﴿۱۸﴾

18.और (ऐ सुननेवाले !) तू उन्हें (देखे तो) बेदार ख़याल करेगा हालां कि वोह सोए हुए हैं और हम (वक़्फ़ोंके साथ) उन्हें दाएं जानिब और बाएं जानिब करवटें बदलाते रेहते हैं, और उनका कुत्ता (उनकी) चौखट पर अपने दोनों बाज़ू फैलाए (बैठा) है, अगर तू उन्हें झांक कर देख लेता तो उनसे पीठ फेर कर भाग जाता और तेरे दिलमें उनकी देह्शत भर जाती।

وَ كَذٰلِكَ بَعَثْنٰهُمْ لِيَتَسَآءَلُوْا بَيْنَهُمْ ؕ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ ؕ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ؕ قَالُوْا رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ ؕ فَابْعَثُوْۤا اَحَدَكُمْ بِوَرِقِكُمْ

19. और इसी तरह हमने उन्हें उठा दिया ताकि वोह आपसमें दर्याफ़्त करें,(चुनान्चे) उनमें से एक केहनेवालेने कहा : तुम (यहां) कितना अ़र्सा ठेहरे हो? उन्होंने कहा : हम (यहां) एक दिन या उसका (भी) कुछ हिस्सा ठेहरे हैं, (बिल आख़िर) केहने लगे : तुम्हारा रब ही बेहतर जानता है कि तुम (यहां) कितना अ़र्सा ठेहरे हो, सो तुम अपने में से किसी एकको अपना येह सिक्का दे

هٰذِهٖۤ اِلَى الْمَدِيْنَةِ فَلْيَنْظُرْ اَيُّهَاۤ اَزْكٰى طَعَامًا فَلْيَاْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِّنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ اَحَدًا ﴿١٩﴾

कर शहरकी तरफ़ भेजो फिर वोह देखे कि कौनसा खाना ज़ियादह हलाल और पाकीज़ा है तो उसमें से कुछ खाना तुम्हारे पास ले आए और उसे चाहिए कि (आने जाने और ख़रीदने में) आहिस्तगी और नरमीसे काम ले और किसी एक शख़्स को (भी) तुम्हारी ख़बर न होने दे।

نصف القران باعتبار عدد الحروف بانّ التاء بعد الباء من النصف الاول و اللام الثانية من النصف الاخير ۱۲

اِنَّهُمْ اِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوْكُمْ اَوْ يُعِيْدُوْكُمْ فِيْ مِلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوْۤا اِذًا اَبَدًا ﴿٢٠﴾

20. बेशक अगर उन्होंने तुम (से आगाह हो कर तुम) पर दस्त रस पा ली तो तुम्हें संगसार कर डालेंगे या तुम्हें (जब्रन) अपने मज़हब में पलटा लेंगे और (अगर ऐसा हो गया तो) तब तुम हरगिज़ कभी भी फ़लाह नहीं पाओगे।

وَكَذٰلِكَ اَعْثَرْنَا عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوْۤا اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّاَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيْهَا ۚ اِذْ يَتَنَازَعُوْنَ بَيْنَهُمْ اَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوْا عَلَيْهِمْ بُنْيَانًا ؕ رَبُّهُمْ اَعْلَمُ بِهِمْ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ غَلَبُوْا عَلٰۤى اَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ مَّسْجِدًا ﴿٢١﴾

21. और इस तरह हमने उन (के ह़ाल) पर उन लोगोंको (जो चंद सदियां बाद के थे) मुत्तला' कर दिया ताकि वोह जान लें कि अल्लाह का वा'दा सच्चा है और येह (भी) कि क़ियामत के आनेमें कोई शक नहीं है । जब वोह (बस्तीवाले) आपसमें उनके मुआ़मले में झगड़ा करने लगे (जब अस्ह़ाबे कहफ़ वफ़ात पा गए) तो उन्होंने कहा कि उन (के ग़ार) पर एक इमारत (बतौरे यादगार) बना दो, उनका रब उन (के ह़ाल) से खूब वाक़िफ़ है, उन (ईमानवालों) ने कहा जिन्हें उनके मुआ़मले पर ग़ल्बा ह़ासिल था कि हम उन (के दरवाज़े) पर ज़रूर एक मस्जिद बनाएंगे (ताकि मुसलमान उसमें नमाज पढ़ें और उनकी कु़र्बतसे खुसूसी बरकत ह़ासिल करें)।

سَيَقُوْلُوْنَ ثَلٰثَةٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْمًۢا بِالْغَيْبِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ سَبْعَةٌ وَّثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ ؕ قُلْ رَّبِّيْۤ اَعْلَمُ

22.(अब) कुछ लोग कहेंगे : (अस्ह़ाबे कहफ़) तीन थे उनमें से चौथा उनका कुत्ता था, और बा'ज़ कहेंगे : पांच थे उनमें से छठ्ठा उनका कुत्ता था, येह बिन देखे अंदाजे हैं, और बा'ज़ कहेंगे : (वोह) सात थे और उनमें से आँठवां उनका कुत्ता था । फ़रमा दीजिए : मेरा रबही उनकी ता'दाद को खूब जानता है और सिवाए चंद लोगों के उन

بِعِدَّتِهِمْ مَّا يَعْلَمُهُمْ اِلَّا قَلِيْلٌ
فَلَا تُمَارِ فِيْهِمْ اِلَّا مِرَآءً ظَاهِرًا
وَّلَا تَسْتَفْتِ فِيْهِمْ مِّنْهُمْ اَحَدًا ﴿٢٢﴾

(की सहीह़ ता'दाद) का इल्म किसी को नहीं, सो आप किसी से उनके बारे में बह़स न किया करें सिवाए इस क़दर वज़ाह़तके जो ज़ाहिर हो चुकी है और न उनमें से किसी से उन (अस्ह़ाबे कहफ़) के बारे में कुछ दर्याफ़्त करें।

وَلَا تَقُوْلَنَّ لِشَایْءٍ اِنِّیْ فَاعِلٌ
ذٰلِكَ غَدًا ﴿٢٣﴾

23. और किसी भी चीज़की निस्बत येह हरगिज़ न कहा करें कि मैं इस कामको कल करनेवाला हूं।

اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ
اِذَا نَسِيْتَ وَقُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّهْدِيَنِ
رَبِّيْ لِاَقْرَبَ مِنْ هٰذَا رَشَدًا ﴿٢٤﴾

24. मगर येह कि अगर अल्लाह चाहे (या'नी इन शा अल्लाह केह कर) और अपने रब का ज़िक्र किया करें जब आप भूल जाएं और कहें : उम्मीद है मेरा रब मुझे इससे (भी) क़रीब तर हिदायतकी राह दिखा देगा।

وَلَبِثُوْا فِيْ كَهْفِهِمْ ثَلٰثَ مِائَةٍ
سِنِيْنَ وَازْدَادُوْا تِسْعًا ﴿٢٥﴾

25. और वोह (अस्ह़ाबे कहफ़) अपनी ग़ारमें तीनसौ बरस ठेहरे रहे और उन्होंने (उस पर) नव (साल) और बढ़ा दिए।

قُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوْا لَهٗ غَيْبُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَبْصِرْ بِهٖ وَ
اَسْمِعْ مَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ
وَّلَا يُشْرِكُ فِيْ حُكْمِهٖٓ اَحَدًا ﴿٢٦﴾

26. फ़रमा दीजिए : अल्लाह ही बेहतर जानता है कि वोह कितनी मुद्दत (वहां) ठेहरे रहे आस्मानों और ज़मीन की (सब) पोशीदह बातें उसीके इल्म में हैं, क्या खूब देखनेवाला और क्या खूब सुननेवाला है, उसके सिवा उनका न कोई कारसाज़ है और न वोह अपने हुक्ममें किसी को शरीक फ़रमाता है।

وَاتْلُ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ
رَبِّكَ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ وَلَنْ
تَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ﴿٢٧﴾

27. और आप वोह (कलाम) पढ़ कर सुनाएं जो आपके रब की किताबमें से आपकी तरफ़ वह़ी किया गया है, उसके कलाम को कोई बदलनेवाला नहीं और आप उसके सिवा हरगिज़ कोई जाए पनाह नहीं पाएंगे।

وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ
رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ

28. (ऐ मेरे बंदे !) तू अपने आपको उन लोगों की संगत में जमाए रखा कर जो सुब्हो शाम अपने रबको याद करते

وَجْهَهُ وَلَا تَعْدُ عَيْنٰكَ عَنْهُمْ
تُرِيْدُ زِيْنَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَلَا
تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهُ عَنْ ذِكْرِنَا
وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ وَكَانَ اَمْرُهُ فُرُطًا ﴿٢٨﴾

हैं उसकी रज़ाके तलबगार रेहते हैं (उसकी दीदके मुतमन्नी और उसका मुखड़ा तकने के आरजूमंद हैं) तेरी (मुहब्बत और तवज्जोहकी) निगाहें उन से न हटें, क्या तू (उन फ़कीरोंसे ध्यान हटा कर) दुन्यवी ज़िन्दगीकी आराइश चाहता है, और तू उस शख़्स की इताअ़त (भी) न कर जिसके दिलको हमने अपने ज़िक्रसे ग़ाफ़िल कर दिया है और वोह अपनी हवाए नफ़्सकी पैरवी करता है और उसका हाल हदसे गुज़र गया है।

وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ فَمَنْ شَآءَ
فَلْيُؤْمِنْ وَّ مَنْ شَآءَ فَلْيَكْفُرْ اِنَّآ
اَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ نَارًا اَحَاطَ بِهِمْ
سُرَادِقُهَا وَ اِنْ يَّسْتَغِيْثُوْا يُغَاثُوْا
بِمَآءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِى الْوُجُوْهَ بِئْسَ
الشَّرَابُ وَسَآءَتْ مُرْتَفَقًا ﴿٢٩﴾

29. और फ़रमा दीजिए कि (येह) ह़क़ तुम्हारे रबकी तरफ़से है, पस जो चाहे ईमान ले आए और जो चाहे इन्कार कर दे बेशक हमने ज़ालिमों के लिए (दोज़ख़की) आग तैयार कर रखी है, जिसकी दीवारें उन्हें घेर लेंगी, और अगर वोह (प्यास और तक्लीफ़के बाइस) फ़रियाद करेंगे तो उनकी फरियाद रसी ऐसे पानी से की जाएगी जो पिघले हुऐ तांबे की तरह होगा जो उनके चेहरों को भून देगा, कितना बुरा मशरूब है और कितनी बुरी आरामगाह है।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ مَنْ
اَحْسَنَ عَمَلًا ﴿٣٠﴾

30.बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल किए यक़ीनन हम उस शख़्सका अज्र ज़ाए' नहीं करते जो नेक अ़मल करता है।

اُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِىْ مِنْ
تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ
اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّ يَلْبَسُوْنَ ثِيَابًا
خُضْرًا مِّنْ سُنْدُسٍ وَّ اِسْتَبْرَقٍ
مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ نِعْمَ
الثَّوَابُ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ﴿٣١﴾

31. उन लोगों के लिए हमेशा (आबाद) रेहनेवाले बाग़ात हैं (जिनमें) उन (के महल्लात) के नीचे नेहरें जारी हैं उन्हें उन जन्नतों में सोने के कंगन पहनाऐ जाएंगे और वोह बारीक दीबा और भारी अत्लस के (रेशमी) सब्ज़ लिबास पहनेंगे और पुर तकल्लुफ तख़्तों पर तकिए लगाए बैठे होंगे, क्या खूब सवाब है, और कितनी हसीन आरामगाह है।

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِأَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ أَعْنَابٍ وَّحَفَفْنٰهُمَا بِنَخْلٍ وَّجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زَرْعًا ﴿٣٢﴾

32. और आप उनसे उन दोनों शख़्सोंकी मिसाल बयान करें जिनमें से एक के लिए हमने अँगूर के दो बाग़ात बनाए और हमने उन दोनोंको तमाम अतराफ़से खजूरके दरख़्तों के साथ ढांप दिया और हमने उनके दरमियान (सर सब्ज़ो शादाब) खेतियां उगा दीं।

كِلْتَا الْجَنَّتَيْنِ اٰتَتْ أُكُلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِّنْهُ شَيْـًٔا ۙ وَّفَجَّرْنَا خِلٰلَهُمَا نَهَرًا ﴿٣٣﴾

33. येह दोनों बाग़ (कसरत से) अपने फल लाए और उनकी (पैदावार) में कोई कमी न रही और हमने उन दोनों (में से हर एक) के दरमियान एक नहर (भी) जारी कर दी।

وَّكَانَ لَهُ ثَمَرٌ ۚ فَقَالَ لِصَاحِبِهِ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ أَنَا أَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَّأَعَزُّ نَفَرًا ﴿٣٤﴾

34. और उस शख़्सके पास (उसके सिवा भी) बहुतसे फल (या'नी वसाइल) थे, तो उसने अपने साथी से कहा और वोह उससे तबादिलए ख़्याल कर रहा था कि मैं तुझसे मालो दौलत में कहीं ज़ियादह हूं और क़बीला-व-ख़ानदान के लिहाज़ से (भी) ज़ियादह बा इज़्ज़त हूं।

وَدَخَلَ جَنَّتَهُ وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ ۚ قَالَ مَآ أَظُنُّ أَنْ تَبِيدَ هٰذِهٖٓ أَبَدًا ﴿٣٥﴾

35. और वोह (उसे ले कर) अपने बाग़में दाख़िल हुआ (तकब्बुर की सूरतमें) अपनी जान पर जुल्म करते हुए केहने लगा : मैं येह गुमान (ही) नहीं करता कि येह बाग़ तबाह होगा।

وَّمَآ أَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ وَّلَئِنْ رُّدِدْتُّ إِلٰى رَبِّي لَأَجِدَنَّ خَيْرًا مِّنْهَا مُنْقَلَبًا ﴿٣٦﴾

36. और न ही येह गुमान करता हूं कि क़ियामत क़ाइम होगी और अगर (बिल फ़र्ज़) मैं अपने रबकी तरफ़ लौटाया भी गया तो भी यक़ीनन में उन बाग़ातसे बेहतर पलटने की जगह पाऊंगा।

قَالَ لَهُ صَاحِبُهُ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ أَكَفَرْتَ بِالَّذِي خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ سَوّٰىكَ رَجُلًا ﴿٣٧﴾

37. उसके साथीने उससे कहा और वोह उससे तबादिलए ख़्याल कर रहा था क्या तूने उस (रब) का इन्कार किया है जिसने तुझे (अव्वलन) मिट्टीसे पैदा किया फिर एक तौलीदी क़तरे से फिर तुझे (जिस्मानी तौर पर) पूरा मर्द बना दिया।

لٰكِنَّا۠ هُوَ اللّٰهُ رَبِّيْ وَ لَاۤ اُشْرِكُ
بِرَبِّيْۤ اَحَدًا ﴿۳۸﴾

38. लेकिन मैं (तो येह केहता हूं) कि वोही अल्लाह मेरा रब है और मैं अपने रबके साथ किसीको शरीक नहीं गरदानता।

وَ لَوْ لَاۤ اِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ
مَا شَآءَ اللّٰهُ ۙ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ۚ
اِنْ تَرَنِ اَنَا اَقَلَّ مِنْكَ مَالًا وَّ
وَلَدًا ۚ ﴿۳۹﴾

39. और जब तू अपने बाग़में दाख़िल हुआ तो तूने क्यों नहीं कहा ''मा शा अल्लाहु ला कुव्व-त इल्ला बिल्लाह'' (वोही होना है जो अल्लाह चाहे किसी को कुछ ताक़त नहीं मगर अल्लाह की मददसे), अगर तू (इस वक़्त) मुझे मालो औलादमें अपने से कमतर देखता है (तो क्या हुवा)।

فَعَسٰى رَبِّيْۤ اَنْ يُّؤْتِيَنِ خَيْرًا مِّنْ
جَنَّتِكَ وَ يُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ
السَّمَآءِ فَتُصْبِحَ صَعِيْدًا زَلَقًا ۙ ﴿۴۰﴾

40. कुछ बईद नहीं कि मेरा रब मुझे तेरे बाग़से बेहतर अ़ता फ़रमाए और उस (बाग) पर आस्मान से कोई अ़ज़ाब भेज दे फिर वोह चटियल चिकनी ज़मीन बन जाए।

اَوْ يُصْبِحَ مَآؤُهَا غَوْرًا فَلَنْ
تَسْتَطِيْعَ لَهٗ طَلَبًا ﴿۴۱﴾

41. या उसका पानी ज़मीन की गेहराईमें चला जाए फिर तू उसे हा़सिल करनेकी ताक़तभी न पा सके ।

وَ اُحِيْطَ بِثَمَرِهٖ فَاَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ
عَلٰى مَاۤ اَنْفَقَ فِيْهَا وَ هِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى
عُرُوْشِهَا وَ يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ لَمْ
اُشْرِكْ بِرَبِّيْۤ اَحَدًا ﴿۴۲﴾

42. और (इस तकब्बुर के बाइस) उसके (सारे) फल (तबाहीमें) घेर लिए गए तो सुब्ह़को वोह उस पूंजी पर जो उसने उस (बाग़ के लगाने) में ख़र्च की थी कफ़े अफ़्सोस मलता रेह गया और वोह बाग़ अपने छप्परों पर गिरा पड़ा था और वोह (सरापा ह़सरतो यास बन कर) केह रहा था : हाए काश ! मैंने अपने रबके साथ किसीको शरीक न ठेहराया होता (और अपने उपर घमंड न किया होता)।

وَ لَمْ تَكُنْ لَّهٗ فِئَةٌ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ وَ مَا كَانَ مُنْتَصِرًا ؕ ﴿۴۳﴾

43. और उसके लिए कोई गिरोह (भी) ऐसा न था जो अल्लाह के मुक़ाबले में उसकी मदद करते और न वोह खुद (ही उस तबाही का) बदला लेने के क़ाबिल था।

هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ لِلّٰهِ الْحَقِّ ؕ هُوَ

44. यहां (पता चलता है) कि सब इख़्तियार अल्लाह ही

خَيْرٌ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ عُقْبًا ﴿٤٤﴾

का है (जो) हक़ है, वोही बेहतर है इनाम देने में और वोही बेहतर है अंजाम करने में।

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ فَاَصْبَحَ هَشِيْمًا تَذْرُوْهُ الرِّيٰحُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ مُّقْتَدِرًا ﴿٤٥﴾

45. और आप उन्हें दुन्यवी ज़िन्दगी की मिसाल (भी) बयान कीजिए (जो) उस पानी जैसी है जिसे हमने आस्मानकी तरफ़से उतारा तो उसके बाइस ज़मीन का सब्ज़ा खूब घना हो गया फिर वोह सूखी घास का चूरा बन गया जिसे हवाएं उड़ा ले जाती हैं, और अल्लाह हर चीज़ पर कामिल कुदरतवाला है।

اَلْمَالُ وَالْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ اَمَلًا ﴿٤٦﴾

46. माल और औलाद (तो सिर्फ़) दुन्यवी ज़िन्दगी की ज़ीनत हैं और (हक़ीक़त में) बाक़ी रेहनेवाली (तो) नेकियां (हैं जो) आपके रबके नज़दीक सवाब के लिहाज़ से (भी) बेहतर हैं और आरजू के लिहाज़ से (भी) खूबतर हैं।

وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْاَرْضَ بَارِزَةً ۙ وَّحَشَرْنٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ اَحَدًا ۚ ﴿٤٧﴾

47. वोह दिन (क़ियामत का) होगा जब हम पहाड़ों को (रेज़ा रेज़ा करके फ़िज़ा में) चलाएंगे और आप ज़मीन को साफ़ मेदान देखेंगे (उस पर शजर, हजर और हैवानातो नबातात में से कुछ भी न होगा) और हम सब इन्सानों को जमा' फ़रमाएंगे और उनमें से किसीको (भी) नहीं छोड़ेंगे।

وَعُرِضُوْا عَلٰى رَبِّكَ صَفًّا ؕ لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍۢ بَلْ زَعَمْتُمْ اَلَّنْ نَّجْعَلَ لَكُمْ مَّوْعِدًا ﴿٤٨﴾

48. और (सब लोग) आपके रबके हुज़ूर क़तार दर क़तार पेश किए जाएंगे, (उनसे कहा जाएगा) बेशक तुम हमारे पास (आज उसी तरह) आए हो जैसा कि हमने तुम्हें पहली बार पैदा किया था बल्कि तुम येह गुमान करते थे कि हम तुम्हारे लिए हरगिज़ वा'दे का वक्त मुक़र्रर ही नहीं करेंगे।

وَوُضِعَ الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا فِيْهِ وَيَقُوْلُوْنَ

49. और (हर एकके सामने) आ'मालनामा रख दिया जाएगा सो आप मुजरिमों को देखेंगे (वोह) उन (गुनाहों

يٰوَيْلَتَنَا مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّآ اَحْصٰهَا ۚ وَوَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا ۗ وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ اَحَدًا ﴿٤٩﴾

और जुर्मों) से ख़ौफ़ज़दा होंगे जो उस (आ'मालनामे) में दर्ज होंगे और कहेंगे : हाए हलाकत ! इस आ'मालनामे को क्या हुवा है इसने न कोई छोटी (बात) छोड़ी है और न कोई बड़ी (बात), मगर इसने (हर हर बातको) शुमार कर लिया है और वोह जो कुछ करते रहे थे (अपने सामने) हाज़िर पाएंगे, और आपका रब किसी पर ज़ुल्म न फ़रमाएगा।

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۗ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ اَمْرِ رَبِّهٖ ۗ اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗٓ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ۗ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا ﴿٥٠﴾

50. और (वोह वक़्त याद कीजिऐ) जब हमने फ़रिश्तोंसे फ़रमाया कि तुम आदम (عليه السلام) को सज्दए (ता'ज़ीम) करो सो उन (सब) ने सज्दह किया सिवाए इबलीसके, वोह (इब्लीस) जिन्नात में से था तो वोह अपने रबकी ताअ़त से बाहर निकल गया, क्या तुम उसको और उसकी औलाद को मुझे छोड़ कर दोस्त बना रहे हो हालांकि वोह तुम्हारे दुश्मन हैं, येह ज़ालिमों के लिए क्या ही बुरा बदल है (जो उन्होंने मेरी जगह मुन्तख़ब किया है)।

مَآ اَشْهَدْتُّهُمْ خَلْقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَا خَلْقَ اَنْفُسِهِمْ ۖ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ الْمُضِلِّيْنَ عَضُدًا ﴿٥١﴾

51. मैंने न (तो) उन्हें आस्मानों और ज़मीनकी तख़्लीक़ पर (मुआ़विनत या गवाही के लिए) बुलाया था और न ख़ुद उनकी अपनी तख़्लीक़ (के वक़्त), और न (ही) मैं ऐसा था कि गुमराह करनेवालोंको (अपना) दस्तो बाज़ू बनाता।

وَيَوْمَ يَقُوْلُ نَادُوْا شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ مَّوْبِقًا ﴿٥٢﴾

52. और वोह दिन (याद करो जब) अल्लाह फ़रमाएगा उन्हें पुकारो जिन्हें तुम मेरा शरीक गुमान करते थे सो वोह उन्हें बुलाएंगे मगर वोह उन्हें कोई जवाब न देंगे और हम उनके दरमियान (एक वादिए जहन्नम को) हलाकत की जगह बना देंगे।

وَرَاَ الْمُجْرِمُوْنَ النَّارَ فَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مُّوَاقِعُوْهَا وَلَمْ يَجِدُوْا عَنْهَا مَصْرِفًا ﴿٥٣﴾

53. और मुजरिम लोग आतिशे दोज़ख़को देखेंगे तो जान लेंगे कि वोह यक़ीनन उसीमें गिरनेवाले हैं और वोह उससे गुरेज़ की कोई जगह न पा सकेंगे।

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؕ وَكَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا ﴿۵۴﴾

54. और बेशक हमने इस कुरआनमें लोगोंके लिए हर तरहकी मिसालको (अंदाज़ बदल बदल कर) बार बार बयान किया है, और इन्सान झगड़ने में हर चीज़से बढ़ कर है।

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْۤا اِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰى وَيَسْتَغْفِرُوْا رَبَّهُمْ اِلَّاۤ اَنْ تَاْتِيَهُمْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ﴿۵۵﴾

55.और लोगों को जबकि उनके पास हिदायत आ चुकी थी किसीने (इस बातसे) मना' नहीं किया था कि वोह ईमान लाएं और अपने रबसे मग़फ़िरत तलब करें सिवाए उस (इन्तिज़ार) के कि उन्हें अगले लोगों का तरीक़ए (हलाकत) पेश आए या अज़ाब उनके सामने आ जाए।

وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوْۤا اٰيٰتِيْ وَمَاۤ اُنْذِرُوْا هُزُوًا ﴿۵۶﴾

56. और हम रसूलों को नहीं भेजा करते मगर (लोगोंको) खुशखबरी सुनानेवाले और डर सुनानेवाले (बना कर), और काफ़िर लोग (उन रसूलों से) बेहूदा बातों के सहारे झगड़ा करते हैं ताकि उस (बातिल) के ज़रीए हक़ को ज़ाइल कर दें और वोह मेरी आयतोंको और उस (अज़ाब) को जिससे वोह डराए जाते हैं हंसी मज़ाक़ बना लेते हैं।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ فَاَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ يَدٰهُ ؕ اِنَّا جَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْۤ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ؕ وَاِنْ تَدْعُهُمْ اِلَى الْهُدٰى فَلَنْ يَّهْتَدُوْۤا اِذًا اَبَدًا ﴿۵۷﴾

57. और उस शख़्ससे बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जिसे उसके रब की निशानियां याद दिलाई गईं तो उसने उनसे रू गरदानी की और उन (बद आ'मालियों) को भूल गया जो उसके हाथ आगे भेज चुके थे, बेशक हमने उनके दिलों पर पर्दे डाल दिए हैं कि वोह उस हक़ को समझ (न) सकें और उनके कानोंमें बोझ पैदा कर दिया है (कि वोह उस हक़ को सुन न सकें), और अगर आप उन्हें हिदायत की तरफ़ बुलाएं तो वोह कभी भी क़त्अ़न हिदायत नहीं पाएंगे।

وَرَبُّكَ الْغَفُوْرُ ذُو الرَّحْمَةِ ؕ لَوْ يُؤَاخِذُهُمْ بِمَا كَسَبُوْا لَعَجَّلَ لَهُمُ

58. और आप का रब बड़ा बख़्शनेवाला साहिबे रहमत है, अगर वोह उनके किए पर उनका मुवाख़ज़ा फ़रमाता तो उन पर यक़ीनन जल्द अज़ाब भेजता, बल्कि उनके

الْعَذَابَ ؕ بَلْ لَّهُمْ مَّوْعِدٌ لَّنْ يَّجِدُوْا مِنْ دُوْنِهٖ مَوْىِٕلًا ﴿٥٨﴾

लिए (तो) वक़्ते वा'दा (मुक़र्रर) है (जब वोह वक़्त आएगा तो) उसके सिवा हरगिज़ कोई जाए पनाह नहीं पाएंगे।

وَتِلْكَ الْقُرٰٓى اَهْلَكْنٰهُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِمْ مَّوْعِدًا ﴿٥٩﴾

59- और येह बस्तियां हैं हमने जिनके रेहनेवालों को हलाक कर डाला जब उन्होंने ज़ुल्म किया और हमने उनकी हलाकत के लिए एक वक़्त मुक़र्रर कर रखा था।

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِفَتٰىهُ لَآ اَبْرَحُ حَتّٰٓى اَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ اَوْ اَمْضِيَ حُقُبًا ﴿٦٠﴾

60. और (वोह वाक़िआ भी याद कीजिए) जब मूसा (عليه السلام) ने अपने (जवां साल साथी और) ख़ादिम (यूशा' बिन नून عليه السلام) से कहा : मैं (पीछे) नहीं हट सक्ता यहां तककि मैं दो दरियाओंके संगमकी जगह तक पहोंच जाऊं या मुद्दतों चलता रहूं।

فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنِهِمَا نَسِيَا حُوْتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِي الْبَحْرِ سَرَبًا ﴿٦١﴾

61. सो जब वोह दोनों दो दरियाओंके दरमियान संगम पर पहुंचे तो वोह दोनों अपनी (मछली) (वहीं) भूल गए पस वोह (तली हुई मछली ज़िन्दा हो कर) दरिया में सुरंगकी तरह अपना रास्ता बनाते हुऐ (निकल गई)।

فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتٰىهُ اٰتِنَا غَدَآءَنَا ؗ لَقَدْ لَقِيْنَا مِنْ سَفَرِنَا هٰذَا نَصَبًا ﴿٦٢﴾

62. फिर जब वोह दोनों आगे बढ़ गए (तो) मूसा (عليه السلام) ने अपने ख़ादिमसे कहा : हमारा खाना हमारे पास लाओ बेशक हमने अपने इस सफ़रमें बड़ी मशक़्क़त का सामना किया है।

قَالَ اَرَءَيْتَ اِذْ اَوَيْنَآ اِلَى الصَّخْرَةِ فَاِنِّيْ نَسِيْتُ الْحُوْتَ ؗ وَمَآ اَنْسٰنِيْهُ اِلَّا الشَّيْطٰنُ اَنْ اَذْكُرَهٗ ۚ وَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِي الْبَحْرِ ۖ عَجَبًا ﴿٦٣﴾

63. (ख़ादिम ने) कहा : क्या आपने देखा जब हमने पथ्थरके पास आराम किया था तो मैं (वहां) मछली भूल गया था, और मुझे येह किसीने नहीं भुलाया सिवाए शैतानके कि मैं आपसे उसका ज़िक्र करूं, और उस (मछली) ने तो (ज़िन्दा हो कर)दरिया में अ़जीब तरीक़ेसे अपना रास्ता बना लिया था (और वोह ग़ाइब हो गई थी)।

قَالَ ذٰلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِ ۖ فَارْتَدَّا

64. मूसा (عليه السلام) ने कहा : येही वोह (मुक़ाम) है हम

عَلٰٓى اٰثَارِهِمَا قَصَصًا ﴿٦٤﴾

जिसे तलाश कर रहे थे, पस दोनों अपने क़दमोंके निशानात पर (वोही रास्ता) तलाश करते हुऐ (उसी मुक़ाम पर) वापस पलट आए।

فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَآ اٰتَيْنٰهُ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَعَلَّمْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا ﴿٦٥﴾

65. तो दोनों ने (वहां) हमारे बंदों में से एक (ख़ास) बंदे (ख़िज़्र عليه السلام) को पा लिया जिसे हमने अपनी बारगाहसे (खुसूसी) रह्मत अ़ता की थी और हमने उसे अपना इल्मे लदुन्नी (या'नी असरारो मआ़रिफ़ का इल्हामी इल्म) सिखाया था।

قَالَ لَهٗ مُوْسٰى هَلْ اَتَّبِعُكَ عَلٰٓى اَنْ تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا ﴿٦٦﴾

66. उससे मूसा (عليه السلام) ने कहा : क्या मैं आपके साथ इस (शर्त) पर रेह सक्ता हूं कि आप मुझे (भी) उस इल्ममें से कुछ सिखाएंगे जो आपको बग़र्ज़े इर्शाद सिखाया गया है।

قَالَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٦٧﴾

67. उस (ख़िज़्र عليه السلام) ने कहा : बेशक आप मेरे साथ रेह कर हरगिज़ सब्र न कर सकेंगे।

وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلٰى مَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ خُبْرًا ﴿٦٨﴾

68. और आप इस (बात) पर कैसे सब्र कर सक्ते हैं जिसे आप (पूरे तौर पर) अपने अहातऐ इल्म में नहीं लाए होंगे?

قَالَ سَتَجِدُنِيْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ صَابِرًا وَّلَآ اَعْصِيْ لَكَ اَمْرًا ﴿٦٩﴾

69. मूसा (عليه السلام) ने कहा : आप इन शा अल्लाह मुझे ज़रूर साबिर पाएंगे और मैं आपकी किसी बातकी ख़िलाफ़ वर्ज़ी नहीं करूंगा।

قَالَ فَاِنِ اتَّبَعْتَنِيْ فَلَا تَسْــَٔلْنِيْ عَنْ شَيْءٍ حَتّٰٓى اُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ﴿٧٠﴾ ع

70. (ख़िज़्र عليه السلام ने) कहा : पस अगर आप मेरे साथ रहें तो मुझसे किसी चीज़की बाबत सवाल न करें यहां तक कि मैं खुद आपसे उसका ज़िक्र कर दूं।

ع ٩ ١١ ٢١

فَانْطَلَقَا ۫ وقفة حَتّٰٓى اِذَا رَكِبَا فِي السَّفِيْنَةِ خَرَقَهَا ۭ قَالَ اَخَرَقْتَهَا

71. पस दोनों चल दिए यहां तक कि जब दोनों कश्ती में सवार हुए (तो ख़िज़्र عليه السلام ने) उस (कश्ती) में शिगाफ़

لِتُغْرِقَ اَهْلَهَا ۚ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا اِمْرًا ﴿٧١﴾

कर दिया, मूसा عليه السلام ने कहा : क्या आपने उसे इस लिए (शिगाफ़ करके) फ़ाड़ डाला है कि आप कश्तीवालों को ग़र्क़ कर दें, बेशक आपने बड़ी अ़जीब बात की।

قَالَ اَلَمْ اَقُلْ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٧٢﴾

72. (ख़िज़्र عليه السلام ने) कहा : क्या मैंने नहीं कहा था कि आप मेरे साथ रेह कर हरगिज़ सब्र नहीं कर सकेंगे ?

قَالَ لَا تُؤَاخِذْنِيْ بِمَا نَسِيْتُ وَ لَا تُرْهِقْنِيْ مِنْ اَمْرِيْ عُسْرًا ﴿٧٣﴾

73.मूसा عليه السلام ने कहा : आप मेरी भूल पर मेरी गिरफ़्त न करें और मेरे (इस) मुआ़मले में मुझे ज़ियादह मुश्किल में न डालें।

فَانْطَلَقَا ٚ حَتّٰۤى اِذَا لَقِيَا غُلٰمًا فَقَتَلَهٗ ۙ قَالَ اَقَتَلْتَ نَفْسًا زَكِيَّةًۢ بِغَيْرِ نَفْسٍ ؕ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا نُّكْرًا ﴿٧٤﴾

74. फिर वोह दोनों चल दिए यहां तक कि दोनों एक लड़के से मिले तो (ख़िज़्र عليه السلام ने) उसे क़त्ल कर डाला मूसा (عليه السلام)ने कहा : क्या आपने बेगुनाह जानको बिग़ैर किसी जान (के बदले) के क़त्ल कर दिया है, बेशक आपने बड़ा ही सख़्त काम किया है।

قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٧٥﴾

75. (ख़िज़्र عليه السلام ने) कहा : क्या मैंने आपसे नहीं कहा था कि आप मेरे साथ रेह कर हरगिज़ सब्र न कर सकेंगे?

قَالَ اِنْ سَاَلْتُكَ عَنْ شَيْءٍۢ بَعْدَهَا فَلَا تُصٰحِبْنِيْ ۚ قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَّدُنِّيْ عُذْرًا ﴿٧٦﴾

76. मूसा (عليه السلام) ने कहा : अगर मैं इसके बाद आपसे किसी चीज़की निस्बत सवाल करूं तो आप मुझे अपने साथ न रखिएगा, बेशक मेरी तरफ़से आप हद्दे उज़्रको पहुंच गए हैं।

فَانْطَلَقَا ۫ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَتَيَاۤ اَهْلَ قَرْيَةِ ِۨ اسْتَطْعَمَاۤ اَهْلَهَا فَاَبَوْا اَنْ يُّضَيِّفُوْهُمَا فَوَجَدَا فِيْهَا جِدَارًا يُّرِيْدُ اَنْ يَّنْقَضَّ فَاَقَامَهٗ ؕ قَالَ لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ اَجْرًا ﴿٧٧﴾

77. फिर दोनों चल पड़े यहां तक कि जब दोनों एक बस्तीवालों के पास आ पहुंचे, दोनोंने वहां के बाशिन्दों से खाना तलब किया तो उन्होंने उन दोनोंकी मेज़बानी करनेसे इन्कार कर दिया, फिर दोनोंने वहां एक दीवार पाई जो गिरा चाहती थी तो (ख़िज़्र عليه السلام ने) उसे सीधा कर दिया, मूसा (عليه السلام) ने कहा : अगर आप चाहते तो उस (ता'मीर) पर मज़दूरी ले लेते।

قَالَ هٰذَا فِرَاقُ بَيْنِيْ وَبَيْنِكَ ۚ سَاُنَبِّئُكَ بِتَاْوِيْلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ﴿٧٨﴾

78. (ख़िज़्र عليه السلام ने) कहा : येह मेरे और आपके दरमियान जुदाई (का वक़्त) है, अब मैं आपको उन बातोंकी हक़ीक़तसे आगाह किए देता हूं जिन पर आप सब्र नहीं कर सके।

اَمَّا السَّفِيْنَةُ فَكَانَتْ لِمَسٰكِيْنَ يَعْمَلُوْنَ فِي الْبَحْرِ فَاَرَدْتُّ اَنْ اَعِيْبَهَا وَكَانَ وَرَآءَهُمْ مَّلِكٌ يَّاْخُذُ كُلَّ سَفِيْنَةٍ غَصْبًا ﴿٧٩﴾

79. वोह जो कश्ती थी सो वोह चंद ग़रीब लोगों की थी वोह दरियामें मेहनत मज़दूरी किया करते थे पस मैंने इरादा किया कि उसे ऐबदार कर दूं और (उस की वजह येह थी कि) उनके आगे एक (जाबिर) बादशाह (खड़ा) था जो हर (बे ऐब) कश्ती को ज़बर दस्ती (मालिकों से बिला मुआवज़ा) छीन रहा था।

وَاَمَّا الْغُلٰمُ فَكَانَ اَبَوٰهُ مُؤْمِنَيْنِ فَخَشِيْنَاۤ اَنْ يُّرْهِقَهُمَا طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ﴿٨٠﴾

80. और वोह जो लड़का था तो उसके मां बाप साहिबे ईमान थे पस हमें अन्देशा हुआ कि येह (अगर ज़िन्दा रहा तो काफ़िर बनेगा और) उन दोनों को (बड़ा हो कर) सरकशी और कुफ़्रमें मुब्तिला कर देगा।

فَاَرَدْنَاۤ اَنْ يُّبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِّنْهُ زَكٰوةً وَّاَقْرَبَ رُحْمًا ﴿۸۱﴾

81. पस हमने इरादा किया कि उनका रब उन्हें (ऐसा) बदल अ़ता फ़रमाए जो पाकीज़गी में (भी) उस (लड़के) से बेहतर हो और शफ़्क़तो रह़मदिली में (भी वालिदैन से) क़रीबतर हो।

وَ اَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلٰمَيْنِ يَتِيْمَيْنِ فِي الْمَدِيْنَةِ وَكَانَ تَحْتَهٗ كَنْزٌ لَّهُمَا وَكَانَ اَبُوْهُمَا صَالِحًا ۚ فَاَرَادَ رَبُّكَ اَنْ يَّبْلُغَاۤ اَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا ۖ رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۚ وَمَا فَعَلْتُهٗ عَنْ اَمْرِيْ ؕ ذٰلِكَ تَاْوِيْلُ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ﴿۸۲﴾

82. और वोह जो दीवार थी तो वोह शहर में (रेहनेवाले) दो यतीम बच्चों की थी और उसके नीचे उन दोनों के लिए एक ख़ज़ाना (मदफ़ून) था और उनका बाप सालेह़ (शख़्स) था, सो आपके रबने इरादा किया कि वोह दोनों अपनी जवानीको पहुंच जाएं और आपके रबकी रह़मतसे वोह अपना ख़ज़ाना (ख़ुद ही) निकालें, और मैंने (जो कुछ भी किया) वोह अज़् ख़ुद नहीं किया, येह उन (वाक़िआ़त) की ह़क़ीक़त है जिन पर आप सब्र न कर सके।

ع ۱۲

وَ يَسْــَٔلُوْنَكَ عَنْ ذِي الْقَرْنَيْنِ ؕ قُلْ سَاَتْلُوْا عَلَيْكُمْ مِّنْهُ ذِكْرًا ﴿۸۳﴾

83. और (ऐ ह़बीबे मुअ़ज़्ज़म !) येह आपसे ज़ुलक़रनैन के बारेमें सवाल करते हैं, फ़रमा दीजिए : मैं अभी तुम्हें उसके ह़ाल का तज़किरा पढ़ कर सुनाता हूं।

اِنَّا مَكَّنَّا لَهٗ فِي الْاَرْضِ وَاٰتَيْنٰهُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ﴿۸۴﴾

84. बेशक हमने उसे (ज़मानए क़दीम में) ज़मीन पर इक़्तिदार बख़्शा था और हमने उस(की सल्तनत) को तमाम वसाइलो अस्बाब से नवाज़ा था।

فَاَتْبَعَ سَبَبًا ﴿۸۵﴾

85. पस वोह (मज़ीद) अस्बाब के पीछे चल पड़ा।

حَتّٰۤى اِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِيْ عَيْنٍ حَمِئَةٍ وَّوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا ؕ قُلْنَا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِمَّاۤ اَنْ تُعَذِّبَ

86. यहां तक कि वोह ग़ुरूबे आफ़्ताब (की सम्त आबादी) के आख़िरी किनारे पर जा पहुंचा वहां उसने सूरजके ग़ुरूब के मन्ज़र को ऐसे महसूस किया जैसे वोह (कीचड़की तरह सियाह रंग) पानीके गरम चश्मे में डूब रहा हो और उसने वहां एक क़ौमको (आबाद) पाया। हमने फ़रमाया : ऐ ज़ुलक़रनैन! (येह तुम्हारी मरज़ी पर

وَ اِمَّآ اَنْ تَتَّخِذَ فِيْهِمْ حُسْنًا ﴿٨٦﴾

मुन्हसिर है) ख़्वाह तुम उन्हें सज़ा दो या उनके साथ अच्छा सुलूक करो।

قَالَ اَمَّا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ نُعَذِّبُهٗ ثُمَّ يُرَدُّ اِلٰى رَبِّهٖ فَيُعَذِّبُهٗ عَذَابًا نُّكْرًا ﴿٨٧﴾

87. ज़ुल क़रनैनने कहा : जो शख़्स (कुफ़्रो फ़िस्क़की सूरत में) ज़ुल्म करेगा तो हम उसे ज़रूर सज़ा देंगे, फिर वोह अपने रबकी तरफ़ लौटाया जाएगा, फिर वोह उसे बहुत ही सख़्त अज़ाब देगा।

وَ اَمَّا مَنْ اٰمَنَ وَ عَمِلَ صَالِحًا فَلَهٗ جَزَآءَ ۨ الْحُسْنٰى ۚ وَ سَنَقُوْلُ لَهٗ مِنْ اَمْرِنَا يُسْرًا ﴿٨٨﴾

88. और जो शख़्स ईमान ले आएगा और नेक अ़मल करेगा तो उसके लिए बेहतर जज़ा है और हम (भी) उसके लिए अपने अहकाममें आसान बात कहेंगे।

ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٩﴾

89. (मग़रिबमें फ़ुतूहात मुकम्मल करने के बाद) फिर वोह (दूसरे) रास्ते पर चल पड़ा।

حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ عَلٰى قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَلْ لَّهُمْ مِّنْ دُوْنِهَا سِتْرًا ﴿٩٠﴾

90. यहां तक कि वोह तुलूए आफ़ताब (की सम्त आबादी) के आख़िरी किनारे पर जा पहुंचा, वहां उसने सूरज (के तुलूअ़ के मन्ज़र) को ऐसे महसूस किया (जैसे) सूरज (ज़मीनके उस ख़ित्ते पर आबाद) एक क़ौम पर उभर रहा हो जिस के लिए हमने सूरजसे (बचावकी ख़ातिर) कोई हिजाब तक नहीं बनाया था (या'नी वोह लोग बिग़ैर लिबास और मकान के ग़ारों में रेहते थे)।

كَذٰلِكَ ؕ وَ قَدْ اَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ﴿٩١﴾

91. वाक़िआ़ इसी त़रह है, और जो कुछ उसके पास था हमने अपने इ़ल्मसे उसका अहा़ता कर लिया है।

ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٩٢﴾

92. (मशरिक में फ़ुतूहात मुकम्मल करने के बाद) फिर वोह (एक और) रास्ते पर चल पड़ा।

حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ وَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمَا قَوْمًا ۙ لَّا

93. यहां तक कि वोह (एक मुक़ाम पर) दो पहाड़ों के दरमियान जा पहुंचा उसने उन पहाड़ों के पीछे एक ऐसी

يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ قَوْلًا ﴿٩٣﴾

क़ौमको आबाद पाया जो (किसी की) बात नहीं समझ सक्ते थे।

قَالُوْا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِنَّ يَاْجُوْجَ وَمَاْجُوْجَ مُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ فَهَلْ نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلٰٓى اَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ﴿٩٤﴾

94. उन्होंने कहा : ऐ ज़ुलक़रनैन ! बेशक या'जूज और मा'जूजने ज़मीनमें फ़साद बपा कर रखा है तो क्या हम आपके लिए इस (शर्त) पर कुछ माले (ख़िराज) मुक़र्रर कर दें कि आप हमारे और उनके दरमियान एक बुलंद दीवार बना दें।

قَالَ مَا مَكَّنِّيْ فِيْهِ رَبِّيْ خَيْرٌ فَاَعِيْنُوْنِيْ بِقُوَّةٍ اَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ﴿٩٥﴾

95. (ज़ुल क़रनैनने) कहा : मुझे मेरे रबने इस बारेमें जो इख़्तियार दिया है (वोह) बेहतर है, तुम अपने ज़ोरे बाज़ू (या'नी मेहनतो मशक़्क़त) से मेरी मदद करो, मैं तुम्हारे और उनके दरमियान एक मज़बूत दीवार बना दूंगा।

اٰتُوْنِيْ زُبَرَ الْحَدِيْدِ ؕ حَتّٰٓى اِذَا سَاوٰى بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ انْفُخُوْا ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَعَلَهٗ نَارًا ۙ قَالَ اٰتُوْنِيْٓ اُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا ﴿٩٦﴾

96. तुम मुझे लोहेकेबड़े बड़े टुकड़े ला दो, यहां तक कि जब उसने (वोह लोहेकी दीवार पहाड़ोंकी) दोनों चोटियोंके दरमियान बराबर कर दी तो केहने लगे (अब आग लगा कर उसे) धोंको, यहां तक कि जब उसने उस (लोहे) को (धोंक धोंक कर) आग बना डाला तो केहने लगा : मेरे पास लाओ (अब) मैं उस पर पिघला हुवा तांबा डालूंगा।

فَمَا اسْطَاعُوْٓا اَنْ يَّظْهَرُوْهُ وَمَا اسْتَطَاعُوْا لَهٗ نَقْبًا ﴿٩٧﴾

97. फिर उन (या'जूज और मा'जूज)में न इतनी ताक़तथी के उस पर चढ़ सकें और न इतनी क़ुदरत पा सके कि उसमें सूराख़ कर दें।

قَالَ هٰذَا رَحْمَةٌ مِّنْ رَّبِّيْ ۚ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ رَبِّيْ جَعَلَهٗ دَكَّآءَ ۚ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّيْ حَقًّا ﴿٩٨﴾

98. (ज़ुल क़रनैनने) कहा : येह मेरे रबकी जानिबसे रहमत है फिर जब मेरे रबका वा'दए (क़ियामत क़रीब) आएगा तो वोह उस दीवार को (गिरा कर) हमवार कर देगा (दीवार रेज़ा रेज़ा हो जाएगी) और मेरे रबका वा'दा बरहक़ है।

وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَّمُوْجُ فِيْ

99. और हम उस वक़्त (जुमला मख़्लूकात या या'जूज

بَعْضٍ وَّنُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَجَمَعْنٰهُمْ جَمْعًا ۙ﴿۹۹﴾

और मा'जूजको) आज़ाद कर देंगे वोह (तेज़ो तुन्द मौजोंकी तरह) एक दूसरे में घुस जाएंगे और सूर फूंका जाएगा तो हम उन सबको (मेदाने हश्र में) जमा' कर लेंगे।

وَّعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِّلْكٰفِرِيْنَ عَرْضَا ۙ﴿۱۰۰﴾

100. और हम उस दिन दोज़ख़को काफ़िरों के सामने बिलकुल अ़यां करके पेश करेंगे।

الَّذِيْنَ كَانَتْ اَعْيُنُهُمْ فِىْ غِطَآءٍ عَنْ ذِكْرِىْ وَكَانُوْا لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَمْعًا ﴿۱۰۱﴾

ع ۱۱ ۱۹ ۲

101. वोह लोग जिनकी आँखें मेरी याद से हिजाबे (ग़फ़लत) में थीं और वोह (मेरा ज़िक्र) सुन भी न सक्तेथे।

اَفَحَسِبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اَنْ يَّتَّخِذُوْا عِبَادِىْ مِنْ دُوْنِىْۤ اَوْلِيَآءَ ؕ اِنَّاۤ اَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ نُزُلًا ﴿۱۰۲﴾

102. क्या काफ़िर लोग येह समझते हैं कि वोह मुझे छोड़ कर मेरे बंदोंको कारसाज़ बना लेंगे, बेशक हमने काफ़िरों के लिए जहन्नम की मेज़बानी को तैयार कर रखा है।

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْاَخْسَرِيْنَ اَعْمَالًا ؕ﴿۱۰۳﴾

103. फ़रमा दीजिए : क्या हम तुम्हें ऐसे लोगोंसे ख़बरदार कर दें जो आ'माल के हिसाबसे सख़्त ख़सारा पानेवाले हैं।

اَلَّذِيْنَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ﴿۱۰۴﴾

104. येह वोह लोग हैं जिनकी सारी जद्दो जहद दुनिया की ज़िन्दगी में ही बरबाद हो गई और वोह येह ख़याल करते हैं कि हम बड़े अच्छे काम अंजाम दे रहे हैं।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَلِقَآئِهٖ فَحَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيْمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا ﴿۱۰۵﴾

105. येही वोह लोग हैं जिन्होंने अपने रबकी निशानियों का और (मरने के बाद) उससे मुलाक़ात का इन्कार कर दिया है सो उनके सारे आ'माल अकारत गए पस हम उनके लिए क़ियामत के दिन कोई वज़न और हैसियत (ही) क़ाइम नहीं करेंगे।

ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوْا وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَرُسُلِيْ هُزُوًا ﴿١٠٦﴾

106. येही दोज़ख़ ही उनकी जज़ा है इस वजह से कि वोह कुफ़्र करते रहे और मेरी निशानियों और मेरे रसूलोंका मज़ाक़ उड़ाते रहे।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنّٰتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ﴿١٠٧﴾

107. बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे तो उनके लिए फ़िरदौस के बाग़ात की मेहमानी होगी।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا لَا يَبْغُوْنَ عَنْهَا حِوَلًا ﴿١٠٨﴾

108. वोह उसमें हमेशा रहेंगे वहां से (अपना ठिकाना) कभी बदलना न चाहेंगे।

قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّيْ لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّيْ وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهٖ مَدَدًا ﴿١٠٩﴾

109. फ़रमा दीजिए : अगर समन्दर मेरे रबके कलिमात के लिए रोशनाई हो जाए तो वोह समन्दर मेरे रबके कलिमात के ख़त्म होने से पहले ही ख़त्म हो जाएगा अगरचे हम उसकी मिस्ल और (समन्दर या रोशनाई) मदद के लिए ले आएं।

قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا ﴿١١٠﴾

110. फ़रमा दीजिए : मैं तो सिर्फ़(बख़िल्क़ते ज़ाहिरी) बशर होने में तुम्हारी मिस्ल हूं (इसके सिवा और तुम्हारी मुझसे क्या मुनासिबत है ज़रा ग़ौर करो) मेरी तरफ़ वही की जाती है (भला तुममें येह नूरी इस्ते'दाद कहां है कि तुम पर कलामे इलाही उतर सके) वोह येह कि तुम्हारा मा'बूद, मा'बूदे यक्ता ही है पस जो शख़्स अपने रबसे मुलाक़ात की उम्मीद रखता है तो उसे चाहिए कि नेक अ़मल करें और अपने रबकी इ़बादतमें किसी को शरीक न करे।

आयातुहा 98 | 19 सूरतु मरय-म मक्किय्यतुन 44 | रुकूआ़तुहा 6

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

كٓهٰيٰعٓصٓ ۚ ﴿١﴾

1. काफ़ हा या ऐन साद (ह़क़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं)।

ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّا ۚ ﴿٢﴾

2. येह आपके रबकी रह़मतका ज़िक्र है (जो उसने) अपने (बरगुज़ीदह) बंदे ज़करिय्या (عليه السلام) पर (फ़रमाई थी)।

اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ نِدَآءً خَفِيًّا ﴿٣﴾

3. जब उन्होंने अपने रबको (अदब भरी) दबी आवाज़से पुकारा।

قَالَ رَبِّ اِنِّىْ وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّىْ وَ اشْتَعَلَ الرَّاْسُ شَيْبًا وَّ لَمْ اَكُنْۢ بِدُعَآئِكَ رَبِّ شَقِيًّا ﴿٤﴾

4. अ़र्ज़ किया : ऐ मेरे रब ! मेरे जिस्मकी हड्डियां कमज़ोर हो गई हैं और बुढ़ापे के बाइ़स सर आगके शो'ले की मानिन्द सफ़ेद हो गया है और ऐ मेरे रब ! मैं तुझसे मांग कर कभी मह़रूम नहीं रहा।

وَ اِنِّىْ خِفْتُ الْمَوَالِىَ مِنْ وَّرَآءِىْ وَ كَانَتِ امْرَاَتِىْ عَاقِرًا فَهَبْ لِىْ مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ۙ ﴿٥﴾

5. और मैं अपने (रुख़्सत हो जाने के) बाद (बे दीन) रिश्तेदारोंसे डरता हूं (कि वोह दीनकी ने'मत ज़ाए' न कर बैठें) और मेरी बीवी (भी) बांझ है सो तू मुझे अपनी (ख़ास़) बारगाह से एक वारिस (फ़रज़ंद) अ़ता फ़रमा।

يَّرِثُنِىْ وَ يَرِثُ مِنْ اٰلِ يَعْقُوْبَ ۖ وَ اجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا ﴿٦﴾

6. जो (आस्मानी ने'मत में) मेरा (भी) वारिस बने और या'कूब (عليه السلام) की औलाद (के सिलसिलए नुबुव्वत) का (भी) वारिस हो और ऐ मेरे रब ! तू (भी) उसे अपनी रज़ा का ह़ामिल बना ले।

يٰزَكَرِيَّآ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمِ اِۨسْمُهٗ يَحْيٰى ۙ لَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ﴿٧﴾

7. (इर्शाद हुवा) ऐ ज़करिय्या ! बेशक हम तुम्हें एक लड़केकी खुशख़बरी सुनाते हैं जिसका नाम यह़्या (عليه السلام) होगा हमने उससे पेहले उसका कोई हमनाम नहीं बनाया।

قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا وَّقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا ﴿٨﴾

8. (ज़करिय्या عليه السلام ने) अ़र्ज़ किया : ऐ मेरे रब ! मेरे हां लड़का कैसे हो सक्ता है दर आं ह़ाली कि मेरी बीवी बांझ है और में खुद बुढ़ापे के बाइ़स (इन्तिहाई ज़ो'फ़में) सूख जानेकी ह़ालत को पहुंच गया हूं।

قَالَ كَذٰلِكَ ۚ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ وَّقَدْ خَلَقْتُكَ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ شَيْـًٔا ﴿٩﴾

9. फ़रमाया (तअ़ज्जुब न करो) ऐसे ही होगा, तुम्हारे रबने फ़रमाया है येह (लड़का पैदा करना) मुझ पर आसान है और बेशक में इससे पेहले तुम्हें (भी) पैदा कर चुका हूं इस ह़ालतसे कि तुम (सिरे से) कोई चीज़ ही न थे।

قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ۭ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ﴿١٠﴾

10. (ज़करिय्या عليه السلام ने) अ़र्ज़ किया : ऐ मेरे रब ! मेरे लिए कोई निशानी मुक़र्रर फ़रमा, इर्शाद हुवा तुम्हारी निशानी येह है कि तुम बिल्कुल तंदुरुस्त होते हुए भी तीन रात (दिन) लोगों से कलाम न कर सकोगे।

فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ مِنَ الْمِحْرَابِ فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ اَنْ سَبِّحُوْا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ﴿١١﴾

11. फिर (ज़करिय्या عليه السلام) हुजरए इ़बादत से निकल कर अपने लोगों के पास आए तो उनकी तरफ़ इशारा किया (और समझाया) कि तुम सुब्ह़ो शाम (अल्लाह की) तस्बीह़ किया करो।

يٰيَحْيٰى خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ ۭ وَاٰتَيْنٰهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ﴿١٢﴾

12. ऐ यह्या ! (हमारी) किताब (तौरात) को मज़बूतीसे थामे रखो और हमने उन्हें बचपन ही से ह़िक्मतो बसीरत (नबुव्वत) अ़ता फ़रमा दी थी।

وَّحَنَانًا مِّنْ لَّدُنَّا وَزَكٰوةً ۭ وَكَانَ تَقِيًّا ﴿١٣﴾

13. और अपने लुत्फ़े ख़ाससे (उन्हें) दर्दो गुदाज़ और पाकीज़गी-व-तहारत (से भी नवाज़ा था), और वोह बड़े परहेज़गार थे।

وَّبَرًّا بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُنْ جَبَّارًا عَصِيًّا ﴿١٤﴾

14. और अपने मांबाप के साथ बड़ी नेकी (और ख़िदमत) से पेश आनेवाले (थे) और (आ़म लड़कों की तरह़) हरगिज़ सरकशो ना फ़रमान न थे।

وَسَلٰمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ

15. और यह्या पर सलाम हो उनकी मीलाद के दिन और

يَمُوتُ وَيَوْمَ يُبْعَثُ حَيًّا ﴿١٥﴾

उनकी वफ़ात के दिन और जिस दिन वोह ज़िन्दा उठाए जाएंगे।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مَرْيَمَ ۘ إِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ أَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا ﴿١٦﴾

16. और (ऐ ह़बीबे मुकर्रम!) आप किताब (क़ुरआन मजीद) में मरयम (عليها السلام) का ज़िक्र कीजिऐ, जब वोह अपने घरवालों से अलग हो कर (इ़बादत के लिए ख़ल्वत इख़्तियार करते हुए) मश्‌रिक़ी मकान में आ गईं।

فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُونِهِمْ حِجَابًا ۖ فَأَرْسَلْنَا إِلَيْهَا رُوحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ﴿١٧﴾

17. पस उन्होंने उन (घरवालों और लोगों) की तरफ़से हिजाब इख़्तियार कर लिया (ताकि हुस्ने मुत्लक़ अपना हिजाब उठा दे) तो हमने उनकी तरफ़ अपनी रूह़ (या'नी फ़रिश्ता जिबराईल) को भेजा सो (जिबराईल) उनके सामने मुकम्मल बशरी सूरत में ज़ाहिर हुआ।

قَالَتْ إِنِّي أَعُوذُ بِالرَّحْمٰنِ مِنْكَ إِنْ كُنْتَ تَقِيًّا ﴿١٨﴾

18. (मरयम عليها السلام ने) कहा : बेशक मैं तुझसे (ख़ुदाए) रह़मान की पनाह मांगती हूं अगर तू (अल्लाह से) डरनेवाला है।

قَالَ إِنَّمَا أَنَا رَسُولُ رَبِّكِ ۖ لِأَهَبَ لَكِ غُلٰمًا زَكِيًّا ﴿١٩﴾

19. (जिबराईल عليه السلام ने) कहा : मैं तो फ़क़त तेरे रबका भेजा हुआ हूं, (इस लिए आया हूं) कि मैं तुझे एक पाकीज़ा बेटा अता करूं।

قَالَتْ أَنّٰى يَكُونُ لِي غُلٰمٌ وَلَمْ يَمْسَسْنِي بَشَرٌ وَلَمْ أَكُ بَغِيًّا ﴿٢٠﴾

20. (मरयम عليها السلام ने) कहा : मेरे हां लड़का कैसे हो सक्ता है जब कि मुझे किसी इन्सान ने छुआ तक नहीं और न ही मैं बदकार हूं।

قَالَ كَذٰلِكِ ۚ قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ ۚ وَلِنَجْعَلَهُ آيَةً لِلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِنَّا ۚ وَكَانَ أَمْرًا مَقْضِيًّا ﴿٢١﴾

21. (जिबराईल عليه السلام ने) कहा : (तअ़ज्जुब न कर) ऐसे ही होगा, तेरे रबने फ़रमाया है : येह (काम) मुझ पर आसान है, और (येह इस लिए होगा) ताकि हम उसे लोगों के लिए निशानी और अपनी जानिबसे रह़मत बना दें, और येह अम्र (पेहले से) तय शुदा है।

فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهِ مَكَانًا

22. पस मरयम (عليها السلام) ने उसे पेटमें ले लिया और

قَصِيًّا ﴿٢٢﴾

(आबादी से) अलग हो कर दूर एक मुक़ाम पर जा बैठीं।

فَأَجَآءَهَا الْمَخَاضُ إِلَىٰ جِذْعِ النَّخْلَةِ قَالَتْ يَٰلَيْتَنِى مِتُّ قَبْلَ هَٰذَا وَكُنتُ نَسْيًا مَّنسِيًّا ﴿٢٣﴾

23. फिर दर्देज़ेह उन्हें एक खजूर के तने की तरफ़ ले आया, वोह (परेशानी के आ़लम में) केहने लगीं : ऐ काश ! मैं पहले से मर गई होती और बिलकुल भूली बिसरी हो चुकी होती।

فَنَادَىٰهَا مِن تَحْتِهَآ أَلَّا تَحْزَنِى قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ﴿٢٤﴾

24. फिर उनके नीचे की जानिब से (जिबराईलने या खुद ईसा (عليه السلام) ने) उन्हें आवाज़ दी कि तू रन्जीदह न हो बेशक तुम्हारे रबने तुम्हारे नीचे एक चश्मा जारी कर दिया है (या तुम्हारे नीचे एक अज़ीमुल मर्तबा इन्सान को पैदा करके लिटा दिया है)।

وَهُزِّىٓ إِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسَٰقِطْ عَلَيْكِ رُطَبًا جَنِيًّا ﴿٢٥﴾

25. और खजूर के तनेको अपनी तरफ़ हिलाओ वोह तुम पर ताज़ा पकी हुई खजूरें गिरा देगा।

فَكُلِى وَاشْرَبِى وَقَرِّى عَيْنًا فَإِمَّا تَرَيِنَّ مِنَ الْبَشَرِ أَحَدًا فَقُولِىٓ إِنِّى نَذَرْتُ لِلرَّحْمَٰنِ صَوْمًا فَلَنْ أُكَلِّمَ الْيَوْمَ إِنسِيًّا ﴿٢٦﴾

26. सो तुम खाओ और पियो और (अपने ह़सीनो जमील फ़रज़न्द को देख कर) आँखें ठंडी करो, फिर अगर तुम किसी भी इन्सान को देखो तो (इशारे से) केह देना कि मैंने (खुदाए) रह्मानके लिए (ख़ामोशी के) रोजेकी नज़र मानी हुई है सो मैं आज किसी इन्सानसे क़त्अ़न गुफतगू नहीं करूंगी।

فَأَتَتْ بِهِۦ قَوْمَهَا تَحْمِلُهُۥ قَالُوا۟ يَٰمَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَيْـًٔا فَرِيًّا ﴿٢٧﴾

27. फिर वोह उस (बच्चे) को (गोद में) उठाए हुए अपनी क़ौमके पास आ गईं। वोह केहने लगे ऐ मरयम ! यक़ीनन तू बहुत ही अ़जीब चीज़ लाई है।

يَٰٓأُخْتَ هَٰرُونَ مَا كَانَ أَبُوكِ امْرَأَ سَوْءٍ وَمَا كَانَتْ أُمُّكِ بَغِيًّا ﴿٢٨﴾

28. ऐ हारून की बहन ! न तेरा बाप बुरा आदमी था और न ही तेरी मां बदचलन थी।

فَأَشَارَتْ إِلَيْهِ قَالُوا كَيْفَ نُكَلِّمُ

29. तो मरयम (عليها السلام)ने उस (बच्चे) की तरफ़ इशारा

مَنْ كَانَ فِي الْمَهْدِ صَبِيًّا ﴿٢٩﴾

किया, वोह केहने लगे : हम उससे किस तरह बात करें जो (अभी) गेहवारे में बच्चा है?

قَالَ إِنِّي عَبْدُ اللَّهِ آتَانِيَ الْكِتَابَ وَجَعَلَنِي نَبِيًّا ﴿٣٠﴾

30. (बच्चा ख़ुद) बोल पड़ा बेशक मैं अल्लाह का बंदा हूं उसने मुझे किताब अ़ता फ़रमाई है और मुझे नबी बनाया है।

وَجَعَلَنِي مُبَارَكًا أَيْنَ مَا كُنْتُ وَأَوْصَانِي بِالصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ مَا دُمْتُ حَيًّا ﴿٣١﴾

31. और मैं जहां कहीं भी रहूं उसने मुझे सरापा बरकत बनाया है और मैं जब तक (भी) ज़िन्दा हूं उसने मुझे नमाज़ और ज़कात का हुक्म फ़रमाया है।

وَبَرًّا بِوَالِدَتِي وَلَمْ يَجْعَلْنِي جَبَّارًا شَقِيًّا ﴿٣٢﴾

32. और अपनी वालिदा साथ नेक सुलूक करनेवाला (बनाया है) और उसने मुझे सरकशो बदबख़्त नहीं बनाया।

وَالسَّلَامُ عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُ وَيَوْمَ أَمُوتُ وَيَوْمَ أُبْعَثُ حَيًّا ﴿٣٣﴾

33. और मुझ पर सलाम हो मेरे मीलाद के दिन, और मेरी वफ़ातके दिन, और जिस दिन मैं ज़िन्दा उठाया जाऊंगा।

ذَٰلِكَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ قَوْلَ الْحَقِّ الَّذِي فِيهِ يَمْتَرُونَ ﴿٣٤﴾

34. येह मरयम के बेटे ईसा (عليه السلام) हैं, (येही) सच्ची बात है जिसमें येह लोग शक करते हैं।

مَا كَانَ لِلَّهِ أَنْ يَتَّخِذَ مِنْ وَلَدٍ سُبْحَانَهُ إِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٣٥﴾

35. येह अल्लाह की शान नहीं कि वोह (किसीको अपना) बेटा बनाए, वोह (उससे) पाक है जब वोह किसी कामका फ़ैसला फ़रमाता है तो उसे सिर्फ़ येही हुक्म देता है "हो जा" बस वोह हो जाता है।

وَإِنَّ اللَّهَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ هَٰذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ﴿٣٦﴾

36. और बेशक अल्लाह मेरा (भी) रब है और तुम्हारा (भी) रब है सो तुम उसी की इ़बादत किया करो, येही सीधा रास्ता है।

فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ مَشْهَدِ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٣٧﴾

37. फिर उनके फ़िर्क़े आपसमें इख़्तिलाफ़ करने लगे, पस काफ़िरों के लिए (क़ियामत के) बड़े दिनकी हाज़िरी से तबाही है।

أَسْمِعْ بِهِمْ وَأَبْصِرْ يَوْمَ يَأْتُونَنَا لَٰكِنِ الظَّالِمُونَ الْيَوْمَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿٣٨﴾

38. जिस दिन वोह हमारे पास हाज़िर होंगे तो कैसे (कान खोल कर) सुनेंगे और (आँखें फाड़ फाड़ कर) देखेंगे लेकिन ज़ालिम लोग आज खुली गुमराही में (ग़र्क़) हैं।

وَأَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ إِذْ قُضِيَ الْأَمْرُ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ وَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٩﴾

وقف لازم

39. और आप उन्हें हसरत (व नदामत) के दिनसे डराइए जब (हर) बातका फ़ैसला कर दिया जाएगा, मगर वोह ग़फ़्लत (की हालत) में पड़े हैं और ईमान लाते ही नहीं।

إِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْأَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَإِلَيْنَا يُرْجَعُونَ ﴿٤٠﴾

ع ٢ ٢٥ ٥

40. बेशक हम ही ज़मीन के (भी) वारिस हैं और उनके (भी) जो उस पर (रेहते) हैं और (सब) हमारी ही तरफ़ लौटाए जाएंगे।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتَابِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّهُ كَانَ صِدِّيقًا نَبِيًّا ﴿٤١﴾

41. और आप किताब (क़ुरआन मजीद) में इब्राहीम (عليه السلام) का ज़िक्र कीजिए, बेशक वोह बड़े साहिबे सिद्क़ नबी थे।

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ وَلَا يُغْنِي عَنْكَ شَيْئًا ﴿٤٢﴾

42. जब उन्होंने अपने बाप (या'नी चचा आज़र से जिसने आपके वालिद तारिख़ के इन्तिक़ाल के बाद आपको पाला था) से कहा : ऐ मेरे बाप ! तुम इन (बुतों की परस्तिश क्यों करते हो जो न सुन सक्ते हैं और न देख सक्ते हैं और न तुमसे कोई (तक्लीफ़ देह) चीज़ दूर कर सक्ते हैं।

يَا أَبَتِ إِنِّي قَدْ جَاءَنِي مِنَ الْعِلْمِ مَا لَمْ يَأْتِكَ فَاتَّبِعْنِي أَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ﴿٤٣﴾

43. ऐ अब्बा ! बेशक मेरे पास (बारगाहे इलाहीसे) वोह इल्म आ चुका है जो तुम्हारे पास नहीं आया तुम मेरी पैरवी करो मैं तुम्हें सीधी राह दिखाऊंगा।

يَا أَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطَانَ إِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ لِلرَّحْمَٰنِ عَصِيًّا ﴿٤٤﴾

44. ऐ अब्बा ! शैतानकी परस्तिश न किया करो, बेशक शैतान (खुदाए) रहमान का बड़ा ही ना फ़रमान है।

يَا أَبَتِ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يَمَسَّكَ عَذَابٌ

45. ऐ अब्बा ! बेशक मैं इस बातसे डरता हूं कि तुम्हें

مِّنَ الرَّحْمٰنِ فَتَكُوْنَ لِلشَّيْطٰنِ وَلِيًّا ﴿۴۵﴾

(खुदाए) रहमानका अ़ज़ाब पहुंचे और तुम शैतानके साथी बन जाओ।

قَالَ اَرَاغِبٌ اَنْتَ عَنْ اٰلِهَتِيْ يٰۤاِبْرٰهِيْمُ ۚ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ لَاَرْجُمَنَّكَ وَاهْجُرْنِيْ مَلِيًّا ﴿۴۶﴾

46. (आज़र ने) कहा : ऐ इब्राहीम! क्या तुम मेरे मा'बूदोंसे रू गरदां हो ? अगर वाक़ई तुम (इस मुखालिफ़त से) बाज़ न आए तो मैं तुम्हें ज़रूर संगसार कर दूंगा और एक तवील अ़र्से के लिए तुम मुझसे अलग हो जाओ।

قَالَ سَلٰمٌ عَلَيْكَ ۚ سَاَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّيْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِيْ حَفِيًّا ﴿۴۷﴾

47. (इब्राहीम (عليه السلام) ने) कहा (अच्छा) तुम्हें सलाम, मैं अब (भी) अपने रबसे तुम्हारे लिए बख़्शिश मांगूंगा, बेशक वोह मुझ पर बहुत महरबान है (शायद) तुम्हें हिदायत अ़ता फ़रमा दे)।

وَاَعْتَزِلُكُمْ وَمَا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَاَدْعُوْا رَبِّيْ ۖ عَسٰۤى اَلَّاۤ اَكُوْنَ بِدُعَآءِ رَبِّيْ شَقِيًّا ﴿۴۸﴾

48. और मैं तुम (सब) से और उन (बुतों) से जिन्हें तुम अल्लाहके सिवा पूजते हो कनारा कश होता हूं और अपने रबकी इ़बादतमें (यक्सू हो कर) मसरूफ़ होता हूं, उम्मीद है मैं अपने रबकी इ़बादत के बाइ़स महरूमे (करम) न रहूंगा।

فَلَمَّا اعْتَزَلَهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۙ وَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ؕ وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ﴿۴۹﴾

49. फिर जब इब्राहीम (عليه السلام) उन लोगोंसे और उन (बुतों) से जिनकी वोह अल्लाहके सिवा परस्तिश करते थे (मेल मिलाप छोड़ कर) बिल्कुल जुदा हो गए (तो) हमने उन्हें इस्हाक़ और या'कूब (عليهما السلام) (बेटे और पोते) से नवाज़ा, और हमने हर (दो) को नबी बनाया।

وَوَهَبْنَا لَهُمْ مِّنْ رَّحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ عَلِيًّا ﴿۵۰﴾ ع

50.और हमने उन (सब) को अपनी (ख़ास) रहमत बख़्शी और हमने उनके लिए (हर आस्मानी मज़्हबके माननेवालों में) ता'रीफ़ो सताइश की ज़बान बुलंद कर दी।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مُوْسٰۤى ۫ اِنَّهٗ

51. और (इस) किताब में मूसा (عليه السلام) का ज़िक्र कीजिए

كَانَ مُخْلَصًا وَّ كَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ﴿٥١﴾

बेशक वोह (नफ़्सकी गिरफ़्तसे ख़लासी पा कर) बरगुज़ीदा हो चुके थे और साहिबे रिसालत नबी थे।

وَ نَادَيْنٰهُ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ الْاَيْمَنِ وَقَرَّبْنٰهُ نَجِيًّا ﴿٥٢﴾

52. और हमने उन्हें (कोहे) तूरकी दाहिनी जानिबसे निदा दी और राज़ो नियाज़की बातें करने के लिए हमने उन्हें क़ुर्बते (ख़ास) से नवाज़ा।

وَ وَهَبْنَا لَهٗ مِنْ رَّحْمَتِنَاۤ اَخَاهُ هٰرُوْنَ نَبِيًّا ﴿٥٣﴾

53. और हमने अपनी रहमत से उनके भाई हारून (عليه السلام) को नबी बना कर उन्हें बख़्शा (ताकि वोह उनके काममें मुआविन हों)।

وَاذْكُرْ فِى الْكِتٰبِ اِسْمٰعِيْلَ ۫ اِنَّهٗ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ۚ ﴿٥٤﴾

54. और आप (इस) किताब में इस्माईल (عليه السلام) का ज़िक्र करें बेशक वोह वा'दे के सच्चे थे और साहिबे रिसालत नबी थे।

وَكَانَ يَاْمُرُ اَهْلَهٗ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ ۪ وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهٖ مَرْضِيًّا ﴿٥٥﴾

55.और वोह अपने घरवालों को नमाज़ और ज़कात का हुक्म देते थे और वोह अपने रबके हुज़ूर मक़ामे मरज़िय्या पर (फ़ाइज़) थे (या'नी उनका रब उनसे राज़ी था)।

وَاذْكُرْ فِى الْكِتٰبِ اِدْرِيْسَ ۫ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ۙ ﴿٥٦﴾

56. और (इस) किताबमें इद्रीस (عليه السلام) का ज़िक्र कीजिए बेशक वोह बड़े साहिबे सिदक़ नबी थे।

وَّرَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا ﴿٥٧﴾

57. और हमने उन्हें बुलंद मुक़ाम पर उठा लिया था।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ مِنْ ذُرِّيَّةِ اٰدَمَ ۗ وَ مِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ۫ وَّمِنْ ذُرِّيَّةِ اِبْرٰهِيْمَ وَ اِسْرَآءِيْلَ ۫ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا ؕ اِذَا

58. येह वोह लोग है जिन पर अल्लाहने इन्आम फ़रमाया है ज़ुमरए अंबिया में से आदम (عليه السلام) की औलाद से हैं और उन (मोमिनों) में से हैं जिन्हें हमने नूह (عليه السلام) के साथ कश्तीमें (तूफ़ानसे बचा कर) उठा लिया था, और इब्राहीम (عليه السلام) की और इसराईल (या'नी या'कूब عليه السلام) की औलादसे हैं और उन (मुन्तख़ब) लोगों में से हैं जिन्हें

تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّ بُكِيًّا ﴿٥٨﴾

हमने हिदायत बख़्शी और बरगुज़ीदह बनाया, जब उन पर (ख़ुदाए) रह़मानकी आयतों की तिलावत की जाती है वोह सज्दे करते हुए और (ज़ारो क़तार) रोते हुऐ गिर पड़ते हैं।

السجدة ٥

فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ﴿٥٩﴾

59. फिर उनके बाद वोह ना ख़ल्फ़ जा नशीन हुए जिन्होंने नमाजें ज़ाए' कर दीं और ख़्वाहिशाते (नफ़्सानी) के पैरव हो गए तो अनक़रीब वोह आख़िरत के अज़ाबे (दोज़ख़की वादिए ग़य्य) से दो चार होंगे।

اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ شَيْـًٔا ﴿٦٠﴾

60. सिवाए उस शख़्स के जिसने तौबा कर ली और ईमान ले आया और नेक अ़मल करता रहा तो येह लोग जन्नत में दाख़िल होंगे और उन पर कुछ भी ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।

جَنّٰتِ عَدْنِ ِالَّتِيْ وَعَدَ الرَّحْمٰنُ عِبَادَهٗ بِالْغَيْبِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ وَعْدُهٗ مَاْتِيًّا ﴿٦١﴾

61. ऐसे सदाबहार बाग़ात में (रहेंगे) जिनका (ख़ुदाए) रह़मानने अपने बंदोंसे ग़ैबमें वा'दा किया है, बेशक उसका वा'दा पहुंचने ही वाला है।

لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا اِلَّا سَلٰمًا ؕ وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيْهَا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ﴿٦٢﴾

62. वोह उसमें कोई बेहूदा बात नहीं सुनेंगे मगर (हर तरफ़से) सलाम (सुनाई देंगा), उनके लिए उनका रिज़्क़ उसमें सुब्ह़ो शाम (मुयस्सर) होगा।

تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْ نُوْرِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا ﴿٦٣﴾

63. येह वोह जन्नत है जिसका हम अपने बन्दों में से उसे वारिस बनाएंगे जो मुत्तक़ी होगा।

وَمَا نَتَنَزَّلُ اِلَّا بِاَمْرِ رَبِّكَ ۚ لَهٗ مَا بَيْنَ اَيْدِيْنَا وَمَا خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذٰلِكَ ۚ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ﴿٦٤﴾

64. और (जिबराईल मेरे ह़बीब ﷺ से कहो कि) हम आपके रबके हुक्मके बिग़ैर (ज़मीन पर) नहीं उतर सक्ते, जो कुछ हमारे आगे है और जो कुछ हमारे पीछे है और जो कुछ उसके दरमियान है (सब) उसीका है, और आपका रब (आपको) कभी भी भूलनेवाला नहीं है।

رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهٖ هَلْ تَعْلَمُ لَهٗ سَمِيًّا ﴿٦٥﴾

65. (वोह) आस्मानों और ज़मीनका और जो कुछ उन दो के दरमियान है (सब) का रब है पस उसकी इबादत कीजिए और उसकी इबादतमें साबित क़दम रहिए, क्या आप उसका कोई हमनाम जानते हैं ?

وَيَقُوْلُ الْاِنْسَانُ ءَاِذَا مَا مِتُّ لَسَوْفَ اُخْرَجُ حَيًّا ﴿٦٦﴾

66. और इन्सान केहता है क्या जब मैं मर जाऊंगा तो अ़नक़रीब ज़िन्दा करके निकाला जाऊंगा?

اَوَلَا يَذْكُرُ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْـًٔا ﴿٦٧﴾

67. क्या इन्सान येह बात याद नहीं करता कि हमने इससे पेहले (भी) उसे पैदा किया था जबकि वोह कोई चीज़ ही न था।

فَوَرَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيٰطِيْنَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ جِثِيًّا ﴿٦٨﴾

68. पस आपके रबकी क़सम हम उनको और (जुमला) शैतानों को (क़ियामत के दिन) ज़रूर जमा' करेंगे फिर हम उन (सब) को जहन्नम के गिर्द ज़रूर हाज़िर कर देंगे इस तरह कि वोह घुटनोंके बल गिरे पड़े होंगे।

ثُمَّ لَنَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيْعَةٍ اَيُّهُمْ اَشَدُّ عَلَى الرَّحْمٰنِ عِتِيًّا ﴿٦٩﴾

69. फिर हम हर गिरोहसे ऐसे शख़्सको ज़रूर चुन कर निकालेंगे जो उनमें से (ख़ुदाए) रह़मान पर सबसे ज़ियादह ना फ़रमानो सरकश होगा।

ثُمَّ لَنَحْنُ اَعْلَمُ بِالَّذِيْنَ هُمْ اَوْلٰى بِهَا صِلِيًّا ﴿٧٠﴾

70. फिर हम उन लोगोंको खूब जानते हैं जो दोज़ख़में झोंके जानेकी ज़ियादह सज़ावार हैं।

وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ﴿٧١﴾

71. और तुम में से कोई शख़्स नहीं है मगर उसका उस (दोज़ख़) परसे गुज़र होनेवाला है येह (वा'दा) क़त्ई तौर पर आपके रबके ज़िम्मे है जो ज़रूर पूरा हो कर रहेगा।

ثُمَّ نُنَجِّى الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّنَذَرُ الظّٰلِمِيْنَ فِيْهَا جِثِيًّا ﴿٧٢﴾

72. फिर हम परहेज़गारों को नजात दे देंगे और ज़ालिमों को उसमें घुटनों के बल गिरा हुवा छोड़ देंगे।

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ

73. और जब उन पर हमारी रौशन आयतें तिलावत की

قَالَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوْٓا ۙ اَیُّ الْفَرِیْقَیْنِ خَیْرٌ مَّقَامًا وَّ اَحْسَنُ نَدِیًّا ﴿۷۳﴾

जाती हैं तो काफ़िर लोग ईमानवालोंसे केहते हैं : (इसी दुनिया में देख लो हम) दोनों गिरोहों में से किस की रहाइशगाह बेहतर और मजलिस ख़ूबतर है।

وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ اَحْسَنُ اَثَاثًا وَّ رِءْیًا ﴿۷۴﴾

74. और हमने उनसे पेहले कितनी ही क़ौमों को हलाक कर डाला जो साज़ो सामाने ज़िन्दगी और नुमूदो नुमाइश के लिहाज़से (उनसे भी) कहीं बेहतर थे।

قُلْ مَنْ كَانَ فِی الضَّلٰلَةِ فَلْیَمْدُدْ لَهُ الرَّحْمٰنُ مَدًّا ۚ حَتّٰۤی اِذَا رَاَوْا مَا یُوْعَدُوْنَ اِمَّا الْعَذَابَ وَ اِمَّا السَّاعَةَ ؕ فَسَیَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّ اَضْعَفُ جُنْدًا ﴿۷۵﴾

75. फ़रमा दीजिए : जो शख़्स गुमराही में मुब्तिला हो तो (ख़ुदाए) रहमान (भी) उसे उम्रो ऐश में खूब मोहलत देता रेहता है, यहां तककि जब वोह लोग उस चीज़को देख लेंगे जिसका उनसे वा'दा किया गया है ख़्वाह अज़ाब और ख़्वाह क़ियामत, तब वोह उस शख़्सको जान लेंगे जो रहाइशगाह के ए'तिबार से (भी) बुरा है और लश्कर के ए'तितबार से (भी) कमज़ोर तर है।

وَ یَزِیْدُ اللّٰهُ الَّذِیْنَ اهْتَدَوْا هُدًی ؕ وَ الْبٰقِیٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَیْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّ خَیْرٌ مَّرَدًّا ﴿۷۶﴾

76. और अल्लाह हिदायत याफ़्ता लोगोंकी हिदायत में मज़ीद इज़ाफ़ा फ़रमाता है, और बाक़ी रेहनेवाले नेक आ'माल आपके रबके नज़दीक अज्रो सवाब में (भी) बेहतर हैं और अंजाम में (भी) ख़ूबतर हैं।

اَفَرَءَیْتَ الَّذِیْ كَفَرَ بِاٰیٰتِنَا وَ قَالَ لَاُوْتَیَنَّ مَالًا وَّ وَلَدًا ﴿۷۷﴾ ؕ

77. क्या आपने उस शख़्स को देखा है जिसने हमारी आयतों से कुफ़्र किया और केहने लगा : मुझे (क़ियामत के रोज़ भी इसी तरह) मालो औलाद ज़रूर दिए जाएंगे।

اَطَّلَعَ الْغَیْبَ اَمِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ۙ ﴿۷۸﴾

78. वोह ग़ैब पर मुत्तला' है या उसने (ख़ुदाए) रहमान से (कोई) अहद ले रखा है?

كَلَّا ؕ سَنَكْتُبُ مَا یَقُوْلُ وَ نَمُدُّ لَهٗ مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا ۙ ﴿۷۹﴾

79. हरगिज़ नहीं, अब हम वोह सब कुछ लिखते रहेंगे जो वोह केहता है और उसके लिए अज़ाब (पर अज़ाब) खूब बढ़ाते चले जाएंगे।

وَّنَرِثُهٗ مَا يَقُوْلُ وَيَاْتِيْنَا فَرْدًا ﴿٨٠﴾

80. और (मरने के बाद) जो येह केह रहा है उसके हम ही वारिस होंगे और वोह हमारे पास तन्हा आएगा (उसके मालो औलाद साथ न होंगे)।

وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لِّيَكُوْنُوْا لَهُمْ عِزًّا ﴿٨١﴾

81. और उन्होंने अल्लाह के सिवा (कई और) मा'बूद बना लिए हैं ताकि वोह उनके लिए बाइसे इज़्ज़त हों।

كَلَّا ۭ سَيَكْفُرُوْنَ بِعِبَادَتِهِمْ وَيَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِمْ ضِدًّا ﴿٨٢﴾

82. हरगिज़ (ऐसा) नहीं है, अनक़रीब वोह (मा'बूदाने बातिला खुद) उनकी परस्तिश का इन्कार कर देंगे और उनके दुश्मन हो जाएंगे।

اَلَمْ تَرَ اَنَّآ اَرْسَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ تَؤُزُّهُمْ اَزًّا ﴿٨٣﴾

83. क्या आपने नहीं देखा कि हमने शैतानों को काफ़िरों पर भेजा है वोह उन्हें हर वक़्त (इस्लामकी मुख़ालिफ़त पर) उक्साते रेहते हैं।

فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ ۭ اِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا ﴿٨٤﴾

84. सो आप उन पर (अज़ाबके लिए) जल्दी न करें हम तो खुद ही उनके (अंजामके) लिए दिन शुमार करते रेहते हैं।

يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِيْنَ اِلَى الرَّحْمٰنِ وَفْدًا ﴿٨٥﴾

85. जिस दिन हम परहेज़गारों को जमा' कर के (खुदाए) रहमान के हुज़ूर (मोअ़ज़्ज़ज़ मेहमानों की तरह) सवारियों पर ले जाएंगे।

وَّنَسُوْقُ الْمُجْرِمِيْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا ﴿٨٦﴾

86. और हम मुजरिमों को जहन्नम की तरफ़ प्यासा हांक कर ले जाएंगे।

لَا يَمْلِكُوْنَ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ﴿٨٧﴾

87. (उस दिन) लोग शफ़ाअ़त के मालिक न होंगे सिवाए उनके जिन्होंने (खुदाए) रहमान से वा'दए (शफ़ाअ़त) ले लिया है।

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا ﴿٨٨﴾

88. और (काफ़िर) केहते हैं कि (खुदाए) रहमानने (अपने लिए) लड़का बना लिया है।

لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْـًٔا اِدًّا ﴿٨٩﴾

89. (ऐ काफ़िरो !) बेशक तुम बहुत ही सख़्त और अ़जीब बात (ज़बान पर) लाए हो।

تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْاَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ۙ﴿۹۰﴾

90. कुछ बईद नहीं कि उस (बोहतान) से आस्मान फट पड़ें और ज़मीन शक़ हो जाए और पहाड़ रेज़ा रेज़ा हो कर गिर जाएं।

اَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمٰنِ وَلَدًا ۚ﴿۹۱﴾

91. कि उन्होंने (ख़ुदाए) रह्मान के लिए लड़के का दा'वा किया है।

وَمَا يَنْۢبَغِيْ لِلرَّحْمٰنِ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا ؕ﴿۹۲﴾

92. और (ख़ुदाए) रह्मान की शायाने शान नहीं है कि वोह (किसीको अपना) लड़का बनाए।

اِنْ كُلُّ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اِلَّاۤ اٰتِي الرَّحْمٰنِ عَبْدًا ؕ﴿۹۳﴾

93. आस्मानों और ज़मीनमें जो कोई भी (आबाद) हैं (ख़्वाह फ़रिश्ते हैं या जिन्नो इन्स) वोह अल्लाह के हुज़ूर महज़ बंदे के तौर पर हाज़िर होनेवाले हैं।

لَقَدْ اَحْصٰىهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ؕ﴿۹۴﴾

94. बेशक उस (अल्लाह) ने उन्हें अपने (इल्मके) अहाते में ले लिया है और उन्हें (एक एक कर के) पूरी तरह शुमार कर रखा है।

وَكُلُّهُمْ اٰتِيْهِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَرْدًا ﴿۹۵﴾

95. और उनमें से हर एक क़ियामत के दिन उसके हुज़ूर तन्हा आनेवाला है।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ وُدًّا ﴿۹۶﴾

96. बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल किए तो (ख़ुदाए) रह्मान उनके लिए (लोगोंको) दिलों में मुहब्बत पैदा फ़रमा देगा।

فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِيْنَ وَتُنْذِرَ بِهٖ قَوْمًا لُّدًّا ﴿۹۷﴾

97. सो बेशक हमने इस (क़ुरआन) को आपकी ज़बान में ही आसान कर दिया है ताकि आप इसके ज़रीए परहेज़गारों को ख़ुशख़बरी सुना सकें और इसके ज़रीए झगड़ालू क़ौमको डर सुना सकें।

وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ ؕ

98. और हमने उनसे पहले कितनी ही क़ौमों को हलाक

هَلْ تُحِسُّ مِنْهُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ﴿٩٨﴾

कर दिया है, क्या आप उनमें से किसी का वुजूद भी देखते हैं या किसी की कोई आहट भी सुनते हैं?

आयातुहा 135	20 सूरतु ताँहा मक्किय्यतुन 45	रुकूआ़तुहा 8

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरू जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

طٰهٰ ﴿١﴾

1. ताँहा (हक़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं)।

مَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لِتَشْقٰٓى ﴿٢﴾

2.(ऐ महबूबे मुकर्रम !) हमने आप पर कुरआन (इस लिए)नाज़िल नहीं फ़रमाया कि आप मशक़्क़त में पड़ जाएं।

اِلَّا تَذْكِرَةً لِّمَنْ يَّخْشٰى ﴿٣﴾

3. मगर (उसे) उस शख़्सके लिए नसीहत (बना कर उतारा) है जो (अपने रबसे) डरता है।

تَنْزِيْلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْاَرْضَ وَالسَّمٰوٰتِ الْعُلٰى ﴿٤﴾

4. (येह) उस (अल्लाह) की तरफ़से उतारा हुआ है जिसने ज़मीन और बुलंदो बाला आस्मान पैदा फ़रमाए।

اَلرَّحْمٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى ﴿٥﴾

5. (वोह) निहायत रहमत वाला (है) जो अ़र्श (या'नी जुम्ला निज़ामहाए काइनात के इक़्तिदार) पर मु-त-मक्किन हो गया।

لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرٰى ﴿٦﴾

6. (पस) जो कुछ आस्मानों (की बालाई नूरी काइनातों और ख़लाई माद्दी काइनातों)में है और जो कुछ ज़मीनमें है और जो कुछ उन दोनों के दरमियान (फ़ज़ाई और हवाई कुर्रों में) है और जो कुछ सत्हे अरज़ी के नीचे आख़िरी तेह तक है सब उसीके (निज़ाम और कुदरत के ताबे) हैं।

وَاِنْ تَجْهَرْ بِالْقَوْلِ فَاِنَّهٗ يَعْلَمُ السِّرَّ وَاَخْفٰى ﴿٧﴾

7.और अगर आप ज़िक्रो दुआ़में जहर (या'नी आवाज़ बुलंद) करें (तो भी कोई हर्ज नहीं) वोह तो सिर्र (या'नी दिलोंके राज़ों) और अख़्फ़ा (या'नी सबसे ज़्यादह मुख़्फ़ी भेदों) को भी जानता है (तो बुलंद इल्तिजाओं को क्यों नहीं सुनेगा)।

اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۝۸

8. अल्लाह (उसीका इस्मे ज़ात) है जिसके सिवा कोई मा'बूद नहीं (गोया तुम उसीका अस्बात करो और बाक़ी सब झूटे मा'बूदों की नफ़ी कर दो) उसके लिए (और भी) बहुत खूबसूरत नाम हैं (जो उसकी हसीनो जमील सिफ़ात का पता देते हैं)।

وَهَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰىۘ ۝۹

9. और क्या आपके पास मूसा (عليه السلام) की ख़बर आ चुकी है?

وقف لازم

اِذْ رَاٰ نَارًا فَقَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْۤا اِنِّيْۤ اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّيْۤ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِقَبَسٍ اَوْ اَجِدُ عَلَى النَّارِ هُدًى ۝۱۰

10. जब मूसा (عليه السلام) ने (मद्यन से वापस मिस्र आते हुए) एक आग देखी तो उन्होंने अपने घरवालों से कहा तुम यहां ठेहरे रहो मैंने एक आग देखी है (या मैंने एक आग में उन्सो मह़ब्बतका शो'ला पाया है) शायद में उसमें से कोई चिंगारी तुम्हारे लिए (भी) ले आऊं या मैं उस आग पर (से वोह) रहनुमाई पा लूं (जिसकी तलाश में सरगर्दां हूं)।

فَلَمَّاۤ اَتٰىهَا نُوْدِيَ يٰمُوْسٰى ؕ ۝۱۱

11. फिर जब वोह उस (आग) के पास पहुंचे तो निदा की गई ऐ मूसा!

اِنِّيْۤ اَنَا رَبُّكَ فَاخْلَعْ نَعْلَيْكَ ۚ اِنَّكَ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ؕ ۝۱۲

12. बेशक मैं ही तुम्हारा रब हूं सो तुम अपने जूते उतार दो, बेशक तुम तुवा की मुक़द्दस वादी में हो।

وَاَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ لِمَا يُوْحٰى ۝۱۳

13. और मैंने तुम्हें (अपनी रिसालत के लिए) चुन लिया है पस तुम पूरी तवज्जोह से सुनो जो तुम्हें वह़ी की जा रही है।

اِنَّنِيْۤ اَنَا اللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنَا فَاعْبُدْنِيْ ۙ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِيْ ۝۱۴

14. बेशक मैं ही अल्लाह हूं मेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं सो तुम मेरी इबादत किया करो और मेरी यादकी ख़ातिर नमाज़ क़ाइम किया करो।

اِنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ اَكَادُ اُخْفِيْهَا لِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا تَسْعٰى ۝۱۵

15. बेशक क़ियामतकी घड़ी आनेवाली है, मैं उसे पोशीदा रखना चाहता हूं ताकि हर जानको उस (अ़मल) का बदला दिया जाए जिसके लिए वोह कोशां है।

فَلَا يَصُدَّنَّكَ عَنْهَا مَنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ فَتَرْدٰى ﴿۱۶﴾

16. पस तुम्हें वोह शख़्स उस (के ध्यान) से रोके न रखे जो (ख़ुद) उस पर ईमान नहीं रखता और अपनी ख़्वाहिश (नफ़्स) का पैरव है वरना तुम (भी) हलाक हो जाओगे।

وَمَا تِلْكَ بِيَمِيْنِكَ يٰمُوْسٰى ﴿۱۷﴾

17. और येह तुम्हारे दाहिने हाथ में क्या है? ऐ मूसा!

قَالَ هِيَ عَصَايَ ۚ اَتَوَكَّؤُا عَلَيْهَا وَاَهُشُّ بِهَا عَلٰى غَنَمِيْ وَلِيَ فِيْهَا مَاٰرِبُ اُخْرٰى ﴿۱۸﴾

18. उन्होंने कहा येह मेरी लाठी है, मैं इस पर टेक लगाता हूं और मैं इससे अपनी बकरियों के लिए पत्ते झाड़ता हूं और इसमें मेरे लिए कई और फ़ायदे भी हैं।

قَالَ اَلْقِهَا يٰمُوْسٰى ﴿۱۹﴾

19. इर्शाद हुवा : ऐ मूसा! उसे (ज़मीन पर) डाल दो।

فَاَلْقٰىهَا فَاِذَا هِيَ حَيَّةٌ تَسْعٰى ﴿۲۰﴾

20. पस उन्होंने उसे (ज़मीन पर) डाल दिया तो वोह अचानक सांप हो गया (जो इधर उधर) दौड़ने लगा।

قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ ۫ وقفة سَنُعِيْدُهَا سِيْرَتَهَا الْاُوْلٰى ﴿۲۱﴾

21. इर्शाद फ़रमाया : उसे पकड़ लो और मत डरो हम उसे अभी उसकी पेहली हालत पर लौटा देंगे।

وَاضْمُمْ يَدَكَ اِلٰى جَنَاحِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ اٰيَةً اُخْرٰى ﴿۲۲﴾

22. और (हुक्म हुआ) अपना हाथ अपनी बगलमें दबा लो वोह बिग़ैर किसी बीमारी के सफेद चमकदार हो कर निकलेगा (येह) दूसरी निशानी है।

لِنُرِيَكَ مِنْ اٰيٰتِنَا الْكُبْرٰى ﴿۲۳﴾

23. येह इस लिए (कर रहे हैं) कि हम तुम्हें अपनी (कुदरत की) बड़ी बड़ी निशानियां दिखाएं।

اِذْهَبْ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ﴿۲۴﴾ ع ۲۴ ۱۰

24. तुम फ़िरऔनके पास जाओ वोह (ना फ़रमानी और सरकशी में) हदसे बढ़ गया है।

قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِيْ صَدْرِيْ ﴿۲۵﴾

25. (मूसा ﷺ ने) अर्ज किया : ऐ मेरे रब! मेरे लिए मेरा सीना कुशादह फ़रमा दे।

وَيَسِّرْ لِيْٓ اَمْرِيْ ﴿۲۶﴾

26. और मेरा कारे (रिसालत) मेरे लिए आसान फ़रमा दे।

وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِيْ ﴿۲۷﴾

27. और मेरी ज़बानकी गिरह खोल दे।

يَفْقَهُوْا قَوْلِيْ ﴿٢٨﴾

28. के लोग मेरी बात (आसानी से) समझ सकें।

وَاجْعَلْ لِّيْ وَزِيْرًا مِّنْ اَهْلِيْ ﴿٢٩﴾

29. और मेरे घरवालों में से मेरा एक वज़ीर बना दे।

هٰرُوْنَ اَخِي ﴿٣٠﴾

30. (वोह) मेरा भाई हारून (عليه السلام) हो।

اشْدُدْ بِهٖٓ اَزْرِيْ ﴿٣١﴾

31. उससे मेरी कमरे हिम्मत मज़बूत फ़रमा दे।

وَاَشْرِكْهُ فِيْٓ اَمْرِيْ ﴿٣٢﴾

32. और उसे मेरे कारे (रिसालत) में शरीक फ़रमा दे।

كَيْ نُسَبِّحَكَ كَثِيْرًا ﴿٣٣﴾

33. ताकि हम (दोनों) कसरतसे तेरी तस्बीह़ किया करें।

وَّنَذْكُرَكَ كَثِيْرًا ﴿٣٤﴾

34. और हम कसरतसे तेरा ज़िक्र किया करें।

اِنَّكَ كُنْتَ بِنَا بَصِيْرًا ﴿٣٥﴾

35. बेशक तू हमें (सब ह़ालात के तनाज़ुरमें) खूब देखनेवाला है।

قَالَ قَدْ اُوْتِيْتَ سُؤْلَكَ يٰمُوْسٰى ﴿٣٦﴾

36. (अल्लाहने) इर्शाद फ़रमाया : ऐ मूसा ! तुम्हारी हर मांग तुम्हे अ़त़ा कर दी।

وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلَيْكَ مَرَّةً اُخْرٰٓى ﴿٣٧﴾

37. और बेशक हमने तुम पर एक और बार (इससे पेहले भी) ऐहसान फ़रमाया था।

اِذْ اَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اُمِّكَ مَا يُوْحٰٓى ﴿٣٨﴾

38. जब हमने तुम्हारी वालिदा के दिल में वोह बात डाल दी जो डाली गई थी।

اَنِ اقْذِفِيْهِ فِي التَّابُوْتِ فَاقْذِفِيْهِ فِي الْيَمِّ فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ بِالسَّاحِلِ يَاْخُذْهُ عَدُوٌّ لِّيْ وَعَدُوٌّ لَّهٗ ۭ وَاَلْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً مِّنِّيْ ۚ وَلِتُصْنَعَ عَلٰي عَيْنِيْ ﴿٣٩﴾

وقف لازم

39. कि तुम उस (मूसा عليه السلام) को संदूक में रख दो फिर उस (संदूक) को दरिया में डाल दो फिर दरिया उसे किनारे के साथ आ लगाएगा, उसे मेरा दुश्मन और उसका दुश्मन उठा लेगा, और मैंने तुझ पर अपनी जनाब से (ख़ास) मुह़ब्बत का परतव डाल दिया है (या'नी तेरी सूरत को इस क़दर प्यारी और मन मोहनी बना दिया है कि जो तुझे देखेगा फ़रेफ़्ता हो जाएगा), और (येह इस लिए किया) ताकि तुम्हारी परवरिश मेरी आँखों के सामने की जाए।

إِذْ تَمْشِيٓ أُخْتُكَ فَتَقُولُ هَلْ
أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ مَن يَكْفُلُهُۥ ۖ فَرَجَعْنَٰكَ
إِلَىٰٓ أُمِّكَ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا
تَحْزَنَ ۚ وَقَتَلْتَ نَفْسًا فَنَجَّيْنَٰكَ
مِنَ ٱلْغَمِّ وَفَتَنَّٰكَ فُتُونًا ۚ فَلَبِثْتَ
سِنِينَ فِيٓ أَهْلِ مَدْيَنَ ۚ ثُمَّ جِئْتَ
عَلَىٰ قَدَرٍ يَٰمُوسَىٰ ﴿٤٠﴾

40. और जब तुम्हारी बहन (अजनबी बन कर) चलते चलते (फ़िरऔनके घरवालोंसे) केहने लगी : क्या मैं तुम्हें किसी (ऐसी औरत) की निशानदही कर दूं जो इस (बच्चे) की परवरिश कर दे फिर हमने तुमको तुम्हारी वालिदाकी तरफ़ (परवरिश के बहाने) वापस लौटा दिया ताकि उसकी आँख भी ठंडी होती रहे और वोह रंजीदा भी न हो, और तुमने (क़ौमे फ़िरऔन के) एक (काफ़िर) शख़्सको मार डाला था फिर हमने तुम्हें (उस) ग़मसे (भी) नजात बख़्शी और हमने तुम्हें बहुत सी आज़माइशों से गुज़ार कर खूब जांचा, फिर तुम कई साल अह्ले मद्यन में ठेहरे रहे फिर तुम (अल्लाह के) मुक़र्रर कर्दह वक़्त पर (यहां) आ गए ऐ मूसा ! (उस वक़्त उनकी उम्र ठीक चालीस बरस हो गई थी)।

وَٱصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِى ﴿٤١﴾

41. और (अब) मैंने तुम्हें अपने (अम्रे रिसालत और खुसूसी इन्आम के) लिए चुन लिया है।

ٱذْهَبْ أَنتَ وَأَخُوكَ بِـَٔايَٰتِى وَلَا تَنِيَا
فِى ذِكْرِى ﴿٤٢﴾

42. तुम और तुम्हारा भाई (हारून) मेरी निशानियां ले कर जाओ और मेरी यादमें सुस्ती न करना।

ٱذْهَبَآ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُۥ طَغَىٰ ﴿٤٣﴾

43. तुम दोनों फ़िरऔनके पास जाओ बेशक वोह सरकशी में ह़दसे गुज़र चुका है।

فَقُولَا لَهُۥ قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهُۥ
يَتَذَكَّرُ أَوْ يَخْشَىٰ ﴿٤٤﴾

44. सो तुम दोनों उससे नरम (अंदाज में) गुफ्तगू करना शायद वोह नसीह़त कुबूल कर ले या (मेरे गजब से) डरने लगे।

قَالَا رَبَّنَآ إِنَّنَا نَخَافُ أَن يَفْرُطَ
عَلَيْنَآ أَوْ أَن يَطْغَىٰ ﴿٤٥﴾

45. दोनों ने अर्ज़ किया : ऐ हमारे रब ! बेशक हमें अंदेशा है के वोह हम पर ज़ियादती करे(गा) या (ज़ियादह) सरकश हो जाए(गा)।

قَالَ لَا تَخَافَآ إِنَّنِى مَعَكُمَآ

46. इर्शाद फ़रमाया : तुम दोनों न डरो बेशक मैं तुम दोनों

أَسْمَعُ وَأَرَىٰ ﴿٤٦﴾

के साथ हूं मैं (सब कुछ) सुनता और देखता हूं।

فَأْتِيَاهُ فَقُولَا إِنَّا رَسُولَا رَبِّكَ فَأَرْسِلْ مَعَنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ وَلَا تُعَذِّبْهُمْ ۖ قَدْ جِئْنَاكَ بِآيَةٍ مِّن رَّبِّكَ ۖ وَالسَّلَامُ عَلَىٰ مَنِ اتَّبَعَ الْهُدَىٰ ﴿٤٧﴾

47. पस तुम दोनों उसके पास जाओ और कहो हम तेरे रबके भेजे हुऐ (रसूल) हैं सो तू बनी इसराईल को (अपनी गुलामीसे आज़ाद कर के) हमारे साथ भेज दे और उन्हें (मज़ीद) अज़िय्यत न पहुंचा , बेशक हम तेरे पास तेरे रबकी तरफ़ से निशानी ले कर आए हैं, और उस शख़्स पर सलामती हो जिसने हिदायत की पैरवी की।

إِنَّا قَدْ أُوحِيَ إِلَيْنَا أَنَّ الْعَذَابَ عَلَىٰ مَن كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ﴿٤٨﴾

48. बेशक हमारी तरफ़ वही भेजी गई है कि अज़ाब (हर) उस शख़्स पर होगा जो (रसूल को) झुटलाएगा और (उससे) मुंह फेर लेगा।

قَالَ فَمَن رَّبُّكُمَا يَا مُوسَىٰ ﴿٤٩﴾

49. (फ़िरऔन ने) कहा तो ऐ मूसा ! तुम दोनों का रब कौन है ?

قَالَ رَبُّنَا الَّذِي أَعْطَىٰ كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهُ ثُمَّ هَدَىٰ ﴿٥٠﴾

50. (मूसा عليه السلام ने) फ़रमाया : हमारा रब वोही है जिसने हर चीज़को (उसके लाइक) वुजूद बख़्शा फिर (उसके हस्बे हाल) उसकी रहनुमाई की।

قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُونِ الْأُولَىٰ ﴿٥١﴾

51. (फ़िरऔनने) कहा तो (उन) पहली क़ौमों का क्या हाल हुवा (जो तुम्हारे रबको नहीं मानती थीं)।

قَالَ عِلْمُهَا عِندَ رَبِّي فِي كِتَابٍ ۖ لَّا يَضِلُّ رَبِّي وَلَا يَنسَى ﴿٥٢﴾

52. (मूसा عليه السلام ने)फ़रमाया : उनका इल्म मेरे रबके पास किताबमें (महफ़ूज़) है न मेरा रब भटकता है और न भूलता है।

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَسَلَكَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا وَأَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِّن نَّبَاتٍ شَتَّىٰ ﴿٥٣﴾

53. वोही है जिसने ज़मीनको तुम्हारे रहने की जगह बनाया और उसमें तुम्हारे (सफ़र करने के) लिए रास्ते बनाए और आस्मानकी जानिबसे पानी उतारा, फिर हमने उस (पानी) के ज़रीए (ज़मीनसे) अन्वाओ अक़्साम की नबातात के जोड़े निकाल दिए।

كُلُوْا وَ ارْعَوْا اَنْعَامَكُمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي النُّهٰى ﴿٥٤﴾

مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ وَ فِيْهَا نُعِيْدُكُمْ وَ مِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى ﴿٥٥﴾

وَ لَقَدْ اَرَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَ اَبٰى ﴿٥٦﴾

قَالَ اَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ اَرْضِنَا بِسِحْرِكَ يٰمُوْسٰى ﴿٥٧﴾

فَلَنَاْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهٖ فَاجْعَلْ بَيْنَنَا وَ بَيْنَكَ مَوْعِدًا لَّا نُخْلِفُهٗ نَحْنُ وَ لَاۤ اَنْتَ مَكَانًا سُوًى ﴿٥٨﴾

قَالَ مَوْعِدُكُمْ يَوْمُ الزِّيْنَةِ وَ اَنْ يُّحْشَرَ النَّاسُ ضُحًى ﴿٥٩﴾

فَتَوَلّٰى فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ كَيْدَهٗ ثُمَّ اَتٰى ﴿٦٠﴾

قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰى وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا فَيُسْحِتَكُمْ بِعَذَابٍ ۚ وَ قَدْ خَابَ مَنِ افْتَرٰى ﴿٦١﴾

54. तुम खाओ और अपने मवेशियों को चराओ, बेशक उसमें दानिशमंदों के लिए निशानियां हैं।

55. (ज़मीन की) उसी (मिट्टी) से हमने तुम्हें पैदा किया और उसीमें हम तुम्हें लौटाएंगे और उसी से हम तुम्हें दूसरी मर्तबा (फिर) निकालेंगे।

56. और बेशक हमने उस (फ़िरऔन) को अपनी सारी निशानियां (जो मूसा और हारून عليه السلام को दी गई थीं) दिखाईं मगर उसने झुटलाया और (मानने से) इन्कार कर दिया।

57. उसने कहा : ऐ मूसा ! क्या तुम हमारे पास इस लिए आए हो कि तुम अपने जादू के ज़रीए हमें हमारे मुल्क से निकाल दो ?

58. सो हम भी तुम्हारे पास उसी की मानिन्द जादू लाएंगे तुम हमारे और अपने दरमियान (मुक़ाबले के लिए) वा'दा तय कर लो जिसकी ख़िलाफ़ वरज़ी न हम करें और न ही तुम, (मुक़ाबले की जगह) खुला और हमवार मैदान हो।

59. (मूसा عليه السلام ने) फ़रमाया : तुम्हारे वा'दे का दिन यौमे ईद (सालाना जश्नका दिन) है और येह कि (उस दिन) सारे लोग चाश्त के वक़्त जमा' हो जाएं।

60. फिर फ़िरऔन (मजलिस से) वापस मुड़ गया सो उसने अपने मक्रो फ़रेब (की तदबीरों) को इकट्ठा किया फिर (मुक़र्ररा वक़्त पर) आ गया।

61. मूसा (عليه السلام) ने उन (जादूगरों) से फ़रमाया : तुम पर अफ़्सोस (ख़बरदार!) अल्लाह पर झूटा बोहतान मत बांधना वरना वोह तुम्हें अज़ाबके ज़रीए तबाहो बरबाद कर देगा और वाक़ई वोह शख़्स ना मुराद हुआ जिसने (अल्लाह पर) बोहतान बांधा।

فَتَنَازَعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ وَاَسَرُّوا النَّجْوٰى ﴿٦٢﴾

62. चुनान्चे वोह (जादूगर) अपने मुआ़मले में बाहम झगड़ पड़े और चुपके चुपके सरगोशियां करने लगे।

قَالُوْٓا اِنْ هٰذٰنِ لَسٰحِرٰنِ يُرِيْدٰنِ اَنْ يُّخْرِجٰكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمَا وَيَذْهَبَا بِطَرِيْقَتِكُمُ الْمُثْلٰى ﴿٦٣﴾

63. केहने लगे : येह दोनों वाक़ई जादूगर हैं जो येह इरादा रखते हैं कि तुम्हें जादू के ज़रीए तुम्हारी सरज़मीन से निकाल बाहर करें और तुम्हारे मिसाली मज़हबो सक़ाफ़त को नाबूद कर दें।

فَاَجْمِعُوْا كَيْدَكُمْ ثُمَّ ائْتُوْا صَفًّا ۚ وَقَدْ اَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلٰى ﴿٦٤﴾

64. (उन्होंने बाहम फ़ैसला किया) पस तुम (जादूकी) अपनी सारी तदाबीर जमा' कर लो फिर क़तार बांध कर (इकट्ठे ही) मैदान में आ जाओ और आजके दिन वोही कामयाब रहेगा जो ग़ालिब आ जाएगा।

قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ اَنْ تُلْقِيَ وَاِمَّآ اَنْ نَّكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَلْقٰى ﴿٦٥﴾

65. (जादूगर) बोले : ऐ मूसा ! या तो तुम (अपनी चीज़) डालो और या हम ही पहले डालनेवाले हो जाएं।

قَالَ بَلْ اَلْقُوْا ۚ فَاِذَا حِبَالُهُمْ وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ اِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ اَنَّهَا تَسْعٰى ﴿٦٦﴾

66. (मूसा علیہ السلام ने) फ़रमाया बल्कि तुम ही डाल दो, फिर क्या था अचानक उनकी रस्सियां और उनकी लाठियां उनके जादू के असरसे मूसा (علیہ السلام) के ख़याल में यूं महसूस होने लगीं जिसे वोह (मैदान में) दौड़ रही हैं।

فَاَوْجَسَ فِيْ نَفْسِهٖ خِيْفَةً مُّوْسٰى ﴿٦٧﴾

67. तो मूसा (علیہ السلام) अपने दिलमें एक छुपा हुआ ख़ौफ़ सा पाने लगे।

قُلْنَا لَا تَخَفْ اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعْلٰى ﴿٦٨﴾

68. हमने (मूसा علیہ السلام से) फ़रमाया ख़ौफ़ मत करो बेशक तुमही ग़ालिब रहोगे।

وَاَلْقِ مَا فِيْ يَمِيْنِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوْا ۭ اِنَّمَا صَنَعُوْا كَيْدُ سٰحِرٍ ۭ

69. और तुम (उस लाठीको) जो तुम्हारे दाहिने हाथमें है (ज़मीन पर) डाल दो वोह उस (फ़रैब) को निगल जाएगी जो उन्होंने (मसनूई तौर पर) बना रखा है। जो कुछ उन्होंने बना रखा है (वोह तो) फ़क़त जादूगर का फ़रैब है, और

وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُ حَيْثُ أَتٰى ﴿٦٩﴾

जादूगर जहां कहीं भी आएगा फ़लाह नहीं पाएगा।

فَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ هٰرُوْنَ وَمُوْسٰى ﴿٧٠﴾

70. (फिर ऐसा ही हुआ) पस सारे जादूगर सज्दे में गिर पड़े केहने लगे : हम हारून और मूसा (عليهما السلام) के रब पर ईमान ले आए।

قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۭ اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِيْ عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ فَلَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ وَّلَاُوصَلِّبَنَّكُمْ فِيْ جُذُوْعِ النَّخْلِ ۡ وَلَتَعْلَمُنَّ اَيُّنَآ اَشَدُّ عَذَابًا وَّاَبْقٰى ﴿٧١﴾

71. (फ़िरऔन केहने लगा) : तुम उस पर ईमान ले आए हो क़ब्ल इसके कि मैं तुम्हें इजाज़त दूं, बेशक वोह (मूसा) तुम्हारा (भी) बड़ा (उस्ताद) है जिसने तुमको जादू सिखाया है पस (अब) मैं ज़रूर तुम्हारे हाथ और तुम्हारे पांव उल्टी समतों से काटूंगा और तुम्हें ज़रूर खजूरके तनों में सूली चढ़ाऊंगा और तुम ज़रूर जान लोगे कि हम में से कौन अज़ाब देनेमें ज़ियादह सख़्त और ज़ियादह मुद्दत तक बाक़ी रेहनेवाला है।

قَالُوْا لَنْ نُّؤْثِرَكَ عَلٰى مَا جَآءَنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ وَالَّذِيْ فَطَرَنَا فَاقْضِ مَآ اَنْتَ قَاضٍ ۭ اِنَّمَا تَقْضِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۭ﴿٧٢﴾

72. (जादूगरों ने) कहा : हम तुम्हें हरगिज़ उन वाज़ेह दलाइल पर तरजीह नहीं देंगे जो हमारे पास आ चुके हैं, उस (रब) की क़सम जिसने हमें पैदा फ़रमाया है तू जो हुक्म करनेवाला है कर ले, तू फ़क़त (इस चंद रोज़ा) दुन्यवी ज़िन्दगी ही से मुतअ़ल्लिक फ़ैसला कर सक्ता है।

اِنَّآ اٰمَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا خَطٰيٰنَا وَمَآ اَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ ۭ وَاللّٰهُ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ﴿٧٣﴾

73. बेशक हम अपने रब पर ईमान लाए हैं ताकि वोह हमारी ख़ताऐं बख़्श दे और उसे भी (मुआफ़ फ़रमा दे) जिस जादूगरी पर तूने हमें मजबूर किया था, और अल्लाह ही बेहतर है और हमेशा बाक़ी रेहने वाला है।

اِنَّهٗ مَنْ يَّاْتِ رَبَّهٗ مُجْرِمًا فَاِنَّ لَهٗ جَهَنَّمَ ۭ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى ﴿٧٤﴾

74. बेशक जो शख़्स अपने रबके पास मुजरिम बन कर आएगा तो बेशक उसके लिए जहन्नम है, (और वोह ऐसा अज़ाब है कि) न वोह उसमें मर सकेगा और न ही ज़िन्दा रहेगा।

وَ مَنْ يَّاْتِهٖ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصّٰلِحٰتِ فَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ الدَّرَجٰتُ الْعُلٰى ﴿۷۵﴾

75. और जो शख़्स उसके हुज़ूर मोमिन बन कर आएगा (मज़ीद येह कि) उसने नेक अ़मल किए होंगे तो उनही लोगों के लिए बुलंद दरजात हैं।

جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا ؕ وَ ذٰلِكَ جَزٰٓؤُا مَنْ تَزَكّٰى ﴿۷۶﴾

76. (वोह) सदा बहार बाग़ात हैं जिनके नीचेसे नेहरें रवां हैं (वोह) उनमें हमेशा रेहनेवाले हैं, और येह उस शख़्स का सिला है जो (कुफ्रो मा'सियत की आलूदगी से) पाक हो गया।

وَ لَقَدْ اَوْحَیْنَاۤ اِلٰى مُوْسٰۤى ۙ اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِیْ فَاضْرِبْ لَهُمْ طَرِیْقًا فِی الْبَحْرِ یَبَسًا ۙ لَّا تَخٰفُ دَرَكًا وَّ لَا تَخْشٰى ﴿۷۷﴾

77. और बेशक हमने मूसा (عليه السلام) की तरफ़ वही भेजी कि मेरे बंदों को रातों रात ले कर निकल जाओ, सो उनके लिए दरिया में (अपना अ़सा मार कर) खुश्क रास्ता बना लो, न (फ़िरऔ़न के) आ पकड़ने का ख़ौफ़ करो और न (ग़र्क़ होने का) अन्देशा रखो।

فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُوْدِهٖ فَغَشِیَهُمْ مِّنَ الْیَمِّ مَا غَشِیَهُمْ ؕ﴿۷۸﴾

78. फिर फ़िरऔ़नने अपने लश्करों के साथ उनका तआ़क़ुब किया पस दरिया (की मौजों)ने उन्हें ढांप लिया जितना भी उन्हें ढांपा।

وَ اَضَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَهٗ وَ مَا هَدٰى ﴿۷۹﴾

79. और फ़िरऔ़नने अपनी क़ौमको गुमराह कर दिया और उन्हें सीधे रास्ते पर न लगाया।

یٰبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ قَدْ اَنْجَیْنٰكُمْ مِّنْ عَدُوِّكُمْ وَ وٰعَدْنٰكُمْ جَانِبَ الطُّوْرِ الْاَیْمَنَ وَ نَزَّلْنَا عَلَیْكُمُ الْمَنَّ وَ السَّلْوٰى ﴿۸۰﴾

80. ऐ बनी इसराईल! (देखो) बेशक हमने तुम्हें तुम्हारे दुश्मनसे नजात बख़्शी और हमने तुमसे (कोहे) तूरकी दाहिनी जानिब (आने का) वा'दा किया और (वहां) हमने तुम पर मन्नो सल्वा उतारा।

كُلُوْا مِنْ طَیِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَ لَا تَطْغَوْا فِیْهِ فَیَحِلَّ عَلَیْكُمْ غَضَبِیْ ۚ وَ

81. (और तुमसे फ़रमाया) उन पाकीज़ा चीज़ों में से खाओ जिनकी हमने तुम्हें रोज़ी दी है और उसमें हद से न बढ़ो वरना तुम पर मेरा ग़ज़ब वाजिब हो जाएगा, और

مَنْ يَّحْلِلْ عَلَيْهِ غَضَبِيْ فَقَدْ هَوٰى ﴿٨١﴾

जिस पर मेरा ग़ज़ब वाजिब हो गया सो वोह वाक़ई हलाक हो गया।

وَ اِنِّيْ لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ وَ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدٰى ﴿٨٢﴾

82. और बेशक मैं बहुत ज़ियादह बख़्शनेवाला हूं उस शख़्सको जिसने तौबा की और ईमान लाया और नेक अ़मल किया फिर हिदायत पर (क़ाइम) रहा।

وَمَآ اَعْجَلَكَ عَنْ قَوْمِكَ يٰمُوْسٰى ﴿٨٣﴾

83. और ऐ मूसा! तुमने अपनी क़ौमसे (पहले तूर पर आ जाने में) जल्दी क्यों की।

قَالَ هُمْ اُولَآءِ عَلٰٓى اَثَرِيْ وَعَجِلْتُ اِلَيْكَ رَبِّ لِتَرْضٰى ﴿٨٤﴾

84. (मूसा عليه السلام ने) अ़र्ज़ किया : वोह लोग भी मेरे पीछे आ रहे हैं और मैंने (ग़ल्बए शौक़ो महब्बत में) तेरे हुज़ूर पहुंचने में जल्दी की है ऐ मेरे रब! ताकि तू राज़ी हो जाए।

قَالَ فَاِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ مِنْۢ بَعْدِكَ وَاَضَلَّهُمُ السَّامِرِيُّ ﴿٨٥﴾

85. इर्शाद हुवा : बेशक हमने तुम्हारे (आने के) बाद तुम्हारी क़ौमको फ़ित्ने में मुब्तिला कर दिया है और उन्हें सामरीने गुमराह कर डाला है।

فَرَجَعَ مُوْسٰٓى اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۚ قَالَ يٰقَوْمِ اَلَمْ يَعِدْكُمْ رَبُّكُمْ وَعْدًا حَسَنًا ۬ اَفَطَالَ عَلَيْكُمُ الْعَهْدُ اَمْ اَرَدْتُّمْ اَنْ يَّحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَخْلَفْتُمْ مَّوْعِدِيْ ﴿٨٦﴾

86. पस मूसा (عليه السلام) अपनी क़ौमकी तरफ़ सख़्त ग़ज़बनाक (और) रंजीदह हो कर पलट गए (और) फ़रमाया : ऐ मेरी क़ौम! क्या तुम्हारे रबने तुमसे एक अच्छा वा'दा नहीं फ़रमाया था, क्या तुम पर वा'दे (के पूरे होने) में तवील मुद्दत गुज़र गई थी, क्या तुमने येह चाहा कि तुम पर तुम्हारे रबकी तरफ़से ग़ज़ब वाजिब (और नाज़िल) हो जाए? पस तुमने मेरे वा'देकी ख़िलाफ़ वरज़ी की है।

قَالُوْا مَآ اَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلْكِنَا وَلٰكِنَّا حُمِّلْنَآ اَوْزَارًا مِّنْ زِيْنَةِ الْقَوْمِ فَقَذَفْنٰهَا فَكَذٰلِكَ اَلْقَى السَّامِرِيُّ ﴿٨٧﴾

87. वोह बोले : हमने अपने इख़्तियारसे आपके वा'देकी ख़िलाफ़ वरज़ी नहीं की मगर (हुवा येह कि) क़ौमके ज़ेवरातके भारी बोझ हम पर लाद दिए गए थे तो हमने उन्हें (आग में) डाल दिया फिर उसी तरह सामरी ने (भी) डाल दिए।

فَاَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ فَقَالُوْا هٰذَآ اِلٰهُكُمْ وَ اِلٰهُ مُوْسٰى ۬ فَنَسِیَ ﴿٨٨﴾

88. फिर उस (सामरी)ने उनके लिए (उन गले हुए ज़ेवरात से) एक बछड़े का क़ालिब (तैयार कर के) निकाल लिया उसमें (से) गाय की सी आवाज़ (निकलती) थी तो उन्होंने कहा येह तुम्हारा मा'बूद है और मूसा (عليه السلام) का (भी येही) मा'बूद है बस वोह (सामरी यहां पर) भूल गया।

اَفَلَا یَرَوْنَ اَلَّا یَرْجِعُ اِلَیْهِمْ قَوْلًا ۙ۬ وَّلَا یَمْلِكُ لَهُمْ ضَرًّا وَّ لَا نَفْعًا ﴿٨٩﴾

89. भला क्या वोह (इतना भी) नहीं देखते थे कि वोह (बछड़ा) उन्हें किसी बात का जवाब (भी) नहीं दे सक्ता और न उनके लिए किसी नुक़्सानका इख़्तियार रखता है और न नफ़' का।

ع ١٣ ١٣

وَ لَقَدْ قَالَ لَهُمْ هٰرُوْنُ مِنْ قَبْلُ یٰقَوْمِ اِنَّمَا فُتِنْتُمْ بِهٖ ۚ وَ اِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمٰنُ فَاتَّبِعُوْنِیْ وَ اَطِیْعُوْۤا اَمْرِیْ ﴿٩٠﴾

90. और बेशक हारून (عليه السلام) ने (भी) उनको उससे पहले (तंबीहन) केह दिया था कि ऐ क़ौम! तुम इस (बछड़े)के ज़रीए तो बस फ़िल्ने में ही मुब्तिला हो गए हो, हालांकि बेशक तुम्हारा रब (येह नहीं वोही) रहूमान है पस तुम मेरी पैरवी करो और मेरे हुक्म की इताअ़त करो।

قَالُوْا لَنْ نَّبْرَحَ عَلَیْهِ عٰكِفِیْنَ حَتّٰى یَرْجِعَ اِلَیْنَا مُوْسٰى ﴿٩١﴾

91. वोह बोले : हम तो उसी (की पूजा) पर जमे रहेंगे ता वक़्ते कि मूसा (عليه السلام) हमारी तरफ़ पलट आएं।

قَالَ یٰهٰرُوْنُ مَا مَنَعَكَ اِذْ رَاَیْتَهُمْ ضَلُّوْۤا ۙ ﴿٩٢﴾

92. (मूसा عليه السلام ने) फ़रमाया : ऐ हारून ! तुमको किस चीज़ने रोके रखा जब तुमने देखा कि येह गुमराह हो रहे हैं।

اَلَّا تَتَّبِعَنِ ؕ اَفَعَصَیْتَ اَمْرِیْ ﴿٩٣﴾

93. (मज़ीद येह कि तुम्हें किसने मना' किया कि उन्हें सख़्तीसे रोकने में) तुम मेरे तरीक़े की पैरवी न करो, क्या तुमने मेरी ना फ़रमानी की ?

قَالَ یَبْنَؤُمَّ لَا تَاْخُذْ بِلِحْیَتِیْ وَ لَا بِرَاْسِیْ ۚ اِنِّیْ خَشِیْتُ اَنْ تَقُوْلَ

94. (हारून عليه السلام ने) कहा : ऐ मेरी मां के बेटे ! आप न मेरी दाढ़ी पकड़ें और न मेरा सर, मैं (सख़्ती करने में) इस बातसे डरता था कि कहीं आप येह (न) कहें कि तुमने

فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ وَلَمْ تَرْقُبْ قَوْلِيْ ﴿٩٤﴾

बनी इसराईल के दरमियान फ़िरका बंदी कर दी है और मेरे क़ौल की निगेहदाश्त नहीं की।

قَالَ فَمَا خَطْبُكَ يٰسَامِرِيُّ ﴿٩٥﴾

95. (मूसा ﷺ ने) फ़रमाया ऐ सामरी! (बता) तेरा क्या मुआ़मला है ?

قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوْا بِهٖ فَقَبَضْتُ قَبْضَةً مِّنْ اَثَرِ الرَّسُوْلِ فَنَبَذْتُهَا وَ كَذٰلِكَ سَوَّلَتْ لِيْ نَفْسِيْ ﴿٩٦﴾

96. उसने कहा : मैंने वोह चीज़ देखी जो उन लोगोंने नहीं देखी थी सो मैंने उस फ़िरस्तादह (फ़रिश्ते) के नक़्शे क़दमसे (जो आपके पास आया था) एक मुठ्ठी (मिट्टी की) भर ली फिर मैंने उसे (बछड़े के क़ालिब में) डाल दिया और इसी तरह मेरे नफ़्सने मुझे (येह बात) भली कर दिखाई।

قَالَ فَاذْهَبْ فَاِنَّ لَكَ فِي الْحَيٰوةِ اَنْ تَقُوْلَ لَا مِسَاسَ ۖ وَ اِنَّ لَكَ مَوْعِدًا لَّنْ تُخْلَفَهٗ ۚ وَانْظُرْ اِلٰٓى اِلٰهِكَ الَّذِيْ ظَلْتَ عَلَيْهِ عَاكِفًا ؕ لَنُحَرِّقَنَّهٗ ثُمَّ لَنَنْسِفَنَّهٗ فِي الْيَمِّ نَسْفًا ﴿٩٧﴾

97. (मूसा ﷺ ने) फ़रमाया : पस तू (यहां से निकल कर) चला जा चुनान्चे तेरे लिए (सारी) ज़िन्दगी में येह (सज़ा) है कि तू (हर किसीको येही) केहता रहे (मुझे) न छूना (मुझे न छूना), और बेशक तेरे लिए एक और वा'दए (अ़ज़ाब) भी है जिसकी हरगिज़ ख़िलाफ़ वरज़ी न होगी, और तू अपने उस (मन घड़त) मा'बूद की तरफ़ देख जिस (की पूजा) पर तू जम कर बैठा रहा, हम उसे ज़रूर जला डालेंगे फिर हम उस (की राख) को ज़रूर दरिया में अच्छी तरह बिखेर देंगे।

اِنَّمَآ اِلٰهُكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ وَسِعَ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ﴿٩٨﴾

98. (लोगो !) तुम्हारा मा'बूद सिर्फ़ (वोही) अल्लाह है जिसके सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह हर चीज़को (अपने) इल्मके अहाते में लिए हुए है।

كَذٰلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ مَا قَدْ سَبَقَ ۚ وَ قَدْ اٰتَيْنٰكَ مِنْ لَّدُنَّا ذِكْرًا ﴿٩٩﴾

99. इस तरह हम आपको (ऐ हबीबे मुअ़ज्जम !) उन (क़ौमों) की ख़बरें सुनाते हैं जो गुज़र चुकी हैं और बेशक हमने आपको अपनी ख़ास जनाबसे ज़िक्र (या'नी नसीहतनामा) अ़ता फ़रमाया है।

مَنْ اَعْرَضَ عَنْهُ فَاِنَّهٗ يَحْمِلُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وِزْرًا ﴿١٠٠﴾

100. जो शख़्स उससे रूगरदानी करेगा तो बेशक वोह क़ियामत के दिन सख़्त बोझ उठाएगा।

خٰلِدِيْنَ فِيْهِ ؕ وَ سَآءَ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ حِمْلًا ﴿١٠١﴾

101. वोह उस (अ़ज़ाब) में हमेशा (पड़े) रहेंगे, और उनके लिए क़ियामत के दिन बहुत ही बुरा बोझ होगा।

يَّوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ وَ نَحْشُرُ الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا ﴿١٠٢﴾

102. जिस दिन सूर फूंका जाएगा और उस दिन हम मुजरिमों को यूं जमा' करेंगे कि उनके जिस्म और आँखें (शिद्दते ख़ौफ़ और अँधेपन के बाइ़स) नीलगूं होंगी।

يَّتَخَافَتُوْنَ بَيْنَهُمْ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا عَشْرًا ﴿١٠٣﴾

103. आपसमें चुपके चुपके बातें करते होंगे कि तुम दुनियामें मुश्किल से दस दिन ही ठेहरे होगे।

نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ اِذْ يَقُوْلُ اَمْثَلُهُمْ طَرِيْقَةً اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا يَوْمًا ﴿١٠٤﴾

104. हम ख़ूब जानते हैं वोह जो कुछ केह रहे होंगे जबकि उनमें से एक अ़क़्लो अ़मल में बेहतर शख़्स कहेगा कि तुम तो एक दिन के सिवा (दुनियामें) ठेहरे ही नहीं हो।

وَ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّيْ نَسْفًا ﴿١٠٥﴾

105. और आपसे येह लोग पहाड़ों की निस्बत सवाल करते हैं सो फ़रमा दीजिए : मेरा रब उन्हें रेज़ा रेज़ा करके उड़ा देगा।

فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ﴿١٠٦﴾

106. फिर उसे हमवार और बे आबो गियाह ज़मीन बना देगा।

لَّا تَرٰى فِيْهَا عِوَجًا وَّ لَاۤ اَمْتًا ﴿١٠٧﴾

107. जिसमें आप न कोई पस्ती देखेंगे न कोई बुलंदी।

يَوْمَئِذٍ يَّتَّبِعُوْنَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهٗ ۚ وَ خَشَعَتِ الْاَصْوَاتُ لِلرَّحْمٰنِ فَلَا تَسْمَعُ اِلَّا هَمْسًا ﴿١٠٨﴾

108. उस दिन लोग पुकारनेवाले के पीछे चलते जाएंगे उस (के पीछे चलने) में कोई कजी नहीं होगी, और (ख़ुदाए) रह़मानके जलाल से सब आवाज़ें पस्त हो जाएंगी पस तुम हलकी सी आहट के सिवा कुछ न सुनोगे।

يَوْمَئِذٍ لَّا تَنفَعُ الشَّفَاعَةُ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَرَضِيَ لَهُ قَوْلًا ﴿١٠٩﴾

109. उस दिन सिफ़ारिश सूदमंद न होगी सिवाए उस शख़्स (की सिफ़ारिश) के जिसे (ख़ुदाए) रह्‌माननें इज़्नो (इजाज़त) दे दी है और जिसकी बातसे वोह राज़ी हो गया है (जैसा कि अंबियाओ मुर्सलीन, अवलिया, मुत्तक़ीन, मा'सूम बच्चों और दीगर कई बंदों का शफ़ाअ़त करना साबित है)।

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِهِ عِلْمًا ﴿١١٠﴾

110. वोह उन (सब चीज़ों) को जानता है जो उनके आगे हैं और जो उनके पीछे हैं और वोह (अपने) इल्मसे उस (के इल्म) का अहाता नहीं कर सक्ते।

وَعَنَتِ الْوُجُوهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّومِ ۖ وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ﴿١١١﴾

111. और (सब) चेहरे उस हमेशा ज़िन्दा (और) क़ाइम रेहनेवाले (रब) के हुज़ूर झुक जाएंगे, और बेशक वोह शख़्स ना मुराद होगा जिसने ज़ुल्मका बोझ उठा लिया।

وَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخٰفُ ظُلْمًا وَّلَا هَضْمًا ﴿١١٢﴾

112. और जो शख़्स नेक अ़मल करता है और वोह साहिबे ईमान भी है तो उसे न किसी ज़ुल्मका ख़ौफ़ होगा और न नुक़्सान का।

وَكَذٰلِكَ أَنْزَلْنٰهُ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا وَّصَرَّفْنَا فِيهِ مِنَ الْوَعِيدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ أَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ﴿١١٣﴾

113. और उसी तरह हमने इस (आख़िरी वही) को अ़रबी ज़बानमें (ब शक्ले) क़ुरआन उतारा है और हमने उसमें (अ़ज़ाबसे) डराने की बातें बार बार (मुख़्तलिफ़ तरीक़ोंसे) बयान की हैं ताकि वोह परहेज़गार बन जाएं या (येह क़ुरआन) उन (के दिलों) में यादे (आख़िरत या क़ुबूले नसीहतका जज़्बा) पैदा कर दे।

فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْاٰنِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يُّقْضٰٓى إِلَيْكَ وَحْيُهُ ۫ وَقُلْ رَّبِّ زِدْنِي عِلْمًا ﴿١١٤﴾

114. पस अल्लाह बुलंद शानवाला है वोही बादशाहे हक़ीक़ी है, और आप क़ुरआन (के पढ़ने) में जल्दी न किया करें क़ब्ल इसके कि उसकी वही आप पर पूरी उतर जाए, और आप (रबके हुज़ूर येह) अ़र्ज़ किया करें कि ऐ मेरे रब! मुझे इल्ममें और बढ़ा दे।

وَلَقَدْ عَهِدْنَآ إِلٰٓى اٰدَمَ مِنْ قَبْلُ

115. और दर हक़ीक़त हमने उससे (बहुत) पहले

ع ٦ ١١ ١٥

فَنَسِيَ وَلَمْ نَجِدْ لَهٗ عَزْمًا ﴿۱۱۵﴾ ع

आदम (عليه السلام) को ताकीदी हुक्म फ़रमाया था सो वोह भूल गए और हमने उनमें बिलकुल (ना फ़रमानी का कोई) इरादा नहीं पाया (येह महज़ एक भूल थी)।

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰى ﴿۱۱۶﴾

116. और (वोह वक्त याद करें) जब हमने फ़रिश्तोंसे फ़रमाया तुम आदम (عليه السلام) को सजदह करो तो उन्होंने सजदह किया सिवाए इब्लीस के, उसने इन्कार किया।

فَقُلْنَا يٰٓاٰدَمُ اِنَّ هٰذَا عَدُوٌّ لَّكَ وَلِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقٰى ﴿۱۱۷﴾

117. फिर हमने फ़रमाया : ऐ आदम ! बेशक येह (शैतान) तुम्हारा और तुम्हारी बीवीका दुश्मन है, सो येह कहीं तुम दोनों को जन्नत से निकलवा न दे फिर तुम मुशक़्क़तमें पड़ जाओगे।

اِنَّ لَكَ اَلَّا تَجُوْعَ فِيْهَا وَلَا تَعْرٰى ﴿۱۱۸﴾

118. बेशक तुम्हारे लिए इस (जन्नत)में येह (राहत) है कि तुम्हें न भूख लगेगी और न बर्हना होगे।

وَاَنَّكَ لَا تَظْمَؤُا فِيْهَا وَلَا تَضْحٰى ﴿۱۱۹﴾

119. और येह कि तुम्हें न यहां प्यास लगेगी और न धूप सताएगी।

فَوَسْوَسَ اِلَيْهِ الشَّيْطٰنُ قَالَ يٰٓاٰدَمُ هَلْ اَدُلُّكَ عَلٰى شَجَرَةِ الْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا يَبْلٰى ﴿۱۲۰﴾

120. पस शैतानने उन्हें (एक) ख़याल दिला दिया वोह केहने लगा : ऐ आदम ! क्या मैं तुम्हें (क़ुर्बे इलाहीकी जन्नतमें) दाइमी ज़िन्दगी बसर करनेका दरख़्त बता दूं और (ऐसी मलकूती) बादशाहत (का राज़) भी जिसे न ज़वाल आएगा न फ़ना होगी।

فَاَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ؗ وَعَصٰٓى اٰدَمُ رَبَّهٗ فَغَوٰى ﴿۱۲۱﴾ ۖ

121. सो दोनोंने (इस मुकामे क़ुर्बे इलाही की ला ज़वाल ज़िन्दगीके शौक़में) उस दरख़्तसे फल खा लिया पस उन पर उनके मुक़ामहाए सत्र ज़ाहिर हो गए और दोनों अपने (बदन) पर जन्नत (के दरख़्तों) के पत्ते चिपकाने लगे और आदम (عليه السلام) से अपने रबके हुक्म (को समझने) में फ़रो गुज़ाश्त हुई ★ सो वोह (जन्नत में दाइमी ज़िन्दगी की) मुराद न पा सके।

★(कि मुमानिअ़त मख़्सूस एक दरख़्त की थी या उसकी पूरी नौअ़ की थी, क्योंकि आप (عليه السلام) ने फल उस मख़्सूस दरख़्तका नहीं खाया था बल्कि उसी नौअ़ के दूसरे दरख़्त से खाया था, येह समझ कर

ثُمَّ اجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدٰى ﴿١٢٢﴾

122. फिर उनके रबने उन्हें (अपनी क़ुर्बतो नुबुव्वत के लिए) चुन लिया और उन पर (अफ़्वो रहूमत की ख़ास) तवज्जोह फ़रमाई और मंज़िले मक्सूद की राह दिखा दी।

قَالَ اهْبِطَا مِنْهَا جَمِيْعًا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّيْ هُدًى ۙ فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَايَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقٰى ﴿١٢٣﴾

123. इर्शाद हुवा : तुम यहां से सबके सब उतर जाओ, तुम में से बा'ज़ बा'ज़ के दुश्मन होंगे, फिर जब मेरी जानिबसे तुम्हारे पास कोई हिदायत (वह़ी) आ जाए सो जो शख़्स मेरी हिदायतकी पैरवी करेगा तो वोह न (दुनियामें) गुमराह होगा और न (आख़िरत में) बदनसीब होगा।

وَمَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِيْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً ضَنْكًا وَّنَحْشُرُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَعْمٰى ﴿١٢٤﴾

124. और जिसने मेरे ज़िक्र (या'नी मेरी याद और नसीह़त) से रूगरदानी की तो उसके लिए दुन्यावी मआश (भी) तंग कर दिया जाएगा और हम उसे क़ियामत के दिन (भी) अँधा उठाएंगे।

قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِيْۤ اَعْمٰى وَقَدْ كُنْتُ بَصِيْرًا ﴿١٢٥﴾

125. वोह कहेगा : ऐ मेरे रब ! तूने मुझे (आज) अँधा क्यों उठाया ह़ालांकि मैं (दुनिया में) बीना था।

قَالَ كَذٰلِكَ اَتَتْكَ اٰيٰتُنَا فَنَسِيْتَهَا ۚ وَكَذٰلِكَ الْيَوْمَ تُنْسٰى ﴿١٢٦﴾

126. इर्शाद हुवा : ऐसा ही (हुवाकि दुन्या में) तेरे पास हमारी निशानियां आईं पस तूने उन्हें भुला दिया और आज उसी तरह तू (भी) भुला दिया जाएगा।

وَكَذٰلِكَ نَجْزِيْ مَنْ اَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ؕ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَدُّ وَاَبْقٰى ﴿١٢٧﴾

127. और उसी तरह हम उस शख़्स को बदला देते हैं जो (गुनाहों में) ह़दसे निकल जाए और अपने रबकी आयतों पर ईमान न लाए, और बेशक आख़िरत का अ़ज़ाब बड़ा ही सख़्त और हमेशा रेहनेवाला है।

اَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ مَسٰكِنِهِمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي النُّهٰى ﴿١٢٨﴾

128.क्या उन्हें (इस बातने)हिदायत न दी कि हमने उनसे पहले कितनी ही उम्मतों को हलाक कर दिया जिनकी रहाइशगाहों में (अब) येह लोग चलते फिरते हैं, बेशक उसमें दानिशमंदों के लिए(बहुत सी) निशानियां हैं।

وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ

129. और अगर आपके रबकी जानिबसे एक बात पेहले

कि शायद मुमानिअ़त उसी एक दरख़्त की थी)

لَكَانَ لِزَامًا وَّاَجَلٌ مُّسَمًّى ﴿١٢٩﴾

से तय न हो चुकी होती और (उनके अज़ाब के लिए क़ियामत का) वक्त मुक़र्रर न होता तो (उन पर अज़ाब का अभी उतरना) लाज़िम हो जाता।

فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوْبِهَا ۚ وَمِنْ اٰنَآئِ الَّيْلِ فَسَبِّحْ وَاَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضٰى ﴿١٣٠﴾

130. पस आप उनकी (दिल आज़ार) बातों पर सब्र फ़रमाया करें और अपने रबकी हम्द के साथ तस्बीह किया करें तुलूए आफ़्ताब से पहले (नमाज़े फ़जर में) और उसके गुरूबसे क़ब्ल (नमाज़े अ़सर में) और रातकी इब्तिदाई साअ़तोंमें (या'नी मग़रिब और इशामें) भी तस्बीह़ किया करें और दिनके किनारों पर भी (नमाज़े ज़ोहरमें जब दिनका निस्फ़ अव्वल ख़त्म और निस्फ़े सानी शुरू होता है, (ऐ ह़बीबे मुकर्रम ! येह सब कुछ इस लिए है) ताकि आप राज़ी हो जाएं।

وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ لِنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ؕ وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ﴿١٣١﴾

131. और आप दुन्यवी ज़िन्दगीमें ज़ेबो आराइश की उन चीज़ोंकी तरफ़ हैरतो तअज्जुबकी निगाह न फ़रमाएं जो हमने (काफ़िर दुनियादारों के) बा'ज़ तब्क़ातको (आरज़ी) लुत्फ़ अंदोज़ीके लिए दे रखी हैं ताकि हम उन (ही चीज़ों) में उनके लिए फ़ित्ना पैदा कर दें, और आपके रब की (उख़्रवी) अ़ता बहतर और हमेशा बाक़ी रहनेवाली है।

وَاْمُرْ اَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا ؕ لَا نَسْـَٔلُكَ رِزْقًا ؕ نَحْنُ نَرْزُقُكَ ؕ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوٰى ﴿١٣٢﴾

132. और आप अपने घरवालों को नमाज़का हुक्म फ़रमाएं और इस पर साबित क़दम रहें, हम आपसे रिज़्क़ तलब नहीं करते (बल्कि) हम आपको रिज़्क़ देते हैं, और बेहतर अंजाम परहेज़गारी का ही है।

وَقَالُوْا لَوْلَا يَاْتِيْنَا بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ اَوَلَمْ تَاْتِهِمْ بَيِّنَةُ مَا فِى الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ﴿١٣٣﴾

133. और (कुफ़्फ़ार केहते हैं कि येह (रसूल) हमारे पास अपने रबकी तरफ़से कोई निशानी क्यों नहीं लाते, क्या उनके पास उन बातों का वाज़ेह़ सुबूत (या'नी कुरआन) नहीं आ गया जो अगली किताबों में (मजकूर) थीं।

وَلَوْ اَنَّآ اَهْلَكْنٰهُمْ بِعَذَابٍ مِّنْ

134. और अगर हम उन लोगोंको इससे पहले (ही)

قَبۡلِهٖ لَقَالُوۡا رَبَّنَا لَوۡ لَاۤ اَرۡسَلۡتَ
اِلَيۡنَا رَسُوۡلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ مِنۡ
قَبۡلِ اَنۡ نَّذِلَّ وَنَخۡزٰى ﴿١٣٤﴾

किसी अ़ज़ाबके ज़रीए हलाक कर डालते तो येह केहते : ऐ हमारे रब ! तूने हमारे पास किसी रसूल को क्यों न भेजा कि हम तेरी आयतों की पैरवी कर लेते इससे क़ब्ल कि हम ज़लील और रुस्वा होते।

قُلۡ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوۡا ۚ
فَسَتَعۡلَمُوۡنَ مَنۡ اَصۡحٰبُ الصِّرَاطِ
السَّوِىِّ وَمَنِ اهۡتَدٰى ﴿١٣٥﴾ ع

135. फ़रमा दीजिए : हर कोई मुन्तज़िर है, सो तुम इन्तिज़ार करते रहो, पस तुम जल्द ही जान लोगे कि कौन लोग राहे रास्तवाले हैं और कौन हिदायतयाफ़्ता हैं।

आयातुहा 112 | 21 सूरतुल अम्बियाइ मक्कियतुन 73 | रुकूआतुहा 7

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ ۚ ۝١

1. लोगों के लिए उनके ह़िसाबका वक़्त क़रीब आ पहुंचा मगर वोह गफ़लत में (पड़े ताअ़तसे) मुंह फेरे हुए हैं।

مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنْ رَّبِّهِمْ مُّحْدَثٍ اِلَّا اسْتَمَعُوْهُ وَهُمْ يَلْعَبُوْنَ ۙ ۝٢

2. उनके पास उनके रबकी जानिबसे जब भी कोई नई नसीह़त आती है तो वोह उसे यूं (बे परवाही से) सुनते हैं गोया वोह खेलकूद में लगे हुए हैं।

لَاهِيَةً قُلُوْبُهُمْ ؕ وَاَسَرُّوا النَّجْوَى ۖ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۖ هَلْ هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۚ اَفَتَاْتُوْنَ السِّحْرَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ۝٣

3. उनके दिल ग़ाफ़िल हो चुके हैं, और (येह) ज़ालिम लोग (आपके ख़िलाफ़) आहिस्ता आहिस्ता सरगोशियां करते हैं कि येह तो मह़ज़ तुम्हारे ही जैसा एक बशर है, क्या फिर (भी) तुम (उसके) जादूके पास जाते हो ह़ालांकि तुम देख रहे हो।

قٰلَ رَبِّيْ يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِي السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ۫ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝٤

4. (नबिय्ये मुअ़ज़्ज़म ﷺ ने) फ़रमाया कि मेरा रब आस्मान और ज़मीन में कही जानेवाली (हर) बातको जानता है और वोह ख़ूब सुननेवाला ख़ूब जाननेवाला है।

بَلْ قَالُوْٓا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍۭ بَلِ افْتَرٰىهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ ۚۖ فَلْيَاْتِنَا بِاٰيَةٍ كَمَآ اُرْسِلَ الْاَوَّلُوْنَ ۝٥

5. बल्कि (ज़ालिमोंने यहां तक) कहा कि येह (क़ुरआन) परेशान ख़्वाबों (में देखी हुई बातें) हैं बल्कि इस (रसूल ﷺ)ने उसे (ख़ुद ही) घड़ लिया है बल्कि (येह कि) वोह शाइर है (अगर येह सच्चा है) तो येह (भी) हमारे पास कोई निशानी ले आए जैसा कि अगले (रसूल निशानियों के साथ) भेजे गए थे।

مَآ اٰمَنَتْ قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْيَةٍ

6. उनसे पहले हमने जिस भी बस्तीको हलाक किया वोह

اَهۡلَكۡنٰهَا ۚ اَفَهُمۡ يُؤۡمِنُوۡنَ ﴿٦﴾

(उनही निशानियों पर) ईमान नहीं लाई थी तो क्या येह ईमान ले आएंगे।

وَمَاۤ اَرۡسَلۡنَا قَبۡلَكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوۡحِىۡۤ اِلَيۡهِمۡ فَسۡـَٔلُوۡۤا اَهۡلَ الذِّكۡرِ اِنۡ كُنۡتُمۡ لَا تَعۡلَمُوۡنَ ﴿٧﴾

7. और (ऐ ह़बीबे मुकर्रम !) हमने आपसे पहले (भी) मर्दों को ही (रसूल बना कर) भेजा था हम उनकी तरफ़ वह़ी भेजा करते थे (लोगो !) तुम अहले ज़िक्रसे पूछ लिया करो अगर तुम (ख़ुद) न जानते हो।

وَمَا جَعَلۡنٰهُمۡ جَسَدًا لَّا يَاۡكُلُوۡنَ الطَّعَامَ وَمَا كَانُوۡا خٰلِدِيۡنَ ﴿٨﴾

8. और हमने उन (अम्बिया) को ऐसे जिस्मवाला नहीं बनाया था कि वोह खाना न खाते हों और न ही वोह (दुनियामें बह़याते ज़ाहिरी) हमेशा रेहनेवाले थे।

ثُمَّ صَدَقۡنٰهُمُ الۡوَعۡدَ فَاَنۡجَيۡنٰهُمۡ وَمَنۡ نَّشَآءُ وَاَهۡلَكۡنَا الۡمُسۡرِفِيۡنَ ﴿٩﴾

9. फिर हमने उन्हें अपना वा'दा सच्चा कर दिखाया फिर हमने उन्हें और जिसे हमने चाहा नजात बख़्शी और हमने ह़दसे बढ़ जानेवालों को हलाक कर डाला।

لَقَدۡ اَنۡزَلۡنَاۤ اِلَيۡكُمۡ كِتٰبًا فِيۡهِ ذِكۡرُكُمۡ ؕ اَفَلَا تَعۡقِلُوۡنَ ﴿١٠﴾ ع

10. बेशक हमने तुम्हारी तरफ़ ऐसी किताब नाज़िल फ़रमाई है जिसमें तुम्हारी नसीह़त (का सामान) है, क्या तुम अ़क़्ल नहीं रखते।

وَكَمۡ قَصَمۡنَا مِنۡ قَرۡيَةٍ كَانَتۡ ظَالِمَةً وَّاَنۡشَاۡنَا بَعۡدَهَا قَوۡمًا اٰخَرِيۡنَ ﴿١١﴾

11. और हमने कितनी ही बस्तियों को तबाहो बरबाद कर डाला जो ज़ालिम थीं और उनके बाद हमने और क़ौमों को पैदा फ़रमा दिया।

فَلَمَّاۤ اَحَسُّوۡا بَاۡسَنَاۤ اِذَا هُمۡ مِّنۡهَا يَرۡكُضُوۡنَ ؕ ﴿١٢﴾

12. फिर जब उन्होंने हमारे अ़ज़ाब (की आमद) को मह़सूस किया तो वोह वहांसे तेज़ी के साथ भागने लगे।

لَا تَرۡكُضُوۡا وَارۡجِعُوۡۤا اِلٰى مَاۤ اُتۡرِفۡتُمۡ فِيۡهِ وَمَسٰكِنِكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تُسۡـَٔلُوۡنَ ﴿١٣﴾

13. (उनसे कहा गया :) तुम जल्दी मत भागो और उसी जगह वापस लौट जाओ जिसमें तुम्हें आसाइशें दी गई थीं और अपनी (पुर तअ़य्युश) रहाइश गाहों की तरफ़ (पलट जाओ) शायद तुमसे बाज़ पुर्स की जाए।

قَالُوۡا يٰوَيۡلَنَاۤ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيۡنَ ﴿١٤﴾

14. वोह केहने लगे : हाए शोमिए क़िस्मत ! बेशक हम ज़ालिम थे।

فَمَا زَالَتْ تِّلْكَ دَعْوٰىهُمْ حَتّٰى جَعَلْنٰهُمْ حَصِيْدًا خٰمِدِيْنَ ⑮

15. सो हमेशा उनकी येही फ़रियाद रही यहां तक कि हमने उनको कटी हुई खेती (और) बुझी हुई आग (के ढेर) की तरह बना दिया।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ⑯

16. और हमने आस्मान और ज़मीन को और जो कुछ उनके दरमियान है खेल तमाशे के तौर पर (बेकार) नहीं बनाया।

لَوْ اَرَدْنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ لَهْوًا لَّاتَّخَذْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّآ ۖ اِنْ كُنَّا فٰعِلِيْنَ ⑰

17. अगर हम कोई खेल तमाशा इख़्तियार करना चाहते तो उसे अपनी ही तरफ़से इख़्तियार कर लेते अगर हम (ऐसा) करनेवाले होते।

بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهٗ فَاِذَا هُوَ زَاهِقٌ ۗ وَلَكُمُ الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُوْنَ ⑱

18. बल्कि हम हक़से बातिल पर पूरी कुव्वतके साथ चोट लगाते हैं सो हक़ उसे कुचल देता है पस वोह (बातिल) हलाक हो जाता है, और तुम्हारे लिए उन बातोंके बाइस तबाही है जो तुम बयान करते हो।

وَلَهٗ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ وَمَنْ عِنْدَهٗ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَلَا يَسْتَحْسِرُوْنَ ۚ ⑲

19. और जो कोई आस्मानों और ज़मीन में है उसीका (बन्दओ मम्लूक) है, और जो (फ़रिश्ते) उसकी कुर्बत में (रेहते) हैं वोह न तो उसकी इबादत से तकब्बुर करते हैं और न वोह (उसकी ताअत बजा लाते हुए) थकते हैं।

يُسَبِّحُوْنَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لَا يَفْتُرُوْنَ ⑳

20. वोह रात दिन (उसकी) तस्बीह करते रेहते हैं और मा'मूली सा वक़्फ़ा भी नहीं करते।

اَمِ اتَّخَذُوْٓا اٰلِهَةً مِّنَ الْاَرْضِ هُمْ يُنْشِرُوْنَ ㉑

21. क्या उन (काफ़िरों) ने ज़मीन (की चीज़ों) में से ऐसे मा'बूद बना लिए हैं जो (मुर्दोंको) ज़िन्दा कर के उठा सक्ते हैं?

لَوْ كَانَ فِيْهِمَآ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا ۚ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ㉒

22. अगर उन दोनों (ज़मीनो आस्मान) में अल्लाहके सिवा और (भी) मा'बूद होते तो येह दोनों तबाह हो जाते पस अल्लाह जो अ़र्शका मालिक है उन (बातों) से पाक है जो येह (मुशरिक) बयान करते हैं।

لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَ هُمْ يُسْـَٔلُوْنَ ﴿٢٣﴾

23. उससे उसकी बाज़ पुर्स नहीं की जा सक्ती वोह जो कुछ भी करता है, और उनसे (हर काम की) बाज़ पुर्स की जाएगी।

اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اٰلِهَةً ؕ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ ۚ هٰذَا ذِكْرُ مَنْ مَّعِیَ وَ ذِكْرُ مَنْ قَبْلِیْ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا یَعْلَمُوْنَ ۙ الْحَقَّ فَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٢٤﴾

24. क्या उन (काफ़िरों) ने उसे छोड़ कर और मा'बूद बना लिए हैं ? फ़रमा दीजिए : अपनी दलील लाओ, येह (क़ुरआन) उन लोगों का ज़िक्र है जो मेरे साथ हैं और उनका (भी) ज़िक्र है जो मुझसे पहले थे, बल्कि उनमें से अक्सर लोग हक़को नहीं जानते इस लिए वोह इससे रूगरदानी किए हुए हैं।

وَ مَاۤ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِیْۤ اِلَیْهِ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ ﴿٢٥﴾

25. और हमने आपसे पहले कोई रसूल नहीं भेजा मगर हम उसकी तरफ़ येही वही करते रहे कि मेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं पस तुम मेरी (ही) इबादत किया करो।

وَ قَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ؕ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُوْنَ ۙ ﴿٢٦﴾

26. येह लोग केहते हैं कि (खुदाए) रह्मान ने (फ़रिश्तों को अपनी) औलाद बना रखा है वोह पाक है, बल्कि (जिन फ़रिश्तोंको येह उसकी औलाद समझते हैं) वोह (अल्लाहके) मुअ़ज़्ज़ज़ बंदे हैं।

لَا یَسْبِقُوْنَهٗ بِالْقَوْلِ وَ هُمْ بِاَمْرِهٖ یَعْمَلُوْنَ ﴿٢٧﴾

27. वोह किसी बात (के करने) में उससे सब्क़त नहीं करते और वोह उसीके अम्रकी ता'मील करते रेहते हैं।

یَعْلَمُ مَا بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ وَ مَا خَلْفَهُمْ وَ لَا یَشْفَعُوْنَ ۙ اِلَّا لِمَنِ ارْتَضٰی وَ هُمْ مِّنْ خَشْیَتِهٖ مُشْفِقُوْنَ ﴿٢٨﴾

28. वोह (अल्लाह) उन चीजोंको जानता है जो उनके सामने हैं और जो उनके पीछे हैं और वोह (उसके हुज़ूर) सिफ़ारिश भी नहीं करते मगर उसके लिए (करते हैं) जिससे वोह खुश हो गया हो और वोह उसकी हैबतो जलालसे ख़ाइफ़ रेहते हैं।

وَ مَنْ یَّقُلْ مِنْهُمْ اِنِّیْۤ اِلٰهٌ مِّنْ دُوْنِهٖ فَذٰلِكَ نَجْزِیْهِ جَهَنَّمَ ؕ

29. और उनमें से कौन है जो केह दे कि मैं उस (अल्लाह) के सिवा मा'बूद हूं सो हम उसीको दोज़ख़की सज़ा देंगे,

ع ١٩ ٢

كَذٰلِكَ نَجْزِى الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٩﴾

इसी तरह हम ज़ालिमों को सज़ा दिया करते हैं।

اَوَلَمْ يَرَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا ؕ وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَآءِ كُلَّ شَىْءٍ حَىٍّ ؕ اَفَلَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٠﴾

30. और क्या काफ़िर लोगोंने नहीं देखा कि जुम्ला आस्मानी काइनात और ज़मीन (सब) एक इकाई की शक्ल में जुड़े हुऐ थे पस हमने उनको फाड़ कर जुदा कर दिया, और हमने (ज़मीन पर) पैकरे हयात (की ज़िन्दगी) की नुमूद पानी से की, तो क्या वोह (कुरआन के बयान कर्दह इन हक़ाइक़से आगाह हो कर भी) ईमान नहीं लाते।

وَجَعَلْنَا فِى الْاَرْضِ رَوَاسِىَ اَنْ تَمِيْدَ بِهِمْ ۠ وَجَعَلْنَا فِيْهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿٣١﴾

31. और हमने ज़मीनमें मज़बूत पहाड़ बना दिए ताकि ऐसा न हो कि कहीं वोह (अपने मदारमें हरकत करते हुए) उन्हें ले कर कांपने लगे और हमने उस (ज़मीन) में कुशादा रास्ते बनाए ताकि लोग (मुख़्तलिफ मंज़िलों तक पहुंचने के लिए) राह पा सकें।

وَجَعَلْنَا السَّمَآءَ سَقْفًا مَّحْفُوْظًا ۚۖ وَّهُمْ عَنْ اٰيٰتِهَا مُعْرِضُوْنَ ﴿٣٢﴾

32. और हमने समाअ (या'नी ज़मीन के बालाई कुर्रों) को महफ़ूज़ छत बनाया (ताकि अहले ज़मीन को ख़ला से आनेवाली मोहलिक कुव्वतों और जारिहाना लेहरों के मुज़िर असरात से बचाएं) और वोह इन (समावी तब्क़ात की) निशानियों से रूगर्दां हैं।

وَهُوَ الَّذِىْ خَلَقَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ كُلٌّ فِىْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ﴿٣٣﴾

33. और वोही (अल्लाह) है जिसने रात और दिनको पैदा किया और सूरज और चांदको (भी), तमाम (आस्मानी कुर्रे) अपने अपने मदारके अंदर तेज़ीसे तैरते चले जाते हैं।

وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ ؕ اَفَا۟ئِنْ مِّتَّ فَهُمُ الْخٰلِدُوْنَ ﴿٣٤﴾

34. और हमने आपसे पहले किसी इन्सानको (दुनियाकी ज़ाहिरी जिन्दगीमें) बक़ाए दवाम नहीं बख़्शी, तो क्या अगर आप (यहां से) इन्तिक़ाल फ़रमा जाएं तो येह लोग हमेशा रेहनेवाले हैं।

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ۗ وَنَبْلُوكُم بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً ۗ وَإِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ﴿٣٥﴾

35. हर जानको मौतका मज़ा चखना है, और हम तुम्हें बुराई और भलाई में आज़माइश के लिए मुब्तिला करते हैं, और तुम हमारी ही तरफ़ पलटाए जाओगे।

وَإِذَا رَآكَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِن يَتَّخِذُونَكَ إِلَّا هُزُوًا ۗ أَهَٰذَا الَّذِي يَذْكُرُ آلِهَتَكُمْ ۚ وَهُم بِذِكْرِ الرَّحْمَٰنِ هُمْ كَافِرُونَ ﴿٣٦﴾

36. और जब काफ़िर लोग आपको देखते हैं तो आपसे महज़ तमस्ख़ुर ही करने लगते हैं (और केहते हैं) क्या येही है वोह शख़्स जो तुम्हारे मा'बूदों का (रद्दो इन्कार के साथ) ज़िक्र करता है और वोह ख़ुद (ख़ुदाए) रहमान के ज़िक्र से इन्कारी हैं।

خُلِقَ الْإِنسَانُ مِنْ عَجَلٍ ۗ سَأُرِيكُمْ آيَاتِي فَلَا تَسْتَعْجِلُونِ ﴿٣٧﴾

37. इन्सान (फ़ित्रतन) जल्दबाज़ी में से पैदा किया गया है, मैं तुम्हें जल्दही अपनी निशानियां दिखाऊंगा पस तुम जल्दी का मुतालिबा न करो।

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٣٨﴾

38. और वोह केहते हैं : येह वा'दए (अज़ाब) कब (पूरा) होगा अगर तुम सच्चे हो।

لَوْ يَعْلَمُ الَّذِينَ كَفَرُوا حِينَ لَا يَكُفُّونَ عَن وُجُوهِهِمُ النَّارَ وَلَا عَن ظُهُورِهِمْ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٣٩﴾

39. अगर काफ़िर लोग वोह वक़्त जान लेते जब कि वोह (दोज़ख़की) आगको न अपने चेहरों से रोक सकेंगे और न अपनी पुश्तोंसे और न ही उनकी मददकी जाएगी (तो फिर अज़ाब तलब करने में जल्दी का शोर न करते)।

بَلْ تَأْتِيهِم بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ رَدَّهَا وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿٤٠﴾

40. बल्कि (क़ियामत) उन्हें अचानक आ पहुंचेगी तो उन्हें बद हवास कर देगी सो वोह न तो उसे लौटा देनेकी ताक़त रखते होंगे और न ही उन्हें मोहलत दी जाएगी।

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّن قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِينَ سَخِرُوا مِنْهُم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٤١﴾

41. और बेशक आपसे पहले भी रसूलोंके साथ मज़ाक किया गया सो उन लोगोंमें से उन्हें जो तमस्ख़ुर करते थे उसी (अज़ाब)ने घेर लिया, जिसका वोह मज़ाक़ उड़ाया करते थे।

قُلْ مَنْ يَّكْلَؤُكُمْ بِالَّيْلِ وَ النَّهَارِ مِنَ الرَّحْمٰنِ ؕ بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿۴۲﴾

42. फ़रमा दीजिए : शबो रोज़ (खुदाए) रह्मान (के अज़ाब) से तुम्हारी हिफ़ाज़तो निगेहबानी कौन कर सक्ता है, बल्कि वोह अपने (उसी) रबके ज़िक्रसे गुरेज़ां हैं।

اَمْ لَهُمْ اٰلِهَةٌ تَمْنَعُهُمْ مِّنْ دُوْنِنَا ؕ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَ اَنْفُسِهِمْ وَ لَا هُمْ مِّنَّا يُصْحَبُوْنَ ﴿۴۳﴾

43. क्या हमारे सिवा उनके कुछ और मा'बूद हैं जो उन्हें (अज़ाब से) बचा सकें, वोह तो खुद अपनी ही मदद पर क़ुदरत नहीं रखते और न हमारी तरफ़से उन्हें कोई ताईदो रफ़ाक़त मुयस्सर होगी।

بَلْ مَتَّعْنَا هٰٓؤُلَآءِ وَ اٰبَآءَهُمْ حَتّٰى طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ؕ اَفَلَا يَرَوْنَ اَنَّا نَاْتِي الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ؕ اَفَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿۴۴﴾

44. बल्कि हमने उनको और उनके आबाओ अजदादको (फ़राख़िए ऐश से) बहरामंद फ़रमाया था यहां तक कि उनकी उम्रें भी दराज़ होती गईं, तो क्या वोह नहीं देखते कि हम (अब इस्लामी फ़ुतूहात के ज़रीए उनके ज़ेरे तसल्लुत) इलाक़ों को तमाम अतराफ़ से घटाते चले जा रहे हैं, तो क्या वोह (अब) ग़ल्बा पानेवाले हैं ?

قُلْ اِنَّمَاۤ اُنْذِرُكُمْ بِالْوَحْيِ ۖ وَ لَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَآءَ اِذَا مَا يُنْذَرُوْنَ ﴿۴۵﴾

45. फ़रमा दीजिए : मैं तो तुम्हे सिर्फ़ वही के ज़रीए ही डराता हूं, और बेहरे पुकार को नहीं सुना करते जब भी उन्हें डराया जाए।

وَ لَئِنْ مَّسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ يٰوَيْلَنَاۤ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿۴۶﴾

46. अगर वाक़िअतन उन्हें आपके रबकी तरफ़से थोड़ा सा अज़ाब (भी) छू जाए तो वोह ज़रूर केहने लगेंगे : हाए हमारी बद क़िस्मती ! बेशक हम ही ज़ालिम थे।

وَ نَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا ؕ وَ اِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا ؕ وَ كَفٰى بِنَا حٰسِبِيْنَ ﴿۴۷﴾

47. और हम क़ियामत के दिन अद्लो इन्साफ़के तराज़ू रख देंगे सो किसी जान पर कोई ज़ुल्म न किया जाएगा, और अगर (किसी का अमल) राईके दाने के बराबर भी होगा (तो) हम उसे (भी) हाज़िर कर देंगे, और हम हिसाब करने को काफ़ी हैं।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ الْفُرْقَانَ وَضِيَآءً وَّذِكْرًا لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿۴۸﴾

48.और बेशक हमने मूसा और हारून (عليه السلام) को (हक़्क़ो बातिल में) फ़र्क़ करनेवाली और (सरापा) रौशनी और परहेज़गारों के लिए नसीहत (पर मब्नी किताब तौरात) अ़ता फ़रमाई।

الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِّنَ السَّاعَةِ مُشْفِقُوْنَ ﴿۴۹﴾

49. जो लोग अपने रबसे नादीदह डरते हैं और जो क़ियामत (की हौलनाकियों) से खाइफ़ रेहते हैं।

وَهٰذَا ذِكْرٌ مُّبٰرَكٌ اَنْزَلْنٰهُ ؕ اَفَاَنْتُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿۵۰﴾

50. येह (क़ुरआन) बरकतवाला ज़िक्र है जिसे हमने नाज़िल फ़रमाया है, क्या तुम उससे इन्कार करनेवाले हो।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَآ اِبْرٰهِيْمَ رُشْدَهٗ مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا بِهٖ عٰلِمِيْنَ ﴿۵۱﴾

51. और बेशक हमने पहले से ही इब्राहीम (عليه السلام) को उनके (मर्तबे के मुताबिक़) फ़हमो हिदायत दे रखी थी और हम उन (की इस्ते'दादो अहलियत) को खूब जाननेवाले थे।

اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا هٰذِهِ التَّمَاثِيْلُ الَّتِيْٓ اَنْتُمْ لَهَا عٰكِفُوْنَ ﴿۵۲﴾

52. जब उन्होंने अपने बाप (चचा) और अपनी क़ौमसे फ़रमाया येह कैसी मूरतियां हैं जिन (की परस्तिश) पर तुम जमे बैठे हो।

قَالُوْا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا لَهَا عٰبِدِيْنَ ﴿۵۳﴾

53. वोह बोले : हमने अपने बापदादाको इन्हीं की परस्तिश करते पाया था।

قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۵۴﴾

54. (इब्राहीम عليه السلام ने) फ़रमाया : बेशक तुम और तुम्हारे बापदादा (सब) सरीह़ गुमराही में थे।

قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ اَمْ اَنْتَ مِنَ اللّٰعِبِيْنَ ﴿۵۵﴾

55. वोह बोले : क्या (सिर्फ़) तुम ही ह़क़ लाए हो या तुम (मह़ज़) तमाशागरों में से हो।

قَالَ بَلْ رَّبُّكُمْ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الَّذِيْ فَطَرَهُنَّ ۖ وَاَنَا عَلٰى ذٰلِكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿۵۶﴾

56. (इब्राहीम عليه السلام ने) फ़रमाया : बल्कि तुम्हारा रब आस्मानों और ज़मीन का रब है जिसने उन (सब) को पैदा फ़रमाया और मैं इस (बात) पर गवाही देनेवालों में से हूं।

وَتَاللّٰهِ لَاَكِيْدَنَّ اَصْنَامَكُمْ بَعْدَ اَنْ تُوَلُّوْا مُدْبِرِيْنَ ﴿٥٧﴾

57. और अल्लाहकी क़सम मैं तुम्हारे बुतोंके साथ ज़रूर एक तदबीर अ़मल में लाऊंगा उसके बादके जब तुम पीठ फैरकर पलट जाओगे।

فَجَعَلَهُمْ جُذٰذًا اِلَّا كَبِيْرًا لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ اِلَيْهِ يَرْجِعُوْنَ ﴿٥٨﴾

58. फिर इब्राहीम (عليه السلام) ने उन (बुतों) को टुकड़े टुकड़े कर डाला सिवाए बड़े (बुत) के ताकि वोह लोग उसकी तरफ़ रुजूअ़ करें।

قَالُوْا مَنْ فَعَلَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَآ اِنَّهٗ لَمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٩﴾

59. वोह केहने लगे : हमारे मा'बूदों का येह ह़ाल किसने किया है? बेशक वोह ज़रूर ज़ालिमों में से है।

قَالُوْا سَمِعْنَا فَتًى يَّذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهٗٓ اِبْرٰهِيْمُ ﴿٦٠﴾

60. (कुछ) लोग बोले : हमने एक नौजवान का सुना है जो उनका ज़िक्र (इन्कारो तन्क़ीदसे) करता है उसे इब्राहीम कहा जाता है।

قَالُوْا فَاْتُوْا بِهٖ عَلٰٓى اَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُوْنَ ﴿٦١﴾

61. वोह बोले : उसे लोगों के सामने ले आओ ताकि वोह (उसे) देख लें।

قَالُوْٓا ءَاَنْتَ فَعَلْتَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَا يٰٓاِبْرٰهِيْمُ ﴿٦٢﴾

62. (जब इब्राहीम عليه السلام आए तो) वोह केहने लगे : क्या तुम ने ही हमारे मा'बूदों के साथ येह ह़ाल किया है ऐ ईब्राहीम?

قَالَ بَلْ فَعَلَهٗ ۖ كَبِيْرُهُمْ هٰذَا فَسْـَٔلُوْهُمْ اِنْ كَانُوْا يَنْطِقُوْنَ ﴿٦٣﴾

63. आपने फ़रमाया : बल्कि येह (काम) उनके उस बड़े(बुत)ने किया होगा तो उन (बुतों)से ही पूछो अगर वोह बोल सक्ते हैं।

فَرَجَعُوْٓا اِلٰٓى اَنْفُسِهِمْ فَقَالُوْٓا اِنَّكُمْ اَنْتُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٦٤﴾

64. फिर वोह अपनी ही (सोचों की) तरफ़ पलट गए तो केहने लगे : बेशक तुम ख़ुदही (उन मजबूरो बेबस बुतोंकी पूजा कर के) ज़ालिम हो (गए हो)।

ثُمَّ نُكِسُوْا عَلٰى رُءُوْسِهِمْ ۚ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا هٰٓؤُلَآءِ يَنْطِقُوْنَ ﴿٦٥﴾

65. फिर वोह अपने सरों के बल औंधे कर दिए गए (या'नी उनकी अ़क़्लें औंधी हो गईं और केहने लगे :) बेशक (ऐ इब्राहीम!) तुम ख़ुद ही जानते हो कि येह तो बोलते नहीं हैं।

قَالَ اَفَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْـًٔا وَّلَا يَضُرُّكُمْ ﴿٦٦﴾

66. (इब्राहीम عليه السلام ने) फ़रमाया : फिर क्या तुम अल्लाह को छोड़ कर इन (मूर्तियों) को पूजते हो जो न तुम्हें कुछ नफ़ा' दे सक्ती हैं और न तुम्हें नुक़्सान पहुंचा सक्ती हैं।

اُفٍّ لَّكُمْ وَلِمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾

67. तुफ़ है तुम पर (भी) और उन (बुतों) पर (भी) जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो, तो क्या तुम अ़क़्ल नहीं रखते?

قَالُوْا حَرِّقُوْهُ وَانْصُرُوْٓا اٰلِهَتَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ﴿٦٨﴾

68. वोह बोले : उसको जला दो और अपने (तबाह ह़ाल) मा'बूदोंकी मदद करो अगर तुम (कुछ) करनेवाले हो।

قُلْنَا يٰنَارُ كُوْنِىْ بَرْدًا وَّسَلٰمًا عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ ﴿٦٩﴾

69. हमने फ़रमाया : ऐ आग ! तू इब्राहीम पर ठंडी और सरापा सलामती हो जा।

وَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَخْسَرِيْنَ ﴿٧٠﴾

70. और उन्होंने इब्राहीम (عليه السلام) के साथ बुरी चाल का इरादा किया था मगर हमने उन्हें बुरी तरह नाकाम कर दिया।

وَنَجَّيْنٰهُ وَلُوْطًا اِلَى الْاَرْضِ الَّتِىْ بٰرَكْنَا فِيْهَا لِلْعٰلَمِيْنَ ﴿٧١﴾

71. और हमने इब्राहीम (عليه السلام) को और लूत (عليه السلام) को (जो आपके भतीजे या'नी आपके भाई हारान के बेटे थे) बचा कर (इराक़ से) उस सरज़मीने (शाम) की तरफ़ ले गए जिसमें हमने जहानवालों के लिए बरकतें रखी हैं

وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ ؕ وَيَعْقُوْبَ نَافِلَةً ؕ وَكُلًّا جَعَلْنَا صٰلِحِيْنَ ﴿٧٢﴾

72. और हमने उन्हें (फ़रज़न्द) इस्ह़ाक़ (عليه السلام) बख़्शा और (पोता) या'क़ूब (عليه السلام) (उनकी दुआ़से) इज़ाफ़ी बख़्शा, और हमने उन सबको सालेह बनाया था।

وَجَعَلْنٰهُمْ اَئِمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرٰتِ وَاِقَامَ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَآءَ الزَّكٰوةِ ۚ وَكَانُوْا لَنَا عٰبِدِيْنَ ﴿٧٣﴾

73. और हमने उन्हें (इन्सानियत का) पेश्वा बनाया वोह (लोगोंको) हमारे हुक्मसे हिदायत करते थे और हमने उनकी तरफ़ आ'माले ख़ैर और नमाज़ क़ाइम करने और ज़कात अदा करने (के अह़्काम) की वह़ी भेजी और वोह सब हमारे इ़बादत गुज़ार थे।

وَلُوطًا آتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا وَّنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ تَّعْمَلُ الْخَبٰٓئِثَ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فٰسِقِيْنَ ﴿٧٤﴾

74. और लूत (عليه السلام) को (भी) हमने हिक्मत और इल्मसे नवाज़ा था और हमने उन्हें उस बस्तीसे नजात दी जहांके लोग गंदे काम किया करते थे। बेशक वोह बहुत ही बुरी (और) बद किर्दार क़ौमथी।

وَاَدْخَلْنٰهُ فِيْ رَحْمَتِنَا ؕ اِنَّهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٧٥﴾

75. और हमने लूत (عليه السلام) को अपने हरीमे रहमत में दाख़िल फ़रमा लिया। बेशक वोह सालेहीनमें से थे।

وَنُوْحًا اِذْ نَادٰى مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿٧٦﴾

76. और नूह (عليه السلام को भी याद करें) जब उन्होंने उन (अम्बिया عليهم السلام) से पहले (हमें) पुकारा था सो हमने उनकी दुआ़ क़ुबूल फ़रमाई पस हमने उनको और उनके घरवालों को बड़े शदीद ग़मो अन्दोह से नजात बख़्शी।

وَنَصَرْنٰهُ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٧٧﴾

77. और हमने उस क़ौम(के अज़िय्यतनाक माहौल) में उनकी मदद फ़रमाई जो हमारी आयतों को झुटलाते थे। बेशक वोह (भी) बहुत बुरी क़ौमथी सो हमने उन सबको ग़र्क़ कर दिया।

وَدَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ اِذْ يَحْكُمٰنِ فِي الْحَرْثِ اِذْ نَفَشَتْ فِيْهِ غَنَمُ الْقَوْمِ ۚ وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ شٰهِدِيْنَ ﴿٧٨﴾

78. और दाऊद और सुलैमान (عليهما السلام) (का क़िस्सा भी याद करें) जब वोह दोनों खेती (के एक मुक़दमे) में (फ़ैसला करने लगे जब एक क़ौमकी बकरियां उस में रातके वक़्त बिग़ैर चरवाहे के घुस गई थीं (और उस खेती को तबाह कर दिया था), और हम उनके फ़ैसलेका मुशाहिदा फ़रमा रहे थे।

فَفَهَّمْنٰهَا سُلَيْمٰنَ ۚ وَكُلًّا اٰتَيْنَا حُكْمًا وَّعِلْمًا ؗ وَّسَخَّرْنَا مَعَ دَاوٗدَ الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرَ ؕ وَكُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿٧٩﴾

79. चुनान्चे हम ही ने सुलैमान (عليه السلام) को वोह (फ़ैसला करनेका तरीक़ा) सिखाया था और हमने उन सबको हिक्मत और इल्मसे नवाज़ा था और हमने पहाड़ों और परिन्दों (तक) को दाऊद (عليه السلام) के (हुक्म के) साथ पाबंद कर दिया था वोह (सब उनके साथ मिल कर) तस्बीह़ पढ़ते थे, और हम ही (येह सब कुछ) करनेवाले थे।

وَعَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ لَبُوْسٍ لَّكُمْ لِتُحْصِنَكُمْ مِّنْۢ بَاْسِكُمْ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ شٰكِرُوْنَ ﴿٨٠﴾

80. और हमने दाऊद (عليه السلام) को तुम्हारे लिए ज़िरह बनाने का फ़न सिखाया था ताकि वोह तुम्हारी लड़ाई में तुम्हें ज़रर से बचाएं, तो क्या तुम शुक्रगुज़ार हो ?

وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ عَاصِفَةً تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖۤ اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ؕ وَكُنَّا بِكُلِّ شَيْءٍ عٰلِمِيْنَ ﴿٨١﴾

81. और (हमने) सुलैमान (عليه السلام) के लिए तेज़ हवाको मुसख़्ख़र कर दिया) जो उनके हुक्मसे (जुम्ला अतराफ़ो अक्नाफ़ से) उस सर ज़मीने (शाम) की तरफ़ चला करती थी जिसमें हमने बरकतें रखी हैं, और हम हर चीज़को (खूब) जाननेवाले हैं।

وَمِنَ الشَّيٰطِيْنِ مَنْ يَّغُوْصُوْنَ لَهٗ وَيَعْمَلُوْنَ عَمَلًا دُوْنَ ذٰلِكَ ۚ وَكُنَّا لَهُمْ حٰفِظِيْنَ ۙ﴿٨٢﴾

82. और कुछ शैतान (देवों और जिन्नों) को भी (सुलैमान (عليه السلام) के ताबे' कर दिया था) जो उनके लिए (दरिया में) ग़ोते लगाते थे और उसके सिवा (उनके हुक्म पर) दीगर ख़िदमात भी अंजाम देते थे और हम ही उन (देवों)के निगेहबान थे।

وَاَيُّوْبَ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗۤ اَنِّيْ مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ۚ﴿٨٣﴾

83. और अैयूब (عليه السلام का क़िस्सा याद करें) जब उन्होंने अपने रबको पुकारा कि मुझे तक्लीफ़ छू रही है और तू सब रहम करनेवालों से बढ़ कर महरबान है।

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَكَشَفْنَا مَا بِهٖ مِنْ ضُرٍّ وَّاٰتَيْنٰهُ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَذِكْرٰى لِلْعٰبِدِيْنَ ﴿٨٤﴾

84. तो हमने उनकी दुआ क़ुबूल फ़रमा ली और उन्हें जो तक्लीफ़ (पहुंच रही) थी सो हमने उसे दूर कर दिया और हमने उन्हें उनके अहलो अ़याल (भी) अ़ता फ़रमाए और उनके साथ इतने ही और (अ़ता फ़रमा दिए) येह हमारी तरफ़से ख़ास रहमत और इ़बादत गुजारों के लिए नसीह़त है (कि अल्लाह सब्रो शुक्र का अज्र कैसे देता है)।

وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِدْرِيْسَ وَذَا الْكِفْلِ ؕ كُلٌّ مِّنَ الصّٰبِرِيْنَ ۚ﴿٨٥﴾

85. और इस्माईल और इदरीस और जुल किफ़्ल (عليهم السلام) (को भी याद फ़रमाएं), येह सब साबिर लोग थे।

وَ اَدْخَلْنٰهُمْ فِیْ رَحْمَتِنَا ؕ اِنَّهُمْ مِّنَ الصّٰلِحِیْنَ ﴿۸۶﴾

86. और हमने उन्हें अपने (दामने) रहमत में दाख़िल फ़रमाया। बेशक वोह नेकूकारों में से थे।

وَ ذَا النُّوْنِ اِذْ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ اَنْ لَّنْ نَّقْدِرَ عَلَیْهِ فَنَادٰی فِی الظُّلُمٰتِ اَنْ لَّاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۖۗ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۸۷﴾

87. और जुन्नून (मछली के पेटवाले नबी عليه السلام को भी याद फ़रमाइए) जब वोह (अपनी क़ौम पर) ग़ज़बनाक हो कर चल दिए पस उन्होंने येह ख़याल कर लिया कि हम उन पर (उस सफ़र में) कोई तंगी नहीं करेंगे फिर उन्होंने (दरिया, रात और मछलीके पेटकी तेह दर तेह) तारीकियों में (फंस कर) पुकारा कि तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं तेरी ज़ात पाक है, बेशक मैं ही (अपनी जान पर) ज़ियादती करनेवालों में से था।

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۙ وَ نَجَّیْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ ؕ وَ كَذٰلِكَ نُـْۨجِی الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۸۸﴾

88. पस हमने उनकी दुआ़ क़ुबूल फ़रमा ली और हमने उन्हें ग़मसे नजात बख़्शी, और इसी तरह़ हम मोमिनों को नजात दिया करते हैं।

وَ زَكَرِیَّاۤ اِذْ نَادٰی رَبَّهٗ رَبِّ لَا تَذَرْنِیْ فَرْدًا وَّ اَنْتَ خَیْرُ الْوٰرِثِیْنَ ﴿۸۹﴾

89. और ज़करिय्या (عليه السلام को भी याद करें) जब उन्होंने अपने रबको पुकारा : ऐ मेरे रब ! मुझे अकेला मत छोड़ और तू सब वारिसोंसे बेहतर है।

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۫ وَ وَهَبْنَا لَهٗ یَحْیٰی وَ اَصْلَحْنَا لَهٗ زَوْجَهٗ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا یُسٰرِعُوْنَ فِی الْخَیْرٰتِ وَ یَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّ رَهَبًا ؕ وَ كَانُوْا لَنَا خٰشِعِیْنَ ﴿۹۰﴾

90. तो हमने उनकी दुआ़ क़ुबूल फ़रमा ली और हमने उन्हें यह्या (عليه السلام) अ़ता फ़रमाया और उनकी ख़ातिर उनकी ज़ौजाको (भी) दुरुस्त (क़ाबिले औलाद) बना दिया। बेशक येह (सब) नेकीके कामों (की अंजाम दही) में जल्दी करते थे और हमें शौक़ो रग़बत और ख़ौफ़ो ख़शिय्यत (की कैफ़िय्यतों) के साथ पुकारा करते थे, और हमारे हुज़ूर बड़े इज्ज़ो नियाज़ के साथ गिड़गिड़ाते थे।

وَ الَّتِیْۤ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا

91. उस (पाकीज़ा) ख़ातून (मरयम (عليها السلام) को भी याद

فِيهَا مِن رُّوحِنَا وَجَعَلْنَٰهَا وَٱبْنَهَآ ءَايَةً لِّلْعَٰلَمِينَ ﴿٩١﴾

करें) जिसने अपनी इफ़्फ़तकी हिफ़ाज़त की फिर हमने उसमें अपनी रूह फूंक दी और हमने उसे और उसके बेटे (ईसा عليه السلام) को जहानवालों के लिए (अपनी क़ुदरतकी) निशानी बना दिया।

إِنَّ هَٰذِهِۦٓ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً وَٰحِدَةً وَأَنَا۠ رَبُّكُمْ فَٱعْبُدُونِ ﴿٩٢﴾

92. बेशक येह तुम्हारी मिल्लत है (सब) एक ही मिल्लत है और मैं तुम्हारा रब हूं पस तुम मेरी (ही) इबादत किया करो।

وَتَقَطَّعُوٓا۟ أَمْرَهُم بَيْنَهُمْ ۖ كُلٌّ إِلَيْنَا رَٰجِعُونَ ﴿٩٣﴾

ع ١٨ ٦ ٦

93. और उन (अह्ले किताब) ने आपस में अपने दीनको टुकड़े टुकड़े कर डाला, येह सब हमारी ही जानिब लौट कर आनेवाले हैं।

فَمَن يَعْمَلْ مِنَ ٱلصَّٰلِحَٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ لِسَعْيِهِۦ وَإِنَّا لَهُۥ كَٰتِبُونَ ﴿٩٤﴾

94. पस जो कोई नेक अ़मल करे और वोह मोमिन भी हो तो उसकी कोशिश (की जज़ा) का इन्कार न होगा, और बेशक हम उसके (सब) आ'माल को लिख रहे हैं।

وَحَرَٰمٌ عَلَىٰ قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَٰهَآ أَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُونَ ﴿٩٥﴾

95. और जिस बस्ती को हमने हलाक कर डाला ना मुमकिन है कि उसके लोग (मरने के बाद) हमारी तरफ़ पलट कर न आएं।

حَتَّىٰٓ إِذَا فُتِحَتْ يَأْجُوجُ وَمَأْجُوجُ وَهُم مِّن كُلِّ حَدَبٍ يَنسِلُونَ ﴿٩٦﴾

96. यहां तककि जब याजूज और माजूज खोल दिए जाएंगे और वोह हर बुलंदी से दौड़ते हुऐ उतर आएंगे।

وَٱقْتَرَبَ ٱلْوَعْدُ ٱلْحَقُّ فَإِذَا هِىَ شَٰخِصَةٌ أَبْصَٰرُ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ يَٰوَيْلَنَا قَدْ كُنَّا فِى غَفْلَةٍ مِّنْ هَٰذَا بَلْ كُنَّا ظَٰلِمِينَ ﴿٩٧﴾

97. और (क़ियामत का) सच्चा वा'दा क़रीब हो जाएगा तो अचानक काफ़िर लोगोंकी आँखें खुली रेह जाएंगी, (वोह पुकार उठेंगे) हाए हमारी शोमिए क़िस्मत ! कि हम उस (दिनकी आमद) से गफ़्लत में पडे रहे बल्कि हम ज़ालिम थे।

إِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ أَنتُمْ لَهَا وَٰرِدُونَ ﴿٩٨﴾

98. बेशक तुम और वोह (बुत) जिनकी तुम अल्लाहके सिवा परस्तिश करते थे (सब) दोज़ख़का ईंधन हैं, तुम उसमें दाख़िल होनेवाले हो।

لَوْ كَانَ هٰٓؤُلَآءِ اٰلِهَةً مَّا وَرَدُوْهَا ؕ وَكُلٌّ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۹۹﴾

99. अगर येह (वाक़िअ़तन) मा'बूद होते तो जहन्नम में दाख़िल न होते, और वोह सब उसमें हमेशा रहेंगे।

لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّ هُمْ فِيْهَا لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿۱۰۰﴾

100. वहां उनकी (आहों का शोर और) चीख़ो पुकार होगी और उसमें कुछ (और) न सुन सकेंगे।

اِنَّ الَّذِيْنَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰٓى ۙ اُولٰٓئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُوْنَ ﴿۱۰۱﴾

101. बेशक जिन लोगों के लिए पहले से ही हमारी तरफ़से भलाई मुक़र्रर हो चुकी है वोह उस (जहन्नम) से दूर रखे जाएंगे।

لَا يَسْمَعُوْنَ حَسِيْسَهَا ۚ وَهُمْ فِيْ مَا اشْتَهَتْ اَنْفُسُهُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿۱۰۲﴾

102. वोह उसकी आहट भी न सुनेंगे और वोह उन (ने'मतों) में हमेशा रहेंगे जिनकी उनके दिल ख़्वाहिश करेंगे।

لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْاَكْبَرُ وَ تَتَلَقّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ؕ هٰذَا يَوْمُكُمُ الَّذِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿۱۰۳﴾

103. (रोजे क़ियामतकी) सबसे बड़ी हौलनाकी (भी) उन्हें रंजीदा नहीं करेगी और फ़रिश्ते उनका इस्तिक़्बाल करेंगे (और कहेंगे :) येह तुम्हारा (ही) दिन है जिसका तुमसे वा'दा किया जाता रहा।

يَوْمَ نَطْوِي السَّمَآءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ ؕ كَمَا بَدَاْنَآ اَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيْدُهٗ ؕ وَعْدًا عَلَيْنَا ؕ اِنَّا كُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿۱۰۴﴾

104. उस दिन हम (सारी) समावी काइनात को इस तरह लपेट देंगे जैसे लिखे हुए काग़ज़ात को लपेट दिया जाता है, जिस तरह हमने (काइनात को) पहली बार पैदा किया था हम (उसके ख़त्म हो जाने के बाद) उसी अ़मले तख़्लीक़ को दोहराएंगे । येह वा'दा पूरा करना हमने लाज़िम कर लिया है । हम (येह इआ़दह) ज़रूर करनेवाले हैं।

وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُوْرِ مِنْۢ بَعْدِ الذِّكْرِ اَنَّ الْاَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصّٰلِحُوْنَ ﴿۱۰۵﴾

105. और बिला शुब्हा हमने ज़बूरमें नसीहत के (बयान के) बाद येह लिख दिया था कि (आ़लमे आख़िरतकी) ज़मीन के वारिस सिर्फ़ मेरे नेकूकार बंदे होंगे।

اِنَّ فِيْ هٰذَا لَبَلٰغًا لِّقَوْمٍ

106. बेशक इस (कुरआन) में इबादत गुजारों केलिए

عٰبِدِيْنَ ﴿١٠٦﴾

(हुसूले मक़्सद की) किफ़ायतो ज़मानत है।

وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٧﴾

107. और (ऐ रसूले मोहतशिम !) हमने आपको नहीं भेजा मगर तमाम जहानों के लिए रह़मत बना कर।

قُلْ اِنَّمَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٠٨﴾

108. फ़रमा दीजिए कि मेरी तरफ़ तो येही वही की जाती है कि तुम्हारा मा'बूद फ़क़त एक (ही) मा'बूद है तो क्या तुम इस्लाम क़ुबूल करते हो ?

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ اٰذَنْتُكُمْ عَلٰى سَوَآءٍ ؕ وَاِنْ اَدْرِيْٓ اَقَرِيْبٌ اَمْ بَعِيْدٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ ﴿١٠٩﴾

109. फिर अगर वोह रू गर्दानी करें तो फ़रमा दीजिए : मैंने तुम सबको यक्सां तौर पर बा ख़बर कर दिया है, और मैं नहीं जानता कि वोह (अ़ज़ाब) नज़दीक है या दूर जिसका तुमसे वा'दा किया जा रहा है।

اِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُوْنَ ﴿١١٠﴾

110. बेशक वोह बुलंद आवाज़ की बात भी जानता है और वोह (कुछ) भी जानता है जो तुम छुपाते हो।

وَاِنْ اَدْرِيْ لَعَلَّهٗ فِتْنَةٌ لَّكُمْ وَمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿١١١﴾

111. और मैं येह नहीं जानता शायद येह (ताख़ीरे अ़ज़ाब और तुम्हें दी गई ढील) तुम्हारे ह़क़में आज़माइश हो और (तुम्हें) एक मुक़र्रर वक़्त तक फ़ाइदा पहुंचाना मक़्सूद हो।

قٰلَ رَبِّ احْكُمْ بِالْحَقِّ ؕ وَرَبُّنَا الرَّحْمٰنُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ﴿١١٢﴾

112. (हमारे ह़बीबने) अ़र्ज़ किया : ऐ मेरे रब ! (हमारे दरमियान) ह़क़के साथ फ़ैसला फ़रमा दे, और हमारा रब बेहद रह़म फ़रमानेवाला है, उसीसे मदद तलब की जाती है उन (दिल आज़ार) बातों पर जो (ऐ काफ़िरो !) तुम बयान करते हो।

ع ١٩ النصف

आयातुहा 78 | 22 सूरतुल ह़ज्जि म-दनिय्यतुन 103 | रुकूआ़तुहा 10

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरू जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۚ اِنَّ

1. ऐ लोगो ! अपने रबसे डरते रहो। बेशक क़ियामत का

زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيمٌ ﴿١﴾ يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّآ أَرْضَعَتْ وَ تَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَ تَرَى النَّاسَ سُكٰرٰى وَ مَا هُمْ بِسُكٰرٰى وَ لٰكِنَّ عَذَابَ اللّٰهِ شَدِيدٌ ﴿٢﴾

ज़्ल्ज़्ला बड़ी सख़्त चीज़ है।

2. जिस दिन तुम उसे देखोगे हर दूध पिलानेवाली (मां) उस (बच्चे) को भूल जाएगी जिसे वोह दूध पिला रही थी और हर ह़मलवाली औ़रत अपना ह़मल गिरा देगी और (ऐ देखनेवाले !) तू लोगों को नशे (की ह़ालत) में देखेगा ह़ालां कि वोह (फ़िल ह़कीक़त) नशे में नहीं होंगे लेकिन अल्लाहका अ़ज़ाब(ही इतना) सख़्त होगा (कि हर शख़्स ह़वास बाख़्ता हो जाएगा)।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّ يَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطٰنٍ مَّرِيدٍ ﴿٣﴾

3. और कुछ लोग (ऐसे) हैं जो अल्लाह के बारेमें बिग़ैर इ़ल्मो दानिश के झगड़ा करते हैं और हर सरकश शैतानकी पैरवी करते हैं।

كُتِبَ عَلَيْهِ أَنَّهُ مَنْ تَوَلَّاهُ فَأَنَّهُ يُضِلُّهُ وَ يَهْدِيهِ إِلَىٰ عَذَابِ السَّعِيرِ ﴿٤﴾

4. जिस (शैतान) के बारे में लिख दिया गया है कि जो शख़्स उसे दोस्त रखेगा सो वोह उसे गुमराह कर देगा और उसे दोज़ख़के अ़ज़ाब का रास्ता दिखाएगा।

يٰٓأَيُّهَا النَّاسُ إِنْ كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَإِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَّ غَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ ۚ وَنُقِرُّ فِي الْأَرْحَامِ مَا نَشَآءُ إِلَىٰٓ أَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوٓا أَشُدَّكُمْ ۚ وَ مِنْكُمْ مَّنْ

5. ऐ लोगो ! अगर तुम्हें (मरने के बाद) जी उठनेमें शक है तो (अपनी तख़्लीक़ो इर्तिक़ा पर ग़ौर करो) कि हमने तुम्हारी तख़्लीक़ (की कीमियाई इब्तिदा) मिट्टीसे की फिर (ह़यातियाती इब्तिदा) एक तौलीदी क़तरे से फिर (रह़मे मादरके अंदर जोंक की सूरतमें) मुअ़ल्लक़ वुजूदसे फिर एक (ऐसे) लोथड़े से जो दांतों चबाया हुआ लगता है, जिसमें बा'ज़ आ'ज़ाकी इब्तिदाई तख़्लीक़ नुमायां हो चुकी है और बा'ज़ (आ'ज़ा) की तख़्लीक़ अभी अ़मलमें नहीं आई ताकि हम तुम्हारे लिए (अपनी क़ुदरत और अपने कलामकी ह़क़्क़ानिय्यत) ज़ाहिर कर दें, और हम जिसे चाहते हैं रह़्मोंमें मुक़र्ररा मुद्दत तक ठेहराए रखते हैं

يُتَوَفّٰى وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰٓى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنْۢ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْـًٔا ؕ وَتَرَى الْاَرْضَ هَامِدَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ وَاَنْۢبَتَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍۢ بَهِيْجٍ ﴿۵﴾

फिर हम तुम्हें बच्चा बना कर निकालते हैं, फिर (तुम्हारी परवरिश करते हैं) ताकि तुम अपनी जवानीको पहुंच जाओ, और तुम में से वोह भी हैं जो (जल्द) वफ़ात पा जाते हैं और कुछ वोह हैं जो निहायत नाकारह उम्र तक लौटाए जाते हैं ताकि वोह (शख़्स येह मन्ज़र भी देख ले कि) सब कुछ जान लेने के बाद (अब फिर) कुछ (भी) नहीं जानता, और तू ज़मीन को बिलकुल खुश्क (मुर्दा) देखता है फिर जब हम उस पर पानी बरसा देते हैं तो उसमें ताज़गी-व-शादाबी की जुंबिश आ जाती है और वोह फूलने बढ़ने लगती है और ख़ुशनुमा नबातात में से हर नौअ् के जोड़े उगाती है।

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّهٗ يُحْىِ الْمَوْتٰى وَاَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۙ﴿۶﴾

6. येह (सब कुछ) इस लिए (होता रेहता) है कि अल्लाह ही सच्चा (ख़ालिक़ और रब) है और बेशक वोही मुर्दों (बेजान) को ज़िन्दा (जानदार) करता है और यक़ीनन वोही हर चीज़ पर बड़ा क़ादिर है।

وَّاَنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ يَبْعَثُ مَنْ فِى الْقُبُوْرِ ﴿۷﴾

7. और बेशक क़ियामत आनेवाली है इसमें कोई शक नहीं और यक़ीनन अल्लाह उन लोगों को ज़िन्दा कर के उठा देगा जो क़ब्रों में होंगे।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِى اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ۙ﴿۸﴾

8. और लोगों में से कुछ ऐसे भी हैं जो अल्लाह (की ज़ातो सिफ़ात और क़ुदरतों) के बारे में झगड़ा करते रेहते हैं बिग़ैर इल्मो दानिश के और बिग़ैर किसी हिदायतो दलीलके और बिगैर किसी रौशन किताब के (जो आस्मानसे उतरी हो)।

ثَانِىَ عِطْفِهٖ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ لَهٗ فِى الدُّنْيَا خِزْىٌ وَّنُذِيْقُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿۹﴾

9. अपनी गरदनको (तकब्बुर से) मरोड़े हुऐ ताकि (दूसरों को भी) अल्लाहकी राहसे बेहका दे, इस लिए दुनिया में (भी) रुस्वाई है और क़ियामतके दिन हम उसे जला देनेवाले अज़ाब का मज़ा चखाएंगे।

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدٰكَ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿۱۰﴾

10. येह तेरे उन आ'माल के बाइस है जो तेरे हाथ आगे भेज चुके थे और बेशक अल्लाह अपने बंदों पर बिल्कुल ज़ुल्म करनेवाला नहीं है।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللّٰهَ عَلٰى حَرْفٍ ۚ فَاِنْ اَصَابَهٗ خَيْرُ ۨ اطْمَاَنَّ بِهٖ ۚ وَاِنْ اَصَابَتْهُ فِتْنَةُ ۨ انْقَلَبَ عَلٰى وَجْهِهٖ ۚ خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةَ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ﴿۱۱﴾

11. और लोगों में से कोई ऐसा भी होता है जो (बिल्कुल दीनके) किनारे पर (रेह कर) अल्लाहकी इबादत करता है पस अगर उसे कोई (दुन्यावी) भलाई पहुंचती है तो वोह उस (दीन) से मुत्मइन हो जाता है और अगर उसे कोई आज़माइश पहुंचती है तो अपने मुंहके बल (दीनसे) पलट जाता है, उसने दुनिया में (भी) नुक़्सान उठाया और आख़िरत में (भी), येही तो वाज़ेह़ (तौर पर) बड़ा ख़सारा है।

يَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهٗ وَمَا لَا يَنْفَعُهٗ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ۚ ﴿۱۲﴾

12.वोह (शख़्स) अल्लाहको छोड़ कर उस (बुत) की इबादत करता है जो न उसे नुक़्सान पहुंचा सके और न ही उसे नफ़ा' पहुंचा सके, येही तो (बहुत) दूर की गुमराही है।

يَدْعُوْا لَمَنْ ضَرُّهٗۤ اَقْرَبُ مِنْ نَّفْعِهٖ ؕ لَبِئْسَ الْمَوْلٰى وَلَبِئْسَ الْعَشِيْرُ ﴿۱۳﴾

13. वोह उसे पूजता है जिसका नुक़्सान उसके नफ़े' से ज़ियादा करीब है, वोह क्या ही बुरा मददगार है और क्या ही बुरा साथी है।

اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ﴿۱۴﴾

14. बेशक अल्लाह उन लोगोंको जो ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे जन्नतों में दाख़िल फ़रमाएगा जिनके नीचेसे नेहरें रवां हैं, यक़ीनन अल्लाह जो इरादा फ़रमाता है कर देता है।

مَنْ كَانَ يَظُنُّ اَنْ لَّنْ يَّنْصُرَهُ اللّٰهُ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ اِلَى السَّمَآءِ ثُمَّ لْيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ هَلْ يُذْهِبَنَّ كَيْدُهٗ مَا يَغِيْظُ ﴿۱۵﴾

15. जो शख़्स येह गुमान करता है कि अल्लाह अपने (मह़बूबो बर्गुज़ीदा) रसूलकी दुनियाओ आख़िरत में हरगिज़ मदद नहीं करेगा उसे चाहिए कि (घरकी) छतसे एक रस्सी बांध कर लटक जाए फिर (ख़ुदको) फांसी दे ले फिर देखे क्या उसकी येह तदबीर उस (नुसरते इलाही) को दूर कर देती है जिस पर ग़ुस्सा खा रहा है।

وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يُّرِيْدُ ﴿١٦﴾

16. और उसी तरह हमने इस (पूरे क़ुरआन) को रौशन दलाइल की सूरत में नाज़िल फ़रमाया है और बेशक अल्लाह जिसे इरादा फ़रमाता है हिदायत से नवाज़ता है।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالصّٰبِـِٔيْنَ وَالنَّصٰرٰى وَالْمَجُوْسَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا ۖ اِنَّ اللّٰهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿١٧﴾

17. बेशक जो लोग ईमान लाए और जो लोग यहूदी हुए और सितारा परस्त और नसारा (ईसाई) और आतिश परस्त और मुशरिक जो हुए, यक़ीनन अल्लाह क़ियामत के दिन उन (सब) के दरमियान फ़ैसला फ़रमा देगा। बेशक अल्लाह हर चीज़का मुशाहिदा फ़रमा रहा है।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَسْجُدُ لَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُوْمُ وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَآبُّ وَكَثِيْرٌ مِّنَ النَّاسِ ؕ وَكَثِيْرٌ حَقَّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ ؕ وَمَنْ يُّهِنِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّكْرِمٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ ﴿١٨﴾

السجدة

18. क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाहही के लिए (वोह सारी मख़्लूक़) सज्दह रेज़ है जो आस्मानों में है और जो ज़मीनमें है और सूरज (भी) और चांद (भी) और सितारे (भी) और पहाड़(भी) और दरख़्त (भी) और जानवर (भी) और बहोतसे इन्सान (भी), और बहुतसे (इन्सान) ऐसे भी हैं जिन पर (उनके कुफ़्र शिर्कके बाइस)अज़ाब साबित हो चुका है, और अल्लाह जिसे ज़लील कर दे तो उसे कोई इज़्ज़त देनेवाला नहीं हैं। बेशक अल्लाह जो चाहता है कर देता है।

هٰذٰنِ خَصْمٰنِ اخْتَصَمُوْا فِيْ رَبِّهِمْ ۫ فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّنْ نَّارٍ ؕ يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوْسِهِمُ الْحَمِيْمُ ﴿١٩﴾

19. येह दो फ़रीक़ हैं जो अपने रबके बारे में झगड़ रहे हैं पस जो काफ़िर हो गए हैं उनके लिए आतिशे दोज़ख़के कपड़े काट (कर, सी) दिए गए हैं। उनके सरों पर खौलता हुवा पानी उंडेला जाएगा।

يُصْهَرُ بِهٖ مَا فِيْ بُطُوْنِهِمْ وَالْجُلُوْدُ ﴿٢٠﴾ ؕ

20. जिससे उनके शिकमों में जो कुछ है पिघल जाएगा और (उनकी) खालें भी।

وَلَهُمْ مَّقَامِعُ مِنْ حَدِيْدٍ ﴿٢١﴾

21. और उन (के सरों पर मारने) केलिए लोहे के हथोड़े होंगे।

كُلَّمَآ اَرَادُوْٓا اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ اُعِيْدُوْا فِيْهَا ۗ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿٢٢﴾

22. वोह जब भी शिद्दते तक्लीफ़ से वहां से निकलने का इरादा करेंगे (तो) उसमें वापस लौटा दिए जाएंगे और (उनसे कहा जाएगा) सख़्त आगके अज़ाबका मज़ा चखो।

اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ۭ وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ ﴿٢٣﴾

23. बेशक अल्लाह उन लोगों को जो ईमान ले आए हैं और नेक आ'माल अंजाम देते हैं जन्नतोंमें दाख़िल फ़रमाएगा जिनके नीचे से नेहरें जारी हैं वहां उन्हें सोने के कंगनों और मोतियों से आरास्ता किया जाऐगा, और वहां उनका लिबास रेशम होगा।

وَهُدُوْٓا اِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ ۚ وَهُدُوْٓا اِلٰى صِرَاطِ الْحَمِيْدِ ﴿٢٤﴾

24. और उन्हें (दुनिया में) पाकीज़ा क़ौलकी हिदायत की गई और उन्हें (इस्लामके) पसंदीदा रास्ते की तरफ़ रहनुमाई की गई।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِيْ جَعَلْنٰهُ لِلنَّاسِ سَوَآءَ ۨالْعَاكِفُ فِيْهِ وَالْبَادِ ۭ وَمَنْ يُّرِدْ فِيْهِ بِاِلْحَادٍۢ بِظُلْمٍ نُّذِقْهُ مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٥﴾

25. बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया है और (दूसरों को) अल्लाहकी राहसे और उस मस्जिदे हराम (का'बतुल्लाह) से रोकते हैं जिसे हमने सब लोगों के लिए यक्सां बनाया है उसमें वहां के बासी और परदेसी (में कोई फ़र्क़ नहीं), और जो शख़्स उसमें नाहक़ तरीक़े से कज रवी (या'नी मुक़र्ररा हुदूदो हुक़ूक़ की ख़िलाफ़ वर्ज़ी) का इरादा करे हम उसे दर्दनाक अज़ाब का मज़ा चखाएंगे।

وَاِذْ بَوَّاْنَا لِاِبْرٰهِيْمَ مَكَانَ الْبَيْتِ اَنْ لَّا تُشْرِكْ بِيْ شَيْئًا وَّطَهِّرْ بَيْتِيَ لِلطَّاۗىِٕفِيْنَ وَالْقَاۗىِٕمِيْنَ وَالرُّكَّعِ

26. और (वोह वक़्त याद कीजिए) जब हमने इब्राहीम (عليه السلام) के लिए बैतुल्लाह (या'नी ख़ानए का'बा की ता'मीर) की जगह का तअय्युन कर दिया (और उन्हें हुक्म फ़रमाया) कि मेरे साथ किसी चीज़को शरीक न ठेहराना और मेरे घरको (ता'मीर करने के बाद) तवाफ़

السُّجُوْدِ ﴿٢٦﴾
وَ اَذِّنْ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَاْتُوْكَ رِجَالًا وَّعَلٰى كُلِّ ضَامِرٍ يَّاْتِيْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ ﴿٢٧﴾
لِّيَشْهَدُوْا مَنَافِعَ لَهُمْ وَ يَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ فِيْٓ اَيَّامٍ مَّعْلُوْمٰتٍ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ ۚ فَكُلُوْا مِنْهَا وَ اَطْعِمُوا الْبَآئِسَ الْفَقِيْرَ ﴿٢٨﴾
ثُمَّ لْيَقْضُوْا تَفَثَهُمْ وَلْيُوْفُوْا نُذُوْرَهُمْ وَ لْيَطَّوَّفُوْا بِالْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ﴿٢٩﴾
ذٰلِكَ ۗ وَ مَنْ يُّعَظِّمْ حُرُمٰتِ اللّٰهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ؕ وَاُحِلَّتْ لَكُمُ الْاَنْعَامُ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ ﴿٣٠﴾
حُنَفَآءَ لِلّٰهِ غَيْرَ مُشْرِكِيْنَ بِهٖ ؕ وَ مَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَكَاَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ اَوْ تَهْوِيْ

करनेवालों और क़ियाम करनेवालों और रुकूअ़ करनेवालों और सुजूद करनेवालों के लिए पाको साफ़ रखना।

27. और तुम लोगों में हज़का बुलंद आवाज़से ए'लान करो वोह तुम्हारे पास पैदल और तमाम दुबले ऊंटों पर (सवार) हाज़िर हो जाएंगे जो दूर दराज़के रास्तों से आते हैं।

28. ताकि वोह अपने फ़वाइद (भी) पाएं और (कुरबानी के) मुक़र्ररा दिनों के अंदर अल्लाहने जो मवेशी चौपाए उनको बख़्शे हैं उन पर (ज़ब्ह के वक़्त) अल्लाह के नामका ज़िक्र भी करें, पस तुम उसमें से खुद (भी) खाओ और खस्ता हाल मोहताजको (भी) खिलाओ।

29. फिर उन्हें चाहिए कि (एहराम से निकलते हुए बाल और नाखुन कटवा कर) अपना मैल कुचैल दूर करें और अपनी नज़रें (या बक़िय्या मनासिक) पूरी करें और (अल्लाहके) क़दीम घर (ख़ानए का'बा) का तवाफ़े (ज़ियारत) करें।

30. येही (हुक्म) है और जो शख़्स अल्लाह (की बारगाह) से इज़्ज़त याफ़्ता चीज़ोंकी ता'ज़ीम करता है तो वोह उसके रबके हां उस के लिए बेहतर है, और तुम्हारे लिए (सब) मवेशी (चौपाए) हलाल कर दिए गए हैं सिवाए उनके जिनकी मुमानिअ़त तुम्हें पढ़ कर सुनाई गई है सो तुम बुतों की पलीदीसे बचा करो और झूटी बातसे परहेज़ किया करो।

31. सिर्फ़ अल्लाह के हो कर रहो उसके साथ (किसी को) शरीक न ठेहराते हुए,और जो कोई अल्लाहके साथ शरीक करता है तो गोया वोह (ऐसे है जैसे) आस्मान से गिर पड़े फिर उसके परिन्दे उचक ले जाएं या हवा उसको

بِهِ الرِّيْحُ فِيْ مَكَانٍ سَحِيْقٍ ﴿٣١﴾

किसी दूरकी जगह में नीचे जा फेंके ।

ذٰلِكَ ۗ وَ مَنْ يُّعَظِّمْ شَعَآئِرَ اللّٰهِ فَاِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُلُوْبِ ﴿٣٢﴾

32. येही (हुक्म) है और जो शख़्स अल्लाहकी निशानियोंकी ता'ज़ीम करता है (या'नी उन जानदारों, यादगारों, मुक़ामात, अह्काम और मनासिक वग़ैरा की ता'ज़ीम जो अल्लाह या अल्लाहवालों के साथ किसी अच्छी निस्बत या तअ़ल्लुक़ की वजहसे जाने पेहचाने जाते हैं) तो येह (ता'ज़ीम) दिलोंकी तक़्वा में से है (येह ता'ज़ीम वोही लोग बजा लाते हैं जिनके दिलोंको तक़्वा नसीब हो गया हो)।

لَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ مَحِلُّهَآ اِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ﴿٣٣﴾

33. तुम्हारे लिए इन (कुरबानीके जानवरों) में मुक़र्ररा मुद्दत तक फ़वाइद हैं फिर उन्हें क़दीम घर (ख़ानए का'बा) की तरफ़ (ज़ब्हके लिए) पहुंचना है।

وَ لِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ ۗ فَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَلَهٗٓ اَسْلِمُوْا ۗ وَ بَشِّرِ الْمُخْبِتِيْنَ ﴿٣٤﴾

34. और हमने हर उम्मत के लिए एक कुरबानी मुक़र्रर कर दी है ताकि वोह उन मवेशी चौपायों पर जो अल्लाहने उन्हें इनायत फ़रमाए हैं (ज़ब्हके वक़्त) अल्लाहका नाम लें, सो तुम्हारा मा'बूद एक (ही) मा'बूद है पस तुम उसीके फ़रमांबरदार बन जाओ, और (ऐ हबीब!) आजिज़ी करनेवालों को ख़ुश ख़बरी सुना दें।

الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَ الصّٰبِرِيْنَ عَلٰى مَآ اَصَابَهُمْ وَالْمُقِيْمِي الصَّلٰوةِ ۙ وَ مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿٣٥﴾

35. (येह) वोह लोग हैं कि जब अल्लाहका ज़िक्र किया जाता है (तो) उनके दिल डरने लगते हैं और जो मुसीबतें उन्हें पहुंचती हैं उन पर सब्र करते हैं और नमाज़ क़ाइम रखनेवाले हैं और जो कुछ हमने उन्हें अ़ता फ़रमाया है उसमें से ख़र्च करते हैं।

وَالْبُدْنَ جَعَلْنٰهَا لَكُمْ مِّنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ لَكُمْ فِيْهَا خَيْرٌ ۖ فَاذْكُرُوا اسْمَ

36. और कुरबानी के बड़े जानवरों (या'नी ऊंट और गाय वग़ैरा) को हमने तुम्हारे लिए अल्लाहकी निशानियों में

اللّٰهِ عَلَيْهَا صَوَآفَّ ۚ فَاِذَا وَجَبَتْ جُنُوْبُهَا فَكُلُوْا مِنْهَا وَ اَطْعِمُوا الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ ؕ كَذٰلِكَ سَخَّرْنٰهَا لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٣٦﴾

से बना दिया है उनमें तुम्हारे लिए भलाई है पस तुम (उन्हें) क़तारमें खड़ा कर के (नेज़ा मार कर नहर के वक़्त) उन पर अल्लाहका नाम लो, फिर जब वोह अपने पहलू के बल गिर जाएं तो तुम ख़ुद (भी) उस में से खाओ और क़नाअ़तसे बैठे रेहनेवालोंको और सवाल करनेवाले (मोहताजों) को (भी) खिलाओ। इस तरह हमने उन्हें तुम्हारे ताबे' कर दिया है ताकि तुम शुक्र बजा लाओ।

لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا وَلَا دِمَآؤُهَا وَلٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ ؕ كَذٰلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ ؕ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٣٧﴾

37. हरगिज़ न (तो) अल्लाहको उन (क़ुरबानियों) का गौश्त पहुंचता है और न उनका ख़ून मगर उसे तुम्हारी तरफ़से तक़्वा पहुंचता है, इस तरह (अल्लाहने) उन्हें तुम्हारे ताबे' कर दिया है ताकि तुम (वक़्ते ज़ब्ह) अल्लाहकी तक्बीर कहो जैसी उसने तुम्हें हिदायत फ़रमाई है, और आप नेकी करनेवालोंको ख़ुश ख़बरी सुना दें।

اِنَّ اللّٰهَ يُدٰفِعُ عَنِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ كَفُوْرٍ ﴿٣٨﴾ ع

38. बेशक अल्लाह साहिबे ईमान लोगों से (दुश्मनोंका फितना-व-शर्र) दूर करता रेहता है। बेशक अल्लाह किसी ख़ाइन (और) ना शुक्रेको पसंद नहीं करता।

اُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ عَلٰى نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرُ ۙ ﴿٣٩﴾

39. उन लोगोंको (जिहादकी) इजाज़त दे दी गई है जिनसे (नाहक़) जंग की जा रही है उस वजह से के उन पर ज़ुल्म किया गया, और बेशक अल्लाह उन (मज़लूमों) की मदद पर बड़ा क़ादिर है।

الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ اِلَّآ اَنْ يَّقُوْلُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ؕ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ

40. (येह) वोह लोग हैं जो अपने घरोंसे नाहक़ निकाले गए सिर्फ़ इस बिना पर कि वोह केहते थे कि हमारा रब अल्लाह है (या'नी उन्होंने बातिलकी फ़रमां रवाई तस्लीम करने से इन्कार किया था), और अगर अल्लाह इन्सानी तब्क़ातमें से बा'ज़ को बा'ज़ के ज़रीए (जिहादो इन्क़िलाबी जिद्दो जहदकी सूरत में) हटाता न रेहता तो

وَّ بِيَعٌ وَّصَلَوٰتٌ وَّ مَسٰجِدُ يُذْكَرُ فِيْهَا اسْمُ اللّٰهِ كَثِيْرًا ۗ وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ﴿٤٠﴾

ख़ानक़ाहें और गिर्जे और कलीसे और मस्जिदें (या'नी तमाम अद्यान के मज़हबी मराकिज़ और इबादतगाहें) मिस्मार और वीरान कर दी जातीं जिनमें कसरतसे अल्लाहके नामका ज़िक्र किया जाता है, और जो शख़्स अल्लाह (के दीन) की मदद करता है यक़ीनन अल्लाह उसकी मदद फ़रमाता है। बेशक अल्लाह ज़रूर (बड़ी) क़ुव्वतवाला (सब पर) ग़ालिब है (गोया हक़ और बातिलके तज़ादो तसादुम के इन्क़िलाबी अ़मल से ही हक़की बक़ा मुमकिन है)।

اَلَّذِيْنَ اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْاَرْضِ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَاَمَرُوْا بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ۗ وَلِلّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ﴿٤١﴾

41. (येह अह्ले हक़) वोह लोग हैं कि अगर हम उन्हें ज़मीनमें इक़्तिदार दे दें (तो) वोह नमाज़ (का निज़ाम) क़ाइम करें और ज़कात की अदायगी का इन्तिज़ाम करें और (पूरे मुआशरे में नेकी और) भलाई का हुक्म करें और (लोगोंको) बुराईसे रोक दें, और सब कामोंका अंजाम अल्लाह ही के इख़्तियार में है।

وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّعَادٌ وَّثَمُوْدُ ﴿٤٢﴾

42. और अगर येह (कुफ़्फ़ार) आपको झुटलाते हैं तो उनसे पहले क़ौमे नूह और आ़दो समूदने भी (अपने रसूलों को) झुटलाया था।

وَقَوْمُ اِبْرٰهِيْمَ وَقَوْمُ لُوْطٍ ﴿٤٣﴾

43. और क़ौमे इब्राहीम और क़ौमे लूतने (भी)।

وَّاَصْحٰبُ مَدْيَنَ ۚ وَكُذِّبَ مُوْسٰى فَاَمْلَيْتُ لِلْكٰفِرِيْنَ ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۚ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿٤٤﴾

44. और बाशिन्दगाने मद्यनने (भी झुटलाया था) और मूसा (عليه السلام) को भी झुटलाया गया सो मैं (उन सब) काफ़िरोंको मोहलत देता रहा फिर मैंने उन्हें पकड़ लिया, फिर (बताइए) मेरा अ़ज़ाब कैसा था ?

فَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا وَبِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَّقَصْرٍ مَّشِيْدٍ ﴿٤٥﴾

45. फिर कितनी ही (ऐसी) बस्तियां हैं जिन्हें हमने हलाक कर डाला इस हालमें कि वोह ज़ालिम थीं पस वोह अपनी छतों पर गिरी पड़ी हैं और (उनकी हलाकत से) कितने कुंऐं बेकार (हो गए) और कितने मजबूत महल उजड़े पड़े (हैं)।

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَتَكُونَ لَهُمْ قُلُوبٌ يَعْقِلُونَ بِهَا أَوْ آذَانٌ يَسْمَعُونَ بِهَا ۖ فَإِنَّهَا لَا تَعْمَى الْأَبْصَارُ وَلَٰكِنْ تَعْمَى الْقُلُوبُ الَّتِي فِي الصُّدُورِ ﴿٤٦﴾

46. तो क्या उन्होने ज़मीनमें सैरो सियाहत नहीं की कि (शायद उन खन्डरातको देख कर) उनके दिल (ऐसे) हो जाते जिनसे वोह समझ सक्ते या कान (ऐसे) हो जाते जिनसे वोह (हक़की बात) सुन सक्ते, तो हक़ीक़त येह है कि(ऐसों की) आँखें अँधी नहीं होतीं लेकिन दिल अँधे हो जाते हैं जो सीनों में हैं।

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ وَلَنْ يُخْلِفَ اللَّهُ وَعْدَهُ ۚ وَإِنَّ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ كَأَلْفِ سَنَةٍ مِمَّا تَعُدُّونَ ﴿٤٧﴾

47. और येह आपसे अज़ाब में जल्दी के ख़्वाहिशमंद हैं और अल्लाह हरगिज़ अपने वा'दे की ख़िलाफ़ वरज़ी न करेगा, और (जब अज़ाब का वक़्त आएगा) तो (अज़ाबका) एक दिन आपके रबके हां एक हज़ार सालकी मानिन्द है (उस हिसाबसे) जो तुम शुमार करते हो।

وَكَأَيِّنْ مِنْ قَرْيَةٍ أَمْلَيْتُ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ أَخَذْتُهَا وَإِلَيَّ الْمَصِيرُ ﴿٤٨﴾

48. और कितनी ही बस्तियां (ऐसी) हैं जिनको मैंने मोहलत दी हालांकि वोह ज़ालिम थीं फिर मैंने उन्हें (अज़ाबकी) गिरफ़्त में ले लिया और (हर किसी को) मेरी ही तरफ़ लौट कर आना है।

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا أَنَا لَكُمْ نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿٤٩﴾

49. फ़रमा दीजिए : ऐ लोगो ! मैं तो महज तुम्हारे लिए (अज़ाबे इलाही का) डर सुनानेवाला हूं।

فَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿٥٠﴾

50. पस जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे उनके लिए मग़फ़िरत है और (मजीद) बुज़ुर्गी वाली अ़ता है।

وَالَّذِينَ سَعَوْا فِي آيَاتِنَا مُعَاجِزِينَ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ﴿٥١﴾

51. और जो लोग हमारी आयतों (के रद) में कोशां रेहते हैं इस ख़याल से कि (हमें) आ़जिज़ कर देंगे वोही लोग अह्ले दोज़ख़ हैं।

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَسُولٍ وَلَا نَبِيٍّ إِلَّا إِذَا تَمَنَّىٰ

52. और हमने आपसे पहले कोई रसूल नहीं भेजा और न कोई नबी मगर (सबके साथ येह वाक़िआ़ गुज़रा कि)

اَلْقَى الشَّيْطٰنُ فِيْٓ اُمْنِيَّتِهٖ ۚ فَيَنْسَخُ اللّٰهُ مَا يُلْقِي الشَّيْطٰنُ ثُمَّ يُحْكِمُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ ۗ وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۙ﴿۵۲﴾

जब उस (रसूल या नबी)ने (लोगों पर कलामे इलाही) पढा (तो) शैतानने (लोगों के जेहनों में) उस (नबीके) पढ़े हुए (या'नी तिलावत शुदह) कलाम में (अपनी तरफ़ से बातिल शुब्हात और फ़ासिद ख़यालात को) मिला दिया, सो शैतान जो (वस्वसे सुननेवालों के ज़ेहनों में) डालता है अल्लाह उन्हें ज़ाइल फ़रमा देता है फिर अल्लाह अपनी आयतोंको (अह्ले ईमानके दिलों में) निहायत मज़बूत कर देता है, और अल्लाह ख़ूब जाननेवाला बड़ी हिक्मतवाला है।

لِّيَجْعَلَ مَا يُلْقِي الشَّيْطٰنُ فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّ الْقَاسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ ۗ وَ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَفِيْ شِقَاقٍۢ بَعِيْدٍ ۙ﴿۵۳﴾

53. (येह इस लिए होता है) ताकि अल्लाह उन (बातिल ख़यालात और फ़ासिद शुब्हात) को जो शैतान (लोगों के ज़ेहनों में) डालता है ऐसे लोगों के लिए आज़माइश बना दे जिनके दिलोंमें (मुनाफ़िक़त की) बीमारी है और जिन लोगों के दिल (कुफ्रो इनाद के बाइस) सख़्त हैं, और बेशक ज़ालिम लोग बड़ी शदीद मुख़ालिफ़त में मुब्तिला हैं।

وَّ لِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَيُؤْمِنُوْا بِهٖ فَتُخْبِتَ لَهٗ قُلُوْبُهُمْ ۗ وَ اِنَّ اللّٰهَ لَهَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۵۴﴾

54. और ताकि वोह लोग जिन्हें इल्मे (सहीह़) अ़ता किया गया है जान लें कि वोही (वह़ी जिसकी पयग़म्बरने तिलावत की है) आपके रबकी तरफ़से (मब्नी) बर ह़क़ है सो वोह उसी पर ईमान लाएें (और शैतानी वस्वसों को रद कर दें) और उनके दिल उस (रब) केलिए आ़जिज़ी करें, और बेशक अल्लाह मोमिनों को ज़रूर सीधी राहकी तरफ़ हिदायत फ़रमानेवाला है।

وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً اَوْ يَاْتِيَهُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَقِيْمٍ ﴿۵۵﴾

55. और काफ़िर लोग हमेशा इस (क़ुरआन) के ह़वाले से शक में रहेंगे यहां तक कि अचानक उन पर क़ियामत आ पहुंचे या उस दिनका अ़ज़ाब आ जाए जिससे नजातका कोई इम्कान नहीं।

اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ لِّلّٰهِ ۗ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ ۗ

56. हुक्मरानी उस दिन सिर्फ़ अल्लाह ही की होगी। वोही

فَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿٥٦﴾

उनके दरमियान फ़ैसला फ़रमाएगा, पस जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे (वोह) ने'मत के बाग़ात में (क़ियाम पज़ीर) होंगे।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿٥٧﴾

57. और जिन्होंने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुटलाया तो उन ही लोगों के लिए ज़िल्लत आमेज़ अ़ज़ाब होगा।

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ قُتِلُوا أَوْ مَاتُوا لَيَرْزُقَنَّهُمُ اللَّهُ رِزْقًا حَسَنًا ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿٥٨﴾

58. और जिन लोगोंने अल्लाहकी राहमें (वतनसे) हिजरत की फिर क़त्ल कर दिए गए या (राहे हक़की मुसीबतें झेलते झेलते) मर गए तो अल्लाह उन्हें ज़रूर रिज़्क़े हसन (या'नी उख़रवी अ़ताओं) की रोज़ी बख़्शेगा, और बेशक अल्लाह सबसे बेहतर रिज़्क़ देनेवाला है।

لَيُدْخِلَنَّهُم مُّدْخَلًا يَرْضَوْنَهُ ۗ وَإِنَّ اللَّهَ لَعَلِيمٌ حَلِيمٌ ﴿٥٩﴾

59. वोह ज़रूर उन्हें उस जगह (या'नी मक़ामे रिज़्वानमें) दाख़िल फ़रमाएगा जिससे वोह राज़ी हो जाएंगे, और बेशक अल्लाह ख़ूब जाननेवाला बुर्दबार है।

ذَٰلِكَ ۖ وَمَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوقِبَ بِهِ ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ لَيَنصُرَنَّهُ اللَّهُ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَعَفُوٌّ غَفُورٌ ﴿٦٠﴾

60. (हुक्म) येही है, और जिस शख़्सने इतना ही बदला लिया जितनी उसे अज़िय्यत दी गई थी फिर उस शख़्स पर ज़ियादती की जाए तो अल्लाह ज़रूर उसकी मदद फ़रमाएगा । बेशक अल्लाह दरगुज़र फ़रमानेवाला बड़ा बख़्शनेवाला है।

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَأَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ﴿٦١﴾

61. येह इस वजह से है कि अल्लाह रातको दिन में दाख़िल फ़रमाता है और दिनको रात में दाख़िल फ़रमाता है और बेशक अल्लाह ख़ूब सुननेवाला देखनेवाला है।

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ مِن دُونِهِ هُوَ الْبَاطِلُ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ﴿٦٢﴾

62. येह इस लिए कि अल्लाह ही हक़ है और बेशक वोह (कुफ़्फ़ार) उसके सिवा जो कुछ (भी) पूजते हैं वोह बातिल है और यक़ीनन अल्लाह ही बहुत बुलंद बहुत बड़ा है।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ

63. क्या आपने नहीं देखा कि अल्लाह आस्मान की

مَاءً فَتُصْبِحُ الْأَرْضُ مُخْضَرَّةً ۗ إِنَّ اللَّهَ لَطِيفٌ خَبِيرٌ ﴿٦٣﴾

जानिब से पानी उतारता है तो ज़मीन सरसब्ज़ो शादाब हो जाती है। बेशक अल्लाह महरबान (और) बड़ा ख़बरदार है।

لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿٦٤﴾

64. उसी का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और बेशक अल्लाह ही बे नियाज़ क़ाबिले सताइश है।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ سَخَّرَ لَكُم مَّا فِي الْأَرْضِ وَالْفُلْكَ تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهِ ۗ وَيُمْسِكُ السَّمَاءَ أَن تَقَعَ عَلَى الْأَرْضِ إِلَّا بِإِذْنِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿٦٥﴾

65. क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाहने जो कुछ ज़मीन में है तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र फ़रमा दिया है और कश्तियों को (भी) जो उसके अम्र (या'नी क़ानून) से समन्दर (व दरिया) में चलती हैं, और आस्मान (या'नी ख़लाई-व-फ़िज़ाई कुर्रों) को ज़मीन पर गिरने से (एक आफ़ाक़ी निज़ाम के ज़रीए) थामे हूए है मगर उसीके हुक्मसे (जब वोह चाहेगा आपसमें टकरा जाएंगे)। बेशक अल्लाह तमाम इन्सानोंके साथ निहायत शफ़्क़त फ़रमानेवाला बड़ा महरबान है।

وَهُوَ الَّذِي أَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ۗ إِنَّ الْإِنسَانَ لَكَفُورٌ ﴿٦٦﴾

66. और वोही है जिसने तुम्हें ज़िन्दगी बख़्शी फिर तुम्हें मौत देता है फिर तुम्हें (दोबारा) ज़िन्दगी देगा। बेशक इन्सान ही बड़ा नाशुक्र गुज़ार है।

لِّكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنسَكًا هُمْ نَاسِكُوهُ فَلَا يُنَازِعُنَّكَ فِي الْأَمْرِ وَادْعُ إِلَىٰ رَبِّكَ ۗ إِنَّكَ لَعَلَىٰ هُدًى مُّسْتَقِيمٍ ﴿٦٧﴾

67. हमने हर एक उम्मत के लिए (अह्कामे शरीअ़त या इ़बादतो क़ुरबानीकी) एक राह मुक़र्रर कर दी है, उन्हें उसी पर चलना है, सो येह लोग आपसे हरगिज़ (अल्लाह के) हुक्म में झगड़ा न करें, और आप अपने रबकी तरफ़ बुलाते रहें। बेशक आप ही सीधी (राहे) हिदायत पर हैं।

وَإِن جَادَلُوكَ فَقُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿٦٨﴾

68. अगर वोह आपसे झगड़ा करें तो आप फ़रमा दीजिए : अल्लाह बेहतर जानता है जो कुछ तुम कर रहे हो।

اللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

69. अल्लाह तुम्हारे दरमियान क़ियामतके दिन उन तमाम

فِيمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٦٩﴾

बातों का फ़ैसला फ़रमा देगा जिन में तुम इख़्तिलाफ़ करते रहे थे।

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ؕ إِنَّ ذٰلِكَ فِي كِتٰبٍ ؕ إِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيرٌ ﴿٧٠﴾

70. क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि अल्लाह वोह सब कुछ जानता है जो आस्मान और ज़मीनमें है, बेशक येह सब किताब (लौहे़ मह़फ़ूज़) में (दर्ज) है, यक़ीनन येह सब अल्लाह पर (बहुत) आसान है।

وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّمَا لَيْسَ لَهُمْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِينَ مِنْ نَّصِيرٍ ﴿٧١﴾

71. और येह लोग अल्लाहके सिवा उन (बुतों) की परस्तिश करते हैं जिसकी उसने कोई सनद नहीं उतारी और न (ही) उन्हें उस (बुतपरस्ती के अंजाम) का कुछ इल्म है, और (क़ियामतके दिन) ज़ालिमों का कोई मददगार न होगा।

وَإِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ تَعْرِفُ فِي وُجُوهِ الَّذِينَ كَفَرُوا الْمُنْكَرَ ؕ يَكَادُونَ يَسْطُونَ بِالَّذِينَ يَتْلُونَ عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ؕ قُلْ أَفَأُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكُمْ ؕ اَلنَّارُ ؕ وَعَدَهَا اللّٰهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿٧٢﴾ ع

72. और जब उन (काफ़िरों) पर हमारी रौशन आयतें तिलावत की जाती हैं (तो) आप उन काफ़िरों के चेहरोंमें नापसंदीदगी (व ना गवारी के आसार) साफ़ देख सक्ते हैं। ऐसे लगता है कि अ़न क़रीब उन लोगों पर झपट पड़ेंगे जो उन्हें हमारी आयात पढ़ कर सुना रहे हैं, आप फ़रमा दीजिए : (ऐ मुज़्तरिब होनेवाले काफ़िरो !) क्या मैं तुम्हें इससे (भी) ज़ियादह तक्लीफ़ देह चीज़से आगाह करूं? (वोह दोज़ख़ की) आग है जिसका अल्लाहने काफ़िरों से वा'दा कर रखा है और वोह बहुत ही बुरा ठिकाना है।

يٰٓأَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسْتَمِعُوا لَهٗ ؕ إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللّٰهِ لَنْ يَّخْلُقُوا ذُبَابًا وَّلَوِ اجْتَمَعُوا لَهٗ ؕ وَإِنْ يَّسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْـًٔا لَّا يَسْتَنْقِذُوهُ مِنْهُ ؕ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالْمَطْلُوبُ ﴿٧٣﴾

73. ऐ लोगो ! एक मिसाल बयान की जाती है सो उसे ग़ौरसे सुनो : बेशक जिन (बुतों) को तुम अल्लाहके सिवा पूजते हो वोह हरगिज़ एक मख्खी (भी) पैदा नहीं कर सक्ते अगरचे वोह सब उस (काम) के लिए जमा' हो जाएं , और अगर उन से मख्खी कोई चीज़ छीन कर ले जाए (तो) वोह उस चीज़ को उस (मख्खी) से छुड़ा (भी) नहीं सक्ते, कितना बेबस है तालिब (आबिद) भी और मत्लूब (मा'बूद) भी।

مَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِیٌّ عَزِیْزٌ ﴿۷۴﴾

74. उन (काफ़िरों) ने अल्लाह की क़दर न की जैसी उसकी क़दर करना चाहिए थी । बेशक अल्लाह बड़ी क़ुव्वतवाला (हर चीज़ पर) ग़ालिब है।

اَللّٰهُ یَصْطَفِیْ مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا وَّ مِنَ النَّاسِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِیْعٌۢ بَصِیْرٌ ﴿۷۵﴾

75. अल्लाह फ़रिश्तोंमें से (भी) और इन्सानोंमें से (भी अपना) पैग़ाम पहुंचानेवालों को मुन्तख़ब फ़रमा लेता है। बेशक अल्लाह खूब सुननेवाला खूब देखनेवाला है।

یَعْلَمُ مَا بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ وَ مَا خَلْفَهُمْ ؕ وَ اِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿۷۶﴾

76. वोह उन (चीजों) को (खूब) जानता है जो उनके आगे हैं और जो उनके पीछे हैं, और तमाम काम उसी की तरफ़ लौटाए जाते हैं।

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا ارْكَعُوْا وَ اسْجُدُوْا وَ اعْبُدُوْا رَبَّكُمْ وَ افْعَلُوا الْخَیْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۷۷﴾

السجدة عند الشافعي

77. ऐ ईमान वालो ! तुम रुकूअ करते रहो और सुजूद करते रहो, और अपने रबकी इबादत करते रहो और (दीगर) नेक काम किए जाओ ताकि तुम फ़लाह पा सको।

وَ جَاهِدُوْا فِی اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ ؕ هُوَ اجْتَبٰىكُمْ وَ مَا جَعَلَ عَلَیْكُمْ فِی الدِّیْنِ مِنْ حَرَجٍ ؕ مِلَّةَ اَبِیْكُمْ اِبْرٰهِیْمَ ؕ هُوَ سَمّٰىكُمُ الْمُسْلِمِیْنَ ۙ۬ مِنْ قَبْلُ وَ فِیْ هٰذَا لِیَكُوْنَ الرَّسُوْلُ شَهِیْدًا عَلَیْكُمْ وَ تَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ ۚۖ فَاَقِیْمُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتُوا الزَّكٰوةَ وَ اعْتَصِمُوْا بِاللّٰهِ ؕ هُوَ مَوْلٰىكُمْ ۚ فَنِعْمَ الْمَوْلٰى وَ نِعْمَ النَّصِیْرُ ﴿۷۸﴾

78. और अल्लाह (की मुहब्बतो ताअ़त और उसके दीनकी इशाअ़तो इक़ामत) में जिहाद करो जैसा कि उसके जिहाद का हक़ है । उसने तुम्हें मुन्तख़ब फ़रमा लिया है और उसने तुम पर दीन में कोई तंगी नहीं रखी। (येही) तुम्हारे बाप इब्राहीम (عليه السلام) का दीन है । उस (अल्लाह)ने तुम्हारा नाम मुसलमान रखा है, इससे पहले (की किताबों में) भी और इस (क़ुरआन) में भी ताकि येह रसूले (आख़िरुज़्ज़मां ﷺ) तुम पर गवाह हो जाएं और तुम बनी नौए इन्सान पर गवाह हो जाओ, पस (इस मर्तबे पर फ़ाइज़ रेहने के लिए) तुम नमाज़ क़ाइम किया करो और ज़कात अदा किया करो और अल्लाह (के दामन)को मज़बूतीसे थामे रखो, वोही तुम्हारा मददगार (व कारसाज) है, पस वोह कितना अच्छा कारसाज़ (है) और कितना अच्छा मददगार है।

आयातुहा 118 | 23 सूरतुल मुअमिनून मक्किय्यतुन 74 | रुकूआतुहा 6

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ् जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

قَدۡ اَفۡلَحَ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ ۙ﴿۱﴾

1. बेशक ईमानवाले मुराद पा गए।

الَّذِيۡنَ هُمۡ فِىۡ صَلَاتِهِمۡ خٰشِعُوۡنَ ۙ﴿۲﴾

2. जो लोग अपनी नमाज़में इज्ज़ो नियाज़ करते हैं।

وَالَّذِيۡنَ هُمۡ عَنِ اللَّغۡوِ مُعۡرِضُوۡنَ ۙ﴿۳﴾

3. और जो बेहूदा बातोंसे (हर वक़्त) कनारा कश रेहते हैं।

وَالَّذِيۡنَ هُمۡ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوۡنَ ۙ﴿۴﴾

4. और जो (हमेशा) ज़कात अदा (कर के अपनी जानो माल को पाक) करते रेहते हैं।

وَالَّذِيۡنَ هُمۡ لِفُرُوۡجِهِمۡ حٰفِظُوۡنَ ۙ﴿۵﴾

5. और जो (दाइमन) अपनी शर्मगाहोंकी हि़फ़ाज़त करते रेहते हैं।

اِلَّا عَلٰٓى اَزۡوَاجِهِمۡ اَوۡ مَا مَلَكَتۡ اَيۡمَانُهُمۡ فَاِنَّهُمۡ غَيۡرُ مَلُوۡمِيۡنَ ۚ﴿۶﴾

6. सिवाए अपनी बीवियों के या उन बांदियों के जो उनके हाथोंकी ममलूक हैं, बेशक (अह़्कामे शरीअ़त के मुताबिक़ उनके पास जाने से) उन पर कोई मलामत नहीं।

فَمَنِ ابۡتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الۡعٰدُوۡنَ ۚ﴿۷﴾

7. फिर जो शख़्स उन (ह़लाल औरतों) के सिवा किसी और का ख़्वाहिशमंद हुआ तो ऐसे लोग ही ह़दसे तजावुज़ करनेवाले (सरकश) हैं।

وَالَّذِيۡنَ هُمۡ لِاَمٰنٰتِهِمۡ وَعَهۡدِهِمۡ رٰعُوۡنَ ۙ﴿۸﴾

8. और जो लोग अपनी अमानतों और अपने वा'दों की पासदारी करनेवाले हैं।

وَالَّذِيۡنَ هُمۡ عَلٰى صَلَوٰتِهِمۡ يُحَافِظُوۡنَ ۘ﴿۹﴾

9. और जो अपनी नमाज़ों की (मुदाविमत के साथ) हि़फ़ाज़त करनेवाले हैं।

اُولٰٓئِكَ هُمُ الۡوٰرِثُوۡنَ ۙ﴿۱۰﴾

10. येही लोग (जन्नत के) वारिस हैं।

الَّذِيۡنَ يَرِثُوۡنَ الۡفِرۡدَوۡسَ ؕ هُمۡ

11. येह लोग जन्नतके सबसे आ'ला बाग़ात (जहां तमाम

الجزء ١٨

وقف لازم

فِيهَا خٰلِدُوْنَ ﴿١١﴾

ने'मतों, राहतों और क़ुर्बे इलाही की लज़्ज़तों की कसरत होगी उन) की विरासत (भी) पाएंगे, वोह उनमें हमेशा रहेंगे।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ طِيْنٍ ﴿١٢﴾

12. और बेशक हमने इन्सानकी तख़्लीक़ (की इब्तिदा) मिट्टी (के कीमियाई अज्ज़ा) के खुलासे से फ़रमाई।

ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ﴿١٣﴾

13. फिर उसे नुत्फ़ा (तौलीदी क़तरह) बना कर एक मज़बूत जगह (रह्मे मादर) में रखा।

ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظٰمًا فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ لَحْمًا ۗ ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ ؕ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ ﴿١٤﴾

14. फिर हमने उस नुत्फ़े को (रह्मे मादर के अंदर जोंककी सूरत में) मुअ़ल्लक़ वुजूद बना दिया, फिर हमने उस मुअ़ल्लक़ वुजूदको एक (ऐसा) लोथड़ा बना दिया जो दांतोंसे चबाया हुवा लगता है, फिर हमने उस लोथड़े से हड्डियों का ढांचा बनाया, फिर हमने उन हड्डियों पर गोश्त (और पठ्ठे) चढाए, फिर हमने उसे तख़्लीक़की दूसरी सूरतमें (बदल कर तदरीजन) नश्वोनुमा दी, फिर (उस) अल्लाहने (उसे) बढ़ा (कर मुहकम वुजूद बना) दिया जो सबसे बेहतर पैदा फ़रमानेवाला है।

ثُمَّ اِنَّكُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ لَمَيِّتُوْنَ ؕ ﴿١٥﴾

15. फिर बेशक तुम इस (ज़िन्दगी) के बाद ज़रूर मरनेवाले हो।

ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ تُبْعَثُوْنَ ﴿١٦﴾

16. फिर बेशक तुम क़ियामत के दिन (ज़िन्दा करके) उठाए जाओगे।

وَ لَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَآئِقَ ۖ وَ مَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غٰفِلِيْنَ ﴿١٧﴾

17. और बेशक हमने तुम्हारे ऊपर (कुर्रए अर्ज़ी के गिर्द फ़िज़ाए बसीतमें निज़ामे काइनात की हिफ़ाज़तके लिए) सात रास्ते (या'नी सात मक़्नातीसी पट्टियां या मैदान) बनाए हैं और हम (काइनातकी) तख़्लीक़ (और उसकी हिफ़ाज़त के तक़ाज़ों) से बेख़बर न थे।

وَ اَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۢ بِقَدَرٍ

18. और हम एक अंदाज़े के मुताबिक़ (अ़र्सए दराज़

فَاَسْكَنّٰهُ فِي الْاَرْضِ ۖ وَاِنَّا عَلٰى ذَهَابٍۭ بِهٖ لَقٰدِرُوْنَ ۚ ﴿۱۸﴾

तक) बादलों से पानी बरसाते रहे, फिर (जब ज़मीन ठंडी हो गई तो) हमने उस पानीको ज़मीन (की नशेबी जगहों) में ठेहरा दिया (जिससे इब्तिदाई समन्दर वुजूदमें आए) और बेशक हम उसे (बुख़ारात बना कर) उड़ा देने पर भी कुदरत रखते हैं।

فَاَنْشَاْنَا لَكُمْ بِهٖ جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ ۘ لَكُمْ فِيْهَا فَوَاكِهُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۙ ﴿۱۹﴾

19. फिर हमने तुम्हारे लिए उससे (दरजा बदरजा या'नी पहले इब्तिदाई नबातात फिर बड़े पौदे फिर दरख़्त वुजूदमें लाते हुए) खजूर और अँगूर के बाग़ात बना दिए (मज़ीद बर आँ) तुम्हारे लिए ज़मीनमें (और भी) बहुतसे फल और मेवे (पैदा किए) और (अब) तुम उनमें से खाते हो।

وقف لازم

وَشَجَرَةً تَخْرُجُ مِنْ طُوْرِ سَيْنَآءَ تَنْۢبُتُ بِالدُّهْنِ وَصِبْغٍ لِّلْاٰكِلِيْنَ ﴿۲۰﴾

20. और येह दरख़्त (ज़ैतून भी हमने पैदा किया है) जो तूरे सीना से निकलता है (और) तेल और खाने वालोंके लिए सालन ले कर उगता है।

وَاِنَّ لَكُمْ فِي الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۭ نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِيْ بُطُوْنِهَا وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۙ ﴿۲۱﴾

21. और बेशक तुम्हारे लिए चौपायों में (भी) ग़ौर तलब पेहलू हैं, जो कुछ उनके शिकमों में होता है हम तुम्हें उसमें से (बा'ज़ अज्ज़ाको दूध बना कर) पिलाते हैं और तुम्हारे लिए उनमें (और भी) बहुतसे फ़वाइद हैं और तुम उनमें से (बा'ज़ को) खाते (भी) हो।

وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ﴿۲۲﴾

22. और उन पर और कश्तियों पर तुम सवार (भी) किए जाते हो।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۭ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿۲۳﴾

23. और बेशक हमने नूह (عليه السلام) को उनकी क़ौमकी तरफ़ भेजा तो उन्होंने फ़रमाया : ऐ लोगो ! तुम अल्लाहकी इबादत किया करो उसके सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं है तो क्या तुम नहीं डरते ?

فَقَالَ الْمَلَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ

24. तो उनकी क़ौमके सरदार (और वडेरे) जो कुफ़्र कर रहे थे केहने लगे : येह शख़्स महज़ तुम्हारे ही जैसा एक

قَوْمِهٖ مَا هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يُرِيْدُ اَنْ يَّتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ ۗ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً ۚۖ مَّا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِيْٓ اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٤﴾

बशर है (इसके सिवा कुछ नहीं), येह तुम पर (अपनी) फ़ज़ीलतो बरतरी क़ाइम करना चाहता है, और अगर अल्लाह (हिदायत के लिए किसी पयग़म्बर को भेजना) चाहता तो फ़रिश्तों को उतार देता, हमने तो येह बात (कि हमारे जैसा ही एक शख़्स हमारा रसूल बना दिया जाए) अपने अगले आबाओ अजदाद में (कभी) नहीं सुनी।

اِنْ هُوَ اِلَّا رَجُلٌۢ بِهٖ جِنَّةٌ فَتَرَبَّصُوْا بِهٖ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٢٥﴾

25. येह शख़्स तो सिवाए उसके और कुछ नहीं कि उसे दीवानगी (का आ़रिज़ा लाहिक़ हो गया) है सो तुम एक अ़र्से तक उसका इन्तिज़ार करो (देखो आगे किया करता है)।

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ بِمَا كَذَّبُوْنِ ﴿٢٦﴾

26. नूह (عليه السلام) ने अ़र्ज़ किया : ऐ मेरे रब ! मेरी मदद फ़रमा क्यों कि उन्होंने मुझे झुटला दिया है।

فَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ اَنِ اصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا فَاِذَا جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ ۙ فَاسْلُكْ فِيْهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْ ۚ وَلَا تُخَاطِبْنِيْ فِي الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۚ اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ ﴿٢٧﴾

27. फिर हमने उनकी तरफ़ वही भेजी कि तुम हमारी निगरानी में और हमारे हुक्म के मुताबिक़ एक कश्ती बनाओ सो जब हमारा हुक्मे (अ़ज़ाब)आ जाए और तन्नूर (भर कर पानी) उबलने लगे तो तुम उसमें हर क़िस्म के जानवरोंमें से दो दो जोड़े (नरो मादा) बिठा लेना और अपने घरवालों को भी (उसमें सवार कर लेना) सिवाए उन में से उस शख़्स के जिस पर फ़रमाने (अ़ज़ाब) पहले ही से सादिर हो चुका है और मुझसे उन लोगोंके बारे में कुछ अ़र्ज़ भी न करना जिन्होंने (तुम्हारा इन्कारो इस्तेहज़ा की सूरत में) ज़ुल्म किया है वोह (बहर तौर) डुबो दिए जाएंगे।

فَاِذَا اسْتَوَيْتَ اَنْتَ وَمَنْ مَّعَكَ عَلَى الْفُلْكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ نَجّٰىنَا مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٨﴾

28. फिर जब तुम और तुम्हारी संगतवाले (लोग) कश्ती में ठीक तरहसे बैठ जाएं तो केहना (कि) सारी ता'रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जिसने हमें ज़ालिम क़ौमसे नजात बख़्शी।

وَقُلْ رَّبِّ اَنْزِلْنِيْ مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا

29. और अ़र्ज़ करना : ऐ मेरे रब ! मुझे बा बरकत मंज़िल

وَّاَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ﴿٢٩﴾

पर उतार और तू सबसे बेहतर उतारनेवाला है।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ وَّ اِنْ كُنَّا لَمُبْتَلِيْنَ ﴿٣٠﴾

30. बेशक इस (वाक़िए)में (बहुत सी) निशानियां हैं और यक़ीनन हम आज़माइश करनेवाले हैं।

ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ﴿٣١﴾

31. फिर हमने उनके बाद दूसरी क़ौमको पैदा फ़रमाया।

فَاَرْسَلْنَا فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٣٢﴾

32. सो हमने उनमें (भी) उनहीं में से रसूल भेजा कि तुम अल्लाहकी इबादत करो और उसके सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं है, तो क्या तुम नहीं डरते ?

وَقَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ وَاَتْرَفْنٰهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ مَا هٰذَاۤ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يَاْكُلُ مِمَّا تَاْكُلُوْنَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُوْنَ ۙ ﴿٣٣﴾

33. और उनकी क़ौमके (भी वोही) सरदार (और वडेरे) बोल उठे जो कुफ़्र कर रहे थे और आख़िरतकी मुलाक़ातको झुटलाते थे और हमने उन्हें दुन्यवी ज़िन्दगीमें (मालो दौलतकी कसरत के बाइस) आसूदगी (भी) दे रखी थी (लोगों से केहने लगे) कि येह शख़्स तो महज़ तुम्हारे ही जैसा एक बशर है, वोही चीज़ें खाता है जो तुम खाते हो और वोही कुछ पीता है जो तुम पीते हो।

وَلَئِنْ اَطَعْتُمْ بَشَرًا مِّثْلَكُمْ اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ۙ ﴿٣٤﴾

34. और अगर तुमने अपने ही जैसे एक बशरकी इताअ़त कर ली तो फिर तुम ज़रूर ख़सारा उठानेवाले होगे।

اَيَعِدُكُمْ اَنَّكُمْ اِذَا مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا وَّعِظَامًا اَنَّكُمْ مُّخْرَجُوْنَ ۙ ﴿٣٥﴾

35. क्या येह (शख़्स) तुमसे येह वा'दा ह कर रहा है कि जब तुम मर जाओगे और तुम मिट्टी और (बोसीदह) हड्डियां हो जाओगे तो तुम (दोबारा ज़िन्दा हो कर) निकाले जाओगे।

هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لِمَا تُوْعَدُوْنَ ۙ ﴿٣٦﴾

36. बईद (अज़ क़यास) बईद (अज़ वुक़ूअ़) हैं वोह बातें जिनका तुमसे वा'दा किया जा रहा है।

اِنْ هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ﴿٣٧﴾

37. वोह (आख़िरतकी ज़िन्दगी कुछ) नहीं हमारी ज़िन्दगानी तो येही दुनिया है हम (यहीं) मरते और जीते हैं और (बस ख़त्म), हम (दोबारा) नहीं उठाए जाएंगे।

اِنْ هُوَ اِلَّا رَجُلُ ِۨافْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا وَّمَا نَحْنُ لَهٗ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣٨﴾

38. येह तो महज़ ऐसा शख़्स है जिसने अल्लाह पर झूटा बोहतान लगाया है और हम बिल्कुल उस पर ईमान लानेवाले नहीं हैं।

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ بِمَا كَذَّبُوْنِ ﴿٣٩﴾

39. (पयग़म्बरने) अ़र्ज़ किया : ऐ मेरे रब ! मेरी मदद फ़रमा इस सूरते ह़ाल में कि उन्होंने मुझे झुटला दिया है।

قَالَ عَمَّا قَلِيْلٍ لَّيُصْبِحُنَّ نٰدِمِيْنَ ﴿٤٠﴾

40. इर्शाद हुवा थोड़ी ही देर में वोह पशेमां हो कर रेह जाएंगे।

فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنٰهُمْ غُثَآءً ۚ فَبُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤١﴾

41. पस सच्चे वा'दे के मुताबिक़ उन्हें ख़ौफ़नाक आवाज़ने आ पकड़ा सो हमने उन्हें ख़सो ख़ाशाक बना दिया, पस ज़ालिम क़ौमके लिए (हमारी रह़मतसे) दूरी-व-मह़रूमी है।

ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قُرُوْنًا اٰخَرِيْنَ ﴿٤٢﴾

42. फिर हमने उनके बाद (यके बाद दीगरे) दूसरी उम्मतों को पैदा फ़रमाया।

مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ﴿٤٣﴾

43. कोई भी उम्मत अपने वक्ते मुक़र्ररसे न आगे बढ़ सक्ती है और न वोह लोग पीछे हट सक्ते हैं।

ثُمَّ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرَا ۭ كُلَّمَا جَآءَ اُمَّةً رَّسُوْلُهَا كَذَّبُوْهُ فَاَتْبَعْنَا بَعْضَهُمْ بَعْضًا وَّجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ ۚ فَبُعْدًا لِّقَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٤٤﴾

44. फिर हमने पै दर पै अपने रसूलों को भेजा। जब भी किसी उम्मतके पास उसका रसूल आता वोह उसे झुटला देते तो हम (भी) उनमें से बाज़को बा'ज़ के पीछे (हलाक दर हलाक) करते चले गए और हमने उन्हें दास्तानें बना डाला, पस हलाकत हो उन लोगों के लिए जो ईमान नहीं लाते।

ثُمَّ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى وَاَخَاهُ هٰرُوْنَ ۙ بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٤٥﴾

45. फिर हमने मूसा (عليه السلام) और उनके भाई हारून (عليه السلام) को अपनी निशानियां और रौशन दलील दे कर भेजा।

اِلٰى فِرْعَوْنَ وَ مَلَا۟ئِهٖ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا عَالِيْنَ ﴿٤٦﴾

46. फ़िरऔन और उस (की क़ौम) के सरदारों की तरफ़ तो उन्होंने भी तकब्बुरो रऊनतसे काम लिया और वोह भी (बड़े) ज़ालिमो सरकश लोग थे।

فَقَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمُهُمَا لَنَا عٰبِدُوْنَ ﴿٤٧﴾

47. सो उन्होंने (भी येही) कहा कि क्या हम अपने जैसे दो बशरों पर ईमान ले आएं हालांकि उनकी क़ौम के लोग हमारी परस्तिश करते हैं।

فَكَذَّبُوْهُمَا فَكَانُوْا مِنَ الْمُهْلَكِيْنَ ﴿٤٨﴾

48. पस उन्होंने (भी) उन दोनों को झुटला दिया सो वोह भी हलाक किए गए लोगों में से हो गए।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿٤٩﴾

49. और बेशक हमने मूसा (عليه السلام) को किताब अ़ता फ़रमाई ताकि वोह लोग हिदायत पा जाएं।

وَ جَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَ اُمَّهٗٓ اٰيَةً وَّاٰوَيْنٰهُمَآ اِلٰى رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَّمَعِيْنٍ ﴿٥٠﴾

50. और हमने इब्ने मरयम (ईसा عليه السلام) को और उनकी मां को अपनी (ज़बरदस्त) निशानी बनाया और हमने उन दोनोंको एक (ऐसी) बुलंद ज़मीनमें सुकूनत बख़्शी जो ब आसाइशो आराम रेहने के क़ाबिल (भी) थी और वहां आँखोंके (नज़ारे के) लिए बेहते पानी (या'नी नेहरें, आबशारें और चश्मे भी) थे।

ع ١٨ ٣

يٰٓاَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا مِنَ الطَّيِّبٰتِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ؕ اِنِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿٥١﴾

51. ऐ रुसुले (इज़ाम !) तुम पाकीज़ा चीज़ों में से खाया करो (जैसाकि तुम्हारा मा'मूल है) और नेक अ़मल करते रहो, बेशक मैं जो अ़मल भी तुम करते हो उससे खूब वाक़िफ़ हूं।

وَ اِنَّ هٰذِهٖٓ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُوْنِ ﴿٥٢﴾

52. और बेशक येह तुम्हारी उम्मत है (जो ह़क़ीक़तमें) एक ही उम्मत (है) और में तुम्हारा रब हूं सो मुझसे डरा करो।

فَتَقَطَّعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا ؕ كُلُّ حِزْبٍۭ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ﴿٥٣﴾

53. पस उन्होंने अपने (दीनके) अम्रको आपस में इख़्तिलाफ़ करके फ़िर्क़ा फ़िर्क़ा कर डाला, हर फ़िर्क़ेवाले उसी क़दर (दीनके हिस्से) से जो उनके पास है खुश हैं।

فَذَرۡهُمۡ فِیۡ غَمۡرَتِهِمۡ حَتّٰی حِیۡنٍ ﴿۵۴﴾

54. पस आप उनको एक अर्से तक उनके नशए जहालतो ज़लालत (गुमराही) में छोड़े रखिए।

اَیَحۡسَبُوۡنَ اَنَّمَا نُمِدُّهُمۡ بِهٖ مِنۡ مَّالٍ وَّ بَنِیۡنَ ﴿۵۵﴾

55. क्या वोह लोग येह गुमान करते हैं कि हम जो (दुनिया में) मालो औलाद के ज़रीए उनकी मदद कर रहे हैं।

نُسَارِعُ لَهُمۡ فِی الۡخَیۡرٰتِ ؕ بَلۡ لَّا یَشۡعُرُوۡنَ ﴿۵۶﴾

56. तो हम उनके लिए भलाइयों (की फ़राहमी) में जल्दी कर रहे हैं, (ऐसा नहीं) बल्कि उन्हें शऊर ही नहीं है।

اِنَّ الَّذِیۡنَ هُمۡ مِّنۡ خَشۡیَةِ رَبِّهِمۡ مُّشۡفِقُوۡنَ ﴿۵۷﴾

57. बेशक जो लोग अपने रबकी ख़शिय्यत से मुज़्तरिब और लरजां रेहते हैं।

وَ الَّذِیۡنَ هُمۡ بِاٰیٰتِ رَبِّهِمۡ یُؤۡمِنُوۡنَ ﴿۵۸﴾

58. और जो लोग अपने रबकी आयतों पर ईमान रखते हैं।

وَ الَّذِیۡنَ هُمۡ بِرَبِّهِمۡ لَا یُشۡرِکُوۡنَ ﴿۵۹﴾

59. और जो लोग अपने रबके साथ (किसीको) शरीक नहीं ठेहराते।

وَ الَّذِیۡنَ یُؤۡتُوۡنَ مَاۤ اٰتَوۡا وَّ قُلُوۡبُهُمۡ وَجِلَةٌ اَنَّهُمۡ اِلٰی رَبِّهِمۡ رٰجِعُوۡنَ ﴿۶۰﴾

60. और जो लोग (अल्लाहकी राहमें इतना कुछ) देते हैं जितना वोह दे सक्ते हैं और (उसके बा वुजूद) उनके दिल ख़ाइफ़ रेहते हैं कि वोह अपने रबकी तरफ़ पलट कर जानेवाले हैं (कहीं येह ना मक्बूल न हो जाए)।

اُولٰٓئِکَ یُسٰرِعُوۡنَ فِی الۡخَیۡرٰتِ وَ هُمۡ لَهَا سٰبِقُوۡنَ ﴿۶۱﴾

61. येही लोग भलाइयों (के समेटने में) जल्दी कर रहे हैं और वोही उसमें आगे निकल जानेवाले हैं।

وَ لَا نُکَلِّفُ نَفۡسًا اِلَّا وُسۡعَهَا وَ لَدَیۡنَا کِتٰبٌ یَّنۡطِقُ بِالۡحَقِّ وَ هُمۡ لَا یُظۡلَمُوۡنَ ﴿۶۲﴾

62. और हम किसी जानको तक्लीफ़ नहीं देते मगर उसकी इस्ते'दाद के मुताबिक़ और हमारे पास नविश्तए (आ'माल मौजूद) है जो सच सच केह देगा और उन पर जुल्म नहीं किया जाएगा।

بَلۡ قُلُوۡبُهُمۡ فِیۡ غَمۡرَةٍ مِّنۡ هٰذَا

63. बल्कि उनके दिल इस (कुरआन के पैग़ाम) से

وَلَهُمْ أَعْمَالٌ مِّنْ دُونِ ذٰلِكَ هُمْ لَهَا عٰمِلُونَ ﴿٦٣﴾

ग़फ़्लत में (पड़े) हैं और इसके सिवा (भी) उनके कई और (बुरे) आ'माल हैं जिन पर वोह अ़मल पैरा हैं।

حَتّٰٓى إِذَآ أَخَذْنَا مُتْرَفِيهِمْ بِالْعَذَابِ إِذَا هُمْ يَجْـَٔرُونَ ﴿٦٤﴾

64. यहां तक कि जब हम उनके अमीर और आसूदा हाल लोगों को अ़ज़ाब की गिरफ़्त में लेंगे तो उस वक़्त वोह चीख़ उठेंगे।

لَا تَجْـَٔرُوا الْيَوْمَ ۖ إِنَّكُمْ مِّنَّا لَا تُنْصَرُونَ ﴿٦٥﴾

65. (उनसे कहा जाएगा) तुम आज मत चीख़ो, बेशक हमारी तरफ़ से तुम्हारी कोई मदद नहीं की जाएगी।

قَدْ كَانَتْ اٰيٰتِىْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ عَلٰٓى أَعْقَابِكُمْ تَنْكِصُونَ ﴿٦٦﴾

66. बेशक मेरी आयतें तुम पर पढ़ पढ़ कर सुनाई जाती थीं तो तुम एड़ियों के बल उलटे पलट जाया करते थे।

مُسْتَكْبِرِينَ ۖ بِهٖ سٰمِرًا تَهْجُرُونَ ﴿٦٧﴾

67. उससे ग़ुरूरो तकब्बुर करते हूए रात के अँधेरेमें बेहूदा गोई करते थे।

أَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ أَمْ جَآءَهُمْ مَّا لَمْ يَأْتِ اٰبَآءَهُمُ الْأَوَّلِينَ ﴿٦٨﴾

68. सो क्या उन्होंने उस फ़रमाने (इलाही) में ग़ौरो ख़ौज़ नहीं किया या उनके पास कोई ऐसी चीज़ आ गई है जो उनके अगले बापदादा के पास नहीं आई थी।

أَمْ لَمْ يَعْرِفُوا رَسُولَهُمْ فَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُونَ ﴿٦٩﴾

69. या उन्होंने अपने रसूलको नहीं पेहचाना सो (इस लिए) वोह उसके मुन्किर हो गए हैं।

أَمْ يَقُولُونَ بِهٖ جِنَّةٌ ۚ بَلْ جَآءَهُمْ بِالْحَقِّ وَأَكْثَرُهُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُونَ ﴿٧٠﴾

70. या येह केहते हैं कि उस (रसूल ﷺ) को जुनून (लाहिक़) हो गया है (ऐसा हरगिज़ नहीं) बल्कि वोह उनके पास हक़ ले कर तशरीफ़ लाए हैं और उनमें से अक्सर लोग हक़को पसंद नहीं करते।

وَلَوِ اتَّبَعَ الْحَقُّ أَهْوَآءَهُمْ لَفَسَدَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْأَرْضُ وَمَنْ فِيهِنَّ ۚ بَلْ أَتَيْنٰهُمْ بِذِكْرِهِمْ فَهُمْ عَنْ

71. और अगर हक़ (तआ़ला) उनकी ख़्वाहिशात की पैरवी करता तो (सारे) आस्मान और ज़मीन और जो (मख़्लूक़ातो मौजूदात) उनमें हैं सब तबाहो बरबाद हो जाते बल्कि हम उनके पास वोह (क़ुरआन) लाए हैं

ذِكْرِهِمْ مُّعْرِضُونَ ﴿٧١﴾

जिसमें उनकी इज़्ज़तो शरफ़ (और नामवरी का राज़) है सो वोह अपनी इज़्ज़त ही से मुंह फेर रहे हैं।

أَمْ تَسْأَلُهُمْ خَرْجًا فَخَرَاجُ رَبِّكَ خَيْرٌ ۖ وَّهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٧٢﴾

72. क्या आप उनसे (तबलीगे़ रिसालत पर) कुछ उजरत मांगते हैं ? (ऐसा भी नहीं है) आपके तो रबका अज्र (ही बहुत) बेहतर है और वोह सबसे बेहतर रोज़ी रसां है।

وَإِنَّكَ لَتَدْعُوْهُمْ إِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٧٣﴾

73. और बेशक आप तो (उन्ही के भले के लिए) उन्हें सीधी राहकी तरफ़ बुलाते हैं।

وَإِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنٰكِبُوْنَ ﴿٧٤﴾

74. और बेशक जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते (वोह) ज़रूर (सीधी) राह से कतराए रेहते हैं।

وَلَوْ رَحِمْنٰهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِّنْ ضُرٍّ لَّلَجُّوْا فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿٧٥﴾

75. और अगर हम उन पर रह़म फ़रमा दें और जो तक्लीफ़ उन्हें (लाह़िक़) है उसे दूर कर दें तो वोह भटकते हुए अपनी सरकशी में मज़ीद पक्के हो जाएंगे।

وَلَقَدْ اَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوْا لِرَبِّهِمْ وَمَا يَتَضَرَّعُوْنَ ﴿٧٦﴾

76. और बेशक हमने उन्हें अ़ज़ाबमें पकड़ लिया फिर (भी) उन्होंने अपने रब के लिए आ़जिज़ी इख़्तियार न की और न वोह (उसके हुज़ूर गिड़गिड़ाए।

حَتّٰى إِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيْدٍ إِذَا هُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ﴿٧٧﴾

77. यहां तककि जब हम उन पर निहायत ही सख़्त अ़ज़ाब का दरवाज़ा खोल देंगे (तो) उस वक़्त वोह उसमें इन्तिहाई ह़ैरतसे साकितो मायूस (पड़े) रहेंगे।

وَهُوَ الَّذِيْٓ أَنْشَأَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۚ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٨﴾

78. और वोही है जो तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल (व दिमाग) रफ़्ता रफ़्ता वुजूद में लाया (मगर) तुम लोग बहुत ही कम शुक्र अदा करते हो।

وَهُوَ الَّذِيْ ذَرَاَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٧٩﴾

79. और वोही है जिसने तुम्हें रूए ज़मीन पर पैदा कर के फैला दिया और तुम उसी के हुज़ूर जमा' किए जाओगे।

وَهُوَ الَّذِيْ يُحْيٖ وَ يُمِيْتُ وَ لَهُ اخْتِلَافُ الَّيْلِ وَ النَّهَارِ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۸۰﴾

80. और वोही है जो ज़िन्दगी बख़्शता है और मौत देता है और शबो रोज़का गर्दिश करना (भी) उसीके इख़्तियार में है सो क्या तुम समझते नहीं हो ?

بَلْ قَالُوْا مِثْلَ مَا قَالَ الْاَوَّلُوْنَ ﴿۸۱﴾

81. बल्कि येह लोग (भी) उसी तरह्की बातें करते हैं जिस तरह्की अगले (काफ़िर) करते रहे हैं।

قَالُوْۤا ءَاِذَا مِتْنَا وَ كُنَّا تُرَابًا وَّ عِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿۸۲﴾

82. येह केहते हैं कि जब हम मर जाएंगे और हम ख़ाक और (बोसीदा) हड्डियां हो जाएंगे तो क्या हम (फिर ज़िन्दा कर के) उठाए जाएंगे ?

لَقَدْ وُعِدْنَا نَحْنُ وَ اٰبَآؤُنَا هٰذَا مِنْ قَبْلُ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّاۤ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۸۳﴾

83. बेशक हमसे (भी) और हमारे आबाओ अजदाद से (भी) पहले येही वा'दा किया जाता रहा (है), येह (बातें) महज़ पहले लोगों के अफ़्साने हैं।

قُلْ لِّمَنِ الْاَرْضُ وَ مَنْ فِيْهَاۤ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۸۴﴾

84. (उनसे) फ़रमाइए कि ज़मीन और जो कोई उसमें (रेह रहा) है (सब) किसकी मिल्क है, अगर तुम (कुछ) जानते हो ?

سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۸۵﴾

85. वोह फ़ौरन बोल उठेंगे कि (सब कुछ) अल्लाहका है (तो) आप फ़रमाइए : फिर तुम नसीहत क़ुबूल क्यूं नहीं करते।

قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿۸۶﴾

86. (उनसे दरयाफ़्त) फ़रमाइए कि सातों आस्मानोंका और अ़र्शे अ़ज़ीम (या'नी सारी काइनात के इक़्तिदारे आ'ला) का मालिक कौन है ?

سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿۸۷﴾

87. वोह फ़ौरन कहेंगे : येह (सब कुछ) अल्लाहका है (तो) आप फ़रमाइए : फिर तुम डरते क्यों नहीं हो ?

قُلْ مَنْۢ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّ هُوَ يُجِيْرُ وَ لَا يُجَارُ عَلَيْهِ

88. आप (उन से) फ़रमाइए कि वोह कौन है जिसके दस्ते क़ुदरत में हर चीज़की कामिल मिल्किय्यत है और जो पनाह देता है और जिसके ख़िलाफ़ (कोई) पनाह नहीं

اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۸۸﴾

दी जा सक्ती, अगर तुम (कुछ) जानते हो ?

سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ فَاَنّٰى تُسْحَرُوْنَ ﴿۸۹﴾

89. वोह फ़ौरन कहेंगे : येह (सब शानें) अल्लाह ही के लिए हैं (तो) आप फ़रमाएं फिर तुम्हें कहां से (जादू की तरह) फ़रेब दिया जा रहा है?

بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِالْحَقِّ وَ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۹۰﴾

90. बल्कि हमने उन्हें ह़क़ पहुंचा दिया और बेशक वोह झूटे हैं।

مَا اتَّخَذَ اللّٰهُ مِنْ وَّلَدٍ وَّ مَا كَانَ مَعَهٗ مِنْ اِلٰهٍ اِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ اِلٰهٍۭ بِمَا خَلَقَ وَ لَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿۹۱﴾

91. अल्लाहने (अपने लिए) कोई औलाद नहीं बनाई और न ही उसके साथ कोई और ख़ुदा है वरना हर ख़ुदा अपनी अपनी मख़्लूक़को (ज़रूर अलग) ले जाता और यक़ीनन वोह एक दूसरे पर ग़ल्बा ह़ासिल करते (और पूरी काइनातमें फ़साद बपा हो जाता)। अल्लाह उन बातों से पाक है जो वोह बयान करते हैं।

عٰلِمِ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ فَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿۹۲﴾

92. (वोह) पोशीदा और आश्कार (सब चीज़ों) का जाननेवाला है सो वोह उन चीज़ों से बुलंदो बरतर है जिन्हें येह शरीक ठेहराते हैं।

قُلْ رَّبِّ اِمَّا تُرِيَنِّيْ مَا يُوْعَدُوْنَ ﴿۹۳﴾

93. आप (दुआ़) फ़रमाइए कि ऐ मेरे रब ! अगर तू मुझे वोह (अ़ज़ाब) दिखाने लगे जिसका उनसे वा'दा किया जा रहा है।

رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِيْ فِي الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۹۴﴾

94. (तो) ऐ मेरे रब ! मुझे ज़ालिम क़ौममें शामिल न फ़रमाना।

وَ اِنَّا عَلٰۤى اَنْ نُّرِيَكَ مَا نَعِدُهُمْ لَقٰدِرُوْنَ ﴿۹۵﴾

95. और बेशक हम इस बात पर ज़रूर क़ादिर हैं कि हम आपको वोह (अ़ज़ाब) दिखा दें जिसका हम उनसे वा'दा कर रहे हैं।

اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ السَّيِّئَةَ ؕ

96. आप बुराईको ऐसे तरीक़े से दफ़ा' किया करें जो

نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَصِفُوْنَ ﴿٩٦﴾

सबसे बेहतर हो हम उन (बातों) को खूब जानते हैं जो येह बयान करते हैं।

وَقُلْ رَّبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيْنِ ﴿٩٧﴾

97. और आप (दुआ) फ़रमाइए : ऐ मेरे रब ! मैंशैतानोंके वस्वसों से तेरी पनाह मांगता हूं।

وَاَعُوْذُ بِكَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ ﴿٩٨﴾

98. और ऐ मेरे रब ! मैं उस बात से (भी) तेरी पनाह मांगता हूं कि वोह मेरे पास आएं।

حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُوْنِ ﴿٩٩﴾

99. यहां तककि जब उनमें से किसीको मौत आ जाएगी (तो) वोह कहेगा : ऐ मेरे रब ! मुझे (दुनिया में) वापस भेज दे।

لَعَلِّيْٓ اَعْمَلُ صَالِحًا فِيْمَا تَرَكْتُ كَلَّا ؕ اِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَآئِلُهَا ؕ وَمِنْ وَّرَآئِهِمْ بَرْزَخٌ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿١٠٠﴾

100. ताकि मैं उस (दुनिया) में कुछ नेक अ़मल कर लूं जिसे मैं छोड़ आया हूं। हरगिज़ नहीं, येह वोह बात है जिसे वोह (बतौरे ह़सरत) केह रहा होगा, और उनके आगे उस दिन तक एक परदा (हाइल) है (जिस दिन) वोह (क़ब्रों से) उठाए जाएंगे।

فَاِذَا نُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَلَآ اَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَّلَا يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿١٠١﴾

101. फिर जब सूर फूंका जाएगा तो उनके दरमियान उस दिन न रिश्ते (बाक़ी) रहेंगे और न वोह एक दूसरेका ह़ाल पूछ सकेंगे।

فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٠٢﴾

102. पस जिनके पलड़े (ज़ियादह आ'मालके बाइ़स) भारी होंगे तो वोही लोग कामयाबो कामरान होंगे।

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فِىْ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ ﴿١٠٣﴾

103. और जिनके पलड़े (आ'मालका वज़न न होनेके बाइ़स) हलके होंगे तो येही लोग हैं जिन्होंने अपने आपको नुक्सान पहुंचाया वोह हमेशा दोज़ख़में रेहनेवाले हैं।

تَلْفَحُ وُجُوْهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيْهَا كٰلِحُوْنَ ﴿١٠٤﴾

104. उनके चेहरोंको आग झुलस देगी और वोह उसमें दांत निकले बिगड़े हूए मुंहके साथ पड़े होंगे।

أَلَمْ تَكُنْ ءَايَٰتِى تُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فَكُنتُم بِهَا تُكَذِّبُونَ ﴿١٠٥﴾

105. (उनसे कहा जाएगा :) क्या तुम पर मेरी आयतें पढ़ पढ़ कर नहीं सुनाई जाती थीं फिर तुम उन्हें झुटलाया करते थे।

قَالُوا۟ رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَآلِّينَ ﴿١٠٦﴾

106. वोह कहेंगे : ऐ हमारे रब ! हम पर हमारी बद बख़्ती ग़ालिब आ गई थी और हम यक़ीनन गुमराह क़ौम थे।

رَبَّنَآ أَخْرِجْنَا مِنْهَا فَإِنْ عُدْنَا فَإِنَّا ظَٰلِمُونَ ﴿١٠٧﴾

107. ऐ हमारे रब ! तू हमें यहांसे निकाल दे फिर अगर हम (उसी गुमराही का) इआ़दह करें तो बेशक हम ज़ालिम होंगे।

قَالَ ٱخْسَـُٔوا۟ فِيهَا وَلَا تُكَلِّمُونِ ﴿١٠٨﴾

108. इर्शाद हुवा : (अब) उसीमें ज़िल्लत के साथ पड़े रहो और मुझसे बात न करो।

إِنَّهُۥ كَانَ فَرِيقٌ مِّنْ عِبَادِى يَقُولُونَ رَبَّنَآ ءَامَنَّا فَٱغْفِرْ لَنَا وَٱرْحَمْنَا وَأَنتَ خَيْرُ ٱلرَّٰحِمِينَ ﴿١٠٩﴾

109. बेशक मेरे बन्दों में से एक तब्क़ा ऐसा भी था जो (मेरे हुज़ूर) अ़र्ज़ किया करते थे : ऐ हमारे रब ! हम ईमान ले आए हैं पस तू हमें बख़्श दे और हम पर रह़म फ़रमा और तू (ही) सबसे बेहतर रह़म फ़रमानेवाला है।

فَٱتَّخَذْتُمُوهُمْ سِخْرِيًّا حَتَّىٰٓ أَنسَوْكُمْ ذِكْرِى وَكُنتُم مِّنْهُمْ تَضْحَكُونَ ﴿١١٠﴾

110. तो तुम उनका तमस्ख़ुर किया करते थे यहां तक कि उन्होंने तुम्हें मेरी याद भी भुला दी और तुम (सिर्फ़) उनकी तज़्ह़ीक ही करते रेहते थे।

إِنِّى جَزَيْتُهُمُ ٱلْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوٓا۟ أَنَّهُمْ هُمُ ٱلْفَآئِزُونَ ﴿١١١﴾

111. बेशक आज मैंने उन्हें उनके सब्रका जो वोह करते रहे (येह) सिला अ़ता फ़रमाया है कि वोह कामयाब हो गए हैं।

قَٰلَ كَمْ لَبِثْتُمْ فِى ٱلْأَرْضِ عَدَدَ سِنِينَ ﴿١١٢﴾

112. इर्शाद होगा कि तुम ज़मीनमें बरसोंके शुमार से कितनी मुद्दत ठेहरे रहे (हो) ?

قَالُوا۟ لَبِثْنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَسْـَٔلِ ٱلْعَآدِّينَ ﴿١١٣﴾

113. वोह कहेंगे : हम एक दिन या दिनका कुछ हिस्सा ठेहरे (होंगे) आप आ'दादो शुमार करनेवालों से पूछ लें।

قٰلَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا لَّوْ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١١٤﴾

114. इर्शाद होगा तुम (वहां) नहीं ठेहरे मगर बहुत ही थोड़ा अ़र्सा काश! तुम (येह बात वहीं) जानते) होते।

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ﴿١١٥﴾

115. सो किया तुमने येह ख़याल कर लिया था कि हमने तुम्हें बेकार (व बे मक़्सद) पैदा किया है और येह कि तुम हमारी तरफ़ लौट कर नहीं आओगे।

فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ﴿١١٦﴾

116. पस अल्लाह जो बादशाहे ह़क़ीक़ी है बुलंदो बरतर है उसके सिवा कोई मा'बूद नहीं बुज़ुर्गी और इ़ज़्ज़तवाले अ़र्श (इक़्तिदार) का (वोही) मालिक है।

وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۙ لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ ۙ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۗ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿١١٧﴾

117. और जो शख़्स अल्लाहके साथ किसी और मा'बूद की परस्तिश करता है उसके पास उसकी कोई सनद नहीं है सो उसका हिसाब उसके रब ही के पास है। बेशक काफ़िर लोग फ़लाह नहीं पाएंगे।

وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿١١٨﴾

118. और आप अ़र्ज़ कीजिए : ऐ मेरे रब ! तू बख़्श दे और रह़म फ़रमा और तू (ही) सबसे बेहतर रह़म फ़रमानेवाला है।

आयातुहा 64 | 24 सूरतुन नूरि म-दनिय्यतुन 102 | रुकूआ़तुहा 9

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

سُوْرَةٌ اَنْزَلْنٰهَا وَفَرَضْنٰهَا وَاَنْزَلْنَا فِيْهَاۤ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ لَّعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿١﴾

1. (येह) एक (अ़ज़ीम) सूरत है जिसे हमने उतारा है और हमने इस (के अह़्काम) को फ़र्ज़ कर दिया है और हमने इसमें वाज़ेह़ आयतें नाज़िल फ़रमाई हैं ताकि तुम नसीह़त ह़ासिल करो।

اَلزَّانِيَةُ وَالزَّانِيْ فَاجْلِدُوْا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ ۪ وَّلَا

2. बदकार औ़रत और बदकार मर्द (अगर ग़ैर शादी शुदह हों) तो उन दोनों में से हर एक को (शराइते ह़द के साथ

تَأْخُذْكُمْ بِهِمَا رَأْفَةٌ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ إِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ وَلْيَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَآئِفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢﴾

जुर्मे ज़िनाके साबित हो जाने पर) सौ (सौ) कोड़े मारो (जब कि शादी शुदह मर्दो औ़रत की बदकारी पर सज़ा रज्म है और येह सज़ाए मौत है) और तुम्हें उन दोनों पर (दीनके हुक्मके इज्राअ) में ज़रा तरस नहीं आना चाहिए अगर तुम अल्लाह पर और आख़िरतके दिन पर ईमान रखते हो, और चाहिए कि उन दोनोंकी सज़ा (के मौक़े') पर मुसलमानोंकी (एक अच्छी ख़ासी) जमाअ़त मौजूद हो।

اَلزَّانِيْ لَا يَنْكِحُ إِلَّا زَانِيَةً أَوْ مُشْرِكَةً ۫ وَّ الزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَآ إِلَّا زَانٍ أَوْ مُشْرِكٌ ۚ وَ حُرِّمَ ذٰلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣﴾

3. बदकार मर्द सिवाए बदकार औ़रत या मुशरिक औ़रतके (किसी पाकीज़ा औ़रतसे) निकाह़ (करना पसंद) नहीं करता और बदकार औ़रत (भी) सिवाए बदकार मर्द या मुशरिक के (किसी सालेह़ शख़्ससे) निकाह़ (करना पसंद) नहीं करती, और येह (फ़े'ले ज़िना) मुसलमानों पर ह़राम कर दिया गया है।

وَ الَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَأْتُوْا بِأَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ فَاجْلِدُوْهُمْ ثَمٰنِيْنَ جَلْدَةً وَّ لَا تَقْبَلُوْا لَهُمْ شَهَادَةً أَبَدًا ۚ وَ أُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٤﴾

4. और जो लोग पाकदामन औ़रतों पर (बदकारी की) तोहमत लगाएं फिर चार गवाह पेश न कर सकें तो तुम उन्हें (सज़ाए क़ज़फ़ के तौर पर) अस्सी कोड़े लगाओ और कभी भी उनकी गवाही क़ुबूल न करो, और येही लोग बदकार हैं।

إِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَ أَصْلَحُوْا ۚ فَإِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٥﴾

5. सिवाए उनके जिन्होंने इस (तोहमत लगाने) के बाद तौबा कर ली और (अपनी) इस्लाह़ कर ली, तो बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान है (उनका शुमार फ़ासिक़ों में नहीं होगा मगर उससे हद्दे क़ज़फ़ मुआ़फ़ नहीं होगी)।

وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ أَزْوَاجَهُمْ وَ لَمْ يَكُنْ لَّهُمْ شُهَدَآءُ إِلَّا أَنْفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ أَحَدِهِمْ أَرْبَعُ شَهٰدٰتٍ

6. और जो लोग अपनी बीवियों पर (बदकारी की) तोहमत लगाएं और उनके पास सिवाए अपनी ज़ात के कोई गवाह न हों तो ऐसे किसी भी एक शख़्स की गवाही येह है कि (वोह ख़ुद) चार मर्तबा अल्लाहकी क़सम

بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝٦

खा कर गवाही दे कि वोह (इल्ज़ाम लगानेमें) सच्चा है।

وَالْخَامِسَةُ اَنَّ لَعْنَتَ اللّٰهِ عَلَيْهِ اِنْ كَانَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝٧

7. और पांचवीं मर्तबा येह (कहे) कि उस पर अल्लाहकी ला'नत हो अगर वोह झूटा हो।

وَيَدْرَؤُا عَنْهَا الْعَذَابَ اَنْ تَشْهَدَ اَرْبَعَ شَهٰدٰتٍۭ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝٨

8. और (इसी तरह) येह बात उस (औरत) से (भी) सज़ा को टाल सक्ती है कि वोह चार मर्तबा अल्लाहकी क़सम खा कर (खुद गवाही दे कि वोह मर्द इस तोहमत के लगाने में) झूटा है।

وَالْخَامِسَةَ اَنَّ غَضَبَ اللّٰهِ عَلَيْهَآ اِنْ كَانَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝٩

9. और पांचवीं मर्तबा येह (कहे) कि उस पर (या'नी मुझ पर) अल्लाहका ग़ज़ब हो अगर येह (मर्द इस इल्ज़ाम लगाने में) सच्चा हो।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ حَكِيْمٌ ۝١٠ ع

10. और अगर तुम पर अल्लाहका फ़ज़्ल और उसकी रहमत न होती (तो तुम ऐसे हालातमें ज़ियादह परेशान होते) और बेशक अल्लाह बड़ा ही तौबा क़ुबूल फ़रमानेवाला बड़ी हिक्मतवाला है।

اِنَّ الَّذِيْنَ جَآءُوْ بِالْاِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنْكُمْ ۭ لَا تَحْسَبُوْهُ شَرًّا لَّكُمْ ۭ بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۭ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ مَّا اكْتَسَبَ مِنَ الْاِثْمِ ۚ وَالَّذِيْ تَوَلّٰى كِبْرَهٗ مِنْهُمْ لَهٗ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝١١

11. बेशक जिन लोगोंने (आइशा सिद्दीक़ा तैयबा ताहेरा رضی اللہ عنہا पर) बोहतान लगाया था (वोह भी) तुम ही में से एक जमात थी, तुम इस (बोहतान के वाकये) को अपने हक़ में बुरा मत समझो बल्कि वोह तुम्हारे हक में बेहतर (हो गया) है, ★ उनमें से हर एकके लिए इतनाही गुनाह है जितना उसने कमाया, और उनमें से जिसने उस (बोहतान) में सब से ज़ियादह हिस्सा लिया इस के लिए जबरदस्त अज़ाब है।

لَوْلَآ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بِاَنْفُسِهِمْ خَيْرًا ۙ وَّقَالُوْا هٰذَآ اِفْكٌ مُّبِيْنٌ ۝١٢

12. ऐसा क्यूं न हुवा कि जब तुमने इस (बोहतान) को सुना था तो मोमिन मर्द और मोमिन औरतें अपनों के बारेमें नेक गुमान कर लेते और (येह) केह देते कि येह खुला (झूट पर मब्नी) बोहतान है।

★ (क्योंकि तुम्हें इसी हवालेसे अहकामे शरीअत मिल गए और आइशा सिद्दीका तैयबा ताहेराह رضی اللہ عنہا की पाक दामनीका गवाह खुद अल्लाह बन गया जिससे तुम्हें उनकी शानका पता चल गया)

لَوْلَا جَآءُوْ عَلَيْهِ بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ ۚ فَاِذْ لَمْ يَاْتُوْا بِالشُّهَدَآءِ فَاُولٰٓئِكَ عِنْدَ اللّٰهِ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ﴿١٣﴾

13. येह (इफतिरा पर्दाज़ लोग) इस(तूफान) पर चार गवाह क्यूं न लाए, फिर जब वोह गवाह नहीं ला सक्ते तो येही लोग अल्लाहके नजदीक झुटे हैं।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِىْ مَآ اَفَضْتُمْ فِيْهِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٤﴾

14. और अगर तुम पर दुनिया ओ आख़िरत में अल्लाहका फ़जल और उसकी रहमत न होती तो जिस (तोहमत के) चर्चेमें तुम पड़ गऐ हो उस पर तुम्हें जबरदस्त अज़ाब पहोंचता।

اِذْ تَلَقَّوْنَهٗ بِاَلْسِنَتِكُمْ وَتَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِكُمْ مَّا لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ وَّتَحْسَبُوْنَهٗ هَيِّنًا ۖ وَّهُوَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمٌ ﴿١٥﴾

15. जब तुम इस (बात) को (एक दूसरे से सुन कर) अपनी जबानों पर लाते रहे और अपने मुंहसे वोह कुछ केहते रहे जिसका (ख़ुद) तुम्हें कोइ इल्म ही न था और उस (चर्चे) को मा'मूली बात ख़यालकर रहे थे, हालांके वोह अल्लाहके हुजूर बडी (जसारत हो रही) थी।

وَلَوْلَآ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ قُلْتُمْ مَّا يَكُوْنُ لَنَآ اَنْ نَّتَكَلَّمَ بِهٰذَا ۖ سُبْحٰنَكَ هٰذَا بُهْتَانٌ عَظِيْمٌ ﴿١٦﴾

16. और जब तुमने येह (बोहतान) सुना था तो तुमने (उसी वक़्त) येह क्यों न केह दिया के हमारे लिए येह (जाईज़ ही) नहीं के हम उसे जबान पर ले आऐं (बल्कि तुम येह केहते कि ऐ अल्लाह !) तू पाक है (इस बातसे के ऐसी औरतको अपने हबीबे मुकर्रम ﷺ की महबूब ज़ौजा बना दे) येह बहुत बड़ा बोहतान है।

يَعِظُكُمُ اللّٰهُ اَنْ تَعُوْدُوْا لِمِثْلِهٖٓ اَبَدًا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٧﴾

17. अल्लाह तुमको नसीहत फ़रमाता है कि फिर कभी भी ऐसी बात (उम्र भर) न करना अगर तुम अह्ले ईमान हो।

وَيُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١٨﴾

18. और अल्लाह तुम्हारे लिए आयतों को वाज़ेह तौर पर बयान फ़रमाता है, और अल्लाह खूब जानने वाला बड़ी हिक्मतवाला है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِيْعَ الْفَاحِشَةُ فِى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَهُمْ

19. बेशक जो लोग इस बातको पसंद करते हैं कि मुसलमानों में बेहयाई फैले उनके लिए दुनिया और

عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ۙ فِى الدُّنۡيَا وَالۡاٰخِرَةِ ؕ وَاللّٰهُ يَعۡلَمُ وَاَنۡتُمۡ لَا تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۱۹﴾

आख़िरत में दर्दनाक अ़ज़ाब है, और अल्लाह (ऐसे लोगोंके अ़ज़ाइमको) जानता है और तुम नहीं जानते।

وَلَوۡلَا فَضۡلُ اللّٰهِ عَلَيۡكُمۡ وَرَحۡمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ رَءُوۡفٌ رَّحِيۡمٌ ﴿۲۰﴾ ع

النصف ع ۲ / ۸

20. और अगर तुम पर (इस रसूले मुकर्रम ﷺ के सदक़ेमें) अल्लाहका फ़ज़ल और उसकी रह्मत न होती तो (तुम भी पेहली उम्मतों की तरह तबाह कर दिए जाते) मगर अल्लाह बडा शफ़ीक़ बड़ा रहम फ़रमाने वाला है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تَتَّبِعُوۡا خُطُوٰتِ الشَّيۡطٰنِ ؕ وَمَنۡ يَّتَّبِعۡ خُطُوٰتِ الشَّيۡطٰنِ فَاِنَّهٗ يَاۡمُرُ بِالۡفَحۡشَآءِ وَالۡمُنۡكَرِ ؕ وَلَوۡلَا فَضۡلُ اللّٰهِ عَلَيۡكُمۡ وَرَحۡمَتُهٗ مَا زَكٰى مِنۡكُمۡ مِّنۡ اَحَدٍ اَبَدًا ۙ وَّلٰـكِنَّ اللّٰهَ يُزَكِّىۡ مَنۡ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيۡعٌ عَلِيۡمٌ ﴿۲۱﴾

21. ऐ ईमान वालो ! शैतानके रास्तों पर न चलो, और जो शख़्स शैतानके रास्तों पर चलता है तो वोह यक़ीनन बेहयाई और बुरे कामों (के फरोग) का हुक्म देता है, और अगर तुम पर अल्लाहका फजल और उसकी रहमत न होती तो तुम में से कोई शख़्स भी कभी (इस गुनाहे तोहमतके दाग़ से) पाक न हो सक्ता लेकिन अल्लाह जिसे चाहता है पाक फ़रमा देता है, और अल्लाह खूब सुननेवाला जाननेवाला है।

وَلَا يَاۡتَلِ اُولُوا الۡفَضۡلِ مِنۡكُمۡ وَالسَّعَةِ اَنۡ يُّؤۡتُوۡۤا اُولِى الۡقُرۡبٰى وَالۡمَسٰكِيۡنَ وَالۡمُهٰجِرِيۡنَ فِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ ۖ وَلۡيَـعۡفُوۡا وَلۡيَـصۡفَحُوۡا ؕ اَلَا تُحِبُّوۡنَ اَنۡ يَّغۡفِرَ اللّٰهُ لَـكُمۡ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿۲۲﴾

22. और तुममें से (दीनी) बुज़ुर्गीवाले और (दुन्यवी) कशाइशवाले (अब) इस बातकी क़सम न खाएं कि वोह (इस बोहतान के जुर्ममें शरीक) रिश्तेदारों और मोहताजों और अल्लाहकी राह में हिजरत करने वालोंको (माली इम्दाद न) देंगे उन्हें चाहिए कि(उनका क़ुसूर) मुआफ कर दें और (उनकी गल्ती से) दरगुजर करें, क्या तुम इस बातको पसंद नहीं करते के अल्लाह तुम्हें बख्श दे, और अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला महरबान है।

اِنَّ الَّذِيۡنَ يَرۡمُوۡنَ الۡمُحۡصَنٰتِ الۡغٰفِلٰتِ الۡمُؤۡمِنٰتِ لُعِنُوۡا فِى الدُّنۡيَا

23. बेशक जो लोग उन पारसा मोमिन औरतों पर जो (बुराईके तसव्वूर से भी) बेख़बर और ना आशना हैं (ऐसी) तोहमत लगाते हैं वोह दुनिया और आख़िरत

وَالْاٰخِرَةِ ۪ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٣﴾

(दोनों जहानों) में मलऊन हैं और उनके लिए जबरदस्त अज़ाब है।

يَّوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ اَلْسِنَتُهُمْ وَ اَيْدِيْهِمْ وَ اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٤﴾

24. जिस दिन (खुद) उनकी जबानें और उनके हाथ और उनके पाऊं उन्ही के खिलाफ गवाही देंगे के जो कुछ वोह करते रहे थे।

يَوْمَئِذٍ يُّوَفِّيْهِمُ اللّٰهُ دِيْنَهُمُ الْحَقَّ وَيَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِيْنُ ﴿٢٥﴾

25.उस दिन अल्लाह उन्हें उन (के आ'माल) की पूरी पूरी जज़ा जिसके वोह सही हक़दार हैं दे देगा और वोह जान लेंगे के अल्लाह (खूद भी) हक़ है (और हक़ को) ज़ाहिर फ़रमाने वाला (भी) है।

اَلْخَبِيْثٰتُ لِلْخَبِيْثِيْنَ وَالْخَبِيْثُوْنَ لِلْخَبِيْثٰتِ ۚ وَ الطَّيِّبٰتُ لِلطَّيِّبِيْنَ وَ الطَّيِّبُوْنَ لِلطَّيِّبٰتِ ۚ اُولٰٓئِكَ مُبَرَّءُوْنَ مِمَّا يَقُوْلُوْنَ ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٢٦﴾

26. नापाक औरतें नापाक मर्दों के लिए (मख़्सूस) हैं और पलीद मर्द पलीद औरतों के लिए हैं, और (इसी तरह) पाको तैयब औरतें पाकीज़ा मर्दों के लिए (मख़्सूस) हैं और पाको तैयब मर्द पाकीज़ा औरतों के लिए हैं (सो तुम रसूलुल्लाह ﷺ की पाकीज़गी व तहारत को देख कर खूद सोच लेते के अल्लाहने उन के लिए ज़ौजाभी किस कदर पाकीजा-व-तैयब बनाई होगी), येह (पाकीजाह लोग) उन (तोहमतों) से कु ल्लिय्यतन बरी हैं जो येह (बदजुबान) लोग केह रहे हैं, उनके लिए (तो) बख्शाईश और इज्जतो बुजुर्गीवाली अता (मुकद्दर हो चुकी) है (तुम उनकी शान में जबानदराजी करके क्यूं अपना मुंह काला और अपनी आखि़रत तबाहो बरबाद करते हो)।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ بُيُوْتِكُمْ حَتّٰى تَسْتَاْنِسُوْا وَتُسَلِّمُوْا عَلٰٓى اَهْلِهَا ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٧﴾

27. ऐ ईमान वालो ! अपने घरों के सिवा दूसरे घरों में दाखिल न हुआ करो, यहां तक कि तुम उनसे इजाज़त लेलो और उनके रेहनेवालों को (दाखि़ल होते ही) सलाम कहा करो येह तुम्हारे लिए बेहतर (नसीहत) है ताकि तुम (उसकी हिक्मतों में) ग़ौरो फ़िक्र करो।

فَإِن لَّمْ تَجِدُوا فِيهَا أَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوهَا حَتَّىٰ يُؤْذَنَ لَكُمْ ۖ وَإِن قِيلَ لَكُمُ ارْجِعُوا فَارْجِعُوا ۖ هُوَ أَزْكَىٰ لَكُمْ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿٢٨﴾

28. फिर अगर तुम उन (घरों) में किसी शख़्सको मौजूद न पाओ तो तुम उनके अंदर मत जाया करो यहां तक कि तुम्हें (इस बातकी) इजाज़त दी जाए और अगर तुमसे कहा जाऐ के वापस चले जाओ तो तुम वापस पलट जाया करो, येह तुम्हारे हक़में बड़ी पाकीज़ा बात है, और अल्लाह उन कामों से जो तुम करते हो खूब आगाह है।

لَّيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَن تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ مَسْكُونَةٍ فِيهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ ﴿٢٩﴾

29. उसमें तुम पर गुनाह नहीं कि तुम उन मकानात (व इमारात)में जो किसीकी मुस्तक़िल रहाइशगाह नहीं हैं (मसलन होटल, सराए और मुसाफ़िर खाने वगैरा में बगैर इजाज़त के) चले जाओ (के) उनमें तुम्हें फाइदाह उठानेका हक (हासिल) है, और अल्लाह उन (सब बातों) को जानता है जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो।

قُل لِّلْمُؤْمِنِينَ يَغُضُّوا مِنْ أَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوا فُرُوجَهُمْ ۚ ذَٰلِكَ أَزْكَىٰ لَهُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا يَصْنَعُونَ ﴿٣٠﴾

30. आप मोमिन मर्दोंसे फ़रमा दें कि वोह अपनी निगाहें नीची रखा करें और अपनी शर्मगाहोंकी हिफ़ाज़त किया करें, येह उनके लिए बड़ी पाकीजा बात है। बेशक अल्लाह उन कामों से खूब आगाह है जो येह अंजाम दे रहे हैं।

وَقُل لِّلْمُؤْمِنَاتِ يَغْضُضْنَ مِنْ أَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوجَهُنَّ وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا ۖ وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلَىٰ جُيُوبِهِنَّ ۖ وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا لِبُعُولَتِهِنَّ أَوْ آبَائِهِنَّ أَوْ آبَاءِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ أَبْنَائِهِنَّ أَوْ أَبْنَاءِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنِي إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنِي أَخَوَاتِهِنَّ أَوْ

31. और आप मोमिन औरतों से फ़रमा दें के वोह (भी) अपनी निगाहें नीचीं रखा करें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त किया करें और अपनी आराइशो ज़ेबाईश को ज़ाहिर न किया करें सिवाए(उसी हिस्से)के जो इसमें से खुद ज़ाहिर होता है और वोह अपने सरों पर औढे हुऐ दूपट्टे (और चादरें) अपने गिरेबानों और सीनों पर (भी) डाले रहा करें और वोह अपने बनाव सिंगार को (किसी पर) ज़ाहिर न किया करें सिवाए अपने शौहरों के या अपने बापदादा या अपने शौहरों के बापदादा के या अपने बेटों या शौहरों के बेटों के या अपने भाईयों या अपने भतीजों या अपने भांजोंके या अपनी (हम मज़हब, मुसलमान)

نِسَآئِهِنَّ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُنَّ
اَوِ التّٰبِعِيْنَ غَيْرِ اُولِي الْاِرْبَةِ مِنَ
الرِّجَالِ اَوِ الطِّفْلِ الَّذِيْنَ لَمْ
يَظْهَرُوْا عَلٰى عَوْرٰتِ النِّسَآءِ ۖ وَلَا
يَضْرِبْنَ بِاَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا
يُخْفِيْنَ مِنْ زِيْنَتِهِنَّ ؕ وَتُوْبُوْٓا
اِلَى اللّٰهِ جَمِيْعًا اَيُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ
لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۳۱﴾

औरतों या अपनी ममलूका बांदियों के या मर्दों में से वोह ख़िदमतगार जो ख़्वाहिशो शहवत से खाली हों या वोह बच्चे जो (कम सिनीके बाइस अभी) औ़रतोंकी परदे वाली चीज़ोंसे आगाह नहीं हूऐ (येह भी मुस्तस्नना हैं) और न (चलते हूऐ) अपने पाऊं (ज़मीन पर इस तरह) मारा करें कि (पैरोंकी झनकार से) उनका वोह सिंगार मा' लूम हो जाऐ जिसे वोह (हुक्मे शरीअ़तसे)पौशीदह किए हूए हैं, और तुम सबके सब अल्लाहके हुजूर तौबा करो ऐ मोमिनो ! ताकि तुम (उन अह्काम पर अमल पैरा हो कर) फ़लाह पा जाओ।

وَاَنْكِحُوا الْاَيَامٰى مِنْكُمْ وَ
الصّٰلِحِيْنَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَاِمَآئِكُمْ ؕ
اِنْ يَّكُوْنُوْا فُقَرَآءَ يُغْنِهِمُ اللّٰهُ مِنْ
فَضْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿۳۲﴾

32. और तुम अपने मर्दों और औरतों में से उनका निकाह् कर दिया करो जो (उम्रे निकाह के बा वजूद) बगैर अजूदवाजी ज़िन्दगी के (रेह रहे) हों और अपने बा सलाहियत गुलामों और बांदियों का भी (निकाह कर दिया करो), अगर वोह मोहताज होंगे (तो) अल्लाह अपने फ़ज़्लसे उन्हें ग़नी कर देगा, और अल्लाह बडी वुस्अत वाला बड़े इल्मवाला है।

وَلْيَسْتَعْفِفِ الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ
نِكَاحًا حَتّٰى يُغْنِيَهُمُ اللّٰهُ مِنْ
فَضْلِهٖ ؕ وَالَّذِيْنَ يَبْتَغُوْنَ الْكِتٰبَ
مِمَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ فَكَاتِبُوْهُمْ اِنْ
عَلِمْتُمْ فِيْهِمْ خَيْرًا ۖ وَّاٰتُوْهُمْ مِّنْ
مَّالِ اللّٰهِ الَّذِيْٓ اٰتٰىكُمْ ؕ وَلَا تُكْرِهُوْا
فَتَيٰتِكُمْ عَلَى الْبِغَآءِ اِنْ اَرَدْنَ
تَحَصُّنًا لِّتَبْتَغُوْا عَرَضَ الْحَيٰوةِ

33. और ऐसे लोगोंको पाकदामनी इख़्तेयार करना चाहिऐ जो निकाह (की इस्तेताअत) नहीं पाते यहां तकके अल्लाह उन्हें अपने फजल से गनी फ़रमा दे, और तुम्हारे जेरे दस्त (गुलामों और बांदियों) में से जो मकातिब (कुछ माल कमा कर देनेकी शर्त पर आज़ाद) होना चाहें तो उन्हें मकातिब (मजकूरा शर्त पर आजाद) कर दो अगर तुम उनमें भलाई जानते हो, और तुम (खुद भी) उन्हें अल्लाह के माल में से (आज़ाद होने के लिए) दे दो जो उसने तुम्हें अ़ता फ़रमाया है, और तुम अपनी बांदियोंको दुन्यवी ज़िन्दगीका फाइदा हासिल करने के लिए बदकारी पर मजबूर न करो जबकि वोह पाकदामन (या हिफ़ाज़ते

الدُّنْيَا ۚ وَمَنْ يُّكْرِهْهُّنَّ فَإِنَّ اللّٰهَ مِنْ بَعْدِ اِكْرَاهِهِنَّ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣٣﴾ وَلَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ وَّ مَثَلًا مِّنَ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٣٤﴾ اَللّٰهُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ مَثَلُ نُوْرِهٖ كَمِشْكٰوةٍ فِيْهَا مِصْبَاحٌ ؕ اَلْمِصْبَاحُ فِيْ زُجَاجَةٍ ؕ اَلزُّجَاجَةُ كَاَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ يُّوْقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ مُّبٰرَكَةٍ زَيْتُوْنَةٍ لَّا شَرْقِيَّةٍ وَّلَا غَرْبِيَّةٍ ۙ يَّكَادُ زَيْتُهَا يُضِيْٓءُ وَلَوْ لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ ؕ نُوْرٌ عَلٰى نُوْرٍ ؕ يَهْدِى اللّٰهُ لِنُوْرِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٣٥﴾

निकाह् में) रेहना चाहती हैं, और जो शख़्स उन्हें मजबूर करेगा तो अल्लाह उनके मजबूर हो जाने के बाद (भी) बड़ा बख़्शनेवाला महरबान है।

34. और बेशक हमने तुम्हारी तरफ़ वाजेह और रौशन आयतें नाज़िल फ़रमाई हैं और कुछ उन लोगों की मिसालें (या'नी क़िस्सए आइशा की तरह किस्सए मरयम और क़िस्सए यूसुफ़) जो तुमसे पहले गुजर चुके हैं और (येह) परहेज़गारों के लिए नसीहत है।

35. अल्लाह आस्मानों और ज़मीन का नूर है उसके नूरकी मिसाल (जो नूरे मुहंमदी ﷺ की शक्ल में दुनिया में रौशन है) उस ताक़ (नुमा सीनए अक़्दस) जैसी है जिस में चिरागे़ (नुबुवत रौशन) है ; (वोह) चिराग, फ़ानूस (क़ल्बे मुहंमदी ﷺ) में रखा है। (येह) फानूस (नूरे इलाही के परतव से इस कदर मुनव्वर है) गोया एक दरख़्शन्दा सितारा है (येह चिरागे नुबुवत) जो ज़ैतून के मुबारक दरख़्त से (या'नी आलमे कुद्स के बा बरकत राब्तए वह़ी से या अंबियाओ रुसुल ही के मुबारक शिजराऐ नबुवत से) रौशन हुवा है न (फ़क़त) शर्क़ी है और न ग़र्बी (बल्कि अपने फैजे नूरकी वुसअ़त में आ़लमगीर है) ऐसा मा'लूम होता है कि इसका तैल (खूद ही) चमक रहा है अगरचे अभी उसे (वह़्ये रब्बानी और मो'जिज़ाते आस्मानी की) आगने छुवा भी नहीं (वोह) नूरके उपर नूर है (या'नी नूरे वुजूद पर नूरे नुबुव्वत गोया वोह ज़ात दोहरे नूरका पैकर है), अल्लाह जिसे चाहता है अपने नूर (की मा'रेफ़त) तक पहुंचा देता है, और अल्लाह लोगों (की हिदायत) के लिए मिसालें बयान फ़रमाता है, और अल्लाह हर चीज़से खू़ब आगाह है।

فِيْ بُيُوْتٍ اَذِنَ اللّٰهُ اَنْ تُرْفَعَ وَ يُذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ يُسَبِّحُ لَهٗ فِيْهَا بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ۝٣٦

36. (अल्लाहका येह नूर) ऐसे घरों (मसाजिद और मराकिज़) में (मुयस्सर आता है) जिन (की क़दरो मन्ज़िलत) के बुलंद किए जाने और जिनमें अल्लाह के नाम का ज़िक्र किए जानेका हुक्म अल्लाह ने दिया है (येह वोह घर हैं कि अल्लाह वाले) उनमें सुब्हो शाम उसकी तस्बीह़ करते हैं।

رِجَالٌ لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّ لَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَ اِقَامِ الصَّلٰوةِ وَ اِيْتَآءِ الزَّكٰوةِ يَخَافُوْنَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيْهِ الْقُلُوْبُ وَالْاَبْصَارُ ۝٣٧

37. (अल्लाह के इस नूरके ह़ामिल) वोही मरदाने (खुदा) हैं जिन्हें तिजारत और ख़रीदो फ़रोख़्त न अल्लाहकी याद से ग़ाफ़िल करती है और न नमाज क़ायम करने से और न जक़ात अदा करने से (बल्कि दुन्यवी फ़राइज की अदाएगी के दौरान भी) वोह (हमा वक़्त) उस दिनसे डरते रेहते हैं जिस में (ख़ौफ़ के बाइस) दिल और आँखें (सब) उलट पलट हो जाएंगी।

لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَ يَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ وَ اللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝٣٨

38. ताकि अल्लाह उन्हें उन (नेक) आ'माल का बेहतर बदला दे जो उन्होंने किए हैं और अपने फ़ज़्ल से उन्हें और (भी) ज़ियादह (अ़ता) फ़रमा दे, और अल्लाह जिसे चाहता है बिग़ैर हिसाबके रिज़्क़ (व अ़ता) से नवाज़ता है।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍۭ بِقِيْعَةٍ يَّحْسَبُهُ الظَّمْاٰنُ مَآءً حَتّٰٓى اِذَا جَآءَهٗ لَمْ يَجِدْهُ شَيْـًٔا وَّ وَجَدَ اللّٰهَ عِنْدَهٗ فَوَفّٰىهُ حِسَابَهٗ وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝٣٩

39. और काफ़िरों के आ'माल चटयल मैदान में सराबकी मानिन्द हैं जिसको प्यासा पानी समझता है। यहां तक कि जब उसके पास आता है तो उसे कुछ (भी) नहीं पाता (उसी तरह उसने आख़िरत में) अल्लाह को अपने पास पाया मगर अल्लाहने उसका पूरा हि़साब (दुनिया में ही) चुका दिया था, और अल्लाह जल्द हि़साब करने वाला है।

اَوْ كَظُلُمٰتٍ فِيْ بَحْرٍ لُّجِّيٍّ يَّغْشٰىهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ سَحَابٌ ظُلُمٰتٌۢ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ اِذَآ اَخْرَجَ

40. या (काफ़िरों के आ'माल) उस गेहरे समन्दरकी तारीकियोंकी मानिन्द हैं जिसे मौजने ढांपा हुवा हो (फिर) उसके ऊपर एक और मौज हो (और) उसके ऊपर बादल हों (येह तेह दर तेह) तारीकियां एक दूसरे के ऊपर हैं, जब

يَدَهٗ لَمْ يَكَدْ يَرٰىهَا ۗ وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللّٰهُ لَهٗ نُوْرًا فَمَا لَهٗ مِنْ نُّوْرٍ ﴿٤٠﴾

(ऐसे समन्दर में डूबने वाला कोई शख़्स) अपना हाथ बाहर निकाले तो उसे (कोई भी) देख न सके, और जिस के लिए अल्लाह ही ने नूरे (हिदायत) नहीं बनाया तो उस के लिए (कहीं भी) नूर नहीं होता।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُسَبِّحُ لَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالطَّيْرُ صٰٓفّٰتٍ ۗ كُلٌّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهٗ وَتَسْبِيْحَهٗ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٤١﴾

41. क्या तुमने नहीं देखा कि जो कोई भी आस्मानों और ज़मीनमें है वोह (सब) अल्लाह ही की तस्बीह़ करते हैं और परिन्दे (भी फ़िज़ाओं में) पर फैलाए हूऐ (उसी की तस्बीह़ करते हैं), हर एक (अल्लाह के हुज़ूर) अपनी नमाज़ और अपनी तस्बीह़ को जानता है, और अल्लाह उन कामों से ख़ूब आगाह है जो वोह अंजाम देते हैं।

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿٤٢﴾

42. और सारे आस्मानों और ज़मीन की हुक्मरानी अल्लाह ही की है, और सबको उसी की तरफ़ लौट कर जाना है।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُزْجِيْ سَحَابًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهٗ ثُمَّ يَجْعَلُهٗ رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ وَيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ جِبَالٍ فِيْهَا مِنْۢ بَرَدٍ فَيُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ وَيَصْرِفُهٗ عَنْ مَّنْ يَّشَآءُ ۗ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهٖ يَذْهَبُ بِالْاَبْصَارِ ﴿٤٣﴾

43. क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह ही बादल को पहले) आहिस्ता आहिस्ता चलाता है फिर उस (के मुख़्तलिफ़ टुकडों) को आपस में मिला देता है फिर उसे तेह बह तेह बना देता है फिर तुम देखते हो कि उसके दरमियान खाली जगहोंसे बारिश निकल कर बरस्ती है, और वोह उसी आस्मान (या'नी फ़िज़ा) में बरफानी पहाडोंकी तरह (दिखाई देनेवाले) बादलों में से ओले बरसाता है, फिर जिस पर चाहता है उन ओलों को गिराता है और जिससे चाहता है उनको फेर देता है (मज़ीद येह कि उन्हीं बादलों से बिजली भी पैदा करता है), यूं लगता है कि उस (बादल) की बिजलीकी चमक आँखों (को खैरा करके उन) की बीनाई उचक ले जाएगी।

يُقَلِّبُ اللّٰهُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِي الْاَبْصَارِ ﴿٤٤﴾

44. और अल्लाह रात और दिनको (एक दूसरे के ऊपर) पलटता रेहता है, और बेशक उसमें अक़्लो बसीरत वालों के लिए (बडी) रेहनुमाई है।

وَاللّٰهُ خَلَقَ كُلَّ دَآبَّةٍ مِّنْ مَّآءٍ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِىْ عَلٰى بَطْنِهٖ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِىْ عَلٰى رِجْلَيْنِ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِىْ عَلٰٓى اَرْبَعٍ ؕ يَخْلُقُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۴۵﴾

45. और अल्लाहने हर चलने फिरनेवाले (जानदार) की पैदाइश (की कीमियाई इब्तिदा) पानी से फ़रमाई, फिर उनमें से बा'ज़ वोह हूए जो अपने पेटके बल चलते हैं और उन में से बा'ज़ वोह हूए जो दो पांव पर चलते हैं, और उन में से बा'ज़ वोह हूए जो चार (पैरों) पर चलते हैं, अल्लाह जो चाहता है पैदा फ़रमाता रेहता है, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर बड़ा क़ादिर है।

لَقَدْ اَنْزَلْنَآ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ ؕ وَاللّٰهُ يَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۴۶﴾

46. यक़ीनन हमने वाज़ेह और रौशन बयान वाली आयतें नाज़िल फ़रमाई हैं, और अल्लाह (उनके ज़रीए) जिसे चाहता है सीधी राहकी तरफ़ हिदायत फ़रमा देता है।

وَيَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالرَّسُوْلِ وَاَطَعْنَا ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ؕ وَمَآ اُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۴۷﴾

47. और वोह (लोग) केहते हैं कि हम अल्लाह पर और रसूल (ﷺ) पर ईमान ले आए हैं और इताअ़त करते हैं फिर उस (क़ौल) के बाद उनमें से एक गिरोह (अपने इक़रार से) रूगरदानी करता है, और येह लोग (हक़ीक़त में) मोमिन (ही) नहीं हैं।

وَاِذَا دُعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿۴۸﴾

48. और जब उन लोगों को अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की तरफ़ बुलाया जाता है कि वोह उनके दरमियान फैसला फ़रमा दे तो उस वक़्त उनमें से एक गिरोह (दरबारे रिसालत ﷺ में आने से) गुरेज़ां होता है।

وَاِنْ يَّكُنْ لَّهُمُ الْحَقُّ يَاْتُوْٓا اِلَيْهِ مُذْعِنِيْنَ ؕ ﴿۴۹﴾

49.और अगर वोह हक़वाले होते तो वोह उस (रसूल ﷺ)की तरफ़ मुतीअ़ हो कर तेज़ी से चले आते।

اَفِىْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ اَمِ ارْتَابُوْٓا اَمْ يَخَافُوْنَ اَنْ يَّحِيْفَ اللّٰهُ

50. क्या उनके दिलों में (मुनाफ़िक़त की) बीमारी है या वोह (शाने रिसालत ﷺ में) शक करते हैं या वोह उस बातका अंदेशा रखते हैं कि अल्लाह और उसका

عَلَيْهِمْ وَرَسُوْلُهٗ ۭ بَلْ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝۵۰

रसूल (ﷺ) उनपर जुल्म करेंगे, (नहीं) बल्कि वोही लोग खुद ज़ालिम हैं।

اِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذَا دُعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اَنْ يَّقُوْلُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۭ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝۵۱

51. ईमान वालोंकी बाततो फ़क़त येह होती है कि जब उन्हें अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की तरफ़ बुलाया जाता है ताकि वोह उनके दरमियान फ़ैसला फ़रमाए तो वोह येही कुछ कहें कि हमने सुन लिया, और हम (सरापा) इताअ़त पैरा हो गए, और ऐसे ही लोग फ़लाह पानेवाले हैं।

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَخْشَ اللّٰهَ وَ يَتَّقْهِ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْفَاۗىِٕزُوْنَ ۝۵۲

52. और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की इताअ़त करता है और अल्लाह से डरता और उसका तक़्वा इख़्तियार करता है पस ऐसे ही लोग मुराद पानेवाले हैं।

وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَىِٕنْ اَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجُنَّ ۭ قُلْ لَّا تُقْسِمُوْا ۚ طَاعَةٌ مَّعْرُوْفَةٌ ۭ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝۵۳

53. और वोह लोग अल्लाहकी बड़ी भारी (ताकीदी) कस्में खाते हैं कि अगर आप उन्हें हुक्म दें तो वोह (जिहादके लिए) ज़रूर निकलेंगे, आप फ़रमा दें कि तुम कस्में मत खाओ (बल्कि) मा'रूफ तरीके से फ़रमांबरदारी (दरकार) है, बेशक अल्लाह उन कामों से खूब आगाह है जो तुम करते हो।

قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُمْ مَّا حُمِّلْتُمْ ۭ وَاِنْ تُطِيْعُوْهُ تَهْتَدُوْا ۭ وَمَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝۵۴

54. फ़रमा दीजिए : तुम अल्लाहकी इताअ़त करो और रसूल (ﷺ) की इताअ़त करो, फिर अगर तुमने (इताअ़त)से रूगरदानी की तो (जान लो) रसूल (ﷺ) के ज़िम्मे वोही कुछ है जो उन पर लाज़िम किया गया और तुम्हारे जिम्मे वोह है जो तुम पर लाज़िम किया गया है, और अगर तुम उनकी इताअ़त करोगे तो हिदायत पा जाओगे, और रसूल (ﷺ) पर (अह़काम को) सरीहन पहुंचा देने के सिवा (कुछ लाज़िम) नहीं है।

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي

55. अल्लाहने ऐसे लोगोंसे वा'दा फ़रमाया है (जिसका ईफ़ा और ता'मील उम्मत पर लाज़िम है) जो तुम में से

الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۠ وَ لَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ وَ لَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ؕ يَعْبُدُوْنَنِيْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِيْ شَيْـًٔا ؕ وَ مَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۵۵﴾

ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे वोह ज़रूर उनहीको ज़मीनमें ख़िलाफ़त (या'नी अमानत इक़्तिदार का हक़) अ़ता फ़रमाएगा जैसा कि उसने उन लोगोंको (हक़्क़े) हुकूमत बख़्शा था जो उनसे पहले थे और उनके लिए उनके दीनको जिसे उसने उनके लिए पसंद फ़रमाया है (ग़ल्बाओ इक़्तिदार के ज़रीए) मज़बूतो मुस्तहकम फ़रमा देगा और वोह ज़रूर (इस तमक्कुन के बाइस) उनके पिछले ख़ौफ़को (जो उनकी सियासी, मआशी और समाजी कमज़ोरी की वजह से था) उनके लिए अम्नो हिफ़ाज़त की हाल तसे बदल देगा, वोह (बेख़ौफ़ हो कर) मेरी इबादत करेंगे मेरे साथ किसीको शरीक नहीं ठेहराएंगे (या'नी सिर्फ़ मेरे हुक्म और निज़ाम के ताबे' रहेंगे), और जिसने उसके बाद नाशुक्री (या'नी मेरे अहकामसे इन्हिराफ़ो इन्कार)को इख़्तियार किया तो वोही लोग फ़ासिक़ (व नाफ़रमान) होंगे।

وَ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتُوا الزَّكٰوةَ وَ اَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿۵۶﴾

56.और तुम नमाज (के निज़ाम) को काइम रखो और ज़कात की अदाएगी (का इन्तिजाम) करते रहो और रसूल (ﷺ) की (मुकम्मल) इताअ़त बजा लाओ ताकि तुम पर रहम फ़रमाया जाए (या'नी ग़ल्बाओ इक़्तिदार, इस्तेहकाम और अम्नो हिफ़ाज़त की ने'मतों को बरक़रार रखा जाए)।

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مُعْجِزِيْنَ فِي الْاَرْضِ ۚ وَ مَاْوٰىهُمُ النَّارُ ؕ وَ لَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۵۷﴾ ع

57. और येह ख़याल हरगिज़ न करना कि इन्कारो नाशुक्री करनेवाले लोग ज़मीन में (अपने हलाक किए जानेसे अल्लाह को) आजिज़ कर देंगे, और उनका ठिकाना दोज़ख़ है, और वोह बहुत ही बुरा ठिकाना है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِيَسْتَاْذِنْكُمُ الَّذِيْنَ مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ وَ الَّذِيْنَ

58. ऐ ईमानवालो ! चाहिए कि तुम्हारे ज़ेरे दस्त (गुलाम और बांदियां) और तुम्हारे ही वोह बच्चे जो (अभी)

لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ ثَلٰثَ مَرّٰتٍ ۚ مِنْ قَبْلِ صَلٰوةِ الْفَجْرِ وَحِيْنَ تَضَعُوْنَ ثِيَابَكُمْ مِّنَ الظَّهِيْرَةِ وَمِنْۢ بَعْدِ صَلٰوةِ الْعِشَآءِ ۗ ثَلٰثُ عَوْرٰتٍ لَّكُمْ ۚ لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌۢ بَعْدَهُنَّ ۚ طَوّٰفُوْنَ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۚ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ ۚ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٥٨﴾

जवान नहीं हुए (तुम्हारे पास आने के लिए) तीन मवाक़े' पर तुमसे इजाज़त लिया करें, (एक) नमाज़े फ़जरसे पहले और (दूसरे) दोपहर के वक्त जब तुम (आराम के लिए) कपड़े उतारते हो और (तीसरे) नमाज़े इशाके बाद (जब तुम ख़्वाबगाहों में चले जाते हो), (येह) तीन (वक्त) तुम्हारे पर्दे के हैं, इन (अवक़ात) के अलावाह न तुम पर कोई गुनाह है और न उन पर, (क्यों कि बक्या अवक़ात में वोह) तुम्हारे हां कसरत के साथ एक दूसरे के पास आते जाते रेहते हैं, उसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए आयतें वाजेह फ़रमाता है और अल्लाह खूब जाननेवाला हिक्मत वाला है।

وَاِذَا بَلَغَ الْاَطْفَالُ مِنْكُمُ الْحُلُمَ فَلْيَسْتَاْذِنُوْا كَمَا اسْتَاْذَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ ۚ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٥٩﴾

59. और जब तुम में से बच्चे हद्दे बुलूग़को पहुंच जाएं तो वोह (तुम्हारे पास आने के लिए) इजाज़त लिया करें जैसा कि उनसे पहले (दीगर बालिग़ अफ़राद) इजाज़त लेते रेहते हैं। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपने अह्काम खूब वाज़ेह् फ़रमाता है और अल्लाह खूब इल्मवाला और हिक्मतवाला है।

وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَآءِ الّٰتِيْ لَا يَرْجُوْنَ نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ اَنْ يَّضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجٰتٍۢ بِزِيْنَةٍ ۚ وَاَنْ يَّسْتَعْفِفْنَ خَيْرٌ لَّهُنَّ ۚ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٦٠﴾

60. और वोह बूढ़ी ख़ाना नशीन औरतें जिन्हें (अब) निकाह्की ख़्वाहिश नहीं रही उन पर इस बातमें कोई गुनाह नहीं कि वोह अपने (ऊपरसे ढांपनेवाले इज़ाफ़ी) कपड़े उतार लें बशर्तेकि वोह (भी) अपनी आराइशको ज़ाहिर करनेवाली न बनें, और अगर वोह (मज़ीद) परहेजगारी इख़्तियार करें (या'नी ज़ाइद ओढ़नेवाले कपड़े भी न उतारें) तो उनके लिए बेहतर है, और अल्लाह खूब सुनने वाला जानने वाला है।

لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ

61. अँधे पर कोई रुकावट नहीं और न लंगड़े पर कोई हर्ज है और न बीमार पर कोई गुनाह है और न खुद तुम्हारे

حَرَجٌ وَّ لَا عَلٰۤى اَنْفُسِكُمْ اَنْ تَاْكُلُوْا
مِنْۢ بُيُوْتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اٰبَآئِكُمْ اَوْ
بُيُوْتِ اُمَّهٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اِخْوَانِكُمْ
اَوْ بُيُوْتِ اَخَوٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ
اَعْمَامِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ عَمّٰتِكُمْ اَوْ
بُيُوْتِ اَخْوَالِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ خٰلٰتِكُمْ اَوْ
مَا مَلَكْتُمْ مَّفَاتِحَهٗۤ اَوْ صَدِيْقِكُمْ ؕ
لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَاْكُلُوْا
جَمِيْعًا اَوْ اَشْتَاتًا ؕ فَاِذَا دَخَلْتُمْ
بُيُوْتًا فَسَلِّمُوْا عَلٰۤى اَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ
عِنْدِ اللّٰهِ مُبٰرَكَةً طَيِّبَةً ؕ كَذٰلِكَ
يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ
تَعْقِلُوْنَ ﴿٦١﴾

लिए (कोई मुज़ाइक़ा है) कि तुम अपने घरोंसे (खाना) खा लो या अपने बापदादा के घरों से या अपनी माओं के घरों से या अपने भाइयों के घरों से या अपनी बेहनों के घरों से या अपने चचाओं के घरों से या अपनी फूफियों के घरों से या अपने मामुओं के घरोंसे या अपनी ख़ालाओं के घरोंसे या जिन घरोंकी कुंजियां तुम्हारे इख़्तियार में हैं (या'नी जिनमें उनके मालिकों की तरफ़से तुम्हें हर क़िस्म के तसर्रुफ़ की इजाज़त है) या अपने दोस्तों के घरों से (खाना खा लेने में मुज़ाइका नहीं), तुम पर इस बात में कोई गुनाह नहीं कि तुम सबके सब मिल कर खाओ या अलग अलग, फिर जब तुम घरों में दाख़िल हुआ करो तो अपने (घरवालों) पर सलाम कहा करो (येह) अल्लाहकी तरफ़ से बा बरकत पाकीज़ा दुआ है, इस तरह् अल्लाह अपनी आयतोंको तुम्हारे लिए वाज़ेह् फ़रमाता है ताकि तुम (अह्कामे शरीअ़त और आदाबे ज़िन्दगी को) समझ सको।

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ
وَرَسُوْلِهٖ وَاِذَا كَانُوْا مَعَهٗ عَلٰۤى اَمْرٍ
جَامِعٍ لَّمْ يَذْهَبُوْا حَتّٰى يَسْتَاْذِنُوْهُ ؕ
اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَاْذِنُوْنَكَ اُولٰٓئِكَ
الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ
فَاِذَا اسْتَاْذَنُوْكَ لِبَعْضِ شَاْنِهِمْ
فَاْذَنْ لِّمَنْ شِئْتَ مِنْهُمْ وَ

62. ईमानवाले तो वोही लोग हैं जो अल्लाह पर और उसके रसूल (ﷺ) पर ईमान ले आए हैं और जब वोह आपके साथ किसी ऐसे (इज्तिमाई) काम पर हाज़िर हों जो (लोगोंको) यकजा करनेवाला हो तो वहां से चले न जाएं (या'नी उम्मतमें इज्तिमाइय्यत और वह्दत पैदा करने के अ़मल में दिल जमई से शरीक हों) जब तक कि वोह (किसी ख़ास उ़ज़्रके बाइस) आपसे इजाज़त न ले लें, (ऐ रसूले मोअ़ज़्ज़म !) बेशक जो लोग (आपही को हाकिम और मरजा' समझ कर) आपसे इजाज़त तलब करते हैं वोही लोग अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) पर ईमान

اسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٦٢﴾

रखनेवाले हैं, फिर जब वोह आपसे अपने किसी काम के लिए (जानेकी) इजाज़त चाहें तो आप (हाकिमो मुख़्तार हैं) उनमें से जिसे चाहें इजाज़त मर्हमत फ़रमा दें और उनके लिए (अपनी मजलिस से इजाज़त ले कर जाने पर भी) अल्लाहसे बख़्शिश मांगें (कि कहीं इतनी बात पर भी गिरफ़्त न हो जाए), बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

لَا تَجْعَلُوْا دُعَاۗءَ الرَّسُوْلِ بَيْنَكُمْ كَدُعَاۗءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا ۭ قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ يَتَسَلَّلُوْنَ مِنْكُمْ لِوَاذًا ۚ فَلْيَحْذَرِ الَّذِيْنَ يُخَالِفُوْنَ عَنْ اَمْرِهٖٓ اَنْ تُصِيْبَهُمْ فِتْنَةٌ اَوْ يُصِيْبَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٦٣﴾

63. (ऐ मुसलमानो !) तुम रसूल के बुलाने को आपसमें एक दूसरेको बुलानेकी मिस्ल क़रार न दो (जब रसूले अकरम ﷺ को बुलाना तुम्हारे बाहमी बुलावे की मिस्ल नहीं तो खुद रसूल ﷺ की ज़ाते गिरामी तुम्हारी मिस्ल कैसे हो सक्ती है), बेशक अल्लाह ऐसे लोगोंको (खूब) जानता है जो तुम में से एक दूसरेकी आड़में (दरबारे रिसालत ﷺ से) चुपके से खिसक जाते हैं, पस वोह लोग डरें जो रसूल (ﷺ) के अम्रे (अदब)की ख़िलाफ़ वरज़ी कर रहे हैं कि (दुनिया में ही) उन्हें कोई आफ़त आ पहुंचेगी या (आख़िरत में) उन पर दर्दनाक अ़ज़ाब आन पड़ेगा।

اَلَآ اِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ قَدْ يَعْلَمُ مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ ۭ وَيَوْمَ يُرْجَعُوْنَ اِلَيْهِ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ۭ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٦٤﴾ ع

64. ख़बरदार ! जो कुछ आस्मानों और ज़मीनमें है (सब) अल्लाह ही का है, वोह यक़ीनन जानता है जिस हाल पर तुम हो (ईमान पर हो या मुनाफ़िक़त पर), और जिस दिन लोग उसकी तरफ़ लौटाए जाएंगे तो वोह उन्हें बता देगा जो कुछ वोह किया करते थे, और अल्लाह हर चीज़ को खूब जाननेवाला है।

ع ٩ ٣ ١٥

आयातुहा 77 | 25 सूरतुल फ़ुर्क़ान मक्किय्यतुन 42 | रुकूआतुहा 6

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़्म फ़रमानेवाला है।

تَبٰرَكَ الَّذِىْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰى
عَبْدِهٖ لِيَكُوْنَ لِلْعٰلَمِيْنَ نَذِيْرًا ۙ ①

1. (वोह अल्लाह) बड़ी बरकतवाला है जिसने (ह़क़्को बातिल में फ़र्क़ और) फ़ैसला करनेवाला (क़ुरआन) अपने (मेहबूबो मुक़र्रब) बंदे पर नाज़िल फ़रमाया ताकि वोह तमाम जहानों के लिए डर सुनानेवाला हो जाए।

الَّذِىْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ
يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِى الْمُلْكِ وَخَلَقَ
كُلَّ شَىْءٍ فَقَدَّرَهٗ تَقْدِيْرًا ②

2. वोह (अल्लाह) के आस्मानों और ज़मीन की बादशाहत उसीके लिए है और जिसने न (अपने लिए) कोई औलाद बनाई है और न बादशाहीमें उसका कोई शरीक है और उसीने हर चीज़को पैदा फ़रमाया है फिर उस (की बक़ा-व-इर्तिक़ा के हर मर्ह़ले पर उसके ख़ुवास, अफ़्आ़ल और मुद्दत, अल ग़रज़ हर चीज़) को एक मुक़र्ररा अंदाज़े पर ठेहराया है।

وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً
لَّا يَخْلُقُوْنَ شَيْئًا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ
وَلَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ ضَرًّا وَّ
لَا نَفْعًا وَّلَا يَمْلِكُوْنَ مَوْتًا وَّ
لَا حَيٰوةً وَّلَا نُشُوْرًا ③

3. और इन (मुशरेकीन) ने अल्लाहको छोड़ कर और मा'बूद बना लिए हैं जो कोई चीज़ भी पैदा नहीं कर सक्ते बल्कि वोह ख़ुद पैदा किए गए हैं और न ही वोह अपने लिए किसी नुक़्सान के मालिक हैं और न नफ़े' और न वोह मौत के मालिक हैं और न ह़यात के और न (ही मरने के बाद) उठा कर जमा' करनेका (इख़्तियार रखते हैं)।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ
اِفْكُ ِۨافْتَرٰىهُ وَاَعَانَهٗ عَلَيْهِ قَوْمٌ
اٰخَرُوْنَ ۛۚ فَقَدْ جَآءُوْ ظُلْمًا وَّزُوْرًا ④

4. और काफ़िर लोग केहते हैं कि येह (क़ुरआन) मह़ज़ इफ़्तिरा है जिसे उस (मुद्दइए रिसालत) ने घड़ लिया है और उस (के घड़ने) पर दूसरे लोगोंने उसकी मददकी है बेशक काफ़िर ज़ुल्म और झुट पर (उतर) आए हैं।

وَقَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ اكْتَتَبَهَا

5. और केहते हैं (येह क़ुरआन) अगलों के अफ़्साने हैं

فَهِيَ تُمْلٰى عَلَيْهِ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿٥﴾

जिनको इस शख़्सने लिखवा रखा है फिर वोह (अफ़्साने) उसे सुब्हो शाम पढ़ कर सुनाए जाते हैं (ताकि उन्हें याद कर के आगे सुना सके)।

قُلْ اَنْزَلَهُ الَّذِيْ يَعْلَمُ السِّرَّ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ اِنَّهٗ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٦﴾

6. फ़रमा दीजिए : इस (क़ुरआन) को उस (अल्लाह) ने नाज़िल फ़रमाया है जो आस्मानों और ज़मीन में (मौजूद) तमाम राज़ों को जानता है, बेशक वोह बड़ा बख़्शनेवाला महरबान है।

وَقَالُوْا مَالِ هٰذَا الرَّسُوْلِ يَاْكُلُ الطَّعَامَ وَيَمْشِيْ فِي الْاَسْوَاقِ ۭ لَوْلَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَلَكٌ فَيَكُوْنَ مَعَهٗ نَذِيْرًا ﴿٧﴾

7. और वोह केहते हैं कि इस रसूल को किया हुआ है, येह खाना खाता है और बाज़ारों में चलता फिरता है। उसकी तरफ़ कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं उतारा गया कि वोह उसके साथ (मिल कर) डर सुनानेवाला होता।

اَوْ يُلْقٰٓى اِلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ تَكُوْنُ لَهٗ جَنَّةٌ يَّاْكُلُ مِنْهَا ۭ وَقَالَ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ﴿٨﴾

8. या उसकी तरफ़ कोई ख़ज़ाना उतार दिया जाता या (कम अज़ कम) उसका कोई बाग़ होता जिस (की आमदनी) से वोह खाया करता और ज़ालिम लोग (मुसलमानों) से केहते हैं कि तुम तो महज़ एक सहर ज़दा शख़्स की पैरवी कर रहे हो।

اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ﴿٩﴾

9. (ऐ हबीबे मुकर्रम !) मुलाहिज़ा फ़रमाइए येह लोग आपके लिए कैसी (कैसी) मिसालें बयान करते हैं पस येह गुमराह हो चुके हैं सो येह (हिदायतका) कोई रास्ता नहीं पा सक्ते।

تَبٰرَكَ الَّذِيْٓ اِنْ شَاۗءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّنْ ذٰلِكَ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ وَيَجْعَلْ لَّكَ قُصُوْرًا ﴿١٠﴾

10. वोह बडी बरकत वाला है अगर चाहे तो आपके लिए (दुनिया ही में) उससे (कहीं) बेहतर बाग़ात बना दे जिनके नीचे से नेहरें रवां हों और आपके लिए आलीशान मेहलात बना दे (मगर नबुवतो रिसालत के लिए येह शराइत नहीं हैं)।

بَلْ كَذَّبُوْا بِالسَّاعَةِ ۣ وَاَعْتَدْنَا

11. बल्कि उन्होंने कियामतको (भी) झुठला दिया है,

لِمَنْ كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيْرًا ﴿١١﴾

और हमने (हर) उस शख़्स के लिए जो क़ियामतको झुटलाता है (दोज़ख़की) भड़कती हूई आग तैयार कर रखी है।

اِذَا رَاَتْهُمْ مِّنْ مَّكَانٍۭ بَعِيْدٍ سَمِعُوْا لَهَا تَغَيُّظًا وَّزَفِيْرًا ﴿١٢﴾

12. जब वोह (आतिशे दोज़ख़) दूरकी जगहसे (ही) उनके सामने होगी येह उसके जौश मारने और चिंघाडने की आवाज़ को सुनेंगे।

وَاِذَآ اُلْقُوْا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِيْنَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُوْرًا ﴿١٣﴾

13. और जब वोह उसमें किसी तंग जगहसे ज़ंजीरों के साथ जकड़े हूए (या अपने शऐयतानों के साथ बंधे हूए) डाले जाएं गे इस वक्त वोह (अपनी) हलाकत को पुकारेंगे।

لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُوْرًا وَّاحِدًا وَّادْعُوْا ثُبُوْرًا كَثِيْرًا ﴿١٤﴾

14. (उनसे कहा जाएगा :) आज (सिर्फ) एक ही हलाकतको न पुकारो बल्कि बहोत सी हलाकतों को पुकारो।

قُلْ اَذٰلِكَ خَيْرٌ اَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ؕ كَانَتْ لَهُمْ جَزَآءً وَّمَصِيْرًا ﴿١٥﴾

15. फ़रमा दीजिए : क्या येह (हाल त) बेहतर है या दाएमी जन्नत (की जिन्दगी) जिसका परहेजगारों से वा'दा किया गया है, येह उन (के आ'माल) की जज़ा और ठिकाना है।

لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَآءُوْنَ خٰلِدِيْنَ ؕ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ وَعْدًا مَّسْـُٔوْلًا ﴿١٦﴾

16. उन के लिए उन (जन्नतों) में वोह (सब कुछ मुयस्सर) होगा जो वोह चाहेंगे (उसमें) हमेशा रहेंगे येह आपके रबके जिम्मए (करम) पर मत्लूबा वा'दा है (जो पूरा हो कर रहेगा)।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَقُوْلُ ءَاَنْتُمْ اَضْلَلْتُمْ عِبَادِيْ هٰٓؤُلَآءِ اَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيْلَ ؕ ﴿١٧﴾

17. और उस दिन अल्लाह उन्हें और उन्को, जिनकी वोह अल्लाह के सिवा परस्तिश करते थे, जमा' करेगा, फिर फ़रमाएगा क्या तुमने ही मेरे उन बंदोंको गुमराह कर दिया था या वोह (खुद) ही राहसे भटक गए थे।

قَالُوْا سُبْحٰنَكَ مَا كَانَ يَنْۢبَغِيْ لَنَآ

18. वोह कहेंगे तेरी जात पाक है हमें (तो) येह बात (भी)

أَنْ نَتَّخِذَ مِنْ دُونِكَ مِنْ أَوْلِيَاءَ وَلَٰكِنْ مَتَّعْتَهُمْ وَآبَاءَهُمْ حَتَّىٰ نَسُوا الذِّكْرَ ۚ وَكَانُوا قَوْمًا بُورًا ﴿١٨﴾

जेबा न थी के हम तेरे सिवा औरोंको दोस्त (ही) बनाऐं (चेह जाए कि हम उन्हें तेरे गैरकी इ़बादत का केहते) लेकिन (ऐ मौला !) तूने उन्हें और उनके बापदादा को (दुन्यवी मालो असबाबसे) इतना बेहरामंद फ़रमाया, यहां तक कि वोह तेरी याद (भी) भूल गए, और येह (बदबख़्त) हलाक होनेवाले लोग (ही) थे।

فَقَدْ كَذَّبُوكُمْ بِمَا تَقُولُونَ فَمَا تَسْتَطِيعُونَ صَرْفًا وَلَا نَصْرًا ۚ وَمَنْ يَظْلِمْ مِنْكُمْ نُذِقْهُ عَذَابًا كَبِيرًا ﴿١٩﴾

19. सो (ऐ काफ़िरो !) उन्होंने (तो) इन बातों में तुम्हें झुटला दिया है जो तुम केहते थे पस (अब) तुम न तो अ़ज़ाब फैरनेकी ताक़त रखते हो और न (अपनी) मदद की, और (सुन लो !) तुम मेंसे जो शख़्स (भी) जुल्म करता है हम उसे बडे अ़ज़ाब का मज़ा चखाऐंगे।

وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا إِنَّهُمْ لَيَأْكُلُونَ الطَّعَامَ وَيَمْشُونَ فِي الْأَسْوَاقِ ۗ وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً أَتَصْبِرُونَ ۚ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيرًا ﴿٢٠﴾ ع

20. और हमने आपसे पहले रसूल नहीं भेजे मगर (येह कि) वोह खाना (भी) यक़ीनन खाते थे और बाजारों में भी (हस्बे जरूरत) चलते फिरते थे और हमने तुमको एक दूसरे के लिए आज़माइश बनाया है, क्या तुम (आज़माइश पर) सब्र करोगे ? और आपका रब खूब देखने वाला है।

وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ نَرٰى رَبَّنَا ؕ لَقَدِ اسْتَكْبَرُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ وَعَتَوْ عُتُوًّا كَبِيْرًا ﴿٢١﴾

21. और जो लोग हमारी मुलाक़ात की उम्मीद नहीं रखते केहते हैं कि हमारे ऊपर फ़रिश्ते क्यों नहीं उतारे गए या हम अपने रबको (अपनी आँखोंसे) देख लेते (तो फिर जरूर ईमान ले आते), हक़ीक़त में येह लोग अपने दिलों में (अपने आपको) बहुत बड़ा समझने लगे हैं और ह़दसे बढ़ कर सरकशी कर रहे हैं।

يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ لَا بُشْرٰى يَوْمَئِذٍ لِّلْمُجْرِمِيْنَ وَ يَقُوْلُوْنَ حِجْرًا مَّحْجُوْرًا ﴿٢٢﴾

22. जिस दिन वोह फ़रिश्तों को देखेंगे (तो) उस दिन मुजरिमों के लिए चंदां खुशीकी बात न होगी बल्कि वोह (उन्हें देख कर डरते हुए) कहेंगे : कोई रोकवाली आड़ होती (जो हमें उनसे बचा लेती या फ़रिश्ते उन्हें देख कर कहेंगे कि तुम पर दाख़िलए जन्नत क़त्अ़न मम्नूअ़ है)।

وَقَدِمْنَآ اِلٰى مَا عَمِلُوْا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنٰهُ هَبَآءً مَّنْثُوْرًا ﴿٢٣﴾

23. और (फिर) हम उन आ'मालकी तरफ़ मुतवज्जे होंगे जो (बज़ो'मे ख़ीश) उन्होंने (ज़िन्दगी में) किए थे तो हम उन्हें बिखरा हुवा ग़ुबार बना देंगे।

اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا وَّاَحْسَنُ مَقِيْلًا ﴿٢٤﴾

24. उस दिन अह्ले जन्नत की क़ियामगाह (भी) बेहतर होगी और आरामगाह भी खूबतर (जहां वोह ह़िसाबो किताब की दोपहर के बाद जा कर क़ैलूला करेंगे)।

وَ يَوْمَ تَشَقَّقُ السَّمَآءُ بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ الْمَلٰٓئِكَةُ تَنْزِيْلًا ﴿٢٥﴾

25. और उस दिन आस्मान फट कर बादल (की तरह़ धुंएं) में बदल जाएगा और फ़रिश्ते गिरोह दर गिरोह उतारे जाएंगे।

اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذِ الْحَقُّ لِلرَّحْمٰنِ ؕ وَ كَانَ يَوْمًا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ عَسِيْرًا ﴿٢٦﴾

26. उस दिन सच्ची हुक्मरानी सिर्फ़ (ख़ुदाए) रह़मानकी होगी, और वोह दिन काफ़िरों पर सख़्त (मुश्किल) होगा।

وَ يَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلٰى يَدَيْهِ يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِى اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُوْلِ سَبِيْلًا ﴿٢٧﴾

27. और उस दिन हर ज़ालिम (ग़ुस्से और ह़सरत से) अपने हाथों को काट काट खाएगा (और) कहेगा : काश ! मैंने रसूले (अकरम ﷺ) की मइय्यत में (आ कर हिदायत का) रास्ता इख़्तियार कर लिया होता।

يٰوَيْلَتٰى لَيْتَنِىْ لَمْ اَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيْلًا ﴿۲۸﴾

28. हाए अफ़्सोस ! काश मैंनें फ़लां शख़्सको दोस्त न बनाया होता।

لَقَدْ اَضَلَّنِىْ عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ اِذْ جَآءَنِىْ ؕ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِلْاِنْسَانِ خَذُوْلًا ﴿۲۹﴾

29. बेशक उसने मेरे पास नसीहत आ जाने के बाद मुझे उससे बेहका दिया, और शैतान इन्सान को (मुसीबत के वक़्त) बेयारो मददगार छोड़ देनेवाला है।

وَقَالَ الرَّسُوْلُ يٰرَبِّ اِنَّ قَوْمِى اتَّخَذُوْا هٰذَا الْقُرْاٰنَ مَهْجُوْرًا ﴿۳۰﴾

30. और रसूले (अकरम ﷺ) अर्ज़ करेंगे : ऐ रब ! बेशक मेरी क़ौमने इस क़ुरआन को बिलकुल ही छोड़ रखा था।

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِىٍّ عَدُوًّا مِّنَ الْمُجْرِمِيْنَ ؕ وَكَفٰى بِرَبِّكَ هَادِيًا وَّنَصِيْرًا ﴿۳۱﴾

31. और इसी तरह् हमने हर नबी के लिए जराइम शिआ़र लोगोंमें से (उनके) दुश्मन बनाए थे (जो उनके पयग़म्बराना मिशन की मुख़ालिफ़त करते और इस तरह् हक़ और बातिल क़ुव्वतों के दरमियान तज़ाद पैदा होता जिससे इन्क़िलाब के लिए साज़गार फ़िज़ा तैयार हो जाती थी) और आपका रब हिदायत करने और मदद फ़रमाने के लिए काफ़ी है।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْاٰنُ جُمْلَةً وَّاحِدَةً ۚ كَذٰلِكَ ۚ لِنُثَبِّتَ بِهٖ فُؤَادَكَ وَرَتَّلْنٰهُ تَرْتِيْلًا ﴿۳۲﴾ ع

32. और काफ़िर केहते हैं कि इस (रसूल) पर क़ुरआन एक ही बार (यकजा करके) क्यों नहीं उतारा गया यूं (थोड़ा थोड़ा कर के उसे तदरीजन इस लिए उतारा गया है) ताकि हम उस से आपके क़ल्बे (अत्हर) को क़ुव्वत बख़्शें और (इसी वजहसे) हमने उसे ठहर ठहर कर पढ़ा है (ताकि आप को हमारे पयग़ाम के ज़रीए बार बार सुकूने क़ल्ब मिलता रहे)।

وَلَا يَاْتُوْنَكَ بِمَثَلٍ اِلَّا جِئْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاَحْسَنَ تَفْسِيْرًا ﴿۳۳﴾

33. और येह (कुफ़्फ़ार) आपके पास कोई (ऐसी) मिसाल (सवाल और ए'तिराज़ के तौर पर) नहीं लाते मगर हम आपके पास (उसके जवाब में) हक़ और (उससे) बेहतर वज़ाहतका बयान ले आते हैं।

الَّذِينَ يُحْشَرُونَ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ إِلَىٰ جَهَنَّمَ أُولَٰئِكَ شَرٌّ مَكَانًا وَأَضَلُّ سَبِيلًا ﴿٣٤﴾

34. (येह) ऐसे लोग हैं जो अपने चेहरों के बल दोज़ख़ की तरफ़ हांके जाएंगे येही लोग हैं जो ठिकाने के लिहाज़से निहायत बुरे और रास्ते से (भी) बहुत बेहके हुए हैं।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَجَعَلْنَا مَعَهُ أَخَاهُ هَارُونَ وَزِيرًا ﴿٣٥﴾

35. और बेशक हमने मूसा (عليه السلام) को किताब अ़ता फ़रमाई और हमने उनके साथ (उनकी मुआ़विनत के लिए) उनके भाई हारून (عليه السلام) को वज़ीर बनाया।

فَقُلْنَا اذْهَبَا إِلَى الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَدَمَّرْنَاهُمْ تَدْمِيرًا ﴿٣٦﴾

36. फिर हमने कहा तुम दोनों उस क़ौम के पास जाओ जिन्होंने हमारी आयतोंको झुटलाया है (जब वोह हमारी तक्ज़ीब से फिर भी बाज़ न आए) तो हमने उन्हें बिलकुल ही हलाक कर डाला।

وَقَوْمَ نُوحٍ لَمَّا كَذَّبُوا الرُّسُلَ أَغْرَقْنَاهُمْ وَجَعَلْنَاهُمْ لِلنَّاسِ آيَةً وَأَعْتَدْنَا لِلظَّالِمِينَ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿٣٧﴾

37. और नूह़ (عليه السلام) की क़ौम को (भी), जब उन्होंने रसूलों को झुटलाया (तो) हमने उन्हें ग़र्क़ कर डाला और हमने उन्हें (दूसरे) लोगों के लिए निशाने इ़ब्रत बना दिया, और हमने ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।

وَعَادًا وَثَمُودَ وَأَصْحَابَ الرَّسِّ وَقُرُونًا بَيْنَ ذَٰلِكَ كَثِيرًا ﴿٣٨﴾

38. और आ़द और समूद और बाशिन्दगाने रस को, और उनके दरमियान बहुत सी (और) उम्मतों को (भी हलाक कर डाला)।

وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ الْأَمْثَالَ وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتْبِيرًا ﴿٣٩﴾

39. और हमने (उनमें से) हर एक (की नसीहत) के लिए मिसालें बयान कीं और (जब वोह सरकशी से बाज़ न आए तो) हमने उन सब को नीस्तो नाबूद कर दिया।

وَلَقَدْ أَتَوْا عَلَى الْقَرْيَةِ الَّتِي أُمْطِرَتْ مَطَرَ السَّوْءِ أَفَلَمْ يَكُونُوا يَرَوْنَهَا بَلْ كَانُوا لَا يَرْجُونَ نُشُورًا ﴿٤٠﴾

40. और बेशक येह (कुफ़्फ़ार) इस बस्ती पर से गुज़रे हैं जिस पर बुरी तरह (पथ्थरोंकी) बारिश बरसाई गई थी, तो क्या येह इस (तबाह शुदह बस्ती) को देखते न थे बल्कि येह तो (मरने के बाद) उठाए जाने की उम्मीद ही नहीं रखते।

وَإِذَا رَأَوْكَ إِنْ يَتَّخِذُونَكَ إِلَّا هُزُوًا ؕ أَهٰذَا الَّذِي بَعَثَ اللّٰهُ رَسُولًا ﴿٤١﴾

41. और (ऐ हबीबे मुकर्रम !) जब (भी) वोह आपको देखते हैं आपका मज़ाक़ उड़ाने के सिवा कुछ नहीं करते (और केहते हैं :) क्या येही वोह (शख़्स) है जिसे अल्लाहने रसूल बना कर भेजा है।

إِنْ كَادَ لَيُضِلُّنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا لَوْلَآ أَنْ صَبَرْنَا عَلَيْهَا ؕ وَسَوْفَ يَعْلَمُونَ حِينَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ مَنْ أَضَلُّ سَبِيلًا ﴿٤٢﴾

42. क़रीब था कि येह हमें हमारे मा'बूदों से बेहका देता अगर हम उन (की परस्तिश) पर साबित क़दम न रेहते, और वोह अनक़रीब जान लेंगे जिस वक़्त अज़ाब देखेंगे कि कौन गुमराह था।

أَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلٰهَهُ هَوٰىهُ ؕ أَفَأَنْتَ تَكُونُ عَلَيْهِ وَكِيلًا ﴿٤٣﴾

43. क्या आपने उस शख़्सको देखा है जिसने अपनी ख़्वाहिशे नफ़्सको अपना मा'बूद बना लिया है तो क्या आप उस पर निगेहबान बनेंगे।

أَمْ تَحْسَبُ أَنَّ أَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُونَ أَوْ يَعْقِلُونَ ؕ إِنْ هُمْ إِلَّا كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ سَبِيلًا ﴿٤٤﴾

44. क्या आप येह ख़याल करते हैं कि उनमें से अक्सर लोग सुनते या समझते हैं, (नहीं) वोह तो चौपायों की मानिन्द (हो चुके) हैं बल्कि उन से भी बदतर गुमराह हैं।

ع ٤

أَلَمْ تَرَ إِلٰى رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ ۚ وَلَوْ شَآءَ لَجَعَلَهُ سَاكِنًا ۚ ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيلًا ﴿٤٥﴾

45. क्या आपने अपने रब (की क़ुदरत) की तरफ़ निगाह नहीं डाली कि वोह किस तरह् (दोपहर तक) साया दराज़ करता है और अगर वोह चाहता तो उसे ज़रूर साकिन कर देता फिर हमने सूरजको उस (साए) पर दलील बनाया है।

ثُمَّ قَبَضْنٰهُ إِلَيْنَا قَبْضًا يَسِيرًا ﴿٤٦﴾

46. फिर हम आहिस्ता आहिस्ता उस (साए) को अपनी तरफ़ खींच कर समेट लेते हैं।

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِبَاسًا وَّالنَّوْمَ سُبَاتًا وَّ جَعَلَ النَّهَارَ نُشُورًا ﴿٤٧﴾

47. और वोही है जिसने तुम्हारे लिए रातको पोशाक (की तरह् ढांप लेनेवाला) बनाया और नींदको (तुम्हारे लिए) आराम (का बाइस) बनाया और दिनको (कामकाज के लिए) उठ खड़े होने का वक़्त बनाया।

وَهُوَ الَّذِىٓ اَرۡسَلَ الرِّيٰحَ بُشۡرًۢا بَيۡنَ يَدَىۡ رَحۡمَتِهٖ ۚ وَاَنۡزَلۡنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً طَهُوۡرًا ۙ ﴿۴۸﴾

48. और वोही है जो अपनी रह़मत (की बारिश) से पहले हवाओंको ख़ुशख़बरी बना कर भेजता है, और हम ही आस्मान से पाक (साफ़ करनेवाला) पानी उतारते हैं।

لِّنُحۡـىَ بِهٖ بَلۡدَةً مَّيۡتًا وَّنُسۡقِيَهٗ مِمَّا خَلَقۡنَاۤ اَنۡعَامًا وَّاَنَاسِىَّ كَثِيۡرًا ﴿۴۹﴾

49. ताकि उसके ज़रीए हम (किसी भी) मुरदह शहरको ज़िन्दगी बख़्शें और (मज़ीद येह कि) हम येह (पानी) अपने पैदा किए हुए बहुतसे चौपायों और (बादिया नशीन) इन्सानों को पिलाएं।

وَلَقَدۡ صَرَّفۡنٰهُ بَيۡنَهُمۡ لِيَذَّكَّرُوۡا ۖ فَاَبٰٓى اَكۡثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوۡرًا ﴿۵۰﴾

50. और बेशक हम उस (बारिश) को उनके दरमियान (मुख़्तलिफ़ शहरों और वक़्तों के हिसाबसे) घुमाते (रेहते) हैं ताकि वोह ग़ौरो फ़िक्र करें फिर भी अक्सर लोगों ने बजुज़ ना शुक्रीके (कुछ) कुबूल न किया।

وَلَوۡ شِئۡنَا لَبَعَثۡنَا فِىۡ كُلِّ قَرۡيَةٍ نَّذِيۡرًا ۖ ﴿۵۱﴾

51. और अगर हम चाहते तो हर एक बस्ती में एक डर सुनानेवाला भेज देते।

فَلَا تُطِعِ الۡكٰفِرِيۡنَ وَجَاهِدۡهُمۡ بِهٖ جِهَادًا كَبِيۡرًا ﴿۵۲﴾

52. पस (ऐ मर्दे मोमिन !) तू काफ़िरों का केहना न मान और तू इस (कुर्आनकी दा'वत और दलाइल) के ज़रीए उनके साथ बड़ा जिहाद कर।

وَهُوَ الَّذِىۡ مَرَجَ الۡبَحۡرَيۡنِ هٰذَا عَذۡبٌ فُرَاتٌ وَّهٰذَا مِلۡحٌ اُجَاجٌ ۚ وَجَعَلَ بَيۡنَهُمَا بَرۡزَخًا وَّحِجۡرًا مَّحۡجُوۡرًا ﴿۵۳﴾

53. और वोही है जिसने दो दरियाओं को मिला दिया। येह (एक) मीठा निहायत शीरीं है और येह (दूसरा) खारी निहायत तल्ख़ है। और उसने उन दोनों के दरमियान एक परदा और मज़बूत रुकावट बना दी।

وَهُوَ الَّذِىۡ خَلَقَ مِنَ الۡمَآءِ بَشَرًا فَجَعَلَهٗ نَسَبًا وَّصِهۡرًا ؕ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيۡرًا ﴿۵۴﴾

54. और वोही है जिसने पानी (की मानिन्द एक नुत्फ़े) से आदमीको पैदा किया फिर उसे नसब और सुसराल (की क़राबत) वाला बनाया, और आपका रब बड़ी कुदरत वाला है।

وَيَعۡبُدُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ مَا

55. और वोह (कुफ़्फ़ार) अल्लाह के सिवा उन (बुतों)

لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ ۗ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلَىٰ رَبِّهِ ظَهِيرًا ﴿٥٥﴾

की इ़बादत करते हैं जो उन्हें न (तो) नफ़ा' पहुंचा सक्ते हैं और न (ही) उन्हें नुक़्सान पहुंचा सक्ते हैं, और काफ़िर अपने रब (की ना फ़रमानी) पर (हमेशा शैतानका) मददगार होता है।

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ﴿٥٦﴾

56. और हमने आपको नहीं भेजा मगर (अल्लाह के इताअ़त गुज़ार बंदोंको) ख़ुशख़बरी सुनानेवाला और (बग़ावत शिआ़र लोगों को) डर सुनानेवाला बना कर।

قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِلَّا مَنْ شَاءَ أَنْ يَتَّخِذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ﴿٥٧﴾

57.आप फ़रमा दीजिए कि मैं तुमसे इस (तबलीग़) पर कुछ भी मुआ़वज़ा नहीं मांगता मगर जो शख़्स अपने रब तक (पहुंचने का) रास्ता इख़्तियार करना चाहता है (कर ले)।

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِي لَا يَمُوتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهِ ۚ وَكَفَىٰ بِهِ بِذُنُوبِ عِبَادِهِ خَبِيرًا ﴿٥٨﴾

58. और आप उस (हमेशा) ज़िन्दा रेहनेवाले (रब) पर भरोसा कीजिए जो कभी नहीं मरेगा और उसकी ता'रीफ़ के साथ तस्बीह़ करते रहिए, और उसका अपने बंदों के गुनाहोंसे बा ख़बर होना काफ़ी है।

الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۚ الرَّحْمَٰنُ فَاسْأَلْ بِهِ خَبِيرًا ﴿٥٩﴾

59. जिसने आस्मानी कुरों और ज़मीन को और उस (काइनात) को जो उन दोनों के दरमियान है छे अद्वार में पैदा फ़रमाया ★ फिर वोह (ह़स्बे शान) अर्श पर जलवा अफ़रोज हुवा (वोह) रह़मान है (ऐ मा'रेफ़ते ह़क़ के तालिब) तू उसके बारे में किसी बा ख़बर से पूछ (बे ख़बर उस का ह़ाल नहीं जानते)।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اسْجُدُوا لِلرَّحْمَٰنِ قَالُوا وَمَا الرَّحْمَٰنُ أَنَسْجُدُ لِمَا تَأْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُورًا ﴿٦٠﴾

60. और जब उनसे कहा जाता है कि तुम रह़मान को सज्दा करो तो वोह (मुन्किरीने ह़क़) केहते हैं कि रह़मान क्या (चीज़) है ? क्या हम उसीको सज्दा करने लग जाएं जिसका आप हमें हुक्म दें और उस (हुक्म) ने उन्हें नफ़रत में और बढ़ा दिया।

★ (सित्तह अय्याम से मुराद छे अद्वारे तख़्लीक़ हैं, मा'रूफ़ मा'ना में छे दिन नहीं क्यों कि यहां तो ख़ूद ज़मीन और जुमला आस्मानी कुरों, कहकशाओं, सितारों, सय्यारों और ख़लाओंकी पैदाइश का ज़माना बयान हो रहा है उस वक़्त रात और दिन का वुजूद कहां था?)

تَبٰرَكَ الَّذِیۡ جَعَلَ فِی السَّمَآءِ بُرُوۡجًا وَّ جَعَلَ فِیۡهَا سِرٰجًا وَّ قَمَرًا مُّنِیۡرًا ﴿۶۱﴾

61. वोही बड़ी बरकतो अज़्मतवाला है जिसने आस्मानी काइनात में (कहकशाओं की शक्ल में) समावी कुर्रों की वसीअ् मन्ज़िलें बनाईं और उसमें (सूरज को रौशनी और तपिश देनेवाला) चिराग़ बनाया और (इस निज़ामे शम्सी के अंदर)चमकनेवाला चांद बनाया।

وَ هُوَ الَّذِیۡ جَعَلَ الَّیۡلَ وَ النَّهَارَ خِلۡفَةً لِّمَنۡ اَرَادَ اَنۡ یَّذَّكَّرَ اَوۡ اَرَادَ شُكُوۡرًا ﴿۶۲﴾

62. और वोही ज़ात है जिसने रात और दिनको एक दूसरे के पीछे गर्दिश करनेवाला बनाया उस के लिए जो ग़ौरो फ़िक्र करना चाहे या शुक्र गुज़ारी का इरादा करे (इन तख़्लीकी कुदरतों में नसीहतो हिदायत है)।

وَ عِبَادُ الرَّحۡمٰنِ الَّذِیۡنَ یَمۡشُوۡنَ عَلَی الۡاَرۡضِ هَوۡنًا وَّ اِذَا خَاطَبَهُمُ الۡجٰهِلُوۡنَ قَالُوۡا سَلٰمًا ﴿۶۳﴾

63.और (ख़ुदाए) रह्मानके (मक्बूल) बन्दे वोह हैं जो ज़मीन पर आहिस्तगी से चलते हैं और जब उनसे जाहिल (अखखड़) लोग (ना पसंदीदह) बात करते हैं तो वोह सलाम केहते (हुए अलग हो जाते) हैं।

وَ الَّذِیۡنَ یَبِیۡتُوۡنَ لِرَبِّهِمۡ سُجَّدًا وَّ قِیَامًا ﴿۶۴﴾

64. और (येह) वोह लोग हैं जो अपने रब के लिए सज्दा रेज़ी और क़ियामे (नियाज़) में रातें बसर करते हैं।

وَ الَّذِیۡنَ یَقُوۡلُوۡنَ رَبَّنَا اصۡرِفۡ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ ٭ۖ اِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ﴿۶۵﴾

65. और (येह) वोह लोग हैं जो (हमा वक्त हुज़ूरे बारी तआ़ला में) अ़र्ज गुज़ार रेहते हैं कि ए हमारे रब ! तू हमसे दोज़ख़का अज़ाब हटा ले बेशक इसका अज़ाब बड़ा मोहलिक (और दाइमी) है।

اِنَّهَا سَآءَتۡ مُسۡتَقَرًّا وَّ مُقَامًا ﴿۶۶﴾

66.बेशक वोह (आ़रज़ी ठहरनेवालों के लिए) बुरी क़रारगाह और (दाइमी रेहनेवालों के लिए) बुरी क़यामगाह है।

وَ الَّذِیۡنَ اِذَاۤ اَنۡفَقُوۡا لَمۡ یُسۡرِفُوۡا وَ لَمۡ یَقۡتُرُوۡا وَ كَانَ بَیۡنَ ذٰلِكَ قَوَامًا ﴿۶۷﴾

67. और (येह) वोह लोग हैं कि जब ख़र्च करते हैं तो न बेजा उड़ाते हैं और न तंगी करते हैं और उनका ख़र्च करना (ज़ियादती और कमी की) उन दो हद्दों के दरमियान ए'तिदाल पर (मब्नी) होता है।

وَالَّذِيْنَ لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا
اٰخَرَ وَلَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِيْ
حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُوْنَ ۚ
وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ يَلْقَ اَثَامًا ﴿۶۸﴾

68. और (येह) वोह लोग हैं जो अल्लाह के साथ किसी दूसरे मा'बूद की पूजा नहीं करते और न (ही) किसी ऐसी जानको क़त्ल करते हैं जिसे बिग़ैर हक़ मारना अल्लाहने हराम फ़रमाया है और न (ही) बदकारी करते हैं और जो शख़्स येह काम करेगा वोह सज़ाए गुनाह पाएगा।

يُّضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
وَيَخْلُدْ فِيْهٖ مُهَانًا ﴿۶۹﴾

69. उसके लिए क़ियामतके दिन अज़ाब दोगुना कर दिया जाएगा और वोह उसमें ज़िल्लतो ख़ुवारी के साथ हमेशा रहेगा।

اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا
فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ ؕ
وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۷۰﴾

70. मगर जिसने तौबा कर ली और ईमान ले आया और नेक अ़मल किया तो येह वोह लोग हैं कि अल्लाह जिनकी बुराइयों को नेकियोंसे बदल देगा, और अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاِنَّهٗ
يَتُوْبُ اِلَى اللّٰهِ مَتَابًا ﴿۷۱﴾

71.और जिसने तौबा कर ली और नेक अ़मल किया तो उसने अल्लाहकी तरफ़ (वोह) रुजूअ़ किया जो रजूअ़ का हक़ था।

وَالَّذِيْنَ لَا يَشْهَدُوْنَ الزُّوْرَ ۙ
وَاِذَا مَرُّوْا بِاللَّغْوِ مَرُّوْا كِرَامًا ﴿۷۲﴾

72. और (येह) वोह लोग हैं जो किज़्ब और बातिल कामों में (क़ौलन और अ़मलन दोनों सूरतों में) हाज़िर नहीं होते और जब बेहूदा कामों के पाससे गुज़रते हैं तो (दामन बचाते हुए) निहायत वक़ार और मतानत के साथ गुज़र जाते हैं।

وَالَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ
لَمْ يَخِرُّوْا عَلَيْهَا صُمًّا وَّعُمْيَانًا ﴿۷۳﴾

73.और (येह) वोह लोग हैं कि जब उन्हें उनके रबकी आयतों के ज़रीए नसीहत की जाती है तो उन पर बेहरे और अँधे हो कर नहीं गिर पड़ते (बल्कि ग़ौरो फ़िक्र भी करते हैं)।

وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا
مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ
وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ﴿۷۴﴾

74. और (येह) वोह लोग हैं जो (हुज़ूरे बारी तआ़ला में) अ़र्ज़ करते हैं : ऐ हमारे रब, हमें हमारी बीवियों और हमारी औलादकी तरफ़से आँखोंकी ठंडक अता फ़रमा, और हमें परहेज़गारोंका पेशवा बना दे।

أُولَٰئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوا وَيُلَقَّوْنَ فِيهَا تَحِيَّةً وَسَلَامًا ﴿٧٥﴾

75.उन्ही लोगों को (जन्नत में) बुलंद तरीन महल्लात उनके सब्र करने की जज़ा के तौर पर बख़्शे जाएंगे और वहां दुआए ख़ैर और सलामके साथ उनका इस्तिक़बाल किया जाएगा।

خَالِدِينَ فِيهَا ۚ حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ﴿٧٦﴾

76.येह उसमें हमेशा रेहनेवाले हैं, वोह (बुलंद महल्लाते जन्नत) बेहतरीन क़रारगाह और (उ़मदा) क़ियामगाह हैं।

قُلْ مَا يَعْبَأُ بِكُمْ رَبِّي لَوْلَا دُعَاؤُكُمْ ۖ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُونُ لِزَامًا ﴿٧٧﴾

77. फ़रमा दीजिए : मेरे रबको तुम्हारी कोई परवाह नहीं अगर तुम (उसकी) इ़बादत न करो, पस वाक़ई तुमने (उसे) झुटलाया है तो अब येह (झुटलाना तुम्हारे लिए) दाइमी अ़ज़ाब बना रहेगा।

आयातुहा 227 | 26 सूरतुश शुअ़राइ मक्कियय्तुन 47 | रुकूआ़तुहा 11

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

طسم ﴿١﴾

1. तॉ सीम मीम । (ह़क़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं)

تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ ﴿٢﴾

2. येह (ह़क़को)वाज़ेह़ करनेवाली किताबकी आयतें हैं।

لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَفْسَكَ أَلَّا يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ﴿٣﴾

3. (ऐ ह़बीबे मुकर्रम !) शायद आप (इस ग़म में) अपनी जाने (अ़ज़ीज़) ही दे बैठेंगे कि वोह ईमान नहीं लाते।

إِنْ نَشَأْ نُنَزِّلْ عَلَيْهِمْ مِنَ السَّمَاءِ آيَةً فَظَلَّتْ أَعْنَاقُهُمْ لَهَا خَاضِعِينَ ﴿٤﴾

4. अगर हम चाहें तो उन पर आस्मान से (ऐसी) निशानी उतार दें कि उनकी गरदनें उसके आगे झुकी रेह जाएं।

وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ ذِكْرٍ مِنَ الرَّحْمَٰنِ مُحْدَثٍ إِلَّا كَانُوا عَنْهُ مُعْرِضِينَ ﴿٥﴾

5.और उनके पास (ख़ुदाए) रह़मान की जानिबसे कोई नई नसीह़त नहीं आती मगर वोह उससे रू गरदां हो जाते हैं।

فَقَدْ كَذَّبُوا فَسَيَأْتِيهِمْ أَنْبَاءُ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٦﴾

6.सो बेशक वोह (ह़क़को) झुटला चुके पस अ़नक़रीब उन्हें इस अम्रकी खबरें पहोंच जाएंगी जिसका वोह मज़ाक़ उडाया करते थे।

اَوَلَمۡ يَرَوۡا اِلَى الۡاَرۡضِ كَمۡ اَنۡۢبَتۡنَا فِيۡهَا مِنۡ كُلِّ زَوۡجٍ كَرِيۡمٍ ﴿۷﴾

7. और क्या उन्होंने ज़मीनकी तरफ़ निगाह नहीं की कि हमने उसमें कितनी ही नफ़ीस चीज़ें उगाई हैं।

اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكۡثَرُهُمۡ مُّؤۡمِنِيۡنَ ﴿۸﴾

8. बेशक उसमें ज़रूर (कुदरते इलाहिय्याकी) निशानी है, और उनमें से अक्सर लोग ईमान लानेवाले नहीं हैं।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الۡعَزِيۡزُ الرَّحِيۡمُ ﴿۹﴾

9. और यक़ीनन आपका रब ही तो ग़ालिब, महरबान है।

وَاِذۡ نَادٰى رَبُّكَ مُوۡسٰۤى اَنِ ائۡتِ الۡقَوۡمَ الظّٰلِمِيۡنَ ۙ ﴿۱۰﴾

10.और (वोह वाक़िआ़ याद कीजिऐ) जब आपके रबने मूसा (عليه السلام) को निदा दी कि तुम ज़ालिमों की क़ौमके पास जाओ।

قَوۡمَ فِرۡعَوۡنَ ؕ اَلَا يَتَّقُوۡنَ ﴿۱۱﴾

11.(या'नी) क़ौमे फ़िरऔ़न के पास, क्या वोह (अल्लाहसे) नहीं डरते।

قَالَ رَبِّ اِنِّىۡۤ اَخَافُ اَنۡ يُّكَذِّبُوۡنِ ؕ ﴿۱۲﴾

12.मूसा (عليه السلام) ने अ़र्ज़ किया : ऐ रब ! में डरता हूं कि वोह मुझे झुटला देंगे।

وَيَضِيۡقُ صَدۡرِىۡ وَلَا يَنۡطَلِقُ لِسَانِىۡ فَاَرۡسِلۡ اِلٰى هٰرُوۡنَ ﴿۱۳﴾

13.और (ऐसे ना साज़गार माहौल में) मेरा सीना तंग हो जाता है और मेरी ज़बान (रवानी से) नहीं चलती सो हारून (عليه السلام) की तरफ़ (भी जिब्राईल عليه السلام को वही के साथ) भेज दे (ताकि वोह मेरा मुआ़विन बन जाए)।

وَلَهُمۡ عَلَىَّ ذَنۡۢبٌ فَاَخَافُ اَنۡ يَّقۡتُلُوۡنِ ۚ ﴿۱۴﴾

14.और उनका मेरे उपर (क़िब्ती को मार डालने का) एक इल्ज़ाम भी है सो मैं डरता हूं कि वोह मुझे क़त्ल कर डालेंगे।

قَالَ كَلَّا ۚ فَاذۡهَبَا بِاٰيٰتِنَاۤ اِنَّا مَعَكُمۡ مُّسۡتَمِعُوۡنَ ﴿۱۵﴾

15.इर्शाद हुवा हरगिज़ नहीं, पस तुम दोनों हमारी निशानियां ले कर जाओ बेशक हम तुम्हारे साथ (हर बात) सुननेवाले हैं।

فَاۡتِيَا فِرۡعَوۡنَ فَقُوۡلَاۤ اِنَّا رَسُوۡلُ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ۙ ﴿۱۶﴾

16.पस तुम दोनों फ़िरऔ़न के पास जाओ और कहो : हम सारे जहानों के परवरदिगार के (भेजे हुए) रसूल हैं।

اَنۡ اَرۡسِلۡ مَعَنَا بَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ ؕ ﴿۱۷﴾

17.(हमारा मुद्दआ़ येह है) कि तू बनी इसराईल को (आज़ादी दे कर) हमारे साथ भेज दे।

قَالَ اَلَمْ نُرَبِّكَ فِيْنَا وَلِيْدًا وَّ لَبِثْتَ فِيْنَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِيْنَ ﴿١٨﴾

18.(फ़िरऔ़नने) कहा : क्या हमने तुम्हें अपने यहां बचपनकी ह़ालत में पाला नहीं था और तुमने अपनी उ़म्र के कितने ही साल हमारे अंदर बसर किए थे।

وَ فَعَلْتَ فَعْلَتَكَ الَّتِيْ فَعَلْتَ وَاَنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٩﴾

19.और (फिर) तुमने अपना वोह काम कर डाला जो तुम ने किया था (या'नी एक क़िब्ती को क़त्ल कर दिया) और तुम नाशुक्र गुज़ारों में से हो (हमारी परवरिश और एह़सानात को भूल गए हो)।

قَالَ فَعَلْتُهَآ اِذًا وَّ اَنَا مِنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿٢٠﴾

20.(मूसा عليه السلام ने) फ़रमाया : जब मैंने वोह काम किया मैं बे ख़बर था (कि क्या एक घूंसे से उसकी मौत भी वाक़ेअ़ हो सक्ती है ?)।

فَفَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ لِيْ رَبِّيْ حُكْمًا وَّ جَعَلَنِيْ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٢١﴾

21.फिर मैं (उस वक़्त) तुम्हारे (दाइरए इख़्तियार) से निकल गया जब मैं तुम्हारे (इरादों) से ख़ौफ़ज़दा हुवा फिर मेरे रबने मुझे हुक्मे (नुबुव्वत) बख़्शा और (बिल आख़िर) मुझे रसूलों में शामिल फ़रमा दिया।

وَ تِلْكَ نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَيَّ اَنْ عَبَّدْتَّ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿٢٢﴾

22.और क्या वोह (कोई) भलाई है जिसका तू मुझ पर एहसान जता रहा है (उसका सबब भी येह था) कि तूने (मेरी पूरी क़ौम) बनी इसराईल को ग़ुलाम बना रखा था।

قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٣﴾

23. फ़िरऔ़नने कहा : सारे जहानोंका परवरदिगार क्या चीज़ है ?

قَالَ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ؕ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ﴿٢٤﴾

24.(मूसा عليه السلام ने) फ़रमाया : (वोह) जुम्ला आस्मानों का और ज़मीन का और उस (सारी काइनात) का रब है जो उन दोनों के दरमियान है, अगर तुम यक़ीन करनेवाले हो।

قَالَ لِمَنْ حَوْلَهٗٓ اَلَا تَسْتَمِعُوْنَ ﴿٢٥﴾

25.उसने उन (लोगों) से कहा जो उसके गिर्द (बैठे) थे : क्या तुम सुन नहीं रहे हो?

قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٦﴾

26. (मूसा عليه السلام ने मज़ीद) कहा कि (वोही) तुम्हारा (भी) रब है और तुम्हारे अगले बापदादों का (भी) रब है।

قَالَ اِنَّ رَسُوْلَكُمُ الَّذِيْٓ اُرْسِلَ

27.(फ़िरऔ़नने) कहा : बेशक तुम्हारा रसूल जो तुम्हारी

اِلَيۡكُمۡ لَمَجۡنُوۡنٌ ﴿۲۷﴾

तरफ़ भेजा गया है ज़रूर दीवाना है।

قَالَ رَبُّ الۡمَشۡرِقِ وَ الۡمَغۡرِبِ وَ مَا بَيۡنَهُمَا ؕ اِنۡ كُنۡتُمۡ تَعۡقِلُوۡنَ ﴿۲۸﴾

28. (मूसा عليه السلام ने) कहा : (वोह) मशरिक़ और मग़रिब और उस (सारी काइनात) का रब है जो उन दोनों के दरमियान है अगर तुम (कुछ) अक़्ल रखते हो।

قَالَ لَئِنِ اتَّخَذۡتَ اِلٰهًا غَيۡرِىۡ لَاَجۡعَلَنَّكَ مِنَ الۡمَسۡجُوۡنِيۡنَ ﴿۲۹﴾

29. (फ़िरऔनने) कहा : (ऐ मूसा !) अगर तुमने मेरे सिवा किसी और को मा'बूद बनाया तो मैं तुमको ज़रूर (गिरफ़्तार कर के) क़ैदियों में शामिल कर दूंगा।

قَالَ اَوَلَوۡ جِئۡتُكَ بِشَىۡءٍ مُّبِيۡنٍ ۚ ﴿۳۰﴾

30. (मूसा عليه السلام ने) फ़रमाया : अगरचे मैं तेरे पास कोई वाज़ेह़ चीज़ (बतौरे मो'जिज़ा भी) ले आऊं।

قَالَ فَاۡتِ بِهٖۤ اِنۡ كُنۡتَ مِنَ الصّٰدِقِيۡنَ ﴿۳۱﴾

31. (फ़िरऔनने) कहा : तुम उसे ले आओ अगर तुम सच्चे हो।

فَاَلۡقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِىَ ثُعۡبَانٌ مُّبِيۡنٌ ۚ ﴿۳۲﴾

32. पस (मूसा عليه السلام ने) अपना अ़सा (ज़मीन पर) डाल दिया वोह उसी वक़्त वाज़ेह़ (तौर पर) अज़्दहा बन गया।

وَّ نَزَعَ يَدَهٗ فَاِذَا هِىَ بَيۡضَآءُ لِلنّٰظِرِيۡنَ ﴿۳۳﴾

33. और (मूसा عليه السلام ने) अपना हाथ (बग़ल में डाल कर) बाहर निकाला तो वोह उसी वक़्त देखनेवालों के लिए सफ़ेद चमकदार हो गया।

قَالَ لِلۡمَلَاِ حَوۡلَهٗۤ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيۡمٌ ۙ ﴿۳۴﴾

34. (फ़िरऔनने) अपने इर्द गिर्द (बैठे हूए) सरदारों से कहा : बिला शुब्हा येह बड़ा दाना जादूगर है।

يُّرِيۡدُ اَنۡ يُّخۡرِجَكُمۡ مِّنۡ اَرۡضِكُمۡ بِسِحۡرِهٖ ۖ فَمَاذَا تَاۡمُرُوۡنَ ﴿۳۵﴾

35. येह चाहता है कि तुम्हें अपने जादू (के ज़ोर) से तुम्हारे मुल्क से बाहर निकाल दे पस तुम (अब इसके बारे में) क्या राए देते हो।

قَالُوۡۤا اَرۡجِهۡ وَ اَخَاهُ وَابۡعَثۡ فِى الۡمَدَآئِنِ حٰشِرِيۡنَ ۙ ﴿۳۶﴾

36. वोह बोले कि तू उसे और उसके भाई (हारून के हुक्मे सज़ा सुनाने) को मोअख़्ख़र कर दे और (तमाम) शहरों में (जादूगरों को बुलाने के लिए) हरकारे भेज दे।

يَأْتُوكَ بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِيمٍ ﴿٣٧﴾

37.वोह तेरे पास हर बड़े माहिरे फ़न जादूगर को ले आएं।

فَجُمِعَ السَّحَرَةُ لِمِيقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ﴿٣٨﴾

38. पस सारे जादूगर मुक़र्ररह दिनके मुअ़य्यना वक़्त पर जमा' कर लिए गए।

وَقِيلَ لِلنَّاسِ هَلْ أَنتُم مُّجْتَمِعُونَ ﴿٣٩﴾

39. और (फ़िरऔ़न की तरफ़से) लोगों को कहा गया कि तुम (इस मौक़े' पर) जमा' होनेवाले हो।

لَعَلَّنَا نَتَّبِعُ السَّحَرَةَ إِن كَانُوا هُمُ الْغَالِبِينَ ﴿٤٠﴾

40. ताकि हम जादूगरों (के दीन) की पैरवी कर सकें अगर वोह (मूसा और हारून पर) ग़ालिब आ गए।

فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالُوا لِفِرْعَوْنَ أَئِنَّ لَنَا لَأَجْرًا إِن كُنَّا نَحْنُ الْغَالِبِينَ ﴿٤١﴾

41. फिर जब वोह जादूगर आ गए (तो) उन्होंने फ़िरऔ़न से कहा : क्या हमारे लिए कोई उजरत (भी मुक़र्रर) है अगर हम (मुक़ाबले में) ग़ालिब हो जाएं।

قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ إِذًا لَّمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ﴿٤٢﴾

42. (फ़िरऔ़नने) कहा : हां बेशक तुम उसी वक़्त (उजरतवालोंकी बजाए मेरी) क़ुर्बत वालों में शामिल हो जाओगे (और क़ुर्बत का दर्जा उजरतसे कहीं बुलंद है)।

قَالَ لَهُم مُّوسَىٰ أَلْقُوا مَا أَنتُم مُّلْقُونَ ﴿٤٣﴾

43. मूसा (عليه السلام) ने उन (जादूगरों से) फ़रमाया : तुम वोह (जादूकी) चीज़ें डाल दो जो तुम डालनेवाले हो।

فَأَلْقَوْا حِبَالَهُمْ وَعِصِيَّهُمْ وَقَالُوا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ إِنَّا لَنَحْنُ الْغَالِبُونَ ﴿٤٤﴾

44. तो उन्होंने अपनी रस्सियां और अपनी लाठियां डाल दीं और केहने लगे : फ़िरऔ़नकी इज़्ज़तकी क़सम हम ज़रूर ग़ालिब होंगे।

فَأَلْقَىٰ مُوسَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ﴿٤٥﴾

45. फिर मूसा (عليه السلام) ने अपना डंडा डाल दिया तो वोह (अज़्दहा बन कर) फ़ौरन उन चीज़ोंको निगलने लगा जो उन्हों ने फ़रेबकारी से (अपनी अस्ल हक़ीक़त से) फेर रखी थीं।

فَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سَاجِدِينَ ﴿٤٦﴾

46. पस सारे जादूगर सज्दा करते हुए गिर पड़े।

قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ ﴿۴۷﴾

47. वोह केहने लगे : हम सारे जहानों के परवरदिगार पर ईमान ले आए।

رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿۴۸﴾

48. (जो) मूसा और हारून (عليهما السلام) का रब है।

قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِيْ عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ فَلَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ؕ لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ وَّلَاُصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۚ ﴿۴۹﴾

49. (फ़िरऔ़नने) कहा : तुम उस पर ईमान ले आए हो क़ब्ल उसके कि मैं तुम्हें इजाज़त देता, बेशक येह (मूसा عليه السلام) ही तुम्हारा बड़ा (उस्ताद) है जिसने तुम्हें जादू सिखाया है, तुम जल्द ही (अपना अंजाम) मा'लूम कर लोगे मैं ज़रूर ही तुम्हारे हाथ और तुम्हारे पांव उलटी तरफ़ से काट डालूंगा और तुम सबको यक़ीनन सूली पर चढ़ा दूंगा।

قَالُوْا لَا ضَيْرَ ۫ اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ۚ ﴿۵۰﴾

50. उन्होंने कहा : (उसमें) कोई नुक़्सान नहीं, बेशक हम अपने रबकी तरफ़ पलटनेवाले हैं।

اِنَّا نَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطٰيٰنَآ اَنْ كُنَّآ اَوَّلَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۵۱﴾

51. हम क़वी उम्मीद रखते हैं कि हमारा रब हमारी खताऐं मुआफ़ फ़रमा देगा, उस वजह से कि (अब) हम ही सबसे पहले ईमान लानेवाले हैं।

وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِيْٓ اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ﴿۵۲﴾

52. और हमने मूसा (عليه السلام) की तरफ़ वही़ भेजी कि तुम मेरे बंदों को रातों रात (यहां से) ले जाओ बेशक तुम्हारा तआ़क़ुब किया जाएगा।

فَاَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِى الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ۚ ﴿۵۳﴾

53. फ़िर फ़िरओ़नने शहरों में हरकारे भेज दिऐ।

اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَشِرْذِمَةٌ قَلِيْلُوْنَ ۙ ﴿۵۴﴾

54. (और कहा) बेशक येह (बनी इसराईल) थोड़ी सी जमाअ़त है।

وَاِنَّهُمْ لَنَا لَغَآئِظُوْنَ ۙ ﴿۵۵﴾

55. और बिला शुबा वोह हमें गुस्सा दिला रहे हैं।

وَاِنَّا لَجَمِيْعٌ حٰذِرُوْنَ ۭ ﴿۵۶﴾

56. और यक़ीनन हम सब (भी) मुस्तइ़द और चौकस हैं।

فَاَخْرَجْنٰهُمْ مِّنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۙ ﴿۵۷﴾

57. पस हमने उन (फ़िरऔ़नियों) को बाग़ों और चश्मों से निकाल बाहर किया।

وَّكُنُوْزٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ۝٥٨

58. और ख़ज़ानों और नफ़ीस क़ियामगाहों से (भी निकाल दिया)।

كَذٰلِكَ ؕ وَاَوْرَثْنٰهَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۝٥٩

59. (हमने) उसी तरह (किया) और हमने बनी इसराईल को उन (सब चीज़ों) का वारिस बना दिया।

فَاَتْبَعُوْهُمْ مُّشْرِقِيْنَ ۝٦٠

60. फिर सूरज निकलते वक़्त उन (फ़िरऔ़नियों) ने उनका तआ़क़ुब किया।

فَلَمَّا تَرَآءَ الْجَمْعٰنِ قَالَ اَصْحٰبُ مُوْسٰٓى اِنَّا لَمُدْرَكُوْنَ ۝٦١

61. फिर जब दोनों जमाअ़तें आमने सामने हूईं (तो) मूसा (عليه السلام) के साथियोंने कहा : (अब) हम ज़रूर पकड़े गए।

قَالَ كَلَّا ۚ اِنَّ مَعِيَ رَبِّيْ سَيَهْدِيْنِ ۝٦٢

62. (मूसा عليه السلام ने) फ़रमाया : हरगिज़ नहीं बेशक मेरे साथ मेरा रब है वोह अभी मुझे राहे (नजात) दिखा देगा।

فَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْبَحْرَ ؕ فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيْمِ ۝٦٣

63. फिर हमने मूसा (عليه السلام) की तरफ़ वह़ी भेजी कि अपना अ़सा दरिया पर मारो, पस दरिया (बारह ह़िस्सों में) फट गया और हर टुकड़ा ज़बरदस्त पहाड़की मानिन्द हो गया।

وَاَزْلَفْنَا ثَمَّ الْاٰخَرِيْنَ ۝٦٤

64. और हमने दूसरों (या'नी फ़िरऔ़न और उसके साथियों) को उस जगह के क़रीब कर दिया।

وَاَنْجَيْنَا مُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗٓ اَجْمَعِيْنَ ۝٦٥

65. और हमने मूसा عليه السلام को (भी) नजात बख़्शी और उन सब लोगों को (भी) जो उनके साथ थे।

ثُمَّ اَغْرَقْنَا الْاٰخَرِيْنَ ۝٦٦

66. फिर हमने दूसरों (या'नी फ़िरऔ़नियों) को ग़र्क़ कर दिया।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝٦٧

67. बेशक इस (वाक़िए) में (क़ुदरते इलाहिया) की बड़ी निशानी है, और उनमें से अक्सर लोग मोमिन न थे।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝٦٨ ع

68. और बेशक आपका रब ही यक़ीनन ग़ालिब रह़मत वाला है।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ اِبْرٰهِيْمَ ۝٦٩

69. और आप उन पर इब्राहीम (عليه السلام) का क़िस्सा (भी) पढ़ कर सुना दें।

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَا تَعْبُدُونَ ﴿٧٠﴾

70. जब उन्होंने अपने बाप ★और अपनी क़ौमसे फ़रमाया : तुम किस चीज़को पूजते हो।

قَالُوا نَعْبُدُ أَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا عَاكِفِينَ ﴿٧١﴾

71. उन्होंने कहा : हम बुतोंकी परस्तिश करते हैं और हम उन्ही (की इबादतो ख़िदमत) के लिए जमे रेहनेवाले हैं।

قَالَ هَلْ يَسْمَعُونَكُمْ إِذْ تَدْعُونَ ﴿٧٢﴾

72. (इब्राहीम عليه السلام ने) फ़रमाया : क्या वोह तुम्हें सुनते हैं जब तुम (उनको) पुकारते हो?

أَوْ يَنفَعُونَكُمْ أَوْ يَضُرُّونَ ﴿٧٣﴾

73.या वोह तुम्हें नफ़ा' पहुंचाते हैं या नुक़्सान पहुंचाते हैं?

قَالُوا بَلْ وَجَدْنَا آبَاءَنَا كَذَٰلِكَ يَفْعَلُونَ ﴿٧٤﴾

74. वोह बोले (येह तो मा'लूम नहीं) लेकिन हमने अपने बापदादा को ऐसा ही करते पाया था।

قَالَ أَفَرَأَيْتُم مَّا كُنتُمْ تَعْبُدُونَ ﴿٧٥﴾

75. (इब्राहीम عليه السلام ने) फ़रमाया : क्या तुमने (कभी उनकी ह़क़ीक़त में) ग़ौर किया है जिनकी तुम परस्तिश करते हो।

أَنتُمْ وَآبَاؤُكُمُ الْأَقْدَمُونَ ﴿٧٦﴾

76. तुम और तुम्हारे अगले आबाओ अजदाद (अल ग़रज़ किसीने भी सोचा)?

فَإِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّي إِلَّا رَبَّ الْعَالَمِينَ ﴿٧٧﴾

77. पस वोह (सब बुत) मेरे दुश्मन हैं सिवाए तमाम जहानोंके रबके (वोही मेरा मा'बूद है)।

الَّذِي خَلَقَنِي فَهُوَ يَهْدِينِ ﴿٧٨﴾

78. वोह जिसने मुझे पैदा किया सो वोही मुझे हिदायत फ़रमाता है।

وَالَّذِي هُوَ يُطْعِمُنِي وَيَسْقِينِ ﴿٧٩﴾

79. और वोही है जो मुझे खिलाता और पिलाता है।

وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِينِ ﴿٨٠﴾

80. और जब मैं बीमार हो जाता हूं तो वोही मुझे शिफ़ा देता है।

وَالَّذِي يُمِيتُنِي ثُمَّ يُحْيِينِ ﴿٨١﴾

81. और वोही मुझे मौत देगा फिर वोही मुझे (दोबारा) ज़िन्दा फ़रमाएगा।

وَالَّذِي أَطْمَعُ أَن يَغْفِرَ لِي خَطِيئَتِي

82. और उसीसे में उम्मीद रखता हूं के रोज़े क़ियामत

★(येह ह़क़ीक़ी बाप न था। चचा था उसीने ह़ज़रत इब्राहीम عليه السلام की परवरिश की थी जिसकी वजहसे उसे बाप कहा करते थे। उसका नाम आज़र है जबकि आपके ह़क़ीक़ी वालिदका नाम तारिख़ है)।

يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿٨٢﴾

वोह मेरी ख़ताएं मुआ़फ़ फ़रमा देगा।

رَبِّ هَبْ لِيْ حُكْمًا وَّ اَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٣﴾

83. ऐ मेरे रब मुझे इल्मो अ़मल में कमाल अ़ता फ़रमा और मुझे अपने कुर्बे ख़ास के सज़ावारों में शामिल फ़रमा ले।

وَاجْعَلْ لِّيْ لِسَانَ صِدْقٍ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿٨٤﴾

84. और मेरे लिए बाद में आनेवालों में (भी) ज़िक्रे ख़ैर और कुबूलियत जारी फ़रमा।

وَاجْعَلْنِيْ مِنْ وَّرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيْمِ ﴿٨٥﴾

85.और मुझे ने'मतोंवाली जन्नत के वारिसों में से बना दे।

وَاغْفِرْ لِاَبِيْٓ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿٨٦﴾

86. और मेरे बापको बख़्श दे बेशक वोह गुमराहों में से था।

وَلَا تُخْزِنِيْ يَوْمَ يُبْعَثُوْنَ ﴿٨٧﴾

87. और मुझे (उस दिन) रुस्वा न करना जिस दिन लोग कब्रों से उठाए जाएंगे।

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَّلَا بَنُوْنَ ﴿٨٨﴾

88. जिस दिन न कोई माल नफ़ा' देगा और न औलाद।

اِلَّا مَنْ اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ﴿٨٩﴾

89. मगर वोही शख़्स (नफ़ा' मंद होगा) जो अल्लाह की बारगाह में सलामतीवाले बेऐब दिलके साथ हाज़िर हुवा।

وَاُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٩٠﴾

90. और (उस दिन) जन्नत परहेज़गारों के क़रीब कर दी जाएगी।

وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِلْغٰوِيْنَ ﴿٩١﴾

91.और दोज़ख़ गुमराहों के सामने ज़ाहिर कर दी जाएगी।

وَقِيْلَ لَهُمْ اَيْنَمَا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ﴿٩٢﴾

92. और उनसे कहा जाएगा वोह (बुत) कहां हैं जिन्हें तुम पूजते थे।

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ هَلْ يَنْصُرُوْنَكُمْ اَوْ يَنْتَصِرُوْنَ ﴿٩٣﴾

93. अल्लाह के सिवा, क्या वोह तुम्हारी मदद कर सक्ते हैं या खुद अपनी मदद कर सक्ते हैं ? (किअपने आपको दोज़ख़से बचा लें)।

فَكُبْكِبُوْا فِيْهَا هُمْ وَالْغَاوٗنَ ﴿٩٤﴾

94. सो वोह (बुत भी) उस (दोज़ख़) में औंधे मुंह गिरा दिए जाएंगे और गुमराह लोग (भी)।

95. और इब्लीस की सारी फ़ौजें (भी वासिले जहन्नम होंगी)।

وَجُنُوْدُ اِبْلِيْسَ اَجْمَعُوْنَ ﴿٩٥﴾

96. वोह (गुमराह लोग) उस (दोज़ख़) में बाहम झगड़ा करते हुए कहेंगे।

قَالُوْا وَهُمْ فِيْهَا يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٩٦﴾

97. अल्लाहकी क़सम हम खुली गुमराही में थे।

تَاللّٰهِ اِنْ كُنَّا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٩٧﴾

98. जब हम तुम्हें सब जहानों के रब के बराबर ठेहराते थे।

اِذْ نُسَوِّيْكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٨﴾

99. और हमको (उन) मुजरिमों के सिवा किसीने गुमराह नहीं किया।

وَمَآ اَضَلَّنَآ اِلَّا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٩٩﴾

100. सो (आज) न कोई हमारी सिफ़ारिश करनेवाला है।

فَمَا لَنَا مِنْ شَافِعِيْنَ ﴿١٠٠﴾

101. और न कोई गरम जोश दोस्त है।

وَلَا صَدِيْقٍ حَمِيْمٍ ﴿١٠١﴾

102. सो काश हमें एक बार (दुनिया में) पलटना (नसीब) हो जाता तो हम मोमिन हो जाते।

فَلَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٢﴾

103. बेशक इस (वाक़िए) में (क़ुदरते इलाहिया की) बड़ी निशानी है, और उनके अक्सर लोग मोमिन न थे।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٣﴾

104. और बेशक आपका रब ही यक़ीनन ग़ालिब रहमत वाला है।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٠٤﴾

105. नूह (عليه السلام) की क़ौमने (भी) पयग़म्बरों को झुटलाया।

كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوْحِ ِۨ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٠٥﴾

106. जब उनसे उनके (क़ौमी) भाई नूह (عليه السلام) ने फ़रमाया : क्या तुम (अल्लाहसे) डरते नहीं हो ?

اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ نُوْحٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٠٦﴾

107. बेशक मैं तुम्हारे लिए अमानतदार रसूल (बन कर आया) हूं।

اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٠٧﴾

108. सो तुम अल्लाहसे डरो और मेरी इताअ़त करो।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٠٨﴾

109. और मैं तुमसे इस (तबलीगे़ हक़्) पर कोई मुआ़वज़ा नहीं मांगता, मेरा अज्र तो सिर्फ़ सब जहानोंके रब के ज़िम्मे है।

وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰي رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٩﴾

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١١٠﴾

110.पस तुम अल्लाहसे डरो और मेरी फ़रमां बरदारी करो।

قَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ لَكَ وَاتَّبَعَكَ الْاَرْذَلُوْنَ ﴿١١١﴾

111. वोह बोले : क्या हम तुम पर ईमान ले आए हालांकि तुम्हारी पैरवी (मुआशरे के) इन्तिहाई निचले और हक़ीर (तब्क़ात के) लोग कर रहे हैं।

قَالَ وَمَا عِلْمِىْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١١٢﴾

112. (नूह عليه السلام ने) फ़रमाया : मेरे इल्म को उनके (पेशावराना) कामों से क्या सरोकार ?

اِنْ حِسَابُهُمْ اِلَّا عَلٰى رَبِّىْ لَوْ تَشْعُرُوْنَ ﴿١١٣﴾

113. उनका हिसाब तो सिर्फ़ मेरे रब ही के ज़िम्मे है। काश तुम समझते (कि हक़ीक़ी इ़ज़्ज़तो ज़िल्लत क्या है)।

وَمَآ اَنَا بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١١٤﴾

114. और मैं मोमिनों को धुतकारने वाला नहीं हूं।

اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١١٥﴾

115. मैं तो फ़क़त खुला डर सुनानेवाला हूं।

قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ يٰنُوْحُ لَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْمَرْجُوْمِيْنَ ﴿١١٦﴾

116. वोह बोले : ऐ नूह ! अगर तुम (इन बातोंसे) बाज़ न आए तो तुम्हें यक़ीनन संगसार कर दिया जाएगा।

قَالَ رَبِّ اِنَّ قَوْمِىْ كَذَّبُوْنِ ﴿١١٧﴾

النصف

117. (नूह عليه السلام ने) अर्ज़ किया : ए मेरे रब ! मेरी क़ौमने मुझे झुटला दिया।

فَافْتَحْ بَيْنِىْ وَبَيْنَهُمْ فَتْحًا وَّنَجِّنِىْ وَمَنْ مَّعِىَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١١٨﴾

118. पस तू मेरे और उनके दरमियान फ़ैसला फ़रमा दे और मुझे और उन मोमिनों को जो मेरे साथ हैं नजात दे दे।

فَاَنْجَيْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ فِى الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿١١٩﴾

119. पस हमने उनको और जो उनके साथ भरी हुई कश्ती में (सवार) थे नजात दे दी।

ثُمَّ اَغْرَقْنَا بَعْدُ الْبٰقِيْنَ ﴿١٢٠﴾

120. फिर उसके बाद हमने बाक़ी मान्दा लोगों को ग़र्क़ कर दिया।

اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٢١﴾

121. बेशक इस (वाक़िए) में (क़ुदरते इलाहिया की) बड़ी निशानी है, और उनके अक्सर लोग मोमिन न थे।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٢٢﴾ ع ٦ ١٨ ١٠

122. और बेशक आपका रब ही यक़ीनन ग़ालिब रह़मत वाला है।

كَذَّبَتْ عَادُ ۨالْمُرْسَلِيْنَ ﴿۱۲۳﴾

123. (क़ौमे) आ़दने (भी) पैग़म्बरो को झुटलाया।

اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ هُوْدٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿۱۲۴﴾

124. जब उसे उनके (क़ौमी) भाई हूद (عليه السلام) ने फ़रमाया : क्या तुम (अल्लाहसे) डरते नहीं हो ?

اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿۱۲۵﴾

125. बेशक मैं तुम्हारे लिए अमानतदार रसूल (बन कर आया) हूं।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿۱۲۶﴾

126. सो तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअ़त करो।

وَمَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۲۷﴾

127. और मैं तुमसे इस (तबलीग़े हक) पर कोई मुआ़वज़ा नहीं मांगता, मेरा अज्र तो फ़क़त तमाम जहानों के रबके ज़िम्मे है।

اَتَبْنُوْنَ بِكُلِّ رِيْعٍ اٰيَةً تَعْبَثُوْنَ ﴿۱۲۸﴾

128. क्या तुम हर ऊंची जगह पर एक यादगार ता'मीर करते हो (महज़) तफ़ाख़ुर और फ़ुज़ूल मशग़लों के लिए।

وَتَتَّخِذُوْنَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُوْنَ ﴿۱۲۹﴾

129. और तुम (तालाबोंवाले) मज़बूत महल्लात बनाते हो इस उम्मीद पर कि तुम (दुनिया में) हमेशा रहोगे।

وَاِذَا بَطَشْتُمْ بَطَشْتُمْ جَبَّارِيْنَ ﴿۱۳۰﴾

130. और जब तुम किसी की गिरफ़्त करते हो तो सख़्त ज़ालिमो जाबिर बन कर गिरफ़्त करते हो।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿۱۳۱﴾

131. सो तुम अल्लाह से डरो और मेरी फ़रमां बरदारी इख़्तियार करो।

وَاتَّقُوا الَّذِيْۤ اَمَدَّكُمْ بِمَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۳۲﴾

132. और उस (अल्लाह) से डरो जिसने तुम्हारी उन चीज़ों से मदद की जो तुम जानते हो।

اَمَدَّكُمْ بِاَنْعَامٍ وَّبَنِيْنَ ﴿۱۳۳﴾

133. उसने तुम्हारी चैपाया जानवरों और औलाद से मदद फ़रमाई।

وَجَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿۱۳۴﴾

134. और बाग़ात और चश्मों से (भी)।

اِنِّيْۤ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿۱۳۵﴾

135. बेशक मैं तुम पर एक ज़बरदस्त दिनके अ़ज़ाबका ख़ौफ़ रखता हूं।

قَالُوْا سَوَآءٌ عَلَيْنَاۤ اَوَعَظْتَ اَمْ لَمْ

136. वोह बोले : हमारे हक़ में बराबर है ख़्वाह तुम

تَكُنْ مِّنَ الْوٰعِظِيْنَ ﴿١٣٦﴾

नसीहत करो या नसीहत करनेवालों में न बनो (हम नहीं मानेंगे)।

اِنْ هٰذَآ اِلَّا خُلُقُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٣٧﴾

137. येह (और) कुछ नहीं मगर सिर्फ़ पहले लोगों की आ़दात (व अतवार) हैं (जिन्हें हम छोड़ नहीं सक्ते)।

وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿١٣٨﴾

138. और हम पर अ़ज़ाब नहीं किया जाएगा।

فَكَذَّبُوْهُ فَاَهْلَكْنٰهُمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٩﴾

139. सो उन्होंने उसको (या'नी हूद عليه السلام को) झुटला दिया पस हमने उन्हें हलाक कर डाला, बेशक इस (क़िस्से) में (कुदरते इलाहिया की) बड़ी निशानी है, और उनमें से अक्सर लोग मोमिन न थे।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٤٠﴾

140. और बेशक आपका रब ही यक़ीनन गालिब रह़मत वाला है।

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٤١﴾

141. (क़ौमे) समूद ने (भी) पयग़म्बरों को झुटलाया।

اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ صٰلِحٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٤٢﴾

142. जब उनसे उनके (क़ौमी) भाई सालेह़ (عليه السلام) ने फ़रमाया : क्या तुम (अल्लाह से) डरते नहीं हो ?

اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٤٣﴾

143. बेशक मैं तुम्हारे लिए अमानतदार रसूल (बन कर आया) हूं।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٤٤﴾

144. पस तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअ़त करो।

وَمَآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٤٥﴾

145. और मैं तुमसे इस (तबलीग़े ह़क़) पर कुछ मुआ़वज़ा तलब नहीं करता, मेरा अज्र तो सिर्फ़ सारे जहानों के परवरदिगार के ज़िम्मे है।

اَتُتْرَكُوْنَ فِيْ مَا هٰهُنَآ اٰمِنِيْنَ ﴿١٤٦﴾

146. क्या तुम उन (ने'मतों) में जो यहां (तुम्हें मुयस्सर) हैं (हमेशा के लिए) अम्नो इत्मीनान से छोड़ दिए जाओगे ?

فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿١٤٧﴾

147. (या'नी यहां के) बाग़ों और चश्मों में।

وَّزُرُوْعٍ وَّنَخْلٍ طَلْعُهَا هَضِيْمٌ ﴿١٤٨﴾

148. और खेतों और खजूरों में जिनके खूशे नर्मो नाज़ुक होते हैं।

وَتَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا فٰرِهِيْنَ ﴿١٤٩﴾

149. और तुम (संग तराशी की) महारत के साथ पहाड़ों में तराश (तराश) कर मकानात बनाते हो।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٥٠﴾

150. पस तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअ़त करो।

وَلَا تُطِيْعُوْٓا اَمْرَ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿١٥١﴾

151.और ह़दसे तजावुज़ करनेवालों का केहना न मानो।

الَّذِيْنَ يُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ وَلَا يُصْلِحُوْنَ ﴿١٥٢﴾

152. जो ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं और (मुआ़शरे की) इस्लाह़ नहीं करते।

قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ﴿١٥٣﴾

153. वोह बोले कि तुम फ़क़त जादूज़दह लोगों में से हो।

مَآ اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۚ فَاْتِ بِاٰيَةٍ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١٥٤﴾

154. तुम तो मह़ज़ हमारे जैसे बशर हो पस तुम कोई निशानी ले आओ अगर तुम सच्चे हो।

قَالَ هٰذِهٖ نَاقَةٌ لَّهَا شِرْبٌ وَّلَكُمْ شِرْبُ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿١٥٥﴾

155. (सालेह़ ﷺ ने) फ़रमाया : (वोह निशानी) येह ऊंटनी है पानी का एक वक़्त उसके लिए (मुक़र्रर) है और एक मुक़र्ररा दिन तुम्हारे पानी की बारी है।

وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٥٦﴾

156. और उसे बुराई (के इरादे) से हाथ मत लगाना वरना बड़े (सख़्त) दिन का अ़ज़ाब तुम्हें आ पकड़ेगा।

فَعَقَرُوْهَا فَاَصْبَحُوْا نٰدِمِيْنَ ﴿١٥٧﴾

157. फिर उन्होंने उसकी कौंचे काट डालीं (सो उसे हलाक कर दिया) फिर वोह (अपने किए पर) पशेमान हो गए।

فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٥٨﴾

158. सो उन्हें अ़ज़ाबने आ पकड़ा बेशक इस (वाक़िए) में बड़ी निशानी है, और उनमें से अक्सर लोग मोमिन न थे।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٥٩﴾

159. और बेशक आपका रब ही बड़ा ग़ालिब रह़मत वाला है।

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوْطِ ِۨ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٦٠﴾

160. कौमे लूत ने (भी) पयग़म्बरों को झुटलाया।

اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ لُوْطٌ اَلَا

161. जब उनसे उनकी (कौमी) भाई लूत (ﷺ) ने

ع ٨ ١٩ ١٢

تَتَّقُوْنَ ﴿١٦١﴾

फ़रमाया : क्या तुम (अल्लाह से) डरते नहीं हो।

اِنِّیْ لَکُمْ رَسُوْلٌ اَمِیْنٌ ﴿١٦٢﴾

162. बेशक मैं तुम्हारे लिए अमानतदार रसूल (बन कर आया) हूं।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِیْعُوْنِ ﴿١٦٣﴾

163. पस तुम अल्लाहसे डरो और मेरी इताअ़त इख़्तियार करो।

وَمَاۤ اَسْـَٔلُکُمْ عَلَیْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِیَ اِلَّا عَلٰی رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿١٦٤﴾

164. और मैं तुमसे इस (तबलीग़े हक़) पर कोई उजरत तलब नहीं करता, मेरा अज्र तो सिर्फ़ तमाम जहानों के रब के ज़िम्मे है।

اَتَاْتُوْنَ الذُّکْرَانَ مِنَ الْعٰلَمِیْنَ ﴿١٦٥﴾

165. क्या तुम सारे जहानवालों में से सिर्फ़ मर्दों ही के पास (अपनी शहवानी ख़्वाहिशात पूरी करने के लिए) आते हो ?

وَتَذَرُوْنَ مَا خَلَقَ لَکُمْ رَبُّکُمْ مِّنْ اَزْوَاجِکُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ عٰدُوْنَ ﴿١٦٦﴾

166. और अपनी बीवियों को छोड़ देते हो जो तुम्हारे रबने तुम्हारे लिए पैदा की हैं, बल्कि तुम (सरकशी में) हदसे निकल जानेवाले लोग हो।

قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ یٰلُوْطُ لَتَکُوْنَنَّ مِنَ الْمُخْرَجِیْنَ ﴿١٦٧﴾

167. वोह बोले : ए लूत ! अगर तुम (इन बातों से) बाज़ न आए तो तुम ज़रूर शहर बदर किए जानेवालों में से हो जाओगे।

قَالَ اِنِّیْ لِعَمَلِکُمْ مِّنَ الْقَالِیْنَ ﴿١٦٨﴾

168. (लूत عليه السلام ने) फ़रमाया : बेशक मैं तुम्हारे अ़मलसे बेज़ार होनेवालों में से हूं।

رَبِّ نَجِّنِیْ وَاَهْلِیْ مِمَّا یَعْمَلُوْنَ ﴿١٦٩﴾

169. ऐ रब ! तू मुझे और मेरे घर वालों को उस (काम के वबाल) से नजात अ़ता फ़रमा जो येह कर रहे हैं।

فَنَجَّیْنٰهُ وَاَهْلَهٗۤ اَجْمَعِیْنَ ﴿١٧٠﴾

170. पस हमने उनको और उनके सब घरवालों को नजात अ़ता फ़रमा दी।

اِلَّا عَجُوْزًا فِی الْغٰبِرِیْنَ ﴿١٧١﴾

171. सिवाए एक बूढ़ी औ़रत के जो पीछे रेह जानेवालों में थी।

ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِیْنَ ﴿١٧٢﴾

172. फिर हमने दूसरों को हलाक कर दिया।

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِم مَّطَرًا ۖ فَسَاءَ مَطَرُ الْمُنذَرِينَ ﴿١٧٣﴾

173. और हमने उन पर (पथ्थरों की) बारिश बरसाई सो डराए हुए लोगों की बारिश कितनी तबाह कुन थी।

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٧٤﴾

174. बेशक इस (वाक़िए) में बड़ी निशानी है और उनके अक्सर लोग मोमिन न थे।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٧٥﴾

175. और बेशक आपका रब ही बड़ा ग़ालिब रह़मत वाला है।

كَذَّبَ أَصْحَابُ الْأَيْكَةِ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٧٦﴾

176. बाशिन्दगाने ऐका (या'नी जंगल के रेहनेवालों) ने (भी) रसूलों को झुटलाया।

إِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٧٧﴾

177. जब उनसे शुऐब (عليه السلام) ने फ़रमाया : क्या तुम (अल्लाह से) डरते नहीं हो ?

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٧٨﴾

178. बेशक मैं तुम्हारे लिए अमानतदार रसूल (बन कर आया) हूं।

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٧٩﴾

179. पस तुम अल्लाहसे डरो और मेरी फ़रमांबरदारी इख़्तियार करो।

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٨٠﴾

180. और में तुमसे इस (तबलीगे़ ह़क़) पर कोई उजरत नहीं मांगता, मेरा अज्र तो सिर्फ़ तमाम जहानों के रब के ज़िम्मे है।

أَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُخْسِرِينَ ﴿١٨١﴾

181. तुम पैमाना पूरा भरा करो और (लोगों के हुक़ूक़ को) नुक़्सान पहुंच ने वाले न बनो।

وَزِنُوا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيمِ ﴿١٨٢﴾

182. और सीधी तराज़ू से तौला करो।

وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿١٨٣﴾

183. और लोगों को उनकी चीजें कम (तौलके साथ) मत दिया करो और मुल्क में (ऐसी अख़्लाक़ी, माली और समाजी ख़यानतों के ज़रीए) फ़साद अंगेज़ी मत करते फिरो।

وَاتَّقُوا الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالْجِبِلَّةَ الْأَوَّلِينَ ﴿١٨٤﴾

184. और उस (अल्लाह) से डरो जिसने तुमको और पेहली उम्मतों को पैदा फ़रमाया।

قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ﴿۱۸۵﴾

185. वोह केहने लगे : (ऐ शुऐ़ब !) तुम तो मह़ज़ जादूज़दा लोगों में से हो।

وَ مَآ اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَ اِنْ نَّظُنُّكَ لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿۱۸۶﴾

186. और तुम फ़क़त हमारे जैसे बशर ही तो हो और हम तुम्हें यक़ीनन झूटे लोगों में से ख़याल करते हैं।

فَاَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا مِّنَ السَّمَآءِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۱۸۷﴾

187. पस तुम हमारे उपर आस्मानका कोई टुकड़ा गिरा दो अगर तुम सच्चे हो।

قَالَ رَبِّيْٓ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۸۸﴾

188. (शुऐ़ब عليه السلام ने) फ़रमाया : मेरा रब उन (कारस्तानियों) को खूब जाननेवाला है जो तुम अंजाम दे रहे हो।

فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَهُمْ عَذَابُ يَوْمِ الظُّلَّةِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿۱۸۹﴾

189. सो उन्होंने शुऐ़ब (عليه السلام) को झुटला दिया पस उन्हें साइबान के दिन के अ़ज़ाबने आ पकड़ा, बेशक वोह ज़बरदस्त दिन का अ़ज़ाब था।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَ مَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۹۰﴾

190. बेशक इस (वाक़िए) में बड़ी निशानी है, और उनके अक्सर लोग मोमिन न थे।

وَ اِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۹۱﴾

191. और बेशक आपका रबही बड़ा ग़ालिब रह़मतवाला है।

وَ اِنَّهٗ لَتَنْزِيْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۹۲﴾

192. और बेशक येह (क़ुरआन) सारे जहानों के रब का नाज़िल कर्दह है।

نَزَلَ بِهِ الرُّوْحُ الْاَمِيْنُ ﴿۱۹۳﴾

193. इसे रूहुल अमीन (जिब्राईल عليه السلام) ले कर उतरा है।

عَلٰى قَلْبِكَ لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ﴿۱۹۴﴾

194. आपके क़ल्बे (अनवर) पर ताकि आप (नाफ़रमानों को) डर सुनानेवालों में से हो जाएं।

بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ مُّبِيْنٍ ﴿۱۹۵﴾

195.(इसका नुज़ूल) फ़सीह़ अ़रबी ज़बान में (हुआ) है।

وَ اِنَّهٗ لَفِيْ زُبُرِ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۱۹۶﴾

196. और बेशक येह पेहली उम्मतों के सह़ीफ़ों में (भी मज़्कूर) है।

اَوَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ اٰيَةً اَنْ يَّعْلَمَهٗ

197. और क्या उन के लिए (सदाक़ते क़ुरआन और

عُلَمٰٓؤُا بَنِيٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿١٩٧﴾

सदाक़ते नुबुव्वते मुहम्मदी ﷺ की) येह दलील (काफ़ी) नहीं है कि उसे बनी इसराईल के उ़लमा (भी) जानते हैं।

وَلَوْ نَزَّلْنٰهُ عَلٰى بَعْضِ الْاَعْجَمِيْنَ ﴿١٩٨﴾

198. और अगर हम उसे ग़ैर अ़रबी लोगों (या'नी अ़जमियों) में से किसी पर नाज़िल करते।

فَقَرَاَهٗ عَلَيْهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ مُؤْمِنِيْنَ ﴿١٩٩﴾

199. सो वोह उसको उन लोगों पर पढ़ता तो (भी) येह लोग इस पर ईमान लानेवाले न होते।

كَذٰلِكَ سَلَكْنٰهُ فِيْ قُلُوْبِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٢٠٠﴾

200. इस तरह हमने उस (के इन्कार) को मुजरिमों के दिलों में पुख़्तगी से दाख़िल कर दिया है।

لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿٢٠١﴾

201. वोह उस पर ईमान नहीं लाऐंगे यहां तक कि दर्दनाक अ़ज़ाब देख लें।

فَيَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٠٢﴾

202. पस वोह (अ़ज़ाब) उन्हें अचानक आ पहुंचेगा और उन्हें शऊ़र (भी) न होगा।

فَيَقُوْلُوْا هَلْ نَحْنُ مُنْظَرُوْنَ ﴿٢٠٣﴾

203. तब वोह कहेंगे : क्या हमें मोहलत दी जाएगी ?

اَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿٢٠٤﴾

204. क्या येह हमारे अ़ज़ाबमें जल्दी के तलबगार हैं ?

اَفَرَءَيْتَ اِنْ مَّتَّعْنٰهُمْ سِنِيْنَ ﴿٢٠٥﴾

205. भला बताइए अगर हम उन्हें बरसों फ़ायदाह पहुंचाते रहे।

ثُمَّ جَآءَهُمْ مَّا كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ﴿٢٠٦﴾

206. फिर उनके पास वोह (अ़ज़ाब) आ पहुंचे जिसका उन्से वा'दाह किया जा रहा है।

مَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يُمَتَّعُوْنَ ﴿٢٠٧﴾

207. (तो) वोह चीजें (उनसे अ़ज़ाब को दफ़ा करने में) क्या काम आएंगी जिनसे वोह फ़ायदाह उठाते रहे थे।

وَمَآ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا لَهَا مُنْذِرُوْنَ ﴿٢٠٨﴾ ع

208. और हमने सिवाए उन (बस्तियों) के जिनके लिए डरानेवाले (आ चुके) थे किसी बस्ती को हलाक नहीं किया।

ذِكْرٰى وَمَا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٢٠٩﴾

209. (और येह भी) नसीहत के लिए और हम ज़ालिम न थे।

وَمَا تَنَزَّلَتْ بِهِ الشَّيٰطِيْنُ ﴿۲۱۰﴾

210. और शैतान इस (कुरआन) को ले कर नहीं उतरे।

وَمَا يَنْۢبَغِيْ لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿۲۱۱﴾

211. न (येह) उनके लिए सज़ावार है और न वोह (उसकी) ताक़त रख़ते हैं।

اِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ لَمَعْزُوْلُوْنَ ﴿۲۱۲﴾

212. बेशक वोह (इस कलाम के) सुनने से रोक दिऐ गए हैं।

فَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَكُوْنَ مِنَ الْمُعَذَّبِيْنَ ﴿۲۱۳﴾

213. पस (ऐ बंदे !) तु अल्लाहके साथ किसी दूसरे मा'बूद को न पूजा कर वरना तू अ़ज़ाब याफ़्ता लोगों में से हो जाएगा।

وَاَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنَ ﴿۲۱۴﴾

214. और (ऐ ह़बीबे मुकर्रम !) आप अपने क़रीबी रिश्तेदारों को (हमारे अ़ज़ाबसे) डराइए।

وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۲۱۵﴾

215. और आप अपना बाजूए (रह़मतो शफ़्क़त) उन मोमिनों के लिए बिछा दीजिए जिन्होंने आपकी पैरवी इख़्तियार कर ली है।

فَاِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۲۱۶﴾

216. फिर अगर वोह आपकी नाफ़रमानी करें तो आप फ़रमा दीजिए कि में इन आ'माले (बद) से बेज़ार हूं जो तुम अंजाम दे रहे हो।

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ﴿۲۱۷﴾

217.और बड़े ग़ालिब महरबान (रब) पर भरोसा रखिए।

الَّذِيْ يَرٰىكَ حِيْنَ تَقُوْمُ ﴿۲۱۸﴾

218. जो आपको (रातकी तन्हाइयों में भी) देख़ता है जब आप (नमाज़े तहज्जुद के लिए क़ियाम करते हैं।

وَتَقَلُّبَكَ فِي السّٰجِدِيْنَ ﴿۲۱۹﴾

219. और सज्दा गुजारों में (भी) आपका पलटना देखता (रेहता) है।

اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۲۲۰﴾

220. बेशक वोह खूब सुननेवाला जाननेवाला है।

هَلْ اُنَبِّئُكُمْ عَلٰى مَنْ تَنَزَّلُ الشَّيٰطِيْنُ ﴿۲۲۱﴾

221.क्या मैं तुम्हें बताऊं कि शयातीन किस पर उतरते हैं ?

تَنَزَّلُ عَلٰى كُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ﴿۲۲۲﴾

222. वोह हर झुठे (बोहतान तराज़्) गुनाहगार पर उतरा करते हैं।

يُّلْقُوْنَ السَّمْعَ وَاَكْثَرُهُمْ كٰذِبُوْنَ ﴿۲۲۳﴾

223. जो सुनी सुनाई बातें (उनके कानों में) डाल देते हैं और उन में से अक्सर झूटे होते हैं।

وَالشُّعَرَآءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوٗنَ ﴿۲۲۴﴾

224. और शाइरों की पैरवी बेहके हूए लोग ही करते हैं।

اَلَمْ تَرَ اَنَّهُمْ فِيْ كُلِّ وَادٍ يَّهِيْمُوْنَ ﴿۲۲۵﴾

225. क्या तुमने नहीं देखा के वोह (शोअरा) हर वादिए (ख़्याल) में (यूंही) सरगरदां फ़िरते रेहते हैं (उन्हें हक़ में सच्ची दिलचस्पी और संजीदगी नहीं होती बल्कि फ़क़त लफजी–व–फ़िक्री जौलानियों में मस्त और खुश रेहते हैं)।

وَاَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ مَا لَا يَفْعَلُوْنَ ﴿۲۲۶﴾

226. और येह के वोह (ऐसी बातें) केहते हैं जिन्हें (खुद) करते नहीं हैं।

اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَذَكَرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّانْتَصَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا ظُلِمُوْا ؕ وَسَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْۤا اَيَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ ﴿۲۲۷﴾

ع ١١ ٣٦ ١٥

227. सिवाए उन (शोअरा) के जो ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे और अल्लाहको कसरत से याद करते रहे (या'नी अल्लाह और रसूल ﷺ के मदह ख़्वां बन गए) और अपने ऊपर जुल्म होने के बाद (जालिमों से बजबाने शे'र) इन्तेकाम लिया (और अपने कलाम के ज़रीए इस्लाम और मजलूमों का दिफ़ा किया बल्कि उनका जौश बढ़ाया तो येह शाइरी मजमूम नहीं), और वोह लोग जिन्होंने जुल्म किया अ़न क़रीब जान लेंगे वोह (मरने के बाद) कौन सी पलटने की जगह पलट कर जाते हैं।

आयातुहा 93 | 27 सूरतुन नम्लि मक्किय्यतुन 48 | रुकूआ़तुहा 7

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमाने वाला है।

طٰسٓ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْقُرْاٰنِ وَكِتَابٍ مُّبِيْنٍ ﴿۱﴾

1. तासीन (हक़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं), येह कुरआन और रौशन किताब की आयतें हैं।

هُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢﴾

2. (जो) हिदायत है और (ऐसे) ईमानवालों के लिए खुशख़बरी है।

الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَ هُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ﴿٣﴾

3. जो नमाज़ क़ाइम करते हैं और जकात अदा करते हैं और वोही हैं जो आख़िरत पर (भी) यक़ीन रखते हैं।

اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ زَيَّنَّا لَهُمْ اَعْمَالَهُمْ فَهُمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿٤﴾

4. बेशक जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते हमने उनके आ'माले (बद उनकी निगाहोंमें) खुशनुमा कर दिए हैं सो वोह (गुमराही में) सरगर्दां रेहते हैं।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْعَذَابِ وَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ ﴿٥﴾

5. यही वोह लोग हैं जिन के लिए बुरा अज़ाब है और येही लोग आख़िरत में (सब से) ज़ियादह नुक़्सान उठानेवाले हैं।

وَ اِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْاٰنَ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ عَلِيْمٍ ﴿٦﴾

6. और बेशक आपको (येह) क़ुरआन बड़े हिक्मत वाले, इल्मवाले (रब) की तरफ़से सिखाया जा रहा है।

اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِاَهْلِهٖٓ اِنِّيْٓ اٰنَسْتُ نَارًا ؕ سَاٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ اٰتِيْكُمْ بِشِهَابٍ قَبَسٍ لَّعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ﴿٧﴾

7. (वोह वाक़िआ याद करें) जब मूसा (عليه السلام) ने अपनी अहलीया से फ़रमाया के मैंने एक आग देखी है (या मुझे एक आगमें शौलए उन्सो मुहोब्बत नज़र आया है), अनक़रीब में तुम्हारे पास उसमें से कोई ख़बर लाता हूं (जिसके लिए मुद्दतसे दश्तो बयांबां में फिर रहे हैं) या तुम्हें (भी उस में से) कोई चमकता हुआ अंगारा ला देता हूं ताकि तुम (भी) उसकी हरारतसे) तप उठो।

فَلَمَّا جَآءَهَا نُوْدِيَ اَنْۢ بُوْرِكَ مَنْ فِي النَّارِ وَمَنْ حَوْلَهَا ؕ وَ سُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨﴾

8. फिर जब वोह उसके पास आ पहुंचे तो आवाज़ दी गई के बा बरकत है जो इस आग में (अपने हिजाबे नूरकी तजल्ली फ़रमा रहा) है और वोह (भी) जो उसके आसपास (उलूही जल्वों के परतव में) है, और अल्लाह (हर क़िस्म के जिस्मो मिसाल से) पाक है जो सारे जहानों का रब है।

يٰمُوْسٰۤى اِنَّهٗۤ اَنَا اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۙ ﴿٩﴾

9. ऐ मूसा ! बेशक वोह (जल्वा फ़रमानेवाला) मैं ही अल्लाह हूं जो निहायत ग़ालिब हिक्मत वाला है।

وَ اَلْقِ عَصَاكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّ لَمْ يُعَقِّبْ ؕ يٰمُوْسٰى لَا تَخَفْ ۫ اِنِّیْ لَا يَخَافُ لَدَیَّ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿١٠﴾

10. और (ऐ मूसा!) अपनी लाठी (ज़मीन पर) डाल दो, फिर जब (मूसाने लाठीको ज़मीन पर डालने के बाद) उसे देखा कि सांप की मानिन्द तेज़ हरकत कर रही है तो (फित्री रद्दे अमल के तौर पर) पीठ फेर कर भागे और पीछे मुड़ कर (भी) न देखा (इर्शाद हूआ) : ऐ मूसा ! ख़ौफ़ न करो बेशक पयग़म्बर मेरे हुज़ूर डरा नहीं करते।

اِلَّا مَنْ ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ حُسْنًۢا بَعْدَ سُوْٓءٍ فَاِنِّیْ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١﴾

11. मगर जिसने जुल्म किया फिर बुराई के बाद (उसे) नेकीसे बदल दिया तो बेशक मैं बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान हूं।

وَ اَدْخِلْ يَدَكَ فِیْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ ۫ فِیْ تِسْعِ اٰيٰتٍ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَ قَوْمِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿١٢﴾

12. और तुम अपना हाथ अपने गिरेबान के अंदर डालो वोह बिग़ैर किसी अैबके सफ़ेद चमकदार (हो कर) निकलेगा (येह दोनों अल्लाहकी उन) नौ निशानियों में (से) हैं (उन्हें ले कर) फ़िरऔन और उसकी क़ौमके पास जाओ। बेशक वोह ना फ़रमान क़ौम हैं।

فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ اٰيٰتُنَا مُبْصِرَةً قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۚ ﴿١٣﴾

13. फिर जब उनके पास हमारी निशानियां वाज़ेह़ और रौशन हो कर पहुंच गईं तो वोह केहने लगे के येह खुला जादू है।

وَ جَحَدُوْا بِهَا وَ اسْتَيْقَنَتْهَاۤ اَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَّ عُلُوًّا ؕ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿١٤﴾

14. और उन्होंने जुल्म और तकब्बुर के तौर पर उनका सरासर इन्कार कर दिया हालांकि उनके दिल उन (निशानियों के हक़ होने) का यक़ीन कर चुके थे। पस आप देखिए के फ़साद बपा करने वालों का कैसा (बुरा) अंजाम हूआ।

وَ لَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ وَ سُلَيْمٰنَ عِلْمًا ۚ وَ قَالَا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ فَضَّلَنَا عَلٰى كَثِيْرٍ مِّنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٥﴾

15. और बेशक हमने दाऊद और सुलैमान (عليهما السلام) को (ग़ैर मामूली) इल्म अता किया, और दोनों ने कहा के सारी ता'रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जिसने हमें अपने बहुतसे मोमिन बंदों पर फ़ज़ीलत बख़्शी है।

وَوَرِثَ سُلَيْمٰنُ دَاوٗدَ وَقَالَ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ عُلِّمْنَا مَنْطِقَ الطَّيْرِ وَاُوْتِيْنَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ ۗ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَضْلُ الْمُبِيْنُ ﴿١٦﴾

16. और सुलैमान (عليه السلام), दाऊद (عليه السلام) के जानशीन हूए और उन्होंने कहा : ऐ लोगो ! हमें परिन्दोंकी बोली (भी) सिखाई गई है और हमें हर चीज अ़ता की गई है। बेशक येह (अल्लाह का) वाज़ेह़ फ़ज़्ल है।

وَحُشِرَ لِسُلَيْمٰنَ جُنُوْدُهٗ مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿١٧﴾

17. और सुलैमान (عليه السلام) के लिए उनके लश्कर जिन्नों और इन्सानों और परिन्दों (की तमाम जिन्सों) में से जमा' किए गएथे, चुनान्चे वोह बगर्जे नज़्मो तर्बियत (उनकी खि़दमत में) रोके जाते थे।

حَتّٰٓى اِذَآ اَتَوْا عَلٰى وَادِ النَّمْلِ ۙ قَالَتْ نَمْلَةٌ يّٰٓاَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوْا مَسٰكِنَكُمْ ۚ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمٰنُ وَجُنُوْدُهٗ ۙ وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٨﴾

18. यहां तककि जब वोह (लश्कर) च्यूंटियों के मेदान पर पहुंचे तो एक च्यूंटी केहने लगी : ऐ च्यूंटियो ! अपनी रिहाईशगाहों में दाखिल हो जाओ कहीं सुलैमान (عليه السلام) और उनके लश्कर तुम्हें कुचल न दें इस ह़ालमें किउन्हें खबर भी न हो।

فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ قَوْلِهَا وَقَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِيْٓ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَاَدْخِلْنِيْ بِرَحْمَتِكَ فِيْ عِبَادِكَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٩﴾

19. तो वोह (या'नी सुलैमान عليه السلام) इस (च्यूंटी) की बात से हंसी के साथ मुस्कुराऐ और अर्ज किया : ऐ परवरदिगार ! मुझे अपनी तौफ़ीक़ से इसबात पर क़ायम रख कि मैं तेरी इस ने'मतका शुक्र बजा लाता रहूं जो तुने मुझ पर और मेरे वालिदैन पर इनाम फ़रमाई है और में ऐसे नेक अ़मल करता रहूं जिनसे तू राज़ी होता है और मुझे अपनी रहमतसे अपने खास कुर्बवाले नेकूकार बंदों में दाखि़ल फ़रमा ले।

وَتَفَقَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَآ اَرَى الْهُدْهُدَ ۖ اَمْ كَانَ مِنَ الْغَاۤىِٕبِيْنَ ﴿٢٠﴾

20. और सुलैमान (عليه السلام) ने परिन्दों का जाइज़ा लिया तो केहने लगे : मुझे क्या हुआ है कि में हुद हुद को नहीं देख पा रहा या वोह (वाक़ई) ग़ाइब हो गया है।

لَاُعَذِّبَنَّهٗ عَذَابًا شَدِيْدًا اَوْ

21. मैं उसे (बिगैर इजाज़त ग़ाइब होने पर) ज़रूर सख़्त

لَاَاذْبَحَنَّهٗۤ اَوْ لَيَاْتِيَنِّيْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿۲۱﴾

सज़ा दूंगा या उसे ज़रूर ज़ब्ह कर डालूंगा या वोह मेरे पास (अपने बेकसूर होने की) वाजेह दलील लाएगा।

فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيْدٍ فَقَالَ اَحَطْتُّ بِمَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ وَجِئْتُكَ مِنْ سَبَاٍۭ بِنَبَاٍ يَّقِيْنٍ ﴿۲۲﴾

22. पस वोह थोडी ही देर (बाहर) ठेहरा था कि उसने (हाज़िर हो कर) अर्ज किया : मुझे एक ऐसी बात मा' लूम हूई है जिस पर (शायद) आप मुत्तला' न थे और मैं आपके पास (मुल्के) सबासे एक यक़ीनी खबर लाया हूं।

اِنِّيْ وَجَدْتُّ امْرَاَةً تَمْلِكُهُمْ وَاُوْتِيَتْ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَّلَهَا عَرْشٌ عَظِيْمٌ ﴿۲۳﴾

23. मैं ने (वहां) एक ऐसी औरतको पाया है जो उन (या'नी मुल्के सबा के बाशिन्दों) पर हुकूमत करती है और उसे (मिल्कियतो इक़्तिदार में) हर एक चीज बख़्शी गई है और उसके पास बहुत बड़ा तख़्त है।

وَجَدْتُّهَا وَقَوْمَهَا يَسْجُدُوْنَ لِلشَّمْسِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿۲۴﴾

24. में ने उसे और उसकी कौमको अल्लाह के बजाए सूरजको सज्दा करते पाया है और शैतानने उनके आ'माले (बद) उनके लिए खूब खूशनुमा बना दिए हैं और उन्हें (तौहीद की) राहसे रोक दिया है सो वोह हिदायत नहीं पा रहे।

اَلَّا يَسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِيْ يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ﴿۲۵﴾

25. इसलिए (रोके गऐ हैं) के वोह इस अल्लाहके हुजूर सज्दा रैज़ न हों जो आस्मानों और ज़मीन में पोशीदा (हकाइक और मौजूदात) को बाहर निकालता (या'नी ज़ाहिर करता) है और उन (सब) चीज़ोंको जानता है जिसे तुम छुपाते हो और जिसे तुम आश्कार करते हो।

اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿۲۶﴾ السجدة

26. अल्लाहके सिवा कोई लाइके इबादत नहीं (वोही) अज़ीम तख्ते इक़्तिदार का मालिक है।

قَالَ سَنَنْظُرُ اَصَدَقْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿۲۷﴾

27. (सुलैमान (عليه السلام) ने) फ़रमाया : हम अभी देखते हैं क्या तू सच केह रहा है या झूट बोलने वालों से है।

السجدة ۸

اِذْهَبْ بِّكِتٰبِىْ هٰذَا فَاَلْقِهْ اِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانْظُرْ مَاذَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٨﴾

28. मेरा येह खत लेजा और उसे उनकी तरफ़ डाल दे फिर उनके पाससे हट आ फिर देख वोह किस बातकी तरफ़ रुजूअ़ करते हैं।

قَالَتْ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اِنِّىْۤ اُلْقِىَ اِلَىَّ كِتٰبٌ كَرِيْمٌ ﴿٢٩﴾

29. (मलिका ने) कहा : ऐ सरदारो ! मेरी तरफ़ एक नामए बुज़ुर्ग डाला गया है।

اِنَّهٗ مِنْ سُلَيْمٰنَ وَ اِنَّهٗ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿٣٠﴾

30. बेशक वोह (ख़त) सुलैमान (عليه السلام) की जानिबसे (आया) है और वोह अल्लाहके नामसे शुरु (किया गया) है जो बेहद महरबान बड़ा रहम फ़रमानेवाला है।

اَلَّا تَعْلُوْا عَلَىَّ وَاْتُوْنِىْ مُسْلِمِيْنَ ﴿٣١﴾

31. (इसका मजमून येह है) कि तुम लोग मुझ पर सर बुलंदी (की कोशिश) मत करो और फ़रमांबरदार हो कर मेरे पास आ जाओ।

قَالَتْ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَفْتُوْنِىْ فِىْۤ اَمْرِىْ ۚ مَا كُنْتُ قَاطِعَةً اَمْرًا حَتّٰى تَشْهَدُوْنِ ﴿٣٢﴾

32. (मलिका ने) कहा : ऐ दरबार वालो ! तुम मुझे मेरे (इस) मुआ़मले में मशवरा दो मैं किसी काम का क़तई फ़ैसला करने वाली नहीं हूं यहां तक कि तुम मेरे पास हाज़िर हो कर (इस अम्र के मुवाफ़िक़ या मुख़ालिफ) गवाही दो।

قَالُوْا نَحْنُ اُولُوْا قُوَّةٍ وَّ اُولُوْا بَاْسٍ شَدِيْدٍ ۙ وَّ الْاَمْرُ اِلَيْكِ فَانْظُرِىْ مَاذَا تَاْمُرِيْنَ ﴿٣٣﴾

33. उन्होंने कहा : हम ताक़तवर और सख्त जंगजू हैं मगर हुक्म आपके इख़्तियार में है सो आप (खुद ही) ग़ौर कर लें के आप क्या हुक्म देती है।

قَالَتْ اِنَّ الْمُلُوْكَ اِذَا دَخَلُوْا قَرْيَةً اَفْسَدُوْهَا وَ جَعَلُوْۤا اَعِزَّةَ اَهْلِهَاۤ اَذِلَّةً ۚ وَكَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٤﴾

34. (मलिका ने) कहा : बेशक जब बादशाहकी बस्तीमें दाख़िल होते हैं तो उसे तबाहो बरबाद कर देते हैं और वहां के बा इ़ज़्ज़त लोगों को ज़लीलो रुस्वा कर डालते हैं और येह (लोग भी) इसी तरह करेंगे।

وَ اِنِّىْ مُرْسِلَةٌ اِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنٰظِرَةٌۢ بِمَ يَرْجِعُ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٣٥﴾

35. और बेशक मैं उनकी तरफ़ कुछ तोह़फ़ा भेजनेवाली हूं फिर देखती हूं क़ासिद क्या जवाब ले कर वापस लौटते हैं।

فَلَمَّا جَآءَ سُلَيْمٰنَ قَالَ اَتُمِدُّوْنَنِ بِمَالٍ فَمَآ اٰتٰىنِۦَ اللّٰهُ خَيْرٌ مِّمَّآ اٰتٰىكُمْ ۚ بَلْ اَنْتُمْ بِهَدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُوْنَ ﴿٣٦﴾

36. सो जब वोह (क़ासिद) सुलैमान (عليه السلام) के पास आया (तो सुलैमान عليه السلام ने उससे) फ़रमाया : क्या तुम लोग मालो दौलतसे मेरी मदद करना चाहते हो। सो जो कुछ अल्लाहने मुझे अ़ता फ़रमाया है उस (दौलत) से बेहतर है जो उसने तुम्हें अ़ता की है बल्कि तुमही हो जो अपने तोहफ़े से फरहां (और) नाजां हो।

اِرْجِعْ اِلَيْهِمْ فَلَنَاْتِيَنَّهُمْ بِجُنُوْدٍ لَّا قِبَلَ لَهُمْ بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُمْ مِّنْهَآ اَذِلَّةً وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ ﴿٣٧﴾

37. तो उनके पास (तोहफें समैत) वापस पलट जा सो हम उन पर ऐसे लश्करों के साथ (हुमला करने) आएंगे जिनसे उन्हें मुक़ाबले (की ताकत) नहीं होगी और हम उन्हें वहां से बे इज़्ज़त करके इस ह़ाल में निकालेंगे के वोह (कैदी बन कर) रुस्वा होंगे।

قَالَ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَيُّكُمْ يَاْتِيْنِيْ بِعَرْشِهَا قَبْلَ اَنْ يَّاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ﴿٣٨﴾

38. (सुलैमान عليه السلام ने) फ़रमाया : ऐ दरबार वालो ! तुम में से कौन उस (मलिका) का तख़्त मेरे पास ला सक्ता है कब्ल उसके के वोह लोग फ़रमांबरदार हो कर मेरे पास आ जाएं।

قَالَ عِفْرِيْتٌ مِّنَ الْجِنِّ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ تَقُوْمَ مِنْ مَّقَامِكَ ۚ وَاِنِّيْ عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ اَمِيْنٌ ﴿٣٩﴾

39. एक क़वी हैकल जिन ने अ़र्ज़ किया : में उसे आपके पास ला सक्ता हूं क़ब्ल उसके केआप अपने मुक़ामसे उठें और बेशक मैं उस (के लाने) पर ताकतवर (और) अमानतदार हूं।

قَالَ الَّذِيْ عِنْدَهٗ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ يَّرْتَدَّ اِلَيْكَ طَرْفُكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهٗ قَالَ هٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّيْ ۖ لِيَبْلُوَنِيْٓ ءَاَشْكُرُ اَمْ اَكْفُرُ ؕ وَمَنْ شَكَرَ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ

40. (फिर) एक ऐसे शख़्सने अ़र्ज़ किया जिसके पास (आस्मानी) किताबका कुछ इल्म था कि में उसे आपके पास ला सक्ता हूं कब्ल उसकेके आपकी निगाह आपकी तरफ़ पलटे (या'नी पलक झपकने से भी पेहले), फिर जब (सुलैमान عليه السلام ने) उस (तख्त) को अपने पास रखा हूवा देखा (तो) कहा : येह मेरे रबका फज़्ल है ताकि वोह मुझे आज़माए कि आया मैं शुक्रगुज़ारी करता हूं या नाशुक्री, और जिसने (अल्लाहका) शुक्र अदा किया सो वोह महज़ अपनी ही ज़ात के फ़ाइदे के लिए शुक्रमंदी

فَإِنَّ رَبِّي غَنِيٌّ كَرِيمٌ ﴿٤٠﴾

करता है और जिसने नाशुक्री की तो बेशक मेरा रब बेनियाज़, करम फ़रमाने वाला है।

قَالَ نَكِّرُوا لَهَا عَرْشَهَا نَنْظُرْ أَتَهْتَدِي أَمْ تَكُونُ مِنَ الَّذِينَ لَا يَهْتَدُونَ ﴿٤١﴾

41. (सुलैमान عليه السلام ने) फ़रमाया : उस (मलिका के इम्तेहान) के लिए उसके तख़्त की सूरत और हैअत बदल दो हम देखेंगे कि आया वोह (पहेचानकी) राह पाती है या उनमें से होती है जो सूझबूझ नहीं रखते।

فَلَمَّا جَاءَتْ قِيلَ أَهٰكَذَا عَرْشُكِ ۖ قَالَتْ كَأَنَّهُ هُوَ ۚ وَأُوتِينَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَا وَكُنَّا مُسْلِمِينَ ﴿٤٢﴾

42. फिर जब वोह (मलिका) आई तो उससे कहा गया : क्या तुम्हारा तख़्त इसी तरह़ का है, वोह केहने लगी : गोया येह वोही है और हमें इससे पहले ही (नुबुव्वते सुलैमान के ह़क़ होनेका) इल्म हो चुका था और हम मुसलमान हो चुके हैं।

وَصَدَّهَا مَا كَانَتْ تَعْبُدُ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۖ إِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ كَافِرِينَ ﴿٤٣﴾

43. और उस (मलिका) को उस (मा'बूदे बातिल) ने (पहले क़ुबूले ह़क़से) रोक रखा था जिसकी वोह अल्लाह के सिवा परस्तिश करती रही थी। बेशक वोह काफ़िरों की क़ौममें से थी।

قِيلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ ۖ فَلَمَّا رَأَتْهُ حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَكَشَفَتْ عَنْ سَاقَيْهَا ۚ قَالَ إِنَّهُ صَرْحٌ مُمَرَّدٌ مِنْ قَوَارِيرَ ۗ قَالَتْ رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي وَأَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمَانَ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٤﴾

44. उस (मलिका) से कहा गया : इस महलके सहनमें दाख़िल हो जा (जिसके नीचे नीलगूं पानी की लेहरें चलती थीं) फिर जब मलिकाने उस (मुज़य्यन बिल्लोरीं फ़र्श) को देखा तो उसे गेहरे पानीका तालाब समझा और उसने (पाईंचे उठा कर) अपनी दोनों पिंडलियां खोल दीं, सुलैमान (عليه السلام) ने फ़रमाया : येह तो मह़लका शीशों जड़ा सह़न है उस (मलिका)ने अ़र्ज़ किया : ऐ मेरे परवरदिगार ! (मैं इसी तरह़ फ़रेबे नज़र में मुब्तिला थी) बेशक मैंने अपनी जान पर ज़ुल्म किया और अब मैं सुलैमान (عليه السلام) की मइय्यत में उस अल्लाह की फ़रमांबरदार हो गई हूं जो तमाम जहानों का रब है।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ ثَمُودَ أَخَاهُمْ

45. और बेशक हमने क़ौमे समूद के पास उनके (कौमी)

صٰلِحًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ فَاِذَا هُمْ فَرِيْقٰنِ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٤٥﴾

भाई सालेह (عليه السلام) को पयग़म्बर बना कर) भेजा कि तुम लोग अल्लाहकी इबादत करो तो उस वक़्त वोह दो फ़िर्क़े हो गए जो आपस में झगड़ते थे।

قَالَ يٰقَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُوْنَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ ۚ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُوْنَ اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٤٦﴾

46. (सालेह عليه السلام ने) : फ़रमाया ऐ मेरी क़ौम! तुम लोग भलाई (या'नी रहमत) से पहले बुराई (या'नी अ़ज़ाब) में क्यों जल्दी चाहते हो ? तुम अल्लाहसे बख़्शिश क्यों तलब नहीं करते ताकि तुम पर रहम किया जाए ?

قَالُوا اطَّيَّرْنَا بِكَ وَبِمَنْ مَّعَكَ ؕ قَالَ طٰٓئِرُكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُوْنَ ﴿٤٧﴾

47. वोह केहने लगे : हमें तुमसे (भी) नहूसत पहुंची है और उन लोगों से (भी) जो तुम्हारे साथ हैं (सालेह عليه السلام ने) फ़रमाया : तुम्हारी नहूसत (का सबब) अल्लाह के पास (लिखा हूआ) है बल्कि तुम लोग फ़ित्नेमें मुब्तिला किए गए हो।

وَكَانَ فِي الْمَدِيْنَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُّفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ وَلَا يُصْلِحُوْنَ ﴿٤٨﴾

48. और (कौमे समूद के) शहर में नौ सर कर्दह लीडर (जो अपनी अपनी जमाअ़तों के सरबराह) थे मुल्क में फसाद फैलाते थे और इस्लाह़ नहीं करते थे।

قَالُوْا تَقَاسَمُوْا بِاللّٰهِ لَنُبَيِّتَنَّهٗ وَاَهْلَهٗ ثُمَّ لَنَقُوْلَنَّ لِوَلِيِّهٖ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ اَهْلِهٖ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿٤٩﴾

49. (उन सरग़नों ने) कहा : तुम आपसमें अल्लाहकी क़सम खा कर अ़हद करो कि हम ज़रूर रातको सालेह (عليه السلام) और उसके घरवालों पर क़ातिलाना ह़मला करेंगे फिर उनके वारिसों से केह देंगे कि हम उनकी हलाकत के मौक़े पर ह़ाज़िर ही न थे और बेशक हम सच्चे हैं।

وَمَكَرُوْا مَكْرًا وَّمَكَرْنَا مَكْرًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٥٠﴾

50. और उन्होंने खुफ़्या साज़िश की और हमने (भी उसके तोड़ के लिए) खुफ़्या तदबीर फ़रमाई और उन्हें ख़बर भी न हूई।

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ ۙ اَنَّا دَمَّرْنٰهُمْ وَقَوْمَهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٥١﴾

51. तो आप देखिए कि उनकी (मक्काराना) साज़िश का अंजाम कैसा हुवा बेशक हमने उन (सरदारों) को और उनकी सारी कौमको तबाहो बरबाद कर दिया।

فَتِلْكَ بُيُوتُهُمْ خَاوِيَةً بِمَا ظَلَمُوا ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٥٢﴾

52. सो येह उनके घर वीरान पड़े हैं इस लिए कि उन्होंने जुल्म किया था । बेशक उसमें इस क़ौमके लिए (इब्रतकी) निशानी है जो इल्म रखते हैं।

وَأَنجَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٥٣﴾

53. और हमने उन लोगोंको नजात बख़्शी जो ईमान लाए और तक़्वा शिआ़र हुए।

وَلُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ وَأَنتُمْ تُبْصِرُونَ ﴿٥٤﴾

54. और लूत (عليه السلام) को (याद करें) जब उन्होंने अपनी क़ौमसे फ़रमाया : क्या तुम बे हयाई का इर्तिकाब करते हो हालां कि तुम देखते (भी) हो।

أَئِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّن دُونِ النِّسَاءِ ۚ بَلْ أَنتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُونَ ﴿٥٥﴾

55. क्या तुम अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश पूरी करने के लिए औ़रतों को छोड़ कर मर्दों के पास जाते हो? बल्कि तुम जाहिल लोग हो।

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَن قَالُوا أَخْرِجُوا آلَ لُوطٍ مِّن قَرْيَتِكُمْ ۖ إِنَّهُمْ أُنَاسٌ يَتَطَهَّرُونَ ﴿٥٦﴾

56. तो उनकी क़ौमका जवाब इसके सिवा कुछ न था कि वोह केहने लगे : तुम लूत के घरवालों को अपनी बस्ती से निकाल दो येह बड़े पाकबाज़ बनते हैं।

فَأَنجَيْنَاهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ قَدَّرْنَاهَا مِنَ الْغَابِرِينَ ﴿٥٧﴾

57. पस हमने लूत (عليه السلام) को और उनके घरवालों को नजात बख़्शी सिवाए उनकी बीवी के कि हमने उसे (अ़ज़ाब के लिए) पीछे रेह जानेवालों में से मुक़र्रर कर लिया था।

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِم مَّطَرًا ۖ فَسَاءَ مَطَرُ الْمُنذَرِينَ ﴿٥٨﴾

ع ١٤ ١٩

58. और हमने उन पर खूब (पथ्थरों की) बारिश बरसाई सो (उन) डराए गए लोगों पर (पथ्थरों की) बारिश निहायत ही बुरी थी।

قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ وَسَلَامٌ عَلَىٰ عِبَادِهِ الَّذِينَ اصْطَفَىٰ ۗ آللَّهُ خَيْرٌ أَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٥٩﴾

59. फ़रमा दीजिए कि तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं और उसके मुन्तख़ब (बरगुज़ीदा) बंदों पर सलामती हो, क्या अल्लाह ही बेहतर है या वोह (मा'बूदाने बातिला) जिन्हें येह लोग (उसका) शरीक ठेहराते हैं।

أَمَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَأَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَأَنْبَتْنَا بِهٖ حَدَآئِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ ۚ مَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُنْۢبِتُوْا شَجَرَهَا ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَّعْدِلُوْنَ ﴿٦٠﴾

60. बल्कि वोह कौन है जिसने आस्मानों और ज़मीन को पैदा फ़रमाया और तुम्हारे लिए आस्मानी फ़िज़ा से पानी उतारा फिर हमने उस (पानी) से ताज़ा और ख़ुशनुमा बाग़ात उगाए तुम्हारे लिए मुमकिन न था कि तुम उन (बाग़ात) के दरख़्त उगा सक्ते। क्या अल्लाह के साथ कोई (और भी) मा'बूद है ? बल्कि येह वोह लोग हैं जो (राहे हक़ से) परे हट रहे हैं।

أَمَّنْ جَعَلَ الْأَرْضَ قَرَارًا وَّجَعَلَ خِلٰلَهَآ أَنْهٰرًا وَّجَعَلَ لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦١﴾

61. बल्कि वोह कौन है जिसने ज़मीन को क़रारगाह बनाया और उसके दरमियान नेहरें बनाईं और उसके लिए भारी पहाड़ बनाए। और (खारी और शीरीं) दो समन्दरों के दरमियान आड़ बनाई। क्या अल्लाह के साथ कोई (और भी) मा'बूद है ? बल्कि उन (कुफ़्फ़ार) में से अक्सर लोग बे इल्म हैं।

أَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوْٓءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَآءَ الْأَرْضِ ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٦٢﴾

62. बल्कि वोह कौन है जो बे क़रार शख़्स की दुआ़ क़ुबूल फ़रमाता है जब वोह उसे पुकारे और तक्लीफ़ दूर फ़रमाता है और तुम्हें ज़मीनमें (पहले लोगों का) वारिसो जा नशीन बनाता है। क्या अल्लाह के साथ कोई (और भी) मा'बूद है? तुम लोग बहुत ही कम नसीहत क़ुबूल करते हो।

أَمَّنْ يَّهْدِيْكُمْ فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُّرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ تَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٣﴾

63. बल्कि वोह कौन है जो तुम्हें ख़ुश्को तर (या'नी ज़मीन और समन्दर) की तारीकियों में रास्ता दिखाता है और जो हवाओं को अपनी (बाराने) रह़मत से पहले ख़ुशख़बरी बना कर भेजता है। क्या अल्लाह के साथ कोई (और भी) मा'बूद है ? अल्लाह उन (मा'बूदाने बातिला) से बर तर है जिन्हें वोह शरीक ठेहराते हैं।

أَمَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَمَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْأَرْضِ ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ قُلْ هَاتُوْا

64. बल्कि वोह कौन है जो मख़्लूक़ को पेहली बार पैदा फ़रमाता है फिर उसी (अ़मले तख़्लीक़) को दोहराएगा और जो तुम्हें आस्मानो ज़मीन से रिज़्क़ अ़ता फ़रमाता है क्या अल्लाह के साथ कोई (और भी) मा'बूद है? फ़रमा

بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٦٤﴾

दीजिए : (ऐ मुशरिको !) अपनी दलील पेश करो अगर तुम सच्चे हो।

قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ الْغَيْبَ اِلَّا اللّٰهُ ؕ وَ مَا يَشْعُرُوْنَ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ﴿٦٥﴾

65. फ़रमा दीजिए कि जो लोग आस्मानों और ज़मीन में हैं (अज़ ख़ुद) ग़ैबका इल्म नहीं रखते सिवाए अल्लाह के (वोह आ़लिम बिज़्ज़ात है) और न ही वोह येह ख़बर रखते हैं कि वोह (दोबारा ज़िन्दा कर के) कब उठाए जाएंगे।

بَلِ ادّٰرَكَ عِلْمُهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ ۫ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْهَا ۫ بَلْ هُمْ مِّنْهَا عَمُوْنَ ﴿٦٦﴾

66. बल्कि आख़िरत के बारे में उनका इल्म (अपनी) इन्तिहा को पहुंच कर मुन्क़ता' हो गया मगर वोह उससे मुतअ़ल्लिक़ महज़ शक में ही (मुब्तिला) हैं बल्कि वोह उस (के इल्मे क़तई) से अँधे हैं।

وَ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا وَّ اٰبَآؤُنَآ اَئِنَّا لَمُخْرَجُوْنَ ﴿٦٧﴾

67. और काफ़िर लोग केहते हैं : क्या जब हम और हमारे बापदादा (मर कर) मिट्टी हो जाएंगे तो क्या हम (फिर ज़िन्दा कर के क़ब्रों में से) निकाले जाएंगे।

لَقَدْ وُعِدْنَا هٰذَا نَحْنُ وَ اٰبَآؤُنَا مِنْ قَبْلُ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٦٨﴾

68. दर हक़ीक़त उसका वा'दा हमसे (भी) किया गया और उससे पहले हमारे बापदादा से (भी) येह अगले लोगों के मन घड़त अफ़्सानों के सिवा कुछ नहीं।

قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٦٩﴾

69. फ़रमा दीजिए : तुम ज़मीन में सैरो सियाहत करो फिर देखो मुजरिमोंका अंजाम कैसा हुआ।

وَ لَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَ لَا تَكُنْ فِيْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ﴿٧٠﴾

70. और (ऐ ह़बीबे मुकर्रम !) आप उन (की बातों) पर ग़मज़दा न हुआ करें और न इस मक्रो फरैब के बाइस जो वोह कर रहे हैं तंगदिली में (मुब्तिला) हों।

وَ يَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٧١﴾

71. और वोह केहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो (बताओ) येह (अ़ज़ाबे आख़िरत का) वा'दा कब पूरा होगा?

قُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ رَدِفَ لَكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿٧٢﴾

72. फ़रमा दीजिए : कुछ बईद नहीं कि इस (अ़ज़ाब) का कुछ हिस्सा तुम्हारे नज़्दीक ही आ पहुंचा हो जिसे तुम बहुत जल्द तलब कर रहे हो।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿۷۳﴾

73. और बेशक आपका रब लोगों पर फ़ज़्ल (फ़रमाने) वाला है लेकिन उनमें से अक्सर लोग शुक्र नहीं करते।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿۷۴﴾

74. और बेशक आपका रब उन (बातों) को ज़रूर जानता है जो उनके सीने (अंदर) छुपाए हुए हैं और (उन बातों को भी) जो येह आश्कार करते हैं।

وَمَا مِنْ غَآئِبَةٍ فِى السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اِلَّا فِىْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿۷۵﴾

75. और आस्मान और ज़मीन में कोई (भी) पोशीदा चीज़ नहीं है मगर (वोह) रौशन किताब (लौहे महफ़ूज़) में (दर्ज) है।

اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَقُصُّ عَلٰى بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ اَكْثَرَ الَّذِىْ هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿۷۶﴾

76. बेशक येह कुरआन बनी इसराईल के सामने वोह बेश्तर चीज़ें बयान करता है जिन में वोह इख़्तिलाफ़ करते हैं।

وَاِنَّهٗ لَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۷۷﴾

77. और बेशक येह हिदायत है और मोमिनों के लिए रह़मत है।

اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِىْ بَيْنَهُمْ بِحُكْمِهٖ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ ﴿۷۸﴾

78. और बेशक आपका रब इन (मोमिनों और काफ़िरों) के दरमियान अपने हुक्मे (अ़द्ल) से फ़ैसला फ़रमाएगा और वोह ग़ालिब है बहुत जाननेवाला है।

فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِيْنِ ﴿۷۹﴾

79. पस अल्लाह पर भरोसा करें बेशक आप सरीह़ ह़क़ पर (क़ाइम और फ़ाइज़) हैं।

اِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَآءَ اِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ ﴿۸۰﴾

80. बेशक आप न (तो हयाते ईमानीसे महरूम) मुर्दों को ★(ह़क़ की बात) सुना सक्ते हैं और न ही (ऐसे) बेहरों को (हिदायत की) पुकार सुना सक्ते हैं जबकि वोह (ग़ल्बए कुफ़्र के बाइस हिदायत से) पीठ फेर कर (क़ुबूले ह़क़से) रू गर्दां हो रहे हों।

★ यहां पर अल मौता (मुर्दों) और अस्सुम-म (बेहरों) से मुराद काफ़िर हैं। सहाबा व ताबिईन ﷺ से भी येही मा'ना मरवी है। मुख़्तलिफ़ तफ़ासीर से ह़वाले मुलाहिज़ा हों : तफ़्सीरुत्तिबरी (12:20), तफ़्सीरुल क़ुरतबी (232:13), तफ़्सीरुल बग़वी (428:3), ज़ादुल मसीर लिइब्निल जौज़ी (189:6), तफ़्सीर इब्ने कसीर (439:, 375:3), तफ़्सीरुल लिबाब लि अबी ह़फ़्स अल हम्बली (126:16), अद्दुर्रुल मनसूर लिस्सुयूती (376:6), और फ़त्हुल क़दीर लिश्शौकानी (150:4)

وَمَآ اَنْتَ بِهٰدِی الْعُمْیِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ؕ اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ یُّؤْمِنُ بِاٰیٰتِنَا فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿۸۱﴾

81. और न ही आप (दिल के) अँधों को उनकी गुमराही से (बचा कर) हिदायत देनेवाले हैं, आप तो (फ़िल हक़ीक़त) उन्ही को सुनाते हैं जो (आपकी दा'वत क़ुबूल कर के) हमारी आयतों पर ईमान ले आते हैं सो वोही लोग मुसलमान हैं (और वोही ज़िन्दा केहलाने के हक़दार हैं)।

وَاِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَیْهِمْ اَخْرَجْنَا لَهُمْ دَآبَّةً مِّنَ الْاَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ ۙ اَنَّ النَّاسَ كَانُوْا بِاٰیٰتِنَا لَا یُوْقِنُوْنَ ﴿۸۲﴾

82. और जब उन पर (अज़ाब का) फ़रमान पूरा होने का वक़्त आ जाएगा तो हम उनके लिए ज़मीन से एक जानवर निकालेंगे जो उनसे गुफ़्तगू करेगा क्यों कि लोग हमारी निशानियों पर यक़ीन नहीं करते थे।

وَیَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّنْ یُّكَذِّبُ بِاٰیٰتِنَا فَهُمْ یُوْزَعُوْنَ ﴿۸۳﴾

83. और जिस दिन हर उम्मत में से उन लोगों का (एक एक) गिरोह जमा' करेंगे जो हमारी आयतों को झुटलाते थे सो वोह (इकठ्ठा चलने के लिए आगे की तरफ़ से) रोके जाएंगे।

حَتّٰۤی اِذَا جَآءُوْ قَالَ اَكَذَّبْتُمْ بِاٰیٰتِیْ وَلَمْ تُحِیْطُوْا بِهَا عِلْمًا اَمَّا ذَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۸۴﴾

84. यहां तक कि जब वोह सब (मुक़ामे हिसाब पर) आ पहुंचेंगे तो इर्शाद होगा क्या तुम (बिग़ैर ग़ौरो फ़िक्र के) मेरी आयतों को झुटलाते थे हालांकि तुम (अपने नाक़िस) इल्मसे उन्हें कामिलन जान भी नहीं सके थे या (तुम ख़ुद ही बताओ) इसके अ़लावा और क्या (सबब) था जो तुम (हक़की तक्ज़ीब) किया करते थे।

وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَیْهِمْ بِمَا ظَلَمُوْا فَهُمْ لَا یَنْطِقُوْنَ ﴿۸۵﴾

85. और उन पर (हमारा) वा'दा पूरा हो चुका इस वजह से कि वोह ज़ुल्म करते रहे सो वोह (जवाब में) कुछ बोल न सकेंगे।

اَلَمْ یَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا الَّیْلَ لِیَسْكُنُوْا فِیْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یُّؤْمِنُوْنَ ﴿۸۶﴾

86. क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने रात बनाई ताकि वोह उसमें आराम कर सकें और दिन को (उमूरे हयात की निगरानी के लिए) रौशन (या'नी अश्या को दिखाने और सुझानेवाला) बनाया। बेशक इसमें उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो ईमान रखते हैं।

وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَفَزِعَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ وَكُلٌّ اَتَوْهُ دٰخِرِيْنَ ﴿۸۷﴾

87. और जिस दिन सूर फूंका जाएगा तो वोह (सब लोग) घबरा जाएंगे जो आस्मानों में हैं और जो ज़मीन में हैं मगर जिन्हें अल्लाह चाहेगा (नहीं घबराएंगे), और सब उसकी बारगाहमें आजिज़ी करते हुए हाज़िर होंगे।

وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَّهِيَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ ؕ صُنْعَ اللّٰهِ الَّذِيْٓ اَتْقَنَ كُلَّ شَيْءٍ ؕ اِنَّهٗ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَفْعَلُوْنَ ﴿۸۸﴾

88. और (ऐ इन्सान !) तू पहाड़ों को देखेगा तो ख़याल करेगा कि जमे हुए हैं हालांकि वोह बादल के उड़नेकी तरह उड़ रहे होंगे। (येह)अल्लाहकी कारीगरी है जिसने हर चीज़को (हिक्मतो तदबीर के साथ) मज़बूतो मुस्तहकम बना रखा है। बेशक वोह उन सब (कामों) से ख़बरदार है जो तुम करते हो।

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَهُمْ مِّنْ فَزَعٍ يَّوْمَئِذٍ اٰمِنُوْنَ ﴿۸۹﴾

89. जो शख़्स (उस दिन) नेकी ले कर आएगा उसके लिए उससे बेहतर (जज़ा) होगी और वोह लोग उस दिन घबराहट से महफ़ूज़ो मामून होंगे।

وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ ؕ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۹۰﴾

90. और जो शख़्स बुराई ले कर आएगा तो उनके मुंह (दोज़ख़ की) आग में ऊंधे डाले जाएंगे। बस तुम्हें वोही बदला दिया जाऐगा जो तुम किया करते थे।

اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ رَبَّ هٰذِهِ الْبَلْدَةِ الَّذِيْ حَرَّمَهَا وَلَهٗ كُلُّ شَيْءٍ ؗ وَّاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿۹۱﴾

91. (आप उनसे फ़रमा दीजिए कि) मुझे तो येही हुक्म दिया गया है कि इस शहरे (मक्का) के रबकी इबादत करूं जिसने उसे इज़्ज़तो हुरमतवाला बनाया है और हर चीज़ उसीकी (मिल्क) है और मुझे (येह) हुक्म (भी) दिया गया है कि मैं (अल्लाह के) फ़रमांबरदारों में रहूं।

وَاَنْ اَتْلُوَا الْقُرْاٰنَ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَقُلْ اِنَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ﴿۹۲﴾

92. नीज़ येह कि मैं कुरआन पढ़ कर सुनाता रहूं सो जिस शख़्सने हिदायत कुबूल की तो उसने अपने फ़ाइदे के लिए राहे रास्त इख़्तियार की और जो बेहका रहा तो आप फ़रमा दें कि मैं तो सिर्फ़ डर सुनानेवालों में से हूं।

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ سَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ فَتَعْرِفُوْنَهَا ؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۹۳﴾

93. और आप फ़रमा दीजिए कि तमाम ता'रीफें अल्लाह ही के लिए हैं वोह अ़नक़रीब तुम्हें अपनी निशानियां दिखा देगा सो तुम उन्हें पहेचान लोगे, और आपका रब उन कामों से बेख़बर नहीं जो तुम अंजाम देते हो।

आयातुहा 88 | 28 सूरतुल क़-ससि मक्किय्यतुन 49 | रुकूआ़तुहा 9

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नामसे शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

طٰسٓمّٓ ﴿۱﴾

1. ता सीम मीम। (ह़क़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं)।

تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿۲﴾

2. येह रौशन किताब की आयतें हैं।

نَتْلُوْا عَلَيْكَ مِنْ نَّبَاِ مُوْسٰى وَ فِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿۳﴾

3. (ऐ ह़बीबे मुकर्रम !) हम आप पर मूसा (عليه السلام) और फ़िरऔ़नकी ह़क़ीक़त पर मब्नी ह़ालमें से उन लोगों के लिए कुछ पढ़ कर सुनाते हैं जो ईमान रखते हैं।

اِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا فِى الْاَرْضِ وَ جَعَلَ اَهْلَهَا شِيَعًا يَّسْتَضْعِفُ طَآئِفَةً مِّنْهُمْ يُذَبِّحُ اَبْنَآءَهُمْ وَيَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿۴﴾

4. बेशक फ़िरऔ़न ज़मीनमें सरकशो मुतकब्बिर (या'नी आमिरे मुत्लक़) हो गया था और उसने अपने (मुल्क के) बाशिन्दों को (मुख़्तलिफ़) फ़िरक़ों (और गिरोहों) में बांट दिया था उसने उनमें से एक गिरोह (या'नी बनी इलराईल के अ़वाम) को कमज़ोर कर दिया था कि उनके लड़कों को (उनके मुस्तक़बिल की ताक़त कुचलने के लिए) ज़ब्ह कर डालता और उनकी औरतों को ज़िन्दा छोड़ देता (ताकि मर्दों के बिग़ैर उनकी ता'दाद बढ़े और उनमें अख़्लाक़ी बे राह रवी का इज़ाफ़ा हो), बेशक वोह फ़साद अंगेज़ लोगों में से था।

وَنُرِيْدُ اَنْ نَّمُنَّ عَلَى الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا فِى الْاَرْضِ وَنَجْعَلَهُمْ

5. और हम चाहते थे कि हम ऐसे लोगों पर एह़सान करें जो ज़मीनमें (हुक़ूक़ और आज़ादी से मेहरूमी और

اَئِمَّةً وَّنَجْعَلَهُمُ الْوٰرِثِيْنَ ۙ ﴿٥﴾

ज़ुल्मो इस्तेहूसाल के बाइस) कमज़ोर कर दिए गए थे और उन्हें (मज़लूम क़ौम के) रहबरो पेशवा बना दें और उन्हें (मुल्की तख़्त का) वारिस बना दें।

وَنُمَكِّنَ لَهُمْ فِي الْاَرْضِ وَنُرِيَ
فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَجُنُوْدَهُمَا مِنْهُمْ
مَّا كَانُوْا يَحْذَرُوْنَ ﴿٦﴾

6. और हम उन्हें मुल्क में हुकूमतो इक़्तिदार बख़्शें और फ़िरऔन और हामान और उन दोनों की फ़ौजों को वोह (इन्क़िलाब) दिखा दें जिस से वोह डरा करते थे।

وَاَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اُمِّ مُوْسٰٓى اَنْ
اَرْضِعِيْهِ ۚ فَاِذَا خِفْتِ عَلَيْهِ
فَاَلْقِيْهِ فِي الْيَمِّ وَلَا تَخَافِيْ
وَلَا تَحْزَنِيْ ۚ اِنَّا رَآدُّوْهُ اِلَيْكِ
وَجَاعِلُوْهُ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٧﴾

7. और हमने मूसा (عليه السلام) की वालिदा के दिलमें येह बात डाली कि तुम उन्हें दूध पिलाती रहो फिर जब तुम्हें उन पर (क़त्ल कर दिए जाने का) अंदेशा हो जाए तो उन्हें दरिया में डाल देना और न तुम (इस सूरते ह़ाल से) ख़ौफ़ ज़दा होना और न रंजीदा होना बेशक हम उन्हें तुम्हारी तरफ़ वापस लौटानेवाले हैं और उन्हें रसूलों में (शामिल) करनेवाले हैं।

فَالْتَقَطَهٗٓ اٰلُ فِرْعَوْنَ لِيَكُوْنَ لَهُمْ
عَدُوًّا وَّحَزَنًا ۗ اِنَّ فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ
وَجُنُوْدَهُمَا كَانُوْا خٰطِـِٕيْنَ ﴿٨﴾

8. फिर फिरऔन के घरवालोंने उन्हें (दरियासे) उठा लिया ताकि वोह (मशिय्यते इलाही से) उनके लिए दुश्मन और (बाइसे) गम साबित हों। बेशक फ़िरऔन और हामान और उन दोनों की फ़ौजें सब ख़ताकार थे।

وَقَالَتِ امْرَاَتُ فِرْعَوْنَ قُرَّتُ
عَيْنٍ لِّيْ وَلَكَ ۗ لَا تَقْتُلُوْهُ ۖ عَسٰٓى
اَنْ يَّنْفَعَنَآ اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا وَّهُمْ
لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٩﴾

9. और फ़िरऔनकी बीवी ने (मूसा عليه السلام को देख कर) कहा कि (येह बच्चा) मेरी और तेरी आँख के लिए ठंडक है। इसे क़त्ल न करो शायद येह हमें फ़ाइदा पहुंचाए या हम इसको बेटा बनालें और वोह (इस तज्वीज़ के अंजाम से) बे ख़बर थे।

وَاَصْبَحَ فُؤَادُ اُمِّ مُوْسٰى فٰرِغًا ۗ
اِنْ كَادَتْ لَتُبْدِيْ بِهٖ لَوْلَآ

10. और मूसा (عليه السلام) की वालिदा का दिल (सब्रसे) ख़ाली हो गया, क़रीब था कि वोह (अपनी बे क़रारी के बाइस) इस राज़को ज़ाहिर कर देते अगर हम उनके

أَنْ رَّبَطْنَا عَلٰى قَلْبِهَا لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠﴾

दिल पर सब्रो सुकून की कुव्वत न उतारते ताकि वोह (वा'दए इलाही पर) यक़ीन रखनेवालों में से रहें।

وَقَالَتْ لِاُخْتِهٖ قُصِّيْهِ ؗ فَبَصُرَتْ بِهٖ عَنْ جُنُبٍ وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١١﴾

11. और (मूसा عليه السلام की वालिदा ने) उनकी बहन से कहा कि (उनका हाल मा'लूम करने के लिए) उनके पीछे जाओ सो वोह उन्हें दूर से देखती रही और वोह लोग (बिल्कुल) बेख़बर थे।

وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلُ فَقَالَتْ هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰۤى اَهْلِ بَيْتٍ يَّكْفُلُوْنَهٗ لَكُمْ وَهُمْ لَهٗ نٰصِحُوْنَ ﴿١٢﴾

12. और हमने पहले ही से मूसा (عليه السلام) पर दाइयोंका दूध हराम कर दिया था सो (मूसा عليه السلام की बहन ने) कहा : क्या मैं तुम्हें ऐसे घरवालों की निशान दही करूं जो तुम्हारे लिए इस (बच्चे) की परवरिश कर दें और वोह इसके ख़ैर ख़्वाह (भी) हों।

فَرَدَدْنٰهُ اِلٰۤى اُمِّهٖ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ وَلِتَعْلَمَ اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٣﴾

13. पस हमने मूसा (عليه السلام) को (यूं) उनकी वालिदा के पास लौटा दिया ताकि उनकी आँख ठंडी रहे और वोह रंजीदा न हों और ताकि वोह (यक़ीनसे) जान लें कि अल्लाह का वा'दा सच्चा है लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।

وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَاسْتَوٰۤى اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٤﴾

14. और जब मूसा (عليه السلام) अपनी जवानी को पहुंच गए और (सिन्ने) ए'तिदाल पर आ गए तो हमने उन्हें हुक्मे (नुबुव्वत) और इल्मो दानिश से नवाज़ा, और हम नेकूकारों को इसी तरह सिला दिया करते हैं।

وَدَخَلَ الْمَدِيْنَةَ عَلٰى حِيْنِ غَفْلَةٍ مِّنْ اَهْلِهَا فَوَجَدَ فِيْهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلٰنِ ۫ هٰذَا مِنْ شِيْعَتِهٖ وَهٰذَا مِنْ عَدُوِّهٖ ۚ فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِىْ مِنْ شِيْعَتِهٖ عَلَى الَّذِىْ مِنْ عَدُوِّهٖ ۙ فَوَكَزَهٗ مُوْسٰى فَقَضٰى عَلَيْهِ ۫ قَالَ

15. और मूसा (عليه السلام) शेहरे (मिस्र) में दाख़िल हूए इस हालमें कि शहर के बाशिन्दे (नींद में) ग़ाफ़िल पड़े थे। तो उन्होंने उसमें दो मर्दोंको बाहम लड़ते हुए पाया येह (एक) तो उनके (अपने) गिरोह (बनी इसराईल) में से था और येह (दूसरा) उनके दुश्मनों (क़ौमे फ़िरऔन) में से था पस उस शख़्स ने जो उन्ही केगिरोह में से था आप से उस शख़्स के ख़िलाफ़ मदद तलब की जो आपके दुश्मनों में से था पस मूसा (عليه السلام) ने उसे मुक्का मारा तो उसका काम तमाम

هٰذَا مِنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِيْنٌ ⑮

कर दिया (फिर) फ़रमाने लगे येह शैतानका काम है (जो मुझ से सरज़द हुवा है), बेशक वोह सरीह़ बेहकानेवाला दुश्मन है।

قَالَ رَبِّ اِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ فَاغْفِرْ لِيْ فَغَفَرَ لَهٗ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ⑯

16. (मूसा عليه السلام) अर्ज़ करने लगे : ऐ मेरे रब ! बेशक मैंने अपनी जान पर ज़ुल्म किया सो तू मुझे मुआफ़ फ़रमा दे पस उसने उन्हें मुआफ़ फ़रमा दिया, बेशक वोह बड़ा ही बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

قَالَ رَبِّ بِمَآ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ فَلَنْ اَكُوْنَ ظَهِيْرًا لِّلْمُجْرِمِيْنَ ⑰

17. (मज़ीद) अर्ज़ करने लगे : ऐ मेरे रब ! इस सबबसे के तूने मुझ पर (अपनी मग़फ़िरत के ज़रीए) एह्सान फ़रमाया है अब मैं हरगिज़ मुजरिमों का मददगार नहीं बनूंगा।

فَاَصْبَحَ فِي الْمَدِيْنَةِ خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ فَاِذَا الَّذِي اسْتَنْصَرَهٗ بِالْاَمْسِ يَسْتَصْرِخُهٗ ؕ قَالَ لَهٗ مُوْسٰٓى اِنَّكَ لَغَوِيٌّ مُّبِيْنٌ ⑱

18. पस मूसा (عليه السلام) ने इस शहर में डरते हुए सुब्ह़ की इस इन्तिज़ार में (कि अब क्या होगा?) तो दफ़्अ़तन वोही शख़्स जिसने आपसे गुज़िश्ता रोज़ मदद तलब की थी आपको (दोबारा) इमदाद के लिए पुकार रहा है तो मूसा (عليه السلام) ने उससे कहा : बेशक तू सरीह़ गुमराह है।

فَلَمَّآ اَنْ اَرَادَ اَنْ يَّبْطِشَ بِالَّذِيْ هُوَ عَدُوٌّ لَّهُمَا ۙ قَالَ يٰمُوْسٰٓى اَتُرِيْدُ اَنْ تَقْتُلَنِيْ كَمَا قَتَلْتَ نَفْسًا بِالْاَمْسِ ۖ اِنْ تُرِيْدُ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ جَبَّارًا فِي الْاَرْضِ وَمَا تُرِيْدُ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْمُصْلِحِيْنَ ⑲

19. सो जब उन्होंने इरादा किया कि उस शख़्सको पकड़ें जो उन दोनोंका दुश्मन है तो वोह बोल उठा : ऐ मूसा ! क्या तुम मुझे (भी) क़त्ल करना चाहते हो जैसा कि तुमने कल एक शख़्स को क़त्ल कर डाला था। तुम सिर्फ़ येही चाहते हो कि मुल्क में बड़े जाबिर बन जाओ और तुम येह नहीं चाहते कि इस्लाह करनेवालों में से बनो।

وَجَآءَ رَجُلٌ مِّنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ يَسْعٰى ؗ قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنَّ الْمَلَاَ

20. और शहर के आख़िरी किनारे से एक शख़्स दौड़ता हुआ हुआ आया उसने कहा : ऐ मूसा !(क़ौम फ़िरऔन के) सरदार आप के बारे में मश्वरा कर रहे हैं कि वोह

يَأْتَمِرُوْنَ بِكَ لِيَقْتُلُوْكَ فَاخْرُجْ اِنِّيْ لَكَ مِنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿۲۰﴾

आपको क़त्ल कर दें सो आप (यहां से) निकल जाएं बेशक मैं आप के ख़ैर ख़्वाहों में से हूं।

فَخَرَجَ مِنْهَا خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ ۫ قَالَ رَبِّ نَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۲۱﴾

21. सो मूसा (عليه السلام) वहां से ख़ौफ़ ज़दा हो कर (मददे इलाही का) इन्तिज़ार करते हुए निकल खड़े हूए अर्ज़ किया : ऐ रब ! मुझे ज़ालिम क़ौमसे नजात अता फ़रमा।

ع ۲ ۸ ۵

وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَآءَ مَدْيَنَ قَالَ عَسٰى رَبِّيْٓ اَنْ يَّهْدِيَنِيْ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿۲۲﴾

22. और जब वोह मद्यन की तरफ़ रुख़ कर के चले (तो) केहने लगे : उम्मीद है मेरा रब मुझे (मन्ज़िले मक़्सूद तक पहुंचाने के लिए) सीधी राह दिखा देगा।

وَلَمَّا وَرَدَ مَآءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ اُمَّةً مِّنَ النَّاسِ يَسْقُوْنَ ۫ وَوَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمُ امْرَاَتَيْنِ تَذُوْدٰنِ ۚ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا ؕ قَالَتَا لَا نَسْقِيْ حَتّٰى يُصْدِرَ الرِّعَآءُ ٚ سكتة وَاَبُوْنَا شَيْخٌ كَبِيْرٌ ﴿۲۳﴾

23. और जब वोह मद्यन के पानी (के कुएं) पर पहुंचे तो उन्होंने उस पर लोगों को एक हुजूम पाया जो (अपने जानवरों को) पानी पिला रहे थे और उनसे अलग एक जानिब दो औ़रतें देखीं जो (अपनी बकरियों को) रोके हुए थीं (मूसा عليه السلام ने) फ़रमाया तुम दोनों इस ह़ाल में क्यों (खड़ी) हो? दोनों बोलीं कि हम (अपनी बकरियों को) पानी नहीं पिला सकतीं यहां तक कि चरवाहे (अपने मवेशियों को) वापस ले जाएं और हमारे वालिद उम्र रसीदह बुज़ुर्ग हैं।

فَسَقٰى لَهُمَا ثُمَّ تَوَلّٰىٓ اِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ اِنِّيْ لِمَآ اَنْزَلْتَ اِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيْرٌ ﴿۲۴﴾

24. सो उन्होंने दोनों (के रेवड़) को पानी पिला दिया फिर साए की तरफ़ पलट गए और अर्ज़ किया : ऐ रब ! मैं हर उस भलाई का जो तू मेरी तरफ़ उतारे मोह्ताज हूं।

فَجَآءَتْهُ اِحْدٰىهُمَا تَمْشِيْ عَلَى اسْتِحْيَآءٍ ۫ قَالَتْ اِنَّ اَبِيْ يَدْعُوْكَ لِيَجْزِيَكَ اَجْرَ مَا سَقَيْتَ لَنَا ؕ فَلَمَّا

25. फिर (थोडी देर बाद) उनके पास उन दोनों में से एक (लड़की) आई जो शर्मो ह़याके (अंदाज़) से चल रही थी। उसने कहा : मेरे वालिद आपको बुला रहे हैं ताकि वोह आपको उस (मेह़नत) का मुआ़वज़ा दें जो आपने हमारे

جَآءَهٗ وَقَصَّ عَلَيْهِ الْقَصَصَ ۙ قَالَ لَا تَخَفْ ۫ نَجَوْتَ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٥﴾

लिए (बकरियों को) पानी पिलाया है। सो जब मूसा (عليه السلام) उन (लड़कियों के वालिद शुऐब عليه السلام) के पास आए और उन से (पिछले) वाक़िआत बयान किए तो उन्होंने कहा : आप ख़ौफ़ न करें आपने ज़ालिम क़ौम से नजात पा ली है।

قَالَتْ اِحْدٰىهُمَا يٰۤاَبَتِ اسْتَاْجِرْهُ ۫ اِنَّ خَيْرَ مَنِ اسْتَاْجَرْتَ الْقَوِيُّ الْاَمِيْنُ ﴿٢٦﴾

26. उन में से एक (लड़की) ने कहा : ऐ (मेरे) वालिद गिरामी ! उन्हें (अपने पास मज़दूरी) पर रख लें बेशक बेहतरीन शख़्स जिसे आप मज़दूरी पर रखें वोही है जो ताक़तवर अमानतदार हो (और येह इस ज़िम्मेदारी के अहल हैं)।

قَالَ اِنِّيْۤ اُرِيْدُ اَنْ اُنْكِحَكَ اِحْدَى ابْنَتَيَّ هٰتَيْنِ عَلٰۤى اَنْ تَاْجُرَنِيْ ثَمٰنِيَ حِجَجٍ ۚ فَاِنْ اَتْمَمْتَ عَشْرًا فَمِنْ عِنْدِكَ ۚ وَمَاۤ اُرِيْدُ اَنْ اَشُقَّ عَلَيْكَ ؕ سَتَجِدُنِيْۤ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٢٧﴾

27. उन्होंने (मूसा عليه السلام से) कहा : मैं चाहता हूं कि अपनी इन दो लड़कियों में से एक का निकाह़ आप से कर दूं इस (महर) पर कि आप आठ साल तक मेरे पास उजरत पर काम करें फिर अगर आपने दस (साल) पूरे कर दिऐ तो आपकी तरफ़से (एह्सान) होगा और मैं आप पर मशक़्क़त नहीं डालना चाहता, अगर अल्लाहने चाहा तो आप मुझे नेक लोगों में से पाएंगे।

قَالَ ذٰلِكَ بَيْنِيْ وَبَيْنَكَ ؕ اَيَّمَا الْاَجَلَيْنِ قَضَيْتُ فَلَا عُدْوَانَ عَلَيَّ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ﴿٢٨﴾

28. मूसा (عليه السلام) ने कहा : येह (मुआहिदा) मेरे और आपके दरमियान (तय) हो गया, दो में से जो मुद्दत भी मैं पूरी करूं सो मुझ पर कोई जब्र नहीं होगा, और अल्लाह इस (बात) पर जो हम केह रहे हैं निगेहबान है।

فَلَمَّا قَضٰى مُوْسَى الْاَجَلَ وَسَارَ بِاَهْلِهٖۤ اٰنَسَ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ نَارًا ۚ قَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْۤا اِنِّيْۤ

29. फिर जब मूसा (عليه السلام) ने मुक़र्ररा मुद्दत पूरी कर ली और अपनी अहलिया को ले कर चले (तो) उन्होंने तूर की जानिबसे एक आग देखी (वोह शो'लए हुस्ने मुत्लक़ था जिसकी तरफ़ आपकी तबीअ़त मानूस हो गई) उन्होंने

اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّيْٓ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ جَذْوَةٍ مِّنَ النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ۝٢٩

अपनी अहलियासे फ़रमाया : तुम (यहीं) ठेहरो मैंने आग देखी है । शायद मैं तुम्हारे लिए उस (आग) से कुछ (उसकी) ख़बर लाऊं (जिसकी तलाश में मुद्दतों से सरगरदां हूं) या आतिशे (सोज़ां) की कोई चिंगारी (ला दूं) ताकि तुम (भी) तप उठो।

فَلَمَّآ اَتٰىهَا نُوْدِيَ مِنْ شَاطِئِ الْوَادِ الْاَيْمَنِ فِي الْبُقْعَةِ الْمُبٰرَكَةِ مِنَ الشَّجَرَةِ اَنْ يّٰمُوْسٰٓى اِنِّيْٓ اَنَا اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٣٠

30. जब मूसा (علیہ السلام) वहां पहुंचे तो वादिए (तूर) के दाएं किनारे से बा बरकत मुक़ाम में (वाके') एक दरख़्त से आवाज़ दी गई कि ऐ मूसा ! बेशक मैं ही अल्लाह हूं (जो) तमाम जहानों का परवरदिगार (हूं)।

وَاَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ۭ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَاۗنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ۭ يٰمُوْسٰٓى اَقْبِلْ وَلَا تَخَفْ ۣ اِنَّكَ مِنَ الْاٰمِنِيْنَ ۝٣١

31. और येह कि अपनी लाठी (ज़मीन पर) डाल दो फिर जब मूसा (علیہ السلام) ने उसे देखा कि वोह तेज़ लेहराती तड़पती हुई हरकत कर रही है गोया वोह सांप हो, तो पीठ फेर कर चल पड़े और पीछे मुड़ कर न देखा, (निदा आई) ऐ मूसा ! सामने आओ और ख़ौफ़ न करो, बेशक तुम अमान याफ़्ता लोगों में से हो।

اُسْلُكْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَاۗءَ مِنْ غَيْرِ سُوْۗءٍ ۡ وَّاضْمُمْ اِلَيْكَ جَنَاحَكَ مِنَ الرَّهْبِ فَذٰنِكَ بُرْهَانٰنِ مِنْ رَّبِّكَ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ىِٕهٖ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ۝٣٢

32. अपना हाथ अपने गिरेबान में डालो वोह बिग़ैर किसी ऐब के सफ़ेद चमकदार हो कर निकलेगा और ख़ौफ़ (दूर करनेकी ग़रज़) से अपना बाज़ू अपने (सीने की) तरफ़ सुकेड़ लो पस तुम्हारे रब की जानिब से येह दो दलीलें फ़िरऔन और उसके दरबारियोंकी तरफ़ (भेजने और मुशाहिदा कराने के लिए) हैं, बेशक वोह नाफ़रमान लोग हैं।

قَالَ رَبِّ اِنِّيْ قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ۝٣٣

33. (मूसा علیہ السلام ने) अर्ज़ किया : ऐ परवरदिगार ! मैंने उन में से एक शख़्सको क़त्ल कर डाला था सो मैं डरता हूं कि वोह मुझे क़त्ल कर डालेंगे।

وَأَخِي هَٰرُونُ هُوَ أَفْصَحُ مِنِّي لِسَانًا فَأَرْسِلْهُ مَعِيَ رِدْءًا يُصَدِّقُنِي ۖ إِنِّي أَخَافُ أَن يُكَذِّبُونِ ﴿٣٤﴾

34. और मेरे भाई हारून (عليه السلام), वोह ज़बानमें मुझसे ज़ियादह फ़सीह हैं सो उन्हें मेरे साथ मददगार बना कर भेज दे कि वोह मेरी तस्दीक़ कर सकें मैं इस बात से (भी) डरता हूं कि (वोह) लोग मुझे झुटलाएंगे।

قَالَ سَنَشُدُّ عَضُدَكَ بِأَخِيكَ وَنَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطَانًا فَلَا يَصِلُونَ إِلَيْكُمَا ۚ بِآيَاتِنَا ۚ أَنتُمَا وَمَنِ اتَّبَعَكُمَا الْغَالِبُونَ ﴿٣٥﴾

35. इर्शाद फ़रमाया : हम तुम्हारा बाज़ू तुम्हारे भाई के ज़रीए मजबूत कर देंगे । और हम तुम दोनों के लिए (लोगोंके दिलों में और तुम्हारी काविशों में) हैबतो ग़ल्बा पैदा किए देते हैं। सो वोह हमारी निशानियों के सबब से तुम तक (गज़न्द पहुंचाने के लिए) नहीं पहुंच सकेंगे तुम दोनों और जो लोग तुम्हारी पैरवी करेंगे ग़ालिब रहेंगे।

فَلَمَّا جَاءَهُم مُّوسَىٰ بِآيَاتِنَا بَيِّنَاتٍ قَالُوا مَا هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّفْتَرًى وَمَا سَمِعْنَا بِهَٰذَا فِي آبَائِنَا الْأَوَّلِينَ ﴿٣٦﴾

36. फिर जब मूसा (عليه السلام) उनके पास हमारी वाज़ेह और रौशन निशानियां ले कर आए तो वोह लोग केहने लगे कि येह तो मन घड़त जादू के सिवा (कुछ) नहीं है। और हमने येह बातें अपने पहले आबाओ अजदाद में (कभी) नहीं सुनी थीं।

وَقَالَ مُوسَىٰ رَبِّي أَعْلَمُ بِمَن جَاءَ بِالْهُدَىٰ مِنْ عِندِهِ وَمَن تَكُونُ لَهُ عَاقِبَةُ الدَّارِ ۖ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ﴿٣٧﴾

37. और मूसा (عليه السلام) ने कहा : मेरा रब उसको खूब जानता है जो उसके पाससे हिदायत ले कर आया है और उसको (भी) जिस के लिए आख़िरत के घर का अंजाम (बेहतर) होगा, बेशक ज़ालिम फ़लाह नहीं पाएंगे।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ مَا عَلِمْتُ لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرِي ۚ فَأَوْقِدْ لِي يَا هَامَانُ عَلَى الطِّينِ فَاجْعَل لِّي صَرْحًا لَّعَلِّي أَطَّلِعُ إِلَىٰ إِلَٰهِ مُوسَىٰ وَإِنِّي لَأَظُنُّهُ مِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿٣٨﴾

38. और फ़िरऔनने कहा : ऐ दरबारियो ! मैं तुम्हारे लिए अपने सिवा कोई दूसरा मा'बूद नहीं जानता । ऐ हामान ! मेरे लिए गारेको आग लगा (कर कुछ ईंटें पका) दे फिर मेरे लिए (उनसे) एक ऊंची इमारत तैयार कर, शायद मैं (उस पर चढ़ कर) मूसा के ख़ुदा तक रसाई पा सकूं, और मैं तो उसको झूट बोलनेवालों में गुमान करता हूं।

معانقة ١١

وَاسْتَكْبَرَ هُوَ وَجُنُودُهُ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ إِلَيْنَا لَا يُرْجَعُونَ ﴿٣٩﴾

39. और उस (फ़िरऔन) ने खुद और उसकी फ़ौजोंने मुल्कमें नाहक़ तकब्बुरो सरकशी की और येह गुमान कर बैठे कि वोह हमारी तरफ़ नहीं लौटाए जाएंगे।

فَأَخَذْنَاهُ وَجُنُودَهُ فَنَبَذْنَاهُمْ فِي الْيَمِّ ۖ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ﴿٤٠﴾

40. सो हमने उसको और उसकी फ़ौजों को (अज़ाबमें) पकड़ लिया और उनको दरिया में फेंक दिया तो आप देखिए कि ज़ालिमों का अंजाम कैसा (इब्रतनाक) हुआ।

وَجَعَلْنَاهُمْ أَئِمَّةً يَدْعُونَ إِلَى النَّارِ ۖ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ لَا يُنْصَرُونَ ﴿٤١﴾

41. और हमने उन्हें (दोज़ख़ियों का) पेशवा बना दिया कि वोह (लोगों को) दोज़ख़ की तरफ़ बुलाते थे और क़ियामत के दिन उनकी कोई मदद नहीं की जाएगी।

وَأَتْبَعْنَاهُمْ فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً ۖ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ هُمْ مِنَ الْمَقْبُوحِينَ ﴿٤٢﴾

42. और हमने उनके पीछे इस दुनिया में (भी) ला'नत लगा दी और क़ियामतके दिन (भी) वोह बद हाल लोगों में (शुमार) होंगे।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ مِنْ بَعْدِ مَا أَهْلَكْنَا الْقُرُونَ الْأُولَىٰ بَصَائِرَ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَرَحْمَةً لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٤٣﴾

43. और बेशक हमने इस (सूरते हाल) के बाद कि हम पेहली (ना फ़रमान) क़ौमोंको हलाक कर चुके थे मूसा (عليه السلام) को किताब अ़ता की जो लोगों के लिए (ख़ज़ानए) बसीरत और हिदायतो रहमत थी, ताकि वोह नसीहत क़ुबूल करें।

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ إِذْ قَضَيْنَا إِلَىٰ مُوسَى الْأَمْرَ وَمَا كُنْتَ مِنَ الشَّاهِدِينَ ﴿٤٤﴾

44. और आप (उस वक़्त तूरकी) मग़रिबी जानिब (तो मौजूद) नहीं थे जब हमने मूसा (عليه السلام) की तरफ़ हुक्मे (रिसालत) भेजा था, और न (ही) आप (उन सत्तर अफ़राद में शामिल थे जो वह्ये मूसा عليه السلام की) गवाही देने वालों में से थे (पस येह सारा बयान ग़ैबकी ख़बर नहीं तो और क्या है?)

وَلَٰكِنَّا أَنْشَأْنَا قُرُونًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ۚ وَمَا كُنْتَ ثَاوِيًا فِي

45. लेकिन हमने (मूसा (عليه السلام) के बाद यके बाद दीगरे) कई क़ौमें पैदा फ़रमाईं फिर उन पर तवील मुद्दत गुज़र गई

اَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۙ وَلٰكِنَّا كُنَّا مُرْسِلِيْنَ ﴿٤٥﴾

और न (ही) आप (मूसा और शुऐब (عليه السلام) की तरह) अह्ले मद्यन में मुक़ीम थे कि आप उन पर हमारी आयतें पढ़ कर सुनाते हों लेकिन हम ही (आप को अख़बारे ग़ैबसे सरफ़राज़ फ़रमा कर) मबऊ़स फ़रमानेवाले हैं।

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الطُّوْرِ اِذْ نَادَيْنَا وَلٰكِنْ رَّحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٦﴾

46. और न (ही) आप तूरके किनारे (उस वक़्त मौजूद) थे जब हमने (मूसा عليه السلام को) निदा फ़रमाई मगर (आपको उन तमाम अह्वाले ग़ैब पर मुत्तला' फ़रमाना) आपके रबकी जानिबसे (ख़ुसूसी) रह्मत है। ताकि आप (इन वाक़िआ़त से बा ख़बर हो कर) इस क़ौमको (अ़ज़ाबे इलाहीसे) डराएं जिनके पास आपसे पहले कोई डर सुनानेवाला नहीं आया, ताकि वोह नसीह़त क़ुबूल करें।

وَلَوْلَآ اَنْ تُصِيْبَهُمْ مُّصِيْبَةٌ ۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ فَيَقُوْلُوْا رَبَّنَا لَوْلَآ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾

47. और (हम कोई रसूल न भेजते) अगर येह बात न होती कि जब उन्हें कोई मुसीबत पहुंचे उनके आ'माले बद के बाइ़स जो उन्होंने ख़ुद अंजाम दिए तो वोह येह न केहने लगें कि ऐ हमारे रब ! तूने हमारी तरफ़ कोई रसूल क्यूं न भेजा ताकि हम तेरी आयतों की पैरवी करते और हम ईमानवालों में से हो जाते।

فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْا لَوْلَآ اُوْتِيَ مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى ؕ اَوَلَمْ يَكْفُرُوْا بِمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ۚ قَالُوْا سِحْرٰنِ تَظٰهَرَا ۫ وَقَالُوْٓا اِنَّا بِكُلٍّ كٰفِرُوْنَ ﴿٤٨﴾

48. फिर जब उनके पास हमारे हुज़ूरसे ह़क़ आ पहुंचा (तो) वोह केहने लगे कि इस (रसूल) को उन (निशानियों) जैसी (निशानियां) क्यों नहीं दी गईं जो मूसा (عليه السلام) को दी गईं थीं? क्या उन्होंने उन (निशानियों) का इन्कार नहीं किया था जो इससे पहले मूसा (عليه السلام) को दी गई थीं? वोह केहने लगे कि दोनों (क़ुरआन और तौरात) जादू हैं (जो) एक दूसरे की ताईदो मुवाफ़क़त करते हैं, और उन्होंने कहा कि हम (उन) सबके मुन्किर हैं।

قُلْ فَاْتُوْا بِكِتٰبٍ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ هُوَ

49. आप फ़रमा दें कि तुम अल्लाह के हुज़ूर से कोई

أَهْدَىٰ مِنْهُمَآ أَتَّبِعْهُ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ﴿٤٩﴾

(और) किताब ले आओ जो इन दोनोंसे ज़ियादह हिदायत वाली हो (तो) मैं उसकी पैरवी करूंगा अगर तुम (अपने इल्ज़ामात में) सच्चे हो।

فَإِن لَّمْ يَسْتَجِيبُوا۟ لَكَ فَٱعْلَمْ أَنَّمَا يَتَّبِعُونَ أَهْوَآءَهُمْ ۚ وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّنِ ٱتَّبَعَ هَوَىٰهُ بِغَيْرِ هُدًى مِّنَ ٱللَّهِ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَهْدِى ٱلْقَوْمَ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٥٠﴾

50. फिर अगर वोह आपका इर्शाद क़ुबूल न करें तो आप जान लें (कि उनके लिए कोई हुज्जत बाक़ी नहीं रही) वोह महज़ अपनी ख़्वाहिशात की पैरवी करते हैं, और उस शख़्ससे ज़ियादह गुमराह कौन हो सक्ता है जो अल्लाहकी जानिबसे हिदायत को छोड़ कर अपनी ख़्वाहिश की पैरवी करे। बेशक अल्लाह ज़ालिम क़ौम को हिदायत नहीं फ़रमाता।

ع ٥/٨

وَلَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ ٱلْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥١﴾

51. और दर हक़ीक़त हम उनके लिए पै दर पै (क़ुरआन के) फ़रमान भेजते रहे ताकि वोह नसीहत क़ुबूल करें।

ٱلَّذِينَ ءَاتَيْنَٰهُمُ ٱلْكِتَٰبَ مِن قَبْلِهِۦ هُم بِهِۦ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٢﴾

52. जिन लोगों को हमने इससे पहले किताब अ़ता की थी वोह (उसी हिदायतकी तसल्सुल में) इस (क़ुरआन) पर (भी) ईमान रखते हैं।

النصف

وَإِذَا يُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ قَالُوٓا۟ ءَامَنَّا بِهِۦٓ إِنَّهُ ٱلْحَقُّ مِن رَّبِّنَآ إِنَّا كُنَّا مِن قَبْلِهِۦ مُسْلِمِينَ ﴿٥٣﴾

53. और जब उन पर (क़ुरआन) पढ़ कर सुनाया जाता है तो वोह केहते हैं हम इस पर ईमान लाए बेशक येह हमारे रबकी जानिब से हक़ है हक़ीक़तमें तो हम इससे पहले ही मुसलमान (या'नी फ़रमांबरदार) हो चुके थे।

أُو۟لَٰٓئِكَ يُؤْتَوْنَ أَجْرَهُم مَّرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوا۟ وَيَدْرَءُونَ بِٱلْحَسَنَةِ ٱلسَّيِّئَةَ وَمِمَّا رَزَقْنَٰهُمْ يُنفِقُونَ ﴿٥٤﴾

54. येह वोह लोग हैं जिन्हें उनका अज्र दोबार दिया जाएगा इस वजहसे कि उन्होंने सब्र किया और वोह बुराईको भलाई के ज़रीए दफ़ा' करते हैं और उस अ़ता में से जो हमने उन्हें बख़्शी ख़र्च करते हैं।

وَإِذَا سَمِعُوا۟ ٱللَّغْوَ أَعْرَضُوا۟ عَنْهُ وَقَالُوا۟ لَنَآ أَعْمَٰلُنَا وَلَكُمْ

55. और जब वोह कोई बेहूदा बात सुनते हैं तो उससे मुंह फेर लेते हैं और केहते हैं कि हमारे लिए हमारे आ'माल हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे आ'माल, तुम पर सलामती हो

اَعۡمَالُكُمۡ سَلٰمٌ عَلَيۡكُمۡ لَا نَبۡتَغِى
الۡجٰهِلِيۡنَ ﴿۵۵﴾

हम जाहिलों (के फ़िक्रो अ़मल) को (अपनाना) नहीं चाहते (गोया उनकी बुराई के इ़वज़ हम अपनी अच्छाई क्यों छोड़ें)।

اِنَّكَ لَا تَهۡدِىۡ مَنۡ اَحۡبَبۡتَ وَلٰـكِنَّ
اللّٰهَ يَهۡدِىۡ مَنۡ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ
اَعۡلَمُ بِالۡمُهۡتَدِيۡنَ ﴿۵۶﴾

56. हक़ीक़त येह है कि जिसे आप (हिदायत पर लाना) चाहते हैं उसे साहिबे हिदायत आप खुद नहीं बनाते, बल्कि (यूं होता है कि) जिसे (आप चाहते हैं उसीको) अल्लाह चाहता है (और आपके ज़रीए) साहिबे हिदायत बना देता है और वोह राहे हिदायतकी पेहचान रखनेवालों से ख़ूब वाक़िफ़ है (या'नी जो लोग आपकी चाहत की क़द्र पहचानते हैं वोही हिदायत से नवाज़े जाते हैं)।

وَقَالُوۡۤا اِنۡ نَّتَّبِعِ الۡهُدٰى مَعَكَ
نُـتَخَطَّفۡ مِنۡ اَرۡضِنَا ؕ اَوَلَمۡ
نُمَكِّنۡ لَّهُمۡ حَرَمًا اٰمِنًا يُّجۡبٰٓى اِلَيۡهِ
ثَمَرٰتُ كُلِّ شَىۡءٍ رِّزۡقًا مِّنۡ لَّدُنَّا
وَلٰـكِنَّ اَكۡثَرَهُمۡ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿۵۷﴾

57. और (क़द्र ना शनास) केहते हैं कि अगर हम आपकी मइय्यत में हिदायत की पैरवी कर लें तो हम अपने मुल्क से उचक लिए जाएंगे। क्या हमने उन्हें (उस) अम्नवाले हरम (शहरे मक्का जो आपही का वतन है) में नहीं बसाया जहां हमारी तरफ़से रिज़्क़ के तौर पर (दुनिया की हर सम्तसे) हर जिन्सके फल पहुंचाए जाते हैं, लेकिन उनमें से अक्सर लोग नहीं जानते (कि येह सब कुछ किसके सदक़े से हो रहा है)।

وَكَمۡ اَهۡلَـكۡنَا مِنۡ قَرۡيَةٍۢ بَطِرَتۡ
مَعِيۡشَتَهَا ۚ فَتِلۡكَ مَسٰكِنُهُمۡ لَمۡ
تُسۡكَنۡ مِّنۡۢ بَعۡدِهِمۡ اِلَّا قَلِيۡلًا ؕ
وَكُنَّا نَحۡنُ الۡوٰرِثِيۡنَ ﴿۵۸﴾

58. और हमने कितनी ही (ऐसी) बस्तियों को बरबाद कर डाला जो अपनी ख़ुशहाल मईशत पर गुरूरो नाशुक्री कर रही थीं तो येह उनके (तबाह शुदा) मकानात हैं जो उनके बाद कभी आबाद ही नहीं हुए मगर बहुत कम, और (आख़िर कार) हम ही वारिसो मालिक हैं।

وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهۡلِكَ الۡقُرٰى حَتّٰى
يَبۡعَثَ فِىۡۤ اُمِّهَا رَسُوۡلًا يَّتۡلُوۡا

59. और आपका रब बस्तियोंको तबाह करनेवाला नहीं है यहां तक कि वोह उसके बड़े मरकज़ी शहर (Capital) में पयग़म्बर भेज दे जो उन पर हमारी आयतें

عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۚ وَ مَا كُنَّا مُهْلِكِی الْقُرٰۤى اِلَّا وَ اَهْلُهَا ظٰلِمُوْنَ ﴿٥٩﴾

तिलावत करे और हम बस्तियों को हलाक करनेवाले नहीं हैं मगर इस हालमें कि वहां के मकीन ज़ालिम हों।

وَمَاۤ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَیْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ زِيْنَتُهَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّ اَبْقٰى ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٠﴾

60. और जो चीज़ भी तुम्हें अ़ता की गई है सो (वोह) दुन्यवी ज़िन्दगीका सामान और उसकी रौनक़ो ज़ीनत है। मगर जो चीज़ (अभी) अल्लाह के पास है वोह (उससे) ज़ियादह बेहतर और दाइमी है। क्या तुम (इस ह़क़ीक़त को) नहीं समझते?

اَفَمَنْ وَّعَدْنٰهُ وَعْدًا حَسَنًا فَهُوَ لَاقِيْهِ كَمَنْ مَّتَّعْنٰهُ مَتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ﴿٦١﴾

61. क्या वोह शख़्स जिससे हमने कोई (आख़िरत का) अच्छा वा'दा फ़रमाया हो फिर वोह उसे पानेवाला हो जाऐ, उस (बद नसीब) की मिस्ल हो सक्ता है जिसे हमने दुन्यवी ज़िन्दगी के सामान से नवाज़ा हो फिर वोह (कुफ़्राने ने'मत के बाइस) रोजे क़ियामत (अ़ज़ाब के लिए) हाज़िर किए जानेवालों में से हो जाए?

وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِیَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿٦٢﴾

62. और जिस दिन (अल्लाह) उन्हें पुकारेगा तो फ़रमाएगा कि मेरे वोह शरीक कहां हैं जिन्हें तुम (मा'बूद) ख़याल किया करते थे?

قَالَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا هٰۤؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَغْوَيْنَا ۚ اَغْوَيْنٰهُمْ كَمَا غَوَيْنَا ۚ تَبَرَّاْنَاۤ اِلَيْكَ ۫ مَا كَانُوْۤا اِيَّانَا يَعْبُدُوْنَ ﴿٦٣﴾

63. वोह लोग जिन पर (अ़ज़ाबका) फ़रमान साबित हो चुका कहेंगे : ऐ हमारे रब! येही वोह लोग हैं जिनको हमने गुमराह किया था हमने उन्हें (इसी तरह) गुमराह किया था जिस तरह हम (ख़ुद) गुमराह हुए थे, हम उनसे बेज़ारी ज़ाहिर करते हुए तेरी तरफ़ मुतवज्जे होते हैं और वोह (दर ह़क़ीक़त) हमारी परस्तिश नहीं करते थे (बल्कि अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात के पुजारी थे)।

وَقِيْلَ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَرَاَوُا الْعَذَابَ ۚ لَوْ اَنَّهُمْ كَانُوْا يَهْتَدُوْنَ ﴿٦٤﴾

64. और (उनसे) कहा जाएगा तुम अपने (ख़ुद साख़्ता) शरीकों को बुलाओ सो वोह उन्हें पुकारेंगे पस वोह (शरीक) उन्हें कोई जवाब न देंगे और वोह लोग अ़ज़ाब को देख लेंगे काश! वोह (दुनिया में) राहे हिदायत पा चुके होते।

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ مَاذَا أَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِينَ ﴿٦٥﴾

65. और जिस दिन (अल्लाह) उन्हें पुकारेगा तो वोह फ़रमाएगा : तुमने पयग़म्बरों को क्या जवाब दिया था?

فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ الْأَنْبَاءُ يَوْمَئِذٍ فَهُمْ لَا يَتَسَاءَلُونَ ﴿٦٦﴾

66. तो उन पर उस दिन ख़बरें पोशीदह हो जाएंगी सो वोह एक दूसरे से पूछ (भी) न सकेंगे।

فَأَمَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسَىٰ أَنْ يَكُونَ مِنَ الْمُفْلِحِينَ ﴿٦٧﴾

67. लेकिन जिसने तौबा कर ली और ईमान ले आया और नेक अ़मल किया तो यक़ीनन वोह फ़लाह पानेवालों में से होगा।

وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَيَخْتَارُ ۗ مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ ۗ سُبْحَانَ اللَّهِ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٦٨﴾

68. और आपका रब जो चाहता है पैदा फ़रमाता है और (जिसे चाहता है नुबुव्वत और हक़्क़े शफ़ाअ़त से नवाज़ने के लिए) मुन्तख़ब फ़रमा लेता है, उन (मुन्किर और मुशरिक) लोगों को (उस अम्र में) कोई मरज़ी और इख़्तियार हासिल नहीं है। अल्लाह पाक है और बाला तर है उन (बातिल मा'बूदों) से जिन्हें वोह (अल्लाह का) शरीक गरदान्ते हैं।

وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٦٩﴾

69. और आपका रब उन (तमाम बातों) को जानता है जो उनके सीने (अपने अंदर) छुपाए हुए हैं और जो कुछ वोह आश्कार करते हैं।

وَهُوَ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۗ لَهُ الْحَمْدُ فِي الْأُولَىٰ وَالْآخِرَةِ ۖ وَلَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٧٠﴾

70. और वोही अल्लाह है उसके सिवा कोई मा'बूद नहीं। दुनिया और आख़िरत में सारी ता'रीफ़ें उसी केलिए हैं, और (हक़ीक़ी) हुक्मो फ़रमां रवाई (भी) उसी की है और तुम उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ اللَّيْلَ سَرْمَدًا إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَنْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُمْ بِضِيَاءٍ ۗ أَفَلَا تَسْمَعُونَ ﴿٧١﴾

71. फ़रमा दीजिए : ज़रा इतना बताओ कि अगर अल्लाह तुम्हारे ऊपर रोज़े क़ियामत तक हमेशा रात तारी फ़रमा दे (तो) अल्लाहके सिवा कौन मा'बूद है जो तुम्हें रौशनी ला दे। क्या तुम (येह बातें) सुनते नहीं हो?

قُلْ أَرَءَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ إِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَأْتِيكُمْ بِلَيْلٍ تَسْكُنُونَ فِيهِ ۖ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ﴿٧٢﴾

72. फ़रमा दीजिए : ज़रा येह (भी) बताओ कि अगर अल्लाह तुम्हारे उपर रोज़े क़ियामत तक हमेशा दिन तारी फ़रमा दे (तो) अल्लाह के सिवा कौन मा'बूद है जो तुम्हें रात लादे कि तुम उसमें आराम कर सको, क्या तुम देखते नहीं हो?

وَمِنْ رَّحْمَتِهِ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٧٣﴾

73. और उसने अपनी रहमतसे तुम्हारे लिए रात और दिनको बनाया ताकि तुम रातमें आराम करो और (दिन में) उसका फ़ज़्ल (रोज़ी) तलाश कर सको और ताकि तुम शुक्र गुज़ार बनो।

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِينَ كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ ﴿٧٤﴾

74. और जिस दिन वोह उन्हें पुकारेगा तो इर्शाद फ़रमाएगा कि मेरे वोह शरीक कहां हैं जिन्हें तुम (मा'बूद) ख़याल करते थे।

وَنَزَعْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا فَقُلْنَا هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوٓا أَنَّ الْحَقَّ لِلّٰهِ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٧٥﴾

ع ١٥ ١٠

75. और हम हर उम्मत से एक गवाह निकालेंगे फिर हम (कुफ़्फ़ार से) कहेंगे कि तुम अपनी दलील लाओ तो वोह जान लेंगे कि सच बात अल्लाह ही की है ओर उनसे वोह सब (बातें) जाती रहेंगी जो वोह झूट बांधा करते थे।

إِنَّ قَارُونَ كَانَ مِنْ قَوْمِ مُوسَىٰ فَبَغَىٰ عَلَيْهِمْ ۖ وَآتَيْنٰهُ مِنَ الْكُنُوزِ مَآ إِنَّ مَفَاتِحَهُ لَتَنُوٓأُ بِالْعُصْبَةِ أُولِي الْقُوَّةِ إِذْ قَالَ لَهُ قَوْمُهُ لَا تَفْرَحْ إِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِينَ ﴿٧٦﴾

76. बेशक क़ारून मूसा (عليه السلام) की क़ौमसे था फिर उसने लोगों पर सरकशी की और हमने उसे इस क़दर ख़ज़ाने अ़ता किए थे कि उसकी कुन्जियां (उठाना) एक बड़ी ताक़तवर जमाअ़त को दुश्वार होता था जबकि उसकी क़ौमने उससे कहा तू (खुशी के मारे) गुरूर न कर बेशक अल्लाह इतरानेवालों को पसंद नहीं फ़रमाता।

وَابْتَغِ فِيمَآ آتٰكَ اللّٰهُ الدَّارَ الْآخِرَةَ وَلَا تَنْسَ نَصِيبَكَ مِنَ الدُّنْيَا وَأَحْسِنْ كَمَآ أَحْسَنَ اللّٰهُ

77. और तू उस (दौलत) में से जो अल्लाह ने तुझे दे रखी है आख़िरत का घर तलब कर, और दुनिया से (भी) अपना हिस्सा न भूल और तू (लोगों से वैसा ही) एहसान कर जैसा एहसान अल्लाहने तुझसे फ़रमाया है और मुल्क

إِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ الْفَسَادَ فِي الْأَرْضِ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ ﴿٧٧﴾

में (ज़ुल्म, इर्तिकाज़ और इस्तेहूसालकी सूरत में) फ़साद अंगेज़ी (की राहें) तलाश न कर, बेशक अल्लाह फ़साद बपा करनेवालों को पसंद नहीं फ़रमाता।

قَالَ إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ عِندِي ۚ أَوَلَمْ يَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ قَدْ أَهْلَكَ مِن قَبْلِهِ مِنَ الْقُرُونِ مَنْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَأَكْثَرُ جَمْعًا ۚ وَلَا يُسْأَلُ عَن ذُنُوبِهِمُ الْمُجْرِمُونَ ﴿٧٨﴾

78. वोह केहने लगा : (में येह माल मुआशरे और अवाम पर क्यों ख़र्च करूं) मुझे तो येह माल सिर्फ़ उस (कस्बी) इल्मो हुनर की बिना पर दिया गया है जो मेरे पास है। क्या उसे येह मा'लूम न था कि अल्लाहने वाक़िअ़तन उससे पहले बहुत सी ऐसी क़ौमों को हलाक कर दिया था जो ताक़त में उससे कहीं ज़ियादह सख़्त थीं और (मालो दौलत और अफ़्रादी क़ुव्वत के) जमा' करने में कहीं ज़ियादह (आगे) थीं, और (ब वक़्ते हलाकत) मुजरिमों से उनके गुनाहों के बारे में (मज़ीद तहक़ीक़ या कोई उ़ज़्र और सबब) नहीं पूछा जाएगा।

فَخَرَجَ عَلَىٰ قَوْمِهِ فِي زِينَتِهِ ۖ قَالَ الَّذِينَ يُرِيدُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا يَا لَيْتَ لَنَا مِثْلَ مَا أُوتِيَ قَارُونُ إِنَّهُ لَذُو حَظٍّ عَظِيمٍ ﴿٧٩﴾

79. फिर वोह अपनी क़ौमके सामने (पूरी) ज़ीनतो आराइश (की हालत) में निकला। (उसकी ज़ाहिरी शानो शौकत को देख कर) वोह लोग बोल उठे जो दुन्यवी ज़िन्दगी के ख़्वाहिशमंद थे काश ! हमारे लिए (भी) ऐसा (मालो मताअ़) होता जैसा क़ारून को दिया गया है। बेशक वोह बड़े नसीबवाला है।

وَقَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَيْلَكُمْ ثَوَابُ اللَّهِ خَيْرٌ لِّمَنْ آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۚ وَلَا يُلَقَّاهَا إِلَّا الصَّابِرُونَ ﴿٨٠﴾

80. और (दूसरी तरफ़) वोह लोग जिन्हें इल्मे (हक़) दिया गया था बोल उठे तुम पर अफ़्सोस है अल्लाह का सवाब उश शख़्स के लिए (इस दौलतो ज़ीनत से कहीं ज़ियादह) बेहतर है जो ईमान लाया हो और नेक अ़मल करता हो मगर येह (अज्रो सवाब) सब्र करनेवालों के सिवा किसी को अ़ता नहीं किया जाएगा।

فَخَسَفْنَا بِهِ وَبِدَارِهِ الْأَرْضَ فَمَا كَانَ لَهُ مِن فِئَةٍ يَنصُرُونَهُ مِن دُونِ اللَّهِ وَمَا كَانَ مِنَ

81. फिर हमने उस (क़ारून) को और उसके घर को ज़मीनमें धंसा दिया, सो अल्लाह के सिवा उस के लिए कोई भी जमाअ़त (ऐसी) न थी जो (अ़ज़ाब से बचाने में) उसकी मदद कर सक्ती और वोह न ख़ुद ही अ़ज़ाब को

الْمُنْتَصِرِينَ ﴿٨١﴾

रोक सका।

وَأَصْبَحَ الَّذِينَ تَمَنَّوْا مَكَانَهُ بِالْأَمْسِ يَقُولُونَ وَيْكَأَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ ۖ لَوْلَا أَنْ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَا ۖ وَيْكَأَنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ﴿٨٢﴾

82. और जो लोग कल उसके मक़ामो मर्तबे की तमन्ना कर रहे थे (अज़ रहे नदामत) केहने लगे : कितना अ़जीब है कि अल्लाह अपने बंदों में से जिस के लिए चाहता है रिज़्क़ कुशादह फरमाता और (जिस के लिए) चाहता है तंग फ़रमाता है अगर अल्लाह ने हम पर एह्सान न फ़रमाया होता तो हमें (भी) धंसा देता, हाए तअ़ज्जुब है ! (अब मा'लूम हुआ) कि काफ़िर नजात नहीं पा सक्ते।

تِلْكَ الدَّارُ الْآخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِينَ لَا يُرِيدُونَ عُلُوًّا فِي الْأَرْضِ وَلَا فَسَادًا ۚ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٨٣﴾

83. (येह) वोह आख़िरत का घर है जिसे हमने ऐसे लोगों केलिए बनाया है जो न (तो) ज़मीन में सरकशी व तकब्बुर चाहते हैं और न फ़साद अंगेज़ी, और नेक अंजाम परहेज़गारों के लिए है।

مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِنْهَا ۖ وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٨٤﴾

84. जो शख़्स नेकी ले कर आएगा उसके लिए उससे बेहतर (सिला) है और जो शख़्स बुराई ले कर आएगा तो बुरे काम करनेवालों को कोई बदला नहीं दिया जाएगा मगर उसी क़द्र जो वोह करते रहे थे।

إِنَّ الَّذِي فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لَرَادُّكَ إِلَىٰ مَعَادٍ ۚ قُلْ رَبِّي أَعْلَمُ مَنْ جَاءَ بِالْهُدَىٰ وَمَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿٨٥﴾

85. बेशक जिस (रब) ने आप पर क़ुरआन (की तबलीग़ो इक़ामतको) फ़र्ज़ किया है यक़ीनन वोह आपको (आपकी चाहतके मुताबिक़) लौटनेकी जगह (मक्का या आख़िरत) की तरफ़ (फ़त्हो कामयाबी के साथ) वापस ले जानेवाला है। फ़रमा दीजिए : मेरा रब उसे ख़ूब जानता है जो हिदायत ले कर आया और उसे (भी) जो सरीह़ गुमराही में है। ★

★(येह आयत मक्कासे मदीनाकी तरफ़ हिजरत फ़रमाते हूए जोहफ़ा के मुक़ाम पर नाज़िल हूई और येह वा'दा ह फ़त्हे मक्काके दिन पूरा हो गया)

وَمَا كُنْتَ تَرْجُوْٓا اَنْ يُّلْقٰٓى اِلَيْكَ الْكِتٰبُ اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ ظَهِيْرًا لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٨٦﴾

86. और तुम (हुज़ूर ﷺ) की वसातत से उम्मते मुहम्मदी को ख़िताब है) इस बातकी उम्मीद न रखते थे कि तुम पर (येह) किताब उतारी जाएगी मगर (येह) तुम्हारे रबकी रहमत (से उतरी) है पस तुम हरगिज़ काफ़िरों के मददगार न बनना।

وَلَا يَصُدُّنَّكَ عَنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ بَعْدَ اِذْ اُنْزِلَتْ اِلَيْكَ وَادْعُ اِلٰى رَبِّكَ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٨٧﴾

87. और वोह (कुफ़्फ़ार) तुम्हें हरगिज़ अल्लाह की आयतों (की ता'मीलो तब्लीग़) से बाज़ न रखें इसके बाद कि वोह तुम्हारी तरफ़ उतारी जा चुकी हैं और तुम (लोगोंको) अपने रब की तरफ़ बुलाते रहो और मुशरिकों में से हरगिज़ न होना।

وَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۘ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۟ كُلُّ شَیْءٍ هَالِكٌ اِلَّا وَجْهَهٗ ؕ لَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٨٨﴾

88. और तुम अल्लाह के साथ किसी दूसरे (ख़ुद साख़्ता) मा'बूद को न पूजा करो, उसके सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, उसकी ज़ातके सिवा हर चीज़ फ़ानी है, हुक्म उसीका है और तुम (सब) उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे।

आयातुहा 69 | 29 सूरतुल अन्कबूति मक्कियतुन 85 | रुकूआतुहा 7

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

الٓمّٓ ﴿١﴾

1. अलिफ़ लाम मीम (हक़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं)।

اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ يُّتْرَكُوْٓا اَنْ يَّقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُوْنَ ﴿٢﴾

2. क्या लोग येह ख़याल करते हैं कि (सिर्फ़) उनके (इतना) केहने से कि हम ईमान ले आए हैं छोड़ दिए जाएंगे और उनकी आज़माइश न की जाएगी?

وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٣﴾

3. और बेशक हमने उन लोगोंको (भी) आज़माया था जो उनसे पहले थे सो यक़ीनन अल्लाह उन लोगोंको ज़रूर (आज़माइश के ज़रीए) नुमायां फ़रमा देगा जो (दा'वए ईमान में) सच्चे हैं और झूटों को (भी) ज़रूर ज़ाहिर कर देगा।

اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ

4. क्या जो लोग बुरे काम करते हैं येह गुमान किए हुए हैं

السَّيِّاٰتِ اَنْ يَّسْبِقُوْنَا ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿٤﴾

कि वोह हमारे (क़ाबू) से बाहर निकल जाएंगे? क्या ही बुरा है जो वोह (अपने जेहनों में) फ़ैसला करते हैं।

مَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ اللّٰهِ فَاِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ لَاٰتٍ ؕ وَ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٥﴾

5. जो शख़्स अल्लाहसे मुलाक़ात की उम्मीद रखता है तो बेशक अल्लाह का मुक़र्रर कर्दह वक़्त ज़रूर आनेवाला है, और वोही सुननेवाला जाननेवाला है।

وَمَنْ جَاهَدَ فَاِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦﴾

6. जो शख़्स (राहे हक़ में) जद्दो जहद करता है वोह अपने ही (नफ़े' के) लिए तगो दव करता है, बेशक अल्लाह तमाम जहानों (की ताअ़तों कोशिशों और मुजाहिदों) से बे नियाज़ है।

وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَحْسَنَ الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٧﴾

7. और जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे तो हम उनकी सारी ख़ताएं उन (के नामाए आ'माल) से मिटा देंगे और हम यक़ीनन उन्हें उस से बेहतर जज़ा अ़ता फ़रमा देंगे जो अ़मल वोह (फ़िल वाक़े') करते रहे थे।

وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا ؕ وَ اِنْ جَاهَدٰكَ لِتُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ؕ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٨﴾

8. और हमने इन्सान को उसके वालिदैन से नेक सुलूक का हुक्म फ़रमाया और अगर वोह तुझ पर (येह) कोशिश करें कि तू मेरे साथ उस चीज़ को शरीक ठेहराए जिसका तुझे कुछ भी इल्म नहीं तो उनकी इताअ़त मत कर, मेरी ही तरफ़ तुम (सब) को पलटना है सो में तुम्हें उन (कामों) से आगाह कर दूंगा जो तुम (दुनिया में) किया करते थे।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِي الصّٰلِحِيْنَ ﴿٩﴾

9. और जो लोग ईमान लाए और नेक आ'माल करते रहे तो हम उन्हें ज़रूर नेकूकारों (के गिरोह) में दाख़िल फ़रमा देंगे।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ فَاِذَآ اُوْذِيَ فِي اللّٰهِ جَعَلَ فِتْنَةَ النَّاسِ كَعَذَابِ اللّٰهِ ؕ وَلَئِنْ جَآءَ

10. और लोगों में ऐसे शख़्स (भी) होते हैं जो (ज़बान से) केहते हैं कि हम अल्लाह पर ईमान लाए फिर जब उन्हें अल्लाह की राहमें (कोई) तक्लीफ़ पहुंचाई जाती है तो वोह लोगोंकी आज़माइश को अल्लाह के अ़ज़ाब की

نَصْرٌ مِّنْ رَّبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ اِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ ؕ اَوَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِمَا فِيْ صُدُوْرِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠﴾

मानिन्द क़रार देते हैं, और अगर आपके रबकी जानिबसे कोई मदद आ पहुंचती है तो वोह यक़ीनन येह केहने लगते हैं कि हम तो तुम्हारे साथ ही थे, क्या अल्लाह उन (बातों) को नहीं जानता जो जहानवालों के सीनों में (पोशीदह) हैं।

وَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ ﴿١١﴾

11. और अल्लाह ज़रूर ऐसे लोगोंको मुमताज़ फ़रमा देगा जो (सच्चे दिलसे) ईमान लाए हैं और मुनाफ़िक़ों को (भी) ज़रूर ज़ाहिर कर देगा।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبِعُوْا سَبِيْلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطٰيٰكُمْ ؕ وَمَا هُمْ بِحٰمِلِيْنَ مِنْ خَطٰيٰهُمْ مِّنْ شَيْءٍ ؕ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١٢﴾

12. और काफ़िर लोग ईमानवालों से केहते हैं कि तुम हमारी राह की पैरवी करो और हम तुम्हारी ख़ताओं (के बोझ) को उठा लेंगे, हालां कि वोह उन के गुनाहों का कुछ भी (बोझ) उठानेवाले नहीं हैं बेशक वोह झूटे हैं।

وَلَيَحْمِلُنَّ اَثْقَالَهُمْ وَاَثْقَالًا مَّعَ اَثْقَالِهِمْ ۫ وَلَيُسْئَلُنَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَمَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿١٣﴾

13. वोह यक़ीनन अपने (गुनाहों के) बोझ उठाएंगे और अपने बोझों के साथ कई (दूसरे) बोझ (भी अपने ऊपर लादे होंगे) और उनसे रोज़े क़ियामत उन (बोहतानों) की ज़रूर पुर्सिश की जाएगी जो वोह घड़ा करते थे।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَلَبِثَ فِيْهِمْ اَلْفَ سَنَةٍ اِلَّا خَمْسِيْنَ عَامًا ؕ فَاَخَذَهُمُ الطُّوْفَانُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿١٤﴾

14. और बेशक हमने नूह (عليه السلام) को उनकी क़ौम की तरफ़ भेजा तो वोह उनमें पचास बरस कम एक हज़ार साल रहे फिर उन लोगों को तूफ़ानने आ पकड़ा इस हाल में कि वोह ज़ालिम थे।

فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَصْحٰبَ السَّفِيْنَةِ وَجَعَلْنٰهَاۤ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٥﴾

15. फिर हमने नूह (عليه السلام) को और (उन के हमराह) कश्तीवालोंको नजात बख़्शी और हमने उस (कश्ती और वाक़िए) को तमाम जहानवालों के लिए निशानी बना दिया।

وَاِبْرٰهِيْمَ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٦﴾

16. और इब्राहीम (عليه السلام) को (याद करें) जब उन्होंने अपनी क़ौमसे फ़रमाया कि तुम अल्लाहकी इबादत करो और उससे डरो, येही तुम्हारे हक़में बेहतर है अगर तुम (हक़ीक़त को) जानते हो।

إِنَّمَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ أَوْثَانًا وَتَخْلُقُونَ إِفْكًا ۚ إِنَّ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ لَا يَمْلِكُونَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوا عِندَ اللَّهِ الرِّزْقَ وَاعْبُدُوهُ وَاشْكُرُوا لَهُ ۖ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿١٧﴾

17. तुम तो अल्लाह के सिवा बुतों की पूजा करते हो और महज़ झूट घड़ते हो, बेशक तुम अल्लाह के सिवा जिनकी पूजा करते हो वोह तुम्हारे लिए रिज़्क़ के मालिक नहीं हैं पस तुम अल्लाहकी बारगाह से रिज़्क़ तलब किया करो और उसीकी इबादत किया करो और उसीका शुक्र बजा लाया करो, तुम उसीकी तरफ़ पलटाए जाओगे।

وَإِن تُكَذِّبُوا فَقَدْ كَذَّبَ أُمَمٌ مِّن قَبْلِكُمْ ۖ وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿١٨﴾

18. और अगर तुमने (मेरी बातों को) झुटलाया तो यक़ीनन तुमसे पहले (भी) कई उम्मतें (हक़ को) झुटला चुकी हैं, और रसूल पर वाज़ेह़ तरीक़से (अह़काम) पहुंचा देने के सिवा (कुछ लाज़िम) नहीं है।

أَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللَّهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ۚ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿١٩﴾

19. क्या उन्होंने नहीं देखा (या'नी ग़ौर नहीं किया) कि अल्लाह किस तरह तख़्लीक़ की इब्तिदा फ़रमाता है फिर (उसी तरह) उसका इआ़दा फ़रमाता है । बेशक येह (काम) अल्लाह पर आसान है।

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ بَدَأَ الْخَلْقَ ثُمَّ اللَّهُ يُنشِئُ النَّشْأَةَ الْآخِرَةَ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٠﴾

20. फ़रमा दीजिए : तुम ज़मीन में (काइनाती ज़िन्दगी के मुतालिए के लिए) चलो फिरो, फिर देखो (या'नी ग़ौरो तहक़ीक़ करो) के उसने मख़्लूक़ की (ज़िन्दगी की) इब्तिदा कैसे फ़रमाई फिर वोह दूसरी ज़िन्दगी को किस तरह़ उठा कर (इरतिक़ा मराहि़ल से गुज़ारता हुआ) नश्वो नुमा देता है । बेशक अल्लाह हर शैअ पर बड़ी क़ुदरत रखनेवाला है।

يُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ وَيَرْحَمُ مَن يَشَاءُ ۖ وَإِلَيْهِ تُقْلَبُونَ ﴿٢١﴾

21. वोह जिसे चाहता है अ़ज़ाब देता है और जिस पर चाहता है रह़म फ़रमाता है और उसीकी तरफ़ तुम पलटाए जाओगे।

وَمَا أَنتُم بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ ۖ وَمَا لَكُم مِّن دُونِ اللَّهِ مِن وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿٢٢﴾

ع ٢ ٩ ١٤

22. और न तुम (अल्लाहको) ज़मीन में आ़जिज़ करनेवाले हो और न आस्मानमें और न तुम्हारे लिए अल्लाहके सिवा कोई दोस्त है और न मददगार।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَ
لِقَآئِهٖٓ اُولٰٓئِكَ يَئِسُوْا مِنْ رَّحْمَتِيْ
وَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢٣﴾

23. और जिन लोगोंने अल्लाह की आयतोंका और उसकी मुलाक़ात का इन्कार किया वोह लोग मेरी रह़मत से मायूस हो गए और उन्ही लोगों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوا
اقْتُلُوْهُ اَوْ حَرِّقُوْهُ فَاَنْجٰىهُ اللّٰهُ مِنَ
النَّارِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ
يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٢٤﴾

24. सो क़ौमे इब्राहीम का जवाब इस के सिवा कुछ न था कि वोह केहने लगे : तुम उसे क़त्ल कर डालो या उसे जला दो, फिर अल्लाहने उसे (नमरूद की) आगसे नजात बख़्शी, बेशक इस (वाक़िए) में उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो ईमान लाए हैं।

وَقَالَ اِنَّمَا اتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ
اَوْثَانًا ۙ مَّوَدَّةَ بَيْنِكُمْ فِي الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا ۚ ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُ
بَعْضُكُمْ بِبَعْضٍ وَّيَلْعَنُ بَعْضُكُمْ
بَعْضًا ۫ وَّ مَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ
مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٢٥﴾

25. और इब्राहीम (عليه السلام)ने कहा : बस तुमने तो अल्लाह को छोड़ कर बुतोंको मा'बूद बना लिया है मह़ज़ दुन्यवी ज़िन्दगीमें आपस की दोस्ती की ख़ातिर फिर रोज़े क़ियामत तुम में से (हर) एक दूसरे (की दोस्ती) का इन्कार कर देगा और तुम में से (हर) एक दूसरे पर ला'नत भेजेगा तो तुम्हारा ठिकाना दोज़ख़ है और तुम्हारे लिए कोई भी मददगार न होगा।

فَاٰمَنَ لَهٗ لُوْطٌ ۘ وَقَالَ اِنِّيْ مُهَاجِرٌ اِلٰى
رَبِّيْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٦﴾

وقف لازم

26. फिर लूत (عليه السلام) उन पर (या'नी इब्राहीम عليه السلام पर) ईमान ले आए और उन्होंने कहा : मैं अपने रब की तरफ़ हिजरत करने वाला हूं। बेशक वोह ग़ालिब है ह़िक्मत वाला है।

وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَ
جَعَلْنَا فِيْ ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ
وَاٰتَيْنٰهُ اَجْرَهٗ فِي الدُّنْيَا ۚ وَاِنَّهٗ
فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٢٧﴾

27. और हमने उन्हें इस्ह़ाक़ और या'क़ूब (عليهما السلام बेटा और पोता) अ़ता फ़रमाए और हमने इब्राहीम (عليه السلام) की औलाद में नुबुव्वत और किताब मुक़र्रर फ़रमा दी और हमने उन्हें दुनिया में (ही) उनका सिला अ़ता फ़रमा दिया और बेशक वोह आख़िरत में (भी) नेकूकारों में से हैं।

وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اِنَّكُمْ

28. और लूत (عليه السلام) को (याद करें) जब उन्होंने अपनी

لَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ ۡ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِیْنَ ﴿٢٨﴾

कौमसे कहा : बेशक तुम बड़ी बे हयाईका इर्तिकाब करते हो, अक्वामे आलम में से किसी एक (क़ौम) ने (भी) उस (बेहयाई) में तुम से पेहल नहीं की।

اَىِٕنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُوْنَ السَّبِیْلَ ۙ۬ وَ تَاْتُوْنَ فِیْ نَادِیْكُمُ الْمُنْكَرَ ؕ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوا ائْتِنَا بِعَذَابِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِیْنَ ﴿٢٩﴾

29. क्या तुम (शहवत रानी के लिए) मर्दों के पास जाते हो और डाका ज़नी करते हो और अपनी (भरी) मजलिस में ना पसंदीदा काम करते हो, तो उनकी क़ौमका जवाब (भी) इसके सिवा कुछ न था के केहने लगे : तुम हम पर अल्लाहका अज़ाब ले आओ अगर तुम सच्चे हो।

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِیْ عَلَى الْقَوْمِ الْمُفْسِدِیْنَ ﴿٣٠﴾

30. लूत (عليه السلام) ने अर्ज़ किया : ऐ रब ! तू फ़साद अंगेज़ी करने वाली क़ौमके खिलाफ मेरी मदद फ़रमा।

وَ لَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَاۤ اِبْرٰهِیْمَ بِالْبُشْرٰى ۙ قَالُوْۤا اِنَّا مُهْلِكُوْۤا اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْیَةِ ۚ اِنَّ اَهْلَهَا كَانُوْا ظٰلِمِیْنَ ﴿٣١﴾

31. और जब हमारे भेजे हूए (फ़रिश्ते) इब्राहीम (عليه السلام) के पास खुशखबरी ले कर आए(तो) उन्होंने (साथ) येह (भी) कहाकि हम इस बस्तीके कमीनों को हलाक करनेवाले हैं क्योंके यहांके बाशिन्दे ज़ालिमहैं।

قَالَ اِنَّ فِیْهَا لُوْطًا ؕ قَالُوْا نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَنْ فِیْهَا ۫ۗ لَنُنَجِّیَنَّهٗ وَ اَهْلَهٗۤ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۗ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِیْنَ ﴿٣٢﴾

32. इब्राहीम (عليه السلام) ने कहा : इस (बस्ती) में तो लूत (عليه السلام भी) हैं उन्होंने कहा : हम उन लोगोंको खूब जानते हैं जो (जो) उसमें (रेहते) हैं हम लूत (عليه السلام) को और उनके घरवालों को सिवाए उनकी औरत के ज़रूर बचा लेंगे, वोह पीछे रेह जानेवालों में से है।

وَ لَمَّاۤ اَنْ جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِیْٓءَ بِهِمْ وَ ضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّ قَالُوْا لَا تَخَفْ وَ لَا تَحْزَنْ ۫ اِنَّا مُنَجُّوْكَ وَ اَهْلَكَ اِلَّا امْرَاَتَكَ

33. और जब हमारे भेजे हूए (फरिश्ते) लूत (عليه السلام) के पास आए तो वोह उन (के आने) से रंजीदाह हूए और उनके (अरादाहऐ अज़ाबके) बाइस निढाल से हो गए और (फरिश्तोंने) कहा : आप न खौफ़जदा हों बेशक हम आपको और आपके घरवालोंको बचानेवाले हैं सिवाए

كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٣٣﴾

आपकी औरतके वोह (अ़ज़ाब के लिए) पीछे रेह जाने वालों में से है।

اِنَّا مُنْزِلُوْنَ عَلٰٓى اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿٣٤﴾

34. बेशक हम उस बस्ती के बाशिन्दों पर आस्मानसे अ़ज़ाब नाज़िल करनेवाले हैं उस वजहसे के वोह ना फ़रमानी किया करते थे।

وَلَقَدْ تَّرَكْنَا مِنْهَآ اٰيَةًۢ بَيِّنَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٣٥﴾

35. और बेशक हमने उस बस्ती से (वीरान मकानों को) एक वाज़ेह़ निशानी के तौर पर अक्लमंद लोगों के लिए बर क़रार रखा।

وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۙ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَارْجُوا الْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿٣٦﴾

36. और मद्यनकी तरफ़ उनके (क़ौमी) भाई शुएब (عليه السلام) को (भेजा) सो उन्हों ने कहा : ऐ मेरी क़ौम अल्लाहकी इ़बादत करो और योमे आख़िरतकी उम्मीद रखो और ज़मीन में फसाद अंगेजी न करते फिरो।

فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِىْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٣٧﴾

37. तो उन्होंने शुएब (عليه السلام) को झुटला डाला पस उन्हें (भी) ज़ल्ज़ले (के अ़ज़ाब) ने आ पकडा, सो उन्होंने सुब्ह़ उस ह़ाल में ही अपने घरों में ऊंधे मुंह (मुर्दाह) पड़े थे।

وَعَادًا وَّثَمُوْدَا۟ وَقَدْ تَّبَيَّنَ لَكُمْ مِّنْ مَّسٰكِنِهِمْ ۟ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَكَانُوْا مُسْتَبْصِرِيْنَ ﴿٣٨﴾

38. और आ़द और समूदको (भी हमने हलाक किया) और बेशक उनके कुछ (तबाह शुदह) मकानात तुम्हारे लिए (बतौरे इ़ब्रत) ज़ाहिर हो चुके हैं और शैतानने उनके आ'माले बद, उनके लिए खूशनुमा बना दिऐ थे और उन्हें (हककी) राहसे फे़र दिया था ह़ालांकि वोह बीना-व-दाना थे।

وَقَارُوْنَ وَفِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ ۟ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ فَاسْتَكْبَرُوْا فِى الْاَرْضِ وَمَا كَانُوْا سٰبِقِيْنَ ﴿٣٩﴾

39. और (हमने) क़ारून और फ़िरऔ़न और हामानको (भी हलाक किया) और बेशक मूसा (عليه السلام) उनके पास वाज़ेह निशानियां ले कर आए थे तो उन्होंने मुल्क में गूरूरो सरकशी की और वोह (हमारी गिरफ़्त से) आगे बढ़ जानेवाले न थे।

فَكُلًّا اَخَذْنَا بِذَنْۢبِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ

40. सो हमने (उनमें से) हर एक को उसके गुनाह के

اَرْسَلْنَا عَلَيْهِ حَاصِبًا ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ اَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ خَسَفْنَا بِهِ الْاَرْضَ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ اَغْرَقْنَا ۚ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٤٠﴾

बाइस पकड लिया, और उन में से वोह (तब्क़ा भी) था जिस पर हमने पथ्थर बरसाने वाली आँधी भेजी और उनमें से वोह (तब्क़ा भी) था जिसे देहशतनाक आवाज़ने आ पकड़ा और उन्में से वोह (तब्क़ा भी) था जिसे हमने ज़मीन में धंसा दिया और उनमें से (एक) वोह (तब्क़ा भी) था जिसे हमने ग़र्क़ कर दिया और हरगिज़ ऐसा न था कि अल्लाह उन पर ज़ुल्म करे बल्कि वोह खूदही अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे।

مَثَلُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ كَمَثَلِ الْعَنْكَبُوْتِ ۚ اِتَّخَذَتْ بَيْتًا ۭ وَاِنَّ اَوْهَنَ الْبُيُوْتِ لَبَيْتُ الْعَنْكَبُوْتِ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤١﴾

41. ऐसे (काफिर) लोगों की मिसाल जिन्होंने अल्लाहको छोड़ कर औरों (या'नी बुतों) को कारसाज़ बना लिया है मकड़ी की दास्तान जैसी है जिसने (अपने लिए जाले का) घर बनाया और बेशक सब घरों से ज़ियादह कमज़ोर मकड़ी का घर है। काश ! वोह लोग (येह बात) जानते होते।

وقف لازم

اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٤٢﴾

42. बेशक अल्लाह उन (बुतोंकी हक़ीक़त) को जानता है जिनकी भी वोह उसके सिवा पूजा करते हैं, और वोही ग़ालिब है हिक्मतवाला है।

وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۚ وَمَا يَعْقِلُهَآ اِلَّا الْعٰلِمُوْنَ ﴿٤٣﴾

43. और येह मिसालें हैं हम उन्हीं लोगों (के समझाने) के लिए बयान करते हैं और उन्हें अहले इल्म के सिवा कोई नहीं समझता।

خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٤﴾ ع

44. अल्लाहने आस्मानों और ज़मीनको दुरुस्त तदबीरके साथ पैदा फ़रमाया है, बेशक इस (तख़्लीक़) में अहले ईमान के लिए (उसकी वहदानियत और कुदरत की) निशानी है।

اُتْلُ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ؕ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَصْنَعُوْنَ ﴿۴۵﴾

45. (अय हबीबे मुकर्रम !) आप वोह किताब पढ़ कर सुनाइये जो आप की तरफ़ (ब.ज़रीए) वही भेजी गई है, और नमाज़ क़ाइम कीजिए, बेशक नमाज़ बेहयाई और बुराई से रोकती है, और वाक़ई अल्लाह का ज़िक्र सब से बड़ा है, और अल्लाह उन (कामों) को जानता है जो तुम करते हो।

وَلَا تُجَادِلُوْٓا اَهْلَ الْكِتٰبِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ۖ اِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ وَقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِالَّذِيْٓ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَاُنْزِلَ اِلَيْكُمْ وَاِلٰهُنَا وَاِلٰهُكُمْ وَاحِدٌ وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿۴۶﴾

46. और (अय मोमिनो !) अह्ले किताब से न झगड़ा करो मगर ऐसे तरीक़े से जो बेहतर हो सिवाए उन लोगों के जिन्हों ने उन में से ज़ुल्म किया, और (उन से) केह दो कि हम इस (किताब) पर ईमान लाए (हैं) जो हमारी तरफ़ उतारी गई (है) और जो तुम्हारी तरफ़ उतारी गई थी और हमारा मा'बूद और तुम्हारा मा'बूद एक ही है और हम उसी के फ़रमां बरदार हैं।

وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ۚ وَمِنْ هٰٓؤُلَآءِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ ؕ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا الْكٰفِرُوْنَ ﴿۴۷﴾

47. और इसी तरह हम ने आप की तरफ़ किताब उतारी, तो जिन (हक़्शनास) लोगों को हम ने (पहले से) किताब अ़ता कर रखी थी वोह इस (किताब) पर ईमान लाते हैं, और उन (अह्ले मक्का) में से (भी) ऐसे हैं जो इस पर ईमान लाते हैं, और हमारी आयतों का इन्कार काफ़िरों के सिवा कोई नहीं करता।

وَمَا كُنْتَ تَتْلُوْا مِنْ قَبْلِهٖ مِنْ كِتٰبٍ وَّلَا تَخُطُّهٗ بِيَمِيْنِكَ اِذًا لَّارْتَابَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿۴۸﴾

48. और (अय हबीब !) इस से पहले आप कोई किताब नहीं पढ़ा करते थे और न ही आप उसे अपने हाथ से लिखते थे वरना अह्ले बातिल उसी वक़्त ज़रूर शक में पड़ जाते।

بَلْ هُوَ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ فِيْ صُدُوْرِ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ ؕ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا الظّٰلِمُوْنَ ﴿۴۹﴾

49. बल्कि वोह (क़ुरआन ही की) वाज़ेह आयतें हैं जो उन लोगों के सीनों में (महफ़ूज़) हैं जिन्हें (सहीह) इल्म अ़ता किया गया है, और ज़ालिमों के सिवा हमारी आयतों का कोई इन्कार नहीं करता।

وَقَالُوا لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ آيَاتٌ مِّن رَّبِّهِ ۖ قُلْ إِنَّمَا الْآيَاتُ عِندَ اللَّهِ ۖ وَإِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٥٠﴾

50. और कुफ़्फ़ार केहते हैं कि उन पर (या'नी नबिय्ये अकरम ﷺ पर) उन के रब की तरफ़ से निशानियां क्यों नहीं उतारी गईं, आप फ़रमा दीजिए कि निशानियां तो अल्लाह ही के पास हैं, और मैं तो महज़ सरीह़ डर सुनाने वाला हूं।

أَوَلَمْ يَكْفِهِمْ أَنَّا أَنزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ يُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَرَحْمَةً وَذِكْرَىٰ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٥١﴾

51. क्या उन के लिए येह (निशानी) काफ़ी नहीं है कि हम ने आप पर (वोह) किताब नाज़िल फ़रमाई है जो उन पर पढ़ी जाती है (या हमेशा पढ़ी जाती रहेगी), बेशक इस (किताब) में रह़मत और नसीह़त है उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं।

قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ شَهِيدًا ۖ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَالَّذِينَ آمَنُوا بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوا بِاللَّهِ ۙ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿٥٢﴾

52. आप फ़रमा दीजिए : मेरे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह ही गवाह काफ़ी है। वोह जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है (सब का ह़ाल) जानता है, और जो लोग बातिल पर ईमान लाए और अल्लाह का इन्कार किया वोही नुक़्सान उठानेवाले हैं।

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ ۚ وَلَوْلَا أَجَلٌ مُّسَمًّى لَّجَاءَهُمُ الْعَذَابُ ۚ وَلَيَأْتِيَنَّهُم بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٥٣﴾

53. और येह लोग आप से अ़ज़ाब में जल्दी चाहते हैं, और अगर (अ़ज़ाब का) वक़्त मुक़र्रर न होता, तो उन पर अ़ज़ाब आ चुका होता, और वोह (अ़ज़ाब या वक़्ते अ़ज़ाब) ज़रूर उन्हें अचानक आ पहुंचेगा और उन्हें ख़बर भी न होगी।

يَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ ۚ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌ بِالْكَافِرِينَ ﴿٥٤﴾

54. येह लोग आप से अ़ज़ाब जल्द तलब करते हैं, और बेशक दोज़ख़ काफ़िरों को घेर लेने वाली है।

يَوْمَ يَغْشَاهُمُ الْعَذَابُ مِن فَوْقِهِمْ وَمِن تَحْتِ أَرْجُلِهِمْ وَيَقُولُ ذُوقُوا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٥٥﴾

55. जिस दिन अ़ज़ाब उन्हें उन के ऊपर से और उन के पांव के नीचे से ढांप लेगा तो इरशाद होगा : तुम उन कामों का मज़ा चखो जो तुम करते थे।

يَا عِبَادِيَ الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ أَرْضِي وَاسِعَةٌ فَإِيَّايَ فَاعْبُدُونِ ﴿٥٦﴾

56. ऐ मेरे बन्दो जो ईमान ले आए हो बेशक मेरी ज़मीन कुशादह है सो तुम मेरी ही इ़बादत करो।

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ثُمَّ إِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ﴿٥٧﴾

57. हर जान मौत का मज़ा चखने वाली है, फिर तुम हमारी ही तरफ़ लौटाए जाओगे।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُبَوِّئَنَّهُم مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا نِعْمَ أَجْرُ الْعَامِلِينَ ﴿٥٨﴾

58. और जो लोग ईमान लाए और नेक आ'माल करते रहे हम उन्हें ज़रूर जन्नत के बालाई महल्लात में जगह देंगे जिन के नीचे से नहरें बेह रही होंगी वोह उन में हमेशा रहेंगे, (येह) अ़मले (सालेह़) करने वालों का क्या ही अच्छा अज्र है।

الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٥٩﴾

59. (येह वोह लोग हैं) जिन्होंने सब्र किया और अपने रब पर ही तवक्कुल करते रहे।

وَكَأَيِّن مِّن دَابَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا اللَّهُ يَرْزُقُهَا وَإِيَّاكُمْ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٦٠﴾

60. और कितने ही जानवर हैं जो अपनी रोज़ी (अपने साथ) नहीं उठाए फिरते अल्लाह उन्हें भी रिज़्क़ अ़ता करता है और तुम्हें भी, और वोह खूब सुनने वाला जानने वाला है।

وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ فَأَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ﴿٦١﴾

61. और अगर आप इन (कुफ़्फ़ार) से पूछें कि आस्मानों और ज़मीन को किस ने पैदा किया और सूरज और चाँद को किस ने ताबेअ़ फ़रमान बना दिया तो ज़रूर केह देंगे अल्लाहने, फिर वोह किधर उल्टे जा रहे हैं।

اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٦٢﴾

62. अल्लाह अपने बन्दों में से जिस के लिए चाहता है रिज़्क़ कुशादह फ़रमा देता है, और जिस के लिए (चाहता है) तंग कर देता है, बेशक अल्लाह हर चीज़ को खूब जाननेवाला है।

وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّن نَّزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ مِن بَعْدِ مَوْتِهَا لَيَقُولُنَّ اللَّهُ قُلِ الْحَمْدُ

63. और अगर आप उन से पूछें कि आस्मानसे पानी किस ने उतारा फिर उस से ज़मीन को उस की मुर्दनी के बाद हयात (और ताज़गी) बख़्शी तो वोह ज़रूर केह देंगे कि अल्लाहने, आप फ़रमा दें : सारी ता'रीफें अल्लाह ही के लिए

لِلّٰهِ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٦٣﴾

हैं, बल्कि उन में से अक्सर (लोग) अ़क़्ल नहीं रखते।

وَمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَهْوٌ وَّلَعِبٌ ۭ وَاِنَّ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ لَهِىَ الْحَيَوَانُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٤﴾

64. और (ऐ लोगो !) येह दुनिया की ज़िन्दगी खेल और तमाशे के सिवा कुछ नहीं है, और ह़क़ीक़त में आख़िरत का घर ही (सह़ीह़) ज़िन्दगी है। काश वोह लोग (येह राज़) जानते होते।

وقف لازم

فَاِذَا رَكِبُوْا فِى الْفُلْكِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى الْبَرِّ اِذَا هُمْ يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٥﴾

65. फिर जब वोह कश्तीमें सवार होते हैं तो (मुश्किल वक़्त में बुतों को छोड़ कर) सिर्फ़ अल्लाह को उस के लिए (अपना) दीन ख़ालिस करते हुए पुकारते हैं, फिर जब अल्लाह उन्हें बचा कर ख़ुश्की तक पहुंचा देता है तो उस वक़्त वोह (दोबारह) शिर्क करने लगते हैं।

لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ۚ وَلِيَتَمَتَّعُوْا ۫ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٦﴾

66. ताकि उस (ने'मते नजात) की नाशुक्री करें जो हम ने उन्हें अ़ता की और (कुफ़्रकी ज़िन्दगी के ह़राम) फ़ाइदे उठाते रहें। पस वोह अ़नक़रीब (अपना अन्जाम) जान लेंगे।

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا اٰمِنًا وَّيُتَخَطَّفُ النَّاسُ مِنْ حَوْلِهِمْ ۭ اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ يَكْفُرُوْنَ ﴿٦٧﴾

67. और क्या उन्होंने नहीं देखा कि हम ने ह़रमे (का'बा) को जाए अमान बना दिया है और उन के इर्दगिर्द के लोग उचक लिए जाते हैं तो क्या (फिर भी) वोह बातिल पर ईमान रखते और अल्लाह के एह़सान की नाशुक्री करते रहेंगे।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَاۗءَهٗ ۭ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٨﴾

68. और उस शख़्स से बढ़ कर ज़ालिम कौन हो सक्ता है जो अल्लाह पर झूटा बोहतान बांधे या ह़क़ को झुटला दे जब वोह उस के पास आ पहुंचे। क्या दोज़ख़ में काफ़िरों के लिए ठिकाना (मुक़र्रर) नहीं है।

وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٦٩﴾

69. और जो लोग हमारे ह़क़्क़में जिहाद (और मुजाहिदा) करते हैं तो हम यक़ीनन उन्हें अपनी (तरफ़ सैर और वुसूल की) राहें दिखा देते हैं, और बेशक अल्लाह साहिबाने एह़सान को अपनी म-इय्यत से नवाज़ता है।

रुकूआतुहा 6 | 30 सूरतुर रूम 84 | आयातुहा 60

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

الٓمّٓ ۚ ﴿۱﴾

1. अलिफ़ लाम मीम (ह़क़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं)।

غُلِبَتِ الرُّوۡمُ ۙ ﴿۲﴾

2. अह्ले रूम (फ़ारस से) मग़लूब हो गए।

فِیۡۤ اَدۡنَی الۡاَرۡضِ وَ ہُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ غَلَبِہِمۡ سَیَغۡلِبُوۡنَ ۙ ﴿۳﴾

3. नज़्दीक के मुल्क में, और वोह अपने मग़्लूब होने के बाद अ़नक़रीब ग़ालिब हो जाएंगे।

فِیۡ بِضۡعِ سِنِیۡنَ ۬ؕ لِلّٰہِ الۡاَمۡرُ مِنۡ قَبۡلُ وَ مِنۡۢ بَعۡدُ ؕ وَ یَوۡمَئِذٍ یَّفۡرَحُ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ ۙ ﴿۴﴾

4. चन्द ही साल में (या'नी दस साल से कम अ़र्से में), अम्र तो अल्लाह ही का है पहले (ग़ल्बए फ़ारस में) भी और बा'द (के ग़ल्बए रूम में) भी, और उस वक़्त अह्ले ईमान खुश होंगे।

بِنَصۡرِ اللّٰہِ ؕ یَنۡصُرُ مَنۡ یَّشَآءُ ؕ وَ ہُوَ الۡعَزِیۡزُ الرَّحِیۡمُ ۙ ﴿۵﴾

5. अल्लाह की मदद से, वोह जिसकी चाहता है मदद फ़रमाता है, और वोह ग़ालिब है महरबान है।

وَعۡدَ اللّٰہِ ؕ لَا یُخۡلِفُ اللّٰہُ وَعۡدَہٗ وَ لٰکِنَّ اَکۡثَرَ النَّاسِ لَا یَعۡلَمُوۡنَ ﴿۶﴾

6. (येह तो) अल्लाह का वा'दा है, अल्लाह अपने वा'दे के ख़िलाफ़ नहीं करता, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।

یَعۡلَمُوۡنَ ظَاہِرًا مِّنَ الۡحَیٰوۃِ الدُّنۡیَا ۚۖ وَ ہُمۡ عَنِ الۡاٰخِرَۃِ ہُمۡ غٰفِلُوۡنَ ﴿۷﴾

7. वोह (तो) दुनिया की ज़ाहिरी ज़िन्दगी को (ही) जानते हैं और वोह लोग आख़िरत (की ह़क़ीक़ी ज़िन्दगी) से ग़ाफ़िलो बेख़बर हैं।

اَوَ لَمۡ یَتَفَکَّرُوۡا فِیۡۤ اَنۡفُسِہِمۡ ۟ قف مَا خَلَقَ اللّٰہُ السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضَ وَ مَا بَیۡنَہُمَاۤ اِلَّا بِالۡحَقِّ وَ اَجَلٍ مُّسَمًّی ؕ

8. क्या उन्होंने अपने मन में कभी ग़ौर नहीं किया कि अल्लाहने आस्मानों और ज़मीन को और जो कुछ उन दोनों के दरमियान है पैदा नहीं फ़रमाया मगर (निज़ामे) ह़क़ और मुक़र्ररह मुद्दत (के दौरानिये) के साथ,

وَ اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَآئِ رَبِّهِمْ لَكٰفِرُوْنَ ﴿٨﴾

और बेशक बहुत से लोग अपने रब की मुलाक़ात के मुन्किर हैं।

اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَّ اَثَارُوا الْاَرْضَ وَعَمَرُوْهَآ اَكْثَرَ مِمَّا عَمَرُوْهَا وَ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ؕ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ؕ ﴿٩﴾

9. क्या उन लोगों ने ज़मीन में सैरो सय्याहत नहीं की ता कि वोह देख लेते कि उन लोगों का अन्जाम क्या हुवा जो उन से पहले थे, वोह लोग इन से ज़्यादह ताक़तवर थे, और उन्होंने ज़मीन में ज़राअत की थी और उसे आबाद किया था, उस से कहीं बढ़ कर जिस क़दर उन्होंने ज़मीन को आबाद किया है, फिर उनके पास पैग़म्बर वाज़ेह निशानियां ले कर आए थे, सो अल्लाह ऐसा न था कि उन पर ज़ुल्म करता, लेकिन वोह ख़ुद ही अपनी जानों पर ज़ुल्म कर रहे थे।

ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةَ الَّذِيْنَ اَسَآءُوا السُّوْٓاٰى اَنْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَكَانُوْا بِهَا يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿١٠﴾

10. फिर उन लोगों का अन्जाम बहुत बुरा हुवा जिन्होंने बुराई की इस लिए कि वोह अल्लाह की आयतोंको झुटलाते और उन का मज़ाक़ उड़ाया करते थे।

اَللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿١١﴾

11. अल्लाह मख़्लूकको पेहली बार पैदा फ़रमाता है फिर (वोही) उसे दोबारह पैदा फ़रमाऐगा, फिर तुम उसीकी तरफ़ लौटाऐ जाओंगे।

وَ يَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿١٢﴾

12. और जिस दिन क़ियामत क़ाइम होगी तो मुजरिम लोग मायूस हो जाएंगे।

وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ مِّنْ شُرَكَآئِهِمْ شُفَعٰٓؤُا وَكَانُوْا بِشُرَكَآئِهِمْ كٰفِرِيْنَ ﴿١٣﴾

13. और उन के (ख़ुदसाख़्ता) शरीकों में से उन के लिए सिफारिशी नहीं होंगे और वोह (बिलआख़िर) अपने शरीकों के (ही) मुन्किर हो जाएंगे।

وَ يَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّتَفَرَّقُوْنَ ﴿١٤﴾

14. और जिस दिन क़ियामत बरपा होगी उस दिन लोग (नफ़सा नफ़सी में) अलग अलग हो जाएंगे।

فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَهُمْ فِي رَوْضَةٍ يُحْبَرُونَ ﴿١٥﴾

15. पस जो लोग ईमान लाए और नेक आ'माल करते रहे तो वोह बाग़ाते जन्नत में खुशहालो मसरूर कर दिए जाएंगे।

وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَلِقَاءِ الْآخِرَةِ فَأُولَٰئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُونَ ﴿١٦﴾

16. और जिन लोगों ने कुफ्र किया और हमारी आयतों को और आख़िरत की पेशी को झुटलाया तो येही लोग अज़ाब में हाज़िर किए जाएंगे।

فَسُبْحَانَ اللَّهِ حِينَ تُمْسُونَ وَحِينَ تُصْبِحُونَ ﴿١٧﴾

17. पस तुम लोग अल्लाहकी तस्बीह किया करो जब तुम शाम करो (या'नी मग़रिब और इशा के वक़्त) और जब तुम सुब्ह करो (या'नी फ़जर के वक़्त)।

وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَعَشِيًّا وَحِينَ تُظْهِرُونَ ﴿١٨﴾

18. और सारी ता'रीफें आस्मानों और ज़मीन में उसी के लिए हैं और (तुम तस्बीह किया करो) सेह पहर को भी (या'नी असरके वक़्त) और जब तुम दोपहर करो (या'नी ज़ोहर के वक़्त)।

يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ وَكَذَٰلِكَ تُخْرَجُونَ ﴿١٩﴾

19. वोही मुर्दह से ज़िन्दह को निकालता है और ज़िन्दह से मुर्दह को निकालता है और ज़मीन को उसकी मुर्दनी के बा'द ज़िन्दाहो शादाब फ़रमाता है, और तुम (भी) इसी तरह (क़बरों से) निकाले जाओगे।

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ إِذَا أَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُونَ ﴿٢٠﴾

20. और येह उस की निशानियों में से है कि उस ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया फिर अब तुम इन्सान हो जो (ज़मीन में) फैले हुए हो।

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا لِتَسْكُنُوا إِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَوَدَّةً وَرَحْمَةً ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٢١﴾

21. और येह (भी) उस की निशानियों में से है कि उस ने तुम्हारे लिए तुम्हारी ही जिन्स से जोड़े पैदा किए ताकि तुम उन की तरफ़ सुकून पाओ और उस ने तुम्हारे दरमियान मुहब्बत और रहमत पैदा कर दी, बेशक उस (निज़ामे तख़्लीक़) में उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो ग़ौरो फ़िक्र करते हैं।

وَمِنْ آيَاتِهِ خَلْقُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ

22. और उस की निशानियों में से आस्मानों और ज़मीन

وَاخْتِلَافُ أَلْسِنَتِكُمْ وَأَلْوَانِكُمْ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِلْعَالِمِينَ ﴿٢٢﴾

की तख़्लीक़ (भी) है और तुम्हारी ज़बानों और तुम्हारे रंगों का इख़्तिलाफ़ (भी) है, बेशक उसमें अह्ले इल्म (व तेहक़ीक़) के लिए निशानियां हैं।

وَمِنْ آيَاتِهِ مَنَامُكُمْ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَاؤُكُمْ مِنْ فَضْلِهِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَسْمَعُونَ ﴿٢٣﴾

23. और उस की निशानियों में से रात और दिन में तुम्हारा सोना और उस के फ़ज़्ल (या'नी रिज़्क़) को तुम्हारा तलाश करना (भी) है। बेशक उस में उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो (ग़ौरसे) सुनते हैं।

وَمِنْ آيَاتِهِ يُرِيكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَطَمَعًا وَيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَيُحْيِي بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٢٤﴾

24. और उस की निशानियों में से येह (भी) है कि वोह तुम्हें डराने और उम्मीद दिलाने के लिए बिजली दिखाता है और आस्मान से (बारिश का) पानी उतारता है फिर उस से ज़मीन को उस की मुर्दनी के बाद ज़िन्दाहो शादाब कर देता है, बेशक उस में उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो अक़्ल से काम लेते हैं।

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ تَقُومَ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ بِأَمْرِهِ ۚ ثُمَّ إِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً ۖ مِنَ الْأَرْضِ ۖ إِذَا أَنْتُمْ تَخْرُجُونَ ﴿٢٥﴾

25. और उस की निशानियों में से येह भी है कि आस्मानो ज़मीन उसके (निज़ामे) अम्र के साथ क़ाइम हैं फिर जब वोह तुमको ज़मीन से (निकलने के लिए) एक बार पुकारेगा तो तुम अचानक (बाहर) निकल आओगे।

وَلَهُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ كُلٌّ لَهُ قَانِتُونَ ﴿٢٦﴾

26. और जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है (सब) उसी का है, सब उसी के इताअत गुज़ार हैं।

وَهُوَ الَّذِي يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَهُوَ أَهْوَنُ عَلَيْهِ ۚ وَلَهُ الْمَثَلُ الْأَعْلَىٰ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢٧﴾

27. और वोही है जो पेहली बार तख़्लीक़ करता है फिर उस का इआदह फ़रमाएगा और येह (दोबारह पैदा करना) उस पर बहुत आसान है। और आस्मानों और ज़मीन में सब से ऊंची शान उसी की है और वोह ग़ालिब है हिक्मतवाला है।

ضَرَبَ لَكُمْ مَثَلًا مِنْ أَنْفُسِكُمْ ۚ

28. उस ने (नुक्तए तौहीद समझाने के लिए) तुम्हारे लिए

هَلْ لَّكُمْ مِّنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ شُرَكَآءَ فِيْ مَا رَزَقْنٰكُمْ فَاَنْتُمْ فِيْهِ سَوَآءٌ تَخَافُوْنَهُمْ كَخِيْفَتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿۲۸﴾

तुम्हारी ज़ाती ज़िन्दगियों से एक मिसाल बयान फ़रमाई है के क्या जो (लौंडी, गुलाम) तुम्हारी मिल्क में हैं उस माल में जो हमने तुम्हें अ़ता किया है शराकतदार है, के तुम (सब) उस (मिलकियत) में बराबर हो जाओ। (मज़ीद येह के क्या) तुम उनसे उसी तरह डरते हो जिस तरह तुम्हें अपनोंका ख़ौफ़ होता है (नहीं) उसी तरह हम अ़क्ल रखनेवालों के लिए निशानियां खोलकर बयान करते हैं (के अल्लाहका भी उसकी मख़्लूक़ में कोई शरीक नहीं है)।

بَلِ اتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْۤا اَهْوَآءَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ فَمَنْ يَّهْدِيْ مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ؕ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿۲۹﴾

29. बल्कि जिन लोगों ने जुल्म किया है वोह बग़ैर इल्म (व हिदायत) की अपनी नफ़सानी ख़्वाहिशात की पैरवी करते हैं, पस उस शख़्सको कौन हिदायत दे सक्ता है जिसे अल्लाहने गुमराह ठेहरा दिया हो और उन लोगों के लिए कोई मददगार नहीं है।

فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ؕ فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِيْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا ؕ لَا تَبْدِيْلَ لِخَلْقِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ۙ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۰﴾

30. पस आप अपना रुख़ अल्लाह की इताअ़त के लिए कामिल यकसुई के साथ क़ाइम रखें। अल्लाहकी (बनाई हुई) फ़ितरत (इस्लाम) है जिस पर उसने लोगोंको पैदा फ़रमाया है (उसे इख़्तियार कर लो) अल्लाहकी पैदा कर्दह (सरिश्त) में तबदीली नहीं होगी, येह दीन मुस्तक़ीम है लेकिन अक्सर लोग (उन हक़ीक़तों को) नहीं जानते।

مُنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ وَاتَّقُوْهُ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۳۱﴾

31. उसी की तरफ़ रुजूओ इनाबत का हा़ल रखो और उसका तक़्वा इख़्तियार करो और नमाज़ क़ाइम करो और मुशरिकों में से मत हो जाओ।

مِنَ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا شِيَعًا ؕ كُلُّ حِزْبٍۢ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ﴿۳۲﴾

32. उन (यहूदो नसारा) में से (भी न होना) जिन्होंने अपने दीनके टुकड़े टुकड़े कर डाला और वोह गिरोह दर गिरोह हो गए, हर गिरोह उसी (टुकड़े) पर इतराता है जो उसके पास है।

وَاِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا رَبَّهُمْ

33. और जब लोगोंको कोई तक्लीफ़ पहुंचती है तो वोह

مُّنِيبِينَ إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَآ أَذَاقَهُم مِّنْهُ رَحْمَةً إِذَا فَرِيقٌ مِّنْهُم بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ ﴿٣٣﴾

अपने रबको उसकी तरफ़ रजूअ करते हुए पुकारते हैं, फिर जब वोह उनको अपनी जानिबसे रह़मतसे लुत्फ़ अन्दोज़ फ़रमाता है तो फिर फ़ौरन उन में से कुछ लोग अपने रबके साथ शिर्क करने लगते हैं।

لِيَكْفُرُوا بِمَآ ءَاتَيْنَٰهُمْ ۚ فَتَمَتَّعُوا فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٣٤﴾

34. ताकि उस ने'मतकी नाशुक्री करें जो हमने उन्हें अ़ता की है पस तुम (चंद रोज़ह ज़िन्दगी के) फाइदे उठा लो, फिर अ़नक़रीब तुम (अपने अन्जामको) जान लोगे।

أَمْ أَنزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطَٰنًا فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوا بِهِۦ يُشْرِكُونَ ﴿٣٥﴾

35. क्या हमने उन पर कोई (ऐसी) दलील उतारी है जो उन (बुतों) के ह़क़ में शहादतन कलाम करती हो जिन्हें वोह अल्लाहका शरीक बना रहे हैं।

وَإِذَآ أَذَقْنَا ٱلنَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوا بِهَا ۖ وَإِن تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ إِذَا هُمْ يَقْنَطُونَ ﴿٣٦﴾

36. और जब हम लोगों को रह़मतसे लुत्फ अंदोज़ करते हैं तो वोह उससे खुश हो जाते हैं, और जब उन्हें कोई तक्लीफ़ पहुंचती है उन (गुनाहों) के बाइ़स जो वोह पहले से कर चुके हैं तो वोह फौरन मायूस हो जाते हैं।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ ٱللَّهَ يَبْسُطُ ٱلرِّزْقَ لِمَن يَشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَءَايَٰتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٣٧﴾

37. क्या उन्होंने नहीं देखा के अल्लाह जिस के लिए चाहता है रिज़्क़ कुशादह फ़रमा देता है और (जिस के लिए चाहता है) तंग कर देता है। बेशक उस में उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो ईमान रखते हैं।

فَـَٔاتِ ذَا ٱلْقُرْبَىٰ حَقَّهُۥ وَٱلْمِسْكِينَ وَٱبْنَ ٱلسَّبِيلِ ۚ ذَٰلِكَ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ يُرِيدُونَ وَجْهَ ٱللَّهِ ۖ وَأُولَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْمُفْلِحُونَ ﴿٣٨﴾

38. पस आप क़राबतदार को उस का ह़क़ अदा करते रहें और मोहताज और मुसाफ़िरको (उनका ह़क़), येह उन लोगों के लिए बेहतर है जो अल्लाहकी रज़ामन्दी के तालिब हैं, और वोही लोग मुराद पानेवाले हैं।

وَمَآ ءَاتَيْتُم مِّن رِّبًا لِّيَرْبُوَا فِىٓ أَمْوَٰلِ ٱلنَّاسِ فَلَا يَرْبُوا عِندَ ٱللَّهِ ۖ

39. और जो माल तुम सूद पर देते हो ताकि (तुम्हारा असासा) लोगों के माल में मिल कर बढ़ता रहे तो वोह

وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ زَكٰوةٍ تُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُوْنَ ۝٣٩

अल्लाहके नज़्दीक नहीं बढेगा और जो माल तुम ज़कात (व ख़ैरात) में देते हो (फ़क़त) अल्लाहकी रज़ा चाहते हुए तो वोही लोग (अपना माल इन्दल्लाह) कसरत से बढ़ानेवाले हैं।

اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ۭ هَلْ مِنْ شُرَكَاۗىِٕكُمْ مَّنْ يَّفْعَلُ مِنْ ذٰلِكُمْ مِّنْ شَيْءٍ ۭ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝٤٠

40. अल्लाह ही है जिसने तुम्हें पैदा किया फिर उसने तुम्हें रिज़्क़ बख़्शा फिर तुम्हें मौत देता है फिर तुम्हें जिन्दह फ़रमाएगा, क्या तुम्हारे (ख़ुदसाख़्ता) शरीकों में से कोई ऐसा है जो उन (कामों) में से कुछ भी कर सके, वोह (अल्लाह) पाक है और उन चीज़ों से बरतर है जिन्हें वोह (उसका) शरीक ठेहराते हैं।

ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ اَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيْقَهُمْ بَعْضَ الَّذِيْ عَمِلُوْا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝٤١

41. बेहरो-बर में फ़साद उन (गुनाहों) के बाइस फैल गया है जो लोगों के हाथों ने कमा रखे हैं ताकि (अल्लाह) उन्हें बा'ज़ (बुरे) आ'मालका मज़ह चखा दे जो उन्होंने किए हैं, ताकि वोह बाज़ आ जाएं।

قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلُ ۭ كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّشْرِكِيْنَ ۝٤٢

42. आप फ़रमा दीजिए कि तुम ज़मीनमें सैरो सय्याहत किया करो फिर देखो पहले लोगोंका कैसा (इब्रतनाक) अन्जाम हुआ, उन में ज़्यादह-तर मुशरिक थे।

فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ الْقَيِّمِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ يَوْمَىِٕذٍ يَّصَّدَّعُوْنَ ۝٤٣

43. सो आप अपना रुख़े (अनवर) सीधे दीन के लिए क़ाइम रखिए क़ब्ल उसके कि वोह दिन आ जाए जिस अल्लाहकी तरफ़ से (क़त्अन) नहीं फिरना है। उस दिन सब लोग जुदा जुदा हो जाएंगे।

مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِاَنْفُسِهِمْ يَمْهَدُوْنَ ۝٤٤

44. जिसने कुफ़्र किया तो उसका (वबाले) कुफ़्र उसी पर है और जो नेक अ़मल करे सो येह लोग अपने लिए (जन्नत की) आरामगाहें दुरुस्त कर रहे हैं।

لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْ فَضْلِهٖ ۭ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ

45. ताकि अल्लाह अपने फ़ज़्ल से उन लोगों को बदला दे जो ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे। बेशक वोह

الْكٰفِرِيْنَ ﴿٤٥﴾

काफ़िरों को दोस्त नहीं रखता।

وَ مِنْ اٰيٰتِهٖۤ اَنْ يُّرْسِلَ الرِّيَاحَ مُبَشِّرٰتٍ وَّلِيُذِيْقَكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَلِتَجْرِيَ الْفُلْكُ بِاَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٤٦﴾

46. और उसकी निशानियों में से येह (भी) है कि वोह (बारिश की) खुशख़बरी सुनानेवाली हवाओं को भेजता है ताकि तुम्हें (बारिशके समरातकी सूरत में) अपनी रहमतसे बेहरा अंदोज़ फ़रमाए और ताकि (उन हवाओं के ज़रीए) जहाज़ (भी) उसके हुक्मसे चलें। और (येह सब) इस लिए है कि तुम उसका फ़ज़्ल (बसूरते ज़राअ़तो तिजारत) तलाश करो और शायद तुम (यूं) शुक्रगुज़ार हो जाओ।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَانْتَقَمْنَا مِنَ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا ؕ وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾

47. और दर हक़ीक़त हमने आपसे पहले रसूलों को उनकी क़ौमोंकी तरफ़ भेजा और वोह उनके पास वाज़ेह निशानियां ले कर आए फिर हमने (तक्ज़ीब करने वाले) मुजरिमों से बदला ले लिया, और मोमिनों की मदद करना हमारे ज़िम्मए करम पर था (और है)।

اَللّٰهُ الَّذِيْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهٗ فِي السَّمَآءِ كَيْفَ يَشَآءُ وَ يَجْعَلُهٗ كِسَفًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ فَاِذَآ اَصَابَ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖۤ اِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿٤٨﴾

48. अल्लाह ही है जो हवाओंको भेजता है तो वोह बादलको उभारती हैं फिर वोह उस (बादल) को फ़ज़ाए आस्मानी में जिस तरह चाहता है फैला देता है फ़िर उसे (मुतफ़र्रिक़) टुकड़े (कर के तेह ब तेह) कर देता है, फिर तुम देखते हो कि बारिश उस के दरमियान से निकलती है फिर जब उस (बारिश) को अपने बन्दों में से जिन्हें चाहता है पहुंचा देता है तो वोह फ़ौरन खुश हो जाते हैं।

وَ اِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّنَزَّلَ عَلَيْهِمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمُبْلِسِيْنَ ﴿٤٩﴾

49. अगरचे उन पर बारिश उतारे जाने से पहले वोह लोग मायूस हो रहे थे।

فَانْظُرْ اِلٰۤى اٰثٰرِ رَحْمَتِ اللّٰهِ كَيْفَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ ذٰلِكَ لَمُحْيِ الْمَوْتٰى ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٥٠﴾

50. सो आप अल्लाहकी रहमतके असरात की तरफ़ देखिए कि वोह किस तरह ज़मीन को उसकी मुर्दनी के बा'द ज़िन्दह फ़रमा देता है, बेशक वोह मुर्दों को (भी उसी तरह) ज़रूर ज़िन्दा करनेवाला है और वोह हर चीज़ पर खूब क़ादिर है।

وَلَئِنْ أَرْسَلْنَا رِيحًا فَرَأَوْهُ مُصْفَرًّا لَّظَلُّوا مِنْ بَعْدِهِ يَكْفُرُونَ ﴿٥١﴾

51. और अगर हम (खुश्क) हवा भेज दें और वोह (अपनी) खेतीको ज़र्द होता हुआ देख लें तो उसके बाद वोह (पेहली तमाम ने'मतों से) कुफ्र करने लगेंगे।

فَإِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتَىٰ وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ ﴿٥٢﴾

52. (ऐ हबीब!) बेशक आप न तो (इन काफ़िर) मुर्दों को अपनी पुकार सुनाते हैं और न (बदबख़्त) बेहरों को, जब कि वोह (आप ही से) पीठ फेरे जा रहे हों।

وَمَا أَنْتَ بِهَادِ الْعُمْيِ عَنْ ضَلَالَتِهِمْ ۖ إِنْ تُسْمِعُ إِلَّا مَنْ يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا فَهُمْ مُسْلِمُونَ ﴿٥٣﴾

53. और न ही आप (उन) अंधों को (जो महरूमे बसीरत हैं) गुमराही से राहे हिदायत पर लानेवाले हैं, आप तो सिर्फ उन्हीं लोगों को (फ़हम और कुबूलियत की तौफ़ीक़ के साथ) सुनाते हैं जो हमारी आयतों पर ईमान ले आते हैं, सो वोही मुसलमान हैं (उनके सिवा किसी और को आप सुनाते ही नहीं हैं)।

ع ٥ ١٢ ٨

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ ضَعْفٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْ بَعْدِ ضَعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ ضَعْفًا وَشَيْبَةً ۚ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۖ وَهُوَ الْعَلِيمُ الْقَدِيرُ ﴿٥٤﴾

54. अल्लाह ही है जिसने तुम्हें कमज़ोर चीज़ (या'नी नुत्फ़े) से पैदा फ़रमाया फिर उसने कमज़ोरी के बाद कुव्वते (शबाब) पैदा की, फिर उसने कुव्वतके बाद कमज़ोरी और बुढ़ापा पैदा कर दिया, वोह जो चाहता है पैदा फ़रमाता है और वोह खूब जाननेवाला, बड़ी कुदरत वाला है।

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ الْمُجْرِمُونَ ۙ مَا لَبِثُوا غَيْرَ سَاعَةٍ ۚ كَذَٰلِكَ كَانُوا يُؤْفَكُونَ ﴿٥٥﴾

55. और जिस दिन क़ियामत बरपा होगी मुजरिम लोग क़समें खाएंगे कि वोह (दुनिया में) एक घड़ी के सिवा ठहरे ही नहीं थे, उसी तरह वोह (दुनिया में भी हक़से) फिरे रेहते थे।

★ यहां पर अल मौता (मुर्दों) और अस्सुम-म (बेहरों) से मुराद काफ़िर हैं. सहाबा व ताबिईन रदियल्लाहु अन्हुम से भी येही मा'ना मरवी है. मुख़्तलिफ तफ़ासीर से हवाले मुलाहिज़ा हों : तफ़सीरुत्तिबरी (12:20), तफ़सीर अल क़ुरतबी (232:13), तफ़सीर अल बग़वी (428:3), ज़ादुल मसीर लि इब्निल जौज़ी (189:6), तफ़सीर इब्ने कसीर (439,375:3), तफ़सीरु लिल बाबिल अबी हिफ़्स अल हम्बली (126:16), अद्दुर्रुल मनसूर लिस्सियूती (376:6), और फ़त्हुल क़दीर लिश्शूकानी (150:4).

وَقَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَالْاِيْمَانَ لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ اِلٰى يَوْمِ الْبَعْثِ ۫ فَهٰذَا يَوْمُ الْبَعْثِ وَلٰكِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٥٦﴾

56. और जिन्हें इल्म और ईमानसे नवाज़ा गया है (उनसे) कहेंगे : दर ह़क़ीक़त तुम अल्लाह की किताब में (एक घड़ी नहीं बल्कि) उठने के दिन तक ठहरे रहे हो, सो येह है उठने का दिन, लेकिन तुम जानते ही न थे।

فَيَوْمَئِذٍ لَّا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَعْذِرَتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿٥٧﴾

57. पस उस दिन ज़ालिमोंको उनकी मा'ज़ेरत कोई फ़ाइदह न देगी और न ही उन से (अल्लाह को) राज़ी करनेका मुताल्बा किया जाएगा।

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؕ وَلَئِنْ جِئْتَهُمْ بِاٰيَةٍ لَّيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُبْطِلُوْنَ ﴿٥٨﴾

58. और दर ह़क़ीक़त हमने लोगों (के समझने) के लिए इस कुरआन में हर तरहकी मिसाल बयान कर दी है, और अगर आप उनके पास कोई (ज़ाहिरी) निशानी ले आएं तब भी येह काफ़िर लोग ज़रूर (येही) केह देंगे कि आप महज़ बातिलो फरेबकार हैं।

كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٩﴾

59. इसी तरह अल्लाह उन लोगों के दिलों पर मोहर लगा देता है जो (ह़क़ को) नहीं जानते।

فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّ لَا يَسْتَخِفَّنَّكَ الَّذِيْنَ لَا يُوْقِنُوْنَ ﴿٦٠﴾

60. पस आप सब्र कीजिए, बेशक अल्लाहका वा'दा सच्चा है, जो लोग यक़ीन नहीं रखते कहीं (उनकी गुमराही का ग़म और हिदायतकी फ़िक्र) आप को कमज़ोर न कर दें। (ऐ जाने जहां उनके कुफ़्रको गमे जाँ न बना लें)।

रुकूआतुहा 4	31 सूरतु लुक़्मान मक्किय्यतुन 57	आयातुहा 34

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है

الٓمّٓ ﴿١﴾

1. अलिफ लाम मीम (ह़क़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं)।

تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ﴿۲﴾

2. येह हिक्मतवाली किताबकी आयतें हैं।

هُدًى وَّرَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِيْنَ ﴿۳﴾

3. जो नेकूकारों के लिए हिदायत और रह्मत है।

الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَ يُؤْتُوْنَ
الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ﴿۴﴾

4. जो लोग नमाज़ क़ाइम करते हैं और ज़कात देते हैं और वोह लोग जो आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं।

اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ وَ
اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۵﴾

5. येही लोग अपने रबकी तरफ़से हिदायत पर हैं और येही लोग ही फ़लाह पानेवाले हैं।

وَ مِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْتَرِيْ لَهْوَ
الْحَدِيْثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖۗ وَّيَتَّخِذَهَا هُزُوًا ؕ
اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿۶﴾

6. और लोगों में से कुछ ऐसे भी हैं जो बेहूदा कलाम ख़रीदते हैं ताकि बिग़ैर सूझ बूझ के लोगोंको अल्लाह की राहसे भटका दें और उस (राह) का मज़ाक़ उड़ाएं, उन्ही लोगों के लिए रुस्वा कुन अज़ाब है।

وَ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا وَلّٰى مُسْتَكْبِرًا
كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا كَاَنَّ فِيْٓ اُذُنَيْهِ
وَقْرًا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿۷﴾

7. और जब उस पर हमारी आयतें पढ कर सुनाई जाती हैं तो वोह ग़ुरूर करते हूए मुंह फेर लेता है गोया उसने उन्हें सुना ही नहीं, जैसे उसके कानों में (बेहरेपन की) गरानी है, सो आप उसे दर्दनाक अज़ाब की ख़बर सुना दें।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ جَنّٰتُ النَّعِيْمِ ﴿۸﴾

8. बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक आ'माल करते रहे उनके लिए ने'मतों की जन्नतें हैं।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ؕ
وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۹﴾

9. (वोह) उनमें हमेशा रहेंगें, अल्लाहका वा'दा सच्चा है, और वोह ग़ालिब है हिक्मतवाला है।

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا
وَ اَلْقٰى فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ
تَمِيْدَ بِكُمْ وَ بَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ

10. उसने आस्मानों को बिग़ैर सुतूनों के बनाया (जैसा कि) तुम उन्हें देख रहे हो और उसने ज़मीनमें ऊंचे मज़बूत पहाड़ रख दिए ताकि तुम्हें ले कर (दौराने गर्दिश) न कांपे और उसने उसमें हर क़िस्म के जानवर फैला दिए, और

دَآبَّةٍ ؕ وَ اَنۡزَلۡنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَنۡۢبَتۡنَا فِیۡهَا مِنۡ کُلِّ زَوۡجٍ کَرِیۡمٍ ﴿۱۰﴾

हमने आस्मानसे पानी उतारा और हमने उसमें हर क़िस्मकी उमदा-व-मुफ़ीद नबातात उगा दीं।

هٰذَا خَلۡقُ اللّٰهِ فَاَرُوۡنِیۡ مَاذَا خَلَقَ الَّذِیۡنَ مِنۡ دُوۡنِهٖ ؕ بَلِ الظّٰلِمُوۡنَ فِیۡ ضَلٰلٍ مُّبِیۡنٍ ﴿۱۱﴾

11. येह अल्लाहकी मख़्लूक़ है, पस (ऐ मुशरिको !) मुझे दिखाओ जो कुछ अल्लाहके सिवा दूसरोंने पैदा किया हो बल्कि ज़ालिम खुली गुमराही में हैं।

ع

وَ لَقَدۡ اٰتَیۡنَا لُقۡمٰنَ الۡحِکۡمَةَ اَنِ اشۡکُرۡ لِلّٰهِ ؕ وَ مَنۡ یَّشۡکُرۡ فَاِنَّمَا یَشۡکُرُ لِنَفۡسِهٖ ۚ وَ مَنۡ کَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِیٌّ حَمِیۡدٌ ﴿۱۲﴾

12. और बेशक हमने लुक़्मानको हिक्मतो दानाई अ़ता की, (और उससे फ़रमाया) कि अल्लाहका शुक्र अदा करो और जो शुक्र करता है वोह अपने ही फाइदे के लिए शुक्र करता है और जो नाशुक्री करता है तो बेशक अल्लाह बे नियाज़ है (खुद ही) सज़ावारे ह़म्द है।

وَ اِذۡ قَالَ لُقۡمٰنُ لِابۡنِهٖ وَ هُوَ یَعِظُهٗ یٰبُنَیَّ لَا تُشۡرِکۡ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّ الشِّرۡکَ لَظُلۡمٌ عَظِیۡمٌ ﴿۱۳﴾

وقف النبي صلى الله عليه وسلم

13. और (याद कीजिए) जब लुक़्मानने अपने बेटे से कहा और वोह उसे नसीह़त कर रहा था, ऐ मेरे फ़रज़न्द ! अल्लाह के साथ शिर्क न करना, बेशक शिर्क बहुत बड़ा ज़ुल्म है।

وَ وَصَّیۡنَا الۡاِنۡسَانَ بِوَالِدَیۡهِ ۚ حَمَلَتۡهُ اُمُّهٗ وَهۡنًا عَلٰی وَهۡنٍ وَّ فِصٰلُهٗ فِیۡ عَامَیۡنِ اَنِ اشۡکُرۡ لِیۡ وَ لِوَالِدَیۡکَ ؕ اِلَیَّ الۡمَصِیۡرُ ﴿۱۴﴾

النصف

14. और हमने इन्सानको उसके वालिदैन के बारे में (नेकी का) ताकीदी हुक्म फ़रमाया, जैसे उसकी मां तक्लीफ़ पर तक्लीफ़ की ह़ालत में (अपने पेटमें) बरदाश्त करती रही और जिसका दूध छूटना भी दो साल में है (उसे येह हुक्म दिया) के तू मेरा (भी) शुक्र अदा कर और अपने वालिदैनका भी। तुझे मेरी ही तरफ़ लौट कर आना है।

وَ اِنۡ جَاهَدٰکَ عَلٰۤی اَنۡ تُشۡرِکَ بِیۡ مَا لَیۡسَ لَکَ بِهٖ عِلۡمٌ ۙ فَلَا تُطِعۡهُمَا وَ صَاحِبۡهُمَا فِی الدُّنۡیَا مَعۡرُوۡفًا ۫

15. और अगर वोह दोनों तुझ पर इस बातकी कोशिश करें कि तू मेरे साथ उस चीज़को शरीक ठेहराए जिस (की ह़क़ीक़त) का तुझे कुछ इ़ल्म नहीं है तो उनकी इताअ़त न करना, और दुनिया (के कामों) में उनका अच्छे तरीक़े से साथ देना, और (अक़ीदा-व-उमूरे आख़िरतमें) उस

وَّاتَّبِعْ سَبِيْلَ مَنْ اَنَابَ اِلَيَّ ۚ ثُمَّ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۵﴾

शख़्सकी पैरवी करना जिसने मेरी तरफ़ तौबा-व-ताअ़त का सुलूक इख़्तियार किया। फिर मेरी ही तरफ़ तुम्हें पलट कर आना है तो मैं तुम्हें उन कामों से बा ख़बर कर दूंगा जो तुम करते रहे थे।

يٰبُنَيَّ اِنَّهَآ اِنْ تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ فَتَكُنْ فِيْ صَخْرَةٍ اَوْ فِي السَّمٰوٰتِ اَوْ فِي الْاَرْضِ يَاْتِ بِهَا اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ﴿۱۶﴾

16. (लुक़्मानने कहा :) ऐ मेरे फ़रजन्द ! अगर कोई चीज राईके दाने के बराबर हो, फिर ख़्वाह वोह किसी चट्टान में (छुपी) हो या आस्मानों में या ज़मीन में (तब भी) अल्लाह उसे (रोजे क़ियामत हिसाब के लिए) मौजूद कर देगा । बेशक अल्लाह बारीक बीन (भी) है आगाहो खबरदार (भी) है।

يٰبُنَيَّ اَقِمِ الصَّلٰوةَ وَاْمُرْ بِالْمَعْرُوْفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلٰى مَآ اَصَابَكَ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿۱۷﴾

17. ऐ मेरे फरजन्द ! तू नमाज़ क़ाइम रख और नेकीका हुक्म दे और बुराई से मना' कर और जो तक्लीफ़ तुझे पहुंचे उस पर सब्र कर, बेशक येह बड़ी हिम्मत के काम हैं।

وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ فِي الْاَرْضِ مَرَحًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرٍ ﴿۱۸﴾

18. और लोगोंसे (गुरूरके साथ) अपना रुख़ न फेर, और ज़मीन पर अकड़ कर मत चल, बेशक अल्लाह हर मुतकब्बिर, इतरा कर चलनेवाले को ना पसंद फ़रमाता है।

وَاقْصِدْ فِيْ مَشْيِكَ وَاغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ ؕ اِنَّ اَنْكَرَ الْاَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيْرِ ﴿۱۹﴾

19. और अपने चलने में मियाना रवी इख़्तियार कर, और अपनी आवाज़ को कुछ पस्त रखा कर, बेशक सबसे बुरी आवाज़ गधे की आवाज़ है।

اَلَمْ تَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهٗ ظَاهِرَةً وَّبَاطِنَةً ؕ وَ

20. (लोगो !) क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाहने तुम्हारे लिए उन तमाम चीज़ों को मुसख़्ख़र फ़रमा दिया है जो आस्मानोंमें हैं और जो ज़मीनमें हैं, और उसने अपनी ज़ाहिरी और बातिनी ने'मतें तुम पर पूरी कर दी हैं। और लोगों में कुछ ऐसे (भी) हैं जो अल्लाहके बारे में झगड़ा

مِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ﴿٢٠﴾

करते हैं बिग़ैर इल्म के और बिग़ैर हिदायत के और बिग़ैर रौशन किताब (की दलील) के।

وَإِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ الشَّيْطٰنُ يَدْعُوْهُمْ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ﴿٢١﴾

21. और जब उनसे कहा जाता है कि तुम उस (किताब) की पैरवी करो जो अल्लाहने नाज़िल फ़रमाई है तो केहते हैं (नहीं) बल्कि हम तो उस (तरीके) की पैरवी करेंगे जिस पर हमने अपने बापदादा को पाया, और अगरचे शैतान उन्हें अज़ाबे दोज़ख़की तरफ़ ही बुलाता हो।

وَمَنْ يُّسْلِمْ وَجْهَهٗٓ اِلَى اللّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ؕ وَاِلَى اللّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ﴿٢٢﴾

22. जो शख़्स अपना रुख़े इताअ़त अल्लाहकी तरफ़ झुका दे और वोह (अपने अ़मल और हालमें) साहिबे ऐहसान भी हो तो उसने मज़बूत हल्क़ेको पुख़्तगीसे थाम लिया, और सब कामों का अंजाम अल्लाह ही की तरफ़ है।

وَمَنْ كَفَرَ فَلَا يَحْزُنْكَ كُفْرُهٗ ؕ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٢٣﴾

23. और जो कुफ़्र करता है (ऐ हबीबे मुकर्रम !) उसका कुफ़्र आपको गमगीन न कर दे, उन्हें (भी) हमारी ही तरफ़ पलट कर आना है, हम उन्हें उन आ'माल से आगाह कर देंगे जो वोह करते रहे हैं, बेशक अल्लाह सीनों की (मुख़्फ़ी) बातों को खूब जाननेवाला है।

نُمَتِّعُهُمْ قَلِيْلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ اِلٰى عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿٢٤﴾

24. हम उन्हें (दुनिया में) थोड़ा सा फ़ाइदा पहुंचाएंगे फिर हम उन्हें बेबस करके सख़्त अ़ज़ाबकी तरफ़ ले जाएंगे।

وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ؕ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٥﴾

25. और अगर आप उनसे दर्याफ़्त करें कि आस्मानों और ज़मीन को किसने पैदा किया। तो वोह ज़रूर केह देंगे कि अल्लाह ने, आप फ़रमा दीजिए : तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं बल्कि उनमें से अक्सर लोग नहीं जानते।

لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّ

26. जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है (सब) अल्लाह ही

اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿٢٦﴾

का है, बेशक अल्लाह ही बेनियाज़ है (अज़ ख़ुद) सज़ावारे हम्द है।

وَلَوْ اَنَّ مَا فِي الْاَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ اَقْلَامٌ وَّ الْبَحْرُ يَمُدُّهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ سَبْعَةُ اَبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمٰتُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٧﴾

27. और अगर ज़मीनमें जितने दरख़्त हैं (सब) क़लम हों और समन्दर (रोशनाई हो) उसके बाद और सात समन्दर उसे बढ़ाते चले जाएं तो अल्लाह के कलिमात तब भी ख़त्म नहीं होंगे बेशक अल्लाह ग़ालिब है हिक्मतवाला है।

مَا خَلْقُكُمْ وَلَا بَعْثُكُمْ اِلَّا كَنَفْسٍ وَّاحِدَةٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٢٨﴾

28. तुम सबको पैदा करना और तुम सबको (मरने के बाद) उठाना (क़ुदरते इलाहिया के लिए) सिर्फ़ एक शख़्स (को पैदा करने और उठाने) की तरह है। बेशक अल्लाह सुननेवाला देखनेवाला है।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَ يُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَ الْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَّجْرِيْۤ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّاَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٢٩﴾

29. क्या आपने नहीं देखा कि अल्लाह रातको दिन में दाख़िल फ़रमाता है और दिनको रातमें दाख़िल फ़रमाता है और (उसीने) सूरज और चांदको मुसख़्ख़र कर रखा है, हर कोई एक मुक़र्रर मीआ़द तक चल रहा है और येह कि अल्लाह उन (तमाम) कामों से जो तुम करते हो ख़बरदार है।

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الْبَاطِلُ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ﴿٣٠﴾

ع ٣ ١١ ١٢

30. येह इस लिए कि अल्लाह ही हक़ है और जिनकी येह लोग अल्लाह के सिवा इ़बादत करते हैं, वोह बातिल हैं और येह कि अल्लाह ही बुलंदो बाला, बड़ाईवाला है।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ الْفُلْكَ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللّٰهِ لِيُرِيَكُمْ مِّنْ اٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿٣١﴾

31. क्या आपने नहीं देखा कि कश्तियां समन्दर में अल्लाहकी ने'मत से चलती हैं ताकि वोह तुम्हें अपनी कुछ निशानियां दिखा दे। बेशक उसमें हर बड़े साबिरो शाकिर के लिए निशानियां हैं।

وَ اِذَا غَشِيَهُمْ مَّوْجٌ كَالظُّلَلِ دَعَوُا

32. और जब समन्दर की मौज (पहाड़ों, बादलों या

اللہَ مُخۡلِصِیۡنَ لَهُ الدِّیۡنَ ۚ فَلَمَّا نَجّٰهُمۡ اِلَی الۡبَرِّ فَمِنۡهُمۡ مُّقۡتَصِدٌ ؕ وَ مَا یَجۡحَدُ بِاٰیٰتِنَاۤ اِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُوۡرٍ ﴿۳۲﴾

साइबानों की तरह उन पर छा जाती है तो वोह (कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन) अल्लाह को उसी के लिए इताअ़त को ख़ालिस रखते हूए पुकारने लगते हैं, फिर जब वोह उन्हें बचा कर खुश्कीकी तरफ़ ले जाता है तो उनमें से चंद ही ए'तिदाल की राह (या'नी राहे हिदायत) पर चलनेवाले होते हैं, और हमारी आयतों का कोई इन्कार नहीं करता सिवाए हर बड़े अ़हद शिकन और बड़े ना शुक्र गुज़ार के।

یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ اتَّقُوۡا رَبَّكُمۡ وَاخۡشَوۡا یَوۡمًا لَّا یَجۡزِیۡ وَالِدٌ عَنۡ وَّلَدِهٖ ۫ وَ لَا مَوۡلُوۡدٌ هُوَ جَازٍ عَنۡ وَّالِدِهٖ شَیۡـًٔا ؕ اِنَّ وَعۡدَ اللہِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الۡحَیٰوةُ الدُّنۡیَا ٝ وَ لَا یَغُرَّنَّكُمۡ بِاللہِ الۡغَرُوۡرُ ﴿۳۳﴾

33. ऐ लोगो ! अपने रबसे डरो, और उस दिनसे डरो जिस दिन कोई बाप अपने बेटे की तरफ से बदला नहीं दे सकेगा और न कोई ऐसा फ़रज़न्द होगा जो अपने वालिद की तरफ़ से कुछ भी बदला देनेवाला हो, बेशक अल्लाहका वा'दा सच्चा है सो दुनिया की ज़िन्दगी तुम्हें हरगिज़ धोकेमें न डाल दे और न ही फरेब देनेवाला (शैतान) तुम्हें अल्लाह के बारे में धोकेमें डाल दे।

اِنَّ اللہَ عِنۡدَهٗ عِلۡمُ السَّاعَةِ ۚ وَ یُنَزِّلُ الۡغَیۡثَ ۚ وَ یَعۡلَمُ مَا فِی الۡاَرۡحَامِ ؕ وَمَا تَدۡرِیۡ نَفۡسٌ مَّاذَا تَكۡسِبُ غَدًا ؕ وَ مَا تَدۡرِیۡ نَفۡسٌۢ بِاَیِّ اَرۡضٍ تَمُوۡتُ ؕ اِنَّ اللہَ عَلِیۡمٌ خَبِیۡرٌ ﴿۳۴﴾ ع

34. बेशक अल्लाह ही के पास क़ियामत का इल्म है, और वोही बारिश उतारता है, और जो कुछ रहमों में है वोह जानता है और कोई शख़्स येह नहीं जानता कि वोह कल क्या (अ़मल) कमाएगा और न कोई शख़्स येह जानता है के वोह किस सर ज़मीन पर मरेगा बेशक अल्लाह खूब जाननेवाला है, ख़बर रखनेवाला है, (या'नी अ़लीम बिज़्ज़ात है और ख़बीर लिल ग़ैर है, अज़ ख़ुद हर शय का इल्म रखता है और जिसे पसंद फ़रमाए बा ख़बर भी कर देता है)।

आयातुहा 30 | 32 सूरतुस सज्दति मक्किय्यतुन 75 | रुकूआतुहा 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

الٓمّٓ ۚ ﴿١﴾

1. अलिफ़ लाम मीम (ह़क़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं)।

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ؕ ﴿٢﴾

2. इस किताब का उतारा जाना, इसमें कुछ शक नहीं कि तमाम जहानों के परवरदिगार की तरफ़ से है।

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۚ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿٣﴾

3. क्या कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन येह केहते हैं कि इसे इस (रसूल ﷺ) ने गढ़ लिया है। बल्कि वोह आपके रबकी तरफ़से ह़क़ है ताकि आप उस कौमको डर सुनाएं जिनके पास आपसे पहले कोई डर सुनानेवाला नहीं आया ताकि वोह हिदायत पाएं।

اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ؕ مَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ وَّ لَا شَفِيْعٍ ؕ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤﴾

4. अल्लाह ही है जिसने आस्मानों और ज़मीनको और जो कुछ उनके दरमियान है (उसे) छ दिनो (या'नी छ मुद्दतों) में पैदा फ़रमाया फिर (निज़ामे काइनात के) अर्शे (इक़्तिदार) पर क़ाइम हुवा, तुम्हारे लिए उसे छोड़ कर न कोई कारसाज़ है और न कोई सिफ़ारिशी, सो क्या तुम नसीह़त क़ुबूल नहीं करते ?

يُدَبِّرُ الْاَمْرَ مِنَ السَّمَآءِ اِلَى الْاَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗۤ اَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ﴿٥﴾

5. वोह आस्मानसे ज़मीन तक (निज़ामे इक़्तिदार) की तदबीर फ़रमाता है फिर वोह अम्र उसकी तरफ़ एक दिन में चढ़ता है (और चढ़ेगा) जिसकी मिक़्दार एक हज़ार साल है उस (ह़िसाब) से जो तुम शुमार करते हो।

ذٰلِكَ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۙ ﴿٦﴾

6. वोही ग़ैब और ज़ाहिर का जाननेवाला है, ग़ालिबो महरबान है।

الَّذِيٓ اَحۡسَنَ كُلَّ شَيۡءٍ خَلَقَهٗ وَبَدَاَ خَلۡقَ الۡاِنۡسَانِ مِنۡ طِيۡنٍ ۞٧

7. वोही है जिसने खूबी-व-हुस्न बख़्शा हर उस चीज़को जिसे उसने पैदा फ़रमाया और उसने इन्सानी तख़्लीक़ की इब्तिदा मिट्टी (या'नी गैरनामी माद्दे) से की।

ثُمَّ جَعَلَ نَسۡلَهٗ مِنۡ سُلٰلَةٍ مِّنۡ مَّآءٍ مَّهِيۡنٍ ۞٨

8. फिर उसकी नस्लको ह़क़ीर पानीके निचोड़ (या'नी नुत्फ़े) से चलाया।

ثُمَّ سَوّٰىهُ وَنَفَخَ فِيۡهِ مِنۡ رُّوۡحِهٖ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمۡعَ وَالۡاَبۡصَارَ وَالۡاَفۡـِٕدَةَ ؕ قَلِيۡلًا مَّا تَشۡكُرُوۡنَ ۞٩

9. फिर उस (में आ'ज़ा) को दुरस्त किया और उसमें अपनी रूहे (ह़यात) फूंकी और तुम्हारे लिए (रह़्मे मादर ही में पहले) कान और (फिर) आँखें और (फिर) दिलो दिमाग़ बनाए, तुम बहुत ही कम शुक्र अदा करते हो।

وَقَالُوۡٓا ءَاِذَا ضَلَلۡنَا فِي الۡاَرۡضِ ءَاِنَّا لَفِيۡ خَلۡقٍ جَدِيۡدٍ ؕ بَلۡ هُمۡ بِلِقَآئِ رَبِّهِمۡ كٰفِرُوۡنَ ۞١٠

10. और कुफ़्फ़ार केहते हैं कि जब हम मिट्टी में मिल कर गुम हो जाएंगे तो (क्या) हम अज़ सरे नौ पैदाइशमें आएंगे, बल्कि वोह अपने रबसे मुलाक़ात ही के मुन्किर हैं।

قُلۡ يَتَوَفّٰىكُمۡ مَّلَكُ الۡمَوۡتِ الَّذِيۡ وُكِّلَ بِكُمۡ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمۡ تُرۡجَعُوۡنَ ۞١١

11. आप फ़रमा दें कि मौत का फ़रिश्ता जो तुम पर मुक़र्रर किया गया है तुम्हारी रूह क़ब्ज करता है फिर तुम अपने रबकी तरफ़ लौटाए जाओगे।

وَلَوۡ تَرٰٓى اِذِ الۡمُجۡرِمُوۡنَ نَاكِسُوۡا رُءُوۡسِهِمۡ عِنۡدَ رَبِّهِمۡ ؕ رَبَّنَآ اَبۡصَرۡنَا وَسَمِعۡنَا فَارۡجِعۡنَا نَعۡمَلۡ صَالِحًا اِنَّا مُوۡقِنُوۡنَ ۞١٢

12. और अगर आप देंं (तो उन पर तअ़ज्जुब करें) कि जब मुजरिम लोग अपने रबके हुज़ूर सर झुकाए होंगे, (और कहेंगे) ऐ हमारे रब ! हमने देख लिया और हमने सुन लिया पस (अब) हमें (दुनिया में) वापस लौटा दे कि हम नेक अ़मल करलें बेशक हम यक़ीन करनेवाले हैं।

وَلَوۡ شِئۡنَا لَاٰتَيۡنَا كُلَّ نَفۡسٍ هُدٰىهَا وَلٰكِنۡ حَقَّ الۡقَوۡلُ مِنِّيۡ لَاَمۡلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الۡجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجۡمَعِيۡنَ ۞١٣

13. और अगर हम चाहते तो हम हर नफ़्स को उसकी हिदायत (अज़ खुद ही) अ़ता कर देते लेकिन मेरी तरफ़से (येह) फ़रमान साबित हो चुका है कि मैं ज़रूर सब (मुन्किर) जिन्नात और इन्सानों से दोज़ख़ को भर दूंगा।

فَذُوقُوا بِمَا نَسِيتُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا ۚ إِنَّا نَسِينَاكُمْ ۖ وَذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٤﴾

14. पस (अब) तुम मज़ा चखो कि तुमने अपने उस दिनकी पेशी को भुला रखा था, बेशक हमने तुमको भुला दिया है और अपने उन आ'माल के बदले जो तुम करते रहे थे दाइमी अ़ज़ाब चखते रहो।

إِنَّمَا يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا الَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِهَا خَرُّوا سُجَّدًا وَسَبَّحُوا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ۩ ﴿١٥﴾

15. पस हमारी आयतों पर वोही लोग ईमान लाते हैं जिन्हें उन (आयतों) के ज़रीए नसीहत की जाती है तो वोह सज्दह करते हूए गिर जाते हैं और अपने रबकी हम्द के साथ तस्बीह करते हैं और वोह तकब्बुर नहीं करते।

السجدة ٩

تَتَجَافَىٰ جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَطَمَعًا وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ﴿١٦﴾

16. उनके पहलू उनकी ख़्वाबगाहों से जुदा रेहते हैं और अपने रबको ख़ौफ़ और उम्मीद (की मिली जुली कैफ़ियत) से पुकारते हैं और हमारे अ़ता कर्दह रिज़्क़में से (हमारी राहमें) ख़र्च करते हैं।

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّا أُخْفِيَ لَهُم مِّن قُرَّةِ أَعْيُنٍ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٧﴾

17. सो किसी को मा'लूम नहीं जो आँखों की ठंडक उनके लिए पोशीदह रखी गई है, येह उन (आ'माले सालेहा) का बदला होगा जो वोह करते रहे थे।

أَفَمَن كَانَ مُؤْمِنًا كَمَن كَانَ فَاسِقًا ۚ لَّا يَسْتَوُونَ ﴿١٨﴾

18. भला वोह शख़्स जो साहिबे ईमान हो उसकी मिस्ल हो सक्ता है जो नाफ़रमान हो, (नहीं) येह (दोनों) बराबर नहीं हो सक्ते।

وقف غفران

أَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ جَنَّاتُ الْمَأْوَىٰ نُزُلًا بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾

19. चुनान्चे जो लोग ईमान लाए और नेक आ'माल करते रहे तो उनके लिए दाइमी सुकूनत के बाग़ात हैं (अल्लाह की तरफ़ से उनकी) ज़ियाफ़तो इकराम में उन (आ'माल) के बदले जो वोह करते रहे थे।

وَأَمَّا الَّذِينَ فَسَقُوا فَمَأْوَاهُمُ النَّارُ ۖ كُلَّمَا أَرَادُوا أَن يَخْرُجُوا مِنْهَا أُعِيدُوا فِيهَا وَقِيلَ لَهُمْ

20. और जो लोग ना फ़रमान हुए सो उनका ठिकाना दोज़ख़ है। वोह जब भी उससे निकल भागनेका इरादा करेंगे तो उसीमें लौटा दिए जाएंगे और उनसे कहा जाएगा

ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّذِي كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُونَ ﴿٢٠﴾

के इस आतिशे दोज़ख़का अ़ज़ाब चखते रहो जिसे तुम झुटलाया करते थे।

وَلَنُذِيقَنَّهُمْ مِنَ الْعَذَابِ الْأَدْنٰى دُونَ الْعَذَابِ الْأَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٢١﴾

21. और हम उनको यक़ीनन (आख़िरत के) बड़े अ़ज़ाब से पहले क़रीबतर (दुन्यवी) अ़ज़ाब (का मज़ा) चखाएंगे ताकि वोह (कुफ़्र से) बाज़ आ जाएं।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيٰتِ رَبِّهٖ ثُمَّ أَعْرَضَ عَنْهَا ۚ إِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ مُنْتَقِمُونَ ﴿٢٢﴾

22. और उस शख़्स से बढ़ कर ज़ालिम कौन हो सक्ता है जिसे उसके रबकी आयतों के ज़रीए नसीहत की जाए फिर वोह उनसे मुंह फेर ले, बेशक हम मुजरिमों से बदला लेनेवाले हैं।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوسَى الْكِتٰبَ فَلَا تَكُنْ فِي مِرْيَةٍ مِنْ لِقَآئِهٖ وَجَعَلْنٰهُ هُدًى لِبَنِي إِسْرَآءِيلَ ﴿٢٣﴾

23. और बेशक हमने मूसा (عليه السلام) को किताब (तौरात) अता फ़रमाई तो आप उनकी मुलाक़ात की निस्बत शक में न रहें (वोह मुलाक़ात आपसे अ़नक़रीब शबे मे'राज होने वाली है) और हमने उसे बनी इसराईल के लिए हिदायत बनाया।

وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ أَئِمَّةً يَهْدُونَ بِأَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوا ۖ وَكَانُوا بِآيٰتِنَا يُوقِنُونَ ﴿٢٤﴾

24. और हमने उनमें से जब वोह सब्र करते रहे कुछ इमामो पेशवा बना दिए जो हमारे हुक्म से हिदायत करते रहे, और वोह हमारी आयतों पर यक़ीन रखते थे।

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٢٥﴾

25. बेशक आपका रब ही उन लोगों के दरमियान क़ियामत के दिन उन (बातों) का फ़ैसला फ़रमा देगा जिन में वोह इख़्तिलाफ़ किया करते थे।

أَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْقُرُونِ يَمْشُونَ فِي مَسٰكِنِهِمْ ۚ إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ ۚ أَفَلَا

26. और क्या उन्हें (इस अम्रसे) हिदायत नहीं हुई कि हमने उनसे पहले कितनी ही उम्मतों को हलाक कर डाला था जिनकी रहाइशगाहों में (अब) येह लोग चलते फिरते

يَسْمَعُوْنَ ﴿٢٦﴾

हैं। बेशक उसमें निशानियां हैं, तो क्या वोह सुनते नहीं हैं?

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَسُوْقُ الْمَآءَ اِلَى الْاَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا تَاْكُلُ مِنْهُ اَنْعَامُهُمْ وَاَنْفُسُهُمْ ۭ اَفَلَا يُبْصِرُوْنَ ﴿٢٧﴾

27. और क्या उन्होंने नहीं देखा कि हम पानीको बंजर ज़मीन की तरफ़ बहा ले जाते हैं, फिर हम उससे खेत निकालते हैं जिससे उनके चौपाए (भी) खाते हैं और वोह खुद भी खाते हैं, तो क्या वोह देखते नहीं हैं?

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْفَتْحُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٨﴾

28. और केहते हैं येह फ़ैसले (का दिन) कब होगा अगर तुम सच्चे हो।

قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِيْمَانُهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿٢٩﴾

29. आप फ़रमा दें : फ़ैसले के दिन न काफ़िरों को उनका ईमान फ़ाइदा देगा और न ही उन्हें मोहलत दी जाएगी।

فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَانْتَظِرْ اِنَّهُمْ مُّنْتَظِرُوْنَ ﴿٣٠﴾

30. पस आप उनसे मुंह फेर लीजिए और इन्तिज़ार कीजिए और वोह लोग (भी) इन्तिज़ार कर रहे हैं।

आयातुहा 73 | 33 सूरतुल अहज़ाबि म-दनिय्यतुन 90 | रुकूआतुहा 9

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللّٰهَ وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١﴾

1. ऐ नबी! आप अल्लाह के तक़्वा पर (हस्बे साबिक़ इस्तिक़ामत से) क़ाइम रहें और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों का (येह) केहना (कि हमारे साथ मज़हबी समझौता कर लें हरगिज़) न मानें, बेशक अल्लाह खूब जाननेवाला बड़ी हिक्मतवाला है।

وَّاتَّبِعْ مَا يُوْحٰٓى اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿٢﴾

2. और आप उस (फ़रमान) की पैरवी जारी रखिए जो आपके पास आपके रबकी तरफ़से वह़ी किया जाता है, बेशक अल्लाह उन कामों से खबरदार है जो तुम अंजाम देते हो।

وَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ۝۳

3. और अल्लाह पर भरोसा (जारी) रखिए और अल्लाह ही कारसाज़ काफ़ी है।

مَا جَعَلَ اللّٰهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ فِيْ جَوْفِهٖ ۚ وَمَا جَعَلَ اَزْوَاجَكُمُ الّٰۗـىِٔيْ تُظٰهِرُوْنَ مِنْهُنَّ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ وَمَا جَعَلَ اَدْعِيَاۗءَكُمْ اَبْنَاۗءَكُمْ ۭ ذٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ بِاَفْوَاهِكُمْ ۭ وَاللّٰهُ يَقُوْلُ الْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِي السَّبِيْلَ ۝۴

4. अल्लाहने किसी आदमीके लिए उसके पेहलू में दो दिल नहीं बनाए, और उसने तुम्हारी बीवियों को जिन्हें तुम ज़िहार करते हूए मां केह देते हो तुम्हारी माएं नहीं बनाया, और न तुम्हारे मुंह बोले बेटोंको तुम्हारे (ह़क़ीक़ी) बेटे बनाया, येह सब तुम्हारे मुंहकी अपनी बातें हैं और अल्लाह हक़ बात फ़रमाता है और वोही (सीधा) रास्ता दिखाता है।

اُدْعُوْهُمْ لِاٰبَاۗىِٕهِمْ هُوَ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ لَّمْ تَعْلَمُوْٓا اٰبَاۗءَهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ فِي الدِّيْنِ وَمَوَالِيْكُمْ ۭ وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيْمَآ اَخْطَاْتُمْ بِهٖ ۙ وَلٰكِنْ مَّا تَعَمَّدَتْ قُلُوْبُكُمْ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝۵

5. तुम उन (मुंह बोले बेटों) को उनके बाप (ही के नाम) से पुकारा करो, येही अल्लाहके नज़दीक ज़ियादह अ़द्ल है, फिर अगर तुम्हें उनके बाप मा'लूम न हों तो (वोह) दीन में तुम्हारे भाई हैं और तुम्हारे दोस्त हैं। और इस बातमें तुम पर कोई गुनाह नहीं जो तुमने ग़लती से कही लेकिन (उस पर ज़रूर गुनाह होगा) जिसका इरादा तुम्हारे दिलोंने किया हो, और अल्लाह बहुत बख़्शनेवाला बहुत रह़म फ़रमानेवाला है।

اَلنَّبِيُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِيْنَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ وَاَزْوَاجُهٗٓ اُمَّهٰتُهُمْ ۭ وَاُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى بِبَعْضٍ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُهٰجِرِيْنَ اِلَّآ اَنْ تَفْعَلُوْٓا اِلٰٓى اَوْلِيٰۗىِٕكُمْ مَّعْرُوْفًا ۭ كَانَ ذٰلِكَ فِي الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ۝۶

6. येह नबिय्ये (मुकर्रम ﷺ) मोमिनों के साथ उनकी जानों से ज़ियादह करीब और हक़दार हैं और आपकी अज़्वाजे (मुतह्हरात) उनकी माएं हैं, और ख़ूनी रिश्तेदार अल्लाहकी किताबमें (दीगर) मोमिनीन और मुहाजिरीन की निस्बत (तक़्सीमे विरासत में) एक दूसरे के ज़ियादह हक़दार हैं सिवाए इसके कि तुम अपने दोस्तों पर एहसान करना चाहो, येह हुक्म किताबे (इलाही) में लिखा हुआ है।

وَإِذْ أَخَذْنَا مِنَ النَّبِيِّينَ مِيثَاقَهُمْ وَمِنْكَ وَمِنْ نُوحٍ وَإِبْرَاهِيمَ وَمُوسَىٰ وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۖ وَأَخَذْنَا مِنْهُمْ مِيثَاقًا غَلِيظًا ﴿٧﴾

7. और (ऐ हबीब ! याद कीजिए) जब हमने अंबिया से उन (की तबलीगे़ रिसालत) का अ़हद लिया और (खुसूसन) आपसे और नूह़ से और इब्राहीमसे और मूसा से और ईसा इब्ने मरयम (عليهم السلام) से और हमने उनसे निहायत पुख़्ता अ़हद लिया।

لِيَسْأَلَ الصَّادِقِينَ عَنْ صِدْقِهِمْ ۚ وَأَعَدَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿٨﴾

8. ताकि (अल्लाह) सच्चों से उनके सच के बारे में दर्याफ़्त फ़रमाए और उसने काफ़िरों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَاءَتْكُمْ جُنُودٌ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا وَجُنُودًا لَمْ تَرَوْهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ﴿٩﴾

9. ऐ ईमानवालो ! अपने ऊपर अल्लाहका एह़सान याद करो जब (कुफ़्फ़ार की) फ़ौजें तुम पर आ पहुंचीं, तो हमने उन पर हवा और (फ़रिश्तों के) लश्करों को भेजा जिन्हें तुमने नहीं देखा, और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे खूब देखनेवाला है।

إِذْ جَاءُوكُمْ مِنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ أَسْفَلَ مِنْكُمْ وَإِذْ زَاغَتِ الْأَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوبُ الْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّونَ بِاللَّهِ الظُّنُونَا ﴿١٠﴾

10. जब वोह (काफ़िर) तुम्हारे उपर (वादीकी बालाई मशरिक़ी जानिब) से और तुम्हारे नीचे (वादी की ज़ेरीं मग़रिबी जानिब) से चढ़ आए थे और जब (हैबतसे तुम्हारी) आँखें फिर गई थीं और (देहशत से तुम्हारे) दिल ह़लकूम तक आ पहुंचे थे और तुम (खौ़फ़ो उम्मीदकी कैफ़िय्यत में) अल्लाहकी निस्बत मुख़्तलिफ़ गुमान करने लगे थे।

هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُونَ وَزُلْزِلُوا زِلْزَالًا شَدِيدًا ﴿١١﴾

11. उस मुक़ाम पर मोमिनोंकी आज़माइशकी गई और उन्हें निहायत सख़्त झटके दिए गए।

وَإِذْ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ مَا وَعَدَنَا اللَّهُ

12. और जब मुनाफ़िक लोग और वोह लोग जिनके दिलों में (कमज़ोरिए अ़क़ीदा और शको शुबहकी) बीमारी थी, येह केहने लगे कि हमसे अल्लाह और उसके

وَرَسُوْلُهٗٓ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿١٢﴾

रसूल ने सिर्फ़ धोके और फरेब के लिए (फ़तह़ का) वा'दा किया था।

وَ اِذْ قَالَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ يٰٓاَهْلَ
يَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوْا ۚ
وَيَسْتَاْذِنُ فَرِيْقٌ مِّنْهُمُ النَّبِيَّ
يَقُوْلُوْنَ اِنَّ بُيُوْتَنَا عَوْرَةٌ ۛ وَمَا هِيَ
بِعَوْرَةٍ ۛ اِنْ يُّرِيْدُوْنَ اِلَّا فِرَارًا ﴿١٣﴾

13. और जबकि उनमें से एक गिरोह केहने लगा : ऐ अह्ले यसरब ! तुम्हारे (बहिफ़ाज़त) ठेहरनेकी कोई जगह नहीं रही, तुम वापस (घरोंको) चले जाओ और उनमें से एक गिरोह नबी (अकरम ﷺ)से येह केहते हुए (वापस जानेकी) इजाज़त मांगने लगा कि हमारे घर खुले पडे हैं, हालां कि वोह खुले न थे, वोह (उस बहाने से) सिर्फ़ फ़रार चाहते थे।

وَلَوْ دُخِلَتْ عَلَيْهِمْ مِّنْ اَقْطَارِهَا
ثُمَّ سُئِلُوا الْفِتْنَةَ لَاٰتَوْهَا وَ مَا
تَلَبَّثُوْا بِهَآ اِلَّا يَسِيْرًا ﴿١٤﴾

14. और अगर उन पर मदीनाके अतराफ़ो अक्नाफ़ से फ़ौजें दाखि़ल कर दी जातीं फिर इन (निफ़ाक़ का अक़ीदा रखनेवालों) से फ़ित्नए (कुफ्रो शिर्क) का सवाल किया जाता तो वोह उस (मुतालबे) को भी पूरा कर देते, और थोड़े से तवक़्क़ुफ़ केसिवा उसमें ताख़ीर न करते।

وَلَقَدْ كَانُوْا عَاهَدُوا اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ
لَا يُوَلُّوْنَ الْاَدْبَارَ ؕ وَكَانَ عَهْدُ
اللّٰهِ مَسْئُوْلًا ﴿١٥﴾

15. और बेशक उन्होंने उससे पहले अल्लाह से अ़हद कर रखा था के पीठ फेर कर न भागेंगे और अल्लाह से किए हुए अ़हद की (ज़रूर) बाज़पुर्स होगी।

قُلْ لَّنْ يَّنْفَعَكُمُ الْفِرَارُ اِنْ
فَرَرْتُمْ مِّنَ الْمَوْتِ اَوِ الْقَتْلِ وَ اِذًا
لَّا تُمَتَّعُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٦﴾

16. फ़रमा दीजिए : तुम्हें फ़रार हरगिज़ कोई नफ़ा' न देगा, अगर तुम मौत या क़त्ल से (डर कर) भागे हो तो तुम थोड़ी सी मुद्दत के सिवा (ज़िन्दगानी का) कोई फ़ाइदा न उठा सकोगे।

قُلْ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَعْصِمُكُمْ مِّنَ اللّٰهِ
اِنْ اَرَادَ بِكُمْ سُوْٓءًا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ
رَحْمَةً ؕ وَ لَا يَجِدُوْنَ لَهُمْ مِّنْ
دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿١٧﴾

17. फ़रमा दीजिए : कौन ऐसा शख़्स है जो तुम्हें अल्लाहसे बचा सक्ता है अगर वोह तक्लीफ़ देना चाहे या तुम पर रह्मतका इरादा फ़रमाए, और वोह अपने लिए अल्लाह के सिवा न कोई कारसाज़ पाएंगे और न कोई मददगार।

قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ الْمُعَوِّقِيْنَ مِنْكُمْ وَالْقَآئِلِيْنَ لِاِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ اِلَيْنَا ۚ وَلَا يَاْتُوْنَ الْبَاْسَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٨﴾

18. बेशक अल्लाह तुमसे उन लोगों को जानता है जो (रसूल ﷺ से और उनकी मइय्यत में जिहाद से) रोकते हैं और जो अपने भाइयों से केहते हैं कि हमारी तरफ़ आ जाओ और येह लोग लड़ाई में नहीं आते मगर बहुत ही कम।

اَشِحَّةً عَلَيْكُمْ ۚ فَاِذَا جَآءَ الْخَوْفُ رَاَيْتَهُمْ يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ تَدُوْرُ اَعْيُنُهُمْ كَالَّذِيْ يُغْشٰى عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۚ فَاِذَا ذَهَبَ الْخَوْفُ سَلَقُوْكُمْ بِاَلْسِنَةٍ حِدَادٍ اَشِحَّةً عَلَى الْخَيْرِ ؕ اُولٰٓئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوْا فَاَحْبَطَ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿١٩﴾

19. तुम्हारे हक़में बख़ील हो कर (ऐसा करते हैं), फिर जब ख़ौफ़ (की हालत) पेश आ जाए तो आप देखेंगे कि वोह आपकी तरफ़ तकते होंगे (और) उनकी आँखें उस शख़्स की तरह घूमती होंगी जिस पर मौतकी ग़शी तारी हो रही हो, फिर जब ख़ौफ़ जाता रहे तो तुम्हें तेज़ ज़बानों के साथ ता'ने देंगे (आज़ुर्दह करेंगे, उनका हाल येह है कि) माले ग़नीमत पर बड़े हरीस हैं। येह लोग (हक़ीक़त में) ईमान ही नहीं लाए, सो अल्लाहने उनके आ'माल ज़ब्त कर लिए हैं और येह अल्लाह पर आसान था।

يَحْسَبُوْنَ الْاَحْزَابَ لَمْ يَذْهَبُوْا ۚ وَاِنْ يَّاْتِ الْاَحْزَابُ يَوَدُّوْا لَوْ اَنَّهُمْ بَادُوْنَ فِي الْاَعْرَابِ يَسْاَلُوْنَ عَنْ اَنْۢبَآئِكُمْ ؕ وَلَوْ كَانُوْا فِيْكُمْ مَّا قٰتَلُوْٓا اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٢٠﴾

20. येह लोग (अभी तक येह) गुमान करते हैं कि काफ़िरों के लश्कर (वापस) नहीं गए और अगर वोह लश्कर (दोबारा) आ जाएं तो येह चाहेंगे कि काश! वोह देहातियों में जा कर बादिया नशीन हो जाएं (और) तुम्हारी खबरें दर्याफ़्त करते रहें, और अगर वोह तुम्हारे अंदर मौजूद हों तो भी बहुत ही कम लोगों के सिवा वोह जंग नहीं करेंगे।

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيْرًا ﴿٢١﴾

21. फ़िल हक़ीक़त तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह (ﷺ की ज़ात) में निहायत ही हसीन नमूनए (हयात) है हर उस शख़्स के लिए जो अल्लाह (से मिलने) की और यौमे आख़िरत की उम्मीद रखता है और अल्लाहका ज़िक्र कसरत से करता है।

وَلَمَّا رَاَ الْمُؤْمِنُوْنَ الْاَحْزَابَ ۙ قَالُوْا هٰذَا مَا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ

22. और जब अहले ईमान ने (काफिरों के) लश्कर देखे तो बोल उठे कि येह है जिसका अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) ने हमसे वा'दा फ़रमाया था और अल्लाह और

وَصَدَقَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ ۫ وَمَا زَادَهُمْ اِلَّآ اِيْمَانًا وَّتَسْلِيْمًا ﴿٢٢﴾

उसके रसूल (ﷺ) ने सच फ़रमाया है सो इस (मन्ज़र) से उनके ईमान और इताअ़त गुजारी में इज़ाफ़ा ही हुआ।

مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْتَظِرُ ۖ وَمَا بَدَّلُوْا تَبْدِيْلًا ﴿٢٣﴾

23. मोमिनों में से (बहुतसे) मर्दों ने वोह बात सच कर दिखाई जिस पर उन्होंने अल्लाहसे अ़हद किया था, पस उनमें से कोई (तो शहादत पा कर) अपनी नज़्र पूरी कर चुका है और उन में से कोई (अपनी बारी का) इन्तिज़ार कर रहा है, मगर उन्होंने (अपने अ़हदमें) ज़रा भी तब्दीली नहीं की।

لِّيَجْزِيَ اللّٰهُ الصّٰدِقِيْنَ بِصِدْقِهِمْ وَيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ اِنْ شَآءَ اَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٢٤﴾

24. (येह) इसलिए कि अल्लाह सच्चे लोगों को उनकी सच्चाई का बदला दे और मुनाफ़िक़ों को चाहे तो अ़ज़ाब दे या उनकी तौबा क़ुबूल फ़रमा ले। बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला बड़ा रहम फ़रमानेवाला है।

وَرَدَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوْا خَيْرًا ۭ وَكَفَى اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ الْقِتَالَ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ قَوِيًّا عَزِيْزًا ﴿٢٥﴾

25. और अल्लाहने काफ़िरोंको उनके गुस्सेकी जलन के साथ (मदीनासे ना मुराद) वापस लौटा दिया कि वोह कोई कामयाबी न पा सके, और अल्लाह ईमानवालों के लिए जंगे (अह्ज़ाब) में काफ़ी होगा, और अल्लाह बड़ी क़ुव्वतवाला इज़्ज़तवाला है।

وَاَنْزَلَ الَّذِيْنَ ظَاهَرُوْهُمْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ صَيَاصِيْهِمْ وَقَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ فَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ وَتَاْسِرُوْنَ فَرِيْقًا ﴿٢٦﴾

26. और (बनू क़ुरैज़ा के) जिन अहले किताबने उन (काफ़िरों) की मदद की थी अल्लाहने उन्हें (भी) उनके क़िलओं से उतार दिया और उनके दिलों में (इस्लामका) रो'ब डाल दिया तुम (उनमें से) एक गिरोह को (उनके जंगी जराइम की पादाशमें) क़त्ल करते हो और एक गिरोह को जंगी क़ैदी बनाते हो।

وَاَوْرَثَكُمْ اَرْضَهُمْ وَدِيَارَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ وَاَرْضًا لَّمْ تَطَـُٔوْهَا ۭ

27. और उसने तुम्हें उन (जंगी दुश्मनों) की ज़मीन का और उनके घरोंका और उनके अमवालका और उस (मफ़्तूहा) ज़मीन का जिसमें तुमने (पहले) क़दम भी न

وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ﴿٢٧﴾

रखा था मालिक बना दिया और अल्लाह हर चीज़ पर बड़ा क़ादिर है।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ اِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَ زِيْنَتَهَا فَتَعَالَيْنَ اُمَتِّعْكُنَّ وَ اُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ﴿٢٨﴾

28. ऐ नबिय्ये (मुकर्रम !) अपनी अज़्वाज से फ़रमा दें कि अगर तुम दुनिया और उसकी ज़ीनतो आराइश की ख़्वाहिशमंद हो तो आओ मैं तुम्हें मालो मताअ़ दे दूं और तुम्हें हुस्ने सुलूक के साथ रुख़्सत कर दूं।

وَاِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالدَّارَ الْاٰخِرَةَ فَاِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْمُحْسِنٰتِ مِنْكُنَّ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٢٩﴾

29. और अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल और दारे आख़िरतकी तलबगार हो तो बेशक अल्लाहने तुममें नेकूकार बीबियों के लिए बहुत बड़ा अज्र तैयार फ़रमा रखा है।

يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ مَنْ يَّاْتِ مِنْكُنَّ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ يُّضٰعَفْ لَهَا الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ ۭ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿٣٠﴾

30. ऐ अज़्वाजे नबिय्ये (मुकर्रम !) तुम में से कोई ज़ाहिरी मा'सियत की मुर्तकिब हो तो उस के लिए अ़ज़ाब दोगुना कर दिया जाएगा और येह अल्लाह पर बहुत आसान है ।

وَ مَنْ يَّقْنُتْ مِنْكُنَّ لِلّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ تَعْمَلْ صَالِحًا نُّؤْتِهَاۤ اَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ ۙ وَ اَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيْمًا ﴿۳۱﴾

31. और तुम में से जो अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की इताअ़त गुज़ार रहीं और नेक आ'माल करती रहीं तो हम उनका सवाब (भी) उन्हें दोगुना देंगे और हमने उनके लिए (जन्नत में) बा इज़्ज़त रिज़्क़ तैयार कर रखा है।

يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ مِّنَ النِّسَآءِ اِنِ اتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِيْ فِيْ قَلْبِهٖ مَرَضٌ وَّ قُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ﴿۳۲﴾

32. ऐ अज़्वाजे पयग़म्बर ! तुम औ़रतों में से किसी एक की भी मिस्ल नहीं हो, अगर तुम परहेज़गार रेहना चाहती हो तो (मर्दों से ह़स्बे ज़रूरत) बात करने में नर्म लेहजा इख़्तियार न करना कि जिसके दिलमें (निफ़ाक़ की) बीमारी है (कहीं) वोह लालच करने लगे और (हमेशा) शक और लचक से मह़फ़ूज़ बात करना।

وَ قَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ وَ لَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْاُوْلٰى وَ اَقِمْنَ الصَّلٰوةَ وَ اٰتِيْنَ الزَّكٰوةَ وَ اَطِعْنَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ ؕ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ وَ يُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًا ﴿۳۳﴾

33. और अपने घरों में सुकून से क़ियाम पज़ीर रेहना और पुरानी जाहिलिय्यत की तरह़ ज़ेबो ज़ीनत का इज़्हार मत करना, और नमाज़ क़ाइम रखना और ज़कात देते रेहना और अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ)की इताअ़त गुज़ारी में रेहना, बस अल्लाह येही चाहता है कि ऐ (रसूल ﷺ के) अह्ले बैत ! तुमसे हर क़िस्म के गुनाह का मेल (और शक्को नक़्स की गर्द तक) दूर कर दे और तुम्हें (कामिल) तहारत से नवाज़ कर बिल्कुल पाक साफ़ कर दे।

وَ اذْكُرْنَ مَا يُتْلٰى فِيْ بُيُوْتِكُنَّ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ وَ الْحِكْمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ لَطِيْفًا خَبِيْرًا ﴿۳۴﴾ ع

34. और तुम अल्लाहकी आयतों को और (रसूल ﷺ की) सुन्नतो ह़िक्मत को जिनकी तुम्हारे घरों में तिलावत की जाती है याद रखा करो, बेशक अल्लाह (अपने अवलिया के लिए) साह़िबे लुत्फ़ (और सारी मख़्लूक़ के लिए) ख़बरदार है।

اِنَّ الْمُسْلِمِيْنَ وَ الْمُسْلِمٰتِ وَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتِ وَ الْقٰنِتِيْنَ

35. बेशक मुसलमान मर्द और मुसलमान औ़रतें, और मोमिन मर्द और मोमिन औ़रतें, और फ़रमांबरदार मर्द

وَالْقٰنِتٰتِ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالصّٰدِقٰتِ
وَالصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰبِرٰتِ وَالْخٰشِعِيْنَ
وَالْخٰشِعٰتِ وَالْمُتَصَدِّقِيْنَ وَالْمُتَصَدِّقٰتِ
وَالصَّآئِمِيْنَ وَالصّٰٓئِمٰتِ وَالْحٰفِظِيْنَ
فُرُوْجَهُمْ وَالْحٰفِظٰتِ وَالذّٰكِرِيْنَ
اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّالذّٰكِرٰتِ ۙ اَعَدَّ اللّٰهُ
لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۳۵﴾

और फ़रमांबरदार औरतें, और सिद्क़वाले मर्द और सिद्क़वाली औरतें, और सब्रवाले मर्द और सब्रवाली औरतें और आजिज़ीवाले मर्द और आजिज़ीवाली औरतें, और सदक़ा व ख़ैरात करनेवाले मर्द और सदक़ा व ख़ैरात करनेवाली औरतें और रोज़ादार मर्द और रोज़ादार औरतें, और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करनेवाले मर्द और हिफ़ाज़त करनेवाली औरतें, और कसरत से अल्लाह का ज़िक्र करनेवाले मर्द और ज़िक्र करनेवाली औरतें, अल्लाह ने इन सब के लिए बख़्शिश और अज़ीम अज्र तैयार फ़रमा रखा है।

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ اِذَا
قَضَى اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ اَمْرًا اَنْ
يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ ؕ
وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ
ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِيْنًا ﴿۳۶﴾

36. और न किसी मोमिन मर्द को (येह) हक़ हासिल है और न किसी मोमिन औरतको कि जब अल्लाह और उसका रसूल (ﷺ) किसी काम का फ़ैसला (या हुक्म) फ़रमा दें तो उनके लिए अपने (उस) काम में (करने या न करने का) कोई इख़्तियार हो, और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की ना फ़रमानी करता है तो वोह यक़ीनन खुली गुमराही में भटक गया।

وَاِذْ تَقُوْلُ لِلَّذِيْٓ اَنْعَمَ اللّٰهُ
عَلَيْهِ وَاَنْعَمْتَ عَلَيْهِ اَمْسِكْ
عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللّٰهَ وَتُخْفِيْ
فِيْ نَفْسِكَ مَا اللّٰهُ مُبْدِيْهِ وَ
تَخْشَى النَّاسَ ۚ وَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ
تَخْشٰىهُ ؕ فَلَمَّا قَضٰى زَيْدٌ مِّنْهَا

37. और (ऐ हबीब!) याद कीजिए जब आपने उस शख़्स से फ़रमाया जिस पर अल्लाहने इन्आम फ़रमाया था और उस पर आपने (भी) इन्आम फ़रमाया था कि तू अपनी बीवी (ज़ैनब) को अपनी ज़ौजिय्यत में रोके रख और अल्लाह से डर और आप अपने दिल में वोह बात ★पोशीदा रख रहे थे जिसे अल्लाह ज़ाहिर फ़रमानेवाला था और आप (दिलमें हयाअन) लोगों (की ता'ना ज़नी) का ख़ौफ़ रखते थे। (ऐ हबीब ! लोगों को ख़ातिर में लाने की कोई ज़रूरत न थी) और फ़क़त अल्लाह ही ज़ियादह

★(कि ज़ैनब की तुम्हारे साथ मुसालेहत न हो सकेगी और मन्शाए एज़्दी के तहत वोह तलाक़ के बाद अज़्वाजे मुतह्हरात में दाख़िल होंगी)

وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا لِكَيْ لَا يَكُوْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ حَرَجٌ فِيْٓ اَزْوَاجِ اَدْعِيَآئِهِمْ اِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا ؕ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ﴿٣٧﴾

हक़दार है किआप उसका ख़ौफ़ रखें (और वोह आप से बढ़ कर किस में है?) फिर जब (आपके मु-त-बन्ना) ज़ैदने उसे तलाक़ देनेकी ग़रज़ पूरी कर ली, तो हमने उससे आपका निकाह़ कर दिया ताकि मोमिनों पर उनके मुंह बोले बेटोंकी बीवियों (के साथ निकाह़) के बारे में कोई ह़रज न रहे जब कि (तलाक़ दे कर) वोह उनसे बे ग़रज़ हो गए हों, और अल्लाह का हुक्म तो पूरा किया जानेवाला ही था।

مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيْمَا فَرَضَ اللّٰهُ لَهٗ ؕ سُنَّةَ اللّٰهِ فِي الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ؕ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ قَدَرًا مَّقْدُوْرَا ۙ ﴿٣٨﴾

38. और नबी (ﷺ) पर उस काम (की अंजाम दही) में कोई ह़रज नहीं है जो अल्लाह ने उनके लिए फ़र्ज़ फ़रमा दिया है, अल्लाह का येही तरीक़ा-व-दस्तूर उन लोगों में (भी रहा) है जो पहले गुज़र चुके, और अल्लाह का हुक्म फ़ैसला है जो पूरा हो चुका।

الَّذِيْنَ يُبَلِّغُوْنَ رِسٰلٰتِ اللّٰهِ وَيَخْشَوْنَهٗ وَلَا يَخْشَوْنَ اَحَدًا اِلَّا اللّٰهَ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ﴿٣٩﴾

39. वोह (पहले) लोग अल्लाह के पैग़ामात पहुंचाते थे और उसका ख़ौफ़ रखते थे और अल्लाहके सिवा किसी से नहीं डरते थे, और अल्लाह ह़िसाब लेनेवाला काफ़ी है।

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿٤٠﴾

40. मुहम्मद (ﷺ) तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं हैं लेकिन वोह अल्लाह के रसूल हैं और सब अंबिया के आख़िर में (सिल्सिलए नुबुव्वत ख़त्म करनेवाले) हैं, और अल्लाह हर चीज़ का ख़ूब इल्म रखनेवाला है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا ﴿٤١﴾

41. ऐ ईमानवालो ! तुम अल्लाह का कसरत से ज़िक्र किया करो।

وَّسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿٤٢﴾

42. और सुब्ह़ो शाम उसकी तस्बीह़ किया करो।

هُوَ الَّذِيْ يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَ

43. वोही है जो तुम पर दुरूद भेजता है और उसके फ़रिश्ते

مَلٰٓئِكَتُهٗ لِيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَحِيْمًا ﴿٤٣﴾

भी, ताकि तुम्हें अँधेरों से निकाल कर नूर की तरफ़ ले जाए, और वोह मोमिनों पर बड़ी महरबानी फ़रमानेवाला है।

تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهٗ سَلٰمٌ ۚۖ وَاَعَدَّ لَهُمْ اَجْرًا كَرِيْمًا ﴿٤٤﴾

44. जिस दिन वोह (मोमिन) उससे मुलाक़ात करेंगे तो उन (की मुलाक़ात) का तोहफ़ा सलाम होगा, और उसने उनके लिए बड़ी अज़मतवाला अज्र तैयार कर रखा है।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ﴿٤٥﴾ۙ

45. ऐ नबिय्ये (मुकर्रम!) बेशक हमने आपको (हक़ और ख़ल्क़ का) मुशाहिदा करनेवाला और (हुस्ने आख़िरत की) ख़ुशख़बरी देनेवाला और (अज़ाबे आख़िरत का) डर सुनानेवाला बना कर भेजा है।

وَّدَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًا ﴿٤٦﴾

46. और उसके इज़्न से अल्लाह की तरफ़ दा'वत देने वाला और मुनव्वर करनेवाला आफ़्ताब (बना कर भेजा है)।

وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَضْلًا كَبِيْرًا ﴿٤٧﴾

47. और अह्ले ईमान को इस बातकी बशारत दे दें कि उनके लिए अल्लाह का बड़ा फ़ज़्ल है। (कि वोह उस ख़ातिमुल अंबिया की निस्बते ग़ुलामी में हैं)।

وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَدَعْ اَذٰىهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿٤٨﴾

48. और आप काफ़िरों और मुनाफ़िकों का (येह) केहना (कि हमारे साथ मज़्हबी समझौता कर लें हरगिज़) न मानें और उन की ईज़ा रसानी से दर गुज़र फ़रमाएं, और अल्लाह पर भरोसा (जारी) रखें, और अल्लाह ही (हक़्क़ो बातिल की मा'रेका आराई में) काफ़ी कारसाज़ है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ فَمَا لَكُمْ

49. ऐ ईमानवालो ! जब तुम मोमिन औरतों से निकाह करो फिर तुम उन्हें तलाक़ दे दो क़ब्ल इसके कि तुम उन्हें मस करो (या'नी ख़िल्वते सहीहा करो) तो तुम्हारे लिए उन पर कोई इद्दत (वाजिब) नहीं है कि तुम उसे शुमार

عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُّوْنَهَا ۚ
فَمَتِّعُوْهُنَّ وَسَرِّحُوْهُنَّ سَرَاحًا
جَمِيْلًا ﴿٤٩﴾

करने लगो, पस उन्हें कुछ मालो मताअ़ दो और उन्हें अच्छी तरह हुस्ने सुलूक के साथ रुख़्सत करो।

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّاۤ اَحْلَلْنَا لَكَ
اَزْوَاجَكَ الّٰتِيْۤ اٰتَيْتَ اُجُوْرَهُنَّ وَ
مَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ مِمَّاۤ اَفَآءَ اللّٰهُ
عَلَيْكَ وَ بَنٰتِ عَمِّكَ وَ بَنٰتِ
عَمّٰتِكَ وَ بَنٰتِ خَالِكَ وَ بَنٰتِ
خٰلٰتِكَ الّٰتِيْ هَاجَرْنَ مَعَكَ ۫
وَامْرَاَةً مُّؤْمِنَةً اِنْ وَّهَبَتْ
نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ اِنْ اَرَادَ النَّبِيُّ اَنْ
يَّسْتَنْكِحَهَا ۚ خَالِصَةً لَّكَ مِنْ دُوْنِ
الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ قَدْ عَلِمْنَا مَا
فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِيْۤ اَزْوَاجِهِمْ وَ مَا
مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ لِكَيْلَا يَكُوْنَ
عَلَيْكَ حَرَجٌ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا
رَّحِيْمًا ﴿٥٠﴾

50. ऐ नबी ! बेशक हमने आपके लिए आपकी वोह बीवियां हलाल फ़रमा दी हैं जिनका महर आपने अदा फ़रमा दिया है और जो (अहकामे इलाही के मुताबिक़) आपकी ममलूक हैं, जो अल्लाहने आपको माले ग़नीमत में अ़ता फ़रमाई हैं, और आपके चचा की बेटियां, और आपकी फूफियों की बेटियां, और आपके मामूं की बेटियां, और आपकी ख़ालाओंकी बेटियां, जिन्होंने आपके साथ हिजरत की है और कोई भी मोमिना औ़रत बशर्ते कि वोह अपने आपको नबी (ﷺ के निकाह) के लिए दे दे और नबी (ﷺ भी) उसे अपने निकाह में लेनेका इरादा फ़रमाएं (तो येह सब आपके लिए हलाल हैं), (येह हुक्म) सिर्फ़ आपके लिए ख़ास है (उम्मत के) मोमिनों के लिए नहीं, वाक़ई हमें मा'लूम है जो कुछ हमने उन (मुसलमानों) पर उनकी बीवियों और उनकी ममलूका बांदियों के बारे में फ़र्ज़ किया है, (मगर आपके हक़में तअ़द्दुदे अज़्वाज की हिल्लत का ख़ुसूसी हुक्म इस लिए है) ताकि आप पर (उम्मत में ता'लीमो तरबिय्यते निस्वां के वसीअ़ इन्तिज़ाम में) कोई तंगी न रहे, और अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला बड़ा रहम फ़रमानेवाला है।

تُرْجِيْ مَنْ تَشَآءُ مِنْهُنَّ وَتُــْٔوِيْۤ
اِلَيْكَ مَنْ تَشَآءُ ؕ وَمَنِ ابْتَغَيْتَ
مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ؕ

51. (ऐ हबीब ! आपको इख़्तियार है) उनमें से जिस (ज़ौजा) को चाहें (बारी में) मुअख़्ख़र रखें और जिसे चाहें अपने पास (पहले) जगह दें, और जिनसे आपने

ذٰلِكَ اَدْنٰۤى اَنْ تَقَرَّ اَعْيُنُهُنَّ وَلَا يَحْزَنَّ وَيَرْضَيْنَ بِمَاۤ اٰتَيْتَهُنَّ كُلُّهُنَّ ۗ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِيْ قُلُوْبِكُمْ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَلِيْمًا ﴿٥١﴾

(आ़रज़ी) कनारा कशी इख़्तियार फ़रमा रखी थी आप उन्हें (अपनी कु़र्बत के लिए) तलब फ़रमा लें तो आप पर कुछ मुज़ाइक़ा नहीं, येह उसके क़रीबतर है कि उनकी आँखें (आपके दीदारसे) ठंडी होंगी और वोह ग़मगीन नहीं रहेंगी और वोह सब उससे राज़ी रहेंगी जो कुछ आपने उन्हे अ़ता फरमा दिया है और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम्हारे दिलों में है, और अल्लाह ख़ूब जाननेवाला बड़ा हि़ल्मवाला है।

لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَآءُ مِنْۢ بَعْدُ وَلَاۤ اَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ اَزْوَاجٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكَ حُسْنُهُنَّ اِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ ع رَّقِيْبًا ﴿٥٢﴾

52.इसके बाद (कि उन्होंने दुन्यवी मुन्फ़ेअ़तों पर आपकी रज़ाओ ख़ि़दमत को तरजीह़ दे दी है) आपके लिए भी और औ़रतें (निकाह़ में लेना) ह़लाल नहीं (ताकि येही अज़्वाज अपने शरफ़ में मुमताज़ रहें) और येह भी जाइज़ नहीं कि (बा'ज़की तलाक़ की सूरत में इस अ़दद को हमारा हुक्म समझ कर बरक़रार रखने के लिए) आप उनके बदले दीगर अज़्वाज (अ़क्द में) ले लें अगरचे आपको उनका हुस्ने (सीरतो अख़्लाक और इशाअ़ते दीनका सलीक़ा) कितना ही उमदा लगे मगर जो कनीज़ (हमारे हुक्मसे) आपकी मिल्क में हो (जाइज़ है)और अल्लाह हर चीज़ पर निगेहबान है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتَ النَّبِيِّ اِلَّاۤ اَنْ يُّؤْذَنَ لَكُمْ اِلٰى طَعَامٍ غَيْرَ نٰظِرِيْنَ اِنٰىهُ ۙ وَلٰكِنْ اِذَا دُعِيْتُمْ فَادْخُلُوْا فَاِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَشِرُوْا وَلَا مُسْتَاْنِسِيْنَ لِحَدِيْثٍ ۗ اِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ يُؤْذِي النَّبِيَّ فَيَسْتَحْيٖ مِنْكُمْ ۫ وَاللّٰهُ

53. ऐ ईमानवालो ! नबी (मुकर्रम ﷺ) के घरों में दाखि़ल न हुआ करो सिवाए इसके कि तुम्हें खाने के लिए इजाज़त दी जाए (फिर वक्त से पहले पहुंच कर) खाना पकनेका इन्तिज़ार करनेवाले न बना करो, हां जब) तुम बुलाए जाओ तो (उस वक्त) अंदर आया करो फिर जब खाना खा चुको तो (वहां से उठ कर) फ़ौरन मुन्तशिर हो जाया करो और वहां बातों में दिल लगा कर बैठे रेहनेवाले न बनो । यक़ीनन तुम्हारा ऐसे (देर तक बैठे) रेहना नबिय्ये (अकरम ﷺ) को तक्लीफ़ देता है और वोह तुमसे (उठ जाने का केहते हुए) शरमाते हैं और

لَا يَسْتَحْيِ مِنَ الْحَقِّ ۚ وَإِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ مَتَاعًا فَاسْأَلُوهُنَّ مِن وَرَاءِ حِجَابٍ ۚ ذَٰلِكُمْ أَطْهَرُ لِقُلُوبِكُمْ وَقُلُوبِهِنَّ ۚ وَمَا كَانَ لَكُمْ أَن تُؤْذُوا رَسُولَ اللَّهِ وَلَا أَن تَنكِحُوا أَزْوَاجَهُ مِن بَعْدِهِ أَبَدًا ۚ إِنَّ ذَٰلِكُمْ كَانَ عِندَ اللَّهِ عَظِيمًا ﴿٥٣﴾

अल्लाह हक़ (बात केहने) से नहीं शरमाता, और जब तुम उन (अज़्वाजे मुतह्हरात) से कोई सामान मांगो तो उनसे पसे परदा पूछा करो, येह (अदब) तुम्हारे दिलों के लिए और उनके दिलों के लिए बड़ी तहारत का सबब है, और तुम्हारे लिए (हरगिज़ जाइज़) नहीं कि तुम रसूलुल्लाह (ﷺ) को तक्लीफ़ पहुंचाओ और न येह (जाइज़) है कि तुम उनके बाद अबद तक उनकी अज़्वाजे (मुतह्हरात) से निकाह् करो, बेशक येह अल्लाह के नज़्दीक बहुत बड़ा (गुनाह) है।

إِن تُبْدُوا شَيْئًا أَوْ تُخْفُوهُ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ﴿٥٤﴾

54. ख़्वाह तुम किसी चीज़को ज़ाहिर करो या उसे छुपाओ बेशक अल्लाह हर चीज़ को खूब जाननेवाला है।

لَّا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ فِي آبَائِهِنَّ وَلَا أَبْنَائِهِنَّ وَلَا إِخْوَانِهِنَّ وَلَا أَبْنَاءِ إِخْوَانِهِنَّ وَلَا أَبْنَاءِ أَخَوَاتِهِنَّ وَلَا نِسَائِهِنَّ وَلَا مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُنَّ ۗ وَاتَّقِينَ اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ﴿٥٥﴾

55. उन पर (परदा न करने में) कोई गुनाह नहीं अपने (हक़ीक़ी) आबाअ से, और न अपने बेटोंसे और न अपने भाइयोंसे, और न अपने भतीजों से और न अपने भांजों से और न अपनी (मुस्लिम) औरतों और न अपनी ममलूक बांदियोंसे, तुम अल्लाहका तक़्वा (बर क़रार) रखो, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर गवाहो निगेहबान है।

إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ ۚ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ﴿٥٦﴾

56. बेशक अल्लाह और उसके (सब) फ़रिश्ते नबिय्ये (मुकर्रम ﷺ) पर दुरूद भेजते रेहते हैं, ऐ ईमानवालो ! तुम (भी) उन पर दुरूद भेजा करो और खूब सलाम भेजा करो।

إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَ

57. बेशक जो लोग अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) को अज़िय्यत देते हैं अल्लाह उन पर दुनिया और आख़िरत

الْاٰخِرَةِ وَاَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿٥٧﴾

में ला'नत भेजता है और उसने उन के लिए ज़िल्लत अंगेज़ अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।

وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوْا فَقَدِ احْتَمَلُوْا بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿٥٨﴾ ع

58. और जो लोग मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतों को अज़िय्यत देते हैं बिग़ैर इसके कि उन्होंने कुछ (ख़ता) की हो तो बेशक उन्होंने बोहतान और खुले गुनाह का बोझ (अपने सर) ले लिया।

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ وَبَنٰتِكَ وَنِسَآءِ الْمُؤْمِنِيْنَ يُدْنِيْنَ عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيْبِهِنَّ ؕ ذٰلِكَ اَدْنٰۤى اَنْ يُّعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذَيْنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٥٩﴾

59. ऐ नबी ! अपनी बीवियों और अपनी साहिबज़ादियों और मुसलमानों की औ़रतों से फ़रमा दें कि (बाहर निकलते वक़्त)अपनी चादरें अपने ऊपर ओढ़ लिया करें, येह इस बात के क़रीबतर है किवोह पहचान ली जाएं (कि येह पाक दामन आज़ाद औ़रतें हैं) फिर उन्हें (आवारा बांदियां समझ कर ग़ल्ती से) ईज़ा न दी जाए, और अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला बड़ा रह़म फ़रमानेवाला है।

لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْمُرْجِفُوْنَ فِي الْمَدِيْنَةِ لَنُغْرِيَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا يُجَاوِرُوْنَكَ فِيْهَاۤ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٦٠﴾ ۛ

60. अगर मुनाफ़िक़ लोग और वोह लोग जिनके दिलोंमें (रसूल ﷺ से बुग़्ज़ और गुस्ताख़ी की) बीमारी है, और (इसी तरह़) मदीना में झूटी अफ़वाहें फैलानेवाले लोग (रसूल ﷺ को ईज़ा रसानी से) बाज़ न आए तो हम आपको उन पर ज़रूर मुसल्लत़ कर देंगे फिर वोह मदीना में आपके पडो़स में न ठेहर सकेंगे मगर थोडे़ (दिन)।

مَّلْعُوْنِيْنَ ۛۚ اَيْنَمَا ثُقِفُوْۤا اُخِذُوْا وَقُتِّلُوْا تَقْتِيْلًا ﴿٦١﴾

61. (येह) ला'नत किए हुए लोग जहां कहीं पाए जाएं, पकड़ लिए जाएं और चुन चुन कर बुरी तरह क़त्ल कर दिए जाएं।

سُنَّةَ اللّٰهِ فِي الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ﴿٦٢﴾

62. अल्लाह की (येही) सुन्नत उन लोगों में (भी जारी रही) है जो पहले गुज़र चुके हैं, और आप अल्लाहके दस्तूर में हरगिज़ कोई तब्दीली न पाएंगे।

يَسْـَٔلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ ؕ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُوْنُ قَرِيْبًا ﴿٦٣﴾

63. लोग आपसे क़ियामत के (वक़्त के) बारे में दर्याफ़्त करते हैं। फ़रमा दीजिए : उसका इल्म तो अल्लाह ही के पास है, और आपको किसने आगाह किया शायद क़ियामत क़रीब ही आ चुकी हो।

اِنَّ اللّٰهَ لَعَنَ الْكٰفِرِيْنَ وَاَعَدَّ لَهُمْ سَعِيْرًا ۙ﴿٦٤﴾

64. बेशक अल्लाहने काफ़िरों पर ला'नत फ़रमाई है और उनके लिए (दोज़ख़ की) भड़कती आग तैयार कर रखी है।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ۚ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ۚ﴿٦٥﴾

65. जिस में वोह हमेशा हमेशा रेहनेवाले हैं। न वोह कोई हिमायती पाएंगे और न मददगार।

يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُوْلُوْنَ يٰلَيْتَنَاۤ اَطَعْنَا اللّٰهَ وَاَطَعْنَا الرَّسُوْلَا ﴿٦٦﴾

66. जिस दिन उनके मुंह आतिशे दोज़ख़में (बार बार) उलटाए जाएंगे (तो) वोह कहेंगे : ऐ काश ! हमने अल्लाह की इताअ़त की होती और हमने रसूल (ﷺ) की इताअ़त की होती।

وَقَالُوْا رَبَّنَاۤ اِنَّاۤ اَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَآءَنَا فَاَضَلُّوْنَا السَّبِيْلَا ﴿٦٧﴾

67. और वोह कहेंगे : ऐ हमारे रब ! बेशक हमने अपने सरदारों और अपने बड़ों का कहा माना था तो उन्होंने हमें (सीधी) राह से बेहका दिया।

رَبَّنَاۤ اٰتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنْهُمْ لَعْنًا كَبِيْرًا ﴿٦٨﴾

68. ऐ हमारे रब ! उन्हें दोगुना अ़ज़ाब दे और उन पर बहुत बड़ी ला'नत कर।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اٰذَوْا مُوْسٰى فَبَرَّاَهُ اللّٰهُ مِمَّا قَالُوْا ؕ وَكَانَ عِنْدَ اللّٰهِ وَجِيْهًا ﴿٦٩﴾

69. ऐ ईमानवालो ! तुम उन लोगोंकी तरह न हो जाना जिन्होंने मूसा (عليه السلام) को (गुस्ताख़ाना कलिमात के ज़रीए) अज़िय्यत पहुंचाई, पस अल्लाहने उन्हें उन बातों से बे ऐब साबित कर दिया जो वोह केहते थे, और वोह (मूसा عليه السلام) अल्लाह के हां बड़ी क़द्रो मन्ज़िलतवाले थे।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ

70. ऐ ईमानवालो ! अल्लाहसे डरा करो और सहीह़ और

وَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ﴿٧٠﴾

सीधी बात कहा करो।

يُّصْلِحْ لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ
ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ
فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا ﴿٧١﴾

71. वोह तुम्हारे लिए तुम्हारे (सारे) आ'माल दुरुस्त फ़रमा देगा और तुम्हारे गुनाह तुम्हारे लिए बख़्श देगा, और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल ﷺ की फ़रमांबरदारी करता है तो बेशक वोह बड़ी कामयाबी से सरफ़राज़ हुआ।

اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ عَلَى
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَ الْجِبَالِ
فَاَبَيْنَ اَنْ يَّحْمِلْنَهَا وَ اَشْفَقْنَ
مِنْهَا وَ حَمَلَهَا الْاِنْسَانُ ؕ اِنَّهٗ
كَانَ ظَلُوْمًا جَهُوْلًا ﴿٧٢﴾

72. बेशक हमने (इताअ़त की) अमानत आस्मानों और ज़मीन और पहाड़ों पर पेश की तो उन्होंने उस (बोझ) को उठाने से इन्कार कर दिया और उससे डर गए और इन्सानने उसे उठा लिया, बेशक वोह (अपनी जान पर) बड़ी ज़ियादती करनेवाला (अदायगिए अमानत में कोताही के अंजाम से) बड़ा बेख़बरो नादान है।

لِّيُعَذِّبَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ
وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ وَيَتُوْبَ
اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ؕ
وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٧٣﴾

73. (येह) इसलिए कि अल्लाह मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औ़रतों और मुशरिक मर्दों और मुशरिक औ़रतों को अ़ज़ाब दे और अल्लाह मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतोंकी तौबा कुबूल फ़रमाए, और अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला बड़ा रह़म फ़रमानेवाला है।

आयातुहा 54 | 34 सूरतु स-बइन मक्कियुतुन 58 | रुकूआतुहा 6

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ
وَ مَا فِي الْاَرْضِ وَ لَهُ الْحَمْدُ فِي
الْاٰخِرَةِ ؕ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿١﴾

1. तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं, जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीनमें है (सब) उसीका है और आख़िरतमें भी ता'रीफ़ उसीके लिए है, और वोह बड़ी ह़िक्मतवाला, ख़बरदार है।

يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا ۚ وَهُوَ الرَّحِيمُ الْغَفُورُ ﴿٢﴾

2. वोह उन (सब) चीज़ों को जानता है जो ज़मीनमें दाख़िल होती हैं और जो उसमें से बाहर निकलती हैं और जो आस्मानसे उतरती हैं और जो उसमें चढ़ती हैं, और वोह बहुत रहम फ़रमानेवाला बड़ा बख़्शनेवाला है।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَأْتِينَا السَّاعَةُ ۖ قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتَأْتِيَنَّكُمْ عَالِمِ الْغَيْبِ ۖ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَلَا أَصْغَرُ مِنْ ذَٰلِكَ وَلَا أَكْبَرُ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ﴿٣﴾

3. और काफ़िर लोग केहते हैं कि हम पर क़ियामत नहीं आएगी, आप फ़रमा दें : क्यों नहीं? मेरे आ़लिमुल ग़ैब रबकी क़सम वोह तुम पर ज़रूर आएगी, उससे न आस्मानों में ज़र्रा भर कोई चीज़ ग़ाइब हो सक्ती है और न ज़मीन में और न उससे कोई छोटी (चीज़ है) और न बड़ी मगर रौशन किताब (या'नी लौहे मेहफूज) में (लिखी हूई) है।

لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿٤﴾

4. ताकि अल्लाह उन लोगोंको पूरा बदला अ़ता फ़रमाए जो ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे। येही वोह लोग हैं जिन के लिए बख़्शिश और बुज़ुर्गीवाला (उख़रवी) रिज़्क़ है।

وَالَّذِينَ سَعَوْا فِي آيَاتِنَا مُعْجِزِينَ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مِنْ رِجْزٍ أَلِيمٌ ﴿٥﴾

5. और जिन्होंने हमारी आयतों में (मुख़ालिफ़ाना) कोशिश की (हमें) आ़जिज़ करने के ज़अ़्म में उन्हीं लोगों के लिए सख़्त दर्दनाक अ़ज़ाब की सज़ा है।

وَيَرَى الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ الَّذِي أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ هُوَ الْحَقَّ ۙ وَيَهْدِي إِلَىٰ صِرَاطِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ﴿٦﴾

6. और ऐसे लोग जिन्हें इल्म दिया गया है वोह जानते हैं कि जो (किताब) आपके रबकी तरफ़ से आपकी जानिब उतारी गई है वोही हक़ है और वोह (किताब) इ़ज़्ज़त वाले, सब ख़ूबियोंवाले (रब) की राह की तरफ़ हिदायत करती है।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ يُنَبِّئُكُمْ إِذَا مُزِّقْتُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ إِنَّكُمْ لَفِي خَلْقٍ جَدِيدٍ ﴿٧﴾

7. और काफ़िर लोग (तअ़ज्जुबो इस्तेहज़ाकी निय्यतसे) केहते हैं कि क्या हम तुम्हें ऐसे शख़्स का बताएं जो तुम्हें येह ख़बर देता है कि जब तुम (मर कर) बिलकुल रेज़ा रेज़ा हो जाओगे तो यक़ीनन तुम्हें (एक) नई पैदाइश मिलेगी।

أَفْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَم بِهِ جِنَّةٌ ۗ بَلِ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَالضَّلَالِ الْبَعِيدِ ﴿٨﴾

8. (या तो) वोह अल्लाह पर झूटा बोहतान बांधता है या उसे जुनून है, (ऐसा कुछ भी नहीं) बल्कि जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते वोह अ़ज़ाब और परले दरजे की गुमराही में (मुब्तिला) हैं।

أَفَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُم مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ إِن نَّشَأْ نَخْسِفْ بِهِمُ الْأَرْضَ أَوْ نُسْقِطْ عَلَيْهِمْ كِسَفًا مِّنَ السَّمَاءِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيبٍ ﴿٩﴾

9. सो क्या उन्होंने उन (निशानियों) को नहीं देखा जो आस्मान और ज़मीन से उनके आगे और उनके पीछे (उन्हें घेरे हुए) है। अगर हम चाहें तो उन्हें ज़मीनमें धंसा दें या उन पर आस्मान से कुछ टुकड़े गिरा दें, बेशक उसमें हर उस बंदे के लिए निशानी है जो अल्लाह की तरफ़ रुजूअ़ करनेवाला है।

وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُودَ مِنَّا فَضْلًا ۖ يَا جِبَالُ أَوِّبِي مَعَهُ وَالطَّيْرَ ۖ وَأَلَنَّا لَهُ الْحَدِيدَ ﴿١٠﴾

10. और बेशक हमने दाऊद (عليه السلام) को अपनी बारगाह से बड़ा फ़ज़्ल अ़ता फ़रमाया, (और हुक्म फ़रमाया) ऐ पहाड़ो ! तुम इनके साथ मिल कर खुश इलहानी से (तस्बीह) पढ़ा करो, और परिन्दों को भी (मुसख़्ख़र कर के येही हुक्म दिया), और हमने उनके लिए लोहा नरम कर दिया।

أَنِ اعْمَلْ سَابِغَاتٍ وَقَدِّرْ فِي السَّرْدِ ۖ وَاعْمَلُوا صَالِحًا ۖ إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿١١﴾

11. (और इर्शाद फ़रमाया) कि कुशादह ज़िरहें बनाओ और (उनके) हल्के जोड़नेमें अंदाज़े को मलहूज़ रखो और (ऐ आले दाऊद !) तुम लोग नेक अ़मल करते रहो, मैं उन कामों को जो तुम करते हो खूब देखनेवाला हूं।

وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ غُدُوُّهَا شَهْرٌ وَّ رَوَاحُهَا شَهْرٌ ۚ وَاَسَلْنَا لَهٗ عَيْنَ الْقِطْرِ ؕ وَمِنَ الْجِنِّ مَنْ يَّعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ بِاِذْنِ رَبِّهٖ ؕ وَمَنْ يَّزِغْ مِنْهُمْ عَنْ اَمْرِنَا نُذِقْهُ مِنْ عَذَابِ السَّعِيْرِ ﴿۱۲﴾

12. और सुलैमान (عليه السلام) के लिए (हमने) हवाको (मुसख़्ख़र कर दिया) जिसकी सुब्ह् की मुसाफ़त एक महीनेकी (राह) थी और उसकी शामकी मुसाफ़त (भी) एक माह की राह होती, और हमने उनके लिए पिघले हुए तांबेका चश्मा बहा दिया, और कुछ जिन्नात (उनके ताबे' कर दिए) थे जो उनके रबके हुक्म से उनके सामने काम करते थे, और (फ़रमा दिया था कि) उनमें से जो कोई हमारे हुक्म से फिरेगा हम उसे दोज़ख़की भड़कती आगका अ़ज़ाब चखाएंगे।

يَعْمَلُوْنَ لَهٗ مَا يَشَآءُ مِنْ مَّحَارِيْبَ وَتَمَاثِيْلَ وَجِفَانٍ كَالْجَوَابِ وَقُدُوْرٍ رّٰسِيٰتٍ ؕ اِعْمَلُوْۤا اٰلَ دَاوٗدَ شُكْرًا ؕ وَقَلِيْلٌ مِّنْ عِبَادِيَ الشَّكُوْرُ ﴿۱۳﴾

13. वोह (जिन्नात) उनके लिए जो वोह चाहते थे बना देते थे। उनमें बुलंदो बाला क़िल्ए और मुजस्समे और बड़े बड़े लगन थे जो तालाब और लंगर अंदाज देगों की मानिन्द थे। ऐ आले दाऊद! (अल्लाह का) शुक्र बजा लाते रहो, और मेरे बंदों में शुक्र गुज़ार कम ही हुए हैं।

فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلٰى مَوْتِهٖۤ اِلَّا دَآبَّةُ الْاَرْضِ تَاْكُلُ مِنْسَاَتَهٗ ۚ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجِنُّ اَنْ لَّوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ الْغَيْبَ مَا لَبِثُوْا فِي الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ ﴿۱۴﴾

14. फिर जब हमने सुलैमान (عليه السلام) पर मौत का हुक्म सादिर फ़रमा दिया तो उन (जिन्नात) को उनकी मौत पर किसीने आगाही न की सिवाए ज़मीन की दीमक के, जो उनके अ़सा को खाती रही फिर जब आपका जिस्म ज़मीन पर आ गया तो जिन्नात पर ज़ाहिर हो गया कि अगर वोह ग़ैब जानते होते तो इस ज़िल्लत अंगेज अ़ज़ाब में न पड़े रेहते।

لَقَدْ كَانَ لِسَبَاٍ فِيْ مَسْكَنِهِمْ اٰيَةٌ ۚ جَنَّتٰنِ عَنْ يَّمِيْنٍ وَّشِمَالٍ ؕ كُلُوْا مِنْ رِّزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوْا لَهٗ ؕ بَلْدَةٌ طَيِّبَةٌ وَّرَبٌّ غَفُوْرٌ ﴿۱۵﴾

15. दर हक़ीक़त (क़ौमे) सबाके लिए उनके वतन ही में निशानी मौजूद थी। (वोह) दो बाग़ थे, दाऐं तरफ़ और बाऐं तरफ़। (उनसे इर्शाद हुवा :) तुम अपने रबके रिज़्क़ से खाया करो और उसका शुक्र बजा लाया करो। (तुम्हारा) शहर (कितना) पाकीज़ा है और रब बड़ा बख़्शनेवाला है।

فَاَعْرَضُوْا فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرِمِ وَبَدَّلْنٰهُمْ بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتَيْ اُكُلٍ خَمْطٍ وَّاَثْلٍ وَّشَيْءٍ مِّنْ سِدْرٍ قَلِيْلٍ ﴿۱۶﴾

16. फिर उन्होंने (ताअ़त से) मुंह फेर लिया तो हमने उन पर ज़ोरदार सैलाब भेज दिया और हमने उनके दोनों बाग़ों को दो (ऐसे) बाग़ोंसे बदल दिया जिन में बद मज़ा फल और कुछ झाओ और कुछ थोडे बेरी के दरख़्त रेह गए थे।

ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِمَا كَفَرُوْا ؕ وَهَلْ نُجٰزِيْۤ اِلَّا الْكَفُوْرَ ﴿۱۷﴾

17. येह हमने उन्हें उनके कुफ़्रो नाशुक्री का बदला दिया, और हम बड़े ना शुक्र गुज़ार के सिवा (किसी को ऐसी) सज़ा नहीं देते।

وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْقُرَى الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا قُرًى ظَاهِرَةً وَّقَدَّرْنَا فِيْهَا السَّيْرَ ؕ سِيْرُوْا فِيْهَا لَيَالِيَ وَاَيَّامًا اٰمِنِيْنَ ﴿۱۸﴾

18. और हमने उन बाशिन्दों के और उन बस्तियों के दरमियान जिन में हमने बरकत दे रखी थी, (यमन से शाम तक) नुमायां (और) मुत्तसिल बस्तियां आबाद कर दी थीं, और हमने उनमें आमदो रफ़्त (के दौरान आराम करने) की मन्ज़िलें मुक़र्रर कर रखी थीं कि तुम लोग उनमें रातों को (भी) और दिनों को (भी) बेख़ौफ़ हो कर चलते फिरते रहो।

فَقَالُوْا رَبَّنَا بٰعِدْ بَيْنَ اَسْفَارِنَا وَظَلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ فَجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ وَمَزَّقْنٰهُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿۱۹﴾

19. तो वोह केहने लगे : ऐ हमारे रब ! हमारी मनाज़िले सफ़र के दरमियान फ़ासले पैदा कर दे और उन्होंने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया तो हमने उन्हें (इब्रतके) फ़साने बना दिया और हमने उन्हें टुकड़े टुकड़े कर के मुन्तशिर कर दिया। बेशक उसमें बहुत साबिर और निहायत शुक्र गुज़ार शख़्स के लिए निशानियां हैं।

وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ اِبْلِيْسُ ظَنَّهٗ فَاتَّبَعُوْهُ اِلَّا فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۲۰﴾

20. बेशक इब्लीस ने उनके बारे में अपना ख़याल सच कर दिखाया तो उन लोगों ने उसकी पैरवी की बजुज़ एक गिरोह के जो (सहीह़) मोमिनीन का था।

وَمَا كَانَ لَهٗ عَلَيْهِمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يُّؤْمِنُ بِالْاٰخِرَةِ مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا فِيْ شَكٍّ ؕ وَرَبُّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ﴿۲۱﴾

ع ۲ ۱۲ ۸

21. और शैतानका उन पर कुछ ज़ोर न था मगर येह इस लिए (हुवा) कि हम उन लोगोंको जो आख़िरत पर ईमान रखते हैं उन लोगोंसे मुमताज़ कर दें जो उसके बारे में शक में हैं, और आपका रब हर चीज़ पर निगेहबान है।

قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۚ لَا يَمْلِكُوْنَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيْهِمَا مِنْ شِرْكٍ وَّمَا لَهٗ مِنْهُمْ مِّنْ ظَهِيْرٍ ﴿۲۲﴾

22. फ़रमा दीजिए : तुम उन्हें बुला लो जिन्हें तुम अल्लाहके सिवा (मा'बूद) समझते हो, वोह आस्मानों में ज़र्रा भरके मालिक नहीं हैं और न ज़मीन में, और न उनकी दोनों (ज़मीनो आस्मान) में कोई शराकत है और न उनमें से कोई अल्लाह का मददगार है।

وَلَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا لِمَنْ اَذِنَ لَهٗ ؕ حَتّٰۤى اِذَا فُزِّعَ عَنْ قُلُوْبِهِمْ قَالُوْا مَاذَا ۙ قَالَ رَبُّكُمْ ؕ قَالُوا الْحَقَّ ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ﴿۲۳﴾

23. और उसकी बारगाह में शफ़ाअ़त नफ़ा' न देगी सिवाए जिसके हक़ में उसने इज़्न दिया होगा, यहां तक कि जब उनके दिलों से घबराहट दूर कर दी जाएगी तो वोह (सवालन) कहेंगे कि तुम्हारे रबने क्या फ़रमाया? वोह (जवाबन) कहेंगे हक़ फ़रमाया (या'नी इज़्न दे दिया) और वोही निहायत बुलंद, बहुत बड़ा है।

قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ وَاِنَّاۤ اَوْ اِيَّاكُمْ لَعَلٰى هُدًى اَوْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۲۴﴾

24. आप फ़रमाइए : तुम्हें आस्मानों और ज़मीन से रोज़ी कौन देता है, आप (खुद ही) फ़रमा दीजिए कि अल्लाह (देता है) और बेशक हम या तुम ज़रूर हिदायत पर हैं या खुली गुमराही में।

قُلْ لَّا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّاۤ اَجْرَمْنَا وَلَا نُسْـَٔلُ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۲۵﴾

25. फ़रमा दीजिए : तुमसे उस जुर्म की बाज़ पुर्स न होगी जो (तुम्हारे गुमान में) हमसे सरज़द हुआ और न हमसे उसका पूछा जाएगा जो तुम करते हो।

قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ ۗ وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيمُ ﴿٢٦﴾

26. फ़रमा दीजिए : हम सबको हमारा रब (रोज़े क़ियामत) जमा' फ़रमाएगा फिर हमारे दरमियान हक़ के साथ फ़ैसला फ़रमाएगा, और वोह खूब फ़ैसला फ़रमानेवाला खूब जाननेवाला है।

قُلْ أَرُونِيَ الَّذِينَ أَلْحَقْتُمْ بِهِ شُرَكَاءَ كَلَّا ۗ بَلْ هُوَ اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢٧﴾

27. फ़रमा दीजिए : मुझे वोह शरीक दिखाओ जिन्हें तुमने अल्लाह के साथ मिला रखा है हरगिज़ (कोई शरीक) नहीं है बल्कि वोही अल्लाह बड़ी इज़्ज़तवाला, बड़ी हिक्मतवाला है।

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا كَافَّةً لِلنَّاسِ بَشِيرًا وَنَذِيرًا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٨﴾

28. और (ऐ हबीबे मुकर्रम !) हमने आपको नहीं भेजा मगर इस तरह कि (आप) पूरी इन्सानियत के लिए खुशख़बरी सुनानेवाले और डर सुनानेवाले हैं लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٩﴾

29. और वोह केहते हैं कि येह वा'दए (आख़िरत) कब पूरा होगा अगर तुम सच्चे हो?

قُلْ لَكُمْ مِيعَادُ يَوْمٍ لَا تَسْتَأْخِرُونَ عَنْهُ سَاعَةً وَلَا تَسْتَقْدِمُونَ ﴿٣٠﴾

30. फ़रमा दीजिए : तुम्हारे लिए वा'दे का दिन मुक़र्रर है न तुम उस से एक घड़ी पीछे रहोगे और न आगे बढ़ सकोगे।

النصف ع ٣

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ نُؤْمِنَ بِهَٰذَا الْقُرْآنِ وَلَا بِالَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ ۗ وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الظَّالِمُونَ مَوْقُوفُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ الْقَوْلَ ج يَقُولُ الَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لَوْلَا أَنْتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِينَ ﴿٣١﴾

31. और काफ़िर लोग केहते हैं कि हम इस कुरआन पर हरगिज़ ईमान नहीं लाएंगे और न उस (वही) पर जो इस से पहले उतर चुकी, और अगर आप देखें जब ज़ालिम लोग अपने रब के हुज़ूर खड़े किए जाएंगे (तो क्या मन्ज़र होगा) कि उनमें से हर एक (अपनी) बात फेर कर दूसरे पर डाल रहा होगा, कमज़ोर लोग मु-त-कब्बिरों से केहेंगे : अगर तुम न होते तो हम ज़रूर ईमान ले आते।

قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْٓا اَنَحْنُ صَدَدْنٰكُمْ عَنِ الْهُدٰى بَعْدَ اِذْ جَآءَكُمْ بَلْ كُنْتُمْ مُّجْرِمِيْنَ ﴿۳۲﴾

32. मु-त-कब्बिर लोग कमज़ोरों से कहेंगे : क्या हमने तुम्हें हिदायत से रोका इस के बाद कि वोह तुम्हारे पास आ चुकी थी, बल्कि तुम ख़ुद ही मुजरिम थे।

وَقَالَ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا بَلْ مَكْرُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ اِذْ تَاْمُرُوْنَنَآ اَنْ نَّكْفُرَ بِاللّٰهِ وَ نَجْعَلَ لَهٗٓ اَنْدَادًا ؕ وَ اَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ؕ وَ جَعَلْنَا الْاَغْلٰلَ فِيْٓ اَعْنَاقِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۳۳﴾

33. फिर कमज़ोर लोग मु-त-कब्बिरों से कहेंगे : बल्कि (तुम्हारे) रात दिन के मक्र ही ने (हमें रोका था) जब तुम हमें हुक्म देते थे कि हम अल्लाहसे कुफ़्र करें और हम उस के लिए शरीक ठेहराएं, और वोह (एक दूसरे से) नदामत छुपाएंगे जब वोह अ़ज़ाब देख लेंगे और हम काफ़िरोंकी गरदनों में तौक़ डाल देंगे, और उन्हें उनके किए का ही बदला दिया जाएगा।

وَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالَ مُتْرَفُوْهَآ ۙ اِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿۳۴﴾

34. और हमने किसी बस्ती में कोई डर सुनानेवाला नहीं भेजा मगर येह कि वहां के खुशहाल लोगों ने (हमेशा येही) कहा कि तुम जो (हिदायत) दे कर भेजे गए हो हम उस के मुन्किर हैं।

وَقَالُوْا نَحْنُ اَكْثَرُ اَمْوَالًا وَّ اَوْلَادًا ۙ وَّمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿۳۵﴾

35. और उन्होंने कहा कि हम मालो औलाद में बहुत ज़ियादह हैं और हम पर अ़ज़ाब नहीं किया जाएगा।

قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَ يَقْدِرُ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۶﴾ ع

36. फ़रमा दीजिए, मेरा रब जिसके लिए चाहता है रिज़्क़ कुशादह फ़रमा देता है और (जिसके लिए चाहता है) तंग कर देता है लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।

وَمَآ اَمْوَالُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ
بِالَّتِيْ تُقَرِّبُكُمْ عِنْدَنَا زُلْفٰٓى اِلَّا
مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۡ فَاُولٰٓئِكَ
لَهُمْ جَزَآءُ الضِّعْفِ بِمَا عَمِلُوْا
وَهُمْ فِي الْغُرُفٰتِ اٰمِنُوْنَ ﴿٣٧﴾

37. और न तुम्हारे माल इस क़ाबिल हैं और न तुम्हारी औलाद कि तुम्हें हमारे हुजूर क़ुर्ब और नज़्दीकी दिला सकें मगर जो ईमान लाया और उसने नेक अ़मल किए, पस ऐसे ही लोगों के लिए दोगुना अज्र है उनके अ़मल के बदले में और वोह (जन्नत के) बालाखा़नों में अम्नो अमान से होंगे।

وَالَّذِيْنَ يَسْعَوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا
مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ فِي الْعَذَابِ
مُحْضَرُوْنَ ﴿٣٨﴾

38. और जो लोग हमारी आयतों में (मुख़ालिफ़ाना) कोशिश करते हैं (हमें) आ़जिज़ करने के गुमान में, वोही लोग अ़ज़ाबमें हाज़िर किए जाएंगे।

قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ
يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ ؕ
وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَهُوَ
يُخْلِفُهٗ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٣٩﴾

39. फ़रमा दीजिए : बेशक मेरा रब अपने बंदों में से जिस के लिए चाहता है रिज़्क़ कुशादह फ़रमा देता है और जिस के लिए (चाहता है) तंग कर देता है, और तुम (अल्लाह की राह में) जो कुछ भी ख़र्च करोगे तो वोह उस के बदले में और देगा और वोह सबसे बेहतर रिज़्क़ देनेवाला है।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ يَقُوْلُ
لِلْمَلٰٓئِكَةِ اَهٰٓؤُلَآءِ اِيَّاكُمْ كَانُوْا
يَعْبُدُوْنَ ﴿٤٠﴾

40. और जिस दिन वोह सब को एक साथ जमा' करेगा फिर फ़रिश्तों से इर्शाद फ़रमाएगा क्या येही लोग हैं जो तुम्हारी इ़बादत किया करते थे?

قَالُوْا سُبْحٰنَكَ اَنْتَ وَلِيُّنَا مِنْ
دُوْنِهِمْ ۚ بَلْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ الْجِنَّ ۚ
اَكْثَرُهُمْ بِهِمْ مُّؤْمِنُوْنَ ﴿٤١﴾

41. वोह अ़र्ज़ करेंगे : तू पाक है तू ही हमारा दोस्त है न कि येह लोग, बल्कि येह लोग जिन्नातकी पूजा किया करते थे, उन में से अक्सर उन्हीं पर ईमान रखनेवाले हैं।

فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ
نَّفْعًا وَّلَا ضَرًّا ؕ وَنَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ

42. पस आजके दिन तुम में से कोई न एक दूसरे के नफ़े' का मालिक है और न नुक़्सान का, और हम

ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّتِيْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿٤٢﴾

ज़ालिमों से कहेंगे : दोज़ख़ के अज़ाब का मज़ा चखो जिसे तुम झुटलाया करते थे।

وَ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّا رَجُلٌ يُّرِيْدُ اَنْ يَّصُدَّكُمْ عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُكُمْ ۚ وَقَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّآ اِفْكٌ مُّفْتَرًى ؕ وَ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٤٣﴾

43. और जब उन पर हमारी रौशन आयतें पढ़ कर सुनाई जाती हैं तो वोह केहते हैं : येह (रसूल ﷺ) तो एक ऐसा शख़्स है जो तुम्हें सिर्फ़ उन (बुतों) से रोकना चाहता है जिनकी तुम्हारे बापदादा पूजा किया करते थे, और येह (भी) केहते हैं कि येह (क़ुरआन) महज़ मन घड़त बोहतान है, और काफ़िर लोग उस हक़ (या'नी क़ुरआन) से मुतअ़ल्लिक़ जब कि वोह उनके पास आ चुका है, येह भी केहते हैं कि येह तो महज़ खुला जादू है।

وَ مَآ اٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ كُتُبٍ يَّدْرُسُوْنَهَا وَمَآ اَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِنْ نَّذِيْرٍ ؕ ﴿٤٤﴾

44. और हमने उन (अह्ले मक्का) को न आस्मानी किताबें अ़ता की थीं जिन्हें येह लोग पढ़ते हों और न ही आपसे पहले उनकी तरफ़ कोई डर सुनानेवाला भेजा था।

وَكَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۙ وَ مَا بَلَغُوْا مِعْشَارَ مَآ اٰتَيْنٰهُمْ فَكَذَّبُوْا رُسُلِيْ ۫ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿٤٥﴾ ع

45. और इन से पहले लोगोंने भी (हक़ को) झुटलाया था और येह उसके दसवें हिस्से को भी नहीं पहुंचे जो कुछ हमने उन (पहले गुज़रे हुओं) को दिया था फिर उन्होंने (भी) मेरे रसूलों को झुटलाया, सो मेरा इन्कार कैसा (इब्रतनाक साबित) हुआ।

قُلْ اِنَّمَآ اَعِظُكُمْ بِوَاحِدَةٍ ۚ اَنْ تَقُوْمُوْا لِلّٰهِ مَثْنٰى وَفُرَادٰى ثُمَّ تَتَفَكَّرُوْا ۫ مَا بِصَاحِبِكُمْ مِّنْ جِنَّةٍ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ لَّكُمْ بَيْنَ يَدَيْ

46. फ़रमा दीजिए : मैं तुम्हें बस एक ही (बात की) नसीहत करता हूं कि तुम अल्लाह के लिए (रूहानी बेदारी और इन्तिबाह के हाल में) क़ियाम करो, दो दो और एक एक फिर तफ़क्कुर करो (या'नी हक़ीक़त का मुआइना और मुराक़बा करो तो तुम्हें मुशाहिदा हो जाएगा) कि तुम्हें शरफ़े सोहबत से नवाज़नेवाले (रसूले मुकर्रम ﷺ)

ع ٥ ١١

عَذَابٍ شَدِيْدٍ ﴿٤٦﴾

हरगिज़ जुनून ज़दह नहीं हैं वोह तो सख़्त अज़ाब (के आने) से पहले तुम्हें (बर वक़्त) डर सुनानेवाले हैं (ताकि तुम गफ़लत से जाग उठो)।

قُلْ مَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ فَهُوَ لَكُمْ ؕ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿٤٧﴾

47. फ़रमा दीजिए : मैंने (उस एह्सान का) जो सिला तुमसे मांगा हो वोह भी तुम ही को दे दिया, मेरा अज्र सिर्फ़ अल्लाह ही के ज़िम्मे है और वोह हर चीज़ पर निगेहबान है।

قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَقْذِفُ بِالْحَقِّ ۚ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿٤٨﴾

48. फ़रमा दीजिए : मेरा रब (अंबिया की तरफ़) हक़ का इल्क़ा फ़रमाता है (वोह) सब गैबों को खूब जाननेवाला है।

قُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِئُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيْدُ ﴿٤٩﴾

49. फ़रमा दीजिए : हक़ आ गया है, और बातिल न (कुछ) पेहली बार पैदा कर सक्ता है और न दोबारा पलटा सक्ता है।

قُلْ اِنْ ضَلَلْتُ فَاِنَّمَآ اَضِلُّ عَلٰى نَفْسِيْ ۚ وَاِنِ اهْتَدَيْتُ فَبِمَا يُوْحِيْٓ اِلَيَّ رَبِّيْ ؕ اِنَّهٗ سَمِيْعٌ قَرِيْبٌ ﴿٥٠﴾

50. फ़रमा दीजिए : अगर मैं बहक जाऊं तो मेरे बहेकने का गुनाह (या नुक़्सान) मेरी अपनी ही ज़ात पर है, और अगर मैंने हिदायत पा ली है तो इस वजह से (पाई है)कि मेरा रब मेरी तरफ़ वह़ी भेजता है। बेशक वोह सुननेवाला है क़रीब है।

وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ فَزِعُوْا فَلَا فَوْتَ وَاُخِذُوْا مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبٍ ۙ ﴿٥١﴾

51. और अगर आप (उनका ह़ाल) देखें जब येह लोग बड़े मुज़्तरिब होंगे, फिर बच न सकेंगे और नज़दीकी जगह से ही पकड़ लिए जाएंगे।

وَّقَالُوْٓا اٰمَنَّا بِهٖ ۚ وَاَنّٰى لَهُمُ التَّنَاوُشُ مِنْ مَّكَانٍ بَعِيْدٍ ۚ ﴿٥٢﴾

52. और कहेंगे : हम उस पर ईमान ले आए हैं, मगर अब वोह (ईमान को इतनी) दूर की जगह से कहां पा सक्ते हैं।

وَّقَدْ كَفَرُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ۚ وَيَقْذِفُوْنَ بِالْغَيْبِ مِنْ مَّكَانٍ بَعِيْدٍ ﴿٥٣﴾

53. ह़ालांकि वोह उससे पहले कुफ़्र कर चुके, और वोह बिन देखे दूर की जगह से बातिल गुमान के तीर फेंकते रहे हैं।

وَحِيْلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُوْنَ
كَمَا فُعِلَ بِاَشْيَاعِهِمْ مِّنْ قَبْلُ ؕ
اِنَّهُمْ كَانُوْا فِيْ شَكٍّ مُّرِيْبٍ ﴿۵۴﴾

54. और उनके और उनकी ख़्वाहिशात के दरमियान रुकावट डाल दी गई जैसा कि पहले उनके मिस्ल गिरोहों के साथ किया गया था। बेशक वोह धोके में डालनेवाले शक में मुब्तिला थे।

ع ٦ ١٢

आयातुहा 45 | 35 सूरतु फातिरिन मक्किय्यतुन 43 | रुकूआ़तुहा 5

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ جَاعِلِ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا
اُولِيْٓ اَجْنِحَةٍ مَّثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ؕ
يَزِيْدُ فِي الْخَلْقِ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱﴾

1. तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जो आस्मानों और ज़मीन (की तमाम वुस्अ़तों) को पैदा फ़रमानेवाला है, फ़रिश्तों को जो दो-दो और तीन-तीन और चार-चार परोंवाले हैं, क़ासिद बनानेवाला है, और तख़्लीक़ में जिस क़दर चाहता है इज़ाफ़ा (और तौसीअ़) फ़रमाता रेहता है, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर बड़ा क़ादिर है।

مَا يَفْتَحِ اللّٰهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَّحْمَةٍ
فَلَا مُمْسِكَ لَهَا ۚ وَمَا يُمْسِكْ ۙ فَلَا
مُرْسِلَ لَهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ ؕ وَهُوَ
الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۲﴾

2. अल्लाह इन्सानों के लिए (अपने ख़ज़ानए) रह़मत से जो कुछ खोल दे तो उसे कोई रोकनेवाला नहीं है, और जो रोक ले तो उसके बाद कोई उसे छोड़नेवाला नहीं, और वोही ग़ालिब है बड़ी ह़िक्मतवाला है।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ
عَلَيْكُمْ ؕ هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرُ اللّٰهِ
يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۖ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿۳﴾

3. ऐ लोगो! अपने ऊपर अल्लाहके इन्आ़म को याद करो, क्या अल्लाह के सिवा कोई और ख़ालिक़ है जो तुम्हें आस्मान और ज़मीन से रोज़ी दे, उसके सिवा कोई मा'बूद नहीं, पस तुम कहां बेहके फिरते हो।

وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَتْ

4. और अगर वोह आपको झुटलाएं तो आपसे पहले

رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ ؕ وَ اِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿۴﴾

कितने ही रसूल झुटलाए गए, और तमाम काम अल्लाह ही की तरफ़ लौटाए जाएंगे।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۥ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ﴿۵﴾

5. ऐ लोगो ! बेशक अल्लाहका वा'दा सच्चा है सो दुनिया की ज़िन्दगी तुम्हें हरगिज़ फ़रेब न दे दे, और न वोह दग़ाबाज़ शैतान तुम्हें अल्लाह (के नाम) से धोका दे।

اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوْهُ عَدُوًّا ؕ اِنَّمَا يَدْعُوْا حِزْبَهٗ لِيَكُوْنُوْا مِنْ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ﴿۶﴾

6. बेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है सो तुम भी (उसकी मुख़ालिफ़त की शक्ल में) उसे दुश्मन ही बनाए रखो, वोह तो अपने गिरोह को सिर्फ़ इस लिए बुलाता है कि वोह दोज़ख़ियों में शामिल हो जाएं।

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ؕ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ اَجْرٌ كَبِيْرٌ ﴿۷﴾

7. काफ़िर लोगों के लिए सख़्त अज़ाब है, और जो लोग ईमान लाए और नेक आ'माल करते रहे उनके लिए मग़फ़िरत और बहुत बड़ा सवाब है।

اَفَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ فَرَاٰهُ حَسَنًا ؕ فَاِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۖ فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسَرٰتٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ﴿۸﴾

8. भला जिस शख़्स के लिए उसका बुरा अमल आरास्ता कर दिया गया हो और वोह उसे (हक़ीक़तन) अच्छा समझने लगे (क्या वोह मोमिने सालेह़ जैसा हो सक्ता है), सो बेशक अल्लाह जिसे चाहता है गुमराह ठेहरा देता है और जिसे चाहता है हिदायत फ़रमाता है, सो (ऐ जाने जहां !) उन पर ह़सरत और फ़र्ते ग़म में आपकी जान न जाती रहे, बेशक वोह जो कुछ सर अंजाम देते हैं अल्लाह उसे खूब जाननेवाला है।

وَ اللّٰهُ الَّذِيْۤ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَسُقْنٰهُ اِلٰى بَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَحْيَيْنَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ

9. और अल्लाह ही है जो हवाएं भेजता है तो वोह बादल को उभार कर इकठ्ठा करती हैं फिर हम उस (बादल) को खुश्क और बंजर बस्ती की तरफ़ सैराबी के लिऐ ले जाते हैं, फिर हम उसके जरीए उस ज़मीनको उसकी मुर्दनी के

كَذٰلِكَ النُّشُوْرُ ﴿٩﴾

बाद ज़िन्दगी अ़ता करते हैं, उसी तरह (मुर्दों का) जी उठना होगा।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعِزَّةَ فَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ جَمِيْعًا ؕ اِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهٗ ؕ وَالَّذِيْنَ يَمْكُرُوْنَ السَّيِّاٰتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ؕ وَمَكْرُ اُولٰٓئِكَ هُوَ يَبُوْرُ ﴿١٠﴾

10. जो शख़्स इज़्ज़त चाहता है तो अल्लाह ही के लिए सारी इज़्ज़त है, पाकीज़ा कलिमात उसी की तरफ़ चढ़ते हैं और वोही नेक अ़मल (के मदारिज) को बुलंद फ़रमाता है, और जो लोग बुरी चालों में लगे रेहते हैं उनके लिए सख़्त अ़ज़ाब है और उनका मक्रो फ़रेब नीस्तो नाबूद हो जाएगा।

وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ جَعَلَكُمْ اَزْوَاجًا ؕ وَمَا تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ ؕ وَمَا يُعَمَّرُ مِنْ مُّعَمَّرٍ وَّلَا يُنْقَصُ مِنْ عُمُرِهٖٓ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿١١﴾

11. और अल्लाह ही ने तुम्हें मिट्टी (या'नी ग़ैर नामी माद्दे) से पैदा फ़रमाया फिर एक तौलीदी क़त्रे से, फिर तुम्हें जोड़े, जोड़े बनाया, और कोई मादा ह़ामिला नहीं होती और न बच्चा जनती है मगर उसके इल्म से, और न किसी दराज़ उ़म्र शख़्स की उ़म्र बढ़ाई जाती है और न उसकी उ़म्र कम की जाती है मगर (येह सब कुछ) लौहे (मह़फ़ूज़) में है, बेशक येह अल्लाह पर बहुत आसान है।

وَمَا يَسْتَوِي الْبَحْرٰنِ ۖ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَآئِغٌ شَرَابُهٗ وَهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ؕ وَمِنْ كُلٍّ تَاْكُلُوْنَ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْنَ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ فِيْهِ مَوَاخِرَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٢﴾

12. और दो समन्दर (या दरिया) बराबर नहीं हो सक्ते, येह (एक) शीरीं, प्यास बुझानेवाला है, उसका पीना खुशगवार है और येह (दूसरा) खारी, सख़्त कड़वा है, और तुम हर एकसे ताज़ा गोश्त खाते हो, और ज़ेवर (जिन में मोती, मरजान और मूंगे वग़ैरा सब शामिल हैं) निकालते हो, जिन्हें तुम पहनते हो और तू उसमें कश्तियों (और जहाज़ों) को देखता है जो (पानी को) फाड़ते चले जाते हैं ताकि तुम (बहरी तिजारत के रास्तों से) उसका फ़ज़्ल तलाश कर सको और ताकि तुम शुक्र गुज़ार हो जाओ।

يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ۙ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ

13. वोह रातको दिन में दाख़िल फ़रमाता है और दिनको रात में दाख़िल फ़रमाता है और उसने सूरज और चांदको

وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُسَمًّى ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ مَا يَمْلِكُونَ مِنْ قِطْمِيرٍ ﴿١٣﴾

(एक निज़ाम के तहत) मुसख़्ख़र फ़रमा रखा है, हर कोई एक मुक़र्रर मीआ़द के मुताबिक़ हरकत पज़ीर है। येही अल्लाह तुम्हारा रब है उसीकी सारी बादशाहत है, और उसके सिवा तुम जिन बुतोंको पूजते हो वोह खजूर की गुठली के बारीक छिलके के (भी) मालिक नहीं हैं।

إِنْ تَدْعُوهُمْ لَا يَسْمَعُوا دُعَاءَكُمْ وَلَوْ سَمِعُوا مَا اسْتَجَابُوا لَكُمْ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُونَ بِشِرْكِكُمْ وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيرٍ ﴿١٤﴾

14. (ऐ मुशरिको !) अगर तुम उन्हें पुकारो तो वोह (बुत हैं) तुम्हारी पुकार नहीं सुन सक्ते और अगर (बिल फ़र्ज़) वोह सुन लें तो तुम्हें जवाब नहीं दे सक्ते, और क़ियामत के दिन वोह तुम्हारे शिर्क का बिलकुल इन्कार कर देंगे, और तुझे ख़ुदाए बा ख़बर जैसा कोई ख़बरदार न करेगा।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ أَنْتُمُ الْفُقَرَاءُ إِلَى اللّٰهِ وَاللّٰهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿١٥﴾

15. ऐ लोगो ! तुम सब अल्लाह के मोहताज हो और अल्लाह ही बे नियाज़, सज़ावारे ह़म्दो सना है।

إِنْ يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ﴿١٦﴾

16. अगर वोह चाहे तुम्हें नाबूद कर दे और नई मख़्लूक़ ले आए।

وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيزٍ ﴿١٧﴾

17. और येह अल्लाह पर कुछ मुश्किल नहीं है।

وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرٰى وَإِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ إِلٰى حِمْلِهَا لَا يُحْمَلْ مِنْهُ شَيْءٌ وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى إِنَّمَا تُنْذِرُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَأَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَمَنْ تَزَكّٰى فَإِنَّمَا يَتَزَكّٰى لِنَفْسِهِ وَإِلَى اللّٰهِ الْمَصِيرُ ﴿١٨﴾

18. और कोई बोझ उठानेवाला दूसरे का बारे (गुनाह) न उठा सकेगा, और कोई बोझ में दबा हुआ (दूसरे को) अपना बोझ बटाने के लिए बुलाएगा तो उससे कुछ भी बोझ न उठाया जा सकेगा ख़्वाह क़रीबी रिश्तेदार ही हो, (ऐ ह़बीब !) आप उन्ही लोगों को डर सुनाते हैं जो अपने रबसे बिन देखे डरते हैं और नमाज़ क़ाइम करते हैं, और जो कोई पाकीज़गी ह़ासिल करता है वोह अपने ही फ़ाइदे के लिए पाक होता है, और अल्लाह ही की तरफ़ पलट कर जाना है।

19. और अँधा और बीना बराबर नहीं हो सक्ते।	وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ ﴿١٩﴾
20. और न तारीकियां और न नूर (बराबर हो सक्ते हैं)।	وَلَا الظُّلُمَاتُ وَلَا النُّورُ ﴿٢٠﴾
21. और न साया और न धूप।	وَلَا الظِّلُّ وَلَا الْحَرُورُ ﴿٢١﴾
22. और न ज़िन्दा लोग और न मुर्दे बराबर हो सक्ते हैं, बेशक अल्लाह जिसे चाहता है सुना देता है, और आपके ज़िम्मे उनको सुनाना नहीं जो क़ब्रों में (मद्फ़ून) हैं (या'नी आप काफ़िरों से अपनी बात क़ुबूल करवाने के ज़िम्मेदार नहीं हैं)।	وَمَا يَسْتَوِي الْأَحْيَاءُ وَلَا الْأَمْوَاتُ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُسْمِعُ مَنْ يَشَاءُ ۖ وَمَا أَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَنْ فِي الْقُبُورِ ﴿٢٢﴾
23. आप तो फ़क़त डर सुनानेवाले हैं।	إِنْ أَنْتَ إِلَّا نَذِيرٌ ﴿٢٣﴾
24. बेशक हमने आपको ह़क़्क़ो हिदायत के साथ, ख़ुशख़बरी सुनानेवाला और (आख़िरत का) डर सुनाने वाला बना कर भेजा है। और कोई उम्मत (ऐसी) नहीं मगर उसमें कोई (न कोई) डर सुनानेवाला (ज़रूर) गुज़रा है।	إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ بَشِيرًا وَنَذِيرًا ۚ وَإِنْ مِنْ أُمَّةٍ إِلَّا خَلَا فِيهَا نَذِيرٌ ﴿٢٤﴾
25. और अगर येह लोग आपको झुटलाएं तो बेशक इनसे पहले लोग (भी) झुटला चुके हैं, उनके पास (भी) उनके रसूल वाज़ेह़ निशानियां और सहीफ़े और रौशन करनेवाली किताब ले कर आए थे।	وَإِنْ يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۖ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ وَبِالزُّبُرِ وَبِالْكِتَابِ الْمُنِيرِ ﴿٢٥﴾
26. फिर मैंने उन काफ़िरों को (अ़ज़ाबमें) पकड़ लिया सो मेरा इन्कार (किया जाना) कैसा (इ़ब्रतनाक) साबित हुआ।	ثُمَّ أَخَذْتُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿٢٦﴾

ع ٣ ١٢ ١٥

★ यहां पर मन फ़िल क़ुबूरि (क़ब्रों में मदफ़ून मुर्दों) से मुराद काफ़िर हैं। अइम्मए तफ़्सीरने सहाबा व ताबिईन ﷺ से येही मा'ना बयान किया है। बतौरे हवाला मुलाहिज़ा फ़रमाएं : तफ़्सीरुल बग़वी (569:3), ज़ादुल मसीर लिइब्निल जौज़ी (484:7), तफ़्सीरुल क़रतबी (340:14), तफ़्सीरुल ख़ाज़िन (498:3), तफ़्सीर इब्ने कसीर (553:3), तफ़्सीरुल लिबाब लि अबी ह़फ़्स अल हंबली (200:199:15), अद्दुर्रुल मनसूर लिस्सुयूती (18:7), और फ़त्हुल क़दीर लिश्शौकानी (346:4)

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ ثَمَرٰتٍ مُّخْتَلِفًا اَلْوَانُهَا ؕ وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌۢ بِيْضٌ وَّ حُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهَا وَغَرَابِيْبُ سُوْدٌ ﴿۲۷﴾

27. क्या आपने नहीं देखा कि अल्लाहने आस्मानसे पानी उतारा, फिर हमने उससे फल निकाले जिनके रंग जुदागाना हैं, और (उसी तरह) पहाड़ों में भी सफ़ेद और सुर्ख़ घाटियां हैं उनके रंग (भी) मुख़्तलिफ़ हैं और बहुत गेहरी सियाह (घाटियां) भी हैं।

وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَآبِّ وَالْاَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ كَذٰلِكَ ؕ اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ غَفُوْرٌ ﴿۲۸﴾

28. और इन्सानों और जानवरों और चोपायों में भी उसी तरह मुख़्तलिफ़ रंग है, बस अल्लाह के बंदों में से उससे वोही डरते हैं जो (उन ह़क़ाइक़ का बसीरत के साथ) इल्म रखनेवाले हैं, यक़ीनन अल्लाह ग़ालिब है बड़ा बख़्शने वाला है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَتْلُوْنَ كِتٰبَ اللّٰهِ وَ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَ اَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً يَّرْجُوْنَ تِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ ۙ﴿۲۹﴾

29. बेशक जो लोग अल्लाहकी किताब की तिलावत करते हैं और नमाज़ क़ाइम रखते हैं और जो कुछ हमने उन्हें अ़ता किया है उसमें से ख़र्च करते हैं, पोशीदा भी और ज़ाहिर भी, और ऐसी (उख़रवी) तिजारत के उम्मीदवार हैं जो कभी ख़सारे में नहीं होगी।

لِيُوَفِّيَهُمْ اُجُوْرَهُمْ وَ يَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّهٗ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ﴿۳۰﴾

30. ताकि अल्लाह उनका अज्र उन्हें पूरा पूरा अ़ता फ़रमाए और अपने फ़ज़्लसे उन्हें मज़ीद नवाज़े, बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला , बड़ा ही शुक्र क़ुबूल फ़रमानेवाला है।

وَالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِعِبَادِهٖ لَخَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ ﴿۳۱﴾

31. और जो किताब (क़ुरआन) हमने आपकी तरफ़ वही फ़रमाई है, वोही ह़क़ है और अपने से पहले की किताबोंकी तस्दीक़ करनेवाली है, बेशक अल्लाह अपने बंदोंसे पूरी तरह बा ख़बर है ख़ूब देखनेवाला है।

ثُمَّ اَوْرَثْنَا الْكِتٰبَ الَّذِيْنَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا ۚ فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ

32. फिर हमने इस किताब (क़ुरआन) का वारिस ऐसे लोगों को बनाया जिन्हें हमने अपने बंदों में से चुन लिया

لِّنَفْسِهٖ ۚ وَ مِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ۚ وَ مِنْهُمْ سَابِقٌۢ بِالْخَيْرٰتِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ﴿۳۲﴾

(या'नी उम्मते मुहम्मदी ﷺ को सो उन में से अपनी जान पर ज़ुल्म करनेवाले भी हैं, और उनमें से दरमियान में रेहनेवाले भी हैं, और उनमें से अल्लाह के हुक्म से नेकियों में आगे बढ़ जानेवाले भी हैं, येही (आगे निकल कर कामिल हो जाना ही) बड़ा फ़ज़्ल है।

جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّ لُؤْلُؤًا ۚ وَ لِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ ﴿۳۳﴾

33. (दाइमी इक़ामत के लिए) अ़दन की जन्नतें हैं जिन में वोह दाख़िल होंगे, उनमें उन्हें सोने और मोतियों के कंगनों से आरास्ता किया जाएगा और वहां उनकी पोशाक रेश्मी होगी।

وَ قَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْۤ اَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ ؕ اِنَّ رَبَّنَا لَغَفُوْرٌ شَكُوْرُۨ ۙ ﴿۳۴﴾

34. और वोह कहेंगे अल्लाह का शुक्रो ह़म्द है जिसने हमसे कुल ग़म दूर फ़रमा दिया, बेशक हमारा रब बड़ा बख़्शनेवाला , बड़ा शुक्र कु़बूल फ़रमानेवाला है।

الَّذِيْۤ اَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ لَا يَمَسُّنَا فِيْهَا نَصَبٌ وَّ لَا يَمَسُّنَا فِيْهَا لُغُوْبٌ ﴿۳۵﴾

35. जिसने हमें अपने फ़ज़्ल से दाइमी इक़ामत के घर ला उतारा है, जिसमें हमें न कोई मशक़्क़त पहुंचेगी और न उसमें हमें कोई थकन पहुंचेगी।

وَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ ۚ لَا يُقْضٰى عَلَيْهِمْ فَيَمُوْتُوْا وَ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِّنْ عَذَابِهَا ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِيْ كُلَّ كَفُوْرٍ ۚ ﴿۳۶﴾

36. और जिन लोगोंने कुफ़्र किया उनके लिए दोज़ख़की आग है, न उन पर (मौत का) फ़ैसला किया जाएगा कि मर जाएं और न उनसे अ़ज़ाब में से कुछ कम किया जाएगा, उसी तरह़ हम हर ना फ़रमान को बदला दिया करते हैं।

وَ هُمْ يَصْطَرِخُوْنَ فِيْهَا ۚ رَبَّنَاۤ اَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ ؕ اَوَلَمْ نُعَمِّرْكُمْ مَّا يَتَذَكَّرُ فِيْهِ مَنْ تَذَكَّرَ وَ

37. और वोह उस दोज़ख़ में चिल्लाएंगे कि ऐ हमारे रब ! हमें (यहां से) निकाल दे, (अब) हम नेक अ़मल करेंगे उन (आ'माल) से मुख़्तलिफ़ जो हम (पहले) किया करते थे। (इर्शाद होगा) क्या हमने तुम्हें इतनी उ़म्र नहीं दी थी कि उसमें जो शख़्स नसीह़त ह़ासिल करना चाहता,

جَآءَكُمُ النَّذِيرُ ۖ فَذُوقُوا فَمَا لِلظّٰلِمِينَ مِنْ نَّصِيرٍ ﴿٣٧﴾

वोह सोच सक्ता था और (फिर) तुम्हारे पास डर सुनानेवाला भी आ चुका था, पस अब (अ़ज़ाब का) मज़ा चखो सो ज़ालिमों के लिए कोई मददगार न होगा।

اِنَّ اللّٰهَ عٰلِمُ غَيْبِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ اِنَّهٗ عَلِيمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٣٨﴾

38. बेशक अल्लाह आस्मानों और ज़मीन के ग़ैब को जाननेवाला है, यक़ीनन वोह सीनोंकी (पोशीदा) बातों से खूब वाक़िफ़ है।

هُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ فِي الْاَرْضِ ۚ فَمَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ۖ وَلَا يَزِيدُ الْكٰفِرِينَ كُفْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ اِلَّا مَقْتًا ۚ وَلَا يَزِيدُ الْكٰفِرِينَ كُفْرُهُمْ اِلَّا خَسَارًا ﴿٣٩﴾

39. वोही है जिसने तुम्हें ज़मीनमें (गुज़िश्ता अक़्वाम का) जा नशीन बनाया, पस जिसने कुफ़्र किया सो उसका वबाले कुफ़्र उसी पर होगा, और काफ़िरों के हक़में उनका कुफ़्र उनके रब के हुज़ूर सिवाए नाराज़गी के और कुछ नहीं बढ़ाता, और काफ़िरों के हक़में उनका कुफ़्र सिवाए नुक़्सान के किसी (भी) और चीज़का इज़ाफ़ा नहीं करता।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ شُرَكَآءَكُمُ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللّٰهِ ۖ اَرُونِي مَاذَا خَلَقُوا مِنَ الْاَرْضِ اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ۚ اَمْ اٰتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا فَهُمْ عَلٰى بَيِّنَتٍ مِّنْهُ ۚ بَلْ اِنْ يَّعِدُ الظّٰلِمُونَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا اِلَّا غُرُورًا ﴿٤٠﴾

40. फ़रमा दीजिए : क्या तुमने अपने शरीकों को देखा है जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो, मुझे दिखा दो कि उन्होंने ज़मीन में से क्या चीज़ पैदा की है या आस्मानों (की तख़्लीक़) में उनकी कोई शराकत है या हमने उन्हें कोई किताब अ़ता कर रखी है कि वोह उसकी दलील पर क़ाइम हैं? (कुछ भी नहीं है) बल्कि ज़ालिम लोग एक दूसरे से फ़रेब के सिवा कोई वा'दा नहीं करते।

اِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ اَنْ تَزُولَا ۚ وَلَئِنْ زَالَتَآ اِنْ اَمْسَكَهُمَا مِنْ اَحَدٍ مِّنْۢ

41. बेशक अल्लाह आस्मानों और ज़मीनको (अपने निज़ामे क़ुदरत के ज़रीए) उस बातसे रोके हुए है कि वोह (अपनी अपनी जगहों और रास्तों से) हट सकेंऔर अगर वोह दोनों हटने लगें तो उसके बाद कोई भी उन दोनों को रोक नहीं सक्ता, बेशक वोह बड़ा बुर्दबार,

بَعْدِهٖ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ﴿۴۱﴾

बड़ा बख़्शनेवाला है।

وَ اَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ لَّيَكُوْنُنَّ اَهْدٰى مِنْ اِحْدَى الْاُمَمِ ۚ فَلَمَّا جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ مَّا زَادَهُمْ اِلَّا نُفُوْرَا ۨ ۙ ﴿۴۲﴾

42. और येह लोग अल्लाहके साथ बड़ी पुख़्ता क़स्में खाया करते थे कि अगर उनके पास कोई डर सुनानेवाला आ जाए तो येह ज़रूर हर एक उम्मतसे बढ़ कर राहे रास्त पर होंगे, फिर जब उनके पास डर सुनानेवाले (नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां ﷺ) तशरीफ़ ले आए तो उससे उनकी हक़से बेज़ारी में इज़ाफ़ा ही हुआ।

اسْتِكْبَارًا فِى الْاَرْضِ وَ مَكْرَ السَّيِّئِ ؕ وَ لَا يَحِيْقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ اِلَّا بِاَهْلِهٖ ؕ فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا سُنَّتَ الْاَوَّلِيْنَ ۚ فَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۚ وَ لَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَحْوِيْلًا ﴿۴۳﴾

43. (उन्होंने) ज़मीनमें अपने आपको सबसे बड़ा समझना और बुरी चालें चलना (इख़्तियार किया), और बुरी चालें उसी चाल चलनेवाले को ही घेर लेती हैं, सो येह अगले लोगों की रविशे (अ़ज़ाब) के सिवा (किसी और चीज़के) मुन्तज़िर नहीं हैं। सो आप अल्लाहके दस्तूर में हरगिज़ कोई तब्दीली नहीं पाएंगे और न ही अल्लाह के दस्तूर में हरगिज़ कोई फिरना पाएंगे।

اَوَ لَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَ كَانُوْۤا اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً ؕ وَ مَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعْجِزَهٗ مِنْ شَيْءٍ فِى السَّمٰوٰتِ وَ لَا فِى الْاَرْضِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ عَلِيْمًا قَدِيْرًا ﴿۴۴﴾

44. क्या येह लोग ज़मीन में चलते फिरते नहीं हैं कि देख लेते कि उन लोगोंका अंजाम कैसा हुआ जो इनसे पहले थे हालांकि वोह इनसे कहीं ज़ियादह ज़ोर आवर थे, और अल्लाह ऐसा नहीं है कि आस्मानो में कोई भी चीज़ उसे आ़जिज़ कर सके और न ही ज़मीनमें (ऐसी कोई चीज़ है), बेशक वोह बहुत इ़ल्मवाला बड़ी क़ुदरतवाला है।

وَ لَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوْا مَا تَرَكَ عَلٰى ظَهْرِهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّ

45. और अगर अल्लाह लोगोंको उन आ'माले (बद) के बदले जो उन्होंने कमा रखे हैं (अ़ज़ाबकी) गिरफ़्त में लेने

لٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِعِبَادِهٖ بَصِيْرًا ﴿٤٥﴾

लगे तो वोह उस ज़मीनकी पुश्त पर किसी चलने वालेको न छोड़े लेकिन वोह उन्हें मुक़र्ररा मुद्दत तक मोहलत दे रहा है। फिर जब उनका मुक़र्ररा वक़्त आ जाएगा तो बेशक अल्लाह अपने बंदों को ख़ूब देखनेवाला है।

आयातुहा 83 | 36 सूरतु यासीन मक्कियतुन 41 | रुकूआतुहा 5

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

يٰسٓ ﴿١﴾

1. यासीन (ह़क़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं)।

وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ ﴿٢﴾

2. ह़िक्मत से मा'मूर क़ुरआन की क़सम।

اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٣﴾

3. बेशक आप ज़रूर रसूलों में से हैं।

عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٤﴾

4. सीधी राह पर (क़ाइम हैं)।

تَنْزِيْلَ الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ﴿٥﴾

5. (येह) बड़ी इ़ज़्ज़तवाले, बड़े रह़मवाले (रब) का नाज़िल कर्दह है।

لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اُنْذِرَ اٰبَآؤُهُمْ فَهُمْ غٰفِلُوْنَ ﴿٦﴾

6. ताकि आप उस क़ौम को डर सुनाएं जिन के बापदादा को (भी) नहीं डराया गया सो वोह ग़ाफ़िल हैं।

لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلٰٓى اَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٧﴾

7. दर ह़क़ीक़त उनके अक्सर लोगों पर हमारा फ़रमान (सच) साबित हो चुका है सो वोह ईमान नहीं लाएंगे।

اِنَّا جَعَلْنَا فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ اَغْلٰلًا فَهِيَ اِلَى الْاَذْقَانِ فَهُمْ مُّقْمَحُوْنَ ﴿٨﴾

8. बेशक हमने उनकी गरदनों में तौक़ डाल दिए हैं तो वोह उनकी ठोड़ियों तक हैं, पस वोह सर ऊपर उठाए हुए हैं।

وَجَعَلْنَا مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ سَدًّا وَّمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَاَغْشَيْنٰهُمْ فَهُمْ

9. और हमने उनके आगे से (भी) एक दीवार और उनके पीछे से (भी) एक दीवार बना दी है, फिर हम ने उन (की

لَا يُبْصِرُوْنَ ﴿٩﴾

आँखों) पर परदा डाल दिया है सो वोह कुछ नहीं देखते।

وَ سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠﴾

10. और उन पर बराबर है ख़्वाह आप उन्हें डराएं या उन्हें न डराएं वोह ईमान न लाएंगे।

اِنَّمَا تُنْذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَ خَشِيَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ ۚ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَّ اَجْرٍ كَرِيْمٍ ﴿١١﴾

11. आप तो सिर्फ़ उसी शख़्स को डर सुनाते हैं जो नसीहत की पैरवी करता है और ख़ुदाए रहमान से बिन देखे डरता है, सो आप उसे बख़्शिश और बड़ी इज़्ज़तवाले अज्र की ख़ुशख़बरी सुना दें।

اِنَّا نَحْنُ نُحْيِ الْمَوْتٰى وَ نَكْتُبُ مَا قَدَّمُوْا وَ اٰثَارَهُمْ ؕ وَ كُلَّ شَيْءٍ اَحْصَيْنٰهُ فِيْٓ اِمَامٍ مُّبِيْنٍ ﴿١٢﴾

12. बेशक हम ही तो मुर्दों को ज़िन्दा करते हैं और हम वोह सब कुछ लिख रहे हैं जो (आ'माल) वोह आगे भेज चुके हैं, और उनके असरात (जो पीछे रेह गए हैं), और हर चीज़को हमने रौशन किताब (लौहे महफ़ूज) में इहाता कर रखा है।

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا اَصْحٰبَ الْقَرْيَةِ ۘ اِذْ جَآءَهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿١٣﴾

13. और आप उनके लिए एक बस्ती (इन्ताकिया) के बाशिन्दोंकी मिसाल (हिकायतन) बयान करें, जब उनके पास कुछ पयग़म्बर आए।

اِذْ اَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوْهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوْٓا اِنَّآ اِلَيْكُمْ مُّرْسَلُوْنَ ﴿١٤﴾

14. जबकि हमने उनकी तरफ़ (पहले) दो (पयग़म्बर) भेजे तो उन्होंने उन दोनों को झुटला दिया फिर हमने (उनको) तीसरे (पयग़म्बर) के ज़रीए कुव्वत दी, फिर उन तीनोंने कहा बेशक हम तुम्हारी तरफ़ भेजे गए हैं।

قَالُوْا مَآ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۙ وَ مَآ اَنْزَلَ الرَّحْمٰنُ مِنْ شَيْءٍ ۙ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا تَكْذِبُوْنَ ﴿١٥﴾

15. (बस्तीवालों ने) कहा : तुम तो महज़ हमारी तरह बशर हो और ख़ुदाए रहमानने कुछ भी नाज़िल नहीं किया, तुम फ़क़त झूट बोल रहे हो।

قَالُوْا رَبُّنَا يَعْلَمُ اِنَّآ اِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُوْنَ ﴿١٦﴾

16. (पयग़म्बरों ने) कहा : हमारा रब जानता है कि हम यक़ीनन तुम्हारी तरफ़ भेजे गए हैं।

وَمَا عَلَيْنَآ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿۱۷﴾

17. और वाज़ेह़ तौर पर पैग़ाम पहुंचा देने के सिवा हम पर कुछ लाज़िम नहीं है।

قَالُوْٓا اِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ ۚ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهُوْا لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَلَيَمَسَّنَّكُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۸﴾

18. (बस्तीवालों ने) कहा : हमें तुमसे नहूसत पहुंची है अगर तुम वाक़ई बाज़ न आए तो हम तुम्हें यक़ीनन संगसार कर देंगे और हमारी तरफ़ से तुम्हें ज़रूर दर्दनाक अ़ज़ाब पहुंचेगा।

قَالُوْا طَآئِرُكُمْ مَّعَكُمْ ؕ اَئِنْ ذُكِّرْتُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ﴿۱۹﴾

19. (पयग़म्बरों ने) कहा : तुम्हारी नहूसत तुम्हारे साथ है, क्या येह नहूसत है कि तुम्हें नसीह़त की गई, बल्कि तुम लोग ह़द से गुज़र जानेवाले हो।

وَجَآءَ مِنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ رَجُلٌ يَّسْعٰى قَالَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۲۰﴾

20. और शहरके परले किनारे से एक आदमी दौड़ता हुवा आया, उसने कहा : ऐ मेरी क़ौम! तुम पयग़म्बरों की पैरवी करो।

اتَّبِعُوْا مَنْ لَّا يَسْـَٔلُكُمْ اَجْرًا وَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿۲۱﴾

21. ऐसे लोगोंकी पैरवी करो जो तुमसे कोई मुआ़वज़ा नहीं मांगते और वोह हिदायत याफ़्ता हैं।

الجزء ٢٣

وَمَا لِيَ لَآ أَعْبُدُ الَّذِي فَطَرَنِي وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٢٢﴾

22. और मुझे क्या है कि मैं उस ज़ात की इबादत न करूं जिसने मुझे पैदा फ़रमाया है और तुम (सब) उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे।

ءَأَتَّخِذُ مِن دُونِهِۦٓ ءَالِهَةً إِن يُرِدْنِ الرَّحْمَٰنُ بِضُرٍّ لَّا تُغْنِ عَنِّي شَفَٰعَتُهُمْ شَيْـًٔا وَلَا يُنقِذُونِ ﴿٢٣﴾

23. क्या मैं उस (अल्लाह) को छोड़ कर ऐसे मा'बूद बना लूं कि अगर खुदाए रहमान मुझे कोई तक्लीफ़ पहुंचाना चाहे तो न मुझे उनकी सिफ़ारिश कुछ नफ़ा' पहुंचा सके और न वोह मुझे छुड़ा ही सकें।

إِنِّيٓ إِذًا لَّفِي ضَلَٰلٍ مُّبِينٍ ﴿٢٤﴾

24. बेशक तब तो मैं खुली गुमराही में हूंगा।

إِنِّيٓ ءَامَنتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمَعُونِ ﴿٢٥﴾

25. बेशक मैं तुम्हारे रब पर ईमान ले आया हूं, सो तुम मुझे (ग़ौरसे) सुनो।

قِيلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ ۖ قَالَ يَٰلَيْتَ قَوْمِي يَعْلَمُونَ ﴿٢٦﴾

26. (उसे काफ़िरों ने शहीद कर दिया तो उसे) कहा गया (आ) बहिश्त में दाख़िल हो जा, उसने कहा : ऐ काश ! मेरी क़ौम को मा'लूम हो जाता।

بِمَا غَفَرَ لِي رَبِّي وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُكْرَمِينَ ﴿٢٧﴾

27. कि मेरे रब ने मेरी मग़फ़िरत फ़रमा दी है और मुझे इज़्ज़तो क़ुर्बतवालों में शामिल फ़रमा दिया है।

وَمَآ أَنزَلْنَا عَلَىٰ قَوْمِهِۦ مِنۢ بَعْدِهِۦ مِن جُندٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَمَا كُنَّا مُنزِلِينَ ﴿٢٨﴾

28. और हमने उसके बाद उसकी क़ौम पर आस्मान से (फ़रिश्तों का) कोई लश्कर नहीं उतारा और न ही हम (उनकी हलाकत के लिए फरिश्तों को) उतारनेवाले थे।

إِن كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَٰحِدَةً فَإِذَا هُمْ خَٰمِدُونَ ﴿٢٩﴾

29. (उनका अज़ाब) एक सख़्त चिंघाड़ के सिवा और कुछ न था, बस वोह उसी दम (मर कर कोयले की तरह) बुझ गए।

يَٰحَسْرَةً عَلَى الْعِبَادِ ۚ مَا يَأْتِيهِم مِّن رَّسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِۦ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٣٠﴾

وقف غفران

30. हाए (उन) बंदों पर अफ़्सोस ! उनके पास कोई रसूल न आता था मगर येह कि वोह मज़ाक उड़ाते थे।

أَلَمْ يَرَوْا كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّنَ

31. क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने इनसे पहले कितनी

الْقُرُوْنِ اَنَّهُمْ اِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٣١﴾

ही क़ौमें हलाक कर डालीं, कि अब वोह लोग उनकी तरफ़ पलट कर नहीं आएंगे।

وَ اِنْ كُلٌّ لَّمَّا جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ﴿٣٢﴾

32. मगर येह कि वोह सब के सब हमारे हुज़ूर हाज़िर किए जाएंगे।

وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الْاَرْضُ الْمَيْتَةُ ۚ اَحْيَيْنٰهَا وَ اَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ يَاْكُلُوْنَ ﴿٣٣﴾

33. और उनके लिए एक निशानी मुर्दा ज़मीन है, जिसे हमने ज़िन्दा किया और हमने उससे (अनाज के) दाने निकाले, फिर वोह उसमें से खाते हैं।

وَ جَعَلْنَا فِيْهَا جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ وَّ فَجَّرْنَا فِيْهَا مِنَ الْعُيُوْنِ ﴿٣٤﴾

34. और हमने उसमें खजूरों और अँगूरों के बाग़ात बनाए और उसमें हमने कुछ चश्मे भी जारी कर दिए।

لِيَاْكُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖ ۙ وَ مَا عَمِلَتْهُ اَيْدِيْهِمْ ؕ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٣٥﴾

35. ताकि वोह उसके फल खाएं और उसे उनके हाथों ने नहीं बनाया, फिर (भी) क्या वोह शुक्र नहीं करते।

سُبْحٰنَ الَّذِيْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ وَمِنْ اَنْفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٦﴾

36. पाक है वोह ज़ात जिसने सब चीज़ों के जोड़े पैदा किए, उनसे (भी) जिन्हें ज़मीन उगाती है और ख़ुद उनकी जानों से भी और (मज़ीद) उन चीज़ों से भी जिन्हें वोह नहीं जानते।

وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الَّيْلُ ۚ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَاِذَا هُمْ مُّظْلِمُوْنَ ﴿٣٧﴾

37. और एक निशानी उनके लिए रात (भी) है, हम उसमें से (कैसे) दिन को खींच लेते हैं सो वोह उस वक़्त अँधेरे में पड़े रेह जाते हैं।

وَ الشَّمْسُ تَجْرِيْ لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ؕ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿٣٨﴾

38. और सूरज हमेशा अपनी मुक़र्ररा मन्ज़िल के लिए (बिग़ैर रुके) चलता रेहता है, येह बड़े ग़ालिब बहुत इल्मवाले (रब) की तक़्दीर है।

وَالْقَمَرَ قَدَّرْنٰهُ مَنَازِلَ حَتّٰى عَادَ

39. और हमने चांदकी (हरकतो गर्दिश की) भी मन्ज़िलें मुक़र्रर कर रखी हैं यहां तक कि (उसका अहले ज़मीनको

كَالْعُرْجُوْنِ الْقَدِيْمِ ﴿٣٩﴾

दिखाई देना) घटते घटते खजूरकी पुरानी टेहनी की तरह हो जाता है।

لَا الشَّمْسُ يَنْۢبَغِيْ لَهَآ اَنْ تُدْرِكَ
الْقَمَرَ وَلَا الَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ؕ وَ
كُلٌّ فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ﴿٤٠﴾

40. न सूरज की येह मजाल कि वोह (अपना मदार छोड़ कर) चांद को जा पकड़े और न रात ही दिनसे पहले नमूदार हो सक्ती है, और सब (सितारे और सय्यारे) अपने (अपने) मदार में ह़रकत पज़ीर हैं।

وَاٰيَةٌ لَّهُمْ اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ
فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ۙ﴿٤١﴾

41. और एक निशानी उनके लिए येह (भी) है कि हमने उनके आबाओ अजदाद को (जो जुर्रिय्यते आदम थे) भरी कश्ती (ए-नूह़) में सवार कर (के बचा) लिया था।

وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِّنْ مِّثْلِهٖ مَا
يَرْكَبُوْنَ ﴿٤٢﴾

42. और हमने उनके लिए उस (कश्ती) के मानिन्द उन (बहुत सी और सवारियों) को बनाया जिन पर येह लोग सवार होते हैं।

وَاِنْ نَّشَاْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيْخَ لَهُمْ
وَلَا هُمْ يُنْقَذُوْنَ ۙ﴿٤٣﴾

43.और अगर हम चाहें तो उन्हें ग़र्क़ कर दें तो न उनके लिए कोई फ़रियाद रस होगा और न वोह बचाए जा सकेंगे।

اِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا وَمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ﴿٤٤﴾

44. सिवाए हमारी रह़मत के और (येह) एक मुक़र्ररा मुद्दत तकका फ़ाइदा है।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّقُوْا مَا بَيْنَ اَيْدِيْكُمْ
وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٤٥﴾

45. और जब उनसे कहा जाता है कि तुम उस (अ़ज़ाब) से डरो जो तुम्हारे सामने है और जो तुम्हारे पीछे है। ताकि तुम पर रह़म किया जाए।

وَمَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ رَبِّهِمْ
اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ﴿٤٦﴾

46. और उनके रब की निशानियों में से कोई (भी) निशानी उनके पास नहीं आती मगर वोह उससे रू गर्दानी करते हैं।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ
اللّٰهُ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ
اٰمَنُوْٓا اَنُطْعِمُ مَنْ لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ

47. और जब उनसे कहा जाता है कि तुम उसमें से (राहे खुदा में) ख़र्च करो जो तुम्हें अल्लाहने अ़ता किया है तो काफ़िर लोग ईमानवालोंसे केहते हैं क्या हम उस (ग़रीब) शख़्स को खिलाएं जिसे अगर अल्लाह चाहता तो (खुद ही)

اَطْعَمَهٗۤ ۖ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٤٧﴾

खिला देता। तुम तो खुली गुमराही में ही (मुब्तिला) हो गए हो।

وَ يَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤٨﴾

48. और वोह केहते हैं कि येह वा'दए (क़ियामत) कब पूरा होगा अगर तुम सच्चे हो।

مَا يَنْظُرُوْنَ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً تَاْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُوْنَ ﴿٤٩﴾

49. वोह लोग सिर्फ़ एक सख़्त चिंघाड़ के ही मुन्तज़िर हैं जो उन्हें (अचानक) पकड़ेगी और वोह आपस में झगड़ रहे होंगे।

فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ تَوْصِيَةً وَّ لَآ اِلٰٓى اَهْلِهِمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٥٠﴾ ع

50. फिर न तो वोह वसिय्यत करने के ही क़ाबिल रहेंगे और न अपने घरवालों की तरफ़ वापस पलट सकेंगे।

وَ نُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَاِذَا هُمْ مِّنَ الْاَجْدَاثِ اِلٰى رَبِّهِمْ يَنْسِلُوْنَ ﴿٥١﴾

51. और (जिस वक़्त दोबारा) सूर फूंका जाएगा तो वोह फ़ौरन क़ब्रों से निकल कर अपने रबकी तरफ़ दौड़ पड़ेंगे।

قَالُوْا يٰوَيْلَنَا مَنْۢ بَعَثَنَا مِنْ مَّرْقَدِنَا ٚ هٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمٰنُ وَ صَدَقَ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٥٢﴾

52. (रोज़े मेहशर की हौलनाकियां देख कर) कहेंगे : हाए हमारी कम बख़्ती ! हमें किसने हमारी ख़्वाबगाहों से उठा दिया ? (येह ज़िन्दा होना) वोही तो है जिस का खुदाए रहमानने वा'दा किया था और रसूलों ने सच फ़रमाया था।

اِنْ كَانَتْ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمْ جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ﴿٥٣﴾

53. येह महज़ एक बहुत सख़्त चिंघाड़ होगी तो वोह सबके सब यकायक हमारे हुज़ूर ला कर हाज़िर कर दिए जाएंगे।

فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا وَّ لَا تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٥٤﴾

54. फिर आजके दिन किसी जान पर कुछ ज़ुल्म न किया जाएगा और न तुम्हें कोई बदला दिया जाएगा सिवाए उन कामों के जो तुम किया करते थे।

اِنَّ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِيْ شُغُلٍ فٰكِهُوْنَ ﴿٥٥﴾ ج

55. बेशक अह्ले जन्नत आज (अपने) दिल पसंद मशाग़िल (मसलन ज़ियारतों, ज़ियाफ़तों, सिमाअ़ और दीगर ने'मतों) में लुत्फ़ अंदोज़ हो रहे होंगे।

ع ۱۸ ۳ ۲

وقف لازم
وقف غفران
وقف منزل

هُمْ وَ اَزْوَاجُهُمْ فِىْ ظِلٰلٍ عَلَى الْاَرَآئِكِ مُتَّكِـُٔوْنَ ﴿٥٦﴾

56. वोह और उनकी बीवियां घने सायों में तख़्तों पर तक्ये लगाए बैठे होंगे।

لَهُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّلَهُمْ مَّا يَدَّعُوْنَ ﴿٥٧﴾

57. उनके लिए उसमें (हर क़िस्म का) मेवा होगा और उनके लिए हर वोह चीज़ (मुयस्सर) होगी जो वोह तलब करेंगे।

سَلٰمٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ ﴿٥٨﴾

58. (तुम पर) सलाम हो (येह) रब्बे रहीम की तरफ़से फ़रमाया जाएगा।

وَامْتَازُوا الْيَوْمَ اَيُّهَا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٥٩﴾

59. और ऐ मुजरिमो ! तुम आज (नेकूकारों से) अलग हो जाओ।

اَلَمْ اَعْهَدْ اِلَيْكُمْ يٰبَنِىْٓ اٰدَمَ اَنْ لَّا تَعْبُدُوا الشَّيْطٰنَ ۚ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٦٠﴾

60. ऐ बनी आदम ! क्या मैंने तुमसे इस बातका अ़हद नहीं लिया था कि तुम शैतानकी परस्तिश न करना बेशक वोह तुम्हारा खुला दुश्मन है।

وَّ اَنِ اعْبُدُوْنِىْ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٦١﴾

61. और येह कि मेरी इ़बादत करते रेहना येही सीधा रास्ता है।

وقف غفران

وَلَقَدْ اَضَلَّ مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيْرًا ؕ اَفَلَمْ تَكُوْنُوْا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٢﴾

62. और बेशक उसने तुम में से बहुत सी ख़िलकत को गुमराह कर डाला फिर क्या तुम अ़क्ल नहीं रखते थे।

هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِىْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿٦٣﴾

63. येह वोही दोज़ख़ जिसका तुमसे वा'दा किया जाता रहा है।

اِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٦٤﴾

64. आज उस दोज़ख़में दाख़िल हो जाओ इस वजह से कि तुम कुफ़्र करते रहे थे।

اَلْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلٰٓى اَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَآ اَيْدِيْهِمْ وَ تَشْهَدُ اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٦٥﴾

65. आज हम उनके मुंहों पर मुहर लगा देंगे और उनके हाथ हमसे बातें करेंगे और उनके पांव उन आ'माल की गवाही देंगे जो वोह कमाया करते थे।

وَ لَوْ نَشَآءُ لَطَمَسْنَا عَلٰٓى اَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَاَنّٰى يُبْصِرُوْنَ ﴿٦٦﴾

66. और अगर हम चाहते तो उनकी आँखों के निशान तक मिटा देते फिर वोह रास्ते पर दौड़ते तो कहां देख सक्ते।

وَلَوْ نَشَآءُ لَمَسَخْنٰهُمْ عَلٰى مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوْا مُضِيًّا وَّلَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٦٧﴾

67. और अगर हम चाहते तो उनकी रहाइशगाहों पर ही हम उनकी सूरतें बिगाड़ देते फिर न वोह आगे जानेकी क़ुदरत रखते और न ही वापस लौट सक्ते।

وَمَنْ نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِى الْخَلْقِ ؕ اَفَلَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٦٨﴾

68. और हम जिसे तवील उम्र देते हैं उसे क़ुव्वतो तबीअ़त में वापस (बचपन या कमज़ोरी की तरफ़) पलटा देते हैं फिर क्या वोह अ़क़्ल नहीं रखते।

وَمَا عَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْۢبَغِىْ لَهٗ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ وَّقُرْاٰنٌ مُّبِيْنٌ ﴿٦٩﴾

69. और हमने उनको (या'नी नबिय्ये मुकर्रम ﷺ को) शे'र केहना नहीं सिखाया और न ही येह उनके शायाने शान है। येह (किताब) तो फ़क़त नसीहत और रौशन क़ुरआन है।

لِّيُنْذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا وَّيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧٠﴾

70. ताकि वोह उस शख़्स को डर सुनाएं जो ज़िन्दा हो और काफ़िरों पर फ़रमाने हुज्जत साबित हो जाए।

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِّمَّا عَمِلَتْ اَيْدِيْنَاۤ اَنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مٰلِكُوْنَ ﴿٧١﴾

71. क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने अपने दस्ते क़ुदरत से बनाई हुई (मख़्लूक़) में से उनके लिए चौपाए पैदा किए तो वोह उनके मालिक हैं।

وَذَلَّلْنٰهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوْبُهُمْ وَمِنْهَا يَاْكُلُوْنَ ﴿٧٢﴾

72. और हमने उन (चोपायों) को उनके ताबे' कर दिया सो उनमें से कुछ तो उनकी सवारियां हैं और उनमें से बा'ज़ को वोह खाते हैं।

وَلَهُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ ؕ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٧٣﴾

73. और उनमें उनके लिए और भी फ़वाइद हैं और मशरूब हैं तो फिर वोह शुक्र अदा क्यों नहीं करते।

وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لَّعَلَّهُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٧٤﴾ؕ

74. और उन्होंने अल्लाह के सिवा बुतों को मा'बूद बना लिया है इस उम्मीद पर कि उनकी मदद की जाएगी।

لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَهُمْ ۙ وَهُمْ لَهُمْ جُنْدٌ مُّحْضَرُوْنَ ﴿٧٥﴾

75. वोह बुत उनकी मददकी क़ुदरत नहीं रखते और येह (कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन) उन (बुतों) के लश्कर होंगे जो (इकट्ठे दोज़ख़में) हाज़िर कर दिए जाएंगे।

فَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ اِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٧٦﴾

76. पस उनकी बातें आपको रंजीदा ख़ातिर न करें, बेशक हम जानते हैं जो कुछ वोह छुपाते हैं और जो कुछ वोह ज़ाहिर करते हैं।

وقف لازم

اَوَلَمْ يَرَ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧٧﴾

77. क्या इन्सानने येह नहीं देखा कि हमने उसे एक नुत्फ़े से पैदा किया, फिर भी वोह खुले तौर पर सख़्त झगड़ालू बन गया।

وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَّنَسِيَ خَلْقَهٗ ۭ قَالَ مَنْ يُّحْيِ الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيْمٌ ﴿٧٨﴾

78. और (खुद) हमारे लिए मिसालें बयान करने लगा और अपनी पैदाइश (की हक़ीक़त) को भूल गया। केहने लगा हड्डियों को कौन ज़िन्दा करेगा जबकि वोह बोसीदह हो चुकी होंगी।

قُلْ يُحْيِيْهَا الَّذِيْٓ اَنْشَاَهَآ اَوَّلَ مَرَّةٍ ۭ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيْمُۨ ﴿٧٩﴾

79. फ़रमा दीजिए : उन्हें वोही ज़िन्दा फ़रमाएगा जिसने उन्हें पेहली बार पैदा किया था और वोह हर मख़्लूक को खूब जाननेवाला है।

الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الشَّجَرِ الْاَخْضَرِ نَارًا فَاِذَآ اَنْتُمْ مِّنْهُ تُوْقِدُوْنَ ﴿٨٠﴾

80. जिसने तुम्हारे लिए सर सब्ज़ दरख़्तसे आग पैदा की फिर अब तुम उसीसे आग सुलगाते हो।

اَوَلَيْسَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓي اَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ ڲ بَلٰى ۤ وَهُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ﴿٨١﴾

81. और क्या वोह जिसने आस्मानों और ज़मीन को पैदा फ़रमाया है इस बात पर कादिर नहीं कि उन जैसी तख़्लीक़ (दोबारा) कर दे, क्यों नहीं, और वोह बड़ा पैदा करनेवाला खूब जाननेवाला है।

وقف غفران

اِنَّمَآ اَمْرُهٗٓ اِذَآ اَرَادَ شَيْـــًٔا اَنْ يَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٨٢﴾

82. उसका अम्रे (तख़्लीक) फ़कत येह है कि जब वोह किसी शयको (पैदा फ़रमाना) चाहता है तो उसे फ़रमाता है हो जा, पस वोह फ़ौरन (मौजूद या ज़ाहिर) हो जाती है। (और होती चली जाती है)।

فَسُبْحٰنَ الَّذِيْ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٨٣﴾

83. पस वोह ज़ात पाक है जिसके दस्ते (कुदरत) में हर चीज़की बादशाहत है और तुम उसीकी तरफ़ लौटाए जाओगे।

ع ٥ / ١٦

आयातुहा 182 | 37 सूरतुस सॉफ़्फ़ाति मक्किय्यतुन 56 | रुकूआ़तुहा 5

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ﴿١﴾

1. क़सम है क़तार दर क़तार सफ़ बस्ता जमाअ़तों की।

فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ﴿٢﴾

2. फिर बादलों को खींच कर ले जानेवाली या बुराइयों पर सख़्ती से झिड़कने वाली जमाअ़तों की।

فَالتّٰلِيٰتِ ذِكْرًا ﴿٣﴾

3. फिर ज़िक्रे इलाही (या क़ुरआन मजीद) की तिलावत करनेवाली जमाअ़तों की।

اِنَّ اِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ﴿٤﴾

4. बेशक तुम्हारा मा'बूद एक ही है।

رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ﴿٥﴾

5. (जो) आस्मानों और ज़मीन का और जो (मख़्लूक़) इन दोनोंके दरमियान है उसका रब है, और तुलूए आफ़्ताब के तमाम मुक़ामात का रब है।

اِنَّا زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِزِيْنَةِ الْكَوَاكِبِ ﴿٦﴾

6. बेशक हमने आस्माने दुनिया (या'नी पहले क़ुरए समावी) को सितारों और सय्यारों की ज़ीनत से आरास्ता कर दिया।

وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ مَّارِدٍ ﴿٧﴾

7. और (उन्हें) हर सरकश शैतानसे मह़फ़ूज़ बनाया।

لَا يَسَّمَّعُوْنَ اِلَى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى وَيُقْذَفُوْنَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ﴿٨﴾

8. वोह(शयातीन) आ़लमे बाला की तरफ़ कान नहीं लगा सक्ते। और उन पर हर तरफ़से (अंगारे) फेंके जाते हैं।

دُحُوْرًا وَّلَهُمْ عَذَابٌ وَّاصِبٌ ﴿٩﴾

9. उनको भगाने के लिए और उनके लिए दाइमी अ़ज़ाब है।

اِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ﴿١٠﴾

10. मगर जो (शैतान) एक बार झपट कर (फ़रिश्तों की कोई बात) उचक ले तो चमकता हुआ अंगारा उसके पीछे लग जाता है।

فَاسْتَفْتِهِمْ اَهُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمْ مَّنْ خَلَقْنَا ۭ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّنْ طِيْنٍ

11. इनसे पूछिए कि क्या येह लोग तख़्लीक़ किए जाने में ज़ियादह सख़्त (और मुश्किल) हैं या वोह चीज़ें जिन्हें हमने (आस्मानी काइनात में) तख़्लीक़ फ़रमाया है,

لَّازِبٍ ﴿١١﴾

बेशक हमने इन लोगों को चिपकनेवाले गारे से पैदा किया है।

بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُوْنَ ﴿١٢﴾

12. बल्कि आप तअ़ज्जुब फ़रमाते हैं और वोह मज़ाक़ उड़ाते हैं।

وَاِذَا ذُكِّرُوْا لَا يَذْكُرُوْنَ ﴿١٣﴾

13. और जब उन्हें नसीहत की जाती है तो नसीहत क़ुबूल नहीं करते।

وَاِذَا رَاَوْا اٰيَةً يَّسْتَسْخِرُوْنَ ﴿١٤﴾

14. और जब कोई निशानी देखते हैं तो तमस्खु़र करते हैं।

وَقَالُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٥﴾

15. और केहते है कि येह तो सिर्फ़ खुला जादू है।

ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿١٦﴾

16. क्या जब हम मर जाएंगे और हम मिट्टी और हड्डियां हो जाएंगे तो हम यक़ीनी तौर पर (दोबारा ज़िन्दा कर के) उठाए जाएंगे ?

اَوَاٰبَآؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ ﴿١٧﴾

17.और क्या हमारे अगले बापदादा भी (उठाए जाएंगे)?

قُلْ نَعَمْ وَاَنْتُمْ دَاخِرُوْنَ ﴿١٨﴾

18. फ़रमा दीजिए : हां और (बल्कि) तुम ज़लीलो रुस्वा (भी) होगे।

فَاِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ فَاِذَا هُمْ يَنْظُرُوْنَ ﴿١٩﴾

19. पस वोह तो महज़ एक (ज़ोरदार आवाज़की) सख़्त झिड़क होगी सो सब अचानक (उठ कर) देखने लग जाएंगे।

وَقَالُوْا يٰوَيْلَنَا هٰذَا يَوْمُ الدِّيْنِ ﴿٢٠﴾

20. और कहेंगे : हाए हमारी शामत, येह तो जज़ा का दिन है।

هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿٢١﴾

21. (कहा जाएगा : हां !) येह वोही फ़ैसले का दिन है जिसे तुम झुटलाया करते थे।

ع ١ ٢١ ٥

اُحْشُرُوا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا وَاَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ﴿٢٢﴾

22. उन (सब) लोगोंको जमा' करो जिन्होंने ज़ुल्म किया और उनके साथियों और पैरव कारों को (भी) और उन (मा'बूदाने बातिला) को (भी) जिन्हें वोह पूजा करते थे।

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَاهْدُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطِ الْجَحِيْمِ ﴿٢٣﴾

23. अल्लाह को छोड़ कर, फिर उन सबको दोज़ख़की राह पर ले चलो।

الربع

وَقِفُوْهُمْ اِنَّهُمْ مَّسْـُٔوْلُوْنَ ۙ﴿۲۴﴾

24. और उन्हें (सिरात के पास) रोको, उनसे पूछ गछ होगी।

مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُوْنَ ﴿۲۵﴾

25. (उनसे कहा जाएगा :) तुम्हें किया हुवा तुम एक दूसरे की मदद नहीं करते।

بَلْ هُمُ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُوْنَ ﴿۲۶﴾

26. (वोह मदद क्या करेंगे) बल्कि आज तो वोह खुद गरदनें झुकाए खड़े होंगे।

وَ اَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿۲۷﴾

27. और वोह एक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जे हो कर बाहम सवाल करेंगे।

قَالُوْٓا اِنَّكُمْ كُنْتُمْ تَاْتُوْنَنَا عَنِ الْيَمِيْنِ ﴿۲۸﴾

28. वोह कहेंगे : बेशक तुम ही तो हमारे पास दाऐं तरफ़से (या'नी अपने हक़पर होनेकी क़स्में खाते हुए) आया करते थे।

قَالُوْا بَلْ لَّمْ تَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۚ﴿۲۹﴾

29. (उन्हें गुमराह करनेवाले पेशवा) कहेंगे : बल्कि तुम खुद ही ईमान लानेवाले न थे।

وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ ۚ بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا طٰغِيْنَ ﴿۳۰﴾

30. और हमारा तुम पर कुछ ज़ोर (ओर दबाव) न था बल्कि तुम खुद सरकश लोग थे।

فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّنَآ ۖ اِنَّا لَذَآئِقُوْنَ ﴿۳۱﴾

31. पस हम पर हमारे रबका फ़रमान साबित हो गया। (अब) हम ज़ाइक़ए (अज़ाब) चखनेवाले हैं।

فَاَغْوَيْنٰكُمْ اِنَّا كُنَّا غٰوِيْنَ ﴿۳۲﴾

32. सो हमने तुम्हें गुमराह कर दिया बेशक हम खुद गुमराह थे।

فَاِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ ﴿۳۳﴾

33. पस उस दिन अज़ाबमें वोह (सब) बाहम शरीक होंगे।

اِنَّا كَذٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ ﴿۳۴﴾

34. बेशक हम मुजरिमोंके साथ ऐसा ही किया करते हैं।

اِنَّهُمْ كَانُوْٓا اِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ۙ يَسْتَكْبِرُوْنَ ۙ﴿۳۵﴾

35. यक़ीनन वोह ऐसे लोग थे कि जब उनसे कहा जाता कि अल्लाह के सिवा कोई लाइक़े इबादत नहीं तो वोह तकब्बुर करते थे।

وَيَقُولُونَ أَئِنَّا لَتَارِكُوا آلِهَتِنَا لِشَاعِرٍ مَّجْنُونٍ ﴿٣٦﴾

36. और केहते थे किया हम एक दीवाने शाइर की ख़ातिर अपने मा'बूदों को छोड़नेवाले हैं ?।

بَلْ جَاءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٣٧﴾

37. (वोह न मजूनन है न शाइर) बल्कि वोह (दीने) हक़ ले कर आए हैं और उन्होंने (अल्लाहके) पयगम्बरोंकी तस्दीक़ की है।

إِنَّكُمْ لَذَائِقُو الْعَذَابِ الْأَلِيمِ ﴿٣٨﴾

38. बेशक तुम दर्दनाक अज़ाब का मज़ा चखनेवाले हो।

وَمَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٣٩﴾

39. और तुम्हें (कोई) बदला नहीं दिया जाएगा मगर सिर्फ़ उसीका जो तुम किया करते थे।

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿٤٠﴾

40. (हां) मगर अल्लाह के वोह (बर्गुज़ीदा-व-मुन्तख़ब) बन्दे जिन्हें (नफ़्स और नफ़्सानिय्यत से) रिहाई मिल चुकी है।

أُولَٰئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَّعْلُومٌ ﴿٤١﴾

41. येही वोह लोग हैं जिन के लिए (सुब्हो शाम) रिज़्क़े ख़ास मुक़र्रर है।

فَوَاكِهُ ۖ وَهُم مُّكْرَمُونَ ﴿٤٢﴾

42. (हर क़िस्म के) मेवे होंगे और उनकी ता'ज़ीमो तकरीम होगी।

فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿٤٣﴾

43. ने'मतों और राहतोंके बाग़ात में (मुक़ीम होंगे)।

عَلَىٰ سُرُرٍ مُّتَقَابِلِينَ ﴿٤٤﴾

44. तख़्तों पर मस्नद लगाए आमने सामने (जलवा अफ़रोज़ होंगे)।

يُطَافُ عَلَيْهِم بِكَأْسٍ مِّن مَّعِينٍ ﴿٤٥﴾

45. उन पर छलकती हुई शराबे (तहूर) के जाम का दौर चल रहा होगा।

بَيْضَاءَ لَذَّةٍ لِّلشَّارِبِينَ ﴿٤٦﴾

46. जो निहायत सफ़ेद होगी, पीनेवालों केलिए सरासर लिज़्ज़त होगी।

لَا فِيهَا غَوْلٌ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنزَفُونَ ﴿٤٧﴾

47. ना उसमें कोई ज़रर या सर का चकराना होगा और न वोह उस (के पीने) से बहेक सकेंगे।

وَعِندَهُمْ قَاصِرَاتُ الطَّرْفِ عِينٌ ﴿٤٨﴾

48. और उनके पहलू में निगाहें नीची रखनेवाली, बड़ी खूबसूरत आँखोंवाली (हूरें बैठी) होंगी।

كَأَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُونٌ ٤٩

49. (वोह सफ़ेदो दिलकश रंगतमें ऐसे लगेंगी) गोया गर्दो गुबार से महफ़ूज अंडे (रखे) हों।

فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ٥٠

50. फिर वोह (जन्नती) आपस में मुतवज्जे हो कर एक दूसरे से (हालो अहवाल) दरयाफ़्त करेंगे।

قَالَ قَائِلٌ مِّنْهُمْ إِنِّي كَانَ لِي قَرِينٌ ٥١

51. उनमें से एक केहनेवाला (दूसरे से) कहेगा कि मेरा एक मिलनेवाला था (जो आख़िरत का मुन्किर था)।

يَقُولُ أَئِنَّكَ لَمِنَ الْمُصَدِّقِينَ ٥٢

52. वोह (मुझे) केहता था क्या तुम भी (इन बातोंका) यक़ीन और तस्दीक़ करनेवालों में से हो।

أَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا أَإِنَّا لَمَدِينُونَ ٥٣

53. क्या जब हम मर जाएंगे और हम मिट्टी और हड्डियां हो जाएंगे तो क्या हमें (उस हालमें) बदला दिया जाएगा।

قَالَ هَلْ أَنتُم مُّطَّلِعُونَ ٥٤

54. फिर वोह (जन्नती) कहेगा : क्या तुम (उसे) झांक कर देखोगे (कि वोह किस हालमें है)।

فَاطَّلَعَ فَرَآهُ فِي سَوَاءِ الْجَحِيمِ ٥٥

55. फिर वोह झांकेगा तो उसे दोज़ख़ के(बिल्कुल) वस्त में पाएगा।

قَالَ تَاللَّهِ إِن كِدتَّ لَتُرْدِينِ ٥٦

56. (उससे) कहेगा : ख़ुदाकी क़सम तू इसके क़रीब था के मुझे भी हलाक कर डाले।

وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّي لَكُنتُ مِنَ الْمُحْضَرِينَ ٥٧

57. और अगर मेरे रबका एहसान न होता तो मैं (भी तुम्हारे साथ अज़ाब में) हाज़िर किए जानेवालों में शामिल हो जाता।

أَفَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِينَ ٥٨

58. सो (जन्नती ख़ुशीसे पूछेंगे :) क्या अब हम मरेंगे तो नहीं।

إِلَّا مَوْتَتَنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ٥٩

59. अपनी पहली मौत के सिवा (जिससे गुज़र कर हम यहां आ चुके) और न हम पर कभी अज़ाब किया जाएगा?

إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ٦٠

60. बेशक येही तो अज़ीम कामयाबी है।

61. ऐसी (कामयाबी) के लिए अ़मल करनेवालों को अ़मल करना चाहिए।

لِمِثْلِ هٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعٰمِلُوْنَ ٦١

62. भला येह (ख़ुल्द की) मेहमानी बेहतर है या ज़क़्क़ूम का दरख़्त।

اَذٰلِكَ خَيْرٌ نُّزُلًا اَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّوْمِ ٦٢

63. बेशक हमने उस (दरख़्त) को ज़ालिमों के लिए अ़ज़ाब बनाया है।

اِنَّا جَعَلْنٰهَا فِتْنَةً لِّلظّٰلِمِيْنَ ٦٣

64. बेशक येह एक दरख़्त है जो दोज़ख़ के सब से निचले हिस्से से निकलता है।

اِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِيْٓ اَصْلِ الْجَحِيْمِ ٦٤

65. उसके ख़ूशे ऐसे हैं गोया (बद नुमा) शैतानों के सर हों।

طَلْعُهَا كَاَنَّهٗ رُءُوْسُ الشَّيٰطِيْنِ ٦٥

66. पस वोह (दोज़ख़ी) उसीमें से खानेवाले हैं और उसीसे पेट भरनेवाले हैं।

فَاِنَّهُمْ لَاٰكِلُوْنَ مِنْهَا فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ٦٦

67. फिर यक़ीनन उन के लिए उस (खाने) पर (पीप का) मिला हुआ निहायत गरम पानी होगा (जो अंतड़ियों को काट देगा)।

ثُمَّ اِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِّنْ حَمِيْمٍ ٦٧

68. (खाने के बाद) फिर यक़ीनन उनका दोज़ख़ ही तरफ़ (दोबारा) पलटना होगा।

ثُمَّ اِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَاِلَى الْجَحِيْمِ ٦٨

69. बेशक उन्होंने अपने बापदादा को गुमराह पाया।

اِنَّهُمْ اَلْفَوْا اٰبَآءَهُمْ ضَآلِّيْنَ ٦٩

70. सो वोह उन्ही के नक़्शे क़दम पर दौड़ाए जा रहे हैं।

فَهُمْ عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ يُهْرَعُوْنَ ٧٠

71. और दर हक़ीक़त उनसे क़ब्ल पहले लोगों में (भी) अक्सर गुमराह हो गए थे।

وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ اَكْثَرُ الْاَوَّلِيْنَ ٧١

72. और यक़ीनन हमने उनमें भी डर सुनानेवाले भेजे।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا فِيْهِمْ مُّنْذِرِيْنَ ٧٢

73. सो आप देखिए कि उन लोगोंका अंजाम कैसा हुआ जो डराए गए थे।

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ٧٣

74. सिवाए अल्लाहके चुनीदह-व-बर गुज़ीदह बन्दों के।

اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ٧٤

وَ لَقَدْ نَادٰىنَا نُوْحٌ فَلَنِعْمَ الْمُجِيْبُوْنَ ﴿٧٥﴾

75. और बेशक हमें नूह (عليه السلام) ने पुकारा तो हम कितने अच्छे फ़रियाद रस हैं।

وَ نَجَّيْنٰهُ وَ اَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿٧٦﴾

76. और हमने उन्हें और उनके घरवालों को सख़्त तक्लीफ़ से बचा लिया।

وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهٗ هُمُ الْبٰقِيْنَ ﴿٧٧﴾

77. और हमने फ़क़त उनही की नस्लको बाक़ी रेहनेवाला बनाया।

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿٧٨﴾

78. और पीछे आने वालों (या'नी अंबियाओ उ-मम) में हमने उनका जिक्रे ख़ैर बाक़ी रखा।

سَلٰمٌ عَلٰى نُوْحٍ فِي الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٩﴾

79. सलाम हो नूह पर सब जहानों में।

اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٨٠﴾

80. बेशक हम नेकूकारों को इस तरह् बदला दिया करते हैं।

اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨١﴾

81. बेशक वोह हमारे (कामिल) ईमानवाले बंदों में से थे।

ثُمَّ اَغْرَقْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿٨٢﴾

82. फिर हमने दूसरोंको ग़र्क़ कर दिया।

وَاِنَّ مِنْ شِيْعَتِهٖ لَاِبْرٰهِيْمَ ﴿٨٣﴾

وقف لازم

83. बेशक उनके गिरोह में से इब्राहीम (عليه السلام) (भी) थे।

اِذْ جَآءَ رَبَّهٗ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ﴿٨٤﴾

84. जब वोह अपने रबकी बारगाह में क़ल्बे सलीम के साथ हाज़िर हूए।

اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَ قَوْمِهٖ مَاذَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٨٥﴾

85. जब कि उन्होंने अपने बाप (जो हक़ीक़त में चचा था आप ब-वजहे परवरिश उसे बाप केहते थे) और अपनी क़ौमसे कहा : तुम किन चीज़ों की परस्तिश करते हो।

اَئِفْكًا اٰلِهَةً دُوْنَ اللّٰهِ تُرِيْدُوْنَ ﴿٨٦﴾

86. क्या तुम बोहतान बांध कर अल्लाह के सिवा (झूटे) मा'बूदों का इरादाह करते हो।

فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٧﴾

87. भला तमाम जहानों के रब के बारेमें तुम्हारा क्या ख़याल है।

فَنَظَرَ نَظْرَةً فِي النُّجُوْمِ ﴿٨٨﴾

88. फिर (इब्राहीम عليه السلام ने उन्हें वहम में डालने के लिए) एक नज़र सितारों की तरफ़ की।

فَقَالَ اِنِّىْ سَقِيْمٌ ﴿۸۹﴾

89. और कहा मेरी तबीअ़त मुज़महिल है (तुम्हारे साथ मेले पर नहीं जा सक्ता)।

فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِيْنَ ﴿۹۰﴾

90. सो वोह उनसे पीठ फ़ेर कर लौट गए।

فَرَاغَ اِلٰٓى اٰلِهَتِهِمْ فَقَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ ﴿۹۱﴾

91. फिर (इब्राहीम عليه السلام) उनके मा'बूदों (या'नी बुतों) के पास ख़ामोशी से गए और उन से कहा : क्या तुम खाते नहीं हो।

مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُوْنَ ﴿۹۲﴾

92. तुम्हें क्या है के तुम बोलते नहीं हो।

فَرَاغَ عَلَيْهِمْ ضَرْبًا بِالْيَمِيْنِ ﴿۹۳﴾

93. फिर (इब्राहीम عليه السلام) पूरी क़ुव्वत के साथ उन्हें मारने (और तोड़ने) लगे।

فَاَقْبَلُوْٓا اِلَيْهِ يَزِفُّوْنَ ﴿۹۴﴾

94. फिर लोग (मेले से वापसी पर) दौड़ते हुए उनकी तरफ़ आए।

قَالَ اَتَعْبُدُوْنَ مَا تَنْحِتُوْنَ ﴿۹۵﴾

95. इब्राहीम (عليه السلام) ने (उनसे) कहा : क्या तुम इन (ही बेजान पथ्थरों) को पूजते हो जिन्हें ख़ुद तराशते हो।

وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۹۶﴾

96. हालांकि अल्लाहने तुम्हें और तुम्हारे (सारे) कामों को ख़ल्क़ फ़रमाया है।

قَالُوا ابْنُوْا لَهٗ بُنْيَانًا فَاَلْقُوْهُ فِى الْجَحِيْمِ ﴿۹۷﴾

97. वोह केहने लगे : उनके (जलाने के) लिए एक इमारत बनाओ फिर उनको (उसके अंदर) सख़्त भड़कती आग में डाल दो।

فَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَسْفَلِيْنَ ﴿۹۸﴾

98. ग़रज़ उन्होंने इब्राहीम (عليه السلام) के साथ एक चाल चलना चाही सो हमने उन्हींको नीचा दिखा दिया (नतीजतन आग गुलज़ार बन गई)।

وَقَالَ اِنِّىْ ذَاهِبٌ اِلٰى رَبِّىْ سَيَهْدِيْنِ ﴿۹۹﴾

99. फिर इब्राहीम (عليه السلام) ने कहा : मैं (हिजरत कर के) अपने रबकी तरफ़ जानेवाला हूं वोह मुझे ज़रूर रास्ता दिखाएगा (वोह मुल्के शाम की तरफ़ हिजरत फ़रमा गए)

رَبِّ هَبْ لِىْ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۱۰۰﴾

100. (फिर अर्ज़े मुक़द्दस में पहुंच कर दुआ़ की) ऐ मेरे रब! सालेहीन में से मुझे एक (फ़रज़न्द) अ़ता फ़रमा।

فَبَشَّرْنٰهُ بِغُلٰمٍ حَلِيْمٍ ﴿١٠١﴾

101. पस हमने उन्हें बड़े बुर्दबार बेटे (ईस्माइल عليه السلام) की बिशारत दी।

فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يٰبُنَيَّ اِنِّيْٓ اَرٰى فِي الْمَنَامِ اَنِّيْٓ اَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرٰى ؕ قَالَ يٰٓاَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ ؗ سَتَجِدُنِيْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٠٢﴾

102. फिर जब वोह (ईस्माइल عليه السلام) उनके साथ दौड़ कर चल सकने (की उम्र) को पहुंच गया तो (इब्राहीम عليه السلام ने) फ़रमाया : ऐ मेरे बेटे ! मैं ख़्वाबमें देखता हूं कि मैं तुझे ज़ब्ह कर रहा हूं सो ग़ौर करो के तुम्हारी क्या राए है। (इस्माईल عليه السلام ने) कहा अब्बाजान ! वोह काम (फ़ौरन) कर डालिए जिसका आपको हुक्म दिया जा रहा है। अगर अल्लाह ने चाहा तो आप मुझे सब्र करने वालों में से पाएंगे।

فَلَمَّآ اَسْلَمَا وَتَلَّهٗ لِلْجَبِيْنِ ۚ ﴿١٠٣﴾

103. फिर जब दोनों (रज़ाए इलाही के सामने) झुक गए (या'नी दोनोंने मौला के हुक्मको तस्लीम कर लिया) और इब्राहीम(عليه السلام) ने उसे पेशानी के बल लिटा दिया (अगला मन्ज़र बयान नहीं फ़रमाया)।

وَنَادَيْنٰهُ اَنْ يّٰٓاِبْرٰهِيْمُ ۙ ﴿١٠٤﴾

104. और हमने उसे निदा दी के ए इब्राहीम !।

قَدْ صَدَّقْتَ الرُّءْيَا ۚ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٠٥﴾

105. वाक़ई तुमने अपना ख़्वाब (क्या खूब) सच्चा कर दिखाया। बेशक हम मोहसिनों को ऐसा ही सिला दिया करते हैं (सो तुम्हें मुकामे खुल्लत से नवाज़ दिया गया है)।

اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْبَلٰٓؤُا الْمُبِيْنُ ﴿١٠٦﴾

106. बेशक येह बहुत बड़ी खुली आज़माइश थी।

وَفَدَيْنٰهُ بِذِبْحٍ عَظِيْمٍ ﴿١٠٧﴾

107. और हमने एक बहुत बड़ी कुरबानीके साथ उसका फ़िदया कर दिया।

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ۖ ﴿١٠٨﴾

108. और हमने पीछे आनेवालों में इसका ज़िक्रे ख़ैर बर क़रार रखा।

سَلٰمٌ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ ﴿١٠٩﴾

109. सलाम हो इब्राहीम पर।

كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١١٠﴾

110. हम इसी तरह मोहसिनों को सिला दिया करते हैं।

اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١١١﴾

111. बेशक वोह हमारे (कामिल) ईमानवाले बंदों में से थे।

وَبَشَّرْنٰهُ بِاِسْحٰقَ نَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۱۱۲﴾

112. और हमने (इस्माईल عليه السلام के बाद) उन्हें इस्हाक (عليه السلام) की बिशारत दी (वोह भी) सालेहीन में से नबी थे।

وَبٰرَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اِسْحٰقَ ؕ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ وَّظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ مُبِيْنٌ ﴿۱۱۳﴾

113. और हमने उन पर और इस्हाक (عليه السلام) पर बरकतें नाज़िल फ़रमाई और उन दोनों की नस्ल में नेकूकार भी हैं और अपनी जान पर खुले ज़ुल्म शिआ़र भी।

وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿۱۱۴﴾

114. और बेशक हमने मूसा और हारून (عليهما السلام) पर भी एह्सान किए।

وَنَجَّيْنٰهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿۱۱۵﴾

115. और हमने खुद उन दोनों को और दोनों की क़ौमको सख़्त तक्लीफ़ से नजात बख़्शी।

وَنَصَرْنٰهُمْ فَكَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿۱۱۶﴾

116. और हमने उनकी मदद फ़रमाई तो वोही ग़ालिब हो गए।

وَاٰتَيْنٰهُمَا الْكِتٰبَ الْمُسْتَبِيْنَ ﴿۱۱۷﴾

117. और हमने उन दोनों को वाज़ेह और बय्यन किताब (तौरात) अ़ता फ़रमाई।

وَهَدَيْنٰهُمَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿۱۱۸﴾

118. और हमने उन दोनों को सीधी राह पर चलाया।

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِى الْاٰخِرِيْنَ ﴿۱۱۹﴾

119. और हमने उन दोनों को हक़्क़ में (भी) पीछे आने वालों में ज़िक्रे ख़ैर बाकी रखा।

سَلٰمٌ عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿۱۲۰﴾

120. सलाम हो मूसा और हारून पर।

اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۲۱﴾

121. बेशक हम नेकूकारों को उसी तरह सिला दिया करते हैं।

اِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۲۲﴾

122. बेशक वोह दोनों हमारे (कामिल) ईमानवाले बन्दों में से थे।

وَاِنَّ اِلْيَاسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۱۲۳﴾

123. और यक़ीनन इल्यास (عليه السلام भी) रसूलों में से थे।

اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿۱۲۴﴾

124. जब उन्होंने अपनी क़ौमसे कहा : क्या तुम (अल्लाह से) नहीं डरते हो।

اَتَدْعُوْنَ بَعْلًا وَّتَذَرُوْنَ اَحْسَنَ الْخَالِقِيْنَ ﴿١٢٥﴾

125. क्या तुम बअ़्ल (नामी बुत) को पूजते हो और सबसे बेहतर ख़ालिक़ को छोड देते हो।

اللّٰهَ رَبَّكُمْ وَرَبَّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٢٦﴾

126. (यानी) अल्लाह जो तुम्हारा (भी) रब है और तुम्हारे अगले बापदादों का (भी) रब है।

فَكَذَّبُوْهُ فَاِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ﴿١٢٧﴾

127. तो उन लोगोंने (या'नी क़ौमे बअ़्लबक ने) इल्यास (عليه السلام) को झुटलाया पस वोह (भी अ़ज़ाबे जहन्नम में) हाज़िर कर दिऐ जाएंगे।

اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿١٢٨﴾

128. सिवाए अल्लाहके चुने हुए बन्दों के।

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٢٩﴾

129. और हमने उनका ज़िक्रे ख़ैर (भी) पीछे आनेवालों में बरक़रार रखा।

سَلٰمٌ عَلٰٓى اِلْ يَاسِيْنَ ﴿١٣٠﴾

130. सलाम हो इल्यास पर।

اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٣١﴾

131. बेशक हम नेकूकारों को इसी तरह सिला दिया करते हैं।

اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٢﴾

132. बेशक वोह हमारे (कामिल) ईमानवाले बंदों में से थे।

وَاِنَّ لُوْطًا لَّمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٣٣﴾

133. और बेशक लूत (عليه السلام भी) रसूलों में से थे।

اِذْ نَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗٓ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٣٤﴾

134. जब हमने उनको और उनके सब घरवालों को नजात बख़्शी।

اِلَّا عَجُوْزًا فِي الْغٰبِرِيْنَ ﴿١٣٥﴾

135. सिवाए उस बुढ़ियाको जो पीछे रेह जानेवालों में थी।

ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿١٣٦﴾

136. फिर हमने दूसरों को हलाक कर डाला।

وَاِنَّكُمْ لَتَمُرُّوْنَ عَلَيْهِمْ مُّصْبِحِيْنَ ﴿١٣٧﴾

137. और बेशक तुम लोग उन (की उजड़ी बस्तियों) पर (मक्का से मुल्के शाम की तरफ़ जाते हुऐ) सुब्ह के वक़्त भी गुज़रते हो।

وَبِالَّيْلِ ۗ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٣٨﴾

138. और रात को भी, क्या फिर भी तुम अ़क़्ल नहीं रखते।

وَاِنَّ يُوْنُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٣٩﴾

139. और यूनुस (عليه السلام भी) वाक़ई रसूलों में से थे।

اِذْ اَبَقَ اِلَى الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿١٤٠﴾

140. जब वोह भरी हुई कश्ती की तरफ़ दौड़े।

فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِيْنَ ﴿١٤١﴾

141. फिर (कश्ती भंवर में फंस गई तो) उन्होंने क़ुर्आ डाला तो वोह (क़ुर्आ में) मग़लूब हो गए (या'नी उनका नाम निकल आया और कश्तीवालोंने उन्हें दरिया में फेंक दिया)।

فَالْتَقَمَهُ الْحُوْتُ وَهُوَ مُلِيْمٌ ﴿١٤٢﴾

142. फिर मछली ने उनको निगल लिया और वोह (अपने आप पर) नादिम रेहनेवाले थे।

فَلَوْلَآ اَنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِيْنَ ﴿١٤٣﴾

143. फिर अगर वोह (अल्लाह की) तस्बीह़ करनेवालों में से न होते।

لَلَبِثَ فِيْ بَطْنِهٖٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿١٤٤﴾

النصف

144. तो उस (मछली) के पेट में उस दिन तक रेहते जब लोग (क़ब्रो से) उठाऐ जाएंगे।

فَنَبَذْنٰهُ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ سَقِيْمٌ ﴿١٤٥﴾

145. फिर हमने उन्हें (साहिले दरिया पर) खुले मेदान में डाल दिया ह़ालांकि वोह बीमार थे।

وَاَنْۢبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّنْ يَّقْطِيْنٍ ﴿١٤٦﴾

146. और हमने उन पर (कद्दू का) बेलदार दरख़्त उगा दिया।

وَاَرْسَلْنٰهُ اِلٰى مِائَةِ اَلْفٍ اَوْ يَزِيْدُوْنَ ﴿١٤٧﴾

147. और हमने उन्हें (अर्ज़े मूसल में क़ौमे नैनवा के) एक लाख या उससे ज़ियादह अफराद की तरफ़ भेजा था।

فَاٰمَنُوْا فَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ﴿١٤٨﴾

148. सो (आसारे अ़ज़ाब को देख कर) वोह लोग ईमान लाए तो हमने उन्हें एक वक़्त तक फायदाह पहुंचा।

فَاسْتَفْتِهِمْ اَلِرَبِّكَ الْبَنَاتُ وَلَهُمُ الْبَنُوْنَ ﴿١٤٩﴾

149. पस आप इन (कुफ़्फ़ारे मक्का) से पूछिए क्या आपके रबके लिए बेटियां हैं और उन के लिए बेटे हैं।

اَمْ خَلَقْنَا الْمَلٰٓئِكَةَ اِنَاثًا وَّهُمْ شٰهِدُوْنَ ﴿١٥٠﴾

150. क्या हमने फ़रिश्तों को औ़रतें बना कर पैदा किया तो वोह उस वक़्त (मौक़े' पर) हाज़िर थे।

أَلَآ إِنَّهُم مِّنْ إِفْكِهِمْ لَيَقُولُونَ ﴿١٥١﴾

151. सुन लो ! वोह लोग यक़ीनन अपनी बोहतान तराशी से (येह) बात करते हैं।

وَلَدَ اللّٰهُ وَإِنَّهُمْ لَكٰذِبُونَ ﴿١٥٢﴾

152. कि अल्लाह ने औलाद जनी और बेशक येह लोग झूटे हैं।

أَصْطَفَى الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِينَ ﴿١٥٣﴾

153. क्या उनके बेटोंके मुकाबले में बेटियों को पसंद फ़रमाया है (कुफ़्फ़ारे मक्का की ज़ेहनियत की ज़बान में उनही के अक़ीदे का रद किया जा रहा है)।

مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ﴿١٥٤﴾

154. तुम्हें क्या हुआ है ? तुम कैसा इन्साफ़ करते हो।

أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿١٥٥﴾

155. क्या तुम ग़ौर नहीं करते।

أَمْ لَكُمْ سُلْطٰنٌ مُّبِينٌ ﴿١٥٦﴾

156. क्या तुम्हारे पास (अपने फिक्रो नज़रिये पर) कोई वाज़ेह़ दलील है ?

فَأْتُوا بِكِتٰبِكُمْ إِن كُنتُمْ صٰدِقِينَ ﴿١٥٧﴾

157. तुम अपनी किताब पेश करो अगर तुम सच्चे हो।

وَجَعَلُوا بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجِنَّةِ نَسَبًا وَلَقَدْ عَلِمَتِ الْجِنَّةُ إِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ ﴿١٥٨﴾

158. और उन्होंने (तो) अल्लाह और जिन्नात के दरमियान (भी) नसबी रिश्ता मुक़र्रर कर रखा है। हालांकि जिन्नात को मा'लूम है कि वोह (भी अल्लाह के हुज़ूर) यक़ीनन पेश किए जाएंगे।

سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿١٥٩﴾

159. अल्लाह उन बातों से पाक है जो येह बयान करते हैं।

إِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿١٦٠﴾

160. मगर अल्लाहके चुनीदह-व-बरगुज़ीदह बन्दे (इन बातों से मुस्तस्ना हैं)।

فَإِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ ﴿١٦١﴾

161. पस तुम और जिन (बुतों) की तुम परस्तिश करते हो।

مَا أَنتُمْ عَلَيْهِ بِفٰتِنِينَ ﴿١٦٢﴾

162. तुम सब अल्लाह के ख़िलाफ़ किसी को गुमराह नहीं कर सक्ते।

إِلَّا مَنْ هُوَ صَالِ الْجَحِيمِ ﴿١٦٣﴾

163. सिवाए उस शख़्स के जो दोज़ख़में जा गिरनेवाला है।

وَمَا مِنَّا إِلَّا لَهُ مَقَامٌ مَّعْلُومٌ ﴿١٦٤﴾

164. और (फ़रिश्ते केहते हैं) हम में से भी हर एकका मुक़ाम मुक़र्रर है।

وَّاِنَّا لَنَحْنُ الصَّآفُّوْنَ ﴿١٦٥﴾

165. और यक़ीनन हम तो खुद सफ़ बस्ता रेहनेवाले हैं।

وَاِنَّا لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُوْنَ ﴿١٦٦﴾

166. और यक़ीनन हम तो खुद (अल्लाह की) तस्बीह़ करनेवाले हैं।

وَاِنْ كَانُوْا لَيَقُوْلُوْنَ ﴿١٦٧﴾

167. और येह लोग यक़ीनन कहा करते थे।

لَوْ اَنَّ عِنْدَنَا ذِكْرًا مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٦٨﴾

168. कि अगर हमारे पास (भी) पहले लोगों की कोई (किताबे) नसीह़त होती।

لَكُنَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿١٦٩﴾

169. तो हम (भी) ज़रूर अल्लाह के बरगुज़ीदह बन्दे होते।

فَكَفَرُوْا بِهٖ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٧٠﴾

170. फिर (अब) वोह उस (कुरआन) के मुन्किर हो गऐ सो वोह अ़नक़रीब (अपना अंजाम) जान लेंगे।

وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٧١﴾

171. और बेशक हमारा फ़रमान हमारे भेजे हुए बन्दों (या'नी रसूलों) के हक़ में पहले सादिर हो चुका है।

اِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُوْرُوْنَ ﴿١٧٢﴾

172. कि बेशक वोही मदद याफ़्ता लोग हैं।

وَاِنَّ جُنْدَنَا لَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿١٧٣﴾

173. और बेशक हमारा लश्कर ही ग़ालिब होनेवाला है।

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿١٧٤﴾

174. पस एक वक़्त तक आप उनसे तवज्जोह हटा लीजिए।

وَّاَبْصِرْهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ ﴿١٧٥﴾

175. और उन्हें (बराबर) देखते रहिए सो वोह अ़नक़रीब (अपना अंजाम) देख लेंगे।

اَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿١٧٦﴾

176. और क्या येह हमारे अ़ज़ाबमें जल्दी के ख़्वाहिशमंद हैं।

فَاِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَآءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿١٧٧﴾

177. फिर जब वोह (अ़ज़ाब) उनके सामने उतरेगा तो उनकी सुब्ह़ क्या ही बुरी होगी जिन्हें डराया गया था।

وَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿١٧٨﴾

178. पस आप उनसे थोड़ी मुद्दत तक तवज्जोह हटाए रखिए।

وَّاَبْصِرْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ ﴿١٧٩﴾

179. और उन्हें (बराबर) देखते रहिऐ, सो वोह अ़नक़रीब (अपना अंजाम) देख लेंगे।

سُبۡحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الۡعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوۡنَ ۚ﴿۱۸۰﴾

180. आपका रब, जो इ़ज़्ज़त का मालिक है उन (बातों) से पाक है जो वोह बयान करते हैं।

وَسَلٰمٌ عَلَى الۡمُرۡسَلِيۡنَ ۚ﴿۱۸۱﴾

181. और (तमाम) रसूलों पर सलाम हो।

وَالۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿۱۸۲﴾

182. और सब ता'रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जो तमाम जहानों का रब है।

आयातुहा 88 | 38 सूरतुस सॉद मक्किय्यतुन 38 | रुकूआ़तुहा 5

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

صٓ وَالۡقُرۡاٰنِ ذِى الذِّكۡرِ ؕ﴿۱﴾

1. सॉद (ह़क़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं) जिक्रवाले क़ुरआन की क़सम।

بَلِ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا فِىۡ عِزَّةٍ وَّ شِقَاقٍ ﴿۲﴾

2. बल्कि काफ़िर लोग (ना ह़क़) ह़मिय्यतो तकब्बुर में और (हमारे नबी ﷺ की) मुखालिफ़तो अ़दावत में (मुब्तिला) हैं।

كَمۡ اَهۡلَكۡنَا مِنۡ قَبۡلِهِمۡ مِّنۡ قَرۡنٍ فَنَادَوۡا وَّلَاتَ حِيۡنَ مَنَاصٍ ﴿۳﴾

3. हमने कितनी ही उम्मतों को उनसे पहले हलाक कर दिया तो वोह (अ़ज़ाब को देख कर) पुकारने लगे ह़ालांकि अब खुलासी (और रिहाई) का वक़्त नहीं रहा था।

وَ عَجِبُوۡۤا اَنۡ جَآءَهُمۡ مُّنۡذِرٌ مِّنۡهُمۡ وَ قَالَ الۡكٰفِرُوۡنَ هٰذَا سٰحِرٌ كَذَّابٌ ۚ﴿۴﴾

4. और उन्होंने इस बात पर तअ़ज्जुब किया कि उनके पास उन्ही में से एक डर सुनानेवाला आ गया है। और कुफ़्फ़ार केहने लगे : येह जादूगर है, बहुत झूटा है।

اَجَعَلَ الۡاٰلِهَةَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚۖ اِنَّ هٰذَا لَشَىۡءٌ عُجَابٌ ﴿۵﴾

5. क्या उसने सब मा'बूदों को एक ही मा'बूद बना रखा है बेशक येह तो बड़ी ही अ़जीब बात है।

وَانۡطَلَقَ الۡمَلَاُ مِنۡهُمۡ اَنِ امۡشُوۡا وَاصۡبِرُوۡا عَلٰۤى اٰلِهَتِكُمۡ ۚۖ اِنَّ هٰذَا

6. और उनके सरदार (अबू तालिब के घर में नबिय्ये अकरम ﷺ की मजलिस से उठ कर) चल खड़े हुए

لَشَیْءٌ یُّرَادُ ۟ۚۖ ﴿٦﴾

(बाकी लोगों से) येह केहते हुए कि तुम भी चल पड़ो, और अपने मा'बूदों (की परस्तिश) पर साबित क़दम रहो येह ज़रूर ऐसी बात है जिस में कोई ग़रज़ (और मुराद) है।

مَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِی الْمِلَّةِ الْاٰخِرَةِ ۚۖ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا اخْتِلَاقٌ ۟ۚۖ ﴿٧﴾

7. हमने उस (अक़ीदए तौहीद) को आख़िरी मिल्लते (नसरानी या मज़हबे कुरैश) में भी नहीं सुना, येह सिर्फ़ खुद साख़्ता झूट है।

ءَاُنْزِلَ عَلَیْهِ الذِّكْرُ مِنْۢ بَیْنِنَا ؕ بَلْ هُمْ فِیْ شَكٍّ مِّنْ ذِكْرِیْ ۚ بَلْ لَّمَّا یَذُوْقُوْا عَذَابِ ؕ ﴿٨﴾

8. क्या हम सब में से उसी पर येह जिक्र (या'नी कुरआन) उतारा गया है, बल्कि वोह मेरे ज़िक्र की निस्बत शक में (गिरफ़्तार) हैं, बल्कि उन्होंने अभी मेरे अज़ाबका मज़ा नहीं चखा।

اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَآىِٕنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ الْعَزِیْزِ الْوَهَّابِ ۚ ﴿٩﴾

9. क्या उनके पास आपके रबकी रहमत के ख़ज़ाने हैं जो ग़ालिब है बहुत अ़ता फ़रमानेवाला है।

اَمْ لَهُمْ مُّلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ مَا بَیْنَهُمَا ۫ فَلْیَرْتَقُوْا فِی الْاَسْبَابِ ﴿١٠﴾

10. या उनके पास आस्मानों और ज़मीन की और जो कुछ इन दोनों के दरमियान है उसकी बादशाहत है, (अगर है) तो उन्हें चाहिए के रसिय्यां बांध कर (आस्मान पर) चढ़ जाएं।

جُنْدٌ مَّا هُنَالِكَ مَهْزُوْمٌ مِّنَ الْاَحْزَابِ ﴿١١﴾

11. (कुफ़्फ़ार के) लश्करों में से येह एक हक़ीर सा लश्कर है जो इसी जगह शिकस्त खुर्दा होनेवाला है।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّ عَادٌ وَّ فِرْعَوْنُ ذُو الْاَوْتَادِ ۙ ﴿١٢﴾

12. इनसे पहले क़ौमे नूहने और आ़दने और बड़ी मज़बूत हुकूमतवाले (या मेख़ों से अज़िय्यत देनेवाले) फ़िरऔनने (भी) झुटलाया था।

وَ ثَمُوْدُ وَ قَوْمُ لُوْطٍ وَّ اَصْحٰبُ لْــَٔیْكَةِ ؕ اُولٰٓىِٕكَ الْاَحْزَابُ ﴿١٣﴾

13. और समूद ने और क़ौमे लूतने और ऐका (बन) के रेहनेवालों ने (या'नी कौमे शुऐब ने) भी (झुटलाया था) यही वोह बड़े लश्कर थे।

اِنْ كُلٌّ اِلَّا كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ ۧ ﴿١٤﴾

14. (उन में से) हर एक गिरोहने रसूलों को झुटलाया तो (उन पर) मेरा अ़ज़ाब वाजिब हो गया।

وَ مَا يَنْظُرُ هٰٓؤُلَآءِ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً مَّا لَهَا مِنْ فَوَاقٍ ﴿۱۵﴾

15. और येह सब लोग एक निहायत सख़्त आवाज़ (चिंघाड) का इन्तिज़ार कर रहे हैं जिस में कुछ भी तवक़्क़ुफ़ न होगा।

وَقَالُوْا رَبَّنَا عَجِّلْ لَّنَا قِطَّنَا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ ﴿۱۶﴾

16. और वोह केहते हैं : ऐ हमारे रब ! रोज़े हिसाब से पहले ही हमारा हिस्सा हमें जल्द दे दे।

اِصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَاذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوٗدَ ذَا الْاَيْدِ ۚ اِنَّهٗٓ اَوَّابٌ ﴿۱۷﴾

17. (ऐ हबीबे मुकर्रम !) जो कुछ वोह केहते हैं आप उस पर सब्र जारी रखिए और हमारे बंदे दाऊद (عليه السلام) का ज़िक्र करें जो बड़ी कुव्वतवाले थे, बेशक वोह (हमारी तरफ़) बहुत रुजूअ करनेवाले थे।

اِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهٗ يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ وَالْاِشْرَاقِ ﴿۱۸﴾

18. बेशक हमने पहाड़ोंको उनके जेरे फ़रमान कर दिया था, जो (उनके साथ मिल कर) शामको और सुब्हको तस्बीह किया करते थे।

وَالطَّيْرَ مَحْشُوْرَةً ؕ كُلٌّ لَّهٗٓ اَوَّابٌ ﴿۱۹﴾

19. और परिन्दों को भी जो (उनके पास) जमा' रेहते थे हर एक उनकी तरफ़ (इताअ़त के लिए) रजूअ करनेवाला था।

وَشَدَدْنَا مُلْكَهٗ وَاٰتَيْنٰهُ الْحِكْمَةَ وَفَصْلَ الْخِطَابِ ﴿۲۰﴾

20. और हमने उनके मुल्को सल्तनत को मज़बूत कर दिया था और हमने उन्हें हिक्मतो दानाई और फ़ैसला कुन अंदाज़े ख़िताब अता किया था।

وَهَلْ اَتٰىكَ نَبَؤُا الْخَصْمِ ۘ اِذْ تَسَوَّرُوا الْمِحْرَابَ ﴿۲۱﴾ وقف لازم

21. और क्या आपके पास झगड़नेवालों की ख़बर पहुंची । जब वोह दीवार फांद कर (दाऊद عليه السلام की) इबादत गाह में दाख़िल हो गए।

اِذْ دَخَلُوْا عَلٰى دَاوٗدَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ قَالُوْا لَا تَخَفْ ۚ خَصْمٰنِ بَغٰى بَعْضُنَا عَلٰى بَعْضٍ فَاحْكُمْ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَلَا تُشْطِطْ وَاهْدِنَآ اِلٰى سَوَآءِ الصِّرَاطِ ﴿۲۲﴾

22. जब वोह दाऊद (عليه السلام) के पास अंदर आ गए तो वोह उनसे घबराए, उन्होंने कहा : घबराइए नहीं, हम (एक) मुक़द्दमे में दो फ़रीक़ हैं, हम में से एकने दूसरे पर ज़ियादती की है आप हमारे दरमियान हक़्क़ो इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर दें। और हद से तजावुज़ न करें और हमें सीधी राहकी तरफ़ रहबरी कर दें।

إِنَّ هٰذَآ أَخِيْ قف لَهٗ تِسْعٌ وَّتِسْعُوْنَ نَعْجَةً وَّلِيَ نَعْجَةٌ وَّاحِدَةٌ قف فَقَالَ أَكْفِلْنِيْهَا وَعَزَّنِيْ فِي الْخِطَابِ ﴿٢٣﴾

23. बेशक येह मेरा भाई है, इस की निन्नानवे दुंबियां हैं और मेरे पास एक ही दुंबी है फिर केहता है येह (भी) मेरे हवाले कर दो और गुफ़्तगू में (भी) मुझे दबा लेता है।

قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ إِلٰى نِعَاجِهٖ ط وَإِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْخُلَطَآءِ لَيَبْغِيْ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ إِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَقَلِيْلٌ مَّا هُمْ ط وَظَنَّ دَاوٗدُ أَنَّمَا فَتَنّٰهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهٗ وَخَرَّ رَاكِعًا وَّأَنَابَ ﴿٢٤﴾

السجدة ١٠

24. दाऊद (عليه السلام) ने कहा तुम्हारी दुंबी को अपनी दुन्बियोंसे मिलानेका सवाल कर के उसने तुम से ज़ियादती की है बेशक अक्सर शरीक एक दूसरे पर ज़ियादती करते हैं सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए और नेक अ़मल किए, और ऐसे लोग बहुत कम हैं। और दाऊद (عليه السلام) ने ख़याल किया के हमने (उस मुकद्दमे के ज़रीऐ) उनकी आज़माइश की है सो उन्होंने अपने रबसे मग़फ़िरत तलब की और सजदह में गिर पड़े और तौबा की।

فَغَفَرْنَا لَهٗ ذٰلِكَ ط وَإِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَاٰبٍ ﴿٢٥﴾

25. तो हमने उनको मुआ़फ़ फ़रमा दिया, बेशक उनके लिए हमारी बारगाह में कुर्बे ख़ास है और (आख़िरत में) आ'ला मुक़ाम है।

يٰدَاوٗدُ إِنَّا جَعَلْنٰكَ خَلِيْفَةً فِي الْأَرْضِ فَاحْكُمْ بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوٰى فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ط إِنَّ الَّذِيْنَ يَضِلُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌۢ بِمَا نَسُوْا يَوْمَ الْحِسَابِ ﴿٢٦﴾

ع ١٢ ٢ ١١

26. ऐ दाऊद ! बेशक हमने आपको ज़मीन में (अपना) नाइब बनाया सो तुम लोगोंके दरमियान हक़्क़ो इन्साफ़ के साथ फ़ैसले (या हुकूमत) क्या करो और ख़्वाहिश की पैरवी न करना वरना (येह पैरवी) तुम्हें राहे ख़ुदा से भटका देगी, बेशक जो लोग अल्लाहकी राह से भटक जाते हैं उन के लिए सख़्त अ़ज़ाब है इस वजह से कि वोह यौमे हिसाब को भूल गए।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا بَاطِلًا ط ذٰلِكَ ظَنُّ الَّذِيْنَ

27. और हमने आस्मानों को और ज़मीन को और जो काइनात दोनों के दरमियान है उसे बे मक़्सदो बे मस्लेहत नहीं बनाया । येह (बे मक़्सद या'नी इत्तिफ़ाक़िया

كَفَرُوا ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ كَفَرُوا مِنَ النَّارِ ﴿٢٧﴾

तख़्लीक़) काफ़िर लोगों का ख़यालो नज़रिया है। सो काफ़िर लोगों के लिए आतिशे दोज़ख़की हलाकत है।

أَمْ نَجْعَلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَالْمُفْسِدِينَ فِي الْأَرْضِ أَمْ نَجْعَلُ الْمُتَّقِينَ كَالْفُجَّارِ ﴿٢٨﴾

28. क्या हम उन लोगों को जो ईमान लाए और आ'माले सालेहा बजा लाए उन लोगों जैसा कर देंगे जो ज़मीनमें फ़साद बपा करनेवाले हैं या हम परहेज़गारों को बद किरदारों जैसा बना देंगे।

كِتَابٌ أَنزَلْنَاهُ إِلَيْكَ مُبَارَكٌ لِّيَدَّبَّرُوا آيَاتِهِ وَلِيَتَذَكَّرَ أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿٢٩﴾

29. येह किताब बरकतवाली है। जिसे हमने आपकी तरफ़ नाज़िल फ़रमाया है ताकि दानिशमंद लोग उसकी आयतोंमें गौरो फ़िक्र करें और नसीहत हासिल करें।

وَوَهَبْنَا لِدَاوُودَ سُلَيْمَانَ ۚ نِعْمَ الْعَبْدُ ۖ إِنَّهُ أَوَّابٌ ﴿٣٠﴾

30. और हमने दाऊद (عليه السلام) को (फ़रजन्द) सुलैमान (عليه السلام) बख़्शा वोह क्या खूब बन्दा था, बेशक वोह बड़ी कसरत से तौबा करनेवाला है।

إِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصَّافِنَاتُ الْجِيَادُ ﴿٣١﴾

31. जब उनके सामने शामके वक़्त निहायत सुबुक रफ़्तार उमदा घोड़े पेश किए गए।

فَقَالَ إِنِّي أَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَن ذِكْرِ رَبِّي حَتَّىٰ تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ﴿٣٢﴾

32. तो उन्होंने (इनाबतन) कहा : मैं माल (या'नी घोड़ों) की महब्बत को अपने रबके ज़िक्र से भी (ज़ियादह) पसंद कर बैठा हूं यहां तक कि (सूरज रात के) पर्दे में छुप गया ।

رُدُّوهَا عَلَيَّ ۖ فَطَفِقَ مَسْحًا بِالسُّوقِ وَالْأَعْنَاقِ ﴿٣٣﴾

33. उन्होंने कहा : उन (घोड़ों) को मेरे पास वापस लाओ तो उन्होंने (तलवार से) उनकी पिन्डलियां और गर्दनें काट डालीं (यूं अपनी मुहब्बत को अल्लाह के तक़र्रुब के लिए ज़ब्ह कर दिया)।

وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمَانَ وَأَلْقَيْنَا عَلَىٰ

34. और बेशक हमने सुलैमान (عليه السلام) की (भी) आज़माइश की और हमने उनके तख़्त पर एक (अ़जीबुल

كُرْسِيِّهٖ جَسَدًا ثُمَّ اَنَابَ ﴿۳۴﴾

खि़ल्क़त) जिस्म डाल दिया फिर उन्होंने दोबारा (सल्तनत) पा ली।

قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَهَبْ لِيْ مُلْكًا لَّا يَنْۢبَغِيْ لِاَحَدٍ مِّنْۢ بَعْدِيْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ﴿۳۵﴾

35. अ़र्ज किया : ऐ मेरे परवरदिगार ! मुझे बख़्श दे, और मुझे ऐसी हुकूमत अ़ता फ़रमा कि मेरे बाद किसी को मुयस्सर न हो बेशक तू ही बड़ा अ़ता फ़रमानेवाला है।

فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّيْحَ تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖ رُخَآءً حَيْثُ اَصَابَ ﴿۳۶﴾

36. फिर हमने उन के लिए हवा को ताबे' कर दिया, वोह उन के हुक्म से नर्म नर्म चलती थी जहां कहीं (भी) वोह पहुंचना चाहते।

وَالشَّيٰطِيْنَ كُلَّ بَنَّآءٍ وَّغَوَّاصٍ ﴿۳۷﴾

37. और कुल जिन्नात (व शयातीन भी उनके ताबे' कर दिए) और हर मे'मार और ग़ोता जन (भी)।

وَّاٰخَرِيْنَ مُقَرَّنِيْنَ فِي الْاَصْفَادِ ﴿۳۸﴾

38. और दूसरे (जिन्नात) भी जो ज़ंजीरों में जकड़े हुए थे।

هٰذَا عَطَآؤُنَا فَامْنُنْ اَوْ اَمْسِكْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿۳۹﴾

39. (इर्शाद हुवा :) येह हमारी अ़ता है (ख़्वाह दूसरों पर) एह्सान करो या (अपने तक) रोके रखो (दोनों हा़लतों में) कोई हि़साब नहीं।

وَاِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَاٰبٍ ﴿۴۰﴾

40. और बेशक उनके लिए हमारी बारगाहमें खुसूसी कु़र्बत और आखि़रत में उ़मदा मुक़ाम है।

وَاذْكُرْ عَبْدَنَآ اَيُّوْبَ ۘ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗٓ اَنِّيْ مَسَّنِيَ الشَّيْطٰنُ بِنُصْبٍ وَّعَذَابٍ ﴿۴۱﴾

41. और हमारे बन्दे अैयूब (عليه السلام) का ज़िक्र कीजिए जब उन्होंने अपने रबको पुकारा कि मुझे शैतानने बड़ी अज़ि़य्यत और तक्लीफ़ पहुंचाई है।

اُرْكُضْ بِرِجْلِكَ ۚ هٰذَا مُغْتَسَلٌۢ بَارِدٌ وَّشَرَابٌ ﴿۴۲﴾

42. (इर्शाद हुवा :) तुम अपना पाँव ज़मीन पर मारो येह (पानी का) ठंडा चश्मा है नहाने के लिए और पीने के लिए।

وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنَّا وَذِكْرٰى لِاُولِي

43. और हमने उनको उनके अहलो अ़याल और उनके साथ उनके बराबर (मज़ीद अहलो अ़याल) अ़ता कर दिए हमारी तरफ़ से खुसूसी रहमत के तौर पर और दानिशमंदों

الْاَلْبَابِ ۝٤٣

के लिए नसीहत के तौर पर।

وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِّهٖ وَلَا تَحْنَثْ ؕ اِنَّا وَجَدْنٰهُ صَابِرًا ؕ نِعْمَ الْعَبْدُ ؕ اِنَّهٗۤ اَوَّابٌ ۝٤٤

44. (ऐ अैयूब !) तुम अपने हाथ में (सौ) तिन्कों की झाड़ू पकड़ लो और (अपनी क़सम पूरी करने लिए) उससे (एक बार अपनी ज़ौजा को) मारो और क़सम न तोड़ो, बेशक हमने उसे साबित क़दम पाया (अैयूब عليه السلام) क्या खूब बंदा था, बेशक वोह (हमारी तरफ़) बहुत रुजूअ़ करनेवाला था।

وَاذْكُرْ عِبٰدَنَاۤ اِبْرٰهِيْمَ وَ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ اُولِى الْاَيْدِىْ وَ الْاَبْصَارِ ۝٤٥

45. और हमारे बंदों इब्राहीम और इस्हाक़ और या'कूब (عليهم السلام) का ज़िक्र कीजिए जो बड़ी कुव्वतवाले और नज़रवाले थे।

اِنَّاۤ اَخْلَصْنٰهُمْ بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى الدَّارِ ۚ ۝٤٦

46. बेशक हमने उनको आख़िरत के घर की याद की ख़ास (ख़स्लत) की वजह से चुन लिया था।

وَ اِنَّهُمْ عِنْدَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْاَخْيَارِ ؕ ۝٤٧

47. और बेशक वोह हमारे हुज़ूर बड़े मुन्तख़बो बरगुज़ीदह (और) पसंदीदह बन्दों में से थे।

وَ اذْكُرْ اِسْمٰعِيْلَ وَ الْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ ؕ وَكُلٌّ مِّنَ الْاَخْيَارِ ؕ ۝٤٨

48. और आप इस्माईल और अल यसा' और ज़ुल किफ़्ल (عليهم السلام) का (भी) ज़िक्र कीजिए और वोह सारे के सारे चुने हुए लोगों में से थे।

هٰذَا ذِكْرٌ ؕ وَ اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ لَحُسْنَ مَاٰبٍ ۙ ۝٤٩

49. येह (वोह) ज़िक्र है (जिसका बयान इस सूरत की पेहली आयतमें है) और बेशक परहेज़गारों के लिए उ़मदा ठिकाना है।

جَنّٰتِ عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الْاَبْوَابُ ۚ ۝٥٠

50. (जो) दाइमी इक़ामत के लिए बाग़ाते अ़दन हैं जिन के दरवाजे उन के लिए खुले होंगे।

مُتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا يَدْعُوْنَ فِيْهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ وَّشَرَابٍ ۝٥١

51. वोह उसमें (मस्नदों पर) तकिये लगाए बैठे होंगे उसमें (वक़्फ़े वक़्फ़े से) बहुतसे उ़मदा फल और मेवे और (लज़ीज़) शरबत तलब करते रहेंगे।

وَعِندَهُمْ قَاصِرَاتُ الطَّرْفِ أَتْرَابٌ ﴿٥٢﴾

52. और उनके पास नीची निगाहों वाली (बा हया) हम उम्र (हूरें) होंगी।

هَٰذَا مَا تُوعَدُونَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿٥٣﴾

53. येह वोह ने'मतें हैं जिनका रोजे़ हिसाब के लिए तुम से वा'दा किया जाता है।

إِنَّ هَٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهُ مِن نَّفَادٍ ﴿٥٤﴾

54. बेशक येह हमारी बख़्शिश है उसे कभी भी ख़त्म नहीं होना।

هَٰذَا ۚ وَإِنَّ لِلطَّاغِينَ لَشَرَّ مَآبٍ ﴿٥٥﴾

55. येह (तो मोमिनों के लिए है) और बेशक सरकशों के लिए बहुत ही बुरा ठिकाना है।

جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا فَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿٥٦﴾

56. (वोह) दोज़ख़ है, जिसमें वोह दाख़िल होंगे सो बहुत ही बुरा बिछोना है।

هَٰذَا فَلْيَذُوقُوهُ حَمِيمٌ وَغَسَّاقٌ ﴿٥٧﴾

57. येह (अज़ाब है) पस उन्हें येह चखना चाहिए खौलता हुवा पानी और पीप है।

وَآخَرُ مِن شَكْلِهِ أَزْوَاجٌ ﴿٥٨﴾

58. और उसी शक्लमें और भी तरह़ तरह़ का (अज़ाब) है।

هَٰذَا فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ مَّعَكُمْ ۖ لَا مَرْحَبًا بِهِمْ ۚ إِنَّهُمْ صَالُو النَّارِ ﴿٥٩﴾

59. (दोज़ख़के दारोग़े या पहले से मौजूद जहन्नमी कहेंगे) येह एक (और) फ़ौज है जो तुम्हारे साथ (जहन्नम में) घुसती चली आ रही है, उन्हें कोई ख़ुश आमदीद नहीं, बेशक वोह (भी) दोज़ख़में दाख़िल होनेवाले हैं।

قَالُوا بَلْ أَنتُمْ لَا مَرْحَبًا بِكُمْ ۖ أَنتُمْ قَدَّمْتُمُوهُ لَنَا ۖ فَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿٦٠﴾

60. वोह (आनेवाले) कहेंगे : बल्कि तुम ही हो कि तुम्हें कोई फ़राख़ी नसीब न हो, तुम ही ने येह (कुफ़्र और अज़ाब) हमारे सामने पेश किया सो (येह) बुरी क़रारगाह है।

قَالُوا رَبَّنَا مَن قَدَّمَ لَنَا هَٰذَا فَزِدْهُ عَذَابًا ضِعْفًا فِي النَّارِ ﴿٦١﴾

61. वोह कहेंगे : ऐ हमारे रब ! जिसने येह (कुफ़्र या अज़ाब) हमारे लिए पेश किया था तो उसे दोज़ख़में दो गुना अज़ाब बढ़ा दे।

وَقَالُوا مَا لَنَا لَا نَرَىٰ رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُم مِّنَ الْأَشْرَارِ ﴿٦٢﴾

62. और वोह कहेंगे : हमें क्या हो गया है हम (उन) अश्ख़ास को (यहां) नहीं देखते जिन्हें हम बुरे लोगों में शुमार करते थे।

اَتَّخَذْنٰهُمْ سِخْرِيًّا اَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ الْاَبْصَارُ ﴿٦٣﴾

63. क्या हम उनका (नाह़क़) मज़ाक़ उडाते थे या हमारी आँखें उन्हें (पहेचानने) से चूक गई थीं (येह अम्मार, ख़ब्बाब, सुहैब, बिलाल और सुलैमान (ﷺ) जैसे फ़ुक़रा और दुर्वेश थे)।

اِنَّ ذٰلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُمُ اَهْلِ النَّارِ ﴿٦٤﴾

64. बेशक येह अह्ले जहन्नम का आपस में झगड़ना यक़ीनन ह़क़ है।

قُلْ اِنَّمَآ اَنَا مُنْذِرٌ ۖ وَّمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٦٥﴾

65. फ़रमा दीजिए : मैं तो सिर्फ़ डर सुनानेवाला हूं और अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं जो यक्ता सब पर ग़ालिब है।

رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ ﴿٦٦﴾

66. आस्मानों और ज़मीनका और जो काइनात इन दोनों के दरमियान है (सब) का रब है बड़ी इ़ज़्ज़तवाला, बड़ा बख़्शनेवाला है।

قُلْ هُوَ نَبَؤٌا عَظِيْمٌ ﴿٦٧﴾

67. फ़रमा दीजिए : वोह (क़ियामत) बहुत बड़ी ख़बर है।

اَنْتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُوْنَ ﴿٦٨﴾

68. तुम उससे मुंह फेरे हुए हो।

مَا كَانَ لِيَ مِنْ عِلْمٍۢ بِالْمَلَاِ الْاَعْلٰٓى اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٦٩﴾

69. मुझे तो (अज़ ख़ुद) आ़लमे बाला की जमाअ़ते (मलाइका) की कोई ख़बर न थी जब वोह (तख़्लीक़े आदम के बारे में) बहसो तम्हीस कर रहे थे।

اِنْ يُّوْحٰٓى اِلَيَّ اِلَّآ اَنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧٠﴾

70. मुझे तो (अल्लाह की तरफ़ से) वही की जाती है मगर येह कि मैं साफ़ साफ़ डर सुनानेवाला हूं।

اِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ طِيْنٍ ﴿٧١﴾

71. (वोह वक़्त याद कीजिए) जब आपके रबने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि मैं (गीली) मिट्टी से एक पैकरे बशरिय्यत पैदा फ़रमानेवाला हूं।

فَاِذَا سَوَّيْتُهٗ وَنَفَخْتُ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِيْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ ﴿٧٢﴾

72. फिर जब मैं उस (के ज़ाहिर) को दुरुस्त कर लूं और उस (के बातिन) में अपनी (नूरानी) रूह फूंक दूं तो तुम उस (की ता'ज़ीम) के लिए सजदा करते हुऐ गिर पड़ना।

فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ ﴿٧٣﴾

73. पस सब के सब फ़रिश्तों ने बिल इज्माअ़ सजदा किया।

اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ اِسْتَكْبَرَ وَكَانَ

74. सिवाए इब्लीस के, उसने (शाने नुबुव्वत के सामने)

مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۷۴﴾

तकब्बुर किया और काफ़िरों में से हो गया।

قَالَ يٰٓاِبْلِيْسُ مَا مَنَعَكَ اَنْ تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِيَدَيَّ ؕ اَسْتَكْبَرْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ الْعَالِيْنَ ﴿۷۵﴾

75. (अल्लाहने) इर्शाद फ़रमाया : ऐ इब्लीस! तुझे किसने उस (हस्ती) को सजदा करने से रोका है जिसे मैंने खुद अपने दस्ते (करम) से बनाया है, क्या तूने (उससे) तकब्बुर किया या तू (ब ज़ो'मे ख़ीश) बुलंद रुत्बा (बना हुआ) था।

قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ؕ خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ ﴿۷۶﴾

76. उसने (नबी के साथ अपना मुवाज़ना करते हुए) कहा कि मैं उससे बेहतर हूं, तूने मुझे आग से बनाया है और तूने इसे मिट्टी से बनाया है।

قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَاِنَّكَ رَجِيْمٌ ﴿۷۷﴾

77. इर्शाद हुआ सो तू (इस गुस्ताख़िए नुबुव्वत के जुर्म में) यहां से निकल जा, बेशक तू मरदूद है।

وَّ اِنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِيْٓ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ ﴿۷۸﴾

78. और बेशक तुझ पर क़ियामत के दिन तक मेरी ला'नत रहेगी।

قَالَ رَبِّ فَاَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿۷۹﴾

79. उसने कहा : ऐ परवरदिगार! फिर मुझे उस दिन तक (ज़िन्दा रेहने की) मोहलत दे जिस दिन लोग क़ब्रों से उठाए जाएंगे।

قَالَ فَاِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ﴿۸۰﴾

80. इर्शाद हुवा : (जा) बेशक तू मोहलत वालों में से है।

اِلٰى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ ﴿۸۱﴾

81. उस वक़्त के दिन तक जो मुक़र्रर(और मा'लूम) है।

قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَاُغْوِيَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۸۲﴾

82. उसने कहा : सो तेरी इज़्ज़त की क़सम, मैं उन सब लोगों को ज़रूर गुमराह करता रहूंगा।

اِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿۸۳﴾

83. सिवाए तेरे उन बन्दों के जो चुनीदह-व-बरगुज़ीदह हैं।

قَالَ فَالْحَقُّ ؗ وَالْحَقَّ اَقُوْلُ ﴿۸۴﴾

84. इर्शाद हुआ : पस हक़ (येह) है और मैं हक़ ही केहता हूं।

لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَ مِمَّنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۸۵﴾

85. कि मैं तुझ से और जो लोग तेरी (गुस्ताख़ाना सोच की) पैरवी करेंगे उन सब से दोज़ख़ को भर दूंगा।

قُلْ مَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِيْنَ ﴿٨٦﴾

86. फ़रमा दीजिए : मैं तुम से इस (हक़् की तबलीग़) पर कोई मुआवज़ा तलब नहीं करता और न मैं तकल्लुफ़ करनेवालों में से हूं।

اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٧﴾

87. येह (क़ुरआन) तो सारे जहानवालों के लिए नसीह़त ही है।

وَلَتَعْلَمُنَّ نَبَاَهٗ بَعْدَ حِيْنٍ ﴿٨٨﴾

88. और तुम्हें थोड़े ही वक़्त के बाद ख़ुद उसका ह़ाल मा'लूम हो जाएगा।

आयातुहा 75	39 सूरतुज़ ज़ुमर मक्किय्यतुन 59	रुकूआ़तुहा 8

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿١﴾

1. इस किताब का उतारा जाना अल्लाह की तरफ़ से है जो बड़ी इ़ज़्ज़तवाला, बड़ी हि़क्मतवाला है।

اِنَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ﴿٢﴾

2. बेशक हमने आपकी तरफ़ (येह) किताब ह़क़ के साथ नाज़िल की है तो आप अल्लाह की इ़बादत उस के लिए ताअ़तो बंदगी को ख़ालिस रखते हुए किया करें।

اَلَا لِلّٰهِ الدِّيْنُ الْخَالِصُ ۭ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَاۗءَ ۘ مَا نَعْبُدُهُمْ اِلَّا لِيُقَرِّبُوْنَآ اِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِيْ مَا هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ڛ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ كٰذِبٌ كَفَّارٌ ﴿٣﴾

3. (लोगों से केह दें) सुन लो ताअ़तो बंदगी ख़ालिसतन अल्लाह ही के लिए है और जिन (कुफ़्फ़ार) ने अल्लाह के सिवा (बूतों को) दोस्त बना रखा है वोह (अपनी बुत परस्ती के झूटे जवाज़ के लिए येह केहते हैं कि) हम उनकी परस्तिश सिर्फ़ इस लिए करते हैं कि वोह हमें अल्लाह का मुक़र्रब बना दें, बेशक अल्लाह उनके दरमियान इस चीज़ का फ़ैसला फ़रमा देगा जिस में वोह इख़्तिलाफ़ करते हैं, यक़ीनन अल्लाह उस शख़्स को हिदायत नहीं फ़रमाता जो झूटा है, बडा नाशुक्र गुज़ार है।

لَوْ اَرَادَ اللّٰهُ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا

4. अगर अल्लाह इरादाह फ़रमाता कि (अपने लिए)

لَّاصْطَفٰى مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۙ سُبْحٰنَهٗ ؕ هُوَ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٤﴾

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ يُكَوِّرُ الَّيْلَ عَلَى النَّهَارِ وَ يُكَوِّرُ النَّهَارَ عَلَى الَّيْلِ وَ سَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ اَلَا هُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ ﴿٥﴾

خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَ اَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ الْاَنْعَامِ ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ؕ يَخْلُقُكُمْ فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ خَلْقًا مِّنْۢ بَعْدِ خَلْقٍ فِيْ ظُلُمٰتٍ ثَلٰثٍ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ؕ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ﴿٦﴾

اِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنْكُمْ ۟ وَلَا يَرْضٰى لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ ۚ وَاِنْ تَشْكُرُوْا يَرْضَهُ لَكُمْ ؕ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ؕ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٧﴾

औलाद बनाए तो अपनी मख़्लूक़में से जिसे चाहता मुन्तख़ब फ़रमा लेता, वोह पाक है, वोही अल्लाह है, जो यक्ता है सब पर ग़ालिब है।

5. उसने आस्मानों और ज़मीन को सहीह़ तदबीर के साथ पैदा फ़रमाया। वोह रात को दिन पर लपेटता है और दिन को रात पर लपेटता है और उसीने सूरज और चांद को (एक निज़ाम में) मुसख़्ख़र कर रखा है हर एक (सितारा और सय्यारा) मुक़र्रर वक़्त की ह़द तक (अपने मदार में) चलता है, ख़बरदार वोही (पूरे निज़ाम पर) ग़ालिब, बड़ा बख़्शनेवाला है।

6. उसने तुम सबको एक ह़यातियाती ख़ुल्ये से पैदा फ़रमाया फिर उससे उसी जैसा जोड़ बनाया फिर उसने तुम्हारे लिए आठ जानदार जानवर मुहय्या किए वोह तुम्हारी माओं के रेहमों में एक तख़्लीक़ी मर्हलेसे अगले मर्हले में तरतीब के साथ तुम्हारी तश्कील करता है (इस अ़मल को) तीन किस्म के तारीक पर्दों में (मुकम्मल फ़रमाता है), यही तुम्हारा परवरदिगार है जो सब क़ुदरतो सल्तनत का मालिक है, उसके सिवा कोई मा'बूद नहीं, फिर (तख़्लीक़ के येह मुख़्फ़ी ह़क़ाईक़ जान लेने के बाद भी) तुम कहां बेहके फिरते हो।

7. अगर तुम कुफ़्र करो तो बेशक अल्लाह तुम से बेनियाज़ है और वोह अपने बंदों केलिए कुफ़्र (व नाशुक्री) पसंद नहीं करता और अगर तुम शुक्रगुज़ारी करो (तो) उसे तुम्हारे लिए पसंद फ़रमाता है और कोई बोझ उठानेवाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाऐगा फिर तुम्हें अपने रबकी तरफ़ लौटना है फिर वोह तुम्हें उन कामों से ख़बरदार कर देगा जो तुम करते रहे थे, बेशक वोह सीनों की (पोशीदाह) बातों को (भी) ख़ूब जानने वाला है।

وَإِذَا مَسَّ الْإِنسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهُ مُنِيبًا إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا خَوَّلَهُ نِعْمَةً مِّنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُو إِلَيْهِ مِن قَبْلُ وَجَعَلَ لِلَّهِ أَندَادًا لِّيُضِلَّ عَن سَبِيلِهِ قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ قَلِيلًا إِنَّكَ مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ ﴿٨﴾

8. और जब इन्सान को कोई तक्लीफ़ पहुंचती है तो वोह अपने रबको उसीकी तरफ़ रुजूअ् करते हुए पुकारता है फिर जब (अल्लाह) उसे अपनी जानिब से कोई ने'मत बख़्श देता है तो वोह उस (तक्लीफ़) को भूल जाता है जिसके लिए वोह पहले दुआ़ किया करता था और (फिर) अल्लाह के लिए (बुतों को) शरीक ठेहराने लगता है ताकि(दूसरे लोगों को भी) उसकी राह से भटका दे, फ़रमा दीजिए : (ऐ काफ़िर !) तू अपने कुफ़्र के साथ थोड़ा सा (ज़ाहिरी) फायदाह उठा ले तू बेशक दोज़ख़ियों में से है।

أَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ آنَاءَ اللَّيْلِ سَاجِدًا وَقَائِمًا يَحْذَرُ الْآخِرَةَ وَيَرْجُو رَحْمَةَ رَبِّهِ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِينَ يَعْلَمُونَ وَالَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿٩﴾

ع ٩ ١٥

9. भला (येह मुशरिक बेहतर है या) वोह (मोमिन) जो रात की घड़ियोंमें सुजूद और क़ियाम की हालत में इबादत करनेवाला है, आख़िरत से डरता रेहता है और अपने रबकी रहमतकी उम्मीद रखता है, फ़रमा दीजिए : क्या जो लोग इल्म रखते हैं और जो लोग इल्म नहीं रखते (सब) बराबर हो सकते हैं। बस नसीहत तो अ़क्लमंद लोग ही कुबूल करते हैं।

قُلْ يَا عِبَادِ الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا رَبَّكُمْ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ وَأَرْضُ اللَّهِ وَاسِعَةٌ إِنَّمَا يُوَفَّى الصَّابِرُونَ أَجْرَهُم بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿١٠﴾

10. (महबूब मेरी तरफ़ से) फ़रमा दीजिए : ऐ मेरे बंदो ! जो ईमान लाए हो अपने रबका तक़्वा इख़्तियार करो। ऐसे ही लोगों के लिए जो उस दुनिया में साहबाने एहसान हुऐ। बेहतरीन सिला है और अल्लाह की सरज़्मीन कुशादा है, बिलाशुबा सब्र करने वालों को उनका अज्र बे हिसाब अंदाज से पूरा क्या जाएगा।

قُلْ إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّينَ ﴿١١﴾

11. फ़रमा दीजिए : मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं अल्लाह की इबादत, अपनी ताअ़तो बंदगी को उसके लिए ख़ालिस रखते हुऐ सरअंजाम दूं।

وَأُمِرْتُ لِأَنْ أَكُونَ أَوَّلَ الْمُسْلِمِينَ ﴿١٢﴾

12. और मुझे येह (भी) हुक्म दिया गया था कि मैं (उसकी मख़्लूक़ात में) सबसे पहला मुसलमान बनूं।

قُلْ إِنِّيٓ أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٣﴾

13. फ़रमा दीजिए : अगर मैं अपने रबकी ना फ़रमानी करों तो में जबरदस्त दिनके अज़ाब से डरता हूं।

قُلِ اللَّهَ أَعْبُدُ مُخْلِصًا لَّهُۥ دِينِي ﴿١٤﴾

14. फ़रमा दीजिए : मैं सिर्फ़ अल्लाहकी इबादत करता हूं, अपने दीन को उसी के लिए ख़ालिस रखते हुए।

فَاعْبُدُوا مَا شِئْتُمْ مِّن دُونِهِۦ ۗ قُلْ إِنَّ الْخَاسِرِينَ الَّذِينَ خَسِرُوٓا أَنفُسَهُمْ وَأَهْلِيهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ أَلَا ذَٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِينُ ﴿١٥﴾

15. सो तुम अल्लाह के सिवा जिस की चाहो पूजा करो, फ़रमा दीजिए : बेशक नुकसान उठानेवाले वही लोग हैं जिन्होंने क़ियामत के दिन अपनी जानों को और अपने घरवालों को ख़सारे में डाला । याद रखो येही खुला नुकसान है।

لَهُم مِّن فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَمِن تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ۚ ذَٰلِكَ يُخَوِّفُ اللَّهُ بِهِۦ عِبَادَهُۥ ۚ يَا عِبَادِ فَاتَّقُونِ ﴿١٦﴾

16. उनके लिए उनके ऊपर(भी) आग के बादल (साएबान बने) होंगे और उनके नीचे भी आग के फ़र्श होंगे, येह वोह (अज़ाब) है जिससे अल्लाह अपने बंदों को डराता है, ऐ मेरे बंदो ! बस मुझसे डरते रहो।

وَالَّذِينَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوتَ أَن يَعْبُدُوهَا وَأَنَابُوٓا إِلَى اللَّهِ لَهُمُ الْبُشْرَىٰ ۚ فَبَشِّرْ عِبَادِ ﴿١٧﴾

17. और जो लोग बुतोंकी परस्तिश करने से बचे रहे और अल्लाह की तरफ़ झुके रहे, उन के लिए खुशख़बरी है, पस आप मेरे बंदों को बिशारत दे दीजिए।

الَّذِينَ يَسْتَمِعُونَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُونَ أَحْسَنَهُۥٓ ۚ أُولَٰٓئِكَ الَّذِينَ هَدَاهُمُ اللَّهُ ۖ وَأُولَٰٓئِكَ هُمْ أُولُوا الْأَلْبَابِ ﴿١٨﴾

18. जो लोग बात को गौर से सुनते हैं, फिर उसके बेहतर पेहलू की इत्तिबाअ् करते हैं यही वोह लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत फ़रमाई है और येही लोग अक्लमंद हैं।

أَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ ۖ أَفَأَنتَ تُنقِذُ مَن فِي النَّارِ ﴿١٩﴾

19. भला जिस शख़्स पर अज़ाबका हुक्म साबित हो चुका, तो क्या आप उस शख़्स को बचा सक्ते हैं जो (दाइमी) दोज़ख़ी हो चुका हो।

لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ مِّنْ فَوْقِهَا غُرَفٌ مَّبْنِيَّةٌ ۙ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۬ؕ وَعْدَ اللّٰهِ ؕ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ الْمِيْعَادَ ﴿٢٠﴾

20. लेकिन जो लोग अपने रब से डरते हैं उनके लिए (जन्नतमें) बुलंद महल्लात होंगे जिनके उपर(भी) बालाखाने बनाए गए होंगे, उनकेनीचे से नेहरें रहां होंगी। येह अल्लाह का वा'दा है, अल्लाह वा'दे की ख़िलाफ़ वर्ज़ी नहीं करता।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَلَكَهٗ يَنَابِيْعَ فِي الْاَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَجْعَلُهٗ حُطَامًا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿٢١﴾ ع

21. (ऐ इन्सान !) क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाहने आस्मान से पानी बरसाया, फिर ज़मीनमें उसके चश्मे रवां किए, फिर उसके ज़रीए खेती पैदा करता है, जिस के रंग जुदागाना होते हैं, फिर वोह (तैयार हो कर) खुश्क हो जाती है, फिर (पकने के बाद) तू उसे ज़र्द देखता है, फिर वोह उसे चूरा चूरा कर देता है, बेशक उसमें अक़्लवालों के लिए नसीहत है।

اَفَمَنْ شَرَحَ اللّٰهُ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ فَهُوَ عَلٰى نُوْرٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ فَوَيْلٌ لِّلْقٰسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ مِّنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٢﴾

22. भला, अल्लाह ने जिस शख़्स का सीना इस्लामके लिए खोल दिया हो, तो वोह अपने रबकी तरफ़ से नूर पर (फ़ाइज़) हो जाता है, (उसके बर अक्स) पस उन लोगों के लिए हलाकत है जिन के दिल अल्लाह के जिक्र (के फ़ैज़) से (महरूम हो कर) सख़्त हो गए, येही लोग खुली गुमराही में हैं।

اَللّٰهُ نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِيْثِ كِتٰبًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِيَ ۖۗ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُوْدُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ۚ ثُمَّ تَلِيْنُ جُلُوْدُهُمْ وَقُلُوْبُهُمْ اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ

23. अल्लाह ही ने बेहतरीन कलाम नाज़िल फ़रमाया है, जो एक किताब है जिस की बातें (नज़्म और मआ़नी में) एक दूसरे से मिलती जुलती हैं (जिसकी आयतें) बार बार दोहराई गई हैं, जिससे उन लोगों के जिस्मों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं जो अपने रब से डरते हैं, फिर उनकी जिल्दें और दिल नर्म हो जाते हैं (और रिक़्क़त के साथ) अल्लाहके ज़िक्रकी तरफ़ (महव हो जाते हैं) । येह अल्लाह की हिदायत है वोह जिसे चाहता है उसके ज़रीए रेहनुमाई

فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٢٣﴾

फ़रमाता है। और अल्लाह जिसे गुमराह कर देता (या'नी गुमराह छोड देता) है तो उस के लिए कोई हादी नहीं होता।

اَفَمَنْ يَّتَّقِيْ بِوَجْهِهٖ سُوْٓءَ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَقِيْلَ لِلظّٰلِمِيْنَ ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿٢٤﴾

24. भला वोह शख़्स जो क़ियामत के दिन (आग के) बुरे अज़ाबको अपने चेहरे से रोक रहा होगा (क्यों कि उसके दोनों हाथ बंधे होंगे, उसका क्या हाल होगा ?) और ऐसे ज़ालिमों से कहा जाएगा उन बद आ'मालियों का मज़ा चखो जो तुम अंजाम दिया करते थे।

كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٥﴾

25. ऐसे लोगों ने जो इनसे पहले थे (रसूलों को) झुटलाया था सो उन पर ऐसी जगह से अज़ाब आ पहुंचा कि उन्हें कुछ शऊर ही न था।

فَاَذَاقَهُمُ اللّٰهُ الْخِزْيَ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٦﴾

وقف لازم

26.पस अल्लाह ने उन्हें दुनिया की जिन्दगी में (ही) जिल्लतो रुस्वाई का मज़ा चखा दिया और यक़ीनन आख़िरत का अज़ाब कहीं बड़ा है काश ! वोह जानते होते।

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٧﴾ ۚ

27. और दर हक़ीक़त हमने लोगों के(समझाने के) लिए उस क़ुरआनमें हर तरह की मिसाल बयान कर दी है ताकि वोह नसीहत हासिल कर सकें।

قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِيْ عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٢٨﴾

28. कुरआन अ़रबी जबान में है (जो सब जबानों से ज़्यादह साफ और बलीग़ है) जिस में जरा भी कजी नहीं है। ताकि वोह तकवा इख़्तियार करें।

ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلًا فِيْهِ شُرَكَآءُ مُتَشٰكِسُوْنَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ ؕ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ؕ

29.अल्लाहने एक मिसाल बयान फ़रमाई है ऐसे (गुलाम) शख़्स की जिसकी मिलकियत में कई ऐसे लोग शरीक हों जो बद अख़्लाक भी हों और बाहम झगड़ालु भी। और (दूसरे तरफ़) एक ऐसा शख़्स हो जो सिर्फ़ एक ही फ़र्द का गुलाम हो क्या येह दोनों (अपने) हालात के लिहाज़ से

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ۚ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٩﴾

यक्सां हो सकते हैं ? (हरगिज़ नहीं) सारी ता'रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं । बल्कि उनमें से अक्सर लोग (हक़ीक़ते तौहीद को) नहीं जानते।

اِنَّكَ مَيِّتٌ وَّاِنَّهُمْ مَّيِّتُوْنَ ﴿٣٠﴾

30. (ऐ हबीबे मुकर्रम !) बेशक आपको (तो) मौत (सिर्फ़ ज़ाइक़ा चखने के लिए) आनी है और वोह यक़ीनन (दाइमी हलाकत केलिए) मुर्दा हो जाएंगे (फिर दोनों मौतों का फ़र्क़ देखनेवाला होगा)।★

ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُوْنَ ﴿٣١﴾

31. फिर बिला शुबा तुम लोग क़ियामत के दिन अपने रबके हुज़ूर बाहम झगड़ा करोगे (एक गिरोह दूसरे को केहगा के हमें मुकामे नुबुव्वत और शाने रिसालत को समझने से तुमने रोका था, वोह कहेंगे नहीं तुम खुद ही बदबख़्त और गुमराह थे)।

★ जिस तरह आयत : 29 में दी गई मिसालके मुताबिक दो अफ़राद के अहवाल क़तअ़न बराबर नहीं होंगे उसी तरह इर्शाद फ़रमाया गया है कि हुज़ूर ﷺ की वफ़ात और दूसरों की मौत भी हरगिज़ बराबर या मुमासिल नहीं होंगी। दोनोंकी माहियत और हालत में अज़ीम फ़र्क़ होगा। येह मिसाल उसी मक़्सद केलिए बयान की गई थी कि शाने नबुव्वत के बाब में हमसरी और बराबरी का गुमान कुल्लियतन रद हो जाए। जैसे एक मालिक का गुलाम सहीह और सालिम रहा और बहुतसे बदखू मालिकों का गुलाम तबाह हाल हुआ उसी तरह ऐ हबीबे मुकर्रम ! आप तो एक ही मालिक के बरगुज़ीदा बंदे और महबूबो मुक़र्रब रसूल हैं सो वोह आपको हर हालमें सलामत रखेगा और येह कुफ़्फ़ार बहुतसे बुतों और शरीकों की गुलामी में हैं सो वोह उन्हें भी अपनी तरह दाइमी हलाकत का शिकार कर देंगे।

الجزء ٢٤

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللّٰهِ وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ اِذْ جَآءَهٗ ؕ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿۳۲﴾

32. सो उस शख़्स से बढ़ कर ज़ालिम कौन है जो अल्लाह पर झूट बांधे और सच को झुटलाए जबकि वोह उसके पास आ चुका हो, क्या काफ़िरों का ठिकाना दोज़ख़में नहीं है ?

وَالَّذِيْ جَآءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهٖۤ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ﴿۳۳﴾

33. और जो शख़्स सच ले कर आया और जिसने उसकी तस्दीक़ की वोही लोग ही तो मुत्तक़ी हैं।

لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ ذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۳۴﴾

34. उन के लिए वोह (सब ने'अमतें) उनके रबके पास (मौजूद) हैं जिनकी वोह ख़्वाहिश करेंगे, येही मोहसिनों की जज़ा है।

لِيُكَفِّرَ اللّٰهُ عَنْهُمْ اَسْوَاَ الَّذِيْ عَمِلُوْا وَيَجْزِيَهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۳۵﴾

35. ताकि अल्लाह उनकी खताओं को जो उन्होंने कीं उनसे दूर कर दे और उन्हें उनका सवाब उन नेकियों के बदले में अ़ता फ़रमाए जो वोह किया करते थे।

اَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهٗ ؕ وَيُخَوِّفُوْنَكَ بِالَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿۳۶﴾

36. क्या अल्लाह अपने बंदऐ (मुक़र्रब नबिय्ये मुकर्रम ﷺ) को क़ाफी नहीं है ? और येह (कुफ़्फ़ार) आपको अल्लाह के सिवा उन बुतों से (जिनकी येह पूजा करते हैं) डराते हैं, और जिसे अल्लाह (उसके क़ुबूले हक़ से इन्कार के बाइस) गुमराह ठेहरा दे तो उसे कोई हिदायत देनेवाला नहीं।

وَمَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّضِلٍّ ؕ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِعَزِيْزٍ ذِي انْتِقَامٍ ﴿۳۷﴾

37. और जिसे अल्लाह हिदायत से नवाज़ दे तो उसे कोई गुमराह करनेवाला नहीं । क्या अल्लाह बड़ा गालिब, इन्तिक़ाम लेने वाला नहीं है।

وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ؕ قُلْ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَنِيَ اللّٰهُ بِضُرٍّ هَلْ

38. और अगर आप उनसे दर्याफ्त फ़रमाएं कि आस्मानों और ज़मीन को किसने पैदा किया तो वोह ज़रूर कहेंगे अल्लाहने, आप फ़रमा दीजिऐ : भला येह बताओ कि जिन बुतों को तुम अल्लाहके सिवा पूजते हो अगर अल्लाह मुझे कोई तक्लीफ़ पहुंचाना चाहे तो क्या वोह (बुत) उसकी

هُنَّ كٰشِفٰتُ ضُرِّهٖٓ اَوْ اَرَادَنِيْ
بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكٰتُ رَحْمَتِهٖ ۭ
قُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ ۭ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ
الْمُتَوَكِّلُوْنَ ۝٣٨

(भेजी हुई) तक्लीफ़ को दूर कर सक्ते हैं या वोह मुझे रह्मत से नवाज़्ना चाहे तो क्या वोह (बुत) उसकी (भेजी हुई) रह्मत को रोक सक्ते हैं, फ़रमा दीजिए : मुझे अल्लाह काफ़ी है, उसी पर तवक्कल करनेवाले भरोसा करते हैं।

قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ
اِنِّيْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝٣٩

39. फ़रमा दीजिए : ऐ (मेरी) क़ौम तुम अपनी जगह अ़मल किए जाओ में (अपनी जगह) अ़मल कर रहा हूं, फिर अ़नक़रीब तुम (अंजाम को) जान लोगे।

مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَيَحِلُّ
عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ۝٤٠

40. (कि) किस पर अ़ज़ाब आता है जो उसे रुस्वा कर देगा और उस पर हमेशा काइम रेहनेवाला अ़ज़ाब उतरेगा।

اِنَّآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ لِلنَّاسِ
بِالْحَقِّ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَلِنَفْسِهٖ ۚ
وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَ
مَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ۝٤١ ع

41. बेशक हमने आप पर लोगों (की रहनुमाई) के लिए ह़क़ के साथ किताब उतारी, सो जिसने हिदायत पाई तो अपने ही फ़ाइदे केलिए और जो गुमराह हुआ तो अपने ही नुक़्सान के लिए गुमराह हुवा और आप उनके ज़िम्मेदार नहीं हैं।

اَللّٰهُ يَتَوَفَّى الْاَنْفُسَ حِيْنَ مَوْتِهَا
وَالَّتِيْ لَمْ تَمُتْ فِيْ مَنَامِهَا ۚ
فَيُمْسِكُ الَّتِيْ قَضٰى عَلَيْهَا الْمَوْتَ
وَيُرْسِلُ الْاُخْرٰٓى اِلٰٓى اَجَلٍ
مُّسَمًّى ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ
يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝٤٢

42. अल्लाह जानों को उनकी मौत के वक़्त क़ब्ज़ कर लेता है और उन (जानों) को जिन्हें मौत नहीं आई है उनकी नींद की ह़ालत में, फिर उनको रोक लेता है जिन पर मौत का हुक्म सादिर हो चुका हो और दूसरी (जानों) को मुक़र्ररा वक़्त तक छोड़े रख़ता है। बेशक उसमें उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो ग़ौरो फ़िक्र करते हैं।

اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
شُفَعَآءَ ۭ قُلْ اَوَلَوْ كَانُوْا لَا
يَمْلِكُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا يَعْقِلُوْنَ ۝٤٣

43. क्या उन्होंने अल्लाह के इज़्न के ख़िलाफ़ (बुतों को) सिफ़ारशी बना रखा है, फ़रमा दीजिए : अगरचे वोह किसी चीज़ के मालिक भी न हों और ज़ी अ़क़्ल भी न हों।

قُلْ لِّلّٰهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيْعًا ؕ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۴۴﴾

44. फ़रमा दीजिए : सब शफ़ाअ़त (का इज़्न) अल्लाह ही के इख्तेयार में है (जो उसने अपने मुकर्रबीन के लिए मखसूस कर रखा है), आस्मानों और ज़मीन की सल्तनत भी उसी की है, फिर तुम उसी की तरफ़ लौटाऐ जाओगे।

وَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَحْدَهُ اشْمَاَزَّتْ قُلُوْبُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ ۚ وَ اِذَا ذُكِرَ الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿۴۵﴾

45. और जब तन्हा अल्लाह ही का जिक्र क्या जाता है तू उन लोगों के दिल घुटन और कराहट का शिकार हो जाते हैं जो आखि़रत पर यकीन नहीं रखते, और जब अल्लाह के सिवा उन बुतों का जिक्र किया जाता है (जिन्हें वोह पूजते हैं) तो वोह अचानक खूश हो जाते हैं।

قُلِ اللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ عٰلِمَ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ اَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِيْ مَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿۴۶﴾

46. आप अर्ज कीजिऐ : ऐ अल्लाह ! आस्मानों और ज़मीन को अदम से वजूद में लाने वाले, गैब और ज़ाहिर का इल्म रखने वाले, तू ही अपने बंदों के दरमियान उन (उमूर) का फैसला फ़रमाएगा जिनमें वोह इख़्तिलाफ़ किया करते थे।

وَ لَوْ اَنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّ مِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ مِنْ سُوْٓءِ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَ بَدَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مَا لَمْ يَكُوْنُوْا يَحْتَسِبُوْنَ ﴿۴۷﴾

47. और अगर ज़ालिमों को वोह सबका सब (मालो मताअ़) मुयस्सर हो जाऐ जो रूऐ ज़मीनमें है और उसके साथ उसके बराबर (और भी मिल जाऐ) तो वोह उसे क़ियामत के दिन बुरे अ़ज़ाब (से नजात पाने) के बदले में दे डालेंगे, और अल्लाह की तरफ़ से उन के लिए वोह (अ़ज़ाब) ज़ाहिर होगा जिसका वोह गुमान भी नही करते थे।

وَ بَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا وَ حَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۴۸﴾

48. और उनके लिए वोह (सब) बुराइयां ज़ाहिर हो जाएंगी जो उन्होंने कमा रखी हैं और उन्हें वोह (अ़ज़ाब) घेर लेगा जिसका वोह मज़ाक़ उडाया करते थे।

فَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ۫ ثُمَّ اِذَا خَوَّلْنٰهُ نِعْمَةً مِّنَّا ۙ قَالَ

49. फिर जब इन्सानको कोई तक्लीफ़ पहुंचती है तो हमें पुकारता है फिर जब हम उसे अपनी तरफ़से कोई ने'अमत

إِنَّمَآ أُوتِيتُهُۥ عَلَىٰ عِلْمٍ ۚ بَلْ هِىَ فِتْنَةٌ وَلَـٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٩﴾

बख़्श देते हैं तो केहने लगता है कि येह ने'मत तो मुझे (मेरे) इल्मो तदबीर (की बिना) पर मिली है, बल्कि येह आज़्माइश है मगर उनमेंसे अक्सर लोग नहीं जानते।

قَدْ قَالَهَا ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَمَآ أَغْنَىٰ عَنْهُم مَّا كَانُوا۟ يَكْسِبُونَ ﴿٥٠﴾

50. फिल वाक़े' येह (बातें) वोह लोग भी किया करते थे जो उनसे पहले थे, सो जो कुछ वोह कमाते रहे उनके किसी काम न आ सका।

فَأَصَابَهُمْ سَيِّـَٔاتُ مَا كَسَبُوا۟ ۚ وَٱلَّذِينَ ظَلَمُوا۟ مِنْ هَـٰٓؤُلَآءِ سَيُصِيبُهُمْ سَيِّـَٔاتُ مَا كَسَبُوا۟ وَمَا هُم بِمُعْجِزِينَ ﴿٥١﴾

51. तो उन्हें वोह बुराइयां आ पहुंचीं जो उन्होंने कमा रखी थीं, और उन लोगों में से जो ज़ुल्म कर रहे हैं उन्हें (भी) अ़न क़रीब वोह बुराइयां आ पहुंचेंगी जो उन्हों ने कमा रखी हैं और वोह (अल्लाह को) आजिज़ नहीं कर सक्ते।

أَوَلَمْ يَعْلَمُوٓا۟ أَنَّ ٱللَّهَ يَبْسُطُ ٱلرِّزْقَ لِمَن يَشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَـَٔايَـٰتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٢﴾

52. और क्या वोह नहीं जानते कि अल्लाह जिस के लिए चाहता है रिज़्क कुशादा फ़रमा देता है और (जिस के लिए चाहता है) तंग कर देता है, बेशक उसमें ईमान रखनेवालों के लिए निशानियां हैं।

قُلْ يَـٰعِبَادِىَ ٱلَّذِينَ أَسْرَفُوا۟ عَلَىٰٓ أَنفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا۟ مِن رَّحْمَةِ ٱللَّهِ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ يَغْفِرُ ٱلذُّنُوبَ جَمِيعًا ۚ إِنَّهُۥ هُوَ ٱلْغَفُورُ ٱلرَّحِيمُ ﴿٥٣﴾

53. आप फ़रमा दीजिए : ऐ मेरे वोह बन्दो ! जिन्होंने अपनी जानों पर ज़ियादती कर ली है, तुम अल्लाह की रहमत से मायूस न होना, बेशक अल्लाह सारे गुनाह मुआफ़ फ़रमा देता है, वोह यक़ीनन बड़ा बख़्शनेवाला , बहुत रहम फ़रमानेवाला है।

وَأَنِيبُوٓا۟ إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَأَسْلِمُوا۟ لَهُۥ مِن قَبْلِ أَن يَأْتِيَكُمُ ٱلْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنصَرُونَ ﴿٥٤﴾

54. और तुम अपने रब की तरफ़ तौबा-व-इनाबत इख़्तियार करो और उसकी इताअ़त गुज़ार बन जाओ क़ब्ल इसके कि तुम पर अ़ज़ाब आ जाए फिर तुम्हारी कोई मदद नहीं की जाएगी।

وَٱتَّبِعُوٓا۟ أَحْسَنَ مَآ أُنزِلَ إِلَيْكُم مِّن رَّبِّكُم مِّن قَبْلِ أَن

55. और इस बेहतरीन (किताब) की पैरवी करो जो तुम्हारे रबकी तरफ़ से तुम्हारी जानिब उतारी गई है क़ब्ल

يَّأْتِيَكُمُ الْعَذَابُ بَغْتَةً وَّ اَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ﴿٥٥﴾

इसके कि तुम पर अचानक अ़ज़ाब आ जाए और तुम्हें ख़बर भी न हो।

اَنْ تَقُوْلَ نَفْسٌ يّٰحَسْرَتٰى عَلٰى مَا فَرَّطْتُّ فِيْ جَنْۢبِ اللّٰهِ وَ اِنْ كُنْتُ لَمِنَ السّٰخِرِيْنَ ﴿٥٦﴾

56. (ऐसा न हो) के कोई शख़्स केहने लगे : हाए अफ़सोस ! उस कमी और कोताही पर जो मैं ने अल्लाह के हक़्क़े (ताअ़त) मैं की और मैं यक़ीनन मज़ाक़ उड़ाने वालों में से था।

اَوْ تَقُوْلَ لَوْ اَنَّ اللّٰهَ هَدٰىنِيْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٥٧﴾

57. या केहने लगे कि अगर अल्लाह मुझे हिदायत देता तो मैं ज़रूर परहेज़गारों में से होता।

اَوْ تَقُوْلَ حِيْنَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ اَنَّ لِيْ كَرَّةً فَاَكُوْنَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٥٨﴾

58. या अ़ज़ाब देखते वक़्त केहने लगे कि अगर एकबार मेरा दुनिया में लौटना हो जाए तो मैं नैकूकारों में से हो जाऊं।

بَلٰى قَدْ جَآءَتْكَ اٰيٰتِيْ فَكَذَّبْتَ بِهَا وَ اسْتَكْبَرْتَ وَ كُنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٩﴾

59. (रब फ़रमाएगा :) हां ! बेशक मेरी आयतें तेरे पास आई थीं, सो तूने उन्हें झुटला दिया, और तूने तकब्बुर किया और तू काफ़िरों में से हो गया।

وَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ تَرَى الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلَى اللّٰهِ وُجُوْهُهُمْ مُّسْوَدَّةٌ ؕ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٦٠﴾

60. और आप क़ियामत के दिन उन लोगों को जिन्होंने अल्लाह पर झूट बोला है देखेंगे कि उनके चेहरे सियाह होंगे, क्या तकब्बुर करनेवालों का ठिकाना दोज़ख़में नहीं है।

وَ يُنَجِّي اللّٰهُ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا بِمَفَازَتِهِمْ ؗ لَا يَمَسُّهُمُ السُّوْٓءُ وَ لَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦١﴾

61.और अल्लाह ऐसे लोगों को जिन्होंने परहेज़गारी इख़्तियार की है उनकी काम्याबी के साथ नजात देगा न उन्हें कोई बुराई पहुंचेगी और न ही वोह ग़मगीन होंगे।

اَللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ؗ وَّ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿٦٢﴾

62. अल्लाह हर चीज़का ख़ालिक़ है और वोह हर चीज़ पर निगेहबान है।

لَهٗ مَقَالِیْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِؕ وَالَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِاٰیٰتِ اللّٰهِ اُولٰٓىِٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۶۳﴾

63. उसी के पास आस्मानों और ज़मीन की कुंजियां हैं, और जिन लोगों ने अल्लाहकी आयतों के साथ कुफ़्र किया वही लोग ही ख़सारा उठानेवाले हैं।

قُلْ اَفَغَیْرَ اللّٰهِ تَاْمُرُوْٓنِّیْٓ اَعْبُدُ اَیُّهَا الْجٰهِلُوْنَ ﴿۶۴﴾

64. फ़रमा दीजिऐ : ऐ जाहिलो ! क्या तुम मुझे गैरुल्लाह की परस्तिश करने का केहते हो।

وَلَقَدْ اُوْحِیَ اِلَیْكَ وَاِلَى الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَىِٕنْ اَشْرَكْتَ لَیَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِیْنَ ﴿۶۵﴾

65. और फ़िल हक़ीक़त आपकी तरफ़ (येह) वही की गई है और उन (पयगम्बरों) की तरफ़ (भी) जो आपसे पहले (मबऊस हुए) थे कि (ऐ इन्सान !) अगर तूने शिर्क किया तो यक़ीनन तेरा अ़मल बरबाद हो जाएगा और तू ज़रूर नुक़्सान उठानेवालों में से होगा।

بَلِ اللّٰهَ فَاعْبُدْ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِیْنَ ﴿۶۶﴾

66. बल्कि तू अल्लाह की इबादत कर और शुक्रगुजारों में से होजा।

وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ ۖ وَالْاَرْضُ جَمِیْعًا قَبْضَتُهٗ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ وَالسَّمٰوٰتُ مَطْوِیّٰتٌۢ بِیَمِیْنِهٖ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا یُشْرِكُوْنَ ﴿۶۷﴾

67. और उन्होंने अल्लाह की क़द्रो ता'ज़ीम नहीं की जैसे उसकी क़द्रो ता'ज़ीम का हक़ था और सारे की सारी ज़मीन क़ियामत के दिन उसकी मुट्ठी में होगी और सारे आस्मानी कुर्रे उसके दाएं हाथ (या'नी कब्ज़ए क़ुदरत) में लिपटे हूए होंगे, वोह पाक है और हर उस चीज़ से बुलंदो बरतर है जिसे येह लोग शरीक ठेहराते हैं।

وَنُفِخَ فِی الصُّوْرِ فَصَعِقَ مَنْ فِی السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِی الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ ثُمَّ نُفِخَ فِیْهِ اُخْرٰى فَاِذَا هُمْ قِیَامٌ یَّنْظُرُوْنَ ﴿۶۸﴾

68. और सूर फूंका जाएगा तो सब लोग जो आस्मानों में हैं और जो ज़मीन में हैं बेहोश हो जाएं गे सिवाए उसके जिसे अल्लाह चाहेगा, फिर उसमें दूसरा सूर फूंका जाएगा, सो वोह सब अचानक देखते हूऐ खडे हो जाएंगे।

وَاَشْرَقَتِ الْاَرْضُ بِنُوْرِ رَبِّهَا

69. और ज़मीने (मेहशर) अपने रबके नूरसे चमक

وَوُضِعَ الْكِتٰبُ وَجِايْٓءَ بِالنَّبِيّٖنَ وَالشُّهَدَآءِ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٦٩﴾

उठेगी और (हर एक के आ'माल की) किताब रख दी जाएगी और अंबिया को और गवाहों को लाया जाएगा और लोगों के दरमियान हक़्क़ो इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया जाएगा और उन पर कोई ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।

وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٠﴾

70. और हर शख़्स को उसके आ'माल का पूरा पूरा बदला दिया जाएगा और वोह खूब जानता है जो कुछ वोह करते हैं।

وَسِيْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى جَهَنَّمَ زُمَرًا ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْهَا فُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَتْلُوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ رَبِّكُمْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ؕ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧١﴾

71. और जिन लोगों ने कुफ़्र किया है वोह दोज़ख़की तरफ़ गिरोह दर गिरोह हांके जाएंगे, यहां तक कि जब वोह उस (जहन्नम) के पास पहुंचेंगे तो उसके दरवाजे खोल दिऐ जाएं गे और उसके दारोग़ा उनसे कहेंगे : क्या तुम्हारे पास तुम ही में से रसूल नहीं आए थे जो तुम पर तुम्हारे रबकी आयात पढ़ कर सुनाते थे और तुम्हें इस दिनकी पेशी से डराते थे ? वोह (दोज़ख़ी) कहेंगे : हां (आए थे), लेकिन काफिरों पर फ़रमाने अज़ाब साबित हो चुका होगा।

قِيْلَ ادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٧٢﴾

72. उनसे कहा जाएगा : दोज़ख़के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ, (तुम) उसमें हमेशा रेहनेवाले हो, सो गुरूर करनेवालों का ठिकाना कितना बुरा है।

وَسِيْقَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ اِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْهَا وَفُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوْهَا خٰلِدِيْنَ ﴿٧٣﴾

73- और जो लोग अपने रबसे डरते रहे उन्हें (भी) जन्नत की तरफ़ गिरोह दर गिरोह ले जाया जाएगा, यहां तक कि जब वोह उस (जन्नत) के पास पहुंचेंगे और उसके दरवाज़े (पहले ही) खोले जा चुके होंगे तो उनसे वहां के निगरान (ख़ुश आमदीद करते हुए) कहेंगे : तुम पर सलाम हो, तुम ख़ुशो खुर्रम रहो सो हमेशा रेहने के लिए उसमें दाख़िल हो जाओ।

وَ قَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ صَدَقَنَا وَعْدَهٗ وَ اَوْرَثَنَا الْاَرْضَ نَتَبَوَّاُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَآءُ ۚ فَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿۷۴﴾

74. और वोह (जन्नती) कहेंगे, तमाम ता'रीफें अल्लाह ही के लिए हैं जिसने हमसे अपना वा'दा सच्चा कर दिखाया और हमें सरज़मीने जन्नतका वारिस बना दिया के हम (इस) जन्नतमें जहां चाहे क़ियाम करें, सो नेक अ़मल करने वालों का कैसा अच्छा अज्र है।

وَ تَرَى الْمَلٰٓئِكَةَ حَآفِّيْنَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ ۚ وَ قُضِىَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَ قِيْلَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۷۵﴾

75. और (ऐ हबीब!) आप फरिश्तों को अर्श के इर्द गिर्द हलका बांधे हुए देखेंगे जो अपने रबकी हम्द के साथ तस्बीह करते होंगे, और (सब) लोगों के दरमियान हक़्क़ो इन्साफ के साथ फ़ैसला कर दिया जाएगा और कहा जाएगा के कुल हम्द अल्लाह ही के लाईक है जो तमाम जहानों का परवरदिगार है।

आयातुहा 85	40 सूरतुल मुअ्मिनि मक्कियय्तुन 60	रुकूआ़तुहा 9

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

حٰمٓ ﴿۱﴾

1. हा मीम (हक़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं)।

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿۲﴾

2. इस किताब का उतारा जाना अल्लाह की तरफ़से है जो ग़ालिब है, खूब जाननेवाला है।

غَافِرِ الذَّنْۢبِ وَ قَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ذِى الطَّوْلِ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿۳﴾

3. गुनाह बख़्शनेवाला (है) और तौबा कुबूल फ़रमाने वाला (है), सख़्त अ़ज़ाब देने वाला (है), बड़ा साहिबे करम है। उसके सिवा कोई मा'बूद नहीं, उसी की तरफ़ (सबको) लौटना है।

مَا يُجَادِلُ فِيْۤ اٰيٰتِ اللّٰهِ اِلَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَلَا يَغْرُرْكَ

4. अल्लाहकी आयतों में कोई झगडा नहीं करता सिवाए उन लोगों के जिन्होंने कुफ़्र किया, सो उनका शहरों में

تَقَلُّبُهُمْ فِي الْبِلَادِ ﴿٤﴾

(आज़ादी से) घूमना फिरना तुम्हें मुग़ालते में न डाल दे।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَّالْأَحْزَابُ مِنْ بَعْدِهِمْ ۖ وَهَمَّتْ كُلُّ أُمَّةٍ بِرَسُولِهِمْ لِيَأْخُذُوهُ ۖ وَجَادَلُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ فَأَخَذْتُهُمْ ۖ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ﴿٥﴾

5. उनसे पहले कौमे नूहने और उनके बाद (और) बहुतसी उम्मतोंने (अपने रसूलों को) झुटलाया और हर उम्मत ने अपने रसूलके बारेमें इरादा किया के उसे पकड़ (कर कत्ल कर दें या कैद कर) लें और बे बुनियाद बातों के ज़रीए झगड़ा किया ताकि उस (झगडे) के ज़रीए हक़ (का असर) ज़ाइल कर दें सो में ने उन्हें (अ़ज़ाबमें) पकड़ लिया, पस (मेरा) अ़ज़ाब कैसा था।

وَكَذَٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّهُمْ أَصْحَابُ النَّارِ ﴿٦﴾

وقف النبي صلى الله عليه وسلم — وقف لازم

6. और उसी तरह आपके रबका फ़रमान उन लोगों पर पूरा हो कर रहा जिन्होंने कुफ्र किया था बेशक वोह लोग दोज़ख़वाले हैं।

الَّذِينَ يَحْمِلُونَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهُ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُونَ بِهِ وَيَسْتَغْفِرُونَ لِلَّذِينَ آمَنُوا ۖ رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَّعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِينَ تَابُوا وَاتَّبَعُوا سَبِيلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ﴿٧﴾

7. जो (फ़रिश्ते) अर्शको उठाए हुए हैं और जो उसके इर्द गिर्द हैं वोह (सब) अपने रबकी हम्द के साथ तस्बीह करते हैं और उस पर ईमान रखते हैं और अह्ले ईमान के लिए दुआए मगफ़िरत करते हैं (येह अ़र्ज़ करते हैं कि) ऐ हमारे रब ! तू (अपनी) रहमत और इल्म से हर शै का इहाता फ़रमाए हुए है, पस उन लोगों को बख़्श दे जिन्होंने तौबा की और तेरे रास्ते की पैरवी की और उन्हें दोज़ख़के अ़ज़ाब से बचा ले।

رَبَّنَا وَأَدْخِلْهُمْ جَنَّاتِ عَدْنٍ الَّتِي وَعَدْتَهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ ۚ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٨﴾

8. ऐ हमारे रब ! और उन्हें (हमेशा रेहने के लिए) जन्नाते अद्न में दाख़िल फ़रमा, जिन का तूने उनसे वा'दा फ़रमा रखा है और उनके आबाओ अजदाद से और उनकी बीवियों से और उनकी औलादो ज़ुर्रिय्यत से जो नेक हों (उन्हें भी उनके साथ दाख़िल फ़रमा), बेशक तू ही ग़ालिब, बड़ी हिक्मत वाला है।

وَقِهِمُ السَّيِّاٰتِ ؕ وَمَنْ تَقِ السَّيِّاٰتِ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهٗ ؕ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٩﴾

9. और उनको बुराइयों (की सज़ा) से बचा ले और जिसे तू ने उस दिन बुराइयों (की सज़ा) से बचा लिया, सो बेशक तूने उस पर रह्म फ़रमाया, और येही तो अ़ज़ीम कामयाबी है।

ع

إِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنَادَوْنَ لَمَقْتُ اللّٰهِ اَكْبَرُ مِنْ مَّقْتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ اِذْ تُدْعَوْنَ اِلَى الْاِيْمَانِ فَتَكْفُرُوْنَ ﴿١٠﴾

10. बेशक जिन्होंने कुफ़्र किया उन्हें पुकार कर कहा जाएगा : (आज) तुम से अल्लाह की बेजारी, तुम्हारी जानों से तुम्हारी अपनी बेजारी से ज़ियादह बढ़ी हुई है, जबकि तुम ईमान की तरफ़ बुलाए जाते थे मगर तुम इन्कार करते थे।

قَالُوْا رَبَّنَآ اَمَتَّنَا اثْنَتَيْنِ وَاَحْيَيْتَنَا اثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوْبِنَا فَهَلْ اِلٰى خُرُوْجٍ مِّنْ سَبِيْلٍ ﴿١١﴾

11. वोह कहेंगे : ऐ हमारे रब ! तू ने हमें दोबार मौत दी और तूने हमें दोबार (ही) ज़िन्दगी बख़्शी, सो (अब) हम अपने गुनाहोंका एतिराफ़ करते हैं, पस क्या (अ़ज़ाब से बच) निकलने की तरफ़ कोई रास्ता है ?

ذٰلِكُمْ بِاَنَّهٗٓ اِذَا دُعِيَ اللّٰهُ وَحْدَهٗ كَفَرْتُمْ ۚ وَاِنْ يُّشْرَكْ بِهٖ تُؤْمِنُوْا ؕ فَالْحُكْمُ لِلّٰهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيْرِ ﴿١٢﴾

12. (उन से कहा जाएगा : नहीं) येह (दाइमी अ़ज़ाब) इस वजह से है कि जब अल्लाह को तन्हा पुकारा जाता था तो तुम इन्कार करते थे और अगर उसके साथ (किसी को) शरीक ठेहराया जाता तो तुम मान जाते थे, पस (अब) अल्लाह ही का हुक्म है जो (सब से) बुलंदो बाला है

هُوَ الَّذِيْ يُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ وَيُنَزِّلُ لَكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ رِزْقًا ؕ وَمَا يَتَذَكَّرُ اِلَّا مَنْ يُّنِيْبُ ﴿١٣﴾

13. वोही है जो तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है और तुम्हारे लिए आस्मानसे रिज़्क़ उतारता है, और नसीहत सिर्फ़ वोही कुबूल करता है जो रुजूअ़ (इ-लल्लाह) में रेहता है।

فَادْعُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿١٤﴾

14. पस तुम अल्लाह की इबादत उसके लिए ताअ़तो बंदगीको ख़ालिस रखते हुए किया करो, अगरचे काफ़िरों को ना गवार ही हो।

رَفِيْعُ الدَّرَجٰتِ ذُو الْعَرْشِ ۚ يُلْقِي الرُّوْحَ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ

15. दरज़ात बुलन्द करनेवाला, मालिके अ़र्श,अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है रूह़ (या'नी वह़ी) अपने

مِنْ عِبَادِهٖ لِيُنْذِرَ يَوْمَ التَّلَاقِ ﴿١٥﴾

हुक्म से इल्का फ़रमाता है ताकि वोह (लोगोंको) इकट्ठा होनेवाले दिनसे डराए।

يَوْمَ هُمْ بٰرِزُوْنَ ۚ لَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ مِنْهُمْ شَيْءٌ ؕ لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ؕ لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿١٦﴾

16. जिस दिन वोह सब (कब्रोसे) निकल पड़ेंगे और उन (के आ'माल) से कुछ भी अल्लाह पर पोशीदा न रहेगा, (इर्शाद होगा) आज किसकी बादशाही है? (फिर इर्शाद होगा) अल्लाह ही की जो यक्ता है सब ग़ालिब है।

اَلْيَوْمَ تُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ ؕ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿١٧﴾

17. आज के दिन हर जानको उसकी कमाई का बदला दिया जाएगा, आज कोई ना इन्साफी न होगी, बेशक अल्लाह बहुत जल्द हिसाब लेनेवाला है।

وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْاٰزِفَةِ اِذِ الْقُلُوْبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كٰظِمِيْنَ ۚ مَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ حَمِيْمٍ وَّلَا شَفِيْعٍ يُّطَاعُ ﴿١٨﴾

18. और आप उनको क़रीब आने वाली आफ़त के दिन से डराएं जब जब्ते गम से कलेजे मुंह को आएंगे । ज़ालिमों के लिए न कोई महरबान दोस्त होगा और न कोई सिफ़ारशी जिस की बात मानी जाए।

يَعْلَمُ خَآئِنَةَ الْاَعْيُنِ وَمَا تُخْفِى الصُّدُوْرُ ﴿١٩﴾

19. वोह ख़्यानत करने वाली निगाहों को जानता और (उन बातों को भी) जो सीने (अपने अंदर) छुपाए रख़ते हैं।

وَاللّٰهُ يَقْضِيْ بِالْحَقِّ ؕ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَقْضُوْنَ بِشَيْءٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ﴿٢٠﴾ ع

20. और अल्लाह हक़ के साथ फ़ैसला फ़रमाता है, और जिन (बुतों) को येह लोग अल्लाह के सिवा पूजते हैं वोह कुछ भी फ़ैसला नहीं कर सकते, बेशक अल्लाह ही सुननेवाला, देखनेवाला है।

اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ كَانُوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَانُوْا هُمْ اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَّاٰثَارًا فِى الْاَرْضِ فَاَخَذَهُمُ

21. और क्या येह लोग ज़मीन में चले फिरे नहीं कि देख़ लेते उन लोगों का अंजाम कैसा हुआ जो उनसे पहले थे, वोह लोग क़ुव्वत में (भी) इनसे बहुत ज़ियादह थे और उन आसारो निशानात में (भी) जो ज़मीन में (छोड़ गए) थे। फिर अल्लाहने उनके गुनाहों की वजह से उन्हें पकड़ लिया,

اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ﴿٢١﴾

और उनके लिए अल्लाह (के अ़ज़ाब) से बचाने वाला कोई न था।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَكَفَرُوْا فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ قَوِيٌّ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢٢﴾

22. येह इस वजह से हुआ कि उनके रसूल खुली निशानियां ले कर आए थे फिर उन्होंने कुफ्र किया तो अल्लाह ने उन्हें (अ़ज़ाबमें) पकड़ लिया, बेशक वोह बडी कुव्वतवाला, सख्त अ़ज़ाब देनेवाला है।

وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا وَ سُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۙ﴿٢٣﴾

23. और बेशक हमने मूसा (عليه السلام) को अपनी निशानियों और वाज़ेह़ दलीलके साथ भेजा।

اِلٰى فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَ قَارُوْنَ فَقَالُوْا سٰحِرٌ كَذَّابٌ ﴿٢٤﴾

24. फ़िरऔन और हामान और क़ारून की तरफ़, तो वोह केहने लगे कि येह जादूगर है, बड़ा झूटा है।

فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا اقْتُلُوْٓا اَبْنَآءَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ وَ اسْتَحْيُوْا نِسَآءَهُمْ ؕ وَ مَا كَيْدُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ﴿٢٥﴾

25. फिर जब वोह हमारी बारगाह से पैग़ामे हक़ ले कर उनके पास आए तो उन्होंने कहा : उन लोगों के लड़कों को क़त्ल कर दो जो उनके साथ ईमान लाए हैं और उनकी औ़रतों को ज़िन्दा छोड़ दो, और काफ़िरों की पुर फ़रेब चालें सिर्फ़ हलाकत ही थीं।

وَ قَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُوْنِيْٓ اَقْتُلْ مُوْسٰى وَلْيَدْعُ رَبَّهٗ ۚ اِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ يُّبَدِّلَ دِيْنَكُمْ اَوْ اَنْ يُّظْهِرَ فِي الْاَرْضِ الْفَسَادَ ﴿٢٦﴾

26. और फ़िरऔ़न बोला : मुझे छोड़ दो में मूसा को क़त्ल कर दूं और उसे चाहिए कि अपने रबको बुला ले। मुझे ख़ौफ़ है कि वोह तुम्हारा दीन बदल देगा या मुल्क (मिसर)में फ़साद फैला देगा।

وَ قَالَ مُوْسٰٓى اِنِّيْ عُذْتُ بِرَبِّيْ وَ رَبِّكُمْ مِّنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَّا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿٢٧﴾

27. और मूसा (عليه السلام) ने कहा : मैं अपने रब और तुम्हारे रबकी पनाह ले चुका हुं, हर मुतकब्बिर शख़्स से जो यौमे हिसाब पर ईमान नहीं रखता।

وَ قَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ ۖ مِّنْ اٰلِ

28. और मिल्लते फ़िरऔनमें से एक मर्दे मोमिन ने कहा

فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ إِيْمَانَهٗٓ أَتَقْتُلُوْنَ
رَجُلًا أَنْ يَّقُوْلَ رَبِّيَ اللّٰهُ وَقَدْ
جَآءَكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ مِنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَ
إِنْ يَّكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهٗ ۚ وَإِنْ
يَّكُ صَادِقًا يُّصِبْكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ
يَعِدُكُمْ ؕ إِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ
هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ ﴿٢٨﴾

जो अपना ईमान छुपाऐ हुए था : क्या तुम एक शख़्स को क़त्ल करते हो (सिर्फ) इस लिए कि वोह केहता है मेरा रब अल्लाह है और वोह तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से वाज़ेह़ निशानियां ले कर आया है, और अगर (बिल फ़र्ज) वोह झूटा है तो उसके झूट का बोझ उसी पर होगा और अगर वोह सच्चा है तो जिस क़दर अ़ज़ाब का वोह तुमसे वा'दा कर रहा है तुम्हें पहोंच कर रहेगा, बेशक अल्लाह उसे हिदायत नहीं देता जो हद से गुज़रनेवाला सरासर झूटा हो।

يٰقَوْمِ لَكُمُ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ظٰهِرِيْنَ
فِي الْأَرْضِ ؗ فَمَنْ يَّنْصُرُنَا مِنْۢ
بَأْسِ اللّٰهِ إِنْ جَآءَنَا ؕ قَالَ
فِرْعَوْنُ مَآ أُرِيْكُمْ إِلَّا مَآ أَرٰى وَ
مَآ أَهْدِيْكُمْ إِلَّا سَبِيْلَ الرَّشَادِ ﴿٢٩﴾

29. ऐ मेरी क़ौम! आज के दिन तुम्हारी हुकूमत है (तुम ही) सर ज़मीने (मिस्र) में इक्तिदार पर हो फिर कौन हमें अल्लाह के अ़ज़ाब से बचा सक्ता है, अगर वोह (अ़ज़ाब) हमारे पास आ जाए। फ़िरऔनने कहा : मैं तुम्हें फ़क़त वोही बात समझता हूं जिसे मैं खुद (सहीह़) समझता हूं और मैं तुम्हें भलाई की राह के सिवा (और कोई रास्ता) नहीं दिखाता।

وَقَالَ الَّذِيْٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ إِنِّيْٓ أَخَافُ
عَلَيْكُمْ مِّثْلَ يَوْمِ الْأَحْزَابِ ﴿٣٠﴾

30. और उस शख़्स ने कहा जो ईमान ला चुका था : ऐ मेरी क़ौम! में तुम पर (भी अगली) क़ौमों के रोज़े बद की तरह (अ़ज़ाब) का खौफ़ रखता हूं।

مِثْلَ دَأْبِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ
وَالَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ؕ وَمَا اللّٰهُ
يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعِبَادِ ﴿٣١﴾

31. क़ौमे नूह़ और आ़द और समूद और जो लोग उनके बाद हुए (उन) के दस्तूरे सज़ा की तरह, और अल्लाह बंदों पर हरगिज़ ज़ियादती नहीं चाहता।

وَيٰقَوْمِ إِنِّيْٓ أَخَافُ عَلَيْكُمْ يَوْمَ
التَّنَادِ ﴿٣٢﴾

32. और ऐ क़ौम! मैं तुम पर चीख़ो पुकार के दिन (या'नी क़ियामत) से खौफ़ ज़दा हूं।

يَوْمَ تُوَلُّوْنَ مُدْبِرِيْنَ ۚ مَا لَكُمْ

33. जिस दिन तुम पीठ फेर कर भागोगे और तुम्हें अल्लाह

مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٣٣﴾

(के अज़ाब) से बचाने वाला कोई नहीं होगा और जिसे अल्लाह गुमराह ठेहरा दे तो उस के लिए कोई हादी-व-रहनुमा नहीं होता।

وَلَقَدْ جَآءَكُمْ يُوْسُفُ مِنْ قَبْلُ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا زِلْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّمَّا جَآءَكُمْ بِهٖ ؕ حَتّٰۤى اِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ لَنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِهٖ رَسُوْلًا ؕ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ مُّرْتَابُ ۚۖ ﴿٣٤﴾

34. और (ऐ अह्ले मिस्र !) बेशक तुम्हारे पास इससे पहले यूसुफ़ (عليه السلام) वाजेह निशानियों के साथ आ चुके और तुम हमेशा उन (निशानयों) के बारे में शक में (पड़े) रहे जो वोह तुम्हारे पास लाए थे, यहां तक कि जब वोह वफ़ात पा गए तो तुम केहने लगे कि अब अल्लाह उनकेबाद हरगिज़ किसी रसूल को नहीं भेजेगा। उसी तरह अल्लाह उस शख़्स को गुमराह ठेहरा देता है जो हद से गुज़रने वाला शक करने वाला हो।

الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْۤ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ؕ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ وَعِنْدَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ﴿٣٥﴾

35. जो लोग अल्लाह की आयतों में झगड़ा करते हैं बिगैर किसी दलील के जो उनके पास आई हो, (येह झगड़ा करना) अल्लाह के नजदीक और ईमानवालों के नज़दीक सख़्त बेज़ारी (की बात) है, इसी तरह अल्लाह हर एक मग़रूर (और) सरकश के दिल पर मोहर लगा देता है।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يٰهَامٰنُ ابْنِ لِيْ صَرْحًا لَّعَلِّيْۤ اَبْلُغُ الْاَسْبَابَ ۙ ﴿٣٦﴾

36. और फ़िरऔनने कहा : ऐ हामान ! तू मेरे लिए एक ऊंचा महल बना दे ताकि में (उस पर चढ़ कर) रास्तों पर जा पहोंचूं।

اَسْبَابَ السَّمٰوٰتِ فَاَطَّلِعَ اِلٰۤى اِلٰهِ مُوْسٰى وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ كَاذِبًا ؕ وَكَذٰلِكَ زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ وَصُدَّ عَنِ السَّبِيْلِ ؕ وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ اِلَّا فِيْ تَبَابٍ ﴿٣٧﴾ ع

37. (या'नी) आस्मानों के रास्तों पर, फिर मैं मूसा के खुदा को झांक कर देख सकूं और मैं तो उसे झूटा ही समझता हूं, और इस तरह फ़िरऔनके लिए उसकी बद अ़मली ख़ुशनुमा कर दी गई और वोह (अल्लाह की) राह से रोक दिया गया, और फ़िरऔनकी पुर फ़रेब तदबीर महज़ हलाकत ही में थी।

38. और उस शख़्स ने कहा जो ईमान ला चुका था : ऐ मेरी क़ौम! तुम मेरी पैरवी करो में तुम्हें ख़ैरो हिदायत की राह पर लगा दूंगा।

وَقَالَ الَّذِيٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوْنِ اَهْدِكُمْ سَبِيْلَ الرَّشَادِ ﴿٣٨﴾

39. ऐ मेरी क़ौम ! येह दनिया की ज़िन्दगी बस (चंद रोजा) फ़ाइदा उठाने के सिवा कुछ नहीं और बेशक आख़िरत ही हमेशा रेहने का घर है।

يٰقَوْمِ اِنَّمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ ۡ وَّ اِنَّ الْاٰخِرَةَ هِيَ دَارُ الْقَرَارِ ﴿٣٩﴾

40. जिसने बुराई की तो उसे बदला नहीं दिया जाएगा मगर सिर्फ़ उसी कदर, और जिसने नेकी की, ख़्वाह मर्द हो या औ़रत और मोमिन भी हो तो वोही लोग जन्नत में दाख़िल होंगे उन्हें वहां बे हिसाब रिज़्क दिया जाएगा।

مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزٰٓى اِلَّا مِثْلَهَا ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُوْنَ فِيْهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٤٠﴾

41. और ऐ मेरी क़ौम! मुझे क्या हुआ है कि में तुम्हें नजात की तरफ़ बुलाता हुं और तुम मुझे दोज़ख़की तरफ़ बुलाते हो।

وَيٰقَوْمِ مَا لِيْٓ اَدْعُوْكُمْ اِلَى النَّجٰوةِ وَتَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَى النَّارِ ﴿٤١﴾

النصف

42. तुम मुझे (येह) दा'वत देते हो कि में अल्लाह के साथ कुफ्र करूं और उसके साथ उस चीज़को शरीक ठेहराऊं जिसका मुझे कुछ इल्म भी नहीं और मैं तुम्हें ख़ुदाए गालिब की तरफ़ बुलाता हुं जो बड़ा बख़्शनेवाला है।

تَدْعُوْنَنِيْ لِاَكْفُرَ بِاللّٰهِ وَاُشْرِكَ بِهٖ مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ عِلْمٌ ۡ وَّ اَنَا اَدْعُوْكُمْ اِلَى الْعَزِيْزِ الْغَفَّارِ ﴿٤٢﴾

43. सच तो येह है कि तुम मुझे जिस चीज की तरफ़ बुला रहे हो वोह न तो दुनिया में पुकारे जाने के क़ाबिल है और न (ही) आख़िरत में और बेशक हमारा वापस लौटना अल्लाह ही की तरफ़ है और यक़ीनन ह़द से गुजरनेवाले ही दोज़ख़ी हैं।

لَا جَرَمَ اَنَّمَا تَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَيْهِ لَيْسَ لَهٗ دَعْوَةٌ فِي الدُّنْيَا وَلَا فِي الْاٰخِرَةِ وَاَنَّ مَرَدَّنَآ اِلَى اللّٰهِ وَاَنَّ الْمُسْرِفِيْنَ هُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ﴿٤٣﴾

44. सो तुम अ़नक़रीब (वोह बातें) याद करोगे जो मैं तुम

فَسَتَذْكُرُوْنَ مَآ اَقُوْلُ لَكُمْ ۭ

وَ اُفَوِّضُ اَمْرِيْۤ اِلَى اللّٰهِؕ اِنَّ
اللّٰهَ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ۝٤٤

से केह रहा हूं, और मैं अपना मुआमला अल्लाह के सुपुर्द करता हूं, बेशक अल्लाह बन्दों को देखनेवाला है।

فَوَقٰىهُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِ مَا مَكَرُوْا وَ
حَاقَ بِاٰلِ فِرْعَوْنَ سُوْٓءُ الْعَذَابِۚ ۝٤٥

45. फिर अल्लाहने उसे उन लोगों की बुराइयों से बचा लिया जिनकी वोह तदबीर कर रहे थे और आले फ़िरऔनको बुरे अज़ाबने घेर लिया।

اَلنَّارُ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَّ
عَشِيًّاۚ وَ يَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ۫
اَدْخِلُوْۤا اٰلَ فِرْعَوْنَ اَشَدَّ الْعَذَابِ ۝٤٦

46. आतिशे दोज़ख़के सामने येह लोग सुब्हो शाम पेश किए जाते हैं और जिस दिन क़ियामत बपा होगी (तो हुक्म होगा), आले फ़िरऔनको सख़्त तरीन अज़ाबमें दाख़िल कर दो।

وَ اِذْ يَتَحَآجُّوْنَ فِي النَّارِ فَيَقُوْلُ
الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْۤا اِنَّا
كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ
عَنَّا نَصِيْبًا مِّنَ النَّارِ ۝٤٧

47..और जब वोह लोग दोज़ख़में बाहम झगड़ेंगे तो कमज़ोर लोग उनसे कहेंगे जो (दुनिया में) बड़ाई ज़ाहिर करते थे कि हम तो तुम्हारे पीरोकार थे सो क्या तुम आतिशे दोज़ख़का कुछ हिस्सा (ही) हम से दूर कर सक्ते हो।

قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْۤا اِنَّا كُلٌّ
فِيْهَاۤ ۙ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ
الْعِبَادِ ۝٤٨

48. तकब्बुर करनेवाले कहेंगे : हम सब ही उसी (दोज़ख़) में पड़े हैं बेशक अल्लाहने बंदों के दरमियान हत्मी फ़ैसला फ़रमा दिया है।

وَ قَالَ الَّذِيْنَ فِي النَّارِ لِخَزَنَةِ
جَهَنَّمَ ادْعُوْا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا
يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ ۝٤٩

49. और आगमें पड़े हुए लोग दोज़ख़के दारोगों से कहेंगे : अपने रब से दुआ करो के वोह किसी दिन तो हम से अज़ाब हलका कर दे।

قَالُوْۤا اَوَ لَمْ تَكُ تَاْتِيْكُمْ رُسُلُكُمْ
بِالْبَيِّنٰتِؕ قَالُوْا بَلٰىؕ قَالُوْا فَادْعُوْاۚ
وَمَا دُعٰٓؤُا الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ۝٥٠

ع ١٣ ١٠

50. वोह कहेंगे : क्या तुम्हारे पास तुम्हारे पयग़म्बर वाज़ेह निशानियां ले कर नहीं आए थे, वोह कहेंगे : क्यों नहीं, (फिर दारोगे) कहेंगे : तुम खुद ही दुआ करो और काफ़िरों की दुआ (हमेंशा) राएगां ही होगी।

إِنَّا لَنَنصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُومُ الْأَشْهَادُ ﴿٥١﴾

51 बेशक हम अपने रसूलों की और ईमान लानेवालों की दुन्यवी ज़िन्दगी में (भी) मदद करते हैं और उस दिन (भी करेंगे) जब गवाह खड़े होंगे।

يَوْمَ لَا يَنفَعُ الظَّالِمِينَ مَعْذِرَتُهُمْ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ ﴿٥٢﴾

52. जिस दिन ज़ालिमों को उनकी मा'जेरत फ़ाइदा नहीं देगी और उनके लिए फिटकार होगी और उन के लिए (जहन्नम का) बुरा घर होगा।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْهُدَىٰ وَأَوْرَثْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ الْكِتَابَ ﴿٥٣﴾

53. और बेशक हमने मूसा (عليه السلام) को (किताबे) हिदायत अ़ता की और हमने (उनके बाद) बनी इसराईल को (उस) किताब का वारिस बनाया।

هُدًى وَذِكْرَىٰ لِأُولِي الْأَلْبَابِ ﴿٥٤﴾

54. जो हिदायत है और अ़क्लवालों के लिए नसीहत है।

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعَشِيِّ وَالْإِبْكَارِ ﴿٥٥﴾

55. पस आप सब्र कीजिए, बेशक अल्लाह का वा'दा ह़क़ है और अपनी उम्मत के गुनाहों की बख़्शिश तलब कीजिऐ ★ और सुब्हो शाम अपने रबकी ह़म्दके साथ तस्बीह़ किया कीजिए।

★ ("लि-ज़ंबि-क" में "उम्मत" मुज़ाफ़ है जो कि महज़ूफ़ है लिहाज़ा इस बिना पर यहां वस्तगफ़िर लि-ज़ंबि-क से मुराद उम्मत के गुनाह हैं। इमाम नस्फ़ी, इमाम कुर्तबी और अल्लामा शौकानी ने येही मा'ना बयान किया है। ह़वालाजात मुलाहिज़ा करें।

1. (वस्तगफ़िर लि-ज़ंबि-क) अय्यु लि-ज़ंबि उम्मति-क "या'नी अपनी उम्मतके गुनाह" । (नस्फी, मदारिकुत तन्ज़ील व ह़काइक़ुत ता'वील, 4 : 359)

2. (वस्तगफ़िर लि-ज़ंबि-क) क़ी-ल : लि-ज़ंबि उम्मति-क ह़ज़फ़ुल मुज़ाफ़ु व अक़ीमुल मुज़ाफ़ु इलैहि मक़ामुहू "वस्तगफ़िर लि-ज़ंबि-क" के बारेमें कहा गया है कि इससे मुराद उम्मत के गुनाह हैं। यहां मुज़ाफ़ को ह़ज़फ़ कर के मुज़ाफ़ इलैहको उसका क़ाइम मुक़ाम कर दिया गया।"
(क़ुर्तुबी, अल जामिउ़ल अह़कामुल क़ुरआन, 15 : 324)

3. "वक़ी-ल लि-ज़ंबि उम्मति-क फ़ी ह़क़्क़ि-क " येह भी कहा गया है कि लि-ज़ंबि-क या'नी आप अपने ह़क़में उम्मत से सरज़द होनेवाली ख़ताओं की।" (इब्ने ह़य्यान उन्दुलुसी, अल बह़रुल मुहीत, 7 :471)

4. (वस्तगफ़िर लि-ज़ंबि-क) कीलल मुरादु ज़ंबि उम्मति-क फहु-व अ़ला ह़ज़फ़ुल मुज़ाफ़ " कहा गया है कि इससे मुराद उम्मतके गुनाह हैं और येह मा'ना मुज़ाफ़ के महज़ूफ़ होने की बिना पर है।" (अल्लामा शौकानी, फ़त्हुल क़दीर, 4 : 497)

إِنَّ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ بِغَيْرِ سُلْطَانٍ أَتَاهُمْ ۙ إِنْ فِي صُدُورِهِمْ إِلَّا كِبْرٌ مَا هُمْ بِبَالِغِيهِ ۚ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ ۖ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ﴿٥٦﴾

56. बेशक जो लोग अल्लाह की आयतों में झगड़ा करते हैं बिग़ैर किसी दलील के जो उनके पास आई हो, उनके सीनों में सिवाए गुरूर के और कुछ नहीं है वोह उस (हक़ीक़ी बरतरी) तक पहुंचनेवाले ही नहीं । पस आप (उनके शर्र से) अल्लाह की पनाह मांगते रहिए, बेशक वोही खूब सुननेवाला खूब देखनेवाला है।

لَخَلْقُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ أَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٧﴾

57. यक़ीनन आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश इन्सानोकी पैदाइश से कहीं बढ़ कर है लेकिन अक्सर लोग इल्म नहीं रखते।

وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ ۙ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَلَا الْمُسِيءُ ۚ قَلِيلًا مَا تَتَذَكَّرُونَ ﴿٥٨﴾

58.और अँधा और बीना बराबर हो सकते सो (उसी तरह) जो लोग ईमान लाए और नेक आ'माल किए (वोह) और बदकार भी (बराबर) नहीं हैं । तुम बहुत ही कम नसीहत क़ुबूल करते हो।

إِنَّ السَّاعَةَ لَآتِيَةٌ لَا رَيْبَ فِيهَا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٥٩﴾

59- बेशक क़ियामत ज़रूर आनेवाली है, इसमें कोई शक नहीं । लेकिन अक्सर लोग यक़ीन नहीं रखते।

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ ﴿٦٠﴾

60. और तुम्हारे रबने फ़रमाया है तुम लोग मुझ से दुआ किया करो में ज़रूर क़ुबूल करूंगा, बेशक जो लोग मेरी बंदगी से सरकशी करते हैं वोह अनक़रीब दोज़ख़में ज़लील हो कर दाखिल होंगे।

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٦١﴾

61. अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई ताकि तुम इसमें आराम पाओ और दिन को देखने के लिए रौशन बनाया । बेशक अल्लाह लोगों पर फ़ज़्ल फ़रमानेवाला है लेकिन अक्सर लोग शुक्र अदा नहीं करते।

ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ

62. येही अल्लाह तुम्हारा रब है जो हर चीज़का ख़ालिक़

لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۖ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٦٢﴾ كَذٰلِكَ يُؤْفَكُ الَّذِيْنَ كَانُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ﴿٦٣﴾

है, उसके सिवा कोई मा'बूद नहीं फिर तुम कहां भटकते फिरते हो।

63. इसी तरह वोह लोग बेहके फिरते थे जो अल्लाह की आयतों का इन्कार किया करते थे।

اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ قَرَارًا وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً وَّصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚۖ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٤﴾

64. अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को क़रारगाह बनाया और आस्मान को छत बनाया और तुम्हें शक्लो सूरत बख़्शी फिर तुम्हारी सूरतों को अच्छा किया और तुम्हें पाकीज़ा चीजों से रोज़ी बख़्शी, येही अल्लाह तुम्हारा रब है। पस अल्लाह बड़ी बरकत वाला है जो सब जहानों का रब है।

هُوَ الْحَيُّ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٥﴾

65. वोही जिन्दा है, उसके सिवा कोई मा'बूद नहीं, पस तुम उसकी इबादत उसके लिए ताअतो बंदगी को खालिस रखते हुऐ किया करो, तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जो सब जहानों का परवरदिगार है।

قُلْ اِنِّيْ نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَمَّا جَآءَنِيَ الْبَيِّنٰتُ مِنْ رَّبِّيْ ۫ وَاُمِرْتُ اَنْ اُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٦﴾

66. फ़रमा दीजिए : मुझे मना' किया गया है के में उनकी परस्तिश करूं जिन बुतोंकी तुम अल्लाह को छोड कर परस्तिश करते हो जबकि मेरे पास मेरे रबकी जानिब से वाज़ेह् निशानियां आ चुकी हैं और मुझे हुक्म दिया गया है के तमाम जहानों के परवरदिगार की फ़रमां बरदारी करों।

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْٓا اَشُدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُوْنُوْا شُيُوْخًا ۚ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى مِنْ قَبْلُ وَلِتَبْلُغُوْٓا اَجَلًا مُّسَمًّى وَّلَعَلَّكُمْ

67. वोही है जिसने तुम्हारी (कीमियाई ह्यात की इब्तिदाई) पैदाईश मिट्टी से की फिर (हयातियाती इब्तिदा) एक नुत्फ़ा (या'नी एक खुल्ये) से, फिर रह्मे मादर में मोअ़ल्लक़ वुजूद से, फिर (बिलाआखिर) वोही तुम्हें बच्चा बनकर निकालता है फिर (तुम्हें नश्वोनुमा देता है) ताकि तुम अपनी जवानी को पहुंच जाओ। फिर (तुम्हें उम्र की मोहलत देता है) ताकि तुम बूढ़े हो जाओ और तुम में से कोई (बुढ़ापे से) पहले ही वफ़ात पा जाता

تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾

है और (येह सब कुछ इस लिए किया जाता है) ताकि तुम (अपनी अपनी) मुकर्ररा मीआ़द तक पहुंच जाओ और इस लिए (भी) कि तुम समझ सको।

هُوَ الَّذِیْ یُحْیٖ وَ یُمِیْتُ ۚ فَاِذَا قَضٰۤی اَمْرًا فَاِنَّمَا یَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَیَكُوْنُ ﴿٦٨﴾

68. वोही है जो ज़िन्दगी देता है और मौत देता है फिर जब वोह किसी का फ़ैसला फ़रमाता है तो सिर्फ़ उसे फ़रमा देता है हो जा पस वोह हो जाता है।

اَلَمْ تَرَ اِلَی الَّذِیْنَ یُجَادِلُوْنَ فِیْۤ اٰیٰتِ اللّٰهِ ؕ اَنّٰی یُصْرَفُوْنَ ﴿٦٩﴾

69. क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा जो अल्लाह की आयतों में झगडा करते हैं, वोह कहां भटके जा रहे हैं।

اَلَّذِیْنَ كَذَّبُوْا بِالْكِتٰبِ وَ بِمَاۤ اَرْسَلْنَا بِهٖ رُسُلَنَا ۛ فَسَوْفَ یَعْلَمُوْنَ ﴿٧٠﴾

70. जिन लोगोंने किताबको (भी) झुटला दिया और उन (निशानियों) को (भी) जिनके साथ हमने अपने रसूलों को भेजा था, तो वोह अ़नक़रीब (अपना अंजाम) जान लेंगे।

اِذِ الْاَغْلٰلُ فِیْۤ اَعْنَاقِهِمْ وَ السَّلٰسِلُ ؕ یُسْحَبُوْنَ ﴿٧١﴾

71. जब उनकी गरदनों में तौ़क़ और ज़ंजीरें होंगी, वोह घसीटे जा रहे होंगे।

فِی الْحَمِیْمِ ۙ ثُمَّ فِی النَّارِ یُسْجَرُوْنَ ﴿٧٢﴾

72. खौलते हुए पानी में, फिर आग में (ईंधन के तौर पर) झोंक दीए जाएगे।

ثُمَّ قِیْلَ لَهُمْ اَیْنَ مَا كُنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ﴿٧٣﴾

73. फिर उनसे कहा जाएगा : कहां हैं वोह (बुत) जिन्हें तुम शरीक ठेहराते थे।

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا بَلْ لَّمْ نَكُنْ نَّدْعُوْا مِنْ قَبْلُ شَیْـًٔا ؕ كَذٰلِكَ یُضِلُّ اللّٰهُ الْكٰفِرِیْنَ ﴿٧٤﴾

74. अल्लाह के सिवा, वोह कहेंगे : वोह हम से गुम हो गए बल्कि हम तो पहले किसी भी चीज की परस्तिश नहीं करते थे, उसी तरह अल्लाह काफ़िरों को गुमराह ठेहराता है।

ذٰلِكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَفْرَحُوْنَ فِی الْاَرْضِ بِغَیْرِ الْحَقِّ وَ بِمَا كُنْتُمْ تَمْرَحُوْنَ ﴿٧٥﴾

75. येह (सज़ा) इसका बदला है कि तुम ज़मीनमें नाहक़ खु़शियां मनाया करते थे और उसका बदला है कि तुम इतराया करते थे।

اُدْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٧٦﴾

76. दोज़ख़के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ तुम इसमें हमेशा रेहनेवाले हो, सो ग़ुरूर करनेवालों का ठिकाना कितना बुरा है।

فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ ۚ فَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ ﴿٧٧﴾

77. पस आप सब्र कीजिऐ बेशक अल्लाह का वा'दा सच्चा है, फिर अगर हम आपको इस (अज़ाब) का कुछ हिस्सा दिखा दें जिस का हम उनसे वा'दा कर रहे हैं या हम आपको (इससे कब्ल) वफ़ात दे दें तो (दोनों सूरतों में) वोह हमारी ही तरफ़ लौटाए जाएंगे।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَّنْ قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ ۗ وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ فَاِذَا جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ قُضِيَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿٧٨﴾

78. और बेशक हमने आपसे पहले बहुतसे रसूलों को भेजा, उनमें से बा'ज़ का हाल हमने आप पर बयान फ़रमा दिया और उनमें से बा'ज़ का हाल हमने (अभी तक) आप पर बयान नहीं फ़रमाया, और किसी भी रसूल के लिए येह (मुमकिन) न था कि वोह कोई निशानी भी अल्लाह के इज़्न के बिग़ैर ले आए, फिर जब अल्लाह का हुक्म आ पहुंचा (और) हक़्क़ो इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया गया तो उस वक़्त अह्ले बातिल ख़सारे में रहे।

اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَنْعَامَ لِتَرْكَبُوْا مِنْهَا وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٧٩﴾

79. अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए चौपाए बनाऐ ताकि तुम उनमें से बा'ज़ पर सवारी करो और इन में से बा'ज़ को तुम खाते हो।

وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوْا عَلَيْهَا حَاجَةً فِيْ صُدُوْرِكُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ﴿٨٠﴾

80. और तुम्हारे लिए उनमें और भी फ़वाइद हैं और ताकि तुम उन पर सवार हो कर (मज़ीद) उस जरूरत (की जगह) तक पहुंच सको जो तुम्हारे सीनों में (मुतअय्यन) है और (येह कि तुम उन पर और कश्तियों पर सवार किए जाते हो।

وَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ ۖ فَاَيَّ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُنْكِرُوْنَ ﴿٨١﴾

81. और वोह तुम्हें अपनी (बहुत सी) निशानियां दिखाता है, सो तुम अल्लाह की किन किन निशानियों को इन्कार करोगे।

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوا أَكْثَرَ مِنْهُمْ وَأَشَدَّ قُوَّةً وَآثَارًا فِي الْأَرْضِ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٨٢﴾

82. सो क्या उन्होंने ज़मीनमें सैरो सियाहत नहीं की के वोह देखते कि उन लोगों को अंजाम कैसा हुवा जो उनसे पहले गुजर गए , वोह इन लोगों से (ता'दाद में भी) बहुत ज़ियादह थे और ताक़तमें (भी) सख़्त तर थे और निशानात के लिहाज़ से (भी) जो (वोह) ज़मीन में छोड़ गए हैं (कहीं बढ़ कर थे) मगर जो कुछ वोह कमाया करते थे उनके किसी काम न आया।

فَلَمَّا جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَرِحُوا بِمَا عِندَهُم مِّنَ الْعِلْمِ وَحَاقَ بِهِم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٨٣﴾

83. फिर जब उनके पयगम्बर उनके पास वाज़ेह निशानियां ले कर आए तो उनके पास जो (दुनिया वी) इल्मो फ़न था वोह उस पर इतराते रहे और (उसी हाल में) उन्हें उस (अज़ाब) ने आ घेरा जिसका वोह मज़ाक़ उड़ाया करते थे।

فَلَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا قَالُوا آمَنَّا بِاللَّهِ وَحْدَهُ وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهِ مُشْرِكِينَ ﴿٨٤﴾

84. फिर जब उन्होंने हमारा अज़ाब देख लिया तो केहने लगे : हम अल्लाह पर ईमान लाए जो यक्ता है और हमने उन (सब) का इन्कार कर दिया जिन्हें हम इसका शरीक ठेहराया करते थे।

فَلَمْ يَكُ يَنفَعُهُمْ إِيمَانُهُمْ لَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا ۖ سُنَّتَ اللَّهِ الَّتِي قَدْ خَلَتْ فِي عِبَادِهِ ۖ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْكَافِرُونَ ﴿٨٥﴾

85. फिर उनका ईमान लाना उनके कुछ काम न आया जबकि उन्होंने हमारे अज़ाब को देख लिया था, अल्लाह का (येही) दस्तूर है जो उसके बंदों में गुजरता चला आ रहा है और इस मुक़ाम पर काफ़िरोंने (हमेशा) सख़्त नुकसान उठाया।

आयातुहा 54 | 41 सूरतु हा-मीम अस्सज्दति मक्किय्यतुन 61 | रुकूआ़तुहा 6

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

حم ﴿١﴾

1. हा मीम (हक़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं)।

تَنزِيلٌ مِّنَ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ﴿٢﴾

2. निहायत महरबान बहुत रहम फ़रमानेवाले (रब) की जानिब से उतारा जाना है।

كِتَٰبٌ فُصِّلَتْ ءَايَٰتُهُۥ قُرْءَانًا عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝٣

3. (इस) किताब का जिसकी आयात वाज़ेह़ तौर पर बयान कर दी गई हैं इल्मो दानिश रखने वाली क़ौमके लिए अ़रबी (ज़बान में) क़ुरआन (है)।

بَشِيرًا وَنَذِيرًا فَأَعْرَضَ أَكْثَرُهُمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ۝٤

4. ख़ुशख़बरी सुनानेवाला है और डर सुनानेवाला है, फिर इनमें से अक्सर लोगों ने रूगर्दानी की सो वोह (उसे) सुनते ही नहीं हैं।

وَقَالُوا قُلُوبُنَا فِىٓ أَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدْعُونَآ إِلَيْهِ وَفِىٓ ءَاذَانِنَا وَقْرٌ وَمِنۢ بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ حِجَابٌ فَٱعْمَلْ إِنَّنَا عَٰمِلُونَ ۝٥

5. और केहते हैं कि हमारे दिल उस चीज़ से ग़िलाफ़ों में हैं जिसकी तरफ़ आप हमें बुलाते हैं और हमारे कानों में (बेहरेपनका) बोझ है और हमारे और आपके दरमियान परदा है सो आप (अपना) अ़मल करते रहिए हम अपना अ़मल करनेवाले हैं।

قُلْ إِنَّمَآ أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰٓ إِلَىَّ أَنَّمَآ إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَٰحِدٌ فَٱسْتَقِيمُوٓا إِلَيْهِ وَٱسْتَغْفِرُوهُ ۗ وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِينَ ۝٦

6. (इनके परदे हटाने और सुनने पर आमादह करने के लिए) फ़रमा दीजिए : (ऐ काफ़िरो !) बस मैं ज़ाहिरन आदमी होने में तो तुम ही जैसा हूं (फिर मुझसे और मेरी दा'वत से इस क़दर क्यों गुरेज़ां हो) मेरी तरफ़ येह वह़ी भेजी गई है कि तुम्हारा मा'बूद फ़क़त मा'बूदे यक्ता है, पस तुम इसी की तरफ़ सीधे मुतवज्जे रहो और उससे मग़फ़िरत चाहो, और मुशरिकों के लिए हलाकत है।

ٱلَّذِينَ لَا يُؤْتُونَ ٱلزَّكَوٰةَ وَهُم بِٱلْءَاخِرَةِ هُمْ كَٰفِرُونَ ۝٧

7. जो ज़कात अदा नहीं करते और वोही तो आख़िरत के भी मुन्किर हैं।

إِنَّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا وَعَمِلُوا ٱلصَّٰلِحَٰتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ۝٨

8. बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे उनके लिए ऐसा अज्र है जो कभी खत्म नहीं होगा।

قُلْ أَئِنَّكُمْ لَتَكْفُرُونَ بِٱلَّذِى خَلَقَ ٱلْأَرْضَ فِى يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُونَ لَهُۥٓ

9. फ़रमा दीजिए : क्या तुम उस (अल्लाह) का इन्कार करते हो जिसने ज़मीन को दो दिन (या'नी दो मुद्दतों) में

أَنْدَادًا ۚ ذٰلِكَ رَبُّ الْعٰلَمِينَ ﴿٩﴾

पैदा फ़रमाया और तुम उसके लिए हमसर ठेहराते हो, वही सारे जहानों का परवरदिगार है।

وَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ مِنْ فَوْقِهَا وَبٰرَكَ فِيهَا وَقَدَّرَ فِيهَا أَقْوَاتَهَا فِي أَرْبَعَةِ أَيَّامٍ ۚ سَوَاءً لِّلسَّائِلِينَ ﴿١٠﴾

10. और उसके अंदर (से) भारी पहाड़ (निकाल कर) उसके ऊपर रख दिए और उसके अंदर (मा'दनिय्यात, आबी ज़खाइर, कुदरती वसाइल और दीगर कुव्वतों की) बरकत रखी, और उसमें (जुमला मख़लूक़ के लिए) गिज़ाएं (और सामाने मईशत) मुक़र्रर फ़रमाए (येह सब कुछ उसने) चार दिनों (या'नी चार इर्तिक़ाई ज़मानों) में मुकम्मल किया, (येह सारा रिज़्क़ अस्लन) तमाम तलबगारों (और हाजतमंदों) के लिए बराबर है।

ثُمَّ اسْتَوٰى إِلَى السَّمَاءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا وَلِلْأَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا ۚ قَالَتَا أَتَيْنَا طَائِعِينَ ﴿١١﴾

11. फिर वोह समावी काइनात की तरफ़ मुतवज्जे हुवा तो वोह (सब) धुवां था, सो इसने उसे (या'नी आस्मानी कुर्रों से) और ज़मीनसे फ़रमाया ख्वाह बाहम कशिशो रग़बत से या गुरेज़ी-व-नागवारी से (हमारे निज़ाम के ताबे') आ जाओ, दोनों ने कहा : हम खुशी से हाज़िर हैं।

فَقَضٰهُنَّ سَبْعَ سَمٰوَاتٍ فِي يَوْمَيْنِ وَأَوْحٰى فِي كُلِّ سَمَاءٍ أَمْرَهَا ۚ وَزَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيحَ ۖ وَحِفْظًا ۚ ذٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ﴿١٢﴾

12. फिर दो दिनों (या'नी दो मरहलों) में सात आस्मान बना दीए और हर समावी काइनातमें उसका निज़ाम वदीअ़त कर दिया और आस्माने दुनिया को हम ने चराग़ों (या'नी सितारों और सय्यारों) से आरास्ता कर दिया और महफ़ूज भी (ताकि एक का निज़ाम दुसरे में मुदाख़िलत न कर सके), येह ज़बरदस्त ग़ल्बा (व कुव्वत) वाले, बड़े इल्मवाले (रब) का मुक़र्ररकर्दह निज़ाम है।

فَإِنْ أَعْرَضُوا فَقُلْ أَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً مِّثْلَ صٰعِقَةِ عَادٍ وَّثَمُودَ ﴿١٣﴾

13. फिर अगर वोह रूगर्दानी करें तो आप फ़रमा दें में तुम्हें उस ख़ौफ़नाक अ़ज़ाब से डराता हुं जो आ़द और समूद की हलाकत के मानिन्द होगा।

إِذْ جَاءَتْهُمُ الرُّسُلُ مِنْ بَيْنِ

14. जब उनके पास उनके आगे और उनके पीछे

اَيْدِيْهِمْ وَ مِنْ خَلْفِهِمْ اَلَّا
تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ۭ قَالُوْا لَوْ شَآءَ
رَبُّنَا لَاَنْزَلَ مَلٰۗىِٕكَةً فَاِنَّا بِمَآ
اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿١٤﴾

(या उनसे पहले और उनके बाद) पयगम्बर आए(और कहा) के अल्लाह के सिवा किसी की इ़बादत न करो, तो वोह केहने लगे :अगर हमारा रब चाहता तो फरिश्तों को उतार देता सो जो कुछ तुम दे कर भेजे गए हो हम उसके मुन्किर हैं।

فَاَمَّا عَادٌ فَاسْتَكْبَرُوْا فِي الْاَرْضِ
بِغَيْرِ الْحَقِّ وَ قَالُوْا مَنْ اَشَدُّ مِنَّا
قُوَّةً ۭ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ
خَلَقَهُمْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۭ
وَكَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ﴿١٥﴾

15. पस जो कौमे आ़द थी सो उन्होंने ज़मीनमें नाहक़ तकब्बुर (व सरकशी) की और केहने लगे : हमसे बढ़ कर ताकतवर कौन है? और क्या उन्होंने नहीं देखा के अल्लाह जिसने उन्हें पैदा फ़रमाया है वोह उनसे कहीं बढ़ कर ताक़तवर है, और वोह हमारी आयतों का इन्कार करते रहे।

فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا
فِيْٓ اَيَّامٍ نَّحِسَاتٍ لِّنُذِيْقَهُمْ
عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۭ
وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَخْزٰى وَهُمْ
لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿١٦﴾

16. सो हमने उनपर मनहूस दिनों में ख़ौफ़नाक तेज़ो तुन्द आँधी भेजी ताकि हम उन्हें दुन्यवी जिन्दगी में ज़िल्लत के अ़ज़ाब का मज़ा चखाएं, और आख़िरत का अ़ज़ाब तो सब से ज़ियादह जिल्लत अंगेज़ होगा और उनकी कोई मदद न की जाएगी।

وَ اَمَّا ثَمُوْدُ فَهَدَيْنٰهُمْ فَاسْتَحَبُّوا
الْعَمٰى عَلَى الْهُدٰى فَاَخَذَتْهُمْ
صٰعِقَةُ الْعَذَابِ الْهُوْنِ بِمَا كَانُوْا
يَكْسِبُوْنَ ﴿١٧﴾

17. और जो कौमे समूद थी, सो हमने उन्हें राहे हिदायत दिखाई तो उन्होंने हिदायतके मुकाबले में अँधा रेहना ही पसंद किया तो उन्हें ज़िल्लत के अ़ज़ाब की कड़कने पकड़ लिया उन आ'माल के बदले जो वोह कमाया करते थे।

وَ نَجَّيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ كَانُوْا
يَتَّقُوْنَ ﴿١٨﴾

18. और हमने उन लोगोंको नजात बख़्शी जो ईमान लाए और परहेज़गारी करते रहे।

وَيَوْمَ يُحْشَرُ اَعْدَاۗءُ اللّٰهِ اِلَى

19. और जिस दिन अल्लाहके दुश्मनों को दोज़ख़की

النَّارِ فَهُمْ يُوزَعُونَ ﴿١٩﴾

तरफ़ जमा' करके लाया जाऐगा फिर उन्हें रोक रोक कर (और हांक कर) चलाया जाएगा।

حَتّٰٓى اِذَا مَا جَآءُوْهَا شَهِدَ عَلَيْهِمْ
سَمْعُهُمْ وَاَبْصَارُهُمْ وَجُلُوْدُهُمْ بِمَا
كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٠﴾

20. यहां तक कि जब वोह दोज़ख़ तक पहुंच जाएंगे तो उनके कान और उनकी आँखें और उन (के जिस्मों) की खालें उनके खिलाफ़ गवाही देंगी उन आ'माल पर जो वोह करते रहे थे।

وَقَالُوْا لِجُلُوْدِهِمْ لِمَ شَهِدْتُّمْ
عَلَيْنَا ؕ قَالُوْٓا اَنْطَقَنَا اللّٰهُ الَّذِيْٓ
اَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَّ هُوَ خَلَقَكُمْ
اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٢١﴾

21. फिर वोह लोग अपनी खालों से कहेंगे : तुमने हमारे खिलाफ़ क्यों गवाही दी, वोह कहेंगी : हमें उस अल्लाह ने गोयाई अता की जो हर चीज को कुव्वते गोयाई देता है और उसीने तुम्हें पेहली बार पैदा फ़रमाया है और तुम उसी की तरफ़ पलटाए जाओगे।

وَ مَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُوْنَ اَنْ يَّشْهَدَ
عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَ لَآ اَبْصَارُكُمْ وَ
لَا جُلُوْدُكُمْ وَلٰكِنْ ظَنَنْتُمْ اَنَّ اللّٰهَ
لَا يَعْلَمُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٢﴾

22. तुम तो (गुनाह करते वक़्त) उस (खौफ़) से भी पर्दा नहीं करते थे कि तुम्हारे कान तुम्हारे ख़िलाफ़ गवाही दे देंगे और न (येह कि) तुम्हारी आँखें और न (येह कि) तुम्हारी खालें (ही गवाही दे देंगी) लेकिन तुम गुमान करते थे कि अल्लाह तुम्हारे बहुत से कामों को जो तुम करते हो जानता ही नहीं है।

وَ ذٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِيْ ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ
اَرْدٰىكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٢٣﴾

23. और तुम्हारा येही गुमान जो तुमने अपने रबके बारे में क़ाइम किया, तुम्हें हलाक कर गया सो तुम नुक़्सान उठाने वालों में से हो गए।

فَاِنْ يَّصْبِرُوْا فَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ۚ
وَ اِنْ يَّسْتَعْتِبُوْا فَمَا هُمْ مِّنَ
الْمُعْتَبِيْنَ ﴿٢٤﴾

24. अब अगर वोह सब्र करें तब भी उनका ठिकाना दोज़ख़है, और अगर वोह (तौबा के ज़रीए अल्लाह की) रजा हासिल करना चाहें तो भी वोह रज़ा पानेवालों में नहीं होंगे।

وَ قَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَآءَ فَزَيَّنُوْا لَهُمْ
مَّا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَ مَا خَلْفَهُمْ وَ

25. और हमने उन के लिए साथ रेहनेवाले (शयातीन) मुक़र्रर कर दीए, सो उन्होंने उन के लिए वोह (तमाम बुरे

حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ۚ اِنَّهُمْ كَانُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿٢٥﴾

आ'माल) खुशनुमा कर दिखाए जो उनके आगे थे और उनके पीछे थे और उन पर (वोही) फ़रमाने अज़ाब साबित हो गया जो उन उम्मतों के बारे में सादिर हो चुका था जो जिन्नात और इन्सानों में से उनसे पहले गुज़र चुकी थीं। बेशक वोह नुक़्सान उठानेवाले थे।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَسْمَعُوْا لِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَالْغَوْا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُوْنَ ﴿٢٦﴾

26. और काफ़िर लोग केहते हैं : तुम इस कुरआन को मत सुना करो और इस (की किरअत के अवक़ात) में शोरो गुल मचाया करो ताकि तुम (इनके कुरआन पढ़ने पर) ग़ालिब रहो।

فَلَنُذِيْقَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ وَّلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَسْوَاَ الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٧﴾

27. पस हम काफ़िरों को सख़्त अज़ाब का मज़ा ज़रूर चखाएंगे और हम उन्हें उन बुरे आ'माल का बदला जरूर देंगे जो वोह करते रहे थे।

ذٰلِكَ جَزَآءُ اَعْدَآءِ اللّٰهِ النَّارُ ۚ لَهُمْ فِيْهَا دَارُ الْخُلْدِ ۭ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ﴿٢٨﴾

28. येह दोज़ख़ अल्लाह के दुश्मनों की जज़ा है, उनके लिए इसमें हमेशा रेहने का घर है, येह उसका बदला है जो वोह हमारी आयतों का इन्कार किया करते थे।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا رَبَّنَآ اَرِنَا الَّذَيْنِ اَضَلّٰنَا مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ اَقْدَامِنَا لِيَكُوْنَا مِنَ الْاَسْفَلِيْنَ ﴿٢٩﴾

29. और जिन लोगोंने कुफ़्र किया है कहेंगे : ऐ हमारे रब ! हमें जिन्नात और इन्सानों में से वोह दोनों दिखा दे जिन्होंने हमें गुमराह किया है हम उन्हें अपने क़दमों के नीचे (रोंद) डालें ताकि वोह सब से ज़्यादह जिल्लत वालों में हो जाएं।

اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَلَّا تَخَافُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿٣٠﴾

30. बेशक जिन लोगों ने कहा हमारा रब अल्लाह है, फिर वोह (इस पर मजबूती से) क़ाइम हो गए, तो उन पर फ़रिश्ते उतरते हैं (और केहते हैं) कि तुम ख़ौफ़ न करो और न ग़म करो और तुम जन्नत की खुशियां मनाओ जिसका तुम से वा'दा किया जाता था।

نَحْنُ اَوْلِيٰٓؤُكُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ فِي الْاٰخِرَةِ ۚ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَشْتَهِيْٓ اَنْفُسُكُمْ وَ لَكُمْ فِيْهَا مَا تَدَّعُوْنَ ؕ ﴿٣١﴾

31. हम दुनिया की ज़िन्दगी में (भी) तुम्हारे दोस्त और मददगार हैं और आख़िरत में (भी), और तुम्हारे लिए वहां हर वोह ने'मत है जिसे तुम्हारा जी चाहे और तुम्हारे लिए वहां वोह तमाम चीजें (हाजिर) हैं जो तुम तलब करो।

نُزُلًا مِّنْ غَفُوْرٍ رَّحِيْمٍ ﴿٣٢﴾

32. (येह) बड़े बख़्शनेवाले, बहुत रहम फ़रमानेवाले (रब) की तरफ़ से मेहमानी है।

وَ مَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَآ اِلَى اللّٰهِ وَ عَمِلَ صَالِحًا وَّقَالَ اِنَّنِيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٣٣﴾

33. और उस शख़्स से ज़्यादह खूश गुफ़्तार कौन हो सक्ता है जो अल्लाह की तरफ़ बुलाए और नेक अ़मल करे ओर कहे : बेशक मैं (अल्लाह और रसूल ﷺ के) फ़रमां बरदारों में से हों।

وَلَا تَسْتَوِي الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ؕ اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِيْ بَيْنَكَ وَبَيْنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِيٌّ حَمِيْمٌ ﴿٣٤﴾

34. और नेकी और बदी बराबर नहीं हो सकती, और बुराई को बेहतर (तरीक़े) से दूर किया करो सो नतीजतन वोह शख़्सके तुम्हारे और जिसके दरमियान दुश्मनी थी गोया वोह गरम जोश दोस्त हो जाएगा।

وَ مَا يُلَقّٰهَآ اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا ۚ وَمَا يُلَقّٰهَآ اِلَّا ذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ﴿٣٥﴾

35. और येह (खूबी) सिर्फ़ उन्ही लोगों को अता की जाती है जो सब्र करते हैं, और येह (तौफ़ीक़) सिर्फ़ उसीको हासिल होती है जो बड़े नसीबवाला होता है।

وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٦﴾

36. और (ऐ बंदए मोमिन !) अगर शैतान की वस्वसा अंदाज़ी से तुम्हें कोई वस्वसा आ जाए तो अल्लाह की पनाह मांग लिया कर, बेशक वोह खूब सुननेवाला खूब जाननेवाला है।

وَ مِنْ اٰيٰتِهِ الَّيْلُ وَ النَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ؕ لَا تَسْجُدُوْا لِلشَّمْسِ وَ لَا لِلْقَمَرِ وَ اسْجُدُوْا لِلّٰهِ

37. और रात और दिन और सूरज और चांद उसकी निशानियों में से हैं, न सूरज को सजदा किया करो और न ही चांद को, और सजदा सिर्फ़ अल्लाह के लिए किया करो

الَّذِي خَلَقَهُنَّ إِن كُنتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ﴿٣٧﴾

जिसने इन (सब) को पैदा फ़रमाया है अगर तुम उसी की बंदगी करते हो।

فَإِنِ اسْتَكْبَرُوا فَالَّذِينَ عِندَ رَبِّكَ يُسَبِّحُونَ لَهُ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْأَمُونَ ﴿٣٨﴾

السجدة

38. फिर अगर वोह तकब्बुर करें (तो आप उनकी परवाह न करें) पस जो फ़रिश्ते आपके रब के हुज़ूर में हैं वोह रात दिन उसकी तस्बीह् करते रेहते हैं और वोह थकते (और उकताते) ही नहीं हैं।

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنَّكَ تَرَى الْأَرْضَ خَاشِعَةً فَإِذَا أَنزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَاءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ ۚ إِنَّ الَّذِي أَحْيَاهَا لَمُحْيِي الْمَوْتَىٰ ۚ إِنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٣٩﴾

39. और उसकी निशानियों में से येह भी है कि आप (पहले) ज़मीनको खुश्क (और बेक़द्र) देखते हैं फिर जब हम उस पर पानी बरसाते हैं तो वोह सर सब्ज़ो शादाब हो जाती है और नुमू पाने लगती है, बेशक वोह ज़ात जिसने इस (मुर्दा ज़मीन) को ज़िन्दा किया है यक़ीनन वही (रोज़े क़ियामत) मुर्दों को ज़िन्दा फ़रमाने वाला है। बेशक वोह हर चीज़ पर खूब क़ादिर है।

إِنَّ الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِي آيَاتِنَا لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا ۗ أَفَمَن يُلْقَىٰ فِي النَّارِ خَيْرٌ أَم مَّن يَأْتِي آمِنًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ اعْمَلُوا مَا شِئْتُمْ ۖ إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٤٠﴾

40. बेशक जो लोग हमारी आयतों (के मा'ना) में सहीह् राह से इन्ह़िराफ़ करते हैं वोह हम पर पोशीदा नहीं हैं, भला जो शख़्स आतिशे दोज़ख़में झोंक दिया जाए (वोह) बेहतर है या वोह शख़्स जो क़ियामत के दिन (अज़ाब से) महफ़ूज़ो मामून हो कर आए, तुम जो चाहो करो, बेशक जो काम तुम करते हो वोह खूब देखनेवाला है।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَاءَهُمْ ۖ وَإِنَّهُ لَكِتَابٌ عَزِيزٌ ﴿٤١﴾

41. बेशक जिन्होंने क़ुरआनके साथ कुफ़्र किया जबकि वोह उनके पास आ चुका था (तो येह उनकी बदनसीबी है) और बेशक वोह (क़ुरआन) बड़ी बा इ़ज़्ज़त किताब है।

لَا يَأْتِيهِ الْبَاطِلُ مِن بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهِ ۖ تَنزِيلٌ مِّنْ حَكِيمٍ حَمِيدٍ ﴿٤٢﴾

42. बातिल इस (क़ुरआन) के पास न इसके सामने से आ सक्ता है और न ही इसके पीछे से, (येह) बड़ी ह़िक्मत वाले, बड़ी ह़म्दवाले (रब) की तरफ़ से उतारा हुआ है।

مَا يُقَالُ لَكَ اِلَّا مَا قَدْ قِيْلَ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ وَّذُوْ عِقَابٍ اَلِيْمٍ ﴿۴۳﴾

43. (ऐ ह़बीब!) जो आप से कही जाती हैं (येह) वोही बातें हैं जो आपसे पहले रसूलों से कही जा चुकी हैं, बेशक आपका रब ज़रूर मुआ़फ़ीवाला (भी) है और दर्दनाक सज़ा देने वाला (भी) है।

وَلَوْ جَعَلْنٰهُ قُرْاٰنًا اَعْجَمِيًّا لَّقَالُوْا لَوْ لَا فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ ؕ ءَاَعْجَمِيٌّ وَّعَرَبِيٌّ ؕ قُلْ هُوَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَّ شِفَآءٌ ؕ وَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ فِيْۤ اٰذَانِهِمْ وَقْرٌ وَّ هُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى ؕ اُولٰٓئِكَ يُنَادَوْنَ مِنْ مَّكَانٍ بَعِيْدٍ ﴿۴۴﴾

قرء حفص بتسهيل الهمزة الثانية ١٢

ع ٥ ١٢ ١٩

44. और अगर हम इस (किताब) को अ़जमी ज़बान का क़ुरआन बना देते तो यक़ीनन येह केहते कि इसकी आयतें वाज़ेह़ तौर पर बयान क्यों नहीं की गईं, क्या किताब अ़जमी है और रसूल अ़रबी है (इस लिए ऐ मह़बूबे मुकर्रम! हमने क़ुरआन भी आप ही की ज़बान में उतार दिया है।) फ़रमा दीजिए : वोह (क़ुरआन) ईमानवालों के लिए हिदायत (भी) है और शिफ़ा (भी) है और जो लोग ईमान नहीं रखते उनके कानों में बेहरेपन का बोझ है वोह उनके ह़क़में नाबीनापन (भी) है (गोया) वोह लोग किसी दूर की जगह से पुकारे जाते हैं।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ؕ وَ لَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ؕ وَ اِنَّهُمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ﴿۴۵﴾

45. और बेशक हमने मूसा (عليه السلام) को किताब अ़ता फ़रमाई तो उसमें (भी) इख़्तिलाफ़ किया गया, और अगर आपके रब की तरफ़ से फ़रमान पहले सादिर न हो चुका होता तो उनके दरमियान फ़ैसला कर दिया जाता और बेशक वोह इस (क़ुरआन) के बारे में (भी) धोका देनेवाले शक में (मुब्तिला) हैं।

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ وَ مَنْ اَسَآءَ فَعَلَيْهَا ؕ وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿۴۶﴾

46. जिसने नेक अ़मल किया तो उसने अपनी ही ज़ात के (नफ़े' के) लिए (किया) और जिसने गुनाह किया सो (उसका वबाल भी) उसी की जान पर है, और आपका रब बंदों पर ज़ुल्म करनेवाला नहीं है।

إِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَمَا تَخْرُجُ مِن ثَمَرَاتٍ مِّنْ أَكْمَامِهَا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنثَىٰ وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ ۚ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ أَيْنَ شُرَكَائِي قَالُوا آذَنَّاكَ مَا مِنَّا مِن شَهِيدٍ ﴿٤٧﴾

47. उसी (अल्लाह) की तरफ़ ही वक़्ते क़ियामत के इल्मका ह़वाला दिया जाता है, और न फल अपने ग़िलाफ़ों से निकलते हैं और न कोई मादा ह़ामिला होती है और न वोह बच्चा जनती है मगर (येह सब कुछ) उसके इल्म में होता है। और जिस दिन वोह उन्हें निदा फ़रमाएगा कि मेरे शरीक कहां हैं (तो) वोह (मुशरिक) कहेंगे : हम आपसे अ़र्ज़ किए देते हैं कि हम में से कोई भी (किसी के आपके साथ शरीक होने पर) गवाह नहीं है।

وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَدْعُونَ مِن قَبْلُ ۖ وَظَنُّوا مَا لَهُم مِّن مَّحِيصٍ ﴿٤٨﴾

48. वोह सब (बुत) उनसे ग़ाइब हो जाएंगे जिनकी वोह पहले पूजा किया करते थे और वोह समझ लेंगे कि उनके लिए भागने की कोई राह नही रही।

لَّا يَسْأَمُ الْإِنسَانُ مِن دُعَاءِ الْخَيْرِ وَإِن مَّسَّهُ الشَّرُّ فَيَئُوسٌ قَنُوطٌ ﴿٤٩﴾

49. इन्सान भलाई मांगने से नहीं थकता और अगर उसे बुराई पहुंच जाती है तो बहुतही मायूस, आसो उम्मीद तौड बैठने वाला हो जाता है।

وَلَئِنْ أَذَقْنَاهُ رَحْمَةً مِّنَّا مِن بَعْدِ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ هَٰذَا لِي وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً وَلَئِن رُّجِعْتُ إِلَىٰ رَبِّي إِنَّ لِي عِندَهُ لَلْحُسْنَىٰ ۚ فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِمَا عَمِلُوا وَلَنُذِيقَنَّهُم مِّنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿٥٠﴾

50. और अगर हम उसे अपनी जानिब से रह़मत (का मज़ा) चखा दें उस तक्लीफ़ के बाद जो उसे पहुंच चुकी थी तो वोह ज़रूर केहने लगता है कि येह तो मेरा ह़क़ था और मैं नहीं समझता कि क़ियामत बरपा होनेवाली है और अगर मैं अपने रबकी तरफ़ लौटाया भी जाऊं तो भी उसके हुज़ूर मेरे लिए यक़ीनन भलाई होगी सो हम ज़रूर कुफ़्र करनेवालों को उन कामों से आगाह कर देंगे जो उन्होंने अंजाम दिए और हम उन्हें ज़रूर सख़्त तरीन अ़ज़ाब (का मज़ा) चखा देंगे।

وَإِذَا أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنسَانِ أَعْرَضَ وَنَأَىٰ بِجَانِبِهِ وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَذُو دُعَاءٍ عَرِيضٍ ﴿٥١﴾

51. और जब हम इन्सान पर इनआ़म फ़रमाते हैं तो वोह मुंह फेर लेता है और अपना पेहलू बचा कर हम से दूर हो जाता है और जब उसे तक्लीफ़ पहुंचती है तो लम्बी चौड़ी दुआ़ करनेवाला हो जाता है।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ثُمَّ كَفَرْتُمْ بِهٖ مَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ فِيْ شِقَاقٍۭ بَعِيْدٍ ﴿۵۲﴾

52. फ़रमा दीजिए : भला तुम बताओ अगर येह (कुरआन) अल्लाह ही की तरफ़ से (उतरा) हो फिर तुम उसका इन्कार करते रहो तो उस शख़्स से बढ़ कर गुमराह कौन होगा जो परले दर्जेकी मुख़ालिफ़त में (पड़ा) हो।

سَنُرِيْهِمْ اٰيٰتِنَا فِي الْاٰفَاقِ وَ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُ الْحَقُّ ؕ اَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ اَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿۵۳﴾

53. हम अ़नक़रीब उन्हें अपनी निशानियां अतराफ़े आ़लम में और खुद उनकी ज़ातों में दिखा देंगे यहां तक कि उन पर ज़ाहिर हो जाएगा कि वोही हक़ है। क्या आपका रब (आपकी हक़्क़ानियत की तस्दीक़ के लिए) काफ़ी नहीं है कि वोही हर चीज़ पर गवाह (भी) है।

اَلَآ اِنَّهُمْ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآءِ رَبِّهِمْ ؕ اَلَآ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطٌ ﴿۵۴﴾ ع

54. जान लो कि वोह लोग अपने रबके हुजूर पेशी की निस्बत शक में हैं, ख़बरदार ! वोही (अपने इल्मो कुदरत से) हर चीज़ का अहाता फ़रमानेवाला है।

आयातुहा 53	42 सूरतुश्शूरा मक्किय्यतुन 62	रुकूआतुहा 5

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

حٰمٓ ﴿۱﴾

عٓسٓقٓ ﴿۲﴾

1. हा मीम ।
2. ऐन सीन क़ाफ़।
(हक़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं)

كَذٰلِكَ يُوْحِيْٓ اِلَيْكَ وَ اِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ ۙ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۳﴾

3. इसी तरह आपकी तरफ़ और उन (रसूलों) की तरफ़ जो आप से पहले हुए हैं अल्लाह वही भेजता रहा है जो ग़ालिब है बड़ी हिक्मतवाला है।

لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ﴿۴﴾

4. जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीनमें है उसीका है, और वोह बुलंद मर्तबत, बड़ा बा अ़ज़मत है।

تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ

5. करीब है आस्मानी कुर्रे अपने उपर की जानिब से फट

وَالْمَلٰٓئِكَةُ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِمَنْ فِي الْاَرْضِ ؕ اَلَآ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝٥

पडें और फरिश्ते अपने रबकी हम्द के साथ तस्बीह् करते रेहते हैं और उन लोगों के लिए जो ज़मीन में हैं बख़्शिश तलब करते रेहते हैं । याद रखो, अल्लाह ही बड़ा बख़्शनेवाला बहुत रह्म फ़रमानेवाला है।

وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ اللّٰهُ حَفِيْظٌ عَلَيْهِمْ ۖ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ۝٦

6. और जिन लोगों ने अल्लाहको छोड़ कर बुतोंको दोस्तो कारसाज़ बना रखा है अल्लाह उन (के हालात) पर खूब निगेहबान है और आप उन (काफ़िरों) के ज़िम्मेदार नही हैं।

وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنْذِرَ يَوْمَ الْجَمْعِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ فَرِيْقٌ فِي الْجَنَّةِ وَفَرِيْقٌ فِي السَّعِيْرِ ۝٧

7. और उसी तरह हमने आपकी तरफ़ अ़रबी ज़बान में क़ुरआन की वह़ी की ताकि आप मक्कावालों को और उन लोगों को जो इसके इर्द गिर्द रेहते हैं डर सुना सकें, और आप जमा' होने के उस दिन का ख़ौफ़ दिलाऐं जिसमें कोई शक नहीं है। (उस दिन) एक गिरोह जन्नत में होगा और दूसरा गिरोह दोज़ख़में होगा।

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَهُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ وَالظّٰلِمُوْنَ مَا لَهُمْ مِّنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝٨

8. और अगर अल्लाह चाहता तो उन सबको एक ही उम्मत बना देता लेकिन वोह जिसे चाहता है अपनी रह्मत में दाख़िल फ़रमाता है, और ज़ालिमों के लिए न कोई दोस्त होगा और न कोई मददगार।

اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ ۚ فَاللّٰهُ هُوَ الْوَلِيُّ وَهُوَ يُحْيِ الْمَوْتٰى ۡ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٩

9. क्या उन्होंने अल्लाहको छोड़ कर बुतों को अवलिया बना लिया है, पस अल्लाह ही वली है (उसी के दोस्त ही अवलिया हैं) और वही मुर्दों को ज़िन्दा करता है और वोही हर चीज़ पर बड़ा क़ादिर है।

وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيْهِ مِنْ شَيْءٍ فَحُكْمُهٗٓ اِلَى اللّٰهِ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبِّيْ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۖ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ۝١٠

10.और तुम जिस अम्र में इख़्तिलाफ़ करते हो तो उसका फ़ैसला अल्लाह ही की तरफ़ (से) होगा, येही अल्लाह मेरा रब है उसी पर में ने भरोसा किया और इसी की तरफ़ में रजूअ् करता हूं।

فَاطِرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّ مِنَ الْاَنْعَامِ اَزْوَاجًا ۚ يَذْرَؤُكُمْ فِيْهِ ؕ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْءٌ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ﴿۱۱﴾

11. आस्मानों और ज़मीन को अ़दम से वजूद में लानेवाला है, उसीने तुम्हारे लिए तुम्हारी जिनसों से जोड़े बनाए और चौपायों के भी जोड़े बनाए और तुम्हें इसी (जोडोंकी तदबीर) से फ़ैलाता है, उसके मानिन्द कोई चीज़ नहीं है और वही सुननेवाला देखनेवाला है।

لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَ يَقْدِرُ ؕ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۱۲﴾

12. वोही आस्मानों और ज़मीनकी कुंजियों का मालिक है (या'नी जिस के लिए वोह चाहे ख़ज़ाने खोल देता है) वोह जिस के लिए चाहता है रिज़्क़ो अ़ता कुशादा फ़रमा देता है और (ज़िसके लिए चाहता है) तंग कर देता है। बेशक वोह हर चीज का खूब जानने वाला है।

شَرَعَ لَكُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا وَصّٰى بِهٖ نُوْحًا وَّالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ وَمَا وَصَّيْنَا بِهٖٓ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى وَعِيْسٰٓى اَنْ اَقِيْمُوا الدِّيْنَ وَ لَا تَتَفَرَّقُوْا فِيْهِ ؕ كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِيْنَ مَا تَدْعُوْهُمْ اِلَيْهِ ؕ اَللّٰهُ يَجْتَبِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ يَّشَآءُ وَ يَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ يُّنِيْبُ ﴿۱۳﴾

13. उसने तुम्हारे लिए दीन का वोही रास्ता मुक़र्रर फ़रमाया जिसका हुक्म उसने नूह (عليه السلام) को दिया था और जिसकी वही हमने आपकी तरफ़ भेजी और जिसका हुक्म हमने इब्राहीम और मूसा व ईसा (عليهم السلام) को दिया था (वोह येही है) कि तुम (इसी) दीन पर क़ाइम रहो और इस में तफ़रिक़ा न डालो, मुशरिकों पर बहुत ही गिरां है वोह (तौह़ीद की बात) जिसकी तरफ़ आप उन्हें बुला रहे हैं। अल्लाह जिसे (खुद) चाहता है अपने हुजूर में (क़ुर्बे ख़ास के लिए) मुन्तखब फ़रमा लेता है और अपनी तरफ़ (आने की) राह दिखा देता है (हर) उस शख़्स को जो (अल्लाह की तरफ़) क़लबी रुजूअ़ करता है।

وَ مَا تَفَرَّقُوْٓا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًاۢ بَيْنَهُمْ ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى لَّقُضِيَ بَيْنَهُمْ ؕ وَ اِنَّ

14. और उन्होंने फ़िरक़ा बंदी नहीं की थी मगर इसके बाद जबकि उनके पास इल्म आ चुका था मह़ज़ आपसकी ज़िद (और हट धर्मी) की वजह से, और अगर आपकेरबकी जानिबसे मुकर्ररा मुद्दत तक (की मोहलत) का फ़रमान पहले सादिर न हुवा होता तो उनके दरमियान फ़ैसला किया जा चुका होता, और बेशक जो लोग उनके

الَّذِيْنَ اُوْرِثُوا الْكِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ﴿۱۴﴾

बाद किताब के वारिस बनाए गए थे वोह खुद उसकी निस्बत फरैब देनेवाले शक में (मुब्तिला) हैं।

فَلِذٰلِكَ فَادْعُ ۚ وَ اسْتَقِمْ كَمَاۤ اُمِرْتَ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ ۚ وَقُلْ اٰمَنْتُ بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنْ كِتٰبٍ ۚ وَاُمِرْتُ لِاَعْدِلَ بَيْنَكُمْ ؕ اَللّٰهُ رَبُّنَا وَ رَبُّكُمْ ؕ لَنَاۤ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ؕ لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ ؕ اَللّٰهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۚ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿۱۵﴾

15. पस आप उसी (दिन) के लिए दा'वत देते रहें और जैसे आपको हुक्म दिया गया है (उसी पर) क़ायम रहिए और उनकी ख़्वाहिशात पर कान न धरिये, और (येह) फ़रमा दीजिए : जो किताब भी अल्लाह ने उतारी है मैं उस पर ईमान रखता हूं , और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं तुम्हारे दरमियान अ़द्लो इन्साफ़ करूं । अल्लाह हमारा (भी) रब है और तुम्हारा (भी) रब है, हमारे लिए हमारे आ'माल हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे आ'माल, हमारे और तुम्हारे दरमियान कोई बहसो तकरार नहीं, अल्लाह हम सबको जमा' फ़रमाएगा और उसी की तरफ़ (सबको) पलटना है।

وَ الَّذِيْنَ يُحَآجُّوْنَ فِي اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا اسْتُجِيْبَ لَهٗ حُجَّتُهُمْ دَاحِضَةٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَ عَلَيْهِمْ غَضَبٌ وَّ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ﴿۱۶﴾

16. और जो लोग अल्लाह (के दीन के बारे) में झगडते हैं बाद इसके के उसे कुबूल कर लिया गया उनकी बहसो तकरार उनके रब के नज़्दीक बातिल है और उन पर (अल्लाह का) गज़ब है और उनके लिए सख़्त अ़ज़ाब है।

اَللّٰهُ الَّذِيْۤ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ وَالْمِيْزَانَ ؕ وَ مَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ قَرِيْبٌ ﴿۱۷﴾

17. अल्लाह वोही है जिसने हक़्क़ के साथ किताब नाज़िल फ़रमाई और (अ़दलो इन्साफ़का) तराजू (भी उतारा), और आपको किसने ख़बरदार किया, शायद क़ियामत क़रीब ही हो।

يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهَا ۚ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مُشْفِقُوْنَ مِنْهَا ۙ وَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهَا الْحَقُّ ؕ اَلَاۤ اِنَّ الَّذِيْنَ يُمَارُوْنَ فِي السَّاعَةِ

18. इस (कयामत) में वोह लोग जलदी मचाते हैं जो इस पर ईमान (ही) नहीं रखते और जो लोग ईमान रखते हैं उससे डरते हैं और जानते हैं कि इसका आना हक़्क़ है, जान लो ! जो लोग क़ियामत के बारे में झगड़ा करते हैं वोह

لَفِيْ ضَلٰلٍۭ بَعِيْدٍ ﴿١٨﴾

परले दर्जे की गुमराही में हैं।

اَللّٰهُ لَطِيْفٌۢ بِعِبَادِهٖ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ﴿١٩﴾

19. अल्लाह अपने बंदों पर बड़ा लुत्फ़ो करम फ़रमानेवाला है, जिसे चाहता है रिज़्क़ो अ़ता से नवाज़ता है और वोह बड़ी क़ुव्वतवाला बडी इ़ज़्ज़तवाला है।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِيْ حَرْثِهٖ ۚ وَمَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا وَمَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِيْبٍ ﴿٢٠﴾

20. जो शख़्स आख़िरत की खेती चाहता है हम उसके लिए उसकी खेती में मज़ीद इज़ाफ़ा फ़रमा देते हैं और जो शख़्स दुनिया की खेती का तालिब होता है (तो) हम उसको उसमें से कुछ अ़ता कर देते हैं फिर उसके लिए आख़िरत में कुछ हिस्सा नहीं रेहता।

اَمْ لَهُمْ شُرَكٰٓؤُا شَرَعُوْا لَهُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا لَمْ يَاْذَنْۢ بِهِ اللّٰهُ ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ؕ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢١﴾

21. क्या उनके लिए कुछ (ऐसे) शरीक हैं जिन्होंने उनके लिए दीनका ऐसा रास्ता मुक़र्रर कर दिया हो, जिसका अल्लाह ने हुक्म नहीं दिया था, और अगर फ़ैसले का फ़रमान (सादिर) न हुवा होता तो उनके दरमियान क़िस्सा चुका दिया जाता, और बेशक ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।

تَرَى الظّٰلِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا كَسَبُوْا وَهُوَ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِيْ رَوْضٰتِ الْجَنّٰتِ ۚ لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ﴿٢٢﴾

22. आप ज़ालिमों को उन (आ'माल) से डरनेवाला देखेंगे जो उन्होंने कमा रखे हैं और वोह (अ़ज़ाब) उन पर वाके' हो कर रहेगा, और जो लोग ईमान लाए और नेक आ'माल करते रहे वोह बहिश्त के चमनों में होंगे, उन के लिए उनके रबके पास वोह (तमाम ने'मतें) होंगी जिनकी वोह ख़्वाहिश करेंगे, येही तो बहुत बड़ा फ़ज़्ल है।

ذٰلِكَ الَّذِيْ يُبَشِّرُ اللّٰهُ عِبَادَهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ قُلْ لَّاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبٰى ؕ وَمَنْ يَّقْتَرِفْ

23. येह वोह (इन्आ़म) है जिसकी खुश ख़बरी अल्लाह ऐसे बंदों को सुनाता है जो ईमान लाएऔर नेक आ'माल करते रहे, फ़रमा दीजिए : में इस (तबलीगे रिसालत) पर तुम से कोई उजरत नहीं मांगता मगर (अपनी और अल्लाह की) कराबतो कुर्बत से मुहब्बत (चाहता हूं) और जो

حَسَنَةً نَّزِدْ لَهٗ فِيْهَا حُسْنًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ﴿٢٣﴾

शख़्स नेकी कमाएगा हम उसके लिए इस में उख़रवी सवाब और बढ़ा देंगे। बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला कद्रदान है।

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۚ فَاِنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يَخْتِمْ عَلٰى قَلْبِكَ ؕ وَيَمْحُ اللّٰهُ الْبَاطِلَ وَ يُحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ ۢبِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٢٤﴾

24. क्या येह लोग केहते हैं के इस (रसूल ﷺ) ने अल्लाह पर झुटा बोहतान तराशा है, सो अगर अल्लाह चाहे तो आपके कल्बे अतहर पर (सब्रो इस्तिक़ामत की) मोहर सब्त फ़रमा दे (ताकि आपको इनकी बेहूदा गोई का रंज न पहुंचे), और अल्लाह बातिल को मिटा देता है और अपने कलिमात से हक़ को साबित रखता है। बेशक वोह सीनों की बातों को खूब जाननेवाला है।

وَ هُوَ الَّذِيْ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَ يَعْفُوْا عَنِ السَّيِّاٰتِ وَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٢٥﴾

25. और वोही है जो अपने बंदोंकी तौबा कुबूल फ़रमाता है और लगजिशों से दरगुज़र फ़रमाता है और जो कुछ तुम करते हो (उसे) जानता है।

وَ يَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَ يَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ وَالْكٰفِرُوْنَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ﴿٢٦﴾

26. और उन लोगों की दुआ़ कुबूल फ़रमाता है जो ईमान लाए और नेक आ'माल करते रहे और अपने फ़ज़्ल से उन्हें (उनकी दुआ़ से भी) ज़ियादह देता है, और जो काफ़िर हैं उन के लिए सख्त अ़ज़ाब है।

وَلَوْ بَسَطَ اللّٰهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهٖ لَبَغَوْا فِي الْاَرْضِ وَ لٰكِنْ يُّنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَّا يَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٢٧﴾

27. और अगर अल्लाह अपने तमाम बंदों के लिए रोजी कुशादा फ़रमा दे तो वोह ज़रूर ज़मीनमें सरकशी करने लगें लेकिन वोह (ज़रूरियात के) अंदाज़े के साथ जितनी चाहता है उतारता है, बेशक वोह अपने बंदों (की ज़रूरतों) से ख़बरदार है खूब देखनेवाला है।

وَهُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ الْغَيْثَ مِنْۢ بَعْدِ مَا قَنَطُوْا وَ يَنْشُرُ رَحْمَتَهٗ ؕ وَ هُوَ الْوَلِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿٢٨﴾

28. और वोही है जो बारिश बरसाता है उनके मायूस हो जाने के बाद और अपनी रहमत फैला देता है, और वोह कारसाज़ बड़ी ता'रीफ़ों के लाइक़ है।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ مَا بَثَّ فِيْهِمَا مِنْ دَآبَّةٍ ؕ وَهُوَ عَلٰى جَمْعِهِمْ اِذَا يَشَآءُ قَدِيْرٌ ﴿۲۹﴾

29.और उसकी निशानियों में से आस्मानों और ज़मीनकी पैदाइश है और उन चलनेवाले (जानदारों) का (पैदा करना) भी जो उसने उनमें फैला दिए हैं, और वोह उन (सब) के जमा' करने पर भी जब चाहेगा बड़ा क़ादिर है।

وَ مَآ اَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِيْبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ اَيْدِيْكُمْ وَ يَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ؕ ﴿۳۰﴾

30. और जो मुसीबत भी तुम को पहुंचती है तो उस (बद आ'माली) के सबब से ही (पहुंचती है) जो तुम्हारे हाथोंने कमाई होती है हालांकि बहुतसी (कोताहियों) से तो वोह दरगुज़र भी फ़रमा देता है।

وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ فِي الْاَرْضِ ۚۖ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّ لَا نَصِيْرٍ ﴿۳۱﴾

31. और तुम (अपनी तदबीरों से) अल्लाह को (पूरी) ज़मीनमें आ़जिज़ नहीं कर सक्ते और अल्लाह को छोड़ कर (बुतों में से) न कोई तुम्हारा हामी होगा और न मददगार।

وَ مِنْ اٰيٰتِهِ الْجَوَارِ فِي الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ؕ ﴿۳۲﴾

32. और उसकी निशानियों में से पहाड़ों की तरह ऊंचे बहूरी जहाज़ भी हैं।

اِنْ يَّشَاْ يُسْكِنِ الرِّيْحَ فَيَظْلَلْنَ رَوَاكِدَ عَلٰى ظَهْرِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ۙ ﴿۳۳﴾

33. अगर वोह चाहे हवाको बिलकुल साकिन कर दे तो कश्तियां सत्हे समन्दर पर रुकी रेह जाएं , बेशक उस में हर सब्र शिआ़रो शुक्र गुज़ार के लिए निशानियां हैं।

اَوْ يُوْبِقْهُنَّ بِمَا كَسَبُوْا وَ يَعْفُ عَنْ كَثِيْرٍ ۫ ﴿۳۴﴾

34. या उन (जहाजों और कश्तियों) को उनके आ'माले (बद) के बाइ़स जो उन्होंने कमा रखे हैं ग़र्क़ कर दे, मगर वोह बहुत(सी खताओं) को मुआ़फ़ फ़रमा देता है।

وَّ يَعْلَمَ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْۤ اٰيٰتِنَا ؕ مَا لَهُمْ مِّنْ مَّحِيْصٍ ﴿۳۵﴾

35. और हमारी आयतों में झगडा करनेवाले जान लें कि उन के लिए भाग निकलने की कोई राह नहीं है।

فَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ

36. सो तुम्हें जो कुछ भी (मालो मताअ़) दिया गया है वोह दुन्यवी ज़िन्दगी का (चंद रोज़ा) फ़ाइदा है और जो

وَّ اَبْقٰى لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۚ﴿۳۶﴾

कुछ अल्लाह के पास है वोह बेहतर और पाएदार है (येह) उन लोगों के लिए है जो ईमान लाते और अपने रब पर तवक्कल करते हैं।

وَ الَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ وَ اِذَا مَا غَضِبُوْا هُمْ يَغْفِرُوْنَ ۚ﴿۳۷﴾

37. और जो लोग कबीरा गुनाहों और बेहयाई के कामों से परहेज़ करते हैं और जब उन्हें गुस्सा आता है तो मुआफ़ कर देते हैं।

وَالَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ۪ وَاَمْرُهُمْ شُوْرٰى بَيْنَهُمْ ۪ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۚ﴿۳۸﴾

38. और जो लोग अपने रबका फ़रमान कुबूल करते हैं और नमाज़ काइम रखते हैं और उनका फैसला बाहमी मश्वरे से होता है और उस माल में से जो हमने उन्हें अता किया है ख़र्च करते हैं।

وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَهُمُ الْبَغْيُ هُمْ يَنْتَصِرُوْنَ ﴿۳۹﴾

39. और वोह लोग कि जब उन्हें (किसी ज़ालिमो जाबिर) से जुल्म पहुंचता है तो (उससे) बदला लेते हैं।

وَ جَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا وَاَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۴۰﴾

40. और बुराई का बदला इसी बुराई की मिस्ल होता है, फिर जिसने मुआफ़ कर दिया और (मुआफ़ी के ज़रीए) इस्लाह की तो उसका अज्र अल्लाहके ज़िम्मे है। बेशक वोह ज़ालिमों को दोस्त नहीं रखता।

وَلَمَنِ انْتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهٖ فَاُولٰٓئِكَ مَا عَلَيْهِمْ مِّنْ سَبِيْلٍ ؕ﴿۴۱﴾

41. और यक़ीनन जो शख़्स अपने ऊपर जुल्म होनेके बाद बदला ले तो ऐसे लोगों पर (मलामतो गिरफ़्त) की कोई राह नहीं है।

اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَظْلِمُوْنَ النَّاسَ وَ يَبْغُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۴۲﴾

42. बस (मलामतो गिरफ़्त की) राह सिर्फ़ उनके खिलाफ है जो लोगों पर जुल्म करते हैं और ज़मीन में नाहक्क सरकशीओ फसाद फैलाते हैं, ऐसे ही लोगों के लिए दर्दनाक अज़ाब है।

وَلَمَنْ صَبَرَ وَ غَفَرَ اِنَّ ذٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿۴۳﴾

43. और यक़ीनन जो शख़्स सब्र करे और माफ कर दे तो बेशक येह बुलंद हिम्मत कामों में से है।

وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ وَّلِيٍّ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ؕ وَتَرَى الظّٰلِمِيْنَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ يَقُوْلُوْنَ هَلْ اِلٰى مَرَدٍّ مِّنْ سَبِيْلٍ ۚ ﴿۴۴﴾

44. और जिसे अल्लाह गुमराह ठेहरा दे तो उसके लिए उसके बाद कोई कारसाज़ नहीं होता, और आप जालिमों को देखेंगे के जब वोह अज़ाबे (आख़िरत) देख लेंगे (तो) कहेंगे : क्या (दुनिया में) पलट जानेकी कोई सबील है।

وَتَرٰىهُمْ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا خٰشِعِيْنَ مِنَ الذُّلِّ يَنْظُرُوْنَ مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ ؕ وَقَالَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَاَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَآ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ فِيْ عَذَابٍ مُّقِيْمٍ ﴿۴۵﴾

45. और आप उन्हें देखेंगे कि वोह दोज़ख़ पर ज़िल्लत और ख़ौफ़ के साथ सर झुकाए हुए पेश किऐ जाएंगे (उसे चोरी चोरी) छुपी निगाहों में से देखते होंगे, और ईमानवाले कहेंगे : बेशक नुक्सान उठानेवाले वही लोग हैं जिन्होंने अपनी जानों को और अपने एहलो अयाल को क़ियामत के दिन ख़सारे में डाल दिया, याद रखो ! बेशक ज़ालिम लोग दाईमी अज़ाब में (मुब्तिला) रहेंगे।

وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ اَوْلِيَآءَ يَنْصُرُوْنَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ سَبِيْلٍ ؕ ﴿۴۶﴾

46. और उन (काफ़िरों) के लिए कोई हिमायती नहीं होंगे जो अल्लाह के मुक़ाबिल उनकी मदद कर सकें, और जिसे अल्लाह गुमराह ठेहरा देता है तो उसके लिए (हिदायत की) कोई राह नहीं रेहती।

اِسْتَجِيْبُوْا لِرَبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ ؕ مَا لَكُمْ مِّنْ مَّلْجَاٍ يَّوْمَئِذٍ وَّمَا لَكُمْ مِّنْ نَّكِيْرٍ ﴿۴۷﴾

47. तुम लोग अपने रबका हुक्म कुबूल करलो क़ब्ल इसके कि वोह दिन आजाऐ जो अल्लाह की तरफ़ से टलने वाला नहीं है, न तुम्हारे लिए उस दिन कोई जाऐ पनाह होगी और न तुम्हारे लिए कोई जाए इन्कार।

فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ؕ اِنْ عَلَيْكَ اِلَّا الْبَلٰغُ ؕ وَاِنَّآ اِذَآ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً فَرِحَ بِهَا ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌۢ بِمَا

48. फिर (भी) अगर वोह रूगर्दानी करें तो हमने आपको उन पर (तबाही से बचाने का) ज़िम्मेदार बनाकर नहीं भेजा। आप पर तो सिर्फ़ (पैग़ामे हक़्क़) पहुंचा देने की ज़िम्मेदारी है, और बेशक जब हम इन्सान को अपनी बारगाह से रहमत (का ज़ाइक़ा) चखाते हैं तो वोह उससे खुश हो जाता है और अगर उन्हें कोई मुसीबत पहोंचती है

قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ فَإِنَّ الْإِنسَانَ كَفُورٌ ﴿٤٨﴾

उनके अपने हाथों से आगे भेजे हुऐ आ'माले (बद) के बाइस तो बेशक इन्सान बड़ा नाशुक्रगुज़ार (साबित होता) है।

لِّلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ يَهَبُ لِمَن يَشَاءُ إِنَاثًا وَيَهَبُ لِمَن يَشَاءُ الذُّكُورَ ﴿٤٩﴾

49. अल्लाह ही के लिए आस्मानों और ज़मीनकी बादशाहत है, वोह जो चाहता है पैदा फ़रमाता है, जिसे चाहता है लड़कियां अता करता है और जिसे चाहता है लड़के बख़्शता है।

أَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَإِنَاثًا ۖ وَيَجْعَلُ مَن يَشَاءُ عَقِيمًا ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌ قَدِيرٌ ﴿٥٠﴾

50. या उन्हें बेटे और बेटियां (दोनों) जमा' फ़रमाता है और जिसे चाहता है बांझ ही बना देता है, बेशक वोह खूब जाननेवाला बड़ी कुदरत वाला है।

وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ أَن يُكَلِّمَهُ اللَّهُ إِلَّا وَحْيًا أَوْ مِن وَرَاءِ حِجَابٍ أَوْ يُرْسِلَ رَسُولًا فَيُوحِيَ بِإِذْنِهِ مَا يَشَاءُ ۚ إِنَّهُ عَلِيٌّ حَكِيمٌ ﴿٥١﴾

51. और हर बशर की (येह) मजाल नहीं कि अल्लाह उससे (बराहे रास्त) कलाम करे मगर येह कि वही के जरीए (किसी को शाने नुबुव्वत से सरफ़राज फ़रमा दे) या पर्दे के पीछे से (बात करे जैसे मूसा عليه السلام से तूरे सीना पर की) या किसी फ़रिश्ते को फ़िरस्तादह बना कर भेजे और वोह उसके इज़्न से जो अल्लाह चाहे वही करे (अल ग़रज आलमे बशरियत के लिए खिताबे इलाही का वास्ता और वसीला सिर्फ़ नबी और रसूल ही होगा), बेशक वोह बुलंद मर्तबा बड़ी हिक्मतवाला है।

وَكَذَٰلِكَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ رُوحًا مِّنْ أَمْرِنَا ۚ مَا كُنتَ تَدْرِي مَا الْكِتَابُ وَلَا الْإِيمَانُ وَلَٰكِن جَعَلْنَاهُ نُورًا نَّهْدِي بِهِ مَن نَّشَاءُ مِنْ عِبَادِنَا ۚ وَإِنَّكَ لَتَهْدِي إِلَىٰ

52. सो इसी तरह हमने आपकी तरफ़ अपने हुक्म से रूहे (कुलूबो अरवाह) की वही फ़रमाई (जो कुरआन है), और आप (वही से क़ब्ल अपनी ज़ाती दिरायतो फ़िक्र से) न येह जानते थे कि किताब क्या है और न ईमान (के शरई अह्काम की तफ़्सीलात को ही जानते थे जो बाद में नाज़िल और मुक़र्रर हुईं) ★ मगर हमने उसे नूर बना दिया। हम उस (नूर) के जरीए अपने बंदों में से जिसे चाहते हैं

★ (आप ﷺ की शाने उम्मियत की तरफ़ इशारा है ताकि कुफ़्फ़ार आपकी ज़बान से कुरआन की आयात और ईमान

صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۙ﴿۵۲﴾

हिदायत से नवाजते हैं, और बेशक आप ही सिराते मुस्तकीम की तरफ़ हिदायत अता फ़रमाते हैं।

صِرَاطِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِ ؕ اَلَاۤ اِلَی اللّٰهِ تَصِیْرُ الْاُمُوْرُ ﴿۵۳﴾

53. (येह) सिराते मुस्तकीम) उसी अल्लाह ही का रास्ता है जो आस्मानों और ज़मीन की हर चीज का मालिक है। जान लो ! के सारे काम अल्लाह ही की तरफ़ लौटते हैं।

आयातुहा 89	43 सूरतुज़.ज़ुखरुफ़ि मक्किय्यतुन 63	रुकूआतुहा 7

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

حٰمٓ ۚ﴿۱﴾

1. हा मीम (हक़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं)।

وَ الْكِتٰبِ الْمُبِیْنِ ۙ﴿۲﴾

2. क़सम है रौशन किताब की।

اِنَّا جَعَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِیًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۚ﴿۳﴾

3. बेशक हमने इसे अ़रबी (ज़बान) का कुरआन बनाया है ताकि तुम लोग समझ सको।

وَ اِنَّهٗ فِیْۤ اُمِّ الْكِتٰبِ لَدَیْنَا لَعَلِیٌّ حَكِیْمٌ ؕ﴿۴﴾

4. बेशक वोह हमारे पास सब किताबों की अस्ल (लौहे महफ़ूज़) में सब्त है यक़ीनन (येह सब किताबों पर) बुलंद मर्तबा बड़ी हिक्मतवाला है।

اَفَنَضْرِبُ عَنْكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا اَنْ كُنْتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِیْنَ ﴿۵﴾

5. और क्या हम इस नसीहत को तुम से इस बिना पर रोक दें कि तुम हद से गुज़र जानेवाली क़ौम हो।

की तफ़्सीलात सुनकर येह बदगुमानी न फैलाएं के येह सब कुछ हजरत मुहम्मद मुस्तुफा ﷺ ने अपने जाती इल्म और तफ़क्कुर से घड़ लिया है कुछ नाज़िल नहीं हुवा, सो येह अज़ खुद न जानना हुज़ूर ﷺ का अ़ज़ीम मो'जिज़ा बना दिया गया।)

★(ऐ ह़बीब! आपका हिदायत देना और हमारा हिदायत देना दोनों की ह़क़ीक़त एक ही है और सिर्फ़ उन्ही को हिदायत नसीब होती है जो उस हक़ीक़त की मा'रेफत और उससे वाबस्तगी रख़ते हैं।)

وَكَمْ أَرْسَلْنَا مِنْ نَّبِيٍّ فِي
الْأَوَّلِينَ ﴿٦﴾

6. और पहले लोगों में हमने कितने ही पयग़म्बर भेजे थे।

وَمَا يَأْتِيهِمْ مِّنْ نَّبِيٍّ إِلَّا كَانُوا بِهِ
يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٧﴾

7. और कोई नबी उनके पास नहीं आता था मगर वोह उसका मज़ाक़ उड़ाया करते थे।

فَأَهْلَكْنَا أَشَدَّ مِنْهُمْ بَطْشًا وَّمَضَىٰ
مَثَلُ الْأَوَّلِينَ ﴿٨﴾

8. और हमने इन (कुफ़्फ़ारे मक्का) से ज़ियादह ज़ोर आवर लोगों को हलाक कर दिया और अगले लोगों का ह़ाल (कई जगह पहले) गुज़र चुका।

وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ خَلَقَهُنَّ
الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ﴿٩﴾

9. और अगर आप उनसे पूछें कि आस्मानों और ज़मीनको किसने पैदा किया तो वोह यक़ीनन कहेंगे कि उन्हें गालिब, इल्मवाले (रब) ने पैदा किया है।

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَّ
جَعَلَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ
تَهْتَدُونَ ﴿١٠﴾

10. जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को बिछोना बनाया और उसमें तुम्हारे लिए रास्ते बनाए ताकि तुम मंज़िले मक़्सूद तक पहुंच सको।

وَالَّذِي نَزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً
بِقَدَرٍ فَأَنْشَرْنَا بِهِ بَلْدَةً مَّيْتًا
كَذٰلِكَ تُخْرَجُونَ ﴿١١﴾

11. और जिसने आस्मान से अंदाज़ए (ज़रूरत) के मुताबिक पानी उतारा, फिर हमने उससे मुर्दा शहर को ज़िन्दा कर दिया, इसी तरह़ तुम (भी मरने के बाद ज़मीनसे) निकाले जाओगे।

وَالَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا وَ
جَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْفُلْكِ وَالْأَنْعَامِ
مَا تَرْكَبُونَ ﴿١٢﴾

12. और जिसने तमाम अक़्सामो अस्नाफ़ की मख़्लूक़ पैदा की और तुम्हारे लिए कश्तियां और बह़री जहाज़ बनाए और चौपाए बनाए जिन पर तुम (बह़रो बर्रमें) सवार होते हो।

لِتَسْتَوُوا عَلَىٰ ظُهُورِهِ ثُمَّ تَذْكُرُوا
نِعْمَةَ رَبِّكُمْ إِذَا اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ
وَتَقُولُوا سُبْحٰنَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا

13. ताकि तुम उनकी पुश्तों (या नशिस्तों) पर दुरुस्त हो कर बैठ सको, फिर तुम अपने रब की ने'मत को याद करो, जब तुम सुकून से उस (सवारीकी नशिस्त) पर बैठ जाओ तो कहो पाक है वोह ज़ात जिसने इसको हमारे ताबे

هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ ۙ﴿١٣﴾

कर दिया हा़लांकि हम उसे क़ाबू में नहीं ला सक्ते थे।

وَاِنَّاۤ اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ ﴿١٤﴾

14. और बेशक हम अपने रब की तरफ़ ज़रूर लौट कर जानेवाले हैं।

وَجَعَلُوْا لَهٗ مِنْ عِبَادِهٖ جُزْءًا ؕ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٥﴾

15. और उन (मुशरिकों) ने उसके बंदों में से (बा'ज़ को उसकी औलाद करार दे कर) उसके जुज़्व बना दिए, बेशक इन्सान सरीह़न बड़ा नाशुक्रगुज़ार है।

اَمِ اتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ بَنٰتٍ وَّاَصْفٰىكُمْ بِالْبَنِيْنَ ﴿١٦﴾

16. (ऐ काफ़िरो ! अपने पैमानए फिक्रके मुताबिक येही जवाब दो कि) क्या उसने अपनी मख़लूकात में से (खुद अपने लिए तो) बेटियां बना रखी हैं और तुम्हें बेटों के साथ मुख़्तस कर रखा है ?

وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحْمٰنِ مَثَلًا ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيْمٌ ﴿١٧﴾

17. हा़लांके जब उनमें से किसी को उस (के घर में बेटी की पैदाइश) की ख़बर दी जाती है जिसे उन्होंने (खुदाऐ) रहमान को शबीह बना रखा है तो उसका चेहरा सियाह हो जाता है और ग़मो गुस्से से भर जाता है।

اَوَمَنْ يُّنَشَّؤُا فِى الْحِلْيَةِ وَهُوَ فِى الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِيْنٍ ﴿١٨﴾

18.और क्या (अल्लाह अपने उमूर में शराकतो मुआ़विनत के लिए उसे औलाद बनाएगा) जो ज़ेवरो ज़ीनत में परवरिश पाए और (नरमिए तबा' और शर्मो ह़याके बाइ़स) झगड़े में वाज़ेह़ (राए का इज़्हार करनेवाली भी) न हो।

وَجَعَلُوا الْمَلٰٓئِكَةَ الَّذِيْنَ هُمْ عِبٰدُ الرَّحْمٰنِ اِنَاثًا ؕ اَشَهِدُوْا خَلْقَهُمْ ؕ سَتُكْتَبُ شَهَادَتُهُمْ وَيُسْـَٔلُوْنَ ﴿١٩﴾

19. और उन्होंने फ़रिश्तों को जो के(खुदाए) रह़मान के बंदे हैं औ़रतें क़रार दिया है, क्या वोह उनकी पैदाइश पर हा़ज़िर थे, (नहीं तो) अब उनकी गवाही लिख ली जाएगी और (रोज़े क़ियामत) उनसे बाज़ पुर्स होगी।

وَقَالُوْا لَوْ شَآءَ الرَّحْمٰنُ مَا عَبَدْنٰهُمْ ؕ مَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۗ اِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿٢٠﴾

20. और वोह केहते हैं कि अगर रह़्मान चाहता तो हम इन (बुतों) की परस्तिश न करते, उन्हें इसका (भी) कुछ इ़ल्म नहीं है वोह मह़ज़ अटकल से झुटी बातें करते हैं।

أَمْ اٰتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا مِّنْ قَبْلِهٖ فَهُمْ بِهٖ مُسْتَمْسِكُوْنَ ﴿٢١﴾

21. क्या हमने उन्हें इससे पहले कोई किताब दे रखी है जिसे वोह सनद के तौर पर थामे हुए हैं।

بَلْ قَالُوْٓا اِنَّا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا عَلٰٓى اُمَّةٍ وَّاِنَّا عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٢٢﴾

22. (नहीं) बल्कि वोह केहते हैं बेशक हमने अपने बापदादा को एक मिल्लत (व मजहब) पर पाया और यक़ीनन हम उनही के नुकूशे क़दम पर (चलते हुऐ) हिदायत याफ्ता हैं।

وَكَذٰلِكَ مَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالَ مُتْرَفُوْهَآ ۙ اِنَّا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا عَلٰٓى اُمَّةٍ وَّ اِنَّا عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ مُّقْتَدُوْنَ ﴿٢٣﴾

23. और इसी तरह हमने किसी बस्ती में आपसे पहले कोई डर सुनानेवाला नहीं भेजा मगर वहां के वडेरों और खुशहाल लोगों ने कहा : बेशक हमने अपने बापदादा को एक तरीक़ा-व-मजहब पर पाया और हम यक़ीनन उन ही के नुकूशे क़दम की इक्तिदा करनेवाले हैं।

قٰلَ اَوَلَوْ جِئْتُكُمْ بِاَهْدٰى مِمَّا وَجَدْتُّمْ عَلَيْهِ اٰبَآءَكُمْ ؕ قَالُوْٓا اِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٢٤﴾

24. (पयगम्बर ने) कहा : अगरचे मैं तुम्हारे पास उस (तरीक़े) से बेहतर हिदायत का (दीन और) तरीका ले आऊं जिस पर तुमने अपने बापदादा को पाया था, तो उन्होंने कहा : जो कुछ (भी) तुम दे कर भेजे गऐ हो हम उनके मुन्किर हैं।

فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٢٥﴾ ع

25. सो हमने उनसे बदला ले लिया पस आप देखिए के झुटलानेवालों का अंजाम कैसा हुवा।

ع ٢ ٨ النصف

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖٓ اِنَّنِيْ بَرَآءٌ مِّمَّا تَعْبُدُوْنَ ﴿٢٦﴾

26. और जब इब्राहीम (عليه السلام) ने अपने हक़ीक़ी चचा मगर परवरिश की निस्बत से) बाप और अपनी क़ौम से फ़रमाया : बेशक मैं उन सब चीज़ों से बेज़ार हूं जिन्हें तुम पूजते हो।

اِلَّا الَّذِيْ فَطَرَنِيْ فَاِنَّهٗ سَيَهْدِيْنِ ﴿٢٧﴾

27. बजुज़ उस ज़ात के जिसने मुझे पैदा किया सो वोही मुझे अनक़रीब रास्ता दिखाएगा।

وَجَعَلَهَا كَلِمَةًۢ بَاقِيَةً فِيْ عَقِبِهٖ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٨﴾

28. और इब्राहीम (عليه السلام) ने उस कलिमए तवहीद) को अपनी नस्लो जुर्रिय्यत में बाक़ी रहनेवाला कलिमा बना दिया ताकि वोह (अल्लाह की तरफ़) रुजूअ़ करते रहें।

بَلْ مَتَّعْتُ هٰٓؤُلَآءِ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى جَآءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢٩﴾

29. बल्कि मैंने उन्हें और उन के आबाओ अजदाद को (उसी इब्राहीम (عليه السلام) के तसद्दुक़ और वासिते से इस दुनिया में) फ़ाइदा पहुंचाया है यहां तक कि उन के पास हक़ (या'नी क़ुरआन) और वाज़ेह्-व-रौशन बयानवाला रसूल (صلى الله عليه وسلم) तशरीफ़ ले आया।

وَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ وَّاِنَّا بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٠﴾

30. और जब उनके पास हक़ आ पहुंचा तो केहने लगे : येह जादू है और हम इसके मुन्किर हैं।

وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ عَلٰى رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيْمٍ ﴿٣١﴾

31.और केहने लगे : येह क़ुरआन (मक्का और ताइफ़ की) दो बस्तियों में से किसी बड़े आदमी (या'नी किसी वडेरे, सरदार और मालदार) पर क्यों नहीं उतारा गया ?

اَهُمْ يَقْسِمُوْنَ رَحْمَتَ رَبِّكَ ؕ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيْشَتَهُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا سُخْرِيًّا ؕ وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿٣٢﴾

32.क्या आपके रब की रह्मते (नुबुव्वत) को येह लोग तक़्सीम करते हैं? हम उन के दरमियान दुन्यवी ज़िन्दगीमें उन के अस्बाबे (मईशत) तक़्सीम करते हैं और हम ही उनमें से बा'ज़ को बा'ज़ पर (वसाइलो दौलत में) दरजात की फ़ौक़िय्यत देते हैं (क्या हम येह इस लिए करते हैं) कि उन में बा'ज़ (जो अमीर हैं) बा'ज़ ग़रीबों) का मज़ाक उड़ाएं (येह गुर्बत का तमस्खुर है कि तुम इस वजह से किसी को रह्मते नुबुव्वत का हक़दार ही न समझो) और आप केरब की रह्मत उस दौलत से बेहतर हैं जिसे वोह जमा' करते हैं और घमंड करते हैं।

وَلَوْلَآ اَنْ يَّكُوْنَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَنْ يَّكْفُرُ بِالرَّحْمٰنِ لِبُيُوْتِهِمْ سُقُفًا مِّنْ فِضَّةٍ وَّمَعَارِجَ عَلَيْهَا يَظْهَرُوْنَ ﴿٣٣﴾

33. और अगर येह न होता कि सब लोग (कुफ़्र पर जमा' हो कर) एक ही मिल्लत बन जाएंगे तो हम (ख़ुदाए) रह्मान के साथ कुफ़्र करनेवाले तमाम लोगों के घरों की छतें (भी) चांदी की कर देते और सीढ़ियां (भी) जिन पर वोह चढ़ते हैं।

وَلِبُيُوْتِهِمْ اَبْوَابًا وَّسُرُرًا عَلَيْهَا

34. और (इसी तरह) उन के घरों के दरवाज़े (भी

يَتَّكِـُٔونَ ﴿٣٤﴾

चांदी की के कर देते) और तख़्त (भी) जिन पर वोह मस्नद लगाते हैं।

وَزُخْرُفًا ۚ وَإِن كُلُّ ذَٰلِكَ لَمَّا مَتَٰعُ ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا ۚ وَٱلْءَاخِرَةُ عِندَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٣٥﴾

35. और चांदी के ऊपर सोने और जवाहिरात की आराइश भी (कर देते), और येह सब कुछ दुन्यवी ज़िन्दगी की आ़रज़ी और ह़क़ीर मताअ़ है, और आख़िरत (का हुस्नो ज़ेबाइश) आपके रब के पास है (जो) सिर्फ़ परहेज़गारों के लिए है।

وَمَن يَعْشُ عَن ذِكْرِ ٱلرَّحْمَٰنِ نُقَيِّضْ لَهُۥ شَيْطَٰنًا فَهُوَ لَهُۥ قَرِينٌ ﴿٣٦﴾

36. और जो शख़्स (ख़ुदाए) रह़मान की याद से सर्फ़े नज़र कर ले तो हम उसकेलिए एक शैतान मुसल्लत कर देते हैं जो हर वक़्त उसके साथ जुड़ा रेहता है।

وَإِنَّهُمْ لَيَصُدُّونَهُمْ عَنِ ٱلسَّبِيلِ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُم مُّهْتَدُونَ ﴿٣٧﴾

37. और वोह (शयातीन) उन्हें (हिदायत के) रास्ते से रोकते हैं और वोह येही गुमान किए रेहते हैं के वोह हिदायत याफ़्ता हैं।

حَتَّىٰٓ إِذَا جَآءَنَا قَالَ يَٰلَيْتَ بَيْنِى وَبَيْنَكَ بُعْدَ ٱلْمَشْرِقَيْنِ فَبِئْسَ ٱلْقَرِينُ ﴿٣٨﴾

38. यहां तक कि जब वोह हमारे पास आएगा तो (अपने साथी शैतान से) कहेगा : ऐ काश ! मेरे और तेरे दरम्यान मशरिक़ो मग़रिब का फ़ासला होता पस (तू) बहुत ही बुरा साथी था।

وَلَن يَنفَعَكُمُ ٱلْيَوْمَ إِذ ظَّلَمْتُمْ أَنَّكُمْ فِى ٱلْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ ﴿٣٩﴾

39. और आज के दिन तुम्हें (येह आरज़ू करना) सूदमंद नहीं होगा जबकि तुम (उम्र भर) ज़ुल्म करते रहे (आज) तुम सब अ़ज़ाब में शरीक हो।

أَفَأَنتَ تُسْمِعُ ٱلصُّمَّ أَوْ تَهْدِى ٱلْعُمْىَ وَمَن كَانَ فِى ضَلَٰلٍ مُّبِينٍ ﴿٤٠﴾

40. फिर क्या आप बेहरों को सुनाएंगे या अँधों को और उन लोगों को जो खुली गुमराही में हैं राहे हिदायत दिखाएंगे।

فَإِمَّا نَذْهَبَنَّ بِكَ فَإِنَّا مِنْهُم مُّنتَقِمُونَ ﴿٤١﴾

41. पस अगर हम आपको (दुनिया से) ले जाएं तो तब भी हम इनसे बदला लेने वाले हैं।

أَوْ نُرِيَنَّكَ ٱلَّذِى وَعَدْنَٰهُمْ فَإِنَّا

42. या हम आपको वोह (अ़ज़ाब ही) दिखा दें जिसका

عَلَيْهِمْ مُّقْتَدِرُوْنَ ﴿٤٢﴾

हमने उनसे वा'दा किया है, सो बेशक हम उन पर कामिल क़ुदरत रखनेवाले हैं।

فَاسْتَمْسِكْ بِالَّذِيْٓ اُوْحِيَ اِلَيْكَ ۚ اِنَّكَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٤٣﴾

43. पस आप इस (क़ुर्आन) को मजबूती से थामे रखिए जो आपकी तरफ वह़ी किया गया है, बेशक आप सीधी राह पर (क़ाइम) हैं।

وَاِنَّهٗ لَذِكْرٌ لَّكَ وَلِقَوْمِكَ ۚ وَسَوْفَ تُسْـَٔلُوْنَ ﴿٤٤﴾

44. और यक़ीनन येह (क़ुर्आन) आपके लिए और आपकी उम्मत के लिए अ़ज़ीम शरफ़ है, और (लोगो !) अ़नक़रीब तुम से पूछा जाएगा (कि तुमने क़ुरआन के साथ कितना तअ़ल्लुक़ उस्तुवार किया)।

وَسْـَٔلْ مَنْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُّسُلِنَآ اَجَعَلْنَا مِنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ اٰلِهَةً يُّعْبَدُوْنَ ﴿٤٥﴾

45. और जो रसूल हमने आपसे पहले भेजे आप उनसे पूछिये कि क्या हमने (ख़ुदाए) रह़मान के सिवा कोई और मा'बूद बनाए थे कि उनकी परस्तिश की जाए।

ع ٤ ١٠

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَقَالَ اِنِّيْ رَسُوْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٦﴾

46. और यक़ीनन हमने मूसा (عليه السلام) को अपनी निशानियां दे कर फिरऔ़न और उसके सरदारों की तरफ़ भेजा तो उन्होंने कहा : बेशक मैं सब जहानों के परवरदिगार का रसूल हूं।

فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِاٰيٰتِنَآ اِذَا هُمْ مِّنْهَا يَضْحَكُوْنَ ﴿٤٧﴾

47. फिर जब वोह हमारी निशानियां ले कर उनके पास आए तो वोह उसी वक़्त उन (निशानियों) पर हंसने लगे।

وَمَا نُرِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ اِلَّا هِيَ اَكْبَرُ مِنْ اُخْتِهَا ۫ وَاَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٤٨﴾

48. और हम उन्हें कोई निशानी नहीं दिखाते थे मगर (येह कि) वोह अपने से पहली मुशाबह निशानी से कहीं बढ़ कर होती थी और (बिल आख़िर) हमने उन्हें (कई बार) अ़ज़ाब में पकड़ा ताकि वोह बाज़ आ जाएं।

وَقَالُوْا يٰٓاَيُّهَ السّٰحِرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۚ اِنَّنَا لَمُهْتَدُوْنَ ﴿٤٩﴾

49. और केहने लगे : ऐ जादूगर ! तू अपने रब से हमारे लिए उस अ़हद के मुताबिक दुआ़ कर जो उसने तुझ से कर रखा है (तो) बेशक हम हिदायत याफ़्ता हो जाएंगे।

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ إِذَا هُمْ يَنْكُثُونَ ﴿٥٠﴾

50. फिर जब हमने (दुआए मूसा से) वोह अ़ज़ाब उन से हटा दिया तो वोह फ़ौरन अ़हद शिकनी करने लगे।

وَنَادَىٰ فِرْعَوْنُ فِي قَوْمِهِ قَالَ يَا قَوْمِ أَلَيْسَ لِي مُلْكُ مِصْرَ وَهَٰذِهِ الْأَنْهَارُ تَجْرِي مِنْ تَحْتِي ۖ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ﴿٥١﴾

51. और फ़िरऔ़न ने अपनी क़ौम में (फ़ख़्र से) पुकारा (और) कहा : ऐ मेरी क़ौम ! क्या मुल्केमिस्र मेरे क़ब्ज़े में नहीं है और येह नेहरें जो मेरे (महल्लात के) नीचे से बेह रही हैं (क्या मेरी नहीं हैं?) सो क्या तुम देखते नहीं हो?

أَمْ أَنَا خَيْرٌ مِنْ هَٰذَا الَّذِي هُوَ مَهِينٌ وَلَا يَكَادُ يُبِينُ ﴿٥٢﴾

52. क्या (येह हक़ीक़त नहीं कि) मैं इस शख़्स से बेहतर हूं जो हक़ीरो बे वक़्अ़त है और साफ़ तरीक़े से गुफ्तुगू भी नहीं कर सकता।

فَلَوْلَا أُلْقِيَ عَلَيْهِ أَسْوِرَةٌ مِنْ ذَهَبٍ أَوْ جَاءَ مَعَهُ الْمَلَائِكَةُ مُقْتَرِنِينَ ﴿٥٣﴾

53. फिर (अगर येह सच्चा रसूल है तो) इस पर (पहनने के लिए) सोने के कंगन क्यों नहीं उतारे जाते या इसके साथ फ़रिश्ते जमा हो कर (पै दर पै) क्यों नहीं आ जाते।

فَاسْتَخَفَّ قَوْمَهُ فَأَطَاعُوهُ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ﴿٥٤﴾

54. पस उसने (इन बातों से) अपनी क़ौम को बेवक़ूफ़ बना लिया, सो उन लोगोंने उसका केहना मान लिया, बेशक वोह लोग ही ना फ़रमान क़ौम थे।

فَلَمَّا آسَفُونَا انْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنَاهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٥٥﴾

55. फिर जब उन्होंने (मूसा عليه السلام की शान में गुस्ताख़ी कर के) हमें शदीद ग़ज़बनाक कर दिया (तो) हमने उनसे बदला ले लिया और हमने उन सब को ग़र्क़ कर दिया।

فَجَعَلْنَاهُمْ سَلَفًا وَمَثَلًا لِلْآخِرِينَ ﴿٥٦﴾ ع

56. सो हमने उन्हें गया गुज़रा कर दिया और पीछे आनेवालों के लिए नमूनए इब्रत बना दिया।

وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا إِذَا قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُّونَ ﴿٥٧﴾

57. और जब (ईसा) इब्ने मरयम (عليه السلام) की मिसाल बयान की जाए तो उस वक़्त आपकी क़ौम (के लोग) उस से (खुशी के मारे) हंसते हैं।

وَقَالُوْٓا ءَاٰلِهَتُنَا خَيْرٌ اَمْ هُوَ ؕ مَا ضَرَبُوْهُ لَكَ اِلَّا جَدَلًا ؕ بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُوْنَ ﴿۵۸﴾

58. और केहते हैं आया हमारे मा'बूद बेहतर हैं या वोह (ईसा عليه السلام), वोह आपसे येह बात महज़ झगड़ने के लिए करते हैं, बल्कि वोह लोग बड़े झगड़ालू हैं।

اِنْ هُوَ اِلَّا عَبْدٌ اَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنٰهُ مَثَلًا لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ؕ ﴿۵۹﴾

59. वोह (ईसा عليه السلام) महज़ एक (बरगुज़ीदा) बंदा थे जिन पर हमने इनआम फ़रमाया और हमने उन्हें बनी इसराईल के लिए (अपनी क़ुदरत का) नमूना बनाया था।

وَلَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَّلٰٓئِكَةً فِى الْاَرْضِ يَخْلُفُوْنَ ﴿۶۰﴾

60. और अगर हम चाहते तो हम तुम्हारे बदले ज़मीन में फ़रिश्ते पैदा कर देते जो तुम्हारे जा नशीन होते।

وَاِنَّهٗ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرُنَّ بِهَا وَاتَّبِعُوْنِ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿۶۱﴾

61. और बेशक वोह (ईसा عليه السلام जब आस्मान से नुज़ूल करेंगे तो क़ुर्बे) क़ियामत की अ़लामत होंगे, पस तुम हरगिज़ उसमें शक न करना और मेरी पैरवी करते रहना, येह सीधा रास्ता है।

وَلَا يَصُدَّنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ ۚ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۶۲﴾

62. और शैतान तुम्हें हरगिज़ (इस राह से) रोकने न पाए बेशक वोह तुम्हारा खुला दुश्मन है।

وَلَمَّا جَآءَ عِيْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ قَالَ قَدْ جِئْتُكُمْ بِالْحِكْمَةِ وَلِاُبَيِّنَ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِىْ تَخْتَلِفُوْنَ فِيْهِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿۶۳﴾

63. और जब ईसा (عليه السلام) वाज़ेह निशानियां ले कर आए तो उन्होंने कहा : यक़ीनन मैं तुम्हारे पास हिक्मतो दानाई ले कर आया हूं और (इस लिए आया हूं) कि बा'ज़ बातें जिनमें तुम इख़्तिलाफ़ कर रहे हो तुम्हारे लिए खूब वाज़ेह कर दूं, सो तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअ़त करो।

اِنَّ اللّٰهَ هُوَ رَبِّىْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿۶۴﴾

64. बेशक अल्लाह ही मेरा (भी) रब है और तुम्हारा (भी) रब है, पस उसी की इबादत करो। येही सीधा रास्ता है।

فَاخْتَلَفَ الْاَحْزَابُ مِنْۢ بَيْنِهِمْ ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْ عَذَابِ

65. पस उनके दरम्यान (आपस में ही) मुख़्तलिफ़ फ़िरके हो गए, सो जिन लोगोंने ज़ुल्म किया उन के लिए दर्दनाक

يَوۡمٍ اَلِيۡمٍ ﴿٦٥﴾

दिन के अज़ाब की ख़राबी है ।

هَلۡ يَنۡظُرُوۡنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنۡ تَاۡتِيَهُمۡ بَغۡتَةً وَّهُمۡ لَا يَشۡعُرُوۡنَ ﴿٦٦﴾

66. येह लोग क्या इन्तिज़ार कर रहे हैं (बस येही) के क़ियामत उन पर अचानक आ जाए और उन्हें ख़बर भी न हो।

اَلۡاَخِلَّآءُ يَوۡمَئِذٍۭ بَعۡضُهُمۡ لِبَعۡضٍ عَدُوٌّ اِلَّا الۡمُتَّقِيۡنَ ﴿٦٧﴾

67. सारे दोस्तो अह्‌बाब उस दिन एक दूसरे के दुश्मन होंगे सिवाए परहेज़गारों के (उन ही की दोस्ती और विलायत काम आएगी)।

يٰعِبَادِ لَا خَوۡفٌ عَلَيۡكُمُ الۡيَوۡمَ وَلَاۤ اَنۡتُمۡ تَحۡزَنُوۡنَ ﴿٦٨﴾

68. (उनसे फ़रमाया जाएगा) : ऐ मेरे (मुक़र्रब) बंदो ! आजके दिन तुम पर न कोई ख़ौफ़ है और न ही तुम ग़मज़दा होगे।

اَلَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا بِاٰيٰتِنَا وَ كَانُوۡا مُسۡلِمِيۡنَ ﴿٦٩﴾

69. (येह) वोह लोग हैं जो हमारी आयतों पर ईमान लाए और हमेशा (हमारे) ताबेए़ फ़रमान रहे।

اُدۡخُلُوا الۡجَنَّةَ اَنۡتُمۡ وَ اَزۡوَاجُكُمۡ تُحۡبَرُوۡنَ ﴿٧٠﴾

70. तुम और तुम्हारे साथ जुड़े रेहनेवाले साथी ★ (सब) जन्नत में दाख़िल हो जाओ (जन्नतकी ने'मतों, राहतों और लिज़्ज़तों के साथ) तुम्हारी तकरीम की जाएगी।

يُطَافُ عَلَيۡهِمۡ بِصِحَافٍ مِّنۡ ذَهَبٍ وَّ اَكۡوَابٍ ۚ وَ فِيۡهَا مَا تَشۡتَهِيۡهِ الۡاَنۡفُسُ وَ تَلَذُّ الۡاَعۡيُنُ ۚ وَ اَنۡتُمۡ فِيۡهَا خٰلِدُوۡنَ ﴿٧١﴾

71. उन पर सोने की पलेटों और ग्लासों का दौर चलाया जाएगा और वहां वोह सब चीज़ें (मौजूद) होंगी जिनको दिल चाहेंगे और (जिनसे) आँखें राहत पाएंगी और तुम वहां हमेशा रहोगे।

وَ تِلۡكَ الۡجَنَّةُ الَّتِيۡۤ اُوۡرِثۡتُمُوۡهَا

72. और (ऐ परहेज़गारो !) येह वोह जन्नत है जिसके तुम

(मुफ़स्सिरीने किरामने आयते करीमा में "अज़्वाजुकुम" का मा'ना बीवियों केअलावा "क़रीबी साथी" भी किया है जैसे इमाम क़ुर्तुबी ने तफ़्सीरुल जामेउ़ल अह्‌कामुल क़ुरआन, (ज़ुज़ 14 : 11) में, इमाम इब्ने कसीरने तफ्सीरुल क़ुरआनुल अज़ीम, 4 :134 में और अल्लामा शौकानी ने तफ़्सीर फ़त्हुल क़दीर, 4 : 563 में बयान किया है इस बिना पर अज़्वाज का मा'ना बीवियों की बजाए "साथ जुड़े रेहनेवाले साथी" किया है।)

بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٧٢﴾

मालिक बना दिए गए हो, उन (आ'माल) के सिलेमें जो तुम अंजाम देते थे।

لَكُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ كَثِيرَةٌ مِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿٧٣﴾

73. तुम्हारे लिए उसमें बकसरत फल और मेवे हैं तुम उनमें से खाते रहोगे।

إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي عَذَابِ جَهَنَّمَ خَالِدُونَ ﴿٧٤﴾

74. बेशक मुजरिम लोग दोज़ख़के अ़ज़ाबमें हमेशा रेहनेवाले हैं।

لَا يُفَتَّرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ ﴿٧٥﴾

75. जो उनसे हलका नहीं किया जाएगा और वोह उसमें ना उम्मीद हो कर पड़े रहेंगे।

وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَٰكِنْ كَانُوا هُمُ الظَّالِمِينَ ﴿٧٦﴾

76. और हमने उन पर ज़ुल्म नहीं किया लेकिन वोह खुद ही ज़ुल्म करनेवाले थे।

وَنَادَوْا يَا مَالِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ ۖ قَالَ إِنَّكُمْ مَاكِثُونَ ﴿٧٧﴾

77.और वोह (दारोग़ए जहन्नम को) पुकारेंगे ऐ मालिक! आपका रब हमें मौत दे दे (तो अच्छा है)। वोह कहेगा कि (तुम अब इसी ह़ाल में ही) हमेशा रेहनेवाले हो।

لَقَدْ جِئْنَاكُمْ بِالْحَقِّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كَارِهُونَ ﴿٧٨﴾

78. बेशक हम तुम्हारे पास ह़क़ लाए लेकिन तुम में से अक्सर लोग ह़क़ को नापसंद करते थे।

أَمْ أَبْرَمُوا أَمْرًا فَإِنَّا مُبْرِمُونَ ﴿٧٩﴾

79. क्या उन्होंने (या'नी कुफ़्फ़ारे मक्काने रसूल ﷺ के ख़िलाफ़ कोई तदबीर) पुख़्ता कर ली है तो हम (भी) पुख़्ता फ़ैसला करनेवाले हैं।

أَمْ يَحْسَبُونَ أَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ ۚ بَلَىٰ وَرُسُلُنَا لَدَيْهِمْ يَكْتُبُونَ ﴿٨٠﴾

80. क्या वोह गुमान करते हैं कि हम उनकी पोशीदा बातें और उनकी सरगोशियां नहीं सुनते, क्यों नहीं (ज़रूर सुनते हैं) और हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते भी उनके पास लिख रहे होते हैं।

قُلْ إِنْ كَانَ لِلرَّحْمَٰنِ وَلَدٌ فَأَنَا أَوَّلُ الْعَابِدِينَ ﴿٨١﴾

81. फ़रमा दीजिए कि अगर (बफ़र्ज़े मुह़ाल) रह़मान के(हां) कोई लड़का होता (या औलाद होती) तो मैं सब से पहले (उसकी) इ़बादत करनेवाला होता।

سُبْحٰنَ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿٨٢﴾

82. आस्मानों और ज़मीनका परवरदिगार, अर्श का मालिक पाक है उन बातों से जो येह बयान करते हैं।

فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَ يَلْعَبُوْا حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ﴿٨٣﴾

83. सो आप उन्हें छोड़ दीजिऐ, बेकार बह्सों में पडे रहें और लग़्व खे़ल खे़लते रहें हत्ता के अपने उस दिन को पालेंगे जिसका उनसे वा'दा किया जा रहा है।

وَ هُوَ الَّذِيْ فِي السَّمَآءِ اِلٰهٌ وَّ فِي الْاَرْضِ اِلٰهٌ ؕ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْعَلِيْمُ ﴿٨٤﴾

84. और वोही ज़ात आस्मान में मा'बूद है और ज़मीन में (भी) मा'बूद है और वोह बड़ी हिक्मतवाला बड़े इल्मवाला है।

وَتَبٰرَكَ الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ مَا بَيْنَهُمَا ۚ وَعِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٨٥﴾

85. और वोह ज़ात बड़ी बा बरकत है जिस के लिए आस्मानों और ज़मीनकी बादशाहत है और (उनकी भी) जो कुछ उनके दरमियान है, और (वक़्ते) क़ियामत का इल्म (भी) उसके पास है, और तुम उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे।

وَ لَا يَمْلِكُ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنْ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٨٦﴾

86. और जिन की येह (काफ़िर लोग) अल्लाह के सिवा परस्तिश करते हैं वोह (तो) शफ़ाअ़त का (कोई) इख़्तियार नहीं रखते मगर (उनकेबर अ़क्स शफ़ाअत का इख़्तियार उनको हा़सिल है) जिन्होंने ह़क़ की गवाही दी और वोह उसे (यक़ीन के साथ) जानते भी थे।

وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ فَاَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٨٧﴾

87. और अगर आप इनसे दर्याफ़्त फ़रमाऐं कि इन्हें किसने पैदा किया है तो ज़रूर कहेंगे अल्लाहने, फिर वोह कहां भटकते फिरते हैं।

وَقِيْلِهٖ يٰرَبِّ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ قَوْمٌ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٨٨﴾

وقف لازم

88. और उस (हबीबे मुकर्रम ﷺ) के (यूं) केहने की क़सम के या रब ! बेशक येह ऐसे लोग हैं जो ईमान (ही) नहीं लाते।

فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلٰمٌ ؕ فَسَوْفَ

89. सो (मेरे मह़बूब !) आप उनसे चेहरा फेर लीजिए

يَعْلَمُوْنَ ﴿٨٩﴾

और (यूं) केह दीजिए : (बस हमारा) सलाम, फिर वोह जल्द ही (अपना हश्र) मा'लूम कर लेंगे।

आयातुहा 59	44 सूरतुद्दुख़ानि मक्किय्यतुन 64	रुकूआतुहा 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

حٰمٓ ﴿١﴾

1. हा मीम (हक़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं)।

وَالْكِتٰبِ الْمُبِیْنِ ﴿٢﴾

2. इस रौशन किताब की कसम।

اِنَّاۤ اَنْزَلْنٰهُ فِیْ لَیْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ اِنَّا كُنَّا مُنْذِرِیْنَ ﴿٣﴾

3. बेशक हमने इसे एक बा बरकत रातमें उतारा है बेशक हम डर सुनानेवाले हैं।

فِیْهَا یُفْرَقُ كُلُّ اَمْرٍ حَكِیْمٍ ﴿٤﴾

4. उस (रात) में हर हिक्मतवाले काम का (जुदा जुदा) फ़ैसला कर दिया जाता है।

اَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا ؕ اِنَّا كُنَّا مُرْسِلِیْنَ ﴿٥﴾

5. हमारी बारगाह केहुक्म से, बेशक हम ही भेजनेवाले हैं।

رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ ﴿٦﴾

6. (येह) आपके रब की जानिब से रहमत है, बेशक वोह खूब सुननेवाला खूब जाननेवाला है।

رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ مَا بَیْنَهُمَا ۘ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِیْنَ ﴿٧﴾

7. आस्मानों और ज़मीनका और कुछ उनके दरमियान है (उसका) परवरदिगार है, बशर्ते कि तुम यक़ीन रखनेवाले हो।

لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ یُحْیٖ وَ یُمِیْتُ ؕ رَبُّكُمْ وَ رَبُّ اٰبَآىِٕكُمُ الْاَوَّلِیْنَ ﴿٨﴾

8. उसके सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोही ज़िन्दगी देता और मौत देता है (वोह) तुम्हारा (भी) रब है और तुम्हारे अगले आबाओ अज्दाद का (भी) रब है।

بَلْ هُمْ فِیْ شَكٍّ یَّلْعَبُوْنَ ﴿٩﴾

9. बल्कि वोह शक में पड़े खेल रहे हैं।

فَارْتَقِبْ یَوْمَ تَاْتِی السَّمَآءُ بِدُخَانٍ

10. सो आप उस दिन का इन्तिज़ार करें जब आस्मान

مُّبِيْنٍ ۙ﴿۱۰﴾

वाज़ेह् धुवाँ ज़ाहिर कर देगा।

يَّغْشَى النَّاسَ ؕ هٰذَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۱﴾

11. जो लोगोंको ढाँप लेगा (या'नी हर तरफ़ मुहीत हो जाएगा), येह दर्दनाक अ़ज़ाब है।

رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ اِنَّا مُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۲﴾

12. (उस वक्त कहेंगे :) ऐ हमारे रब ! तू हमसे (इस) अ़ज़ाबको दूर कर दे, बेशक हम ईमान लाते हैं।

اَنّٰى لَهُمُ الذِّكْرٰى وَ قَدْ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ۙ﴿۱۳﴾

13. अब उनका नसीह़त मानना कहां (मुफ़ीद) हो सक्ता है हालां कि उनके पास वाज़ेह् बयान फ़रमाने वाले रसूल आ चुके।

ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَ قَالُوْا مُعَلَّمٌ مَّجْنُوْنٌ ۘ﴿۱۴﴾

14. फिर उन्होंने उससे मुंह फेर लिया और (गुस्ताख़ी करते हुए) केहने लगे : (वोह) सिखाया हुवा दीवाना है।

وقف لازم

اِنَّا كَاشِفُوا الْعَذَابِ قَلِيْلًا اِنَّكُمْ عَآئِدُوْنَ ۘ﴿۱۵﴾

15. बेशक हम थोड़ा सा अ़ज़ाब दूर किए देते हैं तुम यक़ीनन (वोही कुफ़्र) दोहराने लगोगे।

وقف لازم

يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرٰى ۚ اِنَّا مُنْتَقِمُوْنَ ﴿۱۶﴾

16. जिस दिन हम बड़ी सख़्त गिरफ़्त करेंगे तो (उस दिन) हम यक़ीनन इन्तिक़ाम ले ही लेंगे।

وَ لَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَآءَهُمْ رَسُوْلٌ كَرِيْمٌ ۙ﴿۱۷﴾

17. और दर ह़क़ीक़त हमने उनसे पहले क़ौमे फ़िरऔन की (भी) आज़माइश की थी और उनके पास बुज़ुर्गीवाले रसूल (मूसा عليه السلام) आए थे।

اَنْ اَدُّوْۤا اِلَیَّ عِبَادَ اللّٰهِ ؕ اِنِّیْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ۙ﴿۱۸﴾

18. (उन्होंने कहा था) कि तुम बंदगाने ख़ुदा (या'नी बनी इसराईल) को मेरे ह़वाले कर दो, बेशक मैं तुम्हारी क़ियादतो रहबरी के लिए अमानतदार रसूल हूं।

وَّ اَنْ لَّا تَعْلُوْا عَلَى اللّٰهِ ۚ اِنِّیْۤ اٰتِيْكُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۚ﴿۱۹﴾

19. और येह कि अल्लाह के मुक़ाबले में सरकशी न करो मैं तुम्हारे पास रौशन दलील ले कर आया हूं।

وَ اِنِّیْ عُذْتُ بِرَبِّیْ وَرَبِّكُمْ اَنْ

20. और बेशक मैंने अपने रब और तुम्हारे रबकी पनाह

تَرْجُمُونِ ﴿٢٠﴾

ले ली है इससे कि तुम मुझे संगसार करो।

وَإِنْ لَّمْ تُؤْمِنُوا لِي فَاعْتَزِلُونِ ﴿٢١﴾

21. और अगर तुम मुझ पर ईमान नहीं लाते तो मुझ से कनारा कश हो जाओ।

فَدَعَا رَبَّهُ أَنَّ هَٰؤُلَاءِ قَوْمٌ مُّجْرِمُونَ ﴿٢٢﴾

22. फिर उन्होंने अपने रबसे दुआ की कि बेशक येह लोग मुजरिम क़ौम हैं।

فَأَسْرِ بِعِبَادِي لَيْلًا إِنَّكُمْ مُّتَّبَعُونَ ﴿٢٣﴾

23. (इर्शाद हुवा) फिर तुम मेरे बंदों को रातों रात ले कर चले जाओ बेशक तुम्हारा तआ़क़ुब किया जाएगा।

وَاتْرُكِ الْبَحْرَ رَهْوًا ۖ إِنَّهُمْ جُندٌ مُّغْرَقُونَ ﴿٢٤﴾

24. और (ख़ुद गुज़र जाने केबाद) दरिया को साकिन और खुला छोड़ देना, बेशक वोह ऐसा लश्कर है जिसे डुबो दिया जाएगा।

كَمْ تَرَكُوا مِن جَنَّاتٍ وَّعُيُونٍ ﴿٢٥﴾

25. वोह कितने ही बाग़ात और चश्मे छोड़ गए।

وَّزُرُوعٍ وَّمَقَامٍ كَرِيمٍ ﴿٢٦﴾

26. और ज़राअ़तें और आ़लीशान इमारतें।

وَّنَعْمَةٍ كَانُوا فِيهَا فَاكِهِينَ ﴿٢٧﴾

27. और ने'मतें (और राहतें) जिन में वोह ऐश किया करते थे।

كَذَٰلِكَ ۖ وَأَوْرَثْنَاهَا قَوْمًا آخَرِينَ ﴿٢٨﴾

28. उसी तरह हुवा, और हमने उन सबका दूसरे लोगोंको वारिस बना दिया।

فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ وَمَا كَانُوا مُنظَرِينَ ﴿٢٩﴾

29. फिर न (तू) उन पर आस्मान और ज़मीन रोए और न ही उन्हें मोहलत दी गई।

وَلَقَدْ نَجَّيْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ مِنَ الْعَذَابِ الْمُهِينِ ﴿٣٠﴾

30. और वाक़िअ़तन हमने बनी इसराईल को ज़िल्लत अंगेज़ अ़ज़ाब से नजात बख़्शी।

مِن فِرْعَوْنَ ۚ إِنَّهُ كَانَ عَالِيًا مِّنَ الْمُسْرِفِينَ ﴿٣١﴾

31. फ़िरऔ़न से, बेशक वोह बड़ा सरकश, ह़द से गुज़रनेवालों में से था।

وَلَقَدِ اخْتَرْنَاهُمْ عَلَىٰ عِلْمٍ عَلَى

32. और बेशक हमने उन (बनी इसराईल) को इल्म की

الْعٰلَمِیْنَ ﴿۳۲﴾

बिना पर सारी दुनिया (की मुअस्सर तेहज़ीबों) पर चुन लिया था।

وَ اٰتَیْنٰهُمْ مِّنَ الْاٰیٰتِ مَا فِیْهِ بَلٰٓؤٌا مُّبِیْنٌ ﴿۳۳﴾

33. और हमने उन्हें वोह निशानियां अ़ता फ़रमाईं जिन में ज़ाहिरी ने'मत (और सरीह आज़्माइश) थी।

اِنَّ هٰۤؤُلَآءِ لَیَقُوْلُوْنَ ﴿۳۴﴾

34. बेशक वोह लोग केहते हैं।

اِنْ هِیَ اِلَّا مَوْتَتُنَا الْاُوْلٰی وَ مَا نَحْنُ بِمُنْشَرِیْنَ ﴿۳۵﴾

35. कि हमारी पहली मौत के सिवा (बाद में) कुछ नहीं है और हम (दोबारा) नहीं उठाए जाएंगे।

فَاْتُوْا بِاٰبَآىِٕنَاۤ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۳۶﴾

36. सो तुम हमारे बापदादा को (ज़िन्दा कर के) ले आओ, अगर तुम सच्चे हो।

اَهُمْ خَیْرٌ اَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ ۙ وَّ الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ اَهْلَكْنٰهُمْ ۫ اِنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِیْنَ ﴿۳۷﴾

37. भला येह लोग बेहतर हैं या (बादशाहे यमन अस्अ़द अबू करीब) तुब्बा' (अल हुमैरी) की क़ौम और वोह लोग जो उन से पहले थे, हमने उन (सब) को हलाक कर डाला था, बेशक वोह लोग मुजरिम थे।

وَ مَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ وَ مَا بَیْنَهُمَا لٰعِبِیْنَ ﴿۳۸﴾

38. और हमने आस्मानों और ज़मीन को और जो कुछ उनके दरमियान है उसे महज़ खेलते हुऐ नहीं बनाया।

مَا خَلَقْنٰهُمَاۤ اِلَّا بِالْحَقِّ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا یَعْلَمُوْنَ ﴿۳۹﴾

39. हमने दोनों को ह़क़ के (मक़्सदो हिक्मत के) साथ पैदा किया है लेकिन उनके अक्सर लोग नहीं जानते।

اِنَّ یَوْمَ الْفَصْلِ مِیْقَاتُهُمْ اَجْمَعِیْنَ ﴿۴۰﴾

40. बेशक फ़ैसले का दिन, उन सब के लिए मुकर्ररा वक्त है।

یَوْمَ لَا یُغْنِیْ مَوْلًی عَنْ مَّوْلًی شَیْـًٔا وَّ لَا هُمْ یُنْصَرُوْنَ ﴿۴۱﴾

41. जिस दिन कोई दोस्त किसी दोस्त के कुछ काम न आएगा और न ही उनकी मदद की जाएगी।

اِلَّا مَنْ رَّحِمَ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِیْزُ الرَّحِیْمُ ﴿۴۲﴾

42. सिवाए उनके जिन पर अल्लाहने रह़मत फ़रमाई है (वोह एक दूसरे की शफ़ाअ़त करेंगे), बेशक वोह बड़ा ग़ालिब बहुत रह़्म फ़रमानेवाला है।

ع ٢ ١٣ ١٥

إِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّومِ ﴿٤٣﴾

43. बेशक कांटेदार फलका दरख़्त।

طَعَامُ الْأَثِيمِ ﴿٤٤﴾

44. बड़े ना फ़रमानों का खाना होगा।

كَالْمُهْلِ ۚ يَغْلِي فِي الْبُطُونِ ﴿٤٥﴾

45. पिघले हुऐ तांबे की तरह वोह पेटों में खौलेगा।

كَغَلْيِ الْحَمِيمِ ﴿٤٦﴾

46. खौलते हुए पानी के जोश की मानिन्द।

خُذُوهُ فَاعْتِلُوهُ إِلَىٰ سَوَاءِ الْجَحِيمِ ﴿٤٧﴾

47. (हुक्म होगा) उस को पकड़ लो और दोज़ख़ के वस्त तक उसे ज़ोर से घसीटते हुऐ ले जाओ।

ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيمِ ﴿٤٨﴾

48. फिर इसके सर पर खौलते हुए पानी का अ़ज़ाब डालो।

ذُقْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ ﴿٤٩﴾

49. मज़ा चख ले हां तू ही (अपने गुमान और दा'वे में) बड़ा मुअ़ज़्ज़ज़ो मुकर्रम है।

إِنَّ هَٰذَا مَا كُنْتُمْ بِهِ تَمْتَرُونَ ﴿٥٠﴾

50. बेशक येह वोही (दोज़ख़) है जिस में तुम शक किया करते थे।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي مَقَامٍ أَمِينٍ ﴿٥١﴾

51. बेशक परहेज़गार लोग अम्नवाले मुक़ाम में होंगे।

فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٥٢﴾

52. बाग़ात और चश्मों में।

يَلْبَسُونَ مِنْ سُنْدُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُتَقَابِلِينَ ﴿٥٣﴾

53. बारीक और दबीज़ रेशम का लिबास पेहने होंगे, आमने सामने बैठे होंगे

كَذَٰلِكَ وَزَوَّجْنَاهُمْ بِحُورٍ عِينٍ ﴿٥٤﴾

54. इसी तरह (ही) होगा, और हम उन्हें गोरी रंगतवाली कुशादा चश्म हूरों से बियाह देंगे।

يَدْعُونَ فِيهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ آمِنِينَ ﴿٥٥﴾

55. वहां (बैठे) इत्मीनान से हर तरह के फल और मेवे तलब करते होंगे।

لَا يَذُوقُونَ فِيهَا الْمَوْتَ إِلَّا الْمَوْتَةَ الْأُولَىٰ ۖ وَوَقَاهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ﴿٥٦﴾

56. उस (जन्नत) में मौत का मज़ा नहीं चखेंगे सिवाए (इस) पहली मौत के(जो गुज़र चुकी होगी) और अल्लाह उन्हें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा लेगा।

معانقة ١٢

فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكَ ۚ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٥٧﴾

57. येह आपके रबका फ़ज़्ल है (या'नी आपका रब आपके वसीले से ही अ़ता करेगा), येही बहुत बड़ी कामयाबी है।

فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٥٨﴾

58. बस हमने आप ही की ज़बान में इस (क़ुर्आन) को आसान कर दिया है ताकि वोह नसीह़त हासिल करें।

فَارْتَقِبْ اِنَّهُمْ مُّرْتَقِبُوْنَ ﴿٥٩﴾ ع

59. सो आप (भी) इन्तिज़ार फ़रमाएं यक़ीनन वोह (भी) इन्तिज़ार कर रहे हैं (आप उनका हश्रो इन्तिक़ाम देखेंगे और वोह आपकी शान और आपके तसद्दुक़ से मोमिनों पर मेरा इनआ़म देखेंगे)।

आयातुहा 37 | 45 सूरतुल जासियति मक्किय्यतुन 65 | रुकूआ़तुहा 4

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है

حٰمٓ ﴿١﴾

1. ह़ा मीम (ह़क़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं)।

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿٢﴾

2. (इस) किताबका उतारा जाना अल्लाह की जानिबसे है जो बड़ी इ़ज़्ज़तवाला बड़ी ह़िक्मतवाला है।

اِنَّ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣﴾

3. बेशक आस्मानों और ज़मीन में यक़ीनन मोमिनों के लिए निशानियां हैं।

وَفِيْ خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُثُّ مِنْ دَآبَّةٍ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿٤﴾

4. और तुम्हारी (अपनी) पैदाइशमें और उन जानवरोंमें जिन्हें वोह फैलाता है, यक़ीनन रखनेवाले लोगों के लिए निशानियां हैं।

وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ رِّزْقٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَ

5. और रात दिन के आगे पीछे आने जाने में और (बसूरते बारिश) उस रिज़्क़में जिसे अल्लाह आस्मान से उतारता है, फिर उससे ज़मीन को उसकी मुर्दनी के बाद ज़िन्दा कर देता है और (उसी तरह) हवाओं के रुख़ फैरनेमें, उन

تَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ٥

लोगों के लिए निशानियां हैं जो अक़्लो शऊर रख़ते हैं।

تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍۭ بَعْدَ اللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ٦

6. येह अल्लाह की आयतें हैं जिन्हें हम आप पर पूरी सच्चाई के साथ तिलावत फ़रमाते हैं, फिर अल्लाह और उसकी आयतों के बाद येह लोग किस बात पर ईमान लाएंगे।

وَيْلٌ لِّكُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ۙ ٧

7. हर बोहतान तराश्नेवाले कज़्ज़ाब (और) बडे सियाहकार के लिए हलाकत है।

يَّسْمَعُ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُتْلٰى عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ٨

8. जो अल्लाह की (उन) आयतों को सुनता है जो उस पर पढ़ पढ़ कर सुनाई जाती हैं फिर (अपने कुफ्र पर) इसरार करता है तकब्बुर करते हुए, गोया उसने उन्हें सुना ही नहीं, तो आप उसे दर्दनाक अज़ाब की बशारत दे दीं।

وَاِذَا عَلِمَ مِنْ اٰيٰتِنَا شَيْئَا ۨاتَّخَذَهَا هُزُوًا ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ؕ ٩

9. और जब उसे हमारी (कुरआनी) आयात में से किसी चीज़का (भी) इल्म हो जाता है तो उसे मज़ाक बना लेता है, ऐसे ही लोगों के लिए ज़िल्लत अंगेज़ अज़ाब है।

مِنْ وَّرَآئِهِمْ جَهَنَّمُ ۚ وَلَا يُغْنِيْ عَنْهُمْ مَّا كَسَبُوْا شَيْئًا وَّلَا مَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ؕ ١٠

10. उनके (इस अर्सए हयात के) बाद दोज़ख़ है और जो (माले दुनिया) उन्होंने कमा रखा है उनके कुछ काम नहीं आएगा और न वोह बुत (ही काम आएंगे) जिन्हें अल्लाह के सिवा उन्होंने कारसाज़ बना रखा है, और उनके लिए बहोत सख़्त अज़ाब है।

هٰذَا هُدًى ۚ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ اَلِيْمٌ ١١

11. येह (कुरआन) हिदायत है, और जिन लोगोंने अपने रबकी आयात के साथ कुफ्र किया उनके लिए सख़्त तरीन दर्दनाक अज़ाब है।

اَللّٰهُ الَّذِيْ سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لِتَجْرِيَ

12. अल्लाह ही है जिसने समन्दर को तुम्हारे क़ाबू में कर दिया ताकि उसके हुक्म से उसमें जहाज़ और कश्तियां

الْفُلْكُ فِيهِ بِأَمْرِهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ
فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٢﴾

चलें और ताके तुम (बहूरी रास्तों से भी) उसका फ़ज़्ल (या'नी रिज़्क़) तलाश कर सको, और इस लिए कि तुम शुक्रगुज़ार हो जाओ।

وَسَخَّرَ لَكُمْ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ جَمِيعًا مِنْهُ ۚ إِنَّ فِي ذٰلِكَ
لَآيٰتٍ لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿١٣﴾

13. और उसने तुम्हारे लिए जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, सबको अपनी तरफ़ से (निज़ाम के तहत) मुसख़्ख़र कर दिया है, बेशक उसमें उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो ग़ौरो फ़िक्र करते हैं।

قُلْ لِلَّذِينَ آمَنُوا يَغْفِرُوا لِلَّذِينَ
لَا يَرْجُونَ أَيَّامَ اللّٰهِ لِيَجْزِيَ
قَوْمًا بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿١٤﴾

14. आप ईमानवालों से फ़रमा दीजिए कि वोह उन लोगों को नज़र अँदाज़ कर दें जो अल्लाह के दिनों की (आमदकी) उम्मीद और ख़ौफ़ नहीं रखते ताकि वोह उन लोगों को उन (के आ'माल) का पूरा बदला दे दे जो वोह कमाया करते थे।

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ
أَسَاءَ فَعَلَيْهَا ۖ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ
تُرْجَعُونَ ﴿١٥﴾

15. जिसने कोई नेक अ़मल किया सो अपनी ही जान के (नफ़े' के) लिए और जिसने बुराई की तो (उसका वबाल भी) उसी पर है फिर तुम सब अपने रब की तरफ़ लौटाए जाओगे।

وَلَقَدْ آتَيْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ الْكِتٰبَ
وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنٰهُمْ مِنَ
الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلَى الْعٰلَمِينَ ﴿١٦﴾

16. और बेशक हमने बनी इसराईल को किताब और हुकूमत और नुबुव्वत अ़ता फ़रमाई, और उन्हें पाकीज़ा चीज़ों से रिज़्क़ दिया और हमने उन्हें (उनकेहम ज़माना) जहानों पर (या'नी उस दौरकी क़ौमों और तेहज़ीबों पर) फ़ज़ीलत बख़्शी।

وَآتَيْنٰهُمْ بَيِّنٰتٍ مِنَ الْأَمْرِ ۖ فَمَا
اخْتَلَفُوا إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ
الْعِلْمُ ۙ بَغْيًا بَيْنَهُمْ ۚ إِنَّ رَبَّكَ
يَقْضِي بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيمَا
كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١٧﴾

17. और हमने उनको दीन (और नुबुव्वत) के वाज़ेह दलाइल और निशानियां दी हैं मगर उसके बाद उनकेपास (बे'सते मुहम्मदी ﷺ का) इल्म आ चुका उन्होंने (उससे) इख़्तिलाफ़ किया महज़ बाहमी हसदो अ़दावत के बाइस, बेशक आपका रब उनके दरमियान क़ियामत के दिन उस अम्र का फ़ैसला फ़रमा देगा जिस में वोह इख़्तिलाफ़ किया करते थे।

ثُمَّ جَعَلْنٰكَ عَلَىٰ شَرِيعَةٍ مِنَ الْأَمْرِ

18. फिर हमने आपको दीन के खुले रास्ते (शरीअ़त)

فَاتَّبِعْهَا وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۸﴾

पर मामूर फ़रमा दिया, सो आप उसी राह पर चलते जाए और उन लोगों को ख़्वाहिशों को क़ुबूल न फ़रमाइए जिन्हें (आपकी और आपकेदीन की अज़्मतो हक़्क़ानियत का) इल्म ही नहीं है।

اِنَّهُمْ لَنْ يُّغْنُوْا عَنْكَ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ وَ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۚ وَ اللّٰهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۹﴾

19. बेशक येह लोग अल्लाह की जानिब से (इस्लाम की राह में पेश आमदह मुश्किलात के वक्तमें वा'दों के बावजूद) हरगिज़ आपके काम नहीं आएंगे, और बेशक ज़ालिम लोग (दुनिया में) एक दूसरे के ही दोस्त और मददगार हुआ करते हैं, और अल्लाह परहेज़गारों का दोस्त और मददगार है।

هٰذَا بَصَآئِرُ لِلنَّاسِ وَ هُدًى وَّ رَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿۲۰﴾

20. येह (क़ुरआन) लोगों के लिए बसीरतो इब्रत के दलाइल हैं और यक़ीन रखनेवालों केलिए हिदायत और रह्मत है।

اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ اجْتَرَحُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ نَّجْعَلَهُمْ كَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ سَوَآءً مَّحْيَاهُمْ وَ مَمَاتُهُمْ ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿۲۱﴾

21. क्या वोह लोग जिन्होंने बुराइयां कमा रखी हैं येह गुमान करते हैं कि हम उन्हें उन लोगों की मानिन्द कर देंगे जो ईमान लाए और नेक आ'माल करते रहे (कि) उनकी ज़िन्दगी और उनकी मौत बराबर हो जाए। जो दा'वा (येह कुफ़्फ़ार) कर रहे हैं निहायत बुरा है।

وَ خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَ لِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ وَ هُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۲۲﴾

22. और अल्लाहने आस्मानों और ज़मीन को हक़ (पर मब्नी हिक्मत) के साथ पैदा फ़रमाया और उस लिए के हर जान को उसके आ'माल का बदला दिया जाए जो उसने कमाए हैं और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।

اَفَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ وَ اَضَلَّهُ اللّٰهُ عَلٰى عِلْمٍ وَّ خَتَمَ عَلٰى سَمْعِهٖ وَ قَلْبِهٖ وَ جَعَلَ عَلٰى بَصَرِهٖ غِشٰوَةً ؕ فَمَنْ يَّهْدِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ اللّٰهِ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۲۳﴾

23. क्या आपने उस शख़्स को देखा जिसने अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश को मा'बूद बना रखा है और अल्लाहने उसे इल्म के बावजूद गुमराह ठेहरा दिया है और उसके कान और उसकेदिल पर मोहर लगा दी है और उसकी आँख पर परदा डाल दिया है, फिर उसे अल्लाह के बाद कौन हिदायत कर सक्ता है, सो क्या तुम नसीहत क़ुबूल नहीं करते।

وَ قَالُوْا مَا هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَ مَا يُهْلِكُنَآ اِلَّا الدَّهْرُ ۚ وَ مَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۚ اِنْ هُمْ اِلَّا يَظُنُّوْنَ ﴿۲۴﴾

24. और वोह केहते हैं हमारी दुन्यवी जिन्दगी केसिवा (और) कुछ नहीं है हम (बस) यहीं मरते और जीते हैं और हमें ज़माने के (हालातो वाक़िआत के) सिवा कोई हलाक नहीं करता (गोया ख़ुदा और आखिरत का मुकम्मल इन्कार करते हैं) और उन्हें इस (हक़ीक़त) का कुछ भी इल्म नहीं है वोह सिर्फ़ ख़यालो गुमान से काम ले रहे हैं।

وَ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ مَّا كَانَ حُجَّتَهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوا ائْتُوْا بِاٰبَآئِنَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۲۵﴾

25. और जब उन पर हमारी वाज़ेह आयतें पढ़ कर सुनाई जाती हैं तो उसके सिवा उनकी कोई दलील नहीं होती कि हमारे बापदादा को (ज़िन्दा कर के) ले आओ, अगर तुम सच्चे हो।

قُلِ اللّٰهُ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يَجْمَعُكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۲۶﴾

26. फ़रमा दीजिए : अल्लाह ही तुम्हें ज़िन्दगी देता है और फिर वोही तुम्हें मौत देता है फिर तुम सब को क़ियामत के दिन की तरफ़ जमा' फ़रमाएगा जिस में कोई शक नहीं है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।

وَ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَ يَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّخْسَرُ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿۲۷﴾

27. और अल्लाह ही केलिए आस्मानों और ज़मीन की बादशाहत है और जिस दिन क़ियामत बरपा होगी तब (सब) अहले बातिल सख़्त ख़सारे में पड़ जाएंगे।

وَ تَرٰى كُلَّ اُمَّةٍ جَاثِيَةً ۫ كُلُّ اُمَّةٍ تُدْعٰٓى اِلٰى كِتٰبِهَا ؕ اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۲۸﴾

28. और आप देखेंगे (कुफ़्फ़ारो मुन्किरीन का) हर गिरोह घुटनों के बल गिरा हुआ बैठा होगा, हर फ़िर्क़े को उस (के आ'माल) की किताब की तरफ़ बुलाया जाएगा, आज तुम्हें उन आ'माल का बदला दिया जाएगा जो तुम किया करते थे।

هٰذَا كِتٰبُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ ؕ اِنَّا كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۲۹﴾

29. येह हमारा नविश्ता है जो तुम्हारे बारे में सच सच बयान करेगा, बेशक हम वोह सब कुछ लिखवा (कर महफ़ूज़ कर) लिया करते थे जो तुम करते थे।

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُدْخِلُهُمْ رَبُّهُمْ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ ﴿۳۰﴾

30. पस जो लोग ईमान लाए और नेक आ'माल करते रहे तो उनका रब उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल फ़रमा लेगा, येही तो वाज़ेह़ कामयाबी है।

وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۟ اَفَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَكُنْتُمْ قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿۳۱﴾

31.और जिन लोगों ने कुफ्र किया (उनसे कहा जाएगा:) क्या मेरी आयतें तुम पर पढ़ पढ़ कर नहीं सुनाई जाती थीं, पस तुमने तकब्बुर किया और तुम मुजरिम लोग थे।

وَاِذَا قِيْلَ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّالسَّاعَةُ لَا رَيْبَ فِيْهَا قُلْتُمْ مَّا نَدْرِيْ مَا السَّاعَةُ ۙ اِنْ نَّظُنُّ اِلَّا ظَنًّا وَّمَا نَحْنُ بِمُسْتَيْقِنِيْنَ ﴿۳۲﴾

32. और जब कहा जाता था कि अल्लाह का वा'दा सच्चा है और क़ियामत (के आने) में कोई शक नहीं है तो तुम केहते थे कि हम नहीं जानते क़ियामत किया है, हम उसे वहमो गुमान से सिवा कुछ नहीं समझते और हम (उस पर) यक़ीन करनेवाले नहीं हैं।

وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۳۳﴾

33. और उनके लिए वोह सब बुराइयां ज़ाहिर हो जाएंगी जो वोह अंजाम देते थे और वोह (अ़ज़ाब) उन्हें घेर लेगा जिसका वोह मज़ाक़ उड़ाया करते थे।

وَقِيْلَ الْيَوْمَ نَنْسٰىكُمْ كَمَا نَسِيْتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا وَمَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿۳۴﴾

34. और (उनसे) कहा जाएगा : आज हम तुम्हें भुलाए देते हैं जिस तरह तुमने अपने उस दिन की पेशी को भुला दिया था और तुम्हारा ठिकाना दोज़ख़ है और तुम्हारे लिए कोई भी मददगार न होगा।

ذٰلِكُمْ بِاَنَّكُمُ اتَّخَذْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا وَّغَرَّتْكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ لَا يُخْرَجُوْنَ مِنْهَا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿۳۵﴾

35. येह इस वजह से (है) कि तुमने अल्लाह की आयतों को मज़ाक़ बना रखा था और दुन्यवी ज़िन्दगी ने तुम्हें धोके में डाल दिया था, सो आज न तो वोह उस (दोज़ख़) से निकाले जाएंगे और न उनसे तौबा के ज़रीए (अल्लाह की) रज़ा जूई क़ुबूल की जाएगी।

فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَ

36. पस अल्लाह ही के लिए सारी तारीफ़ें हैं जो आस्मानों

رَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۳۶﴾

का रब है और ज़मीन का मालिक है, सब जहानों का परवरदिगार (भी) है।

وَ لَهُ الْكِبْرِيَآءُ فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۪ وَ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۳۷﴾

37. और आस्मानों और ज़मीन में सारी किब्रियाई (या'नी बड़ाई) उसी केलिए है और वोही बड़ा ग़ालिब बड़ी हिक्मतवाला है।

आयातुहा 35 | 46 सूरतुल अह्क़ाफ़ि मक्किय्यतुन 66 | रुकूआ़तुहा 4

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

حٰمٓ ۚ ﴿١﴾

1. हा मीम (ह़क़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं)।

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿٢﴾

2. इस किताब का नाज़िल किया जाना अल्लाह की जानिब से है जो ग़ालिब हिक्मतवाला है।

مَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ وَ مَا بَيْنَهُمَاۤ اِلَّا بِالْحَقِّ وَ اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ وَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَمَّاۤ اُنْذِرُوْا مُعْرِضُوْنَ ﴿٣﴾

3. और हमने आस्मानों को और ज़मीन को और उस (मख़्लूक़ात) को जो उनके दरमियान है पैदा नहीं किया मगर हिक्मत और मुक़र्ररा मुद्दत (के तअ़य्युन) के साथ, और जिन्होंने कुफ़्र किया है उन्हें जिस चीज़ से डराया गया उसी से रू गर्दानी करनेवाले हैं।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ؕ اِيْتُوْنِيْ بِكِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ هٰذَاۤ اَوْ اَثٰرَةٍ مِّنْ عِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤﴾

4. आप फ़रमा दें कि मुझे बताओ तो कि जिन (बुतों) की तुम अल्लाह के सिवा इबादत करते हो मुझे दिखाओ कि उन्होंने ज़मीन में क्या चीज़ तख़्लीक़ की है या (येह दिखा दो कि) आस्मानों (की तख़्लीक़) में उनकी कोई शराकत है। तुम मेरे पास इस (क़ुरआन) से पहले की कोई किताब या (अगलों के) इल्म का कोई बक़िय्या हिस्सा (जो मन्क़ूल चला आ रहा हो सुबूत के तौर पर) पेश करो। अगर तुम सच्चे हो।

وَ مَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَنْ لَّا يَسْتَجِيْبُ لَهٗۤ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ وَ هُمْ عَنْ دُعَآىِٕهِمْ غٰفِلُوْنَ ﴿٥﴾

5. और उस शख़्स से बढ़ कर गुमराह कौन हो सक्ता है जो अल्लाह के सिवा ऐसे (बुतों) की इबादत करता है जो क़ियामत के दिन तक उसे (सवाल का) जवाब न दे सकें और वोह (बुत) उनकी दुआ़ओ इबादत से (ही) बेख़बर हैं।

وَ اِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوْا لَهُمْ اَعْدَآءً وَّ كَانُوْا بِعِبَادَتِهِمْ كٰفِرِيْنَ ﴿٦﴾

6. और जब लोग (क़ियामत केदिन) जमा' किए जाएंगे तो वोह (मा'बूदाने बातिला) उनके दुश्मन होंगे और (अपनी बराअत की ख़ातिर) उनकी इबादत से ही मुन्किर हो जाएंगे।

وَ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ۙ هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧﴾

7. और जब उन पर हमारी वाज़ेह आयतें पढ़ी जाती हैं (तो) जो लोग कुफ़्र कर रहे हैं हक़ (या'नी क़ुरआन) के बारे में, जबकि वोह उनके पास आ चुका, केहते हैं येह खुला जादू है।

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ فَلَا تَمْلِكُوْنَ لِيْ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِمَا تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ؕ كَفٰى بِهٖ شَهِيْدًۢا بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ؕ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٨﴾

8. क्या वोह लोग (येह) केहते हैं कि उस (क़ुरआन) को (पयग़म्बर ने) घड़ लिया है। आप फ़रमा दें : अगर उसे मैंने घड़ा है तो तुम मुझे अल्लाह (के अ़ज़ाब) से (बचाने का) कुछ भी इख़्तियार नहीं रखते, और वोह उन (बातों) को खूब जानता है जो तुम उस (क़ुरआन) के बारे में ता'ना ज़नी के तौर पर कर रहे हो। वोही (अल्लाह) मेरे और तुम्हारे दरमियान गवाह काफ़ी है, और वोह बड़ा बख़्शनेवाला बहुत रहम फ़रमानेवाला है।

قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ وَ مَآ اَدْرِيْ مَا يُفْعَلُ بِيْ وَلَا بِكُمْ ؕ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ وَمَآ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٩﴾

9. आप फ़रमा दें कि मैं (इन्सानों की तरफ़) कोई पहला रसूल नहीं आया (कि मुझसे क़ब्ल रिसालत की कोई मिसाल ही न हो) और मैं अज़ ख़ुद (या'नी महज़ अपनी अ़क़्लो दिरायत से) नहीं जानता कि मेरे साथ किया सुलूक किया जाएगा और न वोह जो तुम्हारे साथ किया जाएगा, (मेरा इल्म तो येह है कि) मैं सिर्फ़उस वही की पैरवी करता हूं जो मेरी तरफ़ भेजी जाती है (वोही मुझे हर शय का इल्म अ़ता करती है) और मैं तो सिर्फ़ (उस इल्म बिल वह्य़ की बिना पर) वाज़ेह डर सुनानेवाला हूं।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَ كَفَرْتُمْ بِهٖ وَ شَهِدَ شَاهِدٌ

10. आप फ़रमा दीजिए : ज़रा बताओ तो अगर येह (क़ुरआन) अल्लाह की तरफ़ से हो और तुमने उसका इन्कार कर दिया हो और बनी इसराईल में से एक गवाह

مِّنۢ بَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ عَلَىٰ مِثْلِهِۦ فَـَٔامَنَ وَٱسْتَكْبَرْتُمْ ۖ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَهْدِى ٱلْقَوْمَ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿١٠﴾

(भी पहली आस्मानी किताबों से) उस जैसी किताब (के उतरने केज़िक्र) पर गवाही दे फिर वोह (उस पर) ईमान (भी) लाया हो और तुम (उसके बावजूद) गुरूर करते रहे (तो तुम्हारा अंजाम क्या होगा ?) बेशक अल्लाह ज़ालिम क़ौम को हिदायत नहीं फ़रमाता।

وَقَالَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ لِلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَوْ كَانَ خَيْرًا مَّا سَبَقُونَآ إِلَيْهِ ۚ وَإِذْ لَمْ يَهْتَدُوا۟ بِهِۦ فَسَيَقُولُونَ هَٰذَآ إِفْكٌ قَدِيمٌ ﴿١١﴾

11. और काफ़िरों ने मोमिनों से कहा : अगर येह (दीने मुहम्मदी ﷺ) बेहतर होता तो येह लोग उसकी तरफ़ हमसे पहले न बढ़ते (हम खुद ही सब से पहले उसे कुबूल कर लेते) और जब उन कुफ़्फ़ार) ने (खुद) उससे हिदायत न पाई तो अब केहते हैं कि येह तो पुराना झूट (और बोहतान) है।

وَمِن قَبْلِهِۦ كِتَٰبُ مُوسَىٰٓ إِمَامًا وَرَحْمَةً ۚ وَهَٰذَا كِتَٰبٌ مُّصَدِّقٌ لِّسَانًا عَرَبِيًّا لِّيُنذِرَ ٱلَّذِينَ ظَلَمُوا۟ وَبُشْرَىٰ لِلْمُحْسِنِينَ ﴿١٢﴾

12. और इससे पहले मूसा (عليه السلام) की किताब (तौरात) पेशवा और रहमत थी, और येह किताब (उसकी) तस्दीक़ करनेवाली है, अ़रबी ज़बान में है ताकि उन लोगों को डराए जिन्होंने जुल्म किया है और नेकूकारों के लिए खुशख़बरी हो।

إِنَّ ٱلَّذِينَ قَالُوا۟ رَبُّنَا ٱللَّهُ ثُمَّ ٱسْتَقَٰمُوا۟ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿١٣﴾

13. बेशक जिन लोगोंने कहा कि हमारा रब अल्लाह है फिर उन्होंने इस्तिक़ामत इख्तियार की तो उन पर न कोई ख़ौफ़ है और न वोह ग़मगीन होंगे।

أُو۟لَٰٓئِكَ أَصْحَٰبُ ٱلْجَنَّةِ خَٰلِدِينَ فِيهَا جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ﴿١٤﴾

14. येही लोग अहले जन्नत हैं जो उसमें हमेशा रेहनेवाले हैं। येह उन आ'माल की जज़ा है जो वोह किया करते थे।

وَوَصَّيْنَا ٱلْإِنسَٰنَ بِوَٰلِدَيْهِ إِحْسَٰنًا ۖ حَمَلَتْهُ أُمُّهُۥ كُرْهًا وَوَضَعَتْهُ كُرْهًا ۖ وَحَمْلُهُۥ وَفِصَٰلُهُۥ ثَلَٰثُونَ شَهْرًا ۚ حَتَّىٰٓ إِذَا بَلَغَ

15. और हमने इन्सानको अपने वालिदैन के साथ नेक सुलूक करने का हुक्म फ़रमाया । उसकी मां मांने उसे तक्लीफ़ से (पेट में) उठाए रखा और उसे तक्लीफ़ के साथ जना, और उसका (पेट में) उठाना और उसका दूध छुड़ाना (या'नी ज़मानए ह़मलो रज़ाअ़त) तीस माह (पर मुश्तमिल) है । यहां तक कि वोह अपनी जवानी तक

اَشُدَّهٗ وَ بَلَغَ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً ۙ
قَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِيْٓ اَنْ اَشْكُرَ
نِعْمَتَكَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَ عَلٰى
وَالِدَيَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ
وَ اَصْلِحْ لِيْ فِيْ ذُرِّيَّتِيْ ۚ اِنِّيْ تُبْتُ
اِلَيْكَ وَ اِنِّيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿۱۵﴾

पहुंच जाता है और (फिर) चालीस साल (की पुख़्ता उम्र) को पहुंचता है तो केहता है : ऐ मेरे रब ! मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरे उस एह्सानका शुक्र अदा करूं जो तु ने मुझ पर और मेरे वालिदैन पर फ़रमाया है और येह कि में ऐसे नेक आ'माल करूं जिनसे तु राज़ी हो और मेरे लिए मेरी औलाद में नेकी और ख़ैर रख दे।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ
اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَ نَتَجَاوَزُ عَنْ
سَيِّاٰتِهِمْ فِيْٓ اَصْحٰبِ الْجَنَّةِ ؕ وَعْدَ
الصِّدْقِ الَّذِيْ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ﴿۱۶﴾

16. येही वोह लोग हैं हम जिनके नेक आ'माल क़ुबूल करते हैं और उनकी कोताहियों से दरगुज़र फ़रमाते हैं (येही) अहले जन्नत हैं। येह सच्चा वा'दा है जो उनसे किया जा रहा है।

وَالَّذِيْ قَالَ لِوَالِدَيْهِ اُفٍّ لَّكُمَآ
اَتَعِدٰنِنِيْٓ اَنْ اُخْرَجَ وَ قَدْ خَلَتِ
الْقُرُوْنُ مِنْ قَبْلِيْ ۚ وَهُمَا يَسْتَغِيْثٰنِ
اللّٰهَ وَيْلَكَ اٰمِنْ ۖ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ
حَقٌّ ۚۖ فَيَقُوْلُ مَا هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ
الْاَوَّلِيْنَ ﴿۱۷﴾

17. और जिसने अपने वालिदैन से कहा : तुम से बेज़ारी है, तुम मुझे (येह) वा'दा देते हो कि मैं (क़ब्र से दोबारा ज़िन्दा कर के) निकाला जाऊंगा हालांकि मुझ से पहले बहुत सी उम्मतें गुज़र चुकीं। अब वोह दोनों (मां बाप) अल्लाह से फरियाद करने लगे (और लड़केसे कहा) तू हलाक हो गया। (ऐ लड़के!) ईमान ले आ, बेशक अल्लाह का वा'दा हक़ है। तो वोह (जवाब में) केहता है येह (बातें) अगले लोगों के झूटे अफ़्सानों के सिवा (कुछ) नहीं हैं।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ
فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ
الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا
خٰسِرِيْنَ ﴿۱۸﴾

18. येही वोह लोग हैं जिन के बारे में फ़रमाने (अज़ाब) साबित हो चुका है बहुत सी उम्मतों में जो उन से पहले गुज़र चुकी हैं जिन्नात की (भी) और इन्सानों की (भी), बेशक वोह (सब) नुक्सान उठाने वाले थे।

وَ لِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ۚ وَ

19. और सब केलिए उन (नेको बद) आ'माल की वजह से जो उन्होंने किए (जन्नतो दोज़ख़में अलग अलग)

لِيُوَفِّيَهُمْ أَعْمَالَهُمْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ١٩

दरजात मुक़र्रर हैं ताकि (अल्लाह) उनको उनके आ'मालका पूरा पूरा बदला दे और उन पर कोई ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ أَذْهَبْتُمْ طَيِّبَاتِكُمْ فِي حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَفْسُقُونَ ٢٠

20. और जिस दिन काफ़िर लोग आतिशे दोज़ख़के सामने पेश किए जाएंगे (तो उनसे कहा जाएगा), तुम अपनी लज़ीज़ो मरग़ूब चीज़ें अपनी दुन्यवी ज़िन्दगी में ही ह़ासिल कर चुके और उनसे (ख़ूब) नफ़ा' अंदोज़ भी हो चुके। पस आज के दिन तुम्हें ज़िल्लत के अ़ज़ाब की सज़ा दी जाएगी इस वजह से कि तुम ज़मीनमें ना ह़क़ तकब्बुर किया करते थे और इस वजह से (भी) कि तुम ना फ़रमानी किया करते थे।

وَاذْكُرْ أَخَا عَادٍ إِذْ أَنْذَرَ قَوْمَهُ بِالْأَحْقَافِ وَقَدْ خَلَتِ النُّذُرُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ٢١

21. और (ऐ ह़बीब !) आप क़ौमे आ़द के भाई (हूद عليه السلام) का ज़िक्र कीजिए, जब उन्होंने (उ़मान और महरा के दरमियान यमन की एक वादी) अह्क़ाफ़में अपनी क़ौम को (आ'माले बद के नताइज से) डराया हालांकि उससे पहले और उसके बाद (भी कई) डराने वाले (पयग़म्बर) गुज़र चुके थे कि तुम अल्लाहके सिवा किसी और की परस्तिश न करना, मुझे डर है कि कहीं तुम पर बड़े (होलनाक) दिन का अ़ज़ाब (न) आ जाए।

قَالُوا أَجِئْتَنَا لِتَأْفِكَنَا عَنْ آلِهَتِنَا فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ٢٢

22. वोह केहने लगे के क्या आप हमारे इस लिए आए हैं कि हमें हमारे मा'बूदों से बरगश्ता कर दें, पस वोह (अ़ज़ाब) ले आएं जिस से हमें डरा रहे हैं अगर आप सच्चों में से हैं।

قَالَ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللَّهِ وَأُبَلِّغُكُمْ مَا أُرْسِلْتُ بِهِ وَلَٰكِنِّي أَرَاكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُونَ ٢٣

23. उन्होंने कहा कि (उस अ़ज़ाब के वक़्त का) इल्म तो अल्लाह ही के पास है और मैं तुम्हें वोही अहकाम पहुंचा रहा हूं जो मैं दे कर भेजा गया हूं लेकिन मैं तुम्हें देख रहा हूं कि तुम जाहिल लोग हो।

فَلَمَّا رَاَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ اَوْدِيَتِهِمْ ۙ قَالُوْا هٰذَا عَارِضٌ مُّمْطِرُنَا ؕ بَلْ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُمْ بِهٖ ؕ رِيْحٌ فِيْهَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۲۴﴾

24. फिर जब उन्होंने उस (अ़ज़ाब) को बादलकी तरह अपनी वादियों केसामने आता हुवा देखा तो केहने लगे : येह (तो) बादल है जो हम पर बरसनेवाला है (ऐसा नहीं) वोह (बादल) तो वोह (अ़ज़ाब) है जिसकी तुमने जलदी मचा रखी थी। (येह) आँधी है जिसमें दर्दनाक अ़ज़ाब (आ रहा) है।

تُدَمِّرُ كُلَّ شَيْءٍ بِاَمْرِ رَبِّهَا فَاَصْبَحُوْا لَا يُرٰٓى اِلَّا مَسٰكِنُهُمْ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۲۵﴾

25. (जो) अपने परवरदिगार के हुक्म से हर शय को तबाहो बरबाद कर देगी पस वोह ऐसे (तबाह) हो गए कि उनके (मिस्मार) घरों के सिवा कुछ नज़र नहीं आता था। हम मुजरिम लोगों को इस तरह सज़ा दिया करते हैं।

وَلَقَدْ مَكَّنّٰهُمْ فِيْمَآ اِنْ مَّكَّنّٰكُمْ فِيْهِ وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَّاَبْصَارًا وَّاَفْـِٕدَةً ۖ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَلَآ اَبْصَارُهُمْ وَلَآ اَفْـِٕدَتُهُمْ مِّنْ شَيْءٍ اِذْ كَانُوْا يَجْحَدُوْنَ ۙ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۲۶﴾

26. (ऐ अहले मक्का !) दर ह़क़ीक़त हमने उनको उन उमूर में ताक़तो क़ुदरत दे रखी थी जिन में हमने तुमको क़ुदरत नहीं दी और हमने उन्हें समाअ़त और बसारत और दिलो दिमाग़ (की बे बहा सलाहि़यतों) से नवाज़ा था मगर न तो उनके कान ही उनके कुछ काम आ सके और न उनकी आँखें और न (ही) उनकेदिलो दिमाग़ जबकि वोह अल्लाह की निशानियों का इन्कार ही करते रहे और (बिल आख़िर) उस (अ़ज़ाब)ने उन्हें आ घेरा जिसका वोह मज़ाक़ उड़ाया करते थे।

ع ٣

وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِّنَ الْقُرٰى وَصَرَّفْنَا الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿۲۷﴾

27. और (ऐ अहले मक्का!) बेशक हमने कितनी ही बस्तियों को हलाक कर डाला जो तुम्हारे इर्द गिर्द थीं और हमने अपनी निशानियां बार बार ज़ाहिर कीं ताकि वोह (कुफ़्रसे) रुजूअ़ कर लें।

فَلَوْلَا نَصَرَهُمُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ قُرْبَانًا اٰلِهَةً ؕ بَلْ ضَلُّوْا عَنْهُمْ ۚ وَذٰلِكَ اِفْكُهُمْ وَمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۲۸﴾

28. फिर उन (बुतों) ने उनकी मदद क्यों न की जिन को उन्होंने तक़र्रुबे (इलाही) के लिए अल्लाहके सिवा मा'बूद बना रखा था, बल्कि वोह (मा'बूदाने बातिला) उनसे गुम हो गए, और येह (बुतों को मा'बूद बनाना) उनका झूट था और येही वोह बोहतान (था) जो वोह बांधा करते थे।

وَ اِذْ صَرَفْنَآ اِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ يَسْتَمِعُوْنَ الْقُرْاٰنَ ۚ فَلَمَّا حَضَرُوْهُ قَالُوْٓا اَنْصِتُوْا ۚ فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا اِلٰى قَوْمِهِمْ مُّنْذِرِيْنَ ﴿٢٩﴾

29. और (ऐ ह़बीब !) जब हमने जिन्नात की एक जमाअ़तको आपकी तरफ़ मुतवज्जे किया जो कुरआन ग़ौर से सुनते थे । फिर जब वोह वहां (या'नी बारगाहे नुबुव्वत में) ह़ाज़िर हुए तो उन्होंने (आपस में) कहा : ख़ामोश रहो, फिर जब (पढ़ना) ख़त्म हो गया तो वोह अपनी क़ौमकी तरफ़ डर सुनानेवाले (या'नी दाई इलल ह़क़्) बन कर वापस गए।

قَالُوْا يٰقَوْمَنَآ اِنَّا سَمِعْنَا كِتٰبًا اُنْزِلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰى مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ وَ اِلٰى طَرِيْقٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٣٠﴾

30. उन्होंने कहा : ऐ हमारी क़ौम ! (या'नी ऐ कौमे जिन्नात!) बेशक हमने एक (ऐसी) किताब सुनी है जो मूसा (علیہ السلام की तौरात) के बाद उतारी गई है (जो) अपने से पेहले (की किताबों) की तस्दीक़ करने वाली है (वोह) सच्चे (दीन) और सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत करती है।

يٰقَوْمَنَآ اَجِيْبُوْا دَاعِيَ اللّٰهِ وَ اٰمِنُوْا بِهٖ يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَ يُجِرْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٣١﴾

31. ऐ हमारी क़ौम ! तुम अल्लाह की तरफ़ बुलानेवाले (या'नी मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ) की बात क़ुबुल कर लो और उन पर ईमान ले आओ (तो) अल्लाह तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और तुम्हें दर्दनाक अज़ाब से पनाह देगा।

وَ مَنْ لَّا يُجِبْ دَاعِيَ اللّٰهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ فِي الْاَرْضِ وَ لَيْسَ لَهٗ مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءُ ؕ اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٢﴾

32. और जो शख़्स अल्लाह की तरफ़ बुलानेवाले (रसूल ﷺ) की बात क़ुबूल नहीं करेगा तो वोह ज़मीन में (भाग कर अल्लाहको) आ़जिज़ नहीं कर सकेगा और न ही उसकेलिए अल्लाह केसिवा कोई मददगार होंगे । येही लोग खुली गुमराही में हैं।

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ وَلَمْ يَعْيَ بِخَلْقِهِنَّ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْيِۦَ الْمَوْتٰى ؕ بَلٰٓى اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٣٣﴾

33. क्या वोह नहीं जानते कि अल्लाह जिसने आस्मानों और ज़मीन को पैदा फ़रमाया और वोह उनके पैदा करने से थका नहीं इस बात पर (भी) क़ादिर है कि वोह मुर्दों को (दोबारा) ज़िन्दा फ़रमा दे। क्यों नहीं, बेशक वोह हर चीज़ पर कुदरत रखता है।

وَ يَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَى النَّارِ ؕ اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَ رَبِّنَا ؕ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿۳۴﴾

34. और जिस दिन वोह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया आतिशे दोज़ख़के सामने पेश किए जाएंगे (तो उनसे कहा जाएगा) क्या येह (अ़ज़ाब) बर ह़क़ नहीं है? वोह कहेंगे : क्यों नहीं हमारे रबकी क़सम (बर ह़क़ है), इर्शाद होगा : फिर अ़ज़ाब का मज़ा चखो जिसका तुम इन्कार किया करते थे।

فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ اُولُوا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ وَ لَا تَسْتَعْجِلْ لَّهُمْ ؕ كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَ مَا يُوْعَدُوْنَ ۙ لَمْ يَلْبَثُوْۤا اِلَّا سَاعَةً مِّنْ نَّهَارٍ ؕ بَلٰغٌ ۚ فَهَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۳۵﴾

35. (ऐ ह़बीब !) पस आप सब्र किए जाएं जिस तरह (दूसरे) आ़ली हिम्मत पयग़म्बरों ने सब्र किया था और आप उन (मुन्किरों) के लिए (तलबे अ़ज़ाब में) जलदी न फ़रमाएं, जिस दिन वोह उस (अ़ज़ाबे आख़िरत) को देखेंगे जिसका उनसे वा'दा किया जा रहा है तो (ख़याल करेंगे) गोया वोह (दुनिया में) दिन की एक घड़ी के सिवा ठेहरे ही नहीं थे, (येह अल्लाह की तरफ़ से) पैग़ाम का पहुंचाया जाना है, ना फ़रमान क़ौम केसिवा दीगर लोग हलाक नहीं किए जाऐंगे।

रुकूआ़तुहा 4 | 47 सूरतु मुहम्मद म.दनिय्यतुन 95 | आयातुहा 38

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ صَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ﴿۱﴾

1. जिन लोगों ने कुफ़्र किया और (दूसरों को) अल्लाह की राह से रोका (तो) अल्लाहने उनकेआ'माल (उख़्रवी अज्र के लिहाज़ से) बरबाद कर दिए।

وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَ اٰمَنُوْا بِمَا نُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۙ كَفَّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَ اَصْلَحَ بَالَهُمْ ﴿۲﴾

2. और जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे और उस (किताब) पर ईमान लाए जो मुहम्मद (ﷺ) पर नाज़िल की गई है और वोही उनके रब की जानिब से ह़क़ है अल्लाहने उनके गुनाह उन (के नामए आ'माल) से मिटा दिए और उनका ह़ाल सँवार दिया।

ذٰلِكَ بِاَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا الْبَاطِلَ وَ اَنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبَعُوا الْحَقَّ مِنْ رَّبِّهِمْ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ اَمْثَالَهُمْ ۝٣

3. येह इस लिए कि जिन लोगोंने कुफ्र किया वोह बातिल केपीछे चले और जो लोग ईमान लाऐ उन्होंने अपने रबकी तरफ़ से (उतारे गए) हक़्क़ की पैरवी की, इसी तरह् अल्लाह लोगों केलए उनके अेहवाल बयान फ़रमाता है।

فَاِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَضَرْبَ الرِّقَابِ ؕ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَثْخَنْتُمُوْهُمْ فَشُدُّوا الْوَثَاقَ ۙ فَاِمَّا مَنًّۢا بَعْدُ وَ اِمَّا فِدَآءً حَتّٰى تَضَعَ الْحَرْبُ اَوْزَارَهَا ۛۚ ذٰلِكَ ؕۛ وَ لَوْ يَشَآءُ اللّٰهُ لَانْتَصَرَ مِنْهُمْ وَ لٰكِنْ لِّيَبْلُوَاۡ بَعْضَكُمْ بِبَعْضٍ ؕ وَ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَنْ يُّضِلَّ اَعْمَالَهُمْ ۝٤

4. फिर जब (मैदाने जंग में) तुम्हारा मुक़ाबला (मुतहारिब) काफ़िरों से हो तो (दौराने जंग) उनकी गरदनें उड़ा दो, यहां तककि जब तुम उन्हें (जंगी मा'रकेमें) खूब कर चुको तो (बक़िय्या क़ैदियोंको) मज़बूती से बांधलो, फिर उसके बाद या तो (उन्हें) (बिला मुआवज़ा) एहसान कर के(छोड़ दो) या फ़िदया (या'नी मुआविज़ए रिहाई) ले कर (आजाद कर दो) यहां तक कि जंग (करने वाली मुख़ालिफ़ फ़ौज) अपने हथियार रख दे (या'नी सुल्हो अम्नका ए'लान कर दे) । येही (हुक्म) है, और अगर अल्लाह चाहता तो उनसे (बिग़ैर जंग) इन्तिक़ाम ले लेता मगर (उसने ऐसा नहीं किया) ताकि तुममें से बा'ज़ के ज़रीए आजमाए, और जो लोग अल्लाह की राहमें क़त्ल कर दिए गए तो वोह उनके आ'माल को हरगिज़ ज़ाऐ न करेगा।

وقال يعقوب ولوجه لما قبلها ويوقف على ذلك ط ولكن حسن اتصاله بما قبله ويوقف على ذلك

سَيَهْدِيْهِمْ وَ يُصْلِحُ بَالَهُمْ ۝٥ ۚ

5. वोह अ़नक़रीब उन्हें (जन्नत की) सीधी राह पर डाल देगा और उनकेअहवाले (उख़्रवी) को खूब बेहतर कर देगा।

وَ يُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ ۝٦

6.और बिल आख़िर उन्हें जन्नतमें दाख़िल फ़रमा देगा जिसकी उसने (पहले ही से) उन्हें खूब पहेचान करा दी है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ وَ يُثَبِّتْ اَقْدَامَكُمْ ۝٧

7. ऐ ईमानवालो ! अगर तुम अल्लाह (के दीन) की मदद करोगे तो वोह तुम्हारी मदद फ़रमाएगा और तुम्हारे क़दमों को मज़बूत रखेगा।

وَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَتَعْسًا لَّهُمْ وَ

8. और जिन्होंने कुफ़्र किया तो उन के लिए हलाकत है

اَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ﴿٨﴾

और (अल्लाहने) उनके आ'माल बरबाद कर दिए।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَرِهُوْا مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ ﴿٩﴾

9. येह उस वजह से कि उन्होंने इस (किताब) को नापसंद किया जो अल्लाहने नाज़िल फ़रमाई तो उसने उनके आ'माल अकारत कर दिऐ।

اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ دَمَّرَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ۫ وَ لِلْكٰفِرِيْنَ اَمْثَالُهَا ﴿١٠﴾

10. क्या उन्होंने ज़मीन में सफ़रो सियाहत नहीं की कि वोह देख लेते के उन लोगोंका अंजाम कैसा हुआ जो उनसे पहले थे। अल्लाहने उन पर हलाकतो बरबादी डाल दी। और काफ़िरों के लिए उसी तरह की बहोत सी हलाकतें हैं।

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ مَوْلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاَنَّ الْكٰفِرِيْنَ لَا مَوْلٰى لَهُمْ ﴿١١﴾

11. येह इस वजह से है कि अल्लाह उन लोगों का वली-व-मददगार है जो ईमान लाए हैं और बेशक काफ़िरों के लिए कोई वली-व-मददगार नहीं है।

اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَتَمَتَّعُوْنَ وَيَاْكُلُوْنَ كَمَا تَاْكُلُ الْاَنْعَامُ وَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ﴿١٢﴾

12. बेशक अल्लाह उन लोगोंको जो ईमान लाए और नेक आ'माल करते रहे बहिश्तों में दाख़िल फ़रमाएगा जिनके नीचे नेहरें जारी होंगी, और जिन लोगों ने कुफ्र किया और (दुन्यवी) फ़ाइदे उठा रहे हैं और (उस तरह) खा रहे हैं जैसे चौपाए (जानवर) खाते हैं सो दोज़ख़ ही उनका ठिकाना है।

وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ هِيَ اَشَدُّ قُوَّةً مِّنْ قَرْيَتِكَ الَّتِيْۤ اَخْرَجَتْكَ ۚ اَهْلَكْنٰهُمْ فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ ﴿١٣﴾

13. और (ऐ हबीब !) कितनी ही बस्तियां थीं जिनके बाशिन्दे (वसाइलो इक्तिदार में) आपके उस शहर (मक्का के बाशिन्दों) से ज़ियादा ताकतवर थे जिस (के मुक्तदिर वडेरों) ने आपको (बसूरते हिजरत) निकाल दिया है, हमने उन्हें (भी) हलाक कर डाला फिर उनका कोई मददगार न हुआ (जो उन्हें बचा सक्ता)।

اَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ كَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ

14. सो क्या वोह शख़्स जो अपने रबकी तरफ़ से वाज़ेह दलील पर (क़ाइम) हो उन लोगों की मिस्ल हो सक्ता है जिनके बुरे आ'माल उन के लिए आरास्ता करके दिखाए

وَاتَّبَعُوٓا أَهْوَآءَهُمْ ﴿١٤﴾

गए हैं और वोह अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात केपीछे चल रहे हों।

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ ۖ فِيهَآ أَنْهٰرٌ مِّن مَّآءٍ غَيْرِ ءَاسِنٍ ۚ وَأَنْهٰرٌ مِّن لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُۥ ۚ وَأَنْهٰرٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشّٰرِبِينَ ۚ وَأَنْهٰرٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى ۖ وَلَهُمْ فِيهَا مِن كُلِّ الثَّمَرٰتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّن رَّبِّهِمْ ۖ كَمَنْ هُوَ خٰلِدٌ فِي النَّارِ وَسُقُوا مَآءً حَمِيمًا فَقَطَّعَ أَمْعَآءَهُمْ ﴿١٥﴾

15. जिस जन्नतका परहेज़गारोंसे वा'दा किया गया है उसकी सिफ़त येह है कि उसमें (ऐसे) पानी की नेहरें होंगी जिसमें कभी (बू या रंगतका) तग़य्युर न आएगा, और (उसमें ऐसे) दूधकी नेहरें होंगी जिसका ज़ाइक़ा और मज़ा कभी न बदलेगा, और (ऐसी) शराबे (तहूर) की नेहरें होंगी जो पीनेवालों के लिए सरासर लज़्ज़त है, और खूब साफ़ किए हुए शहदकी नेहरें होंगी, और उन केलिए उसमें हर किस्म केफल होंगे और उनकेरबकी जानिब से (हर तरह की) बख़्शाइश होंगी, (क्या येह परहेज़गार) उन लोगों की तरह हो सकता है जो हमेंशा दोज़ख़में रेहनेवाले हैं और जिन्हें खौलता हुआ पानी पिलाया जाएगा तो वोह उनकी आँतों को काट कर टुकड़े टुकड़े कर देगा।

وَمِنْهُم مَّن يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ ۚ حَتّٰىٓ إِذَا خَرَجُوا مِنْ عِندِكَ قَالُوا لِلَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ مَاذَا قَالَ ءَانِفًا ۚ أُولٰٓئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلٰى قُلُوبِهِمْ وَاتَّبَعُوٓا أَهْوَآءَهُمْ ﴿١٦﴾

16. और उनमें से बा'ज वोह लोग भी हैं जो आपकी तरफ़ (दिल और ध्यान लगाए बिग़ैर) सिर्फ़ कान लगाए सुनते रेहते हैं यहां तक कि जब वोह आपके पास से निकल कर (बाहर) जाते हैं तो उन लोगों से पूछते हैं जिन्हें इल्मे (नाफ़े') अ़ता किया गया है कि अभी उन्होंने (या'नी रसूलुल्लाह ﷺ ने) क्या फ़रमाया था? येही वोह लोग हैं जिनके दिलों पर अल्लाहने मोहर लगा दी है और वोह अपनी ख़्वाहिशात की पैरवी कर रहे हैं।

وَالَّذِينَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى وَءَاتٰىهُمْ تَقْوٰىهُمْ ﴿١٧﴾

17. और जिन लोगोंने हिदायत पा ली है, अल्लाह उनकी हिदायत को और ज़ियादा फ़रमा देता है और उन्हें उनके मुक़ामे तक़्वा से सरफ़राज फ़रमाता है।

فَهَلْ يَنظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَن

18. तो अब येह (मुन्किर) लोग सिर्फ़ क़ियामत ही का

تَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً ۚ فَقَدْ جَاءَ أَشْرَاطُهَا ۚ فَأَنَّىٰ لَهُمْ إِذَا جَاءَتْهُمْ ذِكْرَاهُمْ ﴿١٨﴾

इन्तिज़ार कर रहे हैं कि वोह उन पर अचानक आ पहुंचे? सो वाक़ई उसकी निशानियां (क़रीब) आ पहुंची हैं, फिर उन्हें उनकी नसीहत कहां (मुफ़ीद) होगी जब (खुद) क़ियामत (ही) आ पहुंचेगी।

فَاعْلَمْ أَنَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ وَمَثْوَاكُمْ ﴿١٩﴾

19. पस जान लीजिए कि अल्लाह केसिवा कोई मा'बूद नहीं और आप (इज़्हारे उबूदिय्यत और तालीमे उम्मतकी ख़ातिर अल्लाह से) मुआफ़ी मांगते रहा करें कि कहीं आपसे ख़िलाफ़े ऊला (या'नी आपके मर्तबए आ़लिया से कम दरजेका) फे'ल सादिर न हो जाए।★ और मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतों के लिए भी तलबे मगफ़िरत (या'नी उनकी शफ़ाअ़त) फ़रमाते रहा करें (येही उनका सामाने बख़्शिश है), और (ऐ लोगो !) अल्लाह (दुनिया में) तुम्हारे चलने फिरने के ठिकाने और (आखिरत में) तुम्हारे ठेहरने की मन्ज़िलें (सब) जानता है।

وَيَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا لَوْلَا نُزِّلَتْ سُورَةٌ ۖ فَإِذَا أُنْزِلَتْ سُورَةٌ مُحْكَمَةٌ وَذُكِرَ فِيهَا الْقِتَالُ ۙ رَأَيْتَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۖ فَأَوْلَىٰ لَهُمْ ﴿٢٠﴾

20. और ईमानवाले केहते हैं कि (हुक्मे जिहाद के मुतअ़ल्लिक़) कोई सूरत क्यों नहीं उतारी जाती? फिर जब कोई वाज़ेह़ सूरत नाज़िल की जाती है और उसमें (सरीह़न) जिहादका ज़िक्र किया जाता है तो आप ऐसे लोगोंको जिनके दिलों में (निफ़ाक़ की) बीमारी है मुलाहिज़ा फ़रमाते हैं कि वोह आपकी तरफ़ (इस तरह़) देखते हैं जैसे वोह शख़्स देखता है जिस पर मौत की ग़शी तारी हो रही हो। सो उन के लिए ख़राबी है।

طَاعَةٌ وَقَوْلٌ مَعْرُوفٌ ۚ فَإِذَا عَزَمَ الْأَمْرُ فَلَوْ صَدَقُوا اللَّهَ لَكَانَ خَيْرًا لَهُمْ ﴿٢١﴾

21. फ़रमां बरदारी और अच्छी गुफ़्तगू (उनके ह़क़ में बेहतर) है, फिर जब हुक्मे जिहाद क़त्ई (और पुख़्ता) हो गया तो अगर वोह अल्लाह से (अपनी इताअ़त और वफ़ादारी में) सच्चे रेहते तो उन के लिए बेहतर होता।

★(ख़्वाह वोह फे'ल अपनी जगह शरअ़न जाइज़ और मुस्तह़सन ही क्यों न हो मगर आप ﷺ का मुक़ामो मर्तबा इतना बुलंद और अफ़ा-.व-आ'ला है कि कई आ'माले सालेहा भी आप ﷺ की शान केलिहाज से कमतर हैं)

فَهَلْ عَسَيْتُمْ إِنْ تَوَلَّيْتُمْ أَنْ تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ وَتُقَطِّعُوا أَرْحَامَكُمْ ﴿٢٢﴾

22. पस (ऐ मुनाफ़िक़ो !) तुम से तवक़्क़ो' येही है कि अगर तुम (क़ितालसे गुरेज़ करके बच निकलो और) हुकूमत हासिल कर लो तो तुम ज़मीनमें फ़साद ही बरपा करोगे और अपने (उन) कुराबती रिश्तों को तोड डालोगे (जिनके बारे में अल्लाह और उसके रसूल ﷺ ने मुवासिलत और मुवद्दत का हुक्म दिया है)।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فَأَصَمَّهُمْ وَأَعْمَىٰ أَبْصَارَهُمْ ﴿٢٣﴾

23. येही वोह लोग हैं जिन पर अल्लाहने ला'नत की है और उन (के कानों) बेहरा कर दिया है और उनकी आँखों को अँधा कर दिया है।

أَفَلَا يَتَدَبَّرُونَ الْقُرْآنَ أَمْ عَلَىٰ قُلُوبٍ أَقْفَالُهَا ﴿٢٤﴾

24. क्या येह लोग कुर्आन में ग़ौर नहीं करते या उनके दिलों पर ताले (लगे हुऐ) हैं।

إِنَّ الَّذِينَ ارْتَدُّوا عَلَىٰ أَدْبَارِهِمْ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَى ۙ الشَّيْطَانُ سَوَّلَ لَهُمْ وَأَمْلَىٰ لَهُمْ ﴿٢٥﴾

25. बेशक जो लोग पीठ फेर कर पीछे (कुफ़्र की तरफ) लौट गऐ उसके बाद के उनपर हिदायत वाजेह हो चुकी थी शैतान ने उन्हें (कुफ़्र की तरफ वापस पलटना धोकादही से) अच्छा करके दिखाया, और उन्हें (दुन्या में) तवील जिन्दगी की उम्मीद दिलाई।

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لِلَّذِينَ كَرِهُوا مَا نَزَّلَ اللَّهُ سَنُطِيعُكُمْ فِي بَعْضِ الْأَمْرِ ۖ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِسْرَارَهُمْ ﴿٢٦﴾

26. येह इस लिए कि उन्होंने उन लोगों से कहा जो अल्लाह की नाज़िल कर्दह किताबको नापसंद करते थे के हम बाज उमूर में तुम्हारी पैरवी करेंगे और अल्लाह उनके खुफ़्या मश्वरा करने को खूब जानता है।

فَكَيْفَ إِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلَائِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ ﴿٢٧﴾

27. फिर (उस वक़्त का हश्र) कैसा होगा जब फ़रिश्ते उनकी जान (इस हाल में) निकालेंगे कि उनके चेहरों और उनकी पीठों पर ज़र्बें लगाते होंगे?

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمُ اتَّبَعُوا مَا أَسْخَطَ اللَّهَ وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ فَأَحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ ﴿٢٨﴾ ع

28. येह इस वजह से है कि उन्होंने उस (रविश) की पैरवी की जो अल्लाह को नाराज़ करती है और उन्होंने उसकी रजा नापसंद किया तो उसने उनके (जुमले) आ'माल अकारत कर दिए ।

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ أَن لَّن يُخْرِجَ اللَّهُ أَضْغَانَهُمْ ﴿٢٩﴾

29. क्या वोह लोग जिनके दिलों में (निफाक की) बीमारी है येह गुमान करते हैं के अल्लाह उनके कीनों और अ़दावतों को हरगिज़ जाहिर न फ़रमाऐगा।

وَلَوْ نَشَاءُ لَأَرَيْنَاكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُم بِسِيمَاهُمْ ۚ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِي لَحْنِ الْقَوْلِ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ أَعْمَالَكُمْ ﴿٣٠﴾

30. और अगर हम चाहें तो आपको बिलाशुबा वोह (मुनाफ़िक़) लोग (इस तरह) दिखा दें कि आप उन्हें उनके चेहरों की अ़लामत से ही पेहचान लें, और (इसी तरह़) यक़ीनन आप उनके अंदाज़े कलाम से भी उन्हें पहेचान लेंगे, और अल्लाह तुम्हारे सब आ'माल को (खूब) जानता है।

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتَّىٰ نَعْلَمَ الْمُجَاهِدِينَ مِنكُمْ وَالصَّابِرِينَ وَنَبْلُوَ أَخْبَارَكُمْ ﴿٣١﴾

31. और हम जरूर तुम्हारी आजमाईश करेंगे यहां तक के तुम में से (साबित कदमी के साथ) जिहाद करने वालों और सब्र करनेवालों को (भी) ज़ाहिर कर दें और तुम्हारी (मुनाफ़िक़ाना बुज़दिली की मुख़्फ़ी) खबरें (भी) जाहिर कर दें।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ وَشَاقُّوا الرَّسُولَ مِن بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَىٰ لَن يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا وَسَيُحْبِطُ أَعْمَالَهُمْ ﴿٣٢﴾

32. बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया और (लोगोंको) अल्लाह की राहसे रोका और रसूल (ﷺ) की मुखालिफ़त (और उनसे जुदाई की राह इख़्तियार) की इसके बाद कि उन पर हिदायत (या'नी अ़ज़मते रसूल ﷺ की मारेफत) वाज़ेह़ हो चुकी थी वोह अल्लाह का हरगिज कुछ नुक्सान नहीं कर सकेंगे (या'नी रसूल ﷺ की क़द्रो मन्ज़िलत को घटा नहीं सकेंगे), ★ और अल्लाह उनके (सारे) आ'माल को (मुख़ालिफ़ते रसूल ﷺ के बाइस) नीस्तो नाबूद कर देगा।

★ (तमाम अइमए तफ़्सीर ने लिखा है (लंय यदुर्रुल्ला-ह शयअन) अय लंय यदुर्रु रसूलुल्लाह ﷺ बमशाक़तिही व ह़ज़फ़ुल मुज़ाफ़ लिता'ज़ीमि शानिही। मुलाहिज़ा फ़रमाए : अत्तबरी, अल बैज़ावी, रूहुल मआ़नी, रूहुल बयान, अल जुमल, अल बहरुल मदीद वगैरा। इस अस्लूबे कलाम की मिसालें कुर्आन मजीद में बहुत हैं जिन में से एक सूरतुल ब-क-रह की आयत : 9 (युख़ादिऊनल्ला-ह वल्लज़ी-न आ-मनू) है। इस मुक़ाम पर युख़ादिऊनल्ला-ह "वोह अल्लाह को धोका देना चाहते हैं" केह कर मुराद युख़ादिऊ-न रसूलुल्ला-ह "वोह अल्लाह के रसूल ﷺ को धोका देना चाहते हैं" लिया गया है।)

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَ لَا تُبْطِلُوْۤا اَعْمَالَكُمْ ﴿۳۳﴾

33. ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह की इताअ़त किया करो और रसूल (ﷺ) की इताअ़त किया करो और अपने आ'माल बरबाद मत करो।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ صَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ مَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ﴿۳۴﴾

34. बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया और (लोगों को) अल्लाहकी राह से रोका फिर इस हाल में मर गऐ तो वोह काफ़िर थे तो अल्लाह उन्हें कभी न बख़्शेगा।

فَلَا تَهِنُوْا وَ تَدْعُوْۤا اِلَى السَّلْمِ ۖۗ وَ اَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ ۖۗ وَ اللّٰهُ مَعَكُمْ وَ لَنْ يَّتِرَكُمْ اَعْمَالَكُمْ ﴿۳۵﴾

35. (ऐ मोमिनो!) पस तुम हिम्मत न हारो और इन (म-तहारिब काफ़िरों) से सुलहकी दरख़ास्त न करो (कहीं तुम्हारी कमज़ोरी ज़ाहिर न हो), और तुम ही ग़ालिब रहोगे, और अल्लाह तुम्हारे साथ है और वोह तुम्हारे आ'माल (का सवाब) हरगिज़ कम न करेगा।

اِنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّ لَهْوٌ ؕ وَ اِنْ تُؤْمِنُوْا وَ تَتَّقُوْا يُؤْتِكُمْ اُجُوْرَكُمْ وَ لَا يَسْـَٔلْكُمْ اَمْوَالَكُمْ ﴿۳۶﴾

36. बस दुन्या की ज़िन्दगी तो महज़ खेल और तमाशा है, और अगर तुम ईमान ले आओ और तक़्वा इख़्तियार करो तो वोह तुम्हें तुम्हारे (आ'माल पर कामिल) सवाब अता फ़रमाएगा और तुमसे तुम्हारे माल तलब नहीं करेगा।

اِنْ يَّسْـَٔلْكُمُوْهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوْا وَ يُخْرِجْ اَضْغَانَكُمْ ﴿۳۷﴾

37. अगर वोह तुमसे उस मालको तलब कर ले फिर तुम्हें तलब में तंगी दे तो तुम्हें (दिल में) तंगी मेहसूस होगी (और) तुम बुख़्ल करोगे और (इस तरह्) वोह तुम्हारे (दुनिया परस्ती के बाइस बातिनी) जंग ज़ाहिर कर देगा।

هٰۤاَنْتُمْ هٰۤؤُلَآءِ تُدْعَوْنَ لِتُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ فَمِنْكُمْ مَّنْ يَّبْخَلُ ۚ وَ مَنْ يَّبْخَلْ فَاِنَّمَا يَبْخَلُ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ وَ اللّٰهُ الْغَنِيُّ وَ اَنْتُمُ

38. याद रखो तुम वोह लोग हो जिन्हें अल्लाह की राह में ख़र्च करने के लिए बुलाया जाता है तो तुम में से बा'ज़ ऐसे भी हैं जो बुख़्ल करते हैं, और जो कोई भी बुख़्ल करता है वोह महज़ अपनी जान ही से बुख़्ल करता है, और अल्लाह बेनियाज़ है और तुम (सब) मोहताज हो, और

الْفُقَرَآءُ ۚ وَ اِنْ تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۙ ثُمَّ لَا يَكُوْنُوْٓا اَمْثَالَكُمْ ﴿٣٨﴾

अगर तुम (हुक्मे इलाही से) रूगरदानी करोगे तो वोह तुम्हारी जगह बदल कर दूसरी क़ौम को ले आएगा फिर वोह तुम्हारे जैसे न होंगे।

ع ٤ ٨

रुकूआ़तुहा 4 | 48 सूरतुल फत्हि म.दनिय्यतुन 111 | आयातुहा 29

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है

اِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِيْنًا ﴿١﴾ ۙ

1. (ऐ ह़बीबे मुकर्रम !) बेशक हमने आपके लिए (इस्लामकी) रौशन फ़तह (और गलबे) का फैसला फ़रमा दिया। (इस लिए के आपकी अजीम जद्दो जहद काम्याबी के साथ मुकम्मल हो जाऐ)।

لِّيَغْفِرَ لَكَ اللّٰهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْۢبِكَ وَ مَا تَاَخَّرَ وَ يُتِمَّ نِعْمَتَهٗ

2. ताके आपकी खातिर अल्लाह आपकी उम्मत (के उन तमाम अफराद) की अगली पिछली खताऐं मुआफ़ फ़रमा दे ★

★(यहां ह़ज़फ़े मुज़ाफ़ वाक़े' हुवा है। मुराद ''मा तकद्द-म मिन ज़ंबि उम्मतिक वमा तअख़्ख़-र'' है। क्यों कि आगे उम्मत ही केलिए नुजूले सकीना, दुखूले जन्नत और बख़्शिशे सय्यिआत की बिशारत का ज़िक्र किया गया है, येह मज़्मून, आयत : 1 ता 5 तक मिला कर पढ़ें तो मा'ना खुद बखुद वाज़ेह़ हो जाएगा और मज़ीद तफ़्सील तफसीर में मुलाह़िज़ा फ़रमाएं। जैसा कि सूरतुल मुअमिन की आयत नंबर 55 के तहत मुफ़स्सिरीने किराम ने बयान किया है कि ''लि-ज़ंबि-क'' में ''उम्मत'' मुज़ाफ़ है जो के महज़ूफ़ है, लिहाज़ा इस बिना पर यहां वस्तग़फ़िर लि-ज़ंबि-क से मुराद उम्मत के गुनाह हैं। इमाम नस्फ़ी, इमाम कुर्तुबी और अ़ल्लामा शौकानीने येही मा'ना बयान किया है। ह़वाला जात मुलाहिज़ा करें।

1. (वस्तगफ़िर लि-ज़ंबि-क) अय्यु लि-ज़ंबि उम्मतिक ''या'नी अपनी उम्मतके गुनाह''। (नस्फ़ी, मदारिकुत तन्ज़ील व ह़काइकुत ता'वील, 4 : 359)

2. (वस्तगफ़िर लि-ज़ंबि-क) क़ी.ल : लि.ज़ंबि उम्मति-क ह़ज़फ़ुल मुज़ाफ़ु व अक़ीमुल मुज़ाफ़ु इलैहि मक़ामुहू ''वस्तगफ़िर लि-ज़ंबि-क'' के बारेमें कहा गया है कि इससे मुराद उम्मत के गुनाह हैं। यहां मुज़ाफ़ को ह़ज़फ़ कर के मुज़ाफ़ इलैहको उसका क़ाइम मुक़ाम कर दिया गया।''

(कुर्तुबी, अल जामिउ़ल अह़कामुल क़ुरआन, 324 : 15)

عَلَيْكَ وَ يَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ۙ﴿۲﴾

(जिन्होंने आपके हुक्म पर जिहाद किए और कुर्बानियां दीं) और (यूं इस्लाम की फतेह और उम्मत की बख़्शिश की सूरत में) आप पर अपनी ने'मत (ज़ाहिरन-व-बातिनन) पूरी फ़रमा दे और आप (के वास्ते से आपकी उम्मत) को सीधे रास्ते पर साबित क़दम रखे ।

وَّيَنْصُرَكَ اللّٰهُ نَصْرًا عَزِيْزًا ﴿۳﴾

3. और अल्लाह आपको निहायत बाइज़्ज़त मददो नुसरत से नवाज़े।

هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ فِيْ قُلُوْبِ الْمُؤْمِنِيْنَ لِيَزْدَادُوْٓا اِيْمَانًا مَّعَ اِيْمَانِهِمْ ؕ وَ لِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۙ﴿۴﴾

4. वोही है जिसने मोमिनों के दिलों में तस्कीन नाज़िल फ़रमाई। ताकि उनके ईमान पर मज़ीद ईमान का इजाफा हो (यानी इल्मुलयकीन, ऐनुलयकीन में बदल जाऐ), और आसमानों और ज़मीन के सारे लश्कर अल्लाह ही के लिए हैं, और अल्लाह खूब जाननेवाला, बडी हिक्मतवाला है।

لِّيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَ يُكَفِّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ ؕ وَ كَانَ ذٰلِكَ عِنْدَ اللّٰهِ فَوْزًا عَظِيْمًا ۙ﴿۵﴾

5. (येह सब ने'मतें इस लिए जमा की हैं) ताकि वोह मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को बहिश्तों में दाख़िल फ़रमाए जिन के नीचे नेहरें रवां हैं (वोह) उनमें हमेंशा रेहने वाले हैं। और (मज़ीद येहकि) वोह उनकी लग़ज़िशों को (भी) उनसे दूर कर दे (जैसे उसने उनकी ख़ताएं मुआफ़ की हैं) । और येह अल्लाह के नजदीक (मोमिनों की) बहुत बड़ी काम्याबी है।

وَّ يُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ وَ الْمُنٰفِقٰتِ

6. और (इस लिए भी के उन) मुनाफिक मर्दों और

---

3. ''वक़ी-ल लि-ज़ंबि उम्मति-क फ़ी ह़क़्क़ि-क '' येह भी कहा गया है के लि-ज़ंबि-क या'नी आप अपने ह़क़में उम्मत से सरज़द होनेवाली ख़ताओं की।'' (इब्ने ह़य्यान उन्दुलुसी, अल बहरुल मुहीत, 7 : 471)

4.(वस्तगफ़िर लि-ज़ंबि-क) कीलल मुरादु ज़ंबि उम्मति-क फह-व अ़ला ह़ज़्फ़ुल मुज़ाफ़ '' कहा गया है कि इससे मुराद उम्मतके गुनाह हैं और येह मा'ना मुज़ाफ़ के महज़ूफ़ होने की बिना पर है।'' (अल्लामा शौकानी, फ़त्हुल क़दीर, 4 : 497)

وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ الظَّآنِّيْنَ بِاللّٰهِ ظَنَّ السَّوْءِ ؕ عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ۚ وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَ لَعَنَهُمْ وَ اَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿٦﴾

मुनाफ़िक़ औरतों और मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औरतों को अजाब दे जो अल्लाह के साथ बुरी बदगुमानियां रखते हैं, उन ही पर बुरी गर्दिश (मुक़र्रर) है, और उन पर अल्लाह ने ग़ज़ब फ़रमाया और उन पर लानत फ़रमाई और उनके लिए दोज़ख़ तैयार की, और वोह बहोत बुरा ठिकाना है।

وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿٧﴾

7.और आस्मानों और जमीन के सब लश्कर अल्लाह ही के लिए हैं, और अल्लाह बड़ा ग़ालिब बड़ी हिक्मत वाला है।

اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّ نَذِيْرًا ﴿٨﴾

8. बेशक हमने आपको (रोजे कियामत ग़वाही देने के लिए आ'मालो अहवाले उम्मतका) मुशाहिदा फ़रमाने वाला और खूशख़बरी सुनानेवाला और डर सुनानेवाला बना कर भेजा है।

لِّتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُعَزِّرُوْهُ وَ تُوَقِّرُوْهُ ؕ وَ تُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿٩﴾

9. ताकि (ऐ लोगो !) तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ और उन (के दीन) की मदद करो और उनकी बेहद ता'ज़ीमो तकरीम करो, और (साथ) अल्लाह की सुब्हो शाम तस्बीह़ करो।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُبَايِعُوْنَكَ اِنَّمَا يُبَايِعُوْنَ اللّٰهَ ؕ يَدُ اللّٰهِ فَوْقَ اَيْدِيْهِمْ ۚ فَمَنْ نَّكَثَ فَاِنَّمَا يَنْكُثُ عَلٰى نَفْسِهٖ ۚ وَ مَنْ اَوْفٰى بِمَا عٰهَدَ عَلَيْهُ اللّٰهَ فَسَيُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿١٠﴾ ع

10. (ऐ ह़बीब !) बेशक जो लोग आपसे बैअ़त करते हैं वोह अल्लाह ही से बैअ़त करते हैं, उनके हाथों पर (आपके हाथकी सूरत में) अल्लाहका हाथ है। फिर जिस शख़्सने बैअ़त को तोड़ा तो उसके तोड़ने का वबाल उसकी अपनी जान पर होगा और जिसने (इस) बातको पूरा किया जिस (के पूरा करने) पर उसने अल्लाहसे अ़हद किया था तो वोह अनक़रीब उसे बहुत बड़ा अज्र अ़ता फ़रमाएगा।

سَيَقُوْلُ لَكَ الْمُخَلَّفُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ شَغَلَتْنَآ اَمْوَالُنَا وَ اَهْلُوْنَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا ۚ يَقُوْلُوْنَ

11. अ़नक़रीब देहातियों में से वोह लोग जो (हुदैबिया में शिर्कत से) पीछे रेह गए थे आपसे (मा'जेरतन येह) कहेंगे के हमारे अमवाल और ऐहलो अयाल ने हमें मशग़ूल कर रखा था (इस लिए हम आपकी मइय्यत से मेहरूम रेह

بِأَلْسِنَتِهِم مَّا لَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ ۚ قُلْ فَمَن يَمْلِكُ لَكُم مِّنَ اللَّهِ شَيْئًا إِنْ أَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا ۚ بَلْ كَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ﴿١١﴾

गए) सो आप हमारे लिए बख़्शिश तलब करें। येह लोग अपनी ज़बानों से वोह (बातें) केहते हैं जो उनके दिलों में नहीं हैं। आप फ़रमा दें कि कौन है जो तुम्हें अल्लाह के (फ़ैसले के) खिलाफ़ बचाने का इख़्तियार रखता हो अगर उसने तुम्हारे नुकसान का इरादा फ़रमा लिया हो या तुम्हारे नफ़े' का इरादा फ़रमा लिया हो, बल्कि अल्लाह तुम्हारे कामों से अच्छी तरह बा ख़बर है।

بَلْ ظَنَنتُمْ أَن لَّن يَنقَلِبَ الرَّسُولُ وَالْمُؤْمِنُونَ إِلَىٰ أَهْلِيهِمْ أَبَدًا وَزُيِّنَ ذَٰلِكَ فِي قُلُوبِكُمْ وَظَنَنتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ ۖ وَكُنتُمْ قَوْمًا بُورًا ﴿١٢﴾

12. बल्कि तुमने येह गुमान किया था के रुसूल (ﷺ) और ऐहले ईमान (या'नी सहाबा ؓ) अब कभी भी पलट कर अपने घरवालों की तरफ नहीं आएंगे और येह (गुमान) तुम्हारे दिलों में (तुम्हारे नफ़्स की तरफ़ से) खूब आरास्ता कर दिया गया था और तुमने बहुत ही बुरा गुमान किया और तुम हलाक होने वाली क़ौम बन गए।

وَمَن لَّمْ يُؤْمِن بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ فَإِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَعِيرًا ﴿١٣﴾

13. और जो अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) पर ईमान न लाए तो हमने काफिरों के लिए दोज़ख़ तैयार कर रखी है।

وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ ۚ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿١٤﴾

14. और आस्मानों और ज़मीनकी बाहशाहत अल्लाह ही के लिए है, वोह जिसे चाहता है बख़्श देता है और जिसे चाहता है अज़ाब देता है, और अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला बेहद रह्म फ़रमाने वाला है।

سَيَقُولُ الْمُخَلَّفُونَ إِذَا انطَلَقْتُمْ إِلَىٰ مَغَانِمَ لِتَأْخُذُوهَا ذَرُونَا نَتَّبِعْكُمْ ۖ يُرِيدُونَ أَن يُبَدِّلُوا كَلَامَ اللَّهِ ۚ قُل لَّن تَتَّبِعُونَا كَذَٰلِكُمْ قَالَ اللَّهُ مِن قَبْلُ ۖ

15. जब तुम (ख़ैबर के) अमवाले ग़नीमत को हासिल करनेकी तरफ़ चलोगे तो (सफ़रे हुदैबिया में) पीछे रेह जाने वाले लोग कहेंगे हमें भी इजाज़त दो के हम तुम्हारे पीछे हो कर चलें। वोह चाहते हैं के अल्लाह के फ़रमानको बदल दें। फ़रमा दीजिऐ : तुम हरगिज़ हमारे पीछे नहीं आ सकते उसी तरह अल्लाहने पेहले से फ़रमा दिया था। सो

فَسَيَقُولُونَ بَلْ تَحْسُدُونَنَا ۚ بَلْ كَانُوا لَا يَفْقَهُونَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿١٥﴾

अब वोह कहेंगे बल्कि तुम हमसे ह़सद करते हो, बात येह है कि येह लोग (ह़क़ बातको) बहुत ही कम समझते हैं।

قُلْ لِلْمُخَلَّفِينَ مِنَ الْأَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ إِلَىٰ قَوْمٍ أُولِي بَأْسٍ شَدِيدٍ تُقَاتِلُونَهُمْ أَوْ يُسْلِمُونَ ۖ فَإِنْ تُطِيعُوا يُؤْتِكُمُ اللَّهُ أَجْرًا حَسَنًا ۖ وَإِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿١٦﴾

16. आप देहातियों में से पीछे रेह जानेवालों से फ़रमा दें के तुम अ़नक़रीब एक सख़्त जंगजू कौम (से जिहाद) की तरफ बुलाए जाओगे तुम उनसे जंग करते रहोगे या वोह मुसलमान हो जाएंगे, सो अगर तुम हुक्म मान लोगे तो अल्लाह तुम्हें बेहतरीन अज्र अ़ता फ़रमाएगा। और अगर तुम रूगरदानी करोगे। जैसे तुमने पेहले रूगरदानी की थी तो वोह तुम्हें दर्दनाक अ़ज़ाब में मुब्तिला कर देगा।

لَيْسَ عَلَى الْأَعْمَىٰ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ حَرَجٌ ۗ وَمَنْ يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ وَمَنْ يَتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿١٧﴾

17. (जिहाद से रेह जाने में) न अँधे पर कोई गुनाह है और न लंगड़े पर कोई गुनाह है और न (ही) बीमार पर कोई गुनाह है, और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल ( ) की इताअ़त करेगा वोह उसे बहिश्तों में दाख़िल फ़रमा देगा जिनके नीचे नेहरें रवां होंगी, और जो शख़्स (इताअ़त से) मुंह फ़ेरेगा वोह उसे दर्दनाक अ़ज़ाब में मुब्तेला कर देगा।

النصف ع ٢

لَقَدْ رَضِيَ اللَّهُ عَنِ الْمُؤْمِنِينَ إِذْ يُبَايِعُونَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَنْزَلَ السَّكِينَةَ عَلَيْهِمْ وَأَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيبًا ﴿١٨﴾

18. बेशक अल्लाह मोमिनों से राज़ी हो गया जब वोह (हुदैबिया में) दरख़्त के नीचे आपसे बैअ़त कर रहे थे, सो जो़ (जज़्बए सिद्क़ो वफ़ा) उनके दिलों में था अल्लाहने मा'लूम कर लिया तो अल्लाहने उन (के दिलों) पर ख़ास तस्कीन नाजिल फ़रमाई और उन्हें एक बहुत ही क़रीब फ़त्हे (ख़ैबर) का इनाम अ़ता किया।

وَمَغَانِمَ كَثِيرَةً يَأْخُذُونَهَا ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿١٩﴾

19. और बहोत से अमवाले गनीमत (भी) जो वोह हासिल कर रहे हैं, और अल्लाह बड़ा गालिब बड़ी हिक्मतवाला है।

وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ كَثِيْرَةً تَاْخُذُوْنَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هٰذِهٖ وَ كَفَّ اَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ ۚ وَ لِتَكُوْنَ اٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَ يَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿۲۰﴾

20. और अल्लाहने (कई फ़ुतूहात के नतीजे में) तुमसे बहुतसी ग़नीमतों का वा'दा फ़रमाया है जो तुम आइन्दा ह़ासिल करोगे मगर उसने येह (ग़नीमते ख़ैबर) तुम्हें जल्दी अ़ता फ़रमा दी और (अहले मक्का, अहले ख़ैबर, क़बाइले बनी असदो ग़त्फान,अल गरज़ तमाम दुश्मन) लोगों के हाथ तुमसे रोक दिए, और ताकि येह मोमिनों के लिए (आइन्दा की काम्याबीओ फत्हयाबी की) निशानी बन जाऐ। और तुम्हें (इत्मेनान क़ल्ब के साथ) सीधे रास्ते पर (साबित कदम और) गामज़न रखे।

وَّ اُخْرٰى لَمْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهَا قَدْ اَحَاطَ اللّٰهُ بِهَا ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرًا ﴿۲۱﴾

21. और दूसरी (मक्का, हवाज़न और हुनैन से ले कर फ़ारस और रूम तक की बड़ी फ़ुतूहात) जिन पर तुम क़ादिर न थे बेशक अल्लाहने (तुम्हारे लिए) उनका भी अहाता फ़रमा लिया है, और अल्लाह हर चीज़ पर बड़ी क़ुदरत रखने वाला है।

وَ لَوْ قٰتَلَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوَلَّوُا الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّ لَا نَصِيْرًا ﴿۲۲﴾

22. और (ऐ मोमिनो !) अगर काफ़िर लोग (हुदैबिया में) तुम से जंग करते तो वोह ज़रूर पीठ फेर कर भाग जाते, फिर वोह न कोई दोस्त पाते और न मददगार (मगर अल्लाह को सिर्फ़ येह एक ही नहीं बल्कि कई फ़ुतूहात का दरवाजा तुम्हारे लिए खोलना मक़्सूद था)।

سُنَّةَ اللّٰهِ الَّتِیْ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ ۚۖ وَ لَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ﴿۲۳﴾

23. (येह) अल्लाह की सुन्नत है जो पहले से चली आ रही है, और आप अल्लाह के दस्तूर में हरगिज़ कोई तबदीली नहीं पाएंगे।

وَ هُوَ الَّذِیْ كَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَ اَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْۢ بَعْدِ اَنْ اَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ﴿۲۴﴾

24. और वोही है जिसने सरह़दे मक्का पर (हुदैबिया के क़रीब) उन (काफ़िरों) के हाथ तुम से और तुम्हारे हाथ उनसे रोक दिए उसके बाद के उसने तुम्हें उन (के गिरोह) पर ग़ल्बा बख़्श दिया था। और अल्लाह उन कामों को जो तुम करते हो ख़ूब देखने वाला है।

هُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوكُمْ عَنِ
الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْيَ مَعْكُوفًا
أَنْ يَبْلُغَ مَحِلَّهُ ۚ وَلَوْلَا رِجَالٌ
مُؤْمِنُونَ وَنِسَاءٌ مُؤْمِنَاتٌ لَمْ
تَعْلَمُوهُمْ أَنْ تَطَئُوهُمْ فَتُصِيبَكُمْ
مِنْهُمْ مَعَرَّةٌ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ لِيُدْخِلَ
اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ ۚ لَوْ
تَزَيَّلُوا لَعَذَّبْنَا الَّذِينَ كَفَرُوا
مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿٢٥﴾

25. येही वोह लोग हैं जिन्होंने कुफ्र किया और तुम्हें मस्जिदे हराम से रोक दिया और कुरबानी के जानवरों को भी, जो अपनी जगह पहुंचने से रुके पड़े रहे, और अगर कई ऐसे मोमिन मर्द और मोमिन औरतें (मक्का में मौजूद न होतीं) जिन्हें तुम जानते भी नहीं हो कि तुम उन्हें पामाल कर डालोगे और तुम्हें भी ला इल्मी में उनकी तरफ़से कोई सख़्ती और तकलीफ पहुंच जाएगी (तो हम तुम्हें इसी मौक़े' पर ही जंगकी इजाज़त दे देते। मगर फ़त्हे मक्का को मोअख़्ख़र इस लिए किया गया) ताके अल्लाह जिसे चाहे (सुल्ह के नतीजे में) अपनी रहमत में दाख़िल फ़रमा ले। अगर (वहां के काफ़िर और मुसलमान) अलग अलग होकर एक दूसरे से मुमताज़ हो जाते तो हम उनमें से काफ़िरों को दर्दनाक अज़ाब की सज़ा देते।

إِذْ جَعَلَ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي قُلُوبِهِمُ
الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَأَنْزَلَ
اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ وَعَلَى
الْمُؤْمِنِينَ وَأَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ
التَّقْوَىٰ وَكَانُوا أَحَقَّ بِهَا وَأَهْلَهَا ۚ
وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ﴿٢٦﴾

26. जब काफ़िर लोगोंने अपने दिलोंमें मुतकब्बिराना हटधर्मी रख ली (जो के) जाहिलियत की ज़िद और ग़ैरत (थी) तो अल्लाहने अपने रसूल (ﷺ) और मोमिनों पर अपनी ख़ास तस्कीन नाज़िल फ़रमाई और उन्हें कलिमए तक़्वा पर मुस्तहकम फ़रमा दिया और वोह उसी के ज़ियादा मुस्तहिक थे और उसके अहल (भी) थे, और अल्लाह हर चीज़ को खूब जाननेवाला है।

ع ٣ ٩ ١١

لَقَدْ صَدَقَ اللَّهُ رَسُولَهُ الرُّؤْيَا
بِالْحَقِّ ۖ لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ
الْحَرَامَ إِنْ شَاءَ اللَّهُ آمِنِينَ
مُحَلِّقِينَ رُءُوسَكُمْ وَمُقَصِّرِينَ
لَا تَخَافُونَ ۖ فَعَلِمَ مَا لَمْ تَعْلَمُوا

27.बेशक अल्लाहने अपने रसूल (ﷺ) को हक़ीक़तके ऐन मुताबिक सच्चा ख़्वाब दिखाया था कि तुम लोग, अगर अल्लाहने चाहा तो ज़रूर बिज़ ज़रूर मस्जिदे हराम में दाखिल होगे अमनो अमानके साथ, (कुछ) अपने सर मुंडवाए हुए और (कुछ) बाल कतरवाए हुए (इस हाल में के) तुम ख़ौफ़ज़दा नहीं होगे, पस वोह (सुल्ह हुदैबिया को इस ख्वाबकी ताअबीर के पैशख़ेमा के तौर पर) जानता था

فَجَعَلَ مِنْ دُوْنِ ذٰلِكَ فَتْحًا قَرِيْبًا ﴿٢٧﴾

जो तुम नहीं जानते थे सो उसने इस (फत्हे मक्का) से भी पेहले एक फोरी फत्ह (हुदैबिया से पलटते ही फ़त्हे ख़ैबर) अता कर दी। (और उसके अगले साल फ़त्हे मक्का और दाखिलाए हरम अता फ़रमा दिया)।

هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿٢٨﴾ۭ

28. वोही है जिसने अपने रसूल (ﷺ) को हिदायत और दीने हक़ अता फ़रमा कर भेजा ताकि उसे तमाम अदयान पर ग़ालिब कर दे, और (रसूल (ﷺ) की सदाक़तो हक़्क़ानियत पर) अल्लाह ही गवाह काफ़ी है।

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ۭ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗٓ اَشِدَّاۗءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاۗءُ بَيْنَهُمْ تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا ۡ سِيْمَاهُمْ فِيْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ۭ ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ ڔ وَمَثَلُهُمْ فِي الْاِنْجِيْلِ ڔ كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْــَٔهٗ فَاٰزَرَهٗ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوٰى عَلٰي سُوْقِهٖ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ۭ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٢٩﴾ۧ

29. मुहम्मद (ﷺ) अल्लाहकेरसूल हैं, और जो लोग आप (ﷺ) की मइय्यत और संगत में हैं (वोह) काफ़िरों पर (बहोत सख़्त और ज़ोरावर हैं आपस में बहोत नरम दिल और शफीक हैं। आप उन्हें कसरत से रुकूअ करते हुऐ, सजूद करते हुऐ देखते हैं वोह (सिर्फ़) अल्लाह के फ़ज़ल और उसकी रज़ा के तलबगार हैं। उनकी निशानी उनके चेहरों पर सजदों का असर है (जो बसूरते नूर नुमायां हैं)। उनके येह अवसाफ़ तौरात में (भी मज़्कूर) हैं और उस के (येही) अवसाफ इन्जील में (भी मरकूम) हैं। वोह (सहाबा हमारे महबूबे मुकर्रम की) खेती की तरह हैं जिसने (सबसे पेहले) अपनी बारीक सी कूंपल निकाली, फिर उसे ताक़तवर और मज़्बूत किया, फिर वोह मोटी और दबीज़ हो गई, फिर अपने तने पर सीधी खड़ी हो गई (और जब सरसब्ज़ो शादाब हो कर लेहलहाई तो) काश्तकारों को क्या ही अच्छी लगने लगी (अल्लाहने अपने हबीब (ﷺ) के सहाबा ﷺ को उसी तरह ईमान के तनावर दरख़्त बनाया है) ताके उनके ज़रीए वोह (मुहम्मद (ﷺ) से जलने वाले) काफ़िरों के दिल जलाए, अल्लाहने उन लोगों से जो ईमान लाए और नेक आ'माल करते रहे मग़फ़िरत और अज्रे अजीम का वा'दा फ़रमाया है।

معانقة ١٥

आयातुहा 18 | 49 सूरतुल हुजुराति म.दनिय्यतुन 106 | रुकूआ़तुहा 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है रुकूआ़तुहा ।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيِ اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ①

1. ऐ ईमानवालो ! (किसी भी मुआ़मले में) अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) से आगे न बढ़ा करो और अल्लाह से डरते रहो (कि कहीं रसूल ﷺ की बे अदबी न हो जाऐ), बेशक अल्लाह (सब कुछ) सुननेवाला खूब जाननेवाला है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْۤا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَ لَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَ اَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ②

2. ऐ ईमानवालो ! तुम अपनी आवाजों को नबिय्ये मुकर्रम ﷺ की आवाज़ से बुलंद मत किया करो और उनके साथ इस तरह बुलंद आवाज से बात (भी) न किया करो जैसे तुम एक दूसरे से बुलंद आवाज के साथ करते हो (ऐसा न हो) कि तुम्हारे सारे आ'माल ही (ईमान समेंत) ग़ारत हो जाएं और तुम्हें (ईमान और आ'माल के बरबाद हो जानेका) शऊ़र तक भी न हो।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ امْتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰى ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ③

3. बेशक जो लोग रसूल (ﷺ) की बारगाह में (अदबो नियाज़ के बाइस) अपनी आवाजों को पस्त रखते हैं, येही वोह लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने तक़्वा के लिए चुनकर ख़ालिस कर लिया है। उन्ही के लिए बख़्शिश है और अज्रे अ़ज़ीम है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَآءِ الْحُجُرٰتِ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ④

4. बेशक जो लोग आपको हुजरों के बाहरसे पुकारते हैं उनमें से अकसर (आपके बुलंद मुक़ामो मर्तबा और आदाबे ता'ज़ीम की) समझ नहीं रखते।

وَ لَوْ اَنَّهُمْ صَبَرُوْا حَتّٰى تَخْرُجَ اِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ وَ اللّٰهُ

5. और अगर वोह लोग सब्र करते यहां तक कि आप खुदही उनकी तरफ़ बाहर तशरीफ़ ले आते तो येह उन के लिए बेहतर होता, अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٥

बहुत रहम फ़रमाने वाला है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ جَآءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَيَّنُوْۤا اَنْ تُصِيْبُوْا قَوْمًۢا بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوْا عَلٰى مَا فَعَلْتُمْ نٰدِمِيْنَ ۝٦

6. ऐ ईमान वालो ! अगर तुम्हारे पास कोई फ़ासिक़ (शख्स) कोई ख़बर लाए तो खूब तेहक़ीक़ कर लिया करो (ऐसा न हो) के तुम किसी क़ौम को लाइल्मी में (नाहक़) तकलीफ़ पहुंचा बैठो, फ़िर तुम अपने किए पर पछताते रेह जाओ।

وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ فِيْكُمْ رَسُوْلَ اللّٰهِ ؕ لَوْ يُطِيْعُكُمْ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنَ الْاَمْرِ لَعَنِتُّمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ حَبَّبَ اِلَيْكُمُ الْاِيْمَانَ وَزَيَّنَهٗ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَكَرَّهَ اِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ وَالْعِصْيَانَ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الرّٰشِدُوْنَ ۝٧

7.और जान लो कि तुम में रसूलल्लाह ﷺ मौजूद हैं, अगर वोह बहुत से कामों में तुम्हारा केहना मान लें तो तुम बड़ी मुश्किल में पड़ जाओगे लेकिन अल्लाहने तुम्हें ईमान की मुहब्बत अता फ़रमाई और उसे तुम्हारे दिलों में आरास्ता फ़रमा दिया और कुफ्र और नाफ़रमानी और गुनाह से तुम्हें मु-त-नफ़्फ़िर कर दिया, ऐसे ही लोग दीन की राह पर साबित और गामज़न हैं।

فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَنِعْمَةً ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝٨

8. (येह) अल्लाह के फ़ज़्ल और (उसकी) ने'मत (या'नी तुम में रसूले उम्मी ﷺ की बे'सत और मौजूदगी) के बाइस है, और अल्लाह खूब जाननेवाला और बड़ी हिक्मतवाला है।

وَاِنْ طَآئِفَتٰنِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوْا فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا ۚ فَاِنْۢ بَغَتْ اِحْدٰىهُمَا عَلَى الْاُخْرٰى فَقَاتِلُوا الَّتِيْ تَبْغِيْ حَتّٰى تَفِيْٓءَ اِلٰٓى اَمْرِ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ فَآءَتْ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَاَقْسِطُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ۝٩

9. और अगर मुसलमानों के दो गिरोह आपसमें जंग करें तो उनके दरमियान सुलेह करा दिया करो, फिर अगर उनमें से एक (गिरोह) दूसरे पर ज़ियादती और सरकशी करे तो उस (गिरोह) से लड़ो जो ज़ियादती का मुर्तकिब हो रहा है यहां तक कि वोह अल्लाह के हुक्म की तरफ लौट आऐ, फिर अगर वोह रजूअ़ कर ले तो दोनों के दरम्यान अ़दल के साथ सुलह करा दो और इन्साफ़ से काम लो, बेशक अल्लाह इन्साफ़ करनेवालों को बहुत पसंद फ़रमाता है।

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ إِخْوَةٌ فَأَصْلِحُوا بَيْنَ أَخَوَيْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿١٠﴾

10. बात येही है कि (सब) अहले ईमान (आपस में) भाई हैं। सो तुम अपने दो भाइयों के दरम्यान सुलेह कराया करो, और अल्लाह से डरते रहो ताके तुम पर रहम किया जाए।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِنْ قَوْمٍ عَسَىٰ أَنْ يَكُونُوا خَيْرًا مِنْهُمْ وَلَا نِسَاءٌ مِنْ نِسَاءٍ عَسَىٰ أَنْ يَكُنَّ خَيْرًا مِنْهُنَّ ۖ وَلَا تَلْمِزُوا أَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوا بِالْأَلْقَابِ ۖ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوقُ بَعْدَ الْإِيمَانِ ۚ وَمَنْ لَمْ يَتُبْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿١١﴾

11. ऐ ईमान वालो! कोई क़ौम किसी क़ौम का मज़ाक़ न उड़ाए मुमकिन है वोह लोग उन (तमस्खुर करनेवालों) से बेहतर हों और न औ़रतें ही दूसरी औ़रतों का (मज़ाक़ उड़ाएं) मुमकिन है वोही औरतें उन (मज़ाक़ उड़ाने वाली औरतों) से बेहतर हों, और न आपसमें ता'नाजनी और इल्ज़ाम तराशी किया करो और न एक दूसरे के बुरे नाम रखा करो, किसी के ईमान (लाने) के बाद उसे फ़ासिक़ो बदकार केहना बहोत ही बुरा नाम है, और जिसने तौबा नहीं की सो वही लोग ज़ालिम हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اجْتَنِبُوا كَثِيرًا مِنَ الظَّنِّ إِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ إِثْمٌ ۖ وَلَا تَجَسَّسُوا وَلَا يَغْتَبْ بَعْضُكُمْ بَعْضًا ۚ أَيُحِبُّ أَحَدُكُمْ أَنْ يَأْكُلَ لَحْمَ أَخِيهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوهُ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ رَحِيمٌ ﴿١٢﴾

12. ऐ ईमान वालो! ज्यादातर गुमानो से बचा करो बेशक बाज गुमान (ऐसे) गुनाह होते हैं (जिन पर उख़रवी सज़ा वाजिब होती है) और (किसी के ग़ैबों और राज़ों की) जुस्तजू न किया करो और न पीठ पीछे एक दूसरे की बुराई किया करो, क्या तुम में से कोई शख़्स पसंद करेगा कि वोह अपने मुर्दा भाईका गोश्त खाए, सो तुम उससे नफ़रत करते हो। और (इन तमाम मुआ़मलात में) अल्लाह से डरो बेशक अल्लाह तौबा को बहुत कुबूल फ़रमाने वाला बहुत रहम फ़रमाने वाला है।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَاكُمْ مِنْ ذَكَرٍ وَأُنْثَىٰ وَجَعَلْنَاكُمْ شُعُوبًا وَقَبَائِلَ لِتَعَارَفُوا ۚ إِنَّ أَكْرَمَكُمْ

13. ऐ लोगो! हमने तुम्हें मर्द और औ़रत से पैदा फ़रमाया और हमने तुम्हें (बड़ी बड़ी) क़ौमों और क़बीलों में (तक़्सीम) किया ताकि तुम एक दूसरे को पेहचान सको।

عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ﴿۱۳﴾

बेशक अल्लाहके नजदीक तुम में जियादा बाइज्जत वोह है जो तुम में ज्यादा परहेजगार हो, बेशक अल्लाह खूब जानने वाला खूब ख़बर रखने वाला है।

قَالَتِ الْاَعْرَابُ اٰمَنَّا ؕ قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَلٰكِنْ قُوْلُوْۤا اَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَدْخُلِ الْاِيْمَانُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَاِنْ تُطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَا يَلِتْكُمْ مِّنْ اَعْمَالِكُمْ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۴﴾

14. देहाती लोग केहते हैं के हम ईमान लाए हैं, आप फ़रमा दीजिए, तुम ईमान नहीं लाए, हां येह कहो कि हम इस्लाम लाए हैं और अभी ईमान तुम्हारे दिलों में दाख़िल ही नहीं हुआ, और अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की इताअ़त करो तो वोह तुम्हारे आ'माल (के सवाब में) से कुछ भी कम नहीं करेगा, बेशक अल्लाह बहुत बख़्शने वाला बहुत रहम फ़रमाने वाला है।

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوْا وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ﴿۱۵﴾

15. ईमानवाले तो सिर्फ वोह लोग हैं जो अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) पर ईमान लाए, फिर शक में न पड़े और अल्लाह की राह में अपने अमवाल और अपनी जानों से जिहाद करते रहे, येही वोह लोग हैं जो (दावए ईमान में) सच्चे हैं।

قُلْ اَتُعَلِّمُوْنَ اللّٰهَ بِدِيْنِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۱۶﴾

16. फ़रमा दीजिऐ, क्या तुम अल्लाहको अपनी दीनदारी जतला रहे हो, हालांकि अल्लाह उन (तमाम) चीज़ों को जानता है जो आस्मानों में हैं और जो ज़मीन में हैं, और अल्लाह हर चीज़ का खूब इल्म रखने वाला है।

يَمُنُّوْنَ عَلَيْكَ اَنْ اَسْلَمُوْا ؕ قُلْ لَّا تَمُنُّوْا عَلَيَّ اِسْلَامَكُمْ ۚ بَلِ اللّٰهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ اَنْ هَدٰىكُمْ لِلْاِيْمَانِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۱۷﴾

17. येह लोग आप पर एहसान जतलाते है कि वोह इस्लाम ले आए हैं। फ़रमा दीजिए : तुम अपने इस्लाम का मुझ पर एहसान न जतलाओ बल्कि अल्लाह तुम पर एहसान फ़रमाता है कि उसने तुम्हें ईमान का रास्ता दिखाया है, बशर्ते कि तुम (ईमान में) सच्चे हो।

اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ غَيْبَ السَّمٰوٰتِ

18. बेशक अल्लाह आस्मानों और जमीन के सब गै़ब

وَالْاَرْضِ ؕ وَ اللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٨﴾

जानता है, और अल्लाह जो अ़मल भी करते हो उसे खूब देखने वाला है।

आयातुहा 45 | 50 सूरतु क़ॉफ़ मक्किय्यतुन 34 | रुकूआ़तुहा 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

قٓ ۚ وَالْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ ﴿١﴾

1. क़ॉफ़ (ह़क़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं), क़सम है कुर्आने मजीद की।

بَلْ عَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ فَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا شَيْءٌ عَجِيْبٌ ﴿٢﴾

2. बल्कि उन लोगों ने तअ़ज्जुब किया के उनके पास उन्ही में से एक डर सुनाने वाला आ गया है सो काफ़िर केहते हैं येह अ़जीब बात है।

ءَاِذَا مِتْنَا وَ كُنَّا تُرَابًا ۚ ذٰلِكَ رَجْعٌۢ بَعِيْدٌ ﴿٣﴾

3. क्या जब हम मर जाएंगे और हम मिट्टी हो जाऐंगे (तो फिर ज़िन्दा होंगे) ? येह पलटना (फ़हमो इदराक से) बईद है।

قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْاَرْضُ مِنْهُمْ ۚ وَعِنْدَنَا كِتٰبٌ حَفِيْظٌ ﴿٤﴾

4. बेशक हम जानते हैं के ज़मीन उन (के जिस्मों) से (खा खा कर) कितना कम करती है, और हमारे पास (ऐसी) किताब है जिस में सब कुछ महफ़ूज़ है।

بَلْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ فَهُمْ فِيْٓ اَمْرٍ مَّرِيْجٍ ﴿٥﴾

5. बल्कि (अ़जीब और फ़ह्मो इद्राक से बईद बात तो येह है कि) उन्होंने ह़क़ (या'नी रसूल ﷺ और कुरआन) को झुटला दिया जब वोह उनके पास आ चुका सो वोह खुद (ही) उलझन और इज़्तिराब की बात में (पड़े) हैं।

اَفَلَمْ يَنْظُرُوْٓا اِلَى السَّمَآءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنٰهَا وَزَيَّنّٰهَا وَمَا لَهَا مِنْ فُرُوْجٍ ﴿٦﴾

6. सो क्या उन्होंने आस्मानकी तरफ़ निगाह नहीं की जो उनके ऊपर है कि हमने उसे कैसे बनाया है और (कैसे) सजाया है और उसमें कोई शिगाफ़ (तक) नहीं है।

وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا

7. और (इसी तरह) हमने ज़मीन को फ़ैलाया और उसमें

رَوَاسِيَ وَ اَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍۭ بَهِيْجٍ ﴿٧﴾

हमने बहुत भारी पहाड़ रखे और हमने उसमें हर क़िस्म के खुशनुमा पौदे उगाए।

تَبْصِرَةً وَّ ذِكْرٰى لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ﴿٨﴾

8. (येह सब) बसीरत और नसीहत (का सामान) है हर उस बन्दे के लिए जो (अल्लाह की तरफ़) रुजूअ़ करनेवाला है।

وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً مُّبٰرَكًا فَاَنْۢبَتْنَا بِهٖ جَنّٰتٍ وَّحَبَّ الْحَصِيْدِ ﴿٩﴾

9. और हमने आस्मानसे बा बरकत पानी बरसाया फिर हमने उससे बाग़ात उगाए और खेतों का ग़ल्ला (भी)।

وَالنَّخْلَ بٰسِقٰتٍ لَّهَا طَلْعٌ نَّضِيْدٌ ﴿١٠﴾

10. और लम्बी लम्बी खजूरें जिनके खूशे तेह ब तेह होते हैं।

رِّزْقًا لِّلْعِبَادِ ۙ وَاَحْيَيْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا ؕ كَذٰلِكَ الْخُرُوْجُ ﴿١١﴾

11.(येह सब कुछ अपने) बन्दों की रोज़ी के लिए (किया) और हमने उस (पानी) से मुर्दा जमीन को जिन्दा किया। उसी तरह (तुम्हारा) कबरों से निकलना होगा।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّ اَصْحٰبُ الرَّسِّ وَ ثَمُوْدُ ﴿١٢﴾

12. इन (कुफ़्फ़ारे मक्का) से पेहले क़ौमे नूह ने, और (सर ज़मीने यमामा के अँधे) कुंवें वालों ने, और (मदीना से शाम की तरफ़ तबूक के क़रीब बस्तीऐ हिज्र में आबाद सालेह ﷺ की कौम) समूद ने।

وَعَادٌ وَّ فِرْعَوْنُ وَ اِخْوَانُ لُوْطٍ ﴿١٣﴾

13. और (उ़मान और अर्ज़े महरा के दरमियान यमन की वादिऐ अहक़ाफ़ में आबाद हूद ﷺ की क़ौम) आ़दने और (मिस्र के हुकमरान) फिरऔ़न ने और (अर्ज़े फ़लस्तीन में सदूम और अ़मूरा की रेहनेवाली) क़ौमे लूतने।

وَّ اَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ وَ قَوْمُ تُبَّعٍ ؕ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيْدِ ﴿١٤﴾

14. और (मदयन के घने दरख़्तों वाले बन) ऐका के रेहने वालों ने (येह कौमे शुऐब थी) और (बादशाहे यमन असद अबू करीब) तुब्बा (अल हिम्यरी) की क़ौम ने, (अल गरज़ इन) सबने रसूलों को झुटलाया, पस (इन पर) मेरा वा'दए अज़ाब साबित हो कर रहा।

اَفَعَيِيْنَا بِالْخَلْقِ الْاَوَّلِ ؕ بَلْ هُمْ

15. सो क्या हम पेहली बार पैदा करने के बाइस थक गए

ع ١٥ ١٥

فِيْ لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿١٥﴾

हैं ? (ऐसा नहीं) बल्कि वोह लोग अज़ सरेनौ पैदाइश की निस्बत शक में (पड़े) हैं।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهٖ نَفْسُهٗ ۚۖ وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ ﴿١٦﴾

16. और बेशक हमने इन्सानको पैदा किया है और हम उन वस्वसों को (भी) जानते हैं जो उसका नफ्स (उसके दिलो दिमाग़ में) डालता है। और हम उसकी शेह रग से भी जियादा उसके करीब हैं।

اِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيٰنِ عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيْدٌ ﴿١٧﴾

17. जब दो लेने वाले (फ़रिश्ते उसके हर क़ौलो फ़े'ल को तेहरीर में) ले लेते हैं (जो) दाएं तरफ़ और बाएं तरफ़ बैठे हुए हैं।

مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ اِلَّا لَدَيْهِ رَقِيْبٌ عَتِيْدٌ ﴿١٨﴾

18. वोह मुंह से कोई बात नहीं केहने पाता मगर उसके पास एक निगहबान (लिखने के लिए) तैयार रेहता है।

وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ﴿١٩﴾

19. और मौतकी बेहोशी हक्क के साथ आ पहुंची। (ऐ इन्सान!) येही वोह चीज़ है जिस से तू भागता था।

وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ ؕ ذٰلِكَ يَوْمُ الْوَعِيْدِ ﴿٢٠﴾

20. और सूर फूंका जाएगा, येही (अज़ाब ही) वईद का दिन है।

وَجَآءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا سَآئِقٌ وَّشَهِيْدٌ ﴿٢١﴾

21. और हर जान (हमारे हुजूर इस तरह) आएगी के उसका एक हांकने वाला (फ़रिश्ता) और (दूसरा आ'माल पर) गवाह होगा।

لَقَدْ كُنْتَ فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَآءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيْدٌ ﴿٢٢﴾

22. हक़ीक़त में तू उस (दिन) से गफलत में पड़ा रहा सो हमने तेरा पर्दए (गफ़लत) हटा दिया पस आज तेरी निगाह तेज़ है।

وَقَالَ قَرِيْنُهٗ هٰذَا مَا لَدَيَّ عَتِيْدٌ ؕ ﴿٢٣﴾

23. और उसके साथ रेहने वाला (फ़रिश्ता) कहेगा : येह है जो कुछ मेरे पास तैयार है।

أَلْقِيَا فِي جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيدٍ ﴿٢٤﴾

24. (हुक्म होगा) : पस तुम दोनों (ऐसे) हर ना शुक्र गुज़ार सरकश को दोज़ख़में डाल दो।

مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُّرِيبٍ ﴿٢٥﴾

25. जो नेकी से रोकनेवाला है, हदसे बढ़ जानेवाला है, शक करने और डालनेवाला है।

الَّذِي جَعَلَ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ فَأَلْقِيَاهُ فِي الْعَذَابِ الشَّدِيدِ ﴿٢٦﴾

26. जिसने अल्लाहके साथ दूसरा मा'बूद ठेहरा रखा था सो तुम उसे सख़्त अज़ाब में डाल दो।

قَالَ قَرِينُهُ رَبَّنَا مَا أَطْغَيْتُهُ وَلَٰكِن كَانَ فِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ﴿٢٧﴾

27. (अब) उसका (दूसरा) साथी (शैतान) कहेगा : ऐ हमारे रब ! इसे मैं ने गुमराह नहीं किया बल्कि येह (खुद ही) परले दर्जे की गुमराही में मुब्तिला था।

قَالَ لَا تَخْتَصِمُوا لَدَيَّ وَقَدْ قَدَّمْتُ إِلَيْكُم بِالْوَعِيدِ ﴿٢٨﴾

28. इर्शाद होगा : तुम लोग मेरे हुजूर झगड़ा मत करो हालांकि मैं तुम्हारी तरफ़ पेहले ही (अज़ाब की) वईद भेज चुका हूं।

مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَيَّ وَمَا أَنَا بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ﴿٢٩﴾ ع

29. मेरी बारगाह में फ़रमान बदला नहीं जाता और न ही में बंदों पर जुल्म करने वाला हुं।

يَوْمَ نَقُولُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَأْتِ وَتَقُولُ هَلْ مِن مَّزِيدٍ ﴿٣٠﴾

30. उस दिन हम दोज़ख़से फ़रमाएंगे : क्या तुम भर गई है ? और वोह कहेगी : क्या कुछ और ज़ियादा भी है ?

وَأُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِينَ غَيْرَ بَعِيدٍ ﴿٣١﴾

31. और जन्नत परहेज़गारों के लिए क़रीब कर दी जाएगी, बिल्कुल दूर नहीं होगी।

هَٰذَا مَا تُوعَدُونَ لِكُلِّ أَوَّابٍ حَفِيظٍ ﴿٣٢﴾

32. (और उनसे इर्शाद होगा) : येह है वोह जिसका तुमसे वा'दा किया गया था (के) हर तौबा करने वाले (अपने दीन और ईमान की) हिफ़ाज़त करनेवाले के लिए (है)।

مَّنْ خَشِيَ الرَّحْمَٰنَ بِالْغَيْبِ وَجَاءَ بِقَلْبٍ مُّنِيبٍ ﴿٣٣﴾

33. जो (खुदाए) रहमान से बिन देखे डरता रहा और (अल्लाह की बारगाह में) रुजूओ इनाबतवाला दिल ले कर हाज़िर हुवा।

ادْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ ؕ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُوْدِ ﴿٣٤﴾

34. इसमें सलामती के साथ दाख़िल हो जाओ, येह हमेशगी का दिन है।

لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ فِيْهَا وَ لَدَيْنَا مَزِيْدٌ ﴿٣٥﴾

35. इस (जन्नत) में उन के लिए वोह तमाम ने'मतें (मौजूद) होंगी जिनकी वोह ख़्वाहिश करेंगे और हमारे हुज़ूर में एक ने'मत मज़ीद भी है (या और भी बहुत कुछ है, सो आशिक़ मस्त हो जाएंगे)।

وَ كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ اَشَدُّ مِنْهُمْ بَطْشًا فَنَقَّبُوْا فِي الْبِلَادِ ؕ هَلْ مِنْ مَّحِيْصٍ ﴿٣٦﴾

36. और हमने उन (कुफ़्फ़ारो मुशरिकीने मक्का) से पेहले कितनी ही उम्मतों को हलाक कर दिया जो ताक़तो कुव्वत में उनसे कहीं बढ़ कर थीं, चुनान्चे उन्होंने (दुनिया के) शेहरों को छान मारा था कि कहीं (मौत या अज़ाब से) भाग जाने की कोई जगह हो।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِمَنْ كَانَ لَهٗ قَلْبٌ اَوْ اَلْقَى السَّمْعَ وَ هُوَ شَهِيْدٌ ﴿٣٧﴾

37. बेशक इस में यक़ीनन इन्तिबाह और तज़क्कुर है उस शख़्स के लिए जो साहिबे दिल है (या'नी ग़फ़लत से दूरी और क़ल्बी बेदारी रखता है) या कान लगा कर सुनता है (या'नी तवज्जोह को यकसू और गैर से मुन्क़ता' रख़ता है) और वोह (बातिनी) मुशाहिदे में है (या'नी हुस्नो जमाले उलूहिय्यत की तजल्लियात में गुम रेहता है)।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ۖ وَّمَا مَسَّنَا مِنْ لُّغُوْبٍ ﴿٣٨﴾

38. और बेशक हमने आस्मानों और ज़मीन को और उस (काइनात) को जो दोनों के दरमियान है छ ज़मानों में तख़्लीक़ किया है, और हमें कोई तकान नहीं पहुंची।

فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَ سَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوْبِ ۚ ﴿٣٩﴾

39. सो आप उन बातों पर जो वोह केहते हैं सब्र कीजिए और अपने रबकी हम्द के साथ तस्बीह कीजिऐ तुलूए आफ़्ताब से पेहले और गुरूबे आफ़ताब से पेहले।

وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَ اَدْبَارَ

40. और रात के बो'ज़ अवक़ात में भी उसकी तस्बीह

السُّجُوْدِ ۝٤٠

कीजिए और नमाजों के बाद भी।

وَ اسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبٍ ۝٤١

41. और (उस दिनका हाल) खूब सुन लीजिए जिस दिन एक पुकारने वाला क़रीबी जगह से पुकारेगा।

يَّوْمَ يَسْمَعُوْنَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُرُوْجِ ۝٤٢

42. जिस दिन लोग सख्त चिन्घाड की आवाज को बिल यक़ीन सुनेंगे, येही क़ब्रों से निकलने का दिन होगा।

اِنَّا نَحْنُ نُحْيٖ وَنُمِيْتُ وَ اِلَيْنَا الْمَصِيْرُ ۝٤٣

43. बेशक हम ही ज़िन्दा रखते हैं और हम ही मौत देते हैं और हमारी ही तरफ़ पलट कर आना है।

يَوْمَ تَشَقَّقُ الْاَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ذٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيْرٌ ۝٤٤

44. जिस दिन ज़मीन उन पर से फट जाएगी तो वोह जल्दी जल्दी निकल पड़ेंगे, येह हश्र (फिर से लोगों को जमो' करना) हम पर निहायत आसान है।

نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ وَ مَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ فَذَكِّرْ بِالْقُرْاٰنِ مَنْ يَّخَافُ وَعِيْدِ ۝٤٥

45. हम खूब जानते हैं जो कुछ वोह केहते हैं और आप उन पर जब्र करने वाले नहीं हैं, पस कुरआन के जरीऐ उस शख़्स को नसीहत फ़रमाइए जो मेरे वादाऐ अ़ज़ाब से डरता है।

आयातुहा 60 | 51 सूरतुज़ ज़ारियाति मक्किय्यतुन 67 | रुकूआतुहा 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

وَالذّٰرِيٰتِ ذَرْوًا ۝١

1. उड़ा कर बिखेर देनेवाली हवाओंकी क़सम।

فَالْحٰمِلٰتِ وِقْرًا ۝٢

2.और (पानी का) बारे गिरां उठाने वाली बदलियों की क़सम।

فَالْجٰرِيٰتِ يُسْرًا ۝٣

3. और ख़रामां ख़रामां चलने वाली कश्तियों की क़सम।

فَالْمُقَسِّمٰتِ اَمْرًا ۝٤

4. और काम तक़्सीम करने वाले फ़रिश्तों की क़सम।

اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَصَادِقٌ ۝٥

5. बेशक (आख़िरत का) जो वा'दा तुम से किया जा रहा है बिल्कुल सच्चा है।

وَّ اِنَّ الدِّیْنَ لَوَاقِعٌ ﴿٦﴾ وَ السَّمَآءِ ذَاتِ الْحُبُكِ ﴿٧﴾

6. और बेशक (आ'माल की) जज़ाओ सज़ा ज़रूर वाके' हो कर रहेगी।

7. और (सितारों और सय्यारों की) कहकशाओं और गुज़रगाहों वाले आस्मानकी क़सम।

اِنَّكُمْ لَفِیْ قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ ﴿٨﴾ یُّؤْفَكُ عَنْهُ مَنْ اُفِكَ ﴿٩﴾

8. बेशक तुम मुख़्तलिफ़ बेजोड़ बातों में (पड़े) हो।

9. इस (रसूल ﷺ और कुरआन से) वोही फिरता है जिसे (इल्मे अज़ली से) फैर दिया गया।

قُتِلَ الْخَرّٰصُوْنَ ﴿١٠﴾ الَّذِیْنَ هُمْ فِیْ غَمْرَةٍ سَاهُوْنَ ﴿١١﴾

10. ज़न्नो तख़्मीन से झूट बोलनेवाले हलाक हो गए।

11. जो जहालतो ग़फ़लत में (आख़िरत को) भूल जानेवाले हैं।

یَسْـَٔلُوْنَ اَیَّانَ یَوْمُ الدِّیْنِ ﴿١٢﴾ یَوْمَ هُمْ عَلَی النَّارِ یُفْتَنُوْنَ ﴿١٣﴾

12. पूछते हैं यौमे जज़ा कब होगा ?

13. (फ़रमा दीजिऐ :) उस दिन (होगा जब) वोह आतिशे दोज़ख़में तपाए जाएंगे।

ذُوْقُوْا فِتْنَتَكُمْ ؕ هٰذَا الَّذِیْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿١٤﴾

14. (उनसे कहा जाएगा) अपनी सज़ा का मज़ा चखो, येही वोह अ़ज़ाब है जिसे तुम जल्दी मांगते हो।

اِنَّ الْمُتَّقِیْنَ فِیْ جَنّٰتٍ وَّ عُیُوْنٍ ﴿١٥﴾

15. बेशक परहेज़गार बाग़ों और चश्मों में (लुत्फ़ो अंदोज़ होते) होंगे।

اٰخِذِیْنَ مَاۤ اٰتٰىهُمْ رَبُّهُمْ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُحْسِنِیْنَ ﴿١٦﴾

16. उन ने'मतों को (कैफ़ो सुरूर) से लेते होंगे जो उनका रब उन्हें (लुत्फ़ो करम से) देता होगा। बेशक येह वोह लोग हैं जो उससे क़ब्ल (की ज़िन्दगी में) साहिबाने एहसान थे।

كَانُوْا قَلِیْلًا مِّنَ الَّیْلِ مَا یَهْجَعُوْنَ ﴿١٧﴾

17. वोह रातों को थोडी सी दैर सोया करते थे।

وَ بِالْاَسْحَارِ هُمْ یَسْتَغْفِرُوْنَ ﴿١٨﴾

18. और रातके पिछले पेहरों में (उठ उठ कर) मग़फिरत तलब करते थे।

وَفِيٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ ﴿١٩﴾

19. और उनके अमवाल में साइल और महरूम (सब हाजतमंदों) का हक़ मुक़र्रर था।

وَفِي الْاَرْضِ اٰيٰتٌ لِّلْمُوْقِنِيْنَ ﴿٢٠﴾

20. और ज़मीनमें साहिबाने ईक़ान (या'नी कामिल यक़ीनवालों) के लिए बहुत सी निशानियां हैं।

وَفِيٓ اَنْفُسِكُمْ ؕ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٢١﴾

21. और खुद तुम्हारे नुफ़ूस में (भी हैं), सो क्या तुम देखते नहीं हो।

وَفِي السَّمَآءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوْعَدُوْنَ ﴿٢٢﴾

22.और आस्मानमें तुम्हारा रिज़्क़ (भी) है और वोह (सब कुछ भी) जिसका तुमसे वा'दा किया जाता है।

فَوَرَبِّ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اِنَّهٗ لَحَقٌّ مِّثْلَ مَآ اَنَّكُمْ تَنْطِقُوْنَ ﴿٢٣﴾

23. पस आस्मान और ज़मीन के मालिक की क़सम येह (हमारा वा'दा) इसी तरह यक़ीनी है जिस तरह तुम्हारा अपना बोलना (तुम्हें उस पर कामिल यक़ीन होता है कि मुंह से क्या केह रहे हो)।

ع ٢٣ ١٨

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ ضَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ الْمُكْرَمِيْنَ ﴿٢٤﴾

24. क्या आप के पास इब्राहीम (عليه السلام) के मोअ़ज़्ज़ज़ मेहमानों की ख़बर पहोंची है।

وقف لازم

اِذْ دَخَلُوْا عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا ؕ قَالَ سَلٰمٌ ۚ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ﴿٢٥﴾

25. जब वोह (फ़रिश्ते) उनके पास आए तो उन्होंने सलाम पेश किया, इब्राहीम (عليه السلام) ने भी (जवाबन) सलाम कहा, (साथ ही दिल में सोचने लगे के) येह अजनबी लोग हैं।

فَرَاغَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ فَجَآءَ بِعِجْلٍ سَمِيْنٍ ﴿٢٦﴾

26. फिर जल्दी से अपने घरकी तरफ गए और एक फ़र्बा बछड़े की सज्जी ले आए।

فَقَرَّبَهٗٓ اِلَيْهِمْ قَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٢٧﴾

27. फिर उसे उनके सामने पेश कर दिया, फ़रमाने लगे : क्या तुम नहीं खाओगे ?

فَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ؕ قَالُوْا لَا تَخَفْ ؕ وَبَشَّرُوْهُ بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ ﴿٢٨﴾

28. फिर उन (के न खाने) से दिल में हल्की से घबराहट मेहसूस की। वोह (फ़रिश्ते) केहने लगे : आप घबराइए नहीं और उनको इल्मो दानिशवाले बेटे (इस्हाक़ عليه السلام) की खूशखबरी सुना दी।

فَاَقْبَلَتِ امْرَاَتُهٗ فِيْ صَرَّةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوْزٌ عَقِيْمٌ ﴿۲۹﴾

29. फिर उनकी बीवी (सारह) हैरतो हसरत की आवाज़ निकालते हुए मुतवज्जेह हुईं और तअ़ज्जुब से अपने माथे पर हाथ मारा और केहने लगी : (क्या) बुढ़िया बांझ औ़रत (बच्चा जनेगी?)।

قَالُوْا كَذٰلِكِ ۙ قَالَ رَبُّكِ ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْحَكِيْمُ الْعَلِيْمُ ﴿۳۰﴾

30. (फ़रिश्तों ने) कहा : ऐसे ही होगा, तुम्हारे रबने फ़रमाया है । बेशक वोह बड़ी हि़क्मतवाला बहुत इ़ल्मवाला है।

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ﴿٣١﴾	31. (इब्राहीम عليه السلام ने. कहा : ऐ भेजे हुए फ़रिश्तो ! (इस बिशारत के अ़लावा) तुम्हारा (आने का) बुन्यादी मक़्सद क्या है?
قَالُوٓا إِنَّآ أُرْسِلْنَآ إِلَىٰ قَوْمٍ مُّجْرِمِينَ ﴿٣٢﴾	32. उन्होंने कहा : हम मुजरिम क़ौम (या'नी क़ौमे लूत) की तरफ़ भेजे गए हैं।
لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّن طِينٍ ﴿٣٣﴾	33. ताकि हम उन पर मिट्टी के पथरीले कंकर बरसाएं।
مُّسَوَّمَةً عِندَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِينَ ﴿٣٤﴾	34. (वोह पथ्थर जिन पर) हद से गुज़र जानेवालों को लिए आप के रब की तरफ़ से निशान लगा दिया गया है।
فَأَخْرَجْنَا مَن كَانَ فِيهَا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٣٥﴾	35.फिर हमने हर उस शख़्स को (क़ौमे लूत की बस्ती से) बाहर निकाल दिया जो उस में अह्ले ईमान में से था।
فَمَا وَجَدْنَا فِيهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِّنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٣٦﴾	36. सो हमने उस बस्तीमें मुसलमानों के एक घर के सिवा (और कोई घर) नहीं पाया (उस में ह़ज़रत लूत عليه السلام और उन की दो साहिबज़ादियां थीं।)
وَتَرَكْنَا فِيهَآ ءَايَةً لِّلَّذِينَ يَخَافُونَ الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٣٧﴾	37. और हमने उस (बस्ती) में उन लोगों के लिए (इब्रत की) एक निशानी बाक़ी रख्खी जो दर्दनाक अ़ज़ाब से डरते हैं।
وَفِي مُوسَىٰٓ إِذْ أَرْسَلْنَٰهُ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ بِسُلْطَٰنٍ مُّبِينٍ ﴿٣٨﴾	38. और मूसा (عليه السلام के वाक़िए) में (भी निशानियां हैं) जब हमने उन्हें फ़िरऔ़न की तरफ़ वाज़ेह़ दलील दे कर भेजा।
فَتَوَلَّىٰ بِرُكْنِهِۦ وَقَالَ سَٰحِرٌ أَوْ مَجْنُونٌ ﴿٣٩﴾	39. तो उसने अपने अराकीने सल्तनत समेत रूगर्दानी की और केहने लगा : (येह) जादूगर या दीवाना है।
فَأَخَذْنَٰهُ وَجُنُودَهُۥ فَنَبَذْنَٰهُمْ فِي الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيمٌ ﴿٤٠﴾	40. फिर हमने उसे और उसके लश्कर को (अ़ज़ाब की) गिरफ़्त में ले लिया और उन (सब) को दरिया में ग़र्क़ कर दिया और वोह था ही क़ाबिले मलामत काम करनेवाला।

وَ فِيْ عَادٍ اِذْ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيْحَ الْعَقِيْمَ ۚ﴿۴۱﴾

41. और (क़ौमे) आ़द (की हलाकत) में भी (निशानी) है जबकि हमने उन पर बे ख़ैरो बरकत हवा भेजी।

مَا تَذَرُ مِنْ شَيْءٍ اَتَتْ عَلَيْهِ اِلَّا جَعَلَتْهُ كَالرَّمِيْمِ ؕ﴿۴۲﴾

42. वोह जिस चीज़ पर भी गुज़रती थी उसे रेज़ रेज़ा किए बिग़ैर नहीं छोड़ती थी।

وَ فِيْ ثَمُوْدَ اِذْ قِيْلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوْا حَتّٰى حِيْنٍ ﴿۴۳﴾

43. और (क़ौमे) समूद (की हलाकत) में भी (इब्रत की निशानी है) जब कि उन से कहा गया कि तुम एक मुअ़य्यना मुद्दत तक फ़ाइदा उठा लो।

فَعَتَوْا عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ فَاَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ﴿۴۴﴾

44. तो उन्होंने अपने रबके हुक्म से सरकशी की, पस उन्हें हौलनाक कड़कने आन लिया और वोह देखते ही रेह गए।

فَمَا اسْتَطَاعُوْا مِنْ قِيَامٍ وَّ مَا كَانُوْا مُنْتَصِرِيْنَ ۙ﴿۴۵﴾

45. फिर वोह न ख़ड़े रेहने पर कुदरत पा सकेऔर न वोह (हम से) बदला ले सक्नेवाले थे।

وَقَوْمَ نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ۧ﴿۴۶﴾

46. और उस से पहले नूह(عليه السلام) की क़ौम को (भी हलाक किया), बेशक वोह सख़्त ना फ़रमान लोग थे।

وَ السَّمَآءَ بَنَيْنٰهَا بِاَيْىدٍ وَّ اِنَّا لَمُوْسِعُوْنَ ﴿۴۷﴾

47. और आस्मानी काइनात को हमने बड़ी कुव्वत के ज़रीए से बनाया और यक़ीनन हम (इस काइनात को) वुस्अ़त और फैलाव देते जा रहे हैं।

وَالْاَرْضَ فَرَشْنٰهَا فَنِعْمَ الْمٰهِدُوْنَ ﴿۴۸﴾

48. और (सत्हे) ज़मीन को हम ही ने (क़ाबिले रहाइश) फ़र्श बनाया सो हम क्या खूब संवारने और सीधा करनेवाले हैं।

وَ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿۴۹﴾

49. और हमने हर चीज़ से दो जोड़े पैदा फ़रमाए ताकि तुम ध्यान करो और समझो।

فَفِرُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ ؕ اِنِّيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۚ﴿۵۰﴾

50. पस तुम अल्लाह की तरफ़ दौड़ चलो, बेशक मैं उस की तरफ़ से तुम्हें खुला डर सुनानेवाला हूं।

وَلَا تَجْعَلُوْا مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ؕ
اِنِّىْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۚ ﴿٥١﴾

51. और अल्लाह केसिवा कोई दूसरा मा'बूद न बनाओ, बेशक मैं उसकी जानिब से तुम्हें खुला डर सुनानेवाला हूं।

كَذٰلِكَ مَآ اَتَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ
مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا قَالُوْا سَاحِرٌ اَوْ
مَجْنُوْنٌ ۚ ﴿٥٢﴾

52. इसी तरह उन से पहले लोगों केपास भी कोई रसूल नहीं आया मगर उन्हों येही कहा कि (येह) जादूगर है दीवाना है।

اَتَوَاصَوْا بِهٖ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ۚ ﴿٥٣﴾

53. क्या वोह लोग एक दूसरे को इस बात की वसिय्यत करते रहे? बल्कि वोह (सब) सरकशो बाग़ी लोग थे।

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَآ اَنْتَ بِمَلُوْمٍ ﴿٥٤﴾

54. सो आप उन से नज़रे इल्तिफ़ात हटा लें पस आप पर (उन के ईमान न लाने की) कोई मलामत नहीं है।

وَّذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ
الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥٥﴾

55. और आप नसीहत करते रहें कि बेशक नसीहत मोमिनों को फ़ाइदा देती है।

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا
لِيَعْبُدُوْنِ ﴿٥٦﴾

56. और मैं ने जिन्नात और इन्सानों को सिर्फ़ इसी लिए पैदा किया कि वोह मेरी बंदगी करें।

مَآ اُرِيْدُ مِنْهُمْ مِّنْ رِّزْقٍ وَّ
مَآ اُرِيْدُ اَنْ يُّطْعِمُوْنِ ﴿٥٧﴾

57. न मैं उन से रिज़्क़ (या'नी कमाई) तलब करता हूं और न इस का तलबगार हूं कि वोह मुझे (खाना) खिलाएं।

اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ
الْمَتِيْنُ ﴿٥٨﴾

58. बेशक अल्लाह ही हर एक का रोज़ी रसां है, बड़ी कुव्वतवाला है, ज़बरदस्त मज़बूत है। (उसे किसी की मदद-व-तआवुन की हाजत नहीं)।

فَاِنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذَنُوْبًا مِّثْلَ
ذَنُوْبِ اَصْحٰبِهِمْ فَلَا يَسْتَعْجِلُوْنِ ﴿٥٩﴾

59. पस उन ज़ालिमों के लिए (भी) हिस्सए अज़ाब मुक़र्रर है उनके (पहले गुज़रे हुए) साथियों के हिस्सए अज़ाब की तरह, सो वोह मुझ से जलदी तलब न करें।

فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ يَّوْمِهِمُ
الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ﴿٦٠﴾

60. सो काफ़िरों के लिए उनके उस दिन में बड़ी तबाही है जिस का उन से वा'दा किया जा रहा है।

आयातुहा 49 | 52 सूरतुत तूरि मक्किय्यतुन 76 | रुकूआतुहा 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है

وَالطُّوْرِ ۝١

1. (कोहे)तूर की क़सम।

وَكِتٰبٍ مَّسْطُوْرٍ ۝٢

2. और लिखी हुई किताब की क़सम।

فِيْ رَقٍّ مَّنْشُوْرٍ ۝٣

3. (जो) खुले सहीफ़े में (है)।

وَّالْبَيْتِ الْمَعْمُوْرِ ۝٤

4. और (फ़रिश्तों से) आबाद घर (या'नी आस्मानी
का'बे) की क़सम।

وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوْعِ ۝٥

5. और ऊंची छत (या'नी बुलन्द आस्मान या अ़र्शे
मुअ़ल्ला) की क़सम।

وَالْبَحْرِ الْمَسْجُوْرِ ۝٦

6. और उबलते हुए समन्दर की क़सम।

اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ۝٧

7. बेशक आप के रब का अ़ज़ाब ज़रूर वाक़े' होगा।

مَّا لَهٗ مِنْ دَافِعٍ ۝٨

8. उसे कोई दफ़ा' करनेवाला नहीं।

يَّوْمَ تَمُوْرُ السَّمَآءُ مَوْرًا ۝٩

9. जिस दिन आस्मान सख़्त थरथराहट के साथ लरज़ेगा।

وَّتَسِيْرُ الْجِبَالُ سَيْرًا ۝١٠

10. और पहाड़ (अपनी जगह छोड़ कर बादलों की
तरह़) तेज़ी से उड़ने और (ज़र्रात की तरह़) बिखरने
लगेंगे।

فَوَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝١١

11. सो उस दिन झुटलानेवालों के लिए बड़ी तबाही है।

الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ خَوْضٍ يَّلْعَبُوْنَ ۝١٢

12. जो बातिल (बेहूदगी) में पड़े ग़फ़लत का खेल खेल
रहे हैं।

وقف لازم

يَوْمَ يُدَعُّوْنَ اِلٰى نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا ۝١٣

13. जिस दिन को वोह धकेल धकेल कर आतिशे
दोज़ख की तरफ़ लाए जाएंगे।

هٰذِهِ النَّارُ الَّتِيْ كُنْتُمْ بِهَا
تُكَذِّبُوْنَ ۝١٤

14. (उनसे कहा जाएगा :) येह है वोह जहन्नम की आग
जिसे तुम झुटलाया करते थे।

اَفَسِحْرٌ هٰذَآ اَمْ اَنْتُمْ لَا تُبْصِرُوْنَ ۝١٥

15. सो क्या येह जादू है या तुम्हें दिखाई नहीं देता।

اِصْلَوْهَا فَاصْبِرُوْٓا اَوْ لَا تَصْبِرُوْا ۚ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ ۗ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٦﴾

16. इसमें दाख़िल हो जाओ, फिर तुम सब्र करो या सब्र न करो, तुम पर बराबर है, तुम्हें सिर्फ़ उन ही कामों का बदला दिया जाएगा जो तुम करते रहे थे।

اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّنَعِيْمٍ ﴿١٧﴾

17. बेशक मुत्तक़ी लोग बहिश्तों और ने'मतों में होंगे।

فٰكِهِيْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمْ رَبُّهُمْ ۚ وَوَقٰىهُمْ رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ﴿١٨﴾

18. ख़ुश और लुत्फ़ अंदोज़ होंगे उन (अ़ताओं) से जिन से उनके रबने उन्हें नवाज़ा होगा, और उनका रब उन्हें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ रखेगा।

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٩﴾

19.(उन से कहा जाएगा) तुम उन (नेक) आ'माल के सिले में जो तुम करते रहे थे खूब मज़े से खाओ और पियो।

مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى سُرُرٍ مَّصْفُوْفَةٍ ۚ وَزَوَّجْنٰهُمْ بِحُوْرٍ عِيْنٍ ﴿٢٠﴾

20. वोह सफ़ दर सफ़ बिछे हुए तख़्तों पर तकिये लगाए (बैठे) होंगे, और हम गोरी रंगत (और) दिलकश आंखोंवाली हूरों को उन की ज़ौजिय्यत में दे देंगे।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ بِاِيْمَانٍ اَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَآ اَلَتْنٰهُمْ مِّنْ عَمَلِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ ۗ كُلُّ امْرِئٍۢ بِمَا كَسَبَ رَهِيْنٌ ﴿٢١﴾

21. और जो लोग ईमान लाए और उनकी औलादने ईमान में उनकी पैरवी की, हम उनकी औलाद को (भी दरजाते जन्नत में) उनके साथ मिला देंगे (ख़्वाह उनके अपने अ़मल उस दर्जे के न भी हों येह सिर्फ़ उन के सालेह आबाअ के इकराम में होगा) और हम उन (सालेह आबाअ) के सवाबे आ'माल से भी कोई कमी नहीं करेंगे, (अ़लावा इसके) हर शख़्स अपने ही अ़मल (की जज़ा-व-सज़ा) में गिरफ़्तार होगा।

وَاَمْدَدْنٰهُمْ بِفَاكِهَةٍ وَّلَحْمٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿٢٢﴾

22. और हम उन्हें फल (मेवे) और गोश्त, जो वोह चाहेंगे ज़ियादा से ज़ियादा देते रहेंगे।

يَتَنَازَعُوْنَ فِيْهَا كَاْسًا لَّا لَغْوٌ فِيْهَا وَلَا تَاْثِيْمٌ ﴿٢٣﴾

23. वहां येह लोग झपट झपट कर (शराबे तहूर के) जाम लेंगे, उस (शराबे जन्नत) में न कोई बेहूदा गोई होगी और न गुनाहगारी होगी।

وَ يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ كَاَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَّكْنُوْنٌ ﴿۲۴﴾

24. और नव जवान (ख़िदमत गुज़ार) उन के इर्द गिर्द घूमते होंगे, गोया वोह ग़िलाफ़ में छुपाए होए मोती हैं।

وَ اَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿۲۵﴾

25. और वोह एक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जेह हो कर बाहम पुर्सिशे अह्‌वाल करेंगे।

قَالُوْٓا اِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِيْٓ اَهْلِنَا مُشْفِقِيْنَ ﴿۲۶﴾

26. वोह कहेंगे : बेशक हम इस से पहले अपने घरों में (अज़ाबे इलाही से) डरते रेहते थे।

فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَ وَقٰىنَا عَذَابَ السَّمُوْمِ ﴿۲۷﴾

27. पस अल्लाहने हम पर एह्‌सान फ़रमा दिया और हमें नारे जहन्नम के अज़ाब से बचा लिया।

اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ نَدْعُوْهُ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيْمُ ﴿۲۸﴾

28. बेशक हम पहले से ही उसी की इबादत किया करते थे, बेशक वोह एह्‌सान फरमानेवाला बड़ा रह्‌म फरमानेवाला है।

ع ۲۸ ۳

فَذَكِّرْ فَمَآ اَنْتَ بِنِعْمَتِ رَبِّكَ بِكَاهِنٍ وَّ لَا مَجْنُوْنٍ ﴿۲۹﴾ؕ

29. सो (ऐ ह्‌बीबे मुकर्रम!) आप नसीह्‌त फ़रमाते रहें पस आप अपने रब के फ़ज़्लो करम से न तो काहिन (या'नी जिन्नात के ज़रीए खबरें देनेवाले) हैं और न दीवाने।

اَمْ يَقُوْلُوْنَ شَاعِرٌ نَّتَرَبَّصُ بِهٖ رَيْبَ الْمَنُوْنِ ﴿۳۰﴾

30. क्या (कुफ़्फ़ार) केहते हैं (येह) शाइर हैं हम इनके ह्‌कमें ह्‌वादिसे ज़माना का इन्तिज़ार कर रहे हैं।

قُلْ تَرَبَّصُوْا فَاِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُتَرَبِّصِيْنَ ﴿۳۱﴾ؕ

31. फ़रमा दीजिए : तुम (भी) मुन्तज़िर रहो और मैं भी तुम्हारे साथ (तुम्हारी हलाकत का) इन्तिज़ार करनेवालों में हूं।

اَمْ تَاْمُرُهُمْ اَحْلَامُهُمْ بِهٰذَآ اَمْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ﴿۳۲﴾ۚ

32. क्या उन की अक़्लें उन्हें येह (बे अक़्ली की बातें) सुझाती हैं या वोह सरकशो बाग़ी लोग हैं।

اَمْ يَقُوْلُوْنَ تَقَوَّلَهٗ ۚ بَلْ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۳۳﴾ۚ

33. या वोह केहते हैं कि इस (रसूल)ने इस (कुरआन) को अज़ खुद घड़ लिया है, (ऐसा नहीं) बल्कि वोह (हक़ को) मानते ही नहीं हैं।

فَلْيَاْتُوْا بِحَدِيْثٍ مِّثْلِهٖٓ اِنْ كَانُوْا صٰدِقِيْنَ ۝٣٤

34. पस उन्हें चाहिए कि इस (क़ुरआन) जैसा कोई कलाम ले आएं अगर वोह सच्चे हैं।

اَمْ خُلِقُوْا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ اَمْ هُمُ الْخٰلِقُوْنَ ۝٣٥

35. क्या वोह किसी शय के बिग़ैर ही पैदा कर दिए गए हैं या वोह ख़ुद ही ख़ालिक़ हैं।

اَمْ خَلَقُوا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ بَلْ لَّا يُوْقِنُوْنَ ۝٣٦

36. या उन्हों ने ही आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया है, (ऐसा नहीं) बल्कि वोह (हक़ बात पर) यक़ीन ही नहीं रखते।

اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَآئِنُ رَبِّكَ اَمْ هُمُ الْمُصَيْطِرُوْنَ ۝٣٧

37. या उनके पास आपके रबके ख़ज़ाने हैं या वोह उन पर निगरां (और) दारोग़े हैं।

اَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ يَّسْتَمِعُوْنَ فِيْهِ ۚ فَلْيَاْتِ مُسْتَمِعُهُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝٣٨

38. या उनके पास कोई सीढ़ी है (जिस पर चढ़ कर) वोह उस (आस्मान)में कान लगा कर बातें सुन लेते हैं? सो जो उन में से सुननेवाला है उसे चाहिए कि रौशन दलील लाए।

اَمْ لَهُ الْبَنٰتُ وَلَكُمُ الْبَنُوْنَ ۝٣٩

39. क्या उस (ख़ुदा) के लिए बेटियां हैं और तुम्हारे लिए बेटे हैं?

اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ اَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ ۝٤٠

40. क्या आप उन से कोई उजरत तलब फ़रमाते हैं कि वोह तावान के बोझ से दबे जा रहे हैं?

اَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ ۝٤١

41. क्या उनके पास ग़ैब (का इल्म) है कि वोह लिख लेते हैं ?

اَمْ يُرِيْدُوْنَ كَيْدًا ۭ فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا هُمُ الْمَكِيْدُوْنَ ۝٤٢

42. क्या वोह (आप से) कोई चाल चलना चाहते हैं? तो जिन लोगों ने कुफ़्र किया है वोह ख़ुद ही अपने दामे फ़रेब में फंसे जा रहे हैं।

اَمْ لَهُمْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ ۭ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝٤٣

43. क्या अल्लाह के सिवा उनका कोई मा'बूद है? अल्लाह हर उस चीज़ से पाक है जिसे वोह (अल्लाह का) शरीक ठेहराते हैं।

وَاِنْ يَّرَوْا كِسْفًا مِّنَ السَّمَآءِ سَاقِطًا

44. और अगर वोह आस्मान से कोई टुकड़ा (अपने

يَّقُوْلُوْا سَحَابٌ مَّرْكُوْمٌ ﴿٤٤﴾

ऊपर) गिरता हुवा देख लें तो (तब भी येह) कहेंगे कि तेह ब तेह (गेहरा) बादल है।

فَذَرْهُمْ حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ فِيْهِ يُصْعَقُوْنَ ﴿٤٥﴾

45. सो आप उनको (उनके हाल पर)छोड़ दीजिए यहां तक कि वोह अपने उस दिन से आ मिलें जिसमें वोह हलाक कर दिए जाएंगे।

يَوْمَ لَا يُغْنِيْ عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْـًٔا وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٤٦﴾

46. जिस दिन न उनका मक्रो फ़रेब उनके कुछ काम आएगा और न ही उनकी मदद की जाएगी।

وَ اِنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا عَذَابًا دُوْنَ ذٰلِكَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٧﴾

47. और बेशक जो लोग जुल्म कर रहे हैं उनके लिए इस अज़ाब के अलावा वोह भी अज़ाब है, लेकिन उनमें से अक्सर लोग जानते नहीं हैं.

وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَاِنَّكَ بِاَعْيُنِنَا وَ سَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِيْنَ تَقُوْمُ ﴿٤٨﴾

48. और (ऐ हबीबे मुकर्रम!) इनकी बातों से ग़म ज़दा न हों) आप अपने रब के हुक्म की ख़ातिर सब्र जारी रखिए बेशक आप (हर वक़्त) हमारी आंखों के सामने (रेहते) हैं ★ और आप अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह कीजिए जब भी आप खड़े हों।

وَ مِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَ اِدْبَارَ النُّجُوْمِ ﴿٤٩﴾

49. और रात के अवक़ात में भी उसकी तस्बीह कीजिये और (पिछ्ली रात भी) जब सितारे छुपते हैं।

आयातुहा 62 | 53 सूरतुन नज्मि मक्कियतुन 23 | रुकूआतुहा 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है

وَالنَّجْمِ اِذَا هَوٰى ﴿١﴾

1. क़सम है रौशन सितारे मुहम्मद(ﷺ) की जब वोह (चश्मे ज़दन में शबे मे'राज ऊपर जा कर) नीचे उतरे।

★ अगर इन ज़ालिमोंने निगाहें फेर ली हैं तो क्या हुआ हम तो आप की तरफ़ से निगाहें हटाते ही नहीं हैं और हम हर वक़्त आप ही को तक्ते रहते हैं।

مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوٰى ۚ ﴿٢﴾

2. तुम्हें (अपनी) सोहबत से नवाज़नेवाले (या'नी तुम्हें अपने फ़ैज़े सोहबत से सहाबी बनानेवाले रसूल ﷺ) न (कभी) राह भूले और न (कभी) राह से भटके।

وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى ۗ ﴿٣﴾

3. और वोह (अपनी) ख़्वाहिश से कलाम नहीं करते।

اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى ۙ ﴿٤﴾

4. उनका इर्शाद सरासर वह्‌ी होती है जो उन्हें की जाती है।

عَلَّمَهٗ شَدِيْدُ الْقُوٰى ۙ ﴿٥﴾

5. उनको बड़ी कुव्वतों वाले (रब)ने (बराहे रास्त) इल्मे (कामिल) से नवाज़ा।

ذُوْ مِرَّةٍ ۭ فَاسْتَوٰى ۙ ﴿٦﴾

6. जो हुस्ने मुत्लक़ है, फिर उस (जलवए हुस्न)ने (अपने) ज़ुहूर का इरादा फ़रमाया।

وَهُوَ بِالْاُفُقِ الْاَعْلٰى ۗ ﴿٧﴾

7. और वोह (मुहम्मद ﷺ शबे मे'राज आ़लमे मकां के) सब से ऊंचे किनारे पर थे (या'नी आ़लमे ख़ल्क़ की इन्तिहा पर थे)।

ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى ۙ ﴿٨﴾

8. फिर वोह रब्बुल इ़ज़्ज़त अपने ह़बीब मुह़म्मद ﷺ से) क़रीब हुवा फिर और ज़ियादा क़रीब हुआ हो गया।

فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰى ۚ ﴿٩﴾

9. फिर (जलवए ह़क़और ह़बीबे मुकर्रम ﷺ में सिर्फ़) दो कमानों की मिक़्दार फ़ासला रेह गया या इन्तिहाए क़ुर्ब में) उससे भी कम हो गया।

فَاَوْحٰٓى اِلٰى عَبْدِهٖ مَآ اَوْحٰى ۗ ﴿١٠﴾

10. पस (उस खास मकामे क़ुर्बो विसाल पर) उस (अल्लाह)ने अपने अ़ब्दे (महबूब) की तरफ़ वह्‌ी फ़रमाई जो (भी) वह्‌ी फ़रमाई।

مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَاٰى ﴿١١﴾

11. (उन के) दिल ने उसके ख़िलाफ़ नहीं जाना जो (उनकी) आंखों ने देखा।

★ येह मा'ना इमाम बुख़ारीने ह़ज़रत अनस रदियल्लाहु तआला अ़न्हु से अल जामिउ़स सह़ीह़ में रिवायत किया है, मज़ीद ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास, इमाम ह़सन बसरी, इमाम जा'फ़र अस्सादिक़, मुह़म्मद बिन का'ब अल करज़ी अत्ताबेई, ज़ह्हाक रदियल्लाहु अन्हुम और दीगर कई अइम्मए तफ़्सीर का क़ौल भी येही है।

اَفَتُمٰرُوْنَهٗ عَلٰى مَا يَرٰى ﴿١٢﴾

12 .क्या तुम उनसे इस पर झगड़ते हो कि जो उन्हों ने देखा।

وَلَقَدْ رَاٰهُ نَزْلَةً اُخْرٰى ﴿١٣﴾

13. और बेशक उन्होंने तो उस (जल्वए हक़)को दूसरी मर्तबा (फिर) देखा (और तुम एक बार देखने पर ही झगड़ रहे हो)।★

عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى ﴿١٤﴾

14. सिदरतुल मुन्तहा के क़रीब।

عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَاْوٰى ﴿١٥﴾

15 . उसी के पास जन्नतुल मा'वा है।

اِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشٰى ﴿١٦﴾

16. जब नूरे हक़ की तजल्लियात सिद्र (तुल-मुन्तहा) को (भी) ढांप रही थीं जो के (उस पर) साया फिगन थीं। ★

مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغٰى ﴿١٧﴾

17. और उनकी आंख न किसी और तरफ़ माइल हुई और न हद से बढ़ी जिसको (तकना था उसी पर जमी रही)।

لَقَدْ رَاٰى مِنْ اٰيٰتِ رَبِّهِ الْكُبْرٰى ﴿١٨﴾

18. बेशक उन्हों ने (मे'राज की शब) अपने रब की बड़ी निशानियां देखीं।

اَفَرَءَيْتُمُ اللّٰتَ وَالْعُزّٰى ﴿١٩﴾

19. क्या तुमने लात और उज़्ज़ा (देवियों) पर ग़ौर किया है?

وَمَنٰوةَ الثَّالِثَةَ الْاُخْرٰى ﴿٢٠﴾

20. और उस तीसरी एक और (देवी) मनात को भी (ग़ौर से देखा है? तुम्ने उन्हें अल्लाह की बेटियां बना रखखा है?)

اَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْاُنْثٰى ﴿٢١﴾

21. (ऐ मुशरिको !) क्या तुम्हारे लिये बेटे हैं और उस (अल्लाह) के लिए बेटियां हैं?

تِلْكَ اِذًا قِسْمَةٌ ضِيْزٰى ﴿٢٢﴾

22. (अगर तुम्हारा तसव्वुर दुरुस्त है) तब तो येह तक़्सीम बड़ी ना इन्साफी है।

اِنْ هِيَ اِلَّآ اَسْمَآءٌ سَمَّيْتُمُوْهَآ

23. मगर (हक़ीक़त येह है कि) वोह (बुत) महज़ नाम

★.येह मा'ना इब्ने अब्बास, अबू ज़र गिफ़ारी, इकरमह अत्ताबई, हसन अल बसरी अत्ताबई, मुहम्मद बिन का'ब अल कुर्ज़ी अत्ताबई, अबुल आ़लिया अर्रियाही अत्ताबई, अ़ता बिन अबी रबाह अत्ताबई, कअ़बुल अह्बार अत्ताबई, इमाम अह्मद बिन हंबल और इमाम अबुल हसन अश्अरी रदियल्लाहु अन्हुम और दीगर अइम्मा के अक़्वाल पर है।]

★.येह मा'ना भी इमाम हसन अल बसरी रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु और दीगर अइम्मा के अक़्वाल पर है।]

أَنْتُمْ وَآبَاؤُكُمْ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ بِهَا مِنْ سُلْطَانٍ ۚ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَمَا تَهْوَى الْأَنْفُسُ ۖ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مِنْ رَبِّهِمُ الْهُدَىٰ ﴿٢٣﴾

ही नाम हैं जो तुमने और तुम्हारे बापदादा ने रख लिए हैं। अल्लाहने उनकी निस्बत कोई दलील नहीं उतारी, वोह लोग महज़ वह्मो-गुमान की और नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैरवी कर रहे हैं हालांकि उनके पास उनके रब की तरफ़ से हिदायत आ चुकी है।

أَمْ لِلْإِنْسَانِ مَا تَمَنَّىٰ ﴿٢٤﴾

24. किया इन्सान के लिए वोह (सब कुछ) मुयस्सर है जिसकी वोह तमन्ना करता है?

فَلِلَّهِ الْآخِرَةُ وَالْأُولَىٰ ﴿٢٥﴾

25. पस आख़िरत और दुनिया का मालिक तो अल्लाह ही है।

وَكَمْ مِنْ مَلَكٍ فِي السَّمَاوَاتِ لَا تُغْنِي شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا إِلَّا مِنْ بَعْدِ أَنْ يَأْذَنَ اللَّهُ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَرْضَىٰ ﴿٢٦﴾

26.और आस्मानों में कितने ही फ़रिश्ते हैं (कि कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन उनकी इबादत करते और उनसे शफ़ाअ़त की उम्मीद रखते हैं) जिनकी शफ़ाअ़त कुछ काम नहीं आएगी मगर उसके बा'द कि अल्लाह जिसे चाह्ता है और पसंद फ़रमाता है उसके लिये इज़्न (जारी) फ़रमा देता है।

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ لَيُسَمُّونَ الْمَلَائِكَةَ تَسْمِيَةَ الْأُنْثَىٰ ﴿٢٧﴾

27. बेशक जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते वोह फ़रिश्तों को औ़रतों के नाम से मौसूम कर देते है।

وَمَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ ۖ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ ۖ وَإِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ﴿٢٨﴾

28. और उन्हें इसका कुछ भी इल्म नहीं है, वोह सिर्फ़ गुमान के पीछे चलते हैं, और बेशक गुमान यक़ीन के मुक़ाबले में किसी काम नहीं आता।

فَأَعْرِضْ عَنْ مَنْ تَوَلَّىٰ عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ إِلَّا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ﴿٢٩﴾

29. सो आप अपनी तवज्जोह उस से हटा लें जो हमारी याद से रू गर्दानी करता है और सिवाए दुन्यवी ज़िन्दगी के और कोई मक़्सद नहीं रखता।

ذَٰلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِنَ الْعِلْمِ ۚ إِنَّ رَبَّكَ

30. उन लोगों के इल्म की रसाई की येही ह़द है, बेशक

هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِیْلِهٖ ۙ وَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدٰى ﴿٣٠﴾

आपका रब उस शख़्स को (भी) ख़ूब जानता है जो उसकी राह से भटक गया है और उस शख़्स को (भी) खूब जानता है जिसने हिदायत पा ली है।

وَ لِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِ ۙ لِیَجْزِیَ الَّذِیْنَ اَسَآءُوْا بِمَا عَمِلُوْا وَ یَجْزِیَ الَّذِیْنَ اَحْسَنُوْا بِالْحُسْنٰى ۚ ﴿٣١﴾

31. और अल्लाह ही के लिए है जो कुछ आस्मानों और जो कुछ ज़मीन में है ताकि जिन लोगों ने बुराइयां कीं उन्हें उनके आ'माल का बदला दे और जिन लोगों ने नेकियां कीं उन्हें अच्छा अज्र अ़ता फ़रमाए।

اَلَّذِیْنَ یَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَ الْفَوَاحِشَ اِلَّا اللَّمَمَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِكُمْ اِذْ اَنْشَاَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ وَ اِذْ اَنْتُمْ اَجِنَّةٌ فِیْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ فَلَا تُزَكُّوْۤا اَنْفُسَكُمْ ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقٰى ۠ ﴿٣٢﴾

32. जो लोग छोटे गुनाहोंऔर (लग़ज़िशों) के सिवा बड़े गुनाहों और बे हयाई के कामों से परहेज़ करते हैं बेशक आपका रब बख़्शिश की बड़ी गुंजाइश रखनेवाला है, वोह तुम्हें खूब जानता है जब उसने तुम्हारी ज़िन्दगी इब्तिदा और नश्वो नुमा ज़मीन (या'नी मिट्टी) से की थी और जबकि जुम अपनी माओं के पेटमें जनीन (या'नी हमल) की सूरत में थे, पस तुम अपने आपको बड़ा पाको साफ़ मत जताया करो वोह खूब जानता है कि (अस्ल) परहेज़गार कौन है।

اَفَرَءَیْتَ الَّذِیْ تَوَلّٰى ۙ ﴿٣٣﴾

33 कया आपने उस शख़्स को देखा जिसने (हक़ से) मुंह फेर लिया ?

وَ اَعْطٰى قَلِیْلًا وَّ اَكْدٰى ﴿٣٤﴾

34. और उसने (राहे हक़ में) थोड़ा सा (माल) दिया और (फिर हाथ) रोक लिया।

اَعِنْدَهٗ عِلْمُ الْغَیْبِ فَهُوَ یَرٰى ﴿٣٥﴾

35. क्या उसके पास ग़ैब का इल्म है कि वोह देख रहा है ?

اَمْ لَمْ یُنَبَّاْ بِمَا فِیْ صُحُفِ مُوْسٰى ۙ ﴿٣٦﴾

36. क्या उसे उन (बातों) की ख़बर नहीं दी गई जो मूसा (عليه السلام) के सहीफ़ों में (मज़कूर)थीं ?

وَ اِبْرٰهِیْمَ الَّذِیْ وَفّٰۤى ۙ ﴿٣٧﴾

37. और इब्राहीम (عليه السلام) के (सहीफ़ों में थीं) जिन्हों ने (अल्लाह के हर अम्रको) ब-तमामो कमाल पूरा किया।

أَلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ أُخْرٰى ﴿٣٨﴾

38. कि कोई बोझ उठानेवाला किसी दूसरेके गुनाहों. का बोझ नहीं उठाएगा।

وَأَنْ لَّيْسَ لِلْإِنْسَانِ إِلَّا مَا سَعٰى ﴿٣٩﴾

39. और येह कि इन्सानको (अ़द्ल में) वोही कुछ मिलेगा जिसकी उसने कोशिश की होगी (रहा फ़ज़्ल उस पर किसी का ह़क़ नहीं वोह मह़ज़ अल्लाह की अ़ता-व-रज़ा है जिस पर जितना चाहे कर दे)।

وَأَنَّ سَعْيَهٗ سَوْفَ يُرٰى ﴿٤٠﴾

40. और येह कि उसकी हर कोशिश अ़न क़रीब दिखा दी जाएगी (या'नी ज़ाहिर कर दी जाएगी)।

ثُمَّ يُجْزٰىهُ الْجَزَآءَ الْأَوْفٰى ﴿٤١﴾

41. फिर उसे (उसकी हर कोशिश का) पूरा पूरा बदला दिया जाएगा।

وَأَنَّ إِلٰى رَبِّكَ الْمُنْتَهٰى ﴿٤٢﴾

42. और येह कि (बिल आख़िर सबको) आप के रब ही की तरफ़ पहुंचना है।

وَأَنَّهٗ هُوَ أَضْحَكَ وَأَبْكٰى ﴿٤٣﴾

43. और येह कि वोही (खुशी दे कर) हंसाता है और (ग़म दे कर) रुलाता है।

وَأَنَّهٗ هُوَ أَمَاتَ وَأَحْيَا ﴿٤٤﴾

44. और येह कि वोही मारता है और जिलाता है।

وَأَنَّهٗ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنْثٰى ﴿٤٥﴾

45. और येह कि उसीने नर और मादह दो क़िस्मों को पैदा किया।

مِنْ نُّطْفَةٍ إِذَا تُمْنٰى ﴿٤٦﴾

46. नुत्फ़े (एक तौलीदी क़त्रह) से जबकि वोह (रह़्मे मादा में) टपकाया जाता है।

وَأَنَّ عَلَيْهِ النَّشْأَةَ الْأُخْرٰى ﴿٤٧﴾

47. और येह कि (मरने के बाद) दोबारा ज़िन्दा करना (भी) उसी पर है।

وَأَنَّهٗ هُوَ أَغْنٰى وَأَقْنٰى ﴿٤٨﴾

48. और येह कि वोही (बक़द्रे ज़रूरत दे कर) ग़नी कर देता है और वोही (ज़रूरत से ज़ाइद दे कर) खज़ाने भर देता है।

وَأَنَّهٗ هُوَ رَبُّ الشِّعْرٰى ﴿٤٩﴾

49. और येह कि वोही शि'रा (सितारे) का रब है (जिसकी दौरे जाहिलिय्यत में पूजा की जाती थी)।

وَاَنَّهٗۤ اَهۡلَكَ عَادَا ۨالۡاُوۡلٰى ۙ﴿۵۰﴾

50. और येह कि उसीने पेहली (क़ौमे) आ़द को हलाक किया।

وَثَمُوۡدَا۟ فَمَاۤ اَبۡقٰى ۙ﴿۵۱﴾

51. और (क़ौमे) समूद को (भी) फिर (उनमें से किसी को) बाक़ी न छोड़ा।

وَقَوۡمَ نُوۡحٍ مِّنۡ قَبۡلُ ؕ اِنَّهُمۡ كَانُوۡا هُمۡ اَظۡلَمَ وَاَطۡغٰى ؕ﴿۵۲﴾

52. और उससे पहले क़ौमे नूह़ को (भी हलाक किया) बेशक वोह बड़े ही ज़ालिम और बड़े ही सरकश थे।

وَالۡمُؤۡتَفِكَةَ اَهۡوٰى ۙ﴿۵۳﴾

43. और (क़ौमे लूत की) उल्टी हुई बस्तियों को (ऊपर उठा कर) उसीने नीचे दे पटका।

فَغَشّٰىهَا مَا غَشّٰى ۚ﴿۵۴﴾

54. पस उनको ढांप लिया जिसने ढांप लिया (या'नी फिर उन पर पथ्थरों की बारिश कर दी गई)।

فَبِاَىِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكَ تَتَمَارٰى ﴿۵۵﴾

55. सो ऐ इन्सान ! तू अपने परवरदिगार की किन किन ने'मतों में शक करेगा।

هٰذَا نَذِيۡرٌ مِّنَ النُّذُرِ الۡاُوۡلٰى ﴿۵۶﴾

56. येह (रसूले अकरम ﷺ भी) अगले डर सुनाने वालों में से एक डर सुनानेवाले हैं।

اَزِفَتِ الۡاٰزِفَةُ ۚ﴿۵۷﴾

57. आने वाली (क़ियामत की घड़ी) क़रीब आ पहुंची।

لَيۡسَ لَهَا مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ كَاشِفَةٌ ؕ﴿۵۸﴾

58. अल्लाह के सिवा इसे कोई ज़ाहिर (और क़ाइम) करनेवाला नहीं है।

اَفَمِنۡ هٰذَا الۡحَدِيۡثِ تَعۡجَبُوۡنَ ۙ﴿۵۹﴾

59. पस क्या इस कलाम से तअ़ज्जुब करते हो।

وَتَضۡحَكُوۡنَ وَلَا تَبۡكُوۡنَ ۙ﴿۶۰﴾

60. और तुम हंसते हो और रोते नहीं हो।

وَاَنۡتُمۡ سٰمِدُوۡنَ ﴿۶۱﴾

61. और तुम (ग़फ़्लत के) खेल में पड़े हो।

فَاسۡجُدُوۡا لِلّٰهِ وَاعۡبُدُوۡا ۩ ﴿۶۲﴾

62. सो अल्लाह के लिये सजदह करो और (उसकी) इ़बादत करो।

आयातुहा 55	54 सूरतुल क़-मरि मक्किय्यतुन 37	रुकूआतुहा 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ ①

1.क़ियामत क़रीब आ पहुंची और चांद दो टुकड़े हो गया।

وَ اِنْ يَّرَوْا اٰيَةً يُّعْرِضُوْا وَ يَقُوْلُوْا سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ ②

2.और अगर वोह (कुफ़्फ़ार) कोई निशानी (या'नी मो'जिज़ा) देखते हैं तो मुंह फेर लेते हैं और केहते हैं कि (येह तो) हमेशा से चला आनेवाला ताक़तवर जादू है।

وَ كَذَّبُوْا وَاتَّبَعُوْۤا اَهْوَآءَهُمْ وَ كُلُّ اَمْرٍ مُّسْتَقِرٌّ ③

3. और उन्होंने (अब भी) झुटलाया और अपनी ख़्वाहिशात के पीछे चले और हर काम (जिसका वा'दा किया गया है) मुकर्ररह वक़्त पर होनेवाला है।

وَ لَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنَ الْاَنْۢبَآءِ مَا فِيْهِ مُزْدَجَرٌ ④

4. और बेशक उनके पास (पहली क़ौमों की) ऐसी ख़बरें आ चुकी हैं जिनमें (कुफ़्रो ना फरमानी पर) इब्रतो सर ज़निश है।

حِكْمَةٌۢ بَالِغَةٌ فَمَا تُغْنِ النُّذُرُ ⑤

5. (येह क़ुरआन) कामिल दानाई व हिक्मत है क्या फिर भी डर सुनानेवाले कुछ फ़ाइदा नहीं देते ?

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ ۘ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ اِلٰى شَیْءٍ نُّكُرٍ ⑥

6. सो आप उनसे मुंह फेर लें, जिस दिन बुलानेवाला (फ़रिश्ता) एक निहायत ना गवार चीज़ (मैदाने हश्र) की तरफ़ बुलाएगा।

خُشَّعًا اَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ كَاَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنْتَشِرٌ ⑦

7. अपनी आंखें झुकाए हुए क़ब्रों से निकल पडेंगे गोया वोह फैली हुई टिड्डियां हैं।

مُّهْطِعِيْنَ اِلَى الدَّاعِ ؕ يَقُوْلُ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ⑧

8. पुकारनेवाले की तरफ़ दौड़ कर जा रहे होंगे, कुफ़्फ़ार केहते होंगे येह बड़ा सख़्त दिन है।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ فَكَذَّبُوْا

9. इनसे पहले क़ौमे नूहने (भी) झुटलाया था। सो उन्होंने

وقف لازم

عَبْدَنَا وَقَالُوْا مَجْنُوْنٌ وَّازْدُجِرَ ﴿٩﴾

हमारे बन्दए (मुर्सल नूह) عليه السلام की तक्ज़ीब की और कहा : (येह) दीवाना है और उन्हें धम्कियां दी गईं।

فَدَعَا رَبَّهٗٓ اَنِّیْ مَغْلُوْبٌ فَانْتَصِرْ ﴿١٠﴾

10. सो उन्होंने अपने रब से दुआ़ की कि मैं (अपनी क़ौम के मज़ालिम से) आ़जिज़ हूं पस तू इन्तिक़ाम ले।

فَفَتَحْنَآ اَبْوَابَ السَّمَآءِ بِمَآءٍ مُّنْهَمِرٍ ﴿١١﴾

11. फिर हमने मूस्ला धार बारिश के साथ आस्मान के दरवाज़े खोल दिए।

وَّ فَجَّرْنَا الْاَرْضَ عُيُوْنًا فَالْتَقَى الْمَآءُ عَلٰٓى اَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ﴿١٢﴾

12. और हमने ज़मीन से चश्मे जारी कर दिए, सो (ज़मीनो आस्मान का) पानी एक ही काम के लिये जमा' हो गया जो (उनकी हलाकत के लिये) पहले से मुक़र्रर हो चुका था।

وَحَمَلْنٰهُ عَلٰى ذَاتِ اَلْوَاحٍ وَّدُسُرٍ ﴿١٣﴾

13. और हमने उनको (या'नी नूह عليه السلام को) तख़्तों और मेख़ोंवाली (कश्ती) पर सवार कर लिया।

تَجْرِیْ بِاَعْيُنِنَا جَزَآءً لِّمَنْ كَانَ كُفِرَ ﴿١٤﴾

14. जो हमारी निगाहों के सामने (हमारी हि़फ़ाज़त में) चलती थी, (येह सब कुछ) उस (एक) शख़्स (नूह عليه السلام) का बदला लेने की ख़ातिर था जिससे इन्कार किया गया था।

وَلَقَدْ تَّرَكْنٰهَآ اٰيَةً فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿١٥﴾

15. और बेशक हमने इस (तूफ़ाने नूह के आसार) को निशानी के तौर पर बाक़ी रखा तो क्या कोई सोचने (और नसीह़त क़ुबूल करने) वाला है?

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِیْ وَنُذُرِ ﴿١٦﴾

16. सो मेरा अज़ाब और मेरा डराना कैसा था।

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿١٧﴾

17. और बेशक हमने क़ुरआन को नसीह़त के लिए आसान कर दिया है तो क्या कोई नसीह़त क़ुबूल करनेवाला है?

كَذَّبَتْ عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِیْ وَنُذُرِ ﴿١٨﴾

18. (क़ौमे) आ़दने भी (पयग़म्बरों को) झुटलाया था सो (उन पर) मेरा अज़ाब और मेरा डराना कैसा (इब्रतनाक) रहा।

اِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا فِیْ يَوْمِ نَحْسٍ مُّسْتَمِرٍّ ﴿١٩﴾

19. बेशक हमने उन पर निहायत सख़्त आवाज़वाली

تَنْزِعُ النَّاسَ ۙ كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ مُّنْقَعِرٍ ﴿٢٠﴾

तेज़ आंधी (उनके हक़ में) दाइमी नहूसत के दिनमें भेजी।
20. जो लोगों को (इस तरह) उखाड़ फेंकती थी गोया वोह उखड़े हुए खजूरों के दरख़्तों के तने हैं।

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِىْ وَنُذُرِ ﴿٢١﴾

21. फिर मेरा अज़ाब और मेरा डराना कैसा (इब्रत नाक) रहा।

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٢٢﴾

22. और बेशक हमने कुरआन को नसीहत के लिए आसान कर दिया है सो क्या कोई नसीहत हासिल करनेवाला है?

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِالنُّذُرِ ﴿٢٣﴾

23. (क़ौमे) समूदने भी डर सुनानेवाले पयगम्बरों को झुटलाया।

فَقَالُوْٓا اَبَشَرًا مِّنَّا وَاحِدًا نَّتَّبِعُهٗٓ ۙ اِنَّآ اِذًا لَّفِیْ ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ ﴿٢٤﴾

24. पस वोह केहने लगे : क्या एक बशर जो हम ही में से है, हम उसकी पैरवी करें, तब तो हम यक़ीनन गुमराही और दीवानगी में होंगे।

ءَاُلْقِیَ الذِّكْرُ عَلَيْهِ مِنْ بَيْنِنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ اَشِرٌ ﴿٢٥﴾

25. क्या हम सब में से इसी पर नसीहत (या'नी वही) उतारी गई है ? बल्कि वोह बड़ा झूटा खुद पसंद (और मु-त-कब्बिर) है।

سَيَعْلَمُوْنَ غَدًا مَّنِ الْكَذَّابُ الْاَشِرُ ﴿٢٦﴾

26. उन्हें कल (क़ियामत के दिन) ही मा'लूम हो जाएगा कि कौन बड़ा झूटा, ख़ुद पसंद (और मु-त-कब्बिर) है।

اِنَّا مُرْسِلُوا النَّاقَةِ فِتْنَةً لَّهُمْ فَارْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ ﴿٢٧﴾

27. बेशक हम उनकी आज़माइश के लिए ऊंटनी भेजनेवाले हैं पस (अय सॉलेह !) उन (के अंजाम) का इन्तिज़ार करें और सब्र जारी रखें।

وَنَبِّئْهُمْ اَنَّ الْمَآءَ قِسْمَةٌۢ بَيْنَهُمْ ۚ كُلُّ شِرْبٍ مُّحْتَضَرٌ ﴿٢٨﴾

28. उन्हें इस बात से आगाह कर दें कि उनके (और ऊंटनी के) दरमियान पानी तक़्सीम कर दिया गया है, हर एक (को) पानी का हिस्सा उसकी बारी पर हाज़िर किया जाएगा।

فَنَادَوْا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطٰى فَعَقَرَ ﴿٢٩﴾

29.पस उन्होंने (क़दार नामी) अपने एक साथीको बुलाया, उसने (ऊंटनी पर तल्वार से) वार किया और कौंचें काट दीं।

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِىْ وَنُذُرِ ﴿٣٠﴾

30. फिर मेरा अज़ाब और मेरा डराना कैसा (इब्रत नाक)

हुआ।

إِنَّآ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَكَانُوا كَهَشِيمِ الْمُحْتَظِرِ ﴿٣١﴾

31. बेशक हमने उन पर एक निहायत ख़ौफ़नाक आवाज़ भेजी सो वोह बाड़ लगानेवाले के बचे हुए और रौंदे गए भूसे की तरह हो गए।

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٣٢﴾

32. और बेशक हमने क़ुरआन नसीहृत के लिए आसान कर दिया है तो क्या कोई नसीहृत ह़ासिल करनेवाला है ?

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ بِالنُّذُرِ ﴿٣٣﴾

33. क़ौमे लूत ने भी डर सुनानेवालों को झुटलाया।

إِنَّآ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا إِلَّآ اٰلَ لُوطٍ ۖ نَّجَّيْنٰهُمْ بِسَحَرٍ ﴿٣٤﴾

34. बेशक हमने उन पर कंकरियां बरसानेवाली आंधी भेजी सिवाए औलादे लूत (عليه السلام) के, हमने उन्हें पिछली (रातअज़ाब से) बचा लिया.

نِّعْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا ۖ كَذٰلِكَ نَجْزِي مَنْ شَكَرَ ﴿٣٥﴾

35.अपनी तरफ़ से ख़ास इन्आम के साथ, इसी तरह़ हम उस शख़्स को जज़ा दिया करते हैं जो शुक्र गज़ार होता है।

وَلَقَدْ أَنْذَرَهُمْ بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا بِالنُّذُرِ ﴿٣٦﴾

36. और बेशक लूत(عليه السلام) ने उन्हें हमारी पकड़ से डराया था फिर उन लोगोंने उनके डराने में शक करते हुए झुटलाया।

وَلَقَدْ رَاوَدُوهُ عَنْ ضَيْفِهِ فَطَمَسْنَآ أَعْيُنَهُمْ فَذُوقُوا عَذَابِي وَنُذُرِ ﴿٣٧﴾

37. और बेशक उन लोगोंने लूत (عليه السلام) से उनके मेहमानों को छीन लेने का इरादा किया सो हमने उनकी आंखों की साख़्त मिटा कर उन्हें बे नूर कर दिया, फिर (उनसे कहा :) मेरे अज़ाब और डरानेका मज़ा चखो।

وَلَقَدْ صَبَّحَهُمْ بُكْرَةً عَذَابٌ مُّسْتَقِرٌّ ﴿٣٨﴾

38. और बेशक उन पर सुब्ह़ सवेरे ही हमेशा क़ाइम रेहनेवाला अज़ाब आ पहुंचा।

فَذُوقُوا عَذَابِي وَنُذُرِ ﴿٣٩﴾

39. फिर (उनसे कहा गया) मेरे अज़ाब और डराने का मज़ा चखो।

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٤٠﴾

40. और बेशक हमने क़ुरआन को नसीहृत के लिये आसान कर दिया है तो क्या कोई नसीहृत ह़ासिल करनेवाला है ?

وَلَقَدْ جَآءَ اٰلَ فِرْعَوْنَ النُّذُرُ ۚ ﴿٤١﴾

41. और बेशक क़ौमे फ़िरऔन के पास (भी) डर सुनाने वाले आए।

كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كُلِّهَا فَاَخَذْنٰهُمْ اَخْذَ عَزِيْزٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٤٢﴾

42. उन्होंने हमारी सब निशानियों को झुटला दिया बडे ग़ालिब बड़ी क़ुदरतवाले की पकड़ की शान के मुताबिक़ पकड़ लिया।

اَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ مِّنْ اُولٰٓئِكُمْ اَمْ لَكُمْ بَرَآءَةٌ فِى الزُّبُرِ ۚ ﴿٤٣﴾

43. (ऐ क़ुरैशे मक्का!) क्या तुम्हारे काफ़िर उन (अगले) लोगों से बेहतर हैं या तुम्हारे लिये (आस्मानी) किताबोंमें नजात लिख्खी हुई है ?

اَمْ يَقُوْلُوْنَ نَحْنُ جَمِيْعٌ مُّنْتَصِرٌ ﴿٤٤﴾

44. या येह (कुफ़्फ़ार) केहते हैं कि हम (नबिय्ये मुकर्रम ﷺ पर) ग़ालिब रेहने वाली मज़बूत जमाअ़त हैं।

سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ ﴿٤٥﴾

45. अ़न क़रीब येह जथ्था (मैदाने बद्र में) शिकस्त खाएगा और येह लोग पीठ फेर कर भाग जाएंगे)

بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ اَدْهٰى وَاَمَرُّ ﴿٤٦﴾

46. बल्कि उनका (अस्ल) वा'दा तो क़ियामत है और क़ियामत की घड़ी बहुत ही सख़्त और बहुत ही तल्ख़ है।

اِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِىْ ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ ۘ ﴿٤٧﴾ وقف لازم

47. बेशक मुज्रिम लोग गुमराही और दीवानगी (या आग की लपेट) में हैं।

يَوْمَ يُسْحَبُوْنَ فِى النَّارِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ ؕ ذُوْقُوْا مَسَّ سَقَرَ ﴿٤٨﴾

48. जिस दिन वोह लोग अपने मुंह के बल दोज़ख़ में घसीटे जाएंगे (तो उनसे कहा जाएगा) आग में जलने का मज़ा चखो.

اِنَّا كُلَّ شَىْءٍ خَلَقْنٰهُ بِقَدَرٍ ﴿٤٩﴾

49. बेशक हमने हर चीज़ को एक मुक़र्ररह अंदाज़े के मुताबिक बनाया है।

وَمَآ اَمْرُنَآ اِلَّا وَاحِدَةٌ كَلَمْحٍ بِالْبَصَرِ ﴿٥٠﴾

50. और हमारा हुक्म तो फ़क़त यक बारगी वाक़े' हो जाता है जैसे आंख का झपकना है।

وَلَقَدْ اَهْلَكْنَآ اَشْيَاعَكُمْ فَهَلْ مِنْ

51. और बेशक हमने तुम्हारे (बहुत से) गिरोहों को हलाक कर डाला, सो क्या कोई नसीहत हासिल करने

مُّدَّكِرٍ ﴿٥١﴾

वाला है?

وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوهُ فِي الزُّبُرِ ﴿٥٢﴾

52. और जो कुछ (भी) उन्हों ने किया आ'मालनामों में दर्ज है।

وَكُلُّ صَغِيرٍ وَّكَبِيرٍ مُّسْتَطَرٌ ﴿٥٣﴾

53. और हर छोटा और बड़ा (अ़मल) लिख दिया गाया है।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّٰتٍ وَّنَهَرٍ ﴿٥٤﴾

54. बेशक परहेज़गार जन्नतों और नेहरों में (लुत्फ़ अंदोज़) होंगे।

فِي مَقْعَدِ صِدْقٍ عِندَ مَلِيكٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٥٥﴾

55. पाकीज़ा मजालिस में (ह़क़ीक़ी) इक़्तिदार के मालिक बादशाह की ख़ास क़ुर्बत में (बैठते) होंगे।

रुकूआ़तुहा 3 | 55 सूरतुर रह़्मानि मक्क़िय्यतुन 97 | आयातुहा 78

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है

الرَّحْمَٰنُ ﴿١﴾

1. (वोह) रह़्मान ही है।

عَلَّمَ الْقُرْآنَ ﴿٢﴾

2. जिसने (खुद रसूले अ़रबी ﷺ को) क़ुरआन सिखाया।★

خَلَقَ الْإِنسَانَ ﴿٣﴾

3. उसीने (इस कामिल)इन्सान को पैदा फ़रमाया.

عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ﴿٤﴾

4. उसी ने इसे (या'नी नबिय्ये बर ह़क़ ﷺ को मा का-न वमा यकूनु का) बयान सिखाया।★

★ कुफ़्फ़ारो मुशरिकीने मक्का केइस इल्ज़ाम के जवाबमें येह आयत उतरी कि मुहम्मद ﷺ को मआ़ज़ल्लाह. कोई शख़्स खुफया क़ुर्आन सिखाता है।

हवाला जात केलिये मुलाहिज़ा करें तफ़्सीरे बग़्वी, ख़ाज़िन, अल क़ुशैरी, अल बह़्रुल मुह़ीत, जुमल, फ़त्हुल क़दीर, अल मज़हरी, अल लुबाब, सावी, अस सिराजुल मुनीर, मरागी, अज़्वाउल बयान और मजमउ़ल बयान वगैरहुम।

★ मुफ़स्सिरीने किरामने बयान का " अल्ल-म मा'ना मा का-न वमा यकूनु " भी बयान किया है।

ह़वाला जात केलिये मुलाहिज़ा करें तफ़्सीरे बग़्वी, खाज़िन, जुमल, अल मज़हरी, अल लुबाब, ज़ादुल मसीर, सावी, अस सिराजुल मुनीर और मज्मउ़ल बयान।

اَلشَّمۡسُ وَ الۡقَمَرُ بِحُسۡبَانٍ ۪ ﴿٥﴾

5. सूरज और चाँद (उसी के) मुकर्ररह हिसाब से चल रहे हैं।

وَّ النَّجۡمُ وَ الشَّجَرُ یَسۡجُدٰنِ ﴿٦﴾

6. और ज़मीन पर फैलने वाली बूटियां और सब दरख़्त (उसी को) सजदह कर रहे हैं।

وَ السَّمَآءَ رَفَعَهَا وَ وَضَعَ الۡمِیۡزَانَ ۙ﴿٧﴾

7. और उसीने आस्मान को बुलंद कर रखखा है और (उसीने अद्ल के लिये) तराज़ू क़ाइम कर रखखी है।

اَلَّا تَطۡغَوۡا فِی الۡمِیۡزَانِ ﴿٨﴾

8. ताकि तुम तौलने में बे ए'तेदाली न करो।

وَ اَقِیۡمُوا الۡوَزۡنَ بِالۡقِسۡطِ وَ لَا تُخۡسِرُوا الۡمِیۡزَانَ ﴿٩﴾

9. और इन्साफ़ के साथ वज़न को ठीक रखखो और तौल को कम न करो।

وَ الۡاَرۡضَ وَضَعَهَا لِلۡاَنَامِ ۙ﴿١٠﴾

10. ज़मीन को उसी ने मख्लूक के लिये बिछा दिया।

فِیۡهَا فَاکِهَۃٌ ۪ۙ وَّ النَّخۡلُ ذَاتُ الۡاَکۡمَامِ ۖ﴿١١﴾

11. उसमें मेवे हैं और खूशों वाली खजूरें हैं।

وَ الۡحَبُّ ذُو الۡعَصۡفِ وَ الرَّیۡحَانُ ۚ﴿١٢﴾

12. और भूसेवाला अनाज है और खुशबू दार (फल) फूल हैं।

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّکُمَا تُکَذِّبٰنِ ﴿١٣﴾

13. पस (ऐ गिरोहे जिन्नो इन्सान)तुम दोनों अपने रब की किन किन ने'मतों को झुटलाओगे ?

خَلَقَ الۡاِنۡسَانَ مِنۡ صَلۡصَالٍ کَالۡفَخَّارِ ۙ﴿١٤﴾

14. उसीने इन्सान को ठीकरी की तरह बजते हुए खुश्क गारे से बनाया।

وَ خَلَقَ الۡجَآنَّ مِنۡ مَّارِجٍ مِّنۡ نَّارٍ ۚ﴿١٥﴾

15. और जिन्नात को आग के शो'ले से पैदा किया।

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّکُمَا تُکَذِّبٰنِ ﴿١٦﴾

16. पस तुम दोनों अपने रब की किन किन ने'मतों को झुटलाओगे ?

رَبُّ الۡمَشۡرِقَیۡنِ وَ رَبُّ الۡمَغۡرِبَیۡنِ ۚ﴿١٧﴾

17. (वोही). दोनों मशरिकों का मालिक है और (वोही) दोनों मग़्रिबों का मालिक है।

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۱۸﴾

18. पस तुम दोनों अपने रब की किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

مَرَجَ الْبَحْرَیْنِ یَلْتَقِیٰنِ ﴿۱۹﴾

19. उसीने दो समंदर रवां किए जो बाहम मिल जाते हैं.

بَیْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا یَبْغِیٰنِ ﴿۲۰﴾

20. उन दोनों के दरमियान एक आड़ है वोह (अपनी अपनी) हद से तजावुज़ नहीं कर सक्ते।

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۲۱﴾

21. पस तुम दोनों अपने रब की किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

یَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَ الْمَرْجَانُ ﴿۲۲﴾

22. उन दोनों (समंदरों) से मोती (जिसकी झलक सब्ज़ होती है) और मरजान (जिसकी रंगत सुर्ख़ होती है) निकलते हैं.

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۲۳﴾

23. पस तुम दोनों अपने रब की किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

وَ لَهُ الْجَوَارِ الْمُنْشَئٰتُ فِی الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ﴿۲۴﴾

24. और बुलंद बादबान वाले बड़े बड़े जहाज़ (भी) उसीके (इख़्तियार में) हैं जो पहाड़ों की तरह समंदर में (खड़े होते या चलते) हैं।

النصف

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۲۵﴾

ع ۲۵ / ۱۱

25. पस तुम दोनों अपने रब की किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

كُلُّ مَنْ عَلَیْهَا فَانٍ ﴿۲۶﴾

26. हर कोई जो भी ज़मीन पर है फना हो जाने वाला है.

وَّ یَبْقٰی وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلٰلِ وَ الْاِكْرَامِ ﴿۲۷﴾

27. और आपके रब ही की ज़ात बाकी रहेगी जो साहिबे अज़्मतो जलाल और साहिबे इन्आमो इकराम है.

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۲۸﴾

28. पस तुम दोनों अपने रब की किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

یَسْـَٔلُهٗ مَنْ فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ كُلَّ یَوْمٍ هُوَ فِیْ شَاْنٍ ﴿۲۹﴾

29. सब उसी से मांगते हैं जो भी आस्मानों और ज़मीन में हैं, वोह हर आन नई शानमें होता है.

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۳۰﴾

30. पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

سَنَفْرُغُ لَكُمْ اَیُّهَ الثَّقَلٰنِ ﴿۳۱﴾

31. ऐ हर दो गिरोहाने (इन्सो जिन्न) हम अ़नक़रीब तुम्हारे ह़िसाब की तरफ़ मुतवज्जेह होते हैं.

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۳۲﴾

32. पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَ الْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ فَانْفُذُوْا ۭ لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ۚ ﴿۳۳﴾

33. अय गिरोहे जिन्नो इन्स ! अगर तुम इस बात पर कुदरत रखते हो के आस्मानों और ज़मीन के किनारों से बाहर निकल सको (और तस्ख़ीरे काइनात करो) तो तुम निकल जाओ, तुम जिस (कुरए समावी के) मक़ाम पर भी निकल जाओगे वहां भी उसी की सल्तनत होगी.

فَبِاَيِّ اٰلَاۗءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۳۴﴾

34. पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ ۙ وَّ نُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرٰنِ ۚ ﴿۳۵﴾

35. तुम दोनों पर आग के खालिस शो'ले भेज दिए जाएंगे और (बिगैर शो'लों के)धुँवां (भी भेजा जाएगा) और तुम दोनों उनसे बच न सकोगे.

فَبِاَيِّ اٰلَاۗءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۳۶﴾

36.पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

فَاِذَا انْشَقَّتِ السَّمَاۗءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ۚ ﴿۳۷﴾

37. फिर जब आस्मान फट जाएंगे और जले हुए तेल (या सुर्ख चमड़े) की तरह् गुलाबी हो जाएंगे.

فَبِاَيِّ اٰلَاۗءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۳۸﴾

38. पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

فَيَوْمَىِٕذٍ لَّا يُسْـَٔلُ عَنْ ذَنْۢبِهٖۤ اِنْسٌ وَّ لَا جَاۗنٌّ ۚ ﴿۳۹﴾

39. सो उस दिन न तो किसी इन्सान से उसके गुनाह की बाबत पूछा जाएगा और न ही किसी जिन्न से.

فَبِاَيِّ اٰلَاۗءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۴۰﴾

40. पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

يُعْرَفُ الْمُجْرِمُوْنَ بِسِيْمٰهُمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِيْ وَ الْاَقْدَامِ ۚ ﴿۴۱﴾

41. मुजरिम लोग अपने चेहरों की सियाही से पेहचान लिये जाएंगे पस उन्हें पेशानी के बालों और पांव से पकड़ कर खींचा जाएगा।

فَبِاَيِّ اٰلَاۗءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۴۲﴾

42. पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ يُكَذِّبُ بِهَا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿۴۳﴾

وقف لازم

43. (उनसे कहा जाएगा) येही है वोह दोज़ख़ जिसे मुजरिम लोग झुटलाया करते थे।

يَطُوفُونَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيمٍ آنٍ ﴿٤٤﴾

44. वोह उस (दोज़ख़) में और खौलते गरम पानीमें घूमते फिरेंगे.

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٤٥﴾

45. पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ جَنَّتَانِ ﴿٤٦﴾

46. और जो शख़्स अपने रबके हुज़ूर (पेशी के लिये) खड़ा होने से डरता है उसके लिये दो जन्नतें हैं।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٤٧﴾

47. पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

ذَوَاتَا أَفْنَانٍ ﴿٤٨﴾

48. जो दोनों (सर सब्ज़ो शादाब) घनी शाखों वाली (जन्नतें) हैं।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٤٩﴾

49. पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

فِيهِمَا عَيْنَانِ تَجْرِيَانِ ﴿٥٠﴾

50. उन दोनों में दो चश्में बेह रहे हैं।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٥١﴾

51. पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

فِيهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجَانِ ﴿٥٢﴾

52. उन दोनों में हर फल (और मेवे) की दो दो किस्में हैं.

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٥٣﴾

53. पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

مُتَّكِئِينَ عَلَىٰ فُرُشٍ بَطَائِنُهَا مِنْ إِسْتَبْرَقٍ ۚ وَجَنَى الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ﴿٥٤﴾

54. अहले जन्नत ऐसे बिस्तरों पर तकिये लगाए बैठे होंगे जिनके अस्तर नफ़ीस और दबीज़ रेशम (या'नी अत्लस) के होंगे, और दोनों जन्नतों के फल (उनके) क़रीब झुक रहें होंगे।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٥٥﴾

55 .पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओग?

فِيهِنَّ قَاصِرَاتُ الطَّرْفِ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ إِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ ﴿٥٦﴾

56.और उनमें नीची निगाह रखने वाली (हूरे) होंगी जिन्हें पहले न किसी इन्सानने हाथ लगाया और न किसी जिन्न ने।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٥٧﴾

57. पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओगे. ?

كَأَنَّهُنَّ الْيَاقُوتُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٥٨﴾

58. गोया वोह (हूरें) याक़ूत और मरजान हैं।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۵۹﴾

59. पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

هَلْ جَزَآءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ ﴿۶۰﴾

60. नेकी का बदला नेकी के सिवा कुछ नहीं है।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۶۱﴾

61. पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

وَمِنْ دُوْنِهِمَا جَنَّتٰنِ ﴿۶۲﴾

62.और (उनके लिये)इन दो के सिवा दो और बहिश्तें भी हैं।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۶۳﴾

63. पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

مُدْهَآمَّتٰنِ ﴿۶۴﴾

64.वोह दोनों गेहरी सब्ज़ रंगतमें सियाही माइल लगती हैं।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۶۵﴾

65. पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

فِيْهِمَا عَيْنٰنِ نَضَّاخَتٰنِ ﴿۶۶﴾

66. उन दोनों मे (भी) दो चश्में में हैं जो खूब छलक रहें होंगे।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۶۷﴾

67. पस तुम दोनों अपने रब की किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

فِيْهِمَا فَاكِهَةٌ وَّنَخْلٌ وَّرُمَّانٌ ﴿۶۸﴾

68. उन दोनों में (भी) फल और खजूरें और अनार हैं.

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۶۹﴾

69. पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

فِيْهِنَّ خَيْرٰتٌ حِسَانٌ ﴿۷۰﴾

70. इन में (भी) खूब सीरतो खूबसूरत (हूरें) हैं।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۷۱﴾

71. पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओगे ?

حُوْرٌ مَّقْصُوْرٰتٌ فِي الْخِيَامِ ﴿۷۲﴾

72. ऐसी हूरें जो खै़मों में पर्दानशीन हैं।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۷۳﴾

73. पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओगे ?

لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ﴿۷۴﴾

74. उन्हें पहले न किसी इन्सान ही ने हाथ से छुवा है और न किसी जिन्नने।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۷۵﴾

75. पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَّعَبْقَرِيٍّ

76. (अहले जन्नत) सब्ज़ क़ालीनों पर और नादिरो

حِسَانٍ ﴿٧٦﴾

नफ़ीस बिछोनों पर तकिए लगाए (बैठ) होंगे।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٧﴾

77. पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

تَبٰرَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِی الْجَلٰلِ وَ الْاِكْرَامِ ﴿٧٨﴾

78. आपके रबका नाम बड़ी बरकत वाला है, जो साहिबे अज़्मतो जलाल और साहिबे इन्आ़मो इकराम है।

आयातुहा 96	56 सूरतुल वाक़िअ़ति मक्कियतुन 46	रुकूआ़तुहा 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

اِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿١﴾

1. जब वाक़े' होनेवाली (क़ियामत) वाक़े' हो जाएगी।

لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ﴿٢﴾

2. उसके वाक़े' होनें में कोई झूट नहीं।

خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ﴿٣﴾

3. (वोह क़ियामत किसी को) नीचा कर देनेवाली (किसी को) ऊंचा कर देनेवाली (है)।

اِذَا رُجَّتِ الْاَرْضُ رَجًّا ﴿٤﴾

4. जब ज़मीन कपकपा कर शदीद लरज़ने लगेगी।

وَّبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ﴿٥﴾

5. और पहाड़ टूट कर रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे।

فَكَانَتْ هَبَآءً مُّنْۢبَثًّا ﴿٦﴾

6. फिर वोह गुबार बन कर मुन्तशिर हो जाएंगे।

وَّكُنْتُمْ اَزْوَاجًا ثَلٰثَةً ﴿٧﴾

7. और तुम लोग तीन किस्मों में बट जाओगे।

فَاَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۙ مَآ اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ﴿٨﴾

8. सो (एक) दाएं जानिबवाले, दाएं जानिबवालों का क्या केहना।

وَ اَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ۙ مَآ اَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ﴿٩﴾

9. और (दूसरे) बाएं जानिबवाले, क्या (ही बुरे हालमें होंगे) बाएं जानिबवाले।

وَالسّٰبِقُوْنَ السّٰبِقُوْنَ ﴿١٠﴾

10. और (तीसरे), सब्क़त ले जानेवाले (येह) पेश क़दमी करनेवाले हैं।

اُولٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿١١﴾

11. येही लोग (अल्लाह के) मुकर्रब होंगें।

فِیْ جَنّٰتِ النَّعِیْمِ ﴿۱۲﴾

12. ने'मतों के बाग़ात में (रहेंगे)

ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِیْنَ ﴿۱۳﴾

13. (इन मुक़र्रबीन में) बड़ा गिरोह अगले लोगों में से होगा।

وَ قَلِیْلٌ مِّنَ الْاٰخِرِیْنَ ﴿۱۴﴾

14. और पिछले लोगों में से (उनमे) थोड़े होंगे।

عَلٰی سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ ﴿۱۵﴾

15. (येह मुक़र्रबीन) ज़र निगार तख़्तों पर होंगे।

مُّتَّكِـِٕیْنَ عَلَیْهَا مُتَقٰبِلِیْنَ ﴿۱۶﴾

16. उन पर तकिए लगाए आमने सामने बैठे होंगे।

یَطُوْفُ عَلَیْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ﴿۱۷﴾

17. हमेशा एक ही ह़ालमें रेहनेवाले नौजवान ख़िदमतगार उन के इर्द गिर्द घूमते होंगे।

بِاَكْوَابٍ وَّ اَبَارِیْقَ ۙ وَ كَاْسٍ مِّنْ مَّعِیْنٍ ﴿۱۸﴾

18. कूज़े, आफ़ताबे और चश्मों से बेहती हुई (शफ़्फ़ाफ़) शराबे (क़ुर्बत) के जाम ले कर (हाज़िरे खिदमत रहेंगे)।

لَّا یُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا وَ لَا یُنْزِفُوْنَ ﴿۱۹﴾

19. उन्हें न तो उस (के पीने) से दर्दे सर की शिकायत होगी और न ही अ़क़्ल में फ़ुतूर (और बद मस्ती) आएगी।

وَ فَاكِهَةٍ مِّمَّا یَتَخَیَّرُوْنَ ﴿۲۰﴾

20. और (जन्नती ख़िदमत गुज़ार) फल (और मेवे) ले कर (भी फिर रहे होंगे) जिन्हें वोह (मुक़र्रबीन) पसंद करेंगे।

وَ لَحْمِ طَیْرٍ مِّمَّا یَشْتَهُوْنَ ﴿۲۱﴾

21. और परिंदों का गोश्त भी (दस्तयाब होगा) जिसकी वोह (अहले क़ुर्बत) ख़्वाहिश करेंगें।

وَ حُوْرٌ عِیْنٌ ﴿۲۲﴾

22. और खूबसूरत कुशादा आंखोंवाली हूरें भी (उनकी रिफ़ाक़त में होंगी)।

كَاَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُوْنِ ﴿۲۳﴾

23. जैसे मह़फ़ूज़ छुपाए हुए मोती हों।

جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿۲۴﴾

24. (येह) उन (नेक) आ'माल की जज़ा होगी जो वोह करते रहे थे।

لَا یَسْمَعُوْنَ فِیْهَا لَغْوًا وَّ لَا تَاْثِیْمًا ﴿۲۵﴾

25. वोह इसमें न कोई बेहूदगी सुनेंगे और न कोई गुनाह की बात।

إِلَّا قِيلًا سَلَامًا سَلَامًا ﴿٢٦﴾

26. मगर एक ही बात (कि येह सलामवाले हर तरफ से) सलाम ही सलाम सुनेंगे।

وَأَصْحَابُ الْيَمِينِ مَا أَصْحَابُ الْيَمِينِ ﴿٢٧﴾

27. और दाएं जानिबवाले, क्या केहना दों जानिब वालों का।

فِي سِدْرٍ مَّخْضُودٍ ﴿٢٨﴾

28. और वोह बेकार बेरियोंमें।

وَطَلْحٍ مَّنضُودٍ ﴿٢٩﴾

29. और तेह ब तेह कीलों में।

وَظِلٍّ مَّمْدُودٍ ﴿٣٠﴾

30 और लम्बे लम्बे (फैले हुए) सायों में।

وَمَاءٍ مَّسْكُوبٍ ﴿٣١﴾

31. और बेहते छलक्ते पानियों में।

وَفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ ﴿٣٢﴾

32. और ब-कसरत फलों और मेवों में (लुत्फ़ अंदोज़ होंगे)।

لَّا مَقْطُوعَةٍ وَلَا مَمْنُوعَةٍ ﴿٣٣﴾

33. जो न (कभी) ख़त्म होंगे और न उन (के खाने)की मुमानिअ़त होगी।

وَفُرُشٍ مَّرْفُوعَةٍ ﴿٣٤﴾

34. और (वोह) ऊंचे (पुर शिकोह) फ़र्शों पर (क़ियाम पज़ीर) होंगे।

إِنَّا أَنشَأْنَاهُنَّ إِنشَاءً ﴿٣٥﴾

35. बेशक हमने इन (हूरो) को हुस्नो (लताफ़त की आईना दार) ख़ास ख़िल्क़त से पैदा फ़रमाया है।

فَجَعَلْنَاهُنَّ أَبْكَارًا ﴿٣٦﴾

36. फिर हमने उनको कुंवारिया बनाया है।

عُرُبًا أَتْرَابًا ﴿٣٧﴾

37. जो खूब महब्बत करनेवाली हम उम्र (अज़्वाज) हैं।

لِّأَصْحَابِ الْيَمِينِ ﴿٣٨﴾

38. येह (हूरें और दीगर ने'मत) दाएं जानिबवालों के लिये हैं।

ثُلَّةٌ مِّنَ الْأَوَّلِينَ ﴿٣٩﴾

39. और (उनमें) बड़ी जमाअ़त अगले लोगों में से होगी।

وَثُلَّةٌ مِّنَ الْآخِرِينَ ﴿٤٠﴾

40. और (उनमें) पिछले लोगों में से (भी) बड़ी ही जमाअ़त होगी।

وَ اَصۡحٰبُ الشِّمَالِ ۙ مَاۤ اَصۡحٰبُ الشِّمَالِ ﴿٤١﴾

41. और बाएं जानिबवाले क्या (ही बुरे लोग) हैं बाएं जानिबवाले।

فِیۡ سَمُوۡمٍ وَّ حَمِیۡمٍ ﴿٤٢﴾

42. जो दोज़ख़ की सख़्त गर्म हवा और खौलते हुए पानी में।

وَّ ظِلٍّ مِّنۡ یَّحۡمُوۡمٍ ﴿٤٣﴾

43. और सियाह धुवें के साए होंगे।

لَّا بَارِدٍ وَّ لَا کَرِیۡمٍ ﴿٤٤﴾

44. जो न (कभी) ठंढा होगा और न फ़र्हत बख़्श होगा।

اِنَّهُمۡ کَانُوۡا قَبۡلَ ذٰلِکَ مُتۡرَفِیۡنَ ﴿٤٥﴾

45. बेशक वोह (अहले दोज़ख़) इससे पहले (दुनिया में) खुश हाल रेह चुके थे।

وَ کَانُوۡا یُصِرُّوۡنَ عَلَی الۡحِنۡثِ الۡعَظِیۡمِ ﴿٤٦﴾

46. और वोह गुनाहे अज़ीम (या'नी कुफ़्रो शिर्क) पर इसरार किया करते थे।

وَ کَانُوۡا یَقُوۡلُوۡنَ ۬ۙ اَئِذَا مِتۡنَا وَ کُنَّا تُرَابًا وَّ عِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبۡعُوۡثُوۡنَ ﴿٤٧﴾

47. और कहा करते थे कि कया जब हम मर जाएंगे और हम ख़ाक (का ढेर) और (बोसीदह) हड्डियां हो जाएंगे तो कया हम (फिर ज़िन्दा कर के) उठाए जाएंगे।

اَوَ اٰبَآؤُنَا الۡاَوَّلُوۡنَ ﴿٤٨﴾

48. और क्या हमारे अगले बापदादा भी (ज़िन्दा किए जाएंगे)।

قُلۡ اِنَّ الۡاَوَّلِیۡنَ وَ الۡاٰخِرِیۡنَ ﴿٤٩﴾

49. आप फ़रमा दें बेशक अगले और पिछले।

لَمَجۡمُوۡعُوۡنَ ۬ۙ اِلٰی مِیۡقَاتِ یَوۡمٍ مَّعۡلُوۡمٍ ﴿٥٠﴾

50. (सब के सब) एक मुअ़य्यन दिन के मुक़र्ररह वक़्त पर जमा' किए जाएंगे।

ثُمَّ اِنَّکُمۡ اَیُّهَا الضَّآلُّوۡنَ الۡمُکَذِّبُوۡنَ ﴿٥١﴾

51. फिर बेशक तुम लोग ऐ गुमराहो ! झुटलाने वालों !

لَاٰکِلُوۡنَ مِنۡ شَجَرٍ مِّنۡ زَقُّوۡمٍ ﴿٥٢﴾

52. तुम ज़रूर कांटे दार (थूहड़ के) दरख़्त से खानेवाले हो।

فَمَالِـُٔوۡنَ مِنۡهَا الۡبُطُوۡنَ ﴿٥٣﴾

53. सो उससे अपने पेट भरने वाले हो।

فَشٰرِبُوۡنَ عَلَیۡهِ مِنَ الۡحَمِیۡمِ ﴿٥٤﴾

54. फिर उस पर सख़्त खौलता पानी पीने वाले हो।

فَشٰرِبُوْنَ شُرْبَ الْهِيْمِ ﴿۵۵﴾

55. पस तुम सख़्त पियासे ऊंट के पीने की तरह पीने वाले हो।

هٰذَا نُزُلُهُمْ يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿۵۶﴾

56. येह क़ियामत के दिन उनकी ज़ियाफ़त होगी।

نَحْنُ خَلَقْنٰكُمْ فَلَوْلَا تُصَدِّقُوْنَ ﴿۵۷﴾

57. हम ही ने तुम्हें पैदा किया था फिर तुम (दोबारा पैदा किए जाने की) तस्दीक़ क्यों नहीं करते ?

اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تُمْنُوْنَ ﴿۵۸﴾

58. भला येह बताओ जो नुत्फ़ा (तौलीदी क़त्रा) तुम (रह़म मे) टपकाते हो।

ءَاَنْتُمْ تَخْلُقُوْنَهٗۤ اَمْ نَحْنُ الْخٰلِقُوْنَ ﴿۵۹﴾

59 तो क्या उस (से इन्सान) को तुम पैदा करते हो या हम पैदा फ़रमाने वाले हैं।

نَحْنُ قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ﴿۶۰﴾

60. हम ही ने तुम्हारे दरमियान मौत को मुक़र्रर फ़रमाया है और हम (इस के बा'द फिर ज़िन्दा करने से भी) आ़जिज़ नहीं हैं।

عَلٰۤى اَنْ نُّبَدِّلَ اَمْثَالَكُمْ وَنُنْشِئَكُمْ فِيْ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۶۱﴾

61. इस बात से (भी आजिज़ नहीं हैं) कि तुम्हारे जैसे औरों के बदल (कर बना) दें और तुम्हें ऐसी सूरत में पैदा कर दें जिस तुम जानते भी न हो।

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْاَةَ الْاُوْلٰى فَلَوْلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۶۲﴾

62. और बेशक तुमने पहली पैदाइश (की ह़क़ीक़त) मा'लूम कर ली फिर तुम नसीहत क़ुबूल क्यों नहीं करते।

اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَحْرُثُوْنَ ﴿۶۳﴾

63. भला येह बताओ जो (बीज) तुम काश्त करते हो।

ءَاَنْتُمْ تَزْرَعُوْنَهٗۤ اَمْ نَحْنُ الزّٰرِعُوْنَ ﴿۶۴﴾

64. तो क्या उस (से खेती) को तुम उगाते हो या हम उगाने वाले हैं ?

لَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنٰهُ حُطَامًا فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُوْنَ ﴿۶۵﴾

65. अगर हम चाहें तो उसे रेज़ा रेज़ा कर दें फिर तुम तअ़ज्जुब और नदामत ही करते रेह जाओ।

اِنَّا لَمُغْرَمُوْنَ ﴿۶۶﴾

66. (और केहने लगो) : हम पर तावान पड़ गया।

بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ ﴿۶۷﴾

67. बल्कि हम बे नसीब होगए।

68. भला येह बताओ जो पानी तुम पीते हो।

أَفَرَءَيْتُمُ الْمَآءَ الَّذِى تَشْرَبُونَ ﴿٦٨﴾

69. कया तुम ने उसे बादल से उतारा है या हम उतारने वाले हैं ?

ءَأَنتُمْ أَنزَلْتُمُوهُ مِنَ الْمُزْنِ أَمْ نَحْنُ الْمُنزِلُونَ ﴿٦٩﴾

70. अगर हम चाहें तो उसे खारी बना दें, फिर तुम शुक्र अदा क्यों नहीं करते ?

لَوْ نَشَآءُ جَعَلْنَٰهُ أُجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُونَ ﴿٧٠﴾

71. भला येह बताओ जो आग तुम सुलगाते हो।

أَفَرَءَيْتُمُ النَّارَ الَّتِى تُورُونَ ﴿٧١﴾

72. कया इसके दरख़्त को तुमने पैदा किया है या हम (इसे) पैदा परमाने वाले हैं ?

ءَأَنتُمْ أَنشَأْتُمْ شَجَرَتَهَآ أَمْ نَحْنُ الْمُنشِـُٔونَ ﴿٧٢﴾

73. हम ही ने इस (दरख्त की आग) को (आतिशे जहन्नम की) याद दिलाने वाली (नसीहतो इब्रत) और जंगलों के मुसाफिरों के लिये बाइसे मनफ़ेअ़त बनाया है।

نَحْنُ جَعَلْنَٰهَا تَذْكِرَةً وَمَتَٰعًا لِّلْمُقْوِينَ ﴿٧٣﴾

74. सो अपने रब्बे अज़ीम के नाम की तस्बीह किया करें।

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ﴿٧٤﴾

ع ٢ ٣٦ ١٥ الربع

75. पस में उन जग्हों की कसम खाता हूं जहां जहां कुर्आन के मुख्तलिफ हिस्से (रसूले अरबी ﷺ पर) उतरते हैं ★

فَلَآ أُقْسِمُ بِمَوَٰقِعِ النُّجُومِ ﴿٧٥﴾

76. और अगर तुम समझो तो बेशक येह बहोत बड़ी क़सम है।

وَإِنَّهُۥ لَقَسَمٌ لَّوْ تَعْلَمُونَ عَظِيمٌ ﴿٧٦﴾

77. बेशक येह बड़ी अज़्मतवाला कुरआन है (जो बड़ी अज़्मत वाले रसूल ﷺ पर उतर रहा है)।

إِنَّهُۥ لَقُرْءَانٌ كَرِيمٌ ﴿٧٧﴾

★ येह तर्जुमा हज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने अब्बास के बयान कर्दा मा'ना पर किया गया है, मज़ीद हज़रते इकरमा, हज़रते मुजाहिद, हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़्बैर, हज़रते सदी, हज़रते फरा और हज़रते ज़ुजाज रदियल्लाहु अन्हुम और दीगर अइम्मए तफ्सीर का क़ौल भी येही है, और सियाक़े कलाम भी इसी का तक़ाज़ा करता है, पीछे सूरतुन नज्म में हजूर नबिय्ये अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व-सल्लम को नज्म कहा गया है यहां कुरआन की सूरतों को नुजूम कहा गया है हवालाजात के लिए मुलाहिज़ा करें (तफ्सीरे बग़वी, खाज़िन, तिब्री ,दुर्रे मन्सूर, अल कश्शाफ, तफ्सीरे इब्ने अबी हातिम, रूहुल मआनी, इब्ने कसीर, अल लुबाब, अल बहरुल मुहीत, जुमल, ज़ादुल मसीर, फत्हुल क़दीर, अल मज़हरी, अल बैज़ावी, तफ्सीरे अबू सऊद और मजमउ़ल बयान।

فِيْ كِتٰبٍ مَّكْنُوْنٍ ﴿٧٨﴾

78. (इससे पहले येह) लौहे महफ़ूज़ में (लिखा हुवा)है।

لَّا يَمَسُّهٗٓ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ ﴿٧٩﴾

79. इसको पाक (तहारत वाले) लोगों के सिवा कोई नहीं छुएगा।

تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٠﴾

80. तमाम जहानों के रब की तरफ से उतारा गया है।

اَفَبِهٰذَا الْحَدِيْثِ اَنْتُمْ مُّدْهِنُوْنَ ﴿٨١﴾

81. सो क्या तुम उसी कलाम की तह्क़ीर करते हो?

وَتَجْعَلُوْنَ رِزْقَكُمْ اَنَّكُمْ تُكَذِّبُوْنَ ﴿٨٢﴾

82. और तुमने अपना रिज़्क़ (और नसीब) इसी बात को बना रख्खा है कि तुम (उसे)झुटलाते रहो।

فَلَوْلَآ اِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُوْمَ ﴿٨٣﴾

83. फिर क्यों नहीं (रूह को वापस लौटा लेते) जब वोह (परवाज़ करने के लिये)ह़लक़ तक आ पहुंचती है?

وَاَنْتُمْ حِيْنَئِذٍ تَنْظُرُوْنَ ﴿٨٤﴾

84. और तुम उस वक़्त देखते ही रेह जाते हो।

وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُبْصِرُوْنَ ﴿٨٥﴾

85. और हम उस (मरनेवाले) से तुम्हारी निस्बत ज़ियादा करीब होते हैं लेकिन तुम (हमें)देखते नहीं हो।

فَلَوْلَآ اِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِيْنِيْنَ ﴿٨٦﴾

86. फिर क्यों नहीं ऐसा कर सक्ते। अगर तुम किसी की मिल्को इख़्तियार में नहीं हो।

تَرْجِعُوْنَهَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٨٧﴾

87. कि उस (रूह)को वापस फेर लो अगर तुम सच्चे हो।

فَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٨٨﴾

88. फिर अगर वोह (वफ़ात पानेवाला) मुकर्रिबीन में से था।

فَرَوْحٌ وَّرَيْحَانٌ ۙ وَّجَنَّتُ نَعِيْمٍ ﴿٨٩﴾

89. तो (इसके लिये) सुरूरो फ़रहत और रूहानी रिज़्क़ो इस्तराह़त और ने'मतों भरी जन्नत है।

وَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿٩٠﴾

90. और अगर वोह अस्ह़ाबुल यमीन में से था।

فَسَلٰمٌ لَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿٩١﴾

91. तो (उससे कहा जाएगा) तुम्हारे लिए दाएं जानिबवालों की तरफ़ से सलाम है (या ऐ नबी ! आप पर अस्ह़ाबे यमीन की जानिब से सलाम है)।

وَ اَمَّآ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِيْنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿٩٢﴾

92. और अगर वोह मरनेवाला झुटलानेवाले गुमराहों में से था।

فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِيْمٍ ﴿٩٣﴾

93. तो (उसकी) सख़्त खौलते हुए पानी से ज़ियाफ़त होगी।

وَّ تَصْلِيَةُ جَحِيْمٍ ﴿٩٤﴾

94. और (उसका अंजाम) दोज़ख़ में दाख़िल कर दिया जाना है।

اِنَّ هٰذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِيْنِ ﴿٩٥﴾

95. बेशक येही क़तई तौर पर ह़क़्क़ुल यक़ीन है।

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿٩٦﴾

96. सो आप अपने रब्बे अ़ज़ीम के नाम की तस्बीह़ किया करें।

ع ٣ ٢٢ ١٢

आयातुहा 29 | 57 सूरतुल ह़दीदि मक्किय्यतुन 94 | रुकूआतुहा 4

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١﴾

1. अल्लाह ही की तस्बीह़ करते हैं जो भी आस्मानों और ज़मीन में हैं, और वोही बड़ी इ़ज़्ज़तवाला बड़ी ह़िक्मत वाला है।

لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢﴾

2. उसी के लिये आस्मानों और ज़मीन की बादशाहत है, वोही जिलाता और मारता है, और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है।

هُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٣﴾

3. वोही (सब से) अव्वल और (सब से) आख़िर है और (अपनी क़ुदरत के ए'तिबार से) ज़ाहिर और अपनी ज़ात (के ए'तिबार से) पोशीदा है, और वोह हर चीज़ को खूब जाननेवाला है।

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ؕ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي

4. वोही है जिसने आस्मानों और ज़मीन को छे अद्वार में पैदा फ़रमाया फिर काइनात की मस्नदे इक्तिदार पर जल्वा अफ़रोज़ हुआ (या'नी पूरी काइनात को अपने अम्र के साथ मुनज़्ज़म फ़रमाया), वोह जानता है जो कुछ

الْأَرْضِ وَ مَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَ مَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَ مَا يَعْرُجُ فِيهَا ۖ وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ ۖ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٤﴾

ज़मीन में दाख़िल होता है और जो कुछ उसमें से ख़ारिज होता है और जो कुछ आस्मानी कुर्रों से उतरता (या निकलता) है या जो कुछ उनमें चढ़ता (या दाख़िल होता) है, वोह तुम्हारे साथ होता है तुम जहां कहीं भी हो, और अल्लाह जो कुछ तुम करते हो (उसे) खूब देखनेवाला है।

لَهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْأَرْضِ ۖ وَ إِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿٥﴾

5. आस्मानों और ज़मीन की सारी सल्तनत उसी की है, और उसी की तरफ़ सारे उमूर लौटाए जाते हैं।

يُولِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَ يُولِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ۖ وَهُوَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٦﴾

6. वोही रात को दिनमें दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है,और वोह सीनों की (पोशीदा) बातों से भी खूब बा ख़बर है।

اٰمِنُوا بِاللّٰهِ وَ رَسُولِهِ وَ أَنْفِقُوا مِمَّا جَعَلَكُمْ مُسْتَخْلَفِينَ فِيهِ ۖ فَالَّذِينَ اٰمَنُوا مِنْكُمْ وَأَنْفَقُوا لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿٧﴾

7. अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) पर ईमान लाओ और उस (मालो दौलत) में से ख़र्च करो जिसमें उसने तुम्हें अपना नाइब (व अमीन) बनाया है, पस तुम में से जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने ख़र्च किया उनके लिए बहुत बड़ा अज्र है।

وَ مَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُونَ بِاللّٰهِ ۚ وَ الرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ لِتُؤْمِنُوا بِرَبِّكُمْ وَ قَدْ أَخَذَ مِيثَاقَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٨﴾

8. तुम्हें क्या हे गया है कि तुम अल्लाह पर ईमान नहीं लाते, हालांकि रसूल (ﷺ) तुम्हें बुला रहे हैं कि तुम अपने रब पर ईमान लाओ और बेशक (अल्लाह) तुम से मज़बूत अ़हद ले चुका है, अगर तुम ईमान लानेवाले हो।

هُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ عَلٰى عَبْدِهِ اٰيٰتٍ بَيِّنٰتٍ لِيُخْرِجَكُمْ مِنَ الظُّلُمٰتِ إِلَى النُّورِ ۖ وَإِنَّ اللّٰهَ بِكُمْ لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ ﴿٩﴾

9. वोही है जो अपने (बरगुज़ीदा) बंदे पर वाज़ेह निशानियां नाज़िल फ़रमाता है ताकि तुम्हें अंधेरे से रौशनी की तरफ़ निकाल ले जाए, और बेशक अल्लाह तुम पर निहायत शफ्क़त फ़रमानेवाला निहायत रहम फ़रमाने वाला है।

وَمَا لَكُمْ أَلَّا تُنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللّٰهِ وَ
لِلّٰهِ مِيرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ؕ
لَا يَسْتَوِي مِنْكُمْ مَّنْ أَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ
الْفَتْحِ وَ قٰتَلَ ؕ أُولٰٓئِكَ أَعْظَمُ
دَرَجَةً مِّنَ الَّذِينَ أَنْفَقُوا مِنْ بَعْدُ
وَ قٰتَلُوا ؕ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ؕ
وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿١٠﴾

10. और तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते हालांकि आस्मानों और ज़मीन की सारी मिल्किय्यत अल्लाह ही की है (तुम तो फ़क़त उस मालिक केनाइब हो) तुम में से जिन लोगों ने फ़त्हे (मक्का) से पहले (अल्लाहकी राहमें अपना माल) ख़र्च किया और क़िताल किया वोह (और तुम) बराबर नहीं हो सक्ते, वोह उन लोगों से दर्जे में बहुत बुलंद हैं जिन्होंने बाद में माल ख़र्च किया है, और क़िताल किया है, मगर अल्लाहने हुस्ने आख़िरत (या'नी जन्नत) का वा'दा सबसे फरमा दिया है, और अल्लाह जो कुछ तुम करते हो उन से खूब आगाह है।

مَنْ ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا
حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗ وَلَهٗٓ أَجْرٌ
كَرِيمٌ ﴿١١﴾

11. कौन शख़्स है जो अल्लाह को क़र्ज़े हसना के तौर पर क़र्ज़ दे तो वोह उसके लिये उस (क़र्ज़) को कई गुना बढ़ाता रहे और उसके लिए बड़ी अज़्मतवाला अज्र है।

يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنٰتِ
يَسْعٰى نُورُهُمْ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ
وَبِأَيْمَانِهِمْ بُشْرٰىكُمُ الْيَوْمَ جَنّٰتٌ
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِينَ
فِيهَا ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١٢﴾

12. (ऐ हबीब !) जिस दिन आप (अपनी उम्मत के) मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को देखेंगे उनका नूर उनके आगे और उनकी दाएं जानिब तेज़ी से चल रहा होगा (और उनसे कहा जाएगा) तुम्हें बिशारत हो आज (तुम्हारे लिए) जन्नतें हैं जिनके नीचे से नेहरें रवां हैं (तुम) हमेशा उनमें रहोगे, येही बहुत बड़ी कामयाबी है।

يَوْمَ يَقُولُ الْمُنٰفِقُونَ وَ الْمُنٰفِقٰتُ
لِلَّذِينَ اٰمَنُوا انْظُرُونَا نَقْتَبِسْ مِنْ
نُّورِكُمْ ۚ قِيلَ ارْجِعُوا وَرَآءَكُمْ
فَالْتَمِسُوا نُورًا ؕ فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ
بِسُورٍ لَّهٗ بَابٌ ؕ بَاطِنُهٗ فِيهِ الرَّحْمَةُ

13. जिस दिन मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें ईमानवालों से कहेंगे : ज़रा हम पर (भी) नज़रे (इल्तिफ़ात) कर दो हम तुम्हारे नूर से कुछ रौशनी हासिल कर लें, उनसे कहा जाएगा तुम अपने पीछे पलट जाओ और (वहां जा कर) नूर तलाश करो (जहां तुम नूर का इन्कार करते थे) तो (उसी वक़्त) उनके दरमियान एक दीवार खड़ी कर दी जाएगी जिस में एक दरवाज़ा होगा,

وَظَاهِرُهُ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ⑬

उसके अंदर की जानिब रह़मत होगी और उसके बाहर की जानिब उस तरफ़ से अज़ाब होगा।

يُنَادُوْنَهُمْ اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ط قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ اَنْفُسَكُمْ وَ تَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْاَمَانِيُّ حَتّٰى جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ وَ غَرَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ⑭

14. वोह (मुनाफ़िक़) उन (मोमिनों) को पुकार कर कहेंगे : क्या हम (दुनिया में) तुम्हारी संगत में न थे? वोह कहेंगे : क्यों नहीं लेकिन तुमने अपने आप को (मुनाफ़िक़त के) फितने में मुब्तिला कर दिया था और तुम (हमारे लिए बुराई और नुक्सान के) मुन्तज़िर रहते थे और तुम (नुबुव्वते मुहम्मदी ﷺ और दीने इस्लाम में) शक करते थे और बातिल उम्मीदों ने तुम्हें धोके में डाल दिया, यहां तक के अल्लाह का अम्रे (मौत) आ पहुंचा और तुम्हें अल्लाहके बारे में दग़ाबाज़ (शैतान) धोका देता रहा।

فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ وَّ لَا مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ط مَاْوٰىكُمُ النَّارُ ط هِيَ مَوْلٰىكُمْ ط وَ بِئْسَ الْمَصِيْرُ ⑮

15. पस आज के दिन (ऐ मुनाफ़िक़ो!) तुम से कोई मुआवज़ा क़ुबूल नहीं किया जाएगा और न ही उनसे जिनहोंने कुफ़्र किया था और तुम (सब) का ठिकाना दोज़ख है, और येही (ठिकाना) तुम्हारा मौला (या'नी साथी) है, और वोह निहायत बुरी जगह है, (क्यों कि तुमने उनको मौला मानने से इन्कार कर दिया था जहां से तुम्हें नूरे ईमान और बख़्शिश की ख़ैरात मिलनी थी।

اَلَمْ يَاْنِ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ لا وَلَا يَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْاَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوْبُهُمْ ط وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ⑯

16. क्या ईमानवालों के लिये (अभी) वोह वक़्त नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह की याद के लिये रिक़्क़त के साथ झुक जाएं और उस ह़क़ के लिए (भी) जो नाज़िल हुआ है और उन लोगों की तरह न हो जाएं जिन्हें इससे पहले किताब दी गई थी फिर उन पर मुद्दते दराज़ गुज़र गई तो उनके दिल सख़्त हो गए, और उनमें बहुत से लोग ना फ़रमान हैं।

اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يُحْيِ الْاَرْضَ

17. जान लो कि अल्लाह ही ज़मीन को उसकी मुर्दनी के

بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿١٧﴾

बा'द ज़िन्दा करता है, बेशक हमने तुम्हारे लिए निशानियां वाज़ेह् कर दी हैं ताकि तुम अक़्ल से काम लो।

اِنَّ الْمُصَّدِّقِيْنَ وَ الْمُصَّدِّقٰتِ وَ اَقْرَضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعَفُ لَهُمْ وَلَهُمْ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ﴿١٨﴾

18. बेशक सदक़ा-व-ख़ैरात देनेवाले मर्द और सदक़ा व-ख़ैरात देनेवाली औरतें और जिन्होंने अल्लाह को कर्ज़े हसना के तौर पर क़र्ज़ दिया उनके लिए (सद्क़ा-व-क़र्ज़े का अज्र) कई गुना बढ़ा दिया जाएगा और उनके लिए बड़ी इज़्ज़तवाला सवाब होगा।

وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَ رُسُلِهٖٓ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصِّدِّيْقُوْنَ ۖ وَ الشُّهَدَآءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ لَهُمْ اَجْرُهُمْ وَنُوْرُهُمْ ۚ وَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿١٩﴾

19. और जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाए वोही लोग अपने रबके नज़दीक सिद्दीक और शहीद हैं, उनके लिये उनका अज्र (भी) है, और उनका नूर (भी) है, और जिन्होंने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुटलाया वही लोग दोज़खी हैं।

ع ٢ ١٩ ١٨

اِعْلَمُوْٓا اَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ وَّ زِيْنَةٌ وَّ تَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ ۚ كَمَثَلِ غَيْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ حُطَامًا ۚ وَ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۙ وَّ مَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَ رِضْوَانٌ ۚ وَ مَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿٢٠﴾

20. जान लो कि दुनिया की ज़िंदगी महज़ खेल और तमाशा है और ज़ाहिरी आराइश है और आपस में फ़ख्र और खुद सताई है और एक दूसरे पर मालो औलाद में ज़ियादती की तलब है, इसकी मिसाल बारिश की सी है जिसकी पैदावार किसानों को भली लगती है फिर वोह खुश्क हो जाती है फिर तुम उसे पक कर ज़र्द होता देखते हो फिर वोह रेज़ा रेज़ा हो जाती है,और आख़िरत में (ना फ़रमानों के लिये) सख़्त अ़ज़ाब है, और (फ़रमां बर्दारों के लिए) अल्लाह की जानिब से मग़फ़िरत और अ़ज़ीम खुशनूदी है, और दुनिया की जिन्दगी धोके की पूंजी के सिवा कुछ नहीं है।

سَابِقُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ

21. (ऐ बन्दो !) तुम अपने रब की बख़्शिश की तरफ़

جَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَآءِ وَ الْاَرْضِ ۙ اُعِدَّتْ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَ رُسُلِهٖ ؕ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿۲۱﴾

तेज़ लपको और जन्नत की तरफ़ (भी) जिस की चौड़ाई (ही) आस्मान और ज़मीन की वुस्अ़त जितनी है, उन लोगों के लिए तैयार की गई है जो अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाए हैं, येह अल्लाह का फ़ज़्ल है जिस वोह चाहता है उसे अता फ़रमा देता है,और अल्लाह अज़ीम फ़ज़्लवाला है।

مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ اِلَّا فِىْ كِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّبْرَاَهَا ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿۲۲﴾

22. कोई भी मुसीबत न तो ज़मीन में पहुंचती है और न तुम्हारी ज़िंदगियों में मगर वोह एक किताब में (या'नी लौहे महफ़ूज़ में जो अल्लाह के इल्मे क़दीम का मर्तबा है) इससे क़ब्ल के हम उसे पैदा करें (मौजूद)होती है, बेशक येह (इल्मे मुहीतो कामिल)अल्लाह पर बहुत आसान है।

لِّكَيْلَا تَاْسَوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ وَ لَا تَفْرَحُوْا بِمَآ اٰتٰىكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرِ ﴿۲۳﴾

23. ताकि तुम उस चीज़ पर ग़म न करो जो तुम्हारे हाथ से जाती रही और उस चीज़ पर न इतराओ जो उसने तुम्हें अ़ता की, और अल्लाह किसी तकब्बुर करनेवाले, फ़ख़्र करनेवाले को पसंद नहीं करता।

الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَ يَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ ؕ وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِىُّ الْحَمِيْدُ ﴿۲۴﴾

24. जो लोग (खुद भी) बुख़्ल करते हैं और (दूसरे) लोगों को (भी) बुख़्ल की तल्क़ीन करते हैं, और जो शख़्स (अहकामे इलाही से) रूगर्दानी करता है तो बेशक अल्लाह (भी) बे परवाह है बड़ा क़ाबिले हम्दो सताइश है।

لَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنٰتِ وَ اَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتٰبَ وَالْمِيْزَانَ لِيَقُوْمَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۚ وَ اَنْزَلْنَا الْحَدِيْدَ فِيْهِ بَاْسٌ شَدِيْدٌ وَّ مَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَ لِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ

25. बेशक हमने अपने रसूलों को वाज़ेह निशानियों के साथ भेजा और हमने उनके साथ किताब और मीज़ाने अद्ल नाज़िल फ़रमाई ताकि लोग इन्साफ़ पर क़ाइम हो सकें,और हमने (मा'दनियात में से) लोहा मुहय्या किया उसमें (आलाते हर्ब व दिफ़ाअ़ के लिए) सख़्त क़ुव्वत और लोगों के लिये (सन्अ़त साज़ी के कई दीगर) फ़वाइद हैं और (येह इस लिये किया) ताकि अल्लाह ज़ाहिर कर दे

يَّنْصُرُهٗ وَرُسُلَهٗ بِالْغَيْبِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ۝٢٥

कि कौन उसकी और उसके रसूलों की (या'नी दीने इस्लाम की) बिन देखे मदद करता है, बेशक अल्लाह (खुद ही) बड़ी कुव्वतवाला बडे ग़ल्बेवाला है.

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا وَّاِبْرٰهِيْمَ وَجَعَلْنَا فِيْ ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ فَمِنْهُمْ مُّهْتَدٍ ۚ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝٢٦

26. और बेशक हमने नूह और इब्राहीम (عليه السلام) के भेजा और हमने दोनों की औलाद में रिसालत और किताब मुकर्रर फ़रमा दी तो उनमें से (बा'ज़) हिदायत याफ़्ता हैं, और उनमें से अक्सर लोग ना फ़रमान हैं।

ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلٰٓي اٰثَارِهِمْ بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ ڏ وَجَعَلْنَا فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ رَاْفَةً وَّرَحْمَةً ۭ وَرَهْبَانِيَّةَۨ ابْتَدَعُوْهَا مَا كَتَبْنٰهَا عَلَيْهِمْ اِلَّا ابْتِغَاۗءَ رِضْوَانِ اللّٰهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا ۚ فَاٰتَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْهُمْ اَجْرَهُمْ ۚ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝٢٧

27. फिर हमने उन रसूलों के नुक़ूशे क़दम पर (दूसरे) रसूलों को भेजा और हमने उनके पीछे ईसा इब्ने मरयम (عليه السلام) को भेजा और हमने उन्हें इंजील अ़ता की और हमने उन लोगों के दिलों में जो उनकी (या'नी ईसा عليه السلام की सहीह़) पैरवी कर रहे थे शफ़्क़त और रह़मत पैदा कर दी, और रहबानिय्यत (या'नी इबादते इलाही के लिये तर्के दुनिया और लज़्ज़तों से कनारा कशी) की बिद्अ़त उन्हों ने खुद ईजाद कर ली थी, उसे हमने उन पर फ़र्ज़ नहीं किया था, मगर (उन्हों ने रहबानिय्यत की येह बिद्अ़त) महज़ अल्लाह की रज़ा ह़ासिल करने के लिए (शुरूअ़ की थी) फिर उसकी अ़मली निगेह दाश्त का जो ह़क़ था वोह उसकी वैसी निगेहदाश्त न कर सके (या'नी उसे उसी जज़्बे और पाबंदी से जारी न रख सके),सो हमने उन लोगों को जो उनमें से ईमान लाए (और बिदअ़ते रहबानिय्यत को रज़ाए इलाही के लिए जारी रख्खे हुए थे) उनका अज्रो सवाब अ़ता कर दिया और उन में से अक्सर लोग (जो उसके तारिक हो गए और बदल गए) बहुत ना फ़रमान हैं।

يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَاٰمِنُوا بِرَسُولِهٖ يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِنْ رَّحْمَتِهٖ وَ يَجْعَلْ لَّكُمْ نُوْرًا تَمْشُوْنَ بِهٖ وَيَغْفِرْلَكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۙ﴿۲۸﴾

28. ऐ ईमान वालो ! अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो और उस के रसूले (मुकर्रम ﷺ) पर ईमान ले आओ वोह तुम्हें अपनी रह़मत के दो ह़िस्से अ़ता फ़रमाएगा और तुम्हारे लिये नूर पैदा फ़रमा देगा जिस में तुम (दुनिया-व-आख़िरत में) चला करोगे और तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमा देगा, और अल्लाह बहुत बख़्शनेवाला बहुत रहम फ़रमाने वाला है।

لِّئَلَّا يَعْلَمَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَلَّا يَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَيْءٍ مِّنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاَنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ اللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ع ﴿۲۹﴾

29. (येह बयान इस लिए है) कि अहले किताब जान लें कि वोह अल्लाह के फ़ज़्ल पर कुछ कुदरत नहीं रखते और (येह) कि सारा फ़ज़्ल अल्लाह ही के दस्ते कुदरत में है वोह जिसे चाहता है अ़ता फ़रमाता है, और अल्लाह अ़ज़ीम फ़ज़्ल वाला है।

आयातुहा 22 | 58 सूरतुल मुजादलति मदनिय्यतुन 108 | रुकूआतुहा 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नामसे शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّتِيْ تُجَادِلُكَ
فِيْ زَوْجِهَا وَتَشْتَكِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ۖ وَاللّٰهُ
يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ
بَصِيْرٌ ①

1. बेशक अल्लाहने उस औ़रत की बात सुन ली है जो आप से अपने शौहर के बारे में तकरार कर रही थी और अल्लाह से फ़रियाद कर रही थी, और अल्लाह आप दोनों के बाहमी सवालो जवाब सुन रहा था, बेशक अल्लाह खूब सुननेवाला खूब देखनेवाला है।

اَلَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْكُمْ مِّنْ
نِّسَاۗىِٕهِمْ مَّا هُنَّ اُمَّهٰتِهِمْ ۭ اِنْ
اُمَّهٰتُهُمْ اِلَّا الّٰۗـِٔيْ وَلَدْنَهُمْ ۭ وَاِنَّهُمْ
لَيَقُوْلُوْنَ مُنْكَرًا مِّنَ الْقَوْلِ
وَزُوْرًا ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ②

2. तुम में से जो लोग अपनी बीवियों से ज़िहार कर बैठते हैं (या'नी येह केह बैठते हैं कि तुम मुझ पर मेरी मां की पुश्त की तरह हो।) तो (येह केहने से) वोह उनकी माएं नहीं (हो जातीं) उनकी माएं तो सिर्फ़ वोही हैं जिन्हों ने उनको जना है, और बेशक वोह लोग बुरी और झूटी बात केहते हैं और बेशक अल्लाह ज़रूर दर गुज़र फ़रमानेवाला बड़ा बख़्शनेवाला है।

وَالَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْ نِّسَاۗىِٕهِمْ
ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا قَالُوْا فَتَحْرِيْرُ
رَقَبَةٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَاۗسَّا ۭ
ذٰلِكُمْ تُوْعَظُوْنَ بِهٖ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ③

3. और जो लोग अपनी बीवियों से ज़िहार कर बैठें फिर जो कहा है उस से पलटना चाहें तो एक गरदन (गुलाम या बांदी) का आज़ाद करना लाज़िम है क़ब्ल इसके कि वोह एक दूसरे को मस करें, तुम्हें इस बातकी नसीहत की जाती है, और अल्लाह उन कामों से खूब आगाह है जो तुम करते हो।

فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ
مُتَتَابِعَيْنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَاۗسَّا ۚ
فَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ فَاِطْعَامُ سِتِّيْنَ
مِسْكِيْنًا ۭ ذٰلِكَ لِتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ

4. फिर जिसे (गुलाम या बांदी) मुयस्सर न हो तो दो माह मुतवातिर रोज़े रखना (लाज़िम है) क़ब्ल इसके कि वोह एक दूसरे को मस करें, फिर जो शख़्स इसकी (भी) ताक़त न रखे तो साठ मिस्कीनों को खाना खिलाना (लाज़िम है), येह इस लिए कि तुम अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) पर ईमान रखखो, और येह अल्लाह की

رَسُولِهٖ وَتِلْكَ حُدُودُ اللّٰهِ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٤﴾

(मुक़र्रर कर्दह) हुदूद हैं, और काफ़िरों के लिए दर्दनाक अज़ाब है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَآدُّوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ كُبِتُوْا كَمَا كُبِتَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَقَدْ اَنْزَلْنَآ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿٥﴾

5. बेशक जो लोग अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) से अ़दावत रखते हैं वोह इसी तरह ज़लील किए जाएंगे जिस तरह उनसे पहले लोग ज़लील किए जा चुके हैं और बेशक हमने वाज़ेह आयतें नाज़िल फ़रमा दी हैं, और काफ़िरों के लिए ज़िल्लत अंगेज़ अज़ाब है।

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا اَحْصٰىهُ اللّٰهُ وَنَسُوْهُ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿٦﴾

6. जिस दिन अल्लाह उन सब लोगों को (दोबारा ज़िन्दा कर के) उठाएगा फिर उन्हें उनके आ'माल से आगाह फ़रमाएगा, अल्लाहने (उनके) हर अ़मल को शुमार कर रखा है हालांकि वोह उसे भूल (भी) चुके हैं, और अल्लाह हर चीज़ पर मुत्तला' (और आगाह) है।

ع

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ مَا يَكُوْنُ مِنْ نَّجْوٰى ثَلٰثَةٍ اِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ اِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَآ اَدْنٰى مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْثَرَ اِلَّا هُوَ مَعَهُمْ اَيْنَ مَا كَانُوْا ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٧﴾

7. (ऐ इन्सान !) क्या तुझे मा'लूम नहीं कि अल्लाह उन सब चीज़ों को जानता है जो आस्मानों में हैं और जो ज़मीन में हैं,कहीं भी तीन (आदमियों) की कोई सरगोशी नहीं होती मगर येह कि वोह (अल्लाह अपने मुहीत इ़ल्मो आगही के साथ) उनका चौथा होता है और न ही कोई पांच (आदमियों) की सरगोशी होती है मगर वोह (अपने इ़ल्मे मुहीत के साथ) उनका छटा होता है, और न उससे कम (लोगों) की और न ज़ियादा की मगर वोह (हमेशा) उनके साथ होता है जहां कहीं भी वोह होते हैं, फिर वोह क़ियामत के दिन उन्हें उन कामों से ख़बरदार करेगा जो वोह करते रहे थे, बेशक अल्लाह हर चीज़ को खूब जाननेवाला है।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نُهُوْا عَنِ النَّجْوٰى ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَيَتَنٰجَوْنَ بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ

8. क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें सरगोशियों से मना' किया था फिर वोह लोग वोही काम करने लगे जिससे रोके गए थे और वोह गुनाह और सरकशी और ना फ़रमानिए रसूल (ﷺ) से मुतअ़ल्लिक़ सरगोशियां

وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ ۫ وَ اِذَا جَآءُوْكَ
حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللّٰهُ ۙ وَ
يَقُوْلُوْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ لَوْ لَا يُعَذِّبُنَا
اللّٰهُ بِمَا نَقُوْلُ ؕ حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ ۚ
يَصْلَوْنَهَا ۚ فَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۸﴾

करते हैं और जब आप के पास हाज़िर होते हैं तो आपको उन (ना ज़ेबा) कलिमात के साथ सलाम करते हैं जिनसे अल्लाहने आपको सलाम नहीं फ़रमाया और अपने दिलों में केहते हैं कि (अगर येह रसूल सच्चे हैं तो) अल्लाह हमें इन (बातों) पर अज़ाब क्यों नहीं देता जो हम केहते हैं? उन्हें दोज़ख़ (का अज़ाब) ही काफ़ी है, वोह उसीमें दाख़िल होंगे, और वोह बहुत ही बुरा ठिकाना है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا تَنَاجَيْتُمْ
فَلَا تَتَنَاجَوْا بِالْاِثْمِ وَ الْعُدْوَانِ وَ
مَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ وَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ
وَ التَّقْوٰى ؕ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ
اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۹﴾

9. ऐ ईमानवालो ! जब तुम आपस में सरगोशी करो तो गुनाह और ज़ुल्मो सरकशी और ना फ़रमानिए रिसालत मआब (ﷺ) की सरगोशी न किया करो और नेकी और परहेज़गारी की बात एक दूसरे के कान में केह लिया करो, और अल्लाह से डरते रहो जिसकी तरफ़ तुम सब जमा' किए जाओगे।

اِنَّمَا النَّجْوٰى مِنَ الشَّيْطٰنِ لِيَحْزُنَ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ لَيْسَ بِضَآرِّهِمْ
شَيْـًٔا اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ
فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۰﴾

10. (मन्फ़ी और तख़रीबी) सरगोशी महज़ शैतान ही की तरफ़ से होती है ताकि वोह ईमानवालों को परेशान करे हालांकि वोह (शैतान) उन (मोमिनों) का कुछ बिगाड़ नहीं सक्ता मगर अल्लाह के हुक्म से, और अल्लाह ही पर मोमिनों को भरोसा रखना चाहिए।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا قِيْلَ لَكُمْ
تَفَسَّحُوْا فِي الْمَجٰلِسِ فَافْسَحُوْا
يَفْسَحِ اللّٰهُ لَكُمْ ۚ وَ اِذَا قِيْلَ
انْشُزُوْا فَانْشُزُوْا يَرْفَعِ اللّٰهُ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۙ وَالَّذِيْنَ
اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ ؕ وَ اللّٰهُ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿۱۱﴾

11. ऐ ईमानवालो ! जब तुम से कहा जाए कि (अपनी) मज्लिसों में कुशादगी पैदा करो तो कुशादा हो जाया करो अल्लाह तुम्हें कुशादगी अ़ता फ़रमाएगा और जब कहा जाए खड़े हो जाओ तो तुम खड़े हो जाया करो, अल्लाह उन लोगों के दरजात बुलंद फ़रमा देगा, जो तुम में से ईमान लाए और जिन्हें इल्म से नवाज़ा गया, और अल्लाह उन कामों से जो तुम करते हो खूब आगाह है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا اِذَا نَاجَيۡتُمُ الرَّسُوۡلَ فَقَدِّمُوۡا بَيۡنَ يَدَىۡ نَجۡوٰٮكُمۡ صَدَقَةً ؕ ذٰلِكَ خَيۡرٌ لَّـكُمۡ وَاَطۡهَرُ ؕ فَاِنۡ لَّمۡ تَجِدُوۡا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿۱۲﴾

12. ऐ ईमानवालो ! जब तुम रसूल (ﷺ) से कोई राज़ की बात तन्हाईमें अ़र्ज़ करना चाहो तो अपनी राज़दाराना बात केहने से पहले कुछ सदक़ा-व-ख़ैरात कर लिया करो, येह (अ़मल) तुम्हारे लिए बेहतर और पाकीज़ा तर है, फिर अगर (ख़ैरात के लिए) कुछ न पाओ तो बेशक अल्लाह बहुत बख़्शनेवाला बहुत रह़म फ़रमानेवाला है।

ءَاَشۡفَقۡتُمۡ اَنۡ تُقَدِّمُوۡا بَيۡنَ يَدَىۡ نَجۡوٰٮكُمۡ صَدَقٰتٍ ؕ فَاِذۡ لَمۡ تَفۡعَلُوۡا وَتَابَ اللّٰهُ عَلَيۡكُمۡ فَاَقِيۡمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيۡعُوا اللّٰهَ وَرَسُوۡلَهٗ ؕ وَاللّٰهُ خَبِيۡرٌۢ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ ﴿۱۳﴾ ع

13. क्या (बारगाहे रिसालत (ﷺ)में) तन्हाई-व-राज़दारी के साथ बात करने से क़ब्ल सदक़ातो ख़ैरात देने से तुम घबरा गए? फिर जब तुमने (ऐसा) न किया और अल्लाहने तुमसे बाज़ पुर्स उठा ली (या'नी येह पाबंदी उठा दी) तो (अब) नमाज़ क़ाइम रखखो और ज़कात अदा करते रहे और अल्लाह और उस के रसूल (ﷺ) की इताअ़त बजा लाते रहो, और अल्लाह तुम्हारे सब कामों से ख़ूब आगाह है।

اَلَمۡ تَرَ اِلَى الَّذِيۡنَ تَوَلَّوۡا قَوۡمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيۡهِمۡ ؕ مَا هُمۡ مِّنۡكُمۡ وَلَا مِنۡهُمۡ ۙ وَيَحۡلِفُوۡنَ عَلَى الۡكَذِبِ وَهُمۡ يَعۡلَمُوۡنَ ﴿۱۳﴾

14. क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा जो ऐसी जमाअ़त के साथ दोस्ती रखते हैं जिन पर अल्लाहने गज़ब फ़रमाया, न वोह तुममें से हैं और उनमें से हैं और झूटी क़स्में खाते हैं ह़ालांकि वोह जानते हैं।

اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمۡ عَذَابًا شَدِيۡدًا ؕ اِنَّهُمۡ سَآءَ مَا كَانُوۡا يَعۡمَلُوۡنَ ﴿۱۵﴾

15. अल्लाहने उनके लिये सख़्त अ़ज़ाब तैयार फ़रमा रखखा है, बेशक वोह बुरा (काम) है जो वोह कर रहे हैं।

اِتَّخَذُوۡۤا اَيۡمَانَهُمۡ جُنَّةً فَصَدُّوۡا عَنۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ فَلَهُمۡ عَذَابٌ مُّهِيۡنٌ ﴿۱۶﴾

16. उन्होंने अपनी (झूटी) क़स्मों को ढाल बना लिया है सो वोह (दूसरों को) राहे ख़ुदा से रोकते हैं, पस उनके लिये ज़िल्लत अंगेज़ अ़ज़ाब है।

لَنۡ تُغۡنِىَ عَنۡهُمۡ اَمۡوَالُهُمۡ وَلَاۤ

17. अल्लाह (के अ़ज़ाब) से हरगिज़ न ही उनके माल

اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَیْـًٔا ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ؕ هُمْ فِیْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۱۷﴾

उन्हें बचा सकेंगे और न उनकी औलाद ही (उन्हें बचा सकेंगी) येही लोग अहले दोज़ख़ हैं, वोह उसमें हमेशा रेहनेवाले हैं।

یَوْمَ یَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِیْعًا فَیَحْلِفُوْنَ لَهٗ كَمَا یَحْلِفُوْنَ لَكُمْ وَ یَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ عَلٰى شَیْءٍ ؕ اَلَاۤ اِنَّهُمْ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ﴿۱۸﴾

18. जिस दिन अल्लाह उन सब को (दोबारा ज़िन्दा करके) उठाएगा तो वोह उसके हुज़ूर (भी) क़स्में खा जाएंगे जैसे तुम्हारे सामने क़स्में खाते हैं और वोह गुमान करते हैं कि वोह किसी (अच्छी) शय (या'नी रविश) पर हैं आगाह रहो कि येह लोग झूटे हैं।

اِسْتَحْوَذَ عَلَیْهِمُ الشَّیْطٰنُ فَاَنْسٰىهُمْ ذِكْرَ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ حِزْبُ الشَّیْطٰنِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ حِزْبَ الشَّیْطٰنِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۱۹﴾

19. उन पर शैतानने ग़ल्बा पा लिया है सो उसने उन्हें अल्लाह का ज़िक्र भुला दिया है, येही लोग शैतान का लश्कर हैं, जान लो कि बेशक शैतानी गिरोह के लोग ही नुक़्सान उठानेवाले हैं।

اِنَّ الَّذِیْنَ یُحَآدُّوْنَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗۤ اُولٰٓئِكَ فِی الْاَذَلِّیْنَ ﴿۲۰﴾

20. बेशक जो अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) से अ़दावत रखते हैं वोही ज़लील तरीन लोगों में से हैं।

كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَ رُسُلِیْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِیٌّ عَزِیْزٌ ﴿۲۱﴾

21. अल्लाहने लिख दिया है कि यक़ीनन मैं और मेरे रसूल ज़रूर ग़ालिब हो कर रहेंगे, बेशक अल्लाह बड़ी क़ुव्वतवाला बड़े ग़ल्बेवाला है।

لَا تَجِدُ قَوْمًا یُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ الْیَوْمِ الْاٰخِرِ یُوَآدُّوْنَ مَنْ حَآدَّ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَ لَوْ كَانُوْۤا اٰبَآءَهُمْ اَوْ اَبْنَآءَهُمْ اَوْ اِخْوَانَهُمْ اَوْ عَشِیْرَتَهُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ كَتَبَ فِیْ قُلُوْبِهِمُ الْاِیْمَانَ وَ اَیَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ ؕ وَ یُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ مِنْ

22. आप उन लोगों को जो अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान रखते हैं कभी उस शख़्स से दोस्ती करते हुए न पाएंगे जो अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) से दुश्मीन रखता है ख़्वाह वोह उनके बाप (और दादा) हों या बेटे (और पोते) हों या उनके भाई हों या उनके क़रीबी रिश्तेदार हों, येही वोह लोग हैं जिनके दिलोंमें उस (अल्लाह)ने ईमान सब्त फ़रमा दिया है और उन्हें अपनी रूह (या'नी फ़ैज़े ख़ास) से तक़विय्यत बख़्शी है, और उन्हें (ऐसी) जन्नतों में दाख़िल फ़रमाएगा जिनके नीचे से नेहरें

تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَ رَضُوْا عَنْهُ ؕ اُولٰٓئِكَ حِزْبُ اللّٰهِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۲۲﴾

बेह रही हैं वोह उनमें हमेशा रेहनेवाले हैं, अल्लाह उनसे राज़ी हो गया है और वोह अल्लाह से राज़ी हो गए हैं, येही अल्लाह (वालों) की जमाअ़त है, याद रख्खो ! बेशक अल्लाह (वालों) की जमाअ़त ही मुराद पानेवाली है।

ع ۳

आयातुहा 24	59 सूरतुल हश्रि मदनिय्यतुन 101	रुकूआतुहा 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नामसे शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۱﴾

1. जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीनमें है (सब) अल्लाह की तस्बीह़ करते हैं और वोही ग़ालिब है हिक्मतवाला है।

هُوَ الَّذِيْٓ اَخْرَجَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِاَوَّلِ الْحَشْرِ ؔؕ مَا ظَنَنْتُمْ اَنْ يَّخْرُجُوْا وَ ظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مَّانِعَتُهُمْ حُصُوْنُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَاَتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوْا ۗ وَ قَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ يُخْرِبُوْنَ بُيُوْتَهُمْ بِاَيْدِيْهِمْ وَ اَيْدِي الْمُؤْمِنِيْنَ ۗ فَاعْتَبِرُوْا يٰٓاُولِي الْاَبْصَارِ ﴿۲﴾

وقف النبي صلى الله عليه وسلم

2. वोही है जिसने उन काफ़िर किताबियों को (या'नी बनू नज़ीर को) पहली जिला वतनीमें घरों से (जमा' कर के मदीने से शाम की तरफ़) निकाल दिया, तुम्हें येह गुमान (भी) न था कि वोह निकल जाएंगे और उन्हें येह गुमान था कि उनके मज़बूत क़िल्ए उन्हें अल्लाह (की गिरफ़्त) से बचा लेंगे, फिर अल्लाह (के अ़ज़ाब)ने उनको वहां से आ लिया जहां से वोह गुमान (भी) न कर सक्ते थे, और उस (अल्लाह)ने उनके दिलों में रो'बो दबदबा डाल दिया वोह अपने घरों को अपने हाथों और अहले ईमान के हाथों वीरान कर रहे थे, पस ऐ दीदए बीनावालो ! (इससे) इब्रत ह़ासिल करो।

وَ لَوْ لَاۤ اَنْ كَتَبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَآءَ لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا ؕ وَ لَهُمْ

3. और अल्लाहने उनके ह़क़में जिला वतनी लिख न दी होती तो वोह उन्हें दुनिया में(और सख़्त) अ़ज़ाब देता,

فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ﴿۳﴾

और उनके लिये आख़िरत में (भी) दोज़ख़का अ़ज़ाब है।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ يُّشَآقِّ اللّٰهَ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿۴﴾

4. येह इस वजह से हुआ कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) से शदीद अ़दावत की (उनका सरग़ना का'ब बिन अशरफ़ बदनाम गुस्ताख़े रसूल ﷺ था) और जो शख़्स अल्लाह (और रसूल ﷺ की) मुख़ालिफ़त करता है तो बेशक अल्लाह सख़्त अ़ज़ाब देनेवाला है।

مَا قَطَعْتُمْ مِّنْ لِّيْنَةٍ اَوْ تَرَكْتُمُوْهَا قَآئِمَةً عَلٰٓى اُصُوْلِهَا فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيُخْزِيَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿۵﴾

5. ऐ मोमिनो ! यहूद बनू नज़ीर के मुहा़सिरे के दौरान) जो खजूर के दरख़्त तुम ने काट डाले या तुमने उन्हें उनकी जडों पर खड़ा छोड़ दिया तो (येह सब) अल्लाह ही के हुक्म से था और इस लिये कि वोह ना फ़रमानों को ज़लीलो रुस्वा करे।

وَمَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْهُمْ فَمَآ اَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَّلَا رِكَابٍ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهٗ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۶﴾

6. और जो (अम्वाले फ़ै) अल्लाह ने उनसे (निकाल कर) अपने रसूल (ﷺ) पर लौटा दिए तो तुमने न तो उन (के हुसूल) पर घोड़े दौड़ाए थे और न ऊंट, हां ! अल्लाह अपने रसूलों को जिस पर चाहता है ग़ल्बा-व-तसल्लुत अ़ता फ़रमा देता है, और अल्लाह हर चीज़ पर बड़ी क़ुद्रत रखने वाला है।

مَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْ اَهْلِ الْقُرٰى فَلِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ كَيْ لَا يَكُوْنَ دُوْلَةًۢ بَيْنَ الْاَغْنِيَآءِ مِنْكُمْ ۭ وَمَآ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۤ وَمَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ

7. जो (अम्वाले फ़ै) अल्लाह ने (क़ुरैज़ा, नज़ीर, फ़िदक, ख़ैबर, उ़रैना समैत दीगर जंग के मफ़्तूहा) बस्तियोंवालों से (निकाल कर) अपने रसूल (ﷺ) पर लौटाए हैं वोह अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) के लिए हैं और (रसूल ﷺ के) क़राबत दारों (या'नी बनू हाशिम और बनू अल-मुत्तलिब) के लिए और (मुआ़शरे के आ़म) यतीमों और मोहताजों और मुसाफ़िरों के लिए हैं (येह निज़ामे तक़्सीम इसलिए है) ताकि (सारा माल सिर्फ़) तुम्हारे मालदारों के दरमियान ही न गर्दिश करता रहे (बल्कि मुआ़शरे के तमाम तब्क़ात में गर्दिश करे) और जो कुछ

شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝٧

रसूल (ﷺ) तुम्हें अ़ता फ़रमाएं सो उसे ले लिया करो और जिससे तुम्हें मना' फ़रमाएं सो (उससे) रुक जाया करो, और अल्लाह से डरते रहो (या'नी रसूल ﷺ की तक़्सीमो अ़ता पर कभी ज़बाने ता'न न खोलो) बेशक अल्लाह सख़्त अ़ज़ाब देनेवाला है।

لِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَ اَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَ رِضْوَانًا وَّ يَنْصُرُوْنَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ۝٨

8. (मज़्कूरा बाला माले फ़ै) नादार मुहाजिरीन के लिए (भी) है जो अपने घरों और अपने अम्वाल (और जाइदादों) से बाहर निकाल दिए गए हैं, वोह अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रज़ा-व-खुशनूदी चाहते हैं और (अपने मालो वतन की क़ुरबानी से) अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की मदद करते हैं, येही लोग ही सच्चे मोमिन हैं।

وَ الَّذِيْنَ تَبَوَّؤُ الدَّارَ وَ الْاِيْمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ اِلَيْهِمْ وَ لَا يَجِدُوْنَ فِيْ صُدُوْرِهِمْ حَاجَةً مِّمَّآ اُوْتُوْا وَ يُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَ لَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ؕ وَ مَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝٩

9. (येह माल उन अन्सार के लिये भी है) जिन्हों ने उन (मुहाजिरीन) से पहले ही शहरे (मदीना) और ईमान को घर बना लिया था। येह लोग उनसे मह़ब्बत करते हैं जो उनकी तरफ़ हिजरत कर के आए हैं, और येह अपने सीनोंमें (माल) की निस्बत कोई तलब (या तंगी) नहीं पाते जो उन (मुहाजिरीन) को दिया जाता है और अपनी जानों पर उन्हें तर्जीह़ देते हैं अगरचे खुद उन्हें शदीद ह़ाजत ही हो, और जो शख़्स अपने नफ़्स के बुख़्ल से बचा लिया गया पस वोही लोग ही बा मुरादो कामयाब हैं।

وَ الَّذِيْنَ جَآءُوْ مِنْۢ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَ لِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ وَ لَا تَجْعَلْ فِيْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَآ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝١٠

10. और वोह लोग (भी) जो उन (मुहाजिरीनो अन्सार) के बा'द आए (और) अ़र्ज़ करते हैं : ऐ हमारे रब ! हमें बख़्श दे और हमारे उन भाइयों को भी, जो ईमान लाने में हम से आगे बढ़ गए और हमारे दिलों में ईमानवालों के लिए कोई कीना-व-बुग्ज़ बाक़ी न रख, ऐ हमारे रब ! बेशक तू बहुत शफ़्क़त फ़रमानेवाला बहुत रह़म फ़रमानेवाला है।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نَافَقُوْا يَقُوْلُوْنَ لِاِخْوَانِهِمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَئِنْ اُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَ لَا نُطِيْعُ فِيْكُمْ اَحَدًا اَبَدًا ۙ وَّ اِنْ قُوْتِلْتُمْ لَنَنْصُرَنَّكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۱۱﴾

11. क्या आपने मुनाफ़िक़ों को नहीं देखा जो अपने उन भाइयों से केहते हैं जो अहले किताबमें से काफ़िर हो गए हैं कि अगर तुम (यहां से) निकाले गए तो हम भी ज़रूर तुम्हारे साथ ही निकल चलेंगे और हम तुम्हारे मुआ़मले में कभी भी किसी एक की भी इताअ़त नहीं करेंगे और अगर तुमसे जंग की गई तो हम ज़रूर-बिज़-ज़रूर तुम्हारी मदद करेंगे, और अल्लाह गवाही देता है कि वोह यक़ीनन झूटे है।

لَئِنْ اُخْرِجُوْا لَا يَخْرُجُوْنَ مَعَهُمْ ۚ وَلَئِنْ قُوْتِلُوْا لَا يَنْصُرُوْنَهُمْ ۚ وَ لَئِنْ نَّصَرُوْهُمْ لَيُوَلُّنَّ الْاَدْبَارَ ۫ ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿۱۲﴾

12. अगर वोह (कुफ़्फ़ारे यहूद मदीना से) निकाल दिए गए तो येह (मुनाफ़िक़ीन) उनके साथ (कभी) नहीं निक्लेंगे, और अगर उनसे जंग की गई तो येह उनकी मदद नहीं करेंगे, और अगर उन्होंने उनकी मदद की (भी) तो ज़रूर पीठ फेर कर भाग जाएंगे, फिर उनकी मदद (कहीं से) न हो सकेगी।

لَاَنْتُمْ اَشَدُّ رَهْبَةً فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنَ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿۱۳﴾

13. (ऐ मुसल्मानो !) बेशक उनके दिलों में अल्लाह से (भी) ज़ियादा तुम्हारा रो'ब और ख़ौफ़ है, येह इस वजह से कि वोह ऐसे लोग हैं जो समझ ही नहीं रखते।

لَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ جَمِيْعًا اِلَّا فِيْ قُرًى مُّحَصَّنَةٍ اَوْ مِنْ وَّرَآءِ جُدُرٍ ؕ بَاْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيْدٌ ؕ تَحْسَبُهُمْ جَمِيْعًا وَّقُلُوْبُهُمْ شَتّٰى ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ﴿۱۴﴾ۚ

14. वोह (मदीने के यहूद और मुनाफ़िक़ीन) सब मिल कर (भी) तुमसे जंग न कर सकेंगे सिवाए क़िल्आ़ बंद शहरों में या दीवारों की आड़में, उनकी लड़ाई उनके आपस में (ही) सख़्त है, तुम उन्हें इकठ्ठा समझते हो हालांकि उनके दिल बाहम मुतफ़र्रिक़ हैं, येह इसलिए कि वोह लोग अ़क़्ल से काम नहीं लेते।

كَمَثَلِ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيْبًا ذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۵﴾ۚ

15. (उनका हाल)उन लोगों जैसा है जो उनसे पहले ज़मानए क़रीब में ही अपनी शामते आ'माल का मज़ा चख चुके हैं (या'नी बद्र में मुशरिकीने मक्का, और यहूद में से बनू नज़ीर,बनू क़ैनक़ाअ़-व-बनू क़ुरैज़ा वग़ैरह) और उनके लिए (आख़िरत में भी) दर्दनाक अ़ज़ाब है।

كَمَثَلِ الشَّیْطٰنِ اِذْ قَالَ لِلْاِنْسَانِ اكْفُرْ ۚ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ اِنِّیْ بَرِیْٓءٌ مِّنْكَ اِنِّیْٓ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۶﴾

16. (मुनाफ़िक़ों की मिसाल) शैतान जैसी है जब वोह इन्सान से केहता है कि तू काफ़िर हो जा, फिर जब वोह काफ़िर हो जाता है तो (शैतान) केहता है मैं तुझ से बेज़ार हूं, बेशक मैं अल्लाह से डरता हूं जो तमाम जहानों का रब है ।

فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَآ اَنَّهُمَا فِی النَّارِ خَالِدَیْنِ فِیْهَا ؕ وَ ذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِیْنَ ﴿۱۷﴾

17. फिर उन दोनों का अंजाम येह होगा कि वोह दोनों दोज़ख़ में होंगे हमेशा उसी में रहेंगे, और ज़ालिमों की येही सज़ा है।

یٰٓاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِیْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۸﴾

18. ऐ ईमानवालो ! तुम अल्लाह से डरते रहो और हर शख़्स को देखते रेहना चाहिए कि उसने कल (क़ियामत) के लिए आगे क्या भेजा है, और तुम अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह उन कामों से बा ख़बर है जो तुम करते हो।

وَ لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِیْنَ نَسُوا اللّٰهَ فَاَنْسٰىهُمْ اَنْفُسَهُمْ ؕ اُولٰٓىِٕكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۱۹﴾

19. और उन लोगों की तरह न हो जाओ जो अल्लाह को भुला बैठे फिर अल्लाहने उनकी जानों को भी उनसे भुला दिया (कि वोह अपनी जानों के लिए भी कुछ भलाई आगे भेज देते) वोही लोग ना फ़रमान हैं।

لَا یَسْتَوِیْٓ اَصْحٰبُ النَّارِ وَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ؕ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَآىِٕزُوْنَ ﴿۲۰﴾

20. अहले दोज़ख़ और अहले जन्नत बराबर नहीं हो सक्ते, अहले जन्नत ही कामयाबो कामरान हैं।

لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ لَّرَاَیْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْیَةِ اللّٰهِ ؕ وَ تِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ یَتَفَكَّرُوْنَ ﴿۲۱﴾

21. अगर हम येह क़ुर्आन किसी पहाड़ पर नाज़िल फ़रमाते तो (ऐ मुख़ातिब !) तू उसे देखता कि वोह अल्लाह के ख़ौफ़ से झुक जाता, फट कर पाश पाश हो जाता और येह मिसालें हम लोगों के लिए बयान कर रहे हैं ताकि वोह ग़ौरो फ़िक्र करें।

هُوَ اللّٰهُ الَّذِیْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَیْبِ وَ الشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ ﴿۲۲﴾

22. वोही अल्लाह है जिसके सिवा मा'बूद नहीं, पोशीदह और ज़ाहिर को जाननेवाला है, वोही बेह़द रह़मत फ़रमानेवाला निहायत महरबान।

هُوَ اللّٰهُ الَّذِیْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَیْمِنُ الْعَزِیْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا یُشْرِكُوْنَ ﴿۲۳﴾

23. वोही अल्लाह है जिसके सिवा कोई मा'बूद नहीं (ह़क़ीक़ी) बादशाह है हर ऐब से पाक है, हर नुक़्स से सालिम (और सलामती देनेवाला) है, अम्नो अमान देनेवाला, (और मो'जिज़ात के ज़रीए रसूलों की तस्दीक़ फ़रमानेवाला) है मुहाफ़िज़ो निगेहबान है, ग़ल्बा-व-इ़ज़्ज़तवाला है, ज़बर दस्त अ़ज़मतवाला है, सल्तनतो किब्रियाईवाला है, अल्लाह हर उस चीज़ से पाक है जिस वोह उसका शरीक ठेहराते हैं।

هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰی ؕ یُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ وَ هُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ﴿۲۴﴾

24. वोही अल्लाह है जो पैदा फ़रमानेवाला है, अ़दम से वुजूद में लानेवाला (या'नी ईजाद फ़रमानेवाला) है, सूरत अ़ता फ़रमानेवाला है, (अल ग़रज़) सब अच्छे नाम उसी के हैं, उसके लिए वोह (सब) चीज़ें तस्बीह़ करती हैं जो आस्मानों और ज़मीन में हैं, और वोह बड़ी इ़ज़्ज़तवाला है और बड़ी ह़िक्मतवाला है।

ع ٣ ٦

आयातुहा 13 | 60 सूरतुल मुम्तह़िनति मदनिय्यतुन 91 | रुकूआतुहा 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا عَدُوِّیْ وَ عَدُوَّكُمْ اَوْلِیَآءَ تُلْقُوْنَ اِلَیْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ وَ قَدْ كَفَرُوْا بِمَا جَآءَكُمْ مِّنَ الْحَقِّ ۚ یُخْرِجُوْنَ

1. ऐ ईमानवालो ! तुम मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ तुम (अपनी) दोस्ती के बाइ़स उन तक ख़बरें पहुंचाते हो हालांकि वोह ह़क़ के ही मुन्किर हैं जो तुम्हारे पास आया है, वोह रसूल (ﷺ) को और तुमको इस वजह से (तुम्हारे वतन से) निकालते हैं कि तुम अल्लाह पर

الرَّسُوْلَ وَاِيَّاكُمْ اَنْ تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ رَبِّكُمْ ؕ اِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا فِيْ سَبِيْلِيْ وَابْتِغَآءَ مَرْضَاتِيْ ۖ تُسِرُّوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ ۖ وَاَنَا اَعْلَمُ بِمَآ اَخْفَيْتُمْ وَمَآ اَعْلَنْتُمْ ؕ وَمَنْ يَّفْعَلْهُ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ①

जो तुम्हारा पर्वरदिगार है, ईमान ले आए हो, अगर तुम मेरी राह में जिहाद करने और मेरी रज़ा तलाश करने के लिए निक्ले हो (तो फिर उनसे दोस्ती न रखखो) तुम उनकी तरफ़ दोस्ती के खुफ़्या पैग़ाम भेजते हो हालांकि मैं खूब जानता हूं जो कुछ तुम छुपाते हो और जो कुछ तुम आशकार करते हो और जो शख़्स भी तुम में से येह (ह़रकत) करे सो वोह सीधी राह से भटक गया है।

اِنْ يَّثْقَفُوْكُمْ يَكُوْنُوْا لَكُمْ اَعْدَآءً وَّيَبْسُطُوْٓا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ وَاَلْسِنَتَهُمْ بِالسُّوْٓءِ وَوَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ ؕ ②

2. अगर वोह तुम पर क़ुदरत पा लें तो (देखना) वोह तुम्हारे (खुले) दुश्मन होंगे और वोह अपने हाथ और अपनी ज़बानें तुम्हारी तरफ़ बुराई के साथ दराज़ करेंगे और आरज़ू मंद होंगे कि तुम (किसी तरह) काफ़िर हो जाओ।

لَنْ تَنْفَعَكُمْ اَرْحَامُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ ۚ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ③

معانقة ١٢ — السباع الوقف على القيٰمة

3. तुम्हें क़ियामत के दिन हरगिज़ न तुम्हारी (काफ़िरो मुशरिक) क़राबतें फ़ाइदा देंगी और न तुम्हारी (काफ़िरो मुशरिक) औलाद, (उस दिन अल्लाह) तुम्हारे दरमियान मुकम्मल जुदाई कर देगा (मोमिन जन्नतमें और काफ़िर दोज़ख़ में भेज दिए जाएंगे) और अल्लाह उन कामों को खूब देखनेवाला है जो तुम कर रहे हो।

قَدْ كَانَتْ لَكُمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ ۚ اِذْ قَالُوْا لِقَوْمِهِمْ اِنَّا بُرَءٰٓؤُا مِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۫ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَآءُ اَبَدًا حَتّٰى تُؤْمِنُوْا

4. बेशक तुम्हारे लिए इब्राहीम (عليه السلام) में और उनके साथियों में बेहतरीन नमूनए (इक़्तिदा) है, जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा : हम तुम से और उन बुतों से जिनकी तुम अल्लाह के सिवा पूजा करते हो कुल्लिय्यतन बेज़ार (और ला तअ़ल्लुक़) हैं, हमने तुम सब का खुला इन्कार किया हमारे और तुम्हारे दरमियान दुश्मनी और नफ़रतो इ़नाद हमेशा के लिये ज़ाहिर हो चुका, यहां तक कि तुम एक अल्लाह पर ईमान ले आओ, मगर इब्राहीम (عليه السلام) का

بِاللّٰهِ وَحْدَهٗٓ اِلَّا قَوْلَ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ لَاَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَ مَآ اَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَ اِلَيْكَ اَنَبْنَا وَ اِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ﴿۴﴾

अपने (परवरिश करनेवाले) बाप से येह केहना कि मैं तुम्हारे लिए ज़रूर बख़्शिश तलब करूंगा (फ़क़त पहले का किया हुआ एक वा'दा था जो उन्होंने पूरा कर दिया और साथ यूं जता भी दिया) और येह कि मैं तुम्हारे लिए (तुम्हारे कुफ़्रो शिर्क के बाइस) अल्लाह के हुज़ूर किसी चीज़ का मालिक नहीं हूं (फिर वोह येह दुआ कर के क़ौम से अलग हो गए) ऐ हमारे रब ! हमने तुझ पर ही भरोसा किया और हमने तेरी तरफ़ ही रुजूअ़ किया और (सब को) तेरी ही तरफ़ लौटना है।

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ اغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۵﴾

5. ऐ हमारे रब ! तू हमें काफ़िरों के लिए सबबे आज़माइश न बना (या'नी उन्हें हम पर मुसल्लत न कर) और हमें बख़्श दे, ऐ हमारे परवरदिगार ! बेशक तू ही ग़ल्बा-व-इ़ज़्ज़तवाला बड़ी हिक्मतवाला है।

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْهِمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَ الْيَوْمَ الْاٰخِرَ ؕ وَ مَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿۶﴾ ع

6. बेशक तुम्हारे लिए इनमें बेहतरीन नमूनए (इक़्तिदा) है (ख़ास तौर पर)हर उस शख़्स के लिए जो अल्लाह (की बारगाह में हाज़िरी) की और यौमे आख़िरत की उम्मीद रखता है, और जो शख़्स रू गर्दानी करता है तो बेशक अल्लाह बेनियाज़ व लाइक़े हर ह़म्दो सना है।

عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَ بَيْنَ الَّذِيْنَ عَادَيْتُمْ مِّنْهُمْ مَّوَدَّةً ؕ وَ اللّٰهُ قَدِيْرٌ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۷﴾

7. अ़जब नहीं कि अल्लाह तुम्हारे और उनमें से बा'ज़ लोगों के दरमियान जिनसे तुम्हारी दुश्मनी है, (किसी वक़्त बाद में) दोस्ती पैदा कर दे और अल्लाह बड़ी क़ुदरतवाला है, और अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

لَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ لَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَ لَمْ يُخْرِجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْهُمْ وَ تُقْسِطُوْٓا

8. अल्लाह तुम्हें इस बात से मना' नहीं फ़रमाता कि जिन लोगों में तुम से दीन (के बारे) में जंग नहीं की और न तुम्हें तुम्हारे घरों से (या'नी वतनसे) निकाला है कि तुम उनसे भलाई का सुलूक करो और उनसे अ़द्लो इन्साफ़ का

إِلَيْهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ﴿٨﴾

बरताव करो,बेशक अल्लाह अद्लो इन्साफ़ करनेवालों को पसंद फ़रमाता है।

إِنَّمَا يَنْهَاكُمُ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ قَاتَلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَأَخْرَجُوكُم مِّن دِيَارِكُمْ وَظَاهَرُوا عَلَىٰ إِخْرَاجِكُمْ أَن تَوَلَّوْهُمْ ۚ وَمَن يَتَوَلَّهُمْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٩﴾

9. अल्लाह तो महज़ तुम्हें ऐसे लोगों से दोस्ती करने से मना' फ़रमाता है जिन्होंने तुमसे दीन (के बारे)में जंग की और तुम्हें तुम्हारे घरों (या'नी वतन) से निकाला और तुम्हारे बाहर निकाले जाने पर (तुम्हारे दुश्मनों की) मदद की, और जो शख़्स उनसे दोस्ती करेगा तो वोही लोग ज़ालिम हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا جَاءَكُمُ الْمُؤْمِنَاتُ مُهَاجِرَاتٍ فَامْتَحِنُوهُنَّ ۖ اللَّهُ أَعْلَمُ بِإِيمَانِهِنَّ ۖ فَإِنْ عَلِمْتُمُوهُنَّ مُؤْمِنَاتٍ فَلَا تَرْجِعُوهُنَّ إِلَى الْكُفَّارِ ۖ لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّونَ لَهُنَّ ۖ وَآتُوهُم مَّا أَنفَقُوا ۚ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ أَن تَنكِحُوهُنَّ إِذَا آتَيْتُمُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ ۚ وَلَا تُمْسِكُوا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ وَاسْأَلُوا مَا أَنفَقْتُمْ وَلْيَسْأَلُوا مَا أَنفَقُوا ۚ ذَٰلِكُمْ حُكْمُ اللَّهِ ۖ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١٠﴾

10. ऐ ईमानवालो ! जब तुम्हारे पास मोमिन औ़रतें हिजरत कर के आएं तो उन्हें अच्छी तरह जांच लिया करो, अल्लाह उनके ईमान (की ह़क़ीक़त) से ख़ूब आगाह है, फिर अगर तुम्हें उनके मोमिन होने का यक़ीन हो जाए तो उन्हें काफ़िरों की तरफ़ वापस न भेजो, न येह (मोमिनात) उन (काफिरों) के लिए ह़लाल हैं और न वोह (कुफ़्फ़ार) इन (मोमिन औ़रतों)के लिये ह़लाल हैं और उन (काफ़िरों)ने जो (माल बसूरते महर) उन पर ख़र्च किया हो वोह उनको अदा कर दो, और तुम पर इस (बात) में कोई गुनाह नहीं कि तुम उनसे निकाह़ कर लो जबकि तुम उन (औ़रतों)का महर उन्हें अदा कर दो, और (ऐ मुसल्मानो!) तुम भी काफिर औ़रतोंको (अपने) अ़क़्दे निकाहमें न रोके रखखो और तुम (कुफ़्फ़ार से) वोह (माल) तलब कर लो जो तुमने (उन औ़रतों पर बसूरते महर) ख़र्च किया था और (कुफ़्फ़ार तुम से) वोह (माल) मांग लें जो उन्होंने (उन औ़रतों पर) ख़र्च किया था, येही अल्लाह का हुक्म है, और वोह तुम्हारे दरमियान फ़ैसला फ़रमा रहा है, और अल्लाह खूब जाननेवाला बड़ी ह़िक्मतवाला है।

وَإِن فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِّنْ أَزْوَاجِكُمْ

11. और अगर तुम्हारी बीवियों में से कोई तुम से छूट कर

إِلَى الْكُفَّارِ فَعَاقَبْتُمْ فَآتُوا الَّذِينَ ذَهَبَتْ أَزْوَاجُهُمْ مِثْلَ مَا أَنْفَقُوا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ ﴿١١﴾

काफ़िरों की तरफ़ चली जाए फिर (जब) तुम जंग में ग़ालिब आ जाओ और माले ग़नीमत पाओ तो (उसमें से) उन लोगों को जिनकी औ़रतें चली गई थीं इस क़दर (माल) अदा कर दो जितना वोह (उनके महरमें) ख़र्च कर चुके थे, और उस अल्लाह से डरते रहो जिस पर तुम ईमान रखते हो।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ يُبَايِعْنَكَ عَلَىٰ أَنْ لَا يُشْرِكْنَ بِاللَّهِ شَيْئًا وَلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِينَ وَلَا يَقْتُلْنَ أَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَأْتِينَ بِبُهْتَانٍ يَفْتَرِينَهُ بَيْنَ أَيْدِيهِنَّ وَأَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِينَكَ فِي مَعْرُوفٍ ۙ فَبَايِعْهُنَّ وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللَّهَ ۖ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٢﴾

12. ऐ नबी ! जब आपकी ख़िदमत में मोमिन औ़रतें अपनी बात पर बैअ़त करने के लिए हाज़िर हों कि वोह अल्लाहके साथ किसी चीज़ को शरीक नहीं ठेहराएंगी और चोरी नहीं करेंगी और बदकारी नहीं करेंगी और अपनी औलाद को क़त्ल नहीं करेंगी और अपने हाथों और पांव के दरमियान से कोई झूटा बोह्तान घड़ कर नहीं लाएंगी (या'नी अपने शौहर को धोका देते हुए किसी ग़ैर के बच्चे को अपने पेट से जना हुआ नहीं बताएंगी) और (किसी भी) अम्रे शरीअ़त में आपकी ना फ़रमानी नहीं करेंगी, तो आप उनसे बैअ़त ले लिया करें और उनके लिए अल्लाह से बख़्शिश तलब फ़रमाएं,बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَئِسُوا مِنَ الْآخِرَةِ كَمَا يَئِسَ الْكُفَّارُ مِنْ أَصْحَابِ الْقُبُورِ ﴿١٣﴾

13. ऐ ईमानवालो ! ऐसे लोगों से दोस्ती मत रख्खो जिन पर अल्लाह ग़ज़बनाक हुआ है बेशक वोह आख़िरत से (इस तरह) मायूस हो चुके हैं जैसे कुफ़्फ़ार अहले क़ुबूर से मायूस हैं।

ع ٢ ٨ الممتحنة

आयातुहा 14 | 61 सूरतुस सफ़्फ़ि मदनिय्यतुन 109 | रुकूआतुहा 2

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي

1. जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है

الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ①

(सब) अल्लाह की तस्बीह़ करते हैं, और वोह बड़ी इ़ज़्ज़तो ग़ल्बेवाला बड़ी ह़िक्मतवाला है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ②

2. ऐ ईमानवालो ! तुम वोह बातें क्यों केहते हो जो तुम करते नहीं हो।

كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ③

3. अल्लाह के नज़्दीक बहुत सख़्त ना पसंदीदा बात येह है कि तुम वोह बात कहो जो ख़ुद नहीं करते।

اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِهٖ صَفًّا كَاَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُوْصٌ ④

4. बेशक अल्लाह उन लोगों को पसंद फ़रमाता है जो उसकी राह में (यूं) सफ़ बस्ता हो कर लड़ते हैं गोया वोह सीसा पिलाई हुई दीवार हों।

وَ اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ لِمَ تُؤْذُوْنَنِيْ وَ قَدْ تَّعْلَمُوْنَ اَنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ ؕ فَلَمَّا زَاغُوْۤا اَزَاغَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ ؕ وَ اللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ⑤

5. और (ऐ ह़बीब वोह वक़्त याद कीजिए !) जब मूसा (عليه السلام) ने अपनी क़ौम से कहा : ऐ मेरी क़ौम ! तुम मुझे अज़िय्यत क्यों देते हो हालांकि तुम जानते हो कि मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का भेजा हुआ (रसूल) हूं, फिर जब उन्होंने कज रवी जारी रख्खी तो अल्लाहने उनके दिलों को टेढ़ा कर दिया, और अल्लाह ना फ़रमान लोगों को हिदायत नहीं फ़रमाता।

وَ اِذْ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ يٰبَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَ مُبَشِّرًۢا بِرَسُوْلٍ يَّاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِي اسْمُهٗۤ اَحْمَدُ ؕ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ⑥

6. और (वोह वक़्त भी याद कीजिए) जब ईसा बिन मरयम ( )ने कहा : ऐ बनी इसराईल ! बेशक मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का भेजा हुआ (रसूल) हूं, अपने से पहली किताब तौरात की तस्दीक़ करनेवाला हूं और उस रसूले (मुअ़ज़्ज़म ﷺ) की (आमद आमद) की बिशारत सुनानेवाला हूं जो मेरे बाद तशरीफ़ ला रहे हैं जिनका नाम (आस्मानों में इस वक़्त) अह़मद (ﷺ) है, फिर जब वोह (रसूले आख़िरुज़्ज़मां ﷺ) वाज़ेह निशानियां ले कर उनके पास तशरीफ़ ले आए तो वोह केहने लगे : येह तो खुला जादू है।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعَىٰ إِلَى الْإِسْلَامِ ۚ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٧﴾

7. और उस शख़्स से बढ़ कर ज़ालिम कौन हो सक्ता है जो अल्लाह पर झूटा बोहतान बांधे हालांकि उसे इस्लाम की तरफ़ बुलाया जा रहा हो, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं करता।

يُرِيدُونَ لِيُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَاللَّهُ مُتِمُّ نُورِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ﴿٨﴾

8. येह (मुन्किरीने हक़) चाहते हैं कि वोह अल्लाह के नूर को अपने मुहंकी (फूंको) से बुझा दें, जबकि अल्लाह अपने नूर को पूरा फ़रमानेवाला है अगरचे काफ़िर कितना ही ना पसंद करें।

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ﴿٩﴾

9. वोही है जिसने अपने रसूल (ﷺ) को हिदायत और दीने हक़ दे कर भेजा ताकि उसे सब अदयान पर ग़ालिबो सर बुलंद कर दे ख़्वाह मुशरिक कितना ही ना पसंद करें।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ تِجَارَةٍ تُنْجِيكُمْ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿١٠﴾

10. ऐ ईमानवालो ! क्या मैं तुम्हें ऐसी तिजारत बता दूं जो तुमको दर्दनाक अ़ज़ाब से बचा ले।

تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١١﴾

11. (वोह येह है कि) तुम अल्लाह पर और उसके रसूल (ﷺ) पर (कामिल) ईमान रख्खो और अल्लाह की राह में अपने मालो जान से जिहाद करो, येही तुम्हारे हक़ में बेहतर है अगर तुम जानते हो।

يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَمَسَاكِنَ طَيِّبَةً فِي جَنَّاتِ عَدْنٍ ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١٢﴾

12. वोह तुम्हारे गुनाहों को बख़्श देगा और तुम्हें जन्नतों में दाख़िल फ़रमाएगा, जिनके नीचे से नेहरें जारी होंगी और निहायत उ़म्दा रिहाइशगाहों में (ठेहराएगा) जो जन्नाते अ़द्न (या'नी हमेशा रेहने की जन्नतों) में हैं, येही ज़बर दस्त कामयाबी है।

وَأُخْرَىٰ تُحِبُّونَهَا ۖ نَصْرٌ مِنَ اللَّهِ وَ

13. और (उस उख़्रवी ने'मत के अ़लावा) एक दूसरी (दुन्यवी ने'मत भी अ़ता फ़रमाएगा) जिसे तुम बहुत

فَتْحٌ قَرِيبٌ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٣﴾

चाहते हो, (वोह) अल्लाह की जानिब से मदद और जल्द मिलनेवाली फ़तह़ है, और(ऐ नबिय्ये मुकर्रम !) आप मोमिनों को ख़ुश ख़बरी सुना दें (येह फ़त्ह़े मक्का और फ़ारसो रूमकी फ़ुतूह़ात की शक्ल में ज़ाहिर हुई।)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا أَنْصَارَ اللَّهِ كَمَا قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِلْحَوَارِيِّينَ مَنْ أَنْصَارِي إِلَى اللَّهِ ۖ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنْصَارُ اللَّهِ فَآمَنَتْ طَائِفَةٌ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَكَفَرَتْ طَائِفَةٌ ۖ فَأَيَّدْنَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَىٰ عَدُوِّهِمْ فَأَصْبَحُوا ظَاهِرِينَ ﴿١٤﴾

14. ऐ ईमानवालो! तुम अल्लाहके मददगार बन जाओ जैसा के ईसा इब्ने मरयम (عليها السلام) ने (अपने) ह़वारियों से कहा था : अल्लाह की (राह की) तरफ़ मेरे मददगार कौन हैं, ह़वारियोंने कहा : हम अल्लाह के मदद गार हैं, पस बनी इस्राईल का एक गिरोह ईमान ले आया और दूसरा गिरोह काफिर हो गया, सो हमने उन लोगों की जो ईमान ले आए थे उनके दुश्मनों पर मदद फ़रमाई पस वोह ग़ालिब हो गए।

ع ٢ ٥

आयातुहा 11 | 62 सूरतुल जुमुअ़ति मदनिय्यतुन 110 | रुकूआ़तुहा 2

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है

يُسَبِّحُ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ الْمَلِكِ الْقُدُّوسِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ﴿١﴾

1.(हर चीज़) जो आस्मानों में है और जो ज़मीन में है अल्लाह की तस्बीह़ करती है, जो (ह़क़ीक़ी) बादशाह है, (हर नुक़्सो ऐ़ब से) पाक है, इ़ज़्ज़तो ग़ल्बेवाला है बड़ी ह़िक्मतवाला है।

هُوَ الَّذِي بَعَثَ فِي الْأُمِّيِّينَ رَسُولًا مِنْهُمْ يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ

2. वोही है जिसने अनपढ़ लोगोंमें उन्हीमें से एक (बा अ़ज़मत) रसूल (ﷺ)को भेजा वोह उन पर उसकी आयतें पढ़ कर सुनाते हैं, और उनके (ज़ाहिरो बातिन) को पाक करते हैं और उन्हें किताबो ह़िक्मत की ता'लीम

وَالْحِكْمَةَ ۗ وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلُ لَفِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ۝٢

देते हैं बेशक वोह लोग इन (के तशरीफ़ लाने) से पहले खुली गुमराही में थे।

وَآخَرِينَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝٣

3. और उनमें से दूसरे लोगों में भी (इस रसूले मुअ़ज़्ज़म ﷺ को तज़्किया-व-ता'लीम के लिये भेजा है) जो अभी उन लोगों से नहीं मिले (जो इस वक़्त मौजूद हैं या'नी इनके बाद के ज़माने में आएंगे), और वोह बड़ा ग़ालिब बड़ी हिक्मतवाला है।

ذَٰلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۝٤

4. येह (या'नी इस रसूल ﷺ की आमद और इनका फ़ैज़ो-हिदायत)अल्लाह का फ़ज़्ल है वोह जिसे चाहता है इससे नवाज़ता है, और अल्लाह बड़े फ़ज़्लवाला है।

مَثَلُ الَّذِينَ حُمِّلُوا التَّوْرَاةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ أَسْفَارًا ۚ بِئْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝٥

५. उन लोगों का हाल जिन पर तौरात (के अह्कामो ता'लीमात) का बोझ डाला गया फिर उन्होंने उसे न उठाया (या'नी उसमें इस रसूल ﷺ का ज़िक्र मौजूद था मगर वोह इन पर ईमान न लाए) गधे की मिस्ल है जो पीठ पर बड़ी बड़ी किताबें लादे हुए हो,उन लोगों की मिसाल किया ही बुरी है जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुटलाया है, और अल्लाह ज़ालिम ोगों को हिदायत नहीं फ़रमाता।

قُلْ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ هَادُوا إِنْ زَعَمْتُمْ أَنَّكُمْ أَوْلِيَاءُ لِلَّهِ مِنْ دُونِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝٦

6. आप फ़रमा दीजिए : ऐ यहूदियो ! अगर तुम येह गुमान करते हो कि सब लोगों को छोड़ कर तुम अल्लाह ही के दोस्त (या'नी अवलिया) हो तो मौत की आरज़ू करो (क्यों कि उसके अवलिया को तो क़ब्रो ह़श्र में कोई परेशानी नहीं होगी) अगर तुम (अपने ख़याल में) सच्चे हो।

وَلَا يَتَمَنَّوْنَهُ أَبَدًا بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ۝٧

7. और येह कभी इसकी तमन्ना नहीं करेंगे उस (रसूल की तक्ज़ीब और कुफ़्र) के बाइस जो वोह आगे भेज चुके हैं, और अल्लाह ज़ालिमों को खूब जानता है।

قُلۡ اِنَّ الۡمَوۡتَ الَّذِیۡ تَفِرُّوۡنَ مِنۡهُ فَاِنَّهٗ مُلٰقِیۡکُمۡ ثُمَّ تُرَدُّوۡنَ اِلٰی عٰلِمِ الۡغَیۡبِ وَ الشَّهَادَۃِ فَیُنَبِّئُکُمۡ بِمَا کُنۡتُمۡ تَعۡمَلُوۡنَ ﴿۸﴾

8. फ़रमा दीजिए : जिस मौत से तुम भागते हो वोह ज़रूर तुम्हें मिलनेवाली है फिर तुम हर पोशीदा व ज़ाहिर चीज़ को जाननेवाले (रब) की तरफ़ लौटाए जाओगे सो वोह तुम्हें आगाह कर देगा जो कुछ तुम करते थे।

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡۤا اِذَا نُوۡدِیَ لِلصَّلٰوۃِ مِنۡ یَّوۡمِ الۡجُمُعَۃِ فَاسۡعَوۡا اِلٰی ذِکۡرِ اللّٰهِ وَ ذَرُوا الۡبَیۡعَ ؕ ذٰلِکُمۡ خَیۡرٌ لَّکُمۡ اِنۡ کُنۡتُمۡ تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۹﴾

9. ऐ ईमानवालों ! जब जुमुआ के दिन (जुमुआ की) नमाज़ के लिए अज़ान दी जाए तो फ़ौरन अल्लाह के ज़िक्र(या'नी खुत्बा व नमाज़) की तरफ़ तेज़ी से चल पड़ो और ख़रीदो फ़रोख्त (या'नी कारोबार) छोड़ दो, येह तुम्हारे हक़ में बेहतर है अगर तुम इल्म रखते हो।

فَاِذَا قُضِیَتِ الصَّلٰوۃُ فَانۡتَشِرُوۡا فِی الۡاَرۡضِ وَ ابۡتَغُوۡا مِنۡ فَضۡلِ اللّٰهِ وَ اذۡکُرُوا اللّٰهَ کَثِیۡرًا لَّعَلَّکُمۡ تُفۡلِحُوۡنَ ﴿۱۰﴾

10. फिर जब नमाज़ अदा हो चुके तो ज़मीनमें मुन्तशिर हो जाओ और (फिर)अल्लाह का फ़ज़्ल (या'नी रिज़्क़) तलाश करने लगो और अल्लाह को कसरत से याद किया करो ताकि तुम फ़लाह पाओ।

وَ اِذَا رَاَوۡا تِجَارَۃً اَوۡ لَهۡوَۨا انۡفَضُّوۡۤا اِلَیۡهَا وَ تَرَکُوۡکَ قَآئِمًا ؕ قُلۡ مَا عِنۡدَ اللّٰهِ خَیۡرٌ مِّنَ اللَّهۡوِ وَ مِنَ التِّجَارَۃِ ؕ وَ اللّٰهُ خَیۡرُ الرّٰزِقِیۡنَ ﴿۱۱﴾

11. और जब उन्होंने कोई तिजारत या खेल तमाशा देखा तो (अपनी हाजत मंदी और मआशी तंगी के बाइस) उसकी तरफ़ भाग खड़े हुए और आपको (खुत्बेमें) खड़े छोड़ गए, फ़रमा दीजिए : जो कुछ अल्लाहके पास है वोह खेल से और तिजारत से बेहतर है और अल्लाह सबसे बेहतर रिज़्क़ देनेवाला है।

आयातुहा 11 | 63 सूरतुल मुनाफ़िक़ून मदनिय्यतुन 104 | रुकूआतुहा 2

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

اِذَا جَآءَکَ الۡمُنٰفِقُوۡنَ قَالُوۡا نَشۡهَدُ

1. (ऐ हबीबे मुकर्रम !) जब मुनाफ़िक़ आप के पास

إِنَّكَ لَرَسُولُ اللَّهِ ۘ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّكَ لَرَسُولُهُ ۗ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَكَاذِبُونَ ﴿١﴾

आते हैं तो केहते हैं कि हम गवाही देते हैं कि आप यक़ीनन अल्लाहके रसूल हैं, और अल्लाह जानता है कि यक़ीनन आप उसके रसूल हैं, और अल्लाह गवाही देता है कि यक़ीनन मुनाफ़िक़ लोग झूटे हैं।

اتَّخَذُوا أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۚ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢﴾

2. उन्होंने अपनी क़स्मों को ढाल बना रखखा है फिर येह (लोगों को) अल्लाह की राह से रोकते हैं, बेशक वोह बहुत ही बुरा (काम) है, जो येह लोग कर रहे हैं।

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا فَطُبِعَ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ ﴿٣﴾

3. येह इस वजह से कि वोह (ज़बाने से) ईमान लाए फिर (दिल से) काफ़िर रहे तो उनके दिलों पर मोहर लगा दी गई सो वोह (कुछ) नहीं समझते।

وَإِذَا رَأَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ أَجْسَامُهُمْ ۖ وَإِنْ يَقُولُوا تَسْمَعْ لِقَوْلِهِمْ ۖ كَأَنَّهُمْ خُشُبٌ مُسَنَّدَةٌ ۖ يَحْسَبُونَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ۚ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ ۚ قَاتَلَهُمُ اللَّهُ ۖ أَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ﴿٤﴾

4. (ऐ बन्दे !) जब तू उन्हें देखे तो उन के जिस्म (और क़दो क़ामत) तुझे भले मा'लूम हों, और अगर वोह बातें करें तो उन की गुफ्तुगू तू ग़ौर से सुने (या'नी तुझे) यूं मा'क़ूल दिखाई दें, मगर हक़ीक़त येह है कि) वोह लोग गोया दीवार के सहारे खड़ी हुई की लकड़ियां हैं वोह हर ऊंची आवाज़ को अपने ऊपर (बला और आफ़त) समझते हैं, वोही (मुनाफ़िक़ तुम्हारे) दुश्मन हैं , सो उनसे बचते रहो, अल्लाह उन्हें ग़ारत करे वोह कहां बेहके फ़िरते हैं।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُولُ اللَّهِ لَوَّوْا رُءُوسَهُمْ وَرَأَيْتَهُمْ يَصُدُّونَ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ ﴿٥﴾

5. और जब उनसे कहा जाता है कि आओ रसूलुल्लाह (ﷺ) तुम्हारे लिए मग़फ़िरत तलब फ़रमाएं तो येह (मुनाफ़िक़ गुस्ताख़ी से) अपने सर झटक कर फेर लेते हैं और आप उन्हें देखते हैं कि वोह तकब्बुर करते हुए (आपकी ख़िदमत में आने से) गुरेज़ करते हैं। ★

★ येह आयत अब्दुल्लाह बिन उबै (रईसुल मुनाफ़िक़ीन) के बारे में नाज़िल हुई, जब उसे हुज़ूर नबिय्ये अकरम (ﷺ) की ख़िदमते अक़्दस में बख़्शिश तलबी के लिये हाज़िर होने को कहा गया तो सर झटक कर केहने लगा : मैं नहीं जानता, मैं ईमान भी ला चुका हूं, उनके केहने पर ज़कात भी दे दी है, अब क्या बाक़ी रेह गया है फ़क़त येही कि मुहम्मद (ﷺ) को सजदा भी करूं? (अत्तिब्री, अल कश्शाफ, नसफ़ी, बग़वी, ख़ाज़िन)

سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ اَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ اَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ۭ لَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝٦

6. इन (बद बख़्त गुस्ताख़ाने रसूल ﷺ) के हक़ में बराबर है कि आप उनके लिये इस्तिग़्फ़ार करें या आप उनके लिये इस्तिग़्फ़ार न करें, अल्लाह उनको (तो) हरगिज़ नहीं बख़्शेगा (क्यों कि येह आप पर ता'ना ज़नी करनेवाले और आपसे बे रुख़ी और तकब्बुर करनेवाले लोग हैं।) बेशक अल्लाह ना फ़रमान लोगों को हिदायत नहीं फ़रमाता।

هُمُ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ لَا تُنْفِقُوْا عَلٰي مَنْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ حَتّٰى يَنْفَضُّوْا ۭ وَلِلّٰهِ خَزَاۗىِٕنُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَفْقَهُوْنَ ۝٧

7. (ऐ हबीबे मुकर्रम!) येही वोह लोग हैं जो (आप से बुग़्ज़ो इनाद की बिना पर) येह (भी) केहते हैं कि (दुरवेश और फ़ुक़रा) रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में रेहते हैं उन पर ख़र्च मत करो (या'नी उनकी माली इआनत न करो) यहां तक कि वोह (सब उन्हें छोड़ कर) भाग जाएं (मुन्तशिर हो जाएं) हालांकि आस्मानों और ज़मीनके सारे ख़ज़ाने अल्लाह ही के हैं लेकिन मुनाफ़िक़ीन नहीं समझते।

يَقُوْلُوْنَ لَىِٕنْ رَّجَعْنَآ اِلَى الْمَدِيْنَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْاَعَزُّ مِنْهَا الْاَذَلَّ ۭ وَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُوْلِهٖ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٨

8. वोह केहते हैं : अगर (अब) हम मदीने वापस हुए तो (हम) इज़्ज़तवाले लोग वहां से ज़लील लोगों (या'नी मुसल्मानों) को बाहर निकाल देंगे, हालांकि इज़्ज़त तो सिर्फ़ अल्लाह के लिए और रसलू (ﷺ) के लिए और मोमिनों के लिए है मगर मुनाफ़िक़ीन (इस हक़ीक़त को) जानते नहीं हैं।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝٩

9. ऐ ईमानवालो ! तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद (कहीं) तुम्हें अल्लाह की याद से ही ग़ाफ़िल न कर दें, और जो शख़्स ऐसा करेगा तो वोही लोग नुक़्सान उठानेवाले हैं।

وَاَنْفِقُوْا مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ

10. और तुम उस (माल) में से जो हमने तुम्हें अ़ता किया

قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُوْلَ رَبِّ لَوْلَآ اَخَّرْتَنِيْٓ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ فَاَصَّدَّقَ وَاَكُنْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠﴾

है (अल्लाह की राह में) ख़र्च करो क़ब्ल इसके कि तुम में से किसी को मौत आ जाए फिर वोह केहने लगे : ऐ मेरे रब ! तूने मुझे थोड़ी मुद्दत तक मोहलत और क्यों न दे दी कि मैं सदक़ा व ख़ैरात कर लेता और नेकूकारों में से हो जाता।

وَلَنْ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ نَفْسًا اِذَا جَآءَ اَجَلُهَا ۗ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١١﴾

11. और अल्लाह हरगिज़ किसी शख़्स को मोहलत नहीं देता जब उसकी मौत का वक़्त आ जाता है, और अल्लाह उन कामों से खूब आगाह है।

आयातुहा 18	64 सूरतुत तगाबुनि मदनिय्यतुन 108	रुकूआ़तुहा 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۚ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ۖ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١﴾

1. हर वोह चीज़ जो आस्मानों में है और ज़मीनमें है अल्लाह की तस्बीह़ करती है। उसी की सारी बादशाहत है और उसी के लिए सारी ता'रीफ़ है वोह हर चीज़ पर बड़ा क़ादिर है।

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَّمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢﴾

2. वोही है जिसने तुम्हें पैदा किया,पस तुममें से (कोई) काफ़िर हो गया, और तुममें से (कोई) मोमिन हो गया, और अल्लाह उन कामों को जो तुम करते हो खूब देखनेवाला है।

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ ۚ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿٣﴾

3. उसीने आस्मानों और ज़मीन को हिक्मतो मक़्सद के साथ पैदा फ़रमाया और (उसी ने) तुम्हारी सूरतें बनाईं फिर तुम्हारी सूरतों को खूब तर किया, और (सब को) उसी की तरफ़ लौट कर जाना है।

يَعْلَمُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ۗ

4. जो कुछ आस्मानों और ज़मीनमें है वोह जानता है और उन बातों को (भी) जानता है जो तुम छुपाते हो, और जो

وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٤﴾

ज़ाहिर करते हो और अल्लाह सीनोंवाली (राज़ की) बातों को (भी) खूब जाननेवाला है।

اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ۫ فَذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٥﴾

5. क्या तुम्हें उन लोगों की ख़बर नहीं पहुंची जिन्होंने (तुम से) पहले कुफ़्र किया था तो उन्होंने (दुनिया में) अपने काम की सज़ा चख ली और उनके लिए (आख़िरतमें भी) दर्दनाक अ़ज़ाब है।

ذٰلِكَ بِاَنَّهٗ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالُوْۤا اَبَشَرٌ يَّهْدُوْنَنَا ۫ فَكَفَرُوْا وَتَوَلَّوْا وَّاسْتَغْنَى اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ﴿٦﴾

6. येह इस लिए कि उनके पास उनके रसूल वाज़ेह निशानियां ले कर आते थे तो वोह केहते थे : क्या (हमारी ही मिस्ल और हम जिन्स) बशर ★ हमें हिदायत करेंगे ? सो वोह काफ़िर हो गए और उन्होंने (हक़ से) रू गर्दानी की और अल्लाहने भी (उनकी) कुछ पर्वाह न की, और अल्लाह बेनियाज़ है लाइक़े ह़म्दो सना है।

زَعَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اَنْ لَّنْ يُّبْعَثُوْا ؕ قُلْ بَلٰى وَرَبِّيْ لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ ؕ وَذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿٧﴾

7. काफ़िर लोग येह ख़याल करते हैं कि वोह (दोबारा) हरगिज़ न उठाए जाएंगे, फ़रमा दीजिए : क्यों नहीं, मेरे रबकी क़सम, तुम ज़रूर उठाए जाओगे फिर तुम्हें बता दिया जाएगा जो कुछ तुमने किया था, और येह अल्लाह पर बहुत आसान है।

فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَالنُّوْرِ الَّذِيْۤ اَنْزَلْنَا ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٨﴾

8. पस तुम अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) पर और उस नूर पर ईमान लाओ जिसे हमने नाज़िल फ़रमाया है, और अल्लाह उन कामों से खूब आगाह है जो तुम करते हो।

يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ ؕ وَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّكَفِّرْ عَنْهُ

9. जिस दिन वोह तुम्हें जमा' होने के दिन (मैदाने मेहशर में) इकठ्ठा करेगा येह हार और नुक़्सान ज़ाहिर होने का दिन है,जो शख़्स अल्लाह पर ईमान लाता है और नेक अ़मल करता है तो (अल्लाह) उस (के नामए आ'माल) से उसकी

★ बशर का येह मा'ना अइम्मए तफ़्सीर के बयान कर्दह मा'ना के मुताबिक है हवाला जात के लिए देखें : (तफ्सीरे तिब्री, अल कश्शाफ़, नस्फ़ी, ख़ाज़िन, जुमल, मज़हरी और फ़त्हुल क़दीर वग़ैरहा)

سَيِّاٰتِهٖ وَ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿۹﴾

ख़ताएं मिटा देगा और उसे जन्नतों में दाख़िल फ़रमा देगा जिनके नीचे से नेहरें बेह रही हैं वोह उनमें हमेशा रेहनेवाले होंगे, येह बहुत बड़ी कामयाबी है।

وَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَاۤ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَ بِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۱۰﴾ ع

10. और जिन लोगोंने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुटलाया वोही लोग दोज़ख़ी हैं (जो) उसमें हमेशा रेहनेवाले हैं।

مَاۤ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَ مَنْ يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ يَهْدِ قَلْبَهٗ ؕ وَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۱۱﴾

11. (किसी को) कोई मुसीबत नहीं पहुंचती मगर अल्लाह के हुक्म से और जो शख़्स अल्लाह पर ईमान लाता है तो वोह उसके दिलको हिदायत फ़रमाता देता है, और अल्लाह हर चीज़ को खूब जाननेवाला है।

وَ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاِنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿۱۲﴾

12. और तुम अल्लाहकी इताअ़त करो और रसूल (ﷺ) की इताअ़त करो, फिर अगर तुमने रू गर्दानी की तो (याद रखखो) हमारे रसूल (ﷺ) के ज़िम्मे सिर्फ़ वाज़ेह़ तौर पर (अह़काम को) पहुंचा देना है।

اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ وَ عَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۳﴾

13. अल्लाह (ही मा'बूद) है उसके सिवा कोई मा'बूद नहीं और अल्लाह ही पर ईमानवालों को भरोसा रखना चाहिए।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّ مِنْ اَزْوَاجِكُمْ وَ اَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ فَاحْذَرُوْهُمْ ۚ وَ اِنْ تَعْفُوْا وَ تَصْفَحُوْا وَ تَغْفِرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۴﴾

14. ऐ ईमानवालो ! बेशक तुम्हारी बीवियों और तुम्हारी औलाद में से बा'ज़ तुम्हारे दुश्मन हैं पस उनसे होशियार रहो, अगर तुम सर्फ़े नज़र कर लो और दर गुज़र करो और मुआ़फ़ कर दो तो बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

اِنَّمَاۤ اَمْوَالُكُمْ وَ اَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ؕ وَ اللّٰهُ عِنْدَهٗۤ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۵﴾

15. तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद मह़ज़ आज़माइश ही हैं,और अल्लाह की बारगाह में बहुत बड़ा अज्र है।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوْا وَ اَطِيْعُوْا وَ اَنْفِقُوْا خَيْرًا لِّاَنْفُسِكُمْ ؕ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۱۶﴾

16. पस तुम अल्लाह से डरते रहो जिस क़दर तुमसे हो सके और (उसके अह्काम) सुनो और इताअ़त करो और (उसकी राहमें) ख़र्च करो येह तुम्हारे लिए बेहतर होगा, और जो अपने नफ़्स के बुख़्लसे बचा लिया जाए सो वोही लोग फ़लाह पानेवाले हैं।

اِنْ تُقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعِفْهُ لَكُمْ وَ يَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ شَكُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿۱۷﴾

17. अगर तुम अल्लाह को (इख़्लास और नेक निय्यती से) अच्छा क़र्ज़ दोगे तो वोह उसे तुम्हारे लिये कई गुना बढ़ा देगा और तुम्हें बख़्श देगा,और अल्लाह बड़ा क़द्र शनास है बुर्द बार है।

عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۱۸﴾

18. हर निहां और अ़यां को जाननेवाला है, बड़े ग़ल्बे-व-इ़ज़्ज़तवाला बड़ी हिक्मतवाला है।

رکوع ۲ / ۸ / ۱۲

रुकूआ़तुहा 2 | 65 सूरतुत तलाक़ि मदनिय्यतुन 99 | आयातुहा 12

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِىُّ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَطَلِّقُوْهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ وَاَحْصُوا الْعِدَّةَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ رَبَّكُمْ ۚ لَا تُخْرِجُوْهُنَّ مِنْۢ بُيُوْتِهِنَّ وَ لَا يَخْرُجْنَ اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ؕ وَ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ؕ وَ مَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ؕ لَا تَدْرِىْ لَعَلَّ اللّٰهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذٰلِكَ اَمْرًا ﴿۱﴾

1. ऐ नबी ! (मुसल्मानों से फ़रमा दें) जब तुम औ़रतों को तलाक़ देना चाहो तो उनके तुहुर के ज़माने में उन्हें तलाक़ दो और इ़द्दत को शुमार करो, और अल्लाह से डरते रहो जो तुम्हारा रब है, और उन्हें उनके घरों से मत निकालो और न वोह ख़ुद बाहर निक्लें सिवाए इसके कि वोह खुली बे ह़याई कर बैठें, और येह अल्लाह की (मुक़र्ररह) हदें हैं, और जो शख़्स अल्लाह की हुदूद से तजावुज़ करे तो बेशक उसने अपनी जान पर ज़ुल्म किया है, (ऐ शख़्स !) तू नहीं जानता शायद अल्लाह इसके (तलाक़ देने के) बाद (रुजूअ़ की) कोई नई सूरत पैदा फ़रमा दे।

فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ أَوْ فَارِقُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ وَّأَشْهِدُوا ذَوَيْ عَدْلٍ مِّنْكُمْ وَأَقِيمُوا الشَّهَادَةَ لِلَّهِ ۚ ذَٰلِكُمْ يُوعَظُ بِهِ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۚ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَّهُ مَخْرَجًا ﴿٢﴾

2. फिर जब वोह अपनी मुक़र्ररह मीआ़द (के ख़त्म होने) के क़रीब पहुंच जाएं तो उन्हें भलाई के साथ (अपनी ज़ौजिय्यत में) रोक लो या उन्हें भलाई के साथ जुदा कर दो, और अपने में से दो आ़दिल मर्दों को गवाह बना लो और गवाही अल्लाहके लिये क़ाइम किया करो, इन (बातों) से उसी शख़्स को नसीहत की जाती है जो अल्लाह और यौमे आख़िरत पर ईमान रखता है, और जो अल्लाह से डरता है वोह उसके लिए (दुनिया-व-आख़िरत के रंजो ग़म से) निकलने की राह पैदा फ़रमा देता है।

وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ۚ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ بَالِغُ أَمْرِهِ ۚ قَدْ جَعَلَ اللَّهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ﴿٣﴾

3. और उसे ऐसी जगह से रिज़्क़ अ़ता फ़रमाता है जहां से उसका गुमान भी नहीं होता, और जो शख़्स अल्लाह पर तवक्कुल करता है तो वोह (अल्लाह) उसे काफ़ी है, बेशक अल्लाह अपना काम पूरा कर लेनेवाला है, बेशक अल्लाहने हर शय के लिये अंदाज़ा मुकर्रर फ़रमा रखखा है।

وَالّٰٓئِي يَئِسْنَ مِنَ الْمَحِيضِ مِنْ نِّسَآئِكُمْ إِنِ ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلٰثَةُ أَشْهُرٍ ۙ وَّالّٰٓئِي لَمْ يَحِضْنَ ۚ وَأُولَاتُ الْأَحْمَالِ أَجَلُهُنَّ أَنْ يَّضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَّهُ مِنْ أَمْرِهِ يُسْرًا ﴿٤﴾

4. और तुम्हारी औ़रतों में से जो हैज़ से मायूस हो चुकी हों अगर तुम्हें शक हो (कि उनकी इ़द्दत क्या होगी) तो उनकी इ़द्दत तीन महीने है और वोह औ़रतें जिन्हें (अभी) हैज़ नहीं आया (उनकी भी येही इ़द्दत है), और ह़ामिला औ़रतें (तो) उनकी इ़द्दत उनका वज़ूए ह़मल है, और जो शख़्स अल्लाह से डरता है (तो) वोह इस काम में आसानी फ़रमा देता है।

ذٰلِكَ أَمْرُ اللَّهِ أَنْزَلَهُ إِلَيْكُمْ ۚ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهِ وَيُعْظِمْ لَهُ أَجْرًا ﴿٥﴾

5. येह अल्लाह का अम्र है जो उसने तुम्हारी तरफ़ नाज़िल फ़रमाया है, और जो शख़्स अल्लाह से डरता है वोह उस के छोटे गुनाहों को उस (के नामए आ'माल) से मिटा देता और अज्रो सवाब को उस के लिये बड़ा कर देता है।

أَسْكِنُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنتُم مِّن وُجْدِكُمْ وَلَا تُضَارُّوهُنَّ لِتُضَيِّقُوا عَلَيْهِنَّ ۚ وَإِن كُنَّ أُولَاتِ حَمْلٍ فَأَنفِقُوا عَلَيْهِنَّ حَتَّىٰ يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ فَإِنْ أَرْضَعْنَ لَكُمْ فَآتُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ ۖ وَأْتَمِرُوا بَيْنَكُم بِمَعْرُوفٍ ۖ وَإِن تَعَاسَرْتُمْ فَسَتُرْضِعُ لَهُ أُخْرَىٰ ﴿٦﴾

6. तुम उन (मुतल्लक़ा) औ़रतों को वहीं रख्खो जहां तुम अपनी वुस्अ़त के मुताबिक़ रेहते हो और उन्हें तक्लीफ़ मत पहुंचाओ कि उन पर (रेहने का ठिकाना) तंग कर दो, और अगर वोह हा़मिला हों तो उन पर ख़र्च करते रहो, यहां तक कि वोह अपना बच्चा जन लें, फिर अगर वोह तुम्हारी ख़ातिर (बच्चे को) दूध पिलाएं तो उन्हें उनका मुआ़विज़ा अदा करते रहो, और आपसमें (एक दूसरे से) नेक बात का मश्वरा (ह़स्बे दस्तूर) कर लिया करो, और अगर तुम बाहम दुश्वारी मह़सूस करो तो उसे (अब कोई) दूसरी औ़रत दूध पिलाएगी।

لِيُنفِقْ ذُو سَعَةٍ مِّن سَعَتِهِ ۖ وَمَن قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهُ فَلْيُنفِقْ مِمَّا آتَاهُ اللَّهُ ۚ لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا مَا آتَاهَا ۚ سَيَجْعَلُ اللَّهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُسْرًا ﴿٧﴾

7. साहि़बे वुस्अ़त को अपनी वुस्अ़त (के लिहा़ज़) से ख़र्च करना चाहिए, और जिस शख़्स पर उसका रिज़्क़ तंग कर दिया गया हो तो वोह उसी (रोज़ी) में से (बतौरे नफ़्क़ा) ख़र्च करे जो उसे अल्लाह ने अ़ता फ़रमाई है,अल्लाह किसी शख़्स को मुकल्लफ़ नहीं ठेहराता मगर उसी क़द्र जितना कि उसने उसे अ़ता फ़रमा रख्खा है, अल्लाह अ़नक़रीब तंगी के बाद कशाइश पैदा फ़रमा देगा।

وَكَأَيِّن مِّن قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ أَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهِ فَحَاسَبْنَاهَا حِسَابًا شَدِيدًا وَعَذَّبْنَاهَا عَذَابًا نُّكْرًا ﴿٨﴾

8. और कितनी ही बस्तियां ऐसी थीं जिन (के रेहनेवालों) ने अपने रब के हुक्म और उसके रसूलों से सरकशी व सरताबी की तो हमने उनका सख़्त हि़साब की सूरत में मुहा़सिबा किया और उन्हें ऐसे सख़्त अ़ज़ाबमें मुब्तिला किया जो न देखा न सुना गया था।

فَذَاقَتْ وَبَالَ أَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ أَمْرِهَا خُسْرًا ﴿٩﴾

9. सो उन्होंने अपने किए का वबाल चख लिया और उनके काम का अंजाम ख़सारा ही हुआ।

أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ

10. अल्लाहने उनके लिए (आख़िरतमें भी) सख़्त अ़ज़ाब तैयार कर रख्खा है, सो अल्लाह से डरते रहा करो, ऐ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۛۚ قَدْ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكُمْ ذِكْرًا ﴿١٠﴾

अ़क़्लवालो ! जो ईमान ले आए हो, बेशक अल्लाहने तुम्हारी (ही) तरफ़ नसीह़त (क़ुरआन) को नाज़िल फ़रमाया है।

رَّسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ مُبَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۭ وَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ قَدْ اَحْسَنَ اللّٰهُ لَهٗ رِزْقًا ﴿١١﴾

11. (और) रसूल (ﷺ) को (भी भेजा है) जो तुम पर अल्लाह की वाज़ेह आयात पढ़ कर सुनाते हैं ताकि उन लोगों को जो ईमान लाए हैं और नेक अ़मल करते हैं तारीकियों से निकाल कर रौशनी की तरफ़ ले जाए, और जो शख़्स अल्लाह पर ईमान रखता है और नेक अ़मल करता है वोह उसे उन जन्नतों में दाख़िल फ़रमाएगा जिनके नीचे से नेहरें रवां हैं वोह उनमें हमेशा रेहनेवाले हैं, बेशक अल्लाहने उसके लिए निहायत उ़म्दा रिज़्क़ (तैयार कर) रखखा है।

اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَّمِنَ الْاَرْضِ مِثْلَهُنَّ ۭ يَتَنَزَّلُ الْاَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ڏ وَّاَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ﴿١٢﴾ ع ٢ ٥ ١٨

12. अल्लाह (ही) है जिसने सात आस्मान पैदा फ़रमाए और ज़मीन (की तश्कील) में भी उन्हीं की मिस्ल (तेह ब तेह सात तब्क़ात बनाए), उनके दरमियान(निज़ामे क़ुदरत की तदबीर का) अम्र उतरता रेहता है ताकि तुम जान लो कि अल्लाह हर चीज़ पर बड़ा क़ादिर है, और येह कि अल्लाहने हर चीज़ का अपने इ़ल्म से इह़ाता फ़रमा रखखा है, (या'नी आनेवाले ज़मानों में जब साइन्सी इन्किशाफ़ात कामिल होंगे तो तुम्हें अल्लाह की क़ुदरत और इ़ल्मे मुह़ीत की अ़ज़मत का अंदाज़ा हो जाएगा कि किस तरह़ उसने सदियों क़ब्ल इन ह़क़ाइक़ को तुम्हारे लिए बयान फ़रमा रखखा है।)

आयातुहा 12 | 66 सूरतुत तह़रीमि मदनिय्यतुन 107 | रुकूआ़तुहा 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَآ اَحَلَّ اللّٰهُ

1. ऐ नबिय्ये (मुकर्रम!) आप खुद को उस चीज़ (या'नी

لَكَ ۚ تَبْتَغِىْ مَرْضَاتَ اَزْوَاجِكَ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ①

शहद के नोश करने) से क्यों मना' फ़रमाते हैं जिसे अल्लाह ने आपके लिये हलाल फ़रमा रख्खा है,आप अपनी अज़्वाज की (इस क़दर) दिल जूई फ़रमाते हैं, और अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला महरबान है।

قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ اَيْمَانِكُمْ ۚ وَاللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ②

2. (ऐ मोमिनो!) बेशक अल्लाहने तुम्हारे लिए तुम्हारी क़स्मों का(कफ़्फ़ारा दे कर) खोल डालना मुक़र्रर फ़रमा दिया है, और अल्लाह तुम्हारा मददगारो कारसाज़ है, और वोह ख़ूब जाननेवाला बड़ी हिक्मतवाला है।

وَ اِذْ اَسَرَّ النَّبِىُّ اِلٰى بَعْضِ اَزْوَاجِهٖ حَدِيْثًا ۚ فَلَمَّا نَبَّاَتْ بِهٖ وَاَظْهَرَهُ اللّٰهُ عَلَيْهِ عَرَّفَ بَعْضَهٗ وَاَعْرَضَ عَنْۢ بَعْضٍ ۚ فَلَمَّا نَبَّاَهَا بِهٖ قَالَتْ مَنْ اَنْۢبَاَكَ هٰذَا ۗ قَالَ نَبَّاَنِىَ الْعَلِيْمُ الْخَبِيْرُ ③

3. और जब नबिय्ये (मुकर्रम ﷺ)ने अपनी एक ज़ौजा से एक राज़दाराना बात इर्शाद फ़रमाई, फिर जब वोह उस (बात) का ज़िक्र कर बैठीं और अल्लाहने नबी (ﷺ) पर उसे ज़ाहिर फ़रमा दिया तो नबी (ﷺ)ने उन्हें उसका कुछ हिस्सा जता दिया और कुछ हिस्सा (बताने) से चश्म पोशी फ़रमाई, फिर जब नबी (ﷺ) ने उन्हें इसकी ख़बर दे दी (कि आप राज़ अफ़ुशा कर बैठीं हैं) तो वोह बोलीं : आपको येह किसने बता दिया है? नबी (ﷺ) ने फ़रमाया कि मुझे बड़े इल्मवाले बड़ी आगाही वाले (रब) ने बता दिया है।

اِنْ تَتُوْبَآ اِلَى اللّٰهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوْبُكُمَا ۚ وَاِنْ تَظٰهَرَا عَلَيْهِ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ مَوْلٰىهُ وَجِبْرِيْلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَعْدَ ذٰلِكَ ظَهِيْرٌ ④

4. अगर तुम दोनों अल्लाह की बारगाह में तौबा करो (तो तुम्हारे लिये बेहतर है) क्यों कि तुम दोनों के दिल (एक ही बात की तरफ़) झुक गए हैं, अगर तुम दोनोंने इस बात पर एक दूसरे की इआनत की (तो येह नबिय्ये करीम ﷺ के लिये बाइसे रंज हो सक्ता है) सो बेशक अल्लाह ही उनका दोस्तो मददगार है, और जिब्रील और सालेह मोमिनीन भी और उसके बाद (सारे) फ़रिश्ते भी (उनके) मदद गार हैं।

عَسٰى رَبُّهٗٓ اِنْ طَلَّقَكُنَّ اَنْ يُّبْدِلَهٗٓ اَزْوَاجًا خَيْرًا مِّنْكُنَّ مُسْلِمٰتٍ

5. अगर वोह तुम्हें तलाक़ दे दें तो अजब नहीं कि उनका रब उन्हें तुमसे बेहतर अज़्वाज बदले में अ़ता फ़रमा दे

مُؤْمِنٰتٍ قٰنِتٰتٍ تٰٓئِبٰتٍ عٰبِدٰتٍ سٰٓئِحٰتٍ ثَيِّبٰتٍ وَّاَبْكَارًا ۝٥

(जो) फ़रमां बरदार, ईमानदार, इताअ़त गुज़ार, तौबा शिआ़र, इबादत गज़ार, रोज़ादार, (बा'ज़) शौहर दीदा और (बा'ज़) कुंवारियां होंगी।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَآ اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ۝٦

6. ऐ ईमानवालो ! अपने आप को और अपने अह्लो अ़याल को उस आग से बचाओ जिस का ईंधन इन्सान और पथ्थर हैं, जिस पर सख़्त मिज़ाज ताक़तवर फ़रिश्ते (मुक़र्रर) हैं जो किसी भी अम्र में जिस का वोह उन्हें हुक्म देता है अल्लाह की ना फ़रमानी नहीं करते और वोही काम अंजाम देते हैं जिस का उन्हें हुक्म दिया जाता है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ ؕ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٧ ع

7. ऐ काफ़िरो ! आज के दिन कोई उ़ज़्र पेश न करो, बस तुम्हें उसी का बदला दिया जाएगा जो करते रहे थे।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ تَوْبَةً نَّصُوْحًا ؕ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّكَفِّرَ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ يَوْمَ لَا يُخْزِي اللّٰهُ النَّبِيَّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۚ نُوْرُهُمْ يَسْعٰى بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَتْمِمْ لَنَا نُوْرَنَا وَاغْفِرْ لَنَا ۚ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٨

8. ऐ ईमानवालो ! तुम अल्लाह के हज़ूर रुजूए कामिल से ख़ालिस तौबा कर लो, यक़ीन है कि तुम्हारा रब तुमसे तुम्हारी ख़ताएं दफ़ा' फ़रमा देगा और तुम्हें बहिश्तों में दाख़िल फ़रमाएगा जिनके नीचे से नेहरें रवां हैं जिस दिन अल्लाह (अपने) नबी (ﷺ) को और उन अहले ईमानको जो उनकी (ज़ाहिरी या बातिनी) मइय्यत में हैं रुस्वा नहीं करेगा, उनका नूर उनके आगे और उनके दाएं तरफ़ (रौशनी देता हुआ) तेज़ी से चल रहा होगा वोह अ़र्ज़ करते होंगे : ऐ हमारे रब ! हमारा नूर मुकम्मल फ़रमा दे और हमारी मग़फ़िरत फ़रमा दे, बेशक तू हर चीज़ पर बड़ा क़ादिर है।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَاْوٰهُمْ

9. ऐ नबिय्ये (मुकर्रम !) आप काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से जिहाद कीजिए और उन पर सख़्ती फ़रमाइए, और

جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝٩
ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوا
امْرَاَتَ نُوْحٍ وَّ امْرَاَتَ لُوْطٍ ؕ
كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا
صَالِحَيْنِ فَخَانَتٰهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا
عَنْهُمَا مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا وَّقِيْلَ ادْخُلَا
النَّارَ مَعَ الدّٰخِلِيْنَ ۝١٠

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا
امْرَاَتَ فِرْعَوْنَ ۘ اِذْ قَالَتْ رَبِّ
ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ
وَنَجِّنِيْ مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهٖ
وَنَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝١١
وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرٰنَ الَّتِيْٓ
اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهِ مِنْ
رُّوْحِنَا وَصَدَّقَتْ بِكَلِمٰتِ رَبِّهَا
وَكُتُبِهٖ وَكَانَتْ مِنَ الْقٰنِتِيْنَ ۝١٢

وقف لازم

ع ٥ ٢ ٢٠

उनका ठिकाना जहन्नम है, और वोह क्या ही बुरा ठिकाना है।

10. अल्लाहने उन लोंगो के लिये जिन्हों ने कुफ़्र किया नूह् (عليه السلام)की औरत और लूत (عليه السلام) की औरत (वाहिला और वाइला) की मिसाल बयान फ़रमाई है, वोह दोनों हमारे बंदों मे से दो सालेह बंदों के निकाह में थीं,सो दोनों ने उनसे ख़यानत की पस वोह अल्लाह (के अ़ज़ाब) के सामने उनके कुछ काम न आए और उनसे केह दिया गया कि तुम दोनों (औ़रतें) दाख़िल होनेवालों के साथ दोज़ख़ में दाख़िल हो जाओ।

11. और अल्लाह उन लोगों के लिए जो ईमान लाए हैं ज़ौजए फ़िरऔन (आसिया बिन्ते मज़ाहिम) की मिसाल बयान फ़रमाई है, जब उसने अर्ज़ किया : ऐ मेरे रब ! तू मेरे लिये बहिश्त में अपने पास एक घर बना दे,और मुझ को फ़िरऔन और उसके अ़मले (बद) से नजात दे दे और मुझे ज़ालिम क़ौम से (भी) बचा ले।

12. और (दूसरी मिसाल) इमरान की बेटी मरयम की (बयान फ़रमाई है) जिसने अपनी इस्मतो इफ़्फ़त की खूब हिफ़ाज़त की तो हमने (उसके) गिरेबान में अपनी रूह फूंक दी और उसने अपने रब के फ़रामीन और उसकी (नाज़िल कर्दह) किताबों की तस्दीक़ की और वोह इताअ़त गुज़ारों में से थी।

आयातुहा 30 | 67 सूरतुल मुल्क मक्किय्यतुन 77 | रुकूआतुहा 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान हमेशा रहम फरमाने वाला है।

تَبٰرَكَ الَّذِيْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ ۡ وَ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرُ ۨ ①

1. वोह ज़ात निहायत बा बरकत है जिसके दस्ते (क़ुदरत) में (तमाम जहानों की) सल्तनत है, और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है।

الَّذِيْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَ الْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ؕ وَ هُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفُوْرُ ۙ ②

2. जिसने मौत और ज़िन्दगी को (इस लिए) पैदा फ़रमाया कि वोह तुम्हें आज़माए कि तुम में से कौन अ़मल के लिहाज़ से बेहतर है, और वोह ग़ालिब है बड़ा बख़्शनेवाला है।

الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ؕ مَا تَرٰى فِيْ خَلْقِ الرَّحْمٰنِ مِنْ تَفٰوُتٍ ؕ فَارْجِعِ الْبَصَرَ ۙ هَلْ تَرٰى مِنْ فُطُوْرٍ ③

3. जिसमें सात (या मु-तअ़द्दिद) आस्मानी कुर्रे बाहमी मुताबिक़त के साथ (तबक़ दर तबक़) पैदा फ़रमाए, तुम अ़दमे तनासुब नहीं देखोगे, सो तुम निगाहे (ग़ौरो फ़िक्र) फेर कर देखो, क्या तुम इस (तख़्लीक़) में कोई शिगाफ़ या ख़लल (या'नी शिकस्तगी या इन्क़िताअ़) देखते हो।

ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ اِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَّ هُوَ حَسِيْرٌ ④

4. फिर तुम निगाहे (तहक़ीक़) को बार बार (मुख़्तलिफ़ ज़ावियों और साइन्सी तरीक़ों) से फेर कर देखो, (हर बार) नज़र तुम्हारी तरफ़ थक कर पलट आएगी, और वोह (कोई भी नुक़्स तलाश करने में) नाकाम होगी।

وَ لَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ وَ جَعَلْنٰهَا رُجُوْمًا لِّلشَّيٰطِيْنِ وَ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ السَّعِيْرِ ⑤

5. और बेशक हमने सबसे क़रीबी आस्मानी काइनात को (सितारों, सय्यारों, दीगर ख़लाई कुर्रों और ज़र्रों की शक्ल में) चराग़ों से मुज़य्यन फ़रमा दिया है, और हमने (उन्ही में से बा'ज़) को शैतानों (या'नी सरकश क़ुव्वतों) को मार भगाने का (या'नी उनके मनफ़ी असरात ख़त्म करने) का ज़रीआ़ (भी) बनाया है, और हमने उन (शैतानों) के लिए दहक्ती आग का अज़ाब तैयार कर रखा है।

وَلِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝٦

6. और ऐसे लोगों के लिए जिन्होंने अपने रब का इन्कार किया दोज़ख का अ़ज़ाब है, और वोह किया ही बुरा ठिकाना है।

اِذَآ اُلْقُوْا فِيْهَا سَمِعُوْا لَهَا شَهِيْقًا وَّهِيَ تَفُوْرُ ۝٧

7. जब वोह उसमें डाले जाएंगे तो उसकी ख़ौफ़नाक आवाज़ सुनेंगे और वोह (आग) जोश मार रही होगी।

تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ ؕ كُلَّمَآ اُلْقِيَ فِيْهَا فَوْجٌ سَاَلَهُمْ خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَذِيْرٌ ۝٨

8. गोया (अभी) शिद्दते ग़ज़ब से फट कर पारह पारह हो जाएगी, जब उसमें कोई गिरोह डाला जाएगा तो उसके दारोगे उनसे पूछेंगे : क्या तुम्हारे पास कोई डर सुनानेवाला नहीं आया था?

قَالُوْا بَلٰى قَدْ جَآءَنَا نَذِيْرٌ ۙ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ ۖۚ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ كَبِيْرٍ ۝٩

9. वोह कहेंगे : क्यों नहीं ! बेशक हमारे पास डर सुनानेवाला आया था तो हमने झुटला दिया और हमने कहा कि अल्लाहने कोई चीज़ नाज़िल नहीं की, तुम तो महज़ बड़ी गुमराही में (पड़े हुए) हो।

وَقَالُوْا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ اَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِيْٓ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ۝١٠

10. और कहेंगे : अगर हम (ह़क़ को) सुनते या समझते होते तो हम (आज) अहले जहन्नम में (शामिल) न होते।

فَاعْتَرَفُوْا بِذَنْۢبِهِمْ ۚ فَسُحْقًا لِّاَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ۝١١

11. पस वोह लोग अपने गुनाह का ए'तिराफ़ कर लेंगे, सो दोज़ख़वालों के लिए (रह़मते इलाही से) दूरी (मुक़र्रर) है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝١٢

12. बेशक जो लोग बिन देखे अपने रब से डरते हैं उनके लिए बख़्शिश और बड़ा अज्र है।

وَاَسِرُّوْا قَوْلَكُمْ اَوِ اجْهَرُوْا بِهٖ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝١٣

13. और तुम लोग अपनी बात छुपा कर कहो या उसे बुलन्द आवाज़ में कहो, यक़ीनन वोह सीनों की (छुपी) बातों को (भी) खूब जानता है।

اَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ ؕ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ۝١٤

14. भला वोह नहीं जानता जिसने पैदा किया है ? हालांकि वोह बड़ा बारीक बीन (हर चीज़से) ख़बरदार है।

هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ ذَلُوْلًا فَامْشُوْا فِيْ مَنَاكِبِهَا وَكُلُوْا مِنْ رِّزْقِهٖ ؕ وَاِلَيْهِ النُّشُوْرُ ﴿۱۵﴾

15. वोही है जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को नर्मो मुसख़्ख़र कर दिया, सो तुम उसके रास्ते में चलो फिरो, और उसके (दिए हुए) रिज़्क़ में से खाओ, और उसी की तरफ़ (मरने के बा'द) उठ कर जाना है।

ءَاَمِنْتُمْ مَّنْ فِي السَّمَآءِ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمُ الْاَرْضَ فَاِذَا هِيَ تَمُوْرُ ﴿۱۶﴾

16. क्या तुम आस्मानवाले (रब) से बे ख़ौफ़ हो गए हो कि वोह तुम्हें ज़मीन में धंसा दे (इस तरह) कि वोह अचानक लरज़ने लगे।

اَمْ اَمِنْتُمْ مَّنْ فِي السَّمَآءِ اَنْ يُّرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ؕ فَسَتَعْلَمُوْنَ كَيْفَ نَذِيْرِ ﴿۱۷﴾

17. क्या तुम आस्मानवाले (रब) से बे ख़ौफ़ हो गए हो कि वोह तुम पर पथ्थर बरसानेवाली हवा भेज दे? सो तुम अ़नक़रीब जान लोगे कि मेरा डराना कैसा है।

وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿۱۸﴾

18. और बेशक उन लोगों ने (भी) झुटलाया था जो उन से पेहले थे, सो मेरा इन्कार कैसा (इब्रतनाक) साबित हुआ।

اَوَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صٰٓفّٰتٍ وَّيَقْبِضْنَ ؕ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا الرَّحْمٰنُ ؕ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍۭ بَصِيْرٌ ﴿۱۹﴾

19. क्या उन्होंने परिन्दों को अपने ऊपर पर फैलाए हुए और (कभी) पर समेटे हुए नहीं देखा? (उन्हें फ़िज़ा में गिरने से) कोई नहीं रोक सक्ता सिवाए रह़मान के (बनाए हुए क़ानून के) बेशक वोह हर चीज़ को खूब जाननेवाला है।

اَمَّنْ هٰذَا الَّذِيْ هُوَ جُنْدٌ لَّكُمْ يَنْصُرُكُمْ مِّنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ ؕ اِنِ الْكٰفِرُوْنَ اِلَّا فِيْ غُرُوْرٍ ﴿۲۰﴾

20. भला कोई ऐसा है जो तुम्हारी फ़ौज बन कर (ख़ुदाए) रह़मान के मुक़ाबले में तुम्हारी मदद करे? काफ़िर मह़ज़ धोके में (मुब्तिला) हैं।

اَمَّنْ هٰذَا الَّذِيْ يَرْزُقُكُمْ اِنْ اَمْسَكَ رِزْقَهٗ ۚ بَلْ لَّجُّوْا فِيْ عُتُوٍّ وَّنُفُوْرٍ ﴿۲۱﴾

21. भला कोई ऐसा है जो तुम्हें रिज़्क़ दे सके (अगर अल्लाह तुमसे) अपना रिज़्क़ रोक ले? बल्कि वोह सरकशी और (ह़क़ से नफ़रत) में मज़बूती से अड़े हुए हैं।

أَفَمَنْ يَمْشِي مُكِبًّا عَلَىٰ وَجْهِهِ أَهْدَىٰ أَمَّنْ يَمْشِي سَوِيًّا عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٢٢﴾

22. क्या वोह शख़्स जो मुंह के बल औंधा चल रहा है ज़ियादह राहे रास्त पर है या वोह शख़्स जो सीधी ह़ालत में सह़ीह़ राह पर गामज़न है।

قُلْ هُوَ الَّذِي أَنْشَأَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ﴿٢٣﴾

23. आप फ़रमा दीजिए : वोही (अल्लाह) है जिसने तुम्हें पैदा फ़रमाया और तुम्हारे लिए कान और आंखें और दिल बनो, तुम बहुत ही कम शुक्र अदा करते हो।

قُلْ هُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٢٤﴾

24. फ़रमा दीजिए : वोही है जिसने तुम्हें ज़मीन में फैला दिया और तुम (रोज़े क़ियामत) उसी की तरफ़ जमा' किए जाओगे।

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٥﴾

25. और वोह केहते हैं : (येह क़ियामत का) वा'दा कब पूरा होगा अगर तुम सच्चे हो।

قُلْ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللَّهِ وَإِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٢٦﴾

26. फ़रमा दीजिए कि (उसके वक़्त का) इल्म तो अल्लाह ही के पास है, और मैं तो सिर्फ़ वाज़ेह डर सुनानेवाला हूं (अगर वक़्त बता दिया जाए तो डर ख़त्म हो जाएगा)।

فَلَمَّا رَأَوْهُ زُلْفَةً سِيئَتْ وُجُوهُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَقِيلَ هَٰذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تَدَّعُونَ ﴿٢٧﴾

27. फिर जब उस (दिन) को क़रीब देख लेंगे तो उन काफ़िरों के चेहरे बिगड़ कर सियाह हो जाएंगे, और (उनसे) कहा जाएगा : येही वोह (वा'दा) है जिसके (जल्द ज़ाहिर किए जाने के) तुम बहुत तलबगार थे।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَهْلَكَنِيَ اللَّهُ وَمَنْ مَّعِيَ أَوْ رَحِمَنَا فَمَنْ يُجِيرُ الْكَافِرِينَ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٢٨﴾

28. फ़रमा दीजिए : भला येह बताओ अगर अल्लाह मुझे मौत से हम किनार कर दे (जैसे तुम ख़्वाहिश करते हो) और जो मेरे साथ हैं (उनको भी) या हम पर रह़म फ़रमाए (या'नी हमारी मौत को मुअख़्ख़र कर दे) तो (इन दोनों सूरतों में) कौन है जो काफ़िरों को दर्दनाक अ़ज़ाब से पनाह देगा?

قُلْ هُوَ الرَّحْمَٰنُ آمَنَّا بِهِ وَعَلَيْهِ

29. फ़रमा दीजिए : वोही (ख़ुदाए) रह़मान है जिस पर

تَوَكَّلْنَا ۚ فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٩﴾

हम ईमान लाए हैं और हमने भरोसा किया है, पस तुम अ़नक़रीब जान लोगे कि कौन शख़्स खुली गुमराही में है।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَصْبَحَ مَآؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ يَّاْتِيْكُمْ بِمَآءٍ مَّعِيْنٍ ﴿٣٠﴾

30. फ़रमा दीजिए : अगर तुम्हारा पानी ज़मीन में बहुत नीचे उतर जाए (या'नी ख़ुश्क हो जाए) तो कौन है जो तुम्हें (ज़मीन पर) बेहता हुआ पानी ला दे।

आयातुहा 52 | 68 सूरतुल क़-लमि मक्कियतुन 2 | रुकूआ़तुहा 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُوْنَ ﴿١﴾

1. नून (ह़क़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं)। क़लम की क़सम और उस (मज़मून) की क़सम जो (फ़रिश्ते) लिखते हैं।

مَآ اَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ بِمَجْنُوْنٍ ﴿٢﴾

2. (ऐ ह़बीबे मुकर्रम !) आप अपने रब के फ़ज़्ल से (हरगिज़) दीवाने नहीं हैं।

وَاِنَّ لَكَ لَاَجْرًا غَيْرَ مَمْنُوْنٍ ﴿٣﴾

3. और बेशक आप के लिए ऐसा अज्र है जो कभी ख़त्म न होगा।

وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ ﴿٤﴾

4. और बेशक आप अज़ीमुश्शान ख़ुल्क़ पर क़ाइम हैं (या'नी आदाबे क़ुरआनी से मुज़य्यन और अख़्लाक़े इलाहिय्या से मुत्तसिफ़ हैं)।

فَسَتُبْصِرُ وَيُبْصِرُوْنَ ﴿٥﴾

5. पस अ़नक़रीब आप (भी) देख लेंगे और वोह (भी) देख लेंगे।

بِاَيِّكُمُ الْمَفْتُوْنُ ﴿٦﴾

6. कि तुम में से कौन दीवाना है।

اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿٧﴾

7. बेशक आपका रब (भी) उस शख़्स को खूब जानता है जो उसकी राहसे भटक गया है, और वोह उनको (भी) खूब जानता है जो हिदायत याफ़्ता हैं।

فَلَا تُطِعِ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٨﴾

8. सो आप झुटलानेवालों की बात न मानें।

وَدُّوْا لَوْ تُدْهِنُ فَيُدْهِنُوْنَ ۝٩

9. वोह तो चाहते हैं कि (दीन के मुआ़मले में) आप (बेजा) नरमी इख़्तियार कर लें तो वोह भी नर्म पड़ जाएंगे।

وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِيْنٍ ۝١٠

10. और आप किसी ऐसे शख़्स की बात न मानें जो बहुत क़स्में खानेवाला इन्तिहाई ज़लील है।

هَمَّازٍ مَّشَّآءٍۭ بِنَمِيْمٍ ۝١١

11. (जो) ता'ना ज़न, ऐब जू, (है और) लोगों में फ़साद अंगेज़ी के लिए चुग़ल ख़ोरी करता फिरता है।

مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ۝١٢

12. (जो) भलाई के काम से बहुत रोकनेवाला बख़ील, ह़द से बढ़नेवाला सरकश (और) सख़्त गुनाहगार है।

عُتُلٍّۭ بَعْدَ ذٰلِكَ زَنِيْمٍ ۝١٣

13. (जो) बद मिज़ाज दुरुश्त ख़ू है, मज़ीद बर आं बद अस्ल (भी) है ★

اَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَّبَنِيْنَ ۝١٤

14. इस लिए (उसकी बात को अहमिय्यत न दें) कि वोह मालदार साह़िबे औलाद है।

اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝١٥

15. जब उस पर हमारी आयतें तिलावत की जाएं (तो) केहता है : येह (तो) पेहले लोगों के अफ़्साने हैं।

سَنَسِمُهٗ عَلَى الْخُرْطُوْمِ ۝١٦

16. अब हम उसकी सूंड जैसी नाक पर दाग़ देंगे।

اِنَّا بَلَوْنٰهُمْ كَمَا بَلَوْنَآ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ ۚ اِذْ اَقْسَمُوْا لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِيْنَ ۝١٧

17. बेशक हम उन (अहले मक्का) की (उसी तरह़) आज़्माइश करेंगे जिस तरह हमने (यमन के) उन बाग़ वालों को आज़्माया था जब उन्होंने क़सम खाई थी कि हम सुब्ह़ सवेरे यक़ीनन उसके फल को तोड़ लेंगे।

★ येह आयात वलीद बिन मुग़ीरह के बारे में नाज़िल हुईं, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास ﷺ फ़रमाते हैं कि जितने ज़िल्लत आमेज़ अल्क़ाब बारी तआ़लाने इस बद बख़्त को दिए आज तक कलामे इलाही में किसी और के लिए इस्ते'माल नहीं हुए,वजह येह थी कि उसने हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ की शाने अक़्दस में गुस्ताख़ी की, जिस पर ग़ज़बे इलाही भड़क उठा, वलीदने हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ की शान में गुस्ताख़ी का एक कलिमा बोला था, जवाबन बारी तआ़ला ने उसके दस रज़ाइल बयान किए और आख़िर में नुत्फ़ा ह़राम होना भी ज़ाहिर कर दिया, और उसकी मां ने बाद अज़ां इस अम्र की तस्दीक़ भी कर दी।(तफ़्सीरे क़ुर्तुबी,राज़ी,नस्फ़ी वगैरहा)

وَلَا يَسْتَثْنُوْنَ ﴿۱۸﴾

18. और उन्होंने (इन शा अल्लाह केह कर या ग़रीबों के हिस्से) का इस्तिस्ना किया।

فَطَافَ عَلَيْهَا طَآئِفٌ مِّنْ رَّبِّكَ وَهُمْ نَآئِمُوْنَ ﴿۱۹﴾

19. पस आपके रब की जानिब से एक फिरनेवाला अज़ाब रात ही रात में उस (बाग़) पर फिर गया और वोह सोते ही रेह गए।

فَاَصْبَحَتْ كَالصَّرِيْمِ ﴿۲۰﴾

20. सो वोह लेहलहाता फलों से लदा हुआ बाग़ सुब्ह़ को कटी हुई खेती की तरह़ हो गया।

فَتَنَادَوْا مُصْبِحِيْنَ ﴿۲۱﴾

21. फिर सुब्ह़ होते ही वोह एक दूसरे को पुकारने लगे।

اَنِ اغْدُوْا عَلٰى حَرْثِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰرِمِيْنَ ﴿۲۲﴾

22. कि अपनी खेती पर सवेरे सवेरे चलो अगर तुम फल तोड़ना चाह्ते हो।

فَانْطَلَقُوْا وَهُمْ يَتَخَافَتُوْنَ ﴿۲۳﴾

23. सो वोह लोग चल पड़े और वोह आपस में चुपके चुपके केहते जाते थे।

اَنْ لَّا يَدْخُلَنَّهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُمْ مِّسْكِيْنٌ ﴿۲۴﴾

24. कि आज उस बाग़ में तुम्हारे पास हरगगिज़ कोई मोह्ताज न आने पाए।

وَّغَدَوْا عَلٰى حَرْدٍ قٰدِرِيْنَ ﴿۲۵﴾

25. और वोह सुब्ह़ सवेरे (फल काटने और ग़रीबों को उनके हिस्से से मह़रूम करने के) मन्सूबे पर क़ादिर बनते हुए चल पड़े।

فَلَمَّا رَاَوْهَا قَالُوْٓا اِنَّا لَضَآلُّوْنَ ﴿۲۶﴾

26. फिर जब उन्होंने उस (वीरान बाग़) को देखा तो केहने लगे : हम यक़ीनन रास्ता भूल गए हैं (येह हमारा बाग़ नहीं है)।

بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ ﴿۲۷﴾

27. (जब ग़ौर से देखा तो पुकार उठे : नहीं नहीं) बल्कि हम तो मह़रूम हो गए हैं।

قَالَ اَوْسَطُهُمْ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ لَوْلَا تُسَبِّحُوْنَ ﴿۲۸﴾

28. उनके एक अद्‌ल पसंद ज़ीरक शख़्स ने कहा : क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि तुम (अल्लाहका) ज़िक्रो तस्बीह़ क्यों नहीं करते।

قَالُوْا سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٢٩﴾

29. (तब) वोह केहने लगे हमारा रब पाक है, बेशक हम ही ज़ालिम थे।

فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَلَاوَمُوْنَ ﴿٣٠﴾

30. सो वोह एक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जेह हो कर बाहम मलामत करने लगे।

قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا طٰغِيْنَ ﴿٣١﴾

31. केहने लगे : हाए हमारी शामत ! बेशक हम ही सरकश-व-बाग़ी थे।

عَسٰى رَبُّنَآ اَنْ يُّبْدِلَنَا خَيْرًا مِّنْهَآ اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا رٰغِبُوْنَ ﴿٣٢﴾

३२. उम्मीद है हमारा रब हमें इसके बदले में इससे बेहतर देगा, बेशक हम अपने रब की तरफ़ रुजू करते हैं।

كَذٰلِكَ الْعَذَابُ ۭ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٣﴾

33. अज़ाब इसी तरह होता है, और वाक़ई आख़िरत का अज़ाब (इससे) कहीं बढ़ कर है, काश ! वोह लोग जानते होते।

اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٣٤﴾

34. बेशक परहेज़गारों के लिए उनके रब के पास ने'मतों वाले बाग़ हैं।

اَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِيْنَ كَالْمُجْرِمِيْنَ ﴿٣٥﴾

35. क्या हम फरमां बरदारों को मुज्रिमों की तरह (महरूम) कर देंगे।

مَا لَكُمْ ۪ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٦﴾

३६. तुम्हें क्या हो गया है, क्या फैस्ला करते हो।

اَمْ لَكُمْ كِتٰبٌ فِيْهِ تَدْرُسُوْنَ ﴿٣٧﴾

37. क्या कुम्हारे पास कोई किताबहै जिसमें तुम (येह) पढ़ते हो।

اِنَّ لَكُمْ فِيْهِ لَمَا تَخَيَّرُوْنَ ﴿٣٨﴾

38. कि तुम्हारे लिए उसमें वोह कुछ है जो तुम पसंद करते हो।

اَمْ لَكُمْ اَيْمَانٌ عَلَيْنَا بَالِغَةٌ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۙ اِنَّ لَكُمْ لَمَا

39. या तुम्हारे लिए हमारे ज़िम्मे कुछ (ऐसे) पुख़्ता अ़हदो पैमान हैं जो रोज़े क़ियामत तक बाक़ी रहें (जिनके

تَحْكُمُوْنَ ۝٣٩

ज़रीए हम पाबंद हों) कि तुम्हारे लिए वोही कुछ होगा जिसका तुम (अपने हक़ में) फ़ैसला करोगे।

سَلْهُمْ اَيُّهُمْ بِذٰلِكَ زَعِيْمٌ ۝٤٠

40. उनसे पूछिए कि उनमें से कौन इस (क़िस्म की बेहूदा बात)का ज़िम्मे दार है।

اَمْ لَهُمْ شُرَكَآءُ ۚ فَلْيَاْتُوْا بِشُرَكَآىِٕهِمْ اِنْ كَانُوْا صٰدِقِيْنَ ۝٤١

41. या उनके कुछ और शरीक (भी) हैं? तो उन्हें चाहिए कि अपने शरीकों को ले आएं अगर वोह सच्चे हैं।

يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَّ يُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ۝٤٢

42. जिस दिन साक़ (या'नी अह्वाले क़ियामत की हौलनाक शिद्दत) से परदा उठाया जाएगा और वोह ना फ़रमान) लोग सजदे के लिए बुलाए जाएंगे तो वोह (सजदह) न कर सकेंगे।

خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ وَ قَدْ كَانُوْا يُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ وَهُمْ سٰلِمُوْنَ ۝٤٣

43. उनकी आंखें (हैबत और नदामत के बाइस) झुकी हुई होंगी, (और) उन पर ज़िल्लत छा रही होगी, हालांकि वोह (दुनिया में भी) सजदे के लिए बुलाए जाते थे जबकि वोह तंदुरुस्त थे (मगर फिर भी सजदे के इन्कारी थे)।

فَذَرْنِيْ وَ مَنْ يُّكَذِّبُ بِهٰذَا الْحَدِيْثِ ؕ سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٤٤

44. पस (ऐ हबीबे मुकर्रम !) आप मुझे और उस शख़्स को जो इस कलाम को झुटलाता है (इन्तिक़ाम के लिए) छोड़ दें। अब हम उन्हें आहिस्ता आहिस्ता (तबाही की तरफ़) इस तरह ले जाएंगे कि उन्हें मा'लूम तक न होगा।

وَاُمْلِيْ لَهُمْ ؕ اِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ ۝٤٥

45. और मैं उन्हें मोहलत दे रहा हूं, बेशक मेरी तदबीर बहुत मज़्बूत है।

اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ اَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ ۝٤٦

46. क्या आप उनसे (तब्लीग़े रिसालत पर) कोई मुआवज़ा मांग रहे हैं कि वोह तावान (के बोझ) से दबे जा रहे हैं।

اَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ ۝٤٧

47. क्या उनके पास इल्मे गैब है कि वोह (उसकी बुन्याद पर अपने फैसले) लिखते हैं।

فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَ لَا تَكُنْ

48. पस आप अपने रब के हुक्म के इन्तिज़ार में सब्र

كَصَاحِبِ الْحُوتِ إِذْ نَادَىٰ وَهُوَ مَكْظُومٌ ﴿٤٨﴾

फ़रमाइये और मछलीवाले (पयग़म्बर यूनुस عليه السلام) की तरह़ (दिल गिरफ़्ता) न हों, जब उन्होंने (अल्लाह को) पुकारा इस हाल में कि वोह (अपनी क़ौम पर) ग़मो ग़ुस्से से भरे हुए थे।

لَوْلَا أَن تَدَارَكَهُ نِعْمَةٌ مِّن رَّبِّهِ لَنُبِذَ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ مَذْمُومٌ ﴿٤٩﴾

49. अगर उनके रबकी रह़मतो ने'मत उनकी दस्तगीरी न करती तो वोह ज़रूर चट्यल मैदान में फेंक दिए जाते और वोह मलामत ज़दह होते (मगर अल्लाहने उन्हें उससे महफ़ूज़ रख्खा।

فَاجْتَبَاهُ رَبُّهُ فَجَعَلَهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٥٠﴾

50. फिर उनके रबने उन्हें बर गुज़ीदह बना लिया और उन्हें (अपने क़ुर्बे ख़ास से नवाज़ कर) कामिल नेकूकारों में (शामिल) फ़रमा दिया।

وَإِن يَكَادُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَيُزْلِقُونَكَ بِأَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُولُونَ إِنَّهُ لَمَجْنُونٌ ﴿٥١﴾

51. और बेशक काफ़िर लोग जब क़ुर्आन सुनते हैं तो ऐसा लगता है कि आपको अपनी (ह़ासिदान बद) नज़रों से नुक़्सान पहुंचाना चाह्ते हैं और केहते हैं कि येह तो दीवाना है।

وَمَا هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعَالَمِينَ ﴿٥٢﴾

52. और वोह (क़ुर्आन) तो सारे जहानों के लिए नसीह़त है.

आयातुहा 52 | 69 सूरतुल ह़ाक़्क़ति मक्कियतुन 78 | रुकूआतुहा 2

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहयात महरबान हमेशा रह़म फ़रमाने वाला है।

الْحَاقَّةُ ﴿١﴾

1. यक़ीनन वाक़े' होने वाली घड़ी।

مَا الْحَاقَّةُ ﴿٢﴾

2. क्या चीज़ है यक़ीनन वाक़े' होने वाली घड़ी।

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْحَاقَّةُ ﴿٣﴾

3. और आपको किस चीज़ने ख़बरदार किया कि यक़ीनन वाक़े' होनेवाली (क़ियामत) कैसी है।

كَذَّبَتْ ثَمُودُ وَعَادٌ بِالْقَارِعَةِ ﴿٤﴾

4. समूद और आ़दने (जुम्ला मौजूदात को) बाहमी टकराव से पाश पाश कर देनेवाली (क़ियामत) को झुटलाया था।

فَأَمَّا ثَمُودُ فَأُهْلِكُوا بِالطَّاغِيَةِ ﴿٥﴾

5. पस क़ौमे सूमद के लोग ! तो वोह तो हद से ज़ियादह कड़कदार चिंघाड़नेवाली आवाज़ से हलाक कर दिए गए।

وَأَمَّا عَادٌ فَأُهْلِكُوا بِرِيحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ﴿٦﴾

6. और रहे क़ौमे आ़द के लोग ! तो वोह (भी) ऐसी तेज़ आंधी से हलाक कर दिए गए जो इन्तिहाई सर्द निहायत गरजदार थी।

سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَثَمَانِيَةَ أَيَّامٍ حُسُومًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِيهَا صَرْعَىٰ كَأَنَّهُمْ أَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ﴿٧﴾

7. अल्लाहने उस (आंधी) को उन पर मुसल्सल सात रातें और आठ दिन मुसल्लत रख्खा, सो तू उन लोगों को उस (अ़र्से) में (इस तरह) मरे पड़े देखता, (तो यूं लगता) गोया वोह खजूर के गिरे हुए दरख़्तों की खोखली जड़ें हैं।

فَهَلْ تَرَىٰ لَهُمْ مِنْ بَاقِيَةٍ ﴿٨﴾

8. सो तू क्या उनमें से किसी को बाक़ी देखता है।

وَجَاءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهُ وَالْمُؤْتَفِكَاتُ بِالْخَاطِئَةِ ﴿٩﴾

9. और फ़िरऔन जो उससे पहले थे और (क़ौमे लूतकी) उल्टी हुई बस्तियों (के बाशिन्दों) ने बड़ी ख़ताएं की थीं।

فَعَصَوْا رَسُولَ رَبِّهِمْ فَأَخَذَهُمْ أَخْذَةً رَابِيَةً ﴿١٠﴾

10. पस उन्होंने (भी) अपने रब के रसूल की ना फ़रमानी की, सो अल्लाहने उन्हें निहायत सख़्त गिरफ़्त में पकड़ लिया।

إِنَّا لَمَّا طَغَى الْمَاءُ حَمَلْنَاكُمْ فِي الْجَارِيَةِ ﴿١١﴾

11. बेशक जब (तूफ़ाने नूह़ का) पानी ह़द से गुज़र गया तो हमने तुम्हें रवां कश्ती में सवार कर लिया।

لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَتَعِيَهَا أُذُنٌ وَاعِيَةٌ ﴿١٢﴾

12. ताकि हम उस (वाक़िए) को तुम्हारे लिए (याद गार) नसीहत बना दें और मह़फ़ूज़ रखनेवाले कान उसे याद रख्खें।

فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ نَفْخَةٌ وَاحِدَةٌ ﴿١٣﴾

13. फिर जब सूर में एक मर्तबा फूंक मार दी जाएगी।

وَحُمِلَتِ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ

14. और ज़मीन और पहाड़ (अपनी जग्हों से) उठा लिए

فَدُكَّتَا دَكَّةً وَّاحِدَةً ﴿١٤﴾

जाएंगे, फिर वोह एक ही बार टकरा कर रेज़ा रेज़ा कर दिए जाएंगे।

فَيَوْمَئِذٍ وَّقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿١٥﴾

15. सो उस वक़्त वाक़े' होने वाली (क़ियामत) बरपा हो जाएगी।

وَانْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ وَّاهِيَةٌ ﴿١٦﴾

16. और (सब) आस्मानी कुर्रे फट जाएंगे और येह काइनात (एक निज़ाम में मरबूत और हरकत में रखने वाली) क़ुव्वत के ज़रीए (सियाह) शिगाफ़ों ★ पर मुश्तमिल हो जाएगी।

وَّالْمَلَكُ عَلٰٓى اَرْجَآئِهَا ؕ وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمٰنِيَةٌ ﴿١٧﴾

17. और फ़रिश्ते उसके किनारों पर खड़े होंगे, और आपके रबके अ़र्श को उस दिन उनके ऊपर आठ (फ़रिश्ते या फ़रिश्तों के तबक़ात) उठाए होंगे।

يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُوْنَ لَا تَخْفٰى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ﴿١٨﴾

18. उस जिन तुम (हिसाब के लिए) पेश किए जाओगे, तुम्हारी कोई पोशीदह बात छुपी न रहेगी।

فَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ ۙ فَيَقُوْلُ هَآؤُمُ اقْرَءُوْا كِتٰبِيَهْ ﴿١٩﴾

19. सो वोह शख़्स जिसका नामए आ'माल उसके दाएं हाथ में दिया जाएगा तो वोह (खुशी से) कहेगा : आओ मेरे नामए आ'माल पढ़ लो।

اِنِّيْ ظَنَنْتُ اَنِّيْ مُلٰقٍ حِسَابِيَهْ ﴿٢٠﴾

20. मैं तो यक़ीन रखता था कि मैं अपने हिसाब को (आसान) पानेवाला हूं।

فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ﴿٢١﴾

21. सो वोह पसन्दीदह ज़िन्दगी बसर करेगा।

فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ﴿٢٢﴾

22. बुलन्दो बाला जन्नत में।

★ واهية का मा'ना है, الوَهْيُ: وَهِيَ، يَهِي، وَهْيًا شقٌ فى الأديم والثوب ونحوهما، يقال: وَهِيَ الثوب أى إنشَقَّ وَ تَخَرقَّ (चमड़े, कपड़े या इस क़िस्म की दूसरी चीज़ों का फट जाना और उनमें शिगाफ़ हो जाना, इसी लिए कहा जाता है : कपड़ा फट गया और उसमें शिगाफ़ हो गया) अल मफ़्रिदात, लिसानुल अ़रब, क़ामूसुल मुह़ीत, अल मुन्जिद वग़ैरह) इसे जदीद साइन्स ने black holes से ता'बीर किया है।

قُطُوفُهَا دَانِيَةٌ ﴿٢٣﴾

23. जिसके ख़ूशे (फलों की कसरत के बाइस) झुके हुए होंगे।

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيٓـًٔا بِمَآ أَسْلَفْتُمْ فِي الْأَيَّامِ الْخَالِيَةِ ﴿٢٤﴾

24. (उनसे कहा जाएगा :) ख़ूब लुत्फ़ अंदोज़ी के साथ खाओ और पियो उन (आ'माल) के बदले जो तुम गुज़िश्ता (ज़िंदगी के) अय्याम में आगे भेज चुके थे।

وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتٰبَهُ بِشِمَالِهِ فَيَقُولُ يٰلَيْتَنِي لَمْ أُوتَ كِتٰبِيَهْ ﴿٢٥﴾

25. और वोह शख़्स जिसका नामए आ'माल उसके बाएं हाथ में दिया जाएगा तो वोह कहेगा : हाए काश ! मुझे मेरा नामए आ'माल न दिया गया होता।

وَلَمْ أَدْرِ مَا حِسَابِيَهْ ﴿٢٦﴾

26. और मैं न जानता कि मेरा हिसाब कया है।

يٰلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ﴿٢٧﴾

27. हाए काश ! वोही (मौत) काम तमाम कर चुकी होती।

مَآ أَغْنٰى عَنِّي مَالِيَهْ ﴿٢٨﴾

28. (आज) मेरा माल मुझ से (अज़ाब को) कुछ भी दूर न कर सका।

هَلَكَ عَنِّي سُلْطٰنِيَهْ ﴿٢٩﴾

29. मुझसे मेरी क़ुव्वतव सल्तनत (भी) जाती रही।

خُذُوهُ فَغُلُّوهُ ﴿٣٠﴾

30.(हुक्म होगा :) इसे पकड़ लो और इसे तौक़ पेहना दो।

ثُمَّ الْجَحِيمَ صَلُّوهُ ﴿٣١﴾

31. फिर इसे दोज़ख में फेंक दो।

ثُمَّ فِي سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُونَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوهُ ﴿٣٢﴾

32. फिर एक ज़ंजीर में जिसकी लम्बाई सत्तर गज़ है इसे जकड़ दो।

إِنَّهُ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ الْعَظِيمِ ﴿٣٣﴾

33. बेशक येह बड़े अज़्मतवाले अल्लाह पर ईमान नहीं रखता था।

وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِينِ ﴿٣٤﴾

34. और न मोहताज को खाना खिलाने पर रग़बत रखता था।

فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هٰهُنَا حَمِيمٌ ﴿٣٥﴾

35. सो आज के दिन न उसका कोई गर्म जोश दोस्त है।

وَلَا طَعَامٌ إِلَّا مِنْ غِسْلِينٍ ﴿٣٦﴾

36. और न पीप के सिवा (उस के लिए) कोई खाना है।

لَا يَأْكُلُهُ إِلَّا الْخٰطِئُونَ ﴿٣٧﴾

37. जिसे गुनहगारों के सिवा कोई न खाएगा।

فَلَآ أُقْسِمُ بِمَا تُبْصِرُونَ ﴿٣٨﴾

38. सो मैं क़सम खाता हूं उन चीज़ों की जिन्हे तुम देखते हो।

وَمَا لَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٣٩﴾

39. और उन चीज़ों की (भी) जिन्हें तुम नहीं देखते।

اِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ ﴿٤٠﴾

40. बेशक येह (क़ुरआन) बुज़ुर्गी-व-अ़ज़मतवाले रसूल (ﷺ) का (मुनज़्ज़िलु मिनल्लाह) फ़रमान है, (जिसे वोह रिसालतन और नियाबतन बयान फ़रमाते हैं)

وَّمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ ؕ قَلِيْلًا مَّا تُؤْمِنُوْنَ ﴿٤١﴾

41. और येह किसी शाइ़र का कलाम नहीं (कि अदबी महारत से ख़ुद लिखा गया हो) तुम बहुत ही कम यक़ीन रखते हो।

وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٢﴾

42. और न (येह) किसी काहिन का कलाम है (कि फ़न्नी अंदाज़ों से वज़ा' किया गया हो) तुम बहुत ही कम नसीह़त ह़ासिल करते हो।

تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٣﴾

43. (येह) तमाम जहानों के रब की तरफ़ से नाज़िल शुदह है।

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ ﴿٤٤﴾

44. और अगर वोह हम पर कोई (एक) बात भी घड़ कर केह देते।

لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ﴿٤٥﴾

45. तो यक़ीनन हम उन को पूरी क़ुव्वत व क़ुद्रत के साथ पकड़ लेते।

ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ ﴿٤٦﴾

46. फिर हम ज़रूर उनकी शह रग काट देते।

فَمَا مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ عَنْهُ حٰجِزِيْنَ ﴿٤٧﴾

47. फिर तुम में से कोई भी (हमें) इससे रोकनेवाला न होता।

وَاِنَّهٗ لَتَذْكِرَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٨﴾

48. और पस बिला शुब्हा येह (क़ुरआन) परहेज़गारों के लिए नसीह़त है।

وَاِنَّا لَنَعْلَمُ اَنَّ مِنْكُمْ مُّكَذِّبِيْنَ ﴿٤٩﴾

49. और यक़ीनन हम जानते हैं कि तुम में से बा'ज़ लोग (इस खुली हुई सच्चाई को) झुटलाने वाले हैं।

وَاِنَّهٗ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٠﴾

50. और वाक़ई येह काफ़िरों के लिए (मूजिबे) ह़सरत है।

وَاِنَّهٗ لَحَقُّ الْيَقِيْنِ ﴿٥١﴾

51. और बेशक येह ह़क़्क़ुल यक़ीन है।

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ۝٥٢

52. सो (ऐ ह़बीबे मुकर्रम !) आप अपने अज़्मतवाले रब के नाम की तस्बीह़ करते रहिए।

आयातुहा 44	70 सूरतुल मआरिजि मक्कियुतुन 79	रुकूआतुहा 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहयात महरबान हमेशा रह़म फ़रमाने वाला है।

سَاَلَ سَآئِلٌۢ بِعَذَابٍ وَّاقِعٍ ۝١

1. एक साइल ने ऐसा अ़ज़ाब तलब किया जो वाके' होने वाला है।

لِّلْكٰفِرِيْنَ لَيْسَ لَهٗ دَافِعٌ ۝٢

2. काफिरों के लिए जिसे कोई दफ़ा' करनेवाला नहीं।

مِّنَ اللّٰهِ ذِى الْمَعَارِجِ ۝٣

3. (वोह) अल्लाह की जानिब से (वाके' होगा) जो आस्मानी ज़ीनों (और बुलन्द मरातिबो दरजात) का मालिक है।

تَعْرُجُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ اِلَيْهِ فِىْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗ خَمْسِيْنَ اَلْفَ سَنَةٍ ۝٤

4. उस (के अ़र्श) की तरफ़ फ़रिश्ते और रूहुल अमीन उ़रूज करते हैं एक दिन में, जिसका अंदाज़ा (दुन्यवी ह़िसाब से) पचास बज़ार बरस का है। ★

فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيْلًا ۝٥

5. सो (ऐ ह़बीब !) आप (काफ़िरों की बातों पर) हर शिक्वे से पाक सब्र फरमाएं.

اِنَّهُمْ يَرَوْنَهٗ بَعِيْدًا ۝٦

6. बेशक वोह (तो) उस (दिन) को दूर समझ रहे हैं।

وَّنَرٰىهُ قَرِيْبًا ۝٧

7. और हम उसे क़रीब ही देखते हैं।

يَوْمَ تَكُوْنُ السَّمَآءُ كَالْمُهْلِ ۝٨

8.जिस दिन आस्मान पिघले हुए तांबे की तरह हो जाएगा।

وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ۝٩

9.और पहाड़ (धुन्की हुई) रंगीन ऊन की तरह हो जाएगा।

★ فِىْ يَوْمٍ अगर وَاقِعٍ का सिला हो तो मा'ना होगा कि जिस दिन (यौमे क़ियामत)को अज़ाब वाक़े' होगा उसका दौरानिया 50 हज़ार बरस के क़रीब है,और अगर येह تَعْرُجُ का सिला हो तो मा'ना होगा कि मलाइका और अरवाहे मोमिनीन जो अ़र्शे इलाही की तरफ़ उरूज करती हैं उनके उरूज की रफ़तार 50 हज़ार बरस यौमिया है, वोह फिर भी कितनी मुद्दत में मंज़िले मक़्सूद तक पहुंचते हैं। والله أعلم بالصواب (यहां से नूरी साल (light year) के तसव्वुर का इस्तिंबात होता है।)

10. और कोई दोस्त किसी दोस्त का पुर्सां न होगा।

وَلَا يَسْـَٔلُ حَمِيمٌ حَمِيمًا ﴿١٠﴾

11. (हालां कि) वोह (एक दूसरे को) दिखाए जा रहे होंगे, मुजरिम आरज़ू करेगा कि काश! उस दिन के अ़ज़ाब (से रिहाई) के बदले में अपने बेटे दे दे।

يُبَصَّرُونَهُمْ ۚ يَوَدُّ الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِي مِنْ عَذَابِ يَوْمِئِذٍ بِبَنِيهِ ﴿١١﴾

12. और अपनी बीवी और अपना भाई (दे डाले)।

وَصَاحِبَتِهِ وَأَخِيهِ ﴿١٢﴾

13. और अपना (तमाम) खानदान जो उसे पनाह देता था।

وَفَصِيلَتِهِ الَّتِي تُؤْوِيهِ ﴿١٣﴾

14.और जितने लोग भी ज़मीन में हैं, सब के सब (अपनी ज़ात के लिए बदला कर दे) फिर येह (फ़िदया) उसे (अल्लाह के अज़ाब से) बचा ले।

وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ يُنْجِيهِ ﴿١٤﴾

15.ऐसा हरगिज़ न होगा, बेशक वोह शो'ला ज़न आग है।

كَلَّا ۖ إِنَّهَا لَظَىٰ ﴿١٥﴾

16. सर और तमाम आ'ज़ाए बदन की खाल उतार देने वाली है।

نَزَّاعَةً لِلشَّوَىٰ ﴿١٦﴾

17. और वोह उसे बुला रही है जिसने (ह़क़ से) पीठ फेरी और रूगर्दानी की।

تَدْعُو مَنْ أَدْبَرَ وَتَوَلَّىٰ ﴿١٧﴾

18. और (उसने) माल जमा' किया फिर (उसे तक़्सीम से) रोके रखखा.

وَجَمَعَ فَأَوْعَىٰ ﴿١٨﴾

19. बेशक इन्सान बे सब्र और लालची पैदा हुवा है।

إِنَّ الْإِنْسَانَ خُلِقَ هَلُوعًا ﴿١٩﴾

20. जब उसे मुसीबत (या माली नुक़्सान) पहुंचे तो घबरा जाता है।

إِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوعًا ﴿٢٠﴾

21. और जब उसे भलाई (या माली फ़राख़ी) ह़ासिल हो तो बुख़्ल करता है।

وَإِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوعًا ﴿٢١﴾

22. मगर वोह नमाज़ अदा करने वाले।

إِلَّا الْمُصَلِّينَ ﴿٢٢﴾

23. जो अपनी नमाज़ पर हमेशगी क़ाइम रखने वाले हैं।

الَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ دَائِمُونَ ﴿٢٣﴾

24. और वोह (ईसार केश) लोग जिनके अम्वाल में ह़िस्सा मुक़र्रर है।

وَالَّذِينَ فِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَعْلُومٌ ﴿٢٤﴾

لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ ﴿۲۵﴾

25. मांगनेवाले और न मांगनेवाले मोहताज का।

وَ الَّذِيْنَ يُصَدِّقُوْنَ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ﴿۲۶﴾

26. और वोह लोग जो रोजे़ जज़ा की तस्दीक़ करते हैं।

وَ الَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ ﴿۲۷﴾

27. और वोह लोग जो अपने रब के अज़ाब से डरनेवाले हैं।

اِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَاْمُوْنٍ ﴿۲۸﴾

28. बेशक उनके रब का अज़ाब ऐसा नहीं जिससे बे ख़ौफ़ हुआ जाए।

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ﴿۲۹﴾

29. और वोह लोग जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं।

اِلَّا عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ﴿۳۰﴾

30.सिवाए अपनी मन्कूहा बीवियों के या अपनी मम्लूका कनीज़ों के, सो (इसमें) उन पर कोई मलामत नहीं।

فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ﴿۳۱﴾

31. सो जो इनके अ़लावह तलब करे तो वोही लोग ह़द से गुज़रनेवाले हैं।

وَ الَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَ عَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ﴿۳۲﴾

32. और वोह लोग जो अपनी अमानतों और अपने वा'दों की निगेह दाश्त करते हैं।

وَالَّذِيْنَ هُمْ بِشَهٰدٰتِهِمْ قَآئِمُوْنَ ﴿۳۳﴾

33.और वोह लोग जो अपनी गवाहियों पर क़ाइम रेहते हैं।

وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ﴿۳۴﴾

34. और वोह लोग जो अपनी नमाज़ों पर क़ाइम रेहते हैं।

اُولٰٓئِكَ فِيْ جَنّٰتٍ مُّكْرَمُوْنَ ﴿۳۵﴾

35. येही लोग हैं जो जन्नतों में मुअ़ज़्ज़ो मुकर्रम होंगे।

فَمَالِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا قِبَلَكَ مُهْطِعِيْنَ ﴿۳۶﴾

36. तो काफ़िर को क्या हो गया है कि आप की तरफ़ दौड़े चले आ रहे हैं।

عَنِ الْيَمِيْنِ وَ عَنِ الشِّمَالِ

37. दाएं जानिब से (भी) और बाएं जानिब से (भी)

عِزِيْنَ ﴿٣٧﴾

गिरोह दर गिरोह।

اَيَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّدْخَلَ جَنَّةَ نَعِيْمٍ ﴿٣٨﴾

38. क्या उनमें से हर शख़्स येह तवक़्क़ो' रखता है कि वोह (बिग़ैर ईमानो अ़मल के) ने'मतोंवाली जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा।

كَلَّا ؕ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّمَّا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٩﴾

39. हरगिज़ नहीं, बेशक हमने उन्हें उस चीज़ से पैदा किया है जिसे वोह (भी) जानते हैं।

فَلَآ اُقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشٰرِقِ وَالْمَغٰرِبِ اِنَّا لَقٰدِرُوْنَ ﴿٤٠﴾

40. सो मैं मशारिक़ो मग़ारिब के रब की क़सम खाता हूं के बेशक हम पूरी क़ुद्रत रखते हैं।

عَلٰٓى اَنْ نُّبَدِّلَ خَيْرًا مِّنْهُمْ ۙ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ﴿٤١﴾

41. इस पर कि हम बदल कर उनसे बेहतर लोग ले आएं, और हम हरगिज़ आ़जिज़ नहीं हैं।

فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَيَلْعَبُوْا حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ﴿٤٢﴾

42. सो आप उन्हें छोड़ दीजिए कि वोह अपनी बेहूदा बातों और खेल तमाशे में पड़े रहें यहां तक कि अपने उस दिन से आ मिलें जिसका उनसे वा'दा किया जारहा है।

يَوْمَ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ سِرَاعًا كَاَنَّهُمْ اِلٰى نُصُبٍ يُّوْفِضُوْنَ ﴿٤٣﴾

43. जिस दिन वोह क़ब्रों से डरते हुए यूं निक्लेंगे गोया वोह बुतों के स्थानों की तरफ़ दौड़े जा रहे हैं।

خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ ذٰلِكَ الْيَوْمُ الَّذِيْ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ﴿٤٤﴾

44. (उनका) हा़ल येह होगा कि उनकी आंखें (शर्मो ख़ौफ़ से) झुक रही होंगी, ज़िल्लत उन पर छा रही होगी, येही है वोह दिन जिसका उनसे वा'दा किया जाता था।

आयतुहा 28	71 सुरतु नूहि़न मक्किय्यतुन 71	रुकूआ़तुहा 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

اِنَّآ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖٓ اَنْ

1. बेशक हमने नूह (عليه السلام) को उनकी क़ौम की तरफ़

اَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١﴾

भेजा कि आप अपनी क़ौम को डराएं क़ब्ल इस के कि उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब आ पहुंचे।

قَالَ يٰقَوْمِ اِنِّيْ لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢﴾

2. उन्होंने कहा : ऐ मेरी क़ौम ! बेशक मैं तुम्हें वाज़ेह डर सुनानेवाला हूं।

اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ وَ اَطِيْعُوْنِ ﴿٣﴾

3. कि तुम अल्लाह की इ़बादत करो और उससे डरो और मेरी इताअ़त करो।

يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَ يُؤَخِّرْكُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ اِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ اِذَا جَآءَ لَا يُؤَخَّرُ ۘ لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٤﴾

4. वोह तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और तुम्हें मुक़र्ररह मद्दत तक मोहलत अ़ता करेगा, बेशक अल्लाह की (मुक़र्रर कर्दह) मुद्दत जब आ जाए तो मोहलत नहीं दी जाती, काश! तुम जानते होते।

وقف لازم

قَالَ رَبِّ اِنِّيْ دَعَوْتُ قَوْمِيْ لَيْلًا وَّ نَهَارًا ﴿٥﴾

5. नूह (عليه السلام) ने अ़र्ज़ किया : ऐ मेरे रब ! मैं अपनी क़ौम को रात दिन बुलाता हूं।

فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَآءِيْۤ اِلَّا فِرَارًا ﴿٦﴾

6. लेकिन मेरी दा'वत ने उनके लिए सिवाए भागने के कुछ ज़ियादह नहीं किया।

وَ اِنِّيْ كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوْۤا اَصَابِعَهُمْ فِيْۤ اٰذَانِهِمْ وَ اسْتَغْشَوْا ثِيَابَهُمْ وَ اَصَرُّوْا وَ اسْتَكْبَرُوا اسْتِكْبَارًا ﴿٧﴾

7. और मैंने जब (भी) उन्हें (ईमान की तरफ़) बुलाया ताकि तू उन्हें बख़्श दे तो उन्होंने अपनी उंगलियां अपने कानों में दे लीं और अपने ऊपर अपने कपड़े लपेट लिए और (कुफ़्र पर) हट धर्मी की और शदीद तकब्बुर किया।

ثُمَّ اِنِّيْ دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ﴿٨﴾

8. फिर मैं ने उन्हें बुलंद आवाज़ से दा'वत दी।

ثُمَّ اِنِّيْۤ اَعْلَنْتُ لَهُمْ وَ اَسْرَرْتُ لَهُمْ اِسْرَارًا ﴿٩﴾

9. फिर मैं ने उन्हें ए'लानिया (भी) समझाया और उन्हें पोशीदह राज़दाराना तौर पर (भी) समझाया।

فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ۭ اِنَّهٗ كَانَ غَفَّارًا ۙ (١٠)

10. फिर मैंने कहा कि तुम अपने रब से बख़्शिश तलब करो, बेशक वोह बड़ा बख्शनेवाला है।

يُّرْسِلِ السَّمَاۗءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا ۙ (١١)

11. वोह तुम पर बड़ी ज़ोर दार बारिश भेजेगा।

وَّيُمْدِدْكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ جَنّٰتٍ وَّيَجْعَلْ لَّكُمْ اَنْهٰرًا ۭ (١٢)

12. और तुम्हारी मदद अम्वाल और औलाद के ज़रीए फ़रमाएगा, और तुम्हारे लिए बाग़ात उगाएगा, और तुम्हारे लिए नेहरें जारी कर देगा।

مَا لَكُمْ لَا تَرْجُوْنَ لِلّٰهِ وَقَارًا ۚ (١٣)

13. तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह की अज़्मत का ए'तिक़ाद और मा'रिफ़त नहीं रखते।

وَقَدْ خَلَقَكُمْ اَطْوَارًا (١٤)

14. हालां कि उसने तुम्हें तरह् तरह् की ह़ालतों से पैदा फ़रमाया।

اَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللّٰهُ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ۙ (١٥)

15. क्या तुम ने नहीं देखा कि अल्लाह ने किस तरह् सात (या मुतअ़द्दिद) आस्मानी कुर्रे बाहम मुताबिक़त के साथ (तबक़ दर तबक़) पैदा फ़रमाए।

وَّجَعَلَ الْقَمَرَ فِيْهِنَّ نُوْرًا وَّجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا (١٦)

16. और उसने उसमें चाँद को रौशन किया और उसने सूरज को चराग़ (या'नी रौशनी और ह़रारत का मंबा') बनाया।

وَاللّٰهُ اَنْۢبَتَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ نَبَاتًا ۙ (١٧)

17. और अल्लाह ने तुम्हें ज़मीन से सबज़े की मानिन्द उगाया। ★

ثُمَّ يُعِيْدُكُمْ فِيْهَا وَيُخْرِجُكُمْ اِخْرَاجًا (١٨)

18. फिर तुमको उसी (ज़मीन) में लौटा देगा और (फिर) तुम को (उसी से दोबारह) बाहर निकालेगा।

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ بِسَاطًا ۙ (١٩)

19. अल्लाह ने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श बना दिया।

★अरज़ी ज़िन्दगी में पौदों की तरह ह़याते इन्सानी की इब्तिदा और नश्वो नुमा भी कीमियाई और ह़यातियाती मराह़िल से गज़रते हुए तदरीजन हुई, इसी लिए इसे اَنْۢبَتَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ نَبَاتًا के बलीग़ इस्तिआ़रे के ज़रीए बयान किया गया है

لِّتَسْلُكُوْا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ﴿۲۰﴾

20. ताकि तुम उसके कुशादह रास्तों में चलो फिरो।

قَالَ نُوْحٌ رَّبِّ اِنَّهُمْ عَصَوْنِیْ وَ اتَّبَعُوْا مَنْ لَّمْ یَزِدْهُ مَالُهٗ وَ وَلَدُهٗۤ اِلَّا خَسَارًا ﴿۲۱﴾

21. नूह (عليه السلام) ने अ़र्ज़ किया : ऐ मेरे रब ! इन्हों ने मेरी ना फ़रमानी की और उस (सरकश रुअसा के तबक़े) की पैरवी करते रहे जिसके मालो दौलत और औलाद ने उन्हें सिवाए नुक़्सान के और कुछ नहीं बढ़ाया।

وَ مَكَرُوْا مَكْرًا كُبَّارًا ﴿۲۲﴾

22. और (अ़वाम को गुमराही में रखने के लिए) वोह बड़ी बड़ी चालें चलते रहे।

وَ قَالُوْا لَا تَذَرُنَّ اٰلِهَتَكُمْ وَ لَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَّ لَا سُوَاعًا ۙ وَّ لَا یَغُوْثَ وَ یَعُوْقَ وَ نَسْرًا ﴿۲۳﴾

23. और केहते रहे कि तुम अपने मा'बूदों को मत छोड़ना और वद्द और सुवा'और यग़ूस और यऊक़ और नस्र (नामी बुतों) को (भी) हरगिज़ न छोड़ना।

وَ قَدْ اَضَلُّوْا كَثِیْرًا ۚ وَ لَا تَزِدِ الظّٰلِمِیْنَ اِلَّا ضَلٰلًا ﴿۲۴﴾

24. और वाक़ई उन्होंने बहुत लोंगो को गुमराह किया, सो (ऐ मेरे रब !) तू (भी उन) ज़ालिमों को सिवाए गुमराही के (किसी और चीज़ में) न बढ़ा।

مِمَّا خَطِیْٓـٰٔتِهِمْ اُغْرِقُوْا فَاُدْخِلُوْا نَارًا ۙ فَلَمْ یَجِدُوْا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَنْصَارًا ﴿۲۵﴾

25. (बिल आख़िर) वोह अपने गुनाहों के सबब ग़र्क़ कर दिए गए, फिर आग में डाल दिए गए, सो वोह अपने लिए अल्लाह के मुक़ाबिल किसी को मददगार न पा सकेंगे।

وَ قَالَ نُوْحٌ رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْاَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِیْنَ دَیَّارًا ﴿۲۶﴾

26. और नूह (عليه السلام)ने अ़र्ज़ किया : ऐ मेरे रब ! ज़मीन पर काफ़िरों में से कोई रेहनेवाला बाक़ी न छोड़।

اِنَّكَ اِنْ تَذَرْهُمْ یُضِلُّوْا عِبَادَكَ وَ لَا یَلِدُوْۤا اِلَّا فَاجِرًا كَفَّارًا ﴿۲۷﴾

27. बेशक अगर तू उन्हें (ज़िन्दा) छोड़ेगा तो वोह तेरे बन्दों को गुमराह करते रहेंगे, और वोह बदकार (और) सख़्त काफ़िर औलाद के सिवा किसी को जन्म नहीं देंगे।

رَبِّ اغْفِرْ لِیْ وَ لِوَالِدَیَّ وَ لِمَنْ دَخَلَ بَیْتِیَ مُؤْمِنًا وَّ لِلْمُؤْمِنِیْنَ

28. ऐ मेरे रब ! मुझे बख़्श दे और मेरे वालिदैन को और हर उस शख़्स को जो मोमिन हो कर मेरे घर में दाख़िल

وَالْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَلَا تَزِدِ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا تَبَارًا ﴿۲۸﴾

हुआ और (जुम्ला) मोमिन मर्दों को और मोमिन औरतों को, और ज़ालिमों के लिए सिवाए हलाकत के कुछ (भी) ज़ियादह न फ़रमा।

रुकूआतुहा 2 | 72 सूरतुल जिन्नि मक्कियतुन 40 | आयातुहा 28

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत महेरबान हमेशा रहम फरमाने वाला है।

قُلْ اُوْحِيَ اِلَيَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوْٓا اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا عَجَبًا ﴿۱﴾

1. आप फ़रमा दें : मेरी तरफ़ वही की गई है के जिन्नात की एक जमाअ़त ने (मेरी तिलावत को) गौ़र से सुना तो (जा कर अपनी क़ौम से) केहने लगे : बेशक हमने एक अ़जीब कु़रआन सुना है।

يَّهْدِيْٓ اِلَى الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ ؕ وَلَنْ نُّشْرِكَ بِرَبِّنَآ اَحَدًا ﴿۲﴾

2. जो हिदायत की राह दिखाता है, सो हम उस पर ईमान ले आए हैं, और अपने रब के साथ किसी को हरगिज़ शरीक नहीं ठेहराएंगे।

وَّاَنَّهٗ تَعٰلٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ﴿۳﴾

3. और येह कि हमारे रब की शान बहुत बुलन्द है, उसने न कोई बीवी बना रख्खी है और न ही कोई औलाद।

وَّاَنَّهٗ كَانَ يَقُوْلُ سَفِيْهُنَا عَلَى اللّٰهِ شَطَطًا ﴿۴﴾

4. और येह कि हम में से कोई अह़मक़ ही अल्लाह के बारे में ह़क़ से दूर ह़द से गुज़री हुई बातें कहा करता था।

وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ تَقُوْلَ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ﴿۵﴾

5. और येह कि हम गुमान करते थे कि इन्सान और जिन अल्लाह के बारे में हरगिज़ झूट नहीं बोलेंगे।

وَّاَنَّهٗ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْاِنْسِ يَعُوْذُوْنَ بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوْهُمْ رَهَقًا ﴿۶﴾

6. और येह कि इन्सानों में से कुछ लोग जिन्नात में से बा'ज़ अफ़राद की पनाह लेते थे, सो उन लोगों ने उन जिन्नात की सरकशी और बढ़ा दी।

وَّاَنَّهُمْ ظَنُّوْا كَمَا ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ

7. और (ऐ गिरोहे जिन्नात !) वोह इन्सान भी अैसा ही

يَّبْعَثَ اللّٰهُ اَحَدًا ۙ﴿۷﴾

गुमान करने लगे जैसा गुमान तुमने किया कि अल्लाह (मरने के बा'द) हरगिज़ किसी को नहीं उठाएगा।

وَّاَنَّا لَمَسْنَا السَّمَآءَ فَوَجَدْنٰهَا مُلِئَتْ حَرَسًا شَدِيْدًا وَّشُهُبًا ۙ﴿۸﴾

8. और येह कि हमने आस्मानों को छुवा, और उन्हें सख़्त पेहरेदारों और (अंगारों की तरह) जलने और चमकने वाले सितारों से भरा हुआ पाया।

وَّاَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ ؕ فَمَنْ يَّسْتَمِعِ الْاٰنَ يَجِدْ لَهٗ شِهَابًا رَّصَدًا ۙ﴿۹﴾

9. और येह कि हम (पेहले आस्मानी ख़बर सुनने के लिए) उस के बा'ज़ मुक़ामात में बैठा करते थे, मगर अब कोई सुनना चाहे तो वोह अपनी ताक में आग का शो'ला (मुन्तज़िर) पाएगा।

وَّاَنَّا لَا نَدْرِيْۤ اَشَرٌّ اُرِيْدَ بِمَنْ فِي الْاَرْضِ اَمْ اَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ۙ﴿۱۰﴾

10. और येह कि हम नहीं जानते कि (हमारी बन्दिश से) उन लोगों के हक़ में जो ज़मीन में हैं किसी बुराई का इरादह किया गया है या उनके रब ने उनके साथ भलाई का इरादह फ़रमाया है।

وَّاَنَّا مِنَّا الصّٰلِحُوْنَ وَمِنَّا دُوْنَ ذٰلِكَ ؕ كُنَّا طَرَآئِقَ قِدَدًا ۙ﴿۱۱﴾

11. और येह के हम में से कुछ नेक लोग हैं और हम (ही) में से कुछ इसके सिवा (बुरे) भी हैं, हम मुख़्तलिफ़ तरीक़ों पर (चल रहे) थे।

وَّاَنَّا ظَنَنَّاۤ اَنْ لَّنْ نُّعْجِزَ اللّٰهَ فِي الْاَرْضِ وَلَنْ نُّعْجِزَهٗ هَرَبًا ۙ﴿۱۲﴾

12. और हमने यक़ीन कर लिया है कि हम अल्लाह के हरगिज़ ज़मीन में (रेह कर)आ़जिज़ नहीं कर सकते, और न ही (ज़मीन से) भाग कर उसे आ़जिज़ कर सकते हैं।

وَّاَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدٰۤى اٰمَنَّا بِهٖ ؕ فَمَنْ يُّؤْمِنْ بِرَبِّهٖ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَّلَا رَهَقًا ۙ﴿۱۳﴾

13. और येह कि जब हमने (किताबे) हिदायत को सुना तो हम उस पर ईमान ले आए, फिर जो शख़्स अपने रब पर ईमान लाता है तो वोह न नुक़्सान ही से ख़ौफ़ ज़दह होता है और न ज़ुल्म से।

وَّاَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُوْنَ وَمِنَّا الْقٰسِطُوْنَ ؕ فَمَنْ اَسْلَمَ فَاُولٰٓئِكَ تَحَرَّوْا رَشَدًا ﴿۱۴﴾

14. और येह कि हम में से (बा'ज़) फ़रमां बर्दार भी हैं और हम में से (बा'ज़) ज़ालिम भी हैं, फिर जो कोई फ़रमां बर्दार हो गया तो ऐसे लोगों ने ही भलाई तलब की।

وَ اَمَّا الْقٰسِطُوْنَ فَكَانُوْا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ۙ﴿۱۵﴾

15. और जो ज़ालिम हैं तो वोह दोज़ख़ का इंधन होंगे।

وَّ اَنْ لَّوِ اسْتَقَامُوْا عَلَى الطَّرِيْقَةِ لَاَسْقَيْنٰهُمْ مَّآءً غَدَقًا ۙ﴿۱۶﴾

16. और येह (वह़ी भी मेरे पास आई है) कि अगर वोह तरीक़त (राहे ह़क़, तरीक़े ज़िक्रे इलाही) पर क़ाइम रेहते तो हम उन्हें बहुते से पानी के साथ सैराब करते।

لِّنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ؕ وَمَنْ يُّعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهٖ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ۙ﴿۱۷﴾

17. ताकि हम उस (ने'मत) में उनकी आज़माइश करें, और जो शख़्स अपने रब के ज़िक्र से मुंह फेर लेगा तो वोह उसे निहायत सख़्त अ़ज़ाब में दाख़िल कर देगा।

وَّ اَنَّ الْمَسٰجِدَ لِلّٰهِ فَلَا تَدْعُوْا مَعَ اللّٰهِ اَحَدًا ۙ﴿۱۸﴾

18. और येह कि सजदह गाहें अल्लाह के लिए (मख़्सूस) हैं, सो अल्लाह के साथ किसी और की परस्तिश मत किया करो।

وَّ اَنَّهٗ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللّٰهِ يَدْعُوْهُ كَادُوْا يَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِ لِبَدًا ؕ﴿۱۹﴾ ع

19. और येह कि जब अल्लाह के बन्दे (मुहम्मद ﷺ) उसकी इबादत करने खडे़ हुए तो उन पर हुजूम दर हुजूम जमा' हो गए (ताकि उनकी क़िराअत सुन सकें)।

قُلْ اِنَّمَآ اَدْعُوْا رَبِّيْ وَلَآ اُشْرِكُ بِهٖۤ اَحَدًا ﴿۲۰﴾

20. आप फ़रमा दें कि मैं तो सिर्फ़ अपने रब की इबादत करता हूं और उसके साथ किसी को शरीक नहीं बनाता।

قُلْ اِنِّيْ لَآ اَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّ لَا رَشَدًا ﴿۲۱﴾

21.आप फ़रमा दें कि मैं तुम्हारे लिए न तो नुक़्सान (या'नी कुफ़्र) का मालिक हूं और न भलाई (या'नी ईमान) का (गोया ह़क़ीक़ी मालिक अल्लाह है मैं तो ज़रीआ़ और वसीला हूं)।

قُلْ اِنِّيْ لَنْ يُّجِيْرَنِيْ مِنَ اللّٰهِ اَحَدٌ ۙ۬ وَّ لَنْ اَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ۙ﴿۲۲﴾

22. आप फ़रमा दें कि न मुझे हरगिज़ कोई अल्लाह के (अम्र के खिलाफ़) अ़ज़ाब से पनाह दे सक्ता है और न ही मैं क़तअ़न उसके सिवा कोई जाए पनाह पाता हूं।

اِلَّا بَلٰغًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِسٰلٰتِهٖ ؕ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ لَهٗ نَارَ

23. मगर अल्लाह की जानिबसे अह़्कामात और उसके पैग़ामात का पहुंचाना (मेरी ज़िम्मेदारी है) और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की ना फ़रमानी करे तो

جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ﴿٢٣﴾

बेशस उसके लिए दोज़ख़ की आग है जिसमें वोह हमेशा रहेंगे।

حَتّٰٓى اِذَا رَاَوْا مَا يُوْعَدُوْنَ فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ اَضْعَفُ نَاصِرًا وَّ اَقَلُّ عَدَدًا ﴿٢٤﴾

24. यहां तक कि जब येह लोग वोह (अ़ज़ाब) देख लेंगे जिसका उनसे वा'दा किया जा रहा है तो (उस वक़्त) उन्हें मा'लूम होगा कि कौन मददगार के ए'तिबार से कमज़ोर तर और अदद के ए'तिबार से कम तर है।

قُلْ اِنْ اَدْرِيْٓ اَقَرِيْبٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ اَمْ يَجْعَلُ لَهٗ رَبِّيْٓ اَمَدًا ﴿٢٥﴾

25. आप फ़रमा दें : मैं नहीं जानता कि जिस (रोज़े क़ियामत) का तुम से वा'दा किया जा रहा है वोह क़रीब है या उसके लिए मेरे रब ने तवील मुद्दत मुक़र्रर फ़रमा दी है।

عٰلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ اَحَدًا ﴿٢٦﴾

26. (वोह) ग़ैब का जाननेवाला है, पस वोह अपने ग़ैब पर किसी (आ़म शख़्स) को मुत्तला' नहीं फ़रमाता।

اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ فَاِنَّهٗ يَسْلُكُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ رَصَدًا ﴿٢٧﴾

27. सिवाए अपने पसन्दीदह रसूलों के (उन्हीं को मुत्तला' अ़लल ग़ैब करता है क्यों कि येह ख़ास्सए नुबुव्वत और मो'जिज़ए रिसालत है), तो बेशक वोह उस (रसूल ﷺ) के आगे और पीछे (इल्मे ग़ैब की हिफ़ाज़त के लिए) निगहबान मुक़र्रर फ़रमा देता है।

لِّيَعْلَمَ اَنْ قَدْ اَبْلَغُوْا رِسٰلٰتِ رَبِّهِمْ وَاَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ وَاَحْصٰى كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا ﴿٢٨﴾

28. ताकि अल्लाह (इस बातको) ज़ाहिर फ़रमा दे कि बेशक उन (रसूलों) ने अपने रब के पैग़ामात पहुंचा दिए, और (अह़कामाते इलाहिय्या और उ़लूमे ग़ैबिय्या में से) जो कुछ उनके पास है अल्लाहने (पेहले ही से) उसका इह़ाता फ़रमा रखखा है, और उसने हर चीज़ की गिन्ती शुमार कर रखखी है।

आयातुहा 20 | 73 सूरतुल मुज़्ज़म्मिलि मक्किय्यतुन 3 | रुकूआतुहा 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमाने वाला है।

يٰٓاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ۙ﴿۱﴾

1. ऐ कमली की झुरमुटवाले (ह़बीब!)

قُمِ الَّيْلَ اِلَّا قَلِيْلًا ۙ﴿۲﴾

2. आप रात को (नमाज़ में) क़ियाम फ़रमाया करें मगर थोड़ी देर (के लिए)।

نِّصْفَهٗٓ اَوِ انْقُصْ مِنْهُ قَلِيْلًا ۙ﴿۳﴾

3. आधी रात या उससे थोड़ा कम कर दें।

اَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَ رَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا ؕ﴿۴﴾

4. या उस पर कुछ ज़ियादह करें और क़ुरआन खूब ठहर ठहर कर पढ़ा करें।

اِنَّا سَنُلْقِيْ عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيْلًا ﴿۵﴾

5. हम अ़नक़रीब आप पर एक भारी फ़रमान नाज़िल करेंगे।

اِنَّ نَاشِئَةَ الَّيْلِ هِيَ اَشَدُّ وَطْاً وَّ اَقْوَمُ قِيْلًا ؕ﴿۶﴾

6. बेशक रात का उठना (नफ़्स को) सख़्त पामाल करता है और (दिलो दिमाग़ की यकसूई के साथ) ज़बान से सीधी बात निकालता है।

اِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيْلًا ؕ﴿۷﴾

7. बेशक आप के लिए दिन में बहुत सी मसरूफ़ियात होती हैं।

وَ اذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَ تَبَتَّلْ اِلَيْهِ تَبْتِيْلًا ؕ﴿۸﴾

8. और आप अपने रब का नाम ज़िक्र करते रहें और (अपने क़ल्बो बातिन में) हर एक से टूट कर उसी के हो रहें।

رَبُّ الْمَشْرِقِ وَ الْمَغْرِبِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيْلًا ﴿۹﴾

9. वोह मशरिक़ो मग़रिब का मालिक है, उसके सिवा कोई मा'बूद नहीं, सो उसीको (अपना) कारसाज़ बना लें।

وَ اصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَ اهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيْلًا ﴿۱۰﴾

10. और आप उन (बातों (पर) सब्र करें जो कुछ वोह (कुफ़्फ़ार) केहते हैं, और निहायत खूबसूरती के साथ उनसे कनारा कश हो जाएं।

وَذَرْنِي وَالْمُكَذِّبِينَ أُولِي النَّعْمَةِ وَمَهِّلْهُمْ قَلِيلًا ﴿١١﴾

11. और आप मुझे और झुटलाने वाले सरमाया दारों को (इन्तिक़ाम लेने के लिए) छोड़ दें और उन्हें थोड़ी सी मोहलत दे दें (ताकि उनके आ'माले बद अपनी इन्तिहा को पहुंच जाएं।

إِنَّ لَدَيْنَا أَنكَالًا وَجَحِيمًا ﴿١٢﴾

12. बेशक हमारे पास भारी बेड़ियां और (दोज़ख़ की) भड़कती हुई आग है।

وَطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَعَذَابًا أَلِيمًا ﴿١٣﴾

13. और हलक़ में अटक जानेवाला खाना और निहायत दर्दनाक अज़ाब है।

يَوْمَ تَرْجُفُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيبًا مَّهِيلًا ﴿١٤﴾

14. जिस दिन ज़मीन और पहाड़ ज़ोर से लरज़ने लगेंगे और पहाड़ बिखरी रेत के टीले हो जाएंगे।

إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ رَسُولًا شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَا أَرْسَلْنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ رَسُولًا ﴿١٥﴾

15. बेशक हमने तुम्हारी तरफ़ एक रसूल (ﷺ) भेजा है जो तुम पर (अहवाल का मुशाहिदा फ़रमा कर) गवाही देनेवाला है, जैसा कि हमने फ़िरऔन की तरफ़ एक रसूल भेजा था।

فَعَصَىٰ فِرْعَوْنُ الرَّسُولَ فَأَخَذْنَاهُ أَخْذًا وَبِيلًا ﴿١٦﴾

16. पस फ़िरऔन ने उस रसूल (عليه السلام) की ना फ़रमानी की, सो हमने हलाकत अंगेज़ गिरफ़्त में पकड़ लिया।

فَكَيْفَ تَتَّقُونَ إِن كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيبًا ﴿١٧﴾

17. अगर तुम कुफ़्र करते रहो तो उस दिन (के अज़ाब) से कैसे बचोगे जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा।

السَّمَاءُ مُنفَطِرٌ بِهِ ۚ كَانَ وَعْدُهُ مَفْعُولًا ﴿١٨﴾

18. (जिस दिन की) शिद्दत के बाइस आस्मान फट जाएगा, उसका वा'दा पूरा हो कर रहेगा।

إِنَّ هَٰذِهِ تَذْكِرَةٌ ۖ فَمَن شَاءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ﴿١٩﴾

19. बेशक येह (क़ुरआन) नसीहत है, पस जो शख़्स चाहे अपने रब तक पहुंचने का रास्ता इख़्तियार कर ले।

إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُومُ أَدْنَىٰ مِن ثُلُثَيِ اللَّيْلِ وَنِصْفَهُ وَثُلُثَهُ وَ

20. बेशक आप का रब जानता है कि आप (कभी) दो तिहाई शब के क़रीब और (कभी) निस्फ़ शब और

طَآئِفَةٌ مِّنَ الَّذِيْنَ مَعَكَ ؕ
وَاللّٰهُ يُقَدِّرُ الَّيْلَ وَ النَّهَارَ ؕ
عَلِمَ اَنْ لَّنْ تُحْصُوْهُ فَتَابَ
عَلَيْكُمْ فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنَ
الْقُرْاٰنِ ؕ عَلِمَ اَنْ سَيَكُوْنُ مِنْكُمْ
مَّرْضٰى ۙ وَ اٰخَرُوْنَ يَضْرِبُوْنَ فِي
الْاَرْضِ يَبْتَغُوْنَ مِنْ فَضْلِ
اللّٰهِ ۙ وَاٰخَرُوْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖ فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ
مِنْهُ ۙ وَ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا
الزَّكٰوةَ وَ اَقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا
حَسَنًا ؕ وَ مَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ
مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ
خَيْرًا وَّ اَعْظَمَ اَجْرًا ؕ وَاسْتَغْفِرُوا
اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۲۰﴾

(कभी) एक तिहाई शब (नमाज़ में) क़ियाम करते हैं, और उन लोगों की एक जमाअ़त (भी) जो आपके साथ हैं (क़ियाम में शरीक होती है) और अल्लाह ही रात और दिन (के घटने और बढ़ने) का सहीह़ अंदाज़ह रखता है, वोह जानता कि तुम हरगिज़ उसके इह़ाते की ताक़त नहीं रखते, तो उसने तुम पर (मशक़्क़त में तख़्फ़ीफ़ कर के) मुआ़फ़ी दे दी, पस जितना आसानी से हो सके क़ुरआन पढ़ लिया करो, वोह जानता है कि तुम में से (बा'ज़ लोग) बीमार होंगे और (बा'ज़) दूसरे लोग ज़मीन में सफ़र करेंगे ता कि अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करें और (बा'ज़) दीगर अल्लाह की राह में जंग करेंगे, सो जितना आसानी से हो सके उतना (ही) पढ़ लिया करो, और नमाज़ क़ाइम रख्खो और ज़कात देते रहो और अल्लाह के क़र्ज़े ह़सन दिया करो, और जो भलाई तुम अपने लिए आगे भेजोगे उसे अल्लाह के हुज़ूर बेहतर और अज्र में बुज़ुर्ग तर पा लोगे, और अल्लाह से बख़्शिश तलब करते रहो, अल्लाह बहुत बख़्शनेवाला और बेह़द रह़म फ़रमानेवाला है।

आयातुहा 56 | 74 सूरतुल मुद्दस्सिरु मक्किय्यतुन 4 | रुकूआ़तुहा 92

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फरमाने वाला है।

يٰۤاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ۙ ﴿۱﴾

1. अय चादर ओढ़नेवाले (ह़बीब!)।

قُمْ فَاَنْذِرْ ۪ۙ ﴿۲﴾

2. उन्हें और (लोगों को अल्लाह का) डर सुनाएं।

وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ۝٣

3. और अपने रब की बड़ाई (और अज़्मत) बयान फरमाएं।

وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ ۝٤

4. और अपने (ज़ाहिरो बातिन के) लिबास (पहले की तरह हमेशा) पाक रखखें।

وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ۝٥

5. और (हस्बे साबिक़ गुनाहों और) बुतों से अलग रहें।

وَلَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ ۝٦

6. और (इस ग़रज़ से किसी पर) एहसान न करें कि इससे ज़ियादह के तालिब हों।

وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ۝٧

7. और आप अपने रब के लिए सब्र किया करें।

فَإِذَا نُقِرَ فِي النَّاقُورِ ۝٨

8. फिर जब (दोबारा) सूर में फूंक मारी जाएगी।

فَذَٰلِكَ يَوْمَئِذٍ يَوْمٌ عَسِيرٌ ۝٩

9. सो वोह दिन (या'नी रोज़े क़ियामत) बड़ा ही सख़्त दिन होगा।

عَلَى الْكَافِرِينَ غَيْرُ يَسِيرٍ ۝١٠

10. काफ़िरों पर हरगिज़ आसान न होगा।

ذَرْنِي وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيدًا ۝١١

11. आप मुझे और उस शख़्स को जिसे मैंने अकेला पैदा किया (इन्तिक़ाम के लिए) छोड़ दें।

وَجَعَلْتُ لَهُ مَالًا مَمْدُودًا ۝١٢

12. और मैंने उसे बहुत वसीअ़ माल मुहय्या किया था।

وَبَنِينَ شُهُودًا ۝١٣

13. और (उसके सामने) हाज़िर रहनेवाले बेटे (दिए) थे।

وَمَهَّدْتُ لَهُ تَمْهِيدًا ۝١٤

14. और मैंने उसे (सामाने ऐशो इ़शरत में) खूब वुस्अ़त दी थी।

ثُمَّ يَطْمَعُ أَنْ أَزِيدَ ۝١٥

15. फिर (भी) वोह हिर्स रखता था कि मैं और ज़ियादह करूं।

كَلَّا ۖ إِنَّهُ كَانَ لِآيَاتِنَا عَنِيدًا ۝١٦

16. हरगिज़ (ऐसा) न होगा, बेशक वोह हमारी आयतों का दुश्मन रहा है।

سَأُرْهِقُهُ صَعُودًا ۝١٧

17. अ़नक़रीब मैं उसे सख़्त मशक़्क़त (के अ़ज़ाब) की तक्लीफ़ दूंगा।

إِنَّهُ فَكَّرَ وَقَدَّرَ ۝١٨

18. बेशक उसने सोच बिचार की और (दिल में) एक तज्वीज़ मुक़र्रर कर ली।

فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ﴿١٩﴾

19. बस उस पर (अल्लाह की) मार (या'नी ला'नत) हो, उसने कैसी तजवीज़ की।

ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ﴿٢٠﴾

20. उस पर फिर (अल्लाह की) मार (या'नी ला'नत) हो, उसने कैसी तजवीज़ की।

ثُمَّ نَظَرَ ﴿٢١﴾

21. फिर उसने (अपनी तजवीज़ पर दोबारह) ग़ौर किया।

ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ﴿٢٢﴾

22. फिर तेवरी चढ़ाई और मुंह बिगाडा।

ثُمَّ أَدْبَرَ وَاسْتَكْبَرَ ﴿٢٣﴾

23. फिर (हक़ से) पीठ फेर ली और तकब्बुर किया।

فَقَالَ إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ يُؤْثَرُ ﴿٢٤﴾

24. फिर केहने लगा येह (क़ुरआन) जादू के सिवा कुछ नहीं जो (अगले जादूगरों से) नक़्ल होता चला आ रहा है।

إِنْ هَٰذَا إِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ﴿٢٥﴾

25. येह (क़ुरआन) बजुज़ इन्सान के कलाम के (और कुछ) नहीं।

سَأُصْلِيهِ سَقَرَ ﴿٢٦﴾

26. मैं अनक़रीब उसे दोज़ख़ में झोंक दूंगा।

وَمَا أَدْرَاكَ مَا سَقَرُ ﴿٢٧﴾

27. और आपको किसने बताया है कि सक़र क्या है।

لَا تُبْقِي وَلَا تَذَرُ ﴿٢٨﴾

28. वोह (ऐसी आग है जो) न बाक़ी रेहती है और न छोड़ती है।

لَوَّاحَةٌ لِّلْبَشَرِ ﴿٢٩﴾

29. (वोह) जिस्मानी खाल को झुल्सा कर सियाह कर देने वाली है।

عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ﴿٣٠﴾

30. उस पर उन्नीस (19 फ़रिश्ते दारोग़े मुक़र्रर) हैं।

وَمَا جَعَلْنَا أَصْحَابَ النَّارِ إِلَّا مَلَائِكَةً ۙ وَمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ إِلَّا فِتْنَةً لِّلَّذِينَ كَفَرُوا لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَيَزْدَادَ الَّذِينَ آمَنُوا إِيمَانًا ۙ وَلَا يَرْتَابَ

31. और हमने दोज़ख़ के दारोग़े सिर्फ़ फ़रिश्ते ही मुक़र्रर किए हैं और हमने उनकी गिन्ती काफ़िरों के लिए महज़ आज़माइश के तौर पर मुक़र्रर की है ताकि अहले किताब यक़ीन कर लें (कि क़ुरआन और नुबुव्वते मुहम्मदी ﷺ हक़ है क्यों कि उनकी कुतुब में भी येही ता'दाद बयान की गई थी) और अहले ईमान का ईमान (इस तस्दीक़ से) मज़ीद बढ़ जाए और अह्ले किताब और

الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۙ وَ لِيَقُوْلَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْكٰفِرُوْنَ مَاذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ؕ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَّشَآءُ وَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَا يَعْلَمُ جُنُوْدَ رَبِّكَ اِلَّا هُوَ ؕ وَمَا هِيَ اِلَّا ذِكْرٰى لِلْبَشَرِ ﴿۳۱﴾

मोमिनीन (उसकी हक़्क़ानिय्यत में) शक न कर सकें, और ताकि वोह लोग जिनके दिलों में (निफ़ाक़ की) बीमारी है और कुफ़्फ़ार येह कहे कि इस (ता'दाद की) मिसाल से अल्लाह की मुराद क्या है? इसी तरह अल्लाह (एक ही बात से) जिसे चाहता है गुमराह ठेहराता है और जिसे चाहता है हिदायत फ़रमाता है, और आपके रब के लश्करों को उसके सिवा कोई नहीं जानता, और येह (दोज़ख़ का बयान) इन्सान की नसीहत के लिए है।

ع ۳۱ ۱۵

كَلَّا وَالْقَمَرِ ﴿۳۲﴾ ۙ

32. हां,चाँद की क़सम (जिसका घटना, बढ़ना और ग़ाइब हो जाना गवाही है)।

وَالَّيْلِ اِذْ اَدْبَرَ ﴿۳۳﴾ ۙ

33. और रात की क़सम जब वोह पीठ फेर कर रुख़्सत होने लगे।

وَالصُّبْحِ اِذَآ اَسْفَرَ ﴿۳۴﴾ ۙ

34. और सुब्ह की क़सम जब वोह रौशन होजाए।

اِنَّهَا لَاِحْدَى الْكُبَرِ ﴿۳۵﴾ ۙ

35. बेशक येह (दोज़ख) बहुत बड़ी आफ़तों में से एक है।

نَذِيْرًا لِّلْبَشَرِ ﴿۳۶﴾ ۙ

36. इन्सान को डराने वाली है।

لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ اَنْ يَّتَقَدَّمَ اَوْ يَتَاَخَّرَ ﴿۳۷﴾ ؕ

37. (या'नी) उस शख़्स के लिए जो तुम में से (नेकी में) आगे बढ़ना चाहे या जो (बदी में फंस कर) पीछे रेह जाए।

كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ رَهِيْنَةٌ ﴿۳۸﴾ ۙ

38. हर शख़्स उन (आ'माल) के बदले जो उसने कमा रख्खे हैं गिरवी है।

اِلَّآ اَصْحٰبَ الْيَمِيْنِ ﴿۳۹﴾ ۛ

39. सिवाए दाएं जानिब वालों के।

فِيْ جَنّٰتٍ ۛ يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿۴۰﴾ ۙ

40. (वोह) बाग़ात में होंगे, और आपस में पूछते होंगे।

عَنِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٤١﴾

41. मुज्रिमों के बारे में।

مَا سَلَكَكُمْ فِيْ سَقَرَ ﴿٤٢﴾

42. (और कहेंगे :)तुम्हें क्या चीज़ दोज़ख़ में ले गई।

قَالُوْا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّيْنَ ﴿٤٣﴾

43. वोह कहेंगे : हम नमाज़ पढ़नेवालों में न थे।

وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِيْنَ ﴿٤٤﴾

44. और हम मोहताजों को खाना नहीं खिलाते थे।

وَكُنَّا نَخُوْضُ مَعَ الْخَآئِضِيْنَ ﴿٤٥﴾

45. और बेहूदा मशाग़िल वालों के साथ (मिल कर) हम भी बेहूदा मश्ग़लों में पड़े रेहते थे।

وَكُنَّا نُكَذِّبُ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ﴿٤٦﴾

46. और हम रोज़े जज़ा को झुटलाया करते थे।

حَتّٰۤى اَتٰىنَا الْيَقِيْنُ ﴿٤٧﴾

47. यहां तक कि हम पर जिसका आना यक़ीनी था (वोह मौत) आ पहुंची।

فَمَا تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشّٰفِعِيْنَ ﴿٤٨﴾

48. सो (अब) शफ़ाअ़त करनेवालों की शफ़ाअ़त उन्हें कोई नफ़ा' न पहुंचाएगी।

فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِيْنَ ﴿٤٩﴾

49. तो उन (कुफ़्फ़ार) को क्या हो गया है के (फिर भी) नसीहत से रू गर्दानी किए हुए हैं।

كَاَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ ﴿٥٠﴾

50. गोया वोह बिदके हुए (वह्शी) गधे हैं।

فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ ﴿٥١﴾

51. जो शेर से भाग खड़े हुए।

بَلْ يُرِيْدُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّؤْتٰى صُحُفًا مُّنَشَّرَةً ﴿٥٢﴾

52. बल्कि उनमें से हर एक शख़्स येह चाहता है कि उसे (बराहे रास्त) खुले हुए (आस्मानी) सहीफ़े दिए जाएं।

كَلَّا ۖ بَلْ لَّا يَخَافُوْنَ الْاٰخِرَةَ ﴿٥٣﴾

53. ऐसा हरगिज़ मुम्किन नहीं, बल्कि (ह़क़ीक़त येह है कि) वोह लोग आख़िरत से डरते ही नहीं।

كَلَّاۤ اِنَّهٗ تَذْكِرَةٌ ﴿٥٤﴾

54. कुछ शक नहीं कि येह (कुरआन) नसीहत है।

فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ ﴿٥٥﴾

55. पस जो चाहे उसे याद रखखे।

وَمَا يَذْكُرُوْنَ اِلَّاۤ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ۖ

56. और येह लोग (इसे)याद नहीं रखखेंगे मगर जब

هُوَ اَهْلُ التَّقْوٰى وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ﴿٥٦﴾

अल्लाह चाहे, वोही तक़्वा (व परहेज़गारी) का मुस्तहिक़ है और मग़फ़िरत का मालिक है।

रुकूआतुहा 2 | 75 सूरतुल कियामति मक्किय्यतुन 31 | आयातुहा 40

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत महेरबान हमेशा रहम फरमाने वाला है।

لَآ اُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ ﴿١﴾

1. मैं क़सम खाता हूं रोज़े क़ियामत की।

وَلَآ اُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ﴿٢﴾

2. और मैं क़सम खाता हूं (बुराइयों पर) मलामत करने वाले नफ़्स की।

اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَلَّنْ نَّجْمَعَ عِظَامَهٗ ﴿٣﴾

3. क्या इन्सान येह ख़याल करता है कि हम उसकी हड्डियों को (जो मरने के बा'द रेज़ा रेज़ा हो कर बिखर जाएंगी) हरगिज़ इकठ्ठा नहीं करेंगे।

بَلٰى قٰدِرِيْنَ عَلٰٓى اَنْ نُّسَوِّيَ بَنَانَهٗ ﴿٤﴾

4. क्यों नहीं ! हम तो इस बात पर भी क़ादिर हैं के उसकी उंगलियों के एक एक जोड़ और पोरों तक को दुरुस्त कर दें।

بَلْ يُرِيْدُ الْاِنْسَانُ لِيَفْجُرَ اَمَامَهٗ ﴿٥﴾

5. बल्कि इन्सान येह चाहता है कि अपने आगे (की ज़िन्दगी में) भी गुनाह करता रहे।

يَسْـَٔلُ اَيَّانَ يَوْمُ الْقِيٰمَةِ ﴿٦﴾

6. वोह (ब-अंदाज़े तमस्खुर) पूछता है कि क़ियामत का दिन कब होगा।

فَاِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ﴿٧﴾

7. फिर जब आंखें चौंध्या जाएंगी।

وَخَسَفَ الْقَمَرُ ﴿٨﴾

8. और चांद (अपनी) रौशनी खो देगा।

وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ﴿٩﴾

9. और सूरज और चांद इकठ्ठे (बे नूर) हो जाएंगे।

يَقُوْلُ الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ اَيْنَ الْمَفَرُّ ﴿١٠﴾

10. उस वक़्त इन्सान पुकार उठ्ठेगा कि भाग जाने का ठिकाना कहां है।

كَلَّا لَا وَزَرَ ﴿١١﴾

11. हर गिज़ नहीं, कोई जाए पनाह नहीं है।

إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمُسْتَقَرُّ ﴿١٢﴾

12. उस दिन आपके रब के पास ही क़रार गाह होगी।

يُنَبَّؤُا الْإِنسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَأَخَّرَ ﴿١٣﴾

13. उस दिन इन्सान उन (आ'माल) से ख़बरदार किया जाएगा जो उसने आगे भेजे थे और जो (असरात अपनी मौत के बाद) पीछे छोड़े थे।

بَلِ الْإِنسَانُ عَلَىٰ نَفْسِهِ بَصِيرَةٌ ﴿١٤﴾

14. बल्कि इन्सान अपने (अह्वाले) नफ़्स पर (खुद ही) आगाह होगा।

وَلَوْ أَلْقَىٰ مَعَاذِيرَهُ ﴿١٥﴾

15. अगरचे वोह अपने तमाम उज़्र पेश करेगा।

لَا تُحَرِّكْ بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِ ﴿١٦﴾

16. (ऐ हबीब!) आप (कुरआन को याद करने की) जल्दी में (नुज़ूले वही के साथ) अपनी ज़बान को हरकत न दिया करें।

إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ وَقُرْآنَهُ ﴿١٧﴾

17. बेशक उसे (आपके सीने में)जमा' करना और उसे (आपकी ज़बान से) पढ़ाना हमारा ज़िम्मा है।

فَإِذَا قَرَأْنَاهُ فَاتَّبِعْ قُرْآنَهُ ﴿١٨﴾

18. फिर जब हम उसे (ज़बाने जिब्रील से) पढ चुकें तो आप उस पढ़े हुए की पैरवी करें।

ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهُ ﴿١٩﴾

19. फिर बेशक उस (के मआनी) का खोल कर बयान करना हिमारा ही ज़िम्मा है।

كَلَّا بَلْ تُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ ﴿٢٠﴾

20. हक़ीक़त येह है (ऐ कुफ़्फ़ार!) तुम जल्द मिलनेवाली (दुनिया) को महबूब रखते हो।

وَتَذَرُونَ الْآخِرَةَ ﴿٢١﴾

21 . और तुम आख़िरत को छोड़े हुए हो।

وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ﴿٢٢﴾

22. बहुत से चेहरे उस दिन शगुफ़्ता-व-तरो ताज़ह होंगे।

إِلَىٰ رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ﴿٢٣﴾

23. और (बिला हिजाब) अपने रब (के हुस्नो जमाल) को तक रहे होंगे।

وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ بَاسِرَةٌ ﴿٢٤﴾

24. और कितने ही चेहरे उस दिन बिगड़ी हुई हालत में (मायूस और सियाह) होंगे।

تَظُنُّ اَنْ يُّفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ﴿۲۵﴾

25. येह गुमान करते होंगे कि उनके साथ ऐसी सख़्ती की जाएगी जो उनकी कमर तोड़ देगी।

كَلَّآ اِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ﴿۲۶﴾

26. नहीं नहीं, जब जान गले तक पहुंच जाएगी।

وَقِيْلَ مَنْ ۜ رَاقٍ ﴿۲۷﴾

27. और कहा जा रहा हो कि (इस वक़्त) कौन है झाड़ फूंक से इलाज करनेवाला (जिससे शिफ़ा याबी कराएं।

وَّظَنَّ اَنَّهُ الْفِرَاقُ ﴿۲۸﴾

28. और (जान देनेवाला) समझ ले कि (अब सब से) जुदाई है।

وَالْتَفَّتِ السَّاقُ بِالسَّاقِ ﴿۲۹﴾

29. और पिंडली से पिंडली टपकने लगेगी।

اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِنِ الْمَسَاقُ ﴿۳۰﴾

30. तो उस दिन आप के रब की तरफ़ जाना होता है।

فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلّٰى ﴿۳۱﴾

31. तो (कितनी बद नसीबी है कि) उसने न (रसूल ﷺ की बातों की) तस्दीक़ की न नमाज़ पढ़ी।

وَلٰكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿۳۲﴾

32. बल्कि वोह झुटलाता रहा और रू गर्दानी करता रहा।

ثُمَّ ذَهَبَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ يَتَمَطّٰى ﴿۳۳﴾

33. फिर अपने अहले ख़ाना की तरफ़ अकड़ कर चला।

اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ﴿۳۴﴾

34. तुम्हारे लिए (मरते वक़्त) तबाही है, फिर (क़ब्र में) तबाही है।

ثُمَّ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ﴿۳۵﴾

35. फिर तुम्हारे लिए (रोज़े क़ियामत) हलाकत है, फिर (दोज़ख की) हलाकत है।

اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَنْ يُّتْرَكَ سُدًى ﴿۳۶﴾

36. क्या इन्सान येह ख़याल करता है कि उसे बेकार (बिग़ैर हिसाबो किताब के) छोड़ दिया जाएगा।

اَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّنْ مَّنِيٍّ يُّمْنٰى ﴿۳۷﴾

37. क्या वोह (अपनी इब्तिदा में) मनी का एक क़त्रा न था जो (औरत के रह़म में) टपका दिया जाता है।

ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوّٰى ﴿۳۸﴾

38. फिर वोह (रह़म में जाल की तरह़ जमा हुआ) एक मुअ़ल्लक़ वजूद बन गया, फिर उसने (तमाम जिस्मानी आ'ज़ा की इब्तेदाई शक्ल को उस वजूद में) पैदा फरमाया, फिर उस ने (उन्हें) दुरुस्त किया।

فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ﴿۳۹﴾

39. फिर येह के उस ने उसी नुत्फे ही के ज़रिये दो किस्में बनाई : मर्द और औरत.

اَلَيْسَ ذٰلِكَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْيِۦَ الْمَوْتٰى ﴿۴۰﴾

40. तो कया वोह इस बात पर कादिर नहीं के मुर्दों को फिर से ज़िंदा कर दे.

ع ۲ ۱۸

रुकूआतुहा 2	76 सूरतुद दहरि म-दनिय्यतुन 76	आयातुहा 31

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत महेरबान हमेशा रहम फरमाने वाला है।

هَلْ اَتٰى عَلَى الْاِنْسَانِ حِيْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْـًٔا مَّذْكُوْرًا ﴿۱﴾

1. बेशक इन्सान पर ज़मामे का एक ऐसा वक्त भी गुज़र चुका है को वोह कोई काबिले ज़िक्र चीज़ ही न था।

اِنَّا خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ اَمْشَاجٍ ۖۗ نَّبْتَلِيْهِ فَجَعَلْنٰهُ سَمِيْعًۢا بَصِيْرًا ﴿۲﴾

2. बेशक हमने इन्सान को मखलूत नुत्फा से पैदा फरमाया जिस हम(तवल्लुद तक एक मरहले से दूसरे मरहले की तरफ)पलटते और जाचंते रेहते हैं,पस हमने उसे(तर्तीब से)सुन्ने वाला(फिर)देखने वाला बनाया।

اِنَّا هَدَيْنٰهُ السَّبِيْلَ اِمَّا شَاكِرًا وَّ اِمَّا كَفُوْرًا ﴿۳﴾

3. बेशक हमने उसे उसे हक्को बातिल में तमीज़ करने के लिये शुऊरो बसीरत की)काह भी दिखाा दी,(अब)ख्वाह वोह शुक्र गुज़ार होजो या ना शुक्र गुज़ार।

اِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَلٰسِلَا۠ وَاَغْلٰلًا وَّسَعِيْرًا ﴿۴﴾

4. बशक हमने काफिरों के लिये(पावं की)ज़ंजीरें और(गरदन के)(तोक और दोज़ख की)देहेक्ती आग तैयार कर रखखी है।

اِنَّ الْاَبْرَارَ يَشْرَبُوْنَ مِنْ كَاْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُوْرًا ﴿۵﴾

5. बेशक मुख़्लिस और इताअ़त गुज़ार (शराबे तहूर के) ऐसे जाम पियेंगे जिसमें (खुश्बू, रंगत और लिज़्ज़त बढ़ाने के लिए) काफ़ूर की आमेज़िश होगी।

عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللّٰهِ

6. (काफ़ूर जन्नत का) एक चशमा है जिससे (ख़ास)

يُفَجِّرُوْنَهَا تَفْجِيْرًا ٦

बन्दगाने ख़ुदा (या'नी अवलिया अल्लाह) पिया करेंगे (और) जहां चाहेंगे (दूसरों को पिलाने के लिए) उसे छोटी छोटी नेहरों में बहा कर (भी) ले जाएंगे।

يُوْفُوْنَ بِالنَّذْرِ وَيَخَافُوْنَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهٗ مُسْتَطِيْرًا ٧

7 (येह बन्दगान ख़ास वोह हैं) जो (अपनी) नज़्रें पूरी करते हैं और उस दिनसे डरते हैं जिसकी सख़्ती खूब फ़ैल जानेवाली है।

وَيُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّاَسِيْرًا ٨

8. और (अपना) खाना अल्लाह की मुहब्बत में (खुद उसकी तलबो हाजत होने के बावजूद ईसारन) मोहताज को और यतीम को और क़ैदी को खिलाते हैं।

اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ جَزَآءً وَّلَا شُكُوْرًا ٩

9. (और केहते हैं) कि हम तो महज़ अल्लाह की रज़ा के लिए तुम्हें खिला रहे हैं, न तुम से किसी बदले के ख़्वास्तगार है और न शुक्र गुज़ारी के (ख़्वाहिश मंद)हैं।

اِنَّا نَخَافُ مِنْ رَّبِّنَا يَوْمًا عَبُوْسًا قَمْطَرِيْرًا ١٠

10. हमें तो अपने रब से उस दिन का ख़ौफ़ रेहता है जो (चेहरों को) निहायत सियाह (और) बदनुमा कर देनेवाला है।

فَوَقٰىهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذٰلِكَ الْيَوْمِ وَلَقّٰىهُمْ نَضْرَةً وَّسُرُوْرًا ١١

11. पस अल्लाह उन्हें (ख़ौफ़े इलाही के सबब से) उस दिनकी सख़्ती से बचा लेगा और उन्हें (चेहरों पर) रौनक़ व ताज़गी और (दिलों में) सुरूरो मसर्रत बख्शेगा।

وَجَزٰىهُمْ بِمَا صَبَرُوْا جَنَّةً وَّحَرِيْرًا ١٢

12. और इस बातके इवज़ उन्होंने सब्र किया है (रेहने को) जन्नत और (पहनने को) रेशमी पोशाक अ़ता करेगा।

مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ ۚ لَا يَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّلَا زَمْهَرِيْرًا ١٣

13. येह लोग उसमें तख़्तों पर तक्ये लगाए बैठे होंगे, न वहां धूप की तपिश पाएंगे और न सरदी की शिद्दत।

وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلٰلُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوْفُهَا تَذْلِيْلًا ١٤

14. और (जन्नत के दरख़्तों के) साए उन पर झुक रहें होंगे और उनके (मेवों के) गुच्छे झुक कर लटक रहे होंगे।

وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِاٰنِيَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ وَّاَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيْرَا ۟ۙ ﴿١٥﴾

15. और (खुद्दाम) उनके गिर्द चांदी के बरतन और (साफ़ सुथरे) शीशे के गिलास लिए फिरते होंगे।

قَوَارِيْرَا۟ مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوْهَا تَقْدِيْرًا ﴿١٦﴾

16. और शीशे भी चांदी के (बने) होंगे जिन्हें उन्होंने (हर एक तलब के मुताबिक़) ठीक ठीक अंदाज़े से भरा होगा

وَيُسْقَوْنَ فِيْهَا كَاْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيْلًا ۚ ﴿١٧﴾

17. और उन्हें वहां (शराबे तहूर के) ऐसे जाम पिलाए जोंगे जिनमें ज़नजबील की आमेज़श होगी।

عَيْنًا فِيْهَا تُسَمّٰى سَلْسَبِيْلًا ﴿١٨﴾

18. (ज़नजबील) उस (जन्नत)में एक ऐसा चश्मा है जिसका नाम सल्सबील है रखखा गया है।

وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۚ اِذَا رَاَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنْثُوْرًا ﴿١٩﴾

19. और उनके इर्द गिर्द ऐसे (मा'सूम) बच्चे घूमते रहेंगे, जो हमेशा उसी हालमें रहेंगे, जब आप उन्हें देखेंगे तो उन्हें बिखरे हुए मोती गुमान करेंगे।

وَاِذَا رَاَيْتَ ثَمَّ رَاَيْتَ نَعِيْمًا وَّمُلْكًا كَبِيْرًا ﴿٢٠﴾

20. और जब आप (बहिश्त पर) नज़र डालेंगे तो वहां (कसरत से) ने'मतें और (हर तरफ़)बड़ी सल्तनत देखेंगे।

عٰلِيَهُمْ ثِيَابُ سُنْدُسٍ خُضْرٌ وَّاِسْتَبْرَقٌ ۫ وَّحُلُّوْٓا اَسَاوِرَ مِنْ فِضَّةٍ ۚ وَسَقٰىهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُوْرًا ﴿٢١﴾

21. और (उनके जिस्मों) पर बारीक रेशम के सब्ज़ और दबीज़ अतलस के कपड़े होंगे, और उन्हें चांदी के कंगन पेहनाए जाएंगे और उनका रब उन्हें पाकीज़ा शराब पिलाएगा।

اِنَّ هٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَآءً وَّكَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُوْرًا ۧ ﴿٢٢﴾

22. बेशक येह तुम्हारा सिला होगा और तुम्हारी मेहनत मक़्बूल हो चुकी।

ع ٢٢ ١٩

اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ تَنْزِيْلًا ۚ ﴿٢٣﴾

23. बेशक हमने आप पर कुरआन थोड़ा थोड़ा कर के नाज़िल फरमाया है।

قرءة حفص بغير الالف في الوصل فيهما و وقف على الاول بالالف وعلى الثاني بغير الالف ١٢

فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ اٰثِمًا اَوْ كَفُوْرًا ﴿٢٤﴾

24. सो आप अपने रबके हुक्म की ख़ातिर सब्र (जारी) रख्खें और उनमें से किसी काज़िबो गुनहगार या काफ़िरो ना शुक्रगुज़ार की बात पर कान न धरें।

وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿٢٥﴾

25. और सुब्हो शाम अपने रब का नाम ज़िक्र कया करें।

وَمِنَ الَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهٗ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيْلًا ﴿٢٦﴾

26. और रात की कुछ घड़ियां उसके हुज़ूर सजदा रेज़ी किया करें और रात के (बक़िय्या) तवील हिस्से में उसकी तस्बीह़ किया करें।

اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ يُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُوْنَ وَرَآءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيْلًا ﴿٢٧﴾

27. बेशक येह (तालिबाने दुनिया) जल्द मिलनेवाले मफ़ाद को अज़ीज़ रखते हैं और सख़्त भारी दिन(की याद) को अपने पसे पुश्त छोड़े हुए हैं।

نَحْنُ خَلَقْنٰهُمْ وَشَدَدْنَآ اَسْرَهُمْ ۚ وَاِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَآ اَمْثَالَهُمْ تَبْدِيْلًا ﴿٢٨﴾

28. (वोह नहीं सोचते कि) हम ही ने उन्हें पैदा फ़रमाया है और उनके जोड़ जोड़ को मज़बूत बनाया है, और हम जब चाहें (उन्हें) उन्ही जैसे लोगों से बदल डालें।

اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿٢٩﴾

29. बेशक येह (क़ुरआन) नसीह़त है, सो जो कोई चाहे अपने रब की तरफ़ (पहुंचने का)रास्ता इख़्तियार कर ले।

وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٣٠﴾

30. और तुम ख़ुद नहीं चाह सक्ते सिवाए उसके जो अल्लाह चाहे, बेशक अल्लाह ख़ूब जाननेवाला बड़ी हिक्मत वाला है।

يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ۭ وَالظّٰلِمِيْنَ اَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٣١﴾

31. और वोह जिसे चाहता है अपनी रह़मत (के दाइरे) में दाख़िल फ़रमा देता है, और ज़ालिमों के लिए उसने दर्दनाक अ़ज़ाब तैयार कर रख्खा है।

आयातुहा 50 | 77 सूरतुल मुरसलाति मक्किय्यतुन 33 | रुकूआ़तुहा 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

وَالْمُرْسَلٰتِ عُرْفًا ﴿١﴾

1. नर्मो ख़ुशगवार हवाओं की क़सम जो पय दर पय चलती हैं।

فَالْعٰصِفٰتِ عَصْفًا ۙ ﴿٢﴾

2. फिर तुन्दो तेज़ हवाओं की क़सम जो शदीद झोंकों से चलती हैं।

وَّالنّٰشِرٰتِ نَشْرًا ۙ ﴿٣﴾

3. और उनकी क़सम जो बादलों को हर तरफ़ फैला देती हैं।

فَالْفٰرِقٰتِ فَرْقًا ۙ ﴿٤﴾

4. फिर उनकी क़सम जो (उन्हें) फाड़ कर जुदा जुदा कर देती हैं।

فَالْمُلْقِيٰتِ ذِكْرًا ۙ ﴿٥﴾

5. फिर उनकी क़सम जो नसीहत लाने वाले हैं।

عُذْرًا اَوْ نُذْرًا ۙ ﴿٦﴾

6. हुज्जत तमाम करने या डराने के लिए।

اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَوَاقِعٌ ؕ ﴿٧﴾

7. बेशक जो वा'दए (क़ियामत) तुम से किया जा रहा है। वोह ज़रूर पूरा हो कर रहेगा।

فَاِذَا النُّجُوْمُ طُمِسَتْ ۙ ﴿٨﴾

8. फिर जब सितारों की रौशनी ज़ाइल कर दी जाएगी।

وَاِذَا السَّمَآءُ فُرِجَتْ ۙ ﴿٩﴾

9. फिर जब आस्मानी काइनात में शिगाफ़ हो जाएंगे।

وَاِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ ۙ ﴿١٠﴾

10. और जब पहाड़ (रेज़ा रेज़ा करके (उड़ा दिए जाएंगे।

وَاِذَا الرُّسُلُ اُقِّتَتْ ؕ ﴿١١﴾

11. और जब पयग़म्बर वक़्ते मुक़र्ररह पर(अपनी अपनी उम्मतों पर गवाही के लिए) जमा' किए जाएंगे।

لِاَیِّ یَوْمٍ اُجِّلَتْ ؕ ﴿١٢﴾

12 भला किस दिन के लिए (इन सब उमूर की)मुद्दत मुकर्रर की गई है।

لِیَوْمِ الْفَصْلِ ۚ ﴿١٣﴾

13. फ़ैसले के दिन के लिए।

وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا یَوْمُ الْفَصْلِ ؕ ﴿١٤﴾

14. और आपको किसने बताया के फैसले का दिन क्या है।

وَیْلٌ یَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِیْنَ ﴿١٥﴾

15.उस दिन झुटलानेवालों के लिए ख़राबी (व तबाही) है।

اَلَمْ نُهْلِكِ الْاَوَّلِیْنَ ؕ ﴿١٦﴾

16. क्या हमने अगले (झुटलानेवाले) लोगों को हलाक नहीं कर डाला था।

ثُمَّ نُتْبِعُهُمُ الْاٰخِرِیْنَ ﴿١٧﴾

17. फिर हम बाद के लोगों को भी (हलाकत में) उनके पीछे चलाए देते हैं।

كَذٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِیْنَ ﴿١٨﴾

18. हम मुजरिमों के साथ इसी तरह (का मुआमला) करते हैं।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١٩﴾

19. उस दिन झुटलानेवालों के लिए ख़राबी है।

اَلَمْ نَخْلُقْكُّمْ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ﴿٢٠﴾

20. क्या हमने तुम्हें हक़ीर पानी (की एक बूंद) से पैदा नहीं किया।

فَجَعَلْنٰهُ فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ﴿٢١﴾

21. फिर उसको महफ़ूज़ जगह (या'नी रहमे मादर) में रखखा।

اِلٰى قَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٢٢﴾

22. (वक़्त के)एक मुअय्यन अन्दाज़े तक।

فَقَدَرْنَا ۖ فَنِعْمَ الْقٰدِرُوْنَ ﴿٢٣﴾

23. फिर हमने (नुत्फ़े से तवल्लुद तक तमाम मराहिल के लिए) वक़्त के अंदाज़े मुक़र्रर किए, पस (हम) किया ही खूब अंदाज़े मुक़र्रर करनेवाले हैं।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٢٤﴾

24 उस दिन झुटलानेवालों के लिए बड़ी तबाही है।

اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ كِفَاتًا ﴿٢٥﴾

25. क्या हमने ज़मीन को समेटनेवाली नहीं बनाया।

اَحْيَآءً وَّ اَمْوَاتًا ﴿٢٦﴾

26. (जो समेटती है)ज़िन्दों को (भी) और मुर्दोंको(भी)।

وَّ جَعَلْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ شٰمِخٰتٍ وَّ اَسْقَيْنٰكُمْ مَّآءً فُرَاتًا ﴿٢٧﴾

27. हमने उस पर बुलन्दो मज़बूत पहाड़ रख दिए और हमने तुम्हें (शीरीं चश्मों के ज़रीए) मीठा पानी पिलाया।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٢٨﴾

28. उस दिन झुटलाने वालों के लिए बड़ी बरबादी होगी।

اِنْطَلِقُوْٓا اِلٰى مَا كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿٢٩﴾

29.(अब) तुम उस (अज़ाब) की तरफ़ चलो जिसे तुम झुटलाया करते थे।

اِنْطَلِقُوْٓا اِلٰى ظِلٍّ ذِيْ ثَلٰثِ شُعَبٍ ﴿٣٠﴾

30. तुम (दोज़ख़ के धुंवें पर मब्नी) उस साए की तरफ़ चलो।

لَّا ظَلِيْلٍ وَّ لَا يُغْنِيْ مِنَ اللَّهَبِ ﴿٣١﴾

31. जो न (तो) ठंडा साया है और न ही आग की तपिश से बचाने वाला है।

اِنَّهَا تَرْمِيْ بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ ﴿٣٢﴾

32. बेशक वोह (दोज़ख़) ऊंचे महल की तरह (बड़े बड़े) शोले और चिंगारिया उड़ाती हैं।

كَاَنَّهٗ جِمٰلَتٌ صُفْرٌ ﴿٣٣﴾

33. (यूं भी लगता है) गोया वोह (चिंगारियां) ज़र्द रंग वाले ऊंट हैं।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٣٤﴾

34. उस दिन झुटलानेवालों के लिए बड़ी तबाही है।

هٰذَا يَوْمُ لَا يَنْطِقُوْنَ ﴿٣٥﴾

35. येह ऐसा दिन है कि वोह (इसमें) बोल भी न सकेंगे।

وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُوْنَ ﴿٣٦﴾

३६. और न ही उन्हें इजाज़त दी जाएगी कि वोह मा'ज़िरत कर सकें।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٣٧﴾

37. उस दिन झुटलानेवालों के लिए बड़ी हलाकत है।

هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ جَمَعْنٰكُمْ وَالْاَوَّلِيْنَ ﴿٣٨﴾

38. येह फैसले का दिन है (जिसमें) हम तुम्हें और (सब) पेहले लोगों को जमा' करेंगे।

فَاِنْ كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ فَكِيْدُوْنِ ﴿٣٩﴾

39. फिर अगर तुम्हारे पास (अज़ाब से बचने का) कोई हीला (और दांव) है तो (वोह) दांव मुझ पर चलो।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٠﴾

40. उस दिन झुटलानेवालों के लिए बड़ा अफ़्सोस है।

اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ ظِلٰلٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿٤١﴾

41. बेशक परहेज़गार ठंडे सायों और चश्मों में (ऐशो राहत के साथ) होंगे।

وَّفَوَاكِهَ مِمَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿٤٢﴾

42. और फल और मेवे जिसकी भी वोह ख़्वाहिश करेंगे (उनके लिए मौजूद होंगे)।

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٤٣﴾

43. (उनसे कहा जाएगा :) तुम खूब मज़े से खाओ और पियो उन आ'माले (सालेहा) के इवज़ जो तुम रते रहे थे।

اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٤٤﴾

44. बेशक हम इसी तरह् नेकू कारों को जज़ा दिया करते हैं।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٥﴾

45. उस दिन झुटलानेवालों के लिए बड़ी खराबी है।

كُلُوْا وَتَمَتَّعُوْا قَلِيْلًا اِنَّكُمْ مُّجْرِمُوْنَ ﴿٤٦﴾

46. (ऐ हक़ के मुन्किरों !)तुम थोड़ा अर्सा खा लो और फ़ाइदा उठा लो, बेशक तुम मुजरिम हो।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٧﴾

47. उस दिन झुटलानेवालों के लिए बड़ी ख़राबी है।

وَ اِذَا قِیۡلَ لَہُمُ ارۡکَعُوۡا لَا یَرۡکَعُوۡنَ ﴿۴۸﴾

48. और जब उनसे कहा जाता है कि तुम (अल्लाह के हुज़ूर) झुको तो वोह नहीं झुक्ते।

وَیۡلٌ یَّوۡمَئِذٍ لِّلۡمُکَذِّبِیۡنَ ﴿۴۹﴾

49. उस दिन झुटलानेवालों के लिए बड़ी तबाही है।

فَبِاَیِّ حَدِیۡثٍۭ بَعۡدَہٗ یُؤۡمِنُوۡنَ ﴿۵۰﴾ ع

50. फिर वोह इस (कुरआन) के बाद किस कलाम पर ईमान लाएंगे।

الجزء ٣٠

आयातुहा 40 | 78 सूरतुन न-बइ मक्किय्यतुन 80 | रुकूआ़तुहा 2

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अ़ल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

عَمَّ يَتَسَآءَلُوۡنَ ۚ ﴿۱﴾
1. येह लोग आपस में किस चीज़ से मु-त-अ़ल्लिक़ सवाल करते हैं।

عَنِ النَّبَاِ الۡعَظِيۡمِ ۙ ﴿۲﴾
2. (क्या) उस अ़ज़ीम ख़बर से मु-त-अ़ल्लिक़ (पूछ गछ कर रहे हैं)?

الَّذِىۡ هُمۡ فِيۡهِ مُخۡتَلِفُوۡنَ ؕ ﴿۳﴾
3. जिस के बारे में वोह इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं।

كَلَّا سَيَعۡلَمُوۡنَ ۙ ﴿۴﴾
4. हरगिज़ (वोह ख़बर लाइक़े इन्कार) नहीं वोह अ़नक़रीब (उस हक़ीक़त को)जान जाएंगे।

ثُمَّ كَلَّا سَيَعۡلَمُوۡنَ ﴿۵﴾
5. (हम) फिर (केहते हैं : इख़्तिलाफ़ो इन्कार) हरगिज़ (दुरुस्त) नहीं वोह अ़नक़रीब जान जाएंगे।

اَلَمۡ نَجۡعَلِ الۡاَرۡضَ مِهٰدًا ۙ ﴿۶﴾
6. क्या हमने ज़मीन को (ज़िन्दगी के) क़ियाम और कसबो अ़मल की जगह नहीं बनाया?

وَّالۡجِبَالَ اَوۡتَادًا ۖ ﴿۷﴾
7. और (क्या) पहाड़ों को (उसमें) उभार कर खड़ा (नहीं) किया?

وَّخَلَقۡنٰكُمۡ اَزۡوَاجًا ۙ ﴿۸﴾
8. और (ग़ौर करो) हमने तुम्हें (फ़रोग़े नस्ल के लिए) जोड़ा जोड़ा पैदा फ़रमाया (है)।

وَّجَعَلۡنَا نَوۡمَكُمۡ سُبَاتًا ۙ ﴿۹﴾
9. और हमने तुम्हारी नींद को (जिस्मानी) राह़त (का सबब) बनाया (है)।

وَّجَعَلۡنَا الَّيۡلَ لِبَاسًا ۙ ﴿۱۰﴾
10. और हमने रात को (उसकी तारीकी के बाइस) पर्दह पोश बनाया (है)।

وَّجَعَلۡنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ۖ ﴿۱۱﴾
11. और हमने दिन को (कसबे) मआ़श (का वक़्त) बनाया (है)।

وَّ بَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ﴿١٢﴾	12. और (अब ख़लाई काइनात में भी ग़ौर करो) हमने तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत (तब्क़ात) बनाए।
وَّ جَعَلْنَا سِرَاجًا وَّهَّاجًا ﴿١٣﴾	13. और हमने सूरज को रौशनी और ह़रारत का (ज़बरदस्त) मंबा' बनाया।
وَّ اَنْزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرٰتِ مَآءً ثَجَّاجًا ﴿١٤﴾	14. और हमने भरे बादलों से मूसलाधार पानी बरसाया।
لِّنُخْرِجَ بِهٖ حَبًّا وَّ نَبَاتًا ﴿١٥﴾	15. ताकि हम उस (बारिश) के ज़रीए (ज़मीनसे) अनाज और सब्ज़ा निकालें।
وَّ جَنّٰتٍ اَلْفَافًا ﴿١٦﴾	16. और घने घने बाग़ात (उगाएं)।
اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيْقَاتًا ﴿١٧﴾	17. (हमारी क़ुदरत की इन निशानियों को देख कर जान लो कि) बेशक फ़ैसले का दिन (क़ियामत भी) एक मुक़र्ररह वक़्त है।
يَّوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَتَاْتُوْنَ اَفْوَاجًا ﴿١٨﴾	18. जिस दिन सूर फूंका जाएगा तो तुम गिरोह दर गिरोह (अल्लाह के हुज़ूर) चले आओगे।
وَّ فُتِحَتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ اَبْوَابًا ﴿١٩﴾	19. और आस्मान (के तब्क़ात) फाड़ दिए जाएंगे तो (फटने के बाइस गोया) वोह दरवाज़े ही दरवाज़े हो जाएंगे।
وَّ سُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ﴿٢٠﴾	20. और पहाड़ (ग़ुबार बना कर फ़िज़ामें) उड़ा दिए जाएंगे, सो वोह सुराब (की तरह़ कल-अ़दम) हो जाएंगे।
اِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ﴿٢١﴾	21. बेशक दोज़ख़ एक घात है।
لِّلطَّاغِيْنَ مَاٰبًا ﴿٢٢﴾	22. (वोह) सरकशों का ठिकाना है।
لّٰبِثِيْنَ فِيْهَآ اَحْقَابًا ﴿٢٣﴾	23. वोह ख़त्म न होनेवाली पय दर पय मुद्दतें उसी में पड़े रहेंगे।
لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا بَرْدًا وَّ لَا شَرَابًا ﴿٢٤﴾	24. न वोह उसमें (किसी क़िस्म की) ठंडक का मज़ा चखेंगे और न किसी पीने की चीज़ का।

إِلَّا حَمِيمًا وَغَسَّاقًا ﴿٢٥﴾

25. सिवाए खौलते हुए गर्म पानी और (दोज़ख़ियों के ज़ख़्मों से) बेहते हुए पीप का।

جَزَاءً وِفَاقًا ﴿٢٦﴾

26. (येही उन की सरकशी के) मुवाफ़िक़ बदला है।

إِنَّهُمْ كَانُوا لَا يَرْجُونَ حِسَابًا ﴿٢٧﴾

27. इस लिए कि वोह क़त्अ़न हिसाबे (आख़िरत) का ख़ौफ़ नहीं रखते थे।

وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كِذَّابًا ﴿٢٨﴾

28. और वोह हमारी आयतों को ख़ूब झुटलाया करते थे।

وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ كِتَابًا ﴿٢٩﴾

29. और हमने हर (छोटी बड़ी) चीज़ को लिख कर महफ़ूज़ कर रख्खा है।

فَذُوقُوا فَلَنْ نَزِيدَكُمْ إِلَّا عَذَابًا ﴿٣٠﴾

30. ऐ मुन्किरो!) अब तुम (अपने किए का) मज़ा चख्खो (तुम दुनिया में कुफ़्रो सरकशी में बढ़ते गए) अब हम तुम पर अ़ज़ाब ही को बढ़ाते जाएंगे।

إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ مَفَازًا ﴿٣١﴾

31. बेशक परहेज़गारों के लिए कामयाबी है।

حَدَائِقَ وَأَعْنَابًا ﴿٣٢﴾

32. (उनके लिए) बाग़ात और अंगूर (होंगे)।

وَكَوَاعِبَ أَتْرَابًا ﴿٣٣﴾

33. और जवां साल हम उ़म्र दोशीज़ाएं (होंगी)।

وَكَأْسًا دِهَاقًا ﴿٣٤﴾

34. और शराबे तहूर के छलकते हुए जाम होंगे।

لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا كِذَّابًا ﴿٣٥﴾

35. वहां येह (लोग) न कोई बेहूदा बात सुनेंगे और न (एक दूसरे को) झुटलाना (होगा)।

جَزَاءً مِنْ رَبِّكَ عَطَاءً حِسَابًا ﴿٣٦﴾

36. येह आपके रब की तरफ़ से सिला है जो (आ'माल के हिसाब से) काफ़ी (बड़ी) अ़ता है।

رَبِّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمَٰنِ لَا يَمْلِكُونَ مِنْهُ خِطَابًا ﴿٣٧﴾

37. (वोह) आस्मानों और ज़मीन का और जो कुछ उन दोनों के दरमियान है (सब) का परवरदिगार है, बड़ी ही रह्मतवाला है (मगर रोज़े क़ियामत उस के रो'बो जलाल का आ़लम येह होगा कि) उस से बात करने का (मख़्लूक़ात में से) किसी को (भी) यारा न होगा।

يَوْمَ يَقُوْمُ الرُّوْحُ وَالْمَلٰٓئِكَةُ صَفًّا ۙ لَّا يَتَكَلَّمُوْنَ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَقَالَ صَوَابًا ﴿٣٨﴾

38. जिस दिन जिब्राईल (रूहुल अमीन) और (तमाम) फ़रिश्ते सफ़ बस्ता खड़े होंगे, कोई लब कुशाई न कर सकेगा, सिवाए उस शख़्स के जिसे ख़ुदाए रह़्मानने इज़्ने शफ़ाअ़त दे रख्खा था और उसने (ज़िन्दगीमें ता'लीमाते इस्लाम के मुताबिक़) बात भी दुरुस्त कही थी।

ذٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ مَاٰبًا ﴿٣٩﴾

39. येह रोज़े ह़क़ है, पस जो शख़्स चाहे अपने रब के हुज़ूर (रह़्मतो क़ुर्बत का) ठिकाना बना ले।

اِنَّآ اَنْذَرْنٰكُمْ عَذَابًا قَرِيْبًا ۚۖ يَّوْمَ يَنْظُرُ الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدٰهُ وَيَقُوْلُ الْكٰفِرُ يٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ تُرٰبًا ﴿٤٠﴾

40. बिला शुब्हा हमने तुम्हें अ़नक़रीब आनेवाले अ़ज़ाब से डरा दिया है, उस दिन हर आदमी उन (आ'माल) को जो उसने आगे भेजे हैं देख लेगा, और (हर) काफ़िर कहेगा : ऐ काश ! मैं मिट्टी होता (और इस अ़ज़ाब से बच जाता)।

ع ٢

रुकूआ़तुहा 2 | 79 सूरतुन नाज़िआ़ति मक्किय्यतुन 81 | आयातुहा 46

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़्म फ़रमानेवाला है।

وَالنّٰزِعٰتِ غَرْقًا ۙ ﴿١﴾

1. उन (फ़रिश्तों की) क़सम जो (काफ़िरों की जान उन के जिस्मों के एक एक अंग में से) निहायत सख़्ती से खींच लाते हैं।
(या – तवानाई की उन लहरों की क़सम जो माद्दे के अंदर घुस कर कीमियाई जोड़ों को सख़्ती से तोड़ फोड़ देती हैं)।

وَّالنّٰشِطٰتِ نَشْطًا ۙ ﴿٢﴾

2. और उन (फ़रिश्तों की) क़सम जो (मो'मिनों की जान के) बन्द निहायत नरमी से खोल देते हैं।
(या – तवानाई की उन लहरों की क़सम जो माद्दे के अंदर से कीमियाई जोड़ों को निहायत नरमी और आराम से तोड़ देती हैं)।

وَّالسّٰبِحٰتِ سَبْحًا ۙ﴿۳﴾

3. और उन (फ़रिश्तों) की क़सम जो (ज़मीनो आस्मान के दरमियान) तेज़ी से तैरते फिरते हैं।
(या – तवानाई की उन लह्रों की क़सम जो आस्मानी ख़ला–व–फ़िज़ा में बिला रोक टोक चलती फिरती हैं)

فَالسّٰبِقٰتِ سَبْقًا ۙ﴿۴﴾

4. फिर उन (फ़रिश्तों)की क़सम जो लपक कर (दूसरों से) आगे बढ़ जाते हैं।
(या – फिर तवानाई की उन लह्रों की क़सम जो रफ़्तार, ताक़त और जाज़िबिय्यत के लिहाज़ से दूसरी लहरों पर सब्क़त ले जाती हैं।

فَالْمُدَبِّرٰتِ اَمْرًا ﴿۵﴾

वक़्फ़ लाज़िम — وقف لازم

5. फिर उन (फ़रिश्तों) की क़सम जो मुख़्तलिफ़ उमूर की तदबीर करते हैं।
(या – फिर तवानाई की उन लह्रों की क़सम जो बाहमी तआ़मुल से काइनाती निज़ाम की बक़ा के लिए तवाज़ुनो तद्बीर क़ाइम रखती हैं)।

يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ ۙ﴿۶﴾

6. जब उन्हें इस निज़ामे काइनात के दरहम बरहम कर देने का हुक्म होगा तो) उस दिन (काइनात की) हर मु–तहर्रिक चीज़ शदीद हरकत में आ जाएगी।

تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ ؕ﴿۷﴾

7. पीछे आनेवाला एक और ज़ल्ज़ला उसके पीछे आएगा।

قُلُوْبٌ يَّوْمَئِذٍ وَّاجِفَةٌ ۙ﴿۸﴾

8. उस दिन (लोगों के) दिल ख़ौफ़ो इज़्तिराब से धड़कते होंगे।

اَبْصَارُهَا خَاشِعَةٌ ﴿۹﴾

وقف لازم

9. उनकी आँखें (ख़ौफ़ो हैबत) से झुकी होंगी।

يَقُوْلُوْنَ ءَاِنَّا لَمَرْدُوْدُوْنَ فِي الْحَافِرَةِ ؕ﴿۱۰﴾

10. (कुफ़्फ़ार) केहते हैं : क्या हम पहली ज़िन्दगी की तरफ़ पल्टाए जाएंगे?

ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا نَّخِرَةً ؕ﴿۱۱﴾

11. क्या जब हम बोसीदह (खोखली) हड्डियां हो जाएंगे (तब भी ज़िन्दा किए जाएंगे?

قَالُوا تِلْكَ إِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ﴿١٢﴾

12. वोह केहते हैं : येह (लौटना) तो उस वक़्त बड़े ख़सारे का लौटना होगा।

فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَاحِدَةٌ ﴿١٣﴾

13. फिर तो येह एक ही बार शदीद हैबतनाक आवाज़ के साथ (काइनात के तमाम अजराम का) फट जाना होगा।

فَإِذَا هُمْ بِالسَّاهِرَةِ ﴿١٤﴾

14. फिर वोह (सब लोग) यकायक खुले मैदाने (हश्र)में आ मौजूद होंगे।

وقف لازم

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ مُوسَىٰ ﴿١٥﴾

15. क्या आपके पास मूसा (عليه السلام) की ख़बर पहुंची?

وقف لازم

إِذْ نَادَاهُ رَبُّهُ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ﴿١٦﴾

16. जब उनके रबने तुवा की मुक़द्दस वादी में उन्हें पुकारा था।

اذْهَبْ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ﴿١٧﴾

17. (और हुक्म दिया था कि) फ़िरऔन के पास जाओ वोह सरकश हो गया है।

فَقُلْ هَلْ لَكَ إِلَىٰ أَنْ تَزَكَّىٰ ﴿١٨﴾

18. फिर (उस से) कहो : क्या तेरी ख़्वाहिश है कि तू पाक हो जाए?

وَأَهْدِيَكَ إِلَىٰ رَبِّكَ فَتَخْشَىٰ ﴿١٩﴾

19. और (क्या तू चाहता है कि) मैं तेरे रब की तरफ़ तेरी रहनुमाई करूं ताकि तू (उस से) डरने लगे?

فَأَرَاهُ الْآيَةَ الْكُبْرَىٰ ﴿٢٠﴾

20. फिर मूसा (عليه السلام) ने उसे बड़ी निशानी दिखाई।

فَكَذَّبَ وَعَصَىٰ ﴿٢١﴾

21. तो उसने झुटला दिया और नाफ़रमानी की।

ثُمَّ أَدْبَرَ يَسْعَىٰ ﴿٢٢﴾

22. फिर वोह (हक़ से) रू गर्दां हो कर (मूसा عليه السلام की मुख़ालिफ़त में) सअ्-यो काविश करने लगा।

فَحَشَرَ فَنَادَىٰ ﴿٢٣﴾

23. फिर उसने (लोगों को) जमा' किया और पुकारने लगा।

فَقَالَ أَنَا رَبُّكُمُ الْأَعْلَىٰ ﴿٢٤﴾

24. फिर उसने कहा : मैं तुम्हारा सब से बुलन्दो बाला रब हूं।

فَأَخَذَهُ اللَّهُ نَكَالَ الْآخِرَةِ وَالْأُولَىٰ ﴿٢٥﴾

25. तो अल्लाहने उसे आख़िरत और दुनिया की (दोहरी) सज़ा में पकड़ लिया।

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَن يَخْشَىٰ ﴿٢٦﴾

26. बेशक इस वाक़िए में उस शख़्स के लिए बड़ी इब्रत है जो (अल्लाह से) डरता है।

ءَأَنتُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَمِ السَّمَاءُ ۚ بَنَاهَا ﴿٢٧﴾

27. क्या तुम्हारा पैदा करना ज़ियादा मुश्किल है या (पूरी) समावी काइनात का, जिसे उसने बनाया?

رَفَعَ سَمْكَهَا فَسَوَّاهَا ﴿٢٨﴾

28. उसने आस्मान के तमाम कुर्रों (सितारों) को फ़िज़ाए बसीत में पैदा कर के) बुलन्द किया, फिर उन (तरकीबो तश्कील और अफ़्आ़लो हरकात) में ए'तिदाल, तवाज़ुन और इस्तेह्काम पैदा कर दिया।

وَأَغْطَشَ لَيْلَهَا وَأَخْرَجَ ضُحَاهَا ﴿٢٩﴾

29. और उसीने आस्मानी ख़ला की रात को (या'नी सारे ख़लाई माहौल को मिस्ले शब) तारीक बनाया, और (इस ख़ला से) उन (सितारों) की रौशनी (पैदा कर के) निकाली।

وَالْأَرْضَ بَعْدَ ذَٰلِكَ دَحَاهَا ﴿٣٠﴾

30. और उसी ने ज़मीन को इस (सितारे-सूरज के वजूद में आ जाने) के बाद (इस से) अलग कर के ज़ोर से फेंक दिया (और इसे क़ाबिले सताइश बनाने के लिए बिछा दिया)।

أَخْرَجَ مِنْهَا مَاءَهَا وَمَرْعَاهَا ﴿٣١﴾

31. उसी ने ज़मीन में से उसका पानी (अलग) निकाल लिया और (बक़िय्या खुश्क क़त्आ़त में) उसकी नबातात निकालीं।

وَالْجِبَالَ أَرْسَاهَا ﴿٣٢﴾

32. और उसीने (बा'ज़ माद्दों को बाहम मिला कर) ज़मीन से मुह्कम पहाड़ों को उभार दिया।

مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ ﴿٣٣﴾

33. (येह सब कुछ) तुम्हारे और तुम्हारे चौपायों के फ़ाइदे के लिए (किया)।

فَإِذَا جَاءَتِ الطَّامَّةُ الْكُبْرَىٰ ﴿٣٤﴾

34. फिर उस वक़्त (काइनात के) बढ़ते बढ़ते (उस की इन्तिहा पर) हर चीज़ पर ग़ालिब आ जानेवाली बहुत सख़्त आफ़ते (क़ियामत) आएगी।

يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْإِنسَانُ مَا سَعَىٰ ﴿٣٥﴾

35. उस दिन इन्सान अपनी (हर) कोशिशो अ़मल को याद करेगा।

وَبُرِّزَتِ الْجَحِيمُ لِمَن يَرَىٰ ﴿٣٦﴾

36. और हर देखनेवाले के लिए दोज़ख़ ज़ाहिर कर दी जाएगी।

فَأَمَّا مَنْ طَغَىٰ ﴿٣٧﴾

37. फिर जिस शख़्सने सरकशी की होगी।

وَآثَرَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ﴿٣٨﴾

38. और दुन्यावी ज़िन्दगी को (आख़िरत पर) तरजीह दी होगी।

فَإِنَّ الْجَحِيمَ هِيَ الْمَأْوَىٰ ﴿٣٩﴾

39. तो बेशक दोज़ख़ ही (उस का) ठिकाना होगा।

وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوَىٰ ﴿٤٠﴾

40. और जो शख़्स अपने रब के हुज़ूर खड़ा होने से डरता रहा और उसने (अपने) नफ़्स को (बुरी) ख़्वाहिशातो शह्‌वात से बाज़ रखा।

فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوَىٰ ﴿٤١﴾

41. तो बेशक जन्नत ही (उस का) ठिकाना होगा।

يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسَاهَا ﴿٤٢﴾

42. (कुफ़्फ़ार) आप से क़ियामत के बारे में पूछते हैं कि उस का वुक़ूअ़ कब होगा।

فِيمَ أَنْتَ مِنْ ذِكْرَاهَا ﴿٤٣﴾

43. तो आपको उसके (वक़्त के) ज़िक्र से क्या ग़रज़?

إِلَىٰ رَبِّكَ مُنْتَهَاهَا ﴿٤٤﴾

44. उसकी इन्तिहा तो आप के रब तक है (या'नी इब्तिदा की तरह इन्तिहा में भी सिर्फ़ वह्‌दत रेह जाएगी)।

إِنَّمَا أَنْتَ مُنْذِرُ مَنْ يَخْشَاهَا ﴿٤٥﴾

45. आप तो मह्‌ज़ उस शख़्स को डर सुनानेवाले हैं जो उस से ख़ाइफ़ है।

كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوا إِلَّا عَشِيَّةً أَوْ ضُحَاهَا ﴿٤٦﴾

46. गोया वोह जिस दिन उसे देख लेंगे तो (येह ख़याल करेंगे कि) वोह (दुनिया में) एक शाम या उस की सुब्ह़ के सिवा ठहरे ही न थे।

आयातुहा 42 | 80 सूरतु अ-ब-स मक्किय्यतुन 24 | रुकूउहा 1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमाने वाला है।

عَبَسَ وَتَوَلَّىٰ ﴿١﴾

1. उनके चेह्‌रए (अक़्दस) पर ना गवारी आई और रुख़े (अनवर) मोड़ लिया।

اَنْ جَآءَهُ الْاَعْمٰى ۝٢

2. इस वजह से कि उनके पास एक नाबीना आया (जिसने आपकी बात को टोका)।

وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّهٗ يَزَّكّٰىٓ ۝٣

3. और आपको क्या ख़बर शायद वोह (आपकी तवज्जोह से मज़ीद) पाक हो जाता।

اَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرٰى ۝٤

4. या (आपकी) नसीहत कुबूल करता तो नसीहत उसको (और) फ़ाइदा देती।

اَمَّا مَنِ اسْتَغْنٰى ۝٥

5. लेकिन जो शख़्स (दीन से) बे परवाह है।

فَاَنْتَ لَهٗ تَصَدّٰى ۝٦

6. तो आप उसके (कुबूले इस्लाम के) लिए ज़ियादह एहतिमाम फ़रमाते हैं।

وَمَا عَلَيْكَ اَلَّا يَزَّكّٰى ۝٧

7. हालांकि आप पर कोई ज़िम्मेदारी (का बोझ) नहीं अगरचे वोह पाकीज़गी (ईमान) इख़्तियार भी न करे।

وَاَمَّا مَنْ جَآءَكَ يَسْعٰى ۝٨

8. और वोह जो आपके पास (खुद तलबे ख़ैर की) कोशिश करता हुआ आया।

وَهُوَ يَخْشٰى ۝٩

9. और वोह (अपने रब से) डरता भी है।

فَاَنْتَ عَنْهُ تَلَهّٰى ۝١٠

10. तो आप उससे बे त-वज्जोही फ़रमा रहे हैं।

كَلَّآ اِنَّهَا تَذْكِرَةٌ ۝١١

11. (ऐ हबीबे मुकर्रम!) यूं नहीं बेशक येह (आयाते कुरआनी) तो नसीहत हैं।

فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ ۝١٢

12. जो शख़्स चाहे उसे कुबूल (व अज़बर) कर ले।

وقف لازم

فِيْ صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ ۝١٣

13. (येह) मुअ़ज़्ज़ज़ो-मुकर्रम औराक़में (लिखी हुई) हैं।

مَّرْفُوْعَةٍ مُّطَهَّرَةٍ ۝١٤

14. जो निहायत बुलंद मर्तबा (और) पाकीज़ा हैं।

بِاَيْدِيْ سَفَرَةٍ ۝١٥

15. ऐसे सफ़ीरों (और कातिबों) के हाथों से (आगे पहुंची) हैं।

كِرَامٍ بَرَرَةٍ ۝١٦

16. जो बड़े साहिबाने करामत (और) पैकराने ताअ़त हैं।

قُتِلَ الْاِنْسَانُ مَاۤ اَكْفَرَهٗ ﴿١٧﴾

17. हलाक हो (वोह बद बख़्त मुन्किर) इन्सान कैसा ना शुक्रा है (जो इतनी अज़ीम ने'मत पा कर भी उसकी क़द्र नहीं करता)।

مِنْ اَیِّ شَیْءٍ خَلَقَهٗ ﴿١٨﴾

18. अल्लाहने उसे किस चीज़ से पैदा फ़रमाया है।

مِنْ نُّطْفَةٍ ؕ خَلَقَهٗ فَقَدَّرَهٗ ﴿١٩﴾

19. नुत्फ़ेमें से उसको पैदा फ़रमाया, फिर साथ ही उसका (ख़्वासो जिन्स के लिहाज़ से) तअ़य्युन फ़रमा दिया।

ثُمَّ السَّبِیْلَ یَسَّرَهٗ ﴿٢٠﴾

20. फिर (तश्कील, इर्तिक़ा और तक्मील के बाद ब-तने मादर से निकलने की) राह उसके लिए आसान फ़रमा दी।

ثُمَّ اَمَاتَهٗ فَاَقْبَرَهٗ ﴿٢١﴾

21. फिर उसे मौत दी, फिर उसे क़ब्रमें (दफ़्न) कर दिया गया।

ثُمَّ اِذَا شَآءَ اَنْشَرَهٗ ﴿٢٢﴾

22. फिर जब वोह चाहेगा उसे (दोबारा ज़िन्दा कर के) खड़ा करेगा।

كَلَّا لَمَّا یَقْضِ مَاۤ اَمَرَهٗ ﴿٢٣﴾

23. यक़ीनन उस (ना फ़रमान इन्सान) ने वोह (ह़क़) पूरा न किया जिसका उसे (अल्लाहने) हुक्म दिया था।

فَلْیَنْظُرِ الْاِنْسَانُ اِلٰی طَعَامِهٖۤ ﴿٢٤﴾

24. पस इन्सान को चाहिए कि अपनी ग़िज़ा की तरफ़ देखे (और ग़ौर करे)।

اَنَّا صَبَبْنَا الْمَآءَ صَبًّا ﴿٢٥﴾

25. बेशक हमने ख़ूब ज़ोर से पानी बरसाया।

ثُمَّ شَقَقْنَا الْاَرْضَ شَقًّا ﴿٢٦﴾

26. फिर हमने ज़मीन को फाड़ कर चीर डाला।

فَاَنْۢبَتْنَا فِیْهَا حَبًّا ﴿٢٧﴾

27. फिर हमने उसमें अनाज उगाया।

وَّ عِنَبًا وَّ قَضْبًا ﴿٢٨﴾

28. और अंगूर और तरकारी।

وَّ زَیْتُوْنًا وَّ نَخْلًا ﴿٢٩﴾

29. और ज़ैतून और खजूर।

وَّ حَدَآئِقَ غُلْبًا ﴿٣٠﴾

30. और घने घने बाग़ात।

وَّ فَاكِهَةً وَّ اَبًّا ﴿٣١﴾

31. और (तरह़ तरह़ के) फल मेवे और (जानवरों का) चारा।

مَّتَاعًا لَّكُمْ وَ لِاَنْعَامِكُمْ ﴿٣٢﴾

32. ख़ुद तुम्हारे और तुम्हारे मवेशियों के लिए मताए (ज़ीस्त)।

فَإِذَا جَآءَتِ الصَّآخَّةُ ﴿٣٣﴾	33. फिर जब कान फाड़ देनेवाली आवाज़ आएगी।
يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ ﴿٣٤﴾	34. उस दिन आदमी अपने भाई से भागेगा।
وَأُمِّهِ وَأَبِيهِ ﴿٣٥﴾	35. और अपनी मां से और अपने बाप से (भी)।
وَصَاحِبَتِهِ وَبَنِيهِ ﴿٣٦﴾	36. और अपनी बीवी और अपनी औलाद से (भी)।
لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُغْنِيهِ ﴿٣٧﴾	37. उस दिन हर शख़्स को ऐसी (परेशान कुन) हा़लत लाहि़क़ होगी जो उसे (हर दूसरे से) बे-परवाह कर देगी।
وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ﴿٣٨﴾	38. उसी दिन बहुत से चेहरे (ऐसे भी होंगे जो नूर से) चमक रहे होंगे।
ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ﴿٣٩﴾	39. (वोह) मुस्कुराते हंसते (और) खु़शियां मनाते होंगे।
وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ﴿٤٠﴾	40. और बहुतसे चेहरे ऐसे होंगे जिन पर उस दिन गर्द पड़ी होगी।
تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ﴿٤١﴾	41. (मज़ीद) उन (चेहरों) पर सियाही छाई होगी।
أُولَٰئِكَ هُمُ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ ﴿٤٢﴾	42. येही लोग काफ़िर(और) फ़ाजिर (बद किर्दार) होंगे।

आयातुहा 29 | 81 सूरतुत तकवीर मक्किय्यतुन 7 | रुकूउहा 1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमाने वाला है।

إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ﴿١﴾	1. जब सूरज लपेट कर बे नूर कर दिया जाएगा।
وَإِذَا النُّجُومُ انكَدَرَتْ ﴿٢﴾	2. और जब सितारे (अपनी कहकशाओं से) गिर पड़ेंगे।
وَإِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ ﴿٣﴾	3. और जह पहाड़ (गुबार बना कर फ़िज़ा में) चला दिए जाएंगे।
وَإِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ﴿٤﴾	4. और जब हा़मिला ऊंटनियां बेकार छूटी फिरेंगी (कोई उनका खब़र गीर न होगा)।

وَإِذَا الْوُحُوشُ حُشِرَتْ ۝٥

5. और जब वेह़शी जानवर (ख़ौफ़ के मारे) जमा' कर दिए जाएंगे।

وَإِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ۝٦

6. जब समन्दर और दरिया (सब) उभार दिए जाएंगे।

وَإِذَا النُّفُوسُ زُوِّجَتْ ۝٧

7. और जब रूहें (बदनों) से मिला दी जाएंगी।

وَإِذَا الْمَوْءُودَةُ سُئِلَتْ ۝٨

8. और जब ज़िन्दा दफ़्न की हुई लड़की से पूछा जाएगा।

بِأَيِّ ذَنْبٍ قُتِلَتْ ۝٩

9. कि वोह किस गुनाह के बाइस क़त्ल की गई थी।

وَإِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ ۝١٠

10. और जब आ'माल नामे खोल दिए जाएंगे।

وَإِذَا السَّمَاءُ كُشِطَتْ ۝١١

11. और जब समावी तब्क़ात को फाड़ कर अपनी जगहों से हटा दिया जाएगा।

وَإِذَا الْجَحِيمُ سُعِّرَتْ ۝١٢

12. और जब दोज़ख़ (की आग) भड़काई जाएगी।

وَإِذَا الْجَنَّةُ أُزْلِفَتْ ۝١٣

13. और जब जन्नत क़रीब कर दी जाएगी।

عَلِمَتْ نَفْسٌ مَا أَحْضَرَتْ ۝١٤

14. हर शख़्स जान लेगा जो कुछ उसने ह़ाज़िर किया।

فَلَا أُقْسِمُ بِالْخُنَّسِ ۝١٥

15. तो मैं क़सम खाता हूं उन (आस्मानी कुर्रों) की जो (ज़ाहिर होने के बाद) पीछे हट जाते हैं।

الْجَوَارِ الْكُنَّسِ ۝١٦

16. जो बिला रोक टोक चलते रेहते हैं, (फिर ज़ाहिर हो कर) छुप जाते हैं।

وَاللَّيْلِ إِذَا عَسْعَسَ ۝١٧

17. और रात की क़सम जब उसकी तारीकी जाने लगे।

وَالصُّبْحِ إِذَا تَنَفَّسَ ۝١٨

18. और सुब्ह़ की क़सम जब उसकी रौशनी आने लगे।

إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ۝١٩

19. बेशक येह (क़ुरआन) बड़ी इ़ज़्ज़तो बुज़ुर्गीवाले रसूल का (पढ़ा हुआ) कलाम है।

ذِي قُوَّةٍ عِنْدَ ذِي الْعَرْشِ مَكِينٍ ۝٢٠

20. जो (दा'वते ह़क़, तब्लीग़े रिसालत और रूह़ानी इस्ते'दाद में) क़ुव्वतो-हिम्मतवाले हैं (और) मालिके अ़र्श के ह़ज़ूर बड़ी क़द्रो मंज़िलत (और जाहो अ़ज़मत) वाले हैं।

مُّطَاعٍ ثَمَّ اَمِيْنٍ ۝٢١

21. (तमाम जानों के लिए) वाजिबुल इताअ़त हैं (क्यों कि उनकी इताअ़त ही अल्लाह की इताअ़त है,) अमानत दार हैं (वह़ी और ज़मीनो आस्मान के सब उलूही राज़ों के ह़ामिल हैं)।

وَمَا صَاحِبُكُمْ بِمَجْنُوْنٍ ۝٢٢

22. और (ऐ लोगो!) येह तुम्हें अपनी सोह़बत से नवाज़नेवाले (मुह़म्मद ﷺ) दीवाने नहीं हैं (जो फ़रमाते हैं वोह ह़क़ होता है)।

وَلَقَدْ رَاٰهُ بِالْاُفُقِ الْمُبِيْنِ ۝٢٣

23. और बेशक उन्होंने उस (मालिके अ़र्श के हुस्ने मुतलक़) को (ला मकां के) रौशन किनारों पर देखा है। ★

وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِيْنٍ ۝٢٤

24. और वोह (या'नी नबिय्ये अकरम ﷺ) ग़ैब (के बताने) पर बिलकुल बख़ील नहीं है (मालिके अ़र्श ने उन के लिए कोई कमी नहीं छोड़ी है)।

وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطٰنٍ رَّجِيْمٍ ۝٢٥

25. और वोह (क़ुरआन) हरगिज़ किसी शैतान मरदूद का कलाम नहीं है।

فَاَيْنَ تَذْهَبُوْنَ ۝٢٦

26. फिर (ऐ बद बख़्तो!) तुम (इतने बड़े ख़ज़ाने को छोड़ कर) किधर चले जा रहे हो।

اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝٢٧

27.येह (क़ुरआन) तो तमाम जहानों के लिए (सह़ीफ़ए) नसीह़त है।

لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ اَنْ يَّسْتَقِيْمَ ۝٢٨

28. तुम में से हर उस शख़्स के लिए (उस चश्मे से हिदायत मुयस्सर आ सक्ती है) जो सीधी राह चलना है।

وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٢٩

29. और तुम वोही कुछ चाह सक्ते हो जो अल्लाह चाहे जो तमाम जहानों का रब है।

★ येह तरजुमा ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास, अनस बिन मालिक, अकरमा, अबू सल्मा, ज़ह़्ह़ाक, अबुल आ'लिया, ह़सन, का'बुल अह़बार, शरीक बिन अ़ब्दुल्लाह और शा'बी वग़ैरहुम के अक़्वाल पर किया गया है जिन्हें बुख़ारी, मुस्लिम, तिरमिज़ी, इब्ने जरीर, बग़वी और कई अइम्मए ह़दीसने रिवायत किया है और कसीर अइम्मए तफ़्सीरने भी इसे इख़्तियार किया है।

आयातुहा 19 | 82 सूरतुल इन्फितारि मक्किय्यतुन 82 | रुकूउहा 1

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान हमेशा रहम फ़रमाने वाला है।

اِذَا السَّمَآءُ انۡفَطَرَتۡ ۙ﴿۱﴾

1. जब (सब) आस्मानी कुर्रे फट जाएंगे।

وَ اِذَا الۡکَوَاکِبُ انۡتَثَرَتۡ ۙ﴿۲﴾

2. और जब सय्यारे गिर कर बिखर जाएंगे।

وَ اِذَا الۡبِحَارُ فُجِّرَتۡ ۙ﴿۳﴾

3. और जब समंदर (और दरया) उभर कर बेह जाएंगे।

وَ اِذَا الۡقُبُوۡرُ بُعۡثِرَتۡ ۙ﴿۴﴾

4. और जब कब्रें झेरो झबर करदी जाएंगी।

عَلِمَتۡ نَفۡسٌ مَّا قَدَّمَتۡ وَ اَخَّرَتۡ ؕ﴿۵﴾

5. तो हर शख्स जान लेगा के (कया) अमल उस-ने आगे भेजा और कया पीछे छोड आया था।

یٰۤاَیُّہَا الۡاِنۡسَانُ مَا غَرَّکَ بِرَبِّکَ الۡکَرِیۡمِ ۙ﴿۶﴾

6. अय इन्सान! तुझे किस चीज़ ने अपने कब्बे करीम के बारे में धोके में डाल दिया।

الَّذِیۡ خَلَقَکَ فَسَوّٰىکَ فَعَدَلَکَ ۙ﴿۷﴾

7. जिस-ने (रहमे मादर में के अंदर एक नुत्फे में से) तुझे पैदा किया, फिर उसने तुझे (आ'ज़ा साज़ी के लिए इब्तेदाअन) दुरुस्त और सीधा किया, फिर वोह तेरी साख्त में मुनासिब तब्दीली लाया।

فِیۡۤ اَیِّ صُوۡرَۃٍ مَّا شَآءَ رَکَّبَکَ ؕ﴿۸﴾

8. जिस सूरत में भी चाहा उसने तुझे तरकीब देदिया।

کَلَّا بَلۡ تُکَذِّبُوۡنَ بِالدِّیۡنِ ۙ﴿۹﴾

9. हकीकत तो येह है (और) तुम उस-के बर अक्स रोझे जझा को झुटलाते हो।

وَ اِنَّ عَلَیۡکُمۡ لَحٰفِظِیۡنَ ۙ﴿۱۰﴾

10. हा़ल ंके तुम पर निगेह्बान फरिश्ते मुकर्रर हैं।

کِرَامًا کَاتِبِیۡنَ ۙ﴿۱۱﴾

11. (जो) बहुत मुअझ्झज़ हैं (तुम्हारे आ'मास नामे) लिखनेवाले हैं।

یَعۡلَمُوۡنَ مَا تَفۡعَلُوۡنَ ﴿۱۲﴾

12. वोह उन (तमाम कामों) को जान्ते हैं जो तुम करते हो।

اِنَّ الۡاَبۡرَارَ لَفِیۡ نَعِیۡمٍ ﴿ۚ۱۳﴾

13. बेशक नेको कार जन्नते ने'मत में होंगे।

وَ اِنَّ الۡفُجَّارَ لَفِیۡ جَحِیۡمٍ ﴿ۚۖ۱۴﴾

14. और बेशक बदकार दोझखे (सोझां) में होंगे।

يَّصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿۱۵﴾

15. वोह उस-में क़ियामतके रोज़ दाखिल होंगे।

وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَآئِبِيْنَ ﴿۱۶﴾

16. और वोह उस (दोझख) से (कभी भी) गाइब न हो सकेंगे।

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ ﴿۱۷﴾

17. और आपने कया समझा को रोझे जझा कया है ?

ثُمَّ مَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ ﴿۱۸﴾

18. फिर आपने किया जाना के रोझे जझा कया है ?

يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ شَيْئًا ۗ وَالْاَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِّلّٰهِ ﴿۱۹﴾

19. (येह) वोह दिन है जब कोई शख्स किसी के लिएकिसी चीज़ का मालिक न होगा,और हुक्म फ़रमाई उस दिन अल्लाह ही की होगी।

आयातुहा 36 | 83 सूरतुल मुतफ़्फ़िफ़ी-न मक्कियतुन 86 | रुकूउहा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत हरबान हमेशा रहम फ़रमाने वाला है।

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِيْنَ ﴿۱﴾

1. बरबादी है नाप तोल में कमी करनेवालों के लिए।

الَّذِيْنَ اِذَا اكْتَالُوْا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُوْنَ ﴿۲﴾

2. येह लोग जब (दूसरे) लोगों से नाप लेते हैं तो (उनसे) पूरा लेते हैं।

وَاِذَا كَالُوْهُمْ اَوْ وَّزَنُوْهُمْ يُخْسِرُوْنَ ﴿۳﴾

3. और जब उन्हें (खुद) नाप कर या तोल कर देते हैं तो घटा कर देते हैं।

اَلَا يَظُنُّ اُولٰٓئِكَ اَنَّهُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ ﴿۴﴾

4. क्या येह लोग इस बात का यक़ीन नहीं रखते कि वोह (मरने के बा'द दोबारा) उठाए जाएंगे?

لِيَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿۵﴾

5. एक बड़े सख़्त दिन के लिए।

يَّوْمَ يَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۶﴾

6. जिस दिन सब लोग तमाम जहानों के रब के हुज़ूर खड़े होंगे।

كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ الْفُجَّارِ لَفِيْ سِجِّيْنٍ ﴿۷﴾

7. येह हक़ है कि बदकारों का नामए आ'माल सिज्जीन (या'नी दीवान ख़ानए जहन्नम) में है।

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا سِجِّيْنٌ ﴿٨﴾

8. और आपने क्या जाना कि सिज्जीन कया है?

كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ﴿٩﴾

9. (येह क़ैद ख़ानए दोज़ख़ में उस बड़े दीवान के अंदर) लिखी हुई (एक) किताब है (जिसमें जहन्नमी का नाम और उसके आ'माल दर्ज हैं)।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١٠﴾

10. उस दिन झुटलाने वालों के लिए तबाही होगी।

الَّذِيْنَ يُكَذِّبُوْنَ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ﴿١١﴾

11. जो लोग रोज़े जज़ा को झुटलाते हैं।

وَمَا يُكَذِّبُ بِهٖٓ اِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ﴿١٢﴾

12. और उसे कोई नहीं झुटलाता सिवाए हर उस शख़्स के जो सरकशो गुनहगार है।

اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٣﴾

13. जब उस पर हमारी आयतें पढ़ कर सुनाई जाती हैं तो केहता (या समझता) है कि (येह तो) अगले लोगों की कहानियां हैं।

كَلَّا بَلْ ۜ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٤﴾

14. (ऐसा) हरगिज़ नहीं बल्कि (हक़ीक़त येह है कि) उनके दिलों पर इन आ'माले (बद) का जंग चढ़ गया है जो वोह कमाया करते थे, (इस लिए आयतें उनके दिल पर असर नहीं करतीं)।

كَلَّآ اِنَّهُمْ عَنْ رَّبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوْبُوْنَ ﴿١٥﴾

15. हक़ येह है कि बेशक उस दिन उन्हें अपने रब के दीदार से (मह्रूम करने के लिए) पसे परदा कर दिया जाएगा।

ثُمَّ اِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيْمِ ﴿١٦﴾

16. फिर वोह दोज़ख़ में झोंक दिए जाएंगे।

ثُمَّ يُقَالُ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿١٧﴾

17. फिर उनसे कहा जाएगा : येह वोह (अ़ज़ाबे जहन्नम) है जिसे तुम झुटलाया करते थे।

كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ الْاَبْرَارِ لَفِيْ عِلِّيِّيْنَ ﴿١٨﴾

18. येह (भी) हक़ है कि बेशक नेकूकारों का नविश्तए आ'माल इ़ल्लिय्यीन (या'नी दीवान ख़ानए जन्नतमें है)।

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا عِلِّيُّوْنَ ﴿١٩﴾

19. और आपने क्या जाना कि इ़ल्लिय्यीन कया है?

كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ﴿٢٠﴾

20. (येह जन्नत के आ'ला दर्जे में उस बड़े दीवान के अंदर) लिखी हुई (एक) किताब है (जिसमें उन जन्नतियों के नाम और आ'माल दर्ज हैं, जिन्हें आ'ला मुक़ामात दिए जाएंगे)।

يَّشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿٢١﴾

21. उस जगह (अल्लाह) के मुक़र्रब फ़रिश्त हाज़िर होते हैं।

اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ ﴿٢٢﴾

22. बेशक नेकूकार (राह़तो मसर्रत से) ने'मतोंवाली जन्नत में होगें।

عَلَى الْاَرَآئِكِ يَنْظُرُوْنَ ﴿٢٣﴾

23. तख़्तों पर बैठे नज़्ज़ारे कर रहे होंगे।

تَعْرِفُ فِيْ وُجُوْهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيْمِ ﴿٢٤﴾

24. आप उनके चेहरों से ही ने'मतो राह़त की रौनक़ और शगुफ़्तगी मा'लूम कर लेंगे।

يُسْقَوْنَ مِنْ رَّحِيْقٍ مَّخْتُوْمٍ ﴿٢٥﴾

25. उन्हें सर ब-मोहर बड़ी लज़ीज़ शराबे तहूर पिलाई जाएगी।

خِتٰمُهٗ مِسْكٌ ۚ وَفِيْ ذٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُوْنَ ﴿٢٦﴾

26. उसकी मोहर कस्तूरी की होगी,और (येही वोह शराब है) जिसके ह़ुसूल में शाइक़ीन को जल्द कोशिश करके सब्क़त लेनी चाहिए, (कोई शराबे ने'मत का तालिबो शाइक़ है, कोई शराबे क़ुर्बत का और कोई शराबे दीदार का, हर किसी को उसके शौक़ के मुताबिक़ पिलाई जाएगी)।

وَمِزَاجُهٗ مِنْ تَسْنِيْمٍ ﴿٢٧﴾

27. और उस (शराब) में आबे तस्नीम की आमेज़िश होगी।

عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿٢٨﴾

28.(येह तस्नीम) एक चश्मा है जहां से सिर्फ़ अहले क़ुर्बत पीते हैं।

اِنَّ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا كَانُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَضْحَكُوْنَ ﴿٢٩﴾

29. बेशक मुजरिम लोग ईमानवालों का (दुनिया में) मज़ाक़ उड़ाया करते थे।

وَاِذَا مَرُّوْا بِهِمْ يَتَغَامَزُوْنَ ﴿٣٠﴾

30. और जब उनके पास से गुज़रते तो आपस में आंखों से इशारा बाज़ी करते थे।

وَاِذَا انْقَلَبُوْٓا اِلٰٓى اَهْلِهِمُ

31. और जब अपने घरवालों की तरफ़ लौटते तो

انْقَلَبُوا فَكِهِينَ ﴿٣١﴾

(मोमिनों की तगंदस्ती और अपनी खुशह़ाली का मुवाज़ना कर के) इतराते और दिल लगी करते हुए पलटते थे।

وَإِذَا رَأَوْهُمْ قَالُوا إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَضَالُّونَ ﴿٣٢﴾

32. और जब येह (मग़रूर लोग) उन (कमज़ोर ह़ाल मोमिनों) को देखते तो केहते : यक़ीनन येह लोग राह से भटक गए हैं (या'नी येह दुनिया गंवां बैठे हैं और आख़िरत तो है ही फ़क़त अफ़्साना)।

وَمَا أُرْسِلُوا عَلَيْهِمْ حَفِظِينَ ﴿٣٣﴾

33. ह़ालांकि वोह (उनके ह़ाल) पर निगेह्बान बना कर नहीं भेजे गए थे।

فَالْيَوْمَ الَّذِينَ آمَنُوا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُونَ ﴿٣٤﴾

34. पस आज (देखो) अह्ले ईमान काफ़िरों पर हंस रहे हैं।

عَلَى الْأَرَائِكِ يَنْظُرُونَ ﴿٣٥﴾

35. सजे हुए तख़्तों पर बैठे (अपनी खुश ह़ाली और काफ़िरों की बदह़ाली) का नज़्ज़ारा कर रहे हैं।

هَلْ ثُوِّبَ الْكُفَّارُ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٣٦﴾

36. सो क्या काफ़िरों को उस (मज़ाक़) का बदला दे दिया गया जो वोह (मुसलमानों से) किया करते थे ?

आयातुहा 25 | 84 सूरतुल इन्शिक़ाक़ि मक्किय्यतुन 83 | रुकूउ़हा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमाने वाला है।

إِذَا السَّمَاءُ انْشَقَّتْ ﴿١﴾

1. जब (सब) आस्मानी कुर्रे फट जाएंगे।

وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ﴿٢﴾

2. और अपने रब का हुक्मे (इन्शिक़ाक़) बजा लाएगें, और (येही ता'मीले अम्र) उसके लाइक़ है।

وَإِذَا الْأَرْضُ مُدَّتْ ﴿٣﴾

3. और जब ज़मीन (रेज़ा रेज़ा कर के) फैला दी जाएगी।

وَأَلْقَتْ مَا فِيهَا وَتَخَلَّتْ ﴿٤﴾

4. और जो कुछ उसके अंदर है उसे निकाल बाहर फैंकेगी और ख़ाली हो जाएगी।

وَ اَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَ حُقَّتْ ۝٥

5. और (वोह भी) अपने रब का हुक्मे (इन्शिक़ाक़) बजा लाएगी, और (येही इताअ़त) उसके लाइक़ है।

يٰۤاَيُّهَا الْاِنْسَانُ اِنَّكَ كَادِحٌ اِلٰى رَبِّكَ كَدْحًا فَمُلٰقِيْهِ ۝٦

6. ऐ इन्सान ! तू अपने रब तक पहुंचने में सख़्त मशक़्क़तें बर्दाश्त करता है बिल आख़िर तुझे उसी से जा मिलना है।

فَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ ۝٧

7. पस जिस शख़्स का नामए आ'माल उसके दाहिने हाथ में दिया जाएगा।

فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَّسِيْرًا ۝٨

8.तो अ़नक़रीब उससे आसान सा हिसाब लिया जाएगा।

وَّ يَنْقَلِبُ اِلٰۤى اَهْلِهٖ مَسْرُوْرًا ۝٩

9. और वोह अपने अेहले ख़ाना की तरफ़ मसरूरो शादां पलटेगा।

وَ اَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ وَرَآءَ ظَهْرِهٖ ۝١٠

10. और अलबत्ता वोह शख़्स जिसका नामए आ'माल पीठ के पीछे से दिया जाएगा।

فَسَوْفَ يَدْعُوْا ثُبُوْرًا ۝١١

11. तो वोह अ़नक़रीब मौत को पुकारेगा।

وَّ يَصْلٰى سَعِيْرًا ۝١٢

12. और वोह दोज़ख़ की भड़कती हुई आग में दाख़िल होगा।

اِنَّهٗ كَانَ فِيْۤ اَهْلِهٖ مَسْرُوْرًا ۝١٣

13. बेशक वोह (दुनिया में) अह्ले ख़ाना में खुशो ख़ुर्रम रेहता था।

اِنَّهٗ ظَنَّ اَنْ لَّنْ يَّحُوْرَ ۝١٤

14. बेशक उसने येह गुमान कर लिया था कि वोह हिसाब के लिए (अल्लाह के पास) हरगिज़ लौट कर न जाएगा।

بَلٰۤى ۚ اِنَّ رَبَّهٗ كَانَ بِهٖ بَصِيْرًا ۝١٥

15. क्यों नहीं ! बेशक उसका रब उसको खूब देखने वाला है।

معانقة

فَلَاۤ اُقْسِمُ بِالشَّفَقِ ۝١٦

16. सो मुझे क़सम है शफ़क़ (या'नी शाम की सुर्ख़ी या उसके बाद के उजाले)की।

وَ الَّيْلِ وَ مَا وَسَقَ ۝١٧

17. और रातकी और उन चीज़ों की जिन्हें वोह (अपने दामन में) समेट लेती है।

وَ الْقَمَرِ اِذَا اتَّسَقَ ۝١٨

18. और चांद की जब वोह पूरा दिखाई देता है।

لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَنْ طَبَقٍ ۝١٩

19. तुम यक़ीनन तबक़ दर तबक़ ज़रूर सवारी करते हुए जाओगे।

فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝٢٠

20. तो उन्हें क्या हो गया है कि (क़ुरआनी पेशीन गोई की सदाक़त देख कर भी) ईमान नहीं लाते?

وَإِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْآنُ لَا يَسْجُدُونَ ۝٢١ السجدة

21. और जब उन पर क़ुरआन पढ़ा जाता है तो (अल्लाह के हुज़ूर) सजदह रेज़ नहीं होते।

السجدة ١٣

بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا يُكَذِّبُونَ ۝٢٢

22. बल्के काफ़िर लोग (उसे मज़ीद) झुटला रहे हैं।

وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُوعُونَ ۝٢٣

23. और अल्लाह (कुफ़्रो अ़दावत के उस सामान को) खूब जानता है जो वोह जमा' कर रहे हैं।

فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۝٢٤

24. सो आप उन्हें दर्दनाक अज़ाब की बिशारत दे दें।

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ۝٢٥ ع

25. मगर जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल करते हैं उनके लिए गैर मुन्क़ता' (दाइमी) सवाब है।

ع ١ ٢٥ ٩

आयातुहा 22 | 85 सूरतुल बुरूजि मक्किय्यतुन 27 | रुकूउ़हा 1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الْبُرُوجِ ۝١

1. बुर्जों (या'नी कह्कशाओं)वाले आस्मान की क़सम।

وَالْيَوْمِ الْمَوْعُودِ ۝٢

2. और उस दिन की क़सम जिसका वा'दा किया गया है।

وَشَاهِدٍ وَمَشْهُودٍ ۝٣

3. जो (उस दिन) हाज़िर होगा उसकी क़सम, और जो कुछ हाज़िर किया जाएगा उस की क़सम।

قُتِلَ أَصْحَابُ الْأُخْدُودِ ۝٤

4. खंदक़ोंवाले (लोग) हलाक कर दिए गए।

النَّارِ ذَاتِ الْوَقُودِ ۝٥

5. (या'नी) उस भड़कती आग (वाले) जो बड़े ईंधन से (जलाई गई) थी।

إِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُودٌ ۝٦

6. जब वोह उसके किनारों पर बैठे थे।

وَهُمْ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ بِالْمُؤْمِنِينَ

7. और वोह खुद गवाह है जो कुछ वोह अहले ईमान के

شُهُوْدٌ ۝٧

साथ कर रहे थे, (या'नी उन्हें आग में फेंक फेंक कर जला रहे थे)

وَمَا نَقَمُوْا مِنْهُمْ اِلَّاۤ اَنْ یُّؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ الْعَزِیْزِ الْحَمِیْدِ ۝٨

8. और उन्हें उन (मोमिनों) की तरफ़ से और कुछ (भी) ना गवार न था सिवाए इसके कि वोह अल्लाह पर ईमान ले आए थे, जो ग़ालिब (और) लाइक़े हम्दो सना है।

الَّذِیْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَ اللّٰهُ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ شَهِیْدٌ ۝٩

9. जिसके लिए आस्मानों और ज़मीन की (सारी) बादशाहत है और अल्लाह हर चीज़ पर गवाह है।

اِنَّ الَّذِیْنَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِیْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ لَمْ یَتُوْبُوْا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَ لَهُمْ عَذَابُ الْحَرِیْقِ ۝١٠

10. बेशक जिन लोगों ने मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतों को अज़िय्यत दी फिर तौबा (भी) न की तो उनके लिए अ़ज़ाबे जहन्नम है, और उनके लिए (बिल ख़ुसूस) आग में जलने का अ़ज़ाब है।

اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ۬ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِیْرُ ۝١١

آیة حصیبة ١٢

11. बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे उनके लिए जन्नतें हैं, जिनके नीचे से नेहरें जारी हैं, येही बड़ी कामयाबी है।

اِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِیْدٌ ۝١٢

12. बेशक आपके रब की पकड़ बहुत सख़्त है।

اِنَّهٗ هُوَ یُبْدِئُ وَ یُعِیْدُ ۝١٣

13. बेशक वोही पहली बार पैदा फ़रमाता है, और वोही दोबारा पैदा फ़रमाएगा।

وَ هُوَ الْغَفُوْرُ الْوَدُوْدُ ۝١٤

14. और बड़ा बख़्शनेवाला बहुत मुहब्बत फ़रमाने वाला है।

ذُو الْعَرْشِ الْمَجِیْدُ ۝١٥

15. मालिके अ़र्श (या'नी पूरी काइनात के तख़्ते इक़्तिदार का मालिक) बड़ी शान वाला है।

فَعَّالٌ لِّمَا یُرِیْدُ ۝١٦

16. वोह जो भी इरादा फ़रमाता है (उसे) ख़ूब कर देनेवाला है।

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْجُنُوْدِ ۟ۙ ﴿١٧﴾

17. कया आपके पास लश्करों की ख़बर पहोंची है ?

فِرْعَوْنَ وَثَمُوْدَ ۟ؕ ﴿١٨﴾

18. फ़िरऔन और समूद (के लश्करों) की।

بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ تَكْذِيْبٍ ۟ۙ ﴿١٩﴾

19. बल्कि ऐसे काफ़िर (हमेशा ह़क़ को) झुटलाने में (ही कोशां रेहते) हैं।

وَّاللّٰهُ مِنْ وَّرَآئِهِمْ مُّحِيْطٌ ۟ۚ ﴿٢٠﴾

20. और अल्लाह उनके गिर्दो पेश से (उन्हें) घेरे हुए है।

بَلْ هُوَ قُرْاٰنٌ مَّجِيْدٌ ۟ۙ ﴿٢١﴾

21. बल्कि येह बड़ी अ़ज़मतवाला क़ुरआन है।

فِيْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ ۟ ﴿٢٢﴾ ع

22. (जो) लौहे़ मह़फ़ूज़ में (लिखा हुआ) है।

आयातुहा 17	86 सूरतुत तारिकि मक्किय्यतुन 36	रुकूउ़हा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

وَالسَّمَآءِ وَالطَّارِقِ ۟ۙ ﴿١﴾

1. आस्मान (की फ़िज़ाए बसीत और ख़लाए अज़ीम) की क़सम और रात को (नज़र) आनेवाले की क़सम।

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الطَّارِقُ ۟ۙ ﴿٢﴾

2. और आपको क्या मा'लूम कि रात को (नज़र) आने वाला क्या है ?

النَّجْمُ الثَّاقِبُ ۟ۙ ﴿٣﴾

3. (इससे मुराद) हर वोह आस्मानी कुर्रा है (ख़्वाह वोह सितारा हो या सय्यारा या अज्रामे समावी का कोई और कुर्रा) जो चमक कर (फिज़ा को) रौशन कर देता है.★

اِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ۟ؕ ﴿٤﴾

4. कोई शख़्स ऐसा नहीं जिस पर एक निगेहबान (मुक़र्रर) नहीं है।

فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ۟ؕ ﴿٥﴾

5. पस इन्सान को ग़ौर (व तह़क़ीक़) करना चाहिए कि वोह किस चीज़ से पैदा किया गया है।

★ (अन्नज्मुस्साक़िब) से मुराद ज़ाते मुहम्मद ﷺ भी है, जिसने सिराजम्मुनीरकी शानके सात आस्माने रिसालत पर चमक कर ज़ुल्मत भरी काइनात को नूरे ईमान से मुनव्वर कर दिया है।)(अश शिफ़ा)

خُلِقَ مِنْ مَّآءٍ دَافِقٍ ﴿٦﴾

6. वोह क़ुव्वत उछलने वालेपानी (या'नी क़वी मु-त-ह़र्रिक माद्दए तौलीद) में से पैदा किया गया है।

يَّخْرُجُ مِنْۢ بَيْنِ الصُّلْبِ وَ التَّرَآئِبِ ﴿٧﴾

7. जो पीठ और कूल्हे की हड्डियों के दरमियान (पेडू के ह़ल्क़े में) से गुज़र कर बाहर निकलता है।

اِنَّهٗ عَلٰى رَجْعِهٖ لَقَادِرٌ ﴿٨﴾

8. बेशक वोह उस (ज़िन्दगी) को फिर वापस लाने पर भी क़ादिर है।

يَوْمَ تُبْلَى السَّرَآئِرُ ﴿٩﴾

9. जिस दिन सब राज़ ज़ाहिर कर दिए जाएंगे।

فَمَا لَهٗ مِنْ قُوَّةٍ وَّ لَا نَاصِرٍ ﴿١٠﴾

10. फिर इन्सान के पास न (ख़ुद) कोई क़ुव्वत होगी न कोई (उसका) मददगार होगा।

وَ السَّمَآءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ﴿١١﴾

11. उस आस्मानी काइनात की क़सम जो फिर इब्तिदाई ह़ालत में पलट जानेरवाली है।

وَ الْاَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ ﴿١٢﴾

12. उस ज़मीन की क़सम जो फट कर (रेज़ा रेज़ा) हो जानेवाली है।

اِنَّهٗ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ﴿١٣﴾

13. बेशक येह फ़ैसला कुन (क़त्ई) फ़रमान है।

وَّ مَا هُوَ بِالْهَزْلِ ﴿١٤﴾

14. और येह हंसी की बात नहीं है।

اِنَّهُمْ يَكِيْدُوْنَ كَيْدًا ﴿١٥﴾

15.बेशक वोह (काफ़िर) पुर फ़रैब तदबीरों में लगे हुए हैं।

وَّ اَكِيْدُ كَيْدًا ﴿١٦﴾

16. और मैं अपनी तदबीर फ़रमा रहा हूं।

فَمَهِّلِ الْكٰفِرِيْنَ اَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ﴿١٧﴾ ع

17. पस आप काफ़िरों को (ज़रा) मोहलत दीजिए, ज़ियादा नहीं बस) उन्हें थोड़ी सी ढील (और) दे दीजिए।

आयातुहा 19 | 87 सूरतुल आ'ला मक्किय्यतुन 8 | रुकूउ़हा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى ﴿١﴾

1. अपने रब के नाम की तस्बीह़ करें जो सबसे बुलंद है।

الَّذِیْ خَلَقَ فَسَوّٰی ﴿۲﴾

2. जिसने (काइनात की हर चीज़ को) पैदा किया फिर उसे (जुम्ला तक़ाज़ों की तक्मील के) साथ दुरुस्त तवाज़ुन दिया।

وَالَّذِیْ قَدَّرَ فَهَدٰی ﴿۳﴾

3. और जिसने (हर हर चीज़ के लिए) क़ानून मुक़र्रर किया फिर (उसे अपने अपने निज़ाम के मुताबिक़ रेहने और चलने का) रास्ता बताया।

وَالَّذِیْۤ اَخْرَجَ الْمَرْعٰی ﴿۴﴾

4. और जिसने (ज़मीन से) चारा निकाला।

فَجَعَلَهٗ غُثَآءً اَحْوٰی ﴿۵﴾

5. फिर उसे सियाही माइल खुश्क कर दिया।

سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسٰۤی ﴿۶﴾

6. (ऐ हबीबे मुकर्रम !) हम आपको खुद (ऐसा) पढ़ाएंगे कि आप (कभी) नहीं भूलेंगे।

اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ یَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا یَخْفٰی ﴿۷﴾

7. मगर जो अल्लाह चाहे, बेशक वोह जहर और ख़फ़ी (या'नी ज़ाहिरो पोशीदा और बुलन्दो आहिस्ता) सब बातों को जानता है।

وَنُیَسِّرُكَ لِلْیُسْرٰی ﴿۸﴾

8. और हम आप को उस आसान (शरीअ़त पर अ़मल पैरा होने) के लिए (भी) सहूलत फ़राहम फ़रमाएंगे।

فَذَكِّرْ اِنْ نَّفَعَتِ الذِّكْرٰی ﴿۹﴾

9. पस नसीहत फ़रमाते रहिय्ये, ब-शर्ते कि नसीहत (सुननेवालों को) फाइदा दे।

سَیَذَّكَّرُ مَنْ یَّخْشٰی ﴿۱۰﴾

10. अलबत्ता वोही (नसीहत) क़ुबूल करेगा जो अल्लाह से डरता होगा।

وَیَتَجَنَّبُهَا الْاَشْقَی ﴿۱۱﴾

11. और बद बख़्त उस नसीहत से पहलू तही करेगा।

الَّذِیْ یَصْلَی النَّارَ الْكُبْرٰی ﴿۱۲﴾

12. जो (क़ियामत के दिन) सबसे बड़ी आग में दाख़िल होगा।

ثُمَّ لَا یَمُوْتُ فِیْهَا وَلَا یَحْیٰی ﴿۱۳﴾

13. फिर वोह उसमें न मरेगा और न जिएगा।

قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰی ﴿۱۴﴾

14. बेशक वोही बा मुराद हुआ जो (नफ़्स की आफ़तों और गुनाह की आलूदगियों से) पाक हो गया।

وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰی ﴿۱۵﴾

15. और वोह अपने रब के नाम का ज़िक्र करता रहा, और (कसरतो पाबंदी से) नमाज़ पढता रहा।

بَلْ تُؤْثِرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿١٦﴾

16. बल्कि तुम (अल्लाह की तरफ़ रुजूअ़ करने की बजाए) दुनियावी ज़िन्दगी (की लिज़्ज़तों) को इख़्तियार करते हो।

وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ وَّ اَبْقٰى ﴿١٧﴾

17. हालांकि आख़िरत की (लिज़्ज़तो राहत) बेहतर और हमेशा बाक़ी रेहने वाली है।

اِنَّ هٰذَا لَفِي الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ﴿١٨﴾

18. बेशक येह (ता'लीम) अगले सहीफ़ों में भी (मज़्कूर) है।

صُحُفِ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى ﴿١٩﴾

19. (जो) इब्राहीम और मूसा (عليهما السلام) के सहाइफ़ हैं।

ع ١٩ ١٢

आयातुहा 26 | 88 सूरतुल ग़ाशि-यति मक्किय्यतुन 68 | रुकूउहा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ ﴿١﴾

1. कया आपको (हर चीज़ पर) छा जाने वाली क़ियामत की ख़बर पहुंची है।

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ ﴿٢﴾

2. उस दिन कितने ही चेहरे ज़लीलो ख़्वार होंगे।

عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ ﴿٣﴾

3. (अल्लाह को भूल कर दुनियावी) मेहनत करनेवाले (चंद रोजह ऐशो आराम की ख़ातिर सख़्त) मशक़्क़तें झेलने वाले।

تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً ﴿٤﴾

4. दहक्ती हुई आग में जा गिरेंगे।

تُسْقٰى مِنْ عَيْنٍ اٰنِيَةٍ ﴿٥﴾

5. (उन्हें) खौलते हुवे चश्मे से (पानी) पिलाया जाएगा।

لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ ﴿٦﴾

6. उनके लिए ख़ारदार खुश्क ज़ेहरीली झाड़ियों के सिवा कुछ खाना न होगा।

لَّا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِيْ مِنْ جُوْعٍ ﴿٧﴾

7. (येह खाना) न फ़रबा करेगा न भूक ही दूर करेगा।

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ ﴿٨﴾

8. (इसके बर अ़क्स) उस दिन बहुत से चेहरे (ह़सीन) बा रौनक़ और तरो ताज़ह होंगे।

لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ﴿٩﴾

9. अपनी (नेक) काविशों के बाइस खुशो खुर्रम होंगे.

فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ﴿١٠﴾

10. आ़लीशान जन्नत में (क़ियाम पज़ीर) होंगे।

لَّا تَسْمَعُ فِيهَا لَاغِيَةً ۝١١

11. उसमें कोई लग़्व बात न सुनेंगे (जैसे अहले बातिल उनसे दुनिया में किया करते थे।)

فِيهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ۝١٢

12. उसमें बेह्ते हुवे चश्में होंगे।

فِيهَا سُرُرٌ مَّرْفُوعَةٌ ۝١٣

13. उसमें ऊंचे (बिछे हुए) तख़्त होंगे।

وَأَكْوَابٌ مَّوْضُوعَةٌ ۝١٤

14. और जाम (बड़े करीने से) रख्खे हुए होंगे।

وَنَمَارِقُ مَصْفُوفَةٌ ۝١٥

15. और ग़ालीचे गाव तकिये क़तार दर क़तार लगे होंगे।

وَزَرَابِيُّ مَبْثُوثَةٌ ۝١٦

16. और नर्मो नफ़ीस क़ालीन मस्नदें बिछी होंगी।

أَفَلَا يَنظُرُونَ إِلَى الْإِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ۝١٧

17. (मुन्किरीन तअ़ज्जुब करते हैं कि जन्नत में येह सब कुछ कैसे बन जाएगा तो) क्या येह लोग ऊंट की तरफ़ नहीं देखते के वोह किस तरह (अ़जीब साख़्त पर) बनाया गया है ?

وَإِلَى السَّمَاءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ۝١٨

18. और आस्मान की तरफ़ (निगाह नहीं करते) कि वोह कैसे (अ़ज़ीम वुस्अ़तों के साथ) उठाया गया है?

وَإِلَى الْجِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتْ ۝١٩

19. और पहाड़ों को (नहीं देखते) कि वोह किस तरह ज़मीन से उभार कर खड़े किए गए हैं?

وَإِلَى الْأَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ ۝٢٠

20. और ज़मीन को नहीं देखते कि वेह किस तरह् (गोलाई के बा वजूद) बिछाई गई है ?

فَذَكِّرْ إِنَّمَا أَنتَ مُذَكِّرٌ ۝٢١

21. पस आप नसीहत फ़रमाते रहिए, आप तो नसीहत ही फ़रमानेवाले हैं।

لَّسْتَ عَلَيْهِم بِمُصَيْطِرٍ ۝٢٢

22. आप उन पर जाबिरो क़ाहिर (के तौर पर) मुसल्लत नहीं हैं।

إِلَّا مَن تَوَلَّىٰ وَكَفَرَ ۝٢٣

23. मगर जो रू गर्दानी करे और कुफ़्र करे।

فَيُعَذِّبُهُ اللَّهُ الْعَذَابَ الْأَكْبَرَ ۝٢٤

24. तो उसे अल्लाह सबसे बड़ा अ़ज़ाब देगा।

إِنَّ إِلَيْنَا إِيَابَهُمْ ۝٢٥

25. (बेशक बिल आख़िर हमारी ही तरफ उनका पलटना है।

ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُم ۝٢٦

26. फिर यक़ीनन हमारे ही ज़िम्मे उन का हिसाब (लेना) है।

وقف لازم

النصف

ع ٢٦ ١٣

आयातुहा 30 | 89 सूरतुल फ़ज्रि मक्कियतुन 10 | रुकूउहा 1

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

وَالۡفَجۡرِ ۙ﴿۱﴾

1. उस सुब्ह़ की क़सम (जिससे ज़ुल्मते शब छट गई।[1]

وَلَيَالٍ عَشۡرٍ ۙ﴿۲﴾

2. और दस (मुबारक) रातों की क़सम।[2]

وَّالشَّفۡعِ وَالۡوَتۡرِ ۙ﴿۳﴾

3. और ज़ुफ़्त की क़सम और ताक़ की क़सम।[3]

وَالَّيۡلِ اِذَا يَسۡرِ ۚ﴿۴﴾

4. और रात की क़सम जब गुज़र चले,(मुराद हर शब है या बतौरे ख़ास शबे मुज़्दलिफ़ा या शबे क़द्र।)

هَلۡ فِىۡ ذٰلِكَ قَسَمٌ لِّذِىۡ حِجۡرٍ ؕ﴿۵﴾

5. बेशक उनमें अ़क्ल मन्द के लिए बड़ी क़सम है।

اَلَمۡ تَرَ كَيۡفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ۙ﴿۶﴾

6. क्या आपने नहीं देखा कि आपके रबने (क़ौमे) आद के साथ कैसा (सुलूक) किया।

اِرَمَ ذَاتِ الۡعِمَادِ ۙ﴿۷﴾

7. (जो अहले) इरम थे (और) बड़े बड़े सुतूनों (की तरह़ दराज़ क़द और ऊंचे मह़ल्लात)वाले थे।

الَّتِىۡ لَمۡ يُخۡلَقۡ مِثۡلُهَا فِى الۡبِلَادِ ۙ﴿۸﴾

8. जिनका मिस्ल (दुनिया के) मुल्कों में (कोई भी) पैदा नहीं किया गया।

---

1. (मुराद हर रोज़ की सुब्ह़ या नमाज़े फ़ज्र है या बतौरे ख़ास माहे ज़िल हिज्जा की पहली सुब्ह़ या यकुम मुहर्रम की सुब्ह़ है या ईदुज़्ज़ुहा की सुब्ह़, इससे मुराद सय्यिदुना मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ की ज़ाते गिरामी भी है जिनकी बे'सत से शबे ज़ुलमत का ख़ातिमा हुआ और सुब्हे ईमानी फूटी)।

2. (मुराद माहे रमज़ान के आख़िरी अ़श्रे की रातें या पहले अ़श्रए मुहर्रम की रातें हैं या अव्वल अ़श्रए ज़िल हिज्जा की रातें हैं जो बरकात व दरजात से मा'मूर हैं)।

.3. ज़ुफ़्त (जोड़ा) से मुराद कुल मख़लूक़ है जो जोड़ों की सूरत में पैदा की गई है, और ताक़ (फ़र्दो तन्हा) से मुराद ख़ालिक है जो वह़दहू ला शरीक है, या शफ़्ए यौमे नह़र (क़ुरबानी) और वत्रे यौमे अ़रफ़ा (ह़ज्ज) है, या शफ़्अ़ से मुराद दुनिया के शबो रोज़ हैं,और वत्र से मुराद यौमे क़ियामत है जिसकी कोई शब न होगी, या शफ़्अ़ से मुराद साल भर की आ़म ज़ुफ़्त रातें मुराद हैं, और वत्र से मुराद साल भर की बरकतवाली रातें हैं, म-स-लन : शबे मे'राज, शबे बराअत और शबे क़द्र वग़ैरह जो पै दर पै रज्जब, शा'बान और रमज़ान में आती हैं, या शफ़्अ़ से मुराद ह़ज़रते आदम عليه السلام और ह़ज़रते ह़व्वा عليها السلام का पहला जोड़ा है, और वत्रसे मुराद तन्हा ह़ज़रते आदम عليه السلام जिनसे तख़्लीक़े इन्सानिय्यत की इब्तेदा हुई)।

وَثَمُوْدَ الَّذِيْنَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ۙ﴿٩﴾

9. और समूद (के साथ क्या सुलूक हुआ) जिन्होंने वादिये (क़ुरा) में चट्टानों को काट (कर पथ्थरों से सेंकड़ों शहरों को ता'मीर कर) डाला था।

وَفِرْعَوْنَ ذِى الْاَوْتَادِ ۙ﴿١٠﴾

10. और फ़िरऔन का (क्या हश्र हुवा) जो बड़े लश्करों वाला (या लोगों को मेख़ों से सज़ा देने वाला) था।

الَّذِيْنَ طَغَوْا فِى الْبِلَادِ ۙ﴿١١﴾

11. (येह) वोह लोग (थे) जिन्होंने (अपने–अपने) मुल्कों में सरकशी की थी।

فَاَكْثَرُوْا فِيْهَا الْفَسَادَ ۙ﴿١٢﴾

12. फिर उनमें बड़ी फ़साद अंगेज़ी की थी।

فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ ۚ﴿١٣﴾

13. तो आपके रबने उन पर अज़ाब का कोड़ा बरसाया।

اِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ؕ﴿١٤﴾

14. बेशक आप का रब (सरकशों और ना फ़रमानों की) ख़ूब ताक में है।

فَاَمَّا الْاِنْسَانُ اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ رَبُّهٗ فَاَكْرَمَهٗ وَنَعَّمَهٗ ۙ فَيَقُوْلُ رَبِّىْٓ اَكْرَمَنِ ؕ﴿١٥﴾

15. मगर इन्सान (ऐसा है) कि जब उसका रब उसे राहतो आसाइश दे कर) आज़माता है और उसे इ़ज़्ज़त से नवाज़ता है और उसे ने'मतें बख़्शता है तो वोह केहता है : मेरे रबने मुझ पर करम फ़रमाया।

وَاَمَّآ اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهٗ ۙ فَيَقُوْلُ رَبِّىْٓ اَهَانَنِ ۚ﴿١٦﴾

16. लेकिन जब वोह उसे (तक्लीफ़ो मुसीबत दे कर) आज़माता है और उस पर उसका रिज़्क़ तंग करता है तो वोह केहता है : मेरे रबने मुझे ज़लील कर दिया।

كَلَّا بَلْ لَّا تُكْرِمُوْنَ الْيَتِيْمَ ۙ﴿١٧﴾

17. येह बात नहीं बल्कि (हक़ीक़त येह है कि इज़्ज़तो मालो दौलत के मिलने पर) तुम यतीमों की क़द्रो इकराम नहीं करते।

وَلَا تَحٰٓضُّوْنَ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۙ﴿١٨﴾

18. और न ही तुम मिस्कीनों (या'नी ग़रीबों और मोहताजों) को खाना खिलाने की (मुआ़शरे में) एक दूसरे को तरग़ीब देते हो।

وَتَاْكُلُوْنَ التُّرَاثَ اَكْلًا لَّمًّا ۙ﴿١٩﴾

19. और विरासत का सारा माल समेट कर (खुद ही) खा जाते हो (उसमें से इफ़्लास ज़दह लोगों का हक़ नहीं निकालते।)

وَّتُحِبُّوْنَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ﴿٢٠﴾

20. और तुम मालो दौलत से हद़ दर्जा मुहब्बत रखते हो।

كَلَّآ اِذَا دُكَّتِ الْاَرْضُ دَكًّا دَكًّا ﴿٢١﴾

21. यक़ीनन जब ज़मीन पाश पाश कर के रेज़ह रेज़ह कर दी जाएगी।

وَّجَآءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ﴿٢٢﴾

22. और आपका रब जल्वह फ़रमा होगा, और फ़रिश्ते क़तार दर क़तार (उसके हुज़ूर) हाज़िर होंगे।

وَجِايْٓءَ يَوْمَئِذٍۭ بِجَهَنَّمَ ۙ يَوْمَئِذٍ يَّتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ وَاَنّٰى لَهُ الذِّكْرٰى ﴿٢٣﴾

23. और उस दिन दोज़ख़ पेश की जाएगी, उस दिन इन्सान को समझ आ जाएगी मगर (अब) उसे नसीहत कहां (फ़ाइदह मन्द) होगी।

يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ قَدَّمْتُ لِحَيَاتِيْ ﴿٢٤﴾

24. वोह कहेगा : अय काश ! मैं ने (इस अस्ल) ज़िन्दगी के लिए (कुछ) आगे भेज दिया होता (जो आज मेरे काम आता)।

فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُعَذِّبُ عَذَابَهٗٓ اَحَدٌ ﴿٢٥﴾

25. सो उस दिन न उसके अज़ाब की तरह़ कोई अज़ाब दे सकेगा।

وَّلَا يُوْثِقُ وَثَاقَهٗٓ اَحَدٌ ﴿٢٦﴾

26. और न उसके जकड़ने की तरह़ कोई जकड़ सकेगा।

يٰٓاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ﴿٢٧﴾

27. ऐ इत्मीनान पा जानेवाले नफ़्स !

ارْجِعِيْٓ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ﴿٢٨﴾

28. तू अपने रब की तरफ़ इस हालमें लौट आ कि तू उसकी रज़ा का तालिब भी हो और उसकी रज़ा का मतलूब भी, (गोया उसकी रज़ा तेरी मतलूब हो और तेरी रज़ा उसकी मतलूब)।

فَادْخُلِيْ فِيْ عِبٰدِيْ ﴿٢٩﴾

29. पस तू मेरे (कामिल) बंदों में शामिल हो जा।

وَادْخُلِيْ جَنَّتِيْ ﴿٣٠﴾

30. और मेरी जन्नते (क़ुर्बते दीदार) में दाख़िल हो जा।

आयातुहा 20 | 90 सूरतुल ब-लदि मक्किय्यतुन 35 | रुकूउ़हा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

لَآ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۙ ١

1. मैं उस शहरे (मक्का) की क़सम खाता हूं।

وَاَنْتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۙ ٢

2. (ऐ ह़बीबे मुकर्रम !) इस लिए कि आप इस शहर में तशरीफ़ फ़रमा हैं।(1)

وَوَالِدٍ وَّمَا وَلَدَ ۙ ٣

3. (ऐ ह़बीबे मुकर्रम ! आपके : वालिद (आदम या इब्राहीम(عليه السلام)) की क़सम (और उनकी) क़सम जिनकी विलादत हुई।(2)

لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْ كَبَدٍ ۗ ٤

4. बेशक हमने इन्सानको मशक़्क़त में (मुब्तिला रेहने वाला) पैदा किया है।

اَيَحْسَبُ اَنْ لَّنْ يَّقْدِرَ عَلَيْهِ اَحَدٌ ۘ ٥

5. क्या वोह येह गुमान करता है कि उस पर हरगिज़ कोई भी क़ाबू न पा सकेगा।

وقف لازم

يَقُوْلُ اَهْلَكْتُ مَالًا لُّبَدًا ۗ ٦

6. वोह (बड़े फ़ख़्र से) केहता है कि मैंने ढेरों माल ख़र्च किया है।

اَيَحْسَبُ اَنْ لَّمْ يَرَهٗۤ اَحَدٌ ۗ ٧

7. क्या वोह येह ख़याल करता है कि उसे (येह फुज़ूल ख़र्चियां करते हुए) किसी ने नहीं देखा।

اَلَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ عَيْنَيْنِ ۙ ٨

8. क्या हमने उसके लिए दो आंखें नहीं बनाईं?

وَلِسَانًا وَّشَفَتَيْنِ ۙ ٩

9. और (उसे) एक ज़बान और दो होंट (नहीं दिए)?

وَهَدَيْنٰهُ النَّجْدَيْنِ ۚ ١٠

10. और हमने उसके (ख़ैरो शर्र के) दो नुमायां रास्ते (भी) दिखा दिए।

---

(1) येह तर्जमा ''ला ज़ाइदह''के ए'तबार से है'' 'ला' नफी की सहीह के लिये हो तो तर्जमा यूं होगा : मैं उस वक़्त उस शहर की कसम नहीं खाऊंगा, (अय हबीबे !) जब आप इस शहर से रुख़सत होजाएंगे।

(2) (या'नी आदम (عليه السلام) की ज़ुर्रिय्यते सालिहा या आप ही की ज़ाते गिरामी जिन-के बाइस येह शहरे मक्का भी लाइके कसम ठेहरा है।)

فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ﴿١١﴾

11. वोह तो (दीने ह़क़ और अ़मले ख़ैर की) दुश्वार गुज़ार घाटी में दाख़िल ही नहीं हुवा।

وَمَا أَدْرٰىكَ مَا الْعَقَبَةُ ﴿١٢﴾

12. और आप क्या समझे हैं कि वोह (दीने ह़क़ के मुजाहहिदे की) घाटी क्या है।

فَكُّ رَقَبَةٍ ﴿١٣﴾

13. वोह (गुलामी और मह़कूमी की ज़िन्दगी से) किसी गरदन का आजाद कराना है।

أَوْ إِطْعٰمٌ فِي يَوْمٍ ذِي مَسْغَبَةٍ ﴿١٤﴾

14. या भूकवाले दिन (या'नी क़हतो इफ़लास के दौर में गरीबों और मह़रूमुल मईशत लोगों को) खाना खिलाना है (या'नी उनके मआ़शी तअ़त्तुल और इब्तिला को ख़त्म करने की जद्दो जहद करना है।)

يَتِيمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ﴿١٥﴾

15. क़राबत दार यतीम को।

أَوْ مِسْكِينًا ذَا مَتْرَبَةٍ ﴿١٦﴾

16. या शदीद गुरबत के मारे हुए मोहूताज को जो मह़ज़ ख़ाक नशीन (और बे घर) है।

ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ﴿١٧﴾

17. फिर (शर्त येह है कि ऐसी जद्दो जहद करनेवाला) वोह शख़्स उन लोगों में से हो जो ईमान लाए हैं, और एक दूसरे को सब्रो तह़म्मुल की नसीहत करते हैं और बाहम रह़्मत् शफ़्क़त की ताकीद करते हैं।

أُولٰئِكَ أَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ﴿١٨﴾

18. येही लोग दाएं तरफ़ वाले (या'नी अह्ले सआ़दतो मग़फ़िरत) हैं।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيٰتِنَا هُمْ أَصْحٰبُ الْمَشْأَمَةِ ﴿١٩﴾

19. और जिन लोगोंने हमारी आयतों का इन्कार किया क्या वोह बाएं तरफ़वाले हैं (या'नी अहले शक़ावतो अ़ज़ाब) हैं।

عَلَيْهِمْ نَارٌ مُؤْصَدَةٌ ﴿٢٠﴾

20. उन पर (हर तरफ़ से) बंद की हुई आग (छाई) होगी।

आयातुहा 15 | 91 सूरतुश शम्सि 26 | रुकूउहा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

وَالشَّمْسِ وَضُحٰهَا ۝١

1. सूरज की क़सम और उसकी रौशनी की क़सम।

وَالْقَمَرِ اِذَا تَلٰهَا ۝٢

2. और चांद की क़सम जब वोह सूरज की पैरवी करे (या'नी उसकी रौशनी से चमके।)

وَالنَّهَارِ اِذَا جَلّٰهَا ۝٣

3. और दिन की क़सम जब वोह सूरज को ज़ाहिर करे (या'नी उसे रौशन दिखाए।)

وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰهَا ۝٤

4. और रात की क़सम जब वोह सूरज को (ज़मीन की एक सम्त से) ढांप ले।

وَالسَّمَآءِ وَمَا بَنٰهَا ۝٥

5. और आस्मान की क़सम, और उस (कुव्वत) की क़सम जिसने उसे (इज़्ने इलाही से एक वसीअ़ काइनात की शक्ल में) ता'मीर किया।

وَالْاَرْضِ وَمَا طَحٰهَا ۝٦

6. और ज़मीन की क़सम, और उस (कुव्वत) की क़सम जो उसे (अम्रे इलाही से सूरज से खींच कर दूर) ले गई।

وَنَفْسٍ وَّمَا سَوّٰىهَا ۝٧

7. और इन्सानी जान की क़सम, और उसे हमा पेहलू तवाज़ुनो दुरुस्तगी देनेवाले की क़सम।

فَاَلْهَمَهَا فُجُوْرَهَا وَتَقْوٰىهَا ۝٨

8. फिर उसने उसे उसकी बद कारी और परहेज़गारी (की तमीज़) समझा दी।

قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰىهَا ۝٩

9. बेशक वोह शख़्स फ़लाह पा गया जिसने उस (नफ़्स) को (रज़ाइल से) पाक कर लिया (और उसमें नेकी की नश्वो नुमा की।)

وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰىهَا ۝١٠

10.और बेशक वोह शख़्स ना मुराद हो गया जिसने उसे (गुनाहों में) मुलव्विस कर लिया और (नेकी को दबा दिया।)

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِطَغْوٰىهَآ ۝١١

11. समूद ने अपनी सरकशी के बाइ़स (अपने पयग़म्बर सालेह عليه السلام को) झुटलाया।

اِذِ انْۢبَعَثَ اَشْقٰهَا ۝١٢

12. जबकि उनमें से एक बड़ा बद बख़्त उठ्ठा।

فَقَالَ لَهُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ نَاقَةَ اللّٰهِ وَسُقْيٰهَا ۝١٣

13. उनसे अल्लाह के रसूलने फ़रमाया : अल्लाह की (उस) ऊंटनी और उसको पानी पिलाने (के दिन) की हि़फ़ाज़त करना।

فَكَذَّبُوْهُ فَعَقَرُوْهَا ۙ فَدَمْدَمَ عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ بِذَنْۢبِهِمْ فَسَوّٰىهَا ۝١٤

14. तो उन्होंने उस (रसूल) को झुटला दिया, फिर उस (ऊंटनी) की कोंचें काट डालीं तो उनके रबने उनके गुनाह की वजह से उन पर हलाकत नाज़िल कर दी, फिर (पूरी) बस्ती को (तबाह कर के अज़ाब में सब को) बराबर कर दिया।

وَلَا يَخَافُ عُقْبٰهَا ۝١٥

15. और अल्लाह को उस (हलाकत) के अंजाम का कोई ख़ौफ़ नहीं होता।

ع ١٥ ١٦

रुकूउहा 1 | 92 सूरतुल लैलि 9 | आयातुहा 21

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰى ۝١

1. रात की क़सम जब वोह छा जाए (और हर चीज़को अपनी तारीकी में छुपा ले)।

وَالنَّهَارِ اِذَا تَجَلّٰى ۝٢

2. और दिन की क़सम जब वोह चमक उठ्ठे।

وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ۝٣

3. और उस ज़ात की (क़सम) जिसने (हर चीज़में) नर और मादह को पैदा फ़रमाया।

اِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتّٰى ۝٤

4. बेशक तुम्हारी कोशिश मुख़्तलिफ़ (और जुदागाना) है।

فَاَمَّا مَنْ اَعْطٰى وَاتَّقٰى ۝٥

5. पस जिसने (अपना माल अल्लाह की राह में) दिया और परहेज़गारी इख़्तियार की।

وَصَدَّقَ بِالْحُسْنٰى ۝٦

6. और उसने (इन्फ़ाक़ो तक़्वा के ज़रीऐ) अच्छाई या'नी दीने हक़ और आख़िरत) की तस्दीक़ की।

فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْيُسْرٰى ۝٧

7. तो हम अ़नक़रीब उसे आसानी (या'नी रज़ाए इलाही) के लिए सहूलत फ़राहम कर देंगे।

وَاَمَّا مَنْۢ بَخِلَ وَاسْتَغْنٰى ۝٨

8. और जिसने बुख़्ल किया और (राहे ह़क़में माल ख़र्च करने से) बे परवाह रहा।

وَكَذَّبَ بِالْحُسْنٰى ۝٩

9. और उसने (यूं) अच्छाई (या'नी दीने ह़क़ और आख़िरत) को झुटलाया।

فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْعُسْرٰى ۝١٠

10. तो हम अ़नक़रीब उसे सख़्ती (या'नी अ़ज़ाब की तरफ़ बढ़ने) के लिए सहूलत फ़राहम कर देंगे, (ताकि वोह तेज़ी से मुस्तहिके अ़ज़ाब ठेहरे।)

وَمَا يُغْنِىْ عَنْهُ مَالُهٗۤ اِذَا تَرَدّٰى ۝١١

11. और उसका माल उसके किसी काम नहीं आएगा, जब वोह हलाकत (के गढ़े) में गिरेगा।

اِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدٰى ۝١٢

12. बेशक राहे (ह़क़) देखना हमारे ज़िम्मे है।

وَاِنَّ لَنَا لَلْاٰخِرَةَ وَالْاُوْلٰى ۝١٣

13. और बेशक हम ही आख़िरत और दुनिया के मालिक हैं।

فَاَنْذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظّٰى ۝١٤

14. सो मैंने तुम्हें (दोज़ख़ की) आग से डरा दिया है जो भड़क रही है।

لَا يَصْلٰىهَاۤ اِلَّا الْاَشْقَى ۝١٥

15. जिसमें इन्तिहाई बद बख़्त के सिवा कोई दाख़िल नहीं होगा।

الَّذِىْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ۝١٦

16. जिसने (दीने ह़क़ को) झुटलाया और (रसूल की इताअ़त से) मुंह फेर लिया।

وَسَيُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى ۝١٧

17. और उस (आग) से उस बड़े परहेज़गार शख़्स को बचा लिया जाएगा।

الَّذِىْ يُؤْتِىْ مَالَهٗ يَتَزَكّٰى ۝١٨

18. जो अपना माल (अल्लाह की राह में) देता है कि (अपने जानो माल की) पाकीज़गी ह़ासिल करे।

وَمَا لِاَحَدٍ عِنْدَهٗ مِنْ نِّعْمَةٍ تُجْزٰۤى ۝١٩

19. और किसी का उस पर कोई एह़सान नहीं कि जिसका बदला दिया जा रहा हो।

اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْاَعْلٰى ۝٢٠

20. मगर (वोह) सिर्फ़ वोह अपने रब्बे अ़ज़ीम की रज़ा जूई के लिए (माल ख़र्च कर रहा है।)

وَلَسَوْفَ يَرْضٰى ﴿٢١﴾

21. और अनक़रीब वोह अल्लाह की अता से और अल्लाह उसकी वफ़ा से राज़ी हो जाएगा।

आयातुहा 11 | 93 सूरतुद दुहा मक्किय्यतुन 11 | रुकूउहा 1

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

وَالضُّحٰى ﴿١﴾

1. क़सम है चाश्त के वक़्तकी (जब आफ़्ताब बुलंद हो कर अपना नूर फैलाता है,)

या

(ऐ हबीबे मुकर्रम !) क़सम है चाश्त (की तरह आपके चेहरए अनवर) की (जिस की ताबानीने तारीक रूहों को रौशन कर दिया।)

या

क़सम है वक़्ते चाश्त (की तरह आप के आफ़्ताबे रिसालत के बुलंद होने) की, (जिस के नूरने गुमराही के अंधेरों को उजाले से बदल दिया।)

وَالَّيۡلِ اِذَا سَجٰى ﴿٢﴾

2. और क़सम है रात की जब वोह छा जाए,

या

(ऐ हबीबे मुकर्रम !) क़सम है सियाह रात की (तरह आपकी ज़ुल्फे अंबरीं की) जब वोह (आपके रुख़े ज़ेबा या शानों पर) छा जाए,

या

क़सम है रात की (तरह आप के हिजाबे ज़ात की) जब कि वोह (आपके नूरे हक़ीक़त को कई परदों में) छुपाए हुए है।

مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلٰى ﴿٣﴾

3. आपके रबने (जब से मुन्तख़ब फ़रमाया है) आपको नहीं छोड़ा और न ही (जब से आपको महबूब बनाया है) नाराज़ हुवा है।

وَلَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى ﴿٤﴾

4. और बेशक (हर) बाद की घड़ी आपके लिए पहले से बेहतर (यानी बाइ़से अज़्मतो रिफ़अ़त) है।

وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى ﴿٥﴾

5. और आपका रब अ़नक़रीब आपको (इतना कुछ) अ़ता फ़रमाएगा कि आप राज़ी हो जाएंगे।

اَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيْمًا فَاٰوٰى ﴿٦﴾

6. (ऐ ह़बीब!) क्या उसने आपको यतीम नहीं पाया, फिर उसने (आपको मुअ़ज़्ज़ो मुकर्रम) ठिकाना दिया, या क्या उसने आपको (मेहरबान) नहीं पाया फिर उसने (आपके ज़रीए़) यतीमों को ठिकाना दिया।(1)

وَوَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰى ﴿٧﴾

7. और उसने आपको अपनी मुह़ब्बत में ख़ुद रफ़्ता व गुम पाया तो उसने मक़्सूद तक पहुंचा दिया, या और उसने आपको भटकी हुई क़ौम के दरमियान (रहनुमाई फ़रमाने वाला) पाया तो उसने (उन्हें आपके ज़रीए़) हिदायत दे दी।(2)

وَوَجَدَكَ عَآئِلًا فَاَغْنٰى ﴿٨﴾

8. और उसने आपको (विसाले ह़क़ का) ह़ाजत मंद पाया तो उसने (अपनी लज़्ज़ते दीद से नवाज़ कर हमेशा के लिए हर तलब से) बे-नियाज़ कर दिया।

या-और उसने आपको (जव्वादो करीम) पाया तो उसने (आपके ज़रीए़) मोहताजों को ग़नी कर दिया।

فَاَمَّا الْيَتِيْمَ فَلَا تَقْهَرْ ﴿٩﴾

9. सो आप भी किसी यतीम पर सख़्ती न फ़रमाएं।

وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ ﴿١٠﴾

10. और (अपने दर के) किसी मंगते को न झिड़कें।

(1), (2), (3) इन तीनों तराजिम में यतीमन को 'फ़आवा' का, 'दॉल्लन' को 'फ़-हदा' का और 'आ़इलन' को 'फ़-अग़्ना' का मफ़ऊ़ले मु-क़द्दम क़रार दिया है। (मुलाहिज़ा हो : अत्तफ़्सीरुल कबीर, अल कुर्तुबी, अल बह़्रुल मुह़ीत, रूहु़ल बयान, अश्शिफ़ा और शर्हे ख़फ़ाजी)

وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ﴿١١﴾ ع

11. और अपने रबकी ने'मतों का (खूब) तज़्किरा करें।

आयतुहा 8 | 94 सूरतु अलम नशरह मक्किय्यतुन 12 | रुकूउ़हा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ﴿١﴾

1. क्या हमने आपकी ख़ातिर आपका सीना (अनवारे इल्मो ह़िक्मत और मा'रिफ़त के लिये) कुशादह नहीं फ़रमा दिया।

وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ﴿٢﴾

2. और हमने आपका (ग़मे उम्मत का वोह) बार आपसे उतार दिया।

الَّذِيْٓ اَنْقَضَ ظَهْرَكَ ﴿٣﴾

3. जो आपकी पुश्ते (मुबारक) पर गिरां हो रहा था।

وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ﴿٤﴾

4. और हमने आपकी ख़ातिर आपका ज़िक्र(अपने ज़िक्र के साथ मिला कर दुनिया-व-आख़िरत में हर जगह) बुलन्द फ़रमा दिया।

فَاِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ﴿٥﴾

5. सो बेशक हर दुश्वारी के साथ आसानी (आती) है।

اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ﴿٦﴾

6. यक़ीनन उस दुश्वारी के साथ (भी) आसानी है।

فَاِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ ﴿٧﴾

7. पस जब आप (ता'लीमे उम्मत, तब्लीग़ो जिहाद अदायगिए फ़राइज़से) फ़ारिग हों तो (ज़िक्रो इ़बादत में) मेहनत फ़रमाया करें।

وَاِلٰى رَبِّكَ فَارْغَبْ ﴿٨﴾ ع

8. और अपने रब की तरफ़ रागि़ब हो जाया करें।

आयातुहा 8 | 28 सूरतुत तीनि मक्किय्यतुन 28 | रुकूउहा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान हमेशा रहम फ़रमाने वाला है।

وَالتِّيْنِ وَالزَّيْتُوْنِ ﴿١﴾

1. इंजीर की क़सम और जैतून की क़सम।

وَطُوْرِ سِيْنِيْنَ ﴿٢﴾

2. और सीना के (पहाड़) तूर की क़सम।

وَهٰذَا الْبَلَدِ الْاَمِيْنِ ۙ ﴿٣﴾

3. और उस अम्नवाले शहर (मक्का) क़सम।

لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْٓ اَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ ﴿٤﴾

4. बेशक हमने इन्सानों को बेहतरीन (ए'तिदाल और तवाज़ुनवाली) साख़्त में पैदा फ़रमाया है।

ثُمَّ رَدَدْنٰهُ اَسْفَلَ سٰفِلِيْنَ ۙ ﴿٥﴾

5. फिर हमने उसे पस्त से पस्त तर ह़ालत में लौटा दिया।

اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ۭ ﴿٦﴾

6. सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे तो उनके लिए ख़त्म न होनेवाला (दाइमी) अज्र है।

فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالدِّيْنِ ۭ ﴿٧﴾

7. फिर उसके बाद कौन है जो आपको दीन (या क़ियामत और जज़ा व सज़ा) के बारे में झुटलाता है।

اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَحْكَمِ الْحٰكِمِيْنَ ﴿٨﴾

8. क्या अल्लाह सब ह़ाकिमों से बड़ा ह़ाकिम नहीं है ?

आयातुहा 19 — 96 सूरतुल अ़लक़ मक्किय्यतुन 1 — रुकूअ़हा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान हमेशा रहम फ़रमाने वाला है।

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِيْ خَلَقَ ۚ ﴿١﴾

1. (ऐ ह़बीब!) अपने रबके नाम से (आग़ाज़ करते हुए) पढ़िए जिसने (हर चीज़को) पैदा फ़रमाया।

خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۚ ﴿٢﴾

2. उसने इन्सानको (रह़्मे मादर में) जोंक की तरह मुअ़ल्लक़ वजूद से पैदा किया।

اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ ۙ ﴿٣﴾

3. पढ़िए और आपका रब बड़ा ही करीम है।

الَّذِيْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۙ ﴿٤﴾

4. जिसने क़लम के ज़रीए (लिखने पढ़ने का) इल्म सिखाया।

عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ۭ ﴿٥﴾

5. जिसने इन्सान को (उसके अ़लावह भी) वोह (कुछ) सिखा दिया जो वोह नहीं जानता था।★

★ (या : जिसने (सब से बुलन्द रुत्बा) इन्सान (मुह़म्मद मुस्तफ़ा ﷺ) को (बिग़ैर ज़रीअ़ए क़लम के) वोह सारा इ़ल्म अ़ता फ़रमा दिया जो वोह पहले न जानते थे।)

كَلَّآ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَيَطْغٰٓى ۙ ﴿۶﴾

6. (मगर) ह़क़ीक़त येह है कि (ना फ़रमान) इन्सान सरकशी करता है।

اَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰى ؕ ﴿۷﴾

7. इस बिना पर कि वोह अपने आपको (दुनिया में ज़ाहिरन) बे-नियाज़ देखता है।

اِنَّ اِلٰى رَبِّكَ الرُّجْعٰى ؕ ﴿۸﴾

8. बेशक (हर इन्सान को) आपके रब ही की तरफ़ लौटना है।

اَرَءَيْتَ الَّذِىْ يَنْهٰى ۙ ﴿۹﴾

9. क्या आपने उस शख़्स को देखा जो मना' करता है।

عَبْدًا اِذَا صَلّٰى ؕ ﴿۱۰﴾

10. (अल्लाह के) बंदे को जब वोह नमाज़ पढ़ता है, या (अल्लाह के महबूब बरगुज़ीदह) बंदे (मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ) को जब नमाज़ पढ़ते हैं।

اَرَءَيْتَ اِنْ كَانَ عَلَى الْهُدٰٓى ۙ ﴿۱۱﴾

11. भला देखिए तो अगर वोह हिदायत पर होता।

اَوْ اَمَرَ بِالتَّقْوٰى ؕ ﴿۱۲﴾

12. या वोह (लोगों को) परहेज़गारी का हुक्म देता (तो क्या खूब होता)।

اَرَءَيْتَ اِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ؕ ﴿۱۳﴾

13. आप बताइये ! अगर उसने (दीने ह़क़ को) झुटलाया है और (आपसे) मुंह फेर लिया है (तो उसका क्या ह़श्र होगा) ?

اَلَمْ يَعْلَمْ بِاَنَّ اللّٰهَ يَرٰى ؕ ﴿۱۴﴾

14. क्या वोह नहीं जानता कि अल्लाह (उसके सारे किर्दार को) देख रहा है ?

كَلَّا لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ ۙ۬ لَنَسْفَعًۢا بِالنَّاصِيَةِ ۙ ﴿۱۵﴾

15. ख़बरदार ! अगर वोह (गुस्ताख़े रिसालत और दीने ह़क़ की अ़दावत से) बाज़ न आया तो हम ज़रूर (उसे) पेशानी के बालों से पकड़ कर घसीटेंगे।

نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ۚ ﴿۱۶﴾

16. वोह पेशानी जो झूटी (और) ख़ताकार है।

فَلْيَدْعُ نَادِيَهٗ ۙ ﴿۱۷﴾

17.पस वोह अपने हम नशीनों को (मदद के लिए) बुला ले।

سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ۙ ﴿۱۸﴾

18. हम भी अ़नक़रीब अपने सिपाहियों या'नी दोज़ख़ के अ़ज़ाब पर मुक़र्रर फ़रिश्तों को बुला लेंगे।

كَلَّا ؕ لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ﴿۱۹﴾ السجدة

19. हरगिज़ नहीं ! आप उसके किए की परवाह न कीजिए, और (ऐ ह़बीबे मुकर्रम !) आप सर ब-सुजूद रेहने और (हमसे मज़ीद) क़रीब होते जाइए।

ع ١ ١٩ ٢١

السجدة ١٣

आयातुहा 5 | 97 सूरतुल क़द्रि मक्किय्यतुन 25 | रुकूउ़हा 5

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान हमेशा रहम फ़रमाने वाला है।

إِنَّآ أَنْزَلْنٰهُ فِىْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ ﴿١﴾

1. बेशक हमने इस (क़ुरआन) को शबे क़द्र में उतारा है।

وَمَآ أَدْرٰىكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ﴿٢﴾

2. और आप क्या समझे हैं (कि) शबे क़द्र कया है?

لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ أَلْفِ شَهْرٍ ﴿٣﴾

3. शबे क़द्र (फ़ज़ीलतो बरकत और अज्रो सवाब में) हज़ार महीनों से बेहतर है।

تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ فِيْهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ مِّنْ كُلِّ أَمْرٍ ﴿٤﴾

4. इस (रात में फ़रिश्ते और रूहुल अमीन (जिब्राईल) अपने रब के हुक्म से उतरते हैं।

سَلٰمٌ هِىَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ ﴿٥﴾

5. येह (रात) तुलूए फ़ज्र तक (सरासर) सलामती है।

وقف النبي صلى الله عليه وسلم — معانقة ١٨ — ع ١ ٥ ٢٢

आयातुहा 8 | 98 सूरतुल बय्यिनति मक्किय्यतुन 100 | रुकूउ़हा 8

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

لَمْ يَكُنِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ مُنْفَكِّيْنَ حَتّٰى تَأْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ﴿١﴾

1. अहले किताब में से जो लोग काफ़िर हो गए, और मुशरिकीन उस वक़्त तक (कुफ़्र से) अलग होनेवाले न थे जब तक उनके पास रौशन दलील (न) आ जाती।

رَسُوْلٌ مِّنَ اللّٰهِ يَتْلُوْا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ﴿٢﴾

2. (वोह दलील) अल्लाह की तरफ़ से रसूल (आखिरुज़ ज़मां ﷺ) हैं जो (उन पर) पाकीज़ा औराक़ (क़ुरआन) की तिलावत फ़रमाते हैं।

فِيْهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ﴿٣﴾

3. जिन में दुरुस्त और मुस्तह़कम अह़काम (दर्ज) हैं।

وَ مَا تَفَرَّقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنَةُ ؕ﴿۴﴾

4. (उन) अहले किताब में (नबिय्ये आखिरुज़ ज़मां ﷺ की नुबुव्वतो रिसालत पर ईमान लाने और आपकी शाने अक़्दस का पेहचानने के बारे में पहले) कोई फूट न पड़ी थी, मगर उस के बाद जब (बे'सते मुहम्मदी ﷺ की) रौशन दलील उनके पास आ गई (तो वोह बाहम बट गए कोई उन पर ईमान ले आया और कोई ह़सद के बाइ़स मुन्किरो काफ़िर हो गया)।

وَ مَاۤ اُمِرُوْۤا اِلَّا لِيَعْبُدُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۙ۬ حُنَفَآءَ وَ يُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَ يُؤْتُوا الزَّكٰوةَ وَ ذٰلِكَ دِيْنُ الْقَيِّمَةِ ؕ﴿۵﴾

5. ह़ालांकि उन्हें फ़क़त येही हुक्म दिया गया था कि सिर्फ़ उसीके लिए अपने दीन को ख़ालिस करते हुए अल्लाह की इ़बादत करें, (हर बातिल से जुदा हो कर) ह़क़ की तरफ़ यकसूई पैदा करें और नमाज़ क़ाइम करें और ज़कात दिया करें और येही सीधा और मज़बूत दीन है।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَ الْمُشْرِكِيْنَ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ اُولٰٓئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ؕ﴿۶﴾

6. बेशक जो लोग अहले किताब में से काफि र हो गए और मुश्रेकीन (सब) दोज़ख की आग में (पड़े) होंगे, वोह हमेशा उसी में रेहनेवाले हैं, येही लोग बद तरीन मख़लूक़ हैं।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ؕ﴿۷﴾

7. बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे वही लोग सारी मख़लूक से बेहतर हैं।

جَزَآؤُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ؕ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَ رَضُوْا عَنْهُ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهٗ ۧ﴿۸﴾

8. उन की जज़ा उनके रबके हुज़ूर दाइमी रिहाइश के बाग़ात हैं जिनके नीचे से नेहरें रवां हैं, वोह उनमें हमेशा हमेशा रहेंगे, अल्लाह उन से राज़ी हो गया है, और वोह लोग उससे राजी हैं, येह (मुक़ाम) उस शख़्स के लिए है जो अपने रबसे ख़ाइफ़ रहा।

आयातुहा 8 | 99 सूरतुज़् ज़िल्ज़ालि म-दनिय्यतुन 93 | रुकूउ़हा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

اِذَا زُلْزِلَتِ الْاَرْضُ زِلْزَالَهَا ۙ﴿۱﴾

1. जब ज़मीन अपने सख़्त भोंचाल से बड़ी शिद्दत के साथ थरथराई जाएगी।

وَاَخْرَجَتِ الْاَرْضُ اَثْقَالَهَا ۙ﴿۲﴾

2. और ज़मीन अपने (सब) बोझ निकाल बाहर फेंकेगी।

وَقَالَ الْاِنْسَانُ مَا لَهَا ۚ﴿۳﴾

3. और इन्सान (हैरानो शश्दर) हो कर कहेगा : इसे क्या हो गया है।

يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ اَخْبَارَهَا ۙ﴿۴﴾

4. उस दिन वोह अपने ह़ालात ख़ुद ज़ाहिर कर देगी।

بِاَنَّ رَبَّكَ اَوْحٰى لَهَا ؕ﴿۵﴾

5. इस लिए आपके रबने उसके लिए तेज़ इशारों (की ज़बान) को मुसख़्ख़र फ़रमा दिया।

يَوْمَئِذٍ يَّصْدُرُ النَّاسُ اَشْتَاتًا ۙ لِّيُرَوْا اَعْمَالَهُمْ ؕ﴿۶﴾

6. उस दिन लोग मुख़्तलिफ़ गिरोह बन कर (जुदा जुदा ह़ालतों के साथ) निकलेंगे ताकि उन्हें उनके आ'माल भी दिखाए जाएं।

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ؕ﴿۷﴾

7. तो जिसने ज़र्रह भर नेकी की होगी वोह उसे देख लेगा।

وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ۧ﴿۸﴾

8. और जिसने ज़र्रह भर बुराई की होगी वोह उसे (भी) देख लेगा।

آयातुहा 11 | 100 सुरतूल आ़दियाति मक्किय्यतुन 14 | रुकूउ़हा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

وَالْعٰدِيٰتِ ضَبْحًا ۙ﴿۱﴾

1. (मैदाने जिहाद में) तेज़ दौड़नेवाले घोड़ों की क़सम जो हांपते हैं।

فَالْمُوْرِيٰتِ قَدْحًا ۙ﴿۲﴾

2. फिर जो पथ्थरों पर सुम मार कर चिंगारियां निकालते हैं।

فَالْمُغِيْرٰتِ صُبْحًا ۙ﴿۳﴾

3. फिर जो सुब्ह़ होते ही (दुश्मन पर) अचानक ह़मला कर डालते हैं।

فَاَثَرْنَ بِهٖ نَقْعًا ۙ﴿۴﴾

4. फिर वोह उस (ह़म्लेवाली) जगह से गर्दो गु़बार उड़ाते हैं।

فَوَسَطْنَ بِهٖ جَمْعًا ۙ﴿۵﴾

5. फिर वोह उसी वक़्त (दुश्मन के) लश्कर में घुस जाते हैं।

اِنَّ الْاِنْسَانَ لِرَبِّهٖ لَكَنُوْدٌ ۚ﴿۶﴾

6. बेशक इन्सान अपने रब का बड़ा ही नाशुक्रा है।

وَ اِنَّهٗ عَلٰى ذٰلِكَ لَشَهِيْدٌ ۚ﴿۷﴾

7. और यक़ीनन वोह इस (ना शुक्री) पर खु़द गवाह हैं।

وَ اِنَّهٗ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيْدٌ ؕ﴿۸﴾

8. और बेशक वोह माल की मुह़ब्बत में बहुत सख़्त हैं।

اَفَلَا يَعْلَمُ اِذَا بُعْثِرَ مَا فِى الْقُبُوْرِ ۙ﴿۹﴾

9. तो क्या उसे मा'लूम नहीं जब वोह (मुर्दे) उठाए जाएंगे जो कब्रों में हैं ?

وَ حُصِّلَ مَا فِى الصُّدُوْرِ ۙ﴿۱۰﴾

10. और (राज़) ज़ाहिर कर दिए जाएंगे जो सीनों में हैं ?

اِنَّ رَبَّهُمْ بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيْرٌ ﴿۱۱﴾

11. बेशक उनका रब उस दिन (उनकेआ'माल) से खूब ख़बरदार होगा।

ع ۱۱ ۲۵

आयातुहा 11 | 101 सुरतूल क़ारिअ़ति मक्किय्यतुन 30 | रुकूउ़हा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

اَلْقَارِعَةُ ۙ﴿۱﴾

1. (ज़मीनो आस्मान की सारी काइनात को) खड़खड़ा देनेवाला शदीद झटका और कड़क।

مَا الْقَارِعَةُ ۚ﴿۲﴾

2. वोह (हर शय को) खड़खड़ा देनेवाला शदीद झटका और कड़क कया है ?

وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا الْقَارِعَةُ ؕ﴿۳﴾

3. और आप क्या समझे हैं कि (हर शय को) खड़खड़ा देनेवाले शदीद झटके और कड़क से मुराद क्या है ?

يَوْمَ يَكُونُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوثِ ﴿٤﴾

4. (इससे मुराद) वोह यौमे क़ियामत है जिस दिन (सारे) लोग बिखरे हुए परवानों की तरह होजाएंगे।

وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوشِ ﴿٥﴾

5. और पहाड़ रंग बिरंगी धुन्की हुई ऊन की तरह हो जाएंगे।

فَأَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ ﴿٦﴾

6. पस वोह शख़्स जिस (के आ'माल) के पलड़े भारी होंगे।

فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَاضِيَةٍ ﴿٧﴾

7. तो वोह ख़ुश गवार ऐशो मसर्रत में होगा।

وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ ﴿٨﴾

8. और जिस शख़्स के (आ'माल के) पलड़े हल्के होंगे।

فَأُمُّهُ هَاوِيَةٌ ﴿٩﴾

9. तो उसका ठिकाना हाविया (जहन्नम का गढ़ा) होगा।

وَمَا أَدْرَاكَ مَا هِيَهْ ﴿١٠﴾

10. और आप क्या समझे हैं कि हाविया क्या है?

نَارٌ حَامِيَةٌ ﴿١١﴾

11. (वोह जहन्नम की) सख़्त दहकती (आगका इन्तिहाई घडा है।

ع ١١ ٢٦

आयातुहा 8	102 सूरतुत तकासुरि मक्किय्यतुन 16	रुकूहा 1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

أَلْهَاكُمُ التَّكَاثُرُ ﴿١﴾

1. तुम्हें कसरत से माल की हवस और फ़ख़्रने (आख़िरत से) ग़ाफ़िल कर दिया।

حَتَّىٰ زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ﴿٢﴾

2. यहां तक कि तुम क़ब्रों में जा पहोंचे।

كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٣﴾

3. हरगिज़ नहीं! (मालो दौलत तुम्हारे काम नहीं आएंगे,) तुम अ़नक़रीब (इस हक़ीक़त को) जान लोगे।

ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٤﴾

4. फिर (आगाह किया जाता है) हरगिज़ नहीं : अ़नक़रीब तुम्हें (अपना अंजाम) मा'लूम हो जाएगा।

كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ عِلْمَ الْيَقِيْنِ ۝٥

5. हां हां ! काश तुम (मालो ज़र की हवस और अपनी ग़फ़लत के अंजाम को) यक़ीनी इल्म के साथ जानते (तो दुनिया में खो कर आख़िरत को इस तरह न भूलते।)

لَتَرَوُنَّ الْجَحِيْمَ ۝٦

6. तुम (अपनी ह़िर्स के नतीजे में) दोज़ख़ को ज़रूर देख कर रहोगे।

ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِيْنِ ۝٧

7. फिर तुम उसे ज़रूर यक़ीन की आंख से देख लोगे।

ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ۝٨

8. फिर उस दिन तुम से (अल्लाह की) ने'मतों के बारे में ज़रूर पूछा जाएगा (कि तुमने उन्हें कहां कहां और कैसे कैसे ख़र्च किया था)।

आयातुहा 3 | 103 सुरतुल अ़सरि मक्कियतुन 13 | रुकूउ़हा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

وَالْعَصْرِ ۝١

1.ज़माने की क़सम (जिसकी गरदिश इन्सानी ह़ालत पर गवाह है,) या नमाज़े अ़स्र की क़सम (कि वोह सब नमाज़ो का वस्त है,) या वक़्ते अ़सर की क़सम (जब दिन भर चमकनेवाला सूरज खुद डूबने का मन्ज़र पेश करता है, या ज़मानए बे'सते मुस्तफ़ा ﷺ की क़सम (जो सारे ज़मानों का मा मा ह़स्लो और मक़्सूद है।)

اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِيْ خُسْرٍ ۝٢

2. बेशक इन्सान ख़सारे में है (कि उम्रे अज़ीज़ गंवा रहा है।)

اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَ تَوَاصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ۝٣

3. सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे (और मुआ़शरे में) एक दूसरे को ह़क़ की तल्क़ीन करते रहे और (तब्लीगे़ ह़क़ के नतीजे में पेश आमदह मसाइबो आलाम में) बाहम सब्र की ताकीद करते रहे।

आयातुहा 9 | 104 सूरतुल हु-म-ज़ति मक्किय्यतुन 32 | रुकूउ़हा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِۨ ۝١

1. हर उस शख़्स के लिए हलाकत है जो (रूबरू) ता'ना ज़नी करने वाला है (और पसे पुश्त) ऐब जूई करने वाला है।

الَّذِىْ جَمَعَ مَالًا وَّعَدَّدَهٗ ۝٢

2. (ख़राबी व तबाही है उस शख़्स के लिए) जिसने माल जमा' किया और उसको गिन गिन कर रखता है।

يَحْسَبُ اَنَّ مَالَهٗۤ اَخْلَدَهٗ ۝٣

3. वोह येह गुमान करता है कि उसकी दौलत उसे हमेशा ज़िन्दह रखेगी।

كَلَّا لَيُنْۢبَذَنَّ فِى الْحُطَمَةِ ۝٤

4. हरगिज़ नहीं ! वोह ज़रूर हु-तमह (या'नी चूरा चूरा करदेने वाली आग) में फेंक दिया जाएगा।

وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا الْحُطَمَةُ ۝٥

5. और आप क्या समझे हैं कि हु-त-मह (चूरा चुरा कर देनेवाली आग) क्या है?

نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ ۝٦

6. येह अल्लाह की भड़काई हुई आग है।

الَّتِىْ تَطَّلِعُ عَلَى الْاَفْـِٕدَةِ ۝٧

7. जो दिलों पर (अपनी अज़िय्यत के साथ) चढ़ जाएगी।

اِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ ۝٨

8. बेशक वोह (आग) उन लोगों पर हर तरफ़ से बन्द कर दी जाएगी।

فِىْ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ۝٩

9. (भड़कते हुए शो'लों के) लम्बे लम्बे सुतूनों में (और उन लोगों के लिए कोई राहे फ़रार न रहेगी।)

ع ١ ٩ ٢٩

आयातुहा 5 | 105 सूरतुल फ़ीलि मक्किय्यतुन 19 | रुकूउ़हा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ

1. क्या आपने नहीं देखा कि आपके रब ने हाथीवालों के

بِاَصْحٰبِ الْفِیْلِ ۝١

साथ क्या सुलूक किया?

اَلَمْ یَجْعَلْ كَیْدَهُمْ فِیْ تَضْلِیْلٍ ۝٢

2. क्या उसने इनके मक्रो फ़रेब को बातिलो ना काम नहीं कर दिया?

وَّ اَرْسَلَ عَلَیْهِمْ طَیْرًا اَبَابِیْلَ ۝٣

3. और उसने उस पर (हर सम्त से) परिन्दों के झुंड के झुंड भेज दिए।

تَرْمِیْهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّیْلٍ ۝٤

4. जो उन पर कंकरीले पथ्थर मारते थे।

فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّاْكُوْلٍ ۝٥

5. फिर (अल्लाह ने) उन्हें खाए हुए भूसे की तरह पामाल कर दिया।

आयातुहा 4 | 106 सुरतु कुरैशिन मक्कियतुन 29 | रुकूउ़हा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

لِاِیْلٰفِ قُرَیْشٍ ۝١

1. कुरैश को रग़बत दिलाने के सबब से।

اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَ الصَّیْفِ ۝٢

2. उन्हें सरदियों और गरमियों के (तिजारती) सफ़र से मानूस कर दिया।

فَلْیَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَیْتِ ۝٣

3. पस उन्हें चाहिए कि उस घर (ख़ानए का'बा) के रब की इ़बादत करें (ताकि उसकी शुक्र गुज़ारी हो।)

الَّذِیْۤ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوْعٍ ۙ۬ وَّ اٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ۝٤

4. जिसने उन्हें भूक (या'नी फ़क्रो फ़ाक़ा के हालात) में खाना दिया (या'नी रिज़्क़ फ़राहम किया) और (दुश्मनों के) ख़ौफ़ से अम्न बख़्शा (या'नी मह़फ़ूज़ो मामून ज़िन्दगी से नवाज़ा।)

आयातुहा 7 | 107 सूरतुल माऊ़नि मक्कियतुन 17 | रुकूउ़हा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

اَرَءَیْتَ الَّذِیْ یُكَذِّبُ بِالدِّیْنِ ۝١

1. क्या आपने उस शख़्स को देखा जो दीन को झुटलाता है?

فَذٰلِكَ الَّذِىْ يَدُعُّ الْيَتِيْمَ ۝٢

2. तो येह वोह शख़्स है जो यतीम को धक्के देता है (या'नी यतीमों की ह़ाजात को रद करता और उन्हें ह़क़ से मह़रूम रखता है।)

وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۝٣

3. और मोह़ताज को खाना खिलाने की तरग़ीबा नहीं देता (या'नी मुआशरे से ग़रीबों और मोह़ताजों का मआ़शी इस्तेह़साल के ख़ातमे की कोशिश नहीं करता।)

فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ۝٤

4. पस अफ़्सोस (और ख़राबी) है उन नमाज़ियों के लिए।

الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۝٥

5. जो अपनी नमाज़ (की रूह़) से बे ख़बर हैं (या'नी उन्हें मह़ज़ हुक़ूक़ुल्लाह याद हैं हुक़ूक़ुल इ़बाद भुला बैठे हैं।)

الَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُوْنَ ۝٦

6. वोह लोग (इ़बादत में) दिखलावा करते हैं (क्यों कि वोह ख़ालिक़ की रस्मी बन्दगी बजा लाते हैं और पिसी हुई मख़्लूक़ से बे-परवाही बरत रहे हैं।)

وَيَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ ۝٧

7. और वोह बरतने की मा'मूली सी चीज़ भी मांगने नहीं देते।

आयातुहा 3 | 08 सूरतुल कौसरि मक्कियय्तुन 15 | रुकूउ़हा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

إِنَّآ أَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ ۝١

1. बेशक हमने आपको (हर ख़ैरो फज़ीलत में) बे-इन्तिहा कसरत बख़्शी है। ★

فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ۝٢

2. पस आप अपने रब के लिए नमाज़ पढ़ा करें और क़ुरबानी दिया करें (येह हदियए तशक्कुर है।)

إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ ۝٣

3. बेशक आपका दुश्मन ही बे-नस्ल और बे-नामो निशां होगा।

★ कौसर से मुराद होज़े कौसर या नेहरे जन्नत भी है और क़ुरआन और नुबुव्वत व हिकमत भी,फ़ज़ाइल व मो'जेझात की कसरत या अस्हाब व इत्तेबा' और उम्मत की कसरत भी मुराद ली गई है,रिफअते झिक्र और खुल्के अझीम भी मुराद है और दुनिया व आखिरत की ने'मतें भी, नुसरते इलाहिय्या और कसरते फुतूहात भी मुराद हैं,और रोझे क़ियामत मकामे मह़्मूद और शफाअते उझमा भी मुराद ली गई है।

आयातुहा 6 | 109 सूरतुल काफ़िरून मक्किय्यतुन 18 | रुकूउ़हा 1

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

قُلۡ يٰۤاَيُّهَا الۡكٰفِرُوۡنَ ۙ﴿۱﴾

1. आप फ़रमा दीजिए : ऐ काफ़िरो।

لَاۤ اَعۡبُدُ مَا تَعۡبُدُوۡنَ ۙ﴿۲﴾

2. मैं उन बुतों की इ़बादत नहीं करता जिन्हें तुम पूजते हो।

وَلَاۤ اَنۡتُمۡ عٰبِدُوۡنَ مَاۤ اَعۡبُدُ ۚ﴿۳﴾

3. और न तुम उस (रब) की इ़बादत करनेवाले हो जिस की मैं इ़बादत करता हूं।

وَلَاۤ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدۡتُّمۡ ۙ﴿۴﴾

4. और न (ही) मैं (आइन्दह कभी) उनकी इ़बादत करनेवाला हूं जिन (बुतों) की तुम परस्तिश करते हो।

وَلَاۤ اَنۡتُمۡ عٰبِدُوۡنَ مَاۤ اَعۡبُدُ ؕ﴿۵﴾

5. और न (ही) तुम उसकी इ़बादत करनेवाले हो जिस (रब) की मैं इ़बादत करता हूं।

لَكُمۡ دِيۡنُكُمۡ وَلِىَ دِيۡنِ ﴿۶﴾

6. (सो) तुम्हारा दीन तुम्हारे लिए और मेरा दीन मेरे लिए है।

आयातुहा 3 | 110 सूरतुन नस्त्रि मदनिय्यतुन 114 | रुकूउ़हा 1

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

اِذَا جَآءَ نَصۡرُ اللّٰهِ وَالۡفَتۡحُ ۙ﴿۱﴾

1. जब अल्लाह की मदद और फ़तह़ आ पहुंचे।

وَرَاَيۡتَ النَّاسَ يَدۡخُلُوۡنَ فِىۡ دِيۡنِ اللّٰهِ اَفۡوَاجًا ۙ﴿۲﴾

2. और आप लोगों को देख लें (कि) वोह अल्लाह के दीनमें जोक़ दर जोक़ दाख़िल हो रहे हैं।

فَسَبِّحۡ بِحَمۡدِ رَبِّكَ وَاسۡتَغۡفِرۡهُ ؔؕ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ﴿۳﴾

3. तो आप तशक्कुरन अपने रबकी ह़म्द के साथ तस्बीह़ फ़रमाएं और (तवाज़ुअ़न) उससे इस्तिग़फ़ार करें, बेशक वोह बड़ा ही तौबा क़बूल फ़रमानेवाला (और मज़ीद रह़्मत के साथ रुजूअ़ फ़रमानेवाला) है।

आयातुहा 5 | 111 सूरतुल-ल-हब मक्किय्यतुन 6 | रुकूअ़हा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

تَبَّتْ يَدَآ اَبِىْ لَهَبٍ وَّ تَبَّ ؕ ۝١

1. अबू लहब के दोनों हाथ टूट जाएं और वोह तबाह हो जाए (उसने हमारे ह़बीब पर हाथ उठाने की कोशिश की है)।

مَآ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا كَسَبَ ؕ ۝٢

2. उसे उसके (मौरूसी) मालने कुछ फ़ाइदा न पहुंचाया और न ही उसकी कमाईने।

سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۚۖ ۝٣

3. अ़नक़रीब वोह शो'लों वाली आगमें जा पड़ेगा।

وَّامْرَاَتُهٗ ؕ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ۚ ۝٤

4.और उसकी (ख़बीस) औ़रत (भी) जो (कांटेदार) लकड़ियों का बोझ (सर पर) उठाए फिरती है। (और हमारे ह़बीब के तल्वों को ज़ख़्मी करने के लिए रातको उन की राहोंमें कांटे बिछाती है)।

فِىْ جِيْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ ۧ ۝٥

5. उसकी गरदनमें खजूरकी छालका (वोही) रस्सा होगा (जिस से कांटों का गट्ठा बांधती है)।

आयातुहा 4 | 112 सूरतुल इख़्लास मक्किय्यतुन 22 | रुकूअ़हा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ ۝١

1. (ऐ नबिय्ये मुकर्रम!) आप फ़रमा दीजिए : वोह अल्लाह है जो यक्ता है।

اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ ۝٢

2. अल्लाह सब से बेनियाज़, सबकी पनाह और सब पर फ़ाइक़ है।

لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ ۝٣

3. न उससे कोई पैदा हुवा है और न ही वोह पैदा किया गया है।

وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۧ ۝٤

4. और न ही उसका कोई हमसर है।

आयातुहा 5 | 113 सूरतुल फ़लक़ि मक्किय्यतुन 20 | रुकूअ़हा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۙ ﴿۱﴾
1. आप अ़र्ज़ कीजिए कि मैं (एक) धमाके से इन्तिहाई तेज़ी के साथ (काइनातको) वुजूदमें लानेवाले रब की पनाह मांगता हूं।

مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ ﴿۲﴾
2. और हर उस चीज़ के शर्र (और नुक़्सान) से जो उसने पैदा फ़रमाई है।

وَ مِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ ﴿۳﴾
3. और बिल ख़ुसूस अंधेरी रात के शर्र से जब उसकी ज़ुल्मत छा जाए।

وَ مِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِی الْعُقَدِ ۙ ﴿۴﴾
4. और गिर्हों में फूंक मारनेवाली जादूगरनियों (और जादूगरों) के शर्र से।

وَ مِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ع ﴿۵﴾
5.और हर ह़सद करनेवाले के शर से जब वोह ह़सद करे।

آیاتُها 6 | 114 सूरतुन नास मक्किय्यतुन 21 | रुकूअ़हा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ ﴿۱﴾
1. आप अ़र्ज़ कीजिए कि मैं (सब) इन्सानों के रब की पनाह मांगता हूं।

مَلِكِ النَّاسِ ۙ ﴿۲﴾
2. जो (सब) लोगों का बादशाह है।

اِلٰهِ النَّاسِ ۙ ﴿۳﴾
3. जो (सारी) नस्ले इन्सानी का मा'बूद है।

مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ۙ ﴿۴﴾
4. वस्वसा अंदाज़ (शैतान) के शर्र से जो (अल्लाह के ज़िक्र के असर से) पीछे हट कर छुप जानेवाला है।

الَّذِیْ یُوَسْوِسُ فِیْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ ﴿۵﴾
5.जो लोगों के दिलों में वस्वसा डालता है।

مِنَ الْجِنَّةِ وَ النَّاسِ ع ﴿۶﴾
6. (ख़्वाह वोह वस्वसा अंदाज़ शैतान) जिन्नातमें से हो या इन्सनों में से।

دُعَآءُ خَتْمِ الْقُرْاٰنِ

اَللّٰهُمَّ ارْحَمْنِىْ بِالْقُرْاٰنِ الْعَظِيْمِ وَاجْعَلْهُ لِىْ اِمَامًا وَّنُوْرًا وَّهُدًى وَّرَحْمَةً اَللّٰهُمَّ ذَكِّرْنِىْ مِنْهُ مَانَسِيْتُ وَعَلِّمْنِىْ مِنْهُ مَاجَهِلْتُ وَارْزُقْنِىْ تِلَاوَتَهٗ اٰنَآءَ الَّيْلِ وَاَطْرَافَ النَّهَارِ وَاجْعَلْهُ لِىْ حُجَّةً يَّارَبَّ الْعٰلَمِيْنَ اٰمِيْنَ

अ़लामातुल वक़्फ़

O यह वक़्फ़े ताम या'नी ख़त्मे आयत की अ़लामत है जो दर ह़क़ीक़त गोल ते (ة) है जिसे दाइरे (0) की शक्ल में ज़ाहिर किया जाता है। यहां ठहरना चाहिए लेकिन ऊला और ग़ैर ऊला की तर्जीह़ का ख़याल रख्खें, या'नी ऐसी जगह पर वक़्फ़ करें जहां अ़लामत क़वी हो जैसे (م) और (ط) अगर (لا) हो तो ठहरने या न ठहरने का इख़्तियार है।

م मीम — वक़्फ़े लाज़िम की अ़लामत है जहां ठहरना ज़रूरी है और अगर ठहरा न जाए तो मा'नामें फ़र्क़ पड़ जाता है जिस से बा'ज़ मवाक़े' पर कुफ़्र लाज़िम आता है।

ط तोय — वक़्फ़े मुत्लक़ की अ़लामत है, यहां ठहरना बेहतर है।

ج जीम — वक़्फ़े जाइज़ की अ़लामत है, ठहरना बेहतर है, न ठहरना भी जाइज़ है।

ز ज़े — वक़्फ़े मुजव्वज़ की अ़लामत है, यहां न ठहरना बेहतर है।

ص सॉद — यहां वक़्फ़ करने की रुख़्सत है, अलबत्ता मिला कर भी पढ़ा जा सक्ता है।

ق क़ाफ़ — कील अ़लैहिल वक़्फ़ का मुख़फ़्फ़फ़ है, यहां न ठहरना बेहतर है।

صلے सॉद लाम या अल वस्लु ऊला का मुख़फ़्फ़फ़ है, यहां मिला कर पढ़ना बेहतर है।

صل सल — यह कद यूसल का मुख़फ़्फ़फ़ है, यहां वक़्फ़ करना बेहतर है।

قف (क़िफ़) — यह वक़्फ़े बेहतर की अ़लामत है, यहां ठहर कर आगे पढ़ना चाहिए।

س یا سکته (सीन या सक्ता) अ़लामते सक्ता है यहां इस तरह ठेहरा जाए कि साँस टूटने न पाए या'नी बिग़ैर साँस लिए ज़रा सा ठेहरें।

وقفة (वक़्फ़ा) — सक्ते को ज़रा तूल दिया जाए और सक्ते की निस्बत ज़ियादा ठेहरें लेकिन साँस न टूटे।

لا (ला) — यह अ़लामत कहीं दाइरए आयत के ऊपर आती है और कहीं मत्नमें, मत्न के अंदर हो तो हरगिज़ नहीं ठेहरना चाहिए अगर दाइरए आयत के ऊपर हो तो इसमें इख़्तिलाफ़ है बा'ज़ के नज़दीक ठेहरना चाहिए और बा'ज़ के नज़दीक नहीं ठेहरना चाहिए लेकिन ठेहरने और न ठेहरने से मतलबमें कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता।

ک (काफ़) — कज़ालिक की अ़लामत है, या'नी जो अ़लामत पहले आई वोही यहां समझी जाए।

फज़ाइल व आदाबे कुरआन

(1) हज़रते अबू हुरैरा رضي الله عنه से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम सल्लल्लाहु अलैहि व-सल्लम ने फ़रमाया :

ما أَذِنَ اللهُ لِشَيءٍ ماأَذِنَ لِنَبِيٍّ حَسَنِ الصَّوتِ يَتَغَنَّى بالْقُرْآنِ يَجْهَرُ بِهِ.

(بخارى، الصحيح، كتاب التوحيد، باب قول النبى ﷺ: الماهر بالقرآن مع السفرة الكرام البررة، ٢٧٤٣:٦، رقم: ٧١٠٥- مسلم، الصحيح، كتاب صلاة المسافرين، باب استحباب تحسين الصوت بالقرآن، ٥٤٥:١، رقم: ٧٩٢)

"अल्लाह तआला ने किसी शय के लिए ऐसा हुक्म नहीं दिया जिस क़दर ताकीद के साथ (अपने महबूब) नबी ﷺ को खूब सूरत लेहजे और नग़मगी के साथ ब-आवाज़े बुलन्द कुरआन पढ़ने का हुक्म फ़रमाया है।"

(2) हज़रते अबू हूरैरा رضي الله عنه से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ ने फ़रमाया :

لَيْسَ مِنَّا مَنْ لَمْ يَتَغَنَّ بِالْقُرْآنِ. (بخارى، الصحيح، كتاب التوحيد، باب قول الله تعالى و أسرّوا قولكم أو اجهروا به، ٢٧٣٧:٦، رقم: ٧٠٨٩)

" वोह शख़्स हम में से नहीं जो कुर्आन मजीद को नग़मगीवाली खूब सूरत आवाज़ के साथ नहीं पढ़ता।"

(3) हज़रते सा'द इब्ने वक़ास رضي الله عنه से रिवायत है कि मैंने हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ को फ़रमाते हुए सुना :

إِنَّ هَذَا الْقُرآنَ نَزَلَ بِحُزْنٍ، فَإِذَا قَرَأْتُمُوهُ فَابْكُوا، فَإِنْ لَمْ تَبْكُوا، فَتَبَاكَوا وَتَغَنَّوْا بِهِ، فَمَنْ لَمْ يَتَغَنَّ بِالْقُرْآنِ فَلَيْسَ مِنَّا.

(ابن ماجة، السنن، كتاب إقامة الصلاة والسنة فيها، باب في حسن الصوت بالقرآن، ٤٢٤:١، رقم: ١٣٣٧)

" बेशक येह कुरआन ग़म से लबरेज़ नाज़िल हुआ है पस जब तुम इसे पढ़ो तो रोया करो, और अगर (शक़ावते क़ल्बी के बाइस) रो न सको तो (कम अज़ कम) रोने वाली हालत ही बना लिया करो और नग़मगी के साथ खुश इल्हानी से इसकी तिलावत किया करो पस जो हुस्ने सौत और नग़मगी के साथ कुरआन की तिलावत नहीं करता वोह हम में से नहीं है।"

(4) हज़रते अबू उमामा رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ ने फ़रमाया :

اقْرَؤُوا الْقُرْآنَ فَإِنَّهُ يَأْتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ شَفِيعًا لِأَصْحَابِهِ.

(مسلم، الصحيح، كتاب صلاة المسافرين، باب فضل قراءة القرآن و سورة البقرة، ٥٥٣:١، رقم: ٨٠٤)

"कुरआन मजीद पढ़ा करो कि येह क़ियामत के दिन अपने पढ़नेवालों के लिए शफ़ाअत करनेवाला बन कर आएगा।"

(50) हुजूर नबिय्ये अकरम ﷺ ने फ़रमाया :

يَا ابْنَ عَبَّاسٍ إِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ فَرَتِّلْهُ تَرْتِيلًا بَيِّنْهُ تَبْيِينًا وَ لَا تَنْثُرْهُ نَثْرَ الدَّقَلِ وَ لَا تَهُذَّهُ هَذَّ الشِّعْرِ قِفُوا عِنْدَ عَجَائِبِهِ وَ حَرِّكُوا بِهِ الْقُلُوبَ وَ لَا يَكُونَنَّ هَمُّ أَحَدِكُمْ آخِرَ السُّورَةِ.

(ديلمى، الفردوس بمأثور الخطاب، ٥: ٣٦١، رقم: ٨٤٣٨)

'' ऐ इब्ने अब्बास ! जब तुम कुरआन पढ़ो तो उसको ठेहर ठेहर कर और अल्फ़ाज़ो हुरूफ़ को खूब वाज़ेह कर के पढ़ा करो और उसको रद्दी खजूर के बिखेरने की तरह न बिखेर दिया करो और न ही उसे जल्दी से शे'र गोई की तरह पढ़ा करो उसके अजाइबात पर तवक्कुफ़ किया करो और उसके ज़रीए अपने दिलों को हरकत दिया करो और तुम में से किसी का भी इरादा सिर्फ़ आख़िरी सूरत तक पहुंचने का नहीं होना चाहिए (कि जल्द ख़त्मे कुरआन हो जाए बल्कि उसको ग़ौरो फ़िक्र और तदब्बुर के साथ पढ़ा करो).''

(6) हज़रते अली बिन अबी तालिब ﷺ से रिवायत करते हैं कि हुजूर नबिय्ये अकरम ﷺ ने फ़रमाया :

مَنْ قَرَأَ الْقُرْآنَ وَاسْتَظْهَرَهُ فَأَحَلَّ حَلَالَهُ وَحَرَّمَ حَرَامَهُ أَدْخَلَهُ اللهُ بِهِ الْجَنَّةَ وَشَفَّعَهُ فِي عَشَرَةٍ مِنْ أَهْلِ بَيْتِهِ كُلُّهُمْ قَدْ وَجَبَتْ لَهُ النَّارُ.

(ترمذى، السنن، كتاب فضائل القرآن، باب ما جاء فى فضل قارى القرآن، ٥: ١٧١، رقم: ٢٩٠٥)

'' जिस शख़्सने कुरआने हकीम पढ़ा और उसे हिफ़्ज़ कर लिया, उसकी हलाल कर्दह चीज़ों को हलाल और हराम कर्दह चीज़ों को हराम समझा,अल्लाह तआला उस (क़िराअतो इल्मे कुरआन) की वजह से उसे जन्नत में दाख़िल कर देगा और उसके ख़ानदान के दस ऐसे अफ़राद के हक़ में (भी) उसकी शफ़ाअत कुबूल करेगा जिनके लिए दोज़ख़ वाजिब हो चुकी होगी''।

مَنْ قَرَأَ حَرْفًا مِنْ كِتَابِ اللهِ فَلَهُ بِهِ حَسَنَةٌ، وَالْحَسَنَةُ بِعَشْرِ أَمْثَالِهَا، لَا أَقُولُ الٓمٓ حَرْفٌ، وَلَكِنْ أَلِفٌ حَرْفٌ، وَلَامٌ حَرْفٌ، وَمِيمٌ حَرْفٌ.

(ترمذي، السنن، كتاب فضائل القرآن، باب ماجاء فيمن قرأ حرفا من القرآن ما له من الأجر، ٦: ١٧٥، رقم: ٢٩١٠)

(7) हज़रते अब्दुल्लाह बिन मसऊद ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : '' जिस ने अल्लाह तआला की किताब से एक हर्फ़ पढ़ा,उस के लिये उस-के बदले में एक नेकी है और येह एक नेकी दस नेकियों के बराबर है, मैं नहीं केहता के अलिफ लाम मीम एक हर्फ़ है बल्कि अलिफ एक हर्फ़ है, लाम एक हर्फ़ है और मीम एक हर्फ़ है, (गोया सिर्फ अलिफ लाम मीम पढ़ने से तीस नेकियां मिल जाती हैं) ।''

(8) हज़रते उ़स्मान (बिन अ़फ़्फ़ान) رضي الله عنه से रिवायत है के हुजूर नबिय्ये अकरम ﷺ ने फरमाया :

خَيْرُكُم مَنْ تَعَلَّمَ الْقُرْآنَ وَعَلَّمَهُ.

(بخاري، الصحيح، كتاب فضائل القرآن، باب خيركم من تعلم القرآن وعلمه، ٤:١٩١٩، رقم: ٤٧٣٩، ٤٧٤١)

'' तुम में से बेहतर वोह शख़्स है जो कुरआन (पढ़ना और उस के रुमूज़ो असरार और मसाइल) सीखे और सिखाए।''

(9) हज़रते अबूज़र رضي الله عنه से रिवायत है कि हुजूर नबिय्ये अकरम ﷺ ने मुझे फरमाया :

يَا أَبَا ذَرٍّ لَأَنْ تَغْدُوَ فَتَعَلَّمَ آيَةً مِنْ كِتَابِ اللهِ، خَيْرٌ لَکَ مِنْ أَنْ تُصَلِّيَ مِائَةَ رَكْعَةٍ. وَ لَأَنْ تَغْدُوَ فَتَعَلَّمَ بَابًا مِنَ الْعِلْمِ، عُمِلَ بِهِ أَوْلَمْ يُعْمَلْ، خَيْرٌ مِنْ أَنْ تُصَلِّيَ أَلْفَ رَكْعَةٍ.

(ابن ماجة، السنن، المقدمة، باب فضل من تعلم القرآن و علمه، ١:٧٩، رقم: ٢١٩).

'' अय अबूज़र ! बेशक तुम सुब्ह को जा कर अल्लाह तआला की किताब की एक आयत सीख लो तो येह तुम्हारे लिये सौ रकआ़त नमाज़ पढने से बेहतर है और अगर इल्म का एक बाब सीख लो उस बाब पर अ़मल किया जाना या न किया जाना अलग बात है (जिस पर अलग जज़ा व सज़ा होगी) मगर (कुरआन के एक बाब का फ़कत इल्म सीख लेना ही) तुम्हारे लिये एक हज़ार रकआ़त नमाज़े (नफिल) से बेहतर है।''

(10) हज़रते इब्ने उ़मर رضي الله عنه से मरवी है कि हुजूर नबिय्ये अकरम ﷺ ने फरमाया :

إِنَّ الَّذِي لَيْسَ فِي جَوفِهِ شَيْءٌ مِنَ الْقُرْآنِ، كَالْبَيْتِ الْخَرِبِ.

(ترمذي، السنن، كتاب فضائل القرآن ، باب ماجاء فيمن قرأ حرفا من القرآن ما له من الأجر، ٥:١٧٧، رقم: ٢٩١٣)

'' वोह शख़्स जिस के दिल में कुरआने करीम का कुछ हिस्सा भी नहीं वोह वीरान घर की तरह है।''

(11) हज़रत अ़ब्दुल्लाह رضي الله عنه से रिवायत है वोह फरमाया करते थे :

إِنَّ هَذَا الْقُرْآنَ مَأْدُبَةُ اللهِ فَمَنْ دَخَلَ فِيهِ فَهُوَ آمِنٌ

(دارمي، السنن، ٢: ٥٢٥، رقم: ٣٣٢٢)

बेशक येह कुरआन अल्लाह तआ़ला का दस्तरख़्वान है पस जो इस दस्तरख़्वान में शामिल हो गया उसे अम्न नसीब हो गया।''

(12) हज़रत अबूज़र رضي الله عنه से रिवायत है वोह फरमाते हैं :

قُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللهِ أَوْصِنِي؟ قَالَ: أُوْصِيكَ بِتَقْوَى اللهِ فَإِنَّهُ رَأْسُ الْأَمْرِ كُلِّهِ.
قُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ زِدْنِي قَالَ: عَلَيْكَ بِتِلَاوَةِ الْقُرْآنِ وَ ذِكْرِ اللهِ فَإِنَّهُ نُورٌ لَكَ فِي

الْأَرْضِ، وَ ذُخْرٌ لَکَ فِي السَّمَاءِ. (ابن حبان، الصحیح، ٢:٧٧-٧٨، رقم: ٣٦١)

'' मैंने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! मुझे कोई नसीहत फरमाएं,आप ﷺ ने फरमाया: मैं तुम्हें अल्लाह तआला के ख़ौफ़ व तक़्वा की वसिय्यत करता हूं के यही सारे मुआम्ले की अस्ल है मैंने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! मुझे कुछ मज़ीद इरशाद फरमाएं, फरमाया : तिलावते कुर्आन ज़रूर किया करो के येह ज़मीन में तुम्हारे लिये नूर और आस्मानों में तुम्हारे वास्ते (अज्रो सवाब का) ज़ख़ीरा होगा।''

(१३) हज़रते जाबिर رضی اللہ عنہ हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ से रिवायत करते हैं कि आप ﷺ ने फरमाया :

الْقُرْآنُ شَافِعٌ مُشَفَّعٌ وَمَاحِلٌ مُصَدَّقٌ، مَنْ جَعَلَهُ أَمَامَهُ قَادَهُ إِلَى الْجَنَّةِ، وَ مَنْ جَعَلَهُ خَلْفَ ظَهْرِهِ سَاقَهُ إِلَى النَّارِ. (ابن حبان، الصحیح، ١:٣٣١، رقم: ١٢٤)

'' कुर्आन रोज़े कियामत शफाअ़त करने वाला है जो मक़बूल होगी और अल्लाह तआला बंदए ना फरमान का शिकवा करने वाला है जो सुना जाएगा, जिस-ने उस-ने अपना इमाम बनाया येह उसे जन्नत में ले जाएगा और जिस-ने उसे पसे पुश्त डाल दिया येह उसे जहन्नम की तरफ हांक कर ले जाएगा।''

(१४) हज़रते अब्दुल्लाह बिन उ़मर رضی اللہ عنہ से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ ने फरमाया :

يُقَالُ لِصَاحِبِ الْقُرْآنِ: إِقْرَأْ وَارْتَقِ وَ رَتِّلْ كَمَا كُنْتَ تُرَتِّلُ فِي الدُّنْيَا، فَإِنَّ مَنْزِلَتَکَ عِنْدَ آخِرِ آيَةٍ تَقْرَأُ بِهَا.

(ترمذی، السنن، کتاب فضائل القرآن، باب ماجاء فیمن قرأ حرفا من القرآن ما له من الأجر، ٥:١٧٧، رقم: ٢٩١٤)

''कुर्आन मजीद पढने वाले से (जन्नत में) कहा जाएगा : कुर्आन पढता जा और जन्नत में मंज़िल ब मंज़िल ऊपर चढता जा और यूं तरतील से पढ, जैसे तू दुनिया में तरतील किया करता था, तेरा ठिकाना जन्नत में वहां पर होगा जहां तू आख़री आयत की तिलावत खत्म करेगा।''

(१५) हज़रते अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ ने फरमाया :

يَجِيءُ صَاحِبُ الْقُرْآنِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، فَيَقُولُ (الْقُرْآنُ): يَا رَبِّ، حَلِّهِ فَيُلْبَسُ تَاجَ الْكَرَامَةِ، ثُمَّ يَقُولُ: يَا رَبِّ، زِدْهُ، فَيُلْبَسُ حُلَّةَ الْكَرَامَةِ، ثُمَّ يَقُولُ: يَا رَبِّ، ارْضَ عَنْهُ، فَيَرْضَى عَنْهُ، فَيُقَالُ لَهُ: اقْرَأْ وَارْقَ، وَ تُزَادُ بِكُلِّ آيَةٍ حَسَنَةً.

(ترمذي، السنن، کتاب فضائل القرآن، باب ماجاء فیمن قرأ حرفا من القرآن ما له من الأجر، ٥:١٧٨، رقم: ٢٩١٥)

'' रोज़े क़ियामत साहिबे क़ुर्आन (क़ुर्आन पढने और अ़मल करने वाला) आएगा तो क़ुर्आन कहेगा : अय रब! इसे ज़ेवर पेहना, तो साहिबे क़ुर्आन को इ़ज़्ज़त का ताज पेहनाया जाएगा, क़ुर्आन फिर कहेगा : अय मेरे रब ! इसे और भी पेहना, तो इसे इ़ज़्ज़तो बुज़ुर्गी का लिबास पहना दिया जाएगा, फिर कहेगा : अय मेरे मौला ! अब इस से राज़ी हो जा (इस की तमाम ख़ताएं मुआफ़ कर दे) तो अल्लाह तआला उस से राज़ी हो जाएगा और उस से कहा जाएगा : क़ुर्आन पढता जा और (जन्नत के ज़ीने) चढता जा और अल्लाह तआला हर आयत के बदले में उस की नेकी बढाता जाएगा।''

(16) हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन बुरीदा असलमी رضي الله عنه अपने वालिद से रिवायत करते हैं उन्होंने फरमाया के हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ ने फरमाया :

مَنْ قَرَأَ الْقُرْآنَ وَ تَعَلَّمَهُ وَ عَمِلَ بِهِ أُلْبِسَ يَومَ الْقِيَامَةِ تَاجًا مِنْ نُورٍ ضَوْؤُهُ مِثْلُ ضَوْءِ الشَّمْسِ، وَ يُكْسَى وَالِدَيْهِ حُلَّتَانِ لَا يُقَوَّمُ بِهِمَا الدُّنْيَا. فَيَقُولَانِ بِمَ كُسِينَا هٰذَا؟ فَيُقَالُ: بِأَخْذِ وَلَدِكُمَا الْقُرْآنَ. (حاكم، المستدرك، ١:٧٥٦، رقم: ٢٠٨٦)

'' जिस ने क़ुर्आन पढा, उस का इ़ल्म हासिल किया और उस पर अ़मल पैरा हुवा उसे क़ियामत के दिन नूर का एक ताज पेहनाया जाएगा जिस की रौशनी सूरज की रौशनी की तरह होगी और उस के वालिदैन को दो ऐसे हुल्ले (लिबास) पेहनाए जाएंगे के सारी दुनिया भी उन की क़ीमत के बराबर न होगी तो वोह अर्ज़ करेंगे हमें येह लिबास किस वजह से पेहनाया गया है ? तो उन्हें जवाब दिया जाएगा : इस लिये के तुम्हारे बेटे ने क़ुर्आन पढा और उस पर अ़मल किया था।''

(17) हज़रते इ़म्रान बिन हुसीन رضي الله عنه से रिवायत है कि :

أَنَّهُ مَرَّ عَلَى قَاصٍ وَ فِي رِوَايَةٍ عَلَى قَارِىءٍ يَقْرَأُ، ثُمَّ سَأَلَ فَاسْتَرْجَعَ ثُمَّ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: مَنْ قَرَأَ الْقُرْآنَ فَلْيَسْأَلِ اللهَ بِهِ، فَإِنَّهُ سَيَجِيءُ أَقْوَامٌ يَقْرَءُوْنَ الْقُرْآنَ يَسْأَلُونَ بِهِ النَّاسَ.

(ترمذي، السنن، كتاب فضائل القرآن، باب ماجاء فيمن قرأ حرفا من القرآن ما له من الأجر، ٥:١٧٩، رقم: ٢٩١٧)

'' वोह एक क़ुर्आनी वाक़िआ़त को बयान करने वाले और दूसरी रिवायत में है कि एक क़ारिए क़ुर्आन के पास से गुज़रे जो क़ुर्आन पढता था फिर लोगों से मांगता था, उन्हों ने ''इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊ़न''पढा और फरमाया : मैंने हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ को फरमाते सुना है जो क़ुर्आन पढे, उसे क़ुर्आन के वसीले से सिर्फ अल्लल्लाह तआला ही से सवाल करना चाहिये क्यूंकि अ़नक़रीब कुछ (ऐसे बदबख़्त) लोग पैदा होंगे जो क़ुर्आन पढेंगे और उस के इवज़ लोगों से माल मांगेंगे।''

(18) हज़रते इब्ने अब्बास رضي الله عنه रिवायत करते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फरमाया :

مَنْ قَالَ فِي الْقُرْآنِ بِغَيْرِ عِلْمٍ فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ.

(ترمذي، السنن، كتاب تفسير القرآن، باب ما جاء في الذي يفسر القرآن برأيه، ١٩٩:٥، رقم: ٢٩٥٠)

'' जो शख़्स बगैर इल्म के कुर्आने मजीद पर गुफतगू करे तो उसे चाहिय्ये के वोह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले.''

(19) हज़रते अबू हुरयरा رضي الله عنه से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया :

مَنْ قَرَأَ عَشْرَ آيَاتٍ فِي لَيْلَةٍ لَمْ يُكْتَبْ مِنَ الْغَافِلِينَ. (حاكم، المستدرك، ٧٤٢:١، رقم: ٢٠٤١)

'' जो बंदा रात को दस आयत पढ ले वोह (यादे इलाही से) गाफिल होने वालों में नहीं लिखा जाएगा (बल्कि आ़बेदीन में लिखा जाएगा)।''

(20) हज़रते इब्ने अब्बास رضي الله عنه बयान करते हैं :

مَنِ اسْتَمَعَ إِلَى آيَةٍ مِنْ كِتَابِ اللهِ كَانَتْ لَهُ نُورًا.

(دارمي، السنن، ٥٣٦:٢، رقم: ٣٣٦٦-٣٣٦٧)

'' जिस-ने किताबुल्लाह की एक आयत भी गौर से सुनी तो येह आयत उस-के लिये (ब-मंझिलए) नूर होगी।''

(21) हज़रते आइशा رضي الله عنها रिवायत करती हैं कि :

كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ إِذَا مَرِضَ أَحَدٌ مِنْ أَهْلِهِ، نَفَثَ عَلَيْهِ بِالْمُعَوِّذَاتِ.

(مسلم، الصحيح، كتاب السلام، باب رقية المريض بالمعوذات و النفث، ١٧٢٣:٤، رقم: ٢١٩٢)

'' जब रसूलुल्लाह ﷺ के अहले ख़ाना में से कोई बीमार होता तो आप ﷺ कुल अऊ़ज़ु बिरब्बिल फलक और कुल अऊ़ज़ु बिरब्बिन्नास पढ कर उस पर दम फरमाते।''

(22) हज़रते सलाम या'नी इब्ने अबी मुती' बयान करते हैं के हज़रते क़तादा رضي الله عنه बयान किया करते थे :

أُعْمُرُوا بِهِ قُلُوبَكُمْ وَاعْمُرُوا بِهِ بُيُوتَكُمْ قَالَ: أُرَاهُ يَعْنِي الْقُرْآنَ.

(دارمي، السنن، ٥٣٠:٢، رقم: ٣٣٤٢)

'' कु़र्आन के ज़रिये अपने दिलों और घरों को आबाद किया करो।''

(23) हज़रते अब्दुल्लाह बिन उ़मर रदियल्लाहु अन्हुमा हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ से रिवायत करते हैं :

الْقُرْآنُ أَحَبُّ إِلَى اللهِ مِنَ السَّمٰوَاتِ وَالْأَرْضِ وَ مَنْ فِيهِنَّ.

(دارمي، السنن، ٥٣٣:٢، رقم: ٣٣٥٨)

'' बेशक कु़र्आन अल्लाह तबारक व तआला को आस्मानों और ज़मीन और जो कुछ उन में है से ज़ियादा प्यारा है।''

सूरतों की फेहरिस्त

सर्टीफिकेट सिहते मत्न

तस्दीक़ की जाती है के हमने इस कुर्आने हकीम के मतन को हर्फन हर्फन ब–नज़रे ग़ाइर पढ़ा है और इस की किताबत और प्रुफ़ चेक किए हैं, बिहमदिल्लाहि तआ़ला येह हर क़िस्म की ग़लती से मुबर्रा है।

हाफिज़ क़ारी हकीम मुहम्मद यूनुस मुजद्दिदी
प्रुफ़ रीडर फ़रीदे मिल्लत रिसर्च इन्स्टी टयूट

अल हाफ़िज़ क़ारी मुहम्मद शफ़ीकुल्लाह अजमल
प्रुफ़ रीडर रजिस्टर्ड मोहकमए औक़ाफ़
हुकूमते पंजाब,लाहौर.

अर्ज़े नाशिर

इरफ़ानुल कुरआन का उर्दू तरजुमा हिन्दी रस्मुल ख़त (लिपि) में पेश करने के लिए हमने इरफ़ानुल कुरआ़न के लाहौर के नुस्ख़े ही से अ़रबी मत्न का अ़क्स ले कर इस नुस्ख़े में इस्ते'माल करते हुए उर्दू तरजुमे को हिन्दी रस्मुलख़त (देवनागरी लिपि में) पेश करने की निहायत ही मोहतात कोशिश की है। और इसे ग़लतियों से पाक रखने की पूरी जद्दोजहद की है।

हम ने हर मुम्किन कोशिश की है कि इस कुरआ़ने हकीम की तबाअ़त (Printing) और जिल्द बन्दी (Binding) में किसी क़िस्म की कोई ग़लती न हो इस के बावजूद अगर किसी क़ारी को कोई ग़लती या कमी बेशी नज़र आए तो इदारे को मुत्तला' करके मम्नून फरमाएं।

मिन्हाजुल कुरआ़न इन्टरनेशनल इन्डिया के सदरे मोहतरम सैयद नादेअ़ली इब्ने हसनअ़ली साहब की निगरानी में इरफ़ानुल कुरआन – हिन्दी की इशाअ़त का काम मुकम्मल हुआ।

गुलामराज़िक़ इब्ने ख़लीलुर्रहमान शेख़
नाज़िमे तबाअ़तो इशाअ़त
मिन्हाजुल कुरआ़न इन्टरनेशनल इन्डिया
ट्रस्ट रजिस्ट्रेशन नंबर : 0157